[वर्ष १४] दिल्ली, सोमवार २१ पौष सम्वत् २००४ JUNARY 5th *DELHI 1948* [अङ्क १०]

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के मद्रास–अधिवेशन में भाग लेने के लिये आई हुई चार इन्डोनेशियन प्रतिनिधि महिलायें।

सम्पादक—
रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

वार्षिक मूल्य ८)
छः मास का ४)
एक प्रतिका मूल्य ≈)

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन　　* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक

* मनोरञ्जन मासिक　　* विजय पुस्तक भण्डार

❋ अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,०००　　**प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १६४४	१० प्रतिशत
सन् १६४५	१० „
सन् १६४६	१५ „

१६४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
* अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २१ पौष सम्वत् २००४

काश्मीर का मामला मित्रराष्ट्रीय संघ में

भारत के नेताओं ने काश्मीर का मामला परस्पर बातचीत द्वारा सुलझाने में असफल होकर अब उसे फैसले के लिए मित्रराष्ट्रीसंघ की सुरक्षा कौंसिल के सुपुर्द कर देने का निश्चय कर लिया है। सरकार के इस निश्चय से कुछ ही दिन पूर्व कई दिनों तक निरन्तर इस आशय के आश्चर्यजनक समाचार सुने गये थे कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के प्रतिनिधियों में सब विवादास्पद प्रश्न परस्पर समझौते से तय हो गये और उन्हें पचायत के सुपुर्द करने की आवश्यकता नहीं रही। ये समाचार जहां किसी के लिए भी प्रसन्नता का कारण हो सकते थे वहां इन पर आश्चर्य और सदेह का होना भी स्वभाविक था। भारत सरकार के व्यवहार कुशल गृहमन्त्री वल्लभभाई पटेल ने गत मास भारतीय पार्लमेंट में पाकिस्तान के साथ हुए आर्थिक समझौते की घोषणा करते हुए स्वयं इन पिछले (आश्चर्य और सन्देह के) भावों को व्यक्त कर दिया था। उन्होंने कहा था कि इस समझौते की सफलता उस भावना पर निभर करती है जिससे कि पाकिस्तान के नेता इस पर अमल करगे।

अब काश्मीर के मामले में समझौता करने की बार बार की चेष्टायें असफल होने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि पिछले दिनों पाकिस्तान के साथ शीघ्र २ हुए समझौतों को प्रसन्नता की अपेक्षा सन्देह की दृष्टि से ही देखना अधिक उचित था। उन समझौतों को करने में सम्भवतः पाकिस्तान के नेताओं का लक्ष्य यही था कि वे अन्य सब चिन्ताओं से मुक्त होकर अपनी समस्त शक्तियां काश्मीर के विरुद्ध केन्द्रित कर सकें और साथ ही उन्हें इन समझौतों के द्वारा काश्मीर के आक्रमण में प्रयुक्त करने लिये धन तथा सामरिक सामग्री आदि साधनों की भी प्राप्ति हो जाए। यह अच्छा हुआ कि पाकिस्तान को भारतीय नेताओं की छोटे भाई की दृष्टि से देखने की भावना व्यवहार में परिणत होने से पूर्व ही वास्तविक परिस्थिति का रहस्योद्घाटन हो गया और उक्त भावना से जो आत्मघातक हानि हमारे देश की हो सकती थी वह न होने पाई और हमारा देश 'मिया की जूती मिया का सिर' का उपहासास्पद उदाहरण बनने से बच गया।

हमारी सरकार ने काश्मीर का मामला सुरक्षा कौंसिल के सुपुर्द करने का निश्चय तो कर ही लिया है, परन्तु हम समझते हैं कि हमें उस से कई न्यायपूर्ण अथवा लाभयुक्त निर्णय की मिथ्या आशा नहीं रखनी चाहिये। सुरक्षा कौंसिल अपने जीवन के स्वल्पकाल में ही अनेक महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का हल करने में असफल सिद्ध हो चुकी है। और उसका प्रधान कारण यह है कि इस कौंसिल के सदस्य न्याय, निष्पक्षता अथवा परोपकार की भावना से प्रेरित होकर अपना कार्य नहीं करते अपितु उनकी दृष्टि प्रधानतया अपने २ राष्ट्रीय स्वार्थ पर ही केंद्रित रहती है। और सम्भवत कश्मीर जितने विविध अन्तर्राष्ट्रीय स्वार्थों का केन्द्र बन सकता है उतने अधिक स्वार्थों का केन्द्रीभूत एक विवाद शायद आज तक सुरक्षा कौंसिल के सामने कोई नहीं आया होगा। काश्मीर के साथ भारत और पाकिस्तान की सीमा तो स्पर्श करती ही है, उसकी सीमा में अफगानिस्तान, रूस, तिब्बत और चीन से भी मिली हुई है। इस कारण सामरिक भूगोल की दृष्टि से उसका महत्व अत्यन्त अनुपेक्षणीय है। सुरक्षा कौंसिल की सदस्य-महाशक्तियों में आजकल संसार के अनेक भागों में अपना प्रभाव विस्तार करने की तीव्र प्रतिस्पर्धा चल रही है। इस कारण हमें भय है कि सुरक्षा कौंसिल को सौंपने से काश्मीर का मामला सुलझेगा नहीं, और अधिक उलझ जायेगा। हमें आश्चर्य नहीं होगा यदि सुरक्षा कौंसिल में यह मामला, साबित रोटी दो बिल्लियों के हाथ से छिनकर बन्दर के मुख में जाने का उदाहरण बन जाये। कम से कम पाकिस्तान के प्रतिनिधि इस सत्य को अभी से अनुभव कर रहे प्रतीत होते हैं। पाकिस्तान के विदेश मन्त्री जफरुल्ला खां और भारत-हाई कमिश्नर जाहिद हुसेन ने इस विषय में जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे हमारी कल्पना का समर्थन होता है। हाई कमिश्नर जाहिद हुसेन तो चाहते ही नहीं कि यह मामला सुरक्षा कौंसिल के सिपुर्द किया जाए। और विदेश मन्त्री जफरुल्ला खां भारत सरकार की उक्त कार्यवाही से अपनी खिन्नता यह कह कर प्रकट करते हैं कि काश्मीर का मामला सुरक्षा कौंसिल में जाता है तो जूनागढ़ का प्रश्न और भारत और पाकिस्तान के मध्य के अन्य विवादास्पद मामले वहां पेश हुए बिना इसपर विचार नहीं हो सकता। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि पाकिस्तान के विदेशमन्त्री की इच्छा और प्रयत्न सुरक्षा कौंसिल में पहुंच कर भी काश्मीर के मामले को सुलझाने की नहीं, अधिकाधिक उलझाने के ही रहेंगे। और इस लिये सुरक्षा कौंसिल में काश्मीर का मामला ले जाने से भारत को दूसरा अधिक कुछ लाभ नहीं होगा कि उसकी प्रशसा करते हुए यह कह दिया जाय कि भारत सरकार की मनोवृत्ति अन्तर्राष्ट्रीय है और वह सैनिक उपायों का अवलम्बन करने से पहिले शान्ति के सब उपायों की परीक्षा कर लेना चाहती है। भारत सरकार की प्रशसा में यह कह दिया जाने के पश्चात् भी यह सम्भावना बनी ही रहती है कि सुरक्षा कौंसिल में स्वार्थी सदस्य कश्मीर के मामले का निर्णय भारत के विरुद्ध देंगे।

हिन्दू महासभा का कार्य क्षेत्र

पिछले दिनों हिन्दूमहासभा की ओर से सभा के उद्देश्य, क्षेत्र और नियमों में परिवर्तन के लिए एक प्रश्नावली छाप कर कुछ सुझाव मांगे गए हैं। इसी अवसर पर हम हिन्दू सभा के कर्णधारों से कुछ शब्द कहना चाहते हैं। हिन्दू सभा का मुख्य उद्देश्य हिन्दू जाति की उन्नति है। आज कोई माने या न माने भारत के स्वतंत्र होते ही हिन्दुओं की राजनैतिक स्थिति स्वतन्त्र देश में निर्विवाद रूप से बहुत ऊंची है। उनकी जनसख्या करीब ९० फीसदी है, इस लिए उनकी भाषा, सस्कृति आदि का विकास स्वभावत: ही होगा। आज भारत के ऊंचे पदों पर ९५ फी सदी हिन्दू हैं, अनेक प्रांतों में हिन्दी राज भाषा स्वीकार कर ली गई है, तब हिन्दू राज्य के नारे की आवश्यकता नहीं रही। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हिन्दू जाति बलवान् और उन्नत हो गई है। जातपात, अस्पृश्यता, बालविवाह, बलात् वैधव्य आदि कितनी कुप्रथाएं हिन्दू-जाति को जर्जर किए जा रही हैं। ये कुप्रथाएं किसी भी जाति को क्षीण व निर्बल कर देती हैं। आज हिन्दू सभा को देश और इसका अर्थ है देश की ९० फी सदी जनता के आर्थिक व राजनैतिक विकास का कार्य सरकार पर छोड़ कर हिन्दुओं के सामाजिक क्षेत्र की उन्नति करने में ही अपनी समस्त शक्ति लगा देनी चाहिए। वस्तुतः यही क्षेत्र था, जिसका प्रतिपादन हिन्दू जाति के उद्धारक व तेजस्वी नेता स्वा० श्रद्धानन्द ने किया था।

निष्पक्ष इतिहास लेखन

इतिहास को प्राचीन विद्वानों ने पांचवा वेद और यूरोपियन विद्वानों ने सत्य का प्रकाशस्तम्भ और पथ प्रदर्शक माना है। इतिहास मानव जाति और विभिन्न देशों के उत्थान पतन के कारणों का निर्देश करता है, इसलिए उसका निर्मल होना आवश्यक है। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि राजनैतिक स्वार्थ के कारण इतिहास भी असत्य और भ्रान्त लिखे जाने लगे हैं। भारतीय इतिहास पर तो मुस्लिम और अंग्रेज लेखकों ने बड़ा भारी अन्याय किया है। उसे अत्यन्त विकृत रूप में पेश करके उसका पथ प्रदर्शकत्व ही नष्ट कर दिया गया है। किसी ने भारतीयों को बदनाम किया है, तो कभी हिन्दुओं और मुसलमानों में शाश्वत विरोध को ही सिद्ध करने की चेष्टा की गई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारा इतिहास निष्पक्ष रूप से लिखा जाना चाहिए। उसमें हमारे गुण दोषों का स्पष्ट विवेचन हो। उससे हम मार्ग निदश पा सकें। राजनैतिक स्वार्थ के लिए हिन्दू या मुसलमानों के दोषों को भी छिपाने से हमारा इतिहास विशुद्ध मार्ग का प्रदर्शन नहीं कर सकता। ऐतिहासिक को सचमुच राजनीति, धर्म या आर्थिक विचार दिशा से ऊपर उठाकर निष्पक्ष रूप से देश के इतिहास का निर्माण करना चाहिए।

स्वागत है बर्मा वासियो !

इसी ४ जनवरी को हमारा पड़ोसी राष्ट्र बर्मा भी अपना 'स्वाधीनता दिवस' मना रहा है। अंग्रेजों के जिस साम्राज्यवादी पंजे के नीचे भारत डेढ़ सदी तक कराहता रहा और एक लम्बे सघर्ष के पश्चात् १५ अगस्त को उससे मुक्त हुआ वही खूनी पंजा ४ जनवरी को बर्मा वासियों के गले से हट रहा है, यह सुनकर किसे प्रसन्नता न होगी। इस दृष्टि से ४ जनवरी का दिन न केवल बर्मावासियो के लिये अपितु हम भारतवासियों के लिये भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बर्मा वासी अपने अविश्रान्त परिश्रम से इस स्वतंत्रता को हस्तगत कर रहे हैं। इस शुभ मुहूर्त में हम अपने पड़ोसियों का स्वागत करते हैं। अंग्रेजों का भारत और बर्मा से चले जाना जहां पश्चिम की शक्तियों के ह्रास का सूचक है वहां पूर्व की शक्तियों के विकास का भी। सूर्य पूर्व से ही उदय होता है न।

पाठक इसी अंक में अन्यत्र 'बर्मा में भी स्वाधीनता का सूर्य चमक रहा है' लेख पढ़ेंगे।

संघ में

भारत सरकार ने काश्मीर के मामले को मित्रराष्ट्रों की सुरक्षा कौंसिल के सन्मुख पेश करने का निश्चय कर लिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के स्थायी प्रतिनिधि को इस सिलसिले में सूचना दे दी गई है और आवश्यक आदेश भेज दिये गये हैं। भारत सरकार कुछ समय से ब्रिटिश सरकार से इस सम्बन्ध में सम्पर्क रखे हुए हैं और उसे भारतीय समस्या से पूर्णतः अवगत रखा गया है।

इस निश्चय से काश्मीर में हो रही कार्यवाहियों पर कोई असर नहीं पड़ेगा, जहां हमारी सेनायें लगातार प्रगति कर रही हैं। आक्रमणकारियों के विरुद्ध तेजी से कार्यवाही करना ही इस निश्चय का उद्देश्य है।

काश्मीर में आक्रान्ताओं को सक्रिय सहायता पहुंचाकर पाकिस्तान ने अपने पड़ोसी राष्ट्र के प्रति आक्रमणात्मक रुख अपनाया है। क्योंकि काश्मीर रियासत भारतीय संघ में सम्मिलित हो चुकी है। सुरक्षा, कौंसिल में इस मामले को पेश किये जाने के दो ही परिणाम होंगे—क्या तो अन्तर्राष्ट्रीय कर्तव्य को ध्यान में रखते हुए पाकिस्तान आक्रान्ताओं के प्रवेश को रोकेगा या भारत सरकार रियासत की जनता तथा सीमा की रक्षा के लिये यथोचित कार्यवाही करने में स्वतन्त्र होगी।

अभी हाल में किये गये समझौते के अनुसार पाकिस्तान ५५ करोड़ रुपये प्राप्त करने की आशा कर रहा है। परन्तु भारत इस राशि को देने को तय्यार नहीं है, क्योंकि पाकिस्तान ने आज तक एक भी समझौते को क्रियान्वित नहीं किया और इस राशि से पाकिस्तान आक्रमणकारियों को सहायता देने में ही प्रयोग करेगा।

भारत पर पाकिस्तान का आरोप

पाकिस्तान के विदेशमन्त्री सर मोहम्मद जफरुल्ला खां ने पत्रकारों से अपनी मुलाकात में बताया कि भारत सरकार ने उस आर्थिक समझौते को क्रियान्वित करने से इन्कार कर दिया है जो कुछ ही दिन पूर्व दोनों डोमीनियनों के मध्य हुआ था। पाकिस्तान का नकदी में ५५ करोड़ का जो हिस्सा था, उसे भी भारत सरकार ने पाकिस्तान को देने से इन्कार कर दिया है। उसने पाकिस्तान को भेजे जा रहे अत्यन्त अरजेन्ट मिलिटरी स्टोरों को भी बन्द कर दिया है जो पाकिस्तान का हिस्सा है। उसने इन चीजों को बन्द करने या रोकने के लिए यह बहाना बताया है कि यह समझौता इस शर्त पर किया गया था कि दोनों देशों में इसका पालन मैत्रीपूर्ण ढंग पर किया जाए। यदि भारत पाकिस्तान को झुकाने में सफल हो गया तो इसका परिणाम पाकिस्तान के लिए ही नहीं अपितु भारत के लिए भी विनाशकारी होगा। इस समय स्थिति का हल निकालने का एक मात्र विवेकपूर्ण तथा सहायता जनक हल यही है कि पाकिस्तान के निर्माण की वस्तु स्थिति स्वीकार करली जाये चाहे मुस्लिमों की आखों में उसकी मांग में कोई भी खराबिया या अन्छाइया क्यों न हों। पाकिस्तान की स्थापना अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा हिन्दू महासभा की नीति के कारण अनिवार्य हो गई थी।

पाकिस्तान इस बात पर जोर देगा कि मित्रराष्ट्र संघ को समस्या पर बताई गई एक पक्षीय बात पर विचार करने के बजाय सारी समस्या को सुलझाना चाहिये।

ऊसा को मृत्यु दंड

बर्मा के भूत पूर्व प्रधान मन्त्री ऊसा तथा उनके आठ अन्य साथियों को जिन पर जनरल आंगसान व बर्मी मन्त्रिमण्डल के ६ अन्य सदस्यों की हत्या के षड़यन्त्र के अभियोग में मुकदमा चल रहा था, मृत्यु की सजा दी गई। मुकदमे की सुनवाई के लिये बनाई गई विशेष अदालत ने ऊसा को हत्या के लिये उकसाने तथा चार अन्य अभियुक्तों को हत्या का दोषी ठहराया। राजहत्या का यह मुकदमा ६ अक्टूबर को प्रारम्भ हुआ थी। जनरल आंगसान की हत्या के बाद उसी रात ऊसा अपने निवास स्थान पर पुलिस और अपने अंगरक्षकों के बीच काफी देर के बन्दूक युद्ध के बाद गिरफ्तार किये गए थे।

श्री जयरामदास दौलतराम

डा० राजेन्द्र प्रसाद ने भारतीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित होने के कारण अपने मन्त्रिपद से इस्तीफा दे दिया है, अतः गवर्नर-जनरल ने मन्त्रिमण्डल के परामर्श पर उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है और बिहार के गवर्नर श्री जयरामदास दौलतराम को मन्त्रिमण्डल में नियुक्त किया है। बिहार के गवर्नर पद के लिये श्री एम० एस० अणे को नियुक्त किया है। जनवरी के प्रारम्भ से वे कार्यभार संभाल लेंगे।

छत्तीसगढ और उड़ीसा की रियासतें

१ जनवरी, ४८ से भारतीय संघ की ओर से डिप्टी कमिश्नर और अन्य सीनियर अफसरों ने छत्तीसगढ़ की १४ रियासतों का शासन सम्भाल लिया है। इसी प्रकार उड़ीसा की भी २५ रियासतों का शासन १ जनवरी से प्रान्त के अफसर संभाल रहे हैं।

चीन में कम्यूनिस्टों से युद्ध

मध्य चीन में हांकी प्रान्त के हुंगेयोंग शहर पर, जो सरकारी सेनाओं का मजबूत अड्डा था, कम्यूनिस्टों का कब्जा हो गया है। मंचूरिया की पुरानी राजधानी मुकदन में भी कम्यूनिस्ट बाहरी भागों के रक्षात्मक मोर्चों में घुस गये। कम्यूनिस्ट दस्तों ने हुपेय प्रान्त की राजधानी को घेर लिया है और कई छोटे छोटे शहरों पर कब्जा कर लिया है। मध्यचीन में पिछले दो सप्ताहों से बड़े पैमाने पर गुरिल्ला युद्ध हो रहा है।

एक लाख कम्यूनिस्ट सिआङ्को नदी के तटों पर युद्ध करने के लिए एकत्र हो गये हैं। कम्यूनिस्टों के विरुद्ध चीन के सरकारी बममार वायुयान झोंक दिये गये हैं। पैपिंग और चेकिंग के मध्य में १५०० कम्यूनिस्ट मारे गये हैं और ३००० घायल हो गये हैं। मुकदन में भीषण सघर्ष की सम्भावना है।

फिलस्तीन में अरब यहूदी

अरब श्रमिकों की एक तेल फेक्टरी में बम फेंके जाने के बाद विभाजन के पश्चात् का सबसे बड़ा दंगा हुआ। सैकड़ों क्रुद्ध अरब पागल से होकर यहूदियों पर पत्थर फेंकने लगे और छुरे भोंकने लगे। चारों ओर से रोने और चिल्लाने की आवाज आने लगी। सौ आदमी हताहत हुए।

[शेष पृष्ठ २५ पर]

हिन्दी के अनूठे सचित्र मासिक पत्र

मनोरंजन

का

जनवरी १९४८ का अंक प्रकाशित हो गया

इसमें आप पढ़ेंगे—

★ हिन्दी के अग्रणी कवि श्री उदयशंकर भट्ट, श्री आरसीप्रसाद सिंह, श्री देवराज 'दिनेश' और श्री 'शलभ' की उच्चकोटि की कवितायें और गीत।

★ हिन्दी के यशस्वी कहानीकार श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क', शम्भुनाथ सक्सेना और महेन्द्र प्रताप 'मदन' की रोचक व कलापूर्ण कहानियां।

★ हिन्दी के ख्यातनामा पत्रकार व लेखक श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, श्री शंकरदेव विद्यालङ्कार, श्री प्रभाकर माचवे, श्री सूर्यनारायण व्यास और प्रिंसिपल हरिश्चन्द्र के मनोरंजक व ज्ञानवर्धक लेख।

★ विशेष स्तम्भ—हास परिहास, अद्भुत चित्रावलि, चित्र-लोक, सलोनी दुनिया, फुलझड़िया, बाल-मनोरंजन, पुरस्कार पहेली इत्यादि।

इसमें आप देखेंगे—

★ सुन्दर चित्र सहित मुख पृष्ठ, बहुरंगी कलापूर्ण छपाई, बढ़िया गेट अप।

एक प्रति का मूल्य आठ आने वार्षिक ५॥)

श्री श्रद्धानंद पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानंद बाजार, दिल्ली

समाचार चित्रावली

समा[illegible]खा में गांधीजी को नोटों का एक हार पहनाया जा रहा है।

लंका के प्रथम प्रधानमंत्री श्री सेनानायकम नेहरूजी के साथ

सरदार [illegible]टेल जयपुर नरेश के रजतजयन्ती समारोह में

आचार्य नरेन्द्र देव ल[illegible] [illegible] यूनिवर्सिटी में भाषण दे रहे हैं

भारत सरकार के नये [illegible]मंत्री श्री जयरामदास दौल[illegible]म

यह एक ऐसी कुलीन महिला का चित्र है जो पश्चिमी पंजाब के एक नगर में अत्यन्त सम्पन्न थी और जिसके घर में मोटर तांगे मौजूद थे। लेकिन आज वह दिल्ली में सड़क की पटरी पर बैठ कर मूंगफली बेचकर अपने उदर का निर्वाह कर रही है।

बिहार के नये गवर्नर श्री माधव श्रीहरि अणे

हिन्दी ही भारत की राष्ट्र भाषा होगी

श्री राहुल सांकृत्यायन

बम्बई में अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३५ वे अधिवेशन के सभापति पद से श्री राहुल साकृत्यायन ने जो भाषण दिया, उसके कुछ अंश निम्नलिखित हैं—

हिन्दी का उत्पत्ति काल ७ वीं शताब्दी है। उस समय के लेखक पुष्पदन्त, हरिभद्रादि जिस भाषा का प्रयोग करते थे वह हमारी भाषा की भांति ही थी। अन्तर इतना ही है कि उस समय की भी भाषा में तद्भव शब्दों का बाहुल्य था। आज भारत फिर स्वतन्त्र है। अत जिस प्रकार ७ वीं शताब्दी में अपभ्रंश इस देश की राष्ट्रभाषा थी उसी प्रकार आज हिन्दी को यह पद मिलना चाहिये।

इस वर्ष से हमारा भारत अब वह नहीं रहा, जो सदियों से चला आ रहा था। आज फिर हिन्दी स्वतन्त्र भारत की सम्माननीय भाषा का पद प्राप्त कर रही है। ७०० सदियों के अन्तर्धान के पश्चात् हिन्दी सरस्वती पुन बड़े वेग से अपने स्थान पर प्रकट हुई है और आज उसका दायित्व और कार्यक्षेत्र बारहवी सद से कहीं अधिक है। आज उसे हिन्दी प्रान्तों के न्यायालयों, पार्लियामेंटों और सरकारी शासन पत्रों की ही भाषा नहीं बनना है, बल्कि आज के विकसित विज्ञान की हर एक शाखा के अध्ययन का माध्यम भी बनाना है।

हाय अंग्रेजी !

अब भी कुछ दिमाग अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाये रखने का आग्रह करते हैं। चूंकि किसी की आंखें सूरज को नहीं देखना चाहतीं, तो सूरज को उगना ही नहीं चाहिये। चूंकि उन्होंने अंग्रेजी छोड़ और किसी भारतीय भाषा पर अधिकार नहीं पाया, सदा साहबी ठाठ में रहे और कभी ख्याल नहीं किया कि देश का जनता भी किसी भाषा से सम्बन्ध रखती है और उसका साहित्य, जहा तक शुद्ध साहित्य का सम्बन्ध है विश्व की किसी भाषा से पीछे नहीं है। साहबों के राज्य के चले जाने के बाद भी हमारे बीच में जो काले साहब रह गये हैं, उनकी 'हाय अंग्रेजी हाय अंग्रेजी' की ओर हमें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। कोई भी अविकृत मस्तिष्क आदमी अब अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाने का कोशिश नहीं करेगा।

हिन्दुस्तानी या हिन्दी उर्दू दोनों नहीं

सवाल — हिन्दी और उर्दू दोनों ही भाषाओं और दोनों लिपियों को क्यों न सारे संघ की राष्ट्र भाषा और राष्ट्रलिपि मान लिया जाय। पूछना है अपनी मातृ-भाषा और उसके साहित्य के पढने के साथ-साथ क्या दूसरी भाषा का बोझ ज्यादा से ज्यादा लादना व्यवहार और बुद्धिमानी की बात है? संघ की राष्ट्र भाषा सिर्फ एक होनी चाहिए। स्विटजरलैण्ड की तीन भाषाओं का दृष्टान्त हमारे यहा भी लागू हो सकता था, यदि हमारा देश एक तहसील या ताल्लुके के बराबर होता। हमारे यहा जो उदाहरण लागू हो सकता है, वह है सोवियत संघ का, जहा ६६ भाषाए बोली लिखी जाती हैं। द्रविड़ भाषाओं में तो अब भी ६०-६० प्रतिशत तक संस्कृत शब्द मिलते हैं— वही संस्कृत शब्द उत्तरी भाषाओं म हैं, किन्तु सोवियत की मंगोल तुर्की सम्बन्ध की पचासों भाषाओं का रूसी भाषा स कोई सम्बन्ध नहीं तो भी वहा के लोगों ने संघ की एक भाषा मानते वक्त रूसी को ही वह स्थान दिया, क्योंकि वह दो तिहाई जनता की अपनी भाषा थी और देश में भी बहुत दूर तक प्रचलित थी। हिन्दी का भी वही स्थान है। हिन्दी भाषा भाषी बहुत भारी प्रदेश तक फैले हुए हैं, इतना ही नहीं बल्कि आसामी, बंगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, पंजाबी, ऐसी भाषाए हैं, जो हिन्दी जानने वालों के लिए समझने में बहुत आसान हो जाती हैं, क्योंकि उनका एक दूसरे का बहुत निकट का सम्बन्ध है। उर्दू लिपि, जो कि वस्तुत अरबी लिपि है, इतनी अपूर्ण लिपि है, कि उसे खुद बहुत से इस्लामी देशों से देश निकाला दिया जा चुका है। उसको लादने का सवाल तो हमारे दिल में आना ही नहीं चाहिए।

हिन्दी को सारे हिन्द संघ के ऊपर राष्ट्रभाषा के तौर पर लादने का सवाल नहीं है। यह तो एक सीधी व्यवहार की बात है। सन्यासियों के अखाड़ों और स्थानों को जाके देखिये, वह समुद्र की तरह हैं, जहा सचमुच ही सैकड़ों नदिया आकर मिलती हैं और नामरूप विहाय समुद्र बन जाती है। इन अखाड़ों की बड़ी बड़ी जमातें चलती हैं और कुम्भ के मेलों के वक्त तो उनकी संख्या लाखों तक पहुंच जाती है। वहां जाकर पता लगाइये कि मालाबारी तेलगू, नेपाली, बंगाली, पुर्तगाबी और सिन्धी साधु सन्यासी ... गण में आपस में बातचीत ... हिन्दी ... में और सिर्फ हिन्दी में। ... गाधी जी ... के दक्षिण हिन्दी ... प्रचार से कोई सम्बन्ध नहीं है। ... भारी आज की हिन्दी संस्थाओं में ... पहले से यह काम हो रहा है।

प्रेस और टाइपराइटर

राष्ट्रभाषा हिन्दी ... स्वीकार करने पर भी कोई कोई भाई ... रोमन लिपि स्वीकार करने के लिये कह ... हैं। क्या वह अधिक वैज्ञानिक है ... वैज्ञानिक का मतलब है, लिपि ... उच्चारण के अधिक अनुरूप होना। ... रोमन लिपि के २६ अक्षर हमारे ... सारे उच्चारणों को प्रकट नहीं कर सकते। नागरी अक्षरों में हम उससे ज्यादा ... रूप से किसी भी भाषा को लिख सकते हैं, और बिना चिह्न दिये। चिह्न देने पर ... रोमन में जितने पैबन्द लगाये जाते हैं, उनसे कम ही चिह्नों को लगा नागरी द्वारा हम दुनिया की हर भाषा के शब्दों को ... उच्चारणानुसार लिख सकते हैं। इस लिये जहा तक उच्चारण का सम्बन्ध है, हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है।

रहा सवाल प्रेस और टाइपराइटर का, तो उसमें कुछ मामूली सुधार की आवश्यकता अवश्य है, और यह सुधार संयुक्त अक्षरों के टाइपों के हटाने, मात्राओं को अ के ऊपर लगाने तथा दूसरे अक्षरों पर लटकती मात्राओं के शरीर को अपने शरीर तक समेट कर किया जा सकता है। इससे हिन्दी टाइपों की संख्या ४८५ की जगह १०४ हो जायगी जब कि अंग्रेजी में १४७ टाइपों का फौंट होता है।

जो उर्दू भाषा-भाषी अपनी शिक्षा उर्दू भाषा द्वारा लेना चाहते हैं, उन्हें इसके लिये पूरी स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये। वे स्कूलों में नहीं, चाहें तो अलीगढ़ युनिवर्सिटी तक में उर्दू का माध्यम रख सकते हैं। लेकिन जो समय सामने आ रहा है, उसे देखते हुए मैं उन्हें परामर्श दूंगा कि लिपि के आग्रह को छोड़कर उर्दू के लिये भी नागरी लिपि को अपनाए। आखिर पश्चिमी एशिया की ताजिक और तुर्की भाषाओं को अरबी लिपि से सम्बन्ध विच्छेद कर लेने पर हानि नहीं बल्कि बहुत भारी लाभ हुआ है। सोवियत् की यह भाषाएं रूसी लिपि में लिखी जाती हैं, जो ३२ अक्षरों की होने से रोमन से कहीं अधिक वैज्ञानिक है।

दुमदार दोहे

"गुस्ताख"

'अंग्रेजी भाषा हटे', जभी सुनी 'आजाद'।
अभी हटे ना, हटेगी, पाच वर्ष के बाद॥
कहि उठे तमकि कैं।

'चार बड़ों' की हो गई, बैठक, एकदम भंग।
यौराए से चलि दिये, छोड़ि छोड़ि सब संग॥
मनावै कौन अब।

मुस्लिम यूनीवर्सिटी, नेहरू कूं रहि टेरि।
आ आका, ओ प्राणपति, मोकूं देखो हेरि॥
मान अब ना करू।

अबलाएं सबला बनें, सबल बनें बलहीन।
श्री सुचेता कहि गईं, अक्षर साढे तीन।
भये आजाद अब।

कोऊ बरमा जाइरह्यौ, औ कोऊ सीलौन।
बेचारे 'गुस्ताख' कूं, अब पूछेगौ कौन॥
वक्त की बात है।

टुकड़े मुस्लिम लीग के, जिन्ना कूं स्वीकार।
फिलस्तीन के विभाजन, कूं पर ना तैयार॥
बात कुछ अजब है।

भारत को दौरा करें, गांधी बाबा यार।
तुमहू लंगोटी बांधि कैं, है जाओ तैयार॥
मजे में रहोगे।

कोउ 'अम्बेसडर' बनि रह्यो, कोउ 'गवर्नर' आज।
सम्पादक जी! आप कूं, हम पहनावैं ताज॥
खुशामद यदि करो।

इस्लाम को भारतीय बनाना चाहिए

धर्म को समाज के हर क्षेत्र में घुसेड़ना आज के संसार में बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। अभी हमारे राष्ट्रीय मुसलमान भाई भी नहीं समझ पाये हैं कि उनकी सन्तानों को नव भारत में कहां तक जाना है। नवीन भारत ऐसे मुसलमानों को चाहेगा, जो अपने धर्म के पक्के हों, किन्तु साथ ही उनकी भाषा, वेष-भूषा खान-पान में दूसरे भारतीयों से कोई अन्तर न हो, भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के प्रति आदर रखने में वे दूसरों से पीछे न हों। भारतीय संघ के मुसलमानों को भी आज की तीसरी पीढ़ी में हिन्दी के अच्छे-अच्छे कवि और लेखक उसी परिमाण में होंगे, जिस परिमाण में से आज उर्दू में हैं।

कुछ राजनीतिक नेता हिन्दुस्तानी के नाम पर और न जाने किस भलाई के ख्याल से उर्दू को भी यहां घुसेड़ना चाहते हैं। लेकिन यह तो निश्चित है कि इस बात में उनका कोई व्यक्तित्व काम नहीं करेगा। पन्त जी की सरकार ने युक्तप्रान्त में हिन्दी के प्रति अपनी ममता दिखलाते हुए उसे एकमात्र राजभाषा स्वीकार किया, उसने बतला दिया कि हवा का रुख किधर है। दो दो भाषा और दो दो लिपि को राजभाषा बनाने का अब कोई कारण नहीं है। तर्क पेश किया जाता है कि अगर यहां के उर्दू भाषा भाषी मुसलमानों को हिन्दी पढ़ने पर मजबूर किया गया तो नया हुआ हिन्दुस्तान फिर कभी एक न होगा। मानों, उर्दू को राज भाषा स्वीकार कर लेने पर एकता निश्चित है।

उर्दू वालों को हिन्दी पढ़ने के लिये मजबूर किया जायगा? यह तो जनतान्त्रिक नियम है। जिस भाषा के अधिक बोलने वाले होते हैं, वही भाषा राजकीय मानी जाती है। अल्प संख्यकों की भाषा इस तरह नष्ट हो जायगी? यह भी आक्षेप नहीं हो सकता। मैं समझता हूं कि हमारी सरकार उर्दू पढ़ने वालों के रास्ते में रुकावट नहीं डालेगी, लेकिन साथ ही यह तो जरूर होगा कि जिनको सरकारी या कल-कारखानों की नौकरियों को पाने का ख्याल है, उनके लिए हिन्दी पढ़ना आवश्यक होगा। आखिर आज तक, जब इनके लिए वे अंग्रेजी पढ़ते रहे, फिर अब हिन्दी पढ़ने में क्या हर्ज है। जैसे आज तक हाई स्कूलों से यूनिवर्सिटी तक अरबी फारसी पढ़ते रहे, वैसे आगे भी पढ़ते रहेंगे। हिन्दी तो केवल वही स्थान लेने जा रही है, जिसे अंग्रेजी ने जबरदस्ती दखल कर रखा था।

विश्व की महान भाषा

हिन्दी भारतीय संघ की राष्ट्रभाषा होगी और उसके आधे से अधिक लोगों की अपनी भाषा होने के कारण वह

अंग्रेजों को सिंहासन से उतरना होगा

अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अब तक महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करेगी। चीनी भाषा के बाद यही दूसरी भाषा है जो इतनी बड़ी जनसंख्या की भाषा है, हिंदी के ऊपर इसके लिए बड़ा दायित्व आ जाता है। अब हमें हिन्दी में सारा ज्ञान विज्ञान लाना होगा। कुछ लोग इसे बहुत भारी, शायद सदियों का काम समझते हैं। परन्तु मेरी समझ में यह उनकी भूल है। आज जिस चीज की मांग हो, उसे साहित्य जगत में सृजन करने वालों की कमी नहीं होती।

शिकायत की जाती है कि हिन्दी में साइंस-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों की बहुत कमी है। यह सवाल तो कुछ उन लोगों की ओर से उपस्थित किया जाता है, जो हमारे पिछले ४० साल के परि-भाषा निर्माण सम्बन्धी कार्य से परिचित नहीं हैं। वह परिभाषा ग्रन्थों के पास नहीं जाना चाहते बल्कि चाहते हैं, कि शब्द स्वयं उड़ उड़कर उनके मुंह में आएं।

हिन्दी में वैज्ञानिक अनुसंधान

जहां तक पढ़ाने का सम्बन्ध है, हिंदी भाषा तो १९४८ से यूनिवर्सिटियों में पढ़ाने का माध्यम बन सकती है। रही अनुसंधान की बात, तो उसके लिए विश्व की कोई एक भाषा पर्याप्त नहीं है। मौलिक विज्ञान में ही जो नये नये अनुसंधान हो रहे हैं, वह सिर्फ अंग्रेजी में ही नहीं हैं, बल्कि फ्रेंच जर्मन और रूसी भाषाओं में उनका बहुत सा भाग छपता है जिसे जाने बिना कोई अनुसंधानकर्त्ता अपने विषय का नवीनतम ज्ञान नहीं रख सकता और कितनी ही बार अनुसंधान हो चुकी समस्या पर वृथा माथा मारने की गलती कर सकता है। इस लिए जहां तक अनुसंधान का सम्बन्ध है, उसके लिए तो हमारे विद्वानों को अंग्रेजी ही नहीं दो एक और भाषाओं के समझाने भर का ज्ञान होना आवश्यक है जैसा कि दूसरे देशों में देखा जाता है।

यही नहीं बल्कि हमारे यहां साइंस के सम्बन्ध में जो अनुसन्धान हों, उनको विदेशी विद्वानों तक पहुंचाने का प्रबन्ध

अ० भा० हिंदी साहित्य सम्मेलन के नये अध्यक्ष

श्री राहुल सांकृत्यायन

करना होगा। और वह जानकारी हिन्दी द्वारा ही उन तक पहुंचानी चाहिए, जैसा कि रूस करता है।

अंग्रेजी भाषा में हम एक विदेशी पढ़ने वाले के लिये लिखते हैं और ९९ का ख्याल छोड़ देते हैं। इस लिए मैं तो समझता हूं कि अनुसंधान पत्रिकाओं को हिन्दी में निकलना चाहिये, इसी तरह बंगाल आदि प्रान्तों में गवेषणा पत्र वहां की भाषा में हों।

हमारे हिन्दी भाषा भाषी बन्धु दक्षिणी अमेरिका के गायना, ट्रिनिडाड से लेकर मोरिशस, अफ्रीका होते प्रशान्त महासागर के फिजी द्वीप तक फैले हुए हैं। हमारे कथा-लेखकों के लिये यह बहुत बड़ा क्षेत्र है। हमारे भाइयों का वहां का जीवन, समाज आजकल कैसा है और उस वक्त कैसा था, जबकि वह कुली बनकर इन देशों में पहुंचे थे, आदि आदि के चित्र हमारे साहित्यों में आने चाहिये। इस के लिये हमारे साहित्यकारों को अब इन द्वीपों में जाना चाहिए।

प्राचीन ग्रीस और रोम के साहित्य से लेकर फ्रांसीसी, अंग्रेजी, रूसी, जर्मन और दूसरी भाषाओं के भी मुख्य मुख्य साहित्यकारों के काव्य, कथा, नाटक और निबंध हिंदी में अनूदित होने चाहियें। हमें हिंदी को इतना सम्पन्न कर देना है, जिसमें हिंदी पाठकों और लेखकों के लिए परमुखापेक्षी बनने की आवश्यकता न रह जाय।

आज पत्रों पर करोड़पतियों का आधिपत्य स्थापित हो रहा है, वह पत्रकार की स्वतन्त्रता के लिए ही घातक नहीं है, बल्कि इसका परिणाम लोकतन्त्रता के भी प्रतिकूल होगा। हम आज ही देख रहे हैं कि इन बड़े बड़े पत्रों ने किस तरह अपने समाचारपत्रों पर भीतरी सेन्सर बैठा रक्खा है, और कोई भी घटना या विचार जो पत्र मालिकों के हित या विचार के विरुद्ध होती है वह उनमें छपने नहीं पाता। यदि हमें अपनी नवजात लोकतन्त्रता की रक्षा करनी है, तो पत्रों पर से थैली का राज उठाना होगा।

इधर एक और प्रवृत्ति चल गई है, अंग्रेजी पत्रों के साथ साथ पुछल्ले की शकल में हिन्दी पत्र निकलने लगे हैं। कहीं कहीं तो हिन्दी पत्र की ग्राहक संख्या और आमदनी अधिक है, तो भी हिन्दी पत्रकारों और अंग्रेजी पत्रकारों के वेतन में भेद रक्खा जाता है। क्या यह हिन्दी का अपमान नहीं? फिर बहुत से ऐसे पत्रों में दूसरे दिन बासी खबर ही छपती हैं, इससे जो अंग्रेजी पढ़ सकने वाले पाठक हैं वे हिन्दी पत्र न लेने को बाध्य होते हैं और एक दिन का बासी समाचार केवल हिन्दी जानने वाले पाठकों के मत्थे मढ़ा जाता है।

हिन्द संघ के अधिकारियों में हिन्दी

अंग्रेजी राज्य ने सारे भारत के लिए आई० सी० एस० जैसी केन्द्रीय नौकरियों की स्थापना की थी स्वतन्त्र भारत के लिए भी ऐसे अधिकारियों की आवश्यकता है, इसमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकता। हमारी सरकार ने दिल्ली में ऐसा शिक्षणालय खोला है, जिसमें केन्द्रीय अधिकारियों की शिक्षा होती है लेकिन अभी वहां शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। मैं नहीं समझता, गुलामी की इस आखिरी कड़ी को हमारा देश बर्दाश्त करेगा? केन्द्रीय सेवा में आने वाले उम्मेदवारों के लिए हिन्दी का ज्ञान आवश्यक होना चाहिये क्योंकि अब उन्हें शासन का कारोबार अंग्रेजी में नहीं करना है।

आपकी पत्नी कैसी हैं ?

[श्री स० वि० अ०]

★

दीर्घकालीन अनुसन्धान और अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि विवाहित स्त्रियों के ६ प्रकार होते हैं। इनमें कौनसा प्रकार सर्वाधिक आकर्षक है, यह विशुद्ध रूप से मनुष्य पर निर्भर करता है। यदि मनुष्य अपनी भावी पत्नी के आचार व व्यवहार के के बारे में लक्ष्य की अपेक्षा मस्तिष्क से थोड़ा-सा भी अधिक काम लेगा, तब उसका विवाहसम्बन्धी साहस एक आकस्मिक सफलता न रह कर स्थायी वस्तु बन जायगा।

गृहकपोतिका

पत्नी का प्रथम प्रकार 'गृह कपोतिका' है जो एक दम 'घरवाली' हो। वह आत्यन्तिक रूप से अपने घर को ही संसार और अपने पति को अपना स्वामी देवता या भगवान् समझती है। घरेलू मामलों में थोड़ी सहायता या बिल्कुल सहायता न लेकर वह घर में रहने तथा सारे दिन काम करते रहने में ही सन्तुष्ट रहती है। उसके लिए दाम्पत्य एक सारे सन्तत होने वाला काम है। वह किसी भी बाह्य विषय में दिलचस्पी नहीं लेती। उसका सारा जीवन तथा जीवन का समस्त आकर्षण इसी लिये है कि वह पति की सेवा शुश्रूषा करे तथा पुत्रों को सुखी रखे और उन्हें सब सुविधायें प्रदान करे। इस प्रकार की पत्नी के लिये सौभाग्य की बात होगी, यदि उसका पति भी घर में ही रहने वाला प्राणी हो और अपना सायकाल का समय परिवार के साथ बिताना पसन्द करे। तब ऐसी स्थिति में वह वास्तविक अर्थों में आदर्श संगिनी, उसके जीवन परिधि की केन्द्र बिन्दु और गृहस्थ की मुख्य धुरी बन जाती है, जिसके चारों ओर पारवारिक जीवन चला करता है।

वर्तमान विवाहिता

वर्तमान विवाहिता स्त्री या दूसरे शब्दों में वर्तमान युवती गृहिणी—पत्नी का दूसरा प्रकार है। वह अपने जीवन और घर को सदा समवेत करके चलती है। उसकी दृष्टि में घर केवल दिन भर की थकान मिटाने के लिये एक विश्राम स्थल है। उसका बाह्य जीवन ही प्रधान है। वह एक आदर्श पत्नी और स्नेहमयी माता के कर्तव्यों को पूरा करने की अपेक्षा अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को अधिक महत्ता देती है।

बीच की

पत्नी का तीसरा प्रकार उक्त दोनों प्रकारों का मधुर समन्वय है। इस प्रकार की स्त्री न तो एकदम शान्त और सीमित घरेलू जीवन में ही व्यस्त रहती है और न ही वह पूर्ण स्वतन्त्रता चाहती है। बुद्धिमान् और विदुषी की तरह वह घर के कार्यों को बड़ी व्यवस्था और सुगमता से पूरा करती है। वह वास्तविक अर्थों में जीवन संगिनी होती है। घर के कामों में सतर्क एवं सन्तुष्ट होने पर भी वह सामाजिक कार्यों में क्रियात्मक भाग लेती हुई अपने व्यक्तित्व को भी कायम रखती है। घरेलू निष्क्रियता से शून्य उसकी पत्नीत्व की महत्वाकाक्षायें पति को प्रोत्साहित और प्रबुद्ध करती हैं कि वह सफलता की ओर बढ़े। यदि उसका कोई बाह्य जीवन है तो वह महत्वाकाक्षा के कारण नहीं, किन्तु एक आवश्यकता के रूप में। परन्तु इस सब के बीच उसका दाम्पत्य प्रमुख होता है।

'तितली'

चौथा प्रकार एक दम भिन्न है। इस प्रकार की पत्नियों को 'तितली' कहा जा सकता है। इस प्रकार की स्त्री प्रिय और तन मन को अपनी ओर बलात् खींचने वाली हो सकती है, किन्तु वह चिरस्थायी दाम्पत्य को नहीं बना सकती है। यह विवाह या गृहस्थ को जीवन का एक साहसपूर्ण कार्य समझती है, जिसकी ओर अवकाश के समय आराम के साथ ध्यान देना चाहिये। इसके लिये जीवन एक लम्बी छुट्टी की तरह होता है। वह किसी प्रकार के भी घरेलू उत्तरदायित्व को उठाना नहीं चाहती। परिणाम स्वरूप सौभाग्यवान या अभागे पति को अकेले ही सब उत्तरदायित्वों का भारी बोझ उठाना पड़ता है।

'स्वर्णप्रिया'

पाचवें प्रकार की पत्नी यद्यपि बहुत कम होती हैं, तथापि उनकी स्थिति का स्वतन्त्र रूप से परिगणन आवश्यक है। इन्हें 'स्वर्ण प्रिया' कहा जा सकता है। इस प्रकार की स्त्री के लिए विवाह का अर्थ इतना ही है कि जीवन पर्यन्त के दोनों समय उत्तम पदार्थों के खाने एव अन्य प्रकार के जीवनीय आनन्दों के उपभोग के लिए फ्री पास' मिल जाना चाहिए। यदि सौभाग्य से उसके पति के पास प्रभूत धन राशि है, तब उसे कम करने में वह बिल्कुल भी सकोच नहीं करती है। बिसाती, दूकानदार, कैमिस्ट, कसाई और कुबड़े सब उसको उधार देने वाले प्राणी हैं और वह बड़े सयत भाव से अपने बढ़े चढ़े बिल परेशान पति को चुकाने के लिए दे देती है।

असहयोगिनी

पत्नी का 'असहयोगिनी' स्वरूप सम्भवतः सबसे अधिक अवांछनीय है। सुस्त और बीभत्सरूप में वह पति के व्यापार कार्यों में सदा एक बाधक की तरह बनी रहती है। घरेलू कार्यों में वह बहुत कम दिलचस्पी लेती है। बाहर के कामों से उसे कोई सरोकार नहीं होता। यदि उसका पति उदीयमान है तब उसके यश में वह कोई हिस्सा नहीं बटाती। इस प्रकार की स्त्री को चाहे सब प्रकार की उपभोग की सामग्री दी जाय, उसे रेशम के कपड़ों से ढक दिया जाय, बहुमूल्य आभूषणों और हीरे जवाहरों से अलकृत किया जाय तो भी वह उनके योग्य कभी नहीं बन सकती। इससे वह कुछ लाभ ही उठायगी। वह अपने को अधिकाश समय 'अभागिनी' समझती रहेगी। पति के लिये वह अभाव रूप होती है और घरके काम धन्धोंके लिए एक दम शून्य। इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि वह घर के बाहर अपना मन बहलाव करे। कई स्थानों पर उसकी वैधानिक पत्नी का स्थान कोई अन्य प्राणी ही ग्रहण कर लेता है। सौभाग्य से अधिकाश स्त्रियां जन्मतः ऐसी महत्वाकाक्षी होती हैं, इसलिए पत्नियों का यह प्रकार बहुतायत से नहीं है।

———

आधी दुनियां

नारी क्यों क्रान्तिपथ पर जा रही है

[श्रीमती विद्यावती वर्मा]

★

नारी समाज को पिछली कुछ सदियों से जिन मर्यादाओं, परम्पराओं और रूढ़ियों से जकड़ा गया है, उनके विरुद्ध नारीजागृति की प्रवृत्ति पिछले कुछ वर्षों से चल पड़ी है और कुछ स्त्रियां शिक्षित भी हो गई हैं। आज ऐसी भी स्त्रियां मिल सकती हैं, जो स्वतन्त्रता पूर्वक समाज व देश की सेवा कर रही हैं, लेकिन १००० में दस बीस स्त्रियां यदि पुरुषों के पुराने बन्धनों की शृंखला से मुक्त भी हो जायें तो उस से सम्पूर्ण नारी समाज का क्या उपकार हो सकता है। नारी समाज का भला तो तभी हो सकेगा जब कि हमारे देश की प्रत्येक नारी शिक्षित हो। आज भी जब कि शिक्षा का विस्तार बहुत हो चुका है, अधिकाश बहिनें भोले बच्चों की तरह घर की चार दिवारी के अन्दर के वातावरण में बन्द है। वे नहीं जानतीं कि हमारे देश में क्या बडे २ राजनैतिक परिवर्तन हो रहे हैं और हमारे समाज में विचारों के कैसे२ झकड़ चल रहे हैं। वे अशिक्षित हैं, वे समाचारपत्र नहीं पढ़ सकतीं और न उनमें समझने की ही शक्ति है, जो सुन कर सब समझ सकें। और पुरुष उनको समझाने में अपना दिमाग थकाना नहीं चाहते।

अशिक्षित नारियों की बात यदि छोड़ भी दें, तो भी प्राय. देखा जाता है कि बी० ए० तथा एम० ए० पास लड़कियों की भी दशा विवाह के पश्चात् जेल के एक कैदी के समान हो जाती है। उनका भी मानसिक विकास प्राय विवाहोपरान्त रुक जाता है। गृहस्थी का भारी बोझ, बच्चों का पालन पोषण उनके समस्त विकास में बाधा बन कर खड़ा हो जाता है। मेरा अभिप्राय यह नहीं कि गृहस्थ धर्म से स्त्रियों को नफरत करनी चाहिये परन्तु मेरा कहना तो यह है कि हमारे यहा घरों की जो व्यवस्था है, वह इतनी बोझीली है कि नारी उस बोझ से दब कर अपनी उन्नति कर ही नहीं पाती, उसकी चेतनाशक्ति क्षीण हो जाती है सुबह से शाम तक छोटे २ बच्चों की देख भाल, गृह का समस्त काय केवल उस अकेली स्त्री पर होता है और ऊपर से पतिदेव के अनेकों आक्षेप—आज सब्जी अच्छी नहीं बनी, आज दाल ठीक नहीं है आदि २ उसके हृदय को सदा कंपाते रहते हैं। फिर बताइये वह कैसे करे अपना मानसिक विकास ?

इन्हीं अनेक बन्धनों और समाज की अनेक आलोचनाओं से ऊब कर आज की नारी के हृदय में क्रान्ति की भावनायें उत्पन्न हो रही हैं, क्यों कि वह गृहस्थ धर्म का पूर्णत' पालन करके भी पुरुष समाज की दृष्टि में उपहास का विषय नहीं बनना चाहती। वह चाहती है अपने प्रति सहानुभूति, आदर तथा समानता। अनेक नौजवान लड़कियां अब शादी करना ही पसन्द नहीं करतीं क्यों कि वे इन बन्धनों में फसना नहीं चाहतीं। समाज ने उनके इस निश्चय पर भी अनेक आलोचनायें कीं परन्तु उस मूल कारण को दूर करने की चेष्टा नहीं की। इस के फलस्वरूप आज स्त्री जाति के हृदय में पुरुष वर्ग के प्रति विरोध की भावना उत्पन्न हो गई है। उसका हृदय अपने प्रति किये गये अनेक अत्याचारों से लबालब भर चुका है और अब विस्फोट हो कर सहन शक्ति को त्याग कर क्रान्ति पथ की ओर अग्रसर हो रहा है।

—:o:—

किसी भी राष्ट्र के नागरिकों की राजनैतिक शक्ति जिस प्रकार राष्ट्र की कार्यकारिणी सभा में केन्द्रित होती है, उसी प्रकार केन्द्रीय बैंक में राष्ट्रीय आर्थिक क्रियाएं केन्द्रित रहती हैं। देश की राजनैतिक प्रगति एवं आर्थिक उन्नति के लिए केवल दोनों का सुसंगठित होना ही आवश्यक नहीं, वरन् दोनों में सहयोगपूर्ण पारस्परिक सामंजस्य का होना भी आवश्यक है। यह कहना अधिक स्पष्ट होगा कि राष्ट्र के आर्थिक कल्याण की प्राप्ति के लिए केन्द्रीय बैंक अथवा मुद्रा और साख-नीति राष्ट्रीय पंचायत के हाथ में केवल साधन मात्र हैं। अतः राज्य शासन एवं केन्द्रीय बैंक की नीति में ऐक्य एवं साम्य स्थापित करने के लिए प्रत्येक राष्ट्र प्रयत्नशील है। गत महायुद्ध ने तो इस आवश्यकता को और भी अधिक बल दिया है। प्रत्येक राष्ट्र ने अनुभव प्राप्त किया है कि राष्ट्र की आर्थिक क्रियाओं को जब तक युद्ध की तैयारी में न लगाया जायगा, युद्ध लड़ना असम्भव होगा और यह केन्द्रीय बैंक के सहयोग के बिना नहीं हो सकता। अतः युद्धकाल में अनेक देशों को युद्ध कानूनों के अन्तर्गत केन्द्रीय बैंकों पर सरकारी अधिकार स्थापित करना पड़ा।

यह सरकारी अधिकार केवल युद्ध काल तक ही सीमित नहीं रहा। युद्ध अपने ऐसे पद-चिन्ह छोड़ जाता है कि राष्ट्र के लिए अनेक असाधारण आर्थिक समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। आज सारे राष्ट्र पुनर्निर्माण के कार्य में संलग्न हैं। पुनर्निर्माण के लिए अतुल धनराशि, आर्थिक साधनों के नियमन तथा व्यापक आयोजन की आवश्यकता है। इस व्यापक कार्य के सम्पादन के लिये मुद्रा, साख एवं बैंकों पर सरकारी नियन्त्रण अत्यन्त आवश्यक है। यही कारण है कि न केवल युद्धकाल में, बल्कि युद्धोत्तर-काल में भी अनेक राष्ट्र अपने केन्द्रीय बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर रहे हैं। बैंक आफ इंग्लैण्ड के अधिनियम, १९४६ के अनुसार बैंक आफ इंग्लैण्ड का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। यद्यपि इंग्लैण्ड की मजदूर पार्टी का यह कार्य राजनैतिक बताया जाता है, परन्तु वास्तव में मजदूर पार्टी ने समय की गतिविधि के अनुसार ही यह कार्य किया है। फ्रांस की विधान सभा के निश्चय के अनुसार बैंक आफ फ्रांस का जनवरी, १९४६ से राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इसी प्रकार अर्जेण्टाइन, न्यूजीलैण्ड तथा नेदरलैण्ड में भी केन्द्रीय बैंक को सरकारी बैंक घोषित कर दिया गया।

भारत में केन्द्रीय बैंक के राष्ट्रीयकरण का प्रश्न उतना ही पुराना है, जितना कि रिजर्व बैंक का। जब से केन्द्रीय बैंक

आज की एक समस्या

रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण

[आचार्य भगवतशरण अधोलिया]

के स्थापित करने की चर्चा प्रारंभ हुई, यह सरकारी बैंक हो अथवा हिस्सेदारों का— यह वादविवाद भी उठा। हम पाठकों के सामने उस पुराने वाद-विवाद को फिर उपस्थित करना नहीं चाहते। वह न इच्छित ही है, और न उससे कोई लाभ ही होगा। उसके पीछे जो कारण थे और जिस वातावरण में वह खड़ा हुआ था, वे आज मौजूद नहीं हैं। हां रिजर्व बैंक के युद्धपूर्व तथा युद्धकालीन कार्य के फलस्वरूप जो राष्ट्रीयकरण की मांग उठी है, उसका संक्षेप में इतिहास दे देना उचित ही होगा।

अनुमान-पत्रक की बहस के दौरान में व्यवस्थापिका सभा के सदस्य रिजर्व बैंक के दोषों की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करते रहे परन्तु अधिकृत रूप से सर्वप्रथम गतवर्ष अनुमान-पत्रक की बहस के समय केन्द्रीय व्यवस्थापक सभा की कांग्रेस पार्टी के नेता शरतचन्द्र बोस ने रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण की मांग की थी। बैंक-कानून-मसविदा संतुलन-समिति (सिलेक्ट कमेटी आन बैंकिंग बिल) के कुछ सदस्यों ने भी रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण की मांग की थी। अन्तर्कालीन सरकार के संगठित होते ही श्री मोहनलाल सक्सेना ने रिजर्व बैंक तथा समस्त बैंकों एवं इन्श्योरेन्स कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण के लिए प्रस्ताव पेश किया था, परन्तु यह प्रस्ताव व्यवस्थापिका सभा के सन्मुख नहीं आया। कांग्रेस पार्टी ही नहीं, मुस्लिमलीग पार्टी भी राष्ट्रीयकरण की मांग पर जोर देती रही है। मुस्लिमलीग पार्टी के सदस्य श्री तमीजुद्दीन खां ने गत फरवरी मास के अधिवेशन में रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण का प्रस्ताव रखा। माननीय अर्थ-सदस्य के ऐसा आश्वासन देने पर कि यदि राष्ट्रीयकरण देश के लिए हितकारक समझा गया, तो सरकार तुरन्त ही इस ओर कदम उठाने के लिए तैयार रहेगी, वह प्रस्ताव वापिस ले लिया गया। राष्ट्रीयकरण आवश्यक है या नहीं, इस विवाद का माननीय अर्थसदस्य ने अपने अनुमान-पत्रक के भाषण में रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण करने के निश्चय को घोषित करके समाप्त कर दिया है। राष्ट्रीयकरण के पक्ष तथा विपक्ष में दी गयी दलीलों की हम चर्चा करना आवश्यक नहीं समझते, क्यों कि अर्थ सदस्य की घोषणा करने के पश्चात् प्रश्न समाप्त ही हो जाता है। निम्न पंक्तियों में हम यह बतादेंगे कि राष्ट्रीयकरण क्यों किया गया है और उससे क्या लाभ अपेक्षित हैं।

किसी भी संस्था, के उद्योग अथवा व्यापार को सरकार दो कारणों से हाथ में लेती है—(१) यदि उस से समाज को पूर्ण लाभ न होता हो, जितना उस से अपेक्षित है। (२) उसका कमाया हुआ सारा लाभ राजकोष में लेने के लिए।

रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण में दूसरा कारण लागू नहीं होता, जितना पहला, क्यों कि रिजर्व बैंक के प्रथम दस वर्षों में हिस्सेदारों को १७६ करोड़ रुपये दिये गये और सरकारी खजाने को इसी काल में ४०.४३ करोड़ रुपये प्राप्त हुए। इससे स्पष्ट है कि रिजर्व बैंक द्वारा अर्जित किये हुए लाभ में से बहुत बड़ा भाग राजकोष में हो गया है। अतः लाभप्राप्ति के लिए रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण नहीं किया जा रहा है। वास्तव में रिजर्व बैंक को समाज के अधिकाधिक आर्थिक कल्याण के लिए ही सरकार हस्तगत कर रही है। रिजर्व बैंक के स्थापन से भारत के व्यापारिक समाज, बैंक एवं ग्राम जनता ही रहीं। व्यापारी समाज को आशा थी कि रिजर्व बैंक देश में साख-पत्र-बाजार को बहुत उन्नत करेगा तथा सुसंगठित अवस्था में लाकर उनसे व्यापार तथा उद्योगों के लिए औद्योगिक तथा व्यापारी पूंजी उपलब्ध करेगा। हमें आंकड़े देखकर यह बताने की आवश्यकता नहीं कि इस क्षेत्र में रिजर्व बैंक असफल रहा है। इसी प्रकार बैंकिंग-क्षेत्र में उसने कोई सफलता भी प्राप्त नहीं की। युद्ध काल में अनेक बैंक बरसाती मेंढक की तरह खड़े हो गये। पूंजी संगठन एवं कार्य शैली की दृष्टि से ये नितान्त कमजोर हैं। रिजर्व बैंक इस प्रकार के दोषपूर्ण बैंकिंग-प्रसार को रोकने में सर्वथा असमर्थ रहा है। कृषि-सम्बन्धी अर्थ तथा महाजनी के क्षेत्र में रिजर्व बैंक की असफलता सर्वविदित ही है। परन्तु रिजर्व बैंक ने सबसे बड़ी गल्ती युद्धकाल में भारत सरकार को अनुचित तरीके से राजस्व प्राप्त करने में सहायता देकर की है। स्टर्लिंग-पावनों के संग्रह में भारत का युद्धकालीन शोषण छिपा पड़ा है। यद्यपि रिजर्व बैंक अपनी वैधानिक कठिनाइयों के कारण सरकार की नीति में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने से मजबूर था, परन्तु फिर भी देश के केन्द्रीय बैंक होने के नाते सरकार को चेतावनी देना उसका नैतिक कर्तव्य था। सरकार को युद्ध राजस्व प्राप्त करने में रिजर्व बैंक ने नोटमुद्रण-यन्त्र का ही काम किया। हमें यह विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं कि केन्द्रीय बैंक कोई साधारण बैंक अथवा मुद्रा-प्रचलन की संस्था ही नहीं है, वरन् राष्ट्र के जीवन में आर्थिक-स्थायित्व स्थापित करना तथा राष्ट्र के जीवन स्तर में उत्तरोत्तर वृद्धि करना ही उसकी कसौटी है। उत्तम मुद्रा स्फीति, बढ़ते हुए मूल्य दर, उपभोग सामग्री का अभाव, चोर बाजार और भ्रष्टाचार, राष्ट्र की उत्पादन शक्ति पर पूंजीपतियों का फंदा ये सब रिजर्व बैंक की असफलता तथा निर्बलता के अभेद्य सबूत हैं। हमारे कहने का कोई यह अर्थ नहीं कि केवल रिजर्व बैंक ही इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है, परन्तु हम यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं होती कि इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न करने में उसका सरकार के साथ गठबन्धन अवश्य रहा है।

रिजर्व बैंक की युद्धपूर्व तथा युद्धकालीन असफलताओं के दो ही कारण हो सकते हैं—रिजर्व बैंक की नीति तथा कार्य संचालन में विदेशी सरकार की प्रभुता, दूसरे, रिजर्व बैंक अधिनियम के अन्तर्गत रिजर्व बैंक पर लगी हुई वैधानिक सीमाएं। विदेशी सरकार के प्रभुत्व का अंत जून सन् १९४८ में होने जा रहा

[शेष पृष्ठ २४ पर]

हिन्दी वाक् प्रतियोगिता के विजयी छात्र

काशी में ब्र० सत्यकाम और ब्र० विनय

प्रयाग में ब्र० सुरेन्द्र और ब्र० रघुनाथ

काशी और प्रयाग में होने वाले अन्तर्विश्वविद्यालय हिन्दी वाक्प्रतियोगिता में गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के विद्यार्थियों ने विजय प्राप्त की है। काशी की भाषण प्रतियोगिता में विभिन्न शिक्षा संस्थाओं के बारह वक्ताओं में भी ब्र० सत्यकाम को सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार मिला है।

डाक्टर की फीस

[श्री रश्मिकुमार]

'रजिया! दरवाजा खोलो, रजिया!! अरे जल्दी खोलो देखो तुम्हारा अहमद दोजख की पीड़ा से मरा जा रहा है।' अहमद हाफता हुआ अपने दाए हाथ को सीने पर रक्खे हुए द्वार के बाहर खड़ा हो गया। दरवाजा खुला। 'हाय अल्लाह!' रजिया के मुंह से चीख निकल गई।

'तुम्हारे ये कपड़े खून से-क्यों रंगे हुये हैं? जल्द बतलाइये, क्या हुआ?'

'रजिया, मेरी प्यारी रजिया, मुझे बहुत अफसोस है कि मैं तुम्हें सुखी नहीं रख सका, हमारा निकाह हुए अभी दो साल भी नहीं हुए कि मैं तुम्हें इस दुनिया में अकेला बेजा ''।

'खुदा के वास्ते ऐसा न कहिए मेरे सरताज!' रजिया ने अपने हाथ से अहमद का मुंह बन्द करते हुए रोकर कहा 'रजिया, खुदा को यही मजूर था। ऱ्हा तो, नहीं तो कल सूरज निकलने से पहले तुम देखती इस दिल्ली पर जहा कि हमारे पुरखाओं ने सैंकड़ों साल तक राज किया था मुसलमानों का कब्जा हो गया होता। पर रजिया सरकार को सब मालूम हो गया। हमारे बहुत से आदमी पकड़े गये, बहुत जोर से दंगा हो रहा है आज शहर में। भागते भागते भी एक काफिर ने सीने में छुरा भोंक दिया। रजिया, अब न बचूंगा दर्द के मारे जान निकली जा रही है। या खुदा काफिर .... प्यारी रजिया ....'

'मेरे सरताज' रजिया दहाड़ मार कर अहमद पर गिर पड़ी। 'रजिया...।' रजिया के मुख पर आशा की एक किरण घने बादलों में चमकती हुई विद्युत् की तरह चमक पड़ी और फिर घोर अन्धकार रजिया ने नज्ज देखी। वह चल रही थी, पर अहमद बेहोश पड़ा था। खून अब भी छाती से बह रहा था। रात्री के बारह बजे का समय, दिल्ली में कई इमारतें जल रहीं थीं। लपटें चाद को चूमने को लालायित हो रही थीं। शायद बादलों को यह सब नहीं था, उसी समय बादल गरजने लगे, बिजली चमकने लगी, बड़ी बड़ी बूंदें पड़ने लगीं। रजिया के जीवन मरण का प्रश्न था। नौकर को पास वाले हकीम जी को बुलाने भेजा। पर नौकर खाली आया। हकीम जी ने अपनी अयोग्यता प्रकट कर दी थी। रजिया की रही सही आशा भी जाती रही। 'दुश्मन, का तो भय्या, दिनेश का घर जानता है न? उन्हें जाकर बुला ला. कहना जितना भी मागोगे उतना ही दे देंगे पर अपनी एक बहन पर रहम खाकर आजाइये।'

'बीबी जी, मैं आपकी नौकरी ही करता हू, अपने को बेच नही दिया है। ऐसी हालत में जबकि शहर में दंगा हो रहा है कैसे जा सकता हू मैं? फिर एक काफिर के घर, क्या वह मुझको जीता छोड़ेगा? यह मुझसे नही हो सकता। मुआफ कीजियेगा।'

'मुआफ कीजियेगा, अहसान फरामोश, सारी जिन्दगी इस घर में गुजार दी, शर्म नहीं आती अपने छोटे मालिक को इस तरह बेबस देख कर' घृणा मिश्रित क्रोध के साथ रजिया बोली! वह घर से बाहर निकल गई अंधेरी सुनसान सड़क पर वर्षा हो रही थी। बादल गरज रहे थे, बीच बीच में बिजली चमक जाती पर रजिया चली जा रही थी तीव्र गति से।

'सुनते हैं आप, कोई दरवाजा खटखटा रहा है! इन लोगों को तो रात में भी नहीं, दिन रात दिक करते रहते हैं। देखिये तो सही कौन है! एक दम से दरवाजा नहीं खोल दीजियेगा, शहर की हालत बहुत खराब है। कहीं कोई . . .' दिनेश की पत्नी कमला ने अपने पलंग पर से लेटे लेटे कहा। दिनेश दरवाजे पर गया।

'कहिए, कौन है?' उसने प्रश्न किया।'

'मैं हू एक बदनसीब औरत।' दिनेश ने दरवाजा खोला तो देखा कि एक औरत काला रेशमी बुर्का ओढ़े खड़ी थी। बुरका बिल्कुल भीग चुका था पानी फर्श पर टपक रहा था। 'कहिए क्या बात है?' "डाक्टर साहब, आपसे अपने सुहाग की भीख मागती हू। रहम खाकर मेरे घर तक चलिये। मेरे शौहर के सीने में किसी ने छुरा भोंक दिया। बेहोश पड़े हैं, उनकी जान बचा दीजिये। डाक्टर साहब, मेरा इस दुनिया में और कोई नहीं है। मै जिन्दगी भर आपके लिये खुदा से दुआ मागा करूंगी। अपनी बहन पर रहम खाओ।'

'देखो बहन!' दिनेश की पत्नी जो वहा पहुंच चुकी थी बोली 'एक तो रात अंधेरी, ऊपर से वर्षा हो रही है, फिर तुम जानती ही हो शहर में हिन्दु मुस्लिम दंगा कितने जोर पर है। ऐसी हालत में ये कभी भी'—

'कमला! ये क्या कहती हो? डाक्टर के लिये हिन्दु मुसलमान सब बराबर हैं, मेरा कर्तव्य प्राणिमात्र की सेवा करना है, अगर उसके लिए मुझे अपनी जान भी देनी पड़े तो मैं हसते हसते दे दूंगा परन्तु अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटूंगा। मुझे अभी जाना ही होगा। मेरे बैग में आवश्यक सामान रख दो। आप अभी ठहरिये मैं अभी तय्यार होता हूं। अरे हा, कमला! इनके कपड़े भीग गये इन्हें कपड़े बदलने के लिए दे दो।'

'जी, बस रहने दीजिये मैं ऐसे ही अच्छी हू। खुदा के वास्ते जल्द कीजिये कहीं उनकी तबियत ज्यादा खराब न हो जाय!' सामान लेकर दिनेश रजिया के पीछे पीछे चल दिया।

'आपका मकान कहा है?'

'जी बस थोड़ी सी ही दूर है!'

'आप यहा कब से रहती हैं?'

'जी मुझे तो यहा आये अभी दो बरस ही हुए हैं। उससे पहले हम लखनऊ में रहते थे।'

'हम से आपका मतलब क्या आप और आपके शौहर से है?'

'जी, जी नहीं मेरा मतलब अब्बा अम्मी से है।'

'मुआफ कीजिएगा, अगर मैं गलती नहीं कर रहा तो शायद मैं आपको पहचानता हू। आपका नाम रजिया तो नहीं है?'

'जी आपने ठीक पहिचाना, मैं वही रजिया हू जो कि लखनऊ में तुम्हारे साथ बी० एस० सी० में पढ़ती थी।'

दिनेश के सामने सम्पूर्ण घटनाएं चित्रपट की भांति आने लगीं। वह चंचल रजिया जो कि कौलेज में अपनी सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध थी और इस दुखी रजिया में कितना अन्तर था? एक बार रजिया की ओर देखकर दिनेश सिहर उठा, आज वह सुन्दरता की प्रतिमा उसके चार कदम आगे चल रही थी।

पीछे पीछे दिनेश, भावनाओं से घिरा हुआ चला जा रहा था। अगर उसका पति उनके घर पहुंचने से पहले ही... फिर रजिया का क्या होगा? उसका इस दुनिया में कौन रह जायगा? दिनेश, वही रजिया जो कालेज के आकर्षण का विषय थी आज तेरे इतने समीप है। उसका तेरे पर इतना विश्वास कि मध्य रात्रि में भी सहायता के लिये तेरे पास आना क्या पर्याप्त नहीं? तूने जिसकी प्रतिमा अपने हृदय मन्दिर में स्थापत की थी वह देख तेरे कितने पास पास चल रही है! डाक्टर साहब, आपसे अपने सुहाग की भीख मागती हूं। मेरा इस दुनिया में कोई नहीं, मैं जिन्दगी भर आपके लिए खुदा से दुआ मागा करूंगी। अपनी बहन पर रहम खाओ। बहन, ये नहीं हो सकता दिनेश, बहन तेरे सामने पल्ला पसार कर अपने सुहाग की भीख माग रही है और तू अपने आदर्श से गिरा जा रहा है! उसके पति की जान बचानी ही होगी, चाहे अपनी जान ही तुझे क्यों न देनी पड़े। दिनेश इन्हीं विचारों में आवेश में आकर अंधेरी नीरवता को भंग करता हुआ चिल्ला पड़ा 'यह नहीं हो सकता— उसकी जान बचानी ही होगी किसी भी मूल्य पर।'

'क्या नहीं हो सकता दिनेश? तुम्हें ये क्या हो गया?'

'कुछ नहीं, कुछ नही, अरे तुम्हारा घर और कितना दूर है?'

'जल्दी चलो कहीं पहुँचने से पहले हालत ज्यादा खराब न हो जाय। वर्षा भी तेजी से हो रही है!'

दोनों तीव्रता से चलने लगे।

'रजिया!' अहमद ने आख खोलते हुए कहा।

'मेरे सरताज! अब कैसी तबियत है?'

'बहुत आराम मिल रहा है। रजिया, ये साहब कौन हैं!'

'खुदा का शुक्रिया अदा करो जिसने कि आपकी जान बचाने के लिये इनको भेजा है। ये इन्सान नहीं फरिश्ते हैं। इन्होंने ही आपकी जान बचाई है। आपका नाम है डा० दिनेश चन्द्र।'

'या खुदा, तेरी कुदरत में अभी भी ऐसे इन्सान हैं!

'अगर ऐसे ऐसे इन्सान न होते तो इस दुनिया में शैतानों की सल्तनत कभी की कायम हो गयी होती। आज हम मजहब के पीछे अन्धे हो गये और देश को बरबाद करने पर तुल गये। तेरी पाक कुदरत को हमने नापाक कर दिया।'

इतने ही में घर के बाहर शोर सुनाई दिया। रजिया चिल्ला पड़ी 'दिनेश भय्या तुम अन्दर चलकर छिप जाओ, कहीं ये मजहब के पीछे पागल लोग कुछ कर न बैठें'!

पर कुछ मुसलमान लाठी छुरे लिये हुए घर में घुस चुके थे। एक आगे बढ़कर बोला, देखते क्या हो काफिर बैठा हुआ है!'

'खबर दार...' लेटे लेटे अहमद चिल्ला पड़ा।'

'अगर किसी ने भी आगे बढ़ने की

[शेष पृष्ठ २४ पर]

बरमा में भी स्वाधीनता का सूर्य चमक रहा है

सम्पूर्ण बरमा पर १८८६ म अंग्रेजों का अधिकार हुआ था और अब ४ जनवरी ४८ को वह स्वतन्त्र हो रहा है। वह परतन्त्रता के पाश से कैसे निकला, इसके लिए उसने जापान व ब्रिटेन जैसी साम्राज्यवादी शक्तियों का आश्रय कैसे लिया, बरमी नेताओं का पारस्परिक संघर्ष कैसे हुआ, इत्यादि का परिचय इस लेख में देखिये।

नवीन बरमा के निर्माता और प्रधानमन्त्री

स्व० श्री आंगसान

१८२५ ई० तक बर्मा पूर्णतः स्वतन्त्र था, जब कि भारत गुलामी की कड़ियों में बन्ध चुका था। सर्व प्रथम १८२६ ई० के युद्ध में अंग्रेजों ने बर्मा के टेनासरिम नामक प्रान्त पर कब्जा किया। बर्मा के पतन की कहानी यहीं से शुरू होती है। टेनासरिम में अंग्रेजों के पाव तो जम ही गये, फिर शेष हिस्सों पर भी कब्जा करने की कोशिशें चलती रहीं। २५ वर्षों बाद १८५२ ई० में फिर लड़ाई हुई। इस द्वितीय युद्ध में बर्मा का बहुत बड़ा दक्षिणी हिस्सा अंग्रेजों के हाथ आया। १८५३ ई० में उत्तरी प्रातों पर भी पंजा बैठा दिया। किन्तु, अभी बर्मा का बहुत बड़ा हिस्सा स्वतन्त्र ही था। दाव पेंच चलते हे कूट नीति के बल पर बर्मा को फिर तृतीय युद्ध में घसीटा गया। अंग्रेजों की नीति काम कर गयी। इस तृतीय युद्ध के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों को शेष हिस्सों के साथ मडाले भी मिल गया और वहां अन्तिम राजा थिवा को सिंहासन च्युत भी होना पड़ा। इस तरह १८८६ ई० तक सम्पूर्ण बर्मा अंग्रेजों के चगुल म आ गया।

बर्मा में अभी भी ऐसे व्यक्ति ढूंढने पर मिल सकते हैं, जिन्होंने राजा थिवा को सिंहासन च्युत होते देखा है।

थिवा को सिंहासन च्युत होने के समय बर्मा की जनता को आशा थी कि अंग्रेज फिर किसी बर्मी को राजा बना कर उसे शासन भार सौंप देंगे। अन्यायी थिवा की जगह दूसरा न्यायी राजा गद्दी पर बैठेगा और वे सुख पूर्वक रह सकेंगे। किन्तु, जब अंग्रेजों ने किसी बर्मी को राजा न बनाया तो जनता में विद्रोह की लहर फैलने लगी। बर्मियों ने अंग्रेजी सत्ता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और बगावत का झण्डा उठाया। किन्तु अंग्रेजों की सगठित नव जाग्रत शक्ति के सामने बर्मा का वह असंगठित स्वातन्त्र्य संग्राम सफल न हो सका। अंग्रेजों ने बड़ी क्रूरता के साथ उस विद्रोह का दमन किया। उस विद्रोह के संचालकों को अंग्रेजों ने डाकू और लुटेरा घोषित किया। विद्रोह तत्काल दब गया और एशिया के दूसरे देशों की तरह बर्मा निवासियों का भी विश्वास हो चला कि यूरोप वासी अजेय हैं।

सयोग वश बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में एशिया के छोटे से देश जापान ने बृहत्-काय रूस को पछाड़ दिया। जापान की इस असम्भावित विजय ने एशिया के गुलाम मुल्कों में नई जान डाल दी। एशिया वासियों की यह धारणा कि यूरोप वासी अजेय हैं, दूर हो गयी। विदेशी शासन के विरुद्ध एशिया के प्रायः सभी गुलाम मुल्कों ने बगावत की। इस घटना से बर्मा भी प्रभावित हुआ। उसने भी अंग्रेजों के विरुद्ध अपने स्वातन्त्र्य सग्राम का मोर्चा कायम करने का निश्चय किया। १९०८ ई० में स्थापित यग मेन्स बुद्धिस्ट एसोसियेशन नामक सस्था उसी निश्चय का परिणाम थी।

इस सस्था का उद्देश्य आरम्भ काल में सिर्फ समाज सेवा और धर्मोन्नति ही था, किन्तु कुछ ही दिनों में इसका मुख्य उद्देश्य राजनीति ही बन गया। देश में राजनीतिक जागरण पैदा करने में संस्था ने भरपूर हाथ बंटाया। माटेगूचेम्स-फोर्ड सुधार के पहले तक बर्मा के सभी राजनीतिक पुरुष एक साथ मिलकर काम करते रहे। किन्तु जब मोटेगू चेम्स फोर्ड सुधार के स्वीकार करने की बात देश के सामने आयी तो उनमें दो दल हो गये पुराने बुर्जुआ वर्ग के राजनीतिज्ञ उपर्युक्त सुधार स्वीकार कर सरकार के साथ सहयोग करने के पक्ष में थे, दूसरी ओर नये खयाल के नौजवान राजनीतिज्ञ उसका बहिष्कार कर और भी सुधार करने के लिये सरकार को लाचार करने के पक्ष में थे। दोनों अपने २ सिद्धान्त पर अटल रहे। अन्त में नये खयाल के नौजवानों ने यंगमेन्स बुद्धिस्ट पार्टी से अलग होकर एक नई पार्टी बनाई। १९२३ ई० में जब माटेगू चेम्स-फोर्ड सुधार देश में लागू किया तो नौजवानों की नयी पार्टी में भी दो दल हो गये। उनमें कुछ ऐसे व्यक्ति निकल आये, जो उक्त सुधार का स्वागत करने के पक्ष में थे। फलत: उस नयी पार्टी में भी एक नयी पार्टी पिपुल्स पार्टी नाम स्थापित हुई। इस पार्टी के सदस्यों ने सुधार में हाथ बटाया।

कुछ साल बाद ब्रिटिश कूटनीति के कारण भारत से बर्मा का सम्बन्ध विच्छेद का प्रश्न जोरों से उठने लगा और उसी प्रश्न पर वहां के राजनीतिज्ञ उलझ पड़े। इस प्रश्न के सामने उनके स्वातन्त्र्य सग्राम का प्रश्न पीछे पड़ गया।

शासन-सुविधा के विचार से अंग्रेजों ने बर्मा को भारत का ही एक प्रान्त बना डाला था। भारत के वायसराय के आदेशानुसार ही वहा की शासन व्यवस्था चलती थी। जब शासन व्यवस्था चलाने के लिये बर्मा में पढ़े लिखे व्यक्तियों की जरूरत हुई तब भारत के पढ़े लिखे व्यक्तियों के लिये अच्छा सुअवसर मिला और बर्मा में काफी सख्या में आये। सिर्फ नौकरी पेशे वाले ही नहीं आये, उनके साथ-साथ मारवाड़ी, बिहारी, यू० पी० आदि जगहों के व्यक्ति मजदूरी और व्यापार करने के लिये दल व दल चले आये। इस तरह बर्मा के सभी कार्य क्षेत्रों में भारतीयों का बोल बाला हो उठा। आर्थिक क्षेत्र की बागडोर भारतीयों के हाथ में आगयी। केवल आर्थिक क्षेत्र ही नहीं, वहा की प्राकृतिक निधियों पर भी भारतीयों का बहुत कुछ अधिकार हो गया। धान की अच्छी अच्छी जमीनें भी भारतीयों के हाथ आ गई। गरीब बर्मियों और धनी हिन्दुस्तानियों के बीच विभेद और शोषक तथा शोषित की भयंकर विषमता कायम हो गयी। बर्मा वाले हिन्दुस्तानियों को सदेह की नजर से देखने लगे। अंग्रेज भी यही चाहता था कि भारत के स्वतन्त्र होने पर भी बर्मा उसी के आधीन रहे। बरमी राजनीतिज्ञों ने इस चाल में आकर बर्मा को भारत से अलग करने का आन्दोलन शुरु किया। इस प्रश्न पर भी वहां के राजनीतिज्ञों के दो मत थे इन्हीं सब उलझनों के कारण बर्मा की राजनीतिक प्रगति एक लम्बे अरसे तक रुकी सी रही।

१९३० में जब भारत का स्वातन्त्र्य आन्दोलन जोरों पर आ गया तब बर्मा की राजनीतिक प्रगति में फिर थोड़ी सी जान आ गई। बिखरी राजनीतिक शक्तियां थाकिन पार्टी के रूप में फिर एकत्रित हुईं। १९३१ में थाकिन पार्टी का जन्म हुआ। १९३५ ई० के शासन सुधार के अनुसार बर्मा भारत से अलग कर दिया गया और वहा बर्मा का मन्त्रि मण्डल शासन करने लगा किन्तु १९३९ में बर्मा का मन्त्रि मण्डल भंग हो गया और उसकी जगह पर यू पू ने नया मन्त्री मण्डल का सगठन किया। यूसा भी इस नये मन्त्रि मण्डल में सम्मिलित थे। १९४० ई० में यूसा ने भी अपनी नयी पार्टी मियोचिट पार्टी का सगठन किया। उस पार्टी के सगठन के आधार पर यूसा कुछ ही दिनों में बर्मा की राजनीति में चमक उठा। भूतपूर्व प्रधानमन्त्री बा मा जापान से मिले

बरमा के लोकप्रिय नेता

बरमा के लोकप्रिय प्रधानमन्त्री श्री थाकिननू, विदेश मन्त्री यू तिनतुत, हिन्द में बरमी हाई कमिश्नर उपेकिन।

आंगसान की हत्या के अभियुक्त

एक राजनीतिक दल के नेता यूसा

रहने के अभियोग में जेल में बन्द कर दिये गये। कुछ ही दिनों में बामा निकल भागे और शान रियासत में चले गये।

कुछ समय बाद जापान भी युद्ध के मैदान में उतर पड़ा और आंधी की तरह सारे दक्षिणी पूर्वी एशिया पर छा गया। यूसा ने देखा, मौका अच्छा है और वह सन्धि का संदेश लेकर लन्दन चल पड़ा। ब्रिटिश मन्त्री मण्डल के सामने उसने मांग पेश की कि युद्ध में सहायता करने के बदले युद्ध समाप्ति के बाद बामा को निजी सरकार कायम करने की स्वाधीनता दी जाय। किन्तु अनुदार दल की ब्रिटिश सरकार ने यूसा की मांग को स्वीकार नहीं किया। यूसा की मांग को अस्वीकार तो कर दिया किन्तु इससे ब्रिटिश सरकार की चिन्ता बढ़ गयी। उसे भय हो गया कि कहीं यूसा बर्मा पहुंच कर युद्ध में तटस्थता न घोषित कर दे। इसी भय से प्रेरित होकर बर्मा लौटते समय रास्ते में ही होनोलूलू में ब्रिटिश सरकार ने यूसा को गिरफ्तार कर युगांडा में नजर बन्द कर रख छोड़ा।

एक ओर तो ब्रिटिश सरकार अपना जाल फैला रही थी, दूसरी ओर बर्मा का तरुण नेता यू आंगसान राजनीतिक हलचलों का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन कर रहा था। ब्रिटिश सरकार की लड़खड़ाती स्थिति, जापान की उमड़ती शक्ति, देश की उठती जागृति सब मिलकर यू आंगसान के हृदय में उथल-पुथल मचाने लगे।

यू आंगसान ने भी सोचा मौका अच्छा है। ब्रिटिश सरकार की लड़खड़ाती स्थिति पर एक धक्का दिया जाय तो उसके साम्राज्य का महल ढहते देर नहीं लगेगी। उसने निश्चय किया कि जापानकी सहायता प्राप्त करके ब्रिटिश सरकारको खदेड़ दिया जाय। १९४१ ई० के प्रारम्भ में मौत से भी खेल जाने वाले कुछ जानिसार साथियों के साथ यू आंगसान जापान जा पहुंचा। जापान सरकार से समझौते की बातचीत हुई। समझौता होने में विशेष अड़चन नहीं पड़ी। दोनों के दोनों अपनी अपनी गोटियां एक ही बार लाल कर लेना चाहते थे। यू आंगसान ने देखा, प्यारा स्वदेश आजाद हो रहा है। जापान सरकार ने देखा आसानी पूर्वक बर्मा मिल रहा है। फिर देर क्यों। आजाद हिंद की देखा देखी आजाद बर्मा फौज का संगठन हुआ। इस फौज ने जापानियों की सहायता से ब्रिटिश साम्राज्य को खतम कर दिया। बर्मा वाले बहुत प्रसन्न हुए कि आखिर आजाद हो गये। किन्तु जापानियों की साम्राज्यवादी मनोवृत्ति ने कुछ ही दिनों में उनकी आशा धूलि में मिला दी। बरमियों के स्वतन्त्र बर्मी सरकार का बार बार अनुरोध करने पर एक पुतली सरकार १९४३ ई० में जापान के इशारे पर कायम हुई और फिर जापान ही के इशारे पर मित्रराष्ट्र के विरुद्ध युद्ध घोषणा की गई। एक ओर जापान अपनी जड़ मजबूत करने की कोशिश कर रहा था दूसरी ओर यू आंगसान भी जापान से बर्मा को मुक्त करने की चिन्ता में लीन था। जापानियों द्वारा निर्मित बामा की पुतली सरकार देश में शासन व्यवस्था कायम रखने में असफल सिद्ध हुई। युद्ध के फल स्वरूप बर्मा वासियों की गरीबी आखिरी सीमा पर पहुंच गयी। युद्ध जनित बीमारियां और महंगी पराकाष्ठा पर आ चुकी थीं। इन कारणों से जापानियों से बर्मा की जनता क्षुब्ध हो चली थी। परिस्थिति अनुकूल थी। पश्चिम से अंग्रेजी फौज बढ़ती चली आ रही थी। आंगसान भी, जापानियों द्वारा नव शिक्षित बर्मी सेना लेकर अंग्रेजों का सामना करने रंगून से प्रोम की ओर चला। उस समय तक जापानियों को आंगसान की नीयत का पता न चला था। उन्होंने बहुत विश्वास के साथ आंगसान की फौज को बिदाई दी। आंगसान भी जापानियों को विश्वास दिलाकर प्रोम की ओर बढ़ा।

आंगसान का चातुर्य

प्रोम पहुंच कर आंगसान की फौज इरावती पार कर थायरमायो के क्षेत्र में पहुंची। इस क्षेत्र में जापानियों की शक्ति बहुत क्षीण थी। अतः समस्त जापानी आफिसरों को कत्ल कर स्वतन्त्र बर्मा सरकार की घोषणा की गयी। किन्तु केवल स्वतन्त्र सरकार की घोषणा कर देने से ही काम नहीं चलना था। अभी समस्त बर्मा तो जापानियों के चंगुलमें ही फंसा था। अत समस्त बर्मी फौज छोटी-छोटी टुकड़ियों में बांट दी गयी और गुरिल्ला-युद्ध छेड़दिया गया। इस देश व्यापी गुरिल्ला युद्ध के कारण हजारों जापानियों को प्राण गंवाने पड़े और उनका फौजी संगठन भी तितर बितर हो गया।

उधर मित्रराष्ट्र की फौज भी जापानियों को कुचलती आगे बढ़ रही थी। आंगसान ने ब्रिटिश फौज से मिल कर संयुक्त मोर्चा कायम कर जापानियों को खदेड़ दिया। १९४५ ई० में बर्मा से जापानियों की छाया मिट गयी।

जापानियों की छाया तो मिट गयी, किन्तु अंग्रेजों की छाया फिर छा गयी। किन्तु बर्मा वासी तो एक बार आजादी भोग चुके थे। फिर से गुलामी की कड़ी में बंध जाना उन्हें बहुत अखरा। आंगसान को भी गुलाम बना रहना पसन्द न था। ब्रिटिश सरकार की हुकूमत मिटाने के लिये फिर उसने एक नयी संस्था बनायी। इस संस्था का नाम रखा 'साम्राज्य-विरोधी जन स्वातन्त्र्य संघ।' जनता ने बड़े उत्साह से उसमें भाग लिया। इस दल के साथ साथ जन-स्वयं सेवक दल भी संगठित किया गया। देश के कोने कोने के किसान युवक इसमें सम्मिलित हो गये। उन लोगों के पास युद्ध काल के शस्त्र तो थे ही, उन शस्त्रों के सहारे व ब्रिटिश सरकार का विरोध करने लगे। जगह-जगह रैलियां होने लगीं, हड़तालों का सिलसिला बढ़ा। सारे बर्मा में उथल पुथल सी मच गयी। सरकार ने भी दमन का आश्रय लिया। २२००० बर्मी युवक जेलों में ठूंस दिये गये। सभा, जुलूस, रैलियों और पत्रों पर रोक लगा दी गयी। किन्तु दमन कारगर न हो सका। परिस्थिति अत्यधिक गंभीर हो उठी। अन्त में लाचार हो कर ब्रिटिश दक्षिणी पूर्वी सेना के तात्कालिक कमान्डर माउंटबेटन परिस्थिति सुलझाने बर्मा आये। आंगसान को मन्त्री पद स्वीकार करने के लिये कहा गया। किन्तु आंगसान तो राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के सिवा और किसी भी शर्त पर समझौता करने को तैयार नहीं थे। उनकी सुसंगठित शक्ति के सामने ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा। फलतः अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई और यू आंगसान उपाध्यक्ष बनाये गये।

अस्थायी सरकार बर्मा का लक्ष्य नहीं था, उसका लक्ष्य था पूर्ण आजादी। राष्ट्रीय सरकार की बागडोर हाथ में आते ही साम्राज्य विरोधी जन स्वातन्त्र्य संघ की ओर से चुनौती दी गई कि १९४७ ई० की ३१ जनवरी तक पूर्ण अधिकार प्राप्त स्वतन्त्र सरकार स्थापित की जाय और १२ महीनों के भीतर अंग्रेज पूर्णतः बर्मा छोड़ दें। स्वतन्त्र बर्मा का विधान बालिगमताधिकार द्वारा विधान-परिषद की स्थापना करने की सुविधा दी जाय।

राष्ट्रीय अस्थायी सरकार की स्थापना और उपयुक्त चुनौती ने बर्मा में और इंगलैण्ड में एक अजीब परिस्थिति पैदा कर दी। कम्यूनिस्ट पार्टी जो अब तक जन साम्राज्य विरोधी संघ में सम्मिलित थी संयुक्त मोर्चा तोड़कर अस्थायी सरकार के विरुद्ध खुले आम कार्यवाही करने लगी। दूसरी ओर ब्रिटिश राजनीतिज्ञों, बर्मा स्थित व्यापारी अंग्रेजों, तथा बर्मा कम्यूनिस्टों ने मिल कर आंगसान के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की थी उसे फासिस्ट, लुटेरा, तानाशाह आदि कह कर बदनाम करने की कोशिश की। किन्तु ब्रिटिश सरकार आंगसान से परिचित थी उसे आग से खेलने का हौसला नहीं था। आंगसान भी अपनी मांग पर दृढ़ता पूर्वक अड़ा रहा। सभी विरोधी कार्रवाइयों का सामना करता गया। अन्त में कम्युनिस्ट पार्टी तथा सरकार दोनों को झुकना पड़ा। बहुत सी मांगे स्वीकार कर ली गईं और विधान परिषद बनाने की घोषणा की गई।

आंगसान की विरोधी पार्टियों ने विधान परिषद के चुनाव में खुल कर अपना प्रचार किया। जब चुनाव का नतीजा मालूम हुआ तो साम्राज्य विरोधी संघ की सर्वप्रियता और नेतृत्व सभी को स्वीकार करना पड़ा।

पूर्ण स्वतन्त्रता

एक ओर तो बर्मा आंगसान के नेतृत्व में द्रुत गति से स्वाधीनता की ओर कदम बढ़ा रहा था दूसरी ओर उस के विरोधी अड़ंगे लगाते रहे। फिर भी विधान परिषद का काम चलता रहा। आजाद बर्मा प्रजातन्त्र की रूप रेखा खींची जाने लगी। सहसा १९ जुलाई को कुछ देशद्रोहियों ने बर्मी सरकार के मन्त्री मण्डल पर भीषण आक्रमण कर आंगसान के साथ ६ मन्त्रियों को गोली के घाट उतार दिया। बर्मा को इनकी मृत्यु से भीषण क्षति हुई फिर भी आजादी की लड़ाई बन्द न हुई। साम्राज्य विरोधी जन संघ के दूसरे कर्णधार आंगसान के चरण चिन्ह पर कदम बढ़ाते गये। बर्मियों की दृढ़ता के सामने ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा। फलतः पिछले दिनों ब्रिटिश मन्त्री मण्डल और बर्मा के प्रधान मन्त्री के बीच एक समझौते में तय किया गया कि ४ जनवरी १९४८ को बर्मा पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित कर दिया जायगा। आज बर्मा स्वतन्त्र है।

स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा

ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा,
भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा,
इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १॥) रुपया।

मैनेजर—

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

श्रीमती बीसेन्ट द्वारा प्रकल्पित 'जगद् गुरु' श्रीकृष्णमूर्ति

१९४७ का लिया गया चित्र   २० वर्ष पूर्व का चित्र

आज से करीब २०-२५ वर्ष पूर्व श्रीमती एनी बेसेण्ट ने 'आर्डर श्राफ स्टार इन दी ईस्ट' संस्था के द्वारा आज के शिक्षित संसार को नये जगद् गुरु के अवतरण का निश्वास दिलाने की कोशिश की थी। नये जगद् गुरु का अत्यन्त सतर्कता पूर्वक निर्माण भी किया जा रहा था। लेकिन बड़े बड़े पढ़े लिखों को भ्रम में डालने का यह षड्यन्त्र अचानक टूट गया और इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह कि जगद् गुरु बनाये जाने वाले श्रीकृष्णमूर्ति ने स्वयं ही संसार को सूचना दी कि वे जगद्गुरु न बनेंगे।

२०वीं सदीमें 'जगद्गुरु' के अवतरण की योजना

[श्री शिवनारायण]

आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व जब योरोप में पहला महायुद्ध लड़ा जा रहा था एक इंजिनीयर जो कि अभी २ अपनी नौकरी से रिटायर हुए थे, कुछ समय एकान्त में व्यतीत करने के लिए अदयार की थियासॉफिकल सोसायटी में सपरिवार रहने लगे। वह अपने आप भी थियासॉफी में विश्वास रखते थे, वह वहां रह कर उसका अध्ययन भी करना चाहते थे। उनके दो लड़के थे, बड़े का नाम कृष्ण मूर्ति और छोटे का नाम नित्यानन्द था। यह दोनों बच्चे अति सुन्दर और प्रिय मालूम होते थे। बड़ा लड़का कृष्णमूर्ति, श्री सी० डबल्यु० लैड बीटर को, जो श्रीमती एनीबेसेण्ट के बड़े मित्र और थियासोफी के बड़े कार्य कर्ता भी थे, बहुत भला और प्रभावशाली मालूम हुआ। उन्होंने इसके सम्बन्ध में श्रीमती एनीबीसेन्ट से भी बात की। शीघ्र ही दोनों बच्चों को एनी बीसेण्ट ने अपने संरक्षण में ले लिया और बाद में दोनों को उन्होंने शिक्षा के लिये इङ्गलैण्ड भेज दिया।

उन बच्चों के पिता ने पहले तो इन दोनों बच्चों को श्रीमती एनीबीसेन्ट को सौंप दिया था, परन्तु बाद में अपनी कुछ मांगें पूरी न होने पर उन्होंने अपना विचार बदल लिया और अपने बच्चे वापस लेने के लिये मद्रास हाईकोर्ट में मुकदमा भी दायर कर दिया। चिर काल तक झगड़ने के पश्चात् इसमें उनकी जीत तो हो गई, परन्तु इस फैसले के विरुद्ध प्रीवी कौंसिल में अपील करने पर एनी बीसेन्ट जीत गईं। इसके पश्चात शायद दोनों भाइयों को अपने माता पिता के दर्शन प्राप्त नहीं हुए। इसी प्रसंग में श्रीमती एनीबीसेण्ट के विरुद्ध एक वातावरण भी देश में फैल गया, लेकिन वह शीघ्र ही शान्त हो गया। इङ्गलैण्ड में उन बच्चों के लिये प्रतिभाशाली अध्यापक रखे गए। इनके सर्वांगीण शिक्षण और बौद्धिक विकास का प्रत्येक सम्भव प्रयत्न किया गया। नाच इत्यादि की भी इन्हें शिक्षा दी गई और उनकी शारीरिक उन्नति की ओर भी पूरा ध्यान दिया गया। टैनिस और क्रिकेट सीखने के लिये भी विशेष शिक्षक रखे गए थे। अर्थात् अवतरण की संयोजिका उन दो बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न बनाने के लिए सब प्रकार के यत्न किए गए। नित्यानन्द पर तो इस अधिक परिश्रम का प्रभाव उलटा ही पड़ा, क्योंकि उसका शरीर बहुत निर्बल सा था, परन्तु कृष्ण मूर्ति यथाशक्ति उत्साह से सब कुछ सीखने का यत्न करता रहा।

इसी समय भारत में एक नई प्रकार की चर्चा होने लगी कि कृष्ण मूर्ति एक महान् आत्मा है और उन्होंने इस संसार में ईसा या महात्मा बुद्ध का अवतार लिया है, जो कुछ समय बाद आविर्भूत होंगे।

श्रद्धालु अनुयायियों की कमी भारत में कभी नहीं रही। इस चर्चा के होते ही हजारों लोग कृष्णमूर्ति को अवतार मानने लगे। थियासॉफिकल सोसायटी की ओर से भी इस चीज का विशेष प्रचार किया गया। इस समय दोनों बच्चों को केलिफोर्निया भेज दिया गया, क्योंकि ऐसा विचार था कि वहां का जलवायु नित्यानन्द के लिये जो कि क्षयरोग का रोगी बन चुका था, कुछ लाभदायक होगा। इस समय तक कृष्णमूर्ति एक सुन्दर युवक बन चुका था और वह इतना मनोमोहक और प्रभाव शाली दिखाई देता था कि कुछ अमेरिकन सिनेमा वालों ने उसको एक सप्ताह के लिये १०००० डालर तक देने का प्रलोभन दिया परन्तु कृष्णमूर्ति ने उस समय स्वयं ही उधर जाने से बिल्कुल इन्कार कर दिया।

जब कृष्णमूर्ति भारत लौटे। हजारों लोग जो उनको अपना अवतार मानते थे, बड़ी उत्सुकता से उनकी राह देख रहे थे। बनारस में थियासोफी की बड़ी भारी कान्फ्रेन्स हुई जहां हजारों लोगों ने जिनमें कई तो कृष्णमूर्ति के दादा के बराबर थे, उनके चरणों को स्पर्श करके अपने को कृतार्थ समझा। सब लोग इसी

स्व० श्रीमती एनीबीसेण्ट

विचार में थे कि उनके पूज्य अवतार कोई न कोई करामात अवश्य करेंगे।

भारत के बड़े बड़े नगरों और प्रांतीय राजधानियों का भ्रमण करने के पश्चात् कृष्णमूर्ति केलेफोर्निया लौटे। इस समय तक उनकी नई संस्था जिसका नाम "दि आरडर आफ दि स्टार इन दि ईस्ट" था, बहुत फैल चुकी थी इस संस्था के सदस्य दिन प्रतिदिन बढ़ रहे थे।

१९२५ ई० में अदयार में थियासोफीकल सोसायटी की जयन्ती मनाई गई जिसमें संसार भर के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस उत्सव की सबसे बड़ी चीज कृष्णमूर्ति का भाषण था, जो उन्होंने अदयार के प्रसिद्ध बड़ के वृक्ष के नीचे दिया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि परमात्मा ने उनको इस संसार में जगत् गुरु बनने के लिये भेजा था और आगे उन्होंने ईसा की तरह यह भी कह दिया कि वह इस संसार में सुधार करने के लिये आये थे, नाश करने अथवा किसी को दुःख देने के लिये नहीं। इसी अवसर पर लोगों को यह भी कहा गया कि वह जगत गुरु के रूप में १९०९ ई० में सब को दर्शन देंगे और यह भी घोषणा की गई कि उनके १२ शिष्यों की एक समिति अभी से बना दी जाएगी। इस घोषणा के होने की देर थी कि लोगों में पहले १२ शिष्यों में सम्मिलित होने की भाग दौड़ आरम्भ हो गई और अन्त में १२ शिष्यों की एक सूची बना भी ली गई।

श्री कृष्णमूर्ति अब कैलिफोर्निया लौटे, जहां उनका छोटा भाई पहले ही मरण शय्या पर पड़ा हुआ था। १९२७ ई० में श्री कृष्णमूर्ति ने अकस्मात् ही यह घोषणा करके अपनी समस्त भक्त मण्डली को, जिसमें भारत ही नहीं, अन्य भी बड़े बड़े देशों के विद्वान् सम्मिलित थे, हैरानी में डाल दिया कि अब वह जगत गुरु नहीं बनेंगे और साथ ही अपनी संस्था 'दि आरडर आफ दि स्टार इन दि ईस्ट" को भी तोड़ दिया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह भी कह दिया कि उनका इस सब धन्धे से अब कोई सम्बन्ध नहीं रहा। वस्तुतः यह महान् त्याग और साहस का कार्य था। जो व्यक्ति लाखों भक्तों का आराध्य देव बन कर आ रहा हो, जिसके चरणों पर लोग लाखों करोड़ों रु० की सम्पत्ति अर्पित करने को उत्सुक हों वह उस सबका सहसा त्याग दें। इस घोषणा से उनके भक्तों को बहुत अधिक आश्चर्य और विस्मय हुआ, परन्तु यह किसी को मालूम नहीं हो सका कि ऐसा उन्होंने क्यों किया।

अभी २० वर्ष के पश्चात् जब श्री कृष्णमूर्ति भारत लौटे तो न उनका आदर करने के लिए कोई उपस्थित था और न ही किसी ने पहले की तरह उनके पैरों को छुआ। अब वह चुपके से नङ्गामबक्कम् मद्रास में रहने लगे हैं और वह अपना समय कुछ विद्वानों से बातचीत करने में व्यतीत कर देते हैं। अभी कुछ काल पूर्व एक व्यक्ति ने उन से यह प्रश्न किया कि आप इतनी देर उस संस्था में चुपचाप क्यों सम्मिलित रहे, जो अब आप की राय में लोगों को भटकाना चाहती थी? उत्तर में श्री कृष्ण मूर्ति ने कहा, "कि वास्तव में मैं १९२७ ई० तक स्वप्न ही देख रहा था। स्कूल में जो कुछ मुझे पढ़ाया जाता था मैं कान से सुन कर दूसरे से निकाल दिया करता था। मैंने परीक्षाएं भी अच्छी प्रकार पास नहीं कीं, क्योंकि जब मैं परीक्षा के कमरे में जाता था तो मुझे इतना डर लगता था कि जो कुछ भी मैंने परीक्षा के लिए स्मरण किया होता था, वह सब उसी समय भूल जाता था। इसी प्रकार मैं अपने जीवन में चिरकाल तक, जो कुछ मुझे कहा जाता था, मैं वही कर

लेता था। मुझे शारीरिक उन्नति के लिए कई प्रकार के खेल सिखाए जाते थे, नाचना और गाना भी सिखाया जाता था, परन्तु मैं तो यह सब कुछ स्वप्न की तरह देख रहा था और यथाशक्ति मैं ने सीखने का भी कुछ प्रयत्न किया।"

१९२५ ई० में किए गए उन के स्मरणीय भाषण के सम्बन्ध में जब उन से पूछा गया, तो उन्होंने कहा, "मुझे कुछ स्मरण नहीं, मैं ने उस समय क्या कहा था, लेकिन मुझे इतना स्मरण अवश्य है कि जो कुछ मैं ने कहा था वह मैं अनुभव करता था और मुझे वैसा कहने के लिए किसी ने कहा नहीं था। जब मैं भारत से लौटा तो मुझे १२ शिष्यों की सूची भेज दी गई। मुझे यह चीज कुछ बुरी लगी। मैं उस समय अपने मित्रों से प्राय कहा भी करता था कि ऐसी सब संस्थाएं व्यर्थ होती हैं, तब मित्र पूछा करते थे कि फिर आप थियासोफीकल सोसायटी से अपना सम्बन्ध क्यों रखते हैं? मुझे यह बात समझ आ गई और मैंने अपनी नई संस्था को उसी समय तोड़ दिया। जो जायदाद इत्यादि लोगों ने इस संस्था को दान के रूप में दी थी, वह सब मैंने उनको वापिस लौटा दी। श्रीमती एनी बेसेन्ट को इससे दुःख तो बहुत हुआ, परन्तु यह मैं कहे बिना नहीं रह सकता कि उन्होंने इस सम्बन्ध में मुझे कभी कुछ नहीं कहा। और लोगों ने तो मुझे फिर से इस संस्था में लाने के लिये हर प्रकार के यत्न किये, परन्तु मैं तो एक बार पूर्ण रूप से निश्चय कर ही चुका था। मैंने तब भारत लौटने का निश्चय किया और मृत्यु शय्या पर पड़े अपने भाई को छोड़ कर भारत लौट आया। उनकी बाद में मृत्यु हो गई और मुझे इससे दुःख भी बहुत हुआ" आगे उन्होंने कहा, "जब तक मेरा सम्बन्ध श्रीमती एनीबीसेन्ट के साथ रहा, उन्होंने कभी मेरे ऊपर किसी भी प्रकार का प्रभाव डालने का यत्न नहीं किया। वह मुझे कहा करती थीं कि तुम मेरे गुरू भी हो और पुत्र भी। उन्होंने मेरे लिये अदयार में एक पृथक् आश्रम भी बनवाया था। अब भी कुछ समय पूर्व मुझे अदयार के बड़े कर्मचारियों ने वहां रहने के लिये निमन्त्रण दिया था परन्तु मैंने धन्यवाद के साथ कहा कि अब मैं वहां नहीं आना चाहता।

आजकल आकृष्णमूर्ति एक अवकाश प्राप्त का सा जीवन व्यतीत करते हैं और अपना समय विद्वानों से बातचीत करने और पुस्तकों के अध्ययन में गुजारते हैं वह संस्कृत नहीं जानते और उनको इस बात का शोक भी है कि वह उपनिषद् इत्यादि नहीं पढ़ सके। उनकी ऊंचाई लगभग ५ फीट ८ इंच की है और उनके कन्धे कुछ गोल हैं, परन्तु अब भी वह बहुत सुन्दर दिखाई देते हैं और जब उनके मुख पर हंसी आ जाती है तो वह और भी सुन्दर दिखाई देते हैं। उनके साथ बातचीत करने में शरीर और आत्मा दोनों को प्रसन्नता अनुभव होती है। *

* इलस्ट्रेटेड वीकली के लेख के आधार पर।

तोष की
हाथी ब्रायड
बढ़िया चाय
दार्जिलिंग ऑरेंज पेको

ए० तोष एण्ड सन्स
कलकत्ता।

मौसम का उपहार

उमेश घी

यह गाय भैंसों का शुद्ध पवित्र घी स्वास्थ्य, बल तथा शक्ति के लिए अनुपम है।

गवर्नमैंट की हर परीक्षा से पास तथा उनकी पवित्रता की लाल रंग की 'स्पेशल एगमार्क' सील लगा बिक्री होता है।

स्वादिष्ट तथा पौष्टिक भोजन के लिए उमेश घी ही व्यवहार करें।

दिल्ली एजेंट—हरीराम जगत नारायन खारी बावली (फतेहपुरी की तरफ) दिल्ली।

"गृहस्थ चिकित्सा"

इसमें रोगों के कारण, लक्षण निदान, चिकित्सा एवं पथ्यापथ्य का वर्णन है। अपने ४ रिश्तेदारों व मित्रों के जुदे जुदे स्थानों के पूरे पते लिख कर भेजने से यह पुस्तक मुफ्त भेजी जाती है। पुस्तक मिलने का पता—

के० एल० मिश्र वैद्य, मथुरा।

सिद्धमकरध्वज

दिल्ली प्रांत, मेरठ कमिश्नरी व रुहेलखण्ड के सोल एजेन्ट—रमेश एण्ड कम्पनी चांदनी चौक देहली। राजपूताना के सोल एजेन्ट—राजस्थान औषध भण्डार, चौड़ा रास्ता, जयपुर। मध्य भारत के सोल एजेन्ट—वृहद औषध भण्डार, १६ जेल रोड, इन्दौर।

माहवारी

यदि माहवारी ठीक समय पर न आये तो मुझे मिलें फौरन ठीक कर दूंगी, यदि मेरे पास न आ सकें तो हमारी दवाई मैन्सोल स्पेशल इस्तेमाल करें कीमत १२) एक्स्ट्रा स्ट्रांग दवाई जो कि एक दम असर करके अन्दर साफ कर देती है। कीमत २५)

बर्थ कण्ट्रोल

हमेशा के लिए पैदाइश औलाद बंद करने की दवाई बर्थकण्ट्रोल कीमत २५) दो साल के लिए १२) इन दवाइयों से माहवारी ठीक तौर पर आती रहती है और सेहत बहुत अच्छी हो जाती है। नवाबों महाराजों के सार्टीफिकेट।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती (आफ लाहौर)
२७ बाबरलेन न्यू देहली, (निकट बंगाली मार्केट कनाट सरकस की ओर)

आपके स्वाध्याय के लिए उपयोगी पुस्तकें

आहार—हिन्दी में आहार विज्ञान पर लिखी हुई अपूर्व पुस्तक। मूल्य ५)

वैदिक ब्रह्मचर्य गीत—आध्यात्मिक ज्ञान के पिपासुओं के लिए तपस्वी अभयदेव जी लिखित वेद के ब्रह्मचर्य सूक्त का सुन्दर स्पष्टीकरण। मूल्य २)

बृहत्तर भारत—विदेशों में भारतीय संस्कृति के संस्थापकों की विस्तृत गौरव गाथा। मूल्य ७)

विज्ञान प्रवेशिका—मिडिल स्कूलों के लिए हिन्दी में लिखी गई विज्ञान शिक्षा की अति सरल पाठ्य पुस्तक। दोनों भागों का मूल्य २॥)

पुस्तक	मूल्य
वैदिक विनय (तीन भाग)	५)
भारत का इतिहास (तीन खंड)	७)
ब्राह्मण की गौ	॥)
सन्ध्यासुमन	१)
वरुण की नौका (दो भाग)	६)
वेद गीतांजलि	२)
तुलसी	२)
लहसुन प्याज	२॥)
आत्म मीमांसा	२)
अथर्व वेदीय मन्त्र विद्या	१॥)
देहाती इलाज	१)
सोम सरोवर	१॥)
वैदिक उपदेश माला	।−)

पता—प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

इतिहास मे भारतीय दृष्टि का विकास

बौद्धिक मोर्चे पर आधी शताब्दी का संघर्ष

[श्री पृथ्वीसिंह मेहता]

१० दिसम्बर १९३७ ई० को भारत के विभिन्न प्रान्तों के अनेक प्रमुख ऐतिहासिकों और इतिहास प्रेमियों ने भारतमाता मन्दिर बनारस के आंगन में भारतीय इतिहास परिषद् की स्थापना मिलकर की। उस दिन उन्होंने परस्पर सहयोग द्वारा अपने देश का एक सच्चा समन्वयात्मक और पूर्ण इतिहास प्रस्तुत करने का संकल्प किया। इस कार्य के लिए देश में बिखरी शक्तियों और साधनों को जुटाने की खातिर उन्होंने एक भारतीय अध्ययन मन्दिर की योजना पर विचार किया और उसके क्षेत्र को इतिहास तक परिमित कर उसे 'भारतीय इतिहास परिषद्' नाम दिया।

सन् १९३७ का भारतमाता मन्दिर का वह जुटाव उससे पहले की प्राय चार दशाब्दियों की चेष्टाओं का फल था। भारतीय इतिहास परिषद् ने जिन आदर्शों, प्रेरणाओं और विचारों को लेकर कार्य क्षेत्र में प्रवेश किया, इसे समझने के लिए उन पहली चेष्टाओं का वृत्तान्त जानना आवश्यक है। वह वृत्तान्त हमारे समकालिक इतिहास का एक रुचिकर और शिक्षाप्रद प्रकरण है।

पहले भारतीय पुरातत्त्वान्वेषी

हमारे देश की परिस्थिति के शृंखलाबद्ध अध्ययन का और हमारे इतिहास के पुनरुद्धार का आरम्भ युरोपी विद्वानों की सूझबूझ और चेष्टा से हुआ इसमें सन्देह नहीं। किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अनेक भारतीय विद्वान् भी उसमें उल्लेखनीय भाग लेने लगे। उनमें पहले अगुओं में स्वर्गीय राधाकान्त देव, भाउदाजी, भगवानलाल इन्द्र जी, राजेन्द्रलाल मित्र, रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर, हरप्रसाद शास्त्री, विक्रमसिंह, गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक भारतीय पुरातत्त्व की खोज टुकड़े टुकड़े करके इतनी सामग्री जुटाई चुकी थी कि उसके आधार पर भारतवर्ष का पूरा इतिहास बनाने की चेष्टायें भी होने लगीं। इस प्रकार की पहली चेष्टाओं के उल्लेखयोग्य फल रमेशचन्द्र दत्त का 'प्राचीन भारत की सभ्यता का इतिहास' (१८८६) तथा हरप्रसाद शास्त्री का 'भारत का एक शालोपयोगी इतिहास' (ए स्कूल हिस्टरी आव इण्डिया) (१८९७) थे।

भारतीय दृष्टि का उदय

हरप्रसाद शास्त्री की उक्त पोथी आधुनिक खोज के आधार पर लिखा हुआ भारत का पहला पूरा इतिहास थी और अनेक अंशों में वह बाद में चले हुए पाठ्य ग्रन्थों से कहीं अच्छी थी। लेकिन उसका चलन नहीं हुआ। उसके छः बरस बाद १९०३ में इलियट और स्मिथ की वैसी ही पोथी कटक से निकली तथा सन् १९०४ में विन्सेंट स्मिथ का भारत का प्राचीन इतिहास आक्सफर्ड से। स्मिथ का ग्रन्थ भारत के शिक्षणालयों में खूब चला। हरप्रसाद शास्त्री के ग्रन्थ का चलन न होने और स्मिथ के ग्रन्थ का भरपूर प्रचार होने तथा अनेक भारतीय भाषाओं के लेखकों द्वारा भी उसकी नकल किये जाने पर आज हम विचार करते हैं तो उसका स्पष्ट कारण यह दिखाई देता है कि स्मिथ के ग्रन्थ में इतिहास की घटनाओं को इस तरह तोड़ मरोड़ कर पेश किया गया था कि एशियाई जातियों की अपेक्षा युराप की गोरी जातियों का सनातन उत्कर्ष प्रकट हो, भारत के अंग्रेज शासकों को भारतीय विद्यार्थियों के मन में वैसे संस्कार डालना अभिप्रेत था और भारत के बहुत से शिक्षित लोग भी अपनी गुलाम मनोवृत्ति के कारण एक अंग्रेज हाकिम के लिखे हुए और आक्सफर्ड से प्रकाशित ग्रन्थ को एक भारतीय विद्वान के लिखे कलकत्ते से प्रकाशित ग्रन्थ से अधिक महत्व देते थे।

पर इस युरोपी ढोंग तथा इस गुलाम मनोवृत्ति के खिलाफ संघर्ष करने वाला एक दल भी भारत के शिक्षित वर्ग में उठ खड़ा हुआ। महादेव गोविन्द रानाडे की 'मराठा शक्ति का उदय,' गौरीशंकर हीराचन्द ओझा की 'भारतीय प्राचीन लिपि माला' (१८९६), रमेशचन्द्र दत्त का 'ब्रिटिश भारत का आर्थिक इतिहास' (१९०१), गोविन्द सखाराम सरदेसाई की 'मराठी रियासत' पहला भाग (१९०१) आदि वे पहली कृतियां थीं जिन्होंने इतिहास में स्वतन्त्र भारतीय विचार के उदय को पहले पहल सूचित किया। १९०५ के स्वदेशी आन्दोलन के साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षा की ओर देशी भाषाओं के विकास की लहर आई। ओझा और सरदेसाई का अपनी भाषाओं में अपनी ऐतिहासिक खोज के परिणाम दर्ज करना इस दृष्टि से महत्व का था। बंगाल की 'राष्ट्रीय शिक्षा समिति' (नेशनल कौंसिल आव एजुकेशन) ने पहले पहल ऊंची कक्षाओं में भारतीय इतिहास को भी एक पाठ्य विषय नियत किया, जिसकी नकल हमारे देश की सरकारी युनिवर्सिटियों ने भी की।

स्वदेशी आन्दोलन के समय युरोप में निर्वासित और प्रवासी भारतीय देशभक्तों का एक दल काम करने लगा। इसकी राजनीतिक सरगर्मी भी सांस्कृतिक चेष्टा को साथ लिये हुए थी। विनायक सावरकर का 'भारतीय स्वातन्त्र्य का युद्ध का इतिहास' (१९०८) उस सांस्कृतिक चेष्टा का फल था। इस निर्वासित दल के नेताओं श्याम जी कृष्ण वर्मा, एस० आर० राना, हरदयाल और विनायक सावरकर से तथा आक्सफर्ड के अपने सिंहल अध्यापक विक्रमसिंह से वहां के एक छात्र काशीप्रसाद जायसवाल, को इतिहास का गहरा मनन करने की प्रेरणा मिली। जायसवाल ने भारत लौट कर सन् १९११ से १९१८ तक जो काम किया उसने इतिहास के क्षेत्र में स्वतन्त्र भारतीय चिंतन का एक बढ़िया नमूना उपस्थित किया और दूसरे अनेक विद्वानों और विद्यार्थियों में स्वतन्त्र सोचने का उत्साह जगाया। जायसवाल की खोज ने पहले पहल यह प्रगट किया कि हिन्दू कानून का किस प्रकार मानव संस्थाओं में क्रमविकास हुआ। उन संस्थाओं की ओर उन्होंने ध्यान दिया तो प्रकट हुआ कि प्राचीन भारत में कानून बनाने और राजकार्य को चलाने वाली संस्थायें प्राय हजार डेढ़ हजार वर्ष तक बराबर काम करती थीं। इन खोजों से प्राचीन भारतीय राज्यसंस्था की खोज की पद्धति बन गई जिस पर अन्य विद्वानों ने भी कदम बढ़ाये। रमेशचन्द्र मजूमदार का ग्रन्थ 'प्राचीन भारत में सामूहिक जीवन' (१९१८) इस प्रसंग में उल्लेखनीय है।

इतिहास के अन्य क्षेत्रों में भी भारतीयों के नव जागृत स्वतन्त्र चिंतन की फलस्वरूप अनेक कृतियां पहले विश्व युद्ध के अन्त तक प्रकट होती रहीं। प्रफुल्लचन्द्र राय, ब्रजेन्द्रनाथ शील और बंगाल नेशनल कालेज के विनयकुमार सरकार के प्राचीन भारतीय विज्ञान विषयक ग्रन्थ, उसी कालेज के राधाकुमुद मुकर्जी का 'प्राचीन भारतीय जहाजरानी और समुद्रचर्या का इतिहास,' दक्खिन भारत के इतिहास पर कृष्णस्वामी ऐयंगर का, बंगाल के इतिहास पर राखालदास बनर्जी का, और मुगल के इतिहास पर यदुनाथ सरकार का, मराठा इतिहास पर विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े तथा गोविन्दराव सरदेसाई का, एवं ब्रिटिश भारत के इतिहास पर वामनदास वसु का कार्य ऊंचे दर्जे का विज्ञानसम्मत अध्ययन और स्वतन्त्र चिन्तन को लिये हुए था।

समन्वयात्मक इतिहास की मांग (१९१९-२१)

यों पहले विश्व युद्ध के अन्त तक विभिन्न अंशों और पहलुओं में स्वतन्त्र भारतीय इतिहास-चिन्तन की विशेषता सामने आ गई थी। इस दृष्टि से समूचे इतिहास की खोज के शृंखलाबद्ध आयोजन और उसके समन्वय की आवश्यकता इसके बाद स्पष्ट दिखाई देने लगी। कहते हैं मनमोहन चक्रवर्ती ने सन् १९०८ में ही यदुनाथ सरकार का ध्यान भारत के वैसे एक इतिहास की आवश्यकता की ओर खींचा था। सन् १९१८ और १९२० में राखालदास बनर्जी ने फिर उन्हीं विद्वान् के साथ उसका एक खाका खींचने की कोशिश की।

कांगड़ी का गुरुकुल हमारे देश में राष्ट्रीय शिक्षा की पहली संस्था थी जिसमें आधुनिक विज्ञान दर्शन और इतिहास का एक भारतीय भाषा में पढ़ना-पढ़ाना शुरू किया गया। स्वदेशी आन्दोलन के समय से वहां यह सिलसिला जारी था। पहले आठ-दस वर्ष के तजुरबे में ही वहां के अध्यापकों और छात्रों को भारतीय दृष्टि से लिखे इतिहास का और भारतीय इतिहास के आधार पर बने समाजशास्त्र का अभाव खलने लगा था। सन् १९१५-१६ तक वहां यह विचार जाग चुका था कि भारतीय दृष्टि से खोज और अध्ययन का आयोजन किये बिना इस अभाव की पूर्ति न हो सकेगी। गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक और देशी भाषा में शिक्षा देने के महान् सुधार के प्रवर्तक स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल में ही इस काम को करने की सोचते थे। उनके विचारों और उनके महान् व्यक्तित्व की प्रेरणा उनके अनेक शिष्यों को मिली थी। सन् १९१९ के शुरू में गुरुकुल के एक नवस्नातक जयचन्द्र विद्यालंकार ने "भारतवर्ष में जातीय शिक्षा" शीर्षक एक निबन्ध प्रकाशित किया, जिसमें भारतीय दृष्टि से कुल खोज और अध्ययन का आयोजन कर वाङ्मय सृजन का विचार पहले पहल स्पष्ट रूप में रक्खा गया।

उसी वर्ष विन्सेंट स्मिथ का ग्रन्थ "आक्सफर्ड हिस्टरी आव इण्डिया" प्रकाशित होते ही विनय कुमार सरकार ने न्यूयार्क के पोलिटिकल साइन्स क्वार्टर्ली (राजनीति विज्ञान त्रैमासिक) में 'भारत का एक अंग्रेजी इतिहास' शीर्षक

लेख में उसकी आलोचना करते हुए लिखा कि स्मिथ ने जिस सामग्री का उपयोग किया है, कोई भारतीय विद्वान उसी के आधार पर लिखता तो उसके ग्रन्थ का प्रत्येक प्रकरण बिल्कुल दूसरी ही किस्म का होता।

सन् १९२१ में महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन ने राष्ट्रीय शिक्षा की लहर को नई स्फूर्ति दी और देश में राष्ट्रीय विद्यालय उठ खड़े हुए। श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ने १९२१ में ही लाहौर के राष्ट्रीय विद्यापीठ में काम करते समय भारतवर्ष का समन्वयात्मक इतिहास लिखने का निश्चय किया। पर वे उस समय भी इस बात को स्पष्ट अनुभव करते थे कि भारतवर्ष का एक पूरा समन्वयात्मक इतिहास लिखना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है तो भी उन्होंने सोचा कि जब तक विद्वानों की कोई संस्था इस काम को हाथ में नहीं लेती, वे एक रूपरेखा ही तैयार कर दें।

शिवप्रसाद गुप्त और वामनदास वसु के प्रयत्न (१९२१-३०)

बनारस के स्व० शिवप्रसाद गुप्त ने सन १९२१ में दस लाख रुपया दान कर काशी विद्यापीठ की स्थापना की। गुप्त जी स्वामी श्रद्धानन्द और विनयकुमार सरकार के विशिष्ट मित्रों में से थे और उनके विचारों से पूरी तरह प्रभावित हुए थे। नवम्बर १९२३ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के देहरादून अधिवेशन में उन्होंने इस आशय का खुला प्रस्ताव रक्खा कि भारतीय विद्वान् मिलकर भारतीय दृष्टि से भारत वर्ष का एक इतिहास लिखें। इसके लिये कई लाख रुपयों की जरूरत होगी, यह भी उन्होंने अपने भाषण में कहा। उन्होंने कहा कि विद्वान् लोग पहले इसकी योजना तैयार करें, तब अर्थसंग्रह का उपाय किया जाय। प्रकट था कि उस समय यदि भारतीय विद्वान समूचे भारतीय इतिहास की योजना दे सकते और देश के दूसरे लोगों ने इस कार्य में कुछ उत्साह दिखाया होता तो शिवप्रसाद गुप्त ने इसे कार्यान्वित करने को कुछ अच्छी सहायता स्वयं भी दी होती।

इसके चार वर्ष बाद वामनदास वसु ने एक राष्ट्रीय अध्ययन और खोज की पूरी योजना बनाकर प्रकाशित की। वामन दास वसु यों पहले हिन्दुस्तानी थे जिन्होंने राष्ट्र के लिए आयोजित अध्ययन (प्लायड स्टडीज) करने वाली संस्था का ठीक-ठीक संगठन मार्ग पहले पहल निश्चित किया। १९२७-२८ में जयचन्द्र विद्यालंकार उनके सम्पर्क में आये। वे दोनों समान विचारों से अनुप्राणित एक ही पथ के पथिक थे और दोनों ने एक दूसरे को झट से पहचान लिया। वसु अपना कीमती पुस्तकसंग्रह, अपनी कुछ जमीन और कुछ रकम अपनी प्रस्तावित संस्था को दे देना चाहते थे। संस्था के आरम्भ के लिए एक दो लाख रुपया जुट जाने की वे प्रतीक्षा में थे और उसके लिए स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी, सुभाषचन्द्र वसु, काशी विद्यापीठ के सचालकों और देश के अन्य कई नेताओं से उन्होंने सहयोग मांगा। बिहार विद्यापीठ के कुलपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के पास भी सहयोग प्रार्थना का सन्देश भेजा। राजेन्द्र बाबू ने उनके विचार और योजना को पसन्द किया।

इस के अगले वर्ष (१९२९) काशी विद्यापीठ के अधिकारियों का ध्यान भी इस ओर खिंचा। अप्रैल १९३० से जब देश में फिर राजनीतिक आन्दोलन का ज्वार आने लगा, तब काशी विद्यापीठ ने उस में पड़ जाना तय किया। तभी वामनदास वसु भी चल बसे।

सन् १९२९ तक गोविन्दराव सरदेसाई का वह महान ग्रंथ 'मराठी रियासत' भी पूरा हो गया, जिस का पहला भाग १९०१ में प्रकाशित हुआ था। अपने उस तजरबे से वे भी भारतीय इतिहास की एक सहोद्योगी संस्था की उत्कट आवश्यकता देखने लगे।

सन् १९३० के अन्त में भारतीय ओरियंटल कान्फ्रेन्स के छठे अधिवेशन के सभापति पद से भाषण करते हुए हीरालाल ने कहा—'इस समय विशेषकर एक बड़ी आवश्यकता उत्कट रूप से अनुभव होती है, और वह है भारतीय दृष्टि से लिखे हुए एक इतिहास की।'

देश के विचारशील लोगों को यह आवश्यकता तब भी उत्कट रूप से अनुभव होती थी, पर उनकी पुकार का देश के बहुसंख्यक शिक्षित कहलाने वाले लोगों पर एक अरसे बाद तक भी असर नहीं हुआ। उनमें से बहुत से तो नौ साल बाद भी पूछते थे कि इतिहास में भारतीय दृष्टि का अर्थ क्या है! इसका यह अर्थ है कि वे लोग अभी गहरी नींद में थे।

(क्रमशः)

१००) इनाम
(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आवेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकदमा, कुश्ती, लौटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २), चांदी ३), सोना १२)।
Swami Gorakhnath Ashram
No. 8, P. O. Katri Sarai (Gaya)

पर्लकाढ़ा जवान और बुढे स्त्री, पुरुष और बच्चे – सभीको समान रूपसे फायदा करता है। प्रसूता स्त्रियों को भी फायदा करता है।

शीतल शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक
पर्ल काढ़ा
एकबार परीक्षा कर स्वयं अजमाइये!
पर्ल कंपनी, आयुर्वेदी कारखाना, राणीबाग, बम्बई २७

Copyright

सूर्यग्रहण के अवसर पर तैयार की हुई
दिव्य सिद्धि तांत्रिक अंगूठी

आप जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके कदम चूमेगी, आप धनवान हो जायगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी, शत्रु मित्र बन जायंगे, मन चाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा, संसार आपकी इज्जत करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा में पास होंगे, जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी, नाराज हाकिम खुश होगा, वशीकरण होगा। बात यह है कि हर काम आपके इच्छानुसार होगा। यह अंगूठी ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तैयार होती है। बड़े परिश्रम से तैयार कराई गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य २।।) डाक खर्च ।।=) अलग। नोट—बेकार साबित हो, तो ६ महीने तक वापिस।

पता—कमल कंपनी (V) अलीगढ़।

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी और उधर उस के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विकृत होकर अपकीर्ति के रूप म फैल रही थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत होगया और चम्पा ने जमींदारी का काम सभाल लिया।

इन्हीं दिनों बिहार भूकम्प के बाद बेलूर में श्री रामनाथ तिवारी अत्यन्त उत्साह व लगन से सेवा का कार्य करते थे। उन्होंने एक भग्नावशेष से एक बालक की रक्षा की। ऐसे अनाथ बालकों के पालन पोषण का काम चम्पा और सरला की कोठी में था। रामनाथ भी वहीं बालक को ले गया। शिशु रक्षा गृह का उद्घाटन हो गया।

[गताक से आगे]

रात को रामनाथ का भोजन हवेली में रसोई घर के पास वाले दालान में हुआ, उसने दो ही दिन में घर के अन्दर जगह बना ली थी। चम्पा पास ही एक चौकी पर बैठी व्यवस्था कर रही थी। बात चीत के प्रसग में रामनाथ बोला...

'यह डा० कैलाश चन्द्र साहब कौन हैं? आप लोगों के अतरग होने का बहुत बड़ा दावा कर रहे थे।'

चम्पा ने उत्तर दिया—

'यह हमारी जात का एक लड़का है, इसी गाव में डाक्टरी करता है। कभी कभी यहा आया करता है। जब सरला के पिता अधिक बीमार हो गये थे, तब शहर के डाक्टर के आने में देर होने पर कभी कभी इसे बुला लिया जाते थे।'

सरला रसोई में बैठी थी। कैलाश का नाम सुन कर बाहिर आकर पास खड़ी हो गई। मा की बात समाप्त होने पर बोली 'तिवारी जी, यह अच्छा आदमी नहीं है। बिना किसी काम के यहां चक्कर काटा करता है। कई बार तो बहाना बना कर हवेली के अन्दर घुसने की भी चेष्टा करता देखा गया है। मैं तो इसका यहा आना बिल्कुल पसद नहीं करती।'

रामनाथ को यह बात बहुत रुचिकर प्रतीत हुई। जैसे रामनाथ से मिल कर कैलाश के मन में अनायास ही विरोध की सी भावना उत्पन्न हो गई थी, इसी प्रकार कैलाश से मिलकर रामनाथ का हृदय भी प्रतिकूलता का अनुभव करने लगा था। कैलाश और रामनाथ के इस समय के मनोभाव को 'प्रथमदर्शन में प्रेम' के सर्वथा समान 'प्रथमदर्शन में विरोध' का भाव कह सकते हैं। रामनाथ ने उत्साह पूर्वक घोषणा की—

'यदि आपको कैलाश बाबू का यहां आना अच्छा नहीं लगता तो यह क्या कठिन काम है। यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है। कल ही बुला कर ऐसी डपटी दूंगा कि इधर का रास्ता तक भूल जायेंगे।' मैं उन्हें........

चम्पा को रामनाथ की यह बात अच्छी नहीं लगी। अपने घर पर किसी का अपमान करना, या किसी के लिए द्वार बंद करना चम्पा जैसी पुराने ढग की भारतीय स्त्री को कैसे पसद हो सकता था। उसने रामनाथ की बात को बीच में काटते हुए कहा —

'नहीं तिवारी जी, ऐसा कोई अप्रिय काम न कीजिये, जो इस घर की मर्यादा के विपरीत हो। यदि कोई बात समझानी भी हो तो प्रेम से समझानी चाहिये। वह यहा देर से आता जाता है। सरला के बाबू जब जिन्दा थे, तब भी तो आया करता था।'

रामनाथ हस कर बोला—'माता जी, आप तो बहुत ही नर्म दिल हैं। आप साक्षात् देवी हैं। और कैलाश बाबू जैसे आदमी भूत होते हैं—लातों के भूत। वे बातों से नहीं मानते आप देखिये—सरला जी तो उससे बहुत नाराज हैं।'

सरला बीच में बोल उठी—

'मेरी नाराजगी का यह अर्थ नहीं तिवारी जी, कि आप कैलाश बाबू को कोई कठोर बात कहें या उससे दुर्व्यवहार करें। मैंने तो केवल एक बात कही। कुछ करने को तो नहीं कहा।'

तिवारी जी ने बातचीत का रुख पलटते हुए बहुत गम्भीर होकर कहा—

'यह शास्त्र का सिद्धान्त है कि दुष्टों की चर्चा करने से भी पाप होता है। कैलाश बाबू की चर्चा करने भर का यह फल हुआ है कि मेरी थाली खाली हो गई है और अभी तक उसमें कचौरी लाकर नहीं डाली गई माता जी, कचौरी जल्दी मगवाइये, कहीं ऐसा न हो कि ब्राह्मण भूखा रह जाय और आप लोगों को व्यर्थ का पाप लगे।'

चम्पा ने घबरा कर सरला की ओर देखा। सरला 'अभी लाई।' कह कर रसोई घर की ओर चली गई। चम्पा ने रामनाथ से मानो क्षमा मागते हुए कहा—

'तिवारी जी, क्षमा कीजियेगा। बातचीत के सिलसिले में भूल हो गई।'

'आप यह कहती हैं, माता जी, आप तो मेरी मा हैं। क्षमा जैसा शब्द कह कर आप मुझे पाप न चढ़ायें बातें करने का मजा तो मुझे ही है। मैंने ही आप को बातचीत में घसीट लिया।'

सरला इतने में खाना ले आई और थाली में परोस दिया। रामनाथ खाने में व्यस्त हो गया।

[६]

बेलूर में तीन दिन ठहर कर रामनाथ पटना वापिस चला गया। जाते हुए चम्पा और सरला के सम्मुख यह घोषणा करता गया कि 'मैं इस रक्षा गृह के लिये और बच्चे लेकर शीघ्र ही आऊंगा'। उस समय यह भी देखूंगा कि आप लोगों ने मुझे अपनाने का जो आश्वासन दिया है वह सच्चा है या नहीं। आप लोगों के सेवा-भाव और प्रेम से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। मैं शीघ्र ही लौट कर आऊंगा। (सरला की ओर देख कर हसते हुए) और देखिये सरला जी, मेरे आने पर पूरी और अरबी की सब्जी बनाना न भूलियेगा। यह ब्राह्मण की दक्षिणा है।'

जब रक्षागृह के उद्घाटनोत्सव की धूम-धाम और रामनाथ का हल्ला समाप्त हो गये, तो घर में एक दम सुनसान-सा प्रतीत होने लगा। रात के भोजन के पश्चात् घर के शान्त हो जाने पर परिवार के सब लोग मिल कर बातचीत करने लगे। चम्पा और सरला के अतिरिक्त रमा और माधवकृष्ण अभी वहीं थे। मुन्ना को पढ़ने के लिए पटना के एक मिश्नरी नरसरी स्कूल में भेज दिया गया था। वह पांच-छः साल का हो गया था। गाव में पढ़ाई का प्रबन्ध नहीं हो सकता था। इस कारण जमींदारों की प्रचलित पद्धति के अनुसार मुन्ना को यूरोपियन शिक्षकों द्वारा सचालित शिक्षालय में भेजना आवश्यक समझा गया था। चारों घर के व्यक्ति जब दिन भर की हल-चल से मुक्त होकर हवेली की बैठक में बैठे तो इनमें स्वभाव से गत तीन दिनों की घटनाओं पर बातचीत होने लगी। रमा ने प्रारम्भ किया, "बहुत रोकने पर भी आज तिवारी जी चले ही गये। उनके कारण तीन दिन तक बड़ी रानक रही, बहुत ही खुश दिल और परोपकारी आदमी हैं।"

चम्पा— 'पाच—सात दिन में फिर आने को कह गये हैं, बहुत ही अच्छे आदमी हैं। मुझे तो तिवारी जी को देख कर ऐसा प्रतीत होता है, मानों मेरा अपना ही बेटा हो। हम लोगों के साथ बहुत प्रेम से बर्ताव करता है।'

सरला— मा की बात सुन कर बोली—

"भाभी, तुम तो सारी दुनिया को अच्छा समझती हो, और झटपट विश्वास कर लेती हो। अभी हमने तिवारी जी को इतना कहां देखा है कि कोई राय बना सकें, मुझे तो उनकी कोई कोई बात बहुत अखरती है। वे खान-पीने की बातें बहुत अधिक करते हैं, वे अच्छी नहीं लगतीं।"

माधवकृष्ण ने सरला का समर्थन करते हुए कहा, 'भाभी, मुझे तो इस तिवारी में बहुत चचलापन दिखाई देता है। यह बात बहुत अधिक करता है, और बनता भी बहुत है।'

चम्पा ने उत्तर दिया—'हमें किसी के बारे में ऐसी जल्दी बुरी राय नहीं बनानी चाहिए, अभी हमने तिवारी जी को पूरी तरह देखा भी तो नहीं।"

सरला बात को बीच में ही काट कर बोली, "तो भाभी, हमें पूरी तरह देखे बिना अच्छी राय भी तो नहीं बनानी चाहिए।"

चम्पा ने उत्तर दिया—"भाई, मैं तो यह समझती हू कि हर एक आदमी को अच्छा ही समझना चाहिए, जब तक वह बुरा सिद्ध न हो। हर एक पर शक करना अच्छा नहीं।"

माधवकृष्ण ने मानों व्यवस्था देते हुए कहा, "भाभी, मेरी तो यह सम्मति है कि अभी उसे भला या बुरा कुछ भी न समझा जाये, सात दिन में वह फिर आने वाला है ही, तब देख लेना कि कैसा है? और असल बात तो यह है कि उसके अच्छे बुरे होने से हमें कोई मतलब नहीं। बच्चों को लायेगा तो उन्हें रक्षागृह में रख लेंगे।"

इस तरह यह पारिवारिक सभा तिवारी जी के सम्बन्ध में किसी अंतिम निर्णय पर पहुंचे बिना ही समाप्त हो गई।'

[क्रमशः]

विजय पुस्तक भण्डार दिल्ली

द्वारा प्रकाशित और प्रचारित पुस्तकें

जीवन-चरित्र—

[१] नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मूल्य १)
[२] प० मदनमोहन मालवीय ,, १।)
[३] महात्मा दयानन्द सरस्वती ,, १॥)
[४] प० जवाहरलाल नेहरू ,, १।)
[५] मौ० अबुलकलाम आजाद ,, ॥=)
[६] श्री सुभाषचन्द्र बोस (संक्षिप्त),, ॥=)

अन्य पुस्तकें—

[१] जीवन संग्राम ,, १)
[२] सरला की भाभी (उपन्यास) ,, २)
[३] मैं भूल न सकूं (कहानी) ,, १)
[४] जीवन की झांकियां
१— मैं चिकित्सा के चक्र व्यूह से कैसे निकला ॥)
२—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन ॥) दोनों खण्ड का ॥।)
[५] आनुपातिक प्रतिनिधित्व ,, ।)

आरहार द्वारा प्रचारित पुस्तकें

विविध

[१] त्याग का मूल्य (उपन्यास) मूल्य २)
[२] तिरंगा झंडा (एकांकी नाटक) ,, १।)
[३] नया आलोक नई छाया (कहानी),, २)
[४] प्रेमसूत्री (कविता) ,, ॥)
[५] बहिन के पत्र (कृष्णचन्द्र वि०),, ३)
[६] वैदिक वीर गर्जना ,, ॥=)
[७] दिल्ली चलो ,, २)
[८] नेताजी सरहद पार ,, १।=)
[९] आचार्य रामदेव (जीवन झांकी),, १॥)
[१०] आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब हीरक जयन्ती स्मारक ग्रन्थ ,, ३)
[११] हमारे घर ,, ॥=)
[१२] महाराणा प्रताप ,, १॥)
[१३] हरिसिंह नलवा ,, १)
[१४] शिवाजी ,, १॥)
[१५] शहीदान हैदराबाद ,, १)
[१६] विधान परिषद ,, १)
[१७] राष्ट्रपति का भाषण ,, १।)
[१८] मेरठ कांग्रेस ,, १)
[१९] मानवधर्म प्रचारक ,, ७)
[२०] शिवा बावनी ,, १)
[२१] अखण्ड भारत ,, ॥)
[२२] बृहत्तर भारत (ऐतिहासिक) ,, ७)

उपयोगी विज्ञान—

[१] साबुन विज्ञान ,, २)
[२] तैल विज्ञान ,, २)
[३] तुलसी ,, २)
[४] जंजीर ,, १)
[५] देहाती इलाज ,, १)
[६] सोडा कास्टिक ,, १॥)

डाक व्यय पृथक होगा। पुस्तकसेलरों को उचित कमीशन दिया जाता है।

विजय पुस्तक भंडार, श्रद्धानंद बाजार दिल्ली।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तेल दिमागी ताकत और आखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मगवा ले।

पता—विश्व कल्याण औषधालय, न० ६ पो० कतरीसराय [गया]।

भारी लूट—अवसर मत चूकिये—आज ही मगाये ३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें

प्रेम जीवन (सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनाने वाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मन्त्र तथा जादू के खेलों का संग्रह १), हिन्दी अंग्रेजी शिक्षा—घर बैठे अंग्रेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखलो १), हारमोनियम तबला मास्टर—हारमोनियम तबला बजाना और गान विद्या सीखो १।), हुस्न पैरिस—केवल पति पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १।), व्यौपार की कुंजी—अनेकों हुनर सीख कौड़ियों से रुपया पैदा करो १), ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) पोस्टेज पैकिंग ॥।) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, जैगंज (६६) अलीगढ़ सिटी

अदल-बदल के व्यापार की बजाय सांकेतिक द्रव्य अर्थात् बकरी आदि देकर माल-खरीदने का व्यवहार वस्तुओं के अदल-बदल करने के विषय में मनुष्य की उन्नति की ओर एक बड़ा महत्व पूर्ण पग था। परन्तु बकरी रूपी द्रव्य सर्व प्रिय न था। सब बकरियां एक जैसी नहीं होती थीं। दुर्बल और रोगी बकरियों के बदले में माल खरीदना शीघ्र ही एक समस्या बन गई। रोग, व्याधि इस सम्पत्ति को प्रायः नष्ट कर देते थे। व्यापार के नवीन विस्तार ने मनुष्य को, जो स्वभाव से ही काल्पनिक है, कोई श्रेष्ठतर द्रव्य खोज निकालने पर विवश कर दिया। उस की दृष्टि धातुओं पर पड़ी। धातु नष्ट न होने वाली और निश्चय से एक समान रहने वाली द्रव्य थी। अब से सब व्यापारिक व्यवहार लोहे, तांबे या सीसा आदि की सलाखों या उनके ढले हुये डलों द्वारा होने लगा।

अपनी दैनिक खरीदारी के लिये मनुष्य को किसी न किसी धातु की भारी सलाख या डले को लिये लिये फिरना पड़ता था। इसी कारण भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा से लोग धातुओं का संग्रह करने लगे। वास्तव में धनाढ्य अपने धन के भार से दबे हुये थे! कच्ची धातुओं की खानों में खोज की तीव्रता के साथ साथ रुपये का मूल्य गिर जाता था, और नफाखोर शुद्ध धातुओं को दूषित कर देते थे।

आज कल माल के खरीदने में या बचत करने में विशेष असुविधा नहीं होती। बुद्धिमान खर्च करने की बजाय भविष्य के लिये बचाना अच्छा समझता है और वह अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सुरक्षित मद में लगाता है। नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर इस का मूल्य ५०% बढ़ जाता है—अर्थात् १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप अब ५) से १५,०००) तक की मालियत के सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं। जिन की बचत थोड़ी हो, वे ।), ॥) और १) के नेशनल सेविंग्ज स्टाम्प्स खरीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC 212

फ्रान्स के नये प्रधान मंत्री

शूमा

पेरिस के नये मेयर

पायर दगाल फ्रांस के प्रमुख राजनीतज्ञ और भू० पू० शासक दिगाल के छोटे भाई

हस्त-चित्रित केबिनेट का एकमात्र रेडियो सेट

संसार में आपको रेडियो सेट के विविध डिजायनों के आकर्षक केबिनेट मिल सकते हैं, किन्तु किसी भी केबिनट पर किसी प्रकार की चित्रकारी देखने को नहीं मिलेगी। इंगलैण्ड के सर मालकम कैम्पबेल की पुत्री जान केम्पबेल को अपने सेट के केबिनेट पर हाथ की चित्रकारी करने की विशेष अनुमति दी गई, जिसे बाद में रेडियो लिम्पिया की प्रदर्शिनी में भी रखा गया।
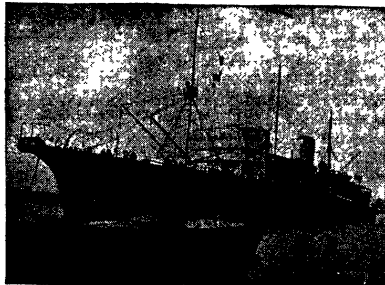
संसार का सब से बड़ा केबलशिप मौनार्क—इसमें २५०० समुद्री मील लम्बा केबल लादा जा सकता है, जो अमेरिका से इंगलैंड तक समुद्र में बिछाया जा सकता है।

ब्रिटिश सेना से निवृत्त सिपाहियों को चमड़े के काम की शिक्षा दी जा रही है।

साहित्य परिचय

परिचय के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियों का आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति-स्वीकार किया जायगा। — सम्पादक

श्रीमद्भगवद्गीता (जीवन-समस्या का समाधान) लेखक बंगाली बाबा। मूल्य: पांच रुपया। प्रकाशक श्री श्यामसुन्दर मूलखराज पुरी, बी० ए० एल० एल० बी०, ३५।११ निस्बत रोड लाहौर।

श्रीमद्भगवद्गीता की यह व्याख्या श्री बंगाली बाबा द्वारा अंग्रेजी में की गयी थी। उसका अनुवाद कुमारी वृजरानी देवी एम० ए० ने किया है। हिन्दी अनुवाद श्री देशराज कपूर, एडवोकेट, कपूरथला अथवा ठाकुर हरबख्श सिंह परिहार, ३ यरवदा, पूना ६ से प्राप्त हो सकता है।

श्रीमद्भगवद्गीता की इस व्याख्या का दृष्टिकोण समन्वयात्मक अथवा सयोगात्मक है। द्वैत अद्वैत, श्रौत-स्मार्त्त तथा ज्ञान भक्ति या कर्म के भेदों से जो भिन्न भिन्न मार्ग स्वीकार कर लिये गये हैं, उनकी निस्सारता दिखलाते हुए लेखक ने इस टीका में 'एक ही मत व एक ही पथ' के अस्तित्व को सिद्ध करने का यत्न किया है। प्राय: गीता के टीकाकारों ने गीता के पदों की अपने मत के अनुसार व्याख्या करके उस अमर ग्रन्थ को अपने सिद्धान्त की पुष्टि का साधन बनाया है। गीता के श्लोक वही हैं, उन्हीं से किसी ने शुद्धाद्वैत का समर्थन किया है तो किसी ने विशिष्टाद्वैत का। उन में से एक ज्ञानमार्ग का समर्थन करता है तो दूसरा कर्म-मार्ग का। वास्तविक बात यह है कि भगवद्गीता सब प्रकार की मानवीय प्रवृत्तियों को ध्यान में रख कर रचना किया गया ग्रन्थ है, इस कारण यह समन्वयात्मक है। उसमें कुछ सिद्ध करने का यत्न नहीं किया गया, प्रत्युत सिखाने का यत्न किया गया है। शिक्षा भी किसी एक वर्ग या श्रेणी को नहीं दी गयी, अपितु सभी वर्गों और श्रेणियों के मनुष्यों के लिये दी गयी है। ऐसे उदारभाव से लिखे गये ग्रन्थ को किसी विशेष सम्प्रदाय की सिद्धि का साधन बना कर वस्तुतः बहुत से टीकाकारों ने भगवद्गीता के साथ अन्याय किया है। बंगाली बाबा ने भेद भावना को हटा कर गीता के व्यापी और सयोगात्मक रूप को मुख्यता दी है।

समन्वयात्मक रूप से धर्म की व्याख्या करते हुए बंगाली बाबा कहीं कहीं आवश्यक सीमा से आगे भी चले गये प्रतीत होते हैं। आहार सम्बन्धी श्लोकों की व्याख्या करते हुए व्याख्याकार ने मांस भक्षण और मदिरा-सेवन तक को धर्म के अविरुद्ध बतलाना आवश्यक समझा है। गीता में सब कुछ है, यह सिद्ध करने के लिये ही व्याख्याकार ने यह लिखा प्रतीत होता है कि श्रीराम मांस, मत्स्य व मदिरा का सेवन करते थे। जैसे साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से व्याख्या करने में सीमा के उल्लंघन का खतरा है, वैसे ही यदि सयोगात्मक विचार-शैली में सीमा का उल्लंघन हो जाय, तो वह भी मार्गभ्रष्ट कर देने वाली चीज है। 'सब कुछ असत्य है' यह उक्ति जितनी अतिशयोक्ति पूर्ण है 'सभी कुछ सत्य है' यह उक्ति भी उससे कुछ कम भ्रमपूर्ण नहीं।

इस प्रकार के दो एक स्थलों को छोड़ कर शेष व्याख्या काफी विशाल दृष्टि से की गयी है। सामान्य रूप से व्याख्याकार ने संकुचित साम्प्रदायिक भावना का खण्डन करके गीता की ऐसी व्याख्या की है जो मनुष्यमात्र के लिये उपयोगी और सामयिक है।

—इन्द्र

अष्टछाप-परिचय—लेखक व प्रकाशक—श्री प्रभुदयाल मीतल। अग्रवाल प्रेस, अग्रवाल भवन, मथुरा। मू० ४)।

हिन्दी के काव्य साहित्य में भक्तिकाल का स्थान बहुत ऊंचा है और कृष्ण भक्तिकाल से अष्टछाप के कवियों को यदि निकाल दिया जाय, तो वह बहुत खण्डित व नीरस रह जायगा। प्रस्तुत पुस्तक में अष्टछाप के आठों कवियों— कुंभनदास, सूरदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, गोविंदस्वामी, नन्ददास, छीतस्वामी और चतुर्भुजदास का जीवन परिचय, काव्य-रचना और उस पर आलोचनात्मक दृष्टि आदि देने का प्रयत्न किया गया है। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण वह विवेचन है, जिसमें अष्टछाप की दार्शनिक पृष्ठभूमि और वैष्णव सम्प्रदायों के विभिन्न सिद्धान्तों की सुन्दर प्रामाणिक चर्चा की गई है। भारत के धार्मिक और साहित्यिक क्षेत्र पर भी पुष्टिमार्ग का गहरा प्रभाव पड़ा है। इसलिए न केवल साहित्य के विद्यार्थी के लिए, धर्म के विद्यार्थी के लिये भी इसका अध्ययन आवश्यक है। कवियों के परिचय के बाद चतुर्थ और पञ्चम परिच्छेदों में अष्टछाप का काव्य और संगीत तथा सिंहावलोकन भी अत्यन्त महत्वपूर्ण परिच्छेद हैं। आज भी हिन्दी गेय काव्य में अष्टछाप के कवि अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। संगीत शास्त्री इन कवियों के गीतों का विशेष अभ्यास करते हैं। वस्तुत: संगीत के विकास का बहुत कुछ श्रेय अष्टछाप के कवियों को दिया जा सकता है। इस दृष्टि से आवश्यक विवेचन भी किया गया है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि अष्टछाप के कवियों के सम्बन्ध में लेखक ने इस पुस्तक को सर्वांग पूर्ण बनाने का प्रयत्न किया है। लेखक स्वयं वैष्णव और कृष्णभक्त हैं, इसलिए वे इस पुस्तक को अत्यन्त मनोयोग से लिख पाये हैं। उनका अध्ययन भी विशाल है और हमें विश्वास है कि हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी इसे बहुत उपयोगी ग्रन्थ के रूप में पावेंगे।

लेकिन हम लेखक का ध्यान दो बातों की ओर खींचना भी चाहते हैं। पहली बात यह है कि पुष्टिमार्ग के दार्शनिक पक्ष को पारिभाषिक शब्दों के चक्र से निकाल कर और अधिक सुबोध करने की आवश्यकता है। 'सम्प्रदाय प्रदीप' से दिये गये उद्धरण व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं। दूसरी बात यह है कि पुष्टिमार्ग में राधा की भक्ति का आविर्भाव किस तरह हुआ, इसका कुछ विशद विवेचन किया जाना चाहिए। भक्त कवियों ने राधा या गोपियों का वर्णन कितने भी सुन्दर ढंग से किया हो उसका परिणाम जहां कामुकतापूर्ण उत्तेजक रीतिकालीन साहित्य है, वहां उसका हिन्दू समाज की सामाजिक और धार्मिक परंपराओं पर भी कम बुरा प्रभाव नहीं पड़ा है। इस दिशा में अधिक विवेचन किया जाना चाहिए था। आखिर क्यों सूर जैसे भक्त कवि गोपियों के ऐसे विरह वर्णन में पड़े, जिसका प्रवाह कवियों को अस्वस्थ साहित्य के सर्जन की ओर ले गया। यह एक समस्या है, जिसकी ओर भक्ति या साहित्य के प्रवाह में पड़ कर कम ध्यान दिया जाता है, लेकिन इसी कारण यह उपेक्षणीय नहीं है।

दिल के तार—ले० श्री सुदर्शन। प्रकाशक—बोरा एण्ड क० पब्लिशर्स लि०, राउण्ड बिल्डिंग्स कालबादेवी बम्बई, नं० २। मूल्य १।)

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के ४३ गीतों का संग्रह है। गीत छोटे छोटे और वस्तुतः गेय हैं। ईश्वर भक्ति, प्रार्थना, प्रेम, देशभक्ति, उपदेश, नीति और मनोरंजन आदि विषयों पर सुन्दर सुन्दर गीत इसमें दिये गये हैं। श्री सुदर्शन नाटक और सिनेमा क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति पा चुके हैं, वे गेय गीतों के लिखने में सिद्ध हस्त हैं। जिन्हें नये या पुराने संगीत से प्रेम हो, वे दोनों इस पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं। दो चार नमूने देखिये—

१—नाथ अनाथन के रखवार
    कबलों तोंपर लगो नजरिया
    कब तक करूं पुकार—

२—नदिया गहरी दूर किनारा
    नइया फंसी आज मझधारा
    पल पल डूबी जात
    प्रभु बिन कौन हमें अपनाये।

३—आगे तेरी शान खड़ी है
    बनकर क्या अनजान खड़ी है।
    आगे बढ़ कर देख सिपाही
    तू है शेर जवान।

४—जिंदगी है एक रात
    प्यार इसमें है चिराग
    यह चिराग जितनी देर
    जल सके जलाये जा।
    रोशनी लुटाये जा।
    जिन्दगी है प्यार से
    प्यार में बिताये जा।

पुस्तक की छपाई सफाई बहुत अच्छी है।

—कृष्ण

प्रेम दूती

श्री विराज जी रचित प्रेम काव्य। सुरुचिपूर्ण शृंगार की सुन्दर कवितायें। मू० ॥।) डाक व्यय पृथक।

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

नसों की निर्बलता तथा शक्तिहीनता के लिए सर्वोत्तम औषधि

मलहम Ointment

पुरुषों की नसों की कमजोरी और उसके फलस्वरूप मन्द काम वासना को सतेज करनेके लिये यह तेल बेजोड़ साबित हो चुका है। इसके लगाने से नसें मजबूत व बलिष्ठ बनती हैं तथा पूर्ण रूप से शक्ति प्राप्त होती है। सारांश में दम्पत्ति को सच्चे सुख का अनुभव होता है। मूल्य प्रति शीशी ५), डाक खर्च ॥।) अलग

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चायनीज मेडिकल स्टोर,
नया बाजार—देहली।

हेड आफिस—२८ पूपोवो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता, रीची रोड—अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी मेवाड़ मेडीकल स्टोर्स—आगरा
दी अजमेर मेडीकल स्टोर्स—अजमेर
दी एलाईड केमिस्ट्स—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकी वल्लभ—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी—मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—लश्कर।
मेसर्स खरे ब्रादर्स—बराई।
मे० मोतीलाल चिरंजीलाल—श्री माधोपुर।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
दी वर्मा मेडीकल स्टोर्स—फिरोजाबाद।
मे० पारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वेदिक भुवन मूलजी
[illegible]

दिल्ली स्कूलों की नई पाठ-विधि

[एक आलोचना]

देहली प्रांत के शिक्षा विभाग की ओर से १९४७ में नई स्कीम प्रकाशित हुई है। यह स्कीम बहुत सोच कर बनाई गई है। परन्तु इसमें कई दोष हैं, जो दूर होने चाहिएं

(१) अंग्रेजी को वही स्थान दिया है जो पहले था। यह पांचवीं श्रेणी से आरम्भ की गई है। विद्यार्थियों का बहुत सा समय विदेशी भाषा के सीखने में चला जायगा, इस समय में वह अधिक ज्ञान पा सकते थे। हमारे विचार में अंग्रेजी भाषा अनिवार्य न हो, विद्यार्थी कोई सी विदेशी भाषा अंग्रेजी, जरमनी, रूसी, अरबी, फारसी जापानी आदि ले सकते हैं और यह नवीं श्रेणी से आरम्भ हो।

(२) संस्कृत सातवीं श्रेणी से आरम्भ की है, साथ अरबी फारसी को मान रखा है। अरबी फारसी विदेशी भाषाओं में ही गिनी जाएं। संस्कृत स्वदेशी भाषा है। इसे और पहले प्रारम्भ करना चाहिए।

(३) भारत की कोई भी भाषा पढ़ने की स्वतन्त्रता — उर्दू, हिंदी, पंजाबी, बंगाली आदि। हिन्दी भाषा प्रत्येक विद्यार्थी। अवश्य सीखे इसकी व्यवस्था होनी चाहिये थी कि प्रांतों में प्रांतों की भाषा हो और अक्षर देवनागरी हो, परन्तु मिडिल में प्रत्येक विद्यार्थी हिंदी अवश्य सीखे। इससे भारत की एक भाषा बनाने में सहायता मिलेगी।

(४) गणित में भिन्न का जोड़, बाकी गुणा, भाग चौथी श्रेणी में है और लघुतम महत्तम पांचवीं श्रेणी में। विद्यार्थी लघुतम महत्तम के बिना भिन्न का जोड़, बाकी आदि किस प्रकार करेंगे। इसी प्रकार $\frac{3}{4}$ के गुणा का पहाड़ा बनाना तीसरी श्रेणी में है और $\frac{1}{4}$ का चौथी में।

(५) प्राइमरी में जिन महा पुरुषों की कहानियां दी हैं उनके नाम ये हैं —

पैगम्बर तथा संशोधक

कृष्ण, बुद्ध, पैगम्बर मुहम्मद, पीयूमसीह, महावीर, गुरुनानक, जोरास्त्र। इनमें वहां विदेशियों के नाम आदर से लिये हैं, वहां भारत के सुधारकों का वह आदर नहीं किया। इनमें स्वामी दयानन्द राममोहनराय, स्वामी शंकराचार्य तक का नाम नहीं।

भारत के महापुरुष तथा स्त्रियां

रामचन्द्र, अशोक, अल्तमश सुल्तान महमूद गजनवी, पृथ्वीराज, अलाउद्दीन खिलजी, बाबर, हुमायूं, अकबर, राणा प्रताप, जहांगीर, नूरजहां, शाहजहां, औरंगजेब, शिवाजी, क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स, लौर्ड वेलज्ली, महाराजा, रणजीतसिंह, हैदरअली टीपू सुल्तान, सर सैयद अहमद खां, पं० जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी तथा एम० ए० जिन्हा। यहां जिन्हा का नाम है, परन्तु लाला लाजपत राए, बालगंगाधर तिलक, स्वामी दयानन्द, राजा राम मोहन राय, गुरु गोविन्द सिंह, स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज का नाम नहीं।

अब पांचवीं श्रेणी की पाठ विधि में महा पुरुषों के नाम देखिये।

पैगम्बर और संशोधक

कृष्ण, महावीर, पैगम्बर इब्राहीम तथा पैगम्बर मुहम्मद, कबीर, गुरु नानक, गुरु गोविन्द सिंह, रामानुज, शंकराचार्य, जोरास्त्र।। यहां भी स्वामी दयानन्द या राममोहन राय आदि नहीं है।

भारत के महापुरुष

पोरस, चन्द्र गुप्त मौर्य्य, अशोक, कनिष्क, विक्रमादित्य, फाहियान, हर्ष, हुवानसांग, मुहम्मद बिन कासिम, मोहम्मद गौरी, पृथ्वीराज, रजिया, पद्मनी, नासिरुद्दीन महमूद, फिरोजशाह तुगलक, शेरशाह, राणा प्रताप, राणासांगा, अबुलफजल, फैजी, टोडरमल, राजा मानसिंह, चांद बीबी, नादिरशाह, अहमदशाह अब्दाली, डूपले, क्लाइव, हैदरअली, महादजी सिंधिया, नाना फड़नवीस, कौरनवालिस, अहल्या बाई, लौर्ड मिन्टो, मारकुइस हेस्टिंग्ज, लौर्ड लिटन, लौर्ड रिपन, लौर्ड हार्डिंग। शेष वाइसराय न जाने क्यों छोड़ दिये गये हैं।

संसार के महा पुरुष

सुकरात, सिकन्दर, खलीफा अली, सुल्तान महमूद, लुइस पास्टेर, अब्राहम लिंकन, फ्लोरेन्स नाइटिंगेल, जोर्ज स्टीफनसन, विलसन,

इनमें कहीं जगदीश चन्द्र बोस, प्रफुल्लचन्द्र राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा तिलक आदि का नाम नहीं। प्राइमरी के लिये लिख दिया है कि और भी लिये जा सकते हैं। परन्तु इस से स्कीम बनाने वाली मनोवृत्ति का पता लगता है। इसी मनोवृति के अनुसार पुस्तकें लिखी जायेंगी।

छटी श्रेणी में केवल हिन्दू काल, सातवीं में केवल मुस्लिम काल, आठवीं में केवल अंग्रेजी काल लिया है परन्तु आजकल इतिहास के पढ़ाने की सबसे अच्छी रीति यह है कि प्रत्येक श्रेणी में सब प्रकार की बातें उनकी योग्यतानुसार बताई जाएं। अंग्रेजी में इतिहास इसी ढंग पर लिखे गये हैं। प्रत्येक आयु का बच्चा सब वस्तु देखता है और अपनी समझ के अनुसार सब ज्ञान ग्रहण करता है।

सातवीं श्रेणी में यह तो लिखा है कि इस्लाम, पवित्र पैगम्बर तथा इस्लाम का विस्तार कैसे हुआ यह पढ़ाया जाय, परन्तु अंग्रेजी में यह नहीं लिखा कि इस काल में आर्यसमाज ब्रह्म समाज, तथा ईसाइयत कैसे फले।

(६) सदाचार शिक्षा का इस योजना में कोई स्थान ही नहीं। इंग्लैण्ड तथा अमरीका की सदाचार प्रचारिणी सभा की अष्ट वर्षीय योजना बहुत ही बढ़िया बनी हुई है जिसमें वीरता, पवित्रता, अहिंसा न्याय, सत्य, देशप्रेम आदि सब बातें सम्मिलित हैं। उन विषयों पर बहुत सी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।

(७) प्रांतों के लिये पृथक् २ योजना बनाने की अपेक्षा सारे भारत के लिए योजना बनाई जाए जिससे विभिन्न प्रांतों के विद्यार्थी स्थानभेद होने पर भी भली भांति लाभ उठा सकें।

(८) वर्धा शिक्षा योजना आदि से दिल्ली प्रांत के शिक्षा-शास्त्रियों ने कोई लाभ नहीं उठाया।

—बिहारीलाल

एजेन्सी के नियम और सूचीपत्र मुफ्त मगायें

स्वप्न दोष की अनुपम दवा
मूल्य २॥) की शीशी
मिलने का पता—ताराचन्द गुप्त
नई सड़क रोशनपुरा देहली।

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

इसको रखने के लिए लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं
हर घर में होना चाहिये

सबसे अच्छा निराला और आखरी माडल
पचास व छः फायर वाले
अमरीकन पिस्तौल

जान व माल की रक्षा के लिये इससे अच्छी कोई चीज नहीं। यह माडल असली की मानिन्द अब पहली बार आया है।
मूल्य छः फायर वाले शाट के साथ माडल बी० नं० १, ४॥।≈)
माडल बी० नं० २, ५॥।≈) स्पेशल माडल डी० नं० २, ७॥।≈)
गजब ५० फायर वाले शाट के साथ नया माडल डी० नं० १, ६॥।≈)
स्पेशल माडल डी० नं० २, १०॥।≈) फालतू शाट १) दर्जन
पिस्तौल का ढ़ोल ॥) चमड़े की पेटी पांच रुपये डाक खर्च अलग
तीन एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ
EASTERN IMPORTERS P. B. 45, DELHI.
ईस्टर्न इम्पोर्टर्स पो० ब० ४५, दिल्ली।

सन् ४७ का क्रान्तिकारी साहित्य
'पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा'

पंजाब के उपद्रवों की पृष्ठभूमि पर लाल लोहू से हिन्दी के श्रेष्ठ कहानीकार विष्णु रामचन्द्र तिवारी, देवदत्त अटल, श्रीराम शर्मा 'ग्राम' आदि के द्वारा विभिन्न दृष्टिकोणों से लिखी गईं रोमांचकारी कहानियां पढ़िये। हमारा दावा है कि पुस्तक पढ़ते समय आप की आखों से आग की चिनगारियां निकलने लगेंगी, और शरीर क्रोध से कांपने लगेगा। पृष्ठ संख्या लगभग २००, सजिल्द पुस्तक का मूल्य २), डाकव्यय रजिस्ट्री ।=)

प्रेस में — नवीन प्रकाशन — प्रेस में

रक्तरंजित सन् १९४७

यह पुस्तक सन् १९४७ के देश के उत्थान-पतन, क्रमिक विकास और परिवर्तनों का सजीव चित्रण है। पृष्ठ संख्या लगभग १५०, मूल्य डाकव्यय सहित १॥=)

—आज ही लिखिये—

स्वास्थ्य सदन, चावड़ी बाजार (घ) दिल्ली

पेट भर भोजन करिये

मेदहर—(गोलियां) गैस चढ़ना का पैदा होना, पेट में पवन का घूमना, भूख की कमी, पाचन न होना, खाने के बाद पेट का भारीपन, बेचैनी, हृदय की निर्बलता, दिमाग अशान्त रहना, नींद का न आना, दस्त की रुकावट वगैरह, शिकायतें दूर करके दस्त हमेशा नियमित साफ लाती है, अन्न पचा कर कड़ाके की भूख लाती है, आंत को ताकत देती है। शरीर में रुधिर बढ़ा कर शक्ति प्रदान करती है। वात, लीवर तिल्ली और पेट के हर एक रोग में अद्वितीय दवा है। कीमत रुपया १।) तीन का ३॥) डाक खर्च अलावा।

पता—दुग्धालुपान फार्मेसी ४ जामनगर दिल्ली—एजेंट चमनादास क० चांदनी चौक

१००) इनाम
सिद्ध योगेन्द्र कवच

सिद्ध वशीकरण—इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश० हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का०१२), झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री महाशक्ति आश्रम, ६३
पो० कतरी सराय (गया)

१५०) नकद इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का १३) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम

गारंटी पत्रसाथ भेजा जाता है पता:—
आजाद एन्ड कं० रजिस्टर्ड, (अलीगढ़)

७५०० रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं।

आटोजम (विटामिन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है तथा चेहरे पर यौवनावस्था को भांति की चमक आ जाती है जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विटजरलैंड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं पर उसने एक युवती से ब्याह भी कर लिया।

आटोजम के बर्तने से ८० तथा ६० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्ट्रेसें इत्यादि, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगती हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इसका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाए रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Otogem आटोजम Otogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंगलैंड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। आटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशा में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देखें फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। आटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जाएगा। आज ही इसे मंगवाने के लिए आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता:—
दी मैकसो लैबोरेटरीज ५७७ बेला रोड
पोस्ट बक्स नं० ४५ (A. B. D.) देहली।

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मंगावें। पता:—
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

मुफ्त

वीर अर्जुन के पाठकों को यह हर्ष होगा कि लाहौर के विख्यात गुप्त रोग विशेषज्ञ वैद्य कविराज ज्ञानचन्द जी बी० ए० ने हौज काजी दिल्ली में नियम पूर्वक कार्य आरम्भ कर दिया है। रोगी उनको स्वयं मिलकर व पत्र व्यवहार द्वारा सम्मति तथा औषधियां ले सकते हैं। शरणार्थी भाइयों के लिए औषधियां मुफ्त दी जायेंगी ताकि धोके का अवसर न मिले। पूर्ण विवरण के लिए उनकी अंग्रेजी की पुस्तक sexualguide मुफ्त १२ आने पढ़ें।

आजाद हिंद के बालक क्या करें ?

[राजकुमारी अमृत कौर]

आप कदाचित् जानते होंगे कि स्वास्थ्य के सम्बन्ध में हमारा देश कितना पिछड़ा हुआ है। हर प्रकार के रोग और बुखार देश में फैले हुए हैं। बचपन में कितनी ही मौतें हो जाती हैं और कितनी ही स्त्रियां सतानोत्पत्ति के समय काल कवलित होती हैं। हमारे यहां जीवन काल का औसत संसार में सब से कम है। यह सच है कि हमारी इन बुरी बातों का कारण सब से अधिक हमारी निर्धनता ही है। अभी कुछ समय पहले तक हम विदेशी राज्य में रहे हैं। विदेशी गाव की तरफ ध्यान नहीं देते थे। अब हम पराधीनता से मुक्त हो चुके हैं।

लेकिन यदि आप रोगों के शिकार बने रहे तो कभी कोई उन्नति न कर सकेंगे। इसलिए मैं आप से निम्न बातों की तरफ ध्यान देने का अनुरोध करती हू —

(१) हाथ की चक्की से पिसे आटे की रोटी खाइये। यदि हाथ से पिसा आटा नहीं मिलता तो खराद से पिसे आटे की रोटी खाइये। मशीन की चक्की से पिसे आटे में पोषण तत्व नहीं होते।

(२) सब्जी खाने की आदत डालिये। आप जितनी ही सब्जी खायेंगे, उतना ही अच्छा होगा। जब फल मिलें तो फल भी खाइये।

(३) अपने पशुओं की हिफाजत कीजिये। वे आपकी सब से बड़ी सम्पत्ति हैं। हिफाजत न होने की वजह से ही गायें कम दूध देती हैं फिर हमें दूध या घी कैसे मिल सकता है ?

(४) गाव को साफ सुथरा रखिये। स्वास्थ्य और सफाई के नियम न मानने के कारण हमारे मध्य बीमारियों का दौर चलता है। गदगी से मक्खी, मच्छर तथा अन्य जन्तु उत्पन्न होते हैं, जो बीमारी फैलाते हैं। इसलिए अपने घर और गली में गन्दगी न रहने देना आपका कर्तव्य है।

(५) स्वच्छ वस्त्र, खाने और भोजन पकाने के बर्तन की सफाई, साफ बच्चे, साफ मकान, साफ गलिया और स्वस्थ पशु एक समृद्धिवान गाव के चिन्ह हैं।

(६) दूषित जल बीमारी का एक और कारण है। सदा अच्छे कुए से पानी पीजिये। किसी घिरे तालाब या पोखर का पानी कभी न पीजिये। अपने कुए के निकट की भूमि स्वच्छ रखिये।

(७) बालकों में आरम्भ से ही सफाई की आदत डालनी चाहिए।

आज आपके लिए मेरा सदेश यही है कि नींद से जागिये। अपने द्वार से भुखमरी के भेड़िये को भगा दीजिये।

मूर्खतापूर्ण खर्चे न कीजिये। हमारे समाज में जो बुरी प्रथाए आ घुसी हैं, उनसे पिण्ड छुड़ाइये। जुआ न खेलिये। शराब न पीजिये। कर्जदारी से बचिये। अपने चरित्र को ऊचा उठाइये। सबके साथ भाईचारे का व्यवहार कीजिये। आपसी फूट ने हमारे देश को बर्बाद कर दिया है। झगड़े और मारकाट हमें कहीं का न रखेंगे। प्रेम सभी पर विजय प्राप्त करता है। यदि स्वच्छ और उचित रूप से रहें तो हमारा स्वास्थ्य और भी ठीक रहेगा।

सच्चा साधु

एक साधु की गुदड़ी चोरी हो गई। एक कान्सटेबिल ने चुरा ली साधु पुलिस थाने के कहीं आस पास ही रहता था। मौज में आकर रिपोर्ट लिखवाने गया—'लुट गया ! लुट गया !! गरीब लुट गया !!!

थानेदार ने पूछा—तुम्हारा नाम क्या है ?

साधु—हृदयेश नारायण

थानेदार— तुम्हारा क्या गया है ?

साधु—सब कुछ। एक तो रजाई खो गई है।

थानेदार— और क्या ?

साधु—बिछौना

थानेदार— और क्या ?

साधु— चादर

थानेदार—और क्या ?

साधु—कोट और पायजामा।

थानेदार—और क्या ?

साधु—तकिया।

थानेदार—और क्या ?

साधु—आसन।

थानेदार—कुछ और ?

साधु—हा छतरी भी जाती रही।

थानेदार—बस इतना ही कि कुछ और भी ?

साधु—हुजूर धोती भी चोरी हो गई।

थानेदार —खूब स्मरण करलो।

साधु—और और

वह कान्सटेबिल, जिसने चोरी की थी, पास ही खड़ा था। चोरी गए माल की इतनी लम्बी रिपोर्ट सुन कर वह हक्का बक्का और गाली देकर बोला—"और और बोले जाता है ? तेरा चोरी गया माल बस भी होगा कि नहीं ! तेरी झोंपड़ी है कि सौदागर की कोठी ? इतना सामान कहा से आ गया ?"

यह कहकर कान्सटेबिल साधु की गुदड़ी उठा लाया और थानेदार की ओर मुख करके बोला —

'हुजूर बस, केवल इतना ही तो इसका चोरी गया माल है और इसने दर्जनभर चीजें गिना दीं।

थानेदार —क्या तू पहचान सकता है कि यह गुदड़ी तेरी है ?

साधु—हा मेरी है।

इतना कहा और झटपट वह गुदड़ी कन्धे पर डाल थाने से बाहर दौड़ चला।

थानेदार ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि इसे झट पकड़ लो।

साधु फिर थानेदार के सामने पेश हुआ।

"तेरा चालान होगा, तूने झूठी रिपोट क्यों लिखवाई ? हमको धोखा देना चाहा ?"

साधु ने चुपचाप गुदड़ी को ओढ़कर बताया—

"यह देखो, मेरी रजाई।'

उसी गुदड़ी को नीचे बिछाकर बताया—

वह देखो मेरा बिछौना। 'धूप में उसी गुदड़ी को सिर पर रखकर कहा— "यह देखो मेरी छतरी।" गुदड़ी को तहकर अपने सिर के नीचे रखकर कहने लगा "यह देखो मेरा तकिया।" गुदड़ी को नीचे बिछाकर और उसको थोड़ा बहुत समेटकर उस पर बैठ गया और कहने लगा— 'यह देखो मेरा आसन' इत्यादि।

सचमुच साधु बिल्कुल सच बोलता था।

—उर्मिला भटनागर, कक्षा ८

—निर्मला भटनागर कक्षा ६

पिकाक दंत मंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के दुकानदार से मांगये।

ऐजेन्टों की जरूरत है

पेनसा ट्रेडिंग कम्पनी

चांदनी चौक, देहली।

गीत

गुड़िया रानी गुड़िया रानी,
तुम्हें सुनाऊ एक कहानी।

एक था राजा एक थी रानी,
करते थे दोनों मनमानी।
उड़न खटोले में दोनो ने,
बैठ स्वर्ग चलने की ठानी ॥

सैर सपाटे ही करते थे,
नहीं किसी से वे डरते थे।
मा बापों ने बहुत कहा पर,
नहीं किसी की उनने मानी ॥

स्वर्गलोक तक पहुंच गये जब,
किया घमं, उनसे पूछा तब।
देवों की ऐसी बातें सुन,
दग रह गये राजा रानी ॥

चुप देनों को देख उसी दम,
उड़नखटोला उलट्या एक दम।
लटक गये राजा त्रिशकु सम,
और आ गई नीचे रानी ॥

मन में बहुत बहुत पछिताये,
खोटी करनी के फल पाये।
रोते रोते दोनों मर गये,
और खतम हो गई कहानी ॥

आज नहीं वे राजा रानी,
किन्तु शेष रह गई कहानी।
यही हाल होता है उसका,
नहीं बड़ों की जिसने मानी।

—उमाशंकर शर्मा विशारद

लाठी

मैं लम्बी सी कुछ ठिगनी सी
कुछ पतली सी कुछ मोटी हू।
जग सारा मुझसे है परिचित
छिड़ जाने पर मैं खोटी हू।

सारा जग थर्रा उठता है
भू पर आफत सी आ जाती।
लोगों के प्राण निकलते हैं
मैं मस्ती मे जब चल जाती ॥

मैं उछल उछल करके तन तो
निज करतब खूब दिखाती हू।
वैरी का वार बचा क्षण में
सिर लाल लाल कर आती हू।

मरा वीरों ने मान किया।
कायर ने झुक प्रणाम किया।
बूढ़ों ने कर में थाम मुझ
चलने फिरने का काम लिया ॥

—सज्जनाकत 'मृन्ल'

टिकट बदलिये

जो बालबन्धु टिकट बदलना चाहें वह निम्नलिखित पते पर बदल लेवें—

निर्मल कुमार कोठिया, रेलवे स्टेशन उदयपुर (मेवाड़)।

डाक्टर की फीस

[पृष्ठ १० का शेष]

खुर्रत की तो याद रखो कि पहले तुम्हें अपने इस बेबस सरदार के सीने से छुरा पार करना होगा। मेरे जीते जी यह कभी मुमकिन नहीं। कि तुम इन पर हाथ उठाओ। तुम्हारा सिर शर्म से झुक जाना चाहिए, तुम किस पर हाथ उठा रहे हो ? ये इन्सान नहीं फरिश्ते हैं। ऐसी अंधेरी रात में जब कि हम मजहब के पीछे अन्धे खुदा की पाक कुदरत को उजाड़ने में लगे हुए हैं इस खुदा के फरिश्ते ने ऐसे वक्त यहा आकर उसकी कुदरत के एक मुरझाते हुए फूल को फिर से खिला दिया ! अगर ये न आये होते तो तुम अपने सरदार से यहा न मिल पाते—!'

'अहमद भय्या ! यह तुम क्या कर रहे हो ! आराम से लेटे रहो नहीं तो मेरी सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा। मेरी बहिन रजिया का इस दुनिया में कोई सहारा न रहेगा। खुदा के नाम पर लेटे रहो ! अगर मेरी जान भी अपना कर्तव्य निभाते हुए चली जायगी तो मुझे संतोष होगा। मुझे अगर अपनी जान प्यारी होती तो घर से निकल कर यहा न आता !'

दिनेश ने अहमद को हाथ का सहारा देकर पुन लेटा दिया। रजिया दरवाजे पर बढ गयी। बोली, 'खुदा के वास्ते इस्लाम के नाम पर धब्बा न लगाओ। तुम्हारी आखों पर मजहब की पट्टी खुद गर्जों ने बाध रखी है, उसे उतार कर देखो तो हिन्दु मुसलमान में कोई फर्क मालूम न पड़ेगा। इन्होंने मेरे शौहर को एक नयी जिन्दगी दी है। इससे पहले कि तुम इनको मारो हम दोनों के खून से तुम्हें हाथ रंगने पड़ेंगे !' तब मुसलमानों ने सिर झुका लिया और जिधर से आये थे उधर लौट पड़े !

दिनेश ने कहा, 'बहन रजिया अब मैं चलता हू। सबेरा होने वाला है। घर पर तुम्हारी भाभी भी चिन्ता में होगी कि इतनी देर तक लौटा नहीं। अच्छा नमस्ते।' रजिया ने १००) का एक नोट आगे बढा दिया।

'रजिया ! यह क्या करती हो ?' दिनेश आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए दु:ख भरे स्वर मे बोला। क्या तुम इन्हीं के बल पर मुझ से अपने सुहाग की भीख मांगने आयी थी ? क्या मैं इन्हीं चादी के टुकड़ो के लिये अपने घर से निकला था। यह मेरी फीस नहीं होगी बल्कि भाई बहन के रिश्ते का जनाजा होगा। रजिया ! इस कदर बेरहम न बनो।'

'रजिया;— ठीक तो कहते हैं दिनेश भय्या ! इनकी फीस देना तुम्हें ठीक नहीं लगता, अगर हम अपनी सारी दौलत भी इनके कदमों पर रखदें तो क्या वह इस अहसान का बदला चुका सकती है ?'

'मुआफ करना भय्या ! चलो तुम्हें घर तक छोड़ आऊ !'

'मेरे साथ जाने की अपेक्षा तुम्हारा यहा रहना ज्यादा जरूरी है ! और फिर मैं तो कोई बच्चा नहीं हू जो तुम साथ चलो ! कल जरूर खबर भिजवा देना और अगर जरूरी समझो तो नौकर भेजकर बुलवा लेना ! अच्छा !'

'जी !'

एक दिन बाद सबने अखबारों में बड़े बड़े शीर्षकों में पढ़ा कि 'दिल्ली के प्रमुख लीगी नेता ने मुस्लिम लीग से स्तीफा दे दिया और कांग्रेस में शामिल हो गया तथा पंजाब पीड़ितों के लिये १०० सौ कम्बल महात्मा गांधी के पास भेजे।'

लोग समझ रहे थे कि यह कोई राजनीति की चाल है और दिनेश ने अखबार कमला की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'यह लो सम्हाल कर रखो कल रात की मेरी फीस !'

—.०:—

[पृष्ठ ६ का शेष]

है। उसके सम्बन्ध में यहा अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। हा जिन वैधानिक कठिनाइयों के कारण रिजर्व बैंक अब तक एक केन्द्रीय बैंक का कार्य सम्पादन करने में असमर्थ रहा है, उन्हें हटाना आवश्यक है। वैधानिक सीमाऐं तभी हटायी जा सकती हैं, जब कि रिजर्व बैंक हिस्सेदारों का बैंक न रह कर सरकारी बैंक बन जाय। जो हिचकिचाहट और अड़चन आज रिजर्व बैंक कृषि सम्बन्धी अर्थ व्यवस्था तथा महाजनी के पुनर्संगठन में अनुभव करता है, वे राष्ट्रीयकरण के पश्चात् दूर हो सकती हैं। जब तक वह कुछ हिस्सेदारों के बैंक से समस्त राष्ट्र का केन्द्रीय बैंक नहीं बनेगा, तब तक देश के सबसे बड़े उद्योग (कृषि) के लिए वह अर्थ का आयोजन नहीं कर सकता। युद्धोत्तर योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारों को आज अतुल धन-राशि की आवश्यकता है। इस विशाल कार्य के लिए सरकार और केन्द्रीय बैंक की नीति में ऐक्य एव सामजस्य का होना आवश्यक है। केन्द्रीय बैंक एक आर्थिक अस्त्र है, जिसके बिना राज्य-शासन चालीस करोड़ जनता के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने में असमर्थ रहेगा। अत. हमारी राय में रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण भारत के लिए अवश्य ही श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

———

सर्वत्र अत्यन्त माग की जाने वाला

उद्यम

फोटोग्राफी विशेषांक

ता० १५ जनवरी को प्रकाशित होगा !

❀ उत्तम फोटो ❀ हास्यजनक व्यंगचित्र ❀ उपयुक्त जानकारी
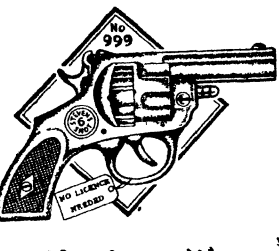
इसके अलावा फोटोग्राफी सम्बन्धी आकृतियों सहित सम्पूर्ण जानकारी बिलकुल सरल भाषा में प्रकाशित की जाने वाली है। हजारों पाठकों ने फोटोग्राफी विशेषांक प्रकाशित करने के लिये हमें बारम्बार सुझाया है। हिन्दी जानने वाले प्रत्येक व्यक्ति को फोटोग्राफी विशेषांक सुरक्षित रखने की इच्छा होगी। इस विशेषांक की अपेक्षा से अधिक माग की जा रही है। अत. आज ही उद्यम का वार्षिक मूल्य ७) रु० भेज कर समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होने वाला उद्यम मासिक संग्रहीत कीजिये।

× फोटोग्राफी विशेषांक के लिये अत्यधिक विज्ञापन आ रहे हैं। अतः विज्ञापनदाता अपना विज्ञापन शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

— व्यवस्थापक, उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपूर।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घु घरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आवेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवेल्टी स्टोर्स पो० ब० नं० ४५ दिल्ली।

General Novelty Stores P. B. 45,Delhi.

आत्मरक्षार्थ आटोमेटिक

६ खानोंवाली

पिस्तौल

लैसन्सकी कोई जरूरत नहीं ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डरानेके लिए बड़े काम की है। दागनेपर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआं निकलता है।

असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥ इंच × ४ इंच और वजन १२ औंस मूल्य ८) और साथ में एक दर्जन गोलियां (एक्सर्ट्रा डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों के दाम २) स्पेशल ताम्बे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। बेल्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंगका अतिरिक्त १०)। प्रत्येक आर्डर के साथ एक बीसी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसन्द होने पर दाम वापस

INTERNATIONAL IMPORTERS, P. B. 199, Delhi.

इंटर नेशनल इम्पोर्टर्स पो० बाक्स १९९, दिल्ली।

[पृष्ठ ४ का शेष]

गाजा में सशस्त्र अरबों ने देर रात बाला स्टेशन पर एक गाड़ी रोककर आठे के दो डिब्बे लूट लिये। यहूदी आतंकवादियों के एक दल ने अरब शहर जाफा के तट पर पहुंच कर एक अरबी काफी हाउस पर हमला कर दिया। १२००० बिना पासपोर्ट के यहूदियों के पहुंच जाने पर घमासान लड़ाई होने की सम्भावना है।

ग्रीस विदेशों से सहायता लेगा

ग्रीस की नई गुरिल्ला सरकार को विदेशी राज्यों ने स्वीकार कर लिया है। अभी अमेरिका इसकी प्रतिक्रियास्वरूप अपनी नीति की घोषणा करने वाला है। जिस तरह ब्रिटिश वक्तव्य में कहा गया था कि यदि इस गुरिल्ला सरकार को किसी विदेशी सरकार ने स्वीकार किया तो ब्रिटेन इसे गम्भीर चेतावनी समझेगा। इसी प्रकार की मनोवृत्ति अमेरिका की है। ख्याल यह है कि यदि किसी विदेशी राज्य ने गुरिल्ला सरकार को स्वीकार कर लिया तो ग्रीक सरकार तुरन्त इस मामले को मित्रराष्ट्रीय जनरल असेम्बली में ले जायेगी और उसे ब्रिटेन तथा अमरीका से समर्थन का आश्वासन मिल जायगा।

साथ ही यह भी ख्याल है कि ग्रीस मित्र राष्ट्रीय घोषणापत्र की ५१ वीं धारा के मातहत आत्मरक्षा के लिये विदेशों से सहायता मांगेगा।

लङ्का में भारतीयों के अधिकार

श्री लङ्का स्थित भारतीयों को किन शर्तों पर नागरिकता के अधिकार दिये जावें इसके सम्बन्ध में भारत और श्री लङ्का के प्रधान मन्त्रियों के मध्य व्यापक विचारों पर समझौता हो गया है। विचाराधीन विषयों में से एक मुख्य विषय यह है कि श्री लङ्का स्थित भारतीयों को बिना किसी भेदभाव के नागरिकता के अधिकार दिये जाय जिससे कि वे श्रीलङ्का के नागरिक माने जा सकें।

रूमानिया में राजा का पदत्याग

रूमानियन पार्लियामेंट के असाधारण अधिवेशन में रूमानिया को प्रजातन्त्र घोषित करने का बिल सर्वसम्मति से पास हो गया। रूमानिया के राजा माइकेल ने पदत्याग कर दिया है। रूमानियन सरकार ने राजत्याग के सम्बन्ध में जारी किये गये एक घोषणा-पत्र में रूमानियन जनता से कहा कि अब अपने भविष्य का निर्णय करने का अधिकार प्रजा को दे दिया गया है।

तिरंगा झण्डा

श्री विराजजी रचित तीन एकांक नाटकों का संग्रह—स्वाधीन देश के झण्डे के लिए बलिदान की पुकार। मूल्य १) डाक व्यय ।-)। मिलने का पता—
विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों! औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्तें लिखा लें। मूल्य ३) रु०
दिगम्बर नाथ औषधालय नं० १
पो० कत्तरी सराय (गया)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोह-निद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

असली नई मोटर साईकल इनाम

जवा मर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्न दोष, प्रमेह, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट पुष्ट बनता है तथा नित्य के सेवन से कभी बुढ़ापा नहीं आता। मूल्य ४० दिन की खुराक ३।।।) । तीन डिब्बे एक साथ मगाने से ६।।।) डाक खर्च माफ। बेकार साबित करने पर ५००) नकद इनाम। हर डिब्बे के साथ इनामी कूपन भेजा जाता है जिनसे आप असली घड़ी, रेडियो साइकिल तथा मोटर साइकिल प्राप्त कर सकते हैं। पेशगी मूल्य भेज कर नाम रजिस्टर करा लें ताकि पछताना न रहे।

पता—श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

तेल इतर सैंट और गुलकंद

हमारे कारखाना में खालिस गुलाब के फूलों की आला दरजा की गुलकन्द तैयार है। थोक व्यापारियों के लिये निरख ७५) मन है। एक डिब्बे में बीस सेर गुलकन्द होगा। खुद आकर मिलें या वी० पी० मंगवा सकते हैं। हमारे तैयारकरदा काश्मीर आमला हेयर आईल जुलफे काश्मीर हेयर आईल काश्मीर फेस क्रीम, हर किस्म के इतर, सेंट वेसलीन जो कि तमाम भारत में मशहूर होकर सैंकड़ों सोने और चांदी के तमगे ले चुके हैं। अपने शहर की ऐजेन्सी लेकर लाभ उठावें। निरखनामा मुफ्त तलब करें।

प० ईशरदास मालिक काश्मीर परफ्युमरी वर्क्स कुतुबरोड, देहली।

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम १) डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में है, जो थोड़े ही मूल्य का है।

यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० २०१ कीमत ९॥८) क्वालिटी नं० १२२ कीमत ६।।।) डी लक्स सुन्दरता स्पेशल क्वालिटी नं० २२० कीमत ११), पैकिंग व डाकव्यय १=)

नोट—एक समय में ६ कमरों के ग्राहक को कैमरा नं० २२० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अन्यथा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस

वेस्ट एण्ड ट्रेडर्स (V. A. D.) पोस्ट बाक्स १९९, दिल्ली।
West End Traders, (V. A. D) P B. 199, Delhi.

बेगम एजाज रसूल को इस्माइल खां ने मौ० आजाद के जल्से में जाने से रोक दिया। —एक समाचार

खां साहब के प्राईवेट सेक्रेटरी ने बेगम साहब को जो खत दिया वह यार लोगों ने बेगम के बेग से किसी तरह तीर कर दिया और अब चार यारों को सुनाते हैं। खत में लिखा था—

आजाद के उस जल्से में,
जाओ न तुम बेगम रसूल
लीग को अब तोड़ कर,
क्या फाकनी है तुमको धूल।
बचे पाकिस्तान गये,
हिन्द में बाकी हैं मूल।
दो बरस में देखना,
लग जायगा फिर इस में फूल।
जिन्दगी जिन्ना की है,
अगर अख्तार को कबूल।
इस्माइल जिन्ना बनें,
लियाकत बनें बेगम रसूल।

× × ×

कायदे आजम के जन्म दिन की खुशी में निषेध आज्ञायें हटा कर कैदी रिहा कर दिये गये। —पाकिस्तान सरकार

इसका नाम है दूरदेशी। रिहाई की रिहाई और साथ में रोजगार।

एक तीर से दो शिकार,
लुच्चे गुंडे न हों बेकार,
बोलो जिन्ना का जयकार,
लूटो, खाओ, खुलाबाजार।

× × ×

पाकिस्तान गुंडों का देश है। —बख्शी गुलाम मुहम्मद

मिया साहब तभी तो यार लोगों ने उसे हिन्द से अलग कर उसे उसकी जमात वालों के हवाले कर दिया है।

× × ×

चार लाख आक्रमणकारी पाकिस्तान में एकत्र हो रहे हैं। —शेख अब्दुल्ला

'चूहों की राइट लेफ्ट का समाचार जरा बिल्ली को भी बता देना, कहीं चूहों के चक्रव्यूह में न फस जाय!

× × ×

फिलस्तीन का युद्ध एक भीषण युद्ध होगा। —अरब नेता

'यार लोग तो अभी से इन्तजार में है। जरा विश्व शांति के ढिंढोरचियों से कह दीजियेगा कि २-४ साल अपनी अपनी ढपली उठा कर रख दें। एक चिट्ठी किसी चील की चोंच के सहारे वर्चिल के पास और भेज देना। उसमें लिख देना —

विश्व युद्ध की अग्नि,
जो हिटलर ने सुलगाई।
अमरीका के पंपों से,
जो कल तक थी बुझवाई।
आज तुम्हारे चेलों ने,
वह दबी आच फिर सुलगाई।
उठो चचा अब चीनी चाटो,
किस्मत क्या रग लाई।

\+ × ×

हिन्द में लीग समाप्त हो। —आजाद मुस्लिमसम्मेलन

लीडरों की नौकरी का भार यार लोगों पर छोड़ दो। यार लोगों के पास जो 'आवश्यकता' कुछ दिन पहले छपने के लिए आई थी लीगी लीडरों की भलाई के लिए वह छाप दी जाती है—

शीघ्र आवश्यकता है

विदेशों में अपने नये धन्धे को चालू करने के लिए कुछ ४२० जानने वाले ऐसे अक्लमन्दों की आवश्यकता है, जो कौमों के लिहाज से दलीलें दे देकर देश के टुकड़े आसानी से करा सकें। हरेक जगह और हर चीज में दो का सिद्धान्त मानने वालों और उन लोगों को जो किसी देश की काट छांट में भाग ले चुके हों अपनी ताजी० सनदों के साथ प्रार्थना-पत्र भेजना चाहिए। तोड़-फोड़ मारधाड़ और लूट खसोट की क्रिया में सिद्ध-हस्त लोगों को तरजीह दी जायगी। कार्य के लिए फिलस्तीन और मिश्र जाना होगा। लिखिये—

दी जानबुल पब्लिकेशन्स लि० लन्दन
जनरलमैनेजर — चेयरमैन
के० एटली — चाचा चर्चिल
तार का पता 'चचा'

ब्रांच—शेखचिल्ली एण्ड सन्स कराची (पाकिस्तान)।

× × ×

'भारत की राजमुद्रा में अशोक के सिंहों के साथ बैल और घोड़े और जोड़े जायेंगे। —एक समाचार

'पाकिस्तान सरकार भी अपनी कथित मुद्रा में निम्न संशोधन कर ले एक ओर एक लगड़ी मुर्गी और दूसरी ओर तीन टाग की एक भेड़, नादिरशाह की छुरेवाली मूर्ति के दोनों ओर खड़ी कर दी जायें।

× × ×

अमरीकन पादरी राजा माईकेल की शादी बिना दक्षिणा कराने को तैयार हैं। —एक अमेरिकन पादरी।

'यह पता नहीं चला कि पादरी नयी रानी की मुंह दिखाई मे ही दक्षिणा छोड़ रहे हैं, या मार्शल-योजना में अमेरिका ने शादी-योजना भी शामिल कर दी है?

× × ×

'ईरान रूस से कूटनीतिक सम्बन्ध तोड़ेगा।' —एक समाचार

'यार लोगों की सरकार ने नोट छान कर तैयार कर लिया है कि —

तुम शौक से मर जाना,
हम आके जिला लेंगे।

—:०:—

पहेली नं० ३१ की संकेतमाला

दायें से बायें

१. स्वर्गीय राष्ट्रीय व सामाजिक नेता।
२. समुद्र।
६. जीवित पदार्थों का स्वभाव है।
७. अच्छा लगता है।
८. विशिष्ट मेधावी ही कोई बन पाता है।
१०. गरमी सरदी की एक सीमा।
११ इसके बिना दुनिया में रहना सरल नहीं।
१३ कभी न कभी इससे सभी का वास्ता पड़ता है।
१४. इसमे अन्धकार अधिक होता है।
१५ इसके पास होने से चीज की सुरक्षा रहती है।
१६ इसके अभाव में कई बार बड़ी दिक्कत रहती है।
१७. आज कल जो —— चाहे वही होता है।
१९ अच्छा लगता है।
२१ एक पेड़।
२४ कभी कभी अच्छी लगती है।
२५ कोई चाहे तो लिया जा सकता है।
२६ पूर्ण विजय से पहले —— उचित नहीं।
२७ भगवान सब को दे!

ऊपर से नीचे

१. मजदूर।
२. मारने वाला।
३. दूसरे का / की ही —— देखने में सुख है।
४. अत्यधिक —— पीना हानिकर है।
५. अच्छी —— आनन्दित करती है।
९. चमकीली हो तो सुन्दर जान पड़ती है।
१०. आशा को पाकर प्रसन्नता होती है।
१२. इसके सामने सब हार मान जाते हैं।
१७. माता।
१८. प्रारम्भ इसमें दिक्कत होती है।
२०. चाह न हो तो किसी काम का होना कठिन है।
२२. दही ——।
२३. कार्य सिद्धि इससे सरलता से हो जाती है।
२४. वस्तु को और ही रूप दे देता है।

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

श्वांस दमा (खांसी) के रोगियो

नोट करलो

श्री चित्रकूट कामदगिर बूटी जिसकी केवल एक ही खुराक मिती पौष सुदी पूर्णमा ता० २६-१-४८ के सेवन करने से पुरानी से पुरानी श्वास (दमा) खांसी सदैव के लिए नष्ट हो जाती है।

मंगाने का पता—
श्री महात्मा तपसी बाबा श्रीराम
गुफा चित्रकूट जिला बांदा।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

[सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

यह नेताजी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र है। इसमें जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का सचालन आदि कार्यों का समस्त विवरण आ गया है। मूल्य १) डाक व्यय ।=)।

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

२५०) [सुगमवर्ग पहेली नं० ३१] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार १५०)　　　**न्यूनतम अशुद्धियों पर १००)**

इस लाइन पर काटिये

१ अ	द्वा	न	द	■	२ म	३ हा	सा	४	५ र
६	ल		■	७	र		■	र	
८ क	९	का	र	■		■	१० ज		ना
■	ली	■	११	का	ना	■		■	■
१२ प्र	■	१३	ट	का	■	■	१४	ब	स
१५		■	१६	री	■	१७ ज	न	म	
प	■	१८	■	■	१९	न	■		■
■	२०	च	ना	■	■	२१		■	२२ छ
२३	का	ना	■	२४	ली	■	२५	र	स
ल		■	२६	रा	म	■	२७ ल	ह	

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे मैनेजर का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम . . . .

पता . . . .

ठिकाना . . . . उत्तर नं० . . .

१ अ	द्वा	न	द	■	२ म	३ हा	सा	४	५ र
६	ल		■	७	र		■	र	
८ क	९	का	र	■		■	१० ज		ना
■	ली	■	११	का	ना	■		■	■
१२ प्र	■	१३	ट	का	■	■	१४	ब	स
१५		■	१६	री	■	१७ ज	न	म	
प	■	१८	■	■	१९	न	■		■
■	२०	च	ना	■	■	२१		■	२२ छ
२३	का	ना	■	२४	ली	■	२५	र	स
ल		■	२६	रा	म	■	२७ ल	ह	

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम . . . .

पता . . . .

ठिकाना . . . . उत्तर नं० . . .

१ अ	द्वा	न	द	■	२ म	३ हा	सा	४	५ र
६	ल		■	७	र		■	र	
८ क	९	का	र	■		■	१० ज		ना
■	ली	■	११	का	ना	■		■	■
१२ प्र	■	१३	ट	का	■	■	१४	ब	स
१५		■	१६	री	■	१७ ज	न	म	
प	■	१८	■	■	१९	न	■		■
■	२०	च	ना	■	■	२१		■	२२ छ
२३	का	ना	■	२४	ली	■	२५	र	स
ल		■	२६	रा	म	■	२७ ल	ह	

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम . . . .

पता . . . .

ठिकाना . . . . उत्तर नं० . . .

इन तीनों वर्गों को पृथक न करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो शेष दो पर आड़ी लकीर खींच दें।

इस लाइन पर काटिये

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि ७ फरवरी १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा सदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३. उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहिये। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर १५०) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर १००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक सख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बाट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १६ फरवरी के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ११ फरवरी १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा। पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक, सुगम वर्ग पहेली स० ३१, वीर अर्जुन कार्यालय, दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सबसे कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

★★★

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय -)

विविध

बृहत्तर भारत
[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ।||=)

बहन के पत्र
[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व सखियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य ३)

प्रेमदूती
श्री विराज जी रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण श्रृंगार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ||)

वैदिक वीर गर्जना
[श्री रामनाथ वेदालंकार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ||=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी
[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय
[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १||) डाक व्यय |=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस
नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना, आज़ाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय |=)

मौ० अबुलकलाम आज़ाद
[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ||=) डाक व्यय |-)

पं० जवाहरलाल नेहरू
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १) डाक व्यय |=)

महर्षि दयानन्द
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १||) डाक व्यय |=)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्बोधन का मार्ग है।

इस लिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं
[सम्पादक—श्री जयन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय |-)

नया आलोक : नई छाया
[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

त्याग का मूल्य
विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी अनुवाद मूल्य ५) डाक व्यय |≠)

तिरंगा झण्डा
[श्री विराज]

तिरंगे झण्डे की महानता से सम्बद्ध तीन एकांकी नाटकों का संग्रह—स्वाधीन देश के झण्डे लिये बलिदान की पुकार। मूल्य १।) डाक व्यय |-)

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १||) रुपया।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान
साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय |-)

तेल विज्ञान
तिलहन से लेकर तेल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय |-)

तुलसी
तुलसीगण के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर
अंजीर के फल और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज
अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक
अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १||) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान
घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की
'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ||)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ||)

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य ||)

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

[वर्ष १४] दिल्ली, सोमवार २८ पौष सम्वत् २००४ 12th JANUARY DELHI 1948 [अङ्क ४१]

सम्पादक—
रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

दासता की शृङ्खलाओं को तोड़ कर
स्वतन्त्रता प्राप्त करने पर

बर्मा जनता का हर्षोल्लास

नई दिल्ली में बरमी राजदूत के वासस्थान पर नृत्य के दो दृश्य

एक प्रतिका मूल्य ≡)

विजय पुस्तक भण्डार दिल्ली

द्वारा प्रकाशित और प्रचारित पुस्तकें

जीवन-चरित्र—

[१] नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मूल्य १)
[२] पं० मदनमोहन मालवीय „ १।)
[३] महर्षि दयानन्द सरस्वती „ १॥)
[४] पं० जवाहरलाल नेहरू „ १।)
[५] मौ० अबुलकलाम आज़ाद „ ॥=)
[६] श्री सुभाषचन्द्र बोस (संक्षिप्त) „ ॥=)

अन्य पुस्तकें—

[१] जीवन संग्राम „ १)
[२] सरला की भाभी (उपन्यास) „ २)
[३] मैं भूल न सकूं (कहानी) „ १)
[४] जीवन की झांकियां
१—मैं चिकित्सा के चक्र व्यूह से कैसे निकला ॥)
२—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन ॥) दोनों खण्ड का ॥।)
[५] आनुपातिक प्रतिनिधित्व „ ।)

भण्डार द्वारा प्रचारित पुस्तकें

विविध—

[१] त्याग का मूल्य (उपन्यास) मूल्य २)
[२] तिरंगा झंडा (एकांकी नाटक) „ १।)
[३] नया आलोक नई छाया (कहानी) „ २)
[४] प्रेमपूर्ती (कविता) „ १॥)
[५] बहिन के पत्र (कृष्णचन्द्र वि०) „ ३)
[६] वैदिक वीर गर्जना „ ॥=)
[७] दिल्ली चलो „ २)
[८] नेताजी सरहद पार „ १।=)
[९] आचार्य रामदेव (जीवन झांकी) „ १॥)
[१०] आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब हीरक जयन्ती स्मारक ग्रन्थ „ ३)
[११] हमारे घर „ ॥=)
[१२] महाराणा प्रताप „ १॥)
[१३] हरिसिंह नलवा „ १)
[१४] शिवाजी „ १॥)
[१५] शहीदान हैदराबाद „ १)
[१६] विधान परिषद „ १)
[१७] राष्ट्रपति का भाषण „ १।)
[१८] मेरठ कांग्रेस „ १)
[१९] मानवधर्म प्रचारक „ ४)
[२०] शिवा बावनी „ १)
[२१] अखण्ड भारत „ ।॥)
[२२] बृहत्तर भारत (ऐतिहासिक) „ ७)

उपयोगी विज्ञान—

[१] साबुन विज्ञान „ २)
[२] तैल विज्ञान „ २)
[३] तुलसी „ २)
[४] जंजीर „ १)
[५] देहाती इलाज „ १)
[६] सोडा कास्टिक „ १॥)

डाक व्यय पृथक होगा। बुकसेलरों को उचित कमीशन दिया जाता है।

विजय पुस्तक भंडार,
श्रद्धानंद बाजार दिल्ली।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आंखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें।

पता—विश्व कल्याण औषधालय, न० ६ पो० कतरीसराय [गया]।

भारी लूट—अवसर मत चूकिये—आज ही मंगवे ३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें

प्रेम जीवन (सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनाने वाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मन्त्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १), हिन्दी अंग्रेजी शिक्षा—घर बैठे अंग्रेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखो १), हारमोनियम तबला मास्टर—हारमोनियम तबला बजाना और गान-विद्या सीखो १।), हुस्न पेरिस—केवल पति पत्नी के देखने योग्य ८२ फोटो १।), व्यौपार की कुंजी—अनेकों हुनर सीख कौड़ियों से रुपया पैदा करो १।), ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) पोस्टेज पैकिंग ॥।) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, जैगंज (६६) अलीगढ़ सिटी

सिक्कों के रूप में धातुओं के प्रयोग मे आ जाने के कारण लोगों के आपस के झगड़ों और मुकदमेबाज़ी से तंग आकर किसी बुद्धिमान राजा ने धातु के डलों पर मोहर लगाने की सोची जिस से धातु की शुद्धता का प्रमाण हो सके। समय के साथ साथ घटिया धातुओं की बजाय सोना चांदी की धातुएं प्रयोग मे आने लगीं और डलों का आकार भी छोटा हो गया। इस प्रकार सिक्का पहली बार प्रयोग मे आया। सहस्रों वर्ष पीछे की यह बात है। परन्तु राजा प्रायः इस में असफल रहता कि लोग उस की आकृति घटिया धातु के सिक्कों पर न बनायें। यह कठिनता और भी बढ़ जाती थी यदि पुलिस अयोग्य होती या राजा रणक्षेत्र में गया होता। याद रखिए कि एक बार हुमायूं बादशाह के गंगा नदी में डुबकने पर चमड़े के टुकड़े भी सरकारी सिक्के बन गये थे। राजवंशों के बहुधा अदल-बदल से रुपये का मूल्य भी कम व अधिक होता रहा।

जब रुपये का मूल्य ऐसा अस्थिर था और राजवंश प्रायः बदलते रहते थे तो बचत करने के लिये उत्साह बढ़ाने वाले कारण कम थे। इस के अतिरिक्त जो कुछ भी बचत की जाती वह सुरक्षित रखने के विचार से भूमि में दबा दी जाती और प्राय. नष्ट हो जाती थी।

आज कल सिक्कों की अस्थिरता का कोई भय नहीं और न ही यह आवश्यक है कि बचत 'सञ्चित धन' का ही रूप धारण करे। आप अपने रुपये को किसी उपयोगी मद में लगा कर उस में वृद्धि कर सकते है। नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स की मद में लगाया हुआ रुपया पूर्णतया सुरक्षित है और यह अवधि की समाप्ति पर ५०% बढ़ जाता है—अर्थात प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते है। अब आप १) से १५०००) तक की मालियत के सर्टिफिकेट्स खरीद सकते है। थोड़ी बचत वाले ।), ॥) और १) मूल्य के नेशनल सेविंग्ज स्टाम्प्स खरीद सकते है। अब आप सर्टिफिकेट १८ मास के पश्चात भी भुना सकते हैं (५ रु० के सर्टिफिकेट्स एक वर्ष के पश्चात भी भुनाये जा सकते हैं)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

वे डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC213

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २८ पौष सम्वत् २००४

स० पटेल द्वारा वस्तुस्थिति का यथार्थ अध्ययन

भारतवर्ष को स्वतन्त्र होते ही जिन गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, विश्व के इतिहास में उनके उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। लेकिन यही समय है राष्ट्र और राष्ट्रीय नेताओं की परीक्षा का। जब तक भारत को स्वातन्त्र्य प्राप्त करना था, उसके सामने अंग्रेजों के हाथ से मुक्ति की ही एक समस्या थी, शेष सब समस्याएं इसी के अन्तर्गत हैं, यह कह कर हम अपने स्वराज्य-संग्राम में लग जाते थे। लेकिन आज हम स्वतन्त्र हैं, इसका श्रेय हमारे बलिदान को है अथवा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को, यह प्रश्न दूसरा है। आज यह प्रश्न भी नहीं है कि हमने गांधीजी के मार्ग पर चलकर बिना किसी विशेष कीमत चुकाये स्वराज्य प्राप्त किया है अथवा इस आजादी के मूल्य के रूप में हमें सीगी गुरुओं द्वारा लाखों की जानें देनी पड़ी हैं। आज सचाई यह है कि हम स्वतन्त्र हैं और देश के सामने आने वाली गम्भीर समस्याओं का निर्णय हमें ही करना है। हम आज विदेशी शासन की दुहाई देकर निश्चिन्त नहीं बैठ सकते।

गम्भीर परिस्थितियों में जहां विचलित होना राजनीतिज्ञता नहीं है, वहां उनकी उपेक्षा करके निरे आदर्शवाद की चर्चा करना भी अदूरदर्शिता है। भारतीय राजनीतिक गगन में म० गांधी और प० नेहरू का असाधारण प्रभाव रहा है और दोनों ही आदर्शवादी हैं। यही कारण है कि कांग्रेस की नीति और स्थिति पर भी आदर्शवाद छा गया है और वस्तुस्थिति का ठीक ठीक अध्ययन हम नहीं कर पाते। पाकिस्तान के निर्णय और साम्प्रदायिक समस्या के समाधान के सम्बन्ध में भी हम उदार आदर्शवाद को अपनाते रहे हैं। लेकिन उससे स्थिति निरंतर बिगड़ती रही है। यह हर्ष का विषय है कि भारत-सरकार के सूत्रधारों में सरदार पटेल के रूप में देश को एक ऐसा नेता भी प्राप्त है, जो वस्तुस्थिति के यथार्थ दर्शन में अत्यन्त निपुण है। वह देशभक्त है, साधारण जनता का हितैषी है और आदर्शवाद की पट्टी के कारण उसकी स्थिति के अध्ययन की क्षमता शिथिल नहीं हुई। उसकी कर्मठता और कार्यक्षमता का लिहाज देश मानता है। पिछले दिनों सरदार पटेल ने जिन दो तीन गम्भीर समस्याओं की ओर राष्ट्र का ध्यान खींचा है, वह बहुत आवश्यक हैं।

× × ×

राष्ट्र के सामने आज प्रमुख समस्या पाकिस्तान की आक्रमक नीति है। काश्मीर पर उसके क्षेत्र में से और उसके पूर्ण सहयोग से कबीले पठानों या मुस्लिम सेना के अवकाशप्राप्त सैनिकों का खुला आक्रमण इसी नीति का प्रचण्ड रूप है। भारतीयों के करोड़ों रु० के चेकों की जब्ती, कराची में सिक्खों पर नृशंस आक्रमण और काश्मीर में बर्बर हत्याकाण्ड आदि को देख कर आज यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि पाकिस्तानी सरकार शान्ति व सत्य और न्याय को पसन्द करती है या कर सकती है। यह हमें आज समझ लेना चाहिये कि पाकिस्तान की स्थापना की आधारभित्ति ही साम्प्रदायिक विद्वेष रही है। वह आदर्शवाद की भाषा को नहीं समझ सकती। इसीलिये आज हमें सरदार वल्लभ भाई पटेल के शब्दों में यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि "भारत सरकार शान्ति पूर्वक रहना चाहती है, पर अगर पाकिस्तान की लड़ाई और युद्ध की खाज उठ रही है, तो उसे काश्मीर में शिखण्डी चाल से लड़ने की बजाय खुले में आकर लड़ना चाहिये।" उन्होंने सर जफरुल्ला को खरा जवाब देते हुए कहा है कि "अगर वे मैले कपड़ों को धोने बाहर नहीं भेजना चाहते, और न पिछले चार महीनों तक पजाब में मैले कपड़े धोकर वे सन्तुष्ट ही हुए हैं, तो मित्रराष्ट्रीय संघ से हम अपनी अर्जी वापस ले लेते हैं और हम लाहौर व स्यालकोट पहुंच कर ही फैसला करेंगे।" यह भाषा कठोर अवश्य है, परन्तु आज स्थिति को यथार्थ रूप में देखने पर इससे भिन्न भाषा का न प्रयोग किया जा सकता है और न इससे भिन्न किसी दिशा में विचार किया जा सकता है।

जब पाकिस्तान ने यह अनिवार्य अवांछनीय स्थिति पैदा कर दी है, तब, सरदार पटेल ने ठीक ही कहा है कि—"हमें अपनी स्थल, वायु और नौसेना को बहुत अधिक सामर्थ्यशाली बनाना चाहिये।" लेकिन केवल इच्छा मात्र से तो यह सम्भव नहीं है। इसके लिये भी देश को भगीरथ प्रयत्न करना होगा।

× × ×

सरदार पटेल ने वस्तुस्थिति का अध्ययन करते हुए एक दूसरे महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर भी बहुत जोर दिया है। जिस तरह आज पाकिस्तान भारत के लिए एक बड़ा खतरा बन कर आ रहा है उसी तरह व्यावसायिक अशान्ति भी देश के सामने किसी तरह कम खतरा नहीं है। कोई भी देश उद्योगों के विकास के बिना उन्नति नहीं कर सकता और न ही मजदूर समृद्ध हो सकते हैं, इस लिए ऐसे समय जब कि हमें प्रधान राजनैतिक संकट का भी सामना करने में अपनी अमित शक्ति लगानी है, मजदूरों, पूंजीपतियों और सरकार के बीच संघर्ष होना देश के लिए विनाशकारी होगा।" सरदार पटेल को सरदार का खिताब बारदोली के किसानों ने दिया था। वे अहमदाबाद मजदूर संघ में विशेष भाग लेते रहे हैं। स्वभावतः उन्हें संपन्न वर्ग की अपेक्षा देश के दरिद्र नारायण से अधिक सहानुभूति है। इस लिए उनकी यह सम्मति और भी अधिक वजन रखती है। आज समाजवाद के आकर्षक नारे भी उसी तरह हानिकारक हैं, जिस तरह राजनैतिक क्षेत्र में अहिंसा और शान्ति के। इंगलैण्ड में आज अनेक उद्योगों का राष्ट्रीयकरण हो रहा है, पर यहां तो अभी उद्योग ही विकसित नहीं हो पाये। उनका विकास हो जाने पर इस दिशा में कदम उठाया जायगा। आजके मजदूर नेताओं का उन्होंने ठीक ही विश्लेषण किया है। वे मजदूरों को भड़काना जानते हैं। 'एक यह नई धारणा काम करने लगी है कि मजदूरों को कम काम करके अधिक वेतन की मांग करनी चाहिए, भले ही इस से देश की भारी क्षति हो। कोयला मजदूरों को अधिक वेतन देने की सुविधा देने पर भी उन्हें कम काम करने के लिए बहकाया गया।' आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आदर्शवाद के फेर में पड़कर औद्योगिक पैदावार में किसी तरह कमी न होने दें।

× × ×

सरदार पटेल ने अन्य भी अनेक आवश्यक प्रश्नों की ओर देश का ध्यान खींचा है। अब भारत में मुसलमानों के प्रति अविश्वास की जो गहरी भावना फैल रही है, इस कारण अपने को राष्ट्रीय कहने वाले कुछ मुसलमान अत्यन्त असतुष्ट हैं। लेकिन हमें कांग्रेसी मुस्लिम नेता क्षमा करें, यदि हम यह कहें कि उनकी कमजोरी और छिपी हुई साम्प्रदायिकता का कम हाथ नहीं है। राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिक ऐक्य की शिक्षा उन्होंने सदा ही हिन्दुओं को दी है। इस्लाम के प्रति उनका प्रेम राष्ट्र से ऊपर रहा है और यही कारण है कि सरदार पटेल को यह कम आश्चर्य नहीं हुआ कि लखनऊ में ७०००० मुसलमान एकत्र हुए और उन्होंने काश्मीर में पाकिस्तान द्वारा की जा रही कार्रवाई के खिलाफ एक शब्द भी न कहा। आज भी यह सचाई है कि ९९ फीसदी कांग्रेसी मुसलमान अपने को पहले भारतीय और बाद में मुसलमान कहने का साहस नहीं कर सकते।

× × ×

आज कुछ कांग्रेसियों में फासिस्ट और प्रतिगामी आदि शब्दों का नारा लगा कर अपने विरोधी को नष्ट करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है और हिन्दू-मुस्लिम एकता की आड़ भी इसके लिए ली जाती है। यह प्रवृत्ति अनुचित और हानिकर है। सरदार पटेल ने यथार्थ स्थिति के अध्ययन की क्षमता के कारण यह ठीक ही कहा है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वार्थबुद्धि से काम नहीं कर रहा, इसलिए धमकियों और आर्डिनेंसों के बल पर उसे कुचलने की अपेक्षा सद्भावना द्वारा उसे जीतना चाहिए। जहां वह सरकार को यह सलाह देते हैं, वहां वह स्वयसेवकों को भी अशांति फैला कर शासन व्यवस्था को कमजोर न करने और सरकार के हाथों को मजबूत बनाने का परामर्श देते हैं।

ये समस्याएं हैं, जिनकी ओर सरदार पटेल ने राष्ट्र का ध्यान खींचा है। क्या हम भी आदर्शवाद के आकर्षक शब्दजाल से बच कर राष्ट्र को अधिक बलवान्, अधिक समृद्ध बनाने में पूर्ण सहयोग दे सकेंगे? आज युद्ध की विभीषिका है। राष्ट्र को युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए। आज औद्योगिक शान्ति की आवश्यकता है, हमें वर्ग युद्ध को किसी भी तरह प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। आज मुसलमानों या अन्य संस्थाओं के प्रति हमें तटस्थ, सतर्क परन्तु निष्पक्ष दृष्टि से अपनी धारणाओं को बनाना चाहिए। आज राष्ट्र हमारा है, सरकार हमारी है और हमारे सिर पर उसकी समस्याओं को निभाने की जिम्मेवारी भी हमारे सिर पर है, यह हमें सदा स्मरण रखना चाहिए।

अपने पैरों पर कुल्हाड़ा

काश्मीर और हैदराबाद ने जो नई गंभीर परिस्थिति पैदा कर दी है वह अभी सुलझी नहीं कि इन्दौर नरेश के प्रतिगामी शक्तियों के चक्र में पड़ने की खबरें मिलने लगी हैं। उन्होंने रियासती सचिवालय द्वारा नियत प्रधानमन्त्री को हटा दिया है। कहा जाता है कि नवाब भोपाल का भी इसमें कोई हाथ है। इससे समस्या एक नये रूप में खड़ी हो गई है। आश्चर्य तो यह देख कर होता है कि आज भी रियासती राजा स्थिति को नहीं समझ रहे। उनका भविष्य आज केवल जनता के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में उज्ज्वल रह सकता है। यदि वे प्रजाहित की उपेक्षा करेंगे, तो किसी भी समय उनकी सत्ता खतरे में पड़ सकती है। आज भी वे यदि कानूनी किताबों का आश्रय लेकर जनता पर अपने अक्षुण्ण स्वामित्व का दावा करने लगें, तो इस का दुष्परिणाम भोगने के लिए उन्हें तैयार रहना पड़ेगा। इन्दौरनरेश को गद्दी से

देश का घटना चक्र

फाटक हबशखा के खाली मकानों को प्राप्त करने के लिये स्त्रियों का प्रदर्शन

सम्मेलनों का सप्ताह

दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह हमेशा ही बड़ी चहल पहल का होता है। इस बार तो इसे सम्मेलनों का सप्ताह कहा जा सकता है। बम्बई में हिंदी साहित्य सम्मेलन की काफी धूम रही और लखनऊ में मुस्लिम सम्मेलन की। अकेले लखनऊ में ही छोटे बड़े सब मिला कर कोई एक दर्जन सम्मेलन हुए होंगे। यों भारतीय वाणिज्य सम्मेलन, बैंक कर्मचारी सम्मेलन तथा उर्दू के प्रगतिशील लेखकों का सम्मेलन भी महत्वपूर्ण रहे। इनमें से कई सम्मेलनों का महत्व अखिल भारतीय है, परन्तु राजनैतिक दृष्टि से सबसे अधिक मौलाना आजाद के नेतृत्व में होने वाले भारतीय संघ के मुसलमानों के सम्मेलन का महत्व है।

लखनऊ का मुस्लिम सम्मेलन

इस सम्मेलन में लगभग ७० हजार मुसलमान सम्मिलित हुए होंगे। बदली हुई राजनैतिक परिस्थिति में मुसलमानों को जिस नये नेतृत्व की आवश्यकता थी वह इस सम्मेलन से मिला या नहीं, यह विचारणीय विषय है। परन्तु सम्मेलन के दर्शकों का यह स्पष्ट मत है कि साम्प्रदायिकता के जिस अन्धकूप से मुस्लिम जनता को निकालने के लिये हमारे राष्ट्रीय नेता प्रयत्न कर रहे हैं, वह अभी बहुत दूर है। अधिकांश वक्ताओं ने कांग्रेस को कोसने और धर्मान्धता को भड़काने का ही प्रयत्न किया। मौ० हिफजुर्रहमान, जो जमीयत के पुराने नेता हैं। वे तो केवल एक पक्ष का बीभत्स वर्णन करके हिन्दुओं को चेतावनी की जगह चुनौती ही दी।

सम्मेलन के अध्यक्ष मौ० आजाद के यह कहने पर कि "मैं लीगियों की मलामत करने यहां नहीं आया हूं" जितनी तालियां बजी और 'अल्लाहो अकबर' के नारे लगे, उसका दशांश भी उनके भाषण के अन्य किसी हिस्से पर नहीं।

स्वागत समिति ने पंडाल को जिस ढंग से सजाया था, उसमें कहीं भी राष्ट्रीयता की गन्ध नहीं थी—सब जगह चांद तारा, तिरंगा झण्डा कहीं भी नहीं।

कम्युनिस्टों का नया नारा

और कम्यूनिस्ट तो कहीं भी नहीं चूकता। डा० अशरफ कम्यूनिस्ट मुसलमानों की ओर से सम्मेलन में शामिल हुए थे, परन्तु अपने भाषण में ७५ प्रतिशत असत्य का आश्रय लेकर उन्होंने एक नया नारा लगाया 'मुमालीके हिन्द की जबान उर्दू हो'

सम्मेलन में मध्यप्रान्त के एक सज्जन ने कहा कि प्रान्त के प्रधानमन्त्री पंडित रविशंकर शुक्ल ने वहां के मुसलमानों से कहा है कि यदि तुम हिन्द में रहना चाहते हो तो अपने धर्म, संस्कृति, भाषा आदि को छोड़ कर पूर्णत भारतीय बन जाओ। जब एक दर्शक ने इस कथन का खण्डन करने का प्रयत्न किया तो उसे बल पूर्वक बैठा दिया गया।

लखनऊ में ७० हजार मुसलमान जिस प्रकार शान्ति पूर्वक एकत्रित होकर सम्मलन कर सके, क्या उसी प्रकार पाकिस्तान में हिन्दू भी सम्मेलन कर सकते हैं। वहां तो ७० हजार क्या ७ सौ भी एकत्रित नहीं हो सकते।

उधार देने के सुझाव इसी की भूमिका है। आज समय के प्रवाह ने समस्त प्रभुशक्ति राजाओं के हाथ से छीन कर जनता के हाथों में सौंप दी है। इस सत्य को न समझकर राजा अपने पैरों में स्वयं कुल्हाड़ी मार रहे हैं।

दुमदार दोहे

"गुस्ताख"

करैं रक्षा कश्मीर की, करैं सरदार पटेल।
खुदा न ख्वास्ता बिगड़ि गौ, श्री जिन्ना को खेल॥
कूदि लेउ याहि तैं।

मुस्लिम सम्मेलन करैं, लखनऊ में आजाद।
'लीगिनु' की यह जानि कैं, भई अक्ल बर्बाद॥
करैं तो, का करैं।

अरब यहूदी मरि रहे, आपस में ही यार।
खबर सुनी, खुश ह्वै गये, दियो डबल तब तार॥
स्वर्ग दे देई, खुदा।

'राजकुमारी' करि रहीं, नर्सों का आह्वान।
आते काम कछु कू, वक्त पड़े भगवान्॥
भये लड़की न पर।

हरिजन पाकिस्तान से, भारत लावे जाय।
पर मण्डल' तो कहि रहे, चाहे सब मरि जाय॥
जागे तो हू ना।

सुहरावर्दी न्याय की, करैं आशा हर बार।
जानू, पाकिस्तान में, दाल गली ना, यार॥
लौट के आइ गये।

काफी पाकिस्तान को, सिर्फ हमारा प्रान्त।
मिर्जापुर में कहि गये, 'पन्त' अकस्य नितान्त॥
भरोसो ना हमें।

यू०एन०ओ० को करि रह्यो, भारत अब आह्वान।
मैया! मानैं नाहि वे, मैया पाकिस्तान॥
कान नैंक ऐंठि देउ।

मुसलमान निज चित्त से, भय को देंइ निकाल।
मन स्वच्छ, [illegible] बनि रहो, [illegible]॥
न नेहरू सहि सके।

हटे न पाकिस्तान से, अभी खाद्य कन्ट्रोल।
सुनी हमनू, ह्वै गये बम, फूलि कुप्पी से गोल॥
माल पैदा करैं।

करैं विफल सब आक्रमण, सुनैं नैंक ना बार।
'दाढ़ी वारे मिनिस्टर', की अब सुनी पुकार॥
जोश आइ गयौ तभी।

काश्मीर का मामला सुरक्षा कौंसिल में

भारत सरकार ने काश्मीर का मामला संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा कौंसिल के सुपुर्द कर दिया है। इस प्रश्न को सुरक्षा कौंसिल के सम्मुख पेश करने के लिए भारत का प्रतिनिधित्व श्री गोपालस्वामी आयंगर (जो ५ साल तक काश्मीर के प्रधान मन्त्री रह चुके हैं, तथा श्री मोतीलाल सीतलवाड करेंगे। वाशिंगटन स्थित भारतीय राजदूत के सैनिक विभाग के कर्नल बी० के० कौल तथा विदेश सचिवालय के, श्री पी० एन० हक्सर सलाहकार के रूप में कार्य करेंगे। भारतीय शिष्ट मण्डल में काश्मीर की अन्तरिम सरकार के नेता श्री शेख अब्दुल्ला को भी सदस्य के रूप में तथा एम० के० वेलोदी को सलाहकार के रूप में शामिल कर लिया गया है। शेख अब्दुल्ला १० जनवरी को बम्बई से न्यूयार्क के लिये रवाना हो रहे हैं।

पाकिस्तान की ओर से सर मुहम्मद जफरुल्ला प्रतिनिधि है। उनकी अनुपस्थिति में मि० अब्दुल हसन इस्पहानी, जो अमेरिका में पाकिस्तान की ओर से राजदूत हैं और पाकिस्तान सरकार के चीफ सेक्रेटरी श्री मुहम्मद अली पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करेंगे। एडवोकेट जनरल मि० एम० वासिम सलाहकार का कार्य करेंगे।

पाकिस्तान सरकार के अधिकारियों ने सुरक्षा कौंसिल से अपील की थी कि हमें अभी भारत सरकार की शिकायतों का पता नहीं है, क्योंकि एसोसियेटेड प्रेस [illegible] हम अभी पढ़ नहीं सके हैं, इसलिए कुछ दिनों तक बहस को स्थगित रखा जाये। पाकिस्तान की यह मांग मान ली गई है और अब १५ जनवरी तक के लिए यह बहस स्थगित करदी गई है कि इसके बाद स्थगित नहीं होगी।

[शेष पृष्ठ २४ पर]

प्रान्तीय असेम्बलियों में दो नये सदस्य

यू० पी० असेम्बली में श्रीमती सुचेता

बंगाल असेम्बली में श्री विधानचन्द्रराय

वस्तुस्थिति के सत्यद्रष्टा सरदार पटेल

प्रतिगामी शक्तियों के चंगुल में रियासती राजा

महाराजा इन्दौर

निजाम हैदराबाद

नवाब भोपाल

सं० रा० सुरक्षा समिति में काश्मीर का प्रश्न

भारत के प्रतिनिधि

शेख अब्दुल्ला

श्री गोपालस्वामी आयंगर

पाकिस्तान के प्रतिनिधि

श्री मुहम्मद जफरुल्ला

अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन की एक झांकी

[श्री उमाशंकर शुक्ल]

इस बार के अधिवेशन में पांच भूतपूर्व अध्यक्ष पधारे थे और सबने राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्बन्ध में बहुत ही विद्वत्तापूर्ण व सारगर्भित भाषण दिये और यह सिद्ध कर दिया कि हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है—दूसरी नहीं। श्री क० मा० मुन्शी का भाषण बहुत ही विनोदपूर्ण ढंग से हुआ। उन्होंने कहा कि '१० वर्ष पूर्व मैंने उदयपुर सम्मेलन में भविष्य वाणी की थी कि हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा बनकर रहेगी और आज मेरी भविष्यवाणी सत्य उतरी है। आखिर मैं ब्राह्मण जो ठहरा और ब्राह्मणों को भविष्यवाणी करने का अधिकार है।' जो भूतपूर्व अध्यक्ष पधारे थे वे हैं—श्रद्धेय पुरुषोत्तम दास टंडन, पंडित माखनलाल चतुर्वेदी, गोस्वामी गणेश दत्त, क० मा० मुन्शी तथा वियोगी हरि जी। एक प्रतिनिधि ने कहा कि ये पाचों भूतपूर्व अध्यक्ष इस बार बम्बई सम्मेलन में इस लिए पधारे हैं ताकि वे यह देखें कि सम्मेलन ने अपने कार्य में कितनी प्रगति की है।

उद्घाटनकर्ता

× × ×

राहुल सांकृत्यायन पहले ही अध्यक्ष हैं जो प्रतिनिधि निवास में घूमते हुए देखे गये। अब तक सम्मेलन के अध्यक्ष के दर्शन प्रतिनिधि निवास में नहीं, किन्तु पंडाल के मंच पर होते थे। उन्हें धूमधाम से लाया जाता रहा है। राहुल जी कुछ प्रतिनिधियों के साथ प्रथम दिवस खुले अधिवेशन में भाग लेने के लिये जब प्रतिनिधि निवास से पडाल की ओर जाने लगे, उस समय भदत आनन्द कौसल्यायन ने कहा कि आइए, मोटर में बैठकर चलें। राहुलजी ने कहा—मोटर पर नहीं किन्तु पैदल ही चलेंगे। राहुल जी की वेषभूषा इतनी सादी थी कि जब वे भोजनशाला में भोजन करते हुए प्रतिनिधियों से बातें कर रहे थे तो एक स्वयंसेवक ने उनसे भोजन का 'पास' मांग लिया। राहुलजी के पास भला पास कहा था और वे मुसकुराते हुए चल दिए।

× × ×

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री अनूप शर्मा ने भदत आनद कौसल्यायन से कहा कि महाराज, एक प्रार्थना है और वह यह कि सम्मेलन का काम समाप्त हो गया है, इसलिए इस बार सम्मेलन को यहीं बम्बई के समुद्र में डुबा दीजिए। इस पर आनन्द जी ने कहा कि नहीं, अभी सम्मेलन का कार्य पूरा नहीं हुआ है—अभी जरा ठहरो।

× × ×

बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन से कलकत्ता के एक सज्जन ने कहा कि बाबू जी, बड़ी कृपा होगी यदि अगले अधिवेशन के लिए आप कलकत्ते का निमन्त्रण स्वीकार करा दें। टण्डन जी ने कहा, तो क्या कलकत्ता वाले तीन लाख रुपये देंगे? उक्त सज्जन ने उत्तर दिया कि बाबू जी, कलकत्ता से बम्बई बहुत धनी है। आप यहां से छः लाख इकट्ठा कर लीजिये—कलकत्ता तीन लाख दे देगा। वहीं पास खड़े हुए एक प्रतिनिधि ने कहा कि तभी तो बम्बई में प्रतिनिधियों की इतनी अव्यवस्था हो रही है।

× × ×

सम्मेलन के अवसर पर दो कवि सम्मेलन हुए। पहला ता० २७ को और दूसरा तारीख इकतीस को। पहले के अध्यक्ष सेठ गोविंददास जी व दूसरे के अध्यक्ष थे पं० माखनलाल चतुर्वेदी। पर विशेषता यह रही कि दोनों कवि सम्मेलनों में अध्यक्षों ने अपनी कवितायें नहीं सुनाईं। तारीख इकतीस की रात को जो कविसम्मेलन हुआ वह नौ बजे रात से तो शुरू हुआ और साढ़े तीन बजे रात तक होता रहा। पं० माखनलालजी ने कविसम्मेलन का सचालन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया। कवियों की सख्या इतनी अधिक थी कि अगर सब को कविता पाठ करने का अवसर दिया जाता तो तीन रातों में भी कविसम्मेलन की समाप्ति न होती। सर्वश्री मुकुल, अचल, नर्मदाप्रसाद खरे, भगवती चरण वर्मा, नीलकंठ तिवारी, नरेंद्र, डा० आनंद, प० श्यामनारायण पांडे की कविताएँ खूब पसंद की गईं। बेधड़क बनारसी और गोपालप्रसाद व्यास की हास्यरस की कविताएं खूब रंग जमाने वाली रहीं। बेधड़क जी को तो दो बार बोलना पड़ा। कवियित्रियों में तीनों की कवितायें पसंद की गईं। कुछ कवियों को पुरस्कार भी दिये गये। क्रांति के अग्रदूत 'अचल' को उनकी 'काश्मीर' सबधी कविता पर किसी कविता-प्रेमी रसिक ने ग्यारह सौ रु० एक का पुरस्कार घोषित किया।

सम्मेलन के प्राण

श्रद्धेय टण्डन जी

× × ×

श्री सीताराम चतुर्वेदी द्वारा रचित नाटक 'देवता' का अभिनय किया गया। नाटक अच्छा था पर कहीं कहीं उसमें शिथिलता दिखाई देती थी। काला बाजार, घूंसखोरी व पत्र संपादकों पर व्यंग कसा गया था। चतुर्वेदी जी ने अपने नाटक में प्रगतिशीलता की खूब ही खिल्ली उड़ाई और इससे कुछ प्रगतिशील लेखकों तथा कवियों में बहुत ही असंतोष रहा। हिन्दी में अभी नाटकों का उतना उत्कर्ष नहीं होसका है, जितनाहोना चाहिये, जबकि दूसरी भाषाओं में नाटकों की खूब प्रगति हुई है। मराठी, बगला, उड़िया व गुजराती साहित्य में नाटकों को बहुत ही महत्व दिया जाता है। चतुर्वेदी जी ने देश के कोने कोने से आने वाले प्रतिनिधियों को यह बता दिया कि नाटकों की ओर अगर हिन्दी वाले ध्यान दें तो शीघ्र ही हिन्दी का रंगमंच अन्य प्रांतीय भाषाओं की अपेक्षा अधिक उज्वल व विकसित हो जायगा।

प्रमुख कवि

श्री सोहनलाल द्विवेदी

× × ×

अधिवेशन में नई परिषदों का आयोजन किया गया। छात्र परिषद्, पत्रकार परिषद्, समाज परिषद्, राष्ट्रभाषा परिषद्, विज्ञान परिषद्, संस्कृत परिषद् और न जाने क्या क्या? इन परिषदों में पास होने वाले प्रस्तावों का महत्व तो उस समय ही आका जायगा, जब कि वे कार्य रूप में परिणत हो सकेगा। अभी तक तो यह होते आया है कि परिषदों में पास होने वाले प्रस्तावों को रद्दी की टोकरी में डाल दिया जाता है। ऐसा इस बार भी होगा—इस में कोई संदेह नहीं। परिषदों में होने वाले अध्यक्षीय भाषण बहुत ही महत्वपूर्ण थे। पर चार दिन की चहल पहल के बाद फिर

अध्यक्ष

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन

वही श्मशान शांति। लेक्चरबाजी की खूब धूम रही। मच पर आने के लिए तो कई वक्ता रस्से तुड़ा रहे थे और इस बात की कोशिश करते थे कि वे लाउडस्पीकर पर दो शब्द तो बोल लें। इस जनजागरण के युग में उसी को जनता प्यार करेगी जो उसकी निःस्वार्थ भाव से सेवा करेगा। बिना कुछ साधना, सेवा व तपस्या किये अगर कोई अपना नाम कमाना चाहता हो तो यह बात अब कदापि नहीं चल सकती। सम्मेलन के पदाधिकारियों के चुनाव में खूब रंग खिले और चुनाव आखिर हो ही गया। समझ में नहीं आता कि पदों के लिये हमारे साहित्यिक बन्धुओं को इतना मोह क्यों है।

× × ×
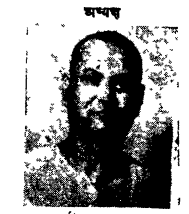
अब तक तो हस्ताक्षरों के लिए नेताओं को ही तंग किया जाता था, पर बम्बई अधिवेशन में देखने में आया कि पाउडर से पुती हुई अलबेली तितलियां तथा तीस इंच चौड़ी छाती वाले युवक कवियों तथा लेखकों से हस्ताक्षरों के लिए प्रार्थना करते थे। कुछ कवि हस्ताक्षर प्रदान करने में गर्व का अनुभव करते थे। पं० सोहनलाल द्विवेदी के पास एक लड़की जब हस्ताक्षर करवाने आई तो द्विवेदीजी ने कहा कि मैं बिना कुछ लिए हस्ताक्षर नहीं करता। फिर चाहे कुछ भी दो। वहीं पास बैठे हुए 'निर्मल' जी ने द्विवेदीजी को एक पैसा दिया और

[शेष पृष्ठ २४ पर]

राष्ट्रभाषा परिषद् के प्राण
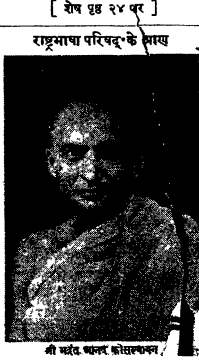
श्री भदंत आनन्द कौसल्यायन

१९४७ के महत्वपूर्ण वर्ष में भारत : हर्ष और विषाद चरम सीमा पर

लेखक
श्री सुरेन्द्र शर्मा

१९४७ का वर्ष भारत के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य की कमर तोड़ दी गयी, ४० करोड़ शक्तिहीन, निर्बल, भूख से पीड़ित, शोषित, दरिद्र जनसमूह का स्वातन्त्र्य संघर्ष पूर्ण हुआ और दासता की श्रृंखलायें सदा के लिए चूर चूर कर दी गयीं। एक भीषण तूफान यूनियन जैक को कई समुद्र पार उड़ाकर ले गया, गोरी सत्ता को कुचल दिया और जनता का प्यारा तिरंगा झण्डा फहराने लगा। इस वर्ष घटनाक्रम अत्यन्त तेजी से किन्तु अनिश्चितावस्था में घूम रहा था, एक दिन पूर्व की गयी कल्पनायें अगले २४ घण्टों में ही विलीन हो गयीं, और कल्पना से बाहर की घटनायें सहसा कभी गम्भीर, कभी सरल, कभी आशाप्रद और कभी निराशाप्रद बनकर सामने आ गयीं।

पृष्ठभूमि

गत वर्ष अन्तःकालीन सरकार पदारूढ़ हो चुकी थी। लीग उसमें प्रविष्ट थी। एक देश में दो सरकारें काम कर रही थीं। एक घर पर दो मालिकों के साथ शासन करने के जो स्वाभाविक परिणाम होते हैं, वे हो रहे थे। मुसलमानों की 'सीधी टक्कर' की घोषणा हो ही चुकी थी। कलकत्ता, नोआखाली का नरसंहार तथा बिहार में उसकी प्रतिक्रिया की घटनायें हो चुकी थीं। सम्भव था कि फिर काग्रेस जन युद्ध छेड़ देतीं, लेकिन परिस्थितियों की विषमता, नागरिक शासन यन्त्र की छिन्न-भिन्नता, अन्तर्राष्ट्रीय उलझनों की अनिवार्य समस्याओं के कारण ब्रिटिश सरकार ने अपने को संघर्ष का सामना न कर सकने की स्थिति में पाकर भारतीय नेताओं को लन्दन बुलाकर ६ दिसम्बर को नयी घोषणा की, परन्तु एक बार पुनः लीग की मांगे पूरी कर दीं। विधान परिषद् का अधिवेशन, लौह पुरुष सरदार पटेल के इन शब्दों में—"हजारों जिन्ना भी भारतीय विधान परिषद् की बैठक रोकने में समर्थ नहीं होंगे," आरम्भ हो गया।

फिर भी लीग समर्थक अंग्रेज राजनीतिज्ञ व अफसर लगातार शरारतें कर रहे थे। हजारा में ओलफ कैरो के गवर्नरशिप में ब्रिटिश चाल के परिणामस्वरूप ८ जनवरी को अल्पसंख्यकों का संहार आरम्भ हुआ। २५ जनवरी को ब्रिटिश अफसरों के नेतृत्व में तथा उनके भड़काने पर पंजाब के दुर्दिनों का श्रीगणेश किया गया। लीग ने तथाकथित सत्याग्रह को आरम्भ किया। फ्रांसिस मुडी की शतरंजी चालें काम आने लगीं। इस तरह वर्ष के आरम्भ में ही वातावरण की उथलता चरम सीमा की ओर ही शीघ्रता से अग्रसर हो रही थी।

२० फरवरी की ऐतिहासिक घोषणा

एटली मन्त्रिमण्डल ने लार्ड वेवल द्वारा क्रियान्वित हो रही नीति के घातक परिणामों को अनुभव किया। उसने घोषित कर दिया—'जून ४८ तक ब्रिटिश सरकार अपना बोरा-बिस्तर भारत से बांधकर कूच कर जायेगी। वह भारत में इस दौरान में एक सरकार अथवा सरकारों को सत्ता सौंप देगी। और लार्ड वेवल अपना स्थान रियर एडमिरल माउण्ट बैटन के लिये खाली कर देंगे।' कुछ क्षेत्रों में आश्चर्य हुआ, कुछ क्षेत्रों में दुःख हुआ, तथा कुछ क्षेत्रों में हर्ष मनाया गया। यह सम्भवतः साम्राज्यवाद का अन्तिम प्रहार था, यह सोचकर काग्रेस ने इसका क्षुब्ध मन से स्वागत किया। विधान परिषद् अपना सर्वोच्चसत्तासम्पन्न प्रजातन्त्रीय भारत का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार कर चुकी थी। फरवरी के अन्तिम दिनों में सर खिजरहयातखां को पंजाब में अपना मन्त्रिमण्डल भंग करने को कहा गया और उसके अलग होते ही पंजाब में खून की होली खेली जाने लगी तथा लाहौर गुजरांवाला मिण्टगुमरी में लीगी आततायी रक्तताण्डव करने लगे।

गुड़गावा में मेवों ने व्यापक उपद्रव, हिन्दुओं का संहार तथा लूटपाट व पाशविक कृत्य आरम्भ कर दिया। दिल्ली गुड़गावा से केवल १४ मील ही दूर था, परन्तु गृहमंत्री सरदार पटेल विवशता को अनुभव करते हुए विष की कड़वी घूंट निगल रहे थे। यह जानते हुए भी कि इन उपद्रवों में किस किस का हाथ है, सब चुप थे। उन्हें क्या मालूम था कि आगामी कुछ सप्ताहों में गुड़गावा से कुछ सौ मील दूर मुस्लिमलीग ऐसा मैदान तैयार कर रही है, जिसे देखकर गुड़गावा भी शर्म से सिर झुका देगा। इस दौरान में माउण्टबेटन योजना घोषित की गई। जून ४८ की अवधि की अन्त्येष्टि करके १५ अगस्त का दिन गोरे लोगों के भाग्यास्त के लिये निश्चित किया गया।

राष्ट्रपिता गांधी का स्वप्न सफल होकर यथार्थता में परिणत होने लगा। परन्तु उनकी वाणी में एक अजीब विद्रोह की लहर पैदा हो गई। वह लहर आने वाले संकटों की ओर संकेत करने लगी। वह आवाज बोल उठी—"देश का विभाजन और सेना का विभाजन अपने फल लाने वाले हैं। देशवासियों चेतो।' युगदेवता की परीक्षा की यह अन्तिम परंतु कठोर घड़ी थी। वह आवाज निकली और विलीन हो गई।

षड्यन्त्र का दूसरा रूप

ब्रिटिश नौकरशाहों ने अपनी चालों का अन्त समीप देख लिया। उन्होंने सब से पूर्व आराम पसंद, रियासती राजाओं का गला पकड़ा और भारत पर और प्रहार की तैयारियां आरम्भ कीं। इनका नेतृत्व सर वाल्टर मौंकटन के हाथों में था। फ्रांसिस मुडी और ओलफ कैरो काफी देर तक अपना पार्ट पूर्ण कर चुके थे। नवाब भोपाल, नवाब हैदराबाद, महाराजा ट्रावनकोर, महाराजा मैसूर तथा इन्दौर के राजा ने पुनः इतिहास को दुहराकर अंग्रेजों से पूर्व की स्थिति बनाने में जरा भी कसर न रखी। नवाब भूपाल इनका अगुआ था। निजाम की थैलियां खुल रही थीं और दूसरी ओर अंग्रेज अफसर प्रांतों में, जिलों में यहां तक कि शहरों में भी पूर्ण अराजकता फैलाने में लग्न थे। भारत स्वतन्त्र होने के बजाय अवनति के उस गड्ढे में गिरने जा रहा था जहां से उठना युगों तक नसीब न होता। आज भारत के नेताओं की आलोचना करने वाले अपनी आंखों पर से ईर्ष्या, द्वेष, पदलोलुपता की पट्टी हटा कर देखें कि वे कहां से कहां हैं। इतना भीषण षड्यन्त्र का विफल हो जाना इतिहास में कहीं न देखा गया और न सुना गया। षड्यन्त्रकारियों, द्रोहियों, पंचम कालमिस्टों को प्रेरणा देने में ब्रिटिश पत्रों का अच्छा खासा हाथ रहा है। ये दिन भारत के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। ज्यों ज्यों मुक्ति दिवस निकट आता जा रहा था, लोगों के मन में स्वभावतः यह संदेह होने लगा कि कहीं देश में आने वाली स्वतन्त्रता क्षणिक न हो। नवाबों महाराजाओं के फर्मान निकल रहे थे कि १५ अगस्त को सर्वोच्च सत्ता के खत्म हो जाने पर वह 'हिज मैजेस्टी' बन जायेंगे।

किलों का विध्वंश

इन दिनों सरदार पटेल ने गम्भीर चेतावनी देते हुए राजाओं तथा उनके दीवानों से कहा— 'देखो! भयंकर तूफान १५ अगस्त को आने वाला है, जो छोटे बड़ों को अपने साथ उड़ा कर ले जायेगा। यदि तुम न जागे तो यह तुम्हारा ही दोष है क्योंकि तुम्हारे भाग्य में अंकित शब्द स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।' राजाओं ने सरदार पटेल की गम्भीर वाणी के मूल्य को और परिणामों को समझा। बड़ोदा, बीकानेर, पटियाला के शासकों ने समय की गति अनुभव की और एक बहुत विशाल जाल को छिन्न-भिन्न करना आरम्भ कर दिया। इसका श्रेय सरदार पटेल की दूरदर्शिता तथा राजनीति और लार्ड माउण्टबैटन की स्पष्टवादिता को है।

इधर विभाजन- कमेटी और पंच न्यायालय तीव्र गति से अपना कार्य करते जा रहे थे। मुस्लिम लीग पाकिस्तान के लिये अधिकतम धनराशि तथा सामग्री की मांग करती जा रही थी परन्तु जनसाधारण कह रहा था—"आखिर क्या अब भी भारत सरकार मुस्लिम पक्षपात की अन्यायपूर्ण नीति अपनाये रहेगी?" उधर पंजाब में सुलगी हुई चिनगारी अपने कारनामें दिखाने लगी, इतिहास का एक दुःखद अध्याय आरम्भ हुआ, जिसकी तुलना संसार के इतिहास में दुर्लभ है।

मुक्ति दिवस

१४ और १५ अगस्त की उस मध्यरात्रि को जनता ने चैन की सांस ली। स्वतन्त्रता के लिये अपने जीवन का बलिदान करने वाले शहीदों की आत्माओं ने अवश्य ही शान्ति अनुभव की। भारत के सेनानी उस रात विधान परिषद् भवन में बैठे। शंखनादों से राष्ट्रपिता गांधी के जयजयकारों के बीच स्वतन्त्रता की चिर प्रतीक्षित घड़ी आयी। पं० नेहरू ने कहा—

'आज इस समय सारा संसार सो रहा है, परन्तु भारत के भाग्य का अरुणोदय हो रहा है।" उस समय भारत की स्वतन्त्रता का निर्माता विधान परिषद् में नहीं वरन् कई सौ मील दूर—कलकत्ता में—एक निर्जन मकान में उपवास कर रहा था।

कौन जानता था कि उसके जीवन का संघर्ष अभी पूर्ण नहीं हुआ है। कुछ भी हो, आयरलैण्ड के प्रधानमन्त्री के यह शब्द उसके प्रति सर्वोत्तमरूप में श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं—"मैं कभी अहिंसा के सिद्धान्त पर विश्वास करने वाला न था, परन्तु अब भारत की मुक्ति पर मेरा

यह अटल विश्वास हो गया है कि आपको भारतवासियों को दैवी नेतृत्व प्राप्त था।"

नये मन्त्रियोंने शपथ ली, मुस्लिम लीगी दिल्ली छोड़ कर पश्चिमी भारत में चले गये।

पंजाब का अविस्मरणीय नरसंहार

पंजाब में सीमाप्रांत के पश्चात् पाकिस्तान की स्थापना के दौरान में शंकित, आतंकित, निश्शस्त्र तथा परवश अल्पसंख्यकों को स्वतंत्रता की अन्तिम कीमत चुकानी पड़ी। यह कीमत अत्यन्त मंहगी, होते हुए भी चिरस्मरणीय रहेगी। छोटे-छोटे बालकों, कुमारियों, विवाहिता स्त्रियों, वृद्धों, नवयुवकों का अपरिमित सीमा में कत्ल, बलात् विधर्मी बनाया जाना तथा अमानुषिककृत्यों का शिकार बनाया जाना आरम्भ किया। स्वतन्त्रता बहुत महगी पड़ी। परन्तु उसका मूल्य सदैव महगा होता है। साइरिल रैडक्लिफ के निर्णयानुसार बंगाल और पंजाब के दो भागों की सीमा निर्धारित हो गयी। पंजाब के दोनों भागों में १० करोड़ व्यक्तियों का आदानप्रदान किया गया। भारत सरकार ने अपनी तमाम शक्ति इस ओर लगायी। सेना ने दिन व रात की चिन्ता किये बिना स्थानान्तरण का कार्य सम्पन्न किया।

विभाजन के उपरान्त

जूनागढ़ में पाकिस्तान ने जाल फेंका परन्तु लोकमत की दृढ़ता तथा केन्द्रीय सरकार की स्पष्ट नीति के परिणामस्वरूप जनताकी ही विजय नहीं हुई, बल्कि नवाब की गद्दी वहा से उखड़कर कराची में जा गिरी।

जूनागढ़ में असफल होकर लीगी काश्मीर पर आक्रमण व नृशंस हत्याकाण्ड करने लगे। २७ अक्टूबर को मि० जिन्ना का वहा नाश्ता करने का प्रोग्राम था परन्तु वहा भी जनता ने अपने यहा के राजा की अदूरदर्शिता के परिणामों को भुगतने से पूर्व भारतवर्ष में मिलकर २७ अक्टूबर को ही कायदे आजम को काश्मीर आने के कष्ट से बचा दिया। आज काश्मीर में घोर युद्ध हो रहा है।

काश्मीर का मामला अब सुरक्षा कौंसिल में पेश किया जा चुका है।

निजाम तो सम्भवत अब कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी शंकररावदेव के इन शब्दों की भाषा को समझ लेगे कि—'यदि वह न सभला तो निजाम की दशा जूनागढ़ के नवाब जैसी हो जायगी।' भारत के नये एजेण्ट-जनरल श्री क० मा० मुंशी निजाम को सही मार्ग दिखायेंगे अन्यथा सब से ऊपर रियासती मन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल तो विराजमान ही हैं जिनकी भाषा अत्यन्त सरलता, तेजी तथा सुगमता से समझ में आ जाती है।

प्रगति

सब से अधिक चिन्तनीय चीज थी देश में उत्पादन का निरन्तर गिरना। इस ओर प्रधानमन्त्री नेहरू के अथक प्रयत्नों से तीन वर्ष के लिये शान्ति-समझौता पूर्ण हो गया है। श्रमिकों, तथा तमाम शोषितों को अपने सन्देह के कारण होते हुए भी इसमें अटल विश्वास रखना चाहिए कि नेहरू के नेतृत्व में देश अवश्यमेव शोषित-वर्ग के शासनान्तर्गत हो जायेगा। इस ओर वेतन-कमीशन की सिफारिशें अत्यन्त सन्तोषजनक न होते हुए भी आशाजनक तो हैं ही।

साम्प्रदायिक पागलपन भी दूर हुआ प्रतीत होता है। कलकत्ते में गांधी जी के ११ वें आमरण अनशन ने अपना अभूतपूर्व चमत्कार दिखाया, दिल्ली में उनकी उपस्थिति ने नेहरू मन्त्रिमण्डल को मस्तिष्क का सन्तुलन बनाये रखने तथा धैर्य न खोने में सहायता प्रदान की। देश की विदेश नीति भी स्पष्ट है। देश गुटों या भागों में विश्वास नहीं करता। वह कुचले हुए देशों, साम्राज्यवाद के चुगल में फसे हुए प्रदेशों की आवाज को उठाने वाला है। एशियाई सम्मेलन, तथा एशियाई श्रम सम्मेलन दोनों नयी चीजें थीं जिसमें भारत को सर्वसम्मति से नेतृत्व की बागडोर सौंपी गयी। लेकिन पाकिस्तान व भारत का सबन्ध लगातार उग्रतर होता जा रहा है और युद्ध की सम्भावना निकटतर होती जा रही है।

भविष्य

उत्पादन विशाल पैमाने पर बढ़ाने की योजनायें बनायी तथा क्रियान्वित की जा रही हैं। बाह्य देशों की पूंजी का विशेष स्वागत नहीं किया जायेगा। समस्त मुख्य उद्योगों को कुछ ही समय में राष्ट्रीय सम्पत्ति के रूप में परिणत कर दिया जायेगा। हो सकता है, पाकिस्तान अभी भी बाधायें डालने से बाज न आये, परन्तु अब तो दो दलों का प्रश्न न होकर दो राष्ट्रों का प्रश्न होगा-जिसमें शक्ति के प्रयोग से ही सब कुछ निर्णय होगा। अभी कुछ अवशिष्ट विवादास्पद प्रश्नों का हल किया जाना है। राष्ट्रभाषा, लिपि, प्रान्तों का भाषा के आधार पर विभाजन इनमें से कुछ हैं। हवा जिस ओर बह रही है, उससे तो यह निश्चित हो जाता है कि देवनागरी का लिपि के रूप में तथा हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में ग्रहण किया जाना अनिवार्य हो गया है। भारत-सरकार नियन्त्रण हटाने और परिस्थिति का तत्काल सामना करने की नीति व्यवस्थित कर चुकी है।

स्वर्गीय रवीन्द्र ठाकुर ने एक बार कहा था—'अनिवार्यतः भाग्य के चक्र देश से ब्रिटिश राज का अन्त कर देंगे, परन्तु अपने पीछे वह क्या छोड़ेंगे—वही होने की चिकिया या कीचड़, गर्द और धूल।

अवश्य ही ब्रिटेन ने दूसरा विकल्प छोड़ा है। परन्तु कीचड़, गर्द तथा धूल के स्थान पर समृद्ध उन्नत तथा शक्तिशाली देश बनाना है, परन्तु अभी भारत को कई कठोर अग्नि परीक्षाओं में से गुजरना है। पाकिस्तान के अदूरदर्शी और दुराग्रही लीडर भारत को एक भयंकर युद्ध में लिप्त कर सकते हैं और यह भी असम्भव नहीं कि यह युद्ध काश्मीर की भौगोलिक और सामरिक स्थिति के कारण अन्तर्राष्ट्रीय संकट बन जाय। आर्थिक समस्याएं भी मुंह बाये खड़ी हैं। प्रतिगामी शक्तियां नित्य कांग्रेस-सरकार के मार्ग में नित नई कठिनाइयां पैदा कर रही हैं। हैदराबाद, काश्मीर और पूर्वी बंगाल की समस्याएं काफी पेचीदी हैं देखना यह है कि १९४८ का वर्ष भारत के लिए कहां तक सफल सिद्ध होता है।

तेल इतर सैंट और गुलकंद

हमारे कारखाना में खालिस गुलाब के फूलों को आला दरजा की गुलकन्द तैयार है। थोक व्यापारियों के लिये निरख ७५) मन है। एक डिब्बे में बीस सेर गुलकन्द होगा। खुद आकर मिलें या वी० पी० मंगवा सकते हैं। हमारे तैयारकरदा काश्मीर आमला हेयर आईल गुलफे काश्मीर हेयर आईल काश्मीर फेस क्रीम, हर किस्म के इतर, सेंट वैसलीन जो कि तमाम भारत में मशहूर होकर सैंकड़ों सोने और चांदी के तमगे ले चुके हैं। अपने शहर की ऐजेन्सी लेकर लाभ उठावें। निरखनामा मुफ्त तलब करें।

पं० ईशरदास मालिक काश्मीर परफ्युमरी वर्क्स कुतुबरोड, देहली।

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक। पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

भारत सेवक औषधालय

नई सड़क, दिल्ली।

को

कुछ दवाएं

आरोग्यदा वटी

कब्ज और मदाग्नि को दूर करके, भूख बढ़ाकर और वीर्यशुद्ध व गाढ़ा करके पुरुषत्व बढ़ाने वाली दवा।

मूल्य फी शीशी १।।=) डा० व्यय पृथक

भारत दन्त मंजन

दात, मुंह और मसूड़ों के तमाम रोग दूर करके दात मोती जैसे चमकीले बनाता है।

मू० फी शीशी ।।।) डाक व्यय पृथक

बलवर्धक वीर्य स्तम्भक-वृष्य मोदक

शीतकाल में बाजी करण के लिये अत्यन्त उपयोगी औषध।

मूल्य १ सप्ताह ६) डाक व्यय पृथक

प्रदरान्तक रस

स्त्रियों के सब तरह के पुराने प्रदर रोग, चक्कर, बेहोशी शिर और कमर का दर्द दूर करके बल और भूख बढ़ाता है।

१ सप्ताह का ४।।) डाक व्यय अलग

नोट— तैल घृत, आसवारिष्ट, रस, भस्में चूर्ण आदि दवाएं सस्ते मूल्य पर सदैव तैयार मिलती हैं।

एजेन्सी के नियम और सूचीपत्र मुफ्त मंगायें।

'प्रसाद' का नारी-चित्रण

[श्री गणेश शर्मा शास्त्री साहित्य रत्न]

प्रसाद जी मननशील व्यक्ति थे। उन्होंने समाज के सभी अंगों पर मनन किया था और प्रायः सभी विषयों के सम्बन्ध में वे अपना स्वतन्त्र दृष्टिकोण रखते थे। यह बात उनकी कृतियों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। नारी समाज का प्रधान अंग है। प्रायः सभी साहित्यकारों की कृतियों में नारी को स्थान मिला है, परन्तु जिस रूप में प्रसाद जी ने नारी के दर्शन किये हैं, वहां तक अन्य किसी की पहुंच नहीं हो सकी। हम देखते हैं कि एक ओर प्राचीन साहित्यकारों की दृष्टि नारी के शारीरिक सौन्दर्य—उसके नखशिख वर्णन तक ही सीमित रही, तो दूसरी ओर आज के साहित्यिकों ने उसे सामाजिक अन्यायों का आलम्बन मान कर ही उसकी दयनीय दशा का चित्रण करके उसके लिये दया और न्याय की भीख मांगी है। नारी का स्वतन्त्र अस्तित्व भी है, जैसे इसको कोई स्वीकार ही नहीं करता। प्रसादजी ने नारी के महत्व को पहचाना है। वे उसके प्रति श्रद्धा रखते हैं। यही कारण है, हम देखते हैं कि उनकी रचनाओं में स्त्री-पात्रों का व्यक्तित्व बड़ी तत्परता और कौशल से अंकित किया गया है।

नारी के व्यक्तित्व के प्रति प्रसाद जी का एक निश्चित दृष्टिकोण है। वे नारी को हृदय का प्रतीक मानते हैं। अपने इस विचार को प्रसादजी ने अपनी रचनाओं में कई स्थानों पर व्यक्त किया है। 'एक घूंट' में आनन्द कहता है—"आज मेरे मस्तिष्क के साथ हृदय का जैसे मेल हो गया है। इस हृदय का मेल कराने का श्रेय वनलता को है।" स्पष्ट है कि आनन्द के मुख से प्रसादजी ने अपना अभीष्ट व्यक्त किया। 'अजात शत्रु' में तो अपने नारी सम्बन्धी विचारों को प्रसादजी ने खुलकर प्रकट किया है। वहां दीर्घकारायण कहता है — "स्त्रियों के संगठन में, उनके शारीरिक विकास में ही एक परिवर्तन है, जो स्पष्ट बतलाता है कि वे शासन कर सकती हैं, किन्तु अपने हृदय पर। वे अधिकार जमा सकती हैं उन मनुष्यों पर जिन्होंने समस्त विश्व पर अधिकार किया हो। . .. मनुष्य कठोर परिश्रम करके जीवन संग्राम में प्रकृति पर यथाशक्ति अधिकार करके भी एक शासन चाहता है, जो उसके जीवन का परम ध्येय है, उसका शीतल विश्राम है, और वह स्नेह, सेवा, करुणा की मूर्ति तथा सान्त्वना का अभय वरद हस्त का आश्रय, मानव-समाज की सारी वृत्तियों की कुंजी, विश्व शासन की एक मात्र अधिकारिणी, प्रकृतिस्वरूपा स्त्रियों के सदाचारपूर्ण स्नेह का शासन है।... कठोरता का उदाहरण है पुरुष, और कोमलता का विश्लेषण है स्त्री जाति! पुरुष क्रूरता है, तो स्त्री करुणा है, जो अन्तर्जगत् का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं, इसीलिए प्रकृति ने उसे इतना सुन्दर और मनमोहन आवरण दिया है—रमणी का रूप।" कामायनी प्रसाद जी का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। उसमें आपके सभी सिद्धान्तों का निश्चित और स्पष्ट रूप उपलब्ध होता है। इसे हम प्रसाद जी के अनुभवों का कोष कह सकते हैं। कामायनी में भी नारी के सम्बन्ध में आपने यही धारणा व्यक्त की है—

> नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
> विश्वास रजत नग पदतल में;
> पीयूष स्रोत सी बहा करो
> जीवन के सुन्दर समतल में।

यही सिद्धान्त प्रसादजी के सभी स्त्री-पात्रों के व्यक्तित्व के मूल में काम कर रहा है। उन्होंने स्त्री-पात्रों में हृदय की प्रधानता और पुरुषों में बुद्धि का वैशिष्ट्य दिखलाया है। इसीलिये उनकी नारियों में हृदयानुरूप सभी धर्मों का प्रसार हमें देखने को मिलता है। हृदय की सर्वोपरि विभूति भावप्रवणता है। उसके साथ त्याग, सेवा, उदारता और आस्था का भी सहयोग होना चाहिये। और साथ ही होनी चाहिए एक कोमल विचार धारा, जो हृदय को सर्वथा डूबने से बचा सके। प्रसाद की सभी श्रेष्ठ स्त्री पात्रियों में इन गुणों का समावेश हुआ है। भावुकता, त्याग, सेवा और विश्वास के साथ ही मर्यादापूर्ण आत्म संयम का भाव हम उनमें पाते हैं। कल्याणी और देवसेना इसके ज्वलन्त निदर्शन हैं। एक ओर वे प्रेम की वेदी पर आत्म-समर्पण करने के लिये तत्पर हैं और दूसरी ओर अपमान के एक हल्के से धक्के को सहन कर सकने की शक्ति का सर्वथा अभाव हम उनमें पाते हैं। त्याग और सेवा के लिए जो हृदय कुलिश-कठोर है, वही कभी कुसुम-कोमल भी बन जाता है। यही कारण है कि कहीं कहीं उनकी पात्रियों के चरित्र में कठोर त्याग के साथ आत्म निवेदन भी हो जाता है। जैसे देवसेना में हुआ है। कहीं कहीं ऐसा भी देखा गया है कि प्रेमी पर प्रेम का भाव व्यक्त किये बिना ही किसी सम्मान-पूर्ण ढग से उसके लिए जीवन उत्सर्ग कर दिया जाय, जैसे मालविका ने किया है।

कामायनी की 'श्रद्धा' के दर्शन किये बिना नहीं कहा जा सकता कि प्रसाद की नारी का स्वरूप प्रत्यक्ष कर लिया गया है, क्योंकि यहां नारी के चित्रण पर ही प्रसाद जी ने अपनी शक्ति का विशेष उपयोग किया है। 'श्रद्धा' नाम ही आपके विचारों के अनुकूल है। वह श्रद्धा (हृदय) की सभी उदात्त वृत्तियों की साकार मूर्ति है। उसमें नारीत्व की सभी शाश्वत वृत्तियों का सामञ्जस्य है। श्रद्धा जैसी भावुकता अन्यत्र दुर्लभ है। मनु की प्रारम्भिक दयनीय अवस्था को देखकर उसमें जो नारी-स्वभाव सुलभ भावुकता उत्पन्न हुई उसके परिणाम स्वरूप वह 'अविलम्ब उसकी सहचर बन जाने का' प्रस्ताव रख देती है और कह उठती है—

> "दया माया, ममता लो आज,
> मधुरिमा लो अगाध विश्वास,
> हमारा हृदय रत्न निधि स्वच्छ,
> तुम्हारे लिए खुला है पास।"

श्रद्धा की क्षमा का परिचय वहां मिलता है, जहां वह इड़ा को अपने सुहाग का बाधक समझ कर भी क्षमा कर देती है। राष्ट्र कल्याण के लिये अपने एक मात्र आशाकेन्द्र कुमार (मानव) को सारस्वत नगर में छोड़ कर चले जाते हुए श्रद्धा ने त्याग का जो महान् आदर्श उपस्थित किया, वह किसी नारी का ही हो सकता है, जिसकी सृष्टि प्रसाद जी ने की है। मनु दूसरी बार भी श्रद्धा को छोड़ कर अदृश्य हो जाता है। परन्तु श्रद्धा को विश्वास है कि वह अवश्य मिलेगा—

> "वह भोला, इतना नहीं छली,
> मिल जाएगा, हूं प्रेमपली।"

विश्वास का यह चरम विकास श्रद्धा में है। नारी में समर्पण की साध है। वह प्रदान चाहती है, आदान नहीं। श्रद्धा में यह वृत्ति कितनी उदात्त है—

> "इस अर्पण में कुछ और नहीं,
> केवल उत्सर्ग छलकता है।
> मैं दे दूं और न फिर कुछ लूं,
> इतना ही सरल झलकता है॥"

श्रद्धा के चरित्र में प्रसाद जी ने नारी जीवन का विकसित रूप उपस्थित किया है। यही उनके नारी-सम्बन्धी विचारों का सर्वाङ्गीण चित्र है, जिसमें प्रेम, सेवा, दया, माया, ममता, त्याग, विश्वास, सम्पर्क आदि सभी वृत्तियों का संकलन हो जाता है।

फिर भी यह समझना भ्रान्ति होगी कि प्रसादजी ने नारी का केवल यही रूप अंकित किया है। उनकी कृतियों में यत्र-तत्र नारी की पतित अवस्था का चित्र भी विद्यमान है। जहां हम देखते हैं कि उनकी स्त्री-पात्रियां राजनीति या किसी और षड्यन्त्र में पड़ी हैं या चंचलता के कारण मर्यादा का उल्लंघन करने पर भी उतारू हो जाती हैं, जैसा कि अनन्त देवी और विजया ने किया। नारी के इस पहलू को अंकित करते हुए भी प्रसाद जी ने उसे ऐसे निम्न स्तर पर ही नहीं छोड़ दिया, अपितु उन्होंने उसे सुधारने का प्रयत्न किया और प्रायः देखा गया है कि षड्यन्त्र के असफल होने पर षड्यन्त्र रचने वालियों की दुष्प्रवृत्तियों का भी शमन हो जाता है। कुचक्र के असफल होने पर उनमें जिस निराशा का उदय होता है, उसमें भी प्रसादजी उन्हें देश-सेवा आदि शुभमार्गों पर ही अग्रसर कर देते हैं। अनन्त देवी और विजया के जीवन का अन्त इसी प्रकार हुआ है।

इनके अतिरिक्त प्रसादजी के नाटकों में कुछ साधारण रमणियां भी विद्यमान हैं, जिनमे कोई असाधारण गुण न होने पर भी मर्यादापूर्ण पातिव्रत्य के दर्शन होते हैं। इसके कारण यद्यपि उन्हें आदर्श तो नहीं कहा जा सकता, तथापि उनका स्वरूप दिव्य और मनोहर अवश्य कहा जायगा। चन्द्रलेखा, वपुष्टमा आदि कुछ ऐसे ही चरित्र हैं। वाजिरा और मणिमाला जैसे चरित्र भी इसी कोटि में आते हैं।

[शेष पृष्ठ २२ पर]

स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा

ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा,
भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा,
इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १॥) रुपया।

मैनेजर—

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

नशा उतर गया

[श्री श्रीराम शर्मा 'राम]

जिन्दगी के मैदान में बड़े-बड़े संघर्ष किये, लाला सरदारी लाल ने। नफे भी कमाये, टोटे भी दिये। किन्तु उस दिन जब एकाएक ही आशा के विपरीत उन्हें तार मिला कि सोने का भाव गिर गया और उन्होंने जो सौदा किया, उसमें दस लाख का घाटा पड़ गया, तो सचमुच ही उनकी कमर में जो रीढ़ की हड्डी लगी थी, लगा कि किसी ने एक ही आघात में उसे तोड़ दिया। तार हाथ से छूट गया। आखों मे अंधेरा आ गया। वह जिस मसनद के सहारे बैठे हुए थ, उसी पर बरबस ही अपना सिर पटक दिया।

बात फैल गयी। जिनको देना था, उन्होंने किनारा काट लिया। जिनको लेना था, आकर धरना दे दिया। सरदारी लाल का दिवाला निकल गया, इस बात को सभी ने समझ लिया। दो दिन हो गये कि लाला जी ने न किसी से कुछ कहा, न किसी की सुनने के लिए अपने को प्रस्तुत किया। मकान के जिस कमरे में वह सोते थे, उसी में पलग के ऊपर पड़े-पड़े उन्होंने दो दिन और दो रातों को काट दिया। इतने समय में जितने भी उनके पास आये, वे केवल सहानुभूति और साहस बधाने की बात को छोड़ भला और कह ही क्या सकते थे। लेकिन लाला सरदारीलाल को वह सद्भाव्य का वातावरण भी रुचिकर नहीं था। उनके मन में एक और भी काटा था, जो सदा की भाति उस समय भी खटक रहा था। वह चुभ रहा था। वह कितना निर्मम और कठोर था, उतना भी सरदारीलाल के मुह से व्यक्त नहीं हो सकता था। यही कारण था कि उन्हें अपने पास किसी का आना भी अशुभ लगता था। वह मौन रहना चाहते थे। एकाकी। वह शहर में सबसे बड़े धनिक थे। इस नाते से सबसे अधिक सम्मानीय। वही सम्मान मानों अब उनके पास से हट कर दूर जा खड़ा हुआ था और उनकी आखों में अपनी आखें डाल कर ही ही कर उठा था। वह जाने मूर्ख था या जाने कठोर—वह जैसे लाला सरदारीलाल का उपहास कर रहा था। वह बताना चाहता था कि वह किसी का नहीं उनका भी नहीं। और पैसा, मानो एक ओर खड़ा हुआ लाला सरदारीलाल की वेदना, तड़प और हृदय की टीस का लक्ष करके ही, ऐसे उनकी ओर घूर रहा था कि सचमुच वह मित्र नहीं, शत्रु था।

रात का पहर था। लाला सरदारी लाल को बुखार चढ़ा हुआ था। घर के दास और दासी सो गये थे। कमरे में बिजली का प्रकाश हो रहा था। खिड़किया खुली थीं। उनसे दूर जगल की पवन निर्गंध गति से आ जा रही थी थी। पास में पत्नी बैठी थी। लाला जी कभी पत्नी की ओर देखते और कभी खिड़की के बाहर तारों भरे अन्तरिक्ष की ओर। दिखता था कि उनके मस्तिष्क मे अपार बेचैनी थी।

उसी समय, उन्होंने पत्नी से पानी मागा। दो घूट पानी पीकर उन्होंने लम्बी सास भरी और पत्नी ओर देखकर कहा—'रुक्मणी, सभी कुछ छूट गया धनिक सरदारीलाल अब कगाल बन गया।

पत्नी जानती थी कि उस बात को छोड़ उसके पति के पास और क्या था। जीवन उसका भी उसी डोर से बधा था। पति धनिक था तो उसे भी गर्व था। पति भूखा और कगाल हुआ, तो उसके भाग्य ने भी उसका साथ छोड़ दिया था। इसीसे, उसने बात को सुना और जाने कितनी कसैली भावना के साथ, उस अपने अन्तर में उतार कर रख लिया।

सरदारीलाल ने बाहर काले तारों भरे आसमान की ओर देखकर फिर कहा—'लेकिन रुक्मणी, मेरी जिन्दगी का जो लेखा जोखा है, वह अभी खत्म नहीं हुआ। वह बाकी है। मुझे जितना भुगतान देना था, वह शेष नहीं हुआ है। वह—'

रुक्मणी ने कहा—अब क्या रखा है। रुपया, जायदाद और कारबार—'

जल्दी से सरदारीलाल ने अपनी गर्दन फेर कर रुक्मणी को लक्ष किया और कहा—न, रुक्मणी। अभी बाकी है। वह अपना स्वर गिरा कर बोले—मेरा जीवन—'

'तुम्हारा जीवन!'—सुनते ही आर्द्र और कम्पित स्वर में एकाएक रुक्मणी ने कहा—'तुम क्या कहते हो। अब मुझे क्या सुनाते हो, तुम!

लाला सरदारीलाल उस समय जैसे पीड़ायुक्त ही नहीं थे, भावुक और विचारवान भी बन गये। व कुशल व्यापारी तो थे ही, पर जब विचारक क रूप में अपने सम्पूर्ण लेखे जोखे को खोलकर देखने लगे, तो लगा कि हा, अभी तो हिसाब बाकी है। बार बार उसका मन कह रहा था बाके की मा का हिसाब उसका बाके उसका रुपया '

लेकिन कितनी विवशता थी लाला सरदारीलाल की कि मन की उठी हुई उस बात को वह अपने तह तक ही सीमित रख रहे थे। पत्नी से भी उसे नहीं कह सके थ। नहीं कहना चाहते थे। किन्तु जब पत्नी ने उन्हें झकोरा, तो वह अपने को नहीं रोक सके। मुह से तो उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा, आखों से इस प्रकार रो दिये कि जैसे वह सचमुच ही कातर थे और दीन।

× × ×

लगभग बीस वर्ष पूर्व लाला सरदारीलाल के ताऊ उस घर के एकमात्र मालिक थे। वे ही घर को चला रहे थे। सरदारीलाल के पिता उसे बचपन में ही छोड़कर स्वर्गस्थ हो गये थे। अत एव ताऊ ने सरदारीलाल को अपना पुत्र समझ कर पाला। बड़ा किया और कारबारी व्यक्ति बना दिया। जब ताऊ का देहावसान हुआ, तो मरते समय, अपने छोटे से पुत्र को सरदारीलाल के पास बैठा कर कहा, इस तुम पालना सरदारीलाल। अब तुम्हारे हाथ है। मन, कर्म और वचन से सरदारीलाल ने इसे स्वीकार कर लिया। यही उसका धर्म था।

ताऊ के बाद सरदारीलाल ही कारबार का स्वामी था। ताऊ का लड़का अभी छोटा था। वह कारबार देखने योग्य नहीं था। सरदारी लाल यौवन की भरी दोपहरी में तप रहा था। इच्छा और आकाक्षाओं का द्वन्द्व उसके मानस में खलबला रहा था। उसको मानसिक स्तर इतना हीन और कायर था कि केवल पैसे की इच्छा को छोड़ वह और कुछ नहीं देख सकता था। उन्हीं दिनों उसका विवाह हुआ। रुक्मणी एक सोलह वर्षीया युवती जब उसकी दुलहन बनकर आई, तो मानो उसने सरदारारीलाल के उत्तप्त मानस में धन की इच्छा के साथ नारी के यौवन और रूप को देखने तथा पाने की दबी हुई अभिलाषा को भी कुरेद दिया। इस का परिणाम यह हुआ कि सरदारीलाल का अन्तर भभक उठा। उसमें से जो तीखी और बलखाती हुई चिंगारिया फूटीं, तो उनसे तपन के अतिरिक्त भला और क्या मेल सकता था। अत एव, धन और नारी इच्छा के उस विशाल गहर में युवक सरदारीलाल जो एक बार झेंका, गिरा तो फिर नहीं निकल सका।

परिणाम स्वरूप, जब सरदारीलाल के सामने धन ही सार्वभौम था,—उसका दृष्टि केन्द्र—तो एकाएक ही, उसमें यह इच्छा पैदा हुई कि जो कारबार है, वह ताऊ का है। ताऊ का लड़का बाकेलाल ही उसका मालिक है। इसलिए बाकेलाल उसके रास्ते का काटा है—कभी भी चुभ जाने वाला।

मन में बात उठी तो चल पड़ी। चूकि वह धन की समस्या पर केन्द्रित थी, इस लिए उसकी गुरुता एकाएक भुलायी भी नहीं जा सकती थी। वह दिन दिन प्रगाढ़ और गम्भीर बन रही थी। सरदारीलाल उस समस्या में इतना उलझा कि उसे न रात को नींद आती और न दिन को चैन। उसे अपने आस-पास की समस्त चल और अचल सभी प्रकार की वस्तुए मानो अपने विपरीत दिखाई पड़ती थीं उसके मन की नैया इतना डगर डगर हिल रही थी कि क्षण में डूबने और क्षण मे तरने की कल्पना उसके मन में उठती थी। यह कारण था कि वह बेचैन था। कातर और दु:खी। पास में कई लाख का धन अवश्य था, पर वह पराया था। कानूनन उसका पिता पहिले ही जुदा हो चुका था। उस धन का मालिक बाकेलाल था। मानो सरदारी लाल उसी का आश्रित था। वेतन भोगी एक मुनीम। इस लिए उसके लिए वह जरा भी उचित और शोभनीय नहीं दिखायी दिया कि वह उस अवस्था में रहे दास रहे नौकर।

एकाएक एक दिन यह समाचार विद्युत की तरह से फैल गया कि सरदारी लाल का भाई कहीं चला गया। बहुत खोज की पर वह नहीं मिला। नहीं आया। दिन, महीने और वर्ष गुजरे पर उसका पता नहीं चला। कुछ न कहा, साधु हो गया। कुछ ने कहा नदी में डूब गया, कुछ ने कहा कहीं दूर चला गया। पर सत्य क्या था, सरदारीलाल को छोड़ और कोई नहीं जानता था। जान भी नहीं सकता था।

फलस्वरूप सरदारीलाल ही उस रुपये का और जायदाद का एक मात्र स्वामी था। वह निष्कण्टक हो कर चल रहा था। रुपया आया तो उसे समाज में सम्मान भी प्राप्त हुआ। धन से धन भी बढ़ा। बाकेलाल का जब भी प्रसग उठता तो वह मौन रहता। बल्कि कभी-कभी उस विषय से अरुचि भी प्रगट

[शेष पृष्ठ १६ पर]

गुलाम देशों का स्वाधीनता आंदोलन

[श्री पी० ओलेशचुक]

आर्थिक शोषण और जनता के राष्ट्रीय उत्पीड़न में चोली दामन का सम्बन्ध है। दूसरे राज्यों और क़ौमों पर हुकूमत करना शोषक श्रेणी की खास चीज है। पूंजीवादी समाज जब अपनी आखिरी मंजिल साम्राज्यवाद पर पहुंचता है, तब यह जोर जबर्दस्ती और असमानता बहुत बढ़ जाती है। साम्राज्यवादी युग में पूंजीवादी ढांचे का पूरा बोझ मजदूरों, जनता और गुलाम देशों पर पड़ता है ताकि ज्यादा मुनाफा कमाया जा सके।

शासक श्रेणी ने अपनी लूट खसोट और जोर जबर्दस्ती को उचित बतलाने की बराबर कोशिश की है। इसी से 'जाति में बड़े होने का सिद्धान्त' निकाला गया। जर्मनी के फासिस्टों ने अपने को बड़ी जाति का बतलाया, परन्तु यह कोई नयी बात न थी। सदियों से धनी समाज जो बात कहता आया था, उसी को जर्मनी में ज्यादा बेहूदा ढंग से बढ़ा चढ़ा कर कहा गया। जर्मन पूंजीपति अपने को श्रेष्ठ जाति का समझते थे, फ्रांसीसी अपने को और ब्रिटेन व अमरीका के प्रतिक्रियावादी अपने को समझ रहे हैं।

जैसे जैसे सताये हुओं पर जुल्म बढ़े, उसका विरोध भी बढ़ा। पूंजीवादी युग में इस विरोध ने मजदूर आन्दोलन का रूप लिया और मजदूरों के राजनीतिक दल बने, हड़तालों की लहर दौड़ गयी और प्रचण्ड क्रान्तियां हुईं। साम्राज्यवादी युग में श्रेणी-संग्राम इतना तेज हो गया कि दुनिया के एक छोटे भाग रूस में साम्राज्यवाद की काया तोड़ कर समाजवादी ढांचा खड़ा किया गया।

साम्राज्यवादी युग में गुलाम देशों ने अपनी आजादी का भी आन्दोलन छेड़ा। दूसरे महासमर ने अपनी आजादी की लड़ाइयों को और बल दिया, क्योंकि प्रजातन्त्र शक्तियों की नजरों में यह स्वाधीनता संग्राम था।

दूसरे विश्वव्यापी युद्ध के समय आजादी की लड़ाइयों के जोर पकड़ने के कई कारण हैं। पहला कारण है, साम्राज्यवादी शासकों और देशी पूंजीपतियों ने गुलाम और आधे गुलाम देशों की जनता के मुंह का कौर छीनने की और भी ज्यादा कोशिश की। इसका फल यह हुआ कि करोड़ों ऐसे आदमी जो चीजें तैयार करते थे, बरबाद हो गये। दूसरे, भारत, हिन्देशिया आदि कई गुलाम देशों, में कल-कारखाने बहुत बढ़े, जिसका नतीजा यह हुआ कि मजदूर जमात बढ़ गयी। साथ ही साम्राज्यवादी ढांचे की कमजोरी खुले तौर पर सामने आयी।

जर्मन फैसिज्म और जापानी साम्राज्यवाद की हार और प्रजातंत्री शक्तियों की जीत ने गुलाम देशों की आजादी की लड़ाई को और भी आगे बढ़ाया। गुलाम और आधे गुलाम देशों ने साम्राज्यवादी जुए को उतार फेंकने और राष्ट्रीय स्वाधीनता पाने के लिये और भी बड़े पैमाने पर और भी तेजी से आन्दोलन चलाया। कहीं कहीं तो इस आन्दोलन ने सचमुच लड़ाई का रूप लिया, जैसे हिन्द चीन, हिन्देशिया आदि में। पूंजीवाद पर इस समय जो संकट आया है, यह उसका एक खास नमूना है। साम्राज्यवाद मिट रहा है, औपनिवेशिक ढांचा टूट रहा है।

लड़ाई खत्म होने के ढाई साल के भीतर गुलाम देशों की आजादी की लड़ाई ने काफी सफलता पायी है। चीन, हिन्द चीन, हिन्देशिया, भारत, बर्मा, मलाया, दक्षिणी कोरिया, सीलान, मैडागास्कर, मिस्र, सीरिया, लेबनान और फिलस्तीन में, यानी अरब जनता के देशों में स्वाधीनता-संग्राम ने अच्छी सफलता पायी है।

फ्रांस को सीरिया और लेबनान से फौजें हटाने को लाचार होना पड़ा है, ब्रिटिश सरकार ने भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य दिया है। हां, भारत को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो उपनिवेशों में बांटने के कारण ब्रिटेन के लिए यह आसान हो गया है कि वह भारत पर अपना सिक्का जमाये रहे। ब्रिटेन ने बर्मा को भी स्वाधीनता दी है और हालैण्ड ने हिन्देशिया से समझौता कर प्रजातन्त्र सरकार को मान लिया है तथा वादा किया है कि १९४८ में वह अपनी फौजें हटा लेगा। बाद में बेईमानी करके यह समझौता तोड़ दिया गया है और हालैण्ड ने लड़ाई छेड़ दी है। फ्रांस ने हिन्दचीन के वियेतनाम प्रजातन्त्र को मान लिया था और बाद में उस पर हमला किया। थोड़े में यह कहा जायगा कि गुलाम देश सच्ची आजादी के रास्ते पर चल पड़े हैं।

बहुत से औपनिवेशिक देशों में मजदूर आन्दोलन भी आरम्भ हुआ है। १९४७ के वसन्त में अफ्रीका की मजदूर यूनियनों का जिनके दस लाख से अधिक मेम्बर हैं, सम्मेलन हुआ। पिछली जनवरी में हिन्देशिया की मजदूर यूनियनों की जिनके ३५ लाख मेम्बर हैं, केन्द्रीय संस्था बनी। भारत की मजदूर यूनियनों के ८ लाख मेम्बर हैं। पिछले कुछ सालों के भीतर लेबनान, मिस्र, सीरिया और अन्य मुस्लिम देशों में मजदूर यूनियनें बनीं। गुलाम देशों की आजादी की लड़ाई बड़े महत्त्व की है। इससे प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादियों की ताकत कम पड़ती है और पूंजीवाद पर आया संकट और ज्यादा हो जाता है। इसी लिए आजादी की लड़ाई का मजदूर आन्दोलन से जो पूंजीवाद के जुए को उतार फेंकने के लिए होता है, नजदीकी सम्बन्ध है। इसीलिए सारी दुनिया की प्रजातन्त्र प्रेमी प्रगतिशील जनता उनका स्वागत करती है।

साम्राज्यवादी इन आन्दोलनों को दबाने के लिए सब जगह दमन कर रहे हैं। जहां वे मामूली ढंग से दबा नहीं पाते, वहां हथियार उठाते हैं। जैसा ईरान के अजर बेजान में, दक्षिणी कोरिया में और दूसरी दूसरी जगहों में हुआ। जहां आजादी की लड़ाई की जड़ें जनता में दूर तक फैली और गहरी होती हैं, वहां साम्राज्यवादी क्षणिक सुविधाएं और नकली आजादी देकर जनता के आन्दोलन को ठण्डा करते और धीरे धीरे उसे खत्म करने की कोशिश करते हैं।

आज की सब से बड़ी साम्राज्यवादी ताकत संयुक्त राष्ट्र अमरीका है। वही राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलनों को कुचलने में सारे संसार के प्रतिक्रियावादियों की अगुआई कर रहा है। अमरीका, चीन, कोरिया और हालैंड के प्रतिक्रियावादियों को मदद दे रहा है। अमरीका के साम्राज्यवादी बार बार कहते हैं कि हम उपनिवेशों में होने वाले दमन के खिलाफ हैं और उपनिवेशों की जनता की आजादी के समर्थक हैं। परन्तु फिलीपाइन्स में जापान के दलाल जनरल रोक्सास के हाथ में ताकत देकर फिलीपाइन्स को जो नाम की आजादी उन्होंने दी है, उससे पता चल जाता है कि उनकी कथनी और करनी कैसी है। (तास)

—:o:—

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका नाम ढूंढना असम्भव है।

असली नई मोटर साईकल इनाम

जवा मर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्न दोष, प्रमेह, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट पुष्ट बनता है तथा नित्य के सेवन से कभी बुढ़ापा नहीं आता। मूल्य ४० दिन की खुराक ३॥) । तीन डिब्बे एक साथ मगाने से ६॥) डाक खर्च माफ। बेकार साबित करने पर ५००) नकद इनाम। हर डिब्बे के साथ इनामी कूपन भेजा जाता है जिससे आप असली घड़ी, रेडियो साइकिल तथा मोटर साइकिल प्राप्त कर सकते हैं। पेशगी मूल्य भेज कर नाम रजिस्टर करा लें ताकि पछताना न पड़े।

पता—श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

दिल्ली प्रांत, मेरठ कमिश्नरी व रुहेलखण्ड के सोल एजेन्ट—रमेश ब्रदर्स कम्पनी चांदनी चौक देहली। राजपूताना के सोल एजेन्ट—राजस्थान औषध भण्डार, चौड़ा रास्ता, जयपुर। मध्य भारत के सोल एजेन्ट—गुरुकुल औषध भण्डार, १६ मेन रोड, इन्दौर।

उर्दू कवि 'सीमाब' का पाकिस्तानी रूप

[श्री शम्भुनाथ 'शेष']

सैयद आशिक हुसैन 'सीमाब' वारिसी अकबराबादी उर्दू के बहुत मशहूर शायर हैं। आगरे में रहते हैं और वहा से 'शायर' नामक कविता-प्रधान उर्दू मासिक निकालते हैं। उर्दू के प्रथम श्रेणी के कवियों में उनकी गणना होती है। वे अब तक हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थकों में गिने जाते हैं। उन्होंने श्रीकृष्ण आदि हिन्दू महापुरुषों पर कुछ एक बहुत उच्च कोटि की कविताएं भी लिखी हैं जिनसे उनकी महान् आत्माओं के प्रति अकृत्रिम श्रद्धा टपकती है। परन्तु भारत के विभाजन के साथ ही जैसे वे बदल गये हैं।

आज तक वे अखण्ड भारत के समर्थक रहे हैं। उनका दृष्टिकोण राष्ट्रीय रहा है। इसी राष्ट्रीय दृष्टिकोण के कारण युक्त प्रांत की सरकार ने उन्हें बहुत कुछ सुविधाएं भी दीं, ऐसा सुनने में आया है। परन्तु उन्हीं सीमाब साहिब ने 'शायर' (आगरा) के सितम्बर-अक्तूबर १९४७ के सयुक्त-अंक में पाचवें पृष्ठ पर एक फारसी नज्म छापी है जिससे पता चलता है कि हवा का रुख किधर है। मौलाना साहिब ने वह नज्म फारसी में लिखी है जिससे साधारण हिन्दू की नज़र से बच सके और मुसलमान पाकिस्तान की खुदाई बरकतों को समझ सकें। नज्म के साथ लिखने की तारीख भी दी हुई है—१८ सितम्बर।

इस नज्म में मुस्लिम लीगियों की प्रशंसा के पुल बाधे गये हैं। राष्ट्र वादी मुसलमानों को रहजन (बटमार) के नाम से याद किया गया है तथा पंडित जवाहरलाल नेहरू पर भी छींटा कशी की गयी है। नज्म का शीर्षक है, "कश्फे हकायक" जिसका अर्थ होता है 'सत्योद्घाटन'। अब जरा मूल फारसी कविता और उसका (हिन्दी) अनुवाद लीजिए—

हम सफीरा कि वतन बर
वतने साख्ता अंद !
चमने ताजा जि खूने
चमने साख्ता अंद !

साथ के लहलहाने वाले जिन्होंने देश में देश बनाया है, उन्होंने चमन (बाग) के खून से चमन खिलाया है।

जौहरे गुरदा अंद अज
खाके लतीफे गुलशन ;
की, जि नाजुक समनो
यासमने साख्ता अंद !

बाग की अति कोमल धूल से उसका जौहर (तत्व) निकाल ले गये हैं और देखो, कैसे कोमल बेला और चमेली खिलाये हैं।

बे रवा फातिहाए खैर
ब रूहे महमूद ,
हरमे नौ सरे दैरे
कुहने साख्ता अद !

महमूद की रूह को नेकी का फातिहा पहुंचाओ कि इन लोगो ने पुराने बुतकदे (हिन्दू मन्दिर जिसमें देवताओं की मूर्तियां रखी रहती हैं) की जगह नया काबा बना लिया है।

आगे देखिये राष्ट्रीय मुसलमानों को किस रूप में स्मरण किया है।

कारे तामीर ब-तदबीरे
मुशीरा मगुजार ,
बहरे तखरीबे वतन,
अंजुमने साख्ता अद !

निर्माण कार्य मशविरा देने वालों की तदबीर पर न छोड़ो कि उन्होंने वतन को खराब करने के लिये एक अंजुमन बना ली है।

अब मौलाना साहब को मुगल बादशाहों के गौरव की स्मृति आ गई। वे भारतवर्ष के सिंहासन पर एक ब्राह्मण (प० जवाहरलाल नेहरू) को विराजमान देखकर बौखला उठे हैं। लिखते हैं—

कवा शुद खिलखिलाए
खिलअते आले बाबर,
हामिले ताजो अलम
बिरहमने साख्ता अद !

बाबर की सन्तान की गौरव शृङ्खला टूट गई। मुकुट और पताका एक ब्राह्मण को सौंप दी गई।

काग्रेस-राजनीति धर्म या साम्प्रदायिक परम्परा पर अवलम्बित नहीं है, यह चीज मौलाना को बुरी तरह खटक रही है। फरमाते हैं—

दीनो मजहब हमा दर
शोरे सियासत गुम शुद
ईं बुतान साज कि तुर्फा
बुतने साख्ता अद।

धर्म और सम्प्रदाय सब राजनीति के शोर में गुम हो गये। इन बातें बनाने वालों ने कैसी अजीब बातें बनाईं।

अब तो काग्रेस जनों की वेशभूषा भी मौलाना को एक आख नहीं भाती। कहते हैं—

चश्मे हैरते सूए ईं
चुस्त लिबासा कम कुन,
हमा चिरम अस्त कजो
पैरहने साख्ता अंद !

इन चुस्त लिबास वालों की तरफ आश्चर्य की निगाह कम करो। जिस चीज से उन्होंने अपनी पोशाक बनाई है, वह सब चमड़ा है।

अब राष्ट्रीय मुसलमानों के नेता को मौलाना किस दृष्टि से देखते हैं, उसे भी देख लें। नेता नहीं वे बटमार हैं—

वाए बर राह गराया कि
बहर जादाए शाश्रब,
रहबरे मंजिले खुद
राहजने साख्ता अद !

अफसोस है उन राह चलने वालों पर कि हर कठिन मार्ग में उन्होंने अपनी मंजिल का मार्गदर्शक एक बटमार को बना रखा है।

पाकिस्तान में हुए हत्याकाण्ड से मौलाना का जी नहीं भरा। वे मुरदों को शहीदों की पदवी देकर उनकी फरियाद दुनिया के कानों तक पहुंचाने की चिन्ता कर रहे हैं—

शोरे फरियाद व पहनाए
जहां खाहिद रफ्त,
सरे हर मूए शहीदा
दहने साख्ता अद !

ससार के काने कोने में फरियाद का शोर पहुंचेगा। शहीदों के बाल के हर सिरे को मुंह बना दिया गया है।

मगरबीया कि गसिस्तद
जि सैदे मशरिक;
बाज मन्सूबए दामो
रसने साख्ता अंद !

वे पश्चिम वाले जिनके हाथों से पूरब का शिकार निकल गया है, फिर जाल और रस्सी के मन्सूबे बांध रहे हैं।

यह सब कह चुकने के पश्चात् एकाएक मौलाना को अपने महान् व्यक्तित्व की याद आती है जैसे किसी अलौकिक नशे में झूम कर व कह उठते हैं—

अन्दरी दहर पए
कश्फे हकायक सीमाब,
आरिफो मर्दे सुखन हम
तु मने साख्ता अंद !

हे सीमाब, इस ससार में वास्तविकता को खोलने के लिये मुझ जैसा ज्ञानी और वाचाल बनाया है।

प्रत्यक्ष है कि सीमाब की यह कविता उनके पाकिस्तानी स्वप्न की प्रतीक है।

हिन्दी के अनूठे सचित्र मासिक पत्र

मनोरंजन

का

जनवरी १९४८ का अंक प्रकाशित हो गया

इसमें आप पढ़ेंगे—

★ हिन्दी के अग्रणी कवि श्री उदयशकर भट्ट, श्री आरसीप्रसाद सिंह, श्री देवराज 'दिनेश' और श्री 'शलभ' की उच्चकोटि की कवितायें और गीत।

★ हिन्दी के यशस्वी कहानीकार श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क', शम्भुनाथ सक्सेना और महेन्द्र प्रताप 'मदन' की रोचक व कलापूर्ण कहानिया।

★ हिन्दी के ख्यातनामा पत्रकार व लेखक श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, श्री शकरदेव विद्यालङ्कार, श्री प्रभाकर माचवे, श्री सूर्यनारायण व्यास और प्रिंसिपल हरिश्चन्द्र के मनोरंजक व ज्ञानवर्धक लेख।

★ विशेष स्तम्भ—हास परिहास, अद्भुत चित्रावलि, चित्र-लोक, सलोनी दुनिया, फुलझड़िया, बाल-मनोरंजन, पुरस्कार पहेली इत्यादि।

इसमें आप देखेंगे—

★ सुन्दर चित्र सहित मुख पृष्ठ, बहुरंगी कलापूर्ण छपाई, बढ़िया गेट अप।

एक प्रति का मूल्य आठ आने   वार्षिक ५॥)

श्री श्रद्धानंद पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानंद बाजार, दिल्ली

"गृहस्थ चिकित्सा"

इसमें रोगों के कारण, लक्षण निदान, चिकित्सा एवं पथ्यापथ्य का वर्णन है। अपने ४ रिश्तेदारों व मित्रों के जुदे जुदे स्थानों के पूरे पते लिखकर भेजने से यह पुस्तक मुफ्त भेजी जाती है। पुस्तक मिलने का पता—

के० एल० मिश्र वैद्य, मथुरा।

अफगानिस्तान को समुद्र-तट चाहिये

[श्री विद्यासागर विद्यालङ्कार]

राजनीति शास्त्र में यह मत स्वीकार किया जाता है कि प्रत्येक देश की सीमाएं स्वाभाविक और प्राकृतिक होनी चाहियें, और प्रत्येक देश का यह प्राकृतिक और स्वाभाविक अधिकार है कि वह समुद्री तट तक पहुंच सके। प्रत्येक देश को समुद्र तक पहुंचने के लिए या तो मार्ग प्राप्त होना चाहिए अथवा उसे कुछ ऐसा प्रदेश मिलना चाहिए जो कि उस देश का अंग हो सके एवं उस देश को समुद्र तक पहुंचने की सुविधा हो सके।

साथ ही आजकल यह अन्तर्राष्ट्रीय रूप स्वीकार किया जाता है कि प्रमुख बड़े समुद्रों पर सभी देशों को स्वतन्त्र रूप से अपने जहाज आदि चलाने का अधिकार है और इस प्रकार समुद्री यातायात से लाभ उठाने का सब देशों को समान अधिकार है। परन्तु यदि किसी देश को समुद्र तक पहुंचने का अवसर ही न दिया जाये तो उसे उपर्युक्त सिद्धान्त सुनाने से क्या लाभ ? इसका अर्थ है कि उस देश को राजनीतिक कारणों से विशिष्ट सीमाओं में इस प्रकार बांध दिया गया है कि वह अन्य देशों के समकक्ष खड़ा ही न हो सके। कुछ राष्ट्र इस पद्धति को अपना कर स्वयं तो उन्नति के शिखर पर बैठे रहना चाहते हैं और शेष राष्ट्रों को नीचे धकेलते रहना चाहते हैं।

पूर्व इतिहास

१६वीं शताब्दी के अंग्रेजों और रूसियों के स्वार्थों के संघर्ष का परिणाम भुगतना पड़ा अफगानिस्तान को। १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक पेशावर, अटक, डेराजात, मुलतान और सिन्ध अफगानिस्तान के पास थे। अफगानिस्तान पर रूसी प्रभाव न हो जाये—इस भय के कारण इसी शताब्दी के मध्य तक अंग्रेजों ने भारत के उत्तर पश्चिमी प्रदेश का बहुत बड़ा हिस्सा अपने राज्य में मिला लिया और अफगानिस्तान के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। इस प्रथम अफगान युद्ध में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से एवं ब्रिटिश पोतों के यातायात को सुरक्षित बनाने के लिए बलोचिस्तान पर अधिकार कर लिया। इस प्रथम अफगान युद्ध की समाप्ति पर कोइटा, काची और मास्तुंग जिले कलात के खान को सौंप दिये गये जो कि वस्तुतः अफगान प्रदेश थे। १८५४ और १८७६ की सन्धियों के अनुसार कलात ने भी अंग्रेजों का अधीनता स्वीकार कर ली।

काबुल में जब रूसी दूत का तो स्वागत किया गया और अंग्रेज दूत को वापिस कर दिया गया तो १८७८ का द्वितीय अफगान युद्ध हुआ। इस युद्ध की समाप्ति पर २६.५ १८७६ को गन्दमक में एक सन्धि हुई, इस सन्धि के अनुसार अफगानिस्तान की विदेशी नीति अंग्रेजों ने अपने हाथ में ले ली और काबुल में अंग्रेज रेजिडेंट रखने की तथा हरात आदि नाकों में अंग्रेज कारिन्दे रखना तय हुआ। और, अफगानिस्तान की दक्षिण पूर्वी सीमा—जिसकी जनता शुद्ध पठान है—के जिले पेवार घाटी सहित कुर्रमदून, कोइटा पिशीन, थल छोटीयाली और सिवी के इलाके अंग्रेजों ने अपने अधिकार में ले लिये। अफगानिस्तान के सिर पर हमेशा तलवार लटकाये रखने के लिए सिबी, कोइटा, चमन तक रेलवे तैयार की गई और कोइटा में आधुनिकतम सैनिक छावनी बना दी। सर राबर्ट सण्डेमन ने इन प्रदेशों और कलात को मिला कर बलोचिस्तान प्रान्त की सृष्टि की।

इन षड्यन्त्रों और बलोचिस्तान की सृष्टि से अफगानिस्तान का समुद्र से सम्बन्ध बिल्कुल टूट गया। यह स्थिति ठीक वैसी ही है कि सार्वजनिक मार्ग पर पहुंचने के लिये किसी मकान के निवासियों की इस प्रकार नाकेबन्दी कर दी गई हो कि वहां से मार्ग तक पहुंचने का कोई रास्ता ही न रहे।

तट की आवश्यकता

चारों ओर से अन्य राष्ट्रों से घिरे अफगानिस्तान को समुद्री तट की आवश्यकता है, इस पर अब तक कोई ध्यान नहीं दिया गया। इस प्रकार, इस देश की स्थलीय नाकेबन्दी करके इसके आवागमन और उन्नति के मार्ग चारों ओर से बन्द कर दिये गये हैं। आर्थिक दृष्टि से हीन इस देश को जीवित रखने के लिए इसे समुद्री तट तो मिलना ही चाहिए। राजनीतिशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार और प्रथम महायुद्ध के बाद हुए अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों के अनुसार भी उसे समुद्री तट की माग करने का पूरा अधिकार है। अफगानिस्तान के आर्थिक हितों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उसे खाद्यान्न के लिये विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है। इस आयात को पूर्णरूप से विदेशी मुद्रा में भुगतान कर सकना भी उसके लिये नितान्त कठिन है। इसलिए उसे निर्यात की भी आवश्यकता है। उसके पास मेवों, ऊन और खनिजों की कमी नहीं है, उन्हें वह भरपूर मात्रा में निर्यात कर सकता है। इस आयात-निर्यात के चक्र को सुचारु रूप से चालू रखने के लिये उसे बन्दरगाह की आवश्यकता है और वह उसे मिलना ही चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय उदाहरण

प्रथम महायुद्ध से पूर्व युगोस्लाविया का दक्षिण पूर्वी भाग सर्बिया एक स्वतन्त्र राज्य था, यहां व्याप्त असन्तोष के कारणों में एक बहुत बड़ा कारण यह था कि उसे समुद्री तट प्राप्त नहीं था। उसके इस असन्तोष ने इतना व्यापक रूप धारण कर लिया था कि अमेरिका के तत्कालीन प्रेसिडेण्ट विल्सन ने १८ जनवरी १६१८ को जब अपने विख्यात १४ सूत्रों की घोषणा की तो उसने सर्बिया की माग के प्रति सहानुभूति प्रगट की और कहाः—

"सर्बिया को अवश्यमेव समुद्र तक पहुंचने का मार्ग मिलना चाहिए।"

इसके बाद जब प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर शान्ति सम्मेलन हुआ तो यूरोप के अनेक राष्ट्रों ने समुद्री तट की माग की। प्रायः वे सब की सब मांगें अन्तर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकार कर ली गईं। पोलैण्ड की माग को पूरा करने के लिये प्रशिया की बन्दरगाह डानजिग को उससे पृथक् करके स्वतन्त्र नगर बना दिया गया। और पोलैण्ड को समुद्र तक पहुंचने के लिये कुछ विशेष अधिकार डानजिग में दे दिये गये। चैकोस्लोवाकिया की समुद्री तट की माग को पूरा करने के लिए जर्मनी की छाती को चीर कर जाने वाली एल्बे नदी का अन्तर्राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और चैकोस्लोवाकिया को उत्तरी समुद्र तक पहुंचने का मार्ग दे दिया गया। लिथुआनिया की माग को पूरा करने के लिए जर्मनी का बन्दरगाह मेमेल छीन कर लिथुआनिया को सौंपा गया, एवं उसे समुद्र तक पहुंचने का मार्ग दे दिया गया। रूमानिया, युगोस्लाविया, ग्रीस और टर्की से घिरे बल्गेरिया को एजियन समुद्र तक पहुंचने का मार्ग दिया गया। डैन्यूब नदी के किनारे पर स्थित देशों की माग पूरी करने के लिये डैन्यूब नदी का अन्तर्राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

जब इस भूमण्डल के विभिन्न देश अपनी मांग का औचित्य समझ सकते हैं और उन की माग अन्तर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकार की जा सकती है तो असन्दिग्ध रूप से अफगानिस्तान को अधिकार है कि वह भी समुद्री तट की माग करे और उस की वह माग पूरी होनी चाहिये। इस के विपरीत जो आपत्ति की जा सकती है वह है कि इस प्रकार की मांगों को स्वीकार करने से वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के विरुद्ध आन्दोलन हो गया तथा उन्हें भंग करने के प्रयत्न होंगे और विश्व के नक्शे का पुनर्निर्माण करना होगा। परन्तु ये दोनों ही आपत्तियां बहुत हलकी हैं जैसे समाज और व्यक्ति की आवश्यकता-पूर्ति के लिये कानून बदलते रहते हैं उसी प्रकार देशों की आवश्यकता के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय नियम बदले जा सकते हैं। अमेरिका और रूस की आवश्यकताओं के लिये तो अन्तर्राष्ट्रीय नियम एक मिनट में बदल जाते हैं परन्तु छोटे राष्ट्रों की आवश्यकता अन्तर्राष्ट्रीय नियम के अनुसार दबा दी जाती है, यह सब क्यों ? जिस प्रकार प्रथम महायुद्ध और द्वितीय महायुद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय नियमों में परिवर्तन कर दिये गये, उसी प्रकार अब भी किये जा सकते हैं। जर्मनी का अंगभंग, एस्टोनिया, लटविया, लिथुआनिया और पोलैण्ड के पूर्वी भाग पर रूस का अधिकार, जापान पर अमेरिका का आधिपत्य, स्पेन से सम्बन्ध विच्छेद, फिलस्तीन का बटवारा, भारत का विभाजन आदि किन्हीं प्रचलित अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार नहीं हुए फिर भी इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकार कर लिया गया है। इसी प्रकार अफगानिस्तान को समुद्री तट दे कर उसे अन्तर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकार किया जा सकता है। नक्शे तो सदा बदलते रहते हैं, प्रत्येक दस या बीस वर्ष में कोई न कोई परिवर्तन उपस्थित हो जाता है और नक्शे बदल जाते हैं। इस लिये यह आपत्ति तो नितान्त व्यर्थ है।

बलोचिस्तान और अफगानिस्तान

अब सीधा सा प्रश्न यह है कि अफगानिस्तान को समुद्र तक पहुंचने के लिये कौन सा प्रदेश दिया जाय। भारत पर ब्रिटिश शासन के समय अफगानिस्तान ने कई बार यहां की सरकार से कराची बन्दरगाह मांगा, पर वह उसे नहीं मिला। कराची से सीधा संपर्क तब तक भी अफगानिस्तान के लिए सम्भव नहीं जब तक वह बीच का प्रदेश हस्तगत न कर ले। बीच का बहुतेरा प्रदेश सांस्कृतिक और जातिगत दृष्टि से अफगानिस्तान से भिन्न है। इसके अतिरिक्त ऐसी कोई नदी भी नहीं है जिसका अन्तर्राष्ट्रीयकरण करके अफगानिस्तान के लिये समुद्र तट तक पहुंचने का मार्ग खोल दिया जाये। बलोचिस्तान (कलात समेत) एक ऐसा स्थल अवश्य है जो कि अफगानिस्तान को दिया जा सकता है। १६ वीं शताब्दी में यह प्रदेश था भी अफगानों के पास। उस प्रदेश का अफगानिस्तान से सांस्कृतिक, जातिगत और धार्मिक सम्बन्ध भी है। कलात के विस्तृत समुद्री तट पर सरलता से एक अच्छे बन्दरगाह का निर्माण किया जा सकता है। एक छोटा मोटा बन्दरगाह काम चलाने के लिए इस तट पर अब भी विद्यमान है।

इस बन्दरगाह के कारण कराची को बहुत सी चुंगी से हाथ धोना पड़ता है, क्योंकि यहा पर कलात रियासत द्वारा नाममात्र की चुंगी लिये जाने के कारण बहुत सा सामान यहीं उतर जाता है और यह चोरी से रियासत के बाहर ब्रिटिश बलोचिस्तान में भेज दिया जाता है भाषा की दृष्टि से भी यह प्रदेश अधिकाशतः अफगानिस्तान से मेल खाता है तो क्यों न बलोचिस्तान और कलात का प्रदेश अफगानिस्तान में मिला कर उसे समुद्री तट दे दिया जाय ?

हमारे इस मन्तव्य की स्वाभाविकता को आज का घटनाचक्र सिद्ध कर रहा है। बलोचिस्तान का पठानिस्तान की भाति स्वाभाविक झुकाव अफगानिस्तान की ओर है। कलात का खान अपनी रियासत और अफगानिस्तान के बीच पारस्परिक सहायता व व्यापार आदि के लिए एक सन्धि का प्रयत्न कर रहा है।

यह सब पाकिस्तान के हितों का अत्यन्त घातक है, इसलिये पाकिस्तान स्वभावतः इसका उग्र विरोध करेगा। पाकिस्तानी अधिकारी जानते हैं कि बलोचिस्तान का उनके हाथ से निकल जाने का अर्थ है कि खनिजों के समृद्ध भाग से और मिट्टी के तेल से हाथ से धोना। इन स्वाभाविक प्रयत्नों को ममाप्त करने के लिए पाकिस्तानी अधिकारी बेचैनी से हाथ पैर मार रहे हैं और बलोचिस्तान को सिन्ध में सम्मिलित कर देने के लिये प्रबल आन्दोलन कर रहे हैं। परन्तु उनके इन प्रयत्नों और आदोलनों का परिणाम पाकिस्तान के विपरीत होगा। क्योंकि यहा बलोचिस्तान के लोगों को धर्म के नाम पर ले उभाड़ा ही नहीं जा सकता, सिन्ध से उनका सांस्कृतिक और जातिगत सम्बन्ध नहीं है। पाकिस्तानी धमकियों का प्रभाव यहां के लोगों पर विपरीत होगा वे बहुत अधिक स्वतन्त्रता-प्रिय लोग हैं। जब उनके मन में यह बात बैठ जायगी कि उन्हें पाकिस्तान में नहीं रहना और अफगानिस्तान के साथ जाना है तो पाकिस्तानी लाख बार सिर पटक कर भी उन्हें साथ नहीं ले सकेंगे।

---

१००) इनाम

(गवर्नमेण्ट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकदमा, कुश्ती, लौटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २), चादी ३), सोना १२)।

Swami Gorakhnath Ashram No. 8, P. O. Katri Sarai (Gaya)

मौसम का उपहार

उमेश घी

यह गाय भैंसों का शुद्ध पवित्र घी स्वास्थ्य, बल तथा शक्ति के लिए अनुपम है।

गवर्नमैंट की हर परीक्षा से पास तथा उनकी पवित्रता की लाल रंग की 'स्पेशल एगमार्क' सील लगा बिक्री होता है।

स्वादिष्ट तथा पौष्टिक भोजन के लिए उमेश घी ही व्यवहार करें।

दिल्ली एजेण्ट—हरीराम जगत नारायन खारी बावली (फतेहपुरी की तरफ) दिल्ली।

प्रेम दूती

श्री विराज जी रचित प्रेम काव्य। सुरुचिपूर्ण शृंगार की सुन्दर कवितायें। मू० ।।।) डाक व्यय पृथक।

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

२—४ नहीं

कम से कम २५) खर्च करें और इलाज के लिये २ महीने का समय भी दें तो आपकी अपनी खोई हुई वह आनन्द देनेवाली शक्ति दुबारा प्राप्त हो सकती है जिसके न होने से आप छिप छिपकर मन ही मन रोते हैं और अपनी भूल पर रात दिन पछताते हैं। इस इलाज में खाने की ४ दवायें हैं। जिनसे वीर्य और मसाने की पुष्टी होकर मनमें उमंग, रुकावट और देह में चुस्ती पैदा होजाती है। साथ में एक शीशी तिला लगाने के लिये भी भेजते है, जिससे बाहरी खराबी गुप्तांग की मिट जाती है।

पिछले ३० साल से अब तक लगभग १५ हजार गुप्त रोगों के रोगी इस इलाज से लाभ उठा चुके हैं। यदि शक हो तो ४ आने मनीआर्डर से (टिकट से नहीं) भेजकर हमारी 'विचित्र गुप्त शास्त्र' पुस्तक (जो सरकार से जब्त होकर अदालत से छूटी है) और ५ हजार प्रशसा-पत्रों की पुस्तक रजि० डाक से मंगा कर अपनी तसल्ली कर लें। पुस्तकें वी० पी० से नहीं भेजते। जो गरीब हैं वह पहले मास १५) और दूसरे मास १०) भेज कर लाभ उठावें, परन्तु इस तरह डाक खर्च १) के बदले २) पड़ेगा। पेशगी रुपया भेजने से डाक खर्च माफ, आर्डरके साथ अपनी बीमारी का पूरा हाल भी लिखें।

डा० वी. एल. कश्यप अध्यक्ष रसायन घर नं० १०२ शाहजहांपुर यू. पी.।

माहवारी

यदि माहवारी ठीक समय पर न आये तो मुझे मिलें फौरन ठीक कर दूंगी, यदि मेरे पास न आ सकें तो हमारी दवाई मैन्सोल स्पैशल इस्तेमाल करें कीमत १२) एक्स्ट्रा स्ट्राग दवाई जो कि एक दम असर करके अन्दर साफ कर देती है। कीमत २५)

बर्थ कण्ट्रोल

हमेशा के लिए पैदाइश औलाद बंद करने की दवाई बर्थकंट्रोल कीमत २५) दो साल के लिए १२) इन दवाइयों से माहवारी ठीक तौर पर आती रहती है और सेहत बहुत अच्छी हो जाती है। नवाबों महाराजों के सार्टीफिकेट।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती (आफ लाहौर)

२७ बाबरलेन न्यू देहली, (निकट बंगाली मार्केट कनाट सरकस की ओर)

सूर्यग्रहण के अवसर पर तैयार की हुई

दिव्य सिद्धि तांत्रिक अंगूठी

आप जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके कदम चूमेगी, आप धनवान हो जायंगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी, शत्रु मित्र बन जायंगे, मन चाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा, संसार आपकी इज्जत करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा में पास होंगे, जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी नाराज हाकिम खुश होगा, वशीकरण होगा। बात यह है कि हर काम आपके इच्छानुसार होगा। यह अगूठी ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तैयार होती है। बड़े परिश्रम से तैयार कराई गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य २।।) डाक खर्च ।=) आना। नोट—बेकार साबित हो, तो ६ महीने तक वापिस।

पता—कमल कंपनी (V) अलीगढ़।

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी और उधर उस के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विकृत होकर अपकीर्ति के रूप में फैल रही थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत होगया और चम्पा ने जमींदारी का काम संभाल लिया।

इन्हीं दिनों बिहार भूकम्प के बाद बेलूर में श्री रामनाथ तिवारी अत्यन्त उत्साह व लगन से सेवा का कार्य करते थे। उन्होंने एक भग्नावशेष से एक बालक की रक्षा की। ऐसे अनाथ बालकों के पालन पोषण का काम चम्पा और सरला की कोठी में था। रामनाथ भी वहीं बालक को ले गया। शिशु रक्षा-गृह का उद्घाटन हो गया।

[गताङ्क से आगे]

दूसरे दिन, प्रातःकाल माधवकृष्ण और रमा भी विदा हो गये। सरवानपुर पहुंचने पर माधवकृष्ण को सूचना मिली कि उसके नाम बड़े भाई का सन्देश आया हुआ है कि 'बेलूर से आते ही मेरे पास उपस्थित हो' राधाकृष्णसिंह बहुत दिनों से बीमार चले आते थे। सन्देश पाकर माधवकृष्ण ने ख्याल किया कि शायद सेहत के सम्बन्ध में कोई विचार करना होगा, और वह जिस तरह बेलूर से आया था, उसी तरह भाई के पास चल दिया। राधाकृष्णसिंह जिस कमरे में रोग-शय्या पर पड़े थे, वह हवेली के अन्दर था। जब माधवकृष्ण अन्दर पहुंचा तो पहले भाभी रानी के दर्शन हुए। देवकी बरामदे में एक पलग पर बैठी टहिलिनी से सिर पर तेल लगवा रही थी। माधवकृष्ण को देखकर मुंह फेर लिया और दीवार की ओर देखने लगी। माधवकृष्ण ने समझा कि शायद भाभी ने देखा नहीं, इस कारण आगे बढ़कर बोला—

"भाभी, भैय्या जी ने मुझे बुलवाया था। उनकी तबीयत कैसी है ? क्या काम था ?'

देवकी ने मुंह उसकी ओर किये बिना ही उत्तर दिया—

"काम का मुझे क्या मालूम ? अन्दर हैं, जाकर पूछ लो।"

माधवकृष्ण को देवकी की इस मुद्रा से आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि उसकी क्रोध-मुद्रा प्रसिद्ध थी, वह दिन के अधिक भाग में प्रायः इसी मुद्रा में दिखाई देती थी, इस समय वह उसका कारण समझने में असमर्थ रहा। बड़े जोर की लाल झपड़ी दिखा दी गई थी, इस कारण माधवकृष्ण देवकी से क्रोध का कारण पूछने का कोई साहस न कर सका, और चिक उठा कर कमरे में चला गया।

राधाकृष्ण सिंह की चारपाई के पास एक नौकर खड़ा था, जिसकी ड्यूटी यह थी कि कोई मक्खी बैठे तो उसे उड़ा दे, या पानी आदि की जरूरत हो तो दे दे। माधवकृष्ण ने हाथ जोड़कर नमस्ते की। राधाकृष्ण ने निर्बल स्वर से कहा—"आओ माधव, बैठो। (नौकर की ओर इशारा करके) इसे जाने को कहो।" नौकर चला गया तो कुशल प्रश्न का रिवाजी उत्तर देने के पश्चात् राधाकृष्ण सिंह ने कहा—

"माधव भैय्या, मैं जो बात तुमसे कहने लगा हूं उससे मुझे स्वयं दुःख हो रहा है। मैं जानता हूं तुम्हें भी होगा पर लाचारी से कहना पड़ता है, वक्त आ गया है कि अब तुम्हारा और हमारा बटवारा भी हो जाना चाहिये।"

माधवकृष्ण को ऐसी कोई बात सुनने की अणुमात्र भी सम्भावना नहीं थी। वह सदा अपने बड़े भाई का आज्ञाकारी सेवक बन कर रहा था। यहां तक कि वह अपनी अलग सत्ता को भूल सा गया था। आज जब पितृ समान बड़े भाई ने बंटवारे का प्रस्ताव किया तो माधवकृष्ण ऐसे रह गया मानो उसे काठ मार गया हो। आश्चर्यित हो कर बोला—

"बटवारा ? भैय्या बटवारा कैसा ? किसके साथ ?" राधाकृष्णसिंह स्वयं कुछ ऐसे ही उत्तर की आशा रखता था माधव को कभी छोटा भाई नहीं समझा। सदा बच्चा ही माना आज जो प्रस्ताव उसने किया उसके लिये उसे घण्टों तक अपने मन को समझा बुझाकर, ठोक-पीट कर तैयार करना पड़ा था, बहुत देर तक वह इस बात पर भी विचार करता रहा कि यदि माधवकृष्ण ने कोई प्रेम से प्रेरित इन्कारी जवाब दे दिया तो क्या करूंगा। सोचा था कि जब नाराजगी हो जाती है तब बच्चों से भी तो बटवारा कर लेना पड़ता है। यों अन्दर ही अन्दर उसका दिल डरता था कि बटवारे की बात उठाकर भी शायद वह उसे पूरा न कर सकेगा। ऐसी ऊहापोह की दशा में ही माधव ने आकर उसे नमस्कार किया। तब चिरकाल के प्रयत्न से तैयार किया उपर्युक्त वाक्य कहा। उसने यह वाक्य ग्रामोफोन रेकार्ड की भांति कह डाले थे, परन्तु जब माधवकृष्ण ने आश्चर्यित होकर प्रश्न किया कि भैय्या बटवारा कैसा ? किसके साथ ? तो राधाकृष्ण के मन में स्वयं यह प्रश्न घूमने लगा कि बटवारा कैसा ? वह संशयात्मक होकर विचारसागर में गोते खाने लगा और चुप हो गया।

बड़े भाई को चुप देखकर माधवकृष्ण ने अपने प्रश्न को दोहराते हुए कहा—

"भैय्या तुमने बतलाया नहीं यह बटवारे की बात क्यों पैदा हुई, मैंने तो कभी अपने को तुमसे अलग समझा ही नहीं, अपने में अपना बटवारा कैसा ?'

राधाकृष्णसिंह फिर भी चुप रहा, उसे सूझ नहीं रहा था कि क्या उत्तर दे। वह एक विकट उलझन में था उसे इस उलझन में से निकालने के लिये गृहस्वामिनी श्रीमती देवकी रानी ने प्रवेश करते हुए कहा—

"उत्तर क्यों नहीं देते हो। कह दो कि अब इस ढोंगबाजी से काम नहीं चलता। छोटे भैय्या बन कर बहुत बरसों तक जायदाद को खा चुके हो अब नहीं खाना मिलेगा। हमसे अब तुम्हारा सम्बन्ध नहीं रह सकता जाओ और बेलूर वालों के यहां बस जाओ। उन्हें तुम्हारी जरूरत भी है भाग भाग कर वहां जाते हो, दुश्मनों से मिलो और हमारी जायदाद पर हाथ साफ करो यह दोनों बातें एक साथ नहीं हो सकतीं।'

देवकी की इस गोलाबारी ने यूं तो माधवकृष्ण को एकदम ही विचलित कर कर दिया परन्तु एक लाभ भी हुआ। उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। उसे मालूम हो गया कि उसका दोष क्या है। वह और रमा चम्पा के निमन्त्रण पर बेलूर चले गये थे यही उनका गुरुतर अपराध था। उसकी सजा थी बंटवारा। माधव ने देवकी की अत्यन्त कड़ुवी बात का उत्तर शांतिपूर्वक देने देने का यत्न करते हुए कहा—

'भाभी, तुम्हारी बात से मैं यह समझा हूं क हम तुम्हारे शत्रुओं से मिलते जुलते हैं इस कारण हमें अलग होने का दण्ड दिया जा रहा है परन्तु बेलूर वाले हमारे शत्रु नहीं हैं वह तो आत्मीय ही हैं।'

देवकी ने और अधिक गर्म होते हुए कहा 'वह तुम्हारे आत्मीय हैं इसलिए अब तुम हमारे आत्मीय नहीं रह सकते। घर में आग भी लगाओ और घर वाले भी बनो, यह दो बातें इकट्ठी नहीं चल सकतीं। बस, ज्यादा बहस करने की जरूरत ही नहीं है यही निश्चय समझो कि बंटवारा होगा'।

इसके आगे वस्तुतः बहस की कोई गुंजायश नहीं थी तो भी डूबते ने तिनके का सहारा लेते हुए राधाकृष्णसिंह की ओर देखकर कहा—'क्यों भैय्या, क्या तुम्हारा भी यही अन्तिम निश्चय है।'

'राधाकृष्णसिंह जो इस बातचीत को दुःखित हृदय से चुपचाप सुन रहा था, बोला 'माधव, तूने सुन ही लिया। मैं और कुछ नहीं कहना चाहता।'

माधव उठ खड़ा हुआ और क्रोध से कांपते हुए स्वर से बोला—'भाभी ! जैसी तुम्हारी इच्छा वैसा ही करो। मुझे इसी बात का अधिक दुःख है कि तुमने यह झगड़ा भैय्या की बीमारी में उठाया खैर, तुम्हारी मर्जी। जैसा चाहो करो। मुझे इसमें न कुछ कहना है न करना' यह कह कर माधवकृष्ण कमरे से बाहर आने लगा परन्तु दरवाजे तक पहुंच कर फिर लौट आया और बड़े भाई की चारपाई के पास आकर बोला—'भैय्या बंटवारा हो या न हो इससे मेरा कोई वास्ता नहीं। तुम्हारी बीमारी में सेवा करने का मेरा अधिकार बना रहना चाहिये। आशा है भाभी का इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी।'

राधाकृष्ण के होंठ उत्तर के लिये हिलाने चाहते थे कि देवकी गरज उठी 'बस रहने दो इन बनावटी बातों को अब इस घर में तुम नहीं आ सकोगे। जाकर उन्हीं की सेवा करो जिनके बगैर रात नहीं बीतती।'

माधवकृष्ण ने इस उत्तर से भी निराश न होकर प्रश्नसूचक दृष्टि से राधाकृष्णसिंह की ओर देखा मानो पूछ रहा हो आप क्या कहते हैं ? राधाकृष्णसिंह ने कोई उत्तर न देकर करवट बदल ली, उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

'(क्रमशः)

सन् ४७ का क्रान्तिकारी साहित्य
'पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा'

पंजाब के उपद्रवों की पृष्ठभूमि पर लाल लोढ़ू से हिन्दी के श्रेष्ठ कहानीकार विष्णु रामचन्द्र तिवारी, देवदत्त अटल, श्रीराम शर्मा 'राम' आदि के द्वारा विभिन्न दृष्टिकोणों से लिखी गई रोमाचकारी कहानियां पढ़िये। हमारा दावा है कि पुस्तक पढ़ते समय आप की आंखों से आग की चिनगारिया निकलने लगेंगी, और शरीर क्रोध से कापने लगेगा। पृष्ठ संख्या लगभग २००, सजिल्द पुस्तक का मूल्य २), डाकव्यय रजिस्ट्री ।=)

प्रेस में — नवीन प्रकाशन — प्रेस में

रक्तरंजित सन् १९४७

यह पुस्तक सन् १९४७ के देश के उत्थान-पतन, क्रमिक विकास और परिवर्तनों का सजीव चित्रण है। पृष्ठ संख्या लगभग १५०, मूल्य डाकव्यय सहित १॥।=)

—आज ही लिखिये—

स्वास्थ्य सदन, चावड़ी बाजार (घ) दिल्ली

मासिक रुकावट

बन्द मासिक धर्म रजोलीना दवाई के उपयोग से बिना तकलीफ शुरू हो नियमित आता है, ऋतु की पर्याद समय पर होती है। यह दवा गर्भवती को प्रयोग न करावे की० रु० ४), तुरंत फायदे के लिए तेज दवाई की० रु० ६) पौस्टेज अलावा। गर्भांकुश — दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता, गर्भनिरोध होता है, मासिक धर्म नियमित होगा, विश्वसनीय और हानि रहित है। की०४)पो० अलावा पताः—दुग्धानुपान फार्मेसी जामनगर ५, देहली एजेंट—जमनादास क० चादनीचौक अजमेर—मेहता ब्रदर्स नया बाजार.

१००) इनाम
सिद्ध योगेन्द्र कवच

सिद्ध वशीकरण—इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वस हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य ताबा का २॥), चादी का ३), सोने का १२), झूठा साबित करने पर १००) इनाम।
श्री महाशक्ति आश्रम, ६३
पो० कतरी सराय(गया)

१५०) नकद इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके बस हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य ताबा का २॥), चादी का ३), सोने का १३) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम गारंटी पत्रसाथ भेजा जाता है पता —
आजाद एन्ड कं० रजिस्टर्ड, (अलीगढ़)

७५०० रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं।

आटोजम (विटामन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पाच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विटजरलैंड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं पर उसने एक युवती से ब्याह भी कर लिया।

आटोजम के वर्तने से ८० तथा ९० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्ट्रेसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगती हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इनका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाए रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Otogem आटोजम Otogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इङ्गलैंड में सहस्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। आटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशा में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देखें फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। आटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिए इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जाएगा। आज ही इसे मंगवाने के लिए आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता—
दी मैकसो लैबोरेटरीज ५७७ बेला रोड
पोस्ट बक्स नं० ४५ (A. B. D.) देहली।

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ ए., बी. ए., पजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मगायें। पताः—
इंटरनैशनल इंस्टीट्यूट(रजिस्टर्ड)अलीगढ़।

मुफ्त

वीर अर्जुन के पाठकों को यह हर्ष होगा कि लाहौर के विख्यात गुप्त रोग विशेषज्ञ वैद्य कविराज खजानचन्द जी बी० ए० ने हौज काजी दिल्ली में नियम पूर्वक कार्य आरम्भ कर दिया है। रोगी उनको स्वयं मिलकर व पत्र व्यवहार द्वारा सम्मति तथा औषधियां ले सकते हैं। नमूनार्थ आजमाइश के लिए औषधियां मुफ्त दी जावेंगी ताकि धोके का अवसर न मिले। पूर्ण विवरण के लिए उनकी अंग्रेजी की पुस्तक sexualguide मूल्य १२ आने पढ़ें।

(पिछले अङ्क का शेष)

जुलाई १९३१ में जयचन्द्र विद्यालंकार अपने ग्रन्थ 'भारतीय इतिहास की रूप-रेखा' की पाडुलिपि के विषय में परामर्श लेने के लिए काशीप्रसाद जायसवाल के पास आये। एक सप्ताह तक लगातार उसे देखने सुनने के बाद जायसवाल ने यह मत दिया कि "..... इस प्रकार की समन्वयात्मक कृति की पहले किसी ने हिम्मत न की थी।" इस एक सप्ताह में रह रह कर वे इस बात के लिये व्याकुल हो उठते कि इस प्रकार का कार्य करने वालों को हमारे देश में कोई सुविधा क्यों प्राप्त नहीं है। एक बार हठात् उनके मुंह से यह निकला कि "हिन्दू पौलिटी" (हिन्दू राजव्यवस्था) जैसा ग्रन्थ दूसरे किसी देश में लिखा गया होता तो उसके लेखक को उस देश के लोग सारा समय वैसे ही कार्य में लगाये रखते, उसे अपनी जीविका की दूसरी चिंता न करनी पड़ती। उस सप्ताह के अन्त तक उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे अपना सारा शेष जीवन जैसे भी हो, देश के इतिहास के लिये ही लगायेंगे। कराची कांग्रेस का यह प्रस्ताव उस समय देश के सामने ताजा था जिसके अनुसार सार्वजनिक सेवा के लिये भारतवर्ष में अधिकतम मेहनताना ५०० रुपया मासिक ठहराया गया था। जायसवाल ने कहा वे उतने से सन्तोष करेंगे और देश की किसी अच्छी संस्था को राष्ट्रीय इतिहास के कार्य के लिए अपना शेष जीवन सौंप देंगे। अपना यह संकल्प उन्होंने बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी के संचालकों के पास इस प्रस्ताव के साथ लिख भेजा कि वह युनिवर्सिटी उनके सम्पादन में भारतवर्ष का एक प्रामाणिक समन्वयात्मक इतिहास लिखवाने का उपाय करे। हिन्दू युनिवर्सिटी के संचालकों के साथ प्रायः साल भर बात चलती रही, पर अन्त में यह सिद्ध हुआ कि उनसे राष्ट्रीय इतिहास की चर्चा करना भैंस के आगे बीन बजाना था।

बनारस से निराश होकर जायसवाल ने यह विषय ओरियंटल कान्फ्रेंस (प्राच्य विद्या सम्मेलन) में रखना तय किया। उसका सातवां अधिवेशन १९३३ के अन्त में बड़ौदा में होने जा रहा था, जिसके वे सभापति चुने गये थे। कान्फ्रेंस में उनके प्रभावशाली भाषण से सचमुच बड़ा उत्साह जगता दिखाई दिया। यह आशा बंधी कि जल्द उसका कोई स्थायी फल निकलेगा। बड़ौदा में ही अनेक विद्वानों से सहयोग का वचन उन्होंने ले लिया और कुछ अंश में विषयों का बंटवारा भी कर दिया। वहीं लाहौर के एक प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास को उन्होंने ग्रंथ के प्रकाशन के लिए भी तैयार कर लिया। वे न केवल लगभग छपाई का प्रस्तुत लेखकों के पारिश्रमिक का भी जिम्मा उठाना मान गये, किन्तु इतने से भी कार्य का आरंभ न हो सकता था।

एक तो जायसवाल, जब इतिहास की योजना बनाने बैठते तब प्राचीन काल के अन्त तक आसानी से चले आते, पर आगे रास्ता धुंधला लगने लगता। वे इस कार्य संचालन के लिये कुछ ऐसे साथियों की आवश्यकता अनुभव करते थे जो एक बार सारे भारतीय इतिहास की उन्हीं की दृष्टि से सरसरी पर्यवेक्षा (सर्वे) कर डालें। राष्ट्रीय इतिहास के लिये इस क्रम का पूर्ण होना अनिवार्यतः आवश्यक था।

दूसरे जब इतिहास की पूरी योजना बनाई जाती तब यह दिखाई देता कि अभी तक उसके रास्ते में अनेक महत्व के अंश, जिनका भारतीय दृष्टि से लिखे इतिहास में स्पष्ट होना अत्यन्त आवश्यक था, घने झाड़झंकार में छिपे हैं। उनकी सफाई के लिये अनेक लम्बी सांस वाले विद्वानों को लगाना अभीष्ट था।

तीसरे विभिन्न विद्वानों से ग्रंथ के अंश लिखे जाकर जब आते, तब उन्हें

गये। इस पद से दिये गये उनके अभिभाषण में पहले पहल भारतीय इतिहास प्रचलित साम्प्रदायिक बटवारे के दोष दिखाकर उसके स्थान में राष्ट्र के जीवन विकास के अनुसार इतिहास का युगविभाग उपस्थित किया गया।

नागपुर सम्मेलन में ही जयचन्द्र विद्यालंकार ने प्रस्तावित राष्ट्रीय खोज संस्था को खड़ा करने के लिए बाबू राजेन्द्र प्रसाद का सहयोग मांगा। एक मास बाद ३१ मई सन् १९३६ की सन्ध्या को वे दोनों पटना में काशीप्रसाद जायसवाल के मकान पर उनके साथ परामर्श के लिए आये। वहां उन तीनों ने उस संस्था की स्थापना का निश्चय किया।

अगस्त १९३७ में मसविदा कुछ व्यक्तियों के पास भेजा गया और उन्हें संस्था की पहली समिति का सदस्य बनने को आमन्त्रित किया गया। इनमें से गोविन्दराव सरदेसाई ने यह सुझाव पेश किया कि शिवप्रसाद गुप्त द्वारा संस्थापित बनारस के भारतमाता मन्दिर में इस विषय में रुचि रखने वाले व्यक्तियों का एक सम्मेलन बुलाकर उनके परामर्श से संस्था का सूत्रपात किया जाय। तद-

सच्चे भारतीय इतिहास के स्वप्नद्रष्टा

श्री शिवप्रसाद गुप्त

का कार्य वस्तुतः आरम्भ करने का बम्बई में कुछ हजार रु० चन्दा जमा किया। ५ नवम्बर १९३९ को सदाकत आश्रम पटना में परिषद् की प्रारम्भिक समिति की पहली बैठक हुई, जिसमें विधान के अनुसार तीन आजीवन कर्मियों की नियुक्ति हुई। जयचन्द्र विद्यालंकार इनमें मुख्य थे और वे अपना दूसरा काम छोड़ पूरा समय परिषद् की सेवा में लगाने लगे। बाकी दो कर्मी उनके सहायक रूप में नियुक्त हुए।

उसी मास में उन्होंने राष्ट्रीय इतिहास की एक योजना तैयार कर समिति के सदस्यों और अन्य कुछ विद्वानों के पास

इतिहास में भारतीय दृष्टि का विकास

बौद्धिक मोर्चे पर आधी शताब्दी का संघर्ष

[श्री पृथ्वीसिंह मेहता]

जांचने संवारने और उनमें सामंजस्य रखने के लिए एक स्थायी कर्मिवृन्द (स्टाफ) की जरूरत थी।

दो साल तक देश के बड़े छोटे लोगों की मिन्नत करने और उनसे सर पटकने के बाद भी जायसवाल को वैसी संस्था खड़ी करने में कहीं से मदद न मिली। जब वे इस संघर्ष में लगे थे तभी हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओरसे ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ में एक नई पद्धति स्थापित की गई। विभिन्न-भाषी भारतीय विद्वान एक दूसरे की कृति अंग्रेजी में पढ़ते हैं। परन्तु इस ग्रन्थ के सब लेखकों ने अपनी अपनी भाषा में लेख लिखे, और उनके लेखों का केवल नागरी लिप्यंतर कर दिया गया, जिससे थोड़े यत्न से वे एक दूसरे का अभिप्राय समझ सकें।

भारतीय इतिहास परिषद् की स्थापना

अप्रैल १९३६ में नागपुर में २५ वां हिन्दी साहित्य सम्मेलन बाबू राजेन्द्र प्रसाद के सभापतित्व में होना तय हुआ। सम्मेलन के अन्तर्गत इतिहास परिषद् के सभापति जयचन्द्र विद्यालंकार चुने

नुसार स्वर्गीय हीरानन्द शास्त्री, प्रबोधचन्द्र बागची, नरेन्द्रदेव और जयचन्द्र विद्यालंकार के तथा स्थानीय स्वागत समिति के तीन अधिकारियों के हस्ताक्षरों से प्रायः डेढ़ सौ व्यक्तियों के पास निमन्त्रण भेजा गया। ३० दिसम्बर १९३७ को यदुनाथ सरकार के सभापतित्व में भारत माता मन्दिर में ये लोग इकट्ठे हुए और प्रस्तावित विधान पर विचार करने तथा कुछ संशोधनों के साथ उसे स्वीकृत करने के बाद उन्होंने 'भारतीय इतिहास परिषद्' की स्थापना का निश्चय किया। राजेन्द्रप्रसाद परिषद् के पहले अध्यक्ष और जयचन्द्र विद्यालंकार पहले मन्त्री चुने गये।

सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूलाः— सभी अनुष्ठान सेर भर धान जुटा कर शुरू होते हैं। भारतीय इतिहास परिषद् का कार्य चलाने के लिए भी अब द्रव्य की आवश्यकता थी, पर राजेन्द्र बाबू की बीमारी आदि के कारण एक अरसे तक द्रव्य संग्रह न हुआ। इस बीच परिषद् की स्थापना के साथ प्रवर्तित हुए विचार देश में और फैलते गये।

राष्ट्रीय इतिहास का आयोजन

जून १९३९ में राजेन्द्रबाबू ने परिषद्

विचार-विनिमय के लिए भेजी। इस प्रसंग में अनेक प्रश्न उपस्थित हुए, जैसे प्राचीन काल में समूचे इतिहास का बटवारा कालक्रम से करना चाहिए या विषयक्रम से, विशेष युगों में उत्तर और दक्खिन भारत के इतिहास की विवेचना अलग अलग करनी चाहिए या एक साथ इत्यादि। ऐसे प्रश्नों परमन्त्री जो कुछ लिखते उसे समिति के सदस्यों और अन्य विद्वानों के पास सम्मति के लिए भेजा जाता, और अन्त में अधिकतम सहमति वाली स्थापना को स्वीकार किया जाता।

आपसी विचार के बाद निश्चित हुई इस योजना को बहुत संक्षेप में छपवा कर अगस्त १९४० में भारत के करीब दो सौ विद्वानों के पास भेज कर उनकी सम्मति और सहयोग मांगा गया। हमारी मूल मांग के जो उत्तर आये, उनसे प्रकट हुआ कि भारत के अधिकतर विचारशील विद्वानों को परिषद् जैसी बौद्धिक मोर्चे पर काम करने वाली राष्ट्रीय संस्था की स्थापना से अपनी एक चिरपोषित आशा की पूर्ति हुई प्रतीत हुई और वे उसके कार्य में पूरा सहयोग करने को तैयार थे। लगभग १०० विद्वानों के सहयोग

वचन प्राप्त हुए। कइयों ने इतिहास योजना की कीमती आलोचना की।

परिषद् का कार्य आरम्भ होने का समाचार प्रकाशित होने के बाद अलीगढ़ में भी एक इतिहास निकालने का इरादा प्रकट किया था। अलीगढ़ के प्रो॰ मुहम्मद हबीब को परिषद् के कार्य में सहयोग देने के लिए जयचन्द्र विद्यालंकार सन् १९३७ से लिख रहे थे।

जुलाई १९४० में परिषद् के मन्त्री अलीगढ़ गये और वहां प्रो॰ हबीब की सहायता से एक ही दिन में अलीगढ़ संस्था के अधिकारियों से यह समझौता हुआ कि अलीगढ़ संस्था सल्तनत युग के इतिहास पर ही अपनी शक्ति लगायगी और भारतीय इतिहास परिषद् उस युग पर अलीगढ़ संस्था को अपने ग्रंथ पहले निकालने देगी।

भारतीय पुरातत्व विभाग के तत्कालीन संचालक काशीनाथ नारायण दीक्षित के सुझाव पर अक्टूबर १९४० में परिषद् की इतिहास योजना पर विचार करने को प्रमुख भारतीय विद्वानों का एक सम्मेलन सेवाउपवन बनारस में बुलाया गया। इसमें आये विद्वानों की सलाह से परिषद् की समिति ने निम्नलिखित विद्वानों का सम्पादक-मण्डल अपने इतिहास के लिये नियुक्त किया। (१) यदुनाथ सरकार (२) काशीनाथ नारायण दीक्षित (३) मुहम्मद हबीब (४) नीलकण्ठ शास्त्री (५) रमेशचन्द्र मजूमदार (६) प्रबोधचन्द्र बाग्ची (७) जयचन्द्र विद्यालंकार, मन्त्री। इन सब की विधिवत् स्वीकृति मिलने के बाद जनवरी १९४१ में इतिहास की योजना का अतिसंक्षिप्त विवरण प्रकाशित किया गया। इस संक्षिप्त विवरण को भी देखने से प्रकट होगा कि इस इतिहास योजना में साम्प्रदायिक युग विभाग नहीं है। केवल युगों के नाम हिन्दू मुस्लिम के बजाय दूसरे रखे गये हों सो नहीं, प्रत्युत इतिहास का कुल युग विभाग ठीक काल क्रमानुसार तथा भीतरी विकास को देखते हुए किया गया है। विशेषता यह है कि उस में उन युगों में भी जब कि भारत में कोई साम्राज्य न था, भारत की एकता पर ध्यान रखते हुए समूचे भारत के इतिहास की विवेचना एक साथ की गई है, उसे प्रांतों या वंशों में टुकड़े टुकड़े नहीं कर दिया गया।

राष्ट्रीय इतिहास पर कार्य आरंभ

अप्रैल १९४१ में सम्पादक मण्डल और समिति ने अपने इतिहास के प्रस्तावित २० भागों में से ७-८ पर कार्य आरम्भ करना तय किया और उनमें से एक एक भाग के लिए अलग अलग सम्पादकों की नियुक्ति के प्रस्ताव किये।

भारतीय इतिहास परिषद् के प्राण

श्री जयचन्द्र विद्यालंकार

इन सज्जनों के साथ चिट्ठी पत्री करके जुलाई १९४१ तक अन्तिम निश्चय हो जाने की आशा थी, पर बीच में कुछ समस्यायें खड़ी हो जाने से दिसम्बर १९४१ में जाकर यह कार्य पूर्ण हुआ।

विभिन्न भागों के अध्यायों की पाण्डुलिपियां आने पर उन पर विचार करने के लिए परिषद् का तीन व्यक्तियों का कर्मिवृन्द (स्टाफ) बहुत ही अपर्याप्त था। नागपुर अभिभाषण में राष्ट्रीय इतिहास के लिए दो तीन दर्जन स्थायी कर्मियों की मांग की गई थी। साथ ही उनके रहने को एक आश्रम तथा एक पुस्तकागार की आवश्यकता थी। पर जापान का युद्ध छिड़ जाने से अपील का रास्ता बन्द हो गया।

जनता की संस्था रूप में कार्य

भारत माता मन्दिर वाले सम्मेलन में यदुनाथ सरकार ने कहा था कि हमारी संस्था भारतीय इतिहास के लिए "बौद्धिक श्रम विनिमय केन्द्र" होगी, इतिहास के जिज्ञासु अपनी आवश्यकताओं के विषय में हमें लिखा करेंगे, हमें उनकी पूर्ति करनी होगी। इस देश में ऐसी राष्ट्रीय संस्था की मांग थी, इसलिए परिषद् की स्थापना होते ही उससे यह काम लिया जाने लगा और १९३९ के अन्त तक उसके अवैतनिक मन्त्री अकेले जयचन्द्र विद्यालंकार इसे निभाते रहे। १९३९ में जिन्होंने परिषद् से अपनी अध्ययन-सम्बन्धी समस्यायें सुलझाने में सहायता पाई उनमें वि॰ सी॰ सुखठकर तथा गडासिंह जैसे विद्वान् और युक्त प्रांत की सरकार भी थी। १९३९ में बाबू राजेन्द्रप्रसाद ने रामगढ़ कांग्रेस पर उपस्थित करने को बिहार के इतिहास की मांग की, जो पूरी की गई। १९४०-४२ में इस प्रकार के कार्यों की मांगें बराबर आती रहीं। किस नमूने का कार्य परिषद् कार्यालय में इस प्रसङ्ग में होता था इससे प्रकट होगा कि वीरबल साहनी ने अपनी कृति "प्राचीन भारत में सिक्के ढालने का शिल्प" की पाण्डुलिपि परिषद् में भेज दी थी और उस पर आलोचना प्राप्त होने पर लिखा था—"यह मेरा बड़ा सौभाग्य है कि आपने मेरी कृति की ऐसी पूरी आलोचना कर भेजी है ..."

जनता परिषद् को अपनी राष्ट्रीय संस्था है, इस लिये इस प्रकार यह सिलसिला अब तक जारी है।

संगठन को पुष्ट करने की चेष्टायें

एक राष्ट्रीय ज्ञान-संस्था के रूप में परिषद् को कर्मियों की, अपने आश्रम और पुस्तकागार की तथा अन्य अनेक वस्तुओं और सुविधाओं की जरूरत है इसे परिषद् के संस्थापक आरम्भ से समझते थे। परिषद् के संगठन को पुष्ट बनाने की उन्होंने भरसक चेष्टा की। स्व॰ वामनदास वसु के सुपुत्र डा॰ ललितमोहन वसु ने सितम्बर १९४० में उनकी प्रेरणा से यह प्रस्ताव भेजा कि वे अपने पिता का समूचा पुस्तक संग्रह परिषद् को दे देंगे बशर्ते कि परिषद् उसे प्रयाग में अपना भवन बना कर रखने का उपाय करे। परिषद् का अपना भवन बन सका होता तो अब तक उसके पास बहुत अच्छा पुस्तक संग्रह हो गया होता। कई दानी १९३९-४६ में विशेष अध्ययनों के लिए कर्मियों के आसन स्थापित करने का— अर्थात् उक्त अध्ययनों में लगे कर्मियों का समूचा खर्च उठाने का—जिम्मा लेने को तैयार हुए, पर वे इसकी राह देखते रहे कि पहले परिषद् का केन्द्रिक कर्मिवृन्द खड़ा हो जाय और उसका आश्रम बन जाय। वह न होने से हम उस विशेष सहायता से भी वंचित रहे। विशेष कर हिन्दी क्षेत्र की जनता में परिषद् के लिए उत्साह पूर्ण सहानुभूति का वातावरण बराबर बना रहा। हिंदी के कई प्रमुख साहित्य सेवियों ने जनता का ध्यान उसकी सहायता की ओर खींचा और जनता भी आशा करती रही कि ठीक समय आने पर उससे सहायता मांगी जायगी। किन्तु वह समय अभी तक नहीं आ सका है।

विघ्न-बाधाओं के बीच कार्य

९ अगस्त १९४२ को परिषद् के अध्यक्ष डा॰ राजेन्द्र प्रसाद गिरफ्तार हो गये। १९४३ में कर्मिवृन्द को रखने के लिये परिषद् के पास पैसा न था। उस दशा में मार्च १९४३ में कर्मि संसद की बैठक में दो कर्मियों—जयचंद्र विद्यालंकार तथा पृथ्वीसिंह मेहता—ने कहा कि राजेन्द्रबाबू के जेल से वापिस आने तक वे अवैतनिक सेवा करेंगे। किन्तु एक मास बाद जयचंद्र विद्यालंकार भी गिरफ्तार किए गये। जिन विद्वानों को १९४१ में इतिहास के कई भाग सौंपे गये थे उनमें से रमेशचन्द्र मजूमदार, अनन्त सदाशिव अल्तेकर तथा नीलकण्ठ शास्त्री ने हिम्मत करके छठे और चौथे भाग की पूरी पाण्डुलिपियां अपने लेखकों के सहयोग से अप्रैल १९४५ तक तैयार कर दीं। सम्पादक मण्डल का कार्य बन्द हो गया था, अतः सर यदुनाथ सरकार ने अकेले उनका सम्पादन किया। जून १९४५ में राजेन्द्र बाबू बाहर आ गये। १९४६ में इतिहास का छठा भाग प्रकाशित हो गया। चौथा भाग अभी प्रेस में है।

परिषद् जब इ कठिनाइयों में उलझी थी, तभी दूसरी संस्थाओं ने भी उसका अनुसरण कर भारतीय विद्वानों द्वारा पूरा भारतीय इतिहास लिखाने के यत्न किये। यह इन सिद्धान्तों के विजय की सूचना है जिनके लिए भारतीय इतिहास परिषद् के संस्थापक २८ वर्ष से संघर्ष करते रहे हैं।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघराले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी-म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट.—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवेल्टी स्टोर्स पो॰ ब॰ नं॰ ४५ दिल्ली।

General Novelty Stores P. B. 45, Delhi.

नशा उतर गया

[पृष्ठ १० का शेष]

करता। केवल मा रोती थी और अपने पुत्र को याद करती थी। वह आशा लिये थी कि उसका पुत्र आयगा,—जरूर !

बेचारी मा !

× × ×

किन्तु अपने जीवन के उस अन्तिम मोड़ पर जब सरदारीलाल ने जिन्दगी का सबसे बड़ा पाठ उठाया, तो भिखारी बनने के साथ, वह मानों अपने अन्दर के परमेश्वर के सामने भी स्वतः सिद्ध दोषी बन गया। उस रात में अपनी वेदनापूर्ण स्थिति के बीच—लाला सरदारी लाल का मानस इस प्रकार तड़प उठा कि जैसे सागर के तट से दूर हुआ करवा पानी के गहरे गर्त में पहुंच कर फंस गया था। वह करवा डूब रहा था। माझी को सागर और आकाश निरा धुंधपूर्ण लग रहा था। उसका साथ छुट रहा था। पानी की लहरों का वेग मानों किसी सर्पिणी की तरह उसे क्षण-क्षण पर अपने मुंह में ग्रस रहा था। हाय। कितना दीन और असहाय था, वह लाला सरदारीलाल !

परन्तु उसी समय जब पत्नी ने उसे रोते देखा, तो चाहा कि धीरज दे चुप रहने के लिए कहे, इसी लिए उसने पति के सिर पर अपना गरम हाथ रखा।

हाथ का स्पर्श पाते ही सरदारीलाल जैसे चौंक गये। वह मानो आकाश से पृथ्वी पर आ गये। वह और अधिक जोर से रो दिये।

पत्नी ने कहा—क्या है. क्या !

सरदारीलाल ने कहा—आह, रुक्मणी।

रुक्मणी ने कहा—धीरज धरो। ईश्वर को याद करो।

सरदारीलाल नेउत्तर नहीं दिया।

रुक्मणी ने फिर कहा—हां, तुम ईश्वर को ही याद करो।

आगे से मानों बल पाकर अपने प्रति घृणा से पूर्ण बन, सरदारीलाल ने व्यथित भाव में कहा—किया, ईश्वर का भरोसा! मैं योग्य नहीं. ऐसा पात्र नहीं, रुक्मणी।

रुक्मणी चुप। मानो अशांत।

सरदारी लाल ने कठोर भाव में कहा—'रुक्मणी' ओ औरत,—आह! तूने भी नहीं रोका तूने भी नहीं कहा कि पाप बुरा है। . . . . .किसी का वध। सरदारीलाल उठकर बैठ गये। बोले—मैंने पाप ही तो किया, जीवन भर! पैसे के पीछे. . . . .'

उस समय रुक्मणी का सिर झुका था। उसकी आंखों से आंसुओं का वेग फूट निकला था और टप-टप पृथ्वी पर टपक चला था। किन्तु उसी समय जब सरदारीलाल ने उठ कर तिजोरी खोली और उसमें रखी हुई हीरे-जवाहरातों से भरी एक पेटी निकाली, तो तब, रुक्मणी ने अपनी उन रोती हुई आंखों को फिर ऊपर उठाया। उसने कुछ कहना भी चाहा। किन्तु उसी समय, सरदारी लाल ने कहा—'यह धन भी कम नहीं है। दो लाख का है। इसे दे देना है। इसे—'

चंचल स्वर के रुक्मणी ने पूछा—किसे ? किसको ?

सुनते ही, अपनी आंखों को पूरी खोल कर तेज और गम्भीर स्वर में सरदारीलाल ने कहा—जिसका है उसको। बाके की मा को। यह उसी का है। उसी का बेटा मेरे द्वारा वध किया गया है। वह—

रुक्मणी ने इतना सुना, तो बरबस ही, उसने चीख भरी और कहा—तुमने।

'हां, मैंने!' सरदारीलाल ने रुक्मणी की ओर देख कर कहा।

लेकिन फिर रुक्मणी चुप। जैसे मूढ़ और अशांत।

प्रातः हो आया था। चिड़ियां ने चहचहाना शुरू कर दिया था। प्रात' भीनी-भीनी पवन का झोंका आने लगा था। सरदारीलाल ने जवाहरातों का पेटी बगल में रख ली। वह चल दिया।

कुछ ही देर में वह बाकेलाल के घर पहुंचा। उसकी मा पूजन के लिए आसन पर बैठी थी। सरदारीलाल को देख वह चौंकी नहीं, चिन्तित भी नहीं हुई। अपितु प्यार और मानता के साथ उसकी ओर देखने लगी।

सरदारीलाल ने सन्दूकची उसके सामने रख दी और कहा— ताई इस जीवन के किनारे पर आकर मैं झूठ नहीं बोलूंगा। कुछ नहीं छिपाऊंगा।'—वह बोला—ताई, अब बाके नहीं आयेगा। उसका यह धन रखा है। वह तो मेरे कुटिल हाथों द्वारा —'

बाके की मा के हाथों से माला छूट गई। वह छूटते ही बोली—'मेरा बाके—'

किन्तु सरदारीलाल चुप। -उनका सिर झुक चुका था।

लेकिन अपनी पीड़ित अवस्था में, ताई ने उसका कुरता पकड़ कर रोते हुए कहा—'अ' तू। तू।'

सरदारीलाल ने कहा—'मैं अपराधी हूं। मैं नीच।'

लेकिन वह नारी,—वह बाके की मां क्या कहती। उसने गहरी सांस भरी और ऊपर आसमान की ओर देख कर कहा— 'मेरे राम!'

उसी समय, सन्दूकची छोड़ कर, सिर झुकाये हुए सरदारीलाल वहां से चले गये।
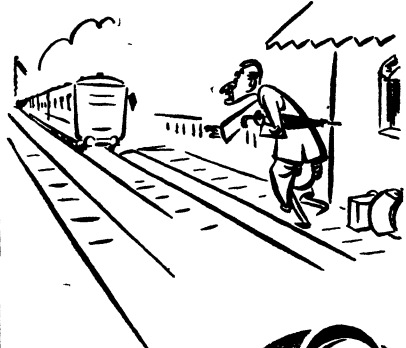
लोगों में चर्चा चली कि सरदारीलाल पागल हो गये। लोगों से कहने लगे, कि मैं हूं बाके का खूनी. . पैसे का लोभी। क्या जाने, क्या थे वे! पर यह सत्य था कि जीवन में जो पाप किया, शायद उसे ही, कुरच कुरच कर,—चीत्कार कर—हृदय के अन्धकार पूर्ण गह्वर से निकाल रहे थे और लोगों को बता रहे थे। पर लोग इसी को पागल कहते थे,— हाय!

तिरंगा झण्डा

श्री निराजजी रचित तीन एकांक नाटकों का संग्रह—स्वाधीन देश के झण्डे के लिए बलिदान की पुकार। मूल्य १) डाक व्यय ।-)। मिलने का पता—

विजय पुस्तक भंडार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

तोष की
हाथी मार्का
बढ़िया चाय
दार्जिलिंग आरेंज पैको

प० तोष एण्ड सन्स
कलकत्ता।

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी
इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन
मनोरञ्जन मासिक
सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
विजय पुस्तक भण्डार

अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० प्रस्तुत पूंजी २,००,०००

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० ”
सन् १९४६	१५ ”

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

- इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
- 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
- अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

- इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
- राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
- अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
- आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

समाचार चित्रावली

एक २८ वर्षीय अंग्रेज युवक ने ३११ मील की दूरी इस वायुयान से ३० मिनट २५ सैकण्ड में पूरी कर ली।

खाद्य के लिए युक्तप्रान्त में गङ्गा खादर में २०००० एकड़ पड़ती जमीन को मई १९४८ तक बसाने की योजना पर अमल शुरू हो गया है। एक किसान परिवार को २० एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं दी जायगी और बीच बीच में बस्तिया बसाई जायंगी। रूस के बाद एशिया में यह प्रथम व्यापक योजना है, जिसका अन्य प्रान्तों में भी अनुसरण किया जायगा।
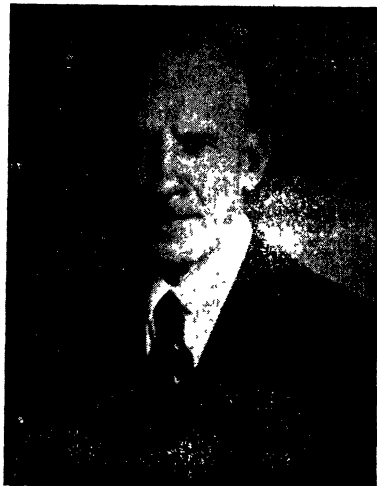
ब्रिटेन के दूसरे वैज्ञानिक सर राबर्ट राबिंसन ने भो रसायन शास्त्र में नोबल पुरस्कार प्राप्त किया है।

(बायें ओर) बरमा के स्वातन्त्र्य के उपलक्ष में भारत के गवर्नर जनरल माउण्टबैटन बरमी राज-दूत का अभिवादन कर रहे हैं।

(दाहिनी ओर) एटम शक्ति-सम्मेलन के सभापति जर्मन वैज्ञानिक प्रो० आइस्टीन।

[पृष्ठ ६ का शेष]

प्रसाद की नारी का पूर्ण परिचय प्राप्त करने के लिये नारी के इस अन्तर्विश्लेषण के साथ प्रसाद द्वारा प्रस्तुत किए गए नारी के बाह्य सौन्दर्य की भी एक हल्की सी झांकी प्रस्तुत कर देनी अनुपयुक्त न होगी। नारी के बाह्य रूप चित्रण के लिए नाटकों में तो कोई अवकाश न था। सम्भवतः ऐसा किए बिना चित्र एकांगी रह जाता, इसलिए प्रसाद जी ने काव्य (कामायनी) में इस पहलू को विशदता उपस्थित किया है। कुमारी श्रद्धा के मुख का शब्द चित्र देखिए—

आह! वह मुख! पश्चिम के व्योम
बीच जब घिरते हों घनश्याम;
अरुण रवि मण्डल उनको भेद
दिखाई देता हो छविधाम।

उसके अधर पर थिरकती हुई मुस्कराहट का कितना सजीव चित्र है—

और उस मुख पर वह मुस्कान!
रक्त किसलय पर ले विश्राम
अरुण की एक किरण अम्लान
अधिक अलसाई हो अभिराम।

लज्जाभिभूता युवती नारी के रूप वर्णन में मनोविज्ञान का कितना सुन्दर सामंजस्य हुआ है—

गिर रहीं पलकें, झुकी थी
नासिका की नोक,
भ्रूलता थी कान तक
चढ़ती रही बेरोक।
स्पर्श करने लगी लज्जा
ललित कर्ण कपोल,
खिला पुलक कदम्ब सा था
भरा गद्‌गद् बोल॥

विरहिणी नारी के लिए 'रङ्ग विहीन रेखा चित्र' की उपमा कितनी सजीव साथ ही मार्मिक बनी है—

कामायनी-कुसुम वसुधा पर
पड़ी न वह मकरन्द रहा।
एक चित्र बस रेखाओं का
अब उसमें है रंग कहा!
वह प्रभात का हीनकला शशि,
किरन कहां चांदनी रही,
वह सन्ध्या थी, रवि शशि
तारा ये सब कोई नहीं जहां॥

जीवन में मधुर आनन्द उपभोग करने के लिये स्वर्ण मिश्रित गोलियां

झीन सीन गोल्ड

—टानिक पिल्स—

'झीनसीन' में अनेक शक्ति वर्धक तत्वों के अतिरिक्त शुद्ध सोना भी है। इनमें बल और पौरुष बढ़ाने की, धातु पुष्ट कर तथा स्वप्नदोष और जातीय दुर्बलता मिटाने की अपूर्व शक्ति है। 'झीनसीन' के सेवन से आपकी खोई हुई शक्ति, उत्साह, उमंग तथा पुरुषत्व फिर से प्राप्त होगा। मूल्य प्रति शीशी ४) डाक खर्च ।||) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चायनीज मेडिकल स्टोर, नया बाजार—देहली।

हैड आफिस—२८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता, रीची रोड—अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी केलाश मेडीकल, स्टोर्स—आगरा।
दी जनरल मेडीकल स्टोर्स—अजमेर।
दी पंजाब केमिस्ट्स—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास बालकी बहुम—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी—मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—अलवर।
मेसर्स खरे ब्रादर्स—बराई।
मे० गोपीलाल चिरंजीलाल—श्री माधोपुर।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
दी वर्मा मेडीकल स्टोर्स—शिकोहाबाद।
मे० धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी दवाखाना मोरेना

आत्मरक्षार्थ आटोमेटिक ६ खानोंवाली पिस्तौल

No. 999 — STEVENS 6 SHOT — NO LICENCE NEEDED

लैसन्सकी कोई जरूरत नहीं ड्रामा, सिनेमा और सफरके समय चोरों को डरानेके लिए बड़े काम की है। दागनेपर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआं निकलता है।

असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥ इंच × ५ इंच और वजन १२ औंस मूल्य ८) और साथ में एक दर्जन गोलियां (एक्सप्रेस किस्म) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों के दाम २) स्पेशल ताम्बे की बनी ९९९ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। बेल्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १०)। प्रत्येक आर्डर के साथ एक शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसन्द होने पर दाम वापस

INTERNATIONAL IMPORTERS, P. B 199, Delhi.

इंटर नेशनल इम्पोर्टर्स पो० बाक्स १९९, दिल्ली।

आपके स्वाध्याय के लिए उपयोगी पुस्तकें

आहार—हिन्दी में आहार-विज्ञान पर लिखी हुई अपूर्व पुस्तक। मूल्य ५)

वैदिक ब्रह्मचर्य गीत—आध्यात्मिक ज्ञान के पिपासुओं के लिए तपस्वी अभयदेव जी लिखित वेद के ब्रह्मचर्य सूक्त का सुन्दर स्पष्टीकरण। मूल्य २)

बृहत्तर भारत—विदेशों में भारतीय संस्कृति के संस्थापकों की विस्तृत गौरव गाथा। मूल्य ७)

विज्ञान प्रवेशिका — मिडिल स्कूलों के लिए हिन्दी में लिखी गई विज्ञान शिक्षा की अति सरल पाठ्य पुस्तक। दोनों भागों का मूल्य २॥)

वैदिक-विनय (तीन भाग)	५)
भारत का इतिहास (तीन खण्ड)	७)
ब्राह्मण की गौ	||')
सन्ध्यासुमन	१।)
वरुण की नौका (दो भाग)	६)
वेद गीतांजलि	२)
तुलसी	२)
लहसुन प्याज	२॥)
आत्म मीमांसा	२)
अथर्व वेदीय मन्त्र विद्या	१॥)
देहाती इलाज	१)
सोम सरोवर	१॥)
वैदिक उपदेश माला	।–)

पता—प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में है, जो थोड़े ही मूल्य का है।

यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमायें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० २०१ कीमत ४॥।=) क्वालिटी नं० २१२ कीमत ६॥।) डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० २२० कीमत ६॥), पैकिंग व डाकव्यय १=)

नोट—एक समय में ६ कमरों के ग्राहक को कैमरा नं० २२० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होवे पर कीमत वापिस

वेस्ट एण्ड ट्रेडर्स (V. A. D.) पोस्ट बाक्स १९९, दिल्ली।

West End Traders, (V. A. D.) P. B. 199, Delhi.

१९४८ में क्या होने वाला है

भारत वर्ष के प्राचीन महापुरुषों की सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या अन्धकारपूर्ण संसार में सूर्य का प्रकाश है, यदि आप भी इस अन्धेरी दुनिया में अपने भविष्य का साफ साफ फोटो समय से पूर्व देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्ट कार्ड पर किसी दिलपसन्द फल का नाम लिख कर भेज दें बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आने वाले बारह मास का हानिलाभ, व्यापार, नौकरी में तरक्की, गिरावट, तबदीली, तन्दुरुस्ती, बीमारी, यात्रा, अकस्मात् न मालूम कारण से धन की प्राप्ति, किसी से नया मिलाप, औरत औलाद का सुख तारीख पोस्टकार्ड से लेकर वर्ष भर में पेश आने वाली सब बातों का खुलासा यानी मासिक वर्ष फल बताकर केवल १।) रु० में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाकखर्च अलावा होगा। बुरे ग्रहों के शान्ति का उपाय लिख दिया जायगा। ज्योतिष विद्या का चमत्कार एक बार अवश्य देखें।

श्री स्वामी शंकराचार्य ज्योतिष भवन

बीट नम्बर ३ अम्बाला छावनी

Shri Swami Shankeracharya Jyotish Bhawan
Beat No. 3 Ambala Cantt

आर्य-जगत

आर्य वीर दल का कार्यक्रम

[श्री प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति मन्त्री अ० भा० आर्य वीर दल समिति]

गत पाच महीनों में देश की परिस्थिति इतनी बदल गयी है कि देश की प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक समस्या पर नये दृष्टिकोण से विचार करना सर्वथा स्वाभाविक हो गया है। देश का राजनैतिक और साम्प्रदायिक वातावरण बिल्कुल बदल गया है, इस कारण अन्य संस्थाओं की तरह आर्यवीर दलों के कार्यक्रम के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के नये प्रश्नों का उठना अवश्यम्भावी था। पत्रों द्वारा तथा मौखिक रूप से मुझसे जो प्रश्न पूछे जाते रहे हैं, उनके उत्तर देना आवश्यक प्रतीत होता है। मैं यहा उनके उत्तर सक्षेप में देता हूं।

१. (प्रश्न) अब आर्यवीर दलों का उद्देश्य क्या होगा ?

(उत्तर) आरम्भ से ही आर्यवीर दल के तीन उद्देश्य रहे हैं। [१] उचित उपायों द्वारा आर्य संस्कृति तथा आर्य सभ्यता की रक्षा। [२] जनता में क्षात्र-धर्म की भावना को जाग्रत करना और [३] लोगों में प्रेमपूर्वक सेवा की प्रवृत्ति उत्पन्न करना। आर्यवीर दल की स्थापना इन उद्देश्यों से हुई थी। आज भी उसके वही उद्देश्य हैं। भारत की राजनैतिक या साम्प्रदायिक स्थिति के बदल जाने से इन उद्देश्यों में कोई परिवर्त्तन नहीं आया और न आना आवश्यक ही है।

२. (प्रश्न) अब आर्यवीर दलों का कार्यक्रम क्या हो ?

(उत्तर) आर्य वीर दलों के कार्यक्रम में भी मौलिक परिवर्त्तन कोई नहीं हुआ। दीक्षा लेने के समय आर्यवीर जो प्रतिज्ञाएं करते हैं, उनकी पूर्त्ति के लिये व्यक्ति रूप से और समूह रूप से प्रयत्न करना ही आर्यवीरों का स्थायी कार्यक्रम है। आर्यवीर और आर्यवीर दल अपने से यह प्रश्न करें कि क्या शारीरिक, मानसिक और आत्मिक दृष्टि से पूरे आर्य बन गये हैं। क्या हमने अपने को सच्चा क्षत्रिय बना लिया है। क्या हमने इतनी शक्ति पैदा कर ली है कि यदि हमारे धर्म या देश पर आक्रमण हो, तो हम आक्रमणकारी को परास्त कर सकें, इस आत्म निरीक्षण से अपने अन्दर जितनी कमी हो, उसे शीघ्र से शीघ्र पूरा करने का उपाय करना ही आर्यवीरों का व्यक्तिरूप से और आर्यवीर दलों का समूह रूप से कार्यक्रम है।

३ (प्रश्न) आर्यवीर दल का वर्त्तमान सरकार से क्या सम्बन्ध होना चाहिए ?

(उत्तर) जब तक भारतवर्ष पराधीन था, तब तक समय की सरकार के साथ उसके सम्बन्धों में एक विशेषता बनी रहती थी। आर्यसमाज ऋषि दयानन्द के इन वाक्यों को सार्वदेशिक सत्य के रूप में स्वीकार करता रहा है कि "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

इस सिद्धान्त के अनुसार एक वैदिक धर्मी के लिये विदेशी शासन में रहना सर्वथा धर्म विरुद्ध है। इस कारण आर्य जन भारत की विदेशी सरकार का पूरा और हार्दिक सहयोग नहीं कर सकते थे। अब दशा बदल गयी है। अब वैदिक धर्मियों का वर्त्तमान सरकार से कोई मौलिक भेद नहीं रहा। हा, जब कभी आर्यसमाज को ऐसा प्रतीत होगा कि सरकार का कोई कार्य आर्यसमाज के धार्मिक, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक कार्यक्रम का विरोधी है, तब वह प्रतिवाद का शब्द उठायेगा और सब वैध उपायों से अपने पक्ष की पुष्टि करेगा। आर्यवीर दल की स्थिति आर्यसमाज में वही होनी चाहिये, जो शरीर में भुजाओं की है। जिस कार्य को मन सोचता है, हाथ और भुजदण्ड उसे पूरा करते हैं।

४. (प्रश्न) वर्त्तमान राजनैतिक दलों से आर्यवीर दल का क्या सम्बन्ध होना चाहिये ?

(उत्तर) राजनीतिक दलों से आर्य वीर दल का कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिये। कांग्रेस पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी, हिन्दू महासभा पार्टी आदि राजनैतिक पार्टिया अपने अपने प्रोग्राम लेकर देश के सामने आ रही हैं। जनतन्त्र शासन में राजनैतिक पार्टियों का होना अवश्यम्भावी है। प्रत्येक देशवासी स्वतन्त्र है कि वह अपने मन्तव्य के अनुसार किसी पार्टी में सम्मिलित हो। परन्तु आर्यवीर दलों का उनसे कोई सम्बन्ध नहीं। दलों के परस्पर संघर्ष से आर्यवीर दलों को तथा आर्यवीरों को भी अलग रहना चाहिये। आर्यसमाज और आर्यवीर दल का कार्यक्षेत्र धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक है, उन्हें राजनैतिक प्रतिस्पर्द्धाओं की उलझन में नहीं फसाना चाहिये। आर्यसमाज और आर्यवीर दल की स्थिति स्वतन्त्र है। उन्हें किसी राजनैतिक दल का दुमछल्ला बनाना सर्वथा अनुचित है।

५. (प्रश्न) शान्ति रक्षा के प्रति आर्यवीर दल का क्या कर्त्तव्य है ?

(उत्तर) अपने देश, नगर तथा ग्राम की शान्ति की रक्षा में सहायता देना आर्यवीर दल और आर्यवीरों का प्रथम कर्त्तव्य है। आर्यवीर दल के उद्देश्यों में जो 'रक्षा' शब्द आया है, उसका यही अभिप्राय है। जनता के जान, माल और अधिकारों की आक्रमण से रक्षा करना क्षत्रिय का परम धर्म है। सच्चा आर्य वीर वही है, जो सच्चा क्षत्रिय हो। जो व्यक्ति उत्पात मचाये, लूट-मार या हत्या में हिस्सा ले, या सभा-सोसाइटियों में गड़बड़ मचाये, वह आर्यवीर कहलाने का अधिकारी नहीं। आर्यवीरों का कर्त्तव्य है कि वे अपने अपने क्षेत्र में शांति रक्षा के पहरेदार बनें और जो लोग शांति-रक्षा का प्रयत्न कर रहे हों, उनकी सहायता करें।

पाकिस्तान में आर्य समाज

प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री ला० खुशहालचन्द जी 'आनन्द' ने पाकिस्तान सरकारके अधिकारियों से पत्र द्वारा प्रार्थना की है कि श्री महात्म हसराज जी के स्मृति स्वरूप बनाये गये सभा कार्यालय तथा अन्य सस्थायें सभा को दे दी जायें जिससे कि आर्यसमाज पाकिस्तान में अपना सामाजिक और सांस्कृतिक काय कर सकें। इससे हिन्दुओं के पाकिस्तान में पुन बसने भी सहायता मिल सकेगी।

दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय

विद्यार्थियों को प्रचारकार्य की शिक्षा देने वाला लाहौर का ब्रह्म महाविद्यालय श्री वेदप्रकाश विद्यावाचस्पति के आचार्यत्व में शामचौरासी (जि० होशियारपुर) में पुन स्थापित हो गया है।

अलवर राज्य प्रजामण्डल की कार्य समिति के सदस्य श्री बद्रीप्रसाद वकील, जिन्हें प्रजामण्डल का एक सभा में आक्रमण करके कुछ गुण्डों ने घायल कर दिया।

शुद्धि का काम फिर जारी हो

राजनीतिक वायु मण्डल के बदल जाने के कारण अब भारतवर्ष के उन मुसलमानों को जो वैदिक सस्कृति को अपनाने के लिये शुद्ध होना चाहते हैं, शुद्धि कर लेना चाहिये। कट्टर मुसलमानों के अत्याचार का भय नहीं रह गया है और हम को अनेक सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि बहुत से मुसलमान शुद्ध होना चाहते हैं। परन्तु बहुत से लोग उन को शुद्ध करने का यह कह कर विरोध करते हैं कि मुसलमान विश्वास के योग्य नहीं हैं और वह धोखा देंगे।

इस प्रकार की भावनाएं शुद्धि के मार्ग में रुकावट डाल रही हैं। अतः अवश्य ही शुद्धि के लिये अनुकूल क्षेत्र बनावें और जो लोग शुद्ध हों, उनको सूची सभा में भेज देवें।

मन्त्री—सार्वदेशिक सभा

अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन की एक झांकी

[पृष्ठ ९ का शेष]

कहा यह लो हस्ताक्षर कराई की फीस। जब द्विवेदी जी ने पैसा ले लिया तो उसे उसी लड़की को दे दिया और कहा कि यह लो हिन्दी प्रचार में जमा करा देना और हस्ताक्षर कर दिये।

कवि सम्मेलन में बेढब बनारसी ने अपनी कविता नहीं पढ़ी। उनका नाम दो बार पुकारा गया, पर वे हाजिर नहीं हुए। दूसरे दिन जब बेढबजी से मैंने पूछा कि क्या कारण था जो आपने कल रात्रि को कविता नहीं पढ़ी, बहुत से लोग आपकी हास्य रस की कविता सुनने के लिए आतुर थे। बेढब जी ने उत्तर दिया कि मुझे कविसम्मेलन में आमंत्रित नहीं किया गया था—इसलिए मैं भला कविता क्यों पढ़ता!

× × ×

आल इन्डिया रेडियो के बम्बई स्टेशन ने कुछ कवियों की कविताएं ब्राडकास्ट कीं। कुछ कवियों ने रेडियो पर कविता सुनाने से इसलिए इन्कार कर दिया, क्योंकि रेडियो वाले कुछ देना न चाहते थे और मुफ्त में ही कविता पाठ कराना चाहते थे। पर कुछ कवि हिन्दी प्रचार के नाम पर गये। जाने वाले कवियों में से थे सर्व श्री भवानी प्रसाद तिवारी, नर्मदाप्रसाद खरे, मुकुल, प्रभागचन्द्र शर्मा, श्यामनारायण पाडे आदि।

\+ × ×

प्रतिनिधि निवास में चोरी न हो, इसका बराबर ध्यान रखा गया और पुलिस का कड़ा प्रबन्ध किया गया था—फिर भी वर्धा के प्रो० नलदुवा की घड़ी व जबलपूर के कवि श्री नर्मदाप्रसाद खरे की पारकर ५१ पेन चोरी चली ही गई। एक साहित्यिक की जेब ही कट गई—और उसके पाकिट में रखे उन्नीस रुपये छः आने चले गये। साबुन, लोटे, धोतियां, रूमाल व जूते आदि की चोरियां तो साधारण थीं।

× × ×

नेहरू जाकिट पहन कर जब युक्तप्रांत के प्रधानमन्त्री पं० गोविन्दवल्लभ पन्त उद्घाटन करने के लिए मच पर आये और बोलने को खड़े हुए तो एक पारसी बूढ़ी महिला ने उन्हें नारियल भेंट किया। बतलाया गया कि उक्त बुढ़िया सब को ऐसे अवसरों पर नारियल भेंट करती है। कवि सम्मेलन के अवसर पर प्रत्येक कवि को नारियल उक्त बुढ़िया ने भेंट किया। आशु कवि श्री ब्रजमोहन वर्मा को जब नारियल भेंट किया गया तो उन्होंने उस पर ही कविता बना डाली। श्रीमती चन्द्रमुखी 'ओझा' 'सुधा' को दो बार कविता पढ़ने आना पड़ा, इसलिए उन्हें दोनों बार नारियल मिले।

× × ×

जो साहित्यिक पधारे थे उनकी वेषभूषा भी देखने लायक थी। प० सोहनलाल द्विवेदी लम्बी शेरवानी और बेल-बूटेदार टोपी पहने हुए थे—लोग हंसें नहीं, इसलिए उन्होंने खुले सिर कविता पढ़ी। भदन्त आनन्द कौसल्यायन पीत वस्त्रधारी थे, इसलिए दूर से ही पहचान में आ जाते थे श्र नक्ष जी व नर्मदाप्रसाद जी खरे—दोनों काली लम्बी शेरवानी में दिखाई दिए। कवयित्रियों में से श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा' की धानी रंग की साड़ी बड़ी भली मालूम देती थी। कुछ साहित्यिक सूटेड बूटेड थे—गले में नेकटाई भी लगी हुई थी—पता नहीं सूट बूट व नेकटाई भारत से कब विदा होगी। श्री अनूप शर्मा तो कोसे का लम्बा कोट पहने दिखाई दिए।

\+ × ×

मैरीन ड्राइव स्थित हिन्दी नगर का पडाल बहुत सुन्दरता के साथ बनाया गया था और रात्रि को विद्युत प्रकाश से वह जब जगमगाता था तो बड़ा भला मालूम देता था। सामने ही अथाह समुद्र की उत्ताल तरंगें लहरा रही थीं। वैभवशाली बम्बई नगरी में रहने वाले चांदी के चाकों की गाड़ी पर दौड़ते हैं और अपने धन के अभिमान में इतने चूर रहते हैं कि वे मनुष्य को नहीं पहचानते। मानव मानव का यह अन्तर देखकर किसी भी सहृदय को ठेस पहुँचे बिना न रहेगी। वहां पर सघर्ष का नाम ही जीवन है।

× × ×

सम्मेलन के अवसर पर कुछ पत्रों ने अपने विशेषांक भी प्रकाशित किए थे। बम्बई के प्रभावशाली गुजराती दैनिक 'वंदेमातरम्' तथा वर्धा से प्रकाशित होने वाले मराठी साप्ताहिक 'स्वयंसेवक' के विशेषांक पसन्द किये गये, क्यों कि ये दूसरी भाषाओं के अखबार थे। विश्वमित्र, आवाज़, विक्रम, वर्तमान, आज ने अगर अपने अपने विशेषांक निकाले तो आश्चर्य क्यों हो?

× × ×

प्रगतिशील साहित्यिकों की सभा प्रतिनिधि निवास में हुई थी। साहित्य परिषद में पं० चन्द्रबली पांडे ने जो भाषण दिया था—उससे प्रगतिशील लेखक बहुत ही नाराज हुए। लेखकों के संगठन के संबंध में विशेष रूप से चर्चा हुई। उसमें सर्व श्री शांतिप्रसाद वर्मा, विष्णु प्रभाकर, राजीव सक्सेना, शुकदेव प्रसाद 'अनुरागी' वसन्त पुराणिक, प्रो० अंचल, प्रो० प्रभाकर माचवे, नागार्जुन, भगवन्तशरण जौहरी, गणेश, शांतिप्रिय द्विवेदी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। सबने अपना अपना परिचय दिया। पर जब श्री शांतिप्रिय द्विवेदी की बारी आई तो उन्होंने परिचय देने में आनाकानी की और जब बहुत ही जोर डाला गया तो उन्होंने कहा कि मेरा तकल्लुफ ही मेरा परिचय है।

× × ×

ऐसी सम्भावना है कि अगला अधिवेशन कलकत्ता में होगा। चलो ठीक ही है। कराची, बम्बई के बाद कलकत्ते का नम्बर आया। मालूम होता है समुद्र से सम्मेलन वालों को बड़ा प्रेम हो गया है—इसलिए ही समुद्र किनारे अधिवेशन किये जाने की प्रथा चल पड़ी है। पर मद्रास वाले कहीं यह प्रथा तोड़ न दें, क्योंकि वहां हिन्दुस्तानी वाले अपना रंग जमाये हुए हैं।

× × ×

संस्कृत परिषद में विद्वान लोग इस तरह से भाषण दे रहे थे मानों वे अब संस्कृत को ही भारत की राष्ट्रभाषा बनाकर छोड़ेंगे। गो सेवा सम्मेलन भी सफलता पूर्वक सफल हुआ। कई वक्ताओं ने अंग्रेजी सरकार की खूब आलोचनाएं कीं कि क्यों नहीं गोवधबंदी का कानून पास हो जाता।

———

हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुरुदत्त जी की
नवीन रचना
विकृत छाया
इसकी वीर अर्जुन, हिन्दुस्तान, आज कल दिल्ली और ट्रिब्यूनल तथा मिलाप लाहौर इत्यादि पत्रों ने भूरि भूरि प्रशंसा की है।
हिन्दू संयुक्त परिवार प्रथा अर्थात् समाज वाद का एक रूप इस पुस्तक का मुख्य विषय है।
अपने पुस्तक विक्रेता से खरीदिये
अथवा
भारती साहित्य सदन २३।९० क्नाट सरकस नई दिल्ली से प्राप्त करें। डाक व्यय नहीं लिया जाएगा।
श्री गुरुदत्त जी की अन्य पुस्तकें भी उक्त पता से प्राप्त होती हैं।

❋ विवाहित जीवन ❋
को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मंगायें।
१—कोक शास्त्र (सचित्र) १॥) २—८४ आसन (सचित्र) १॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १॥) ४—१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
५—सोहागरात (सचित्र) १॥) ६—चित्रावली (सचित्र) १॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो १॥) ८—गर्भ निरोध (सचित्र) १॥)
•उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १)•अलग लगेगा।
पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १५) अलीगढ़ सिटी।

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इसलिये
हिन्दू-संगठन
[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी]
पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोह-निद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)
विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

पाकिस्तान को रुपया अपने ही विरुद्ध प्रयोग के डर से हम नहीं दे रहे। —नेहरू जी

यार लोगों ने तो पहिली बार भी आप से अर्ज किया था, कि सरकार, बन्दर को समाचार सुनाना और गंवार को बाजार दिखाना हमेशा खतरनाक ही होता आया है।

× × ×

मौलाना आजाद मुसलमानों को गुमराह न करें। —इस्माईल खा

खा साहब छोड़िये भी इस झगड़े को। शाहमदार की तरफ से फिर आपको एक बार यकीन दिलाते हैं कि लीग की बनायी उन दो राहों—'पाकिस्तान और कब्रिस्तान' के सिवाय तीसरी राह तो मुसलमान मानते ही नहीं। मौलाना—नौलाना कोई कुछ भी कहे, हमें तो—

जिन्ना ने छोड़ा बीच में,
कब बेड़ा हमारा,
हिन्द के दरिया में है,
इस्माइल तेरा सहारा।

× × ×

कांग्रेस और हिन्दू महासभा के कारण ही पाकिस्तान बना। —अफजला खा

आमीन, खा साहब शायद दोनों के ही लीडरों को यह जच गया था कि आस्तीन के सांपों को पाकिस्तान के ही पिटारे में रख कर पाला जा सकेगा।

× × ×

हिन्द ने पाकिस्तान को रुपया और हथियार देने से इन्कार कर दिया। —लियाकतअली

इकरार करके इन्कार करना तो हमें यार लोगों को भी खटका। लेकिन—

कश्मीर के हमले को
जब तक वही शक्ल थी।
जन्नी; पीते, कुछ खावें,
वही मसल थी।

+ × ×

सेना में साम्प्रदायिकता न हो। —राजाजी

समझे आप—सिपाही में साम्प्रदायिकता बरदाश्त हो। तभी—

कौम परस्ती की किश्ती पर
चढ़े हुए जितने मांझी,
मनसबदार सेना में रक्खो
सब कहते हैं राजा जी
मुस्लिम लीग की मांगों की
यो होती है पूर्ति जी।

आज देश की आजादी में
जिन्ना होता क्यों साझी?

× × ×

मैं निजाम का हृदय जीतने आया हूं। —के० एम० मुन्शी

यदि आपकी दिल-जीत बटी कारगार हो जाय तो कृपा करके एक खुराक हमारे दोस्त रिजवी के घर भी पहुंचा देना।

× × ×

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान खुल कर लड़लें तो अच्छा है। —गांधी जी

बिल्कुल ठीक। पेट का गुबार और पुराना बुखार दूर करने के लिये समझदार चिकित्सक बुखार ही तेज करता है। नहीं तो आप जानते ही हैं मरीज का हाल।

× × ×

लुकाछिपी के बजाय पाकिस्तान मैदान में आकर लड़ ले। —सरदार पटेल

घबराइये नहीं जरा चचा की चिट्ठी का इन्तजार है।

× × ×

जनता को नागरिकता की शिक्षा देना पुलिस का काम है। —सरोजिनी नायडू

यानी दूध की रखवाली करना बिल्लियों का काम है। जरा यह तो और बताइये कि रिश्वतखोरी, गाली गलौच, बदतहजीबी की तरबीह और 'डाटों ऐसा मक्खा छाटो, झूठे को सच्चा और सच्चे को डाटो' करना क्या यार लोगों का काम है।

× × ×

जिन्ना जिह्वा रोग के कारण बोलने में असमर्थ हैं। —एक शीर्षक

कहीं कश्मीर की हवा का झोंका तो नहीं खा गये।

× × ×

निजाम ने पाकिस्तान को कर्ज दिया है।

इसलिए कि हिन्दुस्तान से ऊब कर जब निजाम पाकिस्तान जावें तो दो रोटी और एक कोठी का इन्तजाम पाकिस्तान पहले से कर छोड़े।

× × ×

मुसलमान से धोखों की बजाय एक चुन लें। —सरदार पटेल

धोखा तो आपने चुना चुनाया है। जरा खामा खां से और पूछना था कि पतली कमर और लम्बी गर्दन का धोखा ज़ुल्फ़ के लिए कैसा रहेगा।

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम ३) डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

राष्ट्र भाषा हिन्दी को अपनाइये और उसकी उन्नति में हाथ बटाइये।

२००१) दिनेश पहेली नं० ११ में प्राप्त कीजिये

१०००) सर्वशुद्ध पूर्तियों पर, ८५०) न्यूनतम ३ अशुद्धियों तक। विशेष पुरस्कार—२५), १५), १०) क्रमश सर्वाधिक पूर्तियां भेजने वालों को, १०१) सर्वप्रथम सर्वशुद्ध विद्यार्थी के उत्तर पर अधिक दिये जावेंगे।

पूर्तियां भेजने की अंतिम तारीख ३० जनवरी, १९४८ ई०

१ रा	२ जे	न्द्र	३ बा	४ बू	■	५ म
ज	ा	■			६ म	धु
ी	ी	■	■	■		ा
ति	■	७ ि	दी	■	न	ला
■	८	म	न	■	९	स
१० ा	ख	क	■	११ ा	र	त
१२ जा	ा	न	■	१३ च		नी

संकेत बायें से दायें—१. वर्तमान राष्ट्रपति। ६. शहद। ७. अनेक स्त्रियां इसका बहुत मान करती हैं। ८. इससे देखने वालों तक के मन में घृणा पैदा होती है। ९. निकाला हुआ अर्क। १०. इसके बिना घर सूना हो जाता है। ११ हे भगवान्! इस ...भारत को उबारो। १२. एशिया का एक कला-कौशल में उन्नत देश। १३. बड़े आदमियों के यहां भोजन के समय इसका भी विशेष स्थान है।

संकेत ऊपर से नीचे—१. इसको जाने बिना कोई शासक मान नहीं पा सकता। २. पति के बड़े भाई की स्त्री। ३. इसकी चोट भी कभी कभी प्राण घातक होती है। ४. पिता की बहिन। ५. कवि 'बच्चन' जी की एक उत्तम रचना (केवल चार अक्षरों का शब्द)। ६. 'कामदेव' को यह भी कहते हैं (केवल तीन अक्षरों का शब्द)।

नियमावली:—एक नाम से एक पूर्ति का शुल्क १।।), इसके पश्चात् प्रत्येक पूर्ति के ।।) जो मनी आर्डर द्वारा भेजा जाना चाहिए। म० आ० की रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य भेजें। सादे कागज पर इच्छानुसार पूर्तियां भेजी जा सकती हैं। पूर्तियों के अन्त में और मनीआर्डर कूपन पर नाम और पूरा पता हिन्दी में अवश्य लिखें। जो व्यक्ति एजेन्टों की प्रेरणा से पूर्तियां भेजें वे पूर्तियों के नीचे प्रेरक के नाम का उल्लेख अवश्य कर दें। परिणाम के लिये ≈) अधिक भेजें। शुद्ध उत्तर ६ फरवरी के साप्ताहिक वीर अर्जुन में देखें। एजेन्ट बनने के इच्छुक हमसे पत्र व्यवहार करें। पूर्तियां और म० आ० भेजने का पता:—

डी० एम० त्रिपाठी, हितकारी विद्यालय, कोटा (राजपूताना)

पहेली नं० १० का शुद्ध उत्तर—बायें से दायें—१. कश्मीर, ३. दमक, ४. राजधानी, ६. रक्षक, ७. मधुमास, १३. पल। ऊपर से नीचे:—१. कातर, २. रविलनया, ५. समता, ८. अकर, ९. मति, १० सहेली, ११. दानव, १२. दानो।

सर्वशुद्ध ५ प्रत्येक को २००), एक अशुद्धि १० प्रत्येक को ३०), दो अशुद्धि ४४ प्रत्येक को ६), तीन अशुद्धि ९६ प्रत्येक को ३)। सर्वाधिक पूर्तियों का पुरस्कार ८४, ५४, ३० पूर्तियों पर और सर्वप्रथम सर्वशुद्ध पूर्तिका १०१) श्री ... अलीगढ़ को मिला। सब पुरस्कार २५ जनवरी तक भेज दिये जावेंगे।

[पृष्ठ ४ का शेष]

इस बीच में नौशेरा क्षेत्र में युद्ध की गति और तीव्र हो गई है। ऐसा लगता है कि सुरक्षा कौंसिल के निर्णय से पूर्व पाकिस्तानी आक्रान्ता कश्मीर के प्रदेश में कोई महत्वपूर्ण विजय करके इस निर्णय को प्रभावित करना चाहते हैं। लगभग ५ हजार आक्रान्ता भारत और कश्मीर को मिलाने वाले एकमात्र मार्ग कठुआ-रोड को हस्तगत करने के, लिये प्रयत्न कर रहे हैं, और भारतीय सेना उनके आक्रमण को विफल कर रही है।

युक्तप्रांत में कंट्रोल हटा

६ जनवरी से युक्तप्रान्त में तमाम खाद्य पदार्थों के भावों तथा उनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाने ले जाने पर से नियन्त्रण उठा लिया गया है। फरवरी से कानपुर, आगरा, लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, अलमोड़ा, मसूरी, नैनीताल, देहरादून में १०० रुपया प्रति मास या इससे कम प्राप्त करने वाले व्यक्ति को ही राशनिंग की गारण्टी दी जायेगी। मजदूरों, जेल कर्मचारियों और कैम्पों में रहने वाले शरणार्थियों को भी यह सुविधा दी जायेगी।

★

पिकाक दंतमंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के दुकानदार से मांगिये।

ऐजेन्टों की जरूरत है

ऐनसा ट्रेडिंग कम्पनी

चांदनी चौक, देहली।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों! औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य ३) रु०

दिगम्बर नाथ औषधालय नं० १

पो० कत्तरी सराय (गया)

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

[सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

यह नेताजी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र है। इसमें जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि कार्यों का समस्त विवरण आ गया है। मूल्य १) डाक व्यय ।=)।

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

पहेली नं० ३१ की संकेतमाला

दायें से बायें

१. स्वर्गीय राष्ट्रीय व सामाजिक नेता।
२. समुद्र।
६. जीवित पदार्थों का स्वभाव है।
७. अच्छा लगता है।
८. विशिष्ट मेधावी ही कोई बन पाता है।
१०. गरमी सरदी की एक सीमा।
११ इसके बिना दुनिया में रहना सरल नहीं।
१३. कभी न कभी इससे सभी का वास्ता पड़ता है।
१४. इसमें अन्धकार अधिक होता है।
१५. इसके पास होने से चीज की सुरक्षा रहती है।
१६. इसके अभाव में कई बार बड़ी दिक्कत रहती है।
१७. आज कल जो —— चाहे वही होता है।
१९. अच्छा लगता है।
२१. एक पेड़।
२४. कभी कभी अच्छी लगती है।
२५. कोई चाहे तो रिझा जा सकता है।
२६. पूर्ण विजय से पहले —— उचित नहीं।
२७. भगवान सब को दे!

ऊपर से नीचे

१. मजदूर।
२. मारने वाला।
३. दूसरे का / की ही —— देखने में सुख है।
४. अत्यधिक —— पीना हानिकर है।
५. अच्छी —— आनंदित करती है।
९. चमकीली हो तो सुन्दर जान पड़ती है।
१०. आशा को पाकर प्रसन्नता होती है।
१२. इसके सामने सब हार मान जाते हैं।
१७. माता।
१८. प्रारम्भ इसमें दिक्कत होती है।
२०. चाह न हो तो किसी काम का होना कठिन है।
२२. दही ——।
२३. कार्य सिद्धि इससे सरलता से हो जाती है।
२४. वस्तु को और ही रूप दे देता है।

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

जुही नं० ११ कानपुर।

साबुनों का मुकुट मणि

साबुन नम्बर १००

हर तरह के कपड़ों ऊनी, सूती, रेशमी की बहतरीन सफाई के लिये। सुन्दर और रंगीन रैपर में लिपटा हुआ! हर अच्छे स्टोर और साबुन के दुकानदार से मिलेगा। एक बार खरीद कर अवश्य परीक्षा करें।

एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है।

चांद सोप वर्क्स

गली नं० ३८ करोलबाग

दिल्ली।

देहाती इलाज

ले० श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार।

हमारी माताओं, गृहणियों तथा नये प्रकाश की चकाचौंध में पलने वाले युवक-युवतियों को यह पुस्तक अवश्य अपने पास रखनी चाहिये जिससे वे अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर, बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकें। मूल्य १)

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

२०००) रु० निहाल पहेली नं० ३ में जीतिये

पहला इनाम	अन्य पुरस्कार	सर्वाधिक हलों पर
१३००) रु०	५००) रु०	३०) २०) १५) रु०

१००) का विशेष पुरस्कार बाहर की सर्व प्रथम प्राप्त २५ पूर्तियों पर

पूर्तियां पहुंचने की अन्तिम तारीख ३०-१-१९४८
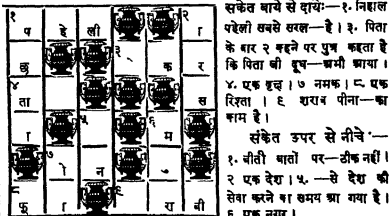
संकेत बायें से दायें:—१. निहाल पहेली सबसे सरल—है। ३. पिता के बार २ कहने पर पुत्र कहता है कि पिता जी दूध—अभी आया। ४. एक वृक्ष। ७ नमक। ८. एक रिश्ता। ९ शराब पीना—का काम है।

संकेत ऊपर से नीचे:—

१. बीती बातों पर—ठीक नहीं। २ एक देश। ५. —से देश की सेवा करने का समय आ गया है। ६ एक नगर।

फीसः—एक नाम से एक पूर्ति की फीस १) रु० फिर प्रति पूर्ति ॥) है। प्रति २५ पूर्ति के एक सैट की फीस १०) रु० है जो मनीआर्डर द्वारा आनी चाहिये। रसीद पहेली के साथ भेजें।

नियम:—उपरोक्त फीस के साथ सादे कागज पर कूपन बना कर या बिना बनाये अथवा सरल विधि से इच्छानुसार पूर्तियां भेजी जा सकती हैं। मैनेजर का निर्णय अन्तिम तथा कानूनन माननीय होगा। निर्णय के लिये ≥) अधिक भेजें।

पता—मैनेजर निहाल पहेली नं० ३ P. B. नं० ३५ शिमला।

२५०) [सुगमवर्ग पहेली नं० ३१] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार १५०) न्यूनतम अशुद्धियों पर १००)

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे मैनेजर का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम.................................

पता.................................

ठिकाना......................उत्तर नं०......

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम.................................

पता.................................

ठिकाना......................उत्तर नं०......

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम.................................

पता.................................

ठिकाना......................उत्तर नं०......

न तीनों वर्गों को पृथक न करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो शेष दो पर आड़ी लकीर खींच दें।

इस लाइन पर काटिये

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि ७ फरवरी १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा सन्दिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३. उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६ एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर १५०) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर १००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक सख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बाट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १६ फरवरी के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ११ फरवरी १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा। पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३१, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलिया आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

★★★

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
'जीवन संग्राम'

का

संशोधित द्वितीय संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ हैं। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय ।–)

विविध

वृहत्तर भारत

[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ॥।=)

बहन के पत्र

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व सखियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये आदितीय पुस्तक। मूल्य १)

प्रेमदूती

श्री विराज जी रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ॥।)

वैदिक वीर गर्जना

[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ॥।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी

[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ।।=) डाक व्यय ।–)

पं० जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इस लिये

हिन्दू–संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं

[सम्पादक—श्री बसन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।–)

नया आलोक : नई छाया

[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

त्याग का मूल्य

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी अनुवाद मूल्य ५) डाक व्यय ।≠)

तिरंगा झण्डा

[श्री विराज]

तिरंगे झण्डे की महानता से सम्बद्ध तीन एकांकी नाटकों का संग्रह—स्वाधीन देश के झण्डे लिये बलिदान की पुकार। मूल्य १।) डाक व्यय ।–)

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १॥) [illegible]।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।–)

तेल विज्ञान

तिलहन से लेकर तेल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।–)

तुलसी

तुलसीगण के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के ढंग बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर

अंजीर के फलों और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १॥) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की
'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ॥)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य ॥)

श्री प० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

[वर्ष १४] दिल्ली, सोमवार ४ माघ सम्वत् २००४ 19th JANUARY DELHI 1948 [अङ्क ४१]

राष्ट्रीय एकता व शान्ति के यज्ञ में आत्माहुति के लिए उद्यत

राष्ट्रपितामाह म० गांधी

सम्पादक—
रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

एक प्रतिका मूल्य ≈)

... पहेली का ... पुरस्कार जीतिये, देखो पृष्ठ ...

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी
इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* मनोरञ्जन मासिक
* विजय पुस्तक भण्डार
* अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,०००

प्रस्तुत पूंजी २,००,०००

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० ,,
सन् १९४६	१५ ,,

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

- इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
- 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
- अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

- इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
- राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
- अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
- आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

समाचार चित्रावली

काश्मीर के महाराजा सर हरिसिंह ने अन्त कालीन सरकार की स्थापना करना स्वीकार कर लिया है।

सरदार वल्लभभाई पटेल लखनऊ में आग्रहपूर्वक आरोपण कर रहे हैं।

कांग्रेस कार्यसमिति के नये सदस्य

डा० पट्टाभि सीतारमैय्या

श्रीमती सुचेता कृपलानी

राजेन्द्र बाबू ने आप दोनों को कांग्रेस कार्यसमिति का सदस्य नियत किया है।

श्री जयनारायण व्यास ने जोधपुर में उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह करने की घोषणा की है।

लन्दन में होने वाली एक कला-प्रदर्शनी में भारत की वस्तुएं दिखाई जा रही हैं।

पश्चिम बंगाल के प्रधानमन्त्री

श्री प्रफुल्लचन्द्र घोष अपना पद छोड़ चुके हैं।

आधुनिका
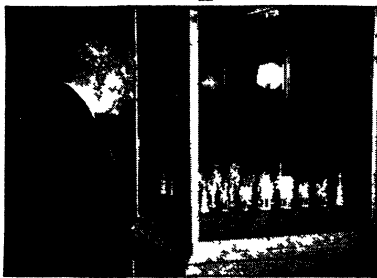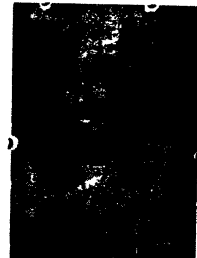
पत्नी या मां

[श्रीमती रामेश्वरी शर्मा]

सुनने पर यह बात कुछ विचित्र सी लगेगी कि आज की मध्य वर्गीय नारी पत्नी अथवा मा दो में से एक ही पद को सुशोभित करने में समर्थ हो सकती है। दोनों पदों का बोझ उसके सुकुमार कन्धों पर डालने का अर्थ है कि वह न तो सफल पत्नी ही बन सकेगी और न आदर्श माता। आज की मध्यवर्गीय नारी से कोई प्रश्न करे कि वह दो में से कौन से पद को अधिक महत्व देती है, तो वह यह जानते हुए भी कि नारी की पूर्णता और विकास मातृत्व को शोभित करने ही में हैं, वह स्पष्ट रूप से कहेगी कि समाज की व्यवस्था और युगानुरूप गृहस्थ जीवन की परिस्थिति को लक्ष्य करते हुए वह मातृत्व से वंचित रहना ही अधिक श्रेयस्कर समझती है।

आज का समाज उसके इस स्पष्ट उत्तर की वास्तविकता को समझने का प्रयत्न नहीं करता। उसे मध्यवर्गीय शिक्षित रमणी के प्रति शिकायत होती है कि आज की शिक्षिता नारी बच्चों के नाम से दूर भागती है। कहा तो यहां तक जाने लगा है कि देशके विभाजन का उत्तरदायित्व भी हिन्दू नारी पर है। कुछ व्यक्तियों का कहना है कि जब दूसरी जाति अपनी संख्या बढ़ाने में सलग्न रही—तब इस हिन्दू महिला ने बच्चों के भय से अपनी संख्या को बढ़ने से रोक दिया—परिणाम-स्वरूप देश के दो टुकड़े हो गये।

हो सकता है कि इस तर्क में कुछ सत्य निहित हो किन्तु फिर भी समाज का कर्तव्य है कि नारी की मनोवृत्ति के मूल कारण खोज निकाले और उसके निराकरण के लिए कुछ विशेष प्रयत्न करे।

उच्चवर्गीय सम्पन्न समाज की महिलाओं के विषय में कुछ कहना व्यर्थ है। उनका पैसा सदैव उनका स्वर्ग रहा है। समाज व्यवस्था और युग धारा का अभी तक इस वर्ग को स्पर्श भी नहीं हुआ है। उस वर्ग की महिला के जीवन का ढंग ही कुछ और तरीके का होता है। सम्पन्न पत्नी बीस बच्चों की मा होने पर भी पैसे के बल पर एकत्रित किये प्रसाधनों के बल पर काफी समय तक नव यौवना नारी मात्र ही रहती है। उसके सुकुमार कन्धों पर न तो पति सेवा का भार रहता है—और न ही शिशु-पालन जैसे महत्व पूर्ण कार्य को वह वहन ही करती है। चारों तरफ की दुश्चिन्ताओं से मुक्त वह जीवन की राहमें आगे बढ़ती जाती है। अपनी उन्नति और आकांक्षापूर्ति के लिए उसे पर्याप्त समय मिल जाता है।

लेकिन मध्यवर्गीय शिक्षिता रमणी की बात विचारणीय है। आज वह युगों से पाये हुए बन्धनों से मुक्त होकर जीवन का सही अर्थों में उपयोग करना चाहती है। पति की सेवा और बच्चों को पैदा करते रहना ही उसका ध्येय नहीं रहा है। शिक्षा के प्रसार से उसका आत्मज्ञान उदय हो चुका है। मा पत्नी, और नारी होने के अतिरिक्त वह अपने को राष्ट्र का नागरिक भी समझती है और इसके नाते वह चाहती है कि उसका व्यक्तिगत विकास हो।

लेकिन समाज की व्यवस्था और आर्थिक पहलू उसे ऐसा करने से रोकता है। आज के आर्थिक युग में एक साधारण पुरुष अपनी शक्ति भर लगा कर भी इतना धनोपार्जन नहीं कर पाता कि वह अपने घर की ऐसी व्यवस्था कर सके कि उसकी पत्नी को पर्याप्त अवकाश प्राप्त हो और वह शान्ति के साथ कुछ क्षण अपने आकांक्षा की पूर्ति में दे सके तथा समाज में विशिष्ट कार्य कर सके ताकि वह समाज की दृष्टि में ऊंची उठ सके। प्रातः काल से उठ कर सन्ध्या तक यही दुश्चिन्ता बनी रहती है कि आज लकड़ी समाप्त हो गई—आज नमक नहीं मिलता। शाम को दिन भर की थकान से क्लान्त पति को देख कर वह सोचती है, कैसे इनकी थकान दूर हो? पति का स्वास्थ्य ठीक रहे, इसके उपाय सोचने में ही वह काफी व्यस्त रहती है। तिस पर यदि दो चार बच्चे हो जाते हैं तो स्वतः ही मातृत्व की प्रबल भावना और स्नेह उन्हीं बच्चों पर केन्द्रीभूत होकर रह जाता है। प्रति दिन किसी बच्चे को ज्वर हो जाता है, तो कभी किसी की आंख दुख रही हैं, किसी के दांत निकल रहे हैं तो कोई गिर पड़ा है—किसी का मुंह हाथ धोना है। बेचारी नारी! अकेले गृहस्थ का भार दो चार बच्चों की व्यस्तता में उद्विग्न हो उठती है। न भोजन की व्यवस्था ठीक हो पाती है। ऊपर से पति को शिकायत रहती है कि तुम तो अपने बच्चों और स्वयं तक ही सीमित रहती हो, बहुत हुआ तो कह दिया कि आज प्रतिभा के लिए फ्राक सिलवाना है— कल मुन्ने की वर्षगांठ है, उपहार लाना है—बस—पति बेचारे का कुछ ध्यान नहीं कि वह कैसे और क्या करे? पति के लिए दो क्षण भी नहीं निकल पाते कि शान्ति से रस-मधुर वार्तालाप करे—उसकी थकान को अपने शान्त एवं स्निग्ध व्यवहार से मिटाकर कुछ क्षणों के लिए वह ऐसा अनुभव करे कि जीवन में कहीं सरसता नाम की भी चीज है।

लेकिन पत्नी यह शिकायतें किस से करे कि आकांक्षा और अरमान किस प्रकार अन्दर ही अन्दर कुलमुलाया करते हैं: नारी होना मानों एक भीषण अभिशाप है। बच्चों का उत्तरदायित्व, पति की प्रसन्नता, गृहस्थ व्यवस्था और परिमित आय। सब का भार वह संभाले तो कैसे—? जीवन का वास्तविक उपयोग क्या है? यह जैसे वह स्वप्न में भी नहीं समझ पाती है।

और तभी उसका क्रोध उबलता है बच्चों पर। वह सोचती है अपने वैवाहिक जीवन के वे प्रथम दिवस कितनी शांति से बीते। न पैसा ही थोड़ा पड़ता था और न वह अशान्ति ही रहती थी।

यदि, तब वह सोचती है, 'एक दो सन्तान होने पर अपना समस्त योग्यता देकर उन्हें ऐसा राष्ट्र नागरिक बनाये कि वह गर्व के साथ सिर ऊंचा कर कह सके कि मैं ही इनकी जननी हूं।' लेकिन बच्चों की बहुतायत होने पर न तो वह स्वयं ही कुछ कर सकती है—न पति की वास्तविक सहचरी बन सकती है और बच्चे भी किसी योग्य नहीं बन सकते। तब फिर ऐसी अवस्था में जब तक कि राष्ट्र का पुनंनिर्माण नहीं हो जाता, आर्थिकतन्त्र की व्यवस्था सुचारू रूप से नहीं हो पाती और प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत उन्नति का उत्तरदायित्व राष्ट्र अपने ऊपर नहीं लेता—यही उचित है कि समझदार शिक्षित वर्गीय नारी व्यर्थ की प्रजोत्पत्ति का लोभ त्याग कर अपनी समस्त शक्ति राष्ट्र को पूर्ण रूप से शक्तिशाली बनाने में लगा दे। बच्चों के झंझटों में अपव्यय होने वाला समय समाज-व्यवस्था में प्रदान करे और यह कहने वाले व्यक्ति, कि पढ़ी लिखी महिला बच्चों से दूर भागती है, वस्तु स्थिति को भलीभांति समझें और विचारें कि आज की मध्यवर्गीय नारी का जो कि सदियों से गुलामी में बंधी पड़ी है, राष्ट्रहित की दृष्टि से योग्य एवं सफल पत्नी होना अधिक उचित है अपेक्षा इसके कि वह दर्जनों बच्चों की मा बन कर समस्त गृहस्थ जीवन नष्ट करें।

स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद सबसे बड़ी महत्वपूर्ण समस्या शत्रुओं से देश की रक्षा है। इसके सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी देने के लिये

वीर अर्जुन का

देश रक्षा-अंक

बड़ी शान के साथ १ वैशाख २००५ को प्रकाशित होगा। उसकी तैयारियां शुरू होगई हैं। पाठक अपनी कापी के लिए अभी से एजेन्ट से कह दें और विज्ञापक अपना विज्ञापन बुक करा लें।

अंक सम्बन्धी विस्तृत जानकारी फिर दी जायगी।

—मैनेजर

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ४ माघ सम्वत् २००४

म० गांधी का उपवास

गत मंगलवार से म० गांधी ने, जो आज भी निस्सन्देह राष्ट्र के सबसे महान् और सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति हैं, राष्ट्र में सभी साम्प्रदायिक शान्ति व एकता की स्थापना और आत्मशुद्धि के लिए अनशन प्रारंभ कर दिया है। उनका हृदय विशुद्धता, नम्रता, विनय और दया, अहिंसा आदि का मूर्त रूप है। राष्ट्र को आज जिस कल्पनातीत बर्बरता व नृशंस पशुता में से गुजरना पड़ा है, उसमें उनके हृदय का जो वेदना हुई है, उसकी कल्पना की जा सकती है और इसी वेदना भीम वेदना का परिणाम उनका वह एक पर निश्चय है, जिसमें उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा दी है। उन्हें अपने निश्चय से कोई हिला नहीं सकता, वे अविचलता की मूर्ति हैं। आज हम समस्त पाठकों के साथ मंगलमय भगवान से प्रार्थना करते हैं कि राष्ट्रदेव का यह अनशन सफलतापूर्वक समाप्त हो और वे देश का नेतृत्व करने के लिए चिरकाल तक हमारे बीच में रहें।

× × ×

म० गांधी के अनशन का उद्देश्य इतना अधिक पवित्र और शुद्ध है कि उसके औचित्य में सन्देह की रत्ती भर भी गुंजायश नहीं। सभी लोग और गैरलीगी विशेष कर समस्त देश में एकता चाहते हैं और वे साम्प्रदायिक शान्ति के इच्छुक हैं। आखिर देश की इस अशान्ति ने सामूहिक और वैयक्तिक समस्याओं और कठिनाइयों का इतना जाल बिछा दिया है कि उसमें लोग बहुत तंग आ गये हैं। साम्प्रदायिक अशान्ति ने लाखों लोगों को अपने सदियों के बसे बसाये घर छोड़ने और दर दर भटकने के लिए विवश कर दिया है, सब कारोबार चौपट हो गया है और सबसे बढ़ कर मानवता जिस पर भारत गर्व करता था, चूर चूर हो गई है। हम मानव से बर्बर हो गये हैं। इससे कोई भी व्यक्ति विचलित हो सकता है, तो म० गांधी जैसा करुणा का अवतार विचलित न हो यह संभव नहीं है। वस्तुतः आज देश में शान्ति सबसे प्रथम आवश्यकता है। शान्ति के लिए प्रथम वस्तु है साम्प्रदायिक सद्भावना। इसीलिए हम कहते हैं कि इस परम पवित्र उद्देश्य में गांधी जी को पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

× × ×

लेकिन केवल इच्छामात्र से हमारे मनोरथ पूर्ण नहीं होते। हम भारत को समृद्ध, शान्त और शक्तिशाली बनाने के लिए ही स्वराज्य चाहते थे और वह हमें मिल भी गया, परन्तु शत्रु ने ऐसी विषम परिस्थितियां पैदा कर दीं कि हमारे सब स्वप्न धूल में मिल गये। प्रश्न यह है कि गांधीजी के इस महान् व्रत का देश की विषम परिस्थिति पर क्या प्रभाव पड़ेगा। हम अत्यन्त विनम्रता, परन्तु खेद के साथ कहना चाहते हैं कि महात्मा जी के इस त्यागमय महान् पवित्र व्रत का पूर्ण लाभ प्राप्त करने में बहुत सी ऐसी अड़चनें हैं, जिन्हें दूर करना आज हमारे—हमारे से अभिप्राय यह है कि भारतीय सरकार और भारतीय जनता के—हाथ में नहीं है। भावुकता से समस्या हल हो जाया करे तो यह संसार स्वर्ग बन जाय। लेकिन यह संसार सत्य और असत्य, प्रकाश और अन्धकार का ऐसा सम्मिश्रण है कि इसमें भावुकता के साथ व्यावहारिक कुशलता और दृढ़ता का आश्रय जब तक न लिया जाय, तब तक संसार की समस्याओं का समाधान असम्भव है। अनशन का प्रभाव सदा अपने प्रिय या हितैषी पर पड़ता है। आज म० गांधी के बलिदान को सुनकर समस्त भारत विचलित और उनकी प्राणरक्षा के लिए आतुर हो उठा है। व्यावहारिकता और विवेक तथा तर्क तक को छोड़कर हम सब भावुकता में बह गये हैं। यह स्वाभाविक था क्योंकि गांधी जी हम सब के निकट सब से अधिक प्रिय हैं और उनकी प्राणरक्षा के लिए कोई भी मूल्य हम चुकाने के लिए तैयार हैं। लेकिन इसके साथ ही यह प्रश्न भी है कि क्या इससे देश में साम्प्रदायिक शान्ति स्थापित हो जायगी? कुछ दिन पूर्व भारत सरकार ने अत्यन्त दृढ़तापूर्वक यह घोषणा की थी कि वह पाकिस्तान सरकार को ५५ करोड़ रु० तब तक नहीं देगी, जब तक कि वह काश्मीरसम्बन्धी अपनी साजिशों से बाज न आ जावे। भारत सरकार की वह दृढ़ता आज अपने प्रियतम और विश्व की श्रेष्ठतम विभूति की प्राणरक्षा की चिन्ता में विलीन हो गई है। महात्मा जी के जीवन को रुपयों पैसों में नहीं आंका जा सकता। ऐसी विभूति सदियों बाद आती है और भारत उस पर गर्व करता है, लेकिन प्रश्न यह है कि विरोधी पर इसका प्रभाव क्या पड़ेगा? हमारी नम्र सम्मति में भारत सरकार द्वारा प्रदर्शित इस सद्भावना का कोई उल्लेखनीय परिणाम दृष्टिगोचर नहीं होगा, काश्मीर में उसकी साजिशें और भी बढ़ जावेंगी और वह हमारे साधनों से ही हमें नुकसान पहुंचाने में कोई कसर न उठा रखेगा।

मूल प्रश्न की गहराई में जावें तो प्रश्न का वास्तविक रूप यह है कि क्या केवल सद्भावना और सत्प्रवृत्ति से कोई कठोर कदम उठाये बिना हम सब विरोधों को शान्त कर सकते हैं? क्या संसार में असत् और पाप का निवारण करने के लिए क्षात्रतेज अनावश्यक है? क्या संसार में ऐसी कोई बुराई नहीं है, जिसे दूर करने के लिए शारीरिक बल का प्रयोग करना आवश्यक हो? अथवा क्या विशुद्ध प्रेम और आत्मसमर्पण से हम पाप को शान्त कर सकते हैं? इस प्रश्न या इस प्रसंग में किये गये प्रश्नों का उत्तर आदर्श सन्तों की आदर्श वाणियों में नहीं, जगत में तलाश करना चाहिए। हमारी ऐसी धारणा है कि इस कठोर संसार का कठोर जीवन-संग्राम इन प्रश्नों का जो उत्तर देता है, वह शायद उस उत्तर से कहीं भिन्न है, जो म० गांधी हमें देना चाहते हैं। न भारत के पुराने इतिहास के पन्ने खोलने की जरूरत है और न दूसरे देशों के इतिहास के चक्र में फंसने की। भारत वर्ष का अर्वाचीन इतिहास बताता है कि हमने या हमारे नेताओं ने १९१६ से लेकर ३१ दिसम्बर १९४७ तक मुस्लिम साम्प्रदायिकता को शान्त करने के लिए जितना आत्मत्याग किया, उससे हमारी समस्या रत्तीभर भी सुलझी हो इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। विशेष संरक्षण और पृथक् निर्वाचन से लेकर अपने प्राणप्रिय देश के विभाजन तक पर हम सहमत हुए—और हमारी भावना में कहीं किसी सन्देह की गुंजायश न थी क्योंकि गांधी जैसी पवित्र विभूति या पं० नेहरू जैसे समभावदर्शी हमारे नेता थे—लेकिन उन का परिणाम सदा ही अधिक से अधिक अवांछनीय होता गया। आज यह कहना किसी प्रकार की अत्युक्ति से रहित है कि मुस्लिमलीगी नेताओं ने गांधी जैसे परम पवित्र व्यक्ति तक पर अविश्वास किया। गांधीजी का समस्त विनय मि० जिन्ना को एक इंच भी अपने दुराग्रह से विचलित नहीं कर सका। तब क्या म० गांधी का यह नया महान् प्रयास मुस्लिम लीग के दुराग्रही और आततायी नेताओं पर कुछ भी प्रभाव डालने में समर्थ सिद्ध हो सकेगा?

म० गांधीजी के उपवास पर लीगी नेताओं ने कुछ उद्गार प्रकट किये हैं और उन्हें सुनकर हम यदि यह कल्पना करें कि पाकिस्तानी भी दूसरी दिशा में सोचने लगे हैं तो यह हमारा भोलापन ही है। गुजरात रेलवे स्टेशन पर भीषण नरसंहार अनशन के बाद हुआ। आज भी वे हमारी सद्भावनाओं पर विश्वास करेंगे यह विश्वास करना अदूरदर्शिता होगा। आज भारत सरकार ने ५५ करोड़ रु० दे देने का निश्चय किया है। लेकिन हमें सन्देह है कि पाकिस्तान इसे हमारी सद्भावना की बजाय हमारी दुर्बलता के रूप में ही देखेगा और इसलिए इसका अभिलषित फल निकलने की सम्भावना नहीं करनी चाहिए।

लेकिन यह सब कुछ कहने से हमारा अभिप्राय यह नहीं कि हम साम्प्रदायिक शान्ति नहीं चाहते। साम्प्रदायिक शान्ति देश के लिए आवश्यक है और हम तो म० गांधी की तरह वह दिन देखने के लिए उत्सुक हैं कि जब पाकिस्तान व हिन्दुस्तान के शरणार्थी अपने अपने घरों में वापिस चले जावें और फिर समस्त देश एक और अखण्डरूप में हो जाय। इस स्वप्न को चरितार्थ करने के लिए जहां हम अपने प्रत्येक पाठक को शान्त और अहिंसक रहने की सलाह देना चाहते हैं, वहां भारत सरकार से यह अनुरोध करना चाहते हैं कि वह और भी अधिक दृढ़ता, व्यावहारिक कुशलता और सतर्कता की नीति अपनावें यदि कहीं दृढ़ नीति अपनानी पड़े, तो झिझकना नहीं चाहिए।

राजाओं की ही क्षति

एक ओर जब एक के बाद एक रियासतें भारतीय प्रान्तों में मिल रही हैं, जोधपुर और ग्वालियर के शासक प्रजा के नेताओं के साथ अन्तःकालीन सरकार के सम्बन्ध में कोई समझौता करने को तैयार नहीं हैं। इसके परिणामस्वरूप जोधपुर के जननेताओं ने तो आगामी मास में संग्राम की घोषणा कर दी है। और बहुत संभवतः ग्वालियर में भी समझौता न होने की स्थिति में संघर्ष प्रारंभ हो जायगा। आज यह स्थिति जनता की दृष्टि से नहीं, स्वयं शासकों की दृष्टि से वांछनीय नहीं है। आज का समय ही निरंकुश शासकों के विपरीत और उत्तरदायी शासन के अधिक अनुकूल है। यदि इन रियासतों में कोई संघर्ष हो गया, तो राजा ही अधिक क्षति उठायगे, यह कह कर हम भविष्यवाणी करने का कोई दुःसाहस नहीं कर रहे। अच्छा यह हो कि राजा आज समय की गति को पहचान।

नैतिक पतन

अमेरिका के एक प्रसिद्ध पत्र 'न्यूयार्क न्यूज' ने कुछ ऐसे आंकड़े प्रकाशित किये हैं, जिनकी ओर हम अपने पाठकों का ध्यान बलात् खींचना चाहते हैं। उक्त पत्र के अनुसार स० रा० अमरीका के सैनिकों ने कम से कम ५ लाख और संभवतः ७ लाख तक गैरकानूनी बच्चे दूसरे देशों में छोड़े हैं। ये बच्चे लन्दन से लेकर टोकियो तक सारे संसार में फैले हुए हैं। ब्रिटेन में २,२०,००० यूरोपियन देशों में १ लाख और प्रशान्त सागर के क्षेत्र में १ लाख तक गैर कानूनी बच्चे हैं। यह सब्लाए केवल अमेरिकन

महात्मा गांधी का उपवास

१३ जनवरी मंगलवार प्रातः ११ बजकर १२ मिनट पर महात्मा गांधी ने अपना १५ वां उपवास प्रारम्भ किया है। यह उपवास अनिश्चित काल के लिए किया गया है। उसी दिन सायंकाल अपने प्रवचन में उपवास के उद्देश्य के विषय में गांधी जी ने कहा—

"अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिए और हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए मैं यह उपवास कर रहा हूं। यदि कम से कम भारत की राजधानी दिल्ली में साम्प्रदायिक एकता हो जाए और वह सारे देश के लिए उदाहरण बन जाए तो मैं अपना उपवास समाप्त कर दूंगा।"

वर्तमान युग के भीष्म पितामह के इस निश्चय से सारे देश में चिन्ता की लहर फैल गई है। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र-प्रसाद, प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी तथा अन्य हिन्दू मुस्लिम अनेक नेताओं ने देश की जनता से शान्ति रखने की अपील की है।

गांधी जी की निर्बलता बढ़ रही है।

पाकिस्तान को बाकया नकदी

पाकिस्तान के साथ बकाया नकदी के सम्बन्ध में जो समझौता हुआ था उसे भारत सरकार ने क्रियान्वित करने का निश्चय किया है। इस निश्चय के अनुसार ५५ करोड़ रुपये की वह राशि जो अब तक रुकी हुई थी पाकिस्तान को दे दी जायेगी। 'सरकार हमारी शान्ति तथा सद्भावना की इच्छाओं को पूर्णतः समझ लेगा'—इस आशा से ऐसा किया जा रहा है।

गांधी जी को अपना उपवास छोड़ने में इससे मदद मिलेगी।

पाकिस्तान को निजाम ने २० करोड़ कर्ज दिया

हैदराबाद के अर्थमन्त्री नवाब मोईन नवाबजंग ने इस अफवाह की पुष्टि की है कि निजाम सरकार ने पाकिस्तान को २० करोड़ रुपये का ऋण दिया है। वह ऋण भारतीय करेन्सी या स्वर्ण के रूप में नहीं दिया गया, केवल सिक्यूरिटियों के रूप में दिया गया है। कई मास पूर्व इस ऋण की चर्चा प्रारम्भ हो गई थी और नवम्बर के अन्त तक यह चर्चा पूर्ण हो गई थी। परन्तु यह समाचार अभी तक प्रकाशित क्यों नहीं किया गया—यही नवाब साहब ने नहीं बताया।

स्टर्लिंग-चर्चा में पाकिस्तान शामिल नहीं

पाकिस्तान सरकार ने दिल्ली में हुई स्टर्लिंग चर्चा में शामिल होने से इन्कार कर दिया है। पाकिस्तान ने रिजर्व बैंक आफ इण्डिया से भी कहा है कि वह बिना पाकिस्तान की अनुमति के नकद बचत में से भारत की राशि को जारी न करे।

निजाम के १३ गांव स्वाधीन

निजाम राज्य के १३ गांवों के १५ हजार आदमियों ने अपने आप को स्वतन्त्र घोषित कर दिया है और भारतीय यूनियन का अंग होने की इच्छा प्रकट की है। रायपुर जिले के पास इन गांवों के चारों ओर भारतीय प्रदेश है।

१५ हजार हस्ताक्षरों से एक पत्र रियासती सचिवालय में भेजा गया है।

सैनिकों की रिहाई

लाहौर में पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री के निवास स्थान पर संयुक्तरक्षा कौंसिल की बैठक हुई। जिसमें दोनों उपनिवेशों ने अनेक महत्वपूर्ण निश्चयोंमें से एक निश्चय यह भी किया कि उन सब फौजी सैनिकों व अफसरों की आम रिहाई कर दी जाए जिन्हें १५ अगस्त १६४७ के बाद १० जनवरी १६४८ तक दूसरे उपनिवेश में काम करते हुए सजा दी गई है या मुकदमा चल रहा है।

युक्तप्रांत में १५००० कर्मचारी हटेंगे

अनाज पर से सब नियन्त्रण उठा देने के प्रान्तीय सरकार के निश्चय के परिणाम स्वरूप १५,००० से अधिक कर्मचारियों की छुटन्त की जायगी। इससे सरकार को लगभग १,५०,००,०००० रु० की वार्षिक बचत होगी। इनमें से ३०० आदमियों को छोड़ कर प्रायः सभी अस्थायी रूप से नियुक्त हैं। इनमें ५० अफसर हैं और ४००० से अधिक व्यक्ति क्लर्क और चपरासी हैं। छुटन्त शुरू हो गई है और अगले मास तक ८००० आदमी बर्खास्त हो जायेंगे।

सिंध से हिंदुओं की निकासी

सिन्ध प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डा० चौइथराम गिडवानी ने एक भाषण में यह बात प्रकट की है कि भारत सरकार के लिये सिन्ध के हिन्दुओं और सिखों को निकालना तात्कालिक महत्व का प्रश्न हो गया है। अतः भारत सरकार ने पाकिस्तान से इस सम्बन्ध में यथाशक्ति सब प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये हैं और बम्बई सरकार से सिन्धी हिन्दू शरणार्थियों के निवास की व्यवस्था करने की प्रार्थना की है।

गुजरात स्टेशन पर कत्लेआम

११ जनवरी को एक रेलगाड़ी २४०० हिन्दू सिख शरणार्थियों को बन्नू से भारत ला रही थी। रास्ते में गुजरात स्टेशन पर तीन हजार पठानों ने गाड़ी पर हमला कर दिया। १००० शरणार्थी मारे गये और १०० स्त्रियों का अपहरण किया गया। रक्षा-सेना के सैनिकों को भी काफी क्षति उठानी पड़ी। केवल ७५० आदमी बचाये जा सके हैं।

मजलिसे अहरार की समाप्ति

अभी हाल में मजलिसे अहरार-इस्लाम की जनरल कौंसिल की दिल्ली में हुई बैठक में यह घोषणा की गई है कि लखनऊ सम्मेलन के बाद भारत में कांग्रेस के सिवाय अन्य किसी राजनीतिक संस्था की आवश्यकता नहीं है अतः सब मुसलमानों को उसमें सम्मिलित हो जाना चाहिए। भविष्य में मजलिस 'खादिमे-खलक' के नाम से सिर्फ समाजसेवा का कार्य करेगी।

कौंसिल ने मौ० आजाद के नेतृत्व में विश्वास प्रकट किया।

सुरक्षा कौंसिल में काश्मीर

१५ जनवरी को संयुक्त राष्ट्रों की सुरक्षा कौंसिल में काश्मीर के विषय में बहस शुरू हो गई। भारत की ओर से श्री गोपालस्वामी आयंगर ने बड़े जोरदार शब्दों में अपना पक्ष रखा और यह सिद्ध किया कि किस प्रकार हमलावरों ने पाकिस्तान में अड्डे बनाये, सैनिकों को ट्रेनिंग और सैन्य सामग्री दी, और पाकिस्तान के सैनिक बावर्दी या बेवर्दी खुद आकर मोर्चे पर लड़े। भारत को ऐसी स्थिति में युद्ध का फैसला करना पड़ा। आक्रामकों पर सामरिक विजय पाई जा सकती थी, परन्तु हमलावर हमला करके तुरन्त पाकिस्तान की सीमा में घुस जाते हैं। यदि भारतीय सेना उन आक्रमकों को खदेड़ने के लिये पाकिस्तान की सीमा में जाती है तो अन्तर्राष्ट्रीय कानून भंग होता है। अब सुरक्षा कौंसिल निर्णय करे कि पाकिस्तान उन हमलावरों को अपनी सीमा में न आने दे, और यदि पाकिस्तान उनको नहीं रोक सकता तो भारतीय सेना पाकिस्तान की सीमा में जाकर हमलावरों को रोक सके।

कांग्रेस की नई कार्यसमिति

कांग्रेस के अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद ने अपनी कार्यसमिति के सदस्यों के नामों की घोषणा कर दी है—

१. पं० जवाहरलाल नेहरू।
२. सरदार वल्लभभाई पटेल।
३. प० गोविन्दवल्लभ पन्त।
४. सरदार प्रतापसिंह।
५. डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष।
६. श्री रफी अहमद किदवई।
७. मौ० अबुलकलाम आजाद।
८. श्री शंकरराव देव।
६. आचार्य जुगलकिशोर।
१०. डा० पट्टाभि सीतारमैय्या।
११. श्री० एन० जी० रंगा।
१२ श्री एस० के० पाटिल।
१३. श्री बलवन्तराय मेहता।
१४. श्रीमती सुचेता कृपलानी।

इनमें पिछले ५ सदस्य नये हैं, शेष पुराने। सरदार वल्लभभाई पटेल खजाची का काम करेंगे और श्री शंकररावदेव और आचार्य जुगलकिशोर मन्त्री होंगे।

कार्यसमिति की प्रथम बैठक २४ जनवरी को दिल्ली में हो रही है।

टिहरी रियासत युक्तप्रान्त में शामिल

भारत सरकार के रियासती सचिवालय ने टिहरी (गढ़वाल) में व्यापक रूप से उत्पन्न अव्यवस्था को ध्यान में रखते हुए युक्तप्रांतीय सरकार से वहां के शासन को अपने हाथ में लेने को कहा है।

इन्दौर प्रधानमंत्री बर्खास्त

इन्दौर के प्रधानमन्त्री श्री० एन० मेहता को रियासत के महाराजा ने पदच्युत कर दिया है। इस विषय में महाराजा होलकर ने एक वक्तव्य में स्पष्ट किया है कि प्रधानमन्त्री को नियुक्त करने और पदच्युत करने का मेरा अधिकार अक्षुण्ण है। श्री मेहता मेरी दीर्घकालीन नीति के अनुरूप नहीं चल सके इसीलिये उन्हें हटा कर श्री भिडे को नियुक्त करना पड़ा। इन्दौर में अन्तःकालीन सरकार बनाने का निश्चय किया गया है।

टीपू सुलतान का वंश

मैसूर के कुछ मुसलमानों ने टीपू सुलतान के वंश की स्थापना करने के उद्देश्य से मैसूर सरकार के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के लिये हैदराबाद में स्वतन्त्र सरकार की स्थापना की है।

सैनिकों के दुराचार की हैं और बहुत संभवतः वास्तविक संख्या इनसे बहुत अधिक है। यदि अन्य देशों के सैनिकों के दुराचारण से उत्पन्न बच्चों की संख्याएं भी किसी तरह प्रकाशित हो सकें, तो मालूम होगा कि युद्ध ने विश्व की नैतिकता को जो क्षति पहुंचाई है, वह आर्थिक क्षति से कहीं अधिक है। लेकिन आज के नेता तो केवल राजनीति और रुपये तक ही देखते हैं, मानो नैतिकता का कोई मूल्य ही नहीं।

५५ करोड़ रु० पाकिस्तान को क्यों नहीं दिया गया

[सरदार वल्लभभाई पटेल]

पाकिस्तान के अर्थ मन्त्री श्री गुलाम मुहम्मद ने पाकिस्तान सरकार को बकाया नकदी (कैश बैलेन्स) की अदायगी के सम्बन्ध में एक प्रेस वक्तव्य दिया है। पाकिस्तान के अर्थ मन्त्री अपने जीवन में अनेक रूप में उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य कर चुके हैं, जैसे कि सिविल सर्विस के सदस्य के रूप में, हैदराबाद स्टेट के अर्थमन्त्री के रूप में और बड़े व्यापारों के हिस्सेदारों के रूप में भी। इसलिए साधारणतः उनके वक्तव्य में सत्य को छिपाने और असत्य को प्रकट करने की आशा नहीं हो सकती थी, किन्तु मुझे दुःख है कि उनका वक्तव्य न केवल इन दोनों दोषों से भरा हुआ है अपितु उन्होंने पाकिस्तान के लिए जो आर्थिक आशायें लगाई हुई थीं उनके, स्वयं उनकी सरकार की काश्मीर सम्बन्धी कार्यवाहियों से चकनाचूर हो जाने के कारण उत्पन्न निराशा के आवेश में उन्होंने विवेक और बुद्धि को ताक पर रख दिया है और ठगी और धमकी देने की सुपरिचित कला का अवलम्बन करने पर उतर आये हैं। मैं इन शब्दों का जानबूझ कर प्रयोग कर रहा हूं क्योंकि उनके वक्तव्य को निष्पक्ष रूप में पढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति को यह साफ मालूम हो जायगा कि उन्होंने धमकी और निंदात्मक आरोपों से रिजर्व बैंक आफ इण्डिया को भयभीत करके उससे अपनी बात मनाने का प्रयत्न किया है और भारत सरकार पर विश्वास भंग का आरोप इस आशा में लगाया है कि शायद इस आरोप से बचने के लिए सरकार उन्हें उनकी अभिलषित वस्तु दे दे, उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय जनता की सहायता की पुकार भी इस आशा से की है कि शायद संसार के सन्मुख अपनी पोल खुलने के भय से भारत सरकार अपना रवैय्या नर्म कर दे। मैं यह जरूर स्वीकार करता हूं कि वे आज अपने को जिस निराशाजनक स्थिति में पा रहे हैं उसमें से निकलने के लिए बड़े कठोर उपायों की जरूरत है किन्तु हम उनसे यह उम्मीद कर सकते हैं कि वह इन बाधक चालों के बजाय समुचित व विवेकपूर्ण मार्ग का आश्रय लेंगे क्योंकि इन बाधक चालों की असफलता निश्चित है।

पाकिस्तान के अर्थ मन्त्री ने कहा है कि 'हमें इस बात का जरा भी आभास नहीं था कि काश्मीर का मामला बीच में घसीट लिया जायगा।' लेकिन नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में पाकिस्तान और भारत की सरकारों के प्रतिनिधियों में जो वार्त्तायें हुई थीं उनका उद्देश्य काश्मीर सहित हमारे सभी मतभेदों को निपटाना था। २६ नवम्बर को काश्मीर के सम्बन्ध में आशा सद्भावना और सौजन्य के पूर्ण वातावरण में बातचीत प्रारम्भ हुई जो उसके बाद के दिनों में आर्थिक व अन्य मामलों के साथ भी जारी रही। २७ नवम्बर को बकाया नकदी और अवशिष्ट ऋण के बटवारे के बारे में एक वैकल्पिक और स्थायी समझौता हो गया।

अगले दिन सुबह गवर्नमेंट हाउस में हुई बैठक में, पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री और अर्थमन्त्री दोनों की उपस्थिति में मैंने एक वक्तव्य पढ़ा जिसमें मैंने यह स्पष्ट कर दिया कि हम तब तक इन समझौतों को अन्तिम नहीं मानेंगे जब तक कि सभी अवशिष्ट मामलों पर समझौता न हो जाय। मैंने उस समय यह स्पष्ट कर दिया कि हम तब तक पाकिस्तान को कोई रकम देना स्वीकार नहीं करेंगे जब तक कि काश्मीर का मामला नहीं सुलझ जायगा। फलतः इन आर्थिक समझौतों की कोई घोषणा नहीं की गई। इस बीच पाकिस्तान के प्रतिनिधियों ने अपनी रवानगी स्थगित कर दी और काश्मीर व अन्य मामलों पर वार्तायें जारी रहीं, जिनके अलग अलग विषयों पर विभिन्न परिणाम निकले। इस सुधरे हुए वातावरण में काम करने पर हममें विभाजन सम्बन्धी अवशिष्ट मामलों पर समझौते हो गये और विभाजन कौंसिल को १ दिसम्बर को इसकी वैकल्पिक तौर पर खबर दे दी गयी, हालांकि यह समझौते निपिबद्ध बाद में किये गये। २ दिसम्बर को यह कार्य भी समाप्त हो गया किन्तु उस समय भी यही निश्चय किया गया कि इस मामले की तब तक घोषणा न की जाय जब तक कि लाहौर कान्फ्रेंस में काश्मीर व अन्य (विभाजन से अतिरिक्त) अवशिष्ट मामलों की सफलतापूर्ण, जैसी कि उस समय आशा थी, परिसमाप्ति न हो जाय।

पाकिस्तान की पैंतरेबाजी

८ व ९ दिसम्बर को लाहौर में फिर वार्त्ता प्रारम्भ हुई। किंतु इस बीच यह देखा गया कि पाकिस्तान सरकार ५५ करोड़ रु० की प्राप्ति के लिए, जिन्हें उसे बकाया 'नकदी' में से देना स्वीकार कर लिया गया था, बड़े जोर शोर से प्रयत्न कर रही है। हमने इस प्रयत्न का विरोध किया। किन्तु तो भी पाकिस्तान हाईकमिश्नर ने ७ दिसम्बर को एक प्रेस मुलाकात में आपसी समझौते को भंग करके आर्थिक मामलों में हुए समझौतों की घोषणा कर दी जिसका उद्देश्य स्पष्टतः यह था कि हम भी उनकी घोषणा करने के लिए मजबूर हो जायंगे। किन्तु हम अपने पूर्व विचार पर दृढ़ रहे और लाहौर की वार्त्ता में हमने इसका पुनः उल्लेख भी कर दिया यद्यपि पाकिस्तान के इन समझौतों की घोषणा के आग्रह का ख्याल करके हमने ९ दिसम्बर को भारतीय पार्लिमेंट में, जिसकी उस समय बैठक हो रही थी, एक संक्षिप्त वक्तव्य देना स्वीकार कर लिया। किन्तु पाकिस्तान के अर्थमंत्री ने इस मामले में इतनी अशिष्टतापूर्ण जल्दबाजी दिखाई कि उन्होंने ७ दिसम्बर को ही इस मामले पर एक प्रेस मुलाकात दे डाली। पाकिस्तान की चाल तब तक स्पष्ट हो चुकी थी। हमारे यह स्वीकार कर लेने पर, कि हम ९ दिसम्बर को इन आर्थिक समझौतों की संक्षिप्त घोषणा पार्लिमेंट में कर देंगे पाकिस्तान का रवैय्या काश्मीर के मामले में कठोर हो गया और दिल्ली में समझौते की जो आशाएं बड़ी सन्निकट दीख रही थीं वे और भी दूर हो गयीं। इस लिए ९ दिसम्बर को पार्लिमेंट में वक्तव्य देते हुए मैंने यह स्पष्ट कर देना जरूरी समझा कि समझौता यथासम्भव काश्मीर के मामले पर समझौते के साथ ही होगा। पाकिस्तान सरकार ने उस समय इस वक्तव्य पर कोई ऐतराज नहीं किया। इस के बाद १२ दिसम्बर को अपना विस्तृत वक्तव्य देते समय भी पाकिस्तान हाईकमिश्नर की उपस्थिति में मैंने यह बात पुनः दोहरा दी कि इस समझौते का सफलता के साथ क्रियान्वित किया जाना सदिच्छा तथा अन्य बहुत से महत्वपूर्ण मामलों पर एक दूसरे से निभाव करने की भावना के जारी रहने पर निर्भर है। स्पष्टतः ही काश्मीर एक ऐसा ही मामला था। पाकिस्तान ने इस पर भी विरोध नहीं किया। ५५ करोड़ रु० की अदायगी के लिए जितनी भी प्रार्थनाएं की गईं उन सबका हमने नकारात्मक उत्तर दिया। तब २२ दिसम्बर को फिर काश्मीर पर आखिरी वार्त्ता का दिन आया। इस समय पहली बार पाकिस्तान प्रधानमन्त्री ने हमारे इस आग्रह पर ऐतराज किया कि इस समझौते को क्रियान्वित करने के बारे में आर्थिक मामला व काश्मीर का मामला साथ साथ हैं और उन्होंने ५५ करोड़ रुपये की तुरन्त अदायगी की मांग की। हमने उस समय भी और बाद में ३० दिसम्बर को अपने तार में भी उन पर यह स्पष्ट कर दिया कि हम इस समझौते पर कायम हैं, किन्तु काश्मीर के मामले में पाकिस्तान सरकार के शत्रुतापूर्ण रवैय्ये के कारण समूची वार्ताओं के दौरान में अख्तियार किये गये हमारे रवैय्ये के मुताबिक इस रकम की अदायगी स्थगित करनी पड़ेगी।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बजाय इसके कि हमने पाकिस्तान के साथ कोई नाइन्साफी की हो या समझौता तोड़ा हो, खुद पाकिस्तान के प्रतिनिधि ही काश्मीर के मामले में ढील करते रहे ताकि हमसे आर्थिक मामलों पर समझौता करा सकें और दोनों सरकारों के बीच के महत्वपूर्ण मामलों के उल्लेख किए गए बिना अकेले इन समझौतों की हम से घोषणा भी करा लें। हमने पाकिस्तान के हाईकमिश्नर व अर्थमंत्री के इन प्रयत्नों का सफलतापूर्ण मुकाबला किया। विश्वास भंग करने के बजाय हम तो अब भी इस आर्थिक समझौते को उस सर्व विषयग्राही समझौते के अंग के रूप में स्वीकार करते हैं, जो कि दोनों डोमिनियनों में मैत्री एवं शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को कायम रखने में हितकर हो सकता था।

उदारता का दुरुपयोग

हमारा यह भी दावा है कि आर्थिक समझौतों की इन शर्तों में हमने पाकिस्तान के प्रति उदारता का परिचय दिया है। मैंने विभाजन कौंसिल में यह स्पष्ट कर दिया है कि "हम पाकिस्तान को एक समृद्ध पड़ोसी के रूप में बढ़ते देखना चाहते हैं।" हमने आशा की थी कि पाकिस्तान भी अन्य मामलों में जिन्होंने हम दोनों डोमीनियनों को अलग-अलग किया हुआ था हमारी इस उदारता का बदला चुकायगा। किन्तु यह स्पष्ट है कि पाकिस्तान की सरकार अपनी आर्थिक स्थिति को कायम रखने के लिए आवश्यक एवं अनुकूल शर्तें प्राप्त करके भी अन्य मामलों पर भारत के मैत्रीपूर्ण संकेत का प्रत्युत्तर नहीं दे सकी। पाकिस्तान की सरकार को चाहिए था कि वह भी भारत की तरह अधिक व्यापक और उदार दृष्टिकोण रखती। स्मरण रहे कि अन्य चीजों के इलावा भारत ने उदारतावश अविभाजित भारत के तमाम कर्जों को चुकाने की भी जिम्मेवारी अपने ऊपर ली है और उसके लिए वह पाकिस्तान सरकार की ईमानदारी, नेकनीयती और सदिच्छा पर निर्भर है क्योंकि भारत सरकार ने यहां तक मौका दे दिया है कि वह चार साल की छूट के बाद शुरू करके काफी लम्बी अवधि तक बराबर-बराबर रकमों की किश्त में इस ऋण में से अपना हिस्सा चुका सकता है इसलिये यह स्पष्ट है कि हम अपनी सुरक्षा को खतरे में डाल कर खुद इस समझौते के कई महत्वपूर्ण हिस्सों को [अविभाजित-ऋण में से पाकिस्तान के हिस्से की वसूली आदि] खतरे में नहीं डाल सकते इसलिए हमने इस नकदी की अदायगी को रोक कर पाकिस्तान की काश्मीर के युद्ध को जारी रखने

मि० जिन्ना के पाकिस्तान में क्या हो रहा है ?

लाहौर की नई झांकी

[संकलित]

लाहौर शहर के जन समागम से पूर्व समृद्ध व्यवसायियों का नगर था। फेक्टरियों के मालिक उत्तरोत्तर उन्नति कर रहे थे। यह नगर मुख्यतः वकीलों, प्रोफेसरों, डाक्टरों और विद्यार्थियों का नगर था। हाईकोर्ट और यूनिवर्सिटी के चारों ओर विशाल सामाजिक हलचलों का केन्द्र है। हिन्दू, सिखों और मुसलमानों से उत्कीर्ण यह अन्तर्जातीय नगर था। विशेष रूप से यह स्वस्थ और नवजवानों, सुन्दर वस्त्राभूषणों से सज्जित महिलाओं का नगर था जिनके जीवन को कलकत्ता और बम्बई की महिलायें भी ईर्ष्या की दृष्टि से देखती रही हैं।

पाकिस्तान में अपने एक सप्ताह के प्रवास में श्री साहनी ने देखा कि लाहौर अब बदल चुका है। पाकिस्तान के अन्य नगरों की तरह लाहौर की दीवारों पर "पाकिस्तान जिन्दाबाद" शब्द लिखे हुए हैं। इसमें लाल ईंटों की दीवारें आज भी खड़ी हैं। पेटी-बुर्जुआ भावना और वह शिक्षित वातावरण अब उजड़ चुका है, हिन्दू और सिख यहां नहीं है—सिख विशेष रूप से।

फिर आज लाहौर की सड़कें यात्रियों से खचाखच भरी हैं। लाहौर के अपने तीस वर्ष के सम्पर्क में मैंने उसे कभी इतना भरा हुआ नहीं पाया। अनारकली, धोबी बाजार और रेलवे रोड तथा अन्य दूसरे पथ भीड़ को शहर के हृदय की ओर ले जा रहे हैं, और नितान्त आवागमन बना रहता है। ये लोग दिग्भ्रमकी स्थिति में हैं, और कुछ खरीदते नहीं। दुकानों पर बैठे दुकानदारों की मुद्राओं से प्रतीत होता है कि वह खरीददारों के लिए तरसते हैं।

बुर्केवाली स्त्रियां

माल रोड पर बेशुमार कारें दौड़ती नजर आती हैं किन्तु शहर में भी एकाध कहीं नजर पड़ जाती है। तांगे रास्ते पर दिखाई बहुत कम पड़ते हैं। सड़कों पर चलने वाले लोग पटरी छोड़ कर सड़कों पर चलते हैं। पटरी फेरी वालों और अस्थायी दूकानदारों के लिए छोड़ दी गयी हैं। हिन्दू और सिख स्त्रियां सड़कों पर नजर नहीं आतीं।

माल रोड पर कुछ यूरोपियन, एंग्लो इण्डियन, और क्रिश्चियन लड़कियां इधर--उधर घूमती नजर आती हैं। कभी-कभी कोई मुस्लिम महिला बिना बुर्के के भी बाजार करती दीख पड़ती है। किन्तु अधिकांश पंजाब के दूसरे नगरों की ही तरह लाहौर में भी स्त्रियां घर की चहार दीवारी के अन्दर ही रहना पसन्द करती हैं। जो स्त्रियां कभी बुर्का पहिनती न थीं और सामाजिक कार्यों में भाग लेती थीं वह भी अब घरके अन्दर ही रहना पसन्द करती है।

फेलेटीज, स्टिफिल्स और लोरेंजेज जैसे स्थान जहां लाहौर का समाज चाय, भोजन और नृत्य के लिए आता था, आज भी भारी आमदनी कर रहे हैं, किन्तु इधर किसी भी महिला का दर्शन नहीं होता।

बाजार ठप्प हैं

माल रोड पर यद्यपि दुकानों पर अधिकांश ताले ही पड़े हुए है। किन्तु बाजार खुले हुए हैं। पर दूकानों में कोई क्रयविक्रय होता नहीं दीख पड़ता। बाजार में फल और सब्जियां काफी मात्रा में दीख पड़ती हैं किन्तु शहर से आई हुई वस्तुओं माचिस, कपड़ा और अंगराग इत्यादि का अभाव दीख पड़ता है। सरकारी दफ्तरों और रेलवे स्टेशनों पर भी अवकाश का वातावरण दीख पड़ता है। एक अफसर ने मुझ से कहा कि हर आदमी को इतनी अतिरिक्त वस्तुए बेचनी हैं, इतने मकान किराये पर चढ़ाने हैं कि उसे काम पर आना मुश्किल पड़ रहा है। हर आदमी मकान बदलने की फिक्र में पड़ा हुआ है। कारण कि पड़ोस में जब सुन्दरतर मकान खाली होता है तो उसे घेरना होता है और जब उससे भी सुन्दर पड़ोस मिलता है तो फिर आगे कूच। इसी मृग तृष्णा में लोग चक्र की तरह घूमते रहते हैं।

दूसरी वस्तुओं के साथ श्रमिकों का भी अभाव है। अधिकांश धोबी और बढ़इयों ने बड़े बड़े बंगलों पर कब्जा कर लिया है और ये लोग कपड़े धोने और काठ छीलने के बजाय ताश खेलते हैं और रेडियो सेट पर संगीत सुनते रहते हैं।

एक यूरोपियन महिला ने मुझे बताया कि जब मैं एक बैरिस्टर के पुस्तकालय को बचाने गई तो क्या देखा कि डाढ़ली और लाल जैसी पुस्तकों के पन्नों पर कबाब और परांठे रख कर उड़ाये जा रहे हैं। एक दूसरे बंगले को देखा तो उसकी टेपस्ट्री को दीवारों पर से उतार उतार कर पठान चौकीदारों ने अपनी धर्मपत्नियों और उड़ाई हुई पत्नियों के शलवार और कुर्ती बनवा ली है। सोफा सेटों के मोटे मोटे तोशक उतार उतार कर उन्होंने दीवान बना लिए हैं और उन पर दरी बिछा कर हुक्का गोष्ठियां की जाती हैं। पुलिस के लोग बराबर छुट्टियां लेते जा रहे हैं और लूट द्वारा प्राप्त धन से ऐश्वर्य की वस्तुएं उपलब्ध करने में व्यस्त हैं।

लाहौर के अधिक शिक्षित और कुलीन नागरिक भी बन्दूक और कारतूस की पेटी गले में डाल कर चलते हैं। कबायली बन्दूकें २५०) में सरलता से मिल सकती हैं। बाहर की बनी बन्दूकें भी ५०० रु० तक में मिल जाती हैं। माल रोड का एक किस्सा है। एक बार ५ पठान एक होटल में गये और खूब देर तक खाते पीते रहे। जिस समय भरपूर छक लिए और नौकर बिल लाया तो पठान ने हवा में फायर की। तुरन्त भगदड़ में मालिक भी काउण्टर के पीछे शरण खोजने लगा। पाकिस्तान के अन्य नगरों एवं लाहौर को देखकर यह प्रतीत होता है कि यहां के निवासी जीवन यापन के उत्तरी तरीके को अपनाते जा रहे हैं और पूर्व दक्षिण से अपना सम्बन्ध तोड़ कर एकान्त उत्तरमुखी हो गये हैं। मध्यवर्ग के मुसलमान भी मुगलों और पठानों की शान अपने अन्दर लाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

हिंदू वध का ठेका दिया गया

एक अखबार ने हिन्दू बहुसंख्यक जम्मू प्रांत को अधिक रूप से मिटाने के षड़यन्त्र पर से परदा हटाया है। एक ओर जम्मू प्रांत के मीरपुर जिले में मुसलमानों को बे रोकटोक आगे बढ़ने की आज्ञा दी गई। दूसरी ओर मुसलमान विद्रोही भिम्बर, रियासी और राजौरी की तहसीलों के उन इलाकों पर कब्जा करने में सफल हो गये। यहां हिन्दुओं की संख्या सौ में से पचानवे थी। सारी अखनूर तहसील में जहां मुसलमानों की आबादी सौ में से १० होगी, हमला करने वाले मुसलमानों को रोकने के लिए कोई कोशिश नहीं की गई। इस तरह या तो हिन्दू मार दिये गये या बेचारे सड़कों पर सर्दी के शिकार हो रहे हैं। जम्मू की सीमा को अब चनाब नदी तक पहुंचा दिया गया है। उत्तर में जम्मू की हद को कटड़ा की पहाड़ियों तक तंग किया जा रहा है। इस तरह रियासी और कटड़ा की पहाड़ी के बीच की हिन्दू आबादी को बरबाद करवाया जा चुका है।

इस बारे में एक सनसनीखेज बात असेम्बली के भूतपूर्व सदस्य श्री जगतराम से मालूम हुई है। ये ९ साल तक हरिजनों के प्रतिनिधि रहे हैं। उन्होंने कहा कि भद्रवाह में नेशनल कान्फ्रेंस की नई फौजें और काश्मीर बटालियन के वालंटियर भेजे गये थे।

श्री जगतराम के कथनानुसार इन वालंटियरों ने हिन्दू आबादी को मिटाया और उनके गांवों को भस्म कर दिया। नई योजना के अनुसार इन तहसीलों को अब काश्मीर प्रांत में मिलाया गया है। श्री जगतराम ने यह भी कहा कि वालंटियरों के साथ इस इलाके के हिन्दुओं को मारने और देहात को आग लगाने के लिए तीन हजार रुपये का ठेका दिया गया था। असेम्बली के मेम्बर मलिक गुलाममुहम्मद ने यह रकम दी जो पकड़े जाने वाले एक वालंटियर से मिल गई।

श्री जगतराम बरफ वाले पहाड़ों को पार करके इन वालंटियरों के हाथ से जान बचा कर हिन्दुओं की दुख भरी कहानी सुनाने जम्मू पहुंचे हैं। आपने लिख कर दिया है कि भद्रवाह तहसील में १७०० मकानों को आग लगाई गई और हिन्दुओं को बड़ी निर्दयता से कत्ल किया गया। अब सारे पहाड़ी इलाके में हिन्दुओं की उलटी लटकाई गई लाशों के बाउण्डरी स्टोन लगे हुए दिखाई देते थे।

—:o:—

की सम्भावना के विरुद्ध बन्दोबस्त करके उचित और न्यायानुसार कार्य ही किया है। हमने पाकिस्तान सरकार को एकाधिक बार यह स्पष्ट कर दिया है कि हम समझौते पर कायम हैं किन्तु इस समझौते से हम इस बात से नहीं बंध जाते कि अमुक निश्चित तिथि तक हमें यह रकम पाकिस्तान को दे देनी होगी और खास कर जबकि पाकिस्तान सेना के साथ हमारा सशस्त्र युद्ध हो रहा है और वह और भी अधिक भयंकर हो सकता है उस दशा में हम से इस रकम की अदायगी के लिए कहना युक्तिसंगत नहीं हो सकता क्योंकि इस रकम की अदायगी से काश्मीर युद्ध के भयंकर हो जाने पर आर्थिक समझौते का सारा आधार ही टूट सकता है तथा उसके कुछ हिस्से, जैसे ऋण की वसूली, स्टोरों का विभाजन आदि खतरे में पड़ सकते हैं।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

[सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

यह नेताजी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र है। इसमें जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि कार्यों का समस्त विवरण आ गया है। मूल्य १) डाक व्यय ।=)।

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

१५०) नकद इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके बस हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का ११) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम गारंटी पत्रसाथ भेजा जाता है पता— आजाद एन्ड कं० रजिस्टर्ड, (अलीगढ़),

मास्को कान्फ्रेंस की समाप्ति पर श्री मोलोतोव और श्री बेविन।

'यूरोप पुनर्निर्माण (मार्शल) योजना'

[श्री जगदीशचन्द्र अरोड़ा]

फ्रांस, इटली और आस्ट्रिया को सर्दियों में 'संकटकालीन अस्थायी सहायता' देने के लिए ५९ करोड़ ७० लाख डालर की मंजूरी पाने के लिए राष्ट्रपति ट्रूमन ने अमेरिकन कांग्रेस का विशेष अधिवेशन १७ नवम्बर १९४७ को बुलाया था तैंतीस दिन के वाक्युद्ध और अनेकों हेर फेर करने के पश्चात् कांग्रेस ने इस सप्ताह उपर्युक्त तीन देशों के लिए ४६ करोड़ और चीन के लिए १८ करोड़ डालर की सहायता भेजना स्वीकार कर लिया है।

बड़े दिन की छुट्टियों के लिए स्थगित होने से पहले इस विशेष अधिवेशन के अन्तिम दिन राष्ट्रपति ने कांग्रेस के सन्मुख वृहत्तर सहायता योजना भी पेश कर दी, जो अपने निर्माता अमेरिका के राष्ट्र मन्त्री जार्ज मार्शल के नाम से "मार्शल योजना" तथा अपने उद्देश्य "यूरोप पुनर्निर्माण योजना" के नाम से प्रसिद्ध है। मार्च १९४७ में असफल मास्को परराष्ट्रमन्त्री सम्मेलन से लौटते समय रास्ते में जार्ज मार्शल ने इस योजना की रूपरेखा बनायी थी। मास्को सम्मेलन की असफलता से मार्शल अचानक इस परिणाम पर पहुंचे कि रूस से आगामी सुलह नहीं हो सकती और यदि खींचातानी और मनमुटाव चलता रहा तो रूस से तीसरा युद्ध भी छिड़ जा सकता है।

रूस की "अड़ियल नीति" को सीधे राह पर लाने का यही उपाय है कि पश्चिमी यूरोप और विशेषकर पश्चिमी जर्मनी को पुनः शक्तिशाली बनाया जाय। युद्ध समाप्ति के बाद से अब तक संयुक्तराज्य अमेरिका यूरोप को दानस्वरूप प्रायः ११ अरब डालर का सामान दे चुका है। इस प्रकार मुफ्त सहायता मिलते देख कर यूरोप निवासी आलसी जाति और निकम्मे बनते जा रहे थे। यूरोपीय देशों का उत्पादन कम होता जा रहा था। दूसरी ओर यूरोपीय सरकारों की ढिलमिल नीति के कारण इस सहायता का अधिकांश चोर बाजार में चला जाता था। गरीबों को भूखों और नंगों मरने की नौबत आ गयी। इसी स्थिति से लाभ उठा कर फ्रांस, इटली तथा अन्यान्य देशों में कम्युनिस्टों का जोर बढ़ता गया। यह सब अमेरिका की ११ अरब डालर की सहायता के बावजूद होता रहा। इन दोनों का मुख्य कारण सरकारी प्रबन्ध का अभाव, यूरोपियनों की तटस्थता, तथा वितरण की अव्यवस्था थी।

यही सब सोच कर जार्ज मार्शल यूरोप के पुनर्निर्माण की एक ऐसी योजना बनाना चाहते थे, जिसमें सब यूरोपीय सरकारों का सहयोग हो, सब मिल कर काम करें, सारी सहायता योजना अमेरिकन सरकार और यूरोपीय सरकारों के निबन्ध में हो तथा अधिक से अधिक चार वर्षों में यूरोप इतना स्वावलम्बी हो जाय, ताकि अमेरिका को और अधिक सहायता न देनी पड़े।

निम्नलिखित आंकड़े इस बात को प्रकट करते हैं कि १ जुलाई १९४५ १ नवम्बर १९४७ तक पश्चिमी देशों को कितनी सहायता मंजूर की जा [illegible] है और कितनी खर्च की जा चुकी है:-

(आंकड़े करोड़ों में)

इ० रा० अमेरिका द्वारा अब तक होने वाला

	मंजूर करोड़	खर्च करोड़	उधारपट्टे की सहायता करोड़	अ०न०रा० की सहाय करोड़
आस्ट्रिया	२३ ८	१८.२		१८.१
बेल्जियम लेकजमबर्ग	४८.७	४८ ७	६	०.१
डेनमार्क	३	१ ५	×	×
फ्रांस	२३२ २	२२० ६	३७ २	०.१
यूनान	८०.३	५३ ३	१५ २	२८.५
आयर	×	×	×	×
इटली	९९ ९	९० ९	३	५६ ५
हालैण्ड	३० ३	२७ ६	१ ९	०.१
नारवे	८ ७	१ ६	१ ६	०.१
स्वीडन	० १	० १	×	०.१
स्वीटजरलैण्ड	० २	० २	×	०.१
टर्की	१४ १	० ६	×	×
ब्रिटेन	४७६ ९	४३३ ३	३२ ५	०.१
जर्मनी	७६ ७	५३ ७	×	५३ ८
(अमेरि० क्षेत्र)	११०१.४	९५७ ०	९७.५	१५८.५—बं

परन्तु जैसा कि मैं ऊपर लिख आया हूं यह सारी सहायता बेकार गयी और यूरोप की आंतरिक दशा बिगड़ती गयी। अतः ५ जून को हार्वर्ड विश्वविद्यालय में भाषण करते समय परराष्ट्रमन्त्री जार्ज मार्शल ने घोषणा की कि यदि यूरोप के देश आपस में मिल जुल कर अपने को स्वावलम्बी बनाने की चेष्टा करें तो संयुक्त राज्य अमेरिका उनको जन, धन और माल से सहायता देने को प्रस्तुत है। दूसरे ही दिन ब्रिटिश परराष्ट्रमन्त्री बेविन ने उपर्युक्त घोषणा का स्वागत करते हुए पेरिस में परराष्ट्रमन्त्रियों का सम्मेलन बुलाया। रूसी परराष्ट्रमन्त्री भी मोलोटोव भी आये, परन्तु पूर्व और पश्चिम का मिलाप न हो सका। रूस को मार्शल योजना में यूरोप को अमेरिका का दास बना लेने का षड़यन्त्र छुपा दिखायी दिया। रूस के उकसाने पर अन्य बालकन देशों ने भी सम्मेलन में भाग नहीं लिया। रूस और उसके साथियों के बहिष्कार के बावजूद भी यूरोप के निम्नलिखित १६ देशों ने दो महीने की छानबीन के बाद अमेरिका से प्रायः २९ अरब डालर की मांग की —

आस्ट्रिया, बेलजियम, डेनमार्क, फ्रांस, यूनान, आइसलैण्ड, आयरलैण्ड, इटली, लक्जमबर्ग, हालैण्ड, नारवे, पोर्तुगाल, स्वीडन, स्विटजरलैण्ड, टर्की, ब्रिटिश द्वीप।

इधर अमेरिका में प्रतिदिन 'पृथक्' की नीति बढ़ती जा रही थी। जन यूरोप के झगड़ों से अलग थलग रह चाहती थी। संयुक्त राज्य अमेरिका २९ अरब की मांग को तुरन्त ठुक दिया। सोलह-राष्ट्र-समिति ने इस म को कम कर २२ अरब कर दिया। अ रिका ने उसे कम कर १९ अरब दिया। पिछले माह इसको और भी क कर १७ अरब कर दिया गया अतः रा पति ट्रूमन ने अगले चार वर्षों त यूरोप के पुनः निर्माण के लिए देश १७ अरब डालर की मांग की है।

'अब वह समय आ गया है संसार में शांति स्थापनार्थ हम गम्भी निश्चय करें। महायुद्ध के परिणाम स्वरू क्षतविक्षत यूरोप का पुनर्निर्माण संसा की शान्ति और अमेरिका की सुरक्षा लिए अति अवश्यक है" यूरोप आर्थिक संकट से लाभ उठा कर साम्य वादी अधिनायकशाही अपना पांव फैला रही है' 'संसार में संयुक्त राज्य अमेरिका ही एक ऐसा देश है जो यूरोप को इस विनाश से बचा सकता है' ... अन्यथा यूरोप विनाश के अन्धकार में डूब जायगा जिससे अराजकता का जन्म होगा' '

यूरोप को सहायता देने के लिए यह आवश्यक है कि हम कुछ त्याग करें और थोड़ा कष्ट सहें' 'परन्तु यह कष्ट और त्याग उस कष्ट के मुकाबले में कुछ नहीं होगा जो एक नए युद्ध के परिणाम

[शेष पृष्ठ १७ पर]

रहीम और रहीमन

[श्री नारायण श्यामराव चितांबरे]

अमरूद के बाग की रखवाली करने गया हुआ रहीम कू बड़ा जब के आठ बजे घर लौटा तब उसकी रहीमन मुंह फैलाये बैठी थी।

रहीमन ने आज सुबह से खाना नहीं या है। वह बाजार में भाजी बेचने भी बैठी है आज। कल रात की रखी ःखा खाकर ही रहीम बाग की रखवाली चला गया था। उसे खूब जोर की । लगी है।

उस आठ फुट चौड़े और दस फुट के कमरे में रहीम की पूरी गिरस्ती थी। ने में रखी मिट्टी के तेल की चिमनी के द प्रकाश में उसने देखा न तो आज रा भका है, न चूल्हा जला है, न करियों में बेच कर बची हुई ताजी भाजी ी है। जिस अवस्था में सुबह वह उस ,रे को छोड़कर गया था रात को ने पर उसने उसी अवस्था में उसे पाया । रहीमन एक फटा कम्बल ओढ़े कोने सिमटी सी बैठी थी ठंड से कांपती। ीम आया है किन्तु रहीमन चुप है, रोज तरह हंसकर उसने रहीम का न तो ागत ही किया, न उठी ही।

रहीम उसकी नाराजगी का कारण नता है। उसने एक बार रहीमन की र देखा, अमरूद से भरी टोकरी सर से उतारी और लकड़िया लेकर चूल्हा जाने लगा। जब चूल्हे में काफी आग गई तब वह उठा और रहीमन के मने जाकर खड़ा हो गया। रहीमन र सिमिट कर कोने में दुबक गई। खें नीची हो गई। गाल और भी फूल ये।

रहीम ने उसका हाथ पकड़कर उसे ठाने का प्रयत्न करते हुए कहा "उठो। ख लग रही है तुम्हें। चलकर थोड़ा ाप लो।"

रहीमन ने झटका देकर अपना हाथ छुड़ा लिया। कोने में और थोड़ी सरक ई, बोली कुछ नहीं। रहीम उसे बहुत प्यार करता है। उसके माता पिता के मरने के बाद ही उसका विवाह रहीमन से दो वर्ष पूर्व हुआ है। रहीम के जीवन में सभी से सरसता बह उठी है। उसने अपने आपको रहीमन के नाज और नखरों पर समर्पण कर दिया है। रहीमन में एकरूप हो गया है रहीम।

रहीमन के झटका देकर हाथ छुड़ाने पर वह नाराज नहीं हुआ है। वह मुस्कराया और उसने रहीमन की कोमल देह को अपने बलिष्ठ हाथों से तत्काल उठा लिया और चूल्हे के सामने लाकर बिठा दिया। और कहा "रहीमन, कहीं हम पर इतना भी नाराज हुवा जाता है।"

रहीमन उसे बहुत प्यार करती है। रहीम के शब्दों में प्यार की सरिता बह रही थी रहीमन का नारी हृदय उसके मधुर कलकल निनाद से उत्फुल्ल हो उठा। उसकी आखों में पानी आ गया। मानो रहीम के हृदय में बहने वाली गगा से मिलने रहीमन के हृदय में बहने वाली यमुना आखों द्वारा उमड़ पड़ी हो। कापती आवाज़ में रहीमन बोली "मैं तुम पर कभी नाराज़ नहीं हो सकती रहीम। मुझे फिक्र पड़ी है, अपनी अस्मत की। इस जिस्म का रोम रोम, इस जिस्म में बहने वाले खून की एक एक बून्द तुम्हारी है। मैं सच कहती हूं रहीम, इन दिनों जो कुछ मैं सुन रही हूं वह सब बहुत खतरनाक है। एक तरफ तुम हो, मेरी अस्मत है। दूसरी ओर बेइज्जती है, मौत है। इसलिए मैं आज आठ दिन से कह रही हूं कि हिन्दू रियासत छोड़कर किसी मुसलमानी रियासत में चले चलो, पर तुम हो कि तुम्हें यकीन ही नहीं आता मेरी बात का और मैं डर के मारे मरी जा रही हूं। आज ही नबी की मा कह रही थी कि अपने गाव में जल्द ही पाच सौ पंजाबी हिन्दू आने वाले हैं। आते ही वे पाकिस्तान के मुसलमानों का बदला यहां के मुसलमानों से लेंगे। औरतों की हर तरह से बेइज्जती करेंगे। और मर्दों को गोली से उड़ायेंगे।"

रहीम ठहाका मार कर जोर से हस पड़ा। उसने रहीमन का हाथ अपने बायें पर रख उसे दाहिने हाथ से सहलाते हुये कहा—"नबी और नबी की मा ने ही तो यह सारा जहर फैलाया है। सारे मुसलमान उन दोनों के बहकावे में आकर पागल हो गये हैं। अरी पगली, पजाबी मारने लगेंगे तो यहा की हुकूमत क्या देखती रहेगी। हमने भी चूड़िया तो पहनी ही नहीं हैं। जो हमारी औरतों की बेइज्जती करेगा, हम उसकी गर्दन उड़ा देंगे। मेरे जीते जी तुम्हें कोई हाथ भी लगा सकता है!"

चूल्हे की ज्वाला के प्रकाश में रहीमन ने देखा, रहीम की आखों में खून उतर आया है और चेहरा सुर्ख हो गया है। रहीम के हाथों में रखा अपना हाथ धीरे-धीरे उसने खींच लिया। एक बार प्यार-भरी नजर से रहीम की ओर देखा, फिर उसके गले में काले डोरे में बन्धे चादी के ताबीज से खेलती वह बोली "तुम्हारी ताकत पर मुझे यकीन है दिलवर, किन्तु तुम तो सुबह आठ बजे से ही चले जाते हो बाग पर और मैं रहती हूं अकेली घर पर। कहीं कुछ हो गया तो तुम रहोगे वहा और मैं मर जाऊंगी यहा। मरते वक्त तुम्हारी पाक सूरत और प्यारभरी आखें भी नहीं देख पाऊंगी मैं।" और वह सिसकिया भर कर रो उठी।

रहीम ने अपने दोनों हाथ उसके दोनों गालों पर रख दिये। उन्हें किंचित दाबकर, दोनों हाथों को धीरे–धीरे हिलाते हुआ बोला "अच्छा बाबा अच्छा। चलेंगे किसी मुसलमानी रियासत में चलेंगे।" अब तो उठो। खाना पकाओ। हमें जोर की भूख लगी है। हम पर तो प्यार नहीं है, बेगम साहबा का, प्यार है अपनी अस्मत पर। हमसे ज्यादा प्यारी है तुम्हें अपनी अस्मत, हम चाहे भूखों मर जाय पर बेगम साहबा की अस्मत ... ।"

रहीम के एक एक शब्द से रहीमन के हृदय में प्यार की बगिया फूल उठी। आखों में आत्मसमर्पण के भाव जागृत हो गये। मुख पर मधुर मुस्कराहट नाच उठी। उसने रहीम की ओर ऐसे ही देखा, जैसे उसकी आखें कह रही हों कि उसका बस चले तो वह खून बन कर रहीम की नस नस में दौड़ने लगे। या रहीम को ही अपने दिल की सन्दूक में बन्द करके रख ले।

वह उठकर खड़ी हो गई। रहीम भी उठकर खड़ा। उसने देखा कि आग की तपन से रहीमन के सुर्ख गाल और भी अधिक सुर्ख हो गये हैं। रहीम है कि अपने को नहीं रोक पा रहा है और ।"

रहीमन रोटिया सेंक रही है। रहीम खाना खा रहा है। अपने पति के आहार से वह परिचित है। गरमा गरम कितनी ही रोटिया खा चुका है वह। खाते खाते वह बोला "हमारी पीढ़िया गुजर गई और मैं भी पच्चीस वर्ष का हो गया रहीमन, लेकिन हमारे इस गाव में कभी हिन्दू मुसलमानों में झगड़ा नहीं हुआ। ताजियों में हमारा साथ देते थे हिन्दू भाई और फूल डोल में उनका साथ देते थे हम। अम्बाजान भी तो यही ... करते थे।"

रहीमन को एकदम जैसे कुछ याद आ गई। बीच में ही बोल उठी 'ऐ जी हा, नबी की मां कह रही थी कि नबी ने कहा है अंजुमने इस्लाम में हजरत जिन्ना साहब का पैगाम आया है। उन्होंने सारे मुसलमानों को पाकिस्तान बुलाया है। वहां के मुसलमानों को वहा बड़ी बड़ी नौकरिया, बड़ी, बड़ी तनख्वाहें मिलेंगी।"

रहीम ने प्रतिवाद के स्वर में कहा "यह नबी और उसकी मा ही सारे फसाद की जड़ हैं। जब से ये दोनों हमारे गांव में आये हैं, सारे मुसलमानों को गुमराह कर दिया है उन्होंने। अंजुमन इस्लाम इसी के दिमाग की चीज है। वरना एक मसजिद के अलावा हम कोई और चीज नहीं जानते थे। जुम्मे के दिन वहां गये नमाज पढ़ी। घर चले आये। अपने अपने धन्धों में जुट गये। अब तो मजहब के नाम पर इस नबी ने वह जहर फैलाया है कि हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के जानी दुश्मन हो गये। बस, बस अब रोटी नहीं चाहिए।"

रहीमन इस "बस बस" के अर्थ को जानती है। उसने रोटी उसकी थाली में छोड़ ही दी। रहीम उसकी ओर देखता बोला "तुम्हारे हाथों में इमरत भर दिया है खुदा ने। खाता ही चला जाता हूं।"

रहीम एकाग्रचित्त से खाने लगा। दिल और दिमाग में विचारों का चक्र चल ही रहा था। एकाएक उसका गला रुंध गया, दिल भर आया। आखें सजल हो गईं, वह कम्पित स्वर में बोला "अब हमारा वतन छूट जायेगा। हमारी पीढ़िया यहा गुजर गईं। यहीं हम पैदा हुए। यहीं की धूल में खेले। यहीं का अन्न खाया। पानी पिया। हमारा घर, हमारा बाग। सभी, सभी, सभी को छोड़ना होगा।" अब वह अधिक न खा सका। उठकर बाहर हाथ धोने चला गया। रहीमन की भी आखें भर आईं। बोली नहीं। चुप रही।

जब दोनों सोये, तब रहीमन ने अपना दाहिना हाथ रहीम की चौड़ी छाती पर रख कर कहा 'एक बात सुनोगे?'

रहीम ने कहा 'क्या?'

रहीमन पति की आखों में अपनी आखें गड़ा कर बोली 'तुम्हारे दिल को अगर ज्यादा तकलीफ हो तो मैं यहीं रहने को तैयार हूं। वतन ऐसी चीज है। आप समझते हैं कि मुझे दुख नहीं होता, किन्तु अपना वतन छोड़ते किसे दुख नहीं होगा। मेरा दिल भी रो रहा है वतन छोड़ते वक्त, लेकिन वतन में ही बरबादी होने लगे तो उसे छोड़ना ही होगा। फिर भी अगर तुम्हारा दिल दुखता हो

[शेष पृष्ठ १७ पर]

आज का हिन्दी संसार

युक्तप्रांत व बिहार में हिंदी की प्रगति

संयुक्त प्रांत में हिंदी अनिवार्य

संयुक्त प्रान्तीय सरकार द्वारा निम्न लिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की गयी हैः—

इस बात का ध्यान रखते हुए सरकार ने देवनागरी लिपिबद्ध हिन्दी को प्रान्त की राज भाषा मान लिया है अगामी वर्ष में स्कूल खुलने पर, अर्थात् जुलाई १९४८ ई० से प्रांत की प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षासंस्थाओं में हिन्दी को अनिवार्य विषय रखने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने का प्रस्ताव हुआ है।

तदनुसार हिन्दुस्तानी प्राइमरी और मिडिल स्कूलों के तथा ऐंग्लो हिन्दुस्तानी स्कूलों की आठवीं कक्षा तक के लिए पाठ्य क्रमों को बदला जा रहा है। इसी प्रकार संयुक्त प्रान्तीय हाई स्कूल एवं इंटर मीडिएट शिक्षा बोर्ड से भी यह कहा गया है कि वे अगामी वर्ष से हाई स्कूल और इंटर मीडिएट परीक्षाओं के लिए आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय रखने के बजाय उसे एक अनिवार्य विषय के रूप में रखें।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एकेडेमिक कौंसिल ने हाल ही में एक प्रस्ताव पास करके यह निश्चय किया है कि विश्वविद्यालय की अधिकृत भाषा हिन्दी ही हो तथा उसका समस्त कार्य एवं पत्र-व्यवहार हिन्दी के माध्यम द्वारा ही सम्पन्न किया जाये। यह भी निश्चय किया गया है कि सन् १९५१ तक विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही हो जानी चाहिए।

प्रांतीय बजट हिन्दी में

ज्ञात हुआ है कि प्रांतीय सरकार ने अपना बजट हिंदी में प्रकाशित करने का निश्चय किया है जिस में केवल आंकड़े अंग्रेजी में होंगे। समाचार पत्रों तथा अन्य प्रांतीय सरकारों के पास भेजने के लिए बजट का अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित किया जायगा।

जिला बोर्डों में भी हिन्दी

हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में ही भविष्य में हर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का काम हो, यह निर्णय युक्त प्रान्तीय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड यूनियन के वार्षिक सम्मेलन में किया गया।

राशनिंग विभाग में हिंदी

राशनिंग कर्मचारियों की एक सूची बनायी जा रही है जिस में प्रथम वे लोग होंगे जो हिन्दी लिख, पढ़ तथा बोल सकते हैं या कोई सनद उनके पास है। दूसरी श्रेणी में वे कर्मचारी होंगे जिनको मौका दिया गया था और जिन्होंने हिन्दी की आवश्यक योग्यता प्राप्त भी कर ली है। तीसरी श्रेणी में वे लोग हैं जो अब तक हिन्दी नहीं सीख सके हैं। छटनी के समय ऐसे लोगों को सर्वप्रथम पृथक् किया जायगा। सम्प्रति ऐसे सभी कर्मचारियों की तरक्की रोक ली गयी है तथा उनसे पूछताछ भी की जायगी।

पुलिस सुपरिण्टेंडेंट नहीं

जो हिन्दी न जानता होगा, भविष्य में वह पुलिस का डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट न हो सकेगा। प्रान्तीय सरकार के निश्चय के अनुसार पब्लिक सर्विस कमीशन ने घोषित कर दिया है कि प्रान्तीय पुलिस सर्विस की प्रतियोगिता परीक्षा में हिन्दी एक अनिवार्य विषय होगा और २०० अंकों के हिन्दी के प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण होना सेलेक्शन के लिए आवश्यक होगा।

कम्यूनिस्ट पार्टी और हिन्दी
श्री राहुल का पार्टी से त्याग पत्र

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन ने शुद्ध हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के बारे में अपने स्पष्ट विचार सम्मेलन के सभापति पद से प्रकट किये थे। इस पर, सुना है कि भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी उनसे बहुत अप्रसन्न हो गई और उनसे जवाब तलब किया गया कि उन्होंने कम्यूनिस्ट पार्टी के भाषा सम्बन्धी विचारों से भिन्न विचार क्यों प्रकट किये। श्री राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी सम्बन्धी अपने विचारों पर दृढ़ता प्रकट की और कम्यूनिस्ट पार्टी से त्यागपत्र दे दिया है।

वस्तुतः भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी भारतीयता, भारतीय भाषा और भारतीय संस्कृति आदि सब का विरोध करती है। लखनऊ में होने वाले मुस्लिम सम्मेलन में प्रसिद्ध कम्यूनिस्ट डा० अशरफ ने यह विचार प्रकट किया था कि उत्तरी भारत की राज भाषा उर्दू होनी चाहिये।

बिहार में शिथिलता

बिहार सरकार द्वारा हिन्दी के अब तक राज भाषा न घोषित किये जाने पर समझा ऐसा जाता है कि बिहार सरकार इस दिशा में किसी प्रकार का कदम उठाकर महात्मा गांधी को और उनके अनुयायियों को कष्ट नहीं करना चाहती। अभी हाल में दिल्ली में बिहार के एक प्रमुख मन्त्री से, जो विधान परिषद के सदस्य भी हैं राष्ट्र भाषा के प्रश्न पर जब हिन्दी के पक्ष में मत देने का वचन देने को कहा गया तो बोले कि अगर देखूंगा कि हिन्दी का पक्ष हार रहा है और मेरे मत से उस में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता तो मैं हिन्दी की ओर मत दे दूंगा, अन्यथा मैं किसी प्रकार की बदनामी मोल लेने को तैयार नहीं हूं। यही कारण है कि बिहार सरकार ने तत्परता के साथ वक्तव्य प्रकाशित करके इस समाचार का खण्डन किया कि उसने हिन्दी के पक्ष में किसी प्रकार का निर्णय किया है।

सागर विश्वविद्यालय में हिन्दी

सागर विश्वविद्यालय की प्रथम वार्षिक बैठक में निश्चय किया गया है कि हिन्दी शिक्षा का माध्यम बनेगी और लिपि देवनागरी होगी।

विधान परिषद में हिंदी

भारतीय विधान परिषद् के कुल २९६ सदस्यों में से १५१ सदस्यों ने भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी को बनाने सम्बन्धी निम्नोक्त प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये हैं —

"हम इस बात को मानते हैं कि यूनियन का विधान हिन्दी भाषा व नागरी लिपि में बनाया जाय। भारतीय पार्लियामेण्ट का कार्य हिन्दी में किया जाय और केवल उसी समय तक अंग्रेजी में कार्य हो जब तक के लिए पार्लियामेण्ट निश्चय करे।"

'विश्वमित्र' पटने से भी

श्री मूलचन्द्र अग्रवाल द्वारा सचालित दैनिक विश्वमित्र का पटने से भी एक संस्करण प्रकाशित होने लगा है। इससे पहले कलकत्ता, बम्बई और दिल्ली से विश्वमित्र निकलता ही है। इस दृष्टि से हिंदी पत्रकला के विकास में यह सर्वप्रथम पत्र है जो लगातार चार स्थानों से निकलता है। अभी तक अंग्रेजी में भी कोई पत्र इतने स्थानों से प्रकाशित नहीं होती।

भारत की राष्ट्रभाषा का सवाल विधान परिषद् के अप्रैल में होने वाले अधिवेशन में पेश होगा और हिन्दी के पक्ष में परिषद् का बहुमत है। अतः विश्वास है कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्र-भाषा घोषित होगी।

श्रीमती चन्द्रकिरण सौनरिक्सा

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सेकसरिया पुरस्कार श्रीमती सौनरिक्सा को प्रदान किया है। उपन्यास और कहानी लेखिका के रूप में आपने हिन्दी साहित्य भण्डार की समृद्धि की है। साथ ही आप दिल्ली प्रांतीय हिन्दी लेखक संघ की मन्त्री, नागरी प्रचारिणी सभा तथा सार्वराष्ट्रीय लेखक संघ की सदस्या हैं। आपकी कुछ कहानियों का अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है।

पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी
६७ वीं जयन्ती

हिन्दी का सब से पहला दैनिक पत्र (भारत मित्र) निकालने का श्रेय आपको ही है। आपने हिन्दी-पत्रकारिता, हिन्दी साहित्य तथा देश की अमूल्य सेवायें की हैं। होमरूल लीग आंदोलन तथा असहयोग आंदोलन के समय आप एक प्रतिष्ठित पत्रकार ही नहीं एक सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्ता भी थे। आप वर्षों तक आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे हैं। १९३६ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने भी आपको सभापति चुन कर अपने को गौरवान्वित किया था। गत सप्ताह आपकी ६७वीं वर्षगांठ मनाई गई।

राष्ट्रलिपि का स्थान

दो लिपियों के सिद्धान्तों को नहीं मानता हूं। लिपि तो एक ही है जिससे यह कार्य सरलता पूर्वक तथा सुचारु रूप से चल सकता है और वह लिपि देवनागरी है। —जयप्रकाश नारायण

हिन्दी में समस्त कार्य

जोधपुर म्यूनिसिपल बोर्ड ने एक बैठक में समस्त सरकारी कार्य हिन्दी में करने का निश्चय किया है।

हिन्दी में टाइपराइटर

भाषा शास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् श्री प्रो० रघुवीर (इण्टरनेशनल एकेडेमी आफ इण्डियन कलचर, नागपुर के डायरेक्टर) एक ऐसा टाइपराइटर बना रहे हैं जो सिंहाली, बर्मी और स्यामी भाषाओं के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के लिये एकसा ही उपयोगी होगा। विदेशी टाइपराइटरों की गति से इस टाइपराइटर की गति भी कम नहीं होगी।

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकेमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त।
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

नये पंजाब की नयी समस्यायें

[श्री सहदेव चक्रवर्ती विद्यालंकार]

१५ अगस्त १९४७ के बाद भारत का विभाजन होने के फलस्वरूप पंजाब तथा बङ्गाल का भी विभाजन हुआ। विभाजन के होते ही पूर्वी पंजाब की सरकार को प्रान्त के नव निर्माण के लिए इस सङ्कट काल में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

शरणार्थी समस्या

धर्म के आधार पर विभाजन होने के कारण लाखों हिन्दू और सिख पाकिस्तान से पूर्वी पंजाब तथा देश के दूसरे भागों में चले आये हैं। इन प्रवासी शरणार्थियों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—(१) धनिक वर्ग (२) किसान और जमींदार, (३) मजदूर। (४) मध्यम वर्ग।

प्रथम वर्ग के व्यक्ति सामान्यतया इस प्रकार के हैं, [जिनके पास इस समय भी अपने व्यवसाय के लिये थोड़ी-बहुत पूंजी विद्यमान है। इनमें से कुछ तो अपने साथ ही रुपया और गहना-कपड़ा ले आये थे और जिनके यहां रुपया पास नहीं था, उन्होंने बैंकों का रुपया पाकिस्तान को अन्तिम नमस्ते कहने से पहले ही किसी भारतसंघ की शाखा में स्थानान्तरित कर दिया था। इसलिए इन्हें भारत में आकर विशेष कष्ट अनुभव नहीं हुआ। ये रुपये-पैसे के बल पर मकान भी खरीद सकते हैं और जीवन निर्वाह के लिये व्यापार-व्यवसाय भी कर सकते हैं। इन्हें स्वावलम्बी बनने में या नये सिरे से अपने पैर जमाने में विशेष कठिनाई अनुभव नहीं होगी।

प्रवासी शरणार्थियों का दूसरा वर्ग जमींदारों और किसानों का है। पूर्वी पंजाब या देश के अन्य भागों से मुसलमान जो जमीनें छोड़कर पाकिस्तान चले गये हैं, सरकार वह जमीनें तथा मकान इन जमींदार और किसान शरणार्थियों को दे सकती है। यह यथापूर्व अपने कामकाज में जुट जायंगे। वह अपनी समस्या स्वय हल कर लेंगे।

तीसरा वर्ग मजदूरों का है। मजदूर लोग जैसे पश्चिमी पंजाब में थे वैसे ही पूर्वी पजाब में। इन्हें अपने निर्वाह के लिए इधर भी बहुत काम मिल जाता है। बल्कि कमाई में यह सब वर्गों से बाजी मार गए हैं। मजदूर, समाज का एक ऐसा घटक है जिसकी उसे सदा आवश्यकता बनी रहती है। इसलिए किसी मजदूर को काम-काज के अभाव से घबराने की आवश्यकता ही नहीं रहती।

चतुर्थ और अन्तिम है मध्यमवर्ग। हमने इसे जानबूझ कर अत में इस लिए रखा है कि इसकी समस्या सबसे कठिन है। कालेजों और स्कूलों के विद्यार्थी, अध्यापक, वकील डाक्टर, एजेंट क्लर्क, धर्मप्रचारक और छोटे-मोटे दुकानदार—जिनके पास पैसा नहीं और पैसा पैदा करने के विशेष साधन भी नहीं, जो अपने पिता-पितामह की सम्पत्ति पर निर्वाह करते थे या अपने परिश्रम द्वारा अपनी वृत्ति कमाते थे। अपने २ घरों से उखड़ जाने के बाद वे सब अपने को निस्सहाय अनुभव करते हैं। पाकिस्तान क्या बना, इन विचारे बेगुनाहों की तो कयामत आ गई। इन पर अचानक ही विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। सबसे बड़ी मुश्किल यह कि अपना दुखदर्द ये किसी से कह भी तो नहीं सकते इन लोगों की आमदनी का साधन तो कुछ है नहीं और जीवन का दैनिक खर्च बेहद बढ़ गया है। 'सफेद पोश' बने रहने के लिए उन्हें सब तरह के पापड़ बेलने पड़ते हैं। यह वर्ग समाज की रीढ़ की हड्डी है। क्या पूर्वी पंजाब की सरकार को इनकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए।

कहां रहें

एक समस्या इन सब वर्गों की सामान्य है और वह है मकानों का न मिलना। आजकल सरकार द्वारा नियुक्त सपत्ति संरक्षक विभाग में इतना भ्रष्टाचार है कि कुछ न पूछो! मजदूर मजदूरी करके अपना और परिवार का पेट तो भर लेंगे किन्तु पेट भरने के बाद शीतातप से बचने के लिए जगह कहां है!

कामकाज की समस्या

शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या के अतिरिक्त उन्हें काम-काज पर लगाने की भी तो एक समस्या है जिसका समाधान प्रांत के विशाल परिमाण पर किए गये औद्योगीकरण से ही हो सकता है। पश्चिमी पजाब की अपेक्षा पूर्वी पजाब में औद्योगिक और व्यावसायिक नगरों की सँख्या बहुत कम है। पश्चिमी पंजाब के नगरों में लाहौर व्यवसाय और उद्योग का प्रधान केन्द्र था। यहां के लोहे, कपड़े और दिया-सलाई के कारखानों में लाखों व्यक्ति कामकाज कर के अपना जीवन निर्वाह करते थे। व्यावसायिक क्षेत्र में बैंक, इन्शोरेंस कम्पनियां, समाचार पत्र, प्रेस, सिनेमा, होटल, नाटक क्लबें सहस्रों का पेट भरती थीं। लाहौर में स्कूलों-कालेजों का जाल-सा बिछा हुआ था। असख्य व्यक्ति वहां अध्यापक तथा प्रोफेसर के रूप में कार्य करते थे।

मुलतान, लायलपुर, मिण्टगुमरी और शेखूपुरा की अनाज की मण्डियों में हजारों थोक व्यापारियों के सरक्षण में मध्यम वर्ग तथा मजदूर वर्ग अपना काम चला रहा था। किन्तु इन सब की तुलना में केवल अमृतसर और लुधियाना को छोड़कर पूर्वी पजाब का कोई भी नगर व्यापार, व्यवसाय और उद्योग का केन्द्र नहीं कहा जा सकता। अमृतसर कपड़े के उद्योग के लिये विख्यात है। यह संयुक्त पंजाब का 'मानचेस्टर' कहलाता था, इस क्षेत्र में इसकी स्थिति यथापूर्व बनी रहेगी। लुधियाना, स्यालकोट (पश्चिमी पंजाब) का समकक्ष कहलाता है। स्यालकोट यदि खेलकूद के सामान (स्पोर्ट्स) के लिये विख्यात था तो लुधियाने की नामवरी जुराबों, दस्तानों और बनियानों के लिये है। जालन्धर जिले में थोड़े बहुत खाण्ड के कारखाने हैं। जगाधरी भी कागज के कारखाने के लिये विख्यात है किन्तु इन थोड़े से कारखानों से पूर्वी पंजाब का निर्वाह नहीं हो सकता। हजारों व्यापारी, बाबुओं और मजदूरों को खपाने के लिये विशाल परिमाण पर सम्पूर्ण प्रान्त का औद्योगीकरण करना होगा।

राजधानी-निर्माण

जब तक सरकार प्रान्तीय राजधानी के लिये किसी स्थान का अन्तिम निर्णय नहीं कर लेती तब तक प्रान्त की शरणार्थी पुनर्वास समस्या भी यथापूर्व बनी रहेगी और प्रान्त के सार्वजनिक जीवन में स्थिरता और व्यवस्था का समावेश भी न हो सकेगा।

राजधानी सरकारी सार्वजनिक प्रगतियों का केन्द्रस्थान होती है। अधिकांशतः वहीं पर विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, हस्पताल, बैंक, कम्पनिया, समाचार-पत्र, प्रेस, ललितकला-केन्द्र, नाटकगृह, सिनेमा मुद्रण-प्रकाशन संस्थायें, राजनीतिक, धार्मिक और समाजिक संस्थाओं के प्रधान कार्यालय तथा उनके द्वारा सचालित विद्यालय और आश्रमादि हुआ करते हैं। सरकार द्वारा राजधानी का स्थान निश्चित होने पर हजारों शरणार्थी जो इस समय मकान तथा काम-काज की खोज के लिये दिल्ली, लखनऊ, कानपुर आगरा के बाजारों और गलीकूचों में भटकते फिर रहे हैं, वहां स्वतः आ जायेंगे। कई शरणार्थियो ने अपने भावी कार्यक्रम का अभी अन्तिम रूप से निश्चय नहीं किया क्यों कि वे पंजाब के अतिरिक्त कहीं अन्यत्र बसने का इरादा नहीं रखते।

किन्तु प्रश्न यह है कि पूर्वी पंजाब की राजधानी हो कहां? इस समय के सरकारी विभागों के कार्यालय कुछ जालन्धर में हैं तो कुछ शिमला में। रसद विभाग का कार्यालय अमृतसर में है। प्रान्तीय सरकार का हाई कोर्ट भी शिमला में है। शिमला को राजधानी बनाने के पक्ष का कई लोग समर्थन करते हैं। किन्तु शिमला अपने प्राकृतिक सौन्दर्य एव आकर्षण के होते हुए भी वर्ष भर प्रान्त की राजधानी बनने योग्य नहीं है—अत्यधिक शीत, कामकाज का अभाव और महगाई इसे प्रान्त की राजधानी नहीं होने देंगे।

अमृतसर

कुछ व्यक्ति अमृतसर को राजधानी बनाने के पक्ष में हैं। किन्तु आश्चर्य यह है कि जिन लोगों ने इस सम्बन्ध में आन्दोलन का बीड़ा उठाया था वे अमृतसर छोड़ कर अपनी जान बचाने के लिए कहीं अन्यत्र निकल गये हैं। अमृतसर पूर्वी पंजाब का सीमान्तवर्ती नगर है। यहां सदा सकट की सम्भावना बनी रहेगी।

जालन्धर

पानी की कमी के कारण अम्बाला भी प्रान्तीय राजधानी नहीं बन सकती। अधिकांश जनता जालन्धर (हाबा-प्रदेश) को राजधानी बनाने का समर्थन कर रही है। देखें, पूर्वी पजाब की सरकार इस दिशा में क्या करती है। किन्तु पूर्वी पजाब की सरकार को सार्वजनिक हित को दृष्टि में रखते हुए प्रान्तीय राजधानी का निश्चय अविलम्ब करना चाहिए।

प्रांत–रक्षा

पूर्वी पंजाब भारत सघ का सीमाप्रान्त है। समूचे देश का भविष्य इसी पर निर्भर है। केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारें इसके सामरिक महत्व की उपेक्षा नहीं कर सकतीं। जनता को मालूम है कि भारत के भविष्य का अन्तिम निर्णय एक बार पंजाब में फिर होगा और इतिहास अपने को दोहरायेगा। अगले कुछ महीनों में पूर्वी पजाब युद्ध-क्षेत्र का रूप धारण करेगा। इसलिए प्रान्तीय सरकार को प्रान्त की रक्षा के लिए सुदृढ़ सैनिक संगठनों का निर्माण करना होगा।

प्रान्त के अधिकांश हिन्दू सिख नवयुवक राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ, अकालीदल और देश सेवक आदि निजी सेनाओं के स्वयसेवक हैं और यदि संयुक्तप्रांतीय सरकार का अन्धानुकरण करते हुए इन्हें कुचलने का यत्न किया गया तो विडम्बना होगी। यदि केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारों ने पूर्वी पंजाब की सुरक्षा का भरसक प्रयत्न न किया तो केन्द्रीय सरकार की राजधानी दिल्ली का अस्तित्व भी संकट में पड़ सकता है।

———

हमारे आजके हिन्दी कवि सम्मेलन

[श्री शम्भुनाथ शेष]

कवि सम्मेलन बहुत लोकप्रिय हो गये हैं, लेकिन क्या इससे हिन्दी कविता का भी स्तर ऊंचा उठा ? क्या सत्कवि सम्मान पा सके ? उनके स्थान पर क्या चतुर लोग अपने गले और अपने हास्य के कारण सत्साहित्य पर छा नहीं गये और कवि सम्मेलनों का नया रूप क्या हो—आदि प्रश्नों पर एक कवि द्वारा प्रकाश डालने का इस लेख में यत्न किया गया है।

कवि सम्मेलन का नाम सुनते ही आंखों के आगे एक ऐसी साहित्यिक सभा का चित्र फिर जाता है, जहां दरियों पर बैठी हुई शिक्षित अर्ध शिक्षित सभी प्रकार की जनता थोड़े ऊंचे मच पर माइक्रोफोन के सामने खड़े हुए किसी व्यक्ति की वाणी को कौतूहलवश सुन रही है। वह व्यक्ति वेश भूषा में कुछ निरालापन लिये, लम्बे-लम्बे बाल जो जरूरत से ज्यादा तर या खुश्क होते हैं, कन्धों पर लटकाए, पान खाए, अपने आपको उस जनसमूह का नायक समझते हुए अपनी पूरी आवाज के साथ कुछ पढ़ता है और साथ-साथ हाथ पावों को भी व्यायाम कराता जाता है, जिससे प्रतीत होता है कि वह नियमित रूप से व्यायाम करने का आदी नहीं है। जनता उसकी वाणी सुनकर कभी खिलखिला कर हस पड़ती है और कभी मन मसोस कर रह जाती है। उसके अधरों से कभी आह और कभी वाह निकलती है। कभी ताली बजा कर कविता की या कवि कण्ठ की मनोहरता ध्वनित की जाती है और कभी वही तालो अपने रोष और क्षोभ की अभिव्यंजना करती हुई कवि महोदय को अपने स्थान पर जा बैठने का संकेत करती है। इसी प्रकार क्रमशः अन्य व्यक्ति भी मच पर माइक के सामने आकर, कुछ पढ़ कर चल देते हैं और कवि सम्मेलन की कार्यवाही सफलतापूर्वक समाप्त हो जाती है।······

कवि सम्मेलनों का यह रूप अधिक पुराना नहीं है। भारतवर्ष में कवि दरबारों की प्रथा भी पहले रही है जब कि राजा लोग अपने दरबारों में मनोरंजनार्थ ऐसे सांस्कृतिक आयोजन किया करते थे। परन्तु ऐसे सार्वजनिक कवि सम्मेलनों का उल्लेख सम्भवतः कहीं नहीं मिलता। हां यह बात और है कि कुछ सहृदय व्यक्ति मिलकर एक गोष्ठी कर लेते हों, परन्तु उसे कवि सम्मेलन के 'विराट' नाम की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

हमारे यहां कवि सम्मेलन की प्रथा मुगल शासन के अन्तिम दिनों में प्रचलित हुई। लाल किले में समय समय पर उर्दू के मशायरे हुआ करते थे। यह मशायरे अधिकतर रात को होते थे। शायर लोग मंडलाकार फर्श पर बैठ जाते थे। बादशाह मसनद पर विराजमान होते। एक खूबसूरत लड़का शमा लिये हर एक शायर के पास जाता। वह शमा के उजाले में अपनी गजल पढ़ता। इसी प्रकार वह महफिल रात-रात भर जमा करती। लाल किले की यह महफिलें थोड़े दिन चलीं। समय ने पलटा खाया और लाल किले पर यूनियन जैक लहराने लगा। अब लाल किले के मशायरे दिल्ली की गलियों में किसी नवाब या उस्ताद के घर पर होने लगे। पहले तो यह मशायरे सम्भ्रान्त घरानों या किसी ऊंचे दरजे के शायर के यहां होते थे और उनमें विशिष्ट व्यक्ति या दूसरे शायर ही सम्मिलित होते थे परन्तु कुछ समय पश्चात् इन्होंने सार्वजनिक रूप धारण कर लिया।

उधर हिन्दी में भारतेन्दु के उदयकाल में उर्दू के मशायरे मुसलमान शिक्षितों में काफी प्रिय हो गये थे। भारतेन्दु रसिक व्यक्ति थे। वे काशी नरेश के यहा होने वाले कवि समाजों में तो सम्मिलित होते ही थे उन्होंने कवि गोष्ठियों का आयोजन भी किया। कई सार्वजनिक कवि सम्मेलन भी हुए। उनके पश्चात् कानपुर के राय देवीप्रसाद पूर्ण ने रसिक समाज की स्थापना की-जिसमें कवि लोग बड़ी दूर से आकर अपनी समस्या पूर्ति सुनाया करते थे। इधर कालिजों में हिन्दी के प्रवेश के साथ कवि सम्मेलन ने भी अपना स्थान पा लिया। इस प्रकार कवि सम्मेलन राज दरबारों की चकाचौंद देखकर, रसिक समाज के सहृदयतापूर्ण वातावरण का रस पी-पिला कर जनता की अपनी चीज बन गया।

कवि सम्मेलनों से देश को लाभ भी हुआ। इन से हिन्दी के प्रचार में बड़ी सहायता मिली। कवियों को जनता के सम्पर्क में आने का तथा पारस्परिक विचार विनिमय का अवसर मिला। बहुत से लोग जो हिन्दी नहीं जानते थे, उन्होने सुरीले कण्ठों से हिन्दी कविताए सुनीं तो हिन्दी पढ़ने को तैयार हो गये। परन्तु हर चीज की हद होती है। सीमा का उल्लघन होते ही सरस वस्तु भी नीरस और उपकार भी अपकार बन जाता है। यही कवि सम्मेलन के साथ हुआ। कवि सम्मेलन जनता की रुचि को परिष्कृत और श्रोताओं में साहित्यिक चेतना को जाग्रत कर सकते थे। परन्तु उनकी ऐसी बाढ़ आई कि 'कवि सम्मेलन' 'कपि सम्मेलन' बन के रह गये। अच्छे कवियों का कीर्तिकलाप सुनकर तथा उनका मान सम्मान देखकर बहुत से नकली कवि पैदा हो गये। अब कवितायें भी लिखी जाने के स्थान पर गढ़ी जाने या बनने लगीं। जनता की ऊपरी और भावुक भावनाओं को छूने वाली कविताओं का निर्माण और गान होने लगा। देशभक्ति के नाम पर लिखी गयी कवितायें ९९ फी सदी तुकबन्दी मात्र हैं। तुकड़ कवियों ने अपनी तुकबन्दियों में देशभक्तों का नाम डाल कर जनता को खूब रुलाया, उसे उल्लू बनाया। कुछ कवि हास्यरस की ओट में भारतीय नारी-मर्यादा को भी लोट देने से नहीं चूके। किसी ने घर वाली को लक्ष्य किया तो किसी ने कालिज के लड़के लड़कियों पर अपनी तुकबन्दी के तीर चलाये। इससे साहित्य को ठेस लगी। श्रेष्ठ साहित्य कम लिखा जा सका। बाजार में मलम्मा सोने के भाव बिकने लगा। केवल तुकबदी करने वाले गलेबाज लोगों की तूती बोलने लगी। कुछ लोगों ने कविता को अपना पेशा बना लिया और वे कवि सम्मेलनों की ताक में रहने लगे। यह लोग संयोजकों से इस बहाने पर भेंटस्वरूप कुछ पैसे भी ऐंठने लगे कि उनको आजीविका का और कोई साधन ही नहीं है। साधारण जनता कविता और तुकबन्दी में विशेष अन्तर नहीं समझती। उसे जोश दिलाने वाली या आसानी से समझ में आने वाली अथवा हंसाने वाली तुकबन्दी चाहिए। अतः इस प्रकार के तथाकथित कवियों को जनता ने बहुत सम्मान दिया। परन्तु इस रेले में अच्छे कवियों की दशा त्रिशंकु की सी हो गयी। वे अपने साधु स्वभाव के कारण संयोजकों के निमंत्रण को स्वीकार कर लेते। कवि सम्मेलन में कविता भी पढ़ते, परन्तु अखाड़ेबाजी के हथकण्डों से परिचित न होने के कारण जनता में 'प्रिय' नहीं हो सके, उसकी आंखों में नहीं चढ़ सके। पैसे वे लेते नहीं क्योंकि वे साहित्यसेवी ठहरे। अपनी वाणी को क्या बेचें ? उधर अखाड़ेबाज अपने गुरुघंटाल कवि सम्मेलन में बड़ी शान से कविता पढ़ते। जनता प्रशंसा के पुल बांध देती। 'सफल' और 'श्रेष्ठ' कवि होने के कारण संयोजक लोग भी ऐसे लोगों को सिर आंखों पर लेते, उनके पीछे-पीछे फिरते। यह 'हीरो' अपने कण्ठ के बल पर संयोजकों से खूब ठोक बजा कर पैसे वसूल करते। खान पान की विचित्र विचित्र फरमायशें करते। संयोजक सब पूरी करते। इस धांधली का परिणाम यह हुआ कि गुण और स्थायित्व के विचार

मैं सोच रहा

[श्री रामपाल सिंह 'करुण']

मैं सोच रहा, जीवन पथ पर, मैंने कुछ पाया या खोया।

जागो पंथी, जागो पंथी !—नव जीवन की ऊषा बोली।
कुछ पाने की इच्छा लेकर मैंने भी तब आंखें खोलीं।
उस जीवन की धूमिलता में, मैं क्या बतलाऊं कहां चला ?
चलने की अंधी मचलन थी, कुछ पाना था इसलिए चला।
बस अपनी इस इच्छा का तब मैंने केवल बोझा ढोया।
मैं सोच रहा, जीवन पथ पर, मैंने कुछ पाया या खोया।

दोपहर हुआ, यौवन बोला—मेरी छाया में रुक जाओ।
दो घूंट छलकती गगरी का मधु सोम सुधारस पी जाओ।
चचल छाया में रुक कर तब मैंने पी ली मादक हाला;
जब पाने का अधिकार मिला, मैंने अपने को खो डाला !
फिर अपनी ही नादानी पर, सिर धुन-धुन पछताया रोया।
मैं सोच रहा, जीवन पथ पर, मैंने कुछ पाया या खोया।

जीवन-सन्ध्या आई, बोली—पंथी अब तो विश्राम करो,
क्या ढूंढ रहे अंधियारे में कुछ पा न सकोगे, धीर धरो !
केवल पाने की इच्छा से बनता है क्या कुछ काम कहीं ?
जब पाकर रख सकने भर के साहस का तुम में नाम नहीं !
तब मूक हुआ निशि छाया सा, मैं तारों के नीचे सोया।
मैं सोच रहा, जीवन पथ पर, मैंने कुछ पाया या खोया।

हमारे कविता साहित्य का अधिकांश रद्दी की टोकरी में फेंके जाने के योग्य लिखा जा सका। कवि सम्मेलनों द्वारा कवियों को जनता के सम्पर्क में आने से जो लाभ हो सकता था, वह न हुआ। कविता भी एक 'पेशा' या 'धन्धा' अथवा एक रोजगार बन के रह गयी। इसका सीधा प्रभाव जनता पर पड़ा। जनता कुछ 'पाने के स्थान पर 'कवियों को कुछ देने' की बात सोचने लगी। 'कवि' स्वयं जो नैतिकता के दृष्टिकोण से गर्त में जा गिरे थे, अपने श्रोताओं को भी ले डूबे। उनकी जनता का बौद्धिक स्तर उन्नत होने के स्थान पर और भी नीचे गिर गया। 'अति सर्वत्र वर्जयेत् ।'

आज भारत स्वतन्त्र है। स्वतन्त्रता के साथ ही हम पर—भारतीय जनता पर साधारणतया और साहित्यकारों पर जो कि राष्ट्र के वास्तविक निर्माता होते हैं, विशेषतया— एक महान् उत्तरदायित्व आ गया है। अब हमें अपने घर बार को संभालना होगा। कूड़ा करकट बाहर निकाल फेंकना होगा। सामाजिक और साहित्यिक कुरीतियों को भी उन्मूलन करना होगा। कवि सम्मेलन का जो कि एक शक्तिशाली संस्था बन चुकी है, क्या हो, यह एक प्रश्न है।

जहां तक हिन्दी प्रचार का सम्बन्ध है, उसकी अपेक्षाकृत कम आवश्यकता रह गयी है। हिन्दी के राजभाषा होते ही जनता को स्वभावतः उसे अपनाना होगा। अतः अब जरूरत है इधर रचनात्मक कार्यक्रम अपनाने की। मेरे विचार में विराट कविसम्मेलनों की बाढ़ बंद होनी चाहिए। कवि सम्मेलन किसी विशेष अवसर पर ही वर्ष में एकाध बार किया जाये। साम्प्रदायिक कवि सम्मेलन एक-दम बन्द होने चाहिए। उनके स्थान पर कविगोष्ठियों तथा साहित्यगोष्ठियों का आयोजन हो। प्रत्येक नगर में ऐसे मंडलों की स्थापना होनी चाहिए, जिनकी देख रेख में विविध प्रकार का साहित्य तैयार किया जावे। कुछ गीत ऐसे लिखे जाएं जो साहित्य की अमूल्य निधि होने के साथ साथ संगीत की लहरों में भी पूर्ण-रूपेण समा जाएं। गुण और परिमाण पर भी निगाह रखनी होगी। कवियों के जीवन निर्वाह की व्यवस्था समाज को करनी होगी। साहित्यकार को उदर की चिन्ता नहीं होनी चाहिए, उसे चिन्तन के लिए पूरा पूरा अवकाश और सुविधा सुलभ हो। उत्तम कलाकृतियों पर अच्छे अच्छे पुरस्कारों की व्यवस्था हो। इससे अच्छा साहित्य लिखने की प्रेरणा मिलेगी। तात्पर्य यह कि समाज को अपने वास्तविक निर्माताओं एवं नेताओं की सुख सुविधा का ध्यान कर्तव्यभावना से करना होगा, दया-भाव के वशीभूत हो कर नहीं। अब मैं कवियों से भी यही निवेदन करूंगा कि वे अपने राष्ट्र अपनी संस्कृति और मानवता के प्रति अपने कर्तव्य को पहचानने की कोशिश करें। कवि सम्मेलनों की वाह-वाही के मोह को त्याग कर साधना और तपस्या को अपने जीवन का आदर्श वाक्य मान कर अपना मार्ग स्थिर करें।

तोष की
हाथी ब्रांड
बढ़िया चाय
दार्जिलिंग ऑरेंज पैको

ए० तोष एण्ड सन्स
कलकत्ता।

मौसम का उपहार
उमेश घी

यह गाय भैंसों का शुद्ध पवित्र घी स्वास्थ्य, बल तथा शक्ति के लिए अनुपम है।
गवर्नमेंट की हर परीक्षा से पास तथा उनकी पवित्रता की लाल रंग की 'स्पेशल एगमार्क' सील लगा बिक्री होता है।
स्वादिष्ट तथा पौष्टिक भोजन के लिए उमेश घी ही व्यवहार करें।
दिल्ली एजेण्ट—हरीराम जगत नारायन खारी बावली (फतेहपुरी की तरफ) दिल्ली।

दिल्ली प्रांत, मेरठ कमिश्नरी व रुहेलखण्ड के सोल एजेन्ट—रमेश एण्ड कम्पनी चांदनी चौक देहली। राजपूताना के सोल एजेन्ट—राजस्थान औषध भण्डार, चौड़ा रास्ता, जयपुर। मध्य भारत के सोल एजेण्ट—वृहद औषध भण्डार, १६ जेल रोड, इन्दौर।

१९४८ में क्या होने वाला है

भारत वर्ष के प्राचीन महापुरुषों की सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या अन्धकारपूर्ण संसार में सूर्य का प्रकाश है, यदि आप भी इस अन्धेरी दुनिया में अपने भविष्य का साफ साफ फोटो समय से पूर्व देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्ट कार्ड पर किसी दिलपसन्द फूल का नाम लिख कर भेज दें बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आने वाले बारह मास का हानिलाभ, व्यापार, नौकरी में तरक्की, गिरावट, तबदीली, तन्दुरुस्ती, बीमारी, यात्रा, अकस्मात् न मालूम कारण से धन की प्राप्ति, किसी से नया मिलाप, औरत औलाद का सुख तारीख पोस्टकार्ड से लेकर वर्ष भर में पेश आने वाली सब बातों का खुलासा वाली मासिक वर्ष फल बनाकर केवल १।) रु० में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाकखर्च अलग होगा। बुरे ग्रहों के शान्ति का उपाय लिख दिया जायगा। ज्योतिष विद्या का चमत्कार एक बार अवश्य देखें।

श्री स्वामी शंकराचार्य ज्योतिष भवन
बीट नम्बर ३ अम्बाला छावनी
Shri Swami Shankeracharya Jyotish Bhawan
Beat No. 3 Ambala Cantt

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

[गतांक से आगे]

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी और उधर उस के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विकृत होकर अपकीति के रूप में फैल रही थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत होगया और चम्पा ने जमींदारी का काम सभाल लिया।

इन्हीं दिनों बिहार भूकम्प के बाद बेलूर में श्री रामनाथ तिवारी अत्यन्त उत्साह व लगन से सेवा का कार्य करते थे। उन्होंने एक भग्नावशेष से एक बालक की रक्षा की। ऐसे अनाथ बालकों के पालन पोषण का काम चम्पा और सरला की कोठी में था। रामनाथ भी वहीं बालक को ले गया। शिशु रक्षा-गृह का उद्घाटन हो गया।

(६)

बेलूर से पटना वापिस पहुंच कर रामनाथ ने रिलीफ कैम्प के अध्यक्ष को अपनी यात्रा का और बेलूर में रक्षा गृह की स्थापना का खूब मनोरंजक वर्णन सुनाया। इस वर्णन का साराश यह था कि बेलूर का रास्ता बहुत खराब है। कच्चे रास्ते में घोड़ागाड़ी पर जाना बहुत बड़े साहस का काम था, जो मैंने बड़ी सफलता से सम्पादित किया। रक्षा गृह की स्थापना का समाचार सुनाते हुए रामनाथ ने यह भी बताया कि जनता पर उसके स्थापन का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। यहां तक कि सभा मण्डप देर तक 'तिवारी जी की जय' के नारों से गूंजता रहा।

इन सब समाचारों का अध्यक्ष महोदय पर बहुत प्रभाव पड़ा। बिचारे दुबले पतले आस्तिक व्यक्ति थे, बोल उठे 'यह ईश्वर की कृपा है कि सब कार्य निर्विघ्न और सफलतापूर्वक हो गया।'

इस पर रामनाथ ने उच्च स्वर से हंसते हुए कहा—'वाह साहब, यह आपने क्या कहा। किया सब कुछ मैंने और कृपा ईश्वर की। इसीलिए तो मुझे ईश्वर से चिढ़ है कि वह किसी दूसरे की इज्जत नहीं देख सकता। काम हम करें, यश उसको मिले। यह कहा का न्याय है।'

अध्यक्ष महोदय महात्मा गांधी के पक्के शिष्य पूर्ण आस्तिक और अहिंसा की मूर्ति थे। रामनाथ की बात सुनकर चौंक उठे। उन्होंने एक बार रामनाथ के कपड़ों को ध्यान से देखा कि शुद्ध खद्दर के हैं या नहीं। देखा कि वह शुद्ध खद्दर के ही थे। फिर उस के मुंह की ओर देखा कि वह मजाक कर रहा है या दिल की बात कह रहा है। कई क्षण तक देखकर भी वह इस प्रश्न का उत्तर न पा सके तो बोले "तिवारी जी, यह आप क्या कह रहे हैं। एक सत्याग्रही को ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।'

रामनाथ ने तुरन्त उत्तर दिया 'माफ कीजिएगा महाशय जी, आप जैसों ने ही तो ईश्वर को दुराग्रही बना रखा है। अगर वह सच्चा सत्याग्रही होता तो वह फौरन बोल उठता कि मेरी इसमें कोई कृपा नहीं है। यह तिवारी के परिश्रम का फल है।' वाक्य पूरा करके रामनाथ ताली बजा कर हंस पड़ा। अध्यक्ष महोदय इस उत्तर से अप्रतिम होकर चुप हो गए।

अध्यक्ष महोदय से निबट कर रामनाथ रिलीफ कैम्प से बाहर जा रहा था कि दरवाजे पर बलधारीसिंह से भेंट हो गई। बलधारीसिंह रामनाथ से बहुत नाराज था। यह आश्चर्य की बात है कि सीधे हारने की अपेक्षा मनुष्य बेवकूफ बन कर अधिक क्षुब्ध हो जाता है। बलधारीसिंह भी दिल ही दिल में रामनाथ से बहुत क्रुद्ध रहा था और मनसूबे बांध रहा था कि जब रामनाथ मिलेगा, तो खूब आड़े हाथों लूंगा। अब रामनाथ सामने आया तो बलधारीसिंह का मनसूबा मनसूबा ही रह गया, क्योंकि रामनाथ की प्रतिभा बलधारीसिंह के मनसूबे से अधिक तेज निकली। बलधारीसिंह को देखते ही रामनाथ ने उसके कन्धे पर हाथ मारते हुए उच्च स्वर से कहा—

'वाह यार! तुमने तो हमें खूब ही चकमा दिया। उस दिन गाव से लाकर सारा दूध गटागट चढ़ा गये और फिर लौट कर दर्शन भी न दिये। बच्चा बेचारा रास्ते भर रोता रहा।'

रामनाथ की आवाज से खिंच कर बहुत से लोग वहा इकट्ठे हो गये और पूछने लगे कि क्या हुआ? बेचारा बलधारीसिंह रामनाथ के उस अचानक आक्रमण से ऐसा बौखला गया कि एक दम कुछ जवाब न दे सका। रामनाथ ने जोर से हसते हुए अपने पहले आरोप की व्याख्या जारी रखी। 'अजी, आप क्या पूछते हैं इन वकीलों का हाल? कांग्रेस में आ गये तो क्या हुआ। हैं तो वकील ही। हमें उस दिन खूब ही उल्लू बनाया, इत्यादि। रामनाथ की उस लम्बी व्याख्या के मध्य में बलधारीसिंह ने कई बार यत्न किया कि लोगों के सामने अपना पक्ष पेश करे, परन्तु उस नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता था। मैदान रामनाथ के हाथ रहा। बलधारीसिंह अप्रतिम सा हो कर कुड़कुड़ाता हुआ वहां से चला गया।

कैम्प से लौट कर रामनाथ अपने डेरे पर आया और निवृत्त होने में लग गया। भोजन आदि से निबट कर आराम करने के लिये लौटा ही था कि रिलीफ कैम्प के अध्यक्ष की चिट्ठी ले कर एक स्वयसेवक पहुंच गया। रामनाथ ने चिट्ठी खोल कर पढ़ी। उस में रामनाथ को आदेश दिया गया था कि वह यथा सम्भव शीघ्र मुंगेर पहुंच कर, वहां के रिलीफ के काम में सहायता दे। रामनाथ ने उस पत्र को दो-तीन बार पढ़ा, फिर उसे लिफाफे में बद करके वास्कट की जेब में डाल लिया और स्वयसेवक से कहा कि अध्यक्ष महोदय को उत्तर दे देना कि मैं शीघ्र ही उनसे मिलने आऊंगा। स्वयसेवक चला गया और रामनाथ लेट कर विचार करने लगा। स्वाभाविक बात तो यह थी कि वह अध्यक्ष की आज्ञा पाते ही मुंगेर के लिये रवाना हो जाता, परन्तु रामनाथ के दिल ने वैसा स्वीकार नहीं किया। बेलूर से चलते हुए ही उसने संकल्प कर लिया था कि वह दो एक दिन में फिर वहीं लौटेगा। पटना पहुंच कर वह सकल्प कुछ अधिक दृढ़ हो गया। उसका दिल बेलूर जाने को क्यों चाहता है, इस प्रश्न का समाधान रामनाथ ने मन ही मन में कई तरह से कर लिया था। जिस बच्चे को रक्षागृह में छोड़ा है, उसकी देख भाल भी तो करनी चाहिये। रक्षागृह में कुछ अन्य बच्चों का पहुंचना भी आवश्यक है। इस प्रकार की कई युक्तियों से उसने अपने मन को समझा लिया था कि देश के कल्याण के लिये मेरा इस समय बेलूर वापिस जाना और उस के आस पास रहना आवश्यक है। मूल कारण केवल इतना ही था कि उसका दिल बेलूर जाने के पक्ष में था। दार्शनिक लोग कहते हैं कि मनुष्य युक्तियों की सहायता से सत्यासत्य का निर्णय करता है, परन्तु असल बात इस से बिल्कुल उल्टी है। मनुष्य प्रायः हृदय की प्रेरणा से निर्णय करता है और उस निर्णय के समर्थन में मस्तक को लगा कर युक्तिया घड़ता है। रामनाथ भी साधारण मनुष्य था, उसका जी चाहता था कि बेलूर वापिस जाऊं। इस इच्छा की पुष्टि के लिये उसने कई सुन्दर सुन्दर युक्तिया तलाश कर लीं। वे सभी युक्तिया सार्वजनिक हित के आधार पर बनायी गई थीं।

रामनाथ को बेलूर की ओर खींचने वाली मुख्य रूप से कौन सी चीज थी, यह अभी वह स्वय ही स्पष्ट रूप से नहीं जानता था। वहा का सहानुभूतिपूर्ण वातावरण, चम्पा का माता के सदृश व्यवहार और सरला की सरल मूर्ति— इनमें से क्या मुख्य था और क्या गौण, यह अभी रामनाथ नहीं समझ रहा था। वह इतना तो अनुभव कर रहा था कि बेलूर के सम्पूर्ण चित्र की पृष्ठ भूमि में उसे सरला की मूर्ति दिखाई दे रही थी, परन्तु केवल वही चीज अकेली उसे बेलूर की ओर खेंचती हो ऐसा नहीं है। वहा की प्रायः सभी चीजों ने उसे आकृष्ट किया था। उसे यह बात भी याद आ रही थी कि कैलाश बाबू के सामने आने पर सरला घबरा गई थी, और चाहती थी कि किसी तरह कैलाश का कोठी में आना बन्द किया जाये। उस समय रामनाथ ने मन ही मन में यह सकल्प कर लिया था कि वह कैलाश को वहा से निकाल कर छोड़े। वह अनुभव करता था कि इस बात से सरला प्रसन्न होगी।

बहुत देर तक रामनाथ के मन में कर्तव्य और भावुकता का सघर्ष होता रहा। कर्तव्य कहता था कि अध्यक्ष की आज्ञा के अनुसार मुंगेर जाकर सेवा के कार्य में लगना चाहिए, और भावुकता कहती थी कि बेलूर जाना चाहिए। अन्त में, भावुकता की जीत हुई। रामनाथ इस परिणाम पर पहुंचा कि कुछ और बच्चों को लेकर शीघ्र ही बेलूर के रक्षागृह में प्रविष्ट कराने के लिए जाने की आज्ञा अध्यक्ष से मागी जाये।

रामनाथ पहले रिलीफ कैम्प के शिशु विभाग में पहुंचा, वहा जाकर पूछताछ की तो पता चला कि उस समय तो कोई शिशु वहा नहीं है। परन्तु दूसरे दिन प्रातः काल २ बच्चों के आने की आशा है। इस समाचार से सन्तुष्ट होकर रामनाथ अध्यक्ष के कार्यालय में पहुंचा, तो देखा कि बा० बलधारी सिंह डाक की चिट्ठियें खोल खोल कर अध्यक्ष महोदय को सुना रहे हैं। और अध्यक्ष महोदय जो उत्तर

बता रहे हैं, उन्हें नोट करते जाते हैं। पूछने पर विदित हुआ कि ब्रह्मचारी सिंह को अध्यक्ष का पी० ए० (निजी सहायक) नियुक्त किया गया है। अब रामनाथ की समझ में आगया कि उसे उतना शीघ्र मुंगेर चले जाने का हुक्म क्यों दिया। इस बात के ध्यान में आते ही उसका यह निश्चय और भी दृढ हो गया कि वह मुंगेर न लौट कर वैलूर वापिस जायेगा।

(क्रमशः)

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

प्रेम दूती

श्री विराज जी रचित प्रेम काव्य। सुरुचिपूर्ण श्रृंगार की सुन्दर कवितायें। मू० ।॥) डाक व्यय पृथक।

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

"गृहस्थ चिकित्सा"

इसमें रोगों के कारण, लक्षण निदान, चिकित्सा एवं पथ्यापथ्य का वर्णन है। अपने ४ रिश्तेदारों व मित्रों के जुदे जुदे स्थानों के पूरे पते लिखकर भेजने से यह पुस्तक मुफ्त भेजी जाती है। पुस्तक मिलने का पता—

के० एल० मिश्र वैद्य, मथुरा।

७५०० रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं।

आटोजम (विटामिन टानिक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नज़र तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विटजरलैंड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं पर उसने एक युवती से ब्याह भी कर लिया।

आटोजम के बर्तने से ८० तथा ६० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्ट्रेसें हष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगती हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इसका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाए रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। [बाल] काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षकता तथा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Otogem　　　　आटोजम　　　　Otogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रक्खा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंग्लैंड में सहस्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। आटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशा में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देखें फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। आटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिए इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जाएगा। आज ही इसे मंगवाने के लिए आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता:—

दी मैकसो लैबोरेटरीज ५७७ बेला रोड

पोस्ट बक्स नं० ४५ (A. B. D.) देहली।

विजय पुस्तक भण्डार दिल्ली

द्वारा प्रकाशित और प्रचारित पुस्तकें

जीवन-चरित्र—

[१] नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मूल्य १)
[२] पं० मदनमोहन मालवीय ,, १।)
[३] महर्षि दयानन्द सरस्वती ,, १॥)
[४] पं० जवाहरलाल नेहरू ,, १।)
[५] मौ० अबुलकलाम आजाद ,, ॥=)
[६] श्री सुभाषचन्द्र बोस (संक्षिप्त),, ॥=)

अन्य पुस्तकें—

[१] जीवन संग्राम ,, १)
[२] सरला की भाभी (उपन्यास) ,, २)
[३] मैं भूल न सकूं (कहानी) ,, १)
[४] जीवन की झांकियां
१—मैं चिकित्सा के चक्र व्यूह कैसे निकला ।≈
२—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन ।
॥) दोनों खण्ड का ॥।)
[५] आयुर्वेदिक प्रतिचिकित्सा ,, ।)

भण्डार द्वारा प्रचारित पुस्तकें

विविध—

[१] त्याग का मूल्य (उपन्यास) मूल्य २)
[२] तिरंगा झंडा (एकांकी नाटक) ,, १।)
[३] नया आलोक नई छाया (कहानी),, २)
[४] प्रेमदूती (कविता) ,, ॥)
[५] बहिन के पत्र (कृष्णचन्द्र वि०),, १)
[६] वैदिक वीर गर्जना ,, ॥=)
[७] दिल्ली चलो ,, २)
[८] नेताजी सरहद पार ,, १।=)
[९] आचार्य रामदेव (जीवन झांकी),, १॥)
[१०] आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब हीरक जयन्ती स्मारक ग्रन्थ ,, १)
[११] हमारे घर ,, ॥=)
[१२] महाराणा प्रताप ,, १॥)
[१३] हरिसिंह नलवा ,, १।)
[१४] शिवाजी ,, १॥)
[१५] आर्यसमाज हैदराबाद ,, १)
[१६] विधान परिषद् ,, १)
[१७] राष्ट्रपति का भाषण ,, १।)
[१८] मेरठ कांग्रेस ,, १)
[१९] मानवधर्म प्रचारक ,, २)
[२०] शिवा बावनी ,, ।)
[२१] जलता भारत ,, ॥)
[२२] बृहत्तर भारत (ऐतिहासिक) ,, ७)

उपयोगी विज्ञान—

[१] साबुन विज्ञान ,, २)
[२] तैल विज्ञान ,, २)
[३] तुलसी ,, १)
[४] अंजीर ,, १)
[५] देहाती इलाज ,, १)
[६] सोडा कास्टिक ,, १॥)

डाक व्यय पृथक होगा। पुस्तकविक्रेताओं को उचित कमीशन दिया जाता है।

विजय पुस्तक भंडार,
श्रद्धानंद बाजार दिल्ली।

रहीम और रहिमन

[पृष्ठ १० का शेष]

तो मैं यहां भी रहने को तैयार हू किन्तु ऐसी सूरत में तुमको एक काम करना होगा।'

रहीम ने कहा—'क्या ?'

रहीमन ने कहा 'मुझे आठ आना भर अफीम ला दो। उसे हर समय अपने पास रखू गी। अगर बुरा वक्त आया तो झट से उसे निगल जाऊ गी। जिससे तुम भी खुश रहो और अस्मत भी नहीं जाने पाये।'

रहीम पुलकित हो उठा। आगे सरक कर उसने रहीमन को अपनी छाती से चिपका लिया।

× × ×

वकील जगत्सहाय उस गाव के सब से बड़े नेता थे। कांग्रेसी थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षपाती। शहर के सारे मुसलमानों पर उनका असर था। नहीं था तो नबी और उसके साथियों पर। आज बहुत से मुसलमान उनके यहा आये हैं, सलाह लेने कि वे इस गांव को छोड़ दें या नहीं ?'

वकील साहब की बगल में एक बड़े मियां बैठे थे। नाम था खुशबख्त। काली सर्ज की अचकन और चूड़ीदार पाजामा पहिने थे वे। सिर पर तुर्की टोपी थी। बाकी सब फर्श पर बैठे थे। रहीम भी एक तरफ एक कोने में बैठा था।

खुशबख्त ने कहा 'ये सब लोग भोपाल जा रहे हैं। वकील साहब मैंने इन्हें हर तरह समझाया लेकिन ये लोग मानते ही नहीं हैं।'

वकील सहाब अपनी तेजस्वी आंखों से सामने बैठे सब की ओर देखते बोले 'आप लोग यहा से जाने का खयाल छोड़ दें। सोचो यह तुम्हारा वतन है और अपने वतन को छोड़कर जाने से तो उसके लिये मरजाना बेहतर है।'

सब एक दूसरे की ओर देखने लगे। तब रहीम ने कहा 'आप बजा फरमा रहे हैं वकील साहब, लेकिन घर में औरतें नहीं मान रही हैं, दो-दो दिन से खाना भी नहीं खा रही हैं। बड़ी मिन्नतें और आरजू के बाद थोड़ा बहुत खाती हैं।'

वकील साहब उसके कहने पर मुस्कराये। सोचा, लड़का जवान है। सुलझी हुई सुलझी सी बातें। किन्तु वातावरण गम्भीर होने से वह विचार छोड़कर बोले 'क्यों ऐसी क्या बात है ?'

वे कहती हैं कि "यहां जल्दी ही पंजाब से जो हिन्दू आवेंगे वे औरतों की बेइज्जती करके उन्हें मार डालेंगे। उनके मर्दों को मार डालेंगे इसलिये भोपाल चलो।"

"क्यों भोपाल क्यों जाना चाहती हैं वे ?"

रहीम ने कहा—"वह मुसलमानी रियासत है। वहां उनकी अस्मत पर कोई खतरा नहीं आ सकेगा। नबी और नबी की मां ने कहा है कि यह हिन्दू रियासत है, हिन्दुओं का ही साथ देगी।"

जगत्सहाय जी ने कहा "भई वाह, यह एक ही रही। अरे भाई यही तो बातें जहर फैला रही हैं। हिन्दू रियासत हिन्दुओं का साथ देगी और मुसलमानी रियासत मुसलमानों का साथ देगी, यही बातें हम दोनों को एक दूसरे का दुश्मन बना रही हैं। भाइयों, किसी के बहकाये में न आओ। न अपना वतन छोड़ कर कहीं जाओ। यहीं रहो। सभी हुकूमतें अपनी अपनी रिआया की हिफाजत की जिम्मेदारियों को जानती हैं। हुकूमत किसी एक जाति पर नहीं की जाती, पूरी रिआया पर, जिस में सभी जातियां शामिल हैं, की जाती है। पागल मत बनो। यहीं रहो।"

एक प्रौढ़ महाशय बोले 'भोपाल से हम लोग पाकिस्तान चले जायेंगे। अब तो वही हमारा वतन है।'

जगत्सहाय जी ने कहा—'दूर के पहाड़ बड़े सुहावने लगते हैं मुहम्मदअली। और जब पहाड़ पर पहुंच जाते हैं तब पहाड़ की असलियत हम देखते हैं कि उसमें बड़ी बड़ी खोहें हैं। बड़ी बड़ी चट्टानें हैं, कांटे बिछे हुए हैं, चढ़ाव हैं, उतार हैं। याद रक्खो जो इज्जत हम लोगों की ओर से तुम्हें यहां मिल रही है वह वहां नहीं मिलेगी। पंजाबी मुसलमान रहेंगे मालिक। तुम रहोगे मिलों के काम करने वाले मजदूर। जाओ। पाकिस्तान जाने के लिये हम नहीं रोकते। जाओ। लेकिन सोच विचार करके जाओ।"

इसी समय एक मुसलमान अत्तारने उस बरामदे में प्रवेश किया। सारा कमरा सुगंध से भर गया। "आइये, बैठिये" कहने के पूर्व ही वह बरामदे के ठीक बीच में आकर जम कर बैठ गया। उसने न इधर देखा, न उधर। इत्रका बक्स खोला और उसमें से इत्र की एक शीशी निकाली, पाच फाये बना कर उन्हें हाथ में लेकर एक बार सबकी ओर बारी-बारी से देखा। फिर बड़े मियां की ओर एक फाहा बढ़ायी। बड़े मियां ने ले ली। अत्तार ने बड़े अदब से झुक कर सलाम किया। फिर वकील साहब को एक फाहा दी। वही अदब और वही सलाम।

अत्तार का ठाठ देखते ही बनता था। बनारस का जरी का साफा वह बांधे था। सर्ज की काली अचकन और चूड़ीदार पजामा पहिने था वह। हाथ की दो उंगलियों में सोने की अंगूठियां थीं, आंखों में सुरमा लगा था। बालों पर खिजाब। उसने वकील साहब और बड़े मियां की ओर देख कर अदब से कहा "इस शहर का नाम बहुत दिनों से सुन रहा था। सुना था कि इत्र के जितने शौकीन इस शहर में रहते हैं, दुनिया के परदे पर और कहीं नहीं है। बड़ी तमन्ना थी आप लोगों से मिलने की।"

बड़े मियां के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गई। वकील साहब के ओठों पर भी हंसी खेलने लगी।

बड़े मिया ने कहा "खां साहब, आपने भी हमारी वह कद्र की है जो आज तक किसीने नहीं की। हम आपके शुक्रगुजार हैं। आपने जो कुछ कहा बिल्कुल सच कहा। एक एक तोला इत्र जब तक इस शहर का हर एक इन्सान अपने शरीर पर नहीं मल लेता है, तब तक घर से बाहर नहीं निकलता। जिसकी महक शहर से बाहर दस दस मील तक पहुंच जाती है।'

अत्तार भी कम नहीं है, उसने कहा 'हां, हां, बड़े मिया, आप ठीक कह रहे हैं, अफवाह भी यही है, लेकिन आपके शहर के इत्र से मेरा इत्र बहुत बढ़िया है, इसलिए उसकी महक का जादू मुझ पर नहीं चल सका। हां, बड़े मियां यह जो फाया मैंने आपको दिया है वह ५१) रु० तोले का है, गुलाब है यह असली गुलाब। मेरे पास ग्यारह रुपये तोले से लेकर १००१) रुपये तोले तक का इत्र है।'

बड़े मिया ने फिर एक बार उस फाये को सूंघा। गुलाब की सुगन्ध उड़ गई थी। और अब केवल सदल बोल रहा था। बड़े मियां हसे और बोले "ज्यादा मत बढ़ो खां साहब, हमारे शहर में इत्र के पारखी कम नहीं हैं। एक साल के बच्चे से लेकर १०१ साल के इन्सान तक सभी इत्र के सच्चे पारखी हैं।"

अत्तार है कि मात खाना जानता ही नहीं है। बड़े तपाक से बोला "बिलकुल सच, बिलकुल सच बड़े मिया। मैं जब इस शहर में घुसा एक घर के सामने एक औरत एक साल के बच्चे को लेकर खड़ी थी। मुझे देखते ही बच्चा मचल कर रो पड़ा और मेरी ओर उसने हाथ बढ़ा दिया। मैं भी कम नहीं हूं। आज पाच सौ वर्षों से मेरे खानदान में यही रोजगार चला आ रहा है। खानदानी इत्र फरोश हूं बड़े मिया, फौरन समझ गया कि इस बच्चे के अन्दर वह रूह है जो इत्र की कद्र करना जानती है। जो इत्र की कद्र करता है, हम उसकी कद्र करते हैं। वहीं एक चबूतरे पर बैठ गया और १००१ रुपये तोले के इत्र का फाया बनाकर उस बच्चे की ओर बढ़ा दिया। सच जानिए बड़े मियां, उस बच्चे ने उछल कर वह फाया अपने हाथ में ले लिया। सूंघा और खिल खिला कर हंस पड़ा।"

वहा बैठे सभी जोर से हंस पड़े। बड़े मिया का नूर उतर गया। वकील साहब ने कहा "मान गये खां साहब हम आपको। अब यह बताइए कि जनाब आ किधर से रहे हैं ?"

अत्तार मुस्कराया और बड़े अदब से बोला—"खाकसार इस वक्त सीधा भोपाल से चला आ रहा है।"

भोपाल का नाम सुनते ही सबके मन में कौतूहल जाग्रत हो गया। वकील साहब ने कहा "क्या हाल हैं आजकल भोपाल के।"

अत्तार का मुख खिल उठा। आंखें चमक उठीं। उसने बड़े अंदाज से कहना आरम्भ किया "क्या कहने हैं भोपाल के। आजकल वहां हिन्दुस्तान के कोने कोने से मुसलमान जाकर इकट्ठे हो रहे हैं। मगर उनसे हिन्दु भाइयों को जरा भी तकलीफ नहीं है। हिन्दु मुसलमान भाई भाई की तरह रहते हैं भोपाल में। एक ही होटल में एक सीट पर बैठकर वहां हिन्दु मुसलमान चाय पीते हैं। अगर किसी ने जरा भी बदमाशी की तो फौरन गोली से मार दिया जाता है। एक तरफ हैदराबाद की, एक तरफ पाकिस्तान की, एक ओर हिन्दुस्तान की, एक तरफ भोपाल की फौजें लगी हैं। अगर किसी का बच्चा खो जाता है तो तत्काल

स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा

ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा,
भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा,
इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।
मूल्य १॥) रुपया।

मैनेजर—
विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

उसको उसके मा बाप के पास पहुंचा दिया जाता है। ऐसे काम हो रहे हैं जैसे साचे में ढले हुए। चार स्पेशलें मुसल-मान भाइयों को लेकर पाकिस्तान जाती हैं और चार हैदराबाद को जाती हैं।'

अख्तार के कहने का ढंग इतना प्रभावशाली था कि सभी एकटक उसकी ओर देख रहे थे। नवयुवक समाज खूब प्रभावित हुआ। नहीं हुए तो एक बड़े मिया।

वकील साहब ने कहा "खाने पीने का क्या इन्तजाम है वहा आजकल ?"

अख्तार ने ऐसे मुंह बनाया जैसे किसी ने उसके मुह में शरबत उडेल दिया हो। बोला 'खाने पीने का जैसा इन्तजाम वहा है वैसा दुनिया के पर्दे पर और कहीं नहीं है। चना तो वहा घोड़ों को खिलाया जाता है। ज्वार, बाजरा गाय भैंसों को। इन्सान तो वहा गेहू ही खाते हैं। गेहू और शक्कर के तो वहा अम्बार लगे हैं। घी के टीन सैकड़ों की तादाद में हर एक दूकान में रखे रहते हैं। भाव भी बिल्कुल सस्ता छै सेर का गेहूं, दो सेर की शकर, छै छटाक का घी। पैसा देते जाओ और लेते जाओ। दो पैसे कप चाय मिलती है वहा। बारह आना सेर मिठाई तो वहा कुत्ते नही खाते।'

बड़े मिया के चेहरे पर घृणा के भाव उदित हो गये। वे कुछ कहना ही चाहते थे कि वकील साहब ने कहा—'तो इस हिसाब से भोपाल बहिश्त है आज कल या साहब।'

अख्तार बोला 'हा जनाब बिलकुल जन्नत। हा, अब सौदे की बातचीत हो जाये। कौन-सा और किस भाव का इत्र दूं जनाब को ?' वकील साहब ने कहा 'अभी तो मेरा इत्र खरीदने का विचार नहीं है।'

अख्तार ने पेटी बन्द की और चला गया। वहा बैठे हुये सभी उसके पीछे पीछे चले गये। ऐसे ही जैसे किसी जादूगर का खेल समाप्त हो जाने पर मोहल्ले के लड़के जादूगर के पीछे हो लेते हैं।'

बड़े मिया नहीं गये थे। बोले 'बकता है, राशन की जैसी तकलीफ यहा है, वैसी ही वहा है। भोपाल से कल ही जो रम-जानी आया है वह कह रहा था।

वकील साहब ने कहा—'किसी संस्था का एजन्ट मालूम होता है।'

अख्तार दो दिन उस गाव में रहा। दो दिन में ही उसने अलादीन के चिराग की भाति 'अल्ला' के नाम पर सब के दिल में 'दीन' के चिराग जला दिये और चला गया। अलादीन के चिराग की तरह इस चिराग में भी बड़ा असर था। एक एक करके उस गाव के सभी मुसल-मान चले गये।

× × ×

रहीम और रहीमन जाने लगे तो वकील लगे ने कहा "तुम भी जा रहे हो रहीम"

"हा, वकील साहब खुदा की ऐसी ही मर्जी थी।" रहीम ने कहा।

रहीमन भी नीची निगाह करके बोली "बेइज्जती से तो औरतों का मर जाना ही बेहतर है। इसी लिए जा रहे हैं हम आखिर मुसलमानी रियासत है।"

× × ×

एक माह बाद सहज ही दो मित्रों को साथ लेकर अमरूद खाने बाग में गये वकील साहब। देखा तो रहीम मौजूद है। वकील साहब साश्चर्य बोले "अरे, तुम आ गये रहीम ?"

रहीम बिलकुल दुबला हो गया था। चेहरा काला पड़ गया था उसका बाल रूखे और आखें गढ्ढे में धस गई थीं उसकी। एक आह खींच कर वह बोला "हा वकील साहब आ गया।"

"चलो ठीक हुआ, रहीमन मजे में है ?"

रहीम की आखों में आसू आ गये, कापती आवाज में बोला "रहीमन कहा चली गई कुछ पता नहीं चला वकील साहब। एक दिन अकेली वह, अपनी बैरक से निकल कर दूसरी बैरक में चली गई अपनी सहेली से मिलने। फिर लौट कर नहीं आई। सब बैरकें एक सी होने से अपनी बैरक भूल गई बेचारी। किसी गुण्डे की बैरक में घुस गई। न मालूम कहा कहा से मुसल मान वहा आ गये हैं, वहा खुदा जाने उसका क्या हुआ। बहुत तलाश किया। नहीं मिली। अख्तार के धोखे में आ गया मैं और रहीमन को खो बैठा। अख्तार गुण्डों का एजेंट था, उसका काम जगह जगह के मुसलमानों को बहकाना है। भोपाल में सब यही कहते थे। रहीमन जरूर मर गई होगी वकील साहब, पर अस्मत उसने नहीं जाने दी होगी। आठ आना भर अफीम हर वक्त अपने पल्ले में बाधे रहती थी वह।"

वकील साहब ने कहा "इन्सान की इज्जत और अस्मत इन्सान ही बचा सकता है भाई! सच्चे इन्सान किसी एक जाति में किसी एक मजहब में और किसी एक रियासत में ही पैदा नहीं होते, वे सब जगह, सब मजहबों में, सब जातियों में पैदा होते हैं। मुसलमानी रियासत में जाकर भी तुम अपनी बीबी खो बैठे। मुमकिन है यहा रहते तो यह मुसीबत तुम पर नहीं आती, आखिर हम सब एक वतन के थे, हैं, और रहेंगे।

रहीम चीख कर रो उठा।

[अख्तार की घटना बिल्कुल सच्ची है।—ले०]

सन् ४७ का क्रान्तिकारी साहित्य
'पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा'

पंजाब के उपद्रवों की पृष्ठभूमि पर लाल लोहू से हिन्दी के श्रेष्ठ कहानीकार विष्णु रामचन्द्र तिवारी, देवदत्त अटल, श्रीराम शर्मा 'राम' आदि के द्वारा विभिन्न दृष्टिकोणों से लिखी गईं रोमाचकारी कहानिया पढ़िये। हमारा दावा है कि पुस्तक पढ़ते समय आप की आखों से आग की चिनगारिया निकलने लगेंगी, और शरीर क्रोध से कापने लगेगा। पृष्ठ संख्या लगभग २००, सजिल्द पुस्तक का मूल्य २), डाकव्यय रजिस्ट्री ।=)

प्रेस में — नवीन प्रकाशन — प्रेस में

रक्तरंजित सन् १६४७

यह पुस्तक सन् १६४७ के देश के उत्थान-पतन, क्रमिक विकास और परिवर्तनों का सजीव चित्रण है। पृष्ठ संख्या लगभग १५०, मूल्य डाकव्यय सहित १।||=)

—आज ही लिखिये—

स्वास्थ्य सदन, चावड़ी बाजार (घ) दिल्ली

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में है, जो थोड़े ही मूल्य का है।

यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० २०१ कीमत ४॥=) क्वालिटी नं० २१२ कीमत ६।||) डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० २२० कीमत ८॥), पैकिंग व डाकव्यय १=)

नोट—एक समय में ६ कमरों के ग्राहक को कैमरा नं० २२० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस

वेस्ट एण्ड ट्रेडर्स (V. A. D.) पोस्ट बाक्स १६६, दिल्ली।
West End Traders, (V. A. D.) P. B. 199, Delhi.

आत्मरक्षार्थ आटोमेटिक ६ खानोंवाली पिस्तौल

लैसन्सकी कोई जरूरत नहीं ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डरानेके लिए बड़े काम की है। दागनेपर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआं निकलता है।

असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥ इंच × ४ इंच और वजन १२ औंस मूल्य ८) और साथ में एक दर्जन गोलियां (एलार्म सिग्नल) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों के दाम २) स्पेशल लम्बे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। बेल्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंगका अतिरिक्त १०)। प्रत्येक आर्डर के साथ एक शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसन्द होने पर दाम वापस

INTERNATIONAL IMPORTERS, P. B. 199, Delhi.
इंटर नेशनल इम्पोर्टर्स पो० बाक्स १६६, दिल्ली।

यूरोप पुनर्निर्माण (मार्शल) योजना

[पृष्ठ ९ का शेष]

…त हो सकता है··· १७ अरब डालर …ी मांग भी बहुत बड़ी है, परन्तु …छले महायुद्ध में हुए हमारे खर्च का …लग ५ प्रतिशत है। (युद्ध में अमे-…का ने प्राय: साढ़े तीन खरब डालर …र्च किए थे)………. और यह …कम अगले चार वर्षों में होने वाली …युक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय आम-…नी का केवल ३ प्रतिशत है…… …स सहायता के फलस्वरूप युरोप के …ातन्त्र—प्रिय देश पुनः अपने पाव पर …ड़े हो सकेंगे, अपना आर्थिक पुनर्निर्माण …र सकेंगे और अधिनायकशाही के …रुद्ध प्रजातंत्र शक्तियों का साथ देंगे।

… सत्तरह अरब डालर की यह सहा-…ता १ अप्रैल १९४८ से लेकर ३० …१९५२ तक के काल में देने के …ए है। पहले १५ महीनों के लिए …ष्ट्रपति ने ६ अरब ८० करोड़ डालर …ांग की है। इस रकम से ६० करोड़ … पश्चिमी जर्मनी के लिए हैं। इन …६ अरब के अतिरिक्त २ अरब …करोड़ की सहायता अंतर्राष्ट्रीय बैंक …२ अरब ७० करोड़ की सहायता …क्षिणी अमेरिका तथा कनाडा से तथा … करोड़ की सहायता स्वयं १६ राष्ट्र …ल कर देंगे। अपने दिये हुए धन में …आधे से (साढे आठ अरब डालर) …क्त राज्य अमेरिका अपने देश में ही …मान खरीदेगा और बाकी आधे से …सरे देशों से (विशेषकर दक्षिण अमे-…का) अनाज, रबर, मास, खरीद कर …जेगा।

इस सारी क्रय विक्रय तथा मार्शल …जना का सचालन करने के लिए …क 'चलता फिरता राजदूत' नियुक्त किया …यगा, जिसका वार्षिक वेतन २५००० …लर होगा। प्रधान सचालक का वेतन …०००० डालर तथा सहकारी सचालक …ा १७५०० डालर होगा। प्रधान …चालक के अन्तर्गत १५००० १५००० …ालर के दस सहकारी होंगे, तथा सह-…री। सचालक के अन्तर्गत १०००० …५००० डालर के ५० अधिकारी।

समस्त मार्शल योजना के अन्तर्गत युरोप को जो सामान भेजा जायगा, उसका …ौरा निम्नलिखित हैं—

इसमें ३—४—५ वर्षों के पृथक …क नही दिये गये, परन्तु जोड़ में उनका …मान भी शामिल कर लिया गया है—

	अप्रैल-जून १९४८	जून-जून १९४८-४९	कुल ५ वर्षों का जोड़
	हजार टन	हजार टन	हजार टन
गेहूं तथा …नाज (रोटी के योग्य)	११७५	५८२०	२२६८५
दूसरे अनाज	८०	११२५	६४३०
खाने का तेल	३६	१४६	६६६
पीसा आटा	४८	१९८	१०४६
चीनी	४२	१३८	४३०
मास	७	२३	२३४
पनीर	४४	९०	३०६
डब्बे में बन्द दूध	८०	१६०	५०६
सूखा दूध	६३	१२५	४३५
अण्डा	२०	४०	१२०
सूखे फल	३२	१२१	४३८
चावल	५	२६	१२९
दाल	३७	१५०	५०२
ताजा फल	३६	३३२	१७७४
तम्बाखू	५१	२०५	८८५
रुई	१७०	५२१	२३३०
नाइट्रोजन	१२	७०	१२१
फासफोरस	२१	८३	३५३
कोयला	१०,२५०	३३०००	६६५१७
पेट्रोल	५३७१	२३६०३	१०७९१५
लोहा तैयार	४१४	१६२५	६५५१
लोहा आधा तैयार	१८७	७४८	३१२१
लोहा कच्चा	२०	८०	१३५
कृषि मशीनरी	×	१३६३	५४५१
कोयले की खानों की मशीनें	×	८१९	२०६७
लाहे की दूसरी मशीने	×	४८१	१९२७
लकड़ी काटने की मशीनें	×	१६९	६२५
बिजली के सामान	×	९५०	३४५७
	हजार	हजार	हजार
बड़ी बड़ी लारिया	१३	५४	१५२
रेलगाड़ी के डिब्बे	×	२०	१६

अमेरिका की शर्तें

इसमें से पेट्रोल सारा का सारा दूसरे देशों से खरीद कर भेजा जायगा। मार्शल योजना के अन्तर्गत जिन देशों को सहायता दी जायगी, उनको सयुक्त राज्य अमेरिका के साथ निम्नलिखित शर्तों पर कार्य करना होगा—

(१) अपने उद्योगधन्धों और कृषि की उन्नति करनी होगी, ताकि चार वर्ष के काल के उपरान्त इन दोनों दृष्टियों से वह देश आत्मनिर्भर हो जाय।

(२) अपनी मुद्रा का ठीक सचालन करना होगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय पर दृढ़ और स्थायी करना होगा।

(३) अपने तथा मार्शल योजना के अन्तर्गत सहायता पाने वाले अन्य देशों के बीच व्यापार नियंत्रण ढीले करने होंगे, ताकि वस्तुओं का आदान-प्रदान सुगमता से हो सके।

(४) सहायता पाने वाले सब देशों में आपस में आर्थिक सहयोग और सहकारिता का विकास करना होगा।

(५) सयुक्त योजनानुसार खनिज पदार्थों और कच्चे माल की अधिक जरूरत होगी, उसकी विशेष रूप से उत्पादन करना होगा तथा सयुक्त राज्य अमेरिका को उचित मूल्य देने पर उसके उचित उपयोग का अधिकार होगा।

(६) एक विशेष खाते के अन्तर्गत जितनी सहायता मिले, उसी के बराबर स्थानीय मुद्रा जमा करनी होगी, जिसका प्रयोग दोनों सरकारों (अमेरिका तथा अन्य) के संयुक्त परामर्श से होगा।

(७) देश में संयुक्तराज्य अमेरिका से मिलने वाली सहायता का प्रचार करना होगा तथा सहायता के उपयोग की प्रगति के सम्बन्ध में अमेरिका को सूचित करते रहना होगा।

(८) सहायता उपयोग करने की योग्यता देखते हुए अधिक या कम सहायता देन तथा सहायता बन्द करने का अधिकार संयुक्त राज्य अमेरिका को होगा।

इस रूपरेखा के साथ मार्शल योजना राष्ट्र तथा ससार के सम्मुख आ चुकी है। उधर रूस तथा उसके साम्यवादी साथियों ने मार्शल योजना के विरुद्ध राजनीतिक युद्ध छेड़ रखा है। परन्तु मार्शल योजना का भविष्य उस युद्ध से भी बढ़कर स्थानीय राजनीति पर निर्भर है। केवल ५४ करोड़ की अस्थायी सकटकालीन सहायता देने में कांग्रेस ने ३३ दिन लगा दिये और तो भी राष्ट्रपति द्वारा मागी गई ५९ करोड़ ७० लाख की सहायता नही स्वीकार की। जबरदस्त सरकारी प्रचार के बावजूद भी रूस से शीघ्र युद्ध होने की समावना लोगों के मन से उतरती जा रही है। फ्रांस और इटली मे हाल में ही साम्यवादी दलों की पराजय के कारण तथा समय पड़ने पर परमाणु बम से रक्षा पाने की आशा के कारण अमेरिकन अपने को कुछ सुरक्षित समझने लगे हैं। सरकार को यह कहना है कि साम्यवादी दलों तथा रूस की इस पराजय का यही कारण है कि अमेरिका ने कड़ा रुख अपनाया और और युरोप को सहायता का वचन दिया परन्तु यदि यह नीति चालू नहीं रही तथा कथनानुसार सहायता न दी गयी तो रूस का खतरा फिर बढ़ जायगा। अधिकाश जनता तथा राष्ट्रपति की विरोधी राजनीतिक पार्टी (रिपब्लिकन) इस दलील को स्वीकार करने पर राजी नहीं दिखायी देती। फिलहाल सकट टल गया है अतः युरोप को सहायता देने की बनिस्वत जनता अपने पर लगे टैक्स कम करने को अधिक उत्सुक है।

निश्चित मत प्रकट करना असम्भव है। स्थिति किसी भी क्षण बदल सकती है। परन्तु वर्तमान स्थिति के अनुसार अधिक सम्भावना इसी बात की है कि उपर्युक्त मार्शल योजना इसी रूप में स्वीकार नहीं होगा। सहायता चार वर्ष के लिए एक साथ नहीं दी जायगी वरन् एक एक वर्ष के लिए अलग अलग कर दी जायगी। पहले १५ महीनों के लिए अधिक से अधिक ५ अरब डालर स्वीकार किये जायेंगे। उसकी सफलता असफलता पर भविष्य की सहायता निर्भर होगी।

—२५-१२-४७

(अमेरिकन कांग्रेस का अधिवेशन ६ जनवरी १९४८ से प्रारम्भ हो गया है। मार्शल योजना पर बहस शुरू हो गयी। इसी अधिवेशन मे चीन के लिए एक अलग सहायता योजना पेश हो रही है। दूसरी ओर रिपब्लिकन पार्टी की ओर से टैक्स कम करने का भी बिल पेश हो रही है। इस बिल और मार्शल योजना में गहरी टक्कर होगी।—स०)

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, हजारों ग्राहकों की सख्या में उनका ढूंढना असम्भव नामहै

माहवारी

यदि माहवारी ठीक समय पर न आये तो मुझे मिले फौरन ठीक कर दूंगी, यदि मेरे पास न आ सके तो हमारी दवाई मेन्सोल स्पैशल इस्तेमाल करें कीमत १२) एक्सट्रा स्ट्रांग दवाई जो कि एक दम असर करके अन्दर साफ कर देती है। कीमत २५)

बर्थ कण्ट्रोल

हमेशा के लिए पेदाइश औलाद बंद करने की दवाई बर्थकण्ट्रोल कीमत २५) दो साल के लिए १२) इन दवाइयों से माहवारी ठीक तौर पर आती रहती है और सेहत बहुत अच्छी हो जाती है। नवाबों महाराजों के सार्टीफिकेट।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती (आफ लाहौर)

२७ बाबरलेन न्यू देहली, (निकट बंगाली मार्केट प्लाट सरकस की ओर)

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ (१३२५ से १३५१) पहला बादशाह था जिसने भारतवर्ष में कागज़ के नोट प्रचलित करने का विचार किया। इस के अमितव्ययी राज्य प्रबन्ध ने राजकोष को ख़ाली कर दिया। इन कठिनाइयों से छुटकारा पाने का साधन सोचते सोचते उसे चीन देश के कागज के नोटों का ब्यान आया। उस ने सोचा "यदि चीन का सम्राट अपने देश में कागज़ के नोट सफलता पूर्वक चला सकता है तो क्यों न मैं भी अपनी राजकीय शक्ति के आधार पर चांदी की मुद्रा की बजाय तांबे की मुद्रा चलाऊं ?" परन्तु भारतवर्ष उस समय सांकेतिक सिक्के के लिये तैयार न था।

उस समय बचत चांदी या सोने की ईंटों या मुद्राओं को संचय करके ही की जाती थी। और अब सुल्तान के आदेश से वे केवल तांबे के साथ ही बदली जा सकती थीं। इस कारण प्रजा ने इन नये सिक्कों का दृढ़ता पूर्वक विरोध किया। और तांबे के यह सिक्के प्रचलित न हो सके। इस कारण इन व्यर्थ तांबे के सिक्कों के ढेर के ढेर जिन का मूल्य कंकड़ समान था तुग़लकाबाद में एकत्रित होने आरम्भ हो गये।

आज कल रुपये के मूल्य की अस्थिरता का तनिक भी भय नहीं। अब हर कोई कागज के नोट शीघ्र ही स्वीकार कर लेता है क्योंकि भारतवर्ष की सम्पत्ति इन का आधार है। यह भी आवश्यक नहीं की सोना चांदी के सञ्चय करने के रूप में ही बचत की जावे। आप अपनी बचत सुरक्षित मद में लगा कर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर यह ५०% बढ़ जाता है अर्थात् प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब आप ५) से १५,०००) तक इस मद में लगा सकते हैं। (थोड़ी बचत वाले ।), ॥), और १) के नेशनल सेविंग्ज स्टाम्प्स खरीद सकते हैं)। ये सर्टिफिकेट्स अब १८ मास के उपरान्त भुनाये जा सकते हैं (५ रु० के सर्टिफिकेट्स १२ मास के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC 214

तुलसी

ले० श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालंकार

तुलसी के प्रति पूज्य भाव रखने वाली देवियां और धर्म परायण लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि इस धार्मिक पौदे में कितने रहस्य छिपे पड़े हैं। तुलसी के पौदे की तरह यह पुस्तक भी हमारे हरघर में पहुंच जानी चाहिए। सचित्र, सजिल्द। मूल्य २)

मिलने का पताः—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।

पेट भर भोजन करिये

गेसहर—(गोलिया) गैस चढ़ना या पैदा होना, पेट में पवन का घूमना, भूख की कमी, पाचन न होना, खाने के बाद पेट का भारीपन, बेचैनी, हृदय की निर्बलता, दिमाग अशान्त रहना, नींद का न आना, दस्त की रुकावट वगैरह, शिका-यतों दूर करके दस्त हमेशा नियमित साफ लाती है, अन्न पचा कर कड़ाके की भूख लगाती है, आंत को ताकत देती है। शरीर में रुधिर बढ़ा कर शक्ति प्रदान करती है। आंव, लीवर तिल्ली और पेट के हर एक रोग में अद्वितीय दवा है। कीमत रुपया १।) तीन का ३॥) डाक खर्च अलग।

पता—दुग्धानुपान फार्मेसी ४ जामनगर

दिल्ली—एजेंट जमनादास क० चांदनी चौक

एजेन्सी के नियम और सूचीपत्र मुफ्त मंगायें

❋ विवाहित जीवन ❋

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मंगायें।

१—कोक शास्त्र (सचित्र) १॥)
२—८४ आसन (सचित्र) १॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १॥)
४—१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
५—सोहागरात (सचित्र) १॥)
६—चित्रावली (सचित्र) १॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो १॥)
८—गर्भ निरोध (सचित्र) १॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (बी० १५) अलीगढ़ सिटी।

पिकाक दंतमंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूढ़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के दुकानदार से मांगिये।

ऐजेन्टों की जरूरत है

ऐनसा ट्रेडिंग कम्पनी

चांदनी चौक, देहली।

सत्संग

किसी समय हमारे देश में दो ऋषि रहते थे। एक का नाम वशिष्ठ था और दूसरे का नाम विश्वामित्र। दोनों महा तेजस्वी थे। ऋषि वशिष्ठ जी सदा सत्संग में रहते थे, जबकि ऋषि विश्वामित्र जी सदा ही तपस्या में रत रहते थे।

एक बार दोनों ऋषियों में वादविवाद छिड़ा। वशिष्ठजी कहते थे कि तपस्या से सत्संग अच्छा है और विश्वामित्र जी तपस्या को सत्संग से अच्छा बतलाते थे। दोनों में बहुत समय तक वादविवाद होता रहा, परन्तु फिर भी तय न कर सके। अन्त में दोनों ने ही निश्चय किया कि इस बात को शेषनाग जी से जो कि इस पृथ्वी को अपने फन पर उठाये हुए हैं, तय कराना चाहिये। ऐसा निश्चय कर दोनों ही शेषनाग जी के पास पहुंचे।

दोनों ने ही अपना झगड़ा शेषनाग जी को सुनाया। शेषनाग जी ने कहा कि तुम्हारे इस झगड़े को तय करना तो बहुत सरल है, परन्तु इसके लिए मुझे पृथ्वी के ऊपर आना पड़ेगा तो उतने समय तक इस पृथ्वी को कौन रोकेगा?

विश्वामित्र जी ने कहा कि मेरी एक पल की तपस्या इस पृथ्वी को अपने स्थान पर रोके रखे। परन्तु जैसे ही शेषनाग पृथ्वी के नीचे से निकलने लगे, पृथ्वी नीचे जाने लगी। शेषनाग जी ने विश्वामित्र जी से कहा . पृथ्वी को अपने स्थान पर स्थिर रखने के लिए आपकी इतने समय की तपस्या काफी नहीं है। विश्वामित्र ने पृथ्वी को अपने स्थान पर रोकने के लिए अपनी एक घण्टे की तपस्या लगाई, परन्तु फिर भी पृथ्वी नीचे जाने लगी। ऋषि विश्वामित्र जी ने अपनी एक दिन की तपस्या लगाई, परन्तु फिर भी कुछ लाभ न हुआ। इसी प्रकार विश्वामित्र जी ने पृथ्वी को अपने स्थान पर रोक रखने के लिये अपनी क्रमशः एक मास, दो मास, एक वर्ष, दस वर्ष, पचास, वर्ष और यहां तक कि अपने पूरे जन्म की तपस्या लगा दी, परन्तु उनकी तपस्या पृथ्वी को अपने स्थान पर रोकने में सफल न हो सकी।

अब वशिष्ठजी की बारी आई। उन्होंने पृथ्वी को अपने स्थान पर रोकने के लिये अपना एक पल का सत्संग लगाया। शेषनाग जी बाहर निकल आये और पृथ्वी अपने स्थान पर खड़ी रही।

शेषनाग जी ने बाहर निकल आने पर दोनों ही ऋषियों से कहा कि अब आप लोगों ने अपने वादविवाद को तय कर लिया होगा और इस बारे में मेरी इसमें कोई भी आवश्यकता न रह गई, क्योंकि तुमने देख लिया है कि एक पल का सत्संग सैंकड़ों वर्ष की तपस्या से कहीं अधिक शक्तिशाली है।

महर्षि विश्वामित्र जी हार गये और वशिष्ठ जी जीत गये। बच्चो! तुम देखते हो कि सत्संग तपस्या से कहीं बढ़ कर है। अपने जीवन को सफल बनाने के लिए तपस्या ही आवश्यक नहीं, सत्संग में भी रह कर हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। इस कारण हमको सत्संग में रह कर अपने जीवन को सफल बनाना चाहिये।

—अभिनन्दन गुप्त

जादू के रंग

—श्री ब्रजमुरारि 'चञ्चल'

बन्धुओ! आज मैं तुम्हें उड़ने वाले रंग बनाने की विधि बतलाऊंगा, क्योंकि होली आने में करीब १ माह बाकी रह गये हैं, इसलिए सामान इकट्ठा करने में भी सुगमता होगी। लो सुनोः—

इस विधि द्वारा तुम दो प्रकार के रंग बना सकते हो, लाल और गुलाबी। लाल रंग के लिए एक बाल्टी में पानी भरो। पानी में करीब एक छटांक के कोई अम्ल (गन्धक, शोरे, अथवा नमक का) डाल दो और एक लकड़ी से पानी को चलाओ, ताकि अम्ल अच्छी प्रकार से हल हो जावे। अब इसमें मेथाईल आरेंज [यह दवाई नगर के किसी भी डाक्टर के यहां मिल जावेगी] डालो। जितना गाढ़ा रंग बनाना हो उतनी ही ज्यादा दवाई डालो। इसी प्रकार से गुलाबी रंग तैयार करने के लिए किसी भी खार में फिनाल्फथलीन डालो। रंग तैयार हो गया अब अपने मित्रों के वेश कीमती कपड़ों पर डालें। मित्र तुमसे झगड़ेंगे पर इतनी देर में रंग उड़ जावेगा।

कागज की कढ़ाई में पूरी पकाओ

तुम कहोगे कि कैसी विचित्र बात है, कागज की कढ़ाई चूल्हे पर रखते ही जल जावेगी, पर ऐसा नहीं होगा। तुम कागज की कढ़ाई बनाओ। उसमें घी भरो और चूल्हे पर रख दो। अब जो चाहो सो बनाओ, चाहे स्वयं खाओ, चाहे मित्रों को खिलाओ।

यदि कढ़ाई तुम न बना पाओ, तो हमसे मंगवाओ। लेकिन कढ़ाई मंगवाने के लिए छः पैसे के टिकट भेजो। मेरा पता इस प्रकार हैः—

ब्रजमुरारि अग्रवाल 'चञ्चल'
फर्स्ट ईयर साइंस
बरेली कालिज, बरेली।

ईसप् की नीति-कहानियां

मूर्ख कुत्ता

(श्री देवर्षि)

एक लाड़ से पाले कुत्ते की बिगड़ी थी ऐसी चाल,
राह निकलते आदमियों को दौड़ काट लेता तत्काल।
उसके स्वामी ने लो उस पर हो करके गुस्से में लाल,
भारी सा लकड़ी का टुकड़ा दिया गले में उसके डाल।
समझ कीमती जेवर उसको कुत्ता लगा दिखाने शान,
करने लगा पुराने साथी सारे कुत्तों का अपमान।
संग साथ में खाना पीना तो था बड़ी दूर का काम,
पास बिठाने में भी उनको लगती थी अब उसको लाज।
बुड्ढा कुत्ता उससे बोला एक एक दिन आकर यों,
"अब तो बड़ी शान है तुमको, फूले फिरते ऐसे क्यों।
यह जो लकड़ी का टुकड़ा है, यह है शैतानी का दंड,
इससे बड़ी मूर्खता क्या है जेवर समझे, हुआ घमंड।
यह न तुम्हारे किसी बड़प्पन और शान का मूल्य, निशान,
यह तो तेरी बदमाशी की, मक्कारी की है पहिचान।

× × +

ऐसी ओछी मति के वश में पड़े बहुत से हैं इन्सान,
अपने दोषों को गुण कह-कह करते हैं उनपर अभिमान।
भरी मूर्खता से बातों पर जब हंसता सारा संसार,
कहते तब, "यह पागल दुनियां नहीं समझती मेरा सार।"

नन्हीं चिड़िया और लड़का

(श्री शान्तीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वन्द्व')

लड़का

ओ नन्ही मुन्नी चिड़िया,
करती रही क्या क्या?
दाना चुगा कहां से,
पानी पिया कहां से?
बच्चे को कुछ खिलाया,
उड़ना भी क्या सिखाया?
मुझे बता दे प्यारी,
अपनी कहानी सारी।

चिड़िया

ओ भोले भाले लड़के,
तुम स्कूल को गए थे।
मैं उड़के घोंसले से,
बच्चे से दूर होके,
उड़ती रही जहां में,
जाने कहां कहां मैं?
दाना चुगा वतन से,
हर खेत हर चमन से।
खा-पी के कुछ बचाकर,
बच्चे को भी खिलाकर।
इसलिए उसे रखा है,
खावेंगे हम जो आगे।
हां सब सुना दे लड़के,
आया है जो तू पढ़के।

लड़का

चिड़िया मैं क्या सुनाऊं,
समझेगी जो बताऊं?
एक मेरा मास्टर है,
पास ही जिसका घर है।
जब मैं गया सवेरे,
और देखा सामने से।
कुर्सी पे वह था बैठा,
कागज पर लिख रहा था।
पहुंचा मैं डरते डरते,
बोला वह 'ठहरो लड़के।'
मैं रुक गया भय खाकर,
शाबाश दी, यह कहकर—
तुम मेहनती हो लड़के,
आते हो जो सवेरे।
अपना पढ़ा सुनाओ,
फिर जाके बैठ जाओ।
मैंने पढ़ा सुनाया,
जो पूछा वह बताया।
शाबाशी मुझ को फिर दी,
छुट्टी भी दे दी जल्दी।
मैं आया सब से पहले,
बैठे अभी वे लड़के।
सुन प्यारी प्यारी चिड़िया,
यह आज का है किस्सा।
आ, और फिर खेलें,
मिल जुल इकट्ठे खेलें।
तू चल फुदक फुदक कर,
मैं भी चलूं मटक कर।

× × ×

लड़के ने जब कहा यह,
चिड़िया ने जब सुना यह।
तो उड़ गयी वह फुरसे,
लड़का चला मटक के।

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम ३) डाक खर्च पृथक।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

तेल इतर सैंट और गुलकंद

हमारे कारखाना में खालिस गुलाब के फूलों की आला दरजा की गुलकन्द तैयार है। थोक व्यापारियों के लिये निरख ७५) मन है। एक डिब्बे में बीस सेर गुलकन्द होगा। खुद आकर मिलें या वी० पी० मंगवा सकते हैं। हमारे तैयारकरदा काश्मीर अमला हेयर आईल जुलफे काश्मीर हेयर आईल काश्मीर फेस क्रीम, हर किस्म के इतर, सैंट वैसलीन जो कि तमाम भारत में मशहूर होकर सैंकड़ों सोने और चांदी के तमगे ले चुके हैं। अपने शहर की ऐजेन्सी लेकर लाभ उठावें। निरखनामा मुफ्त तलब करें।

पं० ईशरदास मालिक काश्मीर परफ्युमरी वर्क्स कुतुबरोड, देहली।

रु० ३०००) जीतिये

रु० २०००) प्रथम पुरस्कार—सर्व शुद्ध हल पर दिया जाएगा जो कि हमारे सीलबन्द हल से बिलकुल मिलता होगा। रु० १०००) के रनर्स अप पुरस्कार—किन्हीं दो पँक्तिया, एक पक्ति अथवा दो अंकों को ठीक ठीक भर कर भेजने वालों को दिए जाएगे।

[८६]

कम्पीटीशन नं० आई

समस्त पूर्त्तिया ३१-१-४८ तक अवश्य प्राप्त हो जानी चाहिये।

परिणाम तिथि—१५-२-४८

दिये हुए वर्ग में [१४] से [२९] तक के अंक इस प्रकार भरो कि प्रत्येक पक्ति तथा दोनों कर्णों का योगफल [८६] हो प्रत्येक अंक एक बार ही प्रयोग किया जाए।

प्रवेश-शुल्क—१) प्रति पूर्त्ति के लिए या पाच रुपये छः पूर्त्तियों के लिए।

नियम और प्रतिबन्ध — आवश्यक फीस के साथ सादे कागज पर मनोवाछित पूर्त्तिया भेजी जा सकती है। प्रवेश-शुल्क मनीआर्डरों द्वारा या पोस्टल-आर्डरों द्वारा जो कि क्रास न हो, भेजी जानी चाहिये। अपना नाम, पता और पूर्त्ति के अंक स्पष्ट रूप से केवल इगलिश या मराठी में ही लिखें। पूर्त्तियों के साथ परिणाम मगवाने के लिये डेढ़ आने के डाक के टिकट भेजें। इस कम्पीटीशन से सम्बंधित सब मामलों में मैनेजर का निर्णय अंतिम व वैधानिक रूप से सर्वमान्य होगा और यह प्रवेश की एक स्पष्ट शर्त है। पुरस्कार में दी जाने वाली रकम एकत्रित हुई रकम के अनुपात से बाटी जाएगी। अपनी पूर्त्तियां और फीस निम्न पते पर भेजें —

मैनेजर :— माडर्न एडवरटाइजिङ्ग कं० नं० 'आई'
जामदार क्लब के पास, कोल्हापुर।

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोह-निद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है; भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

प्रकाशित हुआ **उद्यम** फोटोग्राफी विशेषांक प्रकाशित हुआ

❀ उत्तम व्यंगचित्र ❀ फोटो ❀ मुलाकातें

इस अंक में उत्कृष्ट छायाचित्रकार श्री यशवन्तराव पुरव की मुलाकात, प्रेस फोटोग्राफी की जानकारी, विख्यात व्हेनगार्ड स्टुडियो का परिचय, फोटोग्राफी सोसाइटी आफ इण्डिया व अन्य संस्थाओं का परिचय देखिये। इसमें कैमरे के चुनाव से लेकर फोटो लेना, डेवलपिंग, फिक्सिंग, प्रिंटिंग, माऊटिंग आदि सम्बन्धी विस्तृत जानकारी आकृतियों सहित सरल भाषा में दी गई है।

रेल्वे स्टाल्स व गाव-गाव के ऐजेन्टों के पास उद्यम के अंक मिलते हैं। इस अंक की बहुत अधिक माग की जा रही है। अतः आज ही उद्यम का वार्षिक चन्दा ७ रु० भेजकर फोटोग्राफी विशेषांक व खेती, उद्योगधन्धे, मितव्ययिता आरोग्यता आदि विषयक जानकारी से पूर्ण अत्यन्त उपयुक्त मासिक सग्रहीत कीजिये।

— व्यवस्थापक, उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर।

१५०००) का असली घड़ियां तथा रेडियो इनाम

जवा मर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्न दोष, प्रमेह, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है तथा नित्य के सेवन से कभी बुढ़ापा नहीं आता। मूल्य ४० दिन की खुराक ३।।।)। तीन डिब्बे एक साथ मगाने से ६।।।) डाक खर्च माफ। बेकार साबित करने पर ५००) नकद इनाम। हर डिब्बे के साथ इनामी कूपन भेजा जाता है जिनसे आप असली घड़ी, रेडियो साइकिल तथा मोटर साइकिल प्राप्त कर सकते हैं। पेशगी मूल्य भेज कर नाम रजिस्टर करा लें ताकि पछताना न पड़े। एजेंसी नियम मुफ्त मंगावें।

पता—श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

विशेष कमी—

अवसर मत चूकिये—आज ही मंगाये ३।।) रु० में ६ नई पुस्तकें

पति-पत्नी जीवन(सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनाने वाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १), सफल सिद्ध—मन चाहा कार्य सिद्ध करना १।), व्यौपारिक तेजी-मन्दी—तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त कर हजारों रुपया पैदा कीजिये १।), हिन्दी अंग्रेजी शिक्षा—घर बैठे अंग्रेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखलो १), हुस्न पैरिस—केवल पति पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १।।), ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३।।) पोस्टेज पैकिंग ।।।) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, जैगंज (१) अलीगढ़ सिटी

म० गांधी के १४ उपवास

★

महात्मा गांधी का वर्तमान उपवास उनका १५ वां उपवास है। उनके पूर्व उपवासों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

पहला उपवास सन् १९१३ ई०। दक्षिण अफ्रीका में फिनिक्स आश्रम के दो व्यक्तियों के नैतिक पतन के कारण ७ दिन का उपवास और साढ़े-चार मास का निराहार व्रत।

दूसरा उपवास अगस्त १९१४। फिनिक्स आश्रम के एक व्यक्ति के जान बूझ कर धोखा देने और मिथ्याचार करने के कारण १४ दिन का।

तीसरा उपवास फरवरी १९१८। अहमदाबाद में मजदूरों ने अपना महगाई भत्ता बंद कर दिया जाने पर महात्मा गांधी के नेतृत्व में हड़ताल की थी। दो [illegible] वे डिगने लगे। जिस प्रतिज्ञा [illegible] में गांधी जी की प्रेरणा थी, जिसके साक्षी वे रोज ही बनते थे, उसे तोड़ी जाती देख वे असमञ्जस में पड़ गये। आखिर, केवल आंतरिक प्रेरणा से सभा में कह बैठे— "अगर मजदूर फिर से तैयार न हो जाय और जब तक कोई फैसला न हो जाय तब तक हड़ताल जारी न रख सकें तो मैं तब तक उपवास करूंगा।" यह उपवास केवल तीन दिन रहा।

चौथा उपवास नवम्बर १९२१। प्रिंस आफ वेल्स के भारत-आगमन पर बम्बई में उनके स्वागत और बहिष्कार के सम्बन्ध में सहयोगियों और असहयोगियों के बीच झगड़ा हो गया था। उसे रोकने के लिए गांधीजी को उपवास करना पड़ा था, जो चार दिनों तक चला।

पांचवां उपवास १७ सितम्बर, १९२४ से २१ दिन तक। देश में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच बढ़ते हुए वैमनस्य तथा दगों से व्याकुल होकर प्रायश्चित और प्रार्थना के रूप में गांधी जी ने यह उपवास दिल्ली में किया था। उन्हीं दिनों २८ सितम्बर, १९२४ के "हिन्दी नव जीवन में उन्होंने लिखा था:—

"मैं इन दोनों जातियों के बीच सन्धि का साधन न जाने का प्रयत्न कर रहा हूं। यदि आवश्यकता हो तो मैं इस बात के लिए लालायित हूं कि अपना प्राण देकर के भी इनों के बीच मेल कराइं।"

छठा उपवास: १९२४, साबरमती आश्रम आश्रम के विद्यार्थियों में चरित्र दोष पर पर गांधी जी ने एक 'सप्ताह' का उपवास किया था।

सातवां उपवास २ सितम्बर, १९३२। श्री अप्पा साहब पटवर्धन ने यरवदा सेंट्रल जेल में भंगी का काम मांगा था। जेल अधिकारियों के इन्कार कर देने पर उन्होंने आमरण अनशन शुरू कर दिया। गांधी जी ने उनकी सहानुभूति में उपवास किया। यह उपवास केवल दो दिन चला।

आठवां उपवास: २० सितम्बर, १९३२ को यरवदा सेंट्रल जेल में यह आमरण अनशन शुरू हुआ था, जो ८ दिन बाद समाप्त हो गया। यह अनशन ब्रिटिश सरकार द्वारा दलित वर्ग को पृथक निर्वाचन का अधिकार दिया जाने के विरुद्ध था। इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने पत्र प्रतिनिधियों के सामने २० सितम्बर, १९३२ को निम्न लिखित शब्द कहे थे:—

"—पृथक निर्वाचन उठा लेने से मेरी प्रतिज्ञा का शब्दशः पालन तो हो जायगा, पर उससे उसके भाव का पालन न होगा—अस्पृश्यता का जड़-मूल से नाश हो, यही मैं चाहता हूं। इसी के लिए मैं जीवित हूं, और इसी के लिए मरने में मुझे आनन्द होगा।"

नवां उपवास ८ मई, १९३३। यह २१ दिन का उपवास गांधीजी ने यरवदा जेल में हरिजन-आंदोलन के सम्बन्ध में अपनी और अपने साथियों की आत्म शुद्धि के लिए किया था। उसी दिन वे जेल से छोड़ दिए गये, अतएव शेष उपवास पूना की 'पर्ण कुटी' में पूरा हुआ।

दसवां उपवास: अगस्त १९३३। उपर्युक्त उपवास के बाद व्यक्तिगत सत्याग्रह के कारण गांधीजी फिर गिरफ्तार करके यरवदा जेल में बन्द कर दिये गये। जेल से उन्होंने हरिजन कार्य के लिए इजाजत मांगी, जिसके न मिलने पर यह अनशन शुरू हुआ। सातवें दिन वे जेल से छोड़ दिये गये। छूटने पर उन्होंने एक वक्तव्य में कहा:

"मेरे लिए तो यह (हरिजन सेवा) प्राण स्वरूप है। हरिजन सेवा मुझे भोजन से अधिक आवश्यक है। बिना भोजन के मैं कुछ दिन जीवित रह सकता हूं, पर हरिजन सेवा के बिना तो मैं एक क्षण भी नहीं जी सकता।"

ग्यारहवां उपवास ७ अगस्त १९३४ हरिजन यात्रा के सिलसिले में अजमेर की सभा में सनातनी स्वामी लालनाथ के एक स्वयंसेवक द्वारा पीट दिये जाने पर गांधी जी ने सेवाग्राम में यह ७ दिन का अनशन प्रायश्चित के रूप में किया था।

बारहवां उपवास ३ मार्च, १९३९। राजकोट का यह आमरण अनशन, जो वाइसराय के आश्वासन देने पर ४ दिन बाद बन्द हो गया था, प्रसिद्ध है।

तेरहवां उपवास १० फरवरी १९४३। कैदी की हालत में, आगाखां महल में "सर्वोच्च अदालत से न्याय की अपील" के रूप में गांधी जी का यह २१ दिन का उपवास संसार को हिला देने वाला सिद्ध हुआ।

चौदहवां उपवास २ सितम्बर १९४७ कलकत्ता में हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिये। इसमें उपवास ने जादू का काम किया, दो दिन के अन्दर ही कलकत्ते में पूर्ण शांति हो गई और ७३ घंटे के बाद उपवास समाप्त हो गया।

कहानियों पर इनाम

* कहानी ढाई, तीन हजार शब्दों में हो।
* पुरस्कृत मू० ११) से ५१) तक होगा।
* निर्णायक को मूल्य निर्णय तथा प्रकाशन में सर्वाधिकार होगा।
* कहानी हर मास की २५ तारीख तक आनी चाहिए।

"मधु" बालूजा प्रेस, दिल्ली।

विवाह के अवसर पर कन्याओं को उपहार देने योग्य

कसीदा काढ़ने की मशीन

यह चार सुइयों की मशीन भांति भांति के काम करती है। इससे कसीदा काढ़ना बड़ा ही आसान है। दिल पसन्द फूल, पत्ती, बेल, बूटे, पशु पक्षियों के चित्र, कालीन, सीन-सीनरी इत्यादि आसानी से काढ़े जा सकते हैं। बड़ी सुन्दर और मजबूत है। मूल्य ४ सुइयों सहित ३) डाक खर्च ||।) कसीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक मूल्य २) डाक खर्च ||)।

पता—कमल कम्पनी [A] अलीगढ़ सिटी।

अफीम की आदत छूट जायगी। काली डायन अफीम से छुटकारा पाने के लिये 'काया कलप कार्ड्स' सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स सात रुपया डाक खर्च पृथक।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घु घरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (जन्टल न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट:—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी जन्टल न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आवेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवेल्टी स्टोर्स पो० ब० नं० ४५ दिल्ली।
General Novelty Stores P. B. 45, Delhi.

पाकिस्तान के क्लर्कों ने अपना आधा वेतन घटवा लिया।

—एक समाचार

आधे की भर पाई कराची की लूट से हो गई होंगी।

× × ×

भारत सरकार ने जो तार भेजा था वह न मैं पढ़ सका न मेरी सरकार।

—इस्पहानी

हमने उस्ताद, यह समझा था कि पाकिस्तान वाले खत का मजमून जान लेते हैं लिफाफा देख कर। यह पता नहीं था कि सारे के सारे अनाड़ी ही इकट्ठे हो रहे हैं, नहीं तो १–२ पढ़े-लिखे भी भेज देते।

× × ×

जय हिन्द वालों की खबर दिल्ली चल कर लेंगे।

—एक नेशनल गार्ड

दिल्ली अगर दूर समझो तो पाकिस्तान के पिछवाड़े काश्मीर में भी थोड़े से जय हिन्द वाले डेरे डाले पड़े हैं।

× × ×

पाकिस्तान से गये हिन्दू व्यापारियों का काम मुसलमान सम्भाल लें।

—पाकिस्तानी मंत्री

पहिले उसकी प्रेक्टिस चने के धंधे से करें। बिक्री किस तरह की जाती है। ग्राहक कैसे इकट्ठे होते हैं, वह लटके यार बताते हैं। एक कापी पर नोट कर लेना—

चने जोर गरम
चने बने मसालेदार,
देखो काश्मीर में हार,
पैसा मिलता नहीं उधार,
जिन्ना झट से पड़ा बीमार
चने जोर गरम

लूट पाट से करो गुजारा,
वेतन का दो छोड़ सहारा,
बन गया पाकिस्तान तुम्हारा,
होगा दुनिया भर से न्यारा,
कहती जिन्ना की सरकार
चने बने मसालेदार।

भारत गया मित्रसंघ में,
अब्दुल्ला भी उनके संग में,
पठान मिटे कश्मीरी जंग में,
पानी पड़ गया हरे रंग में,
चाचा कर दो बेड़ा पार
चने बने मसालेदार

पाकिस्तान में मची है लूट,
पड़ी लुटेरों में अब फूट,
हिन्द में बिकते सिल्की सूट
यहां पर पहनो खालिस जूट,
फिर भी लड़ने को तैयार,
चने .. ..

× × ×

निजाम ने पाकिस्तान में कोठी खरीद ली।

—एक समाचार

अपने राम यह और जानना चाहते हैं कि नवाब जूनागढ़ के पड़ोस में ही खरीदी है या अलग?

× × ×

आप हिन्दू राज चाहते हैं या संयुक्त प्रजातन्त्र?

—मुसलमानों से पंतजी

यही प्रश्न कायदे आजम से पूछने के लिए खलीकुज्जमा को यार लोगों ने भेजा ज[illegible] इन्तजार कीजिये।

× × ×

कराची का दंगा पूर्व योजनानुसार हुआ और उसमें पुलिस ने भी भाग लिया।

—एक समाचार

पाकिस्तान की पुलिस इतनी बेवकूफ नहीं जो बहती गंगा में हाथ न धोये। रही पूर्व योजना की बात। वह योजना तब बनी थी जब मुस्लिम परस्ती की सनदें लिए नेता लोग लीगी लीडरों की कोठियों के चक्कर लगाते थे।

× × ×

शांति की विजय अभी शेष है।

—जार्ज मार्शल

भगवान् पर भरोसा रखिये, हथियारों की फैक्टरियां गर्म रखिये। तीसरे युद्ध की जमीन अभी से तैयार कराइये उसके बाद शांति ही शांति है।

× × ×

पाकिस्तान के चारों ओर ऊंची दीवार हो तभी हमलावर काश्मीर जाने से रोके जा सकते हैं।

—जफरुल्लाखां

खां साहब चोर और जार को दीवार तो कभी रोक नहीं सकी। अलबत्ता 'यार' की दूसरी बात है।

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका ढूंढना असम्भव नाम है

१००) इनाम
(गवर्मेण्ट रजिस्टर्ड)
सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।
श्री कामरूप कमख्या आश्रम ५५
पो० कतरीसराय (गया)

साप्ताहिक वीर अर्जुन में
विज्ञापन देकर लाभ उठा

र्य सम्मेलन के विचारणीय प्रश्न

[श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

आर्य सम्मेलन सार्वदेशिक सभा ...से ३०, ३१ दिसम्बर १९४७ ...था वह कई गंभीर कारणों से ...लिये स्थगित हो गया। परन्तु ...के विचार के लिये भी कुछ ...श्चित प्रस्ताव चाहियें जो उस ...चार का आधार हो सकें। ...विचार हो रहा है कि उस ...की रूप रेखा को पहले से तैयार ...जाय। इस के लिये जनवरी ...एक अंतरंग बुलाई जायगी जिस ...में ...चुने बाहर के लोग भी ...समक्ष में इतने प्रश्न हैं ...हैं—

...समय देश में कौन कौन ...कल्य है जिस में न केवल ...र्गों, समाजी भी बहे ...

...उन लहरों का कितना अंश ...के वास्तविक उद्देश्यों के अनुकूल ...कितना प्रतिकूल।

...) प्रतिकूल अंशों का दमन ...और अनुकूल की अभिवृद्धि के लिये ...क्या करना चाहिये ?

(४) कितने काम आर्य समाज को अलग होकर स्वतन्त्र रूप से चलाने चाहिये ?

(५) कितने कामों में दूसरों से सहयोग करना चाहिये ?

(६) समाज के वर्तमान शिक्षणालयों का वर्तमान अवस्था में क्या उपयोग है ? क्या उन में वृद्धि करनी चाहिये या समाज को अपना ध्यान अन्यत्र देना अभीष्ट होगा ?

(७) वर्तमान संस्थाओं को बन्द कर देना चाहिये या उनको कुछ समय के लिये कुछ परिवर्तन के साथ रखना चाहिये ?

(८) इस समय समाज का सब से निर्बल मर्म स्थान है प्रेस और प्लेट फार्म इसका निर्माण कैसे हो ? इसको प्रबल कैसे बनाया जाय ?

(९) हमारे भजनोपदेशक कैसे हों ?

(१०) हमरे उपदेशक कैसे हों ?

(११) हमारे वार्षिकोत्सव कैसे हों ?

(१२) हमारा राजनैतिक धर्म क्या है और उस ध्येय तक पहुंचने का सच्चा साधन क्या है ?

(१४) आर्य समाजियों को देश के भिन्न २ विभागों अर्थात् शासन सम्बन्धी परिषदों, दफ्तरों, व्यापार, कला कौशल आदि में किस प्रकार प्रवेश करना चाहिये और उन पर आर्य सिद्धान्तों की छाप कैसे लगनी चाहिये। इस कार्य में सफल होने का उत्तम मार्ग क्या होगा ?

(१५) हमारी नीति पाकिस्तान के विषय में क्या होनी चाहिये ?

(१६) अन्य देशों के लिये हमको क्या करना चाहिये ?

(१७) विदेशों के प्रचार में सब से प्रथम कहां पर अधिक बल देना चाहिये और किस प्रकार ?

(१८) हमारे सन्यासी गण किस प्रकार अधिक से अधिक उपयोगी हो सकते हैं ?

(१९) कौन कौन सी प्रगतियां हैं जिन से आर्य समाज का संगठन ढीला हो रहा है ? उनको किस प्रकार नष्ट किया जाय ?

यह और ऐसे ही कतिपय प्रश्न हैं जिन पर ऊहापोह होनी चाहिये और निश्चित विचार संक्षेप से लेख बद्ध करके सभा में भेजने चाहियें।

भूल-सुधार

'बर्मा में भी स्वाधीनता का सूर्य चमक रहा है', लेख १ जनवरी के अंक में प्रकाशित हुआ था। उसमें भूल से लेखक का नाम छपने से रह गया है। उसके लेखक श्री सतीशचन्द्र (बांकीपुर (पटना) थे।

—सम्पादक

शुद्धि सम्मेलन

ता० २६ १२-४७ मध्यान्ह १२ बजे गुरुकुल भूमि वृन्दावन में एक बृहत् शुद्धि सम्मेलन हुआ, जिस में निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ :

यह सम्मेलन आर्य (हिंदू) जाति के उत्थान के लिये यह आवश्यक समझता है कि उन भाइयों को जो किन्हीं कारणों से हम से पृथक समझे जाते रहे हैं, उनको बिना किसी भेद भाव के अपने से मिलाया जाय। और उनके साथ खान, पान, रोटी, बेटी का व्यवहार बिना किसी भेद भाव के प्रेम के साथ किया जावे। यह सम्मेलन इस समय को इस कार्य के लिए अति अनुकूल समझ कर यह भी आर्य (हिंदू) जनता से अनुरोध करता है कि इस कार्य की ओर तीव्र गति से पग बढ़ाया जावे और शुद्धि सभा की तन, मन धन से सब सहायता करें।

"तपेदिक" चाहे फेंफड़ों का हो या आंतड़ियों का बड़ा भयङ्कर रोग है

...ली स्टेज	(२) दूसरी स्टेज	(३) तीसरी स्टेज	(४) चौथी स्टेज	अंतिम स्टेज
ज्वर-खांसी	ज्वर खांसी की शरीर में अधिकता	सूजना-ज्वर खांसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू हो जाना	रोगी मौत और भयंकर वर्मों का इधर उधर फैलना
(जबरी)	(JABRI)	(जबरी)	(JABRI)	

T.B. टी. बी. 'तपेदिक' और पुराने ज्वर के रोगियो ! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी मास्टर स्कूल महुआमा पो० डाकटरगंज (बिहार) से लिखते हैं। मैं अनेक दिनों ..., खांसी से बीमार था, ... आदि की परीक्षा पर 'तपेदिक' [राजयक्ष्मा] रोग ही साबित हुआ। मैं रोग ... सुनते ही बहुत घबरा गया। इसी बीच परमात्मा की कृपा से आप की अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना ... तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को विधिपूर्वक सेवन किया, उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे ... में ... दिया, थोड़े दिनों में ही शरीर का रंग ही बदल गया, ऐसा मालूम होने लगा जैसे कुछ रोग ही ... अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषध इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी प्रशंसा ..., कम है।

इसी प्रकार के पहले भी सैकड़ों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं, भारत के कोने कोने में ... ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी को जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र ..." ही है। जबरी के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि ... सेवन से ही इस दुष्ट रोग के कर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं, यदि आप सब तरफ से निराश हो चुके हैं ... परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख ..., जिसमें तसल्ली हो सके। बस आज ही आर्डर दें। अन्यथा वही कहावत होगी कि अब पछताए क्या ... चिड़ियां चुग गईं खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य, अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर ... और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" (JABRI JAGADHARI) काफी ... में अपना पता पूरा दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नं० १ जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिये ... आदि मूल्यवान चीजें भी पड़ती हैं पूरा ४० दिन का कोर्स ७२) रु० नमूना १० दिन २०)। जबरी ... केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) नमूना १० दिन ६) रु० महसूल अलग है। आर्डर ... नं० १ या नं० २ साफ साफ हवाला जरूर दें। पता—

राम ...—के० एल० शर्मा ... [१] जगाधरी [पूर्वी पंजाब] E. P.

देहाती इलाज

ले० श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार।

हमारी माताओं, गृहणियों तथा नये प्रकाश की चकाचौंध में पलने वाले युवक-युवतियों को यह पुस्तक अवश्य अपने पास रखनी चाहिये जिससे वे अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर, बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकें। मूल्य १)

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

मुफ्त

वीर अर्जुन के पाठकों को यह हर्ष होगा कि लाहौर के विख्यात गुप्त रोग विशेषज्ञ वैद्य कविराज ... बी० ए० ने हौज काजी दिल्ली में नियम पूर्वक कार्य आरम्भ कर दिया है। रोगी उनको स्वयं मिलकर व पत्र व्यवहार द्वारा सम्मति तथा औषधियां ले सकते हैं। ... के लिए औषधियां मुफ्त दी जायेंगी ताकि धोके का अवसर न मिले। पूर्ण विवरण के लिए उनकी अंग्रेजी की पुस्तक sexualguide मूल्य १२ आने पढ़ें।

मरना चाहते हो या जीना ?
यदि जीना चाहते हो तो
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

सन्शोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय का ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषी के मनन और संग्रह योग्य है। मूल्य १) डाक व्यय।–)

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

शीतकाल का उपहार

संसार में स्तम्भन की केवल पुरुषों के लगाने की एक अद्भुत औषधि।

— सुई फन सी —

Solution

पुरुषों के लिए केवल बाहर से व्यवहार करने लायक रुकावट की संसार में अद्वितीय तथा अद्भुत औषधि है। लाखों गृहस्थ इसकी मांग कर रहे हैं। जिन पुरुषों का शीघ्र ही वीर्य पतन हो जाता है, उनके लिये यह दवा बेजोड़ है। इस के लगाने से रुकावट सम्बन्धी अपूर्व शक्ति तथा सामर्थ्य प्राप्त होता है। इस दवा की एक शीशी बहुत दिनों तक चलती है।

मूल्य प्रति शीशी रुपये १२) डाक खर्च ।||) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चायनीज मेडिकल स्टोर,
नया बाजार – देहली।

ब्रेंच आफिस—१८ बुचोबो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई। ब्रांचें—१२ बजाजी लवाबर, कलकत्ता, रीची रोड–अहमदाबाद।

—मलिग एजेन्ट्स—

दी मेडिकल मेडीकल, स्टोर्स—आगरा।
दी जनरल मेडीकल स्टोर्स—अजमेर।
दी बम्बई केमिस्ट्स—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकी वल्लभ—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी—मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—अजमेर।
मेसर्स खरे ब्रादर्स—खुर्जई।
मे० गोपीलाल चिरंजीलाल—श्री माधोपुर।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
दी वर्मा मेडीकल स्टोर्स—फिरोजाबाद।
मे० कालीचरण ब्रदर्स—जोधपुर।
डी० डी० आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी दवाखाना लौहेर

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें –)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (६२)
पो० बेगुसराय (मुंगेर)

ठगों से ठगे हुए

कमजोरी, सुस्ती, शीघ्र पतन व स्वप्नदोष रोगों के रोगी हमारे यहां आकर इलाज करावें और लाभ के बाद हस्बहैसियत दाम दें और जो न आ सकें वे अपना हाल बन्द लिफाफे में भेज कर मुफ्त सलाह लें। हम उनको अपने उत्तर के साथ उनके लाभ के लिए अपनी १ पुस्तक "विचित्र गुप्त शास्त्र जिस में बिना दवा खाये ऊपर लिखे रोगों को दूर करने की आसान विधियां लिखी हैं और जो सन् २६ में गवर्नमेंट से जब्त होकर अदालत से छूटी है मुफ्त भेज देंगे, परन्तु पत्र के साथ तीन आने के टिकट भेजें।

डा० वी० एल० कश्यप अध्यक्ष
रसायनघर १०७ शाहजहांपुर यू० पी०

पहेली नं० ३१ की संकेतमाल

दायें से बायें

१. स्वर्गीय राष्ट्रीय व सामाजिक नेता।
२. समुद्र।
६. जीवित पदार्थों का स्वभाव है।
७. अच्छा लगता है।
८. विशिष्ट मेधावी ही कोई बन पाता है।
१०. गरमी सरदी की एक सीमा।
११. इसके बिना दुनिया में रहना सरल नहीं।
१३. कभी न कभी इससे सभी का वास्ता पड़ता है।
१४. इसमें अन्धकार अधिक होता है।
१५. इसके पास होने से चीज की सुरक्षा रहती है।
१६. इसके अभाव में कई बार बड़ी दिक्कत रहती है।
१७. आज कल जो —— चाहे वही होता है।
१९. अच्छा लगता है।
२१. एक पेड़।
२४. कभी-कभी अच्छी लगती है।
२५. कोई चाहे तो लिया जा सकता है।
२६. पूर्ण विजय से पहले —— उचित नहीं।
२७. भगवान सब को दे।

ऊपर से नीचे

१. मजदूर।
२. मारने का गा।
३. दूसरे क / की ही —— देख मुल है।
४. अत्यधिक —— पीना हानिकर है
५. अच्छी —— आनंदित करती है
९. चमकीले हो तो सुन्दर पड़ती है
१०. आह्वा । पाकर प्रसन्नता होती
१२. इसके सा ने सब हार मान हैं।
१७. माता।
१८. प्रारम्भ इसमें दिक्कत
२०. चाह न । तो किसी कठिन है।
२२. ही —— :
२३. कार्य रि के इसमें जाती है
२४. वस्तु को और ही रूप दे देत

केवल १५ दिन के लिये भारी रिआयत

३॥) में ६ पुस्तकें ?

१. रति-रहस्य—दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने वाली चित्र संयुक्त मूल्य १)
२. खजाना रोजगार—थोड़ी पूंजी से हजारों रुपये पैदा करने के गुप्तभेद मूल्य १)
३. भविष्य फल—लूट, दंगा, फसाद, सुख दुख आगे क्या होना है मूल्य १।)
४. बंगाली जादू—वशीकरण जादू के आश्चर्यजनक खेल तमाशे इत्यादि मूल्य ॥)
५. हुस्न पैरिस—सुन्दरता के अद्भुत फोटो विवाहितों के देखने योग्य मूल्य १॥)
६. इन्द्रजाल—जादू के आश्चर्यजनक खेल यंत्र मन्त्र मैस्मरेज्म यक्षिणी साधन मू० १।)

उपरोक्त ६ पुस्तकें एक साथ लेने से मूल्य ३॥) डाक खर्च ॥)

पता—**कमल कंपनी (V) अलीगढ़ सिटी।**

सन् १९४८ में क्या होने वाला है

ज्योतिष की विद्या अंधेरी दुनिया में सूरज की रोशनी है। अगर आप भी इस अंधेरी दुनिया में बदलने वाली किस्मत के होने वाले उलट फेर का साफ साफ उतरा हुआ फोटो वक्त से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर किसी प्रिय पसंद फूल का नाम या पत्र लिखने का समय और साफ साफ अपना पूरा पता फौरन लिख कर भेज दें। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आने वाले बारह माह की तकदीर की तस्वीर साफ खींच, किस प्रकार से रोजगार मिलेगा, किस व्यापार में लाभ होगा, नौकरी में तरक्की, मुकदमा, पतन, स्वास्थ्य, बीमारी, देश परदेश की यात्रा, और संतान का सुख, किसी से नया मेलजोल, प्रिय पसंद सगाई, शादी, जमीन में गड़ा हुआ धन, जायदाद; लाटरी; सट्टा या किसी अज्ञात प्रकार से सुख और धन का मिलना अर्थात कार्ड की तारीख से लेकर कुल साल में पेश आने वाली सब बातों के खुलासे के साथ वार्षिक वर्ष फल बना कर केवल सवा रुपये [१।)] में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिख देंगे। ठीक न होने पर कीमत वापिस की जमानत है। एक बार अवश्य आजमाइश करें।

श्री महावीर स्वामी ज्योतिष कार्यालय, करतारपुर, जालंधर

सुगमवर्ग पहेली नं० ३

ये वर्ग आ ने हल की नकल के लिये हैं, भ कर भेजने के लिये न

२५०) [सुगमवर्ग पहेली नं० ३१] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार १५०) न्यूनतम अशुद्धियों पर १००)

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे मैनेजर का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

इन तीनों वर्गों को पृथक न करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो शेष दो पर आडी लकीर खींच दें।

इस लाइन पर काटिये

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण इस प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३. उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर १५०) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर १००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक सख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बाट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १६ फरवरी के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ११ फरवरी १९४८ को दिन के २ बजे खोला जा'गा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा। पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ह भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३१, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने प पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

★★★

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि ७ फरवरी १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ हैं। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय ।-)

विविध

वृहत्तर भारत

[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ।।।=)

बहन के पत्र

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व सखियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य १)

[illegible]दूती

श्री विरा[illegible]जी रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ।।।)

वैदिक वीर गर्जना

[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ।।।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी

[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १।।) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य ९) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ।।=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

आज तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १।।) डाक व्यय ।=)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इस लिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं

[सम्पादक—श्री जयन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

नया आलोक : नई छाया

[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

त्याग का मूल्य

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी अनुवाद मूल्य ५) डाक व्यय ।=)

तिरंगा झण्डा

[श्री विराज]

तिरंगे झण्डे की महानता से सम्बद्ध तीन एकांकी नाटकों का संग्रह—स्वाधीन देश के झण्डे लिये बलिदान की पुकार। मूल्य १।) डाक व्यय ।-)

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाज़ार, दिल्ली

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एव[illegible] और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान क[illegible] आधार भारतीय संस्कृति पर होव[illegible] इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है[illegible]

मूल्य १।।) रुपया।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रका[illegible] की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इ[illegible] अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तेल विज्ञान

तिलहन से लेकर तेल के चार [illegible] उद्योगों की विवेचना सविस्तार सर[illegible] ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय [illegible]

तुलसी

तुलसीगण के पौधों का वैज्ञा[illegible] विवेचन और उनके लाभ उठाने के ढं[illegible] बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृ[illegible]

अंजीर

अंजीर के फल और वृक्ष से क[illegible] रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य [illegible] डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में क[illegible] इलाज कर बाजार और जंगल में [illegible] मता से मिलने वाली इन [illegible] की दवाओं के द्वारा कर सकते [illegible] १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक [illegible] करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य [illegible] डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये [illegible] धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) [illegible] व्यय पृथक्।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की
'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे [illegible] बीस दिन मूल्य [illegible]

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के [illegible] भूह से कैसे निक[illegible] मूल्य [illegible]

दोनों भाग व इक साथ लेने पर मूल्य [illegible]

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन
* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* मनोरञ्जन मासिक
* विजय पुस्तक भण्डार

❀ अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० "
सन् १९४६	१५ "

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
* अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ११ माघ सम्वत् २००४

महान् व्रत की सफलता

म० गांधी ने अपना उपवास समाप्त कर दिया। इसका श्रेय दिल्ली की हिन्दू सिख जनता को है, जिसने बहुत बड़े सामूहिक रूप में गांधीजी की शर्तों का पालन करने की प्रतिज्ञा करके यह सिद्ध कर दिया कि वह म० गांधी की राष्ट्र के प्रति की गई सेवाओं का मूल्य समझती है। वस्तुतः म० गाधी पर भारत को सदा गर्व रहा है और यदि भारतीय जनता इस अवसर पर बुद्धिमत्तापूर्वक म० गांधी के प्राण बचाने का प्रयत्न न करती, तो यह उसका ऐसा अपराध होता, जिसके लिए भावी इतिहासकार उसे क्षमा न करते। इसलिए दिल्ली की हिन्दू सिख जनता का अपने कर्तव्यपालन के लिए हम अभिनन्दन करते हैं।

परन्तु इसके साथ ही विचारणीय प्रश्न यह उठता है कि क्या उपवास का उद्देश्य पूर्ण हो गया। हमें खेद है कि हम आज ऐसी स्थिति में नहीं हैं कि इस प्रश्न का उत्तर दे सकें। वस्तुतः गांधीजी का उपवास केवल दिल्ली से सम्बद्ध शर्तों के लिए हो, ऐसा समझना उस महान् आत्मा के महान् उद्देश्य के साथ अन्याय करना होगा। दिल्ली की शर्तें तो केवल भावना-परिवर्तन का प्रतीक थीं। उपवास का वास्तविक उद्देश्य हिन्दुओं व मुसलमानों के और यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि भारत व पाकिस्तान में परस्पर सद्‌भावना की स्थापना थी। यह उद्देश्य सफल हुआ या नहीं यह कहना आज कठिन है। वस्तुतः इस प्रश्न का उत्तर आगामी ५-६ मास देंगे। पाकिस्तान पर गांधी जी के महान् व्रत का परिणाम अच्छा पड़ा, यह तो हम तभी कह सकेंगे, जबकि वहां के नेतृत्व के विरुद्ध पाकिस्तानी जनता में प्रबल असंतोष उत्पन्न हो और मि० जिन्ना के नेतृत्व की समाप्ति होकर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो। इसका अर्थ यह है कि वहां अल्पसंख्यकों को फिर प्रेम के साथ बसाया जाय, उनके प्राण और संपत्ति की सुरक्षा का आश्वासन दिया जाय, काश्मीर में उपद्रवकारियों को जाने से रोका जाय, भारत में आयी हिन्दू सिख जनता की वह संपत्ति का मुआवजा उन्हें दिया जाय और बैंकों के हिसाब व कैशपात वापस दे दे। आज तो काश्मीर में लड़ाई भी उसी तरह जारी है और मित्र-राष्ट्र सुरक्षा समिति में सर जफरुल्ला आज भी इसी तरह झगड़ा बढ़ाने में लगे हैं। म० गांधी के अनशन पर पाकिस्तान के सर्वेसर्वा जिन्ना की ओर से एक शब्द भी अब तक नहीं निकला। छोटे मोटे समझौते जरूर हो गये हैं, लेकिन उनसे किसी निश्चित परिणाम पर नहीं पहुंचा जा सकता और इसी लिए हम जहां महात्मा गांधी के उपवास के समाप्त हो जाने पर अति प्रसन्न हैं, वहां हम किसी ऐसे आशावाद में पाठकों को नहीं ले जाना चाहते, जिसका कोई आधार अब तक न मिला हो। हमारी और हमें विश्वास है कि हमारे हजारों पाठकों की यह हार्दिक अभिलाषा है कि भारत के दोनों खण्ड फिर एक हों और हम धार्मिक या साम्प्रदायिक भावना छोड़ कर भारतमाता के पुत्र होने के नाते अपने देश की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक उन्नति में लग जावें। लेकिन यह हो तभी सकता है, जबकि भारत में साम्प्रदायिकता का प्रचार करने वाले मुस्लिम लीगी नेताओं को वहां की जनता गद्दी से उतार कर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करें।

शासन का भारी व्यय

हमारा शासन-चक्र बहुत खर्चीला रहा है, इसका कारण ब्रिटिश नीति रही है। अंग्रेज अधिकारियों को स्वभावतः भारतीय करदाता से कोई सहानुभूति न थी, इसलिए बड़े बड़े वेतनों और आलीशान मकानों तथा खर्चीले आडम्बर में उनका रुपया व्यय करने में उसे कोई संकोच न होता था और यही कारण है कि हमारे देश का शासन-व्यय एक सफेद हाथी के समान भारत के सिर पर बहुत बोझ हो गया। लेकिन यह दुःख की बात है कि आज भी हमारी सरकार उसी ब्रिटिश नीति पर चल रही है। इसी लिए म० गांधी ने इस ओर देश का ध्यान खींचा है। उन्होंने कहा है कि "ब्रिटिश काल में शासन पर जितना व्यय किया जाता था, उतना खर्च हमारी सरकार को नहीं करना चाहिए। भारत गरीब देश है। यद्यपि हम लोग भी ब्रिटेन की भांति स्वतन्त्र हैं, तथापि हमारी आमदनी अंग्रेजों की अपेक्षा बहुत कम है। विदेशों के भारतीय राजदूतों को गरीब देश के प्रतिनिधियों की भांति रहना चाहिए।" पाठकों को शायद यह याद होगा कि १९३१ ई० में जब म० गांधी लन्दन में सम्राट् से मिले थे, तब उन्होंने सरकार द्वारा नियत वेशभूषा में उनसे मिलने से इस आधार पर इन्कार कर दिया था कि वे गरीब भारत के प्रतिनिधि के रूप में ब्रिटिश सम्राट् से मिल रहे हैं, इस लिए वे धोती, चप्पल व कम्बल के सिवाय कोई दूसरा कपड़ा न लेंगे। लेकिन आज मास्को, वाशिंगटन आदि में लाखों रु० भारतीय दूतावासों पर व्यय होता है। ३५०० रु० वेतन, ४५०० रु० भत्ता और दूसरे भारी खर्च वस्तुतः असह्य व्यय है। १५ लाख से अधिक रु० वाशिंगटन में खर्च हो चुका है। मास्को राजदूतावास पर मार्च सन् ४८ तक प्रस्तावित व्यय नवम्बर में ७ लाख रु० से अधिक था। इसी तरह भारत में शासन पर और उसके आडम्बर पर जो व्यय होता है, उसमें बहुत कमी की जा सकती है।

पश्चिमी यूरोप का संगठन

ब्रिटेन के परराष्ट्रमन्त्री श्री बेविन ने पश्चिमी यूरोपियन राष्ट्रों के संगठन की घोषणा करके उस सम्भावना को पुष्ट कर दिया है, जो पिछले कुछ महीनों से की जा रही थी। रूस युद्ध समाप्ति के बाद से पूर्वीय यूरोप के राष्ट्रों को एक गुट में संगठित कर रहा था। इसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया पश्चिमी यूरोप में होनी थी। बहुत समय से यह चर्चा अन्दर ही अन्दर चल रही थी और अब बाकायदा श्री बेविन ने फ्रांस, हालैण्ड, बेल्जियम और लक्समबर्ग में परस्पर संगठन की चर्चा की घोषणा भी कर दी है। यह संगठन केवल इन राज्यों के यूरोपीय क्षेत्र तक सीमित न रहेगा, बल्कि इन देशों के साम्राज्यों को भी इस संघ में मिलाया जायगा, जिससे यूरोप, मध्यपूर्व, अफ्रीका और सुदूर पूर्व तक इस मैत्री और सहयोग की एक शृंखला बन जाय। इटली, ग्रीस और टर्की को दी गई अमेरिकन सहायता इस बात का सूचक है कि इन को सहानुभूति भी इस नये प्रस्तावित संघ की ओर रहेगी। इसका परिणाम क्या होगा, यह कहना आज कठिन है, लेकिन यह निश्चित है कि यह सब संगठन रूस के विरुद्ध किया जा रहा है और श्री बेविन ने यह कह कर अपनी भावना को स्पष्ट भी कर दिया है कि 'रूस को समझ लेना चाहिए कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में आग से खेलना खतरनाक होता है। रूस अच्छे या बुरे तरीकों से सभी देशों को कम्यूनिस्ट प्रभाव में लाना चाहता है।' पोलैण्ड, बलगेरिया रूमानिया, हंगरी और ग्रीस में रूस की चालबाजियों का संकेत करते हुए मि० बेविन ने चेतावनी दी है 'कि यदि कोई शक्ति यूरोप पर हावी होने का प्रयत्न करेगी तो तीसरा महायुद्ध छिड़े बिना न रहेगा। लेकिन आज सत्य यह है कि रूस और ब्रिटेन दोनों शक्तियां यूरोप पर हावी होने का प्रयत्न कर रही हैं। यह पारस्परिक ईर्ष्या यूरोप को किधर लेजाती है, यह भविष्य के गर्भ में छिपा है।

रियासतों में

यह हर्ष की बात है कि ग्वालियर के शासक ने लोकप्रिय उत्तरदायी सरकार स्थापित करने की घोषणा कर दी है और इस सम्बन्ध में ग्वालियर राज्य कांग्रेस के अध्यक्ष श्री लीलाधर जोशी को अन्तःकालीन सरकार का संगठन करने के लिए निमंत्रित भी कर दिया है। इन्दौर के डावाडोल महाराज भी इस सम्बन्ध में शीघ्र ही एक घोषणा करने वाले हैं और झाबुआ की बदनाम रियासत ने भी अपनी घोषणा करके अतीत से सबन्ध विच्छेद कर लिया है। काठियावाड़ की २५० रियासतों ने सौराष्ट्र प्रान्त के रूप में संगठित होकर उत्तरदायी सरकार बनाने का निश्चय कर लिया है। यह सब समाचार इस बात के सूचक हैं कि राजा समय की गति पहचान रहे हैं। लेकिन आज भी जोधपुर बीकानेर आदि रियासतें न जाने किस स्वप्नलोक में विचार रही हैं। समय का चक्र बहुत प्रबल है, उसके रास्ते में जो कुछ भी आयगा, वह कुचल दिया जायगा। बड़े बड़े शक्तिशाली राजा और सम्राट् उसका मुकाबला नहीं कर सके। टिहरी रियासत में जो कुछ हुआ, वह किसी भी रियासत में हो सकता है, यह किसी को न भूलना चाहिए।

गांधी जी का उपवास समाप्त

मंगलवार की सबेरे सवा ग्यारह बजे राष्ट्र पितामह महात्मा गांधी ने जो उपवास प्रारम्भ किया था, वह रविवार को बारह बज कर चालीस मिनट पर समाप्त कर दिया। ग्लूकोस मिले हुए सन्तरे के रस का गिलास मौलाना आजाद के हाथ से पीकर गांधी जी ने व्रतान्त पारणा की। कांग्रेस के अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद, पाकिस्तान के हाई कमिश्नर, जाहिद हुसैन, हैदराबाद के एजेण्ट जनरल तथा प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता और देश-विदेश के पत्र प्रतिनिधि उस समय उपस्थित थे।

श्री राजेन्द्रबाबू के नेतृत्व में १३० सदस्यों की शान्ति-समिति ने जिसमें सभी सम्प्रदायों के और संगठनों के प्रतिनिधि थे, गांधी जी की एकतासम्बन्धी सात शर्तों के प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किये।

गांधी जी के उपवास की इस सकुशल समाप्ति से सारे देश ने बड़ा चैन की सांस ली वहां भारतीय संघ के मुसलमानों ने भी यह समझा कि महात्मा गांधी के रहते उनका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।

गांधीजी पर बम

इस उपवास से हिन्द संघ के मुसलमान तो आश्वस्त हो गये पर उपवास के दिनों में ही कराची में जो हत्याकाण्ड और गुजरात स्टेशन पर भयानक कत्ले आम हुआ उसकी प्रतिक्रियात्मक लहर देश ने विष का घूंट पीकर सहन की। परन्तु फिर भी गुरु गोविन्द सिंह के जन्मदिवस पर इलाहाबाद, चन्दौसी और नगीना आदि स्थानों में मामूली साम्प्रदायिक दंगा हो गया। सबसे बड़ी प्रतिक्रिया जो हुई वह यह थी कि मदनलाल नाम के एक पंजाबी शरणार्थी ने उपवास टूटने के दूसरे दिन ही गांधी जी की प्रार्थना सभा में बम फेंका, जो गांधी जी से १५ गज की दूरी पर फट गया। कोई व्यक्ति घायल नहीं हुआ। मदनलाल गिरफ्तार हो गया।

सैनिकों का अभिवादन 'जय हिंद'!

सैनिक अधिकारियों ने आदेश दिया है कि 'गुड मार्निंग' से अभिवादन करने के बजाय सैनिक 'जय हिंद' कह कर अभिवादन किया करें।

सुरक्षा कौंसिल में काश्मीर

काश्मीर के मामले में भारत और पाकिस्तान के प्रतिनिधियों में एक समझौता हो गया है, जिसके अनुसार संयुक्तराष्ट्रीय सुरक्षा कौंसिल एक कमीशन नियुक्त करेगी। इस कमीशन में एक प्रतिनिधि पाकिस्तान का होगा, एक हिन्दुस्तान का और एक प्रतिनिधि उभय पक्ष-सम्मत संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा कौंसिल का।

बेल्जियम की ओर से यह कमीशन सम्बन्धी प्रस्ताव रखा गया था। सुरक्षा कौंसिल में यह प्रस्ताव पास हो गया। पक्ष में ९ मत आये। मतगणना के समय रूस और यूक्रेन अनुपस्थित रहे।

पाकिस्तान काश्मीर के अतिरिक्त मतभेद के अन्य प्रश्नों को भी वार्ता मे सम्मिलित करना चाहता है। परन्तु भारत इस वार्ता को काश्मीर तक ही सीमित रखना चाहता है। भारत सुरक्षा कौंसिल में केवल काश्मीर का प्रश्न ही रखा था। परन्तु पाकिस्तान ने इस विवाद को अवान्तर प्रसंगों में उलझाकर अनावश्यक रूप से टालना चाहता है। इस लिए भारतीय प्रतिनिधियों ने कह दिया है कि यदि काश्मीर के सिवाय और किसी बात को बीच में डाला गया तो हमें काश्मीर का मामला सुरक्षा-कौंसिल से उठाने के लिए विचार करना पड़ेगा।

पश्चिमी बंगाल का नया मन्त्रिमण्डल

पश्चिमी बंगाल के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र घोष के त्यागपत्र देने पर नये मनोनीत प्रधानमन्त्री श्री डा० विधानचन्द्र राय ने अपने मन्त्रिमण्डल की घोषणा कर दी है। इसमें चार मन्त्री पुराने हैं शेष आठ नये हैं। गवर्नर के सामने जिन मन्त्रियों की सूची पेश की गई है उनके नाम ये हैं:—

१. डा० विधानचन्द्र राय
२. श्री नलिनीरंजन सरकार
३. राय हरेन्द्र नाथ चौधरी
४. श्री जी० सी० सिन्हा
५ श्री निहारेन्दु दत्त मजूमदार
६ श्री के० पी० मुखर्जी
७ श्री भूपति मजूमदार
८. श्री हेमचन्द्र नस्कर
९. श्री मोहिनी मोहन वर्मन
१० श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन
११. श्री निकुंज बिहारी मैत्र
१२ श्री यादवेन्द्रनाथ दत्त

कांग्रेस से समाजवादी निष्कासित

बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने समाजवादी दल के १७ सदस्यों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करके उन्हें तीन वर्ष के लिए कांग्रेस से निकाल दिया है। इन निष्कासितों में श्री अशोक मेहता भी शामिल हैं जिन्होंने बम्बई में अभी कुछ दिन पहले पांच लाख मजदूरों की सांकेतिक हड़ताल करवाई थी। इन समाजवादियों को कांग्रेस से निकालने का कारण यह था कि ये लोग स्थानीय चुनाव में कांग्रेसी उमीदवारों के विरुद्ध खड़े हुए थे और यह स्पष्टता अनुशासन भंग है।

ग्वालियर में वैधानिक सुधार

ग्वालियर के महाराज और स्टेट कांग्रेस के अध्यक्ष के बीच हुए समझौते के अनुसार महाराज ने वैधानिक सुधारों की घोषणा की है। घोषणा की मुख्य बातें ये हैं—

१ राज्य में एक अन्तःकालीन धारा सभा बनाई जायेगी, जिसका अध्यक्ष प्रतिनिधियों द्वारा ही चुना जायगा।

२ विधान निर्मात्री सभा में नई धारासभा द्वारा निर्वाचित २० सदस्य होंगे जिनका चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व के द्वारा होगा। राजा के निजी व्यय को छोड़कर शेष सभी विषयों पर उन्हें कानून बनाने का अधिकार होगा। विधान सभा की सब सिफारिशों को महाराज पूर्णत: स्वीकार करेंगे।

३ ११ सदस्यों की एक अन्तःकालीन सरकार बनाई जायेगी, जिसमें ९ मन्त्री धारा सभा के और २ महाराज द्वारा निर्वाचित होंगे।

टिहरी में जनतन्त्र

प्रजामण्डल द्वारा पुलिस तथा सिविल विभाग पर और खजाने पर अधिकार कर लिए जाने के साथ टिहरी में राजतन्त्र समाप्त हो ही गया था। अब भारतीय संघ के रियासती सचिवालय के आदेशानुसार यू० पी० सरकार ने रियासत का शासन अपने हाथ में ले लिया है। देहरादून के जिला मैजिस्ट्रेट और पुलिस कमिश्नर ने पांच सौ पुलिस वालों के साथ टिहरी पहुंच कर वहां का चार्ज ले लिया। फर्रुखाबाद के जिला मजिस्ट्रेट श्री ज्योतिप्रसाद रियासत के एडमिनिस्ट्रेटर नियुक्त किये गये हैं।

मिलिटरी स्टोरों के बारे में धमकी

पाकिस्तान के अर्थमन्त्री गुलाम मोहम्मद ने पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति की दयनीयता का वर्णन करते हुए; भारत ने सम्पत्ति की देनदारी में जो उदारता दिखायी है उसका मजाक उड़ाया और कहा कि दोनों पक्षों ने एक दूसरे के हितों को ध्यान में रखते हुए यह समझौता किया था — फिर उदारता कहां रह गई। भारत ने हमारे मिलिटरी स्टोर रोक रखे हैं। हम यह शिकायत भी संयुक्तराष्ट्र संघ में पेश करेंगे, क्योंकि भारत के विरुद्ध अपनी सब शिकायतें हमने संयुक्तराष्ट्र संघ के सामने पेश कर दी हैं।

भारत के ९० विमान

पाकिस्तान सरकार ने भारत के जो ९० विमान रोक रखे थे, उनके बारे में गांधी जी के उपवास के परिणामस्वरूप पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपया मिल जाने पर यह सूचना मिली थी कि पाकिस्तान उन विमानों को भारत भेज रहा है। परन्तु १५ अगस्त के बाद भारत ने पाकिस्तान पर जो व्यय किया था, उस मद में ५ करोड़ रुपया काट लेने पर पाकिस्तान ने विमान पुनः रोक लिये। अब समाचार मिला है कि पाकिस्तान ने उन विमानों को लौटाने का निश्चय कर लिया है और वे विमान अब शीघ्र ही बम्बई पहुंच जायेंगे।

पाकिस्तान में ईसाइयों की दुर्दशा

पंजाब असेम्बली के भूतपूर्व स्पीकर दीवान बहादुर एस० पी० सिंह ने पश्चिमी पंजाब की असेम्बली में कहा है — "हमें पाकिस्तान से निकालने का आन्दोलन हो रहा है। हमें विश्वास था कि इस्लाम हमसे अच्छा व्यवहार करेगा। भारत में एक ईसाई को प्रान्तपति बनाया गया है, मन्त्रिमण्डल और विधान परिषद् में भी हमारा पर्याप्त प्रतिनिधि
परन्तु पाकिस्तान में ईसाइयों के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया है और किया जा रहा है, वह वर्णनातीत है।

कपड़े का कंट्रोल हटा

टेक्सटाइल कण्ट्रोल बोर्ड ने यह फैसला कर लिया है कि कपड़े और सूत पर उत्पादन और मूल्य सम्बन्धी सब तरह का कण्ट्रोल हटा लिये जाए। सूत की वर्तमान वितरण प्रणाली जारी रखी जाएगी। निर्यात कर दुगना कर दिया जायगा। आयात के वितरण व मूल्य पर से पाबन्दी हटाली जाएगी। वस्त्र उत्पादक और मिलमालिकों से अनुरोध किया जाएगा कि वे अपने उत्पादन का २० प्रतिशत भाग अलग कर दें जिसे अर्ध-सरकारी नियन्त्रण में उचित मूल्य वाली दुकानों पर बेचा जायेगा।

दिल्ली में शान्ति आंदोलन के विविध दृश्य

श्री राजकुमारी अमृतकौर महिलाओं की सभा में भाषण दे रही हैं।

म० गांधी उपवास समाप्त कर रहे हैं।

डा० राजेन्द्रप्रसाद शान्ति स्थापना के लिए भाषण दे रहे हैं।

राजेन्द्रबाबू के सभापतित्व में शान्ति समिति की एक बैठक।

[illegible] कृपलानी की पत्नी [illegible] आश्वासन दे रहे हैं।

विराट् शान्ति सभा में पं० जवाहर लाल नेहरू भाषण दे रहे हैं।

गांधीवाद क्या है, क्या नहीं ?

[प्रो॰ इन्द्र विद्यावाचस्पति]

भावुकता की अपेक्षा युक्ति और तर्क सङ्गत विवेचन सत्य के निकट पहुंचने के लिए अधिक सहायक होता है। इस लेखमाला में योग्य लेखक गांधीवाद पर तात्त्विक दृष्टि से विवेचन कर रहे हैं। आशा है, पाठक इस लेखमाला को पसन्द करेंगे। —स॰

[१]

इस बात से शायद ही कोई पक्षपात हीन व्यक्ति इन्कार कर सके कि इस समय के सबसे अधिक प्रसिद्ध महापुरुष महात्मा गांधी हैं। सम्राट् रघु के बारे में महा कवि कालिदास ने कहा है कि उसका यश पृथ्वी की सीमाओं को पार कर गया था, वह पहाड़ों से ऊंचा चला गया था, समुद्रों से पार हो गया था और पाताल को छेदकर उससे भी नीचे फैल गया था। महात्मा गांधी के यश की भी आज यही दशा है। वह पृथ्वी के हर एक कोने में फैला हुआ है। गुज़रे हुए पचास सालों में वह निरन्तर बढ़ता ही गया है। वह इतना बढ़ा है कि आज निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि देश विदेश में जितनी चर्चा गांधी जी की होती है, उतनी किसी की नहीं होती। महलों से लेकर झोंपड़ी तक और अख़बार से लेकर चौपाल तक उनका नाम फैला हुआ है।

यह एक बहुत ही सामयिक और मनोरञ्जक प्रश्न है कि गांधी जी की इस ख्याति का कारण क्या है ?

सम्भव है यह कहा जाय कि अभी इस प्रश्न का उत्तर तलाश करने का समय नहीं आया है, क्योंकि अभी महात्मा जी का कार्यक्रम वृद्धि पर है। वह अभी इतना 'वर्त्तमान' और जीवित है कि उसकी चीर-फाड़ नहीं हो सकती। पूरी परीक्षा तो शव-परीक्षा ही होती है। जब तक कोई वस्तु उग्र रूप से जीवित है तब तक उसकी पक्षपातहीन काट छांट करना अत्यन्त कठिन है। इस विषय में मेरा निवेदन है कि यह कार्य कठिन तो अवश्य है, परन्तु असम्भव नहीं। जीवित रोगी की चीर फाड़ नहीं की जा सकती, परन्तु एक्स रे तो किया जा सकता है। ऊपर के आवरण को हटाकर अन्दर की वास्तविक चीज़ तो देखी जा सकती है। मैं बहुत डरते डरते यह कहने का भी साहस करता हूं कि महात्मा जी का प्रभाव अपनी चरम सीमा तक पहुंच चुका है। वह उस रेखा को छू चुका है, जिसके आगे वर्त्तमान, भूत के दायरे में आने लगता है। स्वयं महात्मा जी ने इस सत्य को अनुभव किया है। इस पन्द्रहवें उपवास से पूर्व कई दिनों तक महात्मा जी अपने सायं के भाषणों में इस प्रकार के भाव प्रगट किया करते थे कि पहले तो आप सब मेरी बात मानते थे, अब तो आप सुनते ही नहीं। इसको अपने भाषणों में उन्होंने सैकड़ों बार नहीं, तो बीसियों बार अवश्य दोहराया है। यह तो मानना ही चाहिये कि महात्मा जी ने जैसा अनुभव किया वैसा कहा। वह अनुभव कर रहे थे कि उनका प्रभाव भारत की जनता पर हल्का हो गया है। महात्मा जी की यह अनुभूति ठीक ही थी। पन्द्रहवां उपवास उसी अनुभूति की प्रतिक्रिया थी। उपवास ने प्रत्यक्ष में देश के वातावरण को बहुत कुछ बदल दिया है, परन्तु अभी यह निर्णय करने का समय नहीं आया कि यह परिवर्त्तन गहरा और स्थिर है, या केवल सामयिक है। लक्षणों से प्रतीत होता है कि यह परिवर्त्तन देशवासियों की उस भक्ति और प्रेम की भावना का परिणाम है, जो उनके हृदयों में महात्मा जी के व्यक्तित्व के लिये विद्यमान है। इससे सन्देह होता है कि शायद यह परिवर्त्तन बहुत गहरा और स्थायी नहीं है। सम्भव है मेरा विचार निर्मूल हो, तो भी यह तो मानना पड़ेगा कि यह समय महात्मा जी के प्रभाव और उसके कारणों के विश्लेषणात्मक विवेचन के अनुकूल है, प्रतिकूल नहीं।

[२]

महापुरुषों की ख्याति के निम्न लिखित कारण होते हैं—

क. मौलिक सिद्धान्त।

ख. जीवन में किये हुए महान् कार्य।

ग. संसार के सामने अपने विचारों, अपने कार्यों और अपने व्यक्तित्व को भली प्रकार प्रकाशित करने की शक्ति।

इनमें से पहिला कारण उन महापुरुषों के सम्बन्ध में लागू होता है, जो संसार को कोई नया और मौलिक विचार बीज रूप में दे जाते हैं। यह आवश्यक नहीं कि वे कार्यक्षेत्र में सफल हों। यह भी आवश्यक नहीं कि वे अपने विचारों को कार्यरूप में परिणत करने का प्रयत्न भी करें। उनके विचार ही इतने मौलिक होते हैं कि जैसे छोटा सा बीज कालान्तर में फूलों और फलों से लदा हुआ पेड़ बन जाता है, उसी प्रकार उनके विचार विकसित होकर 'सिद्धान्त,' 'दर्शन' अथवा 'वाद' के रूप में परिणत हो जाते हैं। हमारे दर्शनकारों की अमर ख्याति का यही आधार था। डारविन और मार्क्स की ख्याति भी इसी कारण से है। उन्होंने जो विचार बीज रूप में बोये, वह समय के साथ-साथ अङ्कुरित होकर वृक्ष के रूप में आते गये। द्वैतवाद, परिणामवाद, समाजवाद और विकासवाद आदि वाद तथा सिद्धान्त उन्हीं मौलिक विचार रूपी बीजों के फल हैं।

[३]

पहले इस कसौटी पर कसकर हमको देखना है कि 'गांधीवाद' नाम का कोई वाद है भी या नहीं ?

इस प्रश्न पर विचार करने की आवश्यकता इस कारण है कि महात्मा जी के बहुत से अनुयायी यह मानने और घोषित करने लग गये हैं कि 'गांधीवाद' नाम की एक अलग वस्तु है, जिसे वह धार्मिक सिद्धांतों के रूप में प्रकट करते हैं। धीरे धीरे गांधी जी के कट्टर अनुयायियों का समुदाय एक पन्थ या सम्प्रदाय के रूप में परिणत होता जाता है। मुझ जैसे संख्या में बहुत अधिक भारतवासी ऐसे हैं, जो महात्मा जी के व्यक्तित्व को बहुत ऊंचा—शायद संसार के वर्त्तमान मनुष्यों में सबसे ऊंचा—मानते हैं और उनमें भक्ति रखते हैं। वे महात्मा जी के विशुद्ध और दृढ चरित्रबल, और सुलझे हुए चौमुखे मस्तिष्कबल के साथ मिली हुई अद्भुत कार्यशक्ति और संगठनशक्ति का महात्मा जी के समान दूसरा उदाहरण नहीं पाते। इस क्रान्तिकाल में महात्मा जी ने भारत का जो साहस से भरा हुआ नेतृत्व किया है, उसके लिये कौनसा भारतवासी उनका कृतज्ञ नहीं। यह सब कुछ होते हुए भी जब हम यह देखते हैं कि भारतवर्ष का वही साम्प्रदायवाद और रूढ़िवाद का पुराना रोग फिर से दोहराया जा रहा है, तो थोड़ा सा विश्लेषण और निरीक्षण करना आवश्यक हो जाता है।

विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या महात्मा जी ने कोई नये सिद्धान्त या मूलतत्त्व ढूंढकर निकाले हैं, जिन्हें 'गांधीवाद' का नाम दिया जाय। महात्मा जी के अपने शब्दों में हम कह सकते हैं कि उनके उपदेशों का सार 'सत्य' और 'अहिंसा' इन दो शब्दों में आ जाता है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन दोनों में से कोई भी चीज़ नयी नहीं। जबसे मनुष्य ने कर्त्तव्याकर्त्तव्य पर विचार करना शुरू किया है, तब से वह मानता रहा है कि सत्य उत्कृष्ट वस्तु है और दूसरे को दुःख देना अच्छा नहीं। भारतीय धर्मशास्त्र में धर्म के जो १० लक्षण माने गये हैं, उनमें से केवल दो का चुन लेने में कुछ अपूर्णता आ सकती है, नवीनता नहीं। महात्मा जी ने स्वयं भी कभी यह दावा नहीं किया कि उन्होंने किसी नवीन सत्य का आविष्कार किया है। विचार-क्षेत्र में उन्होंने केवल इतनी नवीनता की है कि धर्म के केवल दो अङ्गों को अन्य सब अङ्गों से अलग करके धर्म का जनता के सामने रख दिया है। धर्म के अधूरे रूप में पेश करने की जो हानियां हैं, उन पर मैं इस समय कुछ नहीं कहूंगा। हानि लाभ की विवेचना में मतभेद हो सकता है, परन्तु इतनी बात तो गान्धीवाद के माननेवालों को भी स्वीकार करनी पड़ेगी कि महात्मा जी ने सत्य और अहिंसा—धर्म के इन दो लक्षणों को, अन्य लक्षणों से अलग करके मनुष्य जीवन के एक बहुत बड़े पहलू को अंधेरे में छोड़ दिया है। सिद्धान्तों की दृष्टि से महात्मा जी के भाषणों और लेखों में हम एक विचार-धारा तो पाते हैं, परन्तु कोई नया मूल तत्त्व नहीं पाते।

महात्मा जी की विचार धारा बहुत से सामयिक और बाहिर के विचारों का असर है। उनके प्रारम्भिक लेखों में रूस के उस समय के आदर्शवाद और ईसाई पादरियों के शाब्दिक प्रेम धर्म का प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है। उनकी विचार-धारा का निर्माण दक्षिण अफ्रीका में हुआ। दक्षिण अफ्रीका में भारतवासी बहुत निर्बल थे। उस निबलता ने 'निर्बल का बल राम' इस मनोवृत्ति को जन्म दिया। यह वही थी, जिसका पूर्वरूप हम मुसलमानों के राज्यकाल के भारतीय कवियों में पाते हैं। महात्मा जी की विचार धारा सब से अधिक भक्त कबीर से मिलती है। भक्त कबीर का जन्म भी ऐसे समय और देश में हुआ था, जिसमें राजनीतिक पराधीनता का दौर-दौरा था। यदि हम विचारों का ऐतिहासिक विवेचन करें, तो इस परिणाम पर पहुंचेंगे कि भक्त कबीर और महात्मा गांधी की

[शेष पृष्ठ २१ पर]

आज का हिन्दी संसार

मेरे तीन स्वप्न

मेरे स्वप्न के फलस्वरूप सन् १९१९ में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के पटना अधिवेशन में जिसके सभापति पंडित विष्णुदत्त जी शुक्ल थे, एक प्रस्ताव पास हुआ था। उस प्रस्ताव का आशय था कि विभिन्न विषयों पर ग्रंथ निर्माण के लिए लेखकों को उनकी जीविका की चिन्ता से मुक्त कर एक स्थान पर रखा जाय। जबलपुर में राष्ट्रीय हिंदी मंदिर की स्थापना इसी उद्देश्य से हुई थी। वह अपना कार्य न कर सका और समाप्त हो गया। उस समय की अपेक्षा आज लेखकों की जीविका और साहित्य सृजन ये दोनों प्रश्न कहीं अधिक महत्व के हो गये हैं। क्या आज फिर किसी ऐसी संस्था का संघटन हो सकता है ?

मेरा दूसरा स्वप्न है भारत में नोबुल प्राईज के समान कमसे कम एक लाख रुपये के एक ऐसे पुरस्कार की सृष्टि जो किसी भी भारतीय भाषा के सर्वोत्तम ग्रंथ पर हर तीसरे वर्ष दिया जाय। वह ग्रंथ चाहे हिंदी, बंगला, मराठी, गुजराती, तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड किसी भी भाषा में लिखा हो।

सिनेमा युग बीतता जा रहा है। केवल भारतवर्ष में नहीं, परन्तु सारे संसार में नाटकों का पुनरुत्थान हो रहा है, जहां हालीवुड है उस अमेरिका में भी। मेरा तीसरा स्वप्न है हिन्दी नाटकों के लिए आधुनिक से आधुनिक रंगमंच की स्थापना।

— सेठ गोविन्ददास

अखिल भारतीय हिंदी साहित्य संघ की योजना

साहित्यकार संसद्, प्रयाग की मंत्रिणी श्रीमती महादेवी वर्मा ने भारत के हिन्दी भाषा-भाषियों की साहित्यिक संस्थाओं को एक-सूत्र-बद्ध करने और उनमें परस्पर सहयोग के द्वारा हिन्दी साहित्य की उन्नति और प्रचार करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय संघ स्थापित करने की एक योजना बनाई है। प्रमुख साहित्यिकों का उसे सहयोग प्राप्त है। भारत की साहित्यिक संस्थाओं के पास यह योजना भेजी जाएगी। सारे भारत में हिन्दी की साहित्यिक संस्थाओं की संख्या अनुमानतः ३०० से अधिक है। श्रीमती महादेवी वर्मा एक परिचय पुस्तक भी प्रकाशित कर रही हैं जिसमें साहित्यिक संस्थाओं के नाम, उद्देश्य, नियम और कार्यों का विवरण होगा।

महादेवी वर्मा को २५,१००) की थैली भेंट

प्रयाग की साहित्यिकार संसद की मन्त्रिणी महादेवी वर्मा को हाल में कलकत्ते की साहित्यिक संस्थाओं ने पत्र भना दिया और उन्हें साहित्यकार संसद् का साहित्यिक कार्य आगे बढ़ाने के लिए २५,१००) की थैली एक कीमती कास्केट में रखकर भेंट की। महादेवी जी ने ऋग्वेद और रघुवंश की हिन्दी छन्दों में रचना की है और इन रचनाओं को साहित्यकार संसद् के अन्तर्गत 'लेखक सहायक निधि' को दे दिया है। महादेवी जी को इन रचनाओं के प्रकाशन के हेतु कलकत्ते के दो धनिकों ने पृथक् रूप से १६०००) की सहायता दी है।

बंगाल द्वारा हिन्दी का समर्थन

डा० यदुनाथ सरकार, डा० रमेशचन्द्र मजुमदार, पण्डित विधुशेखर शास्त्री, डा० सुनीति कुमार चटर्जी, डा० कालीदास नाग, डा० भण्डारकर, श्री सजनीकान्तदास, लेडी रेणु मुखर्जी, डा० शिशिरकुमार मित्र तथा अन्य अनेकों बंगाली साहित्यकारों एवं विद्वानों ने विधान परिषद के अध्यक्ष के नाम एक संयुक्त पत्र भेज कर उनसे अनुरोध किया है कि बंगाली साहित्यकार इस बात से सहमत हैं कि देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी भाषा को भारत की राष्ट्रभाषा स्वीकृत किया जाय। इन विद्वानों का कहना है कि हिन्दी देश की सर्वाधिक प्रचलित भाषा है, जिसको देश की आधी से अधिक जनसंख्या लिख बोल सकती है। इन विद्वानों ने हिन्दुस्तानी का विरोध करते हुए लिखा है कि उसमें विदेशी, अरबी, फारसी भाषाओं के शब्दों का बाहुल्य है, जिसे देश के सभी लोग नहीं समझ सकते। देवनागरी लिपि ध्वनि को उसके स्वाभाविक स्वर में लिपिबद्ध करती है और संसार की सबसे पूर्ण लिपि है तथा देश की अन्यान्य लिपियां भी उसी का रूपान्तर हैं। फारसी लिपि भारतीय ध्वनियों को प्रकट नहीं कर सकती।

इन्दौर में राजभाषा हिन्दी

देवनागरी लिपि में लिखी हुई हिन्दी भाषा इन्दौर राज्य की सरकारी भाषा होगी—महाराज इन्दौर ने मध्य भारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३३ वें अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए यह घोषणा की।

हिंदी सीखना अनिवार्य

जालंधर म्युनिसिपल कमेटी ने अपने यहां के प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों के नाम एक नोटिस जारी की है कि वे एक माह के अन्दर हिन्दी सीख लें अन्यथा नौकरी से हटा दिये जायेंगे।

तीन महीने के अन्दर हिंदी

आगरा म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमेन श्री आर० के० टन्डन ने समस्त म्युनिसिपल कर्मचारियों के लिए एक आदेश जारी कर दिया है जिसमें कहा गया है कि जो १३ अप्रैल १९४८ के अन्दर हिन्दी सीख लेगा वही नौकर रह सकेगा बाकी को हिन्दी जानने वालों के लिए स्थान खाली करना पड़ेगा।

हिन्दी भाषा और लिपि से अनभिज्ञ लोगों के लिए एक रात्रि पाठशाला खोली जा रही है।

अंग्रेजी हटायी गयी

बिहार सरकार ने सन् ४८ और ४९ से क्रमशः स्कूलों की छठी और सातवीं कक्षाओं से अंग्रेजी हटाने का निश्चय किया है। इस तरह बचाये गये समय में कला कौशल की शिक्षा का प्रबन्ध किया जायगा। सरकार ने क्रमशः ९ वीं कक्षा तक अंग्रेजी हटा देने का निश्चय किया था। तदनुसार सन् ४७ में चौथी और पांचवीं कक्षाओं से अंग्रेजी हटायी जा चुकी है।

अदालतों में हिंदी क्यों नहीं ?

न्यायालय सम्बन्धी कार्यों में अब तक अरबी और फारसी जैसी विदेशी भाषाओं का आधिपत्य रहा है। स्वतन्त्र भारत में यह अक्षम्य है। कुछ शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द नीचे दिये जा रहे हैं—

इन्साफ — न्याय, अदल — न्याय, मुंसिफ — न्यायाधीश, काजी — न्यायाधीश, फैसला — निर्णय, अदालत — न्यायालय, कचहरी — न्यायालय, नवीस — लेखक, मुंशी — लेखक, जेलखाना — बन्दी गृह, मुकदमा — मूल कम, गुजारिश — प्रार्थना,

[शेष पृष्ठ १४ पर]

हवाना कांफ्रेंस और भारत

[श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालकार]

आज की दुनिया के सामने अनेक महत्त्वपूर्ण आर्थिक प्रश्न उपस्थित हैं। सफल राष्ट्र अनुन्नत देशों में अपना व्यापार व्यवसाय बढ़ाने के लिए कुछ आश्वासन चाहते हैं—तट करों की दीवार ऊंची न की जाय, उनकी लगाई पूंजी को सरकारें जब्त न कर सकें और द्विदेशिक सन्धि के द्वारा अड़चनें न डाल सकें। हवाना में इसी प्रश्न पर विभिन्न राष्ट्रों मे विचार हो रहा है, इसका परिचय देते हुए भारतीय नीति निर्धारण की दिशा में कुछ उपयोगी सुझाव भी लेखक ने दिये हैं।

हवाना में संयुक्त राष्ट्रसंघ की सामाजिक और आर्थिक समिति की ओर से व्यापार और रोजगार का विस्तार करने के उद्देश्य से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संघ (इण्टरनेशनल ट्रेड आर्गनाइजेशन) की स्थापना करने के लिए एक सम्मेलन हो रहा है। हवाना कान्फ्रेंस जेनेवा में तैयार किए गए चार्टर के के मसविदे पर विचार कर रही है। उग्र विवाद और मतभेद का विषय यह है कि मिश्र, ब्राजील, भारत आदि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े देश विदेशी माल पर तटकर लगा कर अपने उद्योगों को संरक्षण देने के लिए सर्वथा स्वतन्त्र हैं, या वे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संघ की अनुमति से ही उद्योगों को संरक्षण दे सकते हैं। कान्फ्रेंस की गाड़ी इस प्रश्न पर आकर रुक गई है। दूसरी बात यह है कि पूंजी, बुद्धि और व्यावसायिक संगठन का अनुभव लगाने में समर्थ अमरीका आदि देश इस बात की गारण्टी चाहते हैं कि यदि कालान्तर में विभिन्न देशों में चलाये गये उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया जायगा, तो उन्हें अपनी पूंजी आदि का पूरा पूरा मुआवजा दिया जावेगा और इस गारण्टी चाहने का कारण यह है कि चेकोस्लोवाकिया में सरकार द्वारा उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के नाम पर अमेरिका की लगाई हुई दोतिहाई पूंजी मारली गई है। वे अब चाहते हैं कि उसकी पुनरावृत्ति न हो।

विश्व-व्यापार के मार्ग में जो बाधायें हैं, उनको दूर करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संघ की स्थापना की जा रही है। पर जब इसके चार्टर का मसविदा बनाया जा रहा था, तभी बेनेलक्स (बेल्जियम, नीदरलैण्ड लक्समबर्ग) का तटकर संघ स्थापित हुआ। फ्रांस ने अपने तटकर के दर नये कर दिए। फलत तट कर संघ की स्थापना और सर्वथा नवीन संयुक्त तट कर के कारण नये रेट के आधार पर नया मसविदा बनाया गया। यह घटना बता रही है कि तट कर की ऊंची दीवारों को गिराने के लिए बनाई संस्था को भी उनका अस्तित्व स्वीकार करके और उनसे समझौता करके आगे बढ़ना पड़ रहा है।

बाधायें

इसी समय आस्ट्रेलिया और अमरीका के बीच ऊन पर विवाद उठ खड़ा हुआ। संयुक्त राष्ट्र अमरीका की कांग्रेस में ऊन पर आयात कर बढ़ाने का एक बिल पेश किया गया। इससे चार्टर बनाने वालों का काम और अधिक कठिन हो गया। आस्ट्रेलिया अमरीका को ऊन भेजता है। इस बिल से वह तिलमिला उठा। अमरीका आज भी अपने उद्योगों को संरक्षण देने का अधिकार छोड़ने को तैयार नहीं है। सांयोगिक रबड़ उद्योग को संरक्षण देने का आग्रह उसका हवाना में भी कायम है।

विश्व-व्यापार के विस्तार के लिए द्विदेशिक व्यापार समझौतों का अंत करके बहुदेशिक व्यापारिक सन्धि करना आवश्यक है। बहुत से देशों को अनुभव है कि द्विदेशिक व्यापारिक करार के कारण उनके हाथ पैर बंध जाते हैं, और वे सम्भावित सस्ते से सस्ते बाजार से माल खरीद नहीं पाते और अपना माल अत्यधिक अनुकूल बाजार में बेच नहीं पाते। पर जो देश अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संघ के सदस्य नहीं हैं, उनमें और संघ के सदस्य राष्ट्रों के बीच द्विदेशिक करार होने से पेचीदगी बढ़ जाती है। इंग्लैण्ड और रूस के बीच हुआ आर्थिक व्यापारिक समझौता इसी प्रकृति का है। इन कठिनाइयों के बीच संघके चार्टर का मसविदा जिनेवा म बनाया गया। इसकी ८वीं धारा में बताया गया है कि एक देश का माल दूसरे देश में किस अवस्था म जायगा। देशों के बीच एक समझौता होगा और विभिन्न चीजों के ऊपर किस मात्रा में कर लगाया जायगा, इसकी सूची तैयार की जावेगी। भारत ने इस प्रकार के २८ समझौते किये हैं। हर एक सूची में यह बात सम्मिलित होगी कि एक देश का दूसरे देश में आयात माल सूची में उल्लिखित जकात के अतिरिक्त साधारण जकात से मुक्त होगा और हस्ताक्षर के दिन जो कर लगा हुआ था, उसके अतिरिक्त अन्य करों से मुक्त होगा। पर यह किसी गवर्मेण्ट को किसी भी आयात माल पर अपने देश में उत्पन्न माल के समान और कर लगाने से न रोक सकेगा। इस बात का ध्यान रखा गया है कि तटकर लगाने के दरों का पुनर्वर्गीकरण करके ऊंचा रेट लगा कर सूची में लिखित करों के मिलने वाले लाभ को तुच्छ न बना दे।

चार्टर

चार्टर के मसविदे में आठ अध्याय हैं। इनमें व्यापार और रोजगार के विशेष रूपों पर विचार किया गया है। इसका उद्देश्य यह बताया गया है कि सदस्य देशों की जनता के जीवन निर्वाह का मानदण्ड ऊंचा हो, उत्पादन और विश्व के स्रोतों का विस्तार हो, देशों के अन्दर बेकारी का अन्त हो, मजदूरों की स्थिति उन्नत हो, मांग और आर्थिक क्रिया कलाप की वृद्धि हो। पिछड़े देशों की उन्नति के लिए संरक्षण की छत्रच्छाया में उद्योगों की स्थापना का उनका अधिकार स्वीकार किया गया है। इसका मुख्य अध्याय व्यावसायिक नीति की व्याख्या के अर्पित है। तटकर की दर क्या हो, इस पर विभिन्न देशों के बीच चर्चा का आधार सब के साथ एक समान बर्ताव रखा गया है। किसी देश को अन्य देशों से अधिक रियायत दी जाय, इसका अन्त करने के लिए कहा गया है। जकात को कम करने की सलाह दी गई है।

भारत में अमेरिकन हितों के लिए प्रयत्नशील मि हैनरी ग्रेडी
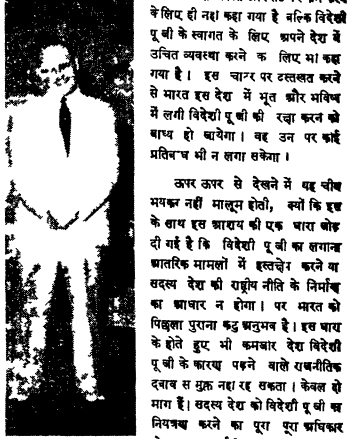
पर आज विश्व व्यापार जकात और तट कर की ऊंची दीवार के कारण कम नहीं हो गया है, बल्कि उत्पादन की कमी के कारण कम हो गया है। दूसरा कमी का कारण क्रय शक्ति में कमी का आना है। इसलिए जकात का प्रश्न महत्वपूर्ण नहीं है, यदि यह कम कर दिया जाय, तो भारत को कोई हानि न होगी।

विदेशी पूंजी

देश के औद्योगीकरण और नवीन उद्योगों की स्थापना के लिए देश में विदेशी पूंजी लगाने की सुविधा उत्पन्न करने का प्रश्न पहले से सर्वथा भिन्न है। हवाना कान्फ्रेंस के सामने उपस्थित चार्टर में केवल जकात और तट कर कम करने के लिए ही नहीं कहा गया है बल्कि विदेशी पूंजी के स्वागत के लिए अपने देश में उचित व्यवस्था करने के लिए भी कहा गया है। इस चार्टर पर दस्तखत करने से भारत इस देश में भूत और भविष्य में लगी विदेशी पूंजी की रक्षा करने को बाध्य हो जायेगा। वह उन पर कोई प्रतिबन्ध भी न लगा सकेगा।

ऊपर ऊपर से देखने में यह चीज भयंकर नहीं मालूम होती, क्योंकि इस के साथ इस आशय की एक धारा जोड़ दी गई है कि विदेशी पूंजी का लगाना आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने या सदस्य देश की राष्ट्रीय नीति के निर्माण का आधार न होगा। पर भारत को पिछला पुराना कटु अनुभव है। इस धारा के होते हुए भी कमजोर देश विदेशी पूंजी के कारण पड़ने वाले राजनीतिक दबाव से मुक्त नहीं रह सकता। केवल दो मार्ग हैं। सदस्य देश को विदेशी पूंजी का नियन्त्रण करने का पूरा पूरा अधिकार हो, या अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संघ का सदस्य देश अपने इस अधिकार का समर्पण संघ को कर दे और इस प्रकार विदेशी पूंजी की स्थिति मजबूत बनावे इस लिए हवाना में आर्थिक दृष्टि से अनुन्नत देशों के लिए आर्थिक दासता की नई सुनहरी जंजीर तैयार की जा रही हैं।

विदेशी पूंजी पर नियन्त्रण करने के अधिकार का परित्याग इस देश को पुन विदेशियों के लिए सुन्दर चरागाह बना देगा। एंग्लो अमरीका पूंजीपति इस देश म पुन अपनी लड़ाई जारी कर देंगे। भारत ने अभी केवल राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त की है। आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करना अभी शेष है। ब्रिटिश पूंजी आज भी विशाल परिमाण में इस देश में लगी हुई है। यह विशाल ब्रिटिश पूंजी भारतीय जनता के जन मंगल के लिए एक भारी खतरा है। इस व्यवस्था मे विदेशी पूंजी पर नियन्त्रण रखने का अधिकार छोड़ना न केवल एक भारी भूल होगी, बल्कि देश के लिए घातक भी होगा।

अमरीका का रवैया

भारत के अनेक उद्योगपतियों और मन्त्रियों की दृष्टि अमेरिका की ओर लगी हुई है। एक बड़े उद्योगपति के पत्र ने लिखा था—श्री ग्रेडी की भारत में उपस्थिति भारत और संयुक्तराष्ट्र अमरीका

[शेष पृष्ठ १२ पर]

ज्ञान की प्यास

[श्री रामाराम शास्त्री]

गंगा के पार विक्रम शिला महा विहार को देख कर उपासक गुरु-थक्-पा तथा उस के साथी इतनी लम्बी यात्रा के अपने कष्टों को भूल गये। पर सूर्यदेव भी अपने करों को समेट अस्ताचल के इस ओर आ चुके थे। नाविक भी अभी वापिस आता दिखाई न देता था। उन्हें भय उत्पन्न हुआ। क्या अपने लक्ष्य पर पहुंचकर ही तो कहीं हम पिछड़ न जाएंगे। इतनी स्वर्ण राशि लेकर इस घोर स्थान पर रात भर पड़े रहने में उन्हें भय प्रतीत होने लगा। अन्त में विचार कर स्वर्ण को बालू में गाड़ा और रात वहीं काटने का प्रबन्ध करने लगे। अभी प्रबन्ध कर भी न पाए थे कि नाविक पहुंच गया। तब दम में दम आया। पुनः सामान बांधा और नौका में बैठ गंगा को पार किया।

रात बहुत बीत चुकी थी। विहार का मुख्य द्वार भी बन्द हो चुका था। अन्त में विहार के पश्चिम फाटक वाली धर्मशाला में रात्रि व्यतीत करने का प्रबन्ध किया। अभी धर्मशाला में प्रबन्ध कर ही रहे थे कि फाटक के ऊपर वाले कमरे से शब्द सुनाई पड़ा—

कौन है!

हम हैं तिब्बत के यात्री। भिक्षु गुड्-थक पा ने उत्तर दिया।

क्या अध्ययन करने के लिये आ रहे हो?

नहीं आचार्य दीपङ्कर को लेने।

प्रश्नकर्ता निस्तब्ध रह गये। आचार्य दीपङ्कर ही तो भारत की आंख हैं। ऐसे अवसर पर जब कि पश्चिम की ओर तुरुष्कों (तुर्कों) का भारत को भय लगा है आचार्य दीपङ्कर पर ही सब की दृष्टि लगी है यदि वे यहां से चले गए तो समझो भारत से बुद्ध धर्म का अस्तित्व भी नाम शेष हो जायगा। पर ये लोग भी तो इतने कष्टों को सहन कर यहां आए हैं। मेरे देशवासियों की भी तो धर्म पिपासा पूर्ण होनी चाहिये। यह सोचते हुए भिक्षु ग्य-चोन् सेङ् ने आगन्तुकों को समझाया। तुम यह मत कहो कि हम आचार्य दीपङ्कर को लेने आए हैं अन्यथा तुम्हें असफल लौटना पड़ेगा। तुम कहो कि हम पढ़ने के लिये ही यहां पर आए हैं। उचित समय पर मैं आप की इस कार्य में सहायता करूंगा।

निकट भविष्य में विहार में धर्मोत्सव होने वाला था। भोटयात्री समय की प्रतीक्षा में छात्रावस्था में रहने लगे। उत्सव में सम्मिलित होने के लिये देश विदेश से लोग आने लगे उसी समय भिक्षु ग्य-चोन् सेङ् ने भोट यात्रियों को साथ लिया और पण्डितों के दर्शनार्थ ले गये। आचार्य दीपङ्कर के दर्शन भी उसी अवसर पर प्रथम बार हुए। भोट यात्री आचार्य के पाण्डित्य तथा भारतीय विद्वन्मण्डली में उन के मान को देख कर स्तम्भित रह गये।

उन्हें सन्देह होने लगा। क्या आचार्य दीपङ्कर इस स्थान को छोड़ना स्वीकृत करेंगे? पहले भी तो भोट राज ये-शे-ओ ने कुछ व्यक्ति इन्हीं महा पण्डित के लाने को भेजे थे पर उस समय स्पष्ट उत्तर मिल गया था, "नहीं जा सकते।" तो अब भी हम किस प्रकार कर सकेंगे। वैसे तो भोटराज चङ्-छुप ओ (बोधि-प्रभ) ने आज्ञा दी है कि यदि अनुनय विनय करने पर भी आचार्य आने को उद्यत न हों तो उनके अधीनस्थ किसी अन्य विद्वान् को अपने साथ ले आना। पर अब एक बार दर्शन कर लेने पर अन्य कोई विद्वान् दृष्टि में जचता ही नहीं था।

अन्त में सुअवसर देख एक दिन भिक्षु ग्य-चोन् सेङ् भोट यात्रियों को साथ ले आचार्य दीपङ्कर के वास स्थान पर पहुंचे। अभिवादनानन्तर भोट यात्रियों ने निवेदन किया—

भगवन्! तिब्बत में बौद्ध धर्म शिथिल होता जा रहा है। आवश्यकता है एक ऐसे विद्वान् की जो इसके तत्व को जनता पर प्रकाशित कर सके। और इसी कार्य के लिए भोट नरेश ल्हा लामा चङ्-छुप ओ ने श्री चरणों में हम को भेजा है। यह कहते हुए साथ लाई गई स्वर्ण राशि आचार्य के चरणों में भेंट कर दी।

"मेरा जाना असम्भव है" आचार्य ने उत्तर दिया।

"पर आचार्य ...!" भोट यात्री कुछ कहना ही चाहते थे कि आचार्य बोल उठे।

"आयुष्मन्! आपको पता होगा कि वर्तमान भोट राज के पिता ये-शे-ओ ने भी एक बार मुझे बुलाने के लिए कुछ व्यक्ति भेजे थे। पर तुम देख ही रहे हो कि मुझे यहां से अवकाश ही कैसे प्राप्त हो सकता है। यदि मैं मान भी जाऊं तो भी सब स्थविर कब मानने लगे हैं। इसी विवशता के कारण पहले भी मैं न जा सका और अब भी नहीं जा सकूंगा"

"हम जानते हैं आचार्य!" भोट प्रतिनिधि ने कहा। "पर भोटराज ने भी दूसरी बार हमें श्री चरणों में किसी आशा पर ही भेजा है। वर्तमान महाराज के पिता श्री ये-शे-ओ ने जब से अपने देश में धर्म ह्रास अनुभव किया तब से ही धर्म प्रचारार्थ यत्नशील रहे। पहले उन्होंने २१ भोट बालकों को भारत में अध्ययन करने के लिये भेजा। वे काश्मीर में रह कर अध्ययन करते रहे। पर दस वर्ष के पश्चात् २१ में से केवल दो ही जीवित बचे। तब उनको भी महाराज ने वापिस बुला लिया। उन्होंने जान लिया कि उनके देश के बालक भारत में जाकर उतने सफल नहीं हो सकते इस लिए किसी भारतीय विद्वान को ही क्यों न यहां पर निमन्त्रित किया जाए। और इसी लिए प्रथम बार भी चरणों में निमन्त्रण भेजा गया था आचार्य!"

"यह मैं सब सुन चुका हूं।" आचार्य ने धीरे से कहा।

"पर आचार्य! आपकी ओर से उत्तर मिल जाने पर भी महाराज निराश नहीं हुए। उनका अब भी वही विश्वास है कि आचार्य इस देश पर अवश्य कृपा करेंगे। और इसी लिए इन्होंने दोबारा निमन्त्रण भेजने के लिये तैयारी की। पर गर-लोग् देश के राजा के हाथों पकड़े गये। और इस समय उसी के कारागार में हैं।

आचार्य सहसा बोल उठे, "हैं! महाराज कारागार में हैं? क्यों? किस कारण से?"

"भदन्त! अब की बार उनका विचार कुछ अधिक मात्रा में भेंट भेजने का था पर विचारानुसार स्वर्ण उनके कोष में नहीं था। पर संकल्प दृढ़ था। इसी लिए अपने सैनिकों को ले स्वर्णार्थ गर-लोग् देश की सीमा पर पहुंच गये। किन्तु भाग्य की बात है कि स्वर्ण प्राप्ति के स्थान पर गर-लोग् के राज बन्दी हो गये। जब यह समाचार उनके पुत्र वर्तमान भोट नरेश को मिला तो स्तम्भित रह गये। पिता को छुड़ाने का यत्न करने लगे। गर-लोग् के राजा ने स्वर्ण मांगा पर स्वर्ण कुछ कम निकला। अतः स्वर्ण लाने के लिए वापिस भोट देश जाने को तैयार हुए। पर वापिस जाने से पूर्व महाराज से कारागार में मिलने की आज्ञा मिल गई। जब पिता पुत्र का संगम हुआ तो पिता ने कहा पुत्र! यह स्वर्ण मैंने किसी महा पण्डित को भारत से बुलाने के लिए एकत्र किया है। मैं वृद्ध हो चुका हूं। अतः मैं अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकूंगा। पर यदि मुझे छुड़ाने में ही यह स्वर्ण व्यय कर दिया तो फिर मेरा देश सदा के लिए धर्मोपदेश से वंचित रह जाएगा। अ[illegible] मेरी चिन्ता छोड़ो और यह स्वर्ण दे कर पुनः कुछ व्यक्ति भारत भेजो। विक्रम शिला महा विहार में आचार्य दीपङ्कर से पुनः प्रार्थना करो। आचार्य अवश्य कृपा करेंगे? यदि यह कार्य सम्पन्न हुआ तो मैं अपने को कृत कृत्य समझूंगा।

आचार्य! इसी आज्ञा को शिरोधार्य कर वर्तमान भोट नरेश ने हमें आपकी सेवा में भेजा है।"

भोट भिक्षु कथा सुनाते जा रहे थे और दीपङ्कर जी की मुख मुद्रा का अध्ययन कर रहे थे। आचार्य के हृदय का अन्तर्द्वन्द्व मुख मण्डल पर स्पष्ट प्रकट हो रहा था। आचार्य भी द्विविधा में फंसे हुए थे। एक ओर तो भारत पर दिन प्रतिदिन मंडराते हुए तुरुष्क घन घमण्ड को देखते हुए आचार्य भारत को छोड़ना न चाहते थे। और दूसरी ओर राजा की जिज्ञासा और धर्म प्रेम से अभिभूत थे। महाराज के धर्म प्रेम और जिज्ञासा की कथा सुनते सुनते वीत-राग भिक्षुक आचार्य दीपङ्कर को रोमांच हो आया, आंखों से अश्रु कण बह चले। उसी समय भिक्षुक गुङ्-थङ्-पा फिर कहने लगे—

"आचार्य! हम यह जानते हैं कि इस समय भारत में आप सरीखे विद्वान् की अत्यन्तावश्यकता है, पर उधर भी तो एक देश का देश उद्धारार्थ आपके सम्मुख है। भारत में अन्य विद्वान् भी हैं जो देश की स्थिति को संभाल सकेंगे। पर यदि आपने हमें निराश लौटा दिया तो एक देश का देश उस ज्ञान से वंचित रह जाएगा जिसके लिये अब तक कितने ही कष्टों को सहन कर जीवन को बलिदान कर उन्नत किया गया है। हमें पूर्ण आशा है भोट नरेश के इस उचित आग्रह को नहीं टालेंगे आचार्य!"

अब कि बार आचार्य "नहीं" न कर सके। भोट भिक्षु का निशाना ठीक मर्म स्थल पर पड़ा था जिससे आचार्य अभिभूत हुए बिना न रह सके। और भेजों से

[शेष पृष्ठ ११ पर]

महाराष्ट्र की रियासतें

[श्री दीनदयालु शास्त्री]

कोल्हापुर भोर, जामखण्डी, मिरज, सांगली, भोरा और जंजीरा आदि की स्थिति और महत्व।

देश के यह शुभ लक्षण हैं कि हमारे छोटे २ रजवाड़ों ने अपनी पृथक् सत्ता समाप्त करके अपने प्रदेशों का शासन तन्त्र भारत सरकार के सिपुर्द करना शुरू किया है। भारत सरकार इन विभिन्न रजवाड़ों को भाषा व संस्कृति के लिहाज से पड़ोसी प्रान्तों को सौंप रही है। उड़ीसा की तेईस व छत्तीसगढ़ की १६ छोटी बड़ी रियासतें इस दृष्टि से उड़ीसा व मध्यप्रान्त में शामिल हो गयी हैं। अब महाराष्ट्र के दायें बायें विद्यमान १६ रियासतों ने आत्म-समर्पण का निश्चय किया है। यथार्थ में इस प्रदेश में १७ रियासतें व एक जागीर है। इन में से कोल्हापुर की रियासत क्षेत्रफल व आबादी में अपेक्षाकृत बड़ी है। उसका रकबा ३२१६ वर्गमील व आबादी ११ लाख है। इस आबादी व आकार की महत्ता के साथ ही इस रियासत के शायद अपने पूर्वजों की दृष्टि से भी अपना विशेष महत्व रखते हैं और सारे महाराष्ट्र में पूज्य माने जाते हैं। इसका कारण यह है कि सत्रहवीं सदी में महाराष्ट्र में जो जागृति व अभ्युत्थान हुआ था, उसके प्रवर्तक छत्रपति शिवाजी थे। कोल्हापुर की स्थापना शिवाजी के छोटे लड़के राजाराम की पत्नी श्रीमती तारा बाई ने की थी। उस जमाने में ताराबाई ने जो दृढ़ता व ओज अपने शासन कार्य में प्रदर्शित किया था, उस के कारण कोल्हापुर के नरेश आज भी छत्रपति महाराज कहलाते हैं और देशी राजे रजवाड़ों में विशेष महत्व रखते हैं। आज जो राजनीति का चक्र हमारे देश में चल रहा है उस में सम्भवतः कोल्हापुर नरेश स्वयं आत्म समर्पण के लिये तैयार न हों। महाराष्ट्र की पुरातन स्थिति के नाते सम्भवतः वहां के निवासी भी उन्हें आत्मोत्सर्ग के लिये प्रेरित न करें किन्तु कोल्हापुर रियासत अधिक देर तक 'स्वतन्त्र न रह सकेगी, यह हमारी मान्यता है।

कोल्हापुर

इसका कारण यह है कि कोल्हापुर में नौ जागीरदार विद्यमान हैं। ये जागीरदार रियासत की स्थापना के समय से चले आ रहे हैं। उन दिनों कोल्हापुर नरेश को सलाह देने के लिये जो मंत्रीमण्डल कायम था, उसके सदस्यों को ये जागीरें भेंट की गयी थीं। इस भेंट के समय उन से यह शर्त कर ली गयी थी कि इन जागीरों की आमदनी से वे अपने यहां फौजें रखेंगे ताकि संकट काल में कोल्हापुर नरेश को मदद मिले। उन दिनों यह भी निश्चय हुआ था कि इन जागीरों को न तो बेचा जा सकेगा और न ही विभक्त किया जा सकेगा। यदि वे इन्हें बेचना चाहें या विभक्त करना चाहें तो छत्रपति महाराज से स्वीकृति लेंगे। अंग्रेजों ने जब पेशवा के शासन का खात्मा किया तो कोल्हापुर के इन जागीरदारों का निरीक्षण अपने हाथ में लिया था। कोल्हापुर के अंग्रेज रेजीडेण्ट सन् १९३० तक कोल्हापुर नरेश की सहमति से इन जागीरों की देख रेख करते थे। इसके बाद कुछ शर्तों के साथ ये जागीरें कोल्हापुर के मातहत कर दी गयीं हैं, किन्तु अब भी इन नौ में से कुछ छोटे जागीरदार छत्रपति व रेजीडेण्ट के संयुक्त निरीक्षण में हैं। जागीरदारों के वैयक्तिक मामलों का फैसला भी रेजीडेण्ट व छत्रपति के संयुक्त प्रतिनिधि करते हैं। इसी प्रकार इन जागीरों की अदालतें फौजदारी के जो मुकदमे करती हैं, उनके फैसलों की भी स्वीकृति कुछ अंशों में छत्रपति महाराज से ली जाती है। इचलकरन्जी, विशालगढ़ व बावड़ा के जागीरदार इन जागीरदारों में विशेष महत्व रखते हैं। उनका पद सेशनजज के बराबर माना जाता है और वे फांसी आदि की सजा दे सकते हैं। यद्यपि इन के फैसलों पर भी अन्तिम मुहर कोल्हापुर दरबार की लगनी चाहिये। कागल बड़ी व छोटी जागीरें विशेष अधिकार रखती हैं। हमारा ख्याल है कि समय पाकर ये जागीरें अपनी स्वतन्त्र सत्ता की घोषणा कर सकती हैं और अपना शासनतन्त्र भारत सरकार को सिपुर्द कर सकती हैं। उस हालत में कोल्हापुर की स्वतन्त्र सत्ता अधिक दिन न टिकेगी यह मानी हुई बात है, फिर भी वर्तमान में कोल्हापुर स्वतन्त्र सत्ता रखता है, यह स्पष्ट है।

छोटे रजवाड़े

इस प्रदेश की शेष १६ रियासतों व एक जागीर का रकबा ७६५१ वर्गमील व आबादी १७ लाख है। इन में से भोर, जामखण्डी, अक्कलकोट, जंजीरा, फाल्टन, औंध, जाठ, मीरज, सांगली व सावन्तवाड़ी के रजवाड़े बड़े हैं। इन में से सांगली की आबादी तीन लाख व सावन्तवाड़ी की ढाई लाख है, शेष की आबादी एक लाख के आसपास है। छोटे रजवाड़े आठ हैं और उनकी आबादियां एक लाख से नीचे ही हैं, हा बादी नाम की जागीर की आबादी केवल दो हजार है। इन रजवाड़ों की स्थापना मराठों के अभ्युत्थानकाल में हुई थी। शुरू २ में मराठा साम्राज्य का शासनसूत्र मराठा जाति के हाथ में था, किन्तु बाद में वह ब्राह्मणों के हाथ में चला गया था। अंग्रेजों ने इन पेशवा ब्राह्मणों से ही इस प्रदेश का अधिकार प्राप्त किया था। उस समय जिन जागीरदारों ने इस मामले में अंग्रेजों को सुविधायें पहुंचायी थीं, वे आज राजा हैं और उनके गुरु पेशवा का कहीं पता भी नहीं है। पेशवाओं ने अपने जातिबन्धुओं को शासनतंत्र में ऊंचे पद दिये थे, उसी का परिणाम है कि इन १६ में से नौ रजवाड़ों के शासक ब्राह्मण हैं, इसी प्रकार बादी जागीर का मालिक भी ब्राह्मण है। इनमें कुरुन्दवाड रियासत का शासन दो शासक मिलकर करते हैं, इनमें से एक को कुछ विशेष अधिकार रहते हैं। शेष रजवाड़ों में से पांच शासक मराठा जाति के हैं, दो रजवाड़े मुसलमानों के हैं। इनमें जंजीरा बड़ा है और इसकी स्थापना पन्द्रहवीं सदी के अन्त में अबीसीनिया से आये हुए एक हब्शी ने की थी। यह हब्शी दक्षिण भारत के बहमनी राजाओं के यहां नौकर था और जंजीरा के बन्दरगाह का निरीक्षक था। बाद में यह इसका मालिक बन गया। उसने समय पाकर अपनी शक्ति बढ़ायी और काठियावाड़ के दक्षिणी तट पर विद्यमान जाफराबाद के १२ गावों पर कब्जा किया।

दूसरी मुस्लिम रियासत सावानूर है और एक अफगान शासक के मातहत है। भारत सरकार की नजर में इन रजवाड़ों का महत्व इससे प्रकट होता है कि इनमें से केवल तीन जंजीरा, सांगली व सावन्तवाड़ी के शासक हिज हाईनेस कहलाते हैं, शेष केवल राजे महाराजे हैं। तोपों की सलामी भी केवल पांच शासकों को मिलती है, जिनमें से तीन तो हाईनेस हैं और दो भोर व मुधोल के शासक हैं। इस प्रकार ये छोटे राजे रजवाड़े नाम के शासक हैं

रियासती नीति के सूत्रधार

सरदार पटेल

स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद सबसे बड़ी महत्वपूर्ण समस्या शत्रुओं से देश की रक्षा है। इसके सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी देने के लिये

'वीर अर्जुन' का

देश रक्षा-अंक

बड़ी शान के साथ १ वैशाख २००५ को प्रकाशित होगा। उसकी तैयारियां शुरू होगई हैं। पाठक अपनी कापी के लिए अभी से एजेन्ट से कह दें और विज्ञापक अपना विज्ञापन बुक करा लें।

अंक-सम्बन्धी विस्तृत जानकारी फिर दी जायगी।

—मैनेजर

और छोटी मोटी आबादियों के मालिक हैं जिनका अस्तित्व इस वैज्ञानिक युग में अधिक देर तक नहीं रह सकता।

आत्मोत्सर्ग

इन रियासतों के अधिकांश शासक सुशिक्षित व जमानेसाज हैं, यही कारण है कि पिछले काफी समय से इनमें से बहुत-सी रियासतों में व्यवस्थापिका सभाओं द्वारा शासन होता है।। औंध के जनतन्त्र की तो महात्मा गांधी व पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने भी समय २ पर प्रशंसा की है। यह होते हुए भी इन रियासतों का छोटा आकार प्रकार इनके स्वतन्त्र विकास में बाधक है, यह यहां के नरेश व जनता दोनों ही जानते हैं और इसलिये ही इस गुट की आठ छोटी रियासतों ने कांग्रेस के महामन्त्री श्री शंकरराव देव की प्रेरणा से यह निर्णय किया था कि वे परस्पर एक हो जायें और मिलकर एक शासनतन्त्र कायम कर लें। यदि यह होता तो अच्छा था किन्तु उसमें एक बाधा बनी रहती। इन आठ में से कुछ रियासतों की जनता मराठी बोलती है और कुछ की कनाडी। इन रियासतों की सम्मिलित पार्लमेंट में मराठी व कनाडी में से किस भाषा का प्रयोग होगा, यह विचारणीय था। दूसरे ये रियासतें एकत्र नहीं है, एक दूसरे से अलग अवस्थित हैं। संघ होते हुए भी इन्हें दूरी के कारण शासन में कठिनाई रहती, फिर भी उनका संघ में शामिल होना पृथक् सत्ता से अधिक अच्छा था और इसलिये ही कांग्रेसी नेताओं ने उसका समर्थन किया था। अब जमाना बदल गया है, अतः रियासतों का पृथक् संघ बनाने की अपेक्षा उनका साथी प्रान्तों में शामिल होना अधिक श्रेयस्कर समझा जा रहा है। इससे लाभ यह है कि एक भाषा व एक संस्कृति में अनेक प्रदेश न होकर एक प्रान्त बनेगा और एक शासन होने के कारण व्यय भी अधिक न होगा। १६ रियासतों के इस गुट में सर्वप्रथम जाम सांगली ने अपना निश्चय आत्मसमर्पण के लिये दिया था, अब शेष ने भी उसका अनुकरण किया है यह हर्ष की बात है। इससे बम्बई प्रान्त में आठ हजार वर्गमील भूमि व २७ लाख आबादी तो बढ़ेगी ही किन्तु रियासतों के कारण जो समस्याएं थीं, वे भी समाप्त हो जायेंगी। सम्भवतः बम्बई प्रान्त के विधाता इन रियासतों को दो भागों में विभक्त करें और भाषाओं के आधार पर इन्हें विविध जिलों में शामिल करें।

गोआ और जंजीरा

इन छोटी रियासतों के बम्बई प्रान्त में मिलने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि अब हैदराबाद की बड़ी रियासत अरब समुद्र की ओर बढ़ने का विचार न कर सकेगी। मानचित्र को देखने से यही मालूम होता है कि हैदराबाद व अरब समुद्र के मध्य में इन रियासतों का होना खतरे से खाली न था। खास बात यह भी थी कि इनमें से जंजीरा नाम की मुस्लिम रियासत समुद्र तट पर थी और सावानूर नाम की मुस्लिम रियासत मार्ग में। निश्चय ही विदेशी शत्रु इन रियासतों द्वारा हैदराबाद में आने जाने का उपद्रव कर सकते थे और हमारे देश को खतरे में डाल सकते थे। अब इन रियासतों के आत्मोत्सर्ग से यह आशंका जाती रही है क्योंकि जंजीरा व सावानूर दोनों ही इस आत्मोत्सर्ग में शामिल हैं। अब रह जाती है केवल कोल्हापुर रियासत, उसके विधाता छत्रपति शिवाजी के वंशज हैं अतः वे हैदराबाद के मुस्लिम शासक से अपने देश के विरोध में मेल न करेंगे यह हमें मानना चाहिये। किन्तु वे अपने कर्तव्य से डिग जायें तो निश्चय ही कोंकण का यह प्रदेश हमारे लिए घातक हो सकता है। इस कोंकण प्रदेश में ही गोआ का प्रान्त है, जो हमारे देश का अंग होते हुए भी एक विदेशी शक्ति के हाथ में है। इन रियासतों की समाप्ति के साथ २ गोआ का भी शासनतंत्र हमारे हाथ में आना चाहिए, इससे जहां समुद्री तट सुरक्षित होगा, वहां हैदराबाद भी हमारे लिये संकट का स्थल न बन सकेगा। इन सब दृष्टियों से हम दक्षिण की इन रियासतों के आत्मोत्सर्ग को शुभ समझते हैं और कोल्हापुर व गोआ के लिये भी इस मार्ग को अपनाने की प्रार्थना करते हैं। देखें। इनके इस का हमारे देश के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ता है।

आवश्यकता है

सुयोग्य नार्मल तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के मध्यमा उत्तीर्ण राष्ट्रीय विचार वाले तथा अनुभवी अध्यापकों की, जो ग्राम पाठशालाओं में प्राथमिक शिक्षा दे सकें। वेतन योग्यतानुसार ३०) से ५०) रु० मासिक तक दिया जायेगा। प्रमाण पत्रों सहित लिखिये—

अध्यक्ष, आदर्श सेवा संघ
पोहरी, गवालियर।

ये गप शप करेंगे और चाय पियेंगे . . . इन्हें गप-शप में तो जरूर मजा आवेगा पर चाय में नहीं। इनकी मेजमान ने ठण्डे और गीले बर्तन में चाय बनाई है। अच्छी चाय के लिये सूखा और गर्म बर्तन चाहिये।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती, सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २ चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीजने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी और उधर उस के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विकृत होकर अपकीर्ति के रूप में फैल रही थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत होगया और चम्पा ने जमींदारी का काम सभाल लिया।

इन्हीं दिनों बिहार भूकम्प के बाद बेलूर में श्री रामनाथ तिवारी अत्यन्त उत्साह व लगन से सेवा का कार्य करते थे। उन्होंने एक भग्नावशेष से एक बालक की रक्षा की। ऐसे अनाथ बालकों के पालन पोषण का काम चम्पा और सरला की कोठी में था। रामनाथ भी वहीं बालक को ले गया। शिशु रक्षा-गृह का उद्घाटन हो गया।

[गतांक के आगे]

[८]

रामनाथ का विचार था कि दो-तीन दिन में ही वापिस बेलूर पहुच जाये। परन्तु कुछ कारणों से उसे वापिस आने में १० दिन लग गए। भूकम्प से प्रभावित स्थानों से अनाथ शिशुओं के इकट्ठा होने में २-३ दिन लग गए, फिर उसके साथ जाने के लिये अच्छी धाया के तलाश करने में कुछ समय लगा। सारी तैयारी हो जाने पर दो दिन की देर अध्यक्ष के पी० ए० (जलधारीसिंह) की कृपा से हुई, जिसने रामनाथ के नाम लिखे हुए आदेश-पत्र पर अध्यक्ष के हस्ताक्षर कराने में यथा सम्भव टाल मटोल की। अन्त में, नवें दिन सायकाल के समय रामनाथ को अध्यक्ष की ओर से लिखित आदेश मिल गया कि वह ३ अनाथ बच्चों को लेकर, बेलूर के शिशु-रक्षा गृह में छोड़ आए।

जब रामनाथ बच्चों को लेकर बेलूर पहुंचा, तो उसने वहा के वातावरण में बहुत-सा परिवर्त्तन पाया। जहा वह शान्ति और सन्तोष का राज्य छोड़ गया था, वहा उसे घबराहट और उत्तेजना का दौर-दौरा दिखाई दिया। इस परिवर्त्तन का कारण समझने के लिए, हमें सिंह-परिवार का गत १० दिनों का संक्षिप्त इतिहास सुनाना पड़ेगा।

हम यह तो जान ही चुके हैं कि सरखानपुर की महारानी देवकी ने माधवकृष्ण को अल्टीमेटम दे दिया था, जमींदारी के बटवारे की घोषणा वस्तुतः युद्ध-घोषणा के समान ही हुआ करती है। उसमें जो पक्ष बटवारे की माग करता है वह अपने व्यवहार से सूचित कर देता है कि अब साझीदारी नहीं रह सकती, इस कारण सम्पत्ति का विभाजन हो जाना चाहिए। देवकी की बटवारे की घोषणा माधवकृष्ण के लिए युद्ध-घोषणा के बराबर ही थी।

जब से गोपालकृष्ण ने अपना हिस्सा अलग कर लिया था, तब से राधाकृष्णसिंह की और अपनी मिली हुई जमींदारी का प्रबन्ध माधवकृष्ण ही करता था। राधाकृष्ण सीधे स्वभाव का, निर्बल इच्छा-शक्ति वाला व्यक्ति था। जब तक उसे कोई व्यक्ति भड़का कर अपने रास्ते न लगा दे, तब तक वह किसी चीज में दखल नहीं देता था। सब काम चलते जाएं और वह भी आराम से बैठा रहे, उसे यही अच्छा लगता था। माधवकृष्ण पर जमींदारी का बोझ डालकर उसने कभी यह नहीं पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? इधर माधवकृष्ण बड़ी तत्परता और ईमानदारी से जमींदारी का प्रबन्ध करता रहा। वह आयु में अपने बड़े भाई से बहुत छोटा था। बड़े भाई को वह भाई की दृष्टि से नहीं, पिता की दृष्टि से देखता था। सरखानपुर की जमींदारी का प्रबन्ध करते हुए उसने कभी भेद-भाव नहीं रक्खा था। देख-भाल और हिसाब किताब की दृष्टि से उसका प्रबन्ध प्रशंसनीय था।

इधर कुछ समय से राधाकृष्ण के अन्तःपुर में, माधवकृष्ण और रमा के विरुद्ध एक षड्यन्त्र-सा तैयार हो रहा था। यों तो बहुत पहले से ही बजरग जैसे मुंह चढ़े कारिन्दे देवकी को भड़काते रहते थे। कभी कहते कि माधव बाबू अधिक समय बेलूर में ही बिताते हैं, जमींदारी की देखभाल नहीं करते। कभी समाचार देते थे कि गाव से आया हुआ बढ़िया अनाज माधव बाबू के यहा डाला गया है और घटिया अनाज बड़ी हवेली में। ऐसी ऐसी शिकायतों को लेकर जब देवकी राधाकृष्ण के पास पहुंचती थी, तो उसका उत्तर प्रायः यह होता था, 'मुझे गलत खबर मिली है। माधवकृष्ण मेरे बेटे के बराबर है। मुझे इस बात पर पूरा विश्वास है। जो लोग उसकी बुराई करते हैं, वह झूठ बोलते हैं।' देवकी इस उत्तर से दिल ही दिल में कुढ़ती थी, परन्तु लाचारी से चुप हो जाती थी। कुछ समय से दो नई बातें ऐसी हो गईं, जिससे माधवकृष्ण के विरोधी दल ने अधिक जोर पकड़ लिया। एक बात तो यह थी कि राधाकृष्ण की सेहत खराब रहने लगी, उनके जोड़ों में दर्द रहने लगा, जिसके कारण महीनों तक चारपाई के मेहमान बन जाना पड़ा, दूसरी बात यह हुई कि उनका पुत्र 'रामू' उम्र में बड़ा होकर और सातवीं श्रेणी तक पढ़ लिखकर पहले 'छोटे बाबू' और फिर 'रामकृष्ण बाबू' के नाम से पुकारा जाने लगा। 'रामकृष्ण बाबू' बनकर वह घर के सभी मामलों पर सम्मति भी देने लगा। जिसका सब से अधिक प्रभाव देवकी पर होता था। रामकृष्ण बाबू ने अपनी मा के सामने बजरग के इस कथन की जोरदार पुष्टि की थी कि 'माधव चाचा हमारी सारी जमींदारी को खा रहे हैं, यदि बंटवारा करके प्रबन्ध उनके हाथ से छीना न गया, तो कुछ ही वर्षों में हम लोगों को दाने दाने का मोहताज बन जाना पड़ेगा'। इस सम्मति को सुनकर देवकी ने दृढ़ निश्चय कर लिया, कि जायदाद का बटवारा हो जाना चाहिए। इसी बीच में समाचार मिला कि बेलूर में एक जलसा हुआ है, जिसमें माधवकृष्ण और रमा भी सम्मिलित हुए हैं। समाचार देने वालों ने बतलाया कि उस जलसे में माधवकृष्ण लीडर बना हुआ था। यह भी कहा गया—कि माधवकृष्ण की ओर से यह घोषणा की गई कि वह सरखानपुर की सारी जमींदारी बेलूर के शिशु-गृह के अर्पण कर देगा। इन सब समाचारों का देवकी पर क्या प्रभाव हुआ और देवकी ने उसके कारण क्या किया, यह सब कुछ पाठक जान चुके हैं। राधाकृष्णसिंह बेचारा उस सारे दु:खान्त नाटक का दर्शकमात्र था, जिसका प्रारम्भ देवकी की युद्ध-घोषणा के साथ हुआ।

युद्ध घोषणा के पीछे एकदम युद्ध की कार्यवाही आरम्भ हो गई। जमींदारी मामलों में राधाकृष्णसिंह का मुख्त्यारे-आम अब तक माधवकृष्ण था। अदालत में दरखास्त दे दी गई कि भविष्य में यह कार्य बाबू बजरगलाल किया करेंगे। बजरंग बाबू की मार्फत ही राधाकृष्णसिंह की ओर से जायदाद के बटवारे का प्रार्थना-पत्र अदालत में दे दिया गया। साथ ही सिपाहियों द्वारा जमींदारी में यह हुक्म भेज दिया गया, कि भविष्य में वसूली आदि का सब काम बजरग बाबू किया करेंगे, माधवकृष्ण से उनका कोई सम्बन्ध न होगा।

माधवकृष्ण इस अकारण आक्रमण से बिलकुल स्तब्ध हो गया। उसने अब तक कभी अपने को बड़े भाई का साझीदार समझ कर जमींदारी का प्रबन्ध नहीं किया था। उसकी भावना सदा यह रही, कि जमींदारी भैय्या की है और मैं लड़के की हैसियत से उसका प्रबन्ध करता हूं। आज उसे यह सुनना पड़ा कि वह अब तक भैय्या का साझीदार था, इससे आगे साझीदारी नहीं चलेगी और जायदाद का बटवारा हो जायेगा। यह नई परिस्थिति उसकी समझ से सर्वथा बाहर की बात थी। फलत: उसने दूसरी ओर की गई युद्ध घोषणा की बिल्कुल उपेक्षा की, और अप्रतिभ होकर हाथ पर हाथ धर कर बैठ गया।

अगले ही दिन से सरखानपुर की जमींदारी में बजरग बाबू का दौर दौरा हो गया। यद्यपि कई वर्ष पूर्व गोपालकृष्ण के साथ बटवारा हो जाने के कारण जमींदारी दो हिस्सों में बट चुकी थी, तो भी व्यवहार में वह एक ही सी बनी हुई थी। माधवकृष्ण नि:स्वार्थ भाव से जमींदारी का प्रबन्ध करता था, उसकी सदा यही चेष्टा रहती थी, कि भाईयों भाइयों में जमींदारी के प्रबन्ध के कारण कोई वैमनस्य या झगड़ा खड़ा न हो। इस कारण बेलूर और सरखानपुर की जमींदारियों के गाव गाव में परस्पर उलझे रहने पर भी कभी कोई झगड़ा खड़ा नहीं हुआ। परन्तु इन्तजाम की बागडोर बजरग के हाथ में आते ही हालत बदल गई। गड़े हुए मुर्दे उखड़ने लगे, और सप्ताहभर में चम्पा के पास जगह जगह से इस आशय की शिकायतें आने लगीं कि बजरग की ओर से कलह उत्पन्न करने का यत्न किया जा रहा है।

बेचारी चम्पा जीवन के शेष दिन देश की सेवा में शान्ति से बिताना चाहती थी, इस गृह-कलह के समाचारों ने उसे घबराहट में डाल दिया। चिन्ता-ग्रस्त होकर मा बेटी में चिरकाल तक परामर्श हुआ। अन्त में निश्चय किया गया कि इतिकर्त्तव्यता का निश्चय करने के लिए माधवकृष्ण और रमा को बुलाया जाए। जिस दिन माधवकृष्ण और रमा सरखानपुर से बेलूर पहूचे, उससे अगले दिन प्रात काल तीन अनाथ बच्चों को लेकर रामनाथ भी पटने से आगया। रामनाथ को बेलूर पहुचकर, वहा के वातावरण में जो परिवर्त्तन दिखाई दिया वह उपर्युक्त घटना चक्र का ही परिणाम था।

(क्रमश:)

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (६२)
पो० वेगुसराय (मुंगेर)

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार

प्रेम दूती

श्री विराज की रचित प्रेम-काव्य। सुरुचिपूर्ण श्रृंगार की सुन्दर कवितायें। मू० ॥।) डाक व्यय पृथक।

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

"गृहस्थ चिकित्सा"

इसमें रोगों के कारण, लक्षण निदान, चिकित्सा एवं पथ्यापथ्य का वर्णन है। अपने ४ रिश्तेदारों व मित्रों के जुदे जुदे स्थानों के पूरे पते लिख कर भेजने से यह पुस्तक मुफ्त भेजी जाती है। पुस्तक मिलने का पता—

के० एल० मिश्र वैद्य, मथुरा।

७५०० रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं।

आटोजम (विटामन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विटजरलैंड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं पर उसने एक युवती से ब्याह भी कर लिया।

आटोजम के वर्तने से ८० तथा ९० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्ट्रसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगती हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इनका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाए रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। [illegible] तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Otogem आटोजम Otogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इङ्गलैंड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। आटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशा में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देखें फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। आटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिए इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जाएगा। आज ही इसे मंगवाने के लिए आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता—

दी मैकसो लैबोरेटरीज ५७७ बेला रोड

पोस्ट बक्स नं० ४५ (A B D) देहली।

विजय पुस्तक भण्डार दिल्ली

द्वारा प्रकाशित और प्रचारित पुस्तकें

जीवन-चरित्र—

[१] नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मूल्य १)
[२] पं० मदनमोहन मालवीय „ १)
[३] महर्षि दयानन्द सरस्वती „ १॥)
[४] प० जवाहरलाल नेहरू „ १)
[५] मौ० अबुलकलाम आजाद „ ॥=)
[६] श्री सुभाषचन्द्र बोस (संक्षिप्त) „ ॥=)

अन्य पुस्तकें—

[१] जीवन संग्राम „ १)
[२] सरला की भाभी (उपन्यास) „ २)
[३] मैं भूख न सकूं (कहानी) „ १)
[४] जीवन की झांकियां
१—मैं चिकित्सा के चक्र व्यूह से कैसे निकला ॥)
२—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन ॥) दोनों खण्ड का ॥।)
[५] आयुर्वैदिक प्रतिचिकित्सा „ ।)

भण्डार द्वारा प्रचारित पुस्तकें

विविध

[१] त्याग का मूल्य (उपन्यास) मूल्य २)
[२] तिरंगा झण्डा (एकांकी नाटक) „ १।)
[३] नया आलोक नई छाया (कहानी) „ २)
[४] प्रेमदूती (कविता) „ १॥)
[५] बहिन के पत्र (कृष्णचन्द्र वि०) „ ३)
[६] वैदिक वीर गर्जना „ ॥=)
[७] दिल्ली चलो „ २)
[८] नेताजी सरहद पार „ १।=)
[९] आचार्य रामदेव (जीवन झांकी) „ १॥)
[१०] आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब हीरक जयन्ती स्मारक ग्रन्थ „ ३)
[११] हमारे घर „ ॥=)
[१२] महाराणा प्रताप „ १॥)
[१३] हरिसिंह नलवा „ २।)
[१४] शिवाजी „ १॥)
[१५] शहीदान हैदराबाद „ १)
[१६] विधान परिषद् „ १)
[१७] राष्ट्रपति का भाषण „ १।)
[१८] मेरठ कांग्रेस „ १)
[१९] मानवधर्मप्रचारक „ ४)
[२०] शिक्षा वाटिका „ १)
[२१] अखण्ड भारत „ ॥)
[२२] बृहत्तर भारत (ऐतिहासिक) „ ७)

उपयोगी विज्ञान—

[१] साबुन विज्ञान „ २)
[२] तैल विज्ञान „ २)
[३] तुलसी „ २)
[४] अंजीर „ १)
[५] देहाती इलाज „ १)
[६] सोडा कास्टिक „ १॥)

डाक व्यय पृथक होगा। पुस्तकालयों को उचित कमीशन दिया जाता है।

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानंद बाजार देहली।

भारतीय इतिहास में नया दृष्टिकोण

[श्री प्रो० मुहम्मद हबीब]

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऐतिहासिकों की दृष्टि में भारत भूत-काल में भी एक था और भविष्य में भी एक रहेगा। भारत की एकात्मकता भारतीय नैतिकता का मूलतत्व है और भारतीय राजनीतिज्ञों की दृष्टि में एक केन्द्रीय शासन की आवश्यकता सदा वाञ्छनीय रही है। हमारी अतीत की महत्वपूर्ण सफलतायें पाटलिपुत्र, कन्नौज, उज्जैन और दिल्ली में केन्द्रीय सत्ता स्थापित करने में रही हैं। भारत का दो राज्यों अथवा व्यवस्थापिका संस्थाओं में विभाजन, जिनमें नागरिकता का पृथकरण हो और जिसके कारण विरोध की भावना जाग्रत हो तथा केवल सरकार में ही नहीं वरन् जनता में भी सर्व रूप से स्वतन्त्रता और अलगाव की भावना की उत्पत्ति और उन में से एक का धार्मिक तथा साम्प्रदायिक आधार पर स्थिति—यह एक ऐसी पैशाचिक भावना है जो हमारे देश के इतिहास में कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती।

डलहौजी युग तथा उससे पूर्व की शताब्दियों में भारतीय एकता और संस्कृति के संस्थापकों के विषय में स्मृति दिलाने वाली कोई गाथा अथवा गीत उपस्थित नहीं हैं किन्तु अपनी ऐतिहासिक स्मृति में हिन्दू अथवा इंडियन (दोनों शब्द भारतीय सीमा पर स्थित इंडस नदी के आधार पर बने हैं) संस्कृति में ऐक्य भावना के प्रादुर्भाव का विवेचन सम्भव है। इसका आधार है 'धर्म' जो सर्व देशीय नैतिकता का नियम है और जो मनुष्य के मनुष्य से सम्बन्ध का द्योतक है। हिन्दू धर्म का कोई विशेष संस्थापक नहीं है और न विशेष निजी दृष्टि कोण है और यदि उदार दृष्टि से देखें तो न ऐसी दैवी पुस्तक है, जिस में विश्वास करना सबके लिये आवश्यक हो।

ख्वारिज्म विद्वान अबू रेहान अलबरूनी ने ११ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीयों के धर्म में सर्व सम्मत सिद्धान्त की गवेषणा करते हुये पुनर्जन्म के नियम में और एक परोक्ष ईश्वर के रूप में दो निष्कर्ष निश्चित किये थे। उसके अनुसार किसी समझदार हिन्दू ने ईश्वर प्रतिनिधि स्वरूप निर्मित मूर्ति की पूजा का स्वप्न में भी विचार नहीं किया था परन्तु दार्शनिक नास्तिकवाद हमारे देश में सर्वदा प्रचलित रहा है और पुनर्जन्म में विश्वास भी इतना सर्वकालीन नहीं रहा है जैसा कि अलबरूनी का विचार है।

उसकी दृष्टि में साधारणतः धार्मिक पारस्परिक विवादों का उनमें अभाव है। अधिक से अधिक उनका विवाद शाब्दिक होता है लेकिन वह कभी आत्मा किंवा शरीर अथवा द्रव्य को धार्मिक विवादों के दाव पर नहीं लगाते थे। इतने बड़े देश में यह संभव नहीं था कि सकल व्यक्ति एक ही विचारधारा का अनुकरण करते अथवा रहन सहन का एक ही स्वरूप अपनाते'। अतएव लिखित इतिहास के प्रारम्भ से प्रत्येक भारतीय, यदि उसमें इतनी क्षमता थी, तो किसी भी प्रकार का सम्प्रदाय, दार्शनिक शाखा, धार्मिक संस्था या संघ को स्वतन्त्रता पूर्वक स्थापित कर सकता था। हिन्दू कालीन नाम से पुकारे जाने वाले काल की महत्ता इन्हीं साम्प्रदायिक शाखाओं के इतिहास के कारण है। इन सांस्कृतिक शाखाओं का स्वतंत्र विकास सहिष्णुता के सिद्धांत पर ही अवलंबित था। धार्मिक अत्याचार हमारे देश के लिए एक विदेशी भावना रही है किन्तु इसके परिणामस्वरूप प्रत्येक भारतीय के लिए किसी न किसी शाखा का सदस्य होना अनिवार्य हो गया। जिस व्यक्ति को अपने आचरण के प्रति किसी सांस्कृतिक शाखा की सरक्षता प्राप्त न थी वह हेय समझा जाता था।

इस्लाम के आगमन से हमारे देश के साधारण जीवन में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा परन्तु राजनीतिक अभिप्राय से जो पर्दा हमारे देश के मध्य कालीन इतिहास पर डाला गया है उसके स्पष्टीकरण के हेतु मैं कुछ कहने पर विवश हुआ हूं। सोलहवीं शताब्दी के योरोप में विकसित Sovereignty और State शब्दों का स्पष्टीकरण करने के लिए अरबी अथवा फारसी उच्चतम साहित्य में कोई शब्द सुलभ नहीं है। कुरान में 'अल्लाह' और उसके 'पैगम्बर' शब्द प्रयोग में आये हैं किन्तु गत १३ शताब्दियों में समस्त शिक्षित मुसलमानों का इमाम अबू हनीफा से मतैक्य रहा है कि हजरत अली के अवसान के पश्चात् अल्लाह और पैगम्बर के राज्य की भावना प्रचलित रखना व्यर्थ है। तदुपरात समस्त मुस्लिम राज्य में ऐहिक संस्थायें, राजनीतिक अभिप्राय से राजनीतिकों की गुटबंदियां और मध्य श्रेणी की समस्याओं के सुलझाने का प्रयत्न ही होता रहा है। न भारत में और न अन्य देशों में मध्यकालीन इस्लाम ने मुस्लिम शासकों से निर्मित सरकार के अतिरिक्त किसी 'मुस्लिम' राज्य का सिद्धांत उपस्थित किया है—यद्यपि एक प्रकार की आत्म सतोषदायक स्वर्ग स्वप्न की भावना रही है कि ईसा मसीह के वापिस आने पर अथवा इमाम महदी के पुनरागमन पर अल्लाह और उसके पैगम्बर की सरकार एक बार फिर संभव हो सकेगी। प्रस्तुत सभी और उनके समाख्य स्थानापन्न राज्यों के बारे में मुस्लिम धार्मिक उच्चतर भावनाएं इमाम हम्बल तथा इमाम अबू हनीफा की रीतियों की समर्थक रही हैं और उनको पापपूर्ण संस्था समझा है जिनमें अल्लाह के उपासकों की सेवा करने की आज्ञा नहीं है।

भारतीय मुसलमानों के धार्मिक साहित्य में दिल्ली के शासकों के प्रति जहां तक सभव हुआ है पूजा भाव नहीं रहा है और तत्कालीन शासकों का उल्लेख भी नहीं हुआ है।

इस देश के अधिकाश मुसलमानों का निश्चय ही भारतीय पितृत्व है। यह सत्य है कि असख्य मुस्लिम कुटुम्ब अपना विदेशी उद्गम घोषित करते हैं परन्तु यह पूर्णत. कल्पित है।

उन दिनों में जब हम विदेशी सत्ता के भयकर रूप के कारण जिसका विच्छिन्न होना असम्भव सा प्रतीत होता था राजनीतिक विषाद से पीड़ित थे, हमने मध्य कालीन राजपूत राजा तथा तुर्क सुलतानों के नामों से विशेष लाभ उठाया। अब उस दृष्टिकोण की आवश्यकता नहीं है और इस सत्य का उद्घाटन करना पड़ेगा कि समस्त मध्य कालीन युग में शासन पूर्णतया उच्च वर्ग के हाथों में था। उनमें से कुछ ने जनता के हितार्थ कार्य किया तथा अन्यों ने वस्तुतः नहीं परन्तु वे सब उच्च वर्ग के सर्वोत्तम अश थे—हिन्दुओं में राजपूत और मुसलमानों में तुर्क और अफगान अमीर और उच्च वर्ग के लोग। युद्ध तथा राजनीति एक खेल था जिसे केवल उच्च वर्ग ही खेलने के अधिकारी थे। उस समय का शासन किसी भी दृष्टि से प्रजातन्त्र शासन न था। दिल्ली के मुगल तथा पूर्व मुगल कालीन शासन के अधिकारियों का विश्लेषण करने पर यह सत्य तथा दुःखप्रद तथ्य ज्ञात होगा कि भारतीय उत्पत्ति के मुसलमान उच्चतम सैनिक तथा इतर पदों से पूर्णतः वञ्चित रखे जाते थे। एक भारतीय मुसलमान को दिल्ली साम्राज्य में एक उच्च मन्सब प्राप्त करना उतना ही असम्भव था जितना एक हिन्दू शूद्र को राजस्थान की गद्दी प्राप्त करना।

भारतीय इतिहास का मुस्लिम काल नाम से पुकारा जाने वाला युग वस्तुतः तुर्की काल है जिसमें दो बार अफगान सत्ता का छींटा लगा हुआ है। उस काल को मुस्लिम काल के नाम से पुकारना, जब भारतीय मुसलमानों को, केवल उनके भारतीय होने के दुःखद सत्य के कारण, समस्त उच्च पदों से वचित रखा जाता था, कितना व्यंगात्मक मालूम देता है। यदि हम एक भद्दी उपमा का प्रयोग कर सकें तो हम कह सकते हैं कि मध्य कालीन इतिहास में भारतीय मुसलमानों का स्थान अंगरेजी काल के ईसाइयों के स्थान से भिन्न न था। इस्लाम का प्रजातन्त्र भाव तथा समता का सिद्धान्त देशी मुसलमानों में एक शक्तिशाली सामाजिक प्रवर्तक शक्ति रही है, परन्तु मध्य काल को इस्लामी प्रजातन्त्र किंवा इस्लामी समता का व्यजक मानना व्यर्थ होगा। मध्य कालीन दो बड़े साम्राज्यों में से एक ने भी भारतीय मुसलमानों को उतना प्रतिनिधित्व न दिया जितना उनको वर्तमान कांग्रेस काल में मिला है।

साराश यह है कि हिन्दू काल की शासन सत्ता उच्च वर्ग के हाथ में थी। वह कभी सांस्कृतिक शाखाओं अथवा उनके नेताओं के हाथ में न थी। तुर्की काल में भी राजनीतिक सगठन का यही सिद्धान्त प्रचलित रहा, केवल अधिकारी कर्मचारी वर्ग परिवर्तित हो गया।

इस चिर सम्मानित प्रणाली में जो अव्यावहारिक होती जा रही थी, अकबर महान ने दो सुधार करने का प्रयत्न किया। प्रथम तो उसने महान सफलता के साथ मुगल साम्राज्य के अधिकारी वर्ग में उच्च पदीय तुर्क एव राजपूतों का गठ बन्धन किया। दूसरे सुलह ए कुल (विश्व शान्ति) की नीति का अनुसरण करते हुए, उसने समस्त भारतीय सांस्कृतिक शाखाओं का एकीकरण करने का भीषण प्रयास किया। अर्द्ध धार्मिक तथा अधार्मिक क्षेत्रों जैसे शिल्प कला, चित्र कला एव गायन विद्या में उसकी सफलता महत्वपूर्ण थी। परन्तु शुद्ध धार्मिक क्षेत्र में वह पूर्ण रूप से असफल रहा। हमें इस पर आश्चर्य न करना चाहिए कि हमारे महान से महान मध्य कालीन शासक उस आदर्श को प्राप्त करने में असफल रहे जिसे अकेला भारतीय लोकमत प्राप्त कर सकता है।

अंग्रेजी शासन सत्ता अपने अन्य योरोपीय प्रतियोगियों के विरोध में सफल हुई क्योंकि अन्य बातों के साथ ही साथ वह एक क्रिश्चियन सांस्कृतिक शाखा का सर्वाधिकार स्थापित करने के लिए सचेष्ट न थी, अपितु तत्कालीन स्वार्थी भारतीयों एवं ऐसे व्यक्तियों की सहायता से, जिनका निर्माण विदेशी सत्ता के पोषणार्थ किया गया था, केवल एक आगल शासक वर्ग का निर्माण करना चाहती थी। अत. एक ओर तो उसने सांस्कृतिक शाखाओं के संघर्षों को आर्थिक सहायता प्रदान की और अपने लिए उनके मध्य में एक मात्र सम्भावित न्यायकर्ता की प्रतिष्ठा स्थापित करली तथा दूसरी ओर उसने अनुभव

किया कि एक शासन सत्ता होने के नाते वह सफलता पूर्वक कार्य न कर सकेगी जब तक कि वह सांस्कृतिक शाखाओं को उनकी शक्ति के विस्तृत क्षेत्र से विरत न कर दे। वर्तमान न्यायाधिकार के स्थापित होने का एवं आंग्ल-भारतीय कोड्स के प्रकाशन का यही कारण है परन्तु उसे भी एक ऐतिहासिक दृष्टान्त का अनुसरण करना पड़ा। प्राचीन काल में भी दण्ड-विधान शासन का एक कर्तव्य रहा है। मुगल साम्राज्य ने अपनी निजी दण्ड-विधान प्रणाली का विकास किया था जो कि शरियत तथा शास्त्रों से स्वतन्त्र थी और साथ ही निर्णय के सिद्धान्तों से मुक्त थी यहां कि दो विभिन्न सांस्कृतिक शाखाओं के अभियोगियों का सम्बन्ध था।

इस समस्या पर मध्य युग की परिस्थिति के दृष्टिकोण से विचार नहीं करना है। परिस्थिति पूर्णतः परिवर्तित हो गई है। एक ओर अकबर तथा अन्य पूर्व शासक हमको केवल अखिल भारतीय अथवा साम्प्रदायिक शासन प्रदान कर सके थे, परन्तु राष्ट्रीय आन्दोलन ने सर्व प्रधान किंवा व्यवस्थापक राज्य प्रदान किया है। दूसरी ओर ब्रिटिश शासन की दो शताब्दियों में सांस्कृतिक शाखाओं के उद्देश्यों के साथ साथ मूल तत्त्व भी पूर्णतः परिवर्तित हो गये हैं। प्राचीन सांस्कृतिक शाखायें अपने सदस्यों को मोक्ष-मार्ग प्रदर्शित करती थीं। साथ ही साथ वे अपनी शाखा के प्रति ही 'स्वर्ग-विधान' प्रस्तुत किया करती थीं तथा इतर सांस्कृतिक शाखाओं को उस स्वर्ग के उपयोग से वंचित ठहराया करती थीं परन्तु इस विवाद-ग्रस्त विषय का निर्णय केवल परलोक में ही हो सकता था। अस्तु इस लोक में धार्मिक-सहिष्णुता के सिद्धान्त के प्रचलन में कोई कठिनाई प्रस्तुत न हुई। वर्तमान सांस्कृतिक शाखाओं का दृष्टि-कोण पूर्णतः परिवर्तित हो गया है। उन्होंने समान रूप ग्रहण कर लिया है और वे दूसरे सम्प्रदाय तथा समस्त देश के अहित में भी अपना हित-साधन चाहते हैं। देश में उल्लेखनीय कोई भी धार्मिक-संघर्ष नहीं है। आज प्राचीन ऐतिहासिक शाखाओं के आर्थिक लाभ ही संघर्ष का विषय बन रहे हैं और क्योंकि आध्यात्मिक लाभ-मूल्य के विपरीत, द्रव्य-लाभ ही संघर्ष का कारण समझे जाते हैं, अतः एक शाखा बिना दूसरों के अहित के कुछ नहीं प्राप्त कर सकती। यह संघर्ष दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। वर्तमान दलों तथा ऐतिहासिक सांस्कृतिक शाखाओं में सम्बन्ध केवल भौतिक उत्पत्ति का है। आध्यात्मिक लाभ जो उन प्राचीन साम्प्रदायिक शाखाओं का जीवन था, पूर्णतः विलीन हो गया है। भारतीय राष्ट्रवादी के दृष्टिकोण से इसका दुःखद पक्ष यह है कि ऐतिहासिक साम्प्रदायिक शाखाएं अधिकाधिक भौतिकवाद की ओर ही नहीं झुक रही हैं वरन् मुझे खेद पूर्वक कहना पड़ता है कि वे दलबन्दी की ओर जा रही हैं। वर्तमान युग में भी सम्प्रदाय या दल का आधिपत्य व्यक्ति के ऊपर उतना ही पूर्ण है, जितना कि मध्य युग में था। आज भी किसी भारतीय समुदाय के सदस्य होते हुए भारतीय होना असम्भव ही है। मेरा विश्वास है कि इस देश में कोई भी समाधि-स्थल ऐसा नहीं है, जिस पर प्रत्येक भारतीय का समान अधिकार हो। उनमें प्रवेश केवल सम्प्रदायिक—रीति के अनुकूल ही सम्भव है। सन् १८७३ के कानून की थोड़ी सी अपर्याप्त धाराओं के अतिरिक्त, भारतीय नागरिकता में विवाह अथवा उत्तराधिकार सम्बन्धी नियमों का कदापि उल्लेख नहीं है। भूतकाल से भी अधिक सबल सामाजिक रीतियां तथा सामाजिक पक्षपात व्यक्तिगत दासता को अधिकाधिक सबल बना रहे हैं।

मेरा विश्वास है कि यह वर्तमान की प्रमुख चुनौती है। कुछ अवशेष रीतियों के अतिरिक्त न तो प्राचीन सांस्कृतिक शाखाओं की विशेष आध्यात्मिक विचार धारा और न जीवन के विशेष प्रकार का अब कोई अस्तित्व शेष रहा है। अकबर के समय से ही साधारणतया यह स्वीकार कर लिया गया है कि विभिन्न धर्मों के आधारभूत सिद्धान्तों में कोई विशेष मतभेद नहीं है, और हमारे साम्प्रदायिक नेता कोई धार्मिक प्रश्न भी उपस्थित नहीं करते। वर्तमान साम्प्रदायिक व्यक्ति उस परम्परा का प्राणी है जो बर्बरता के समकक्ष ही दूषित है। भावी नागरिक जन साधारण के हितार्थ नियोजित नियमों की सृष्टि होगा। अतएव भारतीय सरकार का प्रमुख कार्य 'राष्ट्रीय सांस्कृतिक शाखा' किंवा 'राष्ट्र-सम्प्रदाय' की सृष्टि है जिसमें समस्त प्राचीन सांस्कृतिक शाखाओं की अच्छी बातें सम्मिलित हों, तथा हमको स्वार्थपरता की दुष्ट—प्रवृत्ति से बचावें जो हमारे जीवन को पूर्णतः निमग्न करने को प्रयत्नशील हो रही हैं। धार्मिक मतभेद हैं और रहेंगे। इसमें कोई हरज भी नहीं है परन्तु यदि यह जाति सम्पूर्ण देश के लिए एक राष्ट्र, एक नियमावली तथा एक राष्ट्रीय सम्प्रदाय की सृष्टि करने में सफल नहीं होती, तो निस्सन्देह हमको एक ऐसी अराजकता के युग का सामना करना पड़ेगा जिसको हमारे देश ने अपने विस्तृत और सुखान्त इतिहास में कभी नहीं देखी है। *

* इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस के सभापति पद से दिये गये भाषण का एक अंश

पिकाक दंतमंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूढ़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के दुकानदार से मांगिये।

ऐजेन्टों की जरूरत है

ऐनसा ट्रेडिंग कम्पनी

चांदनी चौक, देहली।

मौसम का उपहार

उमेश घी

यह गाय भैंसों का शुद्ध पवित्र घी स्वास्थ्य, बल तथा शक्ति के लिए अनुपम है।

गवर्नमेंट की हर परीक्षा से पास तथा उनकी पवित्रता की लाल रंग की 'स्पेशल एगमार्क' सील लगा बिक्री होता है।

स्वादिष्ट तथा पौष्टिक भोजन के लए उमेश घी ही व्यवहार करें।

दिल्ली एजेण्ट—हरीराम जगत नारायन खारी बावली (फतेहपुरी की तरफ) दिल्ली।

T.B. टी. बी. "तपेदिक" चाहे फेंफड़ों का हो या अंतड़ियों का बड़ा भयङ्कर रोग है

(१) पहली स्टेज — मामूली ज्वर-खांसी — (जबरी)
(२) दूसरी स्टेज — ज्वर खांसी की शरीर में अधिकता — (JABRI)
(३) तीसरी स्टेज — सूखना-ज्वर खांसी की भयंकरता — (जबरी)
(४) चौथी स्टेज — सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू हो जाना — (JABRI)
अंतिम स्टेज — रोगी मौत और भयंकर जर्मों का इधर उधर फैलना

T.B. टी. बी. 'तपेदिक' और पुराने ज्वर के रोगियो! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी मास्टर स्कूल अकुआमा पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं। मैं अनेक दिनों से ज्वर, खांसी से बीमार था, बलगम आदि की परीक्षा पर 'तपेदिक' [राजयक्ष्मा] रोग हो साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। इसी बीच परमात्मा की कृपा से आप की अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना मैंने तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को विधिपूर्वक सेवन किया, इसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया, थोड़े दिनों में ही शरीर का रंग ही बदल गया, ऐसा मालूम होने लगा जैसे कुछ रोग ही नहीं रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषध इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी प्रशंसा की जावे, कम है।

इसी प्रकार के पहले भी दर्जनों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं, भारत के कोने कोने लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। जबरी के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं, यदि आप सब तरफ से निराश हो चुके हैं तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस आज ही आर्डर दें। अन्यथा वही कहावत होगी कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़ियां चुग गईं खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य, अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" (JABRI JAGADHARI) काफी है। तार में अपना पता पूरा दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नं० १ जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिये मोती, सोना चांदी, आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं पूरा ४० दिन का कोर्स ७२) रु० नमूना १० दिन २०)। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) नमूना १० दिन ६) रु० महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें। पता—

राम शरण—के० एल० शर्मा रईस एण्ड बैंकर्स [३] जगाधरी [पूर्वी पंजाब] E. P.

शिक्षा में धर्म का स्थान हो

[मौ० अबुलकलाम आजाद]

राजनीतिक परिस्थिति में परिवर्तन होने से हमारे कार्य के स्वरूप पर भी बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। हम शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को जिस तराजू पर तौलते थे, वह अब बहुत पुरानी पड़ गयी है। अब हमें नये तराजू और नये बाटों की जरूरत पड़ेगी। आज की राष्ट्रीय समस्याओं की विशालता या लघुता की नाप पुराने पैमानों से नहीं की जा सकती। नवीन भारत की नवीन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नवीन दृष्टिकोण की आवश्यकता पड़ेगी और उसकी समस्याओं को हल करने के लिए नवीन उपायों का अवलम्बन करना पड़ेगा।

आप यह तो जानते हैं कि धार्मिक शिक्षा देने के सम्बन्ध में उन्नीसवीं शताब्दि का उदारतापूर्ण दृष्टिकोण अब समाप्त हो चुका है। प्रथम महायुद्ध के बाद से ही एक नये दृष्टिकोण का प्रादुर्भाव हो गया था और उसके बाद दूसरे महायुद्ध के परिणामस्वरूप जो बौद्धिक क्रान्ति हुई, उसके कारण इस समस्या को एक निश्चित रूप दे दिया गया है। प्रारम्भ में यह ख्याल किया गया था कि बच्चे के बौद्धिक विकास में धर्म बाधक रहेगा, लेकिन अब यह अनुभव किया गया है कि हम धार्मिक शिक्षा को सर्वथा तिलांजलि नहीं दे सकते। यदि राष्ट्रीय शिक्षा में इसका कोई स्थान नहीं रहेगा तो नैतिक उपयोगिता अथवा मानव चरित्र को उदार बनाने का महत्व ही नहीं समझा जा सकेगा। यह तो आप जानते ही होंगे कि पिछली लड़ाई में रूस को भी अपना सिद्धांत छोड़ देना पड़ा। बृटिश सरकार को भी १९४४ में अपनी शिक्षा में सुधार करना पड़ा।

जहां तक भारत का सम्बन्ध है इस समस्या का स्वरूप सर्वथा विभिन्न है। यूरोप और अमरीका को धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता इसलिए अनुभव हुई कि धार्मिक प्रभाव के बिना लोग हर एक बात पर आवश्यकता से अधिक बौद्धिक दृष्टिकोण से विचार करने लगे। लेकिन जहां तक भारतीय जीवन का सम्बन्ध है वहां समस्या का दूसरा ही पहलू काम कर रहा है। हमें इस बात का डर नहीं कि लोग अत्यधिक बौद्धिक दृष्टिकोण से काम लेने लगेंगे। इसके विपरीत हमारे यहां धर्म का बहुत अधिक बोलबाला है। यूरोप की भांति हमारी वर्तमान कठिनाइयां भौतिक दृष्टिकोण की बजाय, धर्मान्धता के कारण हैं। अगर हमें इन कठिनाइयों से छुटकारा पाना है तो इसका उपाय प्रारम्भिक शिक्षा में से धार्मिक शिक्षा को तिलांजलि देना न हो कर सीधे अपनी निगरानी में ठोस और स्वस्थ धार्मिक शिक्षा देने की समुचित व्यवस्था करनी है, ताकि शैशवावस्था में ही बच्चे पर अन्धविश्वास का प्रभाव न पड़े।

स्पष्ट है कि लाखों ही भारतीय अपने बच्चों को अधार्मिक वातावरण में शिक्षा देने के लिए तैयार नहीं हैं और मुझे विश्वास है कि आपकी भी यही राय है। यदि सरकार ने विशुद्ध रूप से धर्म-निरपेक्ष शिक्षा देने का बीड़ा उठाया तो पता नहीं उसका क्या परिणाम निकले। स्पष्ट है कि लोग गैर—सरकारी रूप से अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने की चेष्टा करेंगे। ये गैर-सरकारी संस्थाएं आज किस रूप में काम कर रही हैं और भविष्य में करेंगी—इससे आप लोग भली भांति परिचित हैं। इस बारे में, मैं भी कुछ जानकारी रखता हूं और यह कह सकता हूं कि न केवल देहातों में, बल्कि शहरों में भी धार्मिक शिक्षा देने का काम ऐसे अध्यापकों के जिम्मे होता है जो यद्यपि साक्षर अवश्य हैं, फिर भी शिक्षित नहीं कहे जा सकते। उनके लिए धर्म का अर्थ सिवाय धर्मान्धता के और कुछ नहीं। इसके अलावा, उनके पढ़ाने का ढंग भी ऐसा होता है कि उसमें उदार दृष्टिकोण की गुंजाइश ही नहीं होती। तब यह बिल्कुल साफ जाहिर है कि प्रारम्भिक अवस्था में बच्चे को जो शिक्षा दी जायगी और उसके दिमाग में जो विचार ठूंस दिये जायगे, उन्हें आप बाद में कभी भी नहीं निकाल सकेंगे। भले ही आप उसे कितनी ही आधुनिक शिक्षा क्यों न दें। यदि हमें अपने देश के बौद्धिक जीवन को इस खतरे से बचाना है तो हमारे लिये यह और भी अधिक जरूरी हो जाता है कि हम प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने की जिम्मेदारी गैर सरकारी सूत्रों पर न डालें। इसके विपरीत यह काम हमें सीधे अपनी निगरानी में ले लेना चाहिए। निस्संदेह एक विदेशी सरकार धार्मिक शिक्षा से अपना कोई वास्ता नहीं रख सकती थी। लेकिन एक राष्ट्रीय सरकार इस जिम्मेदारी से किसी भी हालत में अपना पिंड नहीं छुड़ा सकती देश के सुकुमार बालकों के मस्तिष्क को उचित आधार पर विकसित करना उसका सर्वोपरि कर्तव्य है। भारत में हम धर्म के बिना कोई बौद्धिक विकास नहीं कर सकते।

यदि धार्मिक शिक्षा को आधारभूत शिक्षा का अंग बनाना ही है, तो उसमें उसका क्या स्थान होना चाहिए, इसका प्रबंध कैसे किया जाय, इन प्रश्नों पर हमें अच्छी तरह से विचार करना होगा। निस्सन्देह, हमारे मार्ग में कई कठिनाइयां आ जायगी। हमें उनका निराकरण करना होगा। परन्तु इस समय हमें विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं। यदि मुख्य प्रश्न हल हो गया तो विवरण तो बाद में भी ढूंढे जा सकते हैं। फिर भी मैं आप से निवेदन करूंगा कि इस प्रश्न पर पूरी तरह से विचार करने के लिए आप एक कमेटी नियुक्त करें। यह कमेटी अपनी सिफारिशें सरकार को सीधी भेज सके।

एक और भी समस्या है जिसके बारे में अंतिम निश्चय करना है। हमारी शिक्षा का माध्यम क्या हो? मैं कह सकता हूं कि दो बातों पर आप सब सहमत होंगे। प्रथम, भविष्य में अंग्रेजी हमारी शिक्षा का माध्यम न रह सकेगी। दूसरे इस शिक्षा में परिवर्तन शनैः शनैः होना चाहिये। मेरा विचार है कि हम फैसला कर लें कि उच्च शिक्षा पहले की भांति अंग्रेजी में ही ५ साल तक दी जायगी और इसके साथ साथ ही हमारे विश्वविद्यालय आगामी परिवर्तन के लिये प्रबंध कर लें। आप सब कृपया अपने सुझाव खूब सोच विचार कर सरकार को दें।

[शेष पृष्ठ २० पर]

हजारों प्रशंसा-पत्र प्राप्त पूर्णतया सफल सिद्ध दवाएं

ताकत, बल पौरुष व धातु-पुष्टि की बेजोड़ स्वर्ण मिश्रित गोलियां
भीनसीन गोल्ड टानिक पिल्स
पुरुषत्व-हीनता तथा जातीय दुर्बलता के लिए अचूक है।
प्रति शीशी रु० २) डाक खर्च अलग

संसार में रुकावट-स्तम्भन की केवल लगाने की एक अद्भुत औषधि
सुई फन सो [तरल
समय पर इसके जरा लगाने से रुकावट की अपूर्व शक्ति प्राप्त होती है।
प्रति शीशी रु० १२) डाकखर्च अलग

पुरुषों की नसों की शिथिलता तथा उत्थान-शक्ति-हीनता के लिए सर्वोत्तम तिला
—म ल ह म—
इसके प्रयोग से ढीली नसें मजबूत बन कर पूर्णरूप से उत्थान शक्ति प्राप्त होती है।
प्रति पौंड रु० २) डाकखर्च अलग।

स्त्रियों के पुराने से पुराने प्रदर (ल्युकोरिया) के लिए
—पाक ताई युन—
चाहे जैसा प्रदर स्त्रियों को जाने वाले पीले चिकने या सफेद पानी को बन्द करने की यह चाइनी प्रयोग की अचूक दवा है।
प्रतिशीशी ३॥) रु० डाकखर्च अलग

—मुफ्त मुफ्त—
स्त्री-पुरुषों के लिये उपयोगी दवाइयों का सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

पुराने पुराने सुजाक या गनोरिया के लिए
—ची साह लुम—
इससे सूजन, जलन बूंद बूंद पेशाब होना तथा मवाद पीप का आना इत्यादि सुजाक की सभी शिकायत तत्काल ही दूर हो जाती है।
प्रति पोट रु० ३॥) डाकखर्च अलग।

चाइनीज मेडिकल स्टोर, नया बाजार देहली।

हेड आफिस— २८ दूपोको स्ट्रीट बम्बई। ब्रांच—१२ डलहौजी स्क्वायर कलकत्ता। और अहमदाबाद
हमारी दवाइयाँ हर एक शहर में डीलरन्, छपी हुई फोल्डर में हमारे सेलिंग एजेन्ट से मिलेंगी।

कहानियों पर इनाम

* कहानी टाईप, तीन हजार शब्दों में हो।
* पुरस्कृत मू० ११) से ५१) तक होगा।
* निर्णायक को मूल्य निर्णय तथा प्रकाशन में सर्वाधिकार होगा।
* कहानी हर मास की २५ तारीख तक आनी चाहिए।

"मधु" वालुजा प्रेस, दिल्ली।

❀ विवाहित जीवन ❀

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मंगावें।

१—कोक शास्त्र (सचित्र) १॥)
२—८४ आसन (सचित्र) १॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १॥)
४—१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
५—सुहागरात (सचित्र) १॥)
६—चित्रावली (सचित्र) १॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो १॥)
८—गर्भ निरोध (सचित्र) १॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १५) अलीगढ़ सिटी।

तिरंगा झण्डा

श्री शिवजी रचित तीन एकांक नाटकों का संग्रह—स्वाधीन देश के झण्डे के लिए बलिदान की पुकार। मूल्य १) डाक व्यय ।-)। मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

मुफ्त

वीर अर्जुन के पाठकों को यह हर्ष होगा कि लाहौर के विख्यात गुप्त रोग विशेषज्ञ वैद्य कविराज खजानचन्द जी बी० ए० ने हौज़ काज़ी दिल्ली में नियम पूर्वक कार्य आरम्भ कर दिया है। रोगी उनको स्वयं मिलकर व पत्र व्यवहार द्वारा सम्मति तथा औषधियां ले सकते हैं। यथापूर्व आयमाइश के लिए औषधियां मुफ्त दी जावेंगी ताकि धोके का अवसर न मिले। पूर्ण विवरण के लिए उनकी अंग्रेजी की पुस्तक sexualguide मूल्य १२ आने पढ़ें।

मासिक रुकावट

बन्द मासिक धर्म रजोलीना दवाई के उपयोग से बिना तकलीफ़ शुरू हो नियमित आता है, ऋतु की फर्याद समय पर होती है। यह दवा गर्भवती को प्रयोग न कराव क़ी० रु० ४), तुरत फायदे के लिए तेज दवाई क़ी० रु० ६) पौस्टेज अलावा। गर्भांकुश — दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता गर्भनिरोध होता है, मासिक धर्म नियमित होगा, विश्वसनीय और हानि रहित है। क़ी०४)पो० अलावा

पता—दुग्धानुपान फार्मेसी जामनगर ५,
देहली एजेंट—जमनादास क० चांदनीचौक
अजमेर—मेहता ब्रदर्स नया बाजार

साबुनों का मुकुटमणि

साबुन नम्बर १००

हर तरह के कपड़ों ऊनी, सूती, रेशमी की बहतरीन सफाई के लिये। सुन्दर और रंगीन रैपर में लिपटा हुआ। हर अच्छे स्टोर और साबुन के दुकानदार से मिलेगा। एक बार खरीद कर अब स्व परीक्षा करें।

एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है।

चांद सोप वर्क्स

गली नं० ३८ फ़तेहपुरी दिल्ली।

सिक्कों और काग़ज़ के नोटों से यह सुविधा थी कि वे आसानी से प्रत्येक स्थान पर ले जाये जा सकते थे। परन्तु ज्यों ज्यों यातायात के साधनों और व्यापार की उन्नति हुई अत्यन्त दूर के स्थानों से भी रुपये का लेन देन आवश्यक हो गया। प्रत्येक बार किसी हरकारे के हाथ रुपया भेजना सम्भव न था। इस के लिये किसी दूसरे सरल उपाय की आवश्यकता हुई। इस समस्या को सुलझाने के लिये भारतीय महाजनों ने 'बिल आफ एक्सचेंज' अर्थात् हुण्डियों का तरीक़ा निकाला। यह हुंडी किसी विशेष व्यापारी के नाम एक चिट्ठी के रूप में होती है कि लिखित व्यक्ति को निश्चित रुपया दे दिया जावे। यही आगे चल कर वर्तमान युग के चैक ड्राफ्ट बन गये। ज़रा सोचिये प्राचीन काल के अदल-बदल के व्यापार की अपेक्षा यह कितनी उन्नति है। आज कल आप भारतवर्ष या संसार के किसी भी स्थान में माल खरीद सकते हैं और किसी प्रसिद्ध बैंक के नाम चैक या ड्राफ्ट भेज सकते हैं।

बचत भी सुरक्षित और लाभदायक बन गई है। आप सिक्योरिटी खरीद सकते हैं या किसी बैंक में रुपया जमा कर सकते हैं। परन्तु एक योग्य व्यापारी समझता है कि आज कल नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स सब से अधिक लाभदायक होने के साथ साथ पूर्णतया सुरक्षित हैं। ये अवधि पूरी होने पर ५०% बढ़ जाते हैं—प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब आप ५) से १५०००) की मालियत के सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं। थोड़ी बचत वाले ।), ॥) और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद सकते हैं। अब आप सर्टिफिकेट्स १८ मास के उपरान्त भुना सकते हैं (५ रु० के सर्टिफिकेट्स १२ मास के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्वप्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC215

महाराष्ट्र का शेक्सपीयर

रामगणेश गडकरी का परिचय

[श्री विनायक नानेकर]

"स्वयं बुद्धि से अपनी मातृ-भाषा में सौन्दर्य लाने का प्रयत्न करना, यही प्रत्येक लेखक का दृष्टिकोण होना चाहिए। मैं विदेशी भाषा की किताबें पढ़ता हूं, परन्तु उनमें के विचार या कल्पना की नकल नहीं करता। मैं विदेशी किताबें यह जानने के लिये पढ़ता हूं कि मेरी कल्पनायें और विचार उनकी श्रेणी के हैं अथवा नहीं। ...

"आड़ा टेढ़ा लिखो, मगर विचार करके लिखो। विचार न करते हुए जल्दी जल्दी पन्नों पर पन्ने काले कर पाठकों का वक्त बर्बाद करने के समान कोई पाप नहीं। मैं जब तक यह अनुभव नहीं कर लेता कि मेरी कृतियों में कुछ नवीनता है तब तक मैं उसे छपने नहीं देता। जब एक रचना के लिये हम दिन पर दिन विचार करेंगे और श्रम के साथ लिखेंगे तभी हमें पाठकों के पांच मिनट लेने का हक मिलता है।"

ये हैं रामगणेश गडकरी के विचार और इसी तरह के महान् विचारों के कारण कई विद्वानों ने राम गणेश को शेक्सपीयर की श्रेणी में बिठाने का प्रयत्न किया है।

गडकरी के नाटक 'प्रेम सन्यास' की प्रस्तावना में प्रि० गोविन्द चि० भाटे लिखते हैं कि "गडकरी ने सिर्फ पांच नाटक लिखे हैं मगर महाराष्ट्र के महाभारत में वे पांच पांडवों की तरह महत्व रखते हैं। गडकरी का विनोद उच्च कोटि का है। उनके विनोद में यह खूबी है कि उसमें अश्लीलता, बीभत्सता, आक्षेप या कुचेष्टा का अंश भी नहीं दीखता। अन्य नाटककारों के पात्र रंग-मंच पर आकर चेहरे बनाते हैं, नाच कूद करते और भाषा का बेतुका तोड़-फोड़ कर प्रेक्षकों को हंसाने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु गडकरी का विनोद सात्विक, भाषा शुद्ध और आनन्द दायक है। विनोद की बाबत मैं अभिमान के साथ कह सकता हूं कि गडकरी ने शेक्सपीयर को भी पीछे छोड़ दिया है। शेक्सपीयर के नाटकों में विद्यार्थियों व विद्यार्थिनियों के न पढ़ने लायक कई अंश हैं और इसी कारण स्कूलों में पढ़ाने के लिए शेक्सपीयर के नाटकों की खास आवृत्तियां निकाली गई हैं। शेक्सपीयर के जमाने में लोगों की अभिरुचि अश्लील थी और शेक्सपीयर ने लोगों की रुचि के मोह में पड़कर अपने नाटकों में अश्लीलता का भरसक समावेश किया। परन्तु गडकरी जनता के मोह के शिकार न हुए।"

हो सकता है, कई पाठक उपर्युक्त विचारों से सहमत न हों, परन्तु गडकरी वास्तव में महान् कलाकार था।

मनोविज्ञान का सूक्ष्म अवलोकन और कृति में उसका दर्शन यही शेक्सपीयर की विशेषता है और गडकरी के नाटकों में भी इनकी प्रधानता है। गडकरी के विनोदी पात्र सिर्फ शब्दों का विनोद नहीं करते, परन्तु मनोरचना तथा मनोव्यापार का भी दर्शन करते हैं। गडकरी का विनोद इतने उच्च दर्जे का है कि वह बहुतेरे डिग्री धारियों की भी समझ में नहीं आता और इसी कारण गडकरी के नाटकों के अनुवाद और भाषाओं में न हो सके।

गडकरी की भाषा आलंकारिक तथा चुटकुलों से ओतप्रोत है। गडकरी की भाषा पनिहारिन की तरह इठलाती—बल खाती चलती है। यह सच है कि महाराष्ट्र साहित्य को नई दिशा देने वाले गडकरी ही हैं। मराठी साहित्य का धरातल ऊंचा करने का श्रेय गडकरी को है। वर्तमान प्रतिभाशाली लेखक ना० सि० फड़के, प्र० के० अत्रे, वि० स० खांडेकर तथा मामा वरेरकर गडकरी को गुरुतुल्य मानते हैं। गडकरी के नाटकों में चुटकुलों की भरमार रहती है। जितने चुटकुले गडकरी के एक प्रवेश में पाये जाते हैं, उतने चुटकुले अन्य नाटककार के पूरे नाटक में भी नहीं मिलते।

× × ×

लोग भले ही गडकरी को शेक्सपीयर अथवा कालिदास कहें, मगर गडकरी अत्यन्त विनयी थे, वे स्वयं को अर्ध-बुद्धि समझते रहे। गडकरी का संकल्प था कि वे अपने जीवन काल में १८ नाटक, २५० कविताएं, २५ विनोदी लेख तथा अढ़ाई हजार अभंग (पद) पूरे करेंगे, परन्तु अकाल मृत्यु के कारण उनका संकल्प अपूर्ण रहा। एक स्नेही के प्रश्न करने पर कि आप १८ नाटक ही क्यों लिखना चाहते हैं, गडकरी ने जवाब दिया, "शेक्सपीयर पूर्ण बुद्धि का पुरुष था। उसने ३६ नाटक लिखे हैं। मैं अर्ध बुद्धि का पुरुष हूं, इसलिए मैं सिर्फ अठारह नाटक लिखूंगा।" उनका यह स्वप्न भी दुर्भाग्यवश पूर्ण न हुआ। वे सिर्फ पांच नाटक ही लिख पाये और उनमें भी दो अधूरे ही छोड़ गये। इसका कारण यही था कि गडकरी काफी सोच विचार के बाद कलम उठाते थे। एक बार एक समालोचक ने गडकरी के 'प्रेम संन्यास' नाटक पर आलोचना लिखी और दिखाने के लिए गडकरी के पास आया। उन्होंने कहा, "महाशय जी, आप यह टीका मुझे न दिखाइये क्योंकि 'प्रेम सन्यास' लिखने में मैंने तीन वर्ष तक खूब विचार किया है और आपने यह टीका एक दिन में घसीटी है, यह कहां तक सही हो सकती है, इसका आप ही विचार कर लें।"

रस्किन का कहना है कि शेक्सपीयर के नाटकों में नायक नहीं हैं। उसके नाटकों में नायिकाओं का ही प्रभुत्व है। उसी तरह गडकरी के नाटकों में भी भारत की आदर्शवान् स्त्रियों की मूर्तियां झलकती हैं। गद्य लिखने में जिस तरह 'डीकेंस' का अंग्रेजी में में उच्च स्थान है इसी प्रकार मराठी में गडकरी का ऊंचा स्थान है। मराठी गद्यकाव्य के जन्मदाता गडकरी ही हैं।

गडकरी अत्यन्त भावुक व्यक्ति थे, इसी से उन्होंने दिल में होते हुये भी रामगढ़ (शिवाजी की राजधानी) की सैर नहीं की। मित्रों ने कई बार कोशिश की, परन्तु गडकरी अपने को बचाते रहे। एक ने जब कारण पूछा तो कहने लगे, 'रामगढ़ पर चढ़ने पर सम्भव है, मेरी लेखनी से किसी क्रान्तिकारी रचना का जन्म हो और सरकार की १२४ धारा मुझे नीचे गिरा दे। अन्त में गडकरी रामगढ़ देखने गये और उनकी लेखनी से 'राज सन्यास' का जन्म हुआ। इस 'राजसंन्यास' नाटक की लोकप्रियता इतनी बढ़ी है कि उन दिनों एक विद्वान् ने कहा, यदि मैं बम्बई का गवर्नर होता तो इतिहास की सारी किताबें चूल्हे में झोंक कर एक 'राजसन्यास' पाठ्य पुस्तक स्कूलों में रखता।'

रामगणेश गडकरी का जन्म गुजरात के नवसारी ग्राम में सन् १८८५ में हुआ था। बचपन में गडकरी बड़े चंचल थे। चंचल प्रकृति वाले तीक्ष्ण बुद्धि के होते हैं और गडकरी भी उसके अपवाद न थे। रवीन्द्र ठाकुर की तरह गडकरी को भी बचपन में विद्याभ्यास से चिढ़ था। गडकरी की माता का नाम सरस्वती बाई था और आगे चलकर गडकरी ने वास्तव में ही अपनी मां की गोद की लाज रख ली। छः वर्ष की उम्र में आपने गुजराती भाषा में 'सुर सुन्दरी' नामक नाटक लिखा और ग्यारह वर्ष की उम्र में पहिली कविता लिखी। गडकरी का सारा जीवन भी दरिद्रता में बीता। स्कूल के दिन उन्होंने डबल रोटी और चने खाकर काटे उसके अलावा दूध, सब्जी और लकड़ी का व्यापार किया, थियेटर भी चले, समाचार पत्र के दफ्तर में नौकरी की और मास्टरी भी की। शुरू शुरू में 'बालकराम' के नाम से विनोदी लेख लिखने शुरू किये फिर 'गोविन्दाग्रज' के नाम से कवितायें लिखीं। गडकरी को बीड़ी और चाय का बहुत शौक था, परन्तु वे अपने गुरु कोल्हटकर के सामने बीड़ी नहीं पीते थे। एक बार गडकरी बीड़ी पी रहे थे और एकाएक कोल्हटकर कमरे में आ गये। गडकरी ने जलती बीड़ी हाथ में ही बुझानी चाही, मगर उनका हाथ जल गया। गडकरी धार्मिक प्रकृति के भी थे। बचपन में उनकी मां ने उनसे धार्मिक पुस्तकें पढ़वा कर सुनी थीं, जिनका गडकरी के हृदय पर काफी असर पड़ा और इसी कारण गडकरी हमेशा विष्णु और शंकर की तस्वीरें अपने सिरहाने रखते थे।

गडकरी संस्कृत के स्कालरशिप-होल्डर रहे और गणित में वे रघुनाथ परांजपे से प्रतिस्पर्धा करते थे। इनकी अवलोकन शक्ति बहुत तीक्ष्ण थी। अपने घर में कितनी सीढ़ियां हैं बुधवार पेठ में साइनबोर्ड कितनी दुकानों पर हैं? पूने का सबसे छोटा मकान कौनसा है? ऐसे प्रश्न वे अपनी मित्रमण्डली में पूछा करते थे और उत्तर खुद ही बताते थे, जिससे मनोरंजन होता था। स्मरण शक्ति ऐसी तेज थी कि कोल्हटकर के कई नाटक उन्हें कण्ठस्थ थे। उत्कृष्ट विचारों पर वे निशान लगाया करते थे और मार्जिन पर अपने विचार लिख दिया करते थे। मार्क ट्वेन उनका प्रिय लेखक था। अच्छी अच्छी किताबें संग्रह करने का वे प्रयत्न करते और कबाड़ी बाजार में अनेक चक्कर हमेशा लगाया करते थे। उनकी चुनी हुई किताबें मित्र उठा कर ले जाते थे, परन्तु वापस

सम्राट् विक्रमादित्य

(नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १॥), डाक व्यय ।=)।

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

खाना भूल जाते, तब गडकरी कहा करते थे, भगवान् मैं अपने शत्रुओं को मात देने में समर्थ हूं परन्तु इन मित्रों से रक्षा करने में तू ही मेरी मदद कर।' फिर भी उनके उदार हृदय ने कभी मुंह से नाहीं नहीं कहा। मित्रों से उन्हें काफी स्नेह था। सन् १९१९ में जब उनके स्नेही ठोमरे स्वर्गवासी हुए, तब गडकरी ने कहा था "ठोमरे गये अब एक वर्ष बाद मुझे भी जाना पड़ेगा' और ठीक एक वर्ष बाद २३ जनवरी १९१९ को गडकरी स्वर्गवासी हुये। अब्राहम लिंकन की तरह गडकरी भी विनोदी कथा और चुटकुलों से श्रोताओं का मन हरण किया करते थे। वे एक बार बोलने लगे कि बोलते ही रहते और किसी को उन्हें रोकने की इच्छा ही न होती थी। कोई अच्छा विनोद होने पर एक ने गडकरी से कहा "गडकरी, इस चुटकले को आप नाटक में रखें।" इस पर गडकरी बोले, "एक बार बोल कर झूठे हुए विनोद को नाटक में स्थान दें, वे गडकरी इतने कंगाल नहीं है।"

अपना चित्र खिचवाने और छपवाने में वे कभी राजी नहीं होते थे। वे कहा करते थे कि जिसे मुझे देखना हो, वह मुझे मेरे लेखों में देखे।

ठगों से ठगे हुए

कमजोरी, सुस्ती, शीघ्र पतन व स्वप्नदोष रोगों के रोगी हमारे यहा आकर इलाज करावें और लाभ के बाद हस्ब हैसियत दाम दें और जो न आसकें वे अपना हाल बन्द लिफाफे में भेज कर मुफ्त सलाह लें। हम उनको अपने उत्तर के साथ उनके लाभ के लिए अपनी १ पुस्तक "विचित्र गुप्त शास्त्र जिस में बिना दवा खाये ऊपर लिखे रोगों को दूर करने की आसान विधियां लिखी हैं और जो सन् २६ में गवर्नमेंट से जब्त होकर अदालत से छूटी है मुफ्त भेज देंगे, परन्तु पत्र के साथ तीन आने के टिकट भेजें।

डा० वी० एस० कश्यप अध्यक्ष रत्नाकरधर १०७ शाहजहांपुर यू० पी०

धर्म शिक्षा की आवश्यकता

[पृष्ठ १७ का शेष]

भारतीय भाषा का प्रश्न आधारभूत प्रश्न है। इस सम्बन्ध में हम परिवर्तन कैसे लायें। क्या यूनिवर्सिटियों में शिक्षा किसी समान भारतीय भाषा में दी जाय या प्रान्तों को अपनी भाषाओं को उपयोग करने की छूट हो। अंग्रेजी विदेशी भाषा है और इसके माध्यम रहने के कारण हमें बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। हां, अंग्रेजी द्वारा यह लाभ हमें अवश्य हुआ कि देश के शिक्षित समुदाय में विचारों का परस्पर आदान प्रदान सुगम हो गया। अंग्रेजी राष्ट्रीय एकता में सहायक हुई। यह इतनी बड़ी बात है कि मैं अंग्रेजी माध्यम के आगे भी रहने के पक्ष में होता यदि अंग्रेजी विदेशी भाषा न होती। और विदेशी भाषा में शिक्षा प्रदान करना सर्वथा अनुचित है। आप ही बतायें, यदि महराठी, बंगाली, पंजाबी भाई को विदेशी माध्यम द्वारा शिक्षा प्राप्त करने में विशेष दिक्कत नहीं हुई तो किसी भारतीय भाषा द्वारा शिक्षा प्राप्त करने में उसे क्या कठिनाई होगी? यदि अंग्रेजी के स्थान पर हम कोई भारतीय भाषा अपना लें तो हम उस बौद्धिक एकता को कायम रख सकेंगे जो हमें अंग्रेजी के कारण प्राप्त हुई। अन्यथा हमारी बौद्धिक एकता को थोड़ा बहुत धक्का अवश्य पहुंचेगा।

दूसरा विकल्प हमारे सामने यह है कि विश्वविद्यालयों में प्रांतीय भाषाएं माध्यम हों, और केन्द्रीय सरकार और प्रान्तः प्रांतीय सम्पर्क के लिए अलग एक समान भाषा का ज्ञान अनिवार्य हो।

फिल्म स्टार

बनने की इच्छा वाले शीघ्र पत्र लिखें। रंजीत फिल्म आर्ट कालेज बिरला रोड हरिद्वार।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मेट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

१००) इनाम

(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकदमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नजर की शक्ति, नौकरी की तरक्की और सन्तानवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।

श्री कामरूप कार्यालय आसाम १९ पो० कचहरीबाजार (आसाम)

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर बना हुआ, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले और व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में है, जो थोड़े ही मूल्य का है।

यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० २०१ कीमत ३॥।=) क्वालिटी नं० २१२ कीमत ६।।।) श्री बक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० २२० कीमत ८॥), पैकिंग व डाकव्यय १=)

नोट—एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० २२० मुफ्त। स्टाक सीमित है जल्दी आर्डर दें अन्यथा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस

वेस्ट एण्ड ट्रेडर्स (V. A. D.) पोस्ट बाक्स १९९, दिल्ली।
West End Traders, (V. A. D.) P. B. 199, Delhi.

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक कैसी स्मार्ट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (रोल्ड ग्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी रोल्ड ग्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आवेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवेल्टी स्टोर्स पो० ब० नं० ४५ दिल्ली।
General Novelty Stores P. B. 45, Delhi

दिल्ली प्रांत, मेरठ कमिश्नरी व बुलन्दशहर के सोल एजेन्ट—

हत्यारी रानी

[श्री ब्रजमुरारि अग्रवाल]

एक राजा था। इस राजा के कोई सन्तान न थी। जवानी में तो इसने कुछ चिन्ता न की, परन्तु जब वह वृद्ध हो चला तो इसने किसी को गोद लेना चाहा। इस राजा की बहन के एक पुत्र था। उसका नाम कमल था। कमल के सुन्दर नेत्र, गोरा रंग और हंसमुख चेहरा बड़ा ही सुन्दर प्रतीत होता था। राजा ने इसी पुत्र को गोद लेने का विचार किया। शुभ घड़ी में गोद संस्कार होना निश्चित हुआ, पर कमल की माता ने यह स्वीकार न किया।

जब राजा के पास यह समाचार पहुंचा तो उसे बड़ा दुख हुआ। वह शीघ्र ही अपनी बहन के पास पहुंचा। बहुत विनय करने के बाद बहन इस शर्त पर राजी हुई कि यदि भाग्यवश तुम्हारे (राजा के) पुत्र हो भी जाए, तब भी मेरा पुत्र युवराज होगा। राजा ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। बड़ी धूम-धाम के साथ कमल को राजा ने गोद ले लिया और अनेकों प्रकार के उत्सव हुए।

धीरे धीरे वह पुत्र बड़ा होने लगा। इधर रानी के गर्भ रह गया। अब तो रानी बहुत चिंतित हुई और सोचा कि अब मेरे पुत्र की यहां पर क्या कद्र होवेगी। तब उसने यह विचार किया कि इस कमल को मरवा देना चाहिए। दिन-दिन राजा का प्रेम कमल से बढ़ता जा रहा था। रानी ने एक दिन उस कमल को विष दिलवा दिया। कमल सदा के लिए सो गया। राजा ने भी उसके दुख में अपने प्राण त्याग दिये।

आठ महीने के पश्चात् उस रानी के कन्या उत्पन्न हुई। रानी की सारी आशाओं पर पानी फिर गया।

अन्धा धर्म

जिस चमड़े के जूते पहनते हैं,
जिस चमड़े के बेग बरतते हैं,
जिस चमड़े के पाकिट रखते हैं,
वह चमड़ा रसोईघर में जा सकता है,
उस चमड़े से कोई भ्रष्ट नहीं होता,
उसका उपयोग करने वाला भी भ्रष्ट नहीं बनता।
पर उसे साफ करने वाला अछूत है।
उसे मरे ढोरों पर से उधेड़ने वाला अछूत है।
क्योंकि उसने हमारे लिये उसे उधेड़ा।
क्योंकि उसने हमारे लिये उसे साफ किया।

चमड़ा साफ और शुद्ध बन सकता है, पर उसे कमाने वाला कितना ही नहाये, कितना ही धोये, गंगाजल में स्नान करे, गंगाजल से धोये, तो भी वह पवित्र नहीं हो सकता।

इसी को कहते हैं, अन्धा धर्म।

—मा० मु०

एक खेल

जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी

सब खिलाड़ी गोलाकर बैठते हैं। उनमें से कोई एक खिलाड़ी कागज का गेंद बना कर या पिंगपांग का गेंद लेकर किसी दूसरे खिलाड़ी की गोद में फेंकेगा और जल, वायु, अग्नि या पृथ्वी में से किसी एक का नाम लेगा। यदि वह या पृथ्वी जल कहता है तो जिस खिलाड़ी की गोद में गेंद गिरा हो, उस खिलाड़ी को तुरन्त किसी ऐसे जीव का नाम लेना होगा जो क्रमशः जल में या पृथ्वी पर रहता हो। एक से पांच तक गिनती गिनने में जितना समय लगे उतने ही समय के भीतर उसे जल या स्थल जंतु का नाम लेना होगा।

यदि गेंद फेंकने वाला वायु कहे तो जिस खिलाड़ी की गोद में वह गेंद गिरा होगा वह खिलाड़ी किसी पक्षी का नाम तुरन्त लेगा।

पर यदि अग्नि कहा जाय तो वह खिलाड़ी चुप रहेगा। यदि यह बात खिलाड़ी भूल जाता है और यदि एक से ५ तक गिनती गिनने के समय के भीतर किसी ठीक जीव का नाम नहीं बताता है तो उसकी हार हो जाती है। फिर जिस खिलाड़ी की गोद में गेंद गिरा होता है वह खिलाड़ी गेंद को किसी दूसरे की गोद में फेंकता है।

पहेलियां

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान।
मैं हूं धनवानों की शान,
मेरे से करते सब काम॥

२—अन्त कटे मैं बाल कहाती,
आदि मिटे लटी सुहानी।
मध्य कटे मूले को भाती,
बताओ मैं क्या कहलाती?

—उमेश शाकुल्य

३—तीन अक्षर का मेरा नाम।
हूं भारत का एक मुकाम॥
मध्य कटे औजार कहाता।
अन्त कटे अग्नी बन जाता॥

—ओमप्रकाश

४—छत्तीस कुल्हाड़ी छत्तीस हजार।
तब भी न कटे जबरदस्त किवाड़॥

५—इतनी छोटी चिरिया के इतनी बड़ी बुढ़िया।

६—बाप पैदा नहीं हुए, बेटा घर के पिछवाड़े खड़े हैं।

—शिवप्रसाद चौबे

आदि कटे तुम "टर" बनवालो
अन्त कटे पानी भरवालो।
मध्य कटे सुन्दर पक्षी मैं,
पूर्ण नाम मांगू दौड़ूं मैं॥*

जयदेव आर्य

तारे

रवि के जाते नभ में आकर,
रवि के आते नभ में छाकर,
ये कौन चमकते हैं झिलमिल
ये कौन दमकते हैं हिलमिल।
ये दिखते हैं कैसे प्यारे,
ये छिटके हैं कैसे सारे,
मानों ढेरों मोती लाकर
चला गया कोई बिखराकर।
या दीपक हैं गये जलाये,
पग-पग पर हैं गये सजाये,
चन्दा के घर नई निराली
होती है हर रोज दिवाली।

—कृष्णकांत तैलंग

उत्तर देकर इनाम लो

(१) एक मनुष्य के सामने एक शीशा रक्खा हुआ है, जिसमें कि उसको अपना अक्स अपने से १०० गज दूर दीखता है। यदि वह मनुष्य १० गज प्रति मिनट की चाल से चले तो बताओ वह कितनी देर में अक्स तक पहुंच जायगा।

(२) एक मनुष्य ५ फीट लम्बा है। उसके आगे किस लम्बाई का शीशा रक्खा जाय कि वह अपने पूरे शरीर को उसमें देख सके।

(३) भारतवर्ष में अब तक सब से महान् नीतिज्ञ कौन हो चुका है? (या जीवित है) ? एक लेख लिखो।

प्रस्तुत प्रश्नों के उत्तर जो भी बाल बन्धु सही और सुन्दर देगा, उसे तीन बहुत ही सुन्दर पुस्तकें पुरस्कार में दी जायेंगी।

— अभिनन्दन गुप्त

सूचना

मेरे पास म० गांधी, जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं की बहुत सुन्दर फोटो हैं। बालबन्धु केवल छः पैसे का टिकट भेज कर एक फोटो मुफ्त मंगावें।

राजेश नारायण भटनागर
मकान नं० ९५,७ रेलवे यार्ड कोटा

*उत्तर—(१) कनक, (२) बालटी, (३) हल, (४) परछाईं (५) सुई और (६) भुट्टा, (मोटर)।

भोलाजी

एक लड़का था अति शैतान,
था जिसका भोला जी नाम।
सभी लोग तंग थे उससे,
घर का करा न करना काम॥
कभी मिठाई जब आती थी,
बन जाता भोला का काम।
मा-बापों की आंख बचाकर,
चट कर जाता उसे तमाम॥
एक दिन की अब सुनो कहानी,
भोला ने क्या किया काम।
पिता मिठाई लेकर आये,
थी मा तब करती कुछ काम॥
छींके पर थी रखी मिठाई,
था बिल्ली चूहों का डर।
ब्याह पड़ोसी के घर में था,
दोनों गये उसी के घर॥
भोला से माता जी बोलीं,
कमला के घर जाती हूं।
देखो घर पर ही तुम रहना,
अभी लौटकर आती हूं॥
इतना कह मा गई वहां से,
शुरू किया भोला ने काम।
छींका ऊंचा बहुत टंगा था,
नहीं सरल था उसका काम॥
रखी मेज उस पर फिर कुर्सी,
और तिपाई उस पर एक।
चढ़कर उस पर छींका पकड़ा,
धक्का लगा पैर का नेक॥
धक्का लगते गिरी तिपाई,
कुर्सी भी थी उसके साथ।
नीचे गिरते ही भोला ने,
छींका पकड़ा दोनों हाथ॥
छींका कैसे छोड़े भोला,
था उसको गिरने का डर।
उधर टंगे भोला छींके पर,
माता जी जब आई घर॥
भोला! भोला!! बहुत पुकारा,
ये भोला जी बिल्कुल चुप।
वे तो टंगे हुये छींके पर,
रोते थे चुप-चुप-चुप-चुप॥
रोने की आवाज सुनी जब,
दौड़ी कमरे के अन्दर।
देखी पड़ी तिपाई कुर्सी,
और टंगे भोला ऊपर॥
दशा देख भोला को ऊपर,
मा को बड़ी हंसी आई।
रोते देख उसे फिर उनके,
मन में दया उमड़ आई॥
झटपट उसे उतारा मा ने,
और पूछा उससे सब हाल।
बोली अब चोरी मत करना,
यही चोर का होता हाल॥
भोला जी ने माफी मांगी,
पकड़े अपने दोनों कान।
मिली मिठाई मां से उसको,
जैसे उसको मिला इनाम॥

—उमाशंकर शर्मा विशारद

———

...वाना कांफ्रेंस और भारत

(पृष्ठ ६ का शेष)

के बीच अच्छा मेल पैदा करेगी और भारतीय उद्योग के विकास और आर्थिक उन्नति का कारण होगी। इस आशा का कारण यह विश्वास है कि श्री ग्रेडी भारत की औद्योगिक उन्नति में हृदय से दिलचस्पी रखते हैं। पर हमें इस सत्य और यथार्थ सत्य को स्वप्न में भी न भूलना चाहिए कि ग्रेडी मिशन ने अपनी रिपोर्ट में एक भी भारी उद्योग की भारत में स्थापना करने की सिफारिश नहीं की थी। सचाई यह है कि अमरीका भारत के विस्तृत बाजार का लाभ उठाना चाहता है और भारत के बड़े और भारी उद्योगों की स्थापना से ईर्ष्या करता है। न्यूयार्क में भारत के व्यापार-कमिश्नर श्री एम० के कृपलानी हैं। आपका कहना है:—माल तैयार करने वाले बहुत से अमरीकन, भारत जो उनको विशाल क्षेत्र देता है, उसकी उपयोगिता को दिल से अनुभव करते हैं, पर वे भारतीय उद्योगपतियों के साथ इस शर्त पर सहयोग करने को तैयार नहीं हैं कि आर्थिक नियन्त्रण भारत के हाथ में रहेगा। इस तथ्य की जानकारी के बाद भारत को सावधान हो जाना चाहिए और विदेशी पूंजी अपने देश में आमंत्रित नहीं करनी चाहिए।

पूँजी का प्रश्न

पर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े देशों को पूंजी की आवश्यकता है। पर यह पूंजी देश की स्वाधीनता को गिरवी रख के लेने के लिए कोई देश तैयार न होगा अन्तर्राष्ट्रीय बैंक से यह पूंजी प्राप्त की जाय इस ओर कुछ लोगों का ध्यान गया है। पर मार्शल योजना के अनुभव ने बता दिया कि आर्थिक स्थिति के सुधार के लिए दी गई सहायता वस्तुतः आर्थिक न हो कर राजनीतिक होती है। इटली और फ्रांस को दी गई अमरीकी सहायता ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है। पर इस के साथ यह भी मानना होगा कि भारत जैसे देशों को उत्पादन के तरीकों में उन्नति करने के लिए पूंजी की जरूरत है। प्रश्न यह है कि यह पूंजी कहां से आए।

सोवियत का उदाहरण

आधुनिक वैज्ञानिक उन्नति को देखते हुए प्राकृतिक शक्तियों को मनुष्य के लिए उपयोगी बनाने का कोई उपाय अभी तक वे देश नहीं ढूंढ पाए हैं। सोवियत रूस एक मात्र ऐसा देश है जिसने आत्म निर्भरता का मार्ग ढूंढ निकाला है और उस में वह यशस्वी हुआ है। महात्मा गांधी की ग्रामोद्धार-योजना दूसरी दिशा में है। वह भी आत्म सहायता पर निर्भर है और विदेशी पूंजी की दासता से मुक्त करती है। पर वह मार्ग लम्बा और धीमी प्रगति का है। पर ये दोनों मार्ग आखरी और निराशा के मार्ग हैं। आवश्यकता इस बात की है कि भारत इस विषय में साहस के साथ नेतृत्व करे। भारत को यह न भूलना चाहिये कि जो लोग कल जनतन्त्र की स्थापना और उसके संरक्षण के लिए लड़ रहे थे, वे आज अपनी पूंजी की सुरक्षा के लिए लड़ रहे हैं। अतः हवाना में किसी भी ऐसे चार्टर पर दस्तखत न करना चाहिये, जो भारत को विदेशी पूंजी पर नियन्त्रण रखने का अधिकार उसको नहीं दे। भारत सरकार के सम्वर्द्धन—मन्त्री मा० श्री गाडगिल और व्यवसाय मन्त्री श्री भाभा विदेशी पूंजी का स्वागत करने को जिस प्रकार लालायित और उत्सुक दिखाई देते हैं, यह देश के लिये एक महान् खतरा है। अब राष्ट्रीयकरण की योजना पीछे छोड़ दी गई है। सरदार पटेल ने यह घोषणा करदी है कि उद्योगों के अभाव में राष्ट्रीयकरण का स्थान नहीं और अगले पांच साल तक राष्ट्रीयकरण संभव नहीं है। अब इस बात का खतरा और बढ़ गया है कि भारत पुनः विदेशी पूंजी के जाल में न फंस जाय। अतः हवाना-कान्फ्रेंस के निर्णयों पर सबको दृष्टि रखने की जरूरत है, क्योंकि यदि एक बार देश में अनियन्त्रित विदेशी पूंजी देश में आने दी गई और भारतीय और एंग्लो-अमरीका पूंजी में मेल हो गया, तो भारत की आर्थिक स्वाधीनता की लड़ाई न केवल लम्बी हो जायगी, बल्कि भयंकर भी हो जायगी और समाजवादी जनतन्त्र की प्रतिष्ठा करने का आदर्श स्वप्न हो जायगा। अतः विशेष रूप से सतर्क रहने की जरूरत है।

ज्ञान की प्यास

[पृष्ठ १० का शेष]

अश्रु बहाते हुए आचार्य ने धीरे से कहा "यत्न करूंगा।"

समय पर प्रस्ताव संघ स्थविर के सम्मुख उपस्थित किया गया, पर वे कब मानने वाले थे। और फिर ऐसे अवसर पर जबकि उनकी अत्यन्त आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। पर भोट नरेश के धर्म प्रेम, आग्रह और धर्मार्थ कष्ट सहन की कथा सुन कर संघ स्थविर भी अविचलित न रह सके। अन्त में आज्ञा प्राप्त हुई और तब भोट राज से भेजी गई भेंट मंगवाई गई। आचार्य दीपङ्कर ने भेंट के चार भाग किये। एक भाग विहारस्थ पण्डितों के लिए प्रदान किया गया। द्वितीय भाग बुद्धगया में पूजा के लिए और तृतीय भाग संघ स्थविर रत्नाकर पाद के हाथ में विक्रम शिला संघ के लिए और शेष चौथा भाग अन्य धार्मिक कृत्यों में व्यय करने के लिए राज कोष के अर्पण किया गया और तब आचार्य पुस्तकों और आवश्यक वस्तुओं के साथ कुछ मनुष्यों को साथ ले भोट जनों के साथ विदा हुए।

आचार्य दीपङ्कर का भोट देश (तिब्बत) में खूब स्वागत किया गया और तब से १४ वर्ष तक तिब्बत में धर्म प्रचार करते हुए ७३ वर्ष की अवस्था में ञेथक (तिब्बत) के तारा मन्दिर में सन् १०५४ ई० में इस नश्वर शरीर का परित्याग किया। अब भी वहां दीपङ्कर के भिक्षा पात्र, धर्म कारक (कमण्डल) और खदिरदण्ड एक पिंजरे में राज मुद्रा से लाञ्छित सुरक्षित रखे हैं और बता रहे हैं कि भारतीय वृद्धों में तब भी कितना बल, साहस, त्याग, और धर्म प्रेम था।

प्रकाशित हुआ

प्रकाशित हुआ

※ उत्तम व्यंगचित्र ※ फोटो ※ मुलाकातें

इस अंक में उत्कृष्ट छायाचित्रकार श्री यशवन्तराव पुरव की मुलाकात, प्रेस फोटोग्राफी की जानकारी, विख्यात व्हेनगार्ड स्टुडियो का परिचय, फोटोग्राफी सोसाइटी आफ इण्डिया व अन्य संस्थाओं का परिचय देखिये। इसमें कैमरे के चुनाव से लेकर फोटो लेना, डेवलपिंग, फिक्सिंग, प्रिंटिंग, माऊंटिंग आदि सम्बन्धी विस्तृत जानकारी आकृतियों सहित सरल भाषा में दी गई है।

रेलवे स्टाल्स व गांव-गांव के ऐजेन्टों के पास उद्यम के अंक मिलते हैं। इस अंक की बहुत अधिक मांग की जा रही है। अतः आज ही उद्यम का वार्षिक चन्दा ७ रु० भेजकर फोटोग्राफी विशेषांक व खेती, उद्योगधंधे, मितव्ययिता आरोग्यता आदि विषयक जानकारी से पूर्ण अत्यन्त उपयुक्त मासिक संग्रहीत कीजिये।

— व्यवस्थापक, उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर।

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम ३) डाक खर्च पृथक।
हिमालय केमीकल फार्मेसी हरद्वार।

अफीम की आदत छूट जायगी। काली डायन अफीम से छुटकारा पाने के लिये "काया कल्प काली" सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स सात रुपया डाक खर्च पृथक।

हिमालय केमीकल फार्मेसी हरद्वार।

विशेष कमी—अवसर मत चूकिये—आज ही मंगाये ३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें

पति-पत्नी जीवन(सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनाने वाली अपूर्व पुस्तक १), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मन्त्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १), सफल सिद्ध—मन चाहा कार्य सिद्ध करना १), व्यौपारिक तेजी-मन्दी—तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त कर हजारों रुपया पैदा कीजिये १), हिन्दी अंग्रेजी शिक्षा—घर बैठे अंग्रेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखो १), हुस्न पैरिस—केवल पति-पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १॥), ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) पोस्टेज पैकिंग ॥) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, सैक्शन (१) अलीगढ़ सिटी

१५०००) की असली घड़ियां तथा रेडियो इनाम

जवां मर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्न दोष, प्रमेह, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है तथा नित्य के सेवन से कभी बुढ़ापा नहीं आता। मूल्य ४० दिन की खुराक ३॥) । तीन डिब्बे एक साथ मंगाने से ६॥) डाक खर्च माफ। बेकार साबित करने पर ५००) नकद इनाम। हर डिब्बे के साथ इनामी कूपन भेजा जाता है जिससे आप अच्छी घड़ी, रेडियो साइकिल तथा मोटर साइकिल प्राप्त कर सकते हैं। पेशगी मूल्य भेज कर नाम रजिस्टर करा लें ताकि पछताना न पड़े। पर्चे नियम मुफ्त मंगावें।

[illegible]

तुलसी

ले० श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार

तुलसी के प्रति पूज्य भाव रखने वाली देवियां और धर्म परायण लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि इस धार्मिक पौदे में कितने रहस्य छिपे पड़े हैं। तुलसी के पौदे की तरह यह पुस्तक भी हमारे हरघर में पहुंच जानी चाहिए। सचित्र, सजिल्द। मूल्य २)

मिलने का पता —

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

इन्कम टैक्स से छुटकारा

इन्कम टैक्स ... 'इन्कमटैक्स क्या है' ...

साप्ताहिक वीर अर्जुन में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

आ गई! हिन्दी जगत में ख्याति प्राप्त मनोरंजन पहेली आ गई॥

२५००) मनोरंजन पहेली नं० ४४ में अवश्य जीतिये।

१३००) सर्वशुद्ध पूर्तियों पर, १०००) न्यूनतम ३ अशुद्धि तक

विशेष इनाम—१५०) किसी महिला व विद्यार्थी के सर्वशुद्ध हल पर और २५), १५), १०), क्रमशः सर्वाधिक पूर्तियां भेजने वालों को दिया जायगा।

पूर्तियां भेजने की अन्तिम तारीख १२ फर्वरी १९४८ ई०

१ सु	क	२ वि	■	३	या
	■	४ का		■	■
■	५ ा	र	■	६ व्य	७ ि
८	■	■	९ दा	व	त
नु	■	१० ा	■	ा	■
११ ब	ा	यु	■		■

संकेत बायें से दायें—(१) अच्छा कार्य। (३) मक्कार और बदमाशों को यह बिलकुल नहीं होती। (४) रावण इसी के वशीभूत होकर मारा गया था। (५) मनुष्य इससे बचने का प्रयत्न करता ही है। (९) खाने का बुलावा। (११) रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध।

ऊपर से नीचे को—(१) यह सभी को आनन्ददायी होता है। (२) मन की प्रवृत्ति। (६) पैसे के बल पर मनुष्य जैसा चाहे वैसा यह कर सकता है। (७) भोजन करने में मनुष्य को इसका भी ध्यान रखना जरूरी है। (८) नई रोशनी वाले इसे अलग कर देने में भी नहीं हिचकिचाते। (१०) जब तक यह है तभी तक प्राणी जीवित रह सकता है।

नियमावली—एक नाम से एक पूर्ति की प्रवेश फीस १) रु० तीन पूर्ति भेजने की २) रु० फिर आगे हर पूर्ति ॥) है, जो मनिआर्डर या इ० पो० आर्डर (बिना क्रास) द्वारा भेजी जानी चाहिये। जारी म० आ० रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य भेजें। पूर्तियों के लिये वर्ग बनाना आवश्यक नहीं, इच्छानुसार पूर्तियां सादे कागज पर भेजी जा सकती हैं। एक व्यक्ति को उसकी पहेली के अनुसार केवल एक ही इनाम मिल सकेगा। सील बंद शुद्ध उत्तर ता० १ मार्च को साप्ताहिक 'वीर अर्जुन' में प्रकाशित होगा। पूर्तियों और म० आ० के नीचे कूपन पर अपना पूर्ण पता हिन्दी में अवश्य लिखें। इस प्रतियोगिता के सम्बन्ध में जनरल मैनेजर का निर्णय हर दशा में अन्तिम और कानूनन मान्य होगा। पूर्तियां एवं फीस भेजने का पता—

मैनेजर — मनोरंजन पहेली कार्यालय, राहतगढ़ (सागर) सी० पी०

मनोरंजन पहेली नं० ४३ का शुद्ध उत्तर एवं नतीजा। इस प्रतियोगिता में हमारा सीलबंद शुद्ध हल इस प्रकार है — संकेत बायें से दायें में — १ विनायक ४ नीलम ८ रविवार ९ मन १० दाना। ऊपर से नीचे को — १ विमोह २ कनी ३ राम ५ लता ६ धनवान ७ कामिनी।

सब शुद्ध ७ व्यक्ति प्रत्येक को १८५॥) एक अशुद्धि ३० प्रत्येक को १५) दो अशु० ६६, प्रत्येक को ४॥) तीन अशु० ९२ प्रत्येक को २॥) मिले। विशेष इनाम — २५) १५) १०) क्रमशः श्री निरंजन लाल कक्षा ८ अलवर महादेव प्रसाद लखनऊ रामजीवन बम्बई इनको क्रमशः १२८, १०४, ७२ पूर्तियां भेजने पर दिये गये।

क्या आपके घर में प्रायः रोग रहते हैं?

क्या आपके घर में प्रायः रोग रहते हैं? अपने देश के रोगों के परिणाम की इंग्लैंड और अमेरिका के अत्यल्प परिणाम से तुलना कीजिये। हमारे यहां टायफायड कालरा, मलेरिया और अन्य बुखारों से प्रदत्त मृत्युसंख्या का एक कारण यह है कि हम रोगवाहक कीड़ों को अपने साथ घरों में रहने देते हैं। हममें से बहुत कम यह अनुभव करते हैं कि मक्खियां पिस्सू, खटमल, झींगर, मच्छर और जुयें हमारे स्वास्थ्य के घातक शत्रु होते हैं। इन घातक कृमियों पर अपने ही घर में युद्ध छेड़ दीजिये। अतिरिक्त रूप से सशक्त कृमिनाशक टार्चब्रांड के छिड़काव द्वारा उन पर आक्रमण कीजिये जो इतना मितव्ययी होते हुए भी इतना प्रभावशाली होता है। आज ही कुछ ले लीजिये।

युक्तप्रांत की सरकार अश्लील विज्ञापनों पर प्रतिबन्ध लगायेगी।
— एक समाचार

सरकार ने नामर्दों को मर्द बनाने का उपाय क्या कुछ और सोच लिया है?

× × +

मि० जिन्ना की हत्या का ३ बार प्रयत्न किया गया। — शेरवानी

फिर भी क्यों साफ २ बचे सो सुनो जिन्ना भस्मासुर का अवतार है, जो जो अपने ही हाथ से ।

× × ×

मैं अफरीदियों का दिल जीतने आया हूं। — लियाकतअली

अफरीदियों का उत्तर भी सुन लो —
दिलदार तुम्हारी जेबों में,
कलदार अगर हों तो लाओ।
जो करमकोर आये हो,
तो भाग यहां से फुर जाओ।
मस्जिदें बन्द किये क्यों,
पहले यह तो बतलाओ।
काश्मीर लूट का लालच दे,
कुछ और अफरीदी ले आओ।

× × +

एक भी मुसलमान के रहते पाकिस्तान और हिन्दुस्तान एक नहीं हो सकते।
—लियाकतअली का भाषण।

कतई नहीं, बल्कि इतना और कह दो —
जहां पर एक है मुसलमान
समझो वहां पर पाकिस्तान।

× × ×

मेरे मां बाप पूर्वी पंजाब में मारे गये। — जफरुल्ला खां

यार लोगों में अगर कोई साहब बे औलाद हों, तो पाकिस्तान के इस अनाथ बच्चे को, क्यों न गोद ले लें।

× × ×

जफरुल्लाखां मिश्रराष्ट्र संघ में ३ घण्टे १० मिनट लगातार बोले और २॥ घण्टे अगले दिन। — एक शीर्षक

खां साहब के फरफर बलने से पुलिस अफसर भी सोचते होंगे कि इसने तो हमारे इकबाली गवाहों के भी कान काट लिये।

× × ×

नहरों का हिस्सा 'दुश्मन' के पास है। — शौकत हयात

आपस में दिल एक होने पर किस रूप से सम्बोधन होगा, शौकत हयात ने शायद वही नमूना बताया है।

× × ×

हिन्दू और सिखों पर अंगुलि उठाना शर्म है। — गजनफरअली

अरे शर्मदारों के गुरुघण्टाल से यह और पूछ लो कि छुरा उठाने में तो कोई हर्ज नहीं।

× × ×

हिन्दू सभा का उद्देश्य हिन्दू राज है। — लाहिड़ी

अरे भई, मुश्किल से तो यार लोगों ने कह सुन कर गांधी जी का व्रत खुलवाया है। फिर शुरू करवाओगे क्या?

× × ×

मिश्रराष्ट्र संघ में रूस और यूक्रेन के प्रतिनिधि गायब रहे।

वह उस समय गिलगित के दरों की दरारों से छिप छिपके यह झांक कर देख रहे थे कि देखें यार लोगों की चालें बन्दी होती है या यूं ही कान झाड़ कर रह जाते हैं।

× × ×

मेरा मिशन पूरा हुआ, अब मैं पाकिस्तान जाऊंगा। — गांधी जी

वहां तो आपके मिशन की अब कोई आवश्यकता ही नहीं। कुछ काम कराची का था, सो वह पिछले दिनों पूरा कर दिया गया और बचा खुचा काम गुजरात स्टेशन पर निपटा दिया गया।

× × ×

मैंने गांधी जी को दिये गये प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किये।
— प्रो० रामसिंह

आपकी जगह, माफ करना, 'हम' लोगों ने कर दिये थे।

× × ×

पृथक राष्ट्र बनने से दिल पृथक् नहीं होने चाहिए। —गांधी जी

बिल्कुल ठीक, दिलों के बदलने से तो राष्ट्र बने नहीं?

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनो! औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इस के ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्तें लिखा लें। मूल्य ३) रु०

दिगम्बर नाथ औषधालय नं० १
पो० कत्तरी सराय (गया)

आज का हिंदी संसार

(पृष्ठ ८ का शेष)

दरख्वास्त—प्रार्थनापत्र, हवालात—दृष्टिबन्धन कोतवाल—कोटपाल, कैद—बन्धन, गिरफ्तारी—उपग्रह कुर्की—आबन्दी, मवरखा—लिखित, सिफारिश—अनुरोध रिश्वत—घूस, रिश्वतखोर—उत्कोचक, रायज—प्रचलित, मालगुजारी—राजस्व,

सैयद महमूद की बहक

बिहार सरकार के विकास विभाग के सचिव डाक्टर सैयद महमूद ने अखिल भारतीय प्रगतिशील उर्दू लेखक संघ में द्वितीय अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा—

'उर्दू' शब्द तुर्की भाषा का है, अत यह शब्द विदेशी है। उर्दू भाषा और शब्द दोनों ही राष्ट्रवादी भावना के प्रतिकूल हैं। ऐसा लोग कहते हैं। परन्तु जहां तक मैं जानता हूं, उर्दू शब्द संस्कृत भाषा का है। हो सकता है कि मैं भूल करता होऊं। इस शब्द का मूल संस्कृत का 'उर्दू' शब्द है जिसका अर्थ 'मिश्रित' होता है। कवि गालिब ने भी इस शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है।

भाषा की समस्या को सुलझाने के लिए यदि 'लेटिन लिपि' अपनायी जाय तो ठीक है। तुर्की ने भी ऐसा ही किया है।

जो हिन्दी शार्टहैण्ड जानते हों

काम हिन्दी में शुरू होने के कारण सरकार को हिन्दी शार्टहैण्ड रिपोर्टरों से बड़ी आवश्यकता है। परन्तु हिन्दी शार्टहैण्ड रिपोर्टर कम मिलते हैं। फिलहाल सरकार सी० आई० डी० के रिपोर्टरों की काम चला रही है, परन्तु वह हिन्दी शार्टहैण्ड जानने वालों को अच्छे वेतन पर रखने को तैयार है।

विवाह के अवसर पर कन्याओं को उपहार देने योग्य

कसीदा काढ़ने की मशीन

यह चार सुइयों की मशीन भांति भांति के काम करती है। इससे कसीदा काढ़ना बड़ा ही आसान है। दिल पसन्द फूल, पत्ती, बेल, बूटे, पशु पक्षियों के चित्र, कालीन, सीन सीनरी इत्यादि आसानी से काढे जा सकते हैं। बड़ी सुन्दर और मजबूत है। मूल्य ४ सुइयों सहित ३) डाक खर्च ॥।) कसीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक मूल्य २) डाक खर्च ॥)।

पता—कमल कम्पनी [A] अलीगढ सिटी।

बालों के सौन्दर्य का रहस्य
शुद्ध पवित्र और उत्तम तेलों में है
निकम्मे और घटिया तेल बालों को निर्बल कर देते हैं और बाल गिरने लगते हैं—दिमाग में कमजोरी आ जाती है।
बालों को नर्म, चमकीला तथा पुष्ट करने के लिए दिमाग को ताजा और बदन में चुस्ती रखने के लिए
जुल्फे कशमीर हेअर आयल का प्रयोग कर।
काश्मीर परफ्युमरी वर्क्स—१२० वर्ष से जनता की सेवा कर रहा है।

काश्मीर परफ्युमरी वर्क्स
कुतबरोड, दिल्ली

समस्त परिवार के मनोरंजन व ज्ञान-वर्द्धन के लिये

मनोरंजन

खरीदिये, पढ़िये, उपहार में दीजिये।
एक प्रति का मूल्य ॥) वार्षिक ५॥)

स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा

ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

मैनेजर—

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

केवल १५ दिन के लिये भारी रिआयत

३॥) में ६ पुस्तकें ?

१. रति-रहस्य—दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने वाली चित्र सयुक्त मूल्य १)
२. खजाना रोजगार—थोड़ी पूंजी से हजारों रुपये पैदा करने के गुप्त भेद मूल्य १)
३. भविष्य फल—लूट, दगा, फसाद, सुख-दुख आगे क्या होना है मूल्य १)
४. बंगाली जादू—वशीकरण जादू के आश्चर्यजनक खेल तमाशे इत्यादि मूल्य ॥)
५. हुस्न पैरिस—सुन्दरता के अद्भुत फोटो विवाहितों के देखने योग्य मूल्य १॥)
६. इन्द्रजाल—जादू के आश्चर्यजनक खेल यंत्र मंत्र मैस्मरेज्म यक्षिणी साधन मू० १)

उपरोक्त ६ पुस्तकें एक साथ लेने से मूल्य ३॥) डाक खर्च ॥)

पता—कमल कंपनी (V) अलीगढ़ सिटी।

सन् ४७ का क्रान्तिकारी साहित्य

'पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा'

पंजाब के उपद्रवों की पृष्ठभूमि पर लाल लोहू से हिन्दी के श्रेष्ठ कहानीकार विष्णु रामचन्द्र तिवारी, देवदत्त अटल, श्रीराम शर्मा 'राम' आदि के द्वारा विभिन्न दृष्टिकोणों से लिखी गईं रोमांचकारी कहानियां पढ़िये। हमारा दावा है कि पुस्तक पढ़ते समय आप की आंखों से आग की चिनगारियां निकलने लगेंगी, और शरीर क्रोध से कांपने लगेगा। पृष्ठ संख्या लगभग २००, सजिल्द पुस्तक का मूल्य २), डाकव्यय रजिस्ट्री ।=)

प्रेस में — नवीन प्रकाशन — प्रेस में

रक्तरंजित सन् १९४७

यह पुस्तक सन् १९४७ के देश के उत्थान-पतन, क्रमिक विकास और परिवर्तनों का सजीव चित्रण है। पृष्ठ संख्या लगभग १५०, मूल्य डाकव्यय सहित १॥।=)

—आज ही लिखिये—

स्वास्थ्य सदन, चावड़ी बाजार (घ) दिल्ली

माहवारी

यदि माहवारी ठीक समय पर न आवे तो मुझे मिलें फौरन ठीक कर दूंगी, यदि मेरे पास न आ सकें तो हमारी दवाई मैन्सोल स्पैशल इस्तेमाल करें कीमत १२) एक्स्ट्रा स्ट्रांग दवाई जो कि एक दम असर करके अन्दर साफ कर देती है। कीमत २५)

बर्थ कण्ट्रोल

हमेशा के लिए पैदाइश औलाद बंद करने की दवाई बर्थकण्ट्रोल कीमत २५) दो साल के लिए १२) इन दवाइयों से माहवारी ठीक तौर पर आती रहती है और सेहत बहुत अच्छी हो जाती है। नवाबों महाराजों के सार्टीफिकेट।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती (आफ लाहौर)

२० ... लेन न्यू देहली, (निकट बंगाली मार्केट कनाट सरकस की ओर)

पहेली नं० ३१ की संकेतमाला

दायें से बायें

१. स्वर्गीय राष्ट्रीय व सामाजिक नेता।
२. समुद्र।
६. जीवित पदार्थों का स्वभाव है।
७. अच्छा लगता है।
८. विशिष्ट मेधावी ही कोई बन पाता है।
१०. गरमी सरदी की एक सीमा।
११ इसके बिना दुनिया में रहना सरल नहीं।
१३ कभी न कभी इससे सभी का वास्ता पड़ता है।
१४. इसमें अन्धकार अधिक होता है।
१५. इसके पास होने से चीज की सुरक्षा रहती है।
१६. इसके अभाव में कई बार बड़ी दिक्कत रहती है।
१७. आज कल जो —— चाहे वही होता है।
१९ अच्छा लगता है।
२१. एक पेड़।
२४. कभी कभी अच्छी लगती है।
२५. कोई चाहे तो पिया जा सकता है।
२६. पूर्ण विजय से पहले —— उचित नहीं।
२७. भगवान सब को दे।

ऊपर से नीचे

१. मजदूर।
२. मारने वाला।
३. दूसरे का / की ही —— देखने में सुख है।
४. अत्यधिक —— पीना हानिकर है।
५. अच्छी —— आनंदित करती है।
९. चमकीली हो तो सुन्दर बन पड़ती है।
१०. आहार को पाकर प्रसन्नता होती है।
१२. इसके सामने सब हार मान जाते हैं।
१७. माता।
१८. प्रारम्भ इसमें दिक्कत होती है।
२०. चाह न हो तो किसी काम का होना कठिन है।
२२. दही ——।
२३. कार्य सिद्धि इससे सरलता से हो जाती है।
२४. वस्तु को और ही रूप दे देता है

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका ढूंढना असम्भव नाम है

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१

ये वर्ग आपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं

१००) इनाम

सिद्ध योगेन्द्र कवच

सिद्ध वशीकरण — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके बस हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का १२), झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री महाशक्ति आश्रम, ६३ सालीमपुर अहरा पो० कदम कुआं (पटना)

१५०) नकद इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके बस हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का १३) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम

गारंटी पत्र साथ भेजा जाता है पता:—

आजाद एण्ड कं० रजिस्टर्ड, (अलीगढ़)

२५०) [सुगमवर्ग पहेली नं० ३१] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार १५०)   न्यूनतम अशुद्धियों पर १००)

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे मैनेजर का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम..........................

पता..........................

ठिकाना.................. उत्तर नं०.....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम..........................

पता..........................

ठिकाना.................. उत्तर नं०.....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम..........................

पता..........................

ठिकाना.................. उत्तर नं०.....

इन तीनों वर्गों को पृथक्‌ न करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो शेष दो पर आड़ी लकीर खींच दें।

इस लाइन पर काटिये

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण इस प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३. उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर १५०) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर १००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक सख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बाट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १६ फरवरी के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ११ फरवरी १९४८ को दिन के २ बजे खोला जा'गा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा। पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ह भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३१, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलिया० आने प पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

★★★

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि ७ फरवरी १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
'जीवन संग्राम'
का
संशोधित नूतन संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ हैं। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।
मूल्य १) डाक व्यय ।-)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय
[श्री रामगोविन्द मिश्र]
महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस
नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद
[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]
मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ||=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]
जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]
अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा
इस पुस्तक में लेखक ने भारत का और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।
मूल्य १॥) रुपया।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान
साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तेल विज्ञान
तिलहन से लेकर तेल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तुलसी
तुलसीवन के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक

अंजीर
अंजीर के फल और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज
अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक
अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १॥) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान
घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

विविध

वृहत्तर भारत
[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]
भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ॥।=)

बहनों के पत्र
[श्री [illegible]चन्द्र विद्यालंकार]
गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व लड़कियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये सर्वोत्तम पुस्तक। मूल्य १)

प्रेमदूती
श्री विराज जी रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ॥)

वैदिक वीर गर्जना
[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]
इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जागृत करने वाले एक सौ से अधिक वेद-मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ॥।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी
[श्री ज्ञानीदास]
ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इस लिये
हिन्दू-संगठन
[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]
पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं
[सम्पादक—श्री जयन्त]
प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

नया आलोक : नई छाया
[श्री विराज]
रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

त्याग का मूल्य
विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी अनुवाद मूल्य ५) डाक व्यय ।≠)

तिरंगा झण्डा
[श्री विराज]
तिरंगे झण्डे की महानता से सम्बद्ध तीन एकांकी नाटकों का संग्रह—स्वाधीन देश के झण्डे लिये बलिदान की पुकार। मूल्य १।) डाक व्यय ।-)

सामाजिक उपन्यास
सरला की भाभी
[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]
इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी प्रतियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की
'जीवन की झांकियां'
प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ।)
द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)
दोनों भाग ब ८८ भाग लेने पर मूल्य ॥)

प्राप्ति स्थान
विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार दिल्ली से छाप कर प्रकाशित किया।

वीर अर्जुन

साप्ताहिक

वर्ष १४] [अङ्क ४४

दिल्ली, सोमवार

१८ माघ सम्वत् २००४

2nd FEBRUARY 1948

सम्पादक—

रामगोपाल विद्यालङ्कार

कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

एक प्रति का मूल्य ≡)

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी
इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका सञ्चालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन
मनोरञ्जन मासिक

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* विजय पुस्तक भण्डार

❀ अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० प्रस्तुत पूंजी २,००,०००

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० "
सन् १९४६	१५ "

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका सञ्चालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
* अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के सञ्चालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

ओलिम्पिक खेलों में भाग लेने वाली लेडी हार्डिंग कालिज की छात्रायें।

ओलिम्पिक टूर्नामेन्ट में गेंद फेंकने में सर्व प्रथम कुमारी कैलाश।

२६ जनवरी को दी गई पार्टी में आमन्त्रित जनों का पं० नेहरू स्वागत कर रहे हैं।

शरणार्थियों से मस्जिदें खाली कराने वाली समिति के सदस्य।

भारतीय प्रधानमन्त्री काग्रेस कार्यकारिणी में सम्मिलित होने आ रहे हैं।

मां या देवी ?

[प्रेमवती पाराशर]

विद्यार्थियों की एक सभा में बोलते हुए एक महाशय ने जब छात्राओं के लिए देवी शब्द का प्रयोग किया तो इस पर आपत्ति प्रकट करते हुए एक महिला छात्र ने कहा था :—

"आप देवी शब्द का प्रयोग कर क्या हमको मन्दिर में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। हमारा स्थान घर में है। देवी शब्द से तो जैसे वस्तुतः आप हमारा गार्हस्थिक स्थान छीन लेना चाहते हैं। हमें अपने उस स्थान से हटकर देवी बनना पसन्द नहीं, इसमें नारी जाति का अपमान है, सम्मान नहीं।"

स्पष्ट है कि समानाधिकार की मांग करने वाली आज के युग की नारी घर के सम्माननीय पद को छोड़ना नहीं चाहती। आज के वातावरण ने उसे ग्रहत्व से घृणा करना तो सिखला दिया, पर उसका इतना प्रभाव नहीं पड़ा कि वह पश्चिम की भांति नारी के हृदय से गार्हस्थिक सम्मान को निकाल फेंके।

'आधुनिक नारी में आज की नारी का विवेचन करती हुई श्रीमती महादेवी वर्मा लिखती हैं :—

"मध्य और नवीन युग के सन्धि-स्थल में नारी ने जब पहले पहल अपनी स्थिति पर असंतोष प्रकट किया, उस समय उसकी अवस्था उस पीड़ित के समान थी जिसकी प्रकट वेदना के अप्रकट कारण का निदान न हो सका हो।... अधिक गूढ़ कारणों की छान बीन करने का उसे अवकाश भी न था, अतः उसने पुरुष से अपनी तुलना करके जो अन्तर पाया, उसी को अपनी दयनीय स्थिति का स्पष्ट कारण समझ लिया।......दो वस्तुओं का अन्तर सदैव ही उनकी श्रेष्ठता और हीनता का द्योतक नहीं होता, यह मनुष्य प्रायः भूल जाता है। नारी ने भी यही चिर परिचित भ्रान्ति अपनाई। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से, शारीरिक विकास के विचार से और सामाजिक जीवन की व्यवस्था से स्त्री और पुरुष में विशेष अन्तर रहा है और भविष्य में भी रहेगा। स्त्री ने स्पष्ट कारणों के अभाव में इस अन्तर को विशेष त्रुटि समझा, केवल यही सत्य नहीं है, वरन् यह भी मानना होगा कि उसने सामाजिक अन्तर का कारण ढूंढने के लिये स्त्रीत्व को क्षत विक्षत कर डाला।"

नारी और पुरुष के अन्तर की इस भ्रान्ति ने नारी जगत् में एक हलचल मचादी। उन्होंने समझा यह अन्तर ही उनके दुःख का कारण है, इसको समूल नष्ट करने पर ही हम अपने उचित स्थान को प्राप्त कर सकेंगी। इसी भावना को सम्मुख रख नारी समाज ने निश्चय किया कि वह अपनी उस दुर्बलता को उखाड़ फेंकेगा, जिसके कारण उसे अबला कहा जाता है, सदैव रक्षणीया समझा जाता है और जो उसको पुरुष का दायित्व स्वीकार करने को बाध्य करता है। पर यहीं पर नारी ने भूल की। रमणी, भार्या और माता के वास्तविक रूप को न समझ, सामाजिक अन्तर को अपने दुःख का कारण जान, नारी ने उसे मिटाने की चेष्टा की। सहनशीलता, त्याग और बलिदान का महत्व उन्होंने नगण्य प्रश्न के पीछे भुला दिया। मातृत्व का वर्णन करती हुई महादेवी वर्मा लिखती हैं:—

"स्त्री अत्यधिक त्याग इसलिए नहीं करती, अत्यधिक सहनशील इसलिए नहीं होती कि पुरुष उसे हीन समझकर इसके लिए बाध्य करता है। यदि हम ध्यान से देखेंगे तो ज्ञात होगा कि उसे यह गुण मातृत्व की पूर्ति के लिए प्रकृति से मिले हैं।"

अब प्रश्न आता है नारी की वांछनीय स्थिति का। आधुनिक नारी ने अपने और पुरुष के बीच के अन्तर को दुःख का दावानल समझ, योरोप की स्वच्छन्द तथा तितली की भांति जीवन व्यतीत करने वाली नारी का अनुकरण करने में अपने को लाभान्वित समझा, पर उसके अंतः में प्रविष्ट होकर जब उसने उसे सार-हीन पाया, जब उसमें महत्व के स्थान पर शून्य दिखाई दिया, तब वह चकित हुई। अपनी भूल पर उसे क्रोध आया और पुनः उसने पुरुष को ही दोषी ठहराया। उसने सोचा हो न हो उसमें पुरुष की ही कुछ चाल है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि तितली जीवन नारी को पसन्द नहीं। स्वेच्छा चारिता एवं स्वच्छन्दता की स्थिति नारी को वांछनीय नहीं।

दूसरी स्थिति है मां की। मातृत्व को भुला देना नारी के लिये उतना ही दुर्लभ है जितना अपने स्वाभाविक गुणों दया और कोमलता को भूल जाना। अपवाद की बात जाने दीजिये, उन नारियों में से शत प्रतिशत नारियां, जो समानाधिकार की मांग पर दृढ़ पैर जमाये हुए, पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम करती हैं, सभा—सोसायटी में भाग लेती हैं, क्लब में किसी से पीछे नहीं, भी, जब उनके सामने घर छोड़ने का प्रश्न आता है, तो वे स्तम्भित रह जाती हैं। घर छोड़ देना उन्हें किसी भी दशा में सह्य नहीं। क्यों ? क्या कभी इस पर विचार किया है। बात बिल्कुल स्पष्ट सी है, सब कुछ होने पर भी वह घर छोड़ना नहीं चाहतीं, घर छोड़ने का मतलब है मातृ पद को छोड़ देना, और मातृत्व को छोड़ना उनके लिए अवनति का कारण होगा।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि मा की स्थिति ही नारी को वाञ्छनीय है, तितली की नहीं। देवी बनना भी नारी को पसन्द नहीं, वह इस में अपना अपमान समझती है, वह समझती है कि उसको आत्मिक वातावरण से परे धकेला जारहा है, जब कि वह सदा से समीपता की आकांक्षिणी रही है। यह देवी बनकर एक स्थान पर प्रतिष्ठित हो सम्मानित होने के स्थान पर वह गृह स्वामिनी बन प्रेम से सब पर अधिकार जमा लेना ही श्रेयस्कर समझती है, यही उसे प्रिय भी है।

वस्तुतः देवी शब्द नारी को दिखावटी शिष्टाचार में बांध आत्मिकता से दूर लेजाता है, जहा कि मातृपद उसे आत्मीयता पर सर्वाधिकार दे देता है। कितना अन्तर है दोनो में। भारत में यदि हम छोटी से छोटी बालिका से भी 'मा' कह दें तो उसे रोष न होगा क्योंकि वह समझती है कि मातृत्व उसका स्वाभाविक गुण है। बीसवीं शताब्दी की नारी भी इस को पहिचान गई है और जैसा कि सर्व प्रथम उद्धरण से प्रकट है कि 'उसे मा बनना पसन्द है देवी नहीं' आज के नारी समाज की आन्तरिक ध्वनि है जो कभी २ उसके होठों पर भी आ जाती है।

मेरा जीवन

संगीत-मधुर मेरा जीवन।
मैं आशा के गीत सुनाता,
कांटे चुभते मैं मुसकाता।
मैं कुसुम कुसुम पर रख जाता,
अपनी मधु मुसकानें गिन गिन।
संगीत-मधुर मेरा जीवन।

मेरी मजरियों में कू कू,
मेरे मधु कुंजों में केका,
है मलय समीरण की रख रख
से रक्षित सखे। मेरा उपवन।
संगीत-मधुर मेरा जीवन।

जो हृदय कमल मुरझा जाते,
वे फिर ऊषा में खिल जाते,
जब सहसा पड़ती है उन पर
मेरे दृग् रवि की एक किरण,
संगीत-मधुर मेरा जीवन।

आओ मैं तुमको आशा दूं,
आओ मै तुम्हें दिखाता हूं।
मेरे दृग में दोनों रहते
कुछ गीले, कुछ सूखे जलकण।
संगीत-मधुर मेरा जीवन।

बचपन कहता बीत चुका मैं,
यौवन कहता मैं ना आया।
मैं सोच रहा हूं क्या मुझ पर
यह बचपन है या यह यौवन।
संगीत मधुर मेरा जीवन।

प्रो० चन्द्रभानु "अकिन्चन" एम० ए०

मरना चाहते हो या जीना ?
यदि जीना चाहते हो तो
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

सन्शोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषी के मनन और संग्रह योग्य है। मूल्य १) डाक व्यय ।–)

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १८ माघ सम्वत् २००४

अनभ्र वज्रपात

पत्र मशीन पर जाते जाते भारतवर्ष के राष्ट्रपितामह और मानवता के विशुद्ध प्रतीक म० गांधी पर किसी आततायी द्वारा ४ बार गोली चलाये जाने और उनके देहावसान का कल्पनातीत समाचार प्राप्त हुआ है। यह समाचार इतना हृदयवेधक है कि इस जघन्य अपराध की कठोर निन्दा के लिए भी हमारे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं। जिस पापी ने यह काण्ड किया है, उसने भारत की और उसके साथ समस्त संसार की जितनी क्षति की है, उसका उदाहरण विश्व के इतिहास में नहीं मिलेगा। भगवान् जाने, भारत के भविष्य में क्या लिखा है?

कल्पनातीत सफलता

किसी भी देश के स्वतन्त्र होने पर उसे कठोर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भारत के सामने हमारा पुराना शत्रु इंग्लैण्ड मित्रता का वातावरण रखकर हमारे सामने अनेकानेक समस्याएं पेश कर गया है। रियासतों की समस्या ऐसी ही थी है। जनरल सेन ने जब चीन में निरंकुश मंचू राजवंश की समाप्ति करके प्रजातन्त्र की स्थापना की थी, तब भी वहां सैकिड़ों युद्ध-सामन्तों या सैनिक अधिकारियों ने अपने २ स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये थे। उस समय च्यांग-काईशेक ने कई वर्षों तक निरंतर युद्ध करके समस्त चीन को एक झण्डे तले लाने का कठोर परिश्रम किया था। जर्मनी के महान राजनीतिज्ञ प्रिंस बिस्मार्क को भी जर्मनी की ३०० रियासतों को समाप्त कर समृद्ध और बलवान राष्ट्र का बलवान अंग बनाने का परिश्रम करना पड़ा था। दोनों राजनीतिज्ञ अपने २ प्रयत्नों में सफल हुए थे। यह भारत का सौभाग्य है कि उसको सरदार पटेल के रूप में एक ऐसा नेता प्राप्त है, जो किसी तरह च्यांगकाईशेक और प्रिंस बिस्मार्क से कम सफल नहीं हुआ।

भारतवर्ष में करीब छः सौ रियासतें थीं, जिनके राजा पिछले डेढ़ सौ साल से अंग्रेजी दासता के चंगुल में रह कर अपनी प्रजा व देश के प्रति अपने कर्तव्य की स्थिति में समझने लगे थे। पटेल ने अपनी राजनीतिज्ञता, दूरदर्शिता और व्यवहारकुशलता के कारण इस समस्या को प्रायः हल कर लिया है। पहले रक्षा, यातायात और विदेशी मामले की दृष्टि से सब रियासतों को एक सूत्र में पिरो दिया गया। इस के बाद सरकार पटेल द्वारा दूसरा प्रबल शुरू हुआ। इस नये दौर में उड़ीसा, बुन्देलखण्ड, काठियावाड़ में बहुतसी रियासतें परस्पर संगठित हो गई। उड़ीसा की बहुतसी रियासतें मिलकर उड़ीसा प्रान्त में सम्मिलित हो गई हैं। इसी तरह छत्तीसगढ़ और बुन्देलखण्ड की रियासतें भी अपने पड़ोसी प्रान्तों में विलीन हो रही हैं अथवा स्वयं एक संगठित प्रान्त के रूप में परिवर्तित हो रही हैं। लेकिन इससे भी शानदार सफलता काठियावाड़ में सरदार पटेल ने प्राप्त की है। यहां ४४६ रियासतें हैं और इनमें से भी कई रियासतों के क्षेत्र अलग अलग टुकड़ों में बटे हुए हैं। इन सब को एक करना बहुत कठिन था। लेकिन सरदार पटेल की कार्यक्षमता तथा व्यवहार कुशलता ने इतने थोड़े समय में अद्भुत सफलता प्राप्त कर ली है।

राजस्थान व मालवा में भी रियासतें एक रूप से संगठित हो रही हैं। ६ मास पूर्व देश के इस कायापलट की कल्पना किसी ने भी न की थी। लोग श्री मैनन को कहते थे कि वे प्रवेश पत्र और यथा-पूर्व समझौते के मसविदे बनाने में व्यर्थ समय गवा रहे हैं, लेकिन आज भारत में हैदराबाद को छोड़ कर और सब रियासतें बाकायदा संघ में सम्मिलित हो गई हैं और यह आशा की जा रही है कि वह भी कुछ समय तक भारतीय संघ में सम्मिलित हो जायगा और इस तरह भारतवर्ष की एक बहुत बड़ी समस्या, जो ब्रिटेन की देन थी, हल होने जारही है। इस अद्भुत कल्पनातीत सफलता के लिये समस्त राष्ट्र सरदार पटेल का अभिनन्दन करता है।

लेकिन काश्मीर?

लेकिन यह पङ्क्तियां लिखते समय हम काश्मीर को नहीं भूल रहे। वहां की समस्या सुलझने की बजाय लगातार उलझती जा रही है। मित्रराष्ट्र संघ की सैक्योरिटी कौंसिल में भारत ने न्याययुक्त प्रस्ताव को ठुकराने की कोशिश की जा रही है। पाठक यह समाचार अन्यत्र पढ़ेंगे। उस प्रश्न के विस्तार में न जा कर भी हम यह अवश्य कहना चाहते हैं कि आदर्शवाद और व्यावहारिकता दोनों एक वस्तु नहीं हैं। भारत सरकार के नेता न्याय, जनमत और विश्वबन्धुत्व आदि के आदर्शों में रहते हुए यह भूल जाते हैं कि संसार आदर्शवाद से नहीं चल रहा। सुरक्षासमिति के सदस्य काश्मीर पर भारत के निर्विवाद स्वामित्व को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। यह देखकर भी क्या हम न्यायाभिनय के इस रंगमंच पर जहांकि हमारा सदा विरोधी ब्रिटेन व उसका अभिन्न मित्र अमेरिका प्रमुख खिलाड़ी हैं, विश्वास करें यह कैसे संभव है। यही स्थिति पाकिस्तान के सम्बन्ध में है। कोरे आदर्शवाद से हम सफलता प्राप्त कर सकेंगे, इसमें हमें पूर्ण संदेह है। इसलिए हम एक बार भारत सरकार से फिर अनुरोध करना चाहते हैं कि आज की राजनीति में आदर्शवाद नहीं, व्यवहारिकता और दृढ़ता का स्थान ऊंचा है और उसकी हमें उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

विषम परिस्थिति

पिछले कुछ दिनों से हमारे राष्ट्रीय नेता देश में औद्योगिक शान्ति बनाये रखने और माल की पैदावार लगातार बढ़ाने का आन्दोलन लगातार कर रहे हैं, लेकिन इस दिशा में, यह भी सच है कि पं० नेहरू और सरदार पटेल को अभी तक बहुत कम सफलता प्राप्त हुई है। इसका कारण हमारी सम्मति में यह है कि मजदूर नेता चाहे वे सोशलिस्ट हों या कम्यूनिस्ट, किसी प्रकार का सहयोग देने को तैयार नहीं हैं। शासन की जिम्मेवारी आज उन पर नहीं है और इसी लिए वे जानते हैं कि वे जो कुछ चाहें कर सकते हैं, किसी तरह की मर्यादा का पालन करने की उन्हें आवश्यकता नहीं। यदि शासन और देशहित के लिए जिम्मेवार अधिकारियों को पैदावार बढ़ानी है, तो उचित या अनुचित शर्तों पर, जो मजदूर नेता पेश करें, शासकों को समझौता करना ही पड़ेगा। आज अपनी राजनैतिक शक्ति बढ़ाने की भावना इस के मूल में काम कर रही है। मजदूरों को भड़काने में जो दल जितना ज्यादा सफलता प्राप्त करेगा, उतना ही वह दल प्रभावशाली होगा। इसी भावना से आज कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट नेता मजदूरों को देशहित के विरुद्ध भड़काने में आपस में प्रतिस्पर्धा करने में लगे हैं। यह स्थिति सचमुच बहुत विषम है। इसका प्रतीकार कठिन है। विवेक की अपेक्षा उत्साह साधारण मनुष्य को ज्यादा अपील करता है। सोशलिस्ट नेताओं की देशभक्ति में अविश्वास करने की इच्छा नहीं होती, लेकिन मजदूरों पर अपना नेतृत्व रखने के लिये उन्हें कम्यूनिस्टों से संघर्ष करना पड़ रहा है और उसके लिये वे दूसरा मार्ग नहीं देखते। इस नेतृत्व प्रतिस्पर्धा का परिणाम देश को भुगतना पड़ रहा है। जब उसे बहुत अधिक उत्पत्ति की जरूरत है, देश में माल कम पैदा हो रहा है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के नेताओं की अपीलें आज फल नहीं ला रहीं। गांधी और नेहरू की जय के नारे लगाने वाले मजदूर स्वार्थवश उनकी बात मानने से इन्कार कर रहे हैं। इस स्थिति का आखिर इलाज क्या है, यह एक गम्भीर प्रश्न है, जो साम्प्रदायिक प्रश्न से किसी तरह कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए एक ओर हम सरकार से यह अनुरोध करना चाहते हैं कि मजदूरों के न्यूनतम वेतन, बोनस, महगाई तथा कार्यसमय और परिस्थितियों के सम्बन्ध में अपने अन्तिम निश्चयों की घोषणा जहां बहुत शीघ्र आवश्यक है, वहां देश के जनमत को "राष्ट्र सबसे ऊपर है" इस आंदोलन से अनुप्राणित कर देना भी बहुत जरूरी है। केवल स्वातन्त्र्यप्राप्ति के लिए नहीं देश की समृद्धि के लिए भी व्यक्ति के ऊपर राष्ट्र के हित को तरजीह देने की भावना सदा जीवित रहनी चाहिए।

मुद्रा की कीमत

पिछले दिनों फ्रांस व चीन की सरकारों ने अपने सिक्के की कीमत बहुत कम कर दी है। इसका उद्देश्य अपने देश के आयात व्यापार को कम करके निर्यात को उत्साह देना है। सिक्के की कीमत कम करने का अर्थ यह है कि अपने देश की चीजें विदेशों में जाकर सस्ती पड़ें और विदेशों की चीजें अपने देश में आकर महंगी पड़ें। कल्पना करें कि पहले फ्रांस के ग्राहक को यदि दस स्टर्लिंग की ब्रिटिश वस्तु के बदले में १००० फ्रांक देने पड़ते थे, तो अब उसे फ्रांक की कीमत कम हो जाने के कारण १८०० फ्रांक देने पड़ेंगे। इसका स्वाभाविक यह होगा। कि वह ब्रिटिश वस्तु लेने के बजाय अपने देश की वस्तु अधिक पसंद करेगा। इसके विपरीत फ्रांस की १००० फ्रांक की शराब के बदले यदि ब्रिटेन १० स्टर्लिंग देता था, तो अब उसे बहुत कम कीमत चुकानी पड़ेगी। इसका परिणाम यह होगा कि ब्रिटेन फ्रांस से ज्यादा माल मंगायेगा। फलतः ब्रिटेन पर फ्रांक की कीमत कम होने का परिणाम बहुत बुरा पड़ेगा, क्योंकि उसका निर्यात व्यापार कम हो जायगा। चीन ने भी इसी उद्देश्य से मुद्रा की कीमत कम कर ली है। कोई भी देश आयात की अपेक्षा निर्यात व्यापार को बढ़ाने के लिए सदा उत्सुक रहता है। इस लिए यह असंभव नहीं है कि ब्रिटेन या अमरीका अपने देश की मुद्रा की कीमत कम कर देने पर विवश हों। उस अवस्था में भारत पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ेगा। भारत में विदेशी माल सस्ता बिकने लगेगा और नये २ खुलने वाले उद्योगों को क्षति पहुंचेगी। अगर कभी ऐसी स्थिति हो तो भारत सरकार को इसका प्रतिकार करने के लिए एक दम तैयार रहना चाहिए। हम वे दिन भूले नहीं हैं जब कि जापानी सिक्के येन की कीमत कम होने के कारण भारतीय वस्त्र व्यवसाय को भारी स्पर्धा का मुकाबला करना पड़ा था।

हैदराबाद में आन्दोलन

निजाम हैदराबाद से यथास्थित समझौता हो जाने के परिणाम स्वरूप स्टेट कांग्रेस का पूर्ण उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के लिये किया हुआ जो आन्दोलन शिथिल हो रहा था वह स्टेट कांग्रेस के अध्यक्ष श्री स्वामी रामानन्द तीर्थ की गिरफ्तारी से पुनः तीव्र हो उठा है। स्वामी जी के साथ श्री काशीनाथ वैद्य तथा अन्य आठ कार्यकर्ता भी गिरफ्तार हुए है। इस गिरफ्तारी के विरोध में समग्र व्यापारिक केन्द्र, दूकानें तथा स्कूल कालिज बन्द रहे। छात्रों ने इसके विरुद्ध विराट् प्रदर्शन भी किया जिस पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया। चार छात्र सख्त घायल हो गये। अपनी गिरफ्तारी से पहले स्वामी रामानन्द तीर्थ ने समस्त जनता को निजाम के शासनतन्त्र के साथ असहयोग करने की सलाह दी।

स्टेट कांग्रेस के एक कार्यकर्ता श्री आर० बी० जोशी ने कांग्रेस बन्दियों के साथ दुर्व्यवहार किये जाने के विरोध में आमरण अनशन शुरू कर दिया है। अनशन करते हुए उन्हें बारह दिन हो गये हैं और इस समय उनकी हालत चिन्ताजनक है।

पत्रों द्वारा दी गई इस रिपोर्ट का निजाम सरकार ने खण्डन किया है कि निजाम सरकार छोटी छोटी रियासतों को बम्बई प्रान्त में न मिलने की धमकी दे रही है।

इस मास के अन्त तक निजाम सरकार और भारतीय रियासती सचिवालय के प्रतिनिधियों के मध्य हैदराबाद के मामलों पर गम्भीर वार्त्ता होने की आशा है। सीमा पर होने वाले आक्रमण इस वार्त्ता के मुख्य विषय होंगे।

मास के अन्त तक हैदराबाद के प्रधान मन्त्री, उपप्रधान मन्त्री, विदेश मन्त्री तथा रेल मन्त्री दिल्ली पहुंच जायेंगे।

काश्मीर के प्रश्न की प्रगति

संयुक्तराष्ट्र संघ की सुरक्षा कौंसिल में पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के प्रतिनिधियों में पारस्परिक समझौता पूर्ण नहीं हुआ है। दोनों पक्ष तीन बातों पर सहमत हैं। [१] जम्मू व काश्मीर के भविष्य का निर्णय जनमतसंग्रह से किया जावे, [२] पूर्ण निष्पक्षता से जनमतसंग्रह हो, [३] जनमतसंग्रह अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण में हो।

परन्तु भारतीय संघ के शिष्टमण्डल ने विचार के लिये निम्न शर्तें रखी हैं —

[१] युद्ध बन्द हो। [२] समस्त कबायली काश्मीर की सीमा से हटा लिये जायें तथा कानून व व्यवस्था के लिये भारतीय सेना शान्ति स्थापना तक वहां रहे। [३] शान्ति कायम होने पर महाराजा वर्तमान मन्त्रियों की एक कौंसिल को सौंप देंगे, जिसमें प्रधान मन्त्री श्री शेख अब्दुल्ला होंगे। [४] संयुक्तराष्ट्रीय कमीशन काश्मीर में एक परामर्शदात्री समिति के रूप में कार्य करे। [५] अस्थायी सरकार आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर राष्ट्रीय असेम्बली का चुनाव करायेगी। राष्ट्रीय असेम्बली एक नई राष्ट्रीय सरकार कायम करेगी जो उस समय मित्रराष्ट्रीय नियन्त्रण में जनमतसंग्रह करेगी।

भारत का मत है कि युद्ध समाप्ति के पश्चात् कम से कम ६ मास साधारण स्थिति स्थापित करने में लग जायेंगे।

जनमत संग्रह सुरक्षा कौंसिल के अधिकार में और उसी के उत्तरदायित्व पर लिया जाये, तदर्थ विशेष स्थिति कायम करने के लिए पाकिस्तान ने ये सुझाव रखे हैं —

[१] संयुक्त राष्ट्रीय कमीशन काश्मीर व जम्मू में एक निष्पक्ष अन्तःकालीन सरकार की स्थापना करे। [२] रियासत की सीमाओं से भारतीय सेनाओं तथा कबायलियों दोनों को वापिस किया जाये। [३] जो व्यक्ति अपने घर छोड़ने के लिए विवश हो गये हों, उन्हें पुनः बुलाया जावे। [४] जनमतसंग्रह बिना किसी बाहरी दबाव के लिया जावे।

इस प्रकार पाकिस्तान के प्रतिनिधि पहले भारतीय सेनाओं को काश्मीर की सीमा से निकलवा कर जनमत संग्रह करवाना चाहते हैं जबकि भारतीय शिष्टमण्डल का जोर इस बात पर है कि पहले कबायलियों को काश्मीर की सीमा से निकाला जावे और व्यवस्था स्थापना के लिए भारतीय सेना की उपस्थिति में जनमत लिया जावे।

रियासत रामदुर्ग

रियासत रामदुर्ग के शासक ने दक्षिणी रियासतों के प्रादेशिक कमिश्नर से प्रार्थना की है कि मेरी रियासत को बम्बई प्रान्त में शामिल कर लिया जावे। प्रादेशिक कमिश्नर ने बेलगाम के जिला अधिकारियों को रियासत का शासन संभालने का आदेश दे दिया है।

दक्षिणी रियासतें बम्बई में शामिल हों

दक्षिणी रियासत - संघ की विधान परिषद् ने एक प्रस्ताव पास करके दक्षिणी रियासत - संघ की तमाम रियासतों को सलाह दी है कि वे बम्बई प्रान्त में शामिल हो जावें। प्रजामण्डलों की कार्यसमितियों ने और अन्य प्रजा की संस्थाओं ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। एक अन्य प्रस्ताव के द्वारा परिषद् ने प्रत्येक रियासत के लिए एक एक समिति नियुक्त की जो इस बात की देखभाल करेगी कि उसकी रियासत के हिस्से का रुपया उसी रियासत के लिए व्यय हो।

बिहार में भी हिन्दी का राज्य

बिहार सरकार अब तक हिन्दी को राजभाषा बनाने में टालमटोल की नीति अपना रही थी और इससे जनता में असन्तोष बढ़ता जा रहा था। परन्तु अब बिहार के मन्त्रिमण्डल ने निश्चय किया है कि बिहार की सरकारी भाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी होगी। क्या अब भी विधान परिषद् के सदस्य हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने के पक्ष में अपना मत नहीं देंगे ?

बहावलपुर में एक लाख की हत्या

भारतीय उपनिवेश की पार्लमेण्ट में श्री आर० के० सिधवा के प्रश्न का उत्तर देते हुए शरणार्थी मन्त्री श्री क्षितीशचन्द्र नियोगी ने बताया कि इस समय बहावलपुर रियासत में ७० हजार हिन्दू व सिख हैं और सरकार उन्हें सुरक्षित रूप से निकालने का प्रयत्न कर रही है। रियासत से १॥ लाख से अधिक हिन्दू व सिख भारत आ चुके हैं, किन्तु एक लाख का कुछ पता नहीं है। सम्भवतः वे कत्ल कर दिये गये अथवा उन्हें मुसलमान बना लिया गया है।

— नाभा, फरीद कोट, कपूरथला और मलेरकोटला पूर्वी पंजाब की ये चार रियासतें एक यूनियन बनाने का विचार कर रही हैं।

— मध्यभारत के नरेशों व प्रधान मन्त्रियों का एक सम्मेलन ६ फरवरी को इन्दौर में हो रहा है जिसमें मालवा प्रान्त की निर्माण योजना पर विचार किया जायेगा।

— टिहरी रियासत में अन्तःकालिक सरकार बन गई है। मन्त्रिमण्डल में १ संयुक्त प्रान्त के प्रतिनिधि के अतिरिक्त ४ लोकप्रिय मन्त्री होंगे।

— ईराकी कौंसिल के भूतपूर्व अध्यक्ष सैयद मुहम्मद असकाकर ने नया मन्त्रिमण्डल बना लिया है। भूतपूर्व प्रधान मन्त्री अरशद अल उमरी विमान से अज्ञात स्थान को रवाना हो गये।

— कांग्रेस के अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद श्री लंका के स्वाधीनता - समारोह में भाग लेने के लिए नई दिल्ली से रवाना हो गये हैं।

— पश्चिमी बंगाल की सरकार, पूर्वी बंगाल की सीमा से मिली हुई अपनी ५०० मील की सीमा की रक्षा के लिए राष्ट्रीय सेना का निर्माण करेगी।

— काश्मीर की संकटकालिक सरकार के नेता श्री बख्शी गुलाम मोहम्मद ने भारत सरकार से और अधिक शस्त्रास्त्रों की मांग की है।

— मद्रास प्रान्त में पूर्ण शराब बन्दी किये जाने के परिणाम स्वरूप प्रांतीय सरकार को १७ करोड़ रुपये की हानि होगी।

— भारतीय सरकार ने भाखरा और नागल बांध योजनाओं की पूर्ति के लिए ७० करोड़ रुपया देने का निश्चय किया है। एक लाख व्यक्तियों के निवास के लिए भारत सरकार २॥ करोड़ रुपया और देगी। पूर्वी पंजाब की राजधानी का भी एक सप्ताह के अन्दर निश्चय हो जायेगा।

— उत्तर पश्चिमी सीमाप्रांत के भूतपूर्व अर्थ मन्त्री श्री मेहरचन्द खन्ना को सेशन जज ने बरी कर दिया है।

— पाकिस्तान ने अपने डोमीनियन के सब भागों में रेडियो का विस्तार करने के लिए अमेरिका से ब्राडकास्टिंग का सामान खरीदा है। ५ स्टेशन और खोले जायेंगे।

— ब्रिटिश सरकार जिन सात क्रूजरों को बेच रही है उनमें से कुछ क्रूजर भारत खरीद रहा है। उनकी कीमत पौण्ड पावने में शामिल कर दी जायेगी।

— भारत और आस्ट्रेलिया के मध्य चतुर्थ टेस्ट मैच में आस्ट्रेलिया १ इनिंग और १६ रनों से जीत गया।

— पूर्ण उत्तरदायी सरकार स्थापित करने के प्रश्न पर बड़ौदा - सरकार और प्रजामण्डल में समझौता हो गया है।

— भारतीय विधान का मसविदा फर्वरी के मध्य तक तय्यार हो जायेगा और उसे मुद्रित रूप में सदस्यों के पास भेजा जायेगा।

— अलवर में दो वर्ष में उत्तरदायी शासन स्थापित हो जायगा। प्रजा के विभिन्न वर्गों में से २५ प्रतिनिधि परामर्श देने के लिये चुने गये हैं।

— काठियावाड़ की ३०० से अधिक रियासतों ने सौराष्ट्र नाम से सब रियासतों का एक संयुक्तराज्य स्थापित करने की योजना को स्वीकार कर लिया है।

तीसरा परमाणु बम कहां गिरेगा?

[श्री जगदीशचन्द्र अरोड़ा]

★

हालांकि मुझे अपना पिछला लेख लिखे केवल १५ दिन ही हुए हैं परन्तु ईसाई कलेण्डर के अनुसार—जिसके हम भी आदी हो चुके हैं—एक वर्ष हो गया है। यह सन् ४७ नहीं, सन् ४८ है। अवश्य ही हम नाम की इतनी अधिक चिन्ता नहीं करते, यदि नाम के साथ साथ राजनीतिक रंगमंच पर इतने महत्वपूर्ण परिवर्तन न हो जाते कि हमें सचमुच इसे नया वर्ष समझने पर विवश होना पड़ता। बात यही है। सन् '४७ के अन्तिम सप्ताह और सन् ४८ के प्रथम सप्ताह में ही संसार के दो अलग अलग देशों में दो ऐसी साधारण—परन्तु महत्वपूर्ण—घटनाएं घटीं कि आज संयुक्तराज्य के प्रसिद्ध पत्रकार वाल्टर विंशल को रेडियो परउपर्युक्त शीर्षक का उत्तर देने पर विवश होना पड़ा। दोनों घटनाओं का आपस में बड़ा गहरा सम्बन्ध है।

मंगलवार ६ जनवरी को संयुक्तराज्य अमेरिका मोरहेड् सिटी (नार्द कैरोलीना) से प्रायः २००० मैरीन (समुद्री बेड़े) सैनिक भूमध्यसागरस्थित अमेरिकन बेड़े को और अधिक मजबूत बनाने के लिये रवाना हो गये। जलसेना विभाग ने वक्तव्य निकाल कर कहा है कि ये सैनिक अपने साधारण कार्य से ही भूमध्यसागर भेजे जा रहे हैं और इसका कोई राजनीतिक महत्व नहीं है। जल सेना के ये २००० सिपाही संयुक्तराज्य के सबसे अच्छे जलसैनिकों में से हैं तथा अपने "एमफीबस" (छोटी छोटी किश्तियों पर चढ़ कर किसी देश के समुद्री किनारे पर उतर कर धावा करने की कला) युद्ध में प्रवीण हैं तथा इन्होंने ही प्रशांत महासागर में गुवाम, मिडवे, ओकिनावा आदि टापुओं के युद्ध में सफल चढ़ाई की थी।

भूमध्यसागर में इस समय संयुक्तराज्य अमेरिका का एक जबरदस्त बेड़ा चक्कर लगा रहा है। चार विशाल युद्धपोत हैं, जिनमें से एक "मिडवे" संयुक्तराज्य का सबसे बड़ा युद्धपोत है इस पर प्रायः १०० हवाई जहाज भी चढ़ उतर सकते हैं। "मिडवे" इस समय इटली के बन्दरगाह नेपल्स में लंगर डाले पड़ा है। इसके अतिरिक्त भूमध्यसागर में इस समय संयुक्तराज्य के १० विध्वंसक जहाज भी मौजूद हैं, जो यूनान तथा इटली के विभिन्न बन्दरगाहों में खड़े हैं। इसी बेड़े में जलसेना विभाग के लड़ाकू सैनिक अब शामिल होने जा रहे हैं।

अमेरिका से मैरीन सैनिकों का भेजा जाना १५ दिन पहले यूनान में घटी एक घटना से सम्बन्धित है। २४ दिसम्बर १९४७ को यूनान की उत्तरी पहाड़ियों में से कहीं से क्रान्तिकारी गुरिल्ला सैनिकों के नायक मारकोस वाफियादेस ने "स्वतन्त्र प्रजातन्त्र यूनान सरकार" की स्थापना की घोषणा कर दी।

अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार यदि क्रान्तिकारी देश के किसी भाग पर अधिकार कर लें, उस पर कब्जा रखें, और सरकार की स्थापना करें, तथा उस सरकार को कुछ अन्य स्वतंत्र देश की सरकारें अधिकृत रूप से स्वीकृत कर लें तो इस क्रान्तिकारी सरकार को "स्वतंत्र" अस्तित्व प्राप्त हो जाता है। पाठकों को स्मरण होगा कि "सहगल ढिल्लन शाहनवाज" मुकदमे में स्वर्गीय भूलाभाई देसाई ने भी उपर्युक्त अन्तर्राष्ट्रीय नियम का हवाला दिया था।

यूनान पर किसका अधिकार

यूनान के उत्तरी भाग में पिछले दो वर्षों से कम्यूनिस्ट क्रांतिकारियों का कब्जा है और अब उन्होंने "स्वतन्त्र सरकार" की स्थापना कर दी है। यदि इस सरकार को युगोस्लाविया, अलबानिया, बलगारिया तथा रूमानिया की कम्यूनिस्ट सरकारें भी स्वीकृत कर लें तो तथाकथित "स्वतन्त्र यूनान सरकार" को अंतर्राष्ट्रीय अस्तित्व प्राप्त हो जायगा। अन्तर्राष्ट्रीय अस्तित्व प्राप्त होने पर उपर्युक्त सरकार अधिकृत रूप से बालकन देशों से यूनान की "प्रतिक्रियावादी फासिस्ट" सरकार के विरुद्ध लड़ने के लिए सहायता याचना कर सकती है, उसी प्रकार जिस प्रकार "फासिस्ट" सरकार को संयुक्त राज्य अमेरिका से सहायता मिलती है। संयुक्तराष्ट्रसंघ—विधान की ५१ वीं धारा के अनुसार भी उपर्युक्त सहायता मांगने तथा सहायता प्रदान करने का अधिकार दिया गया है। यही वह समाचार जिसके चलते संयुक्तराज्य अमेरिका को मैरीन सैनिक भेजने पर विवश होना पड़ा।

यूनान की आंतरिक अवस्था इतनी बिगड़ चुकी है कि वहां के प्रश्न को लेकर ही किसी भी क्षण अमेरिका और रूस में भिड़न्त हो सकती है। अमेरिका में इस समय इस बात की अफवाह है कि अगले ६० दिनों में ही युद्ध प्रारम्भ हो जाएगा और वाल्टर विंशल ने रेडियो पर कहा कि शीघ्र ही परमाणु बम यूनान की नई "स्वतन्त्र सरकार" के अड्डे पर गिरने वाला है।

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि पश्चिमी सभ्यता के जन्मदाता यूनान में ही पश्चिमी सभ्यता की अन्तिम चिता शीघ्र ही जलने वाली है। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व यूनान में एक प्रकार की फासिस्ट सरकार थी जो इटली की भांति ही एक राजा के आधीन कार्य करती थी। जिस प्रकार हिटलर, मुसोलिनी और फ्रांको को शासनारूढ़ करने में एक प्रकार अप्रत्यक्ष रूप में एंग्लो अमेरिकन नीति ही जिम्मेदार है, उसी प्रकार यूनान के आंतरिक शासन में सदा से ही ब्रिटेन का जबरदस्त हाथ रहा है। युद्ध में जब विवश होकर ब्रिटेन को जर्मनी से युद्ध करना ही पड़ा तो उसने यूनान में भी अपनी सेना भेजी। इसी को बहाना बना कर जर्मनी ने यूनान पर आक्रमण कर दिया। देश के रक्षक राजा और सरकार देश को जर्मनों की दया पर छोड़ कर ब्रिटेन भाग गये। यही राजा जार्ज आगे भी एक बार देश से निकाले जा चुके थे क्योंकि यूनानी जनता—जहां कि प्रजातन्त्रवाद का जन्म हुआ—सदा से राजतन्त्र की विरोधी रही है। ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चर्चिल ने भगोड़े राजा को आश्वासन दिलाया कि युद्धोपरान्त उन्हें पुनः राजगद्दी पर बिठलाया जायगा। राजा और सरकार तो भाग गये, परन्तु यूनानी जनता गुरिल्ला बन कर जर्मनों से लड़ती रही और इन्हीं गुरिल्ला सैनिकों की सहायता से १९४८ में ब्रिटिश सेना पुनः यूनान में पदार्पण कर सकी। इसी "स्वतन्त्र यूनान" सरकार के प्रधानमंत्री जनरल मारकोस वाफियादेस ने ही सैलोनिका के प्रमुख बन्दरगाह को जर्मनों से आजाद करवाया था और ब्रिटिश सेना को बड़ी सहायता पहुंचाई थी।

जर्मनों से मुक्ति पाकर जब कि यूनानी खुशी मना रहे

को लिए यूनान पहुंचे। जनता राजा को स्व - ।

और दिसम्बर १९४४ में जब कि विरोध में सभा हो रही थी श्री चर्चिल के विशेष हुक्म से जनता पर गोली चलायी गयी। गोली चलाने वाले जर्मन वर्दी में वे ही यूनानी सिपाही थे जिन्होंने जर्मनों के साथ मिलकर यूनानी गुरिल्ला सैनिकों को मारा था। सारा यूनान चिल्ला उठा कि क्या सचमुच यूनान जर्मनों से मुक्त हो गया है!

आज तक यूनान इसी प्रश्न का उत्तर ढूंढ रहा है। उसी दिन से कम्यूनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में ई० एम० ए० (इयेनिकोन आपेलेफेदेरिटोकोन मेटोफोन अर्थात नेशनल लिबरेशन-फ्रंट अर्थात राष्ट्रीय मुक्ति दल) प्रतिक्रियावादी फासिस्ट राजतन्त्र सरकार के विरुद्ध

ग्रीस के राजा पौल द्वितीय

गुरिल्ला युद्ध कर रहे हैं। दो वर्ष तक ब्रिटिश सेना और सशस्त्र यूनानी सरकार को सहायता पहुंचाते रहे, परन्तु आर्थिक सकट के कारण ब्रिटेन यह उत्तरदायित्व नहीं संभाल सकता। अत संयुक्तराज्य अमेरिका ने सन् ४७ के प्रारम्भ में यह "उत्तरदायित्व" स्वय उठा लिया। मार्च १९४७ में राष्ट्रपति ट्रूमैन ने कम्युनिज्म के विरुद्ध युद्ध का ऐलान करते हुए टर्की और यूनान को प्राय ५० करोड़ डालर की सहायता की घोषणा की थी।

अमेरिकन हस्तक्षेप

ट्रूमैन नीति के अन्तर्गत यूनान को जो सहायता भेजी गयी, उसका निरीक्षण करने के लिए एक समिति स्थापित की गयी, जिसके प्रधान श्री डवाइट ग्रिसवोल्ड हैं। श्री ग्रिसवोल्ड ने एथेन्स पहुंचते ही घोषणा की कि अमेरिकन सहायता पाने के योग्य बनने के लिए यह आवश्यक है कि यूनानी सरकार का लोकतन्त्रवादी स्वरूप हो। अपने मन पसन्द की सरकार बनाने के लिए संयुक्तराज्य के विशेष दूत श्री लाय हैण्डरसन भी एथेन्स पहुंचे। अन्त में अमेरिकन हस्तक्षेप से और जोर दबाव से एक नवीन तथा "वृहद" मन्त्रीमण्डल की स्थापना हुई। अमेरिकन जनता ने यह देख कर संतोष कर लिया कि यूनानी सरकार चूंकि अमेरिकन हस्तक्षेप से संगठित की गयी है, इसलिए प्रजातन्त्रवादी होगी ही। इस नये मन्त्रिमण्डल में जर्मन पक्षपाती सेनानायक पेटरोस मावरोमिचा लेस तथा युद्धपूर्व की फासिस्ट यूनानी सरकार के अधिनायक मेटाक्सस के सहयोगी एडमिरल एलेक्जेण्डर साकालियरोस भी शामिल कर लिए गये।

जिस दिन से यूनान में अमेरिकन हस्तक्षेप प्रारम्भ हुआ है, रक्तपात बढ़ गया है। अमेरिकन समाचार पत्रों में प्रायः ऐसे चित्र प्रकाशित होते हैं, जिनमें सरकारी सैनिक क्रान्तिकारियों के कटे सिर बोंडों पर लिए घूमते दिखायी देते हैं। एथेन्स की चौमुहानियों पर कटे सिर लट-

[शेष पृष्ठ २१ पर]

प्रण की होली

[श्री विनायक कडिकर]

वह एक निर्धन, दुर्दैवग्रस्त और संसार के चक्र में पूर्णरूप से पिसा हुआ एक युवक था या प्रौढ़ था इसका अनेकों को संशय था परन्तु वह निर्धन होने से, निराश्रय होने से, मनुष्यों के आकर्षण का केन्द्र न हो सका। उसके माता पिता कौन थे। यह भी बहुतों के निकट एक विकट समस्या थी। कोई कहता था वह किसी वेश्या को सन्तान है और कोई कुछ। अनेकों तर्क उसके विषय में उठाये जाते। अनेकों वाद विवाद होते, परन्तु उसके भूत का इतिहास अन्धकारमय था। वह इतने अन्धकार में था कि उसे खोजना अत्यन्त कठिन कार्य था। परन्तु वह था—अवश्य।

उसके एक छोटी बहन थी। बहन भी या कौन थी, यह जानना भी उतनी ही कठिन बात थी, जितनी कि उसके माता पिता के बारे में जानना। परन्तु कुछ भी हो—उसके लिए वह बहन ही थी और वह उस बहन का भाई। दोनों में उच्चकोटि की प्रीति थी। उसकी बहन थी भी सुन्दर। उन फटे, मट मैले कपड़ों में वह हीरे जैसी चमकती। उसकी मृग-सी आंखें देखकर वह! धन्य हो जाता। उसने अपना ध्येय बनाया था कि किसी भी प्रकार वह अपनी बहन को सुखी बनायेगा। उसे किसी उच्च कुल में देगा, चाहे उसे उसका मूल्य प्राण ही क्यों न देना पड़े। वह अपनी बहन का सुन्दर मस्तक चूमकर उससे कहता, तब वह हंस देती। वह गम्भीर हो जाता और कहता कि उसकी बहन भी उसकी प्रतिज्ञा की हंसी उड़ाती है। उसका नाम था नारायण और लड़की का नीलिमा। वह उसे अपने प्यारे शब्दों में 'नीलू' कहकर पुकारता और वह उसे अपना भैय्या कहती।

दोनों के रहने के लिए एक फूस की झोपड़ी थी। ऊपर छत में अनेकों छिद्र थे। जिसमें से होकर पानी, वर्षा, ठण्डी हवा तथा दिवाकर का देदीप्यमान प्रकाश आया करते थे। चन्द्रमा भी कभी उनमें से झांक कर दरिद्रता की हंसी उड़ाया करता था। परन्तु वे दोनों सुखी थे, तृप्त थे अपने सुख दुखों में। कितनी शीतल रातें, कितनी ही प्रखर किरणें सहते सहते उसी कुटिया में दोनों पले और पलने की दृढ़ आकांक्षा रखते थे। जब शीतल रजनी के विमल प्रकाश में देखो किसी फटे पुराने कपड़े में लिपटे रहते, तब नारायण को अपने अतीत के दृश्य चल चित्र के समान नेत्रों के रजत पट पर सरकते हुए दिखाई देते और अन्त में उसकी बहन 'नीलू' का मुख आकर अपेरा हो जाता। वह सोते हुए नीलू से लिपट जाता। नीलू हड़बड़ा कर उठ बैठती और अपने भाई से लिपट कर फिर सो जाती।

उस समय नीलू आठ वर्ष की एक अल्हड़ बालिका थी और नारायण बाईस वर्ष का बूढ़े हृदय का युवक, तरुण। उसका स्वास्थ्य ठीक था। उसे मजदूरी में दस बारह आने प्रति दिन मिल जाते। वह एक पत्थर के सौदागर के यहा नौकर था, एक साधारण मजदूर था। उसके यहां बहुत मजदूर काम करते थे। उनमें स्त्रियां भी थीं और युवक भी, बालक भी थे और बालिकाएं प्रेमी भी थे और प्रेमिकाएं भी थीं और कुछ नारायण जैसे बिगड़े दिल भी। उसका सुडौल भव्य चेहरा देखकर कितनी ही कुमारिकाएं प्रेम का प्रस्ताव लेकर आईं, परन्तु उसने सबको दुत्कार दिया। उसे अपने ध्येय पर चलना था, अपना प्रण पूरा करना था, नीलू का ब्याह किसी ऊंचे घराने में करना था और उसके लिये आवश्यकता थी धन की। उसने धन जोड़ना प्रारंभ किया। उसे याद था कि बूंद २ से ही सागर की उत्पत्ति है। अपने द्रव्य को वह कहीं अन्य जगह खर्च न करना चाहता था। वह चाहता तो किसी से विवाह कर घर बसा लेता। उसमें द्रव्य बढ़ने की सम्भावना नहीं, घटने की अधिक थी। इस लिये उसने मन पर दबाव डाला और अपनी वासनाओं को पैरों तले कुचल डाला। कितना आनंद हुआ होगा उसको अपनी इस विजय पर।

एक दिन नारायण अपने हथौड़े से पत्थर के टुकड़े कर रहा था। पत्थर के कण पत्थर से दूर उछल कर गिर पड़ते थे उसने इधर दृष्टि पात किया। कहीं चिलम लेकर कई मजदूर गप्पें मार रहे थे और अपने कार्य को बढ़ा २ कर वर्णन कर रहे थे। किसी जगह कोई मजदूर किसी मजदूरनी की ओर विशेष दृष्टि से देख रहा था और कुछ मजदूर अपने कार्य में व्यस्त थे। नारायण ने इधर उधर देखा और उसका निशाना चूक गया। हथौड़ा हाथ पर जा बैठा। अंगुलियां पिचक गईं और रक्त स्राव होने लगा। नारायण ने अपने हाथ को जोर से पकड़ लिया परन्तु दर्द कम न हो सका और एक चीख के साथ २ पत्थरों के ढेर पर लुढ़क गया।

जब आंखें खुलीं, तब देखा—उसकी बहन नीलू पास बैठी थी। कमरा कोई दूसरा था। दिवारें स्वच्छ श्वेत रंग में पुती थीं। उसने देखा—वह एक सुन्दर स्वच्छ शय्या पर लेटा है। वह दवाखाना था। दूसरे ही दिन वह दवाखाने से घर लौट आया।

अब समय में परिवर्तन हो गया। नारायण तीस वर्षीय एक युवक था और नीलू एक असाधारण सौन्दर्य की देवी थी। उसने अभी अठारह वर्ष अपनी आयु के समाप्त किये थे।

अब नारायण घर पर रहता था और नीलू उसी ठेकेदार के यहा पत्थर तोड़ने जाती थी। नारायण ने अपने कार्य में पत्थरों को तोड़ते हुए अन्त में अपना हाथ भी तोड़ लिया था। हाथ के टूटते ही उसका बूढ़ा, क्षीण हृदय भी चूर चूर हो गया। उसका स्वप्न मिट्टी में मिल गया। उसका किला, जो उसने नीलू के लिये बनाया था एक प्रबल वायु के झोंके से उड़ गया उसकी प्रतिज्ञा का अन्त उसे स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

प्रथम दिवस जब नीलू कार्य करने गई तब नारायण ने उसे समझाते हुए कहा—"बहन! ममता के जाल में न लिपट जाना। प्रेम करना अच्छा है परन्तु तुम जानती हो, उस प्रेम में स्वार्थ वासना लोप होना चाहिये, दूसरों के नजरों को बच-कर रहना। जितना तुम दूर रहोगी उतना श्रेयस्कर होगा। प्रेम मकड़ी का जाल है। वह मीठा जहर है। तुम स्वाद लेने जाओगी परन्तु उस जाल में अधिक फंसती जाओगी। जितना प्रयत्न छूटने का होगा उतना ही उसमें फंस जाओगी। अपना कार्य करना और साय-काल को चुपचाप बिना बोले वापस लौटना यही तुम्हारा ध्येय होना चाहिये। कभी कभी मैं तुझे लेने आ जाऊंगा। मैं भी कहीं कार्य देखता हूं और फिर तुझे वहा न जाना पड़ेगा।' और उसके नेत्र में दो प्रेमाश्रु निकल आये। उसने बहन को अपने हृदय से लगा लिया। बहन भी वियोग के दुख से रो दी। नीलू का आंचल अश्रुओं से भर गया। और फिर उसने अपने नीलू को विदा

[शेष पृष्ठ १९ पर]

स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद सबसे बड़ी महत्वपूर्ण समस्या शत्रुओं से देश की रक्षा है। इसके सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी देने के लिये

'वीर अर्जुन' का

देश रक्षा-अंक

बड़ी शान के साथ १ वैशाख २००५ को प्रकाशित होगा। उसकी तैयारियां शुरू होगई हैं। पाठक अपनी कापी के लिए अभी से एजेन्ट से कह दें और विज्ञापक अपना विज्ञापन बुक करा लें।

अंक-सम्बन्धी विस्तृत जानकारी फिर दी जायगी।

—मैनेजर

महात्मा गांधी के नेतृत्व की परम्परा

[कुमार योगी बी० ए०]

राष्ट्रीय हर्षोल्लास के महान् पर्वों पर हमारी मनुष्य जाति अपने महापुरुषों को श्रद्धांजलि चढ़ाती रही है और हमारे इतिहासकार उसे अपने इतिहास का विषय बनाते हैं — युगान्तर के समय तो यह बात और भी अनिवार्य हो जाती है!। गत १५ अगस्त को भारत में एक युग समाप्त हुआ है और उसकी समाप्ति पर दूसरे नये युग की प्रकाश-रेखायें उदित हुई हैं। मानव-प्रकृति की अन्तर्प्रेरणाओं से विवश जब हम इस युगान्त पर दृष्टि-विक्षेप करते हैं तो हमारे सामने अनायास ही तीन महान् विभूतियों चित्र अंकित हो जाते — दादाभाई नौरोजी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक और महात्मा गांधी। हमारे स्वातन्त्र्य-संग्राम का समस्त इतिहास इन तीन विभूतियों के तपस्वी कर्तृत्व का परिणाम है। तुलसी के 'रामनाम' की भांति 'स्वराज्य' शब्द भी भारत के कोटि-कोटि निवासियों के संतप्त जीवन का अवलम्ब बन गया है — और अवलम्ब मात्र ही क्यों। 'स्वराज्य' हमारे राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संतापों को शमन करने वाला ऐसा वरदान बन गया है जो हमारे मनोरथों के लिए कल्पवृक्ष भी है। इस कल्पवृक्ष की छाया में आज हम बैठे भी हैं। यह 'स्वराज्य' शब्द दादाभाई नौरोजी की पुनीत वाणी का प्रसाद है। १९०६ ई० में कलकत्ते में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ था जिसमें दादाभाई नौरोजी ने अपनी राजनीतिक दूर दर्शिता के साथ रचनात्मक कार्य-क्षमता का भी अपूर्व परिचय दिया था। कांग्रेस में इस समय गृह-विग्रह की परिस्थितियां काफी आतंकप्रद हो गई थीं और बीस वर्ष के भीतर कांग्रेस की छत्रछाया में देश के जितने महान् व्यक्ति एकत्र हो गये थे वे खंड-खंड में बटने वाले थे। दादा भाई ने अपने प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व द्वारा इस पारस्परिक वैमनस्य का शमन कर दिया और 'स्वराज' का आदर्श देश के सामने रक्खा। जब हम अपनी कल्पना के मंच पर उनके व्यक्तित्व की रेखाओं का चित्र बनाते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है :—

"मानो एक महान् विभूति अचानक हमारे क्षितिज पर अवतीर्ण हुई हो जिसके आजानु-प्रलम्ब हाथ में अमर आलोकमयी मशाल हो और जो इस सांस्कृतिक वसुन्धरा को ओजस्वी वाक्यों से जाग्रत करते हुए कह रही हो — 'उठो, मैं प्रकाश लाया हूं, इसे सम्भालो। मेरा काम पूरा होता जा रहा है।' आज भी हम उस विराट व्यक्तित्व के चरणों की ध्वनि सुन रहे हैं।"

— निधन-तिथि के अवसर पर अर्पित श्रीमती सरोजिनी नायडू की श्रद्धांजलि।

अवश्य आलोकपूर्ण वह मशाल 'स्वराज' का वह उद्देश्य ही है जो अभी तक हमारे राष्ट्रीय अभिमान का ध्रुवतारा रहा है। दादा भाई के बाद लोकमान्य ने उस मशाल को अपने कर्मयोग के स्नेह से अभिसिंचित किया।

दादा भाई की विरासत

महात्मा गांधी में दादाभाई की अनेक विशेषतायें बद्धमूल पाई जाती हैं। महात्मा गांधी की भांति दादाभाई की संघर्ष प्रणाली भी अधिकांशतः भावात्मक और मनोवैज्ञानिक थी। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया' के प्रयोजन का सम्बन्ध जितना हृदय-परिवर्तन से है उतना खंडनात्मक राजनीति से नहीं। इस पुस्तक में 'अंग्रेजी राज' का जो चित्र खींचा गया है वह भारतीयों के उद्बोधन के लिये उतना नहीं है जितना स्वयं अंग्रेजों के आत्म-परीक्षण के लिये है। गांधी जी की भांति वे भी सारे राष्ट्र को भारत की दुरवस्था के प्रसंग का अपराधी नहीं मानते थे। गांधी जी के अहिंसा-दर्शन की परिधि तक वे नहीं पहुंचे थे किंतु वे यह मानते थे कि अंग्रेज भी इस विराट-व्यापक मानवता के अंश हैं और उनमें भी नैतिकता और न्याय के प्रति मानवोचित श्रद्धा है। उनकी उक्त पुस्तक की मूल प्रेरणा इसी धारणा से उद्बुद्ध हुई है। वे अंग्रेजों की प्रसुप्त न्याय-बुद्धि को जाग्रत करना चाहते थे—उनके ही देश बन्धुओं के नौकरशाही ढांचे से जो नृशंसतायें भारत में अंग्रेजी राज की आयु के साथ उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थीं दादा भाई उन्हें अंग्रेजों के सामने उड़ेलना चाहते थे जिससे उनकी औचित्य-बुद्धि को आघात लगे, उन्हें लज्जा का अनुभव हो और परिणामतः वे अपने ब्यूरोक्रेटिक देशवासियों को भारत में मनमानी करने से रोकें। उन्होंने इंगलैंड में जो व्यापक आन्दोलन किया था और जातीय विद्वेष के बाहर से उत्पन्न अंग्रेजों की तीन प्रवृत्तियों का जो सशक्त विरोध किया था वह भारतीय जनता की मौलिक शिकायतों का बड़ा प्रभावशाली प्रतिनिधित्व था। खेद है कि दादा भाई के बाद इस कार्यक्रम को कांग्रेस ने जारी नहीं रक्खा। हां, गांधी जी ने कई बार ब्रिटेन में इस प्रकार के आन्दोलन को शुरू करने पर जोर दिया था।

जनता बनाम शासक

गांधी जी ने दादा भाई की इस मनोवृत्ति को आत्मसात् कर लिया और आज तक ब्रिटेन की आन्तरिक ईमानदारी में अविश्वास नहीं किया। वह राजनीतिक दूरदर्शिता सत्य एवं अहिंसा का पीयूष पीकर समस्त मानवता के आत्म कल्याण की जीवन दृष्टि बन गई। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रति उनका प्रतिरोध अगम्य था, कभी उसमें शैथिल्य नहीं आया किंतु अंग्रेज जनता के प्रति उनकी भावना में कभी घृणा, प्रतिरोध एवं प्रतिहिंसा का विकार नहीं आने पाया। उन्होंने अपने निजी व्यक्तित्व को ही नहीं किंतु समस्त कांग्रेस जैसी महान् संस्था के आन्दोलन को भी इन मनोविकारों से अस्पृष्ट रक्खा। संघर्ष-काल में प्रायः ऐसी आतंमनःस्थिति हो जाती है कि अकारण ही शासक-सत्ता को जनता का पर्याय् मान लिया जाता है। गांधी जी द्वारा लड़े गये संग्राम में यह विषैली मनोवृत्ति अपनी जड़ें नहीं जमा सकी। सारी परिस्थिति स्पष्ट करते हुये गांधी जी ने ब्रिटेन की जनता को आश्वासन दिया था।

"मैं ब्रिटेन की जनता को कहता हूं कि मेरे हृदय में उसके लिये स्नेह है और मैं उसका सहयोग आवश्यक समझता हू — किन्तु यह सहयोग आत्म-सम्मान और परिपूर्ण समानता की परिस्थितियों के विरुद्ध न हो।'

विषपान से बचाया

इस दृष्टिकोण ने भारत के राजनीतिक आन्दोलन को पथ भ्रान्त होने से ही नहीं वरन् विषपान करने से भी बचा लिया — अन्यथा उसकी दृष्टि इतनी ही मलिन और विकृत हो जाती जितनी कि नाजियों और फासिस्टों की हो गई थी। राष्ट्रीयता की बाढ़ में जनता नैतिक औचित्य को कुचल देती है और यदि उस की प्रवृत्तियों को मर्यादित नहीं किया जावे तो जातीय विद्वेष का ऐसा तीव्र विष उसकी मनोवृत्ति पर छा जाता है कि वह पाशविक कृत्य करने से भी लज्जित नहीं होती। मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के इन्हीं कुसंस्कारों को उत्तेजित किया है — काफिरों के विरुद्ध जेहाद की घोषणा में अमानुषिक मनोवृत्ति का ही घृणित प्रदर्शन है। इस दृष्टि से नाजियों और लीगियों में कोई अन्तर नहीं है। हमें और समस्त संसार को यह सत्य समझना होगा क्यों कि ऐसी मनोवृत्तियों का चरम विकास ही सारी मानवता को एक पारावार में डुबोता है। भारत की राष्ट्रीयता भी इसी पथ का अनुसरण करती किन्तु भारत का सौभाग्य है कि उसके अन्न जल से एक ऐसे व्यक्तित्व का पोषण हुआ कि जिसने केवल भारत के ही नैतिक मेरुदण्ड को सशक्त और नव जीवित नहीं कर दिया वरन् सारे मानव-समाज को सदाचार की जीवित परिभाषा दी।

चतुर्थ मराठा-युद्ध के बाद बाल गंगाधर तिलक ने ही महाराष्ट्र के आत्म-सम्मान का दायित्व अपने कंधों पर लिया था। इससे पूर्व महाराष्ट्र की ओर से कोई चुनौती ब्रिटिश साम्राज्यवाद को नहीं दी गई थी। कांग्रेस में इस समय गरम एवं नरम दलों की विभेद-रेखा खिंच गई थी। तिलक उग्र राष्ट्रीयतावादी थे और 'निवेदन वादी' कांग्रेसियों के लिये एक आतंक थे। तिलक ने 'स्वराज' के स्वप्न को अपनाया और उसे मूर्त्त करने के लिये देशव्यापी आन्दोलन को अपना साधन बनाया। तिलक ज्ञान के अगाध पारावार थे। भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों का जितना सांगोपांग ज्ञान उन्हें था उतना उनके समय में शायद ही किसी को हो। उन्होंने हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को बौद्धिक क्षमता दी और हमें अपने ही सांस्कृतिक इतिहास के अनुरूप अपने भावी मन्तव्य बनाने की ओर प्रवृत्त किया। हमारी राष्ट्रीयता पश्चिमी देशों के राजनीतिक जागरण के ढांचे में ढलती जा रही थी और इस प्रकार हमारे पारस्परिक जीवन-प्रवाह में व्यतिक्रम पड़ने लगा था। हम अपने ही व्यक्तित्व को विकसित न करके दूसरों के व्यक्तित्व को ओढ़ने का उप क्रम कर रहे थे। भविष्य के लिए यह मनोवृत्ति काफी क्षति प्रद साबित होती। तिलक ने भारत की राष्ट्रीयता को अपने आदर्श पर पहुंचाने के लिए नया सम्बल दिया — राष्ट्रीय संग्राम को एक सबल एव सांस्कृतिक स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया। अपना वैयक्तिक और समूचे राष्ट्र का युगधर्म उन्होंने यूरोप की सभ्यता में नहीं खोजा वरन् अपने ही अतीत के सामने हाथ फैलाये। श्रीमद् भगवद् गीता में उन्हें अपने तत्वदर्शन की प्रेरणा मिली। गीता उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक रही जो सारी त्रस्त मानवता को जीवन का आस्वाद पूर्ण एव नया स्पन्दन दे सके। गीता के प्रति तिलक की श्रद्धा ने ही गांधी जी को गीता के जीवन-दर्शन का अनुयायी बनाया।

अपने अप्रतिम सांस्कृतिक गौरव से भारतकी राष्ट्रीयता को विदेशी कान्तियों से अनुभूति ग्रहण करने से रोक दिया। अपने ही अतीत में अनंत शक्ति के प्रसुप्त पड़े रहने का उसे ज्ञान था और यह ज्ञान उसे चेतावनी देता रहा कि विदेशी संस्कृतियों का आकर्षक रूप स्वदेश की संस्कृति के आवरणग्रस्त रूप से कहीं हीन और भ्रान्त है एवं उसका और सारे दलित-पीड़ित विश्व का कल्याण इसी में है कि भारत की प्राचीन संस्कृति को अपने यथार्थ रूप में जाग्रत किया जावे। दादा भाई, फिरोजशाह मेहता लालमोहन घोष और गोखले का राष्ट्रीय आन्दोलन पाश्चात्य देशों की पार्ल-

[शेष पृष्ठ २४ पर]

दिल्ली से राजौरी तक

[श्री 'चक्रधर']

काश्मीर के जिस प्रदेश में आज कल भारतीय सेना कबायलियों से लोहा लि रही है उस प्रदेश का प्रत्यक्ष आंखों देखा वर्णन।

"प्रेम का बन्धन लोहे से भी कड़ा होता है" (लोके लोहेभ्योपि हि कठिनतरः खलु स्नेहमयो बन्धन पाशः ।) — महाकवि बाण की यह उक्ति उस दिन खूब अनुभव हुई जिस दिन बिना किसी पूर्व तय्यारी के हमें अकस्मात् ही अपने एक मित्र के विवाह में रामपुर राजौरी जाने का प्रोग्राम बनाना पड़ा। यों चारों तरफ की हवा में जो एक विशेष प्रकार की सरसराहट थी उसके कारण दूर की यात्रा पर एकाएक चल पड़ना अपने भविष्य को नियति के हाथ में सौंप देने से कम भयानक नहीं था। कलकत्ता और नोआखाली की बात पुरानी हो गई थी। पश्चिमी पंजाब के भी बड़े २ शहरों में एक तूफान गुजर चुका था। हवा में छुरे और खबर लट कते नजर आते थे। रात को स्वप्न में आग की लपटों में धू धू करके जलती हुई अट्टालिकाएं दृष्टिगोचर होती थीं। स्थान २ पर कर्फ्यू। वातावरण सन्देह और शंका से ओत प्रोत। काफी हाथ पैर मारे पर प्रेम का बन्धन ढीला न हुआ। आखिर मई के प्रथम सप्ताह में दिल्ली से रामपुर राजौरी के लिये रवाना हो गये।

जम्मू तक पहुंचे। मार्ग में कोई विशेष बात नहीं हुई। इतना अवश्य देखा कि गाड़ी में सवार होने से पहले और बाद में लोग यह इतमीनान करके बैठते हैं — आंखों ही आंखों में — कि जहां हम बैठ रहे हैं वहां आसपास कौन २ और किस तरह के आदमी बैठे हैं।

जम्मू 'मन्दिरों का शहर' कहलाता है। जिधर भी जाओगे — गली गली में मन्दिर मिल जायेंगे। सुन्दर स्वच्छ सड़कें, विशुद्ध खाद्य पदार्थ (वेजिटेबल घी रियासत में नहीं आ सकता), फल मेवे सब प्रभूत मात्रा में, और सब से बढ़ कर बात यह कि पश्चिमी पंजाब की तरह यहां प्रत्येक बात में "मुसलमानी पना" नजर नहीं आता। चारों ओर 'हिन्दूपना' — वेष विन्यास, खान-पान' बोल-चाल — सभी कुछ आत्मीय सा। और यह राम मन्दिर। मन्दिर भी, गुरुद्वारा भी, धर्मशाला भी, सराय भी—और उस समय स्यालकोट और रावलपिण्डी की तरफ से आये हुए पीड़ितों का 'शरणार्थी कैम्प' भी। क्या किले जैसी विशाल इमारत है। चौबीस घण्टे चहलपहल रहती है।

पर सब चहल पहल शीघ्र ही छोड़नी पड़ गई क्योंकि मोटर का टिकट अगले दिन ही मिल गया।

रातभर वर्षा होती रही। वह कड़ाके की गर्मी जो सारी यात्राभर परेशान रखा—केवल एक रात में ही भाग गई। वर्षा भी खासी हुई और होती रही। डर था कि कहीं तारकोल की पक्की सड़क न होने के कारण दुर्घटना के डर से मोटर का जाना स्थगित न हो जाए। पर ऐसा नहीं हुआ।

मोटर रणबीर नहर के किनारे २ चली हरिद्वार की 'गंग नहर' का दृश्य याद आया। यह यद्यपि परिमाण में उससे कम है पर पानी की ठण्डक के लिहाज से कम नहीं। सारे रास्ते इसके हरियाले तट पार्श्ववर्ती ग्रामों के बालकों और बालिकाओं से गुंजायमान रहते हैं।

१० मील बाद बटेहरा है—शहीद रामचन्द्र का पवित्र स्थान। अस्पृश्य कहे जाने वाले लोगों के साथ समान व्यवहार का प्रचार करने वाला यह दृढ़ आर्य समाजी युवक यहीं सवर्ण राजपूतों की मतान्धता का शिकार हुआ था। उसकी स्मृति में अब भी यहां हर साल जून के महीने में शहीद मेला लगता है और हजारों अमीण उससे प्रेरणा लेकर जाते हैं।

६ मील बाद यह अखनूर आ गया। कथा के आमुख की तरह बस्ती से पहले यह पुल है (वही पुल जो आज पाकिस्तानी आक्रान्ताओं का प्रमुख लक्ष्य है और जिस पर जम्मू शहर की रक्षा का दारोमदार है। -स०)। नीचे द्रुतगति से हहराती चन्द्रभागा नदी बह रही है। जिसे महापंडित राहुल ने 'प्रेमियों की नदी' कहा है। इसी चिनाब में से वह जम्मू वाली 'रणबीर-नहर' निकली है।

यहां तक तो बिलकुल मैदान है सड़क सीधी नहर के किनारे भागती चली जाती है। कहीं उतार चढ़ाव नहीं। पर अब आगे लगातार चढ़ाई है। सड़क ऊबड़ खाबड़ है, पत्थर बिछे पड़े हैं। पहाड़ भी भुरभुरा है। मोड़ों की कमी नहीं। जलशून्य प्रदेश—रास्ते में नदी नाला निर्झर कहीं कुछ नहीं। मोटर धीरे २ चलती है। हां इस गर्मी के मौसम में पर्वत की अधित्यका में खिले हुए ये अमलतास के सुन्दर पीतपुष्प बड़े सुहावने लगते हैं। इच्छा होती है कि मोटर से उतर कर अभी इन्हें तोड़ने के लिये निकल पड़ें।

दस मील की चढ़ाई के बाद जब उतार शुरू होता है, तब इसी पहाड़ में अभी कुछ दिन पहले अभ्रक की खान मिली है। ऐसा मोटर के अन्य यात्रियों ने बताया। दस मील तक फिर मैदान चला गया है। सड़क के दोनों ओर छोटे २ गांव आबाद हैं। दूर से उन मिट्टी के बने कच्चे मकानों पर हाथ से की गई चित्रकारी को देख कर उनकी सुरुचि का पता लगता है।

यह सैयदाबनी आगया—अखनूर से २८ मील दूर। सड़क के किनारे ही हिन्दू बनिये की दुकान है। पास ही एक घने आम्र वृक्ष के नीचे छोटी सी बावड़ी है। आस पास और कहीं पानी न होने के कारण इस बावड़ी पर भी पानी भरने वालियों का तांता-सा लगा रहता है।

डेढ़ेक मील के बाद यह बेरी पत्तन (जहां से नावों द्वारा नदी पार की जाती है वह स्थान पत्तन कहलाता है)। पहाड़ी नदी है, उथला पानी है, पर जहां से पार होना है वहां पानी की गहराई काफी है। ऊपर दोनों ओर के तटवर्ती पहाड़ों की चोटियों को छूता-सा एक पुल खड़ा है। कहते हैं कि इस पुल का ठेका जिस इञ्जिनीयर ने लिया था, वह नई उम्र का नौजवान लड़का ताजा ही पढ़ लिख कर आया था। बड़ा बुद्धिमान और बेलाग था वह। उसने बड़े उत्साह से काम शुरू किया। 'साइट' के चुनाव को देख कर ही उसकी तारीफ करनी पड़ती है। पर उसके सब ठेकेदारों के मुंह में खून लगा हुआ था — वे रिश्वत लेने के आदी थे। इस चरित्रवान् निर्भीक और उत्साही युवक इञ्जिनीयर ने न तो एक पाई खुद रिश्वत ली, न किसी को लेने दी। इस कठोर अनुशासन का परिणाम यह हुआ कि ठेकेदारों ने उसे धोखा दिया। ८ के किनारे पर मसाला इतना कमजोर लगाया कि लोहे का भारी गर्डर पुल पर रखते ही वह टूट गया। अभी तक वह गर्डर और पुल का बाकी पञ्जर नदी में यों ही पड़े हैं — कई साल हो गये। लाखों रुपया बरबाद हो गया और उसके बाद किसी ने दुबारा यहां पुल का ठेका लेने का साहस नहीं किया।

अब नदी को पार करने का तरीका यह है —एक रस्सा नदी के आरपार बंधा हुआ है। नाव के ऊपर मोटर को चढ़ा कर रस्सा खींचते जाते हैं और उसके सहारे से नाव चलती जाती है। मोटर को अलग ले जाते हैं, मुसाफिरों और सामान को अलग। दोनों तरफ से आने वाली मोटरें दोनों किनारों पर क्रम से खड़ी होती जाती हैं। नाव के ठेकेदार उनको उसी क्रम से पार उतारते हैं। कभी कभी घण्टों यहां प्रतीक्षा करनी पड़ती है। यदि कभी रस्सा टूट जाय तो कई कई दिन तक यातायात रुका रहता है। पार होने में दो घण्टे लग गये।

लगभग १५ मील के चक्करदार रास्ते के बाद आया नौशेरा — सड़कों का [illegible]थान। यहीं से मीरपुर और पुंछ की तरफ सड़क जाती है। भिम्बर और गुजरात की तरफ भी। मुगल बादशाहों के समय का जो पुराना काश्मीर जाने का राजमार्ग था वह यहीं से होकर जाता था। छोटा सा शहर है। व्यापार प्रायः हिन्दुओं के हाथ में है परन्तु मुसलमानों का बाहुल्य है।

यहां से राजौरी ३२ मील है। पहले ये ३२ मील खच्चर की पीठ पर या पैदल पार करने पड़ते थे। पर इन्हीं पिछले दिनों जब पश्चिमी पंजाब में प्रलय के बादल बरसे तो काश्मीर के महाराजा ने भी स्थिति की भीषणता को समझा और केवल १५ दिन के अन्दर यह ३० मील की सड़क बन कर तैय्यार हो गई। अब मोटर तो चलने लगी, पर कच्ची सड़क, और ऊपर से हो गई बारिश। सड़क फिसलन वाली हो गई — पग पग पर डर कि कहीं सारी स्लिप न कर जाये। नौशेरा में ही भास्कर भगवान् पश्चिम दिशा में अपना लाल मुंह किये 'दिन जल्दी जल्दी ढलने' की सूचना दे रहे थे। ड्राइवर भी कह रहा था कि रात यहीं बिताली जाये, सवेरे आराम से राजौरी चलेंगे। पर मुसाफिर नहीं माने।

फिसलन से बचने के लिए मोटर बड़ी धीमी चाल से चल रही थी। कहीं कहीं मोटर से उतरना भी पड़ता था। आखिर ६ बज गये। अन्धकार बढ़ता चला जा रहा था। मन में जितनी तीव्र गति थी पहियों में उतनी ही मन्द गति। वर्तमान अन्धकार के कारण मिट्टी की बनी कच्ची सड़क का वर्षा से भगुर हुआ किनारा जाने कब धोखा दे दे — इसलिये और मन्द गति—फूंक फूंक कर कदम। चलते चलते सात बज गये। 'अब निशा नभ से उतरती।' परन्तु राजौरी तो अभी १५ मील से कम नहीं। एक तो पहाड़ी सफर, फिर कच्ची सड़क और उस पर भी वर्षा की फिसलन — और सब से बढ़ कर रात्रि का यह बढ़ता हुआ अन्धकार। ड्राइवर यहीं जंगल में कहीं मोटर भी खड़ी करने पर आमादा। आगे ले जाने में असमर्थ। पर यहां जगल में रात कैसे कटेगी — खाने पीने को कुछ नहीं, तो तो खैर भुगत लेंगे, पर यह वर्षाजन्य शीत, पर्वतीय प्रदेश, बिस्तर पास नहीं, ठण्ड के मारे बुरा हाल हो जायगा और ड्राइवर कण्डक्टर के अलावा हम तीन मुसाफिर और दो हिन्दू, बाकी सब के सब मुसाफिर मुसलमान। यदि जंगल में ही इन २० मुसलमानों ने हम पांचों पर आक्रमण कर दिया तो क्या होगा? हवा में सनसनी पहले ही फैली हुई है। ना बाबा जंगल में ठहरना ठीक नहीं। राम राम करते कलसर पहुंचे।

अब ८ बज गये थे। राजौरी यहां से

[शेष पृष्ठ २० पर]

भरतपुर और मेव-विद्रोह

[श्री हजारीलाल बंसल]

आज मेव विद्रोह शांत हो गया है, लेकिन इसका मूल कारण क्या था, यह बहुत कम लोगों को मालूम है। कम्यूनिस्टों ने किसान विद्रोह की आड़ में यह आंदोलन हिंदू राज्य के विरुद्ध किया और शायद इसी कारण राष्ट्रीय कार्यकर्ता भी प्रारम्भ में उसकी अंतर्निहित साम्प्रदायिकता को न देख सके, यह बताते हुए लेखक ने मेव विद्रोह के मूल कारण पर प्रकाश डाला है और इसे अथ से इति तक साम्प्रदायिक विद्वेष से पूर्ण सिद्ध किया है।

भरतपुर राज्य के उत्तर पश्चिम में तीन तहसीलों से मिला हुआ एक भाग जो कि अलवर राज्य, गुड़गावा जिला और मथुरा जिला की सीमा से मिलता है, मेवात कहलाता है। इस भाग में ७५ हजार भरतपुर राज्य में, लगभग २। लाख अलवर राज्य इनसे दूने गुड़गावा जिले और कुछ थोड़े से जिला मथुरा व राज्य जयपुर में थे। यह कुल प्रदेश कुछ इस भांति बसा हुआ है कि इसमें दूसरी जाति के गाव आटे में नमक के बराबर थे। इस तरह एक ही प्रदेश में बसे होने के कारण इनका संगठन बहुत बलशाली तथा सुसगठित था। खेती इनका मुख्य व्यवसाय था। इनका ..ना श राजपू तथा गुर्जर होने के कारण यह लोग काफी बलवान थे। भरतपुर, अलवर और गुड़गावा की सीमा पर दो तीन स्थानों पर पहाड़ होने के कारण इनको गुरिल्ला युद्ध करने की बड़ी सुविधा थी। पहाड़ों के कारण दूसरे गावों के मवेशी चुराने और अन्य चीजों की चोरी के माल को छिपाने के साधन होने से इनके कितने ही मुखिया खूंटेल कहलाते थे। डाकू और चोर इनके यहां शरण पाते थे और छिपे हथियार भी खूब रखते थे। ब्रिटिश भारत व अन्य राज्यों की सीमा मिलने से इधर उधर बिना महसूल माल निकालने की भी इन्हें सुविधा थी और इस तरह इस चोर बाजारी के युग में इन्होंने इस कार्य में पर्याप्त धन अर्जन किया था तथा इनके यहां सरसों की उपज अधिक होने के कारण इन्होंने इसमें भी खूब रुपया पैदा किया था।

भारत की डांवाडोल स्थिति देख कर उस धन से इन्होंने हथियारों का बहुत बड़ा संग्रह कर लिया था। ऐसा कोई भी घर नहीं था, जिसके पास २-४ बन्दूकें न रहती हों और इस तरह इनका एक सैनिक सगठन बन गया था। उधर मुल्लाओं तथा अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के छात्रों ने मुस्लिम लीग का प्रचार इनमें पिछले बीस पच्चीस महीनों में कर इन्हें पूरा कठमुल्ला बना डाला।

मुस्लिमलीग की स्थापना

बहुत वर्ष पूर्व भरतपुर के मुसलमान स्वर्गीय किशनसिंह नरेश के विरुद्ध अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बन कर खूब आन्दोलन कर चुके थे। उस समय ख्वाजा हसन निजामी का बोल बाला था और भरतपुर शासन के विरुद्ध उनके हाथों प्रचार कराया गया। चूंकि सन् १९२३ में स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा शुद्धि आन्दोलन पूर्ण वेग पर चलाया गया था और भरतपुर राज्य के सब मलकाने राजपूत व मथुरा, गुड़गावा, मेरठ जिले के मेव जाट शुद्ध किए जाकर अपनी पुरानी ..।२७ मिलाये गये थे। इस महत्वपूर्ण धर्म कार्य में स्वर्गीय महाराज भरतपुर ने पूर्ण सहयोग दिया था और मेवों को भी शुद्ध कराने की चेष्टा की थी, इसलिए मुसलमानों ने उनके विरुद्ध खूब प्रोपैगेण्डा किया और मेवात में शुद्धि को रोकने के लिए मुल्ले भी भेजे थे। इस तरह मेव उस समय शुद्ध होने से रह गये। बाद में उनमें हिन्दू राज्यों के विरुद्ध विषैला प्रचार किया गया, जिसके परिणाम समय समय पर उन राज्यों में होने वाले इनके विद्रोह हुए। इससे पूर्व भी आगरे के किले में सीढ़ियों से आते हुए महाराजा जवाहरसिंह को धोखे से छुरा भौंक कर एक मेव ने कत्ल कर दिया था। स्वर्गीय महाराजा जसवन्तसिंह जी के शासन काल में भी इन्होंने लगान बन्दी आन्दोलन किया था। वर्त्तमान महाराजा के नाबालगी शासन में भी इन्होंने मेज देने से इन्कार कर दिया था। इस प्रकार राज्य के विरुद्ध विद्रोह करना इनका स्वभाव बन गया था। देश की उथल पुथल देख कर इन्होंने फिर धीरे धीरे संगठित आन्दोलन की नींव डाली। मेवों की भारी पंचायत हुई और उसमें डाक्टर अशरफ व कुछ कम्यूनिस्ट भी सम्मिलित हुए। मुस्लिम लीग, जो चुपके चुपके भरतपुर के दीग कस्बे में जो मथुरा से मिलता है, अपनी स्थापना कर चुकी थी। उसने भी इनमें काफी काम किया। एक खुली सभा में 'मेवस्थान' बनाने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। इस तरह किसान राज्य की ओट में मुसलमानों द्वारा अलवर व भरतपुर की राज्यसत्ता को उखाड़ फेंकने की नींव डाली गई। यह आश्चर्य की बात है कि भरतपुर राज्य प्रजा परिषद के प्रधान तथा उपप्रधान व अन्य-कार्यकर्त्ता भी उक्त पचायत में सम्मिलित हुए और उसमें सहयोग दिया तथा मेवों को राज्य के विरुद्ध आन्दोलन करने को प्रोत्साहित करते रहे।

कुछ समय बाद मुस्लिमलीग, जो गुप्त रूप से स्थापित हो चुकी थी, मुस्लिम कान्फ्रेन्स के नाम से राज्य में २०५ ४६ को स्थापित हो गई। उसने बड़े जोरों से कार्य आरम्भ कर दिया। मुसलमानों में काम करने के साथ २ उसे मेवों में काम की अधिक सुविधा मिली और इन्हें आन्दोलन करने पर उतारू कर दिया। २८ जून १९४६ को भरतपुर नगर में मुस्लिमलीग की ओर से 'मेहराजुल नबीडे' मनाया गया, जिसमें नंगी तलवारों का जुलूस, मेव लीडर चौधरी इस्माइल खा खडेलावाले को एक लौरी की छत पर नगी तलवारों की छाया में कुर्सी पर बिठाल कर निकाला गया। बयाना, दीग भुसावर आदि के २०० के लगभग मुस्लिम नौजवानों का मुस्लिम नेशनल गार्ड भी बना कर फौजी प्रदर्शन किया गया।

डकैती व बम कांड

इस प्रदर्शन के पश्चात भरतपुर के मुसलमान अफसरों ने भी धीरे २ अपना असली रूप दिखाना आरम्भ कर दिया। भरतपुर नगर में मुस्लिम नेशनल गार्ड को एक फौजी मुसलमान अफसर व एक मुसलमान नाजिम परेड कराते थे। मेवात के पुलिस व सिविल मुसलमान कर्मचारियों ने खुलेआम सब मेवों के विद्रोह को प्रोत्साहित किया। सुनेती गाव में जब एक डाकू को गिरफ्तार करने पुलिस पहुंची तो मेवों ने पुलिस पर हमला बोल दिया। पुलिस इन्सपैक्टर बुरी तरह घायल हुआ तथा पुलिस को उल्टे पांव लौटना पड़ा। जब राज्य ने इस अराजकता को दबाने की चेष्टा की तो कम्युनिस्ट व मुस्लिम लीगी ही नहीं, प्रजा परिषद तक के कुछ कार्यकर्त्ताओं ने उनका पक्ष लिया। अपनी स्वाभाविक मुस्लिमतोषिणी नीति और सरकार विरोध के कारण उनका पक्ष इस तरह उनकी व मुसलमानों की हिम्मत बढ़ती ही चली गई। इसी बीच भरतपुर में एक ब्राह्मण के घर पर बम फैंका गया, जिससे कई स्त्री बच्चे बुरी तरह घायल हुए। हिन्दुओं में इससे बड़ी हलचल मची। इस की प्रतिक्रिया हुई। भरतपुर में प्रजापरिषद के कार्यकर्त्ताओं में से कुछ ने परिषद के कुछ कार्यकर्त्ताओं की मुस्लिमपक्षपातिनी नीति के विरोध में हिन्दू सभा की स्थापना की। २-३ औरतें इसी बीच शहर से भगाई गई तथा आजाद हिन्द-दल के एक वालन्टियर ने तो यहा तक हिम्मत की कि एक हिन्दू लड़की को खास भरतपुर शहर में ही घर में डाल लिया। उधर मेवात में खडेला गांव में व उसके आसपास हथियार बनाने के समाचार मिले। तलाशी ली जाने पर दो गांवों में बन्दूकें, टोपी व इनके बनाने का बहुत-सा सामान व मशीन आदि मिलीं। पुलिस जब तक इन चीजों को इकट्ठा कर अपराधियों को गिरफ्तार करने के काम में लगी कि मेवों ने आस पास के गाव से घोड़े दौड़ा कर व दामक बजाकर हजारों मेवों को इकठ्ठा कर पुलिस पर हमला बोल दिया। पुलिस को मजबूरी में सब सामान जो उन्होंने पकड़ लिया था, छोड़कर तथा अपनी जान बचा कर पुनः वापिस आना पड़ा। भरतपुर राज्य मेवों की इस तैयारी को देख कर भयभीत हो गया। कुछ सम्भल कर गिरफ्तारियां की गई, परन्तु श्री महाराजा ने अपने दौरे के अवसर पर उनके माफी माग लेने पर उनको छोड़ दिया।

जिन्ना दिवस

१६ अगस्त को ब्रिटिश भारत की भांति भरतपुर में भी जिन्ना साहब का 'डाइरैक्ट ऐक्शन डे' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 'टुकड़े हुआ हिन्दुस्थान लेकर रहेंगे पाकिस्तान' के नारे छाती ठोंक २ कर लगाये गये। वह सब मुसल्मान, जो भाई २ के नारे लगाते थे, इस धूम में सम्मिलित थे। हर घड़ी भरतपुर शहर में झगड़े की आशंका रहने लगी। सब की जबान पर यह था कि अब झगड़ा हुआ, अब झगड़ा हुआ। हिन्दू सभा ने प्रयत्न करके मुहल्ले मुहल्ले में रक्षा दल स्थापित किये तथा रात २ भर जाग कर हिन्दू पहरे देते थे।

उधर मेवात में मेवों ने न सिर्फ मेवों व मुसलमानों से चन्दा किया, बल्कि उन्होंने अपने गांव में रहने वाले हिन्दू सेठ साहूकारों से व मजदूरों तक से जबरदस्ती रुपया वसूल किया और उससे गोला बारूद इकट्ठे किये गये। राज्य में गौ वध बन्द होते हुये भी मेवों ने सीकरी कस्बे में खुले आम गाय की हत्या कर डाली और इस तरह वह खुली बगावत को बिलकुल तैयार हो गये।

खुली बगावत

इधर भरतपुर में उनके लीडर शफात अहमद कामरेड ने मुस्लिम लीग व प्रजा परिषद का गठजोड़। नाथ कर पत्रों व राष्ट्रीय जनता को भुलावे में डालने की चेष्टायें की। कुछ भोले हिन्दुओं ने उसमें आकर विद्रोही मेवों के दमन का विरोध कर दिया।

मेवों के गुड़गावा तथा अलवर राज्य में दगे शुरू कर दिये जाने, तथा गाव जला दिये जाने पर, जब भरतपुर में भी यही काण्ड होना शुरू हुआ तभी हिन्दुओं की आंखें खुलीं। अब उन्हीं देहली के पत्रों ने जो यह लिखते थे कि मेवात में कोई तैयारी नहीं है, अपनी भूल को पहिचाना और मेवात बगावत के ठीक २

[शेष पृष्ठ २२ पर]

अपनी जानकारी बढ़ाइये

[सकलित]

रीहन्द योजना — जंगल मत काटो — प्रलय की भविष्य वाणी — कलाकार की अनुभूति — वनस्पति घी के कारखाने — चोर बाजारी का भारी मुकदमा — महंगा हिन्दीसाहित्य सम्मेलन।

रीहन्द योजना

युद्ध की समाप्ति पर जिन अनेक युद्धोत्तर निर्माण योजनाओं की चर्चा आरम्भ हुई थी उनमें रीहन्द-बांध की चर्चा भी थी।

रीहन्द सोन की सहायक एक छोटी नदी है जो मध्य प्रान्त से निकल कर सरगुजा और रींवा रियासतों में बहती हुई मिर्जापुर जिले में युक्त प्रान्त की सीमा के अन्दर प्रवेश करती है। इसी नदी पर रीहन्द-सोन सगम से प्राय. ३० मील दक्षिण की ओर रीहन्द बांध बनाने की योजना पूर्ण की गई है।

यह बांध अब तक तैयार की गई योजना के अनुसार ३१०० फीट लम्बा, २८० फीट ऊंचा और समुद्र के धरातल से ३९६ फीट की ऊंचाई पर बनेगा। इस बांध के बन जाने पर रीहन्द का सारा जल एक झील में एकत्र किया जा सकेगा। इस झील का क्षेत्र १८० वर्ग मील होगा। इस बांध को बनाने का व्यय अनुमानतः सवा सोलह करोड़ रुपया होगा। यह बांध तैयार हो जाने पर एशिया का सब से बड़ा बांध होगा।

इस बांध के बनाने में सुविधा प्रदान करने की दृष्टि से युक्त प्रान्तीय सरकार ने सोन नदी की घाटी में सीमेंट बनाने का एक कारखाना खोलने का निश्चय किया है। प्रति दिन १ हजार टन सीमेंट बनाने पर भी एक सौ वर्ष तक सीमेंट का कारखाना चालू रह सकेगा रीहन्द बांध में ही ५ लाख टन सीमेंट व्यय होगा।

रीहन्द बांध बन जाने पर बलिया, आजमगढ़, जौनपुर, इलाहाबाद, फतेहपुर कानपुर, परतापगढ़, गोंडा, बहराइच, फैजाबाद, बस्ती देवरिया, गोरखपुर, बांदा हमीदपुर, जालौन और बनारस जल्थ को बिजली दी जा सकेगी। इस बिजली का खर्च अधिक से अधिक फी यूनिट ३ पाई और कम से कम डेढ़ पाई होगा। इस के अतिरिक्त सोन उपत्यका के प्रायः ४० लाख एकड़ अनुर्वर प्रदेश में सिंचाई की इतनी अच्छी व्यवस्था हो जायगी कि बंजरभूमि सोना उगलने लगेगी। इस उपत्यका की सर्वे होने पर यह भी ज्ञात हुआ है कि यहां क्लोरीन, कास्टिक-सोडा; हाइड्रोक्लोरिक एसिड, बिजली में प्रयोग होने वाला स्टील, सीमेंट, लोहा माइक, हीरा, और कोयला आदि पाये जाते हैं। सस्ती बिजली उपलब्ध हो जाने से उपयुक्त सभी उद्योगों व खानों का विकास किया जा सकेगा।

जंगल मत काटो

उत्तर-पश्चिमी चीन की जमीन अब निकम्मी हो गई है। किसी जमाने में वह बड़ी उपजाऊ जमीन थी। अब उस जमीन में सैंकड़ों फुट गहरी दरारें पड़ गई हैं। इस जमीन में जो तत्व था उसे नदियां बहा ले गईं। चीन की पीली नदी हर साल २५००००००००० टन मिट्टी बहा कर समुद्र में ले जाती है। मिट्टी में पानी सोखने की ताकत नहीं रही। धरती पर पानी नहीं टिकता। हायरे धरती का भाग्य! —यह जगलों के काटने से हुआ!!

मेसोपोटामिया की टाइग्रिस नदी दूर दूर से बहाकर मिट्टी लाती थी। जगल काटने से इस नदी का तल बढ़ता गया। पानी इधर उधर बहने लगा। बेबिलोन और असीरिया के साम्राज्य की बाढ़ से नष्ट हो गये।

सन् १९३९ में मिसिसीपी नदी की बाढ़ से ३८००० वर्गमील जमीन डूब गई। ७५०००० लोगों के घर बरबाद हो गये। १३२००००००००० रुपयों का नुकसान हुआ। अमेरिका के जगलों के कटने के कारण ही तो!

जार्जिया में चालीस साल पहले पानी की एक धारा बही। अब उससे २०० फुट गहरी ३००० एकड़ लम्बी खाई बन गई है। कितने खेत बरबाद हुए होंगे?

१८६१ में मिनेसोटा (अमेरिका) में एक झील बन गई। उसका नाम था लेक कामो। १९०६ में उस झील का बांध टूट गया। और पूरी झील सूख गई। १९२२ में फिर नया बांध बधवाया गया। मगर फिर भी किसान नदी के ऊपरी हिस्सों के जगल काटते रहे। नतीजा हुआ कि झील में पानी की जगह ऊपर यह मिट्टी भर गई और मछलियां घुट-घुट कर मरने लगीं।

भविष्यवाणी

आस्ट्रेलिया प्रवासी ११४ वर्षीय वयोवृद्ध भारतीय भविष्य वक्ता एव ज्योतिषी श्री अमरगगासिंह ने, जिनकी भविष्यवाणियां पिछले दिनों दो बार सही साबित हो चुकी हैं, फिर एक नयी भविष्यवाणी की है कि आगामी १० वर्षों के भीतर ही एक महा विनाशकारी विश्वयुद्ध होगा। भारतीय ज्योतिषी ने गत १० दिसम्बर को भविष्यवाणी की थी कि 'बड़े दिनों' के रोज आधी रात के दो मिनट बाद आस्ट्रेलिया पर सूर्य के धब्बे दिखायी देंगे। उनकी यह भविष्यवाणी सच निकली। इसके पूर्व उन्होंने पुच्छल तारे के प्रकट होने की भविष्यवाणी की थी, वह भी सही निकली अब आपने भविष्यवाणी की है कि आगामी ६० वर्षों तक युद्ध जारी रहेगा जिसके अत में एक विश्व-व्यापी युद्ध होगा। लेकिन अंतिम महा विनाश और कत्लेआम के पूर्व ही ईश्वर सम्पूर्ण व्यक्तियों को इस भूमि से उठा लेंगे।

कलाकार की अनुभूति

लन्दन का चार्ल्सथूल नामक कलाकार द्वितीय महायुद्ध में जापान का बन्दी बना था। जेल में उसे खबर मिली कि लंदन में उसकी पत्नी को लड़की पैदा हुई है। चार्ल्सथूल को अपनी पुत्री का चित्र बनाने की उत्सुकता पैदा हो गई। लेकिन जेल में चित्र बनाने का सामान कहां? वह कलाकार बेचैन हुआ। लेकिन आवश्यकता आविष्कार की जननी है इस कहावत के अनुसार उसका रास्ता निकल आया। उसने रगीन किताबों और उनके चित्रों को उबाल कर रंग तैयार किये एवं अपने बालों से तूलिका। उसके बाद उक्त कलाकार ने एक पंच वर्षीया बालिका का चित्र बनाया। जेल से रिहा होकर जब कलाकार लंदन आया और उसने देखा कि कल्पना द्वारा प्रस्तुत चित्र और उसकी पुत्री में बिलकुल समानता है तो इसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। थूलने बदी गृह में ८७ चित्र बनाये थे। वे सभी लन्दन की कला प्रदर्शनी में रखे गये हैं। थूल से जब उसकी लड़की के चित्र बनाने के रहस्य को पूछा गया तो उसने सिर्फ इतना ही कहा कि मुझे अपनी प्यारी पुत्री का चित्र बनाने की अंतः प्रेरणा मिली थी इसके सिवा मुझे और कुछ नहीं मालूम।

वनस्पति घी के कारखाने

अपने देशमें १९३७ में २६ हजार टन वनस्पति का उत्पादन हुआ और वह बढ़कर १९४५ में १ लाख ३७ हजार टन होगया। लड़ाई में सैनिकों को घी सप्लाई करने की आवश्यकता के कारण सरकार ने २७ और नये कारखाने खोलने के परवाने दिये और इस समय करीब साढ़े चार लाख टन वनस्पति सालाना तैयार होता है। १९४७ में करीब ७५-८० करोड़ का वनस्पति कारखानों में बना—इतना जितने की कि चीनो भी हिंद भरके कारखानों में मिला कर साल भर में नहीं बनी।

हिन्द के १ अरब रुपये लगा कर २ करोड़ ३० लाख मन उत्पादन करने के सबसे बड़े ग्रामोद्योग — घी के ग्रामोद्योग पर वनस्पति के उद्योग ने बहुत बुरा असर डाला है। अधिकतर वनस्पति — ९० फी सदी से भी अधिक—असली घी में मिलावट करने के काम में लाया जाता है। यह मूंगफली और बिनौले के तेल से बनता है। शरीर के लिए इनसे अधिक लाभदायक सरसों, तिल, नारियल और बादाम के तेल होते हैं। इस तरह वनस्पति न घी का काम दे सकता है और न तेल का— यह दोनों को बिगाड़ता है। स्वास्थ्य पर इसका यह बुरा असर पड़ता है कि यकृत की क्रिया बिगड़ने और नपुंसकता का प्रारम्भ होने लगता है।

चोर बाजारी का भारी मुकदमा

युक्तप्रांत में एक बहुत सनसनी खेज मामला सामने आ रहा है। यह लोहे की चोर बाजारी से सम्बन्धित है और उसमें प्रधान अभियुक्त भूतपूर्व स्टील कण्ट्रोलर एम० आर० चारी है। चारी महाशय को डेढ़ लाख रुपये की जमानत पर छोड़ा जा चुका है। श्री चारी के साथ साथ प्रान्त के प्रायः १००० लोहे के व्यापारियों, दलालों एवं गुमाश्तों आदि पर भी अभियोग चलेगा, इनमें से कुछ करोड़ पति व्यापारी भी हैं। उनमें से अनेक गिरफ्तार किये जाकर जमानत पर रिहा किये जा चुके हैं। पुलिस के अनुसार अभियुक्तों ने लोहे की चोर बाजारी करने के लिए जाली फर्मों की एक वृहद् शृंखला बनायी और श्री चारी ने अपने पद का दुरुपयोग करके उन्हें सहायता दी। ये जाली फर्म प्रान्त के ४१ नगरों में स्थित बताये जाते थे, उनमें से ६२ कानपुर में, २२ आगरा में, ५ लखनऊ में, ९ मेरठ में, ६ मुजफ्फर नगर में, ७ गाजियाबाद में तथा ५ हाथरस में थे। श्री चारी इन फर्मों को लोहे के परमिट दिया करते थे और चारी की सहायता से लोहे के चोरबाजार से इन फर्मों ने ३० करोड़ रुपये से अधिक का लाभ किया और अवैध लाभ होने के कारण उसका आयकर भी सरकार को नहीं दिया। इस मामले में पुलिस ने कई गाड़ियां भर कागजात पकड़े हैं, जिनकी परीक्षा के लिए इनकमटैक्स कर्मचारियों के एक पूरे दल को महीनों परिश्रम करना पड़ा है।

महंगा हिन्दीसाहित्य सम्मेलन

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में जो हिन्दीसाहित्य सम्मेलन का ३५ वां अधिवेशन हुआ उसमें २५००० रुपये पण्डाल बनाने में खर्च हुए, ११००० रु० 'देवता' नाटक के आयोजन में। पहले दिन के कवि सम्मेलन में ६००० रुपये खर्च हुए। बम्बई के कवियों को बुलाने के लिए २८५ रुपये टैक्सी का भाड़ा दिया गया। पूरे सम्मेलन में १॥ लाख के ऊपर खर्च हुआ।

शत्रुओं से भारत की रक्षा का प्रश्न

[ले०—एक देशवासी]

अब तक भारत की रक्षा की चिन्ता ब्रिटिश सरकार करती थी। अब हमें स्वयं चिन्ता करनी है। पाकिस्तान के कारण यह समस्या और भी विकट बन गई है। इस लेख में इस गभीर समस्या के विविध पहलुओं पर विचार किया गया है।

आदि काल से प्रत्येक राष्ट्र के लिये रक्षा का प्रश्न सर्व प्रथम रहा है। जिस देश ने इस ओर समुचित ध्यान दिया है, वही विदेशी आक्रमणकारियों से अपनी रक्षा कर सका है। इस दिशा में थोड़ी सी उपेक्षा करने पर बड़े से बड़े साम्राज्य भी खण्डों में विलीन हो गये। इस उपेक्षा का फल भारत एक हजार से अधिक वर्ष भोग चुका है। गत १५ अगस्त से भारत को पुनः स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है; परन्तु इस नवजात स्वतन्त्रता पर अभी से संकट के घनघोर बादल घिर आये हैं। ब्रिटिश कूटनीति ने साम्प्रदायिकता के आधार पर देश का विभाजन करके स्वतन्त्रता के प्रभात से ही चिरकालीन गृहयुद्ध का विष वृक्ष बो दिया है। अभी फ्रांस और पुर्तगाल की दो विदेशी सत्तायें भारत भूमि पर बनी हुई हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के कारण भी भारत या अन्य किसी भी देश को वर्तमान क्षुब्ध वातावरण में किसी भी समय युद्ध में फंसना पड़ सकता है। इसलिये भारत की रक्षा व्यवस्था को दृढ़ बनाने के लिए अल्पकालीन और दीर्घकालीन रक्षा-योजनाओं को कार्यान्वित करना आवश्यक है।

पाकिस्तान से संघर्ष

काश्मीर युद्ध के रूप में भारत और पाकिस्तान का अप्रत्यक्ष संघर्ष प्रारम्भ हो गया है, जो सुरक्षा परिषद में समझौता न होने की स्थिति में खुले तौर पर शीघ्र ही अधिक उग्र रूप धारण कर सकता है। पाकिस्तान में वर्तमान नेतृत्व के बना रहने पर इस संघर्ष के सर्वथा समाप्त हो जाने की आशा करना एक बड़ी राजनैतिक भूल सिद्ध होगी। इसलिए भारत को स्थायी रूप में पाकिस्तान से सचेत रहने की आवश्यकता है। पाकिस्तान के धर्मान्ध नेताओं ने 'इस्लाम खतरे में है' आदि नारों तथा तमाम भारत पर मुस्लिम शासन जमाने के सुखद स्वप्न दिखलाकर वहां की जनता को एक प्रकार से धर्मयुद्ध के लिए पागल बना दिया है। एशिया के मुस्लिम राष्ट्रों में भारत के विरुद्ध निरन्तर विषैला प्रचार किया जा रहा है और ईरान व अरब राष्ट्रों की स्वयंसेवक सेनायें किसी भी दिन भारत भूमि पर दृष्टिगोचर होने लग सकती हैं। पाकिस्तान में यथाशीघ्र पूर्ण शक्ति के साथ सैनिकीकरण और शस्त्रीकरण किया जा रहा है। श्री लियाकतअली खां ने हाल ही किसी भी स्थिति में काश्मीर को भारत में न जाने देने की घोषणा करते हुए मुसलमानों और विशेषतया पठानों का युद्ध के लिए आह्वान किया है। काश्मीर की तमाम सीमा पर लाखों सशस्त्र पठान एकत्रित हैं और उनमें से ५०००० से अधिक इस समय भी युद्ध में भाग ले रहे हैं। इस निश्चित भावी युद्ध से रक्षा के लिए भारत की सशस्त्र सेना और जनता को तैयार करने की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि यह संकट किसी प्रकार टल भी जाय, तब भी भारत को सर्वतोमुखी प्रथम श्रेणी का सैनिक राष्ट्र बनाने की योजना को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अहिंसा के सिद्धान्तों से किसी राष्ट्र की स्वतन्त्रता की रक्षा न पहिले कभी हुई है और न भविष्य में होने की आशा है।

ब्रिटिश शासन में रक्षा व्यवस्था

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने भारत सहित तमाम साम्राज्य की रक्षा के लिए एक अभूतपूर्व सामूहिक रक्षा प्रणाली का आयोजन किया था। उत्तर में जहां जिब्राल्टर, माल्टा, साइप्रस, मिश्र, फिलस्तीन, ईराक, ईरान, अफगानिस्तान, सिक्यांग और यांग्टिसी नदी की घाटी तक भारत की रक्षा के लिए शृंखला बद्ध कूटनीतिक या सैनिक रक्षापंक्ति खड़ी की गयी थी, वहां दक्षिण में अदन, पेरिम, स्कोतरा, मारिशस, लंका, क्रिसमस, काकोस, द्वीपसमूह, सिंहापुर और हांगकांग तक ब्रिटिश अड्डे स्थापित किये गये थे। इस पंक्ति के साथ साथ अटलांटिक, दक्षिणी अफ्रीका और आस्ट्रेलिया में नौसैनिक तथा हवाई अड्डों की स्थापना करके वास्तव में एक अत्यन्त अद्भुत रक्षा व्यूह की रचना की गयी थी। स्वयं भारत में भी ब्रिटेन ने स्वाभाविक भौगोलिक सिस्तान—डुरेण्ड रक्षा पंक्ति पर पहुंच कर भारत की भौगोलिक एकता स्थापित करके रक्षा की दृष्टि से अत्यन्त बुद्धिमत्ता का कार्य किया। पाकिस्तान की स्थापना से यह प्राकृतिक रक्षापंक्ति अब भारत के हाथ से निकल गयी है और अब भारत और पाकिस्तान के बीच दोनों ही ओर संयुक्त राष्ट्र अमरीका और कनाडा के समान अस्वाभाविक सीमा रह गयी है। ब्रिटेन से भारत का कुछ समय बाद औपनिवेशिक सम्बन्ध विच्छेद हो जाने पर भारत इस सामूहिक रक्षा व्यवस्था से वंचित हो जायेगा और विस्तृत स्थल सीमाओं के अतिरिक्त विस्तृत समुद्र तट की रक्षा का भार भारत पर आ पड़ेगा।

भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा

सिन्ध नदी के डेल्टे से लेकर उत्तर में गिलगित तक भारत की प्राकृतिक सीमा पाकिस्तान में पड़ती है। आर्यों के आगमन से लेकर ब्रिटिश शासन की स्थापना तक अधिकांश आक्रमणकारी इसी मार्ग से भारत में प्रविष्ट होते रहे हैं और आज भी स्थल आक्रमण का सबसे अधिक खतरा इसी दिशा से है। वास्तव में इस सीमा की रक्षा के लिये भारत पाकिस्तान की संयुक्त व्यवस्था हो या पारस्परिक सद्भावना अथवा सैनिक कार्रवाई द्वारा पुनः भारत की राजनैतिक एकता स्थापित करके इस सीमा की रक्षा को दृढ़ बनाया जाय।

इस समय भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा पर गुजरात, काठियावाड़, राजस्थान के जोधपुर और बीकानेर आदि राज्य, पूर्वी पंजाब तथा काश्मीर स्थित हैं। पाकिस्तान की वर्तमान युद्ध मनोवृत्ति से इस तमाम सीमा पर खतरा विद्यमान है, जो खुला युद्ध छिड़ने की स्थिति में किसी भी समय आम हमले का रूप धारण कर सकता है। भारत के लिये इतने विस्तृत क्षेत्र में मेजिनो या सिगफ्रेड पंक्तियों जैसी रक्षा पंक्ति का निर्माण कम से कम आज की अवस्था में सर्वथा असम्भव है, परन्तु इस सीमा की रक्षा के लिये सैनिक छावनियों का जाल बिछाया जा सकता है। इस क्षेत्र की रक्षा के लिये सतर्क सैनिक कमान की स्थापना की जाय और आधुनिकतम शस्त्रों से सुसज्जित सेनायें रखी जाय। इस पर दिन प्रति दिन भारतीय ग्रामों पर होने वाले छुटपुट आक्रमणों, डकैतियों और पशु अपहरण के मामलों को रोकने के लिये गश्ती सैनिक टुकड़ियां तैनात की जाय। इस क्षेत्र की जनता को छापा मार युद्ध की सैनिक शिक्षा दी जाय और शस्त्र रखने पर किसी प्रकार की रोक न हो।

भारत पर आक्रमण के तीन मार्ग

भारत की उत्तर पश्चिमी प्राकृतिक रक्षा पंक्ति बाह्य और आन्तरिक दो पर्वत मालाओं से मिल कर बनी है, जिनमें कई दर्रे हैं। आक्रमणकारी बाह्य पर्वतमाला को पार करके उत्तरी मार्ग से काश्मीर चम्बा और कांगड़ा की घाटियों की ओर अग्रसर हो सकता है या आन्तरिक पार्वत्य पंक्ति को पार करके पंजाब तथा दिल्ली की ओर बढ़ सकता है या सिंध नदी की घाटी के साथ साथ होता हुआ राजस्थान मरुस्थल को पार्श्व में छोड़ कर गुजरात होकर मध्य प्रान्त और दक्षिण में प्रवेश कर सकता है। इस प्रकार पश्चिमी पाकिस्तान से भारत पर उपरोक्त तीन दिशाओं से आक्रमण किया जा सकता है।

उत्तरी सीमा और काश्मीर

यद्यपि ब्रह्मपुत्र घाटी के पश्चिम से लेकर हिन्दुकुश पर्वतमाला के पूर्वी भाग तक हिमालय की दुर्गम पार्वत्य सीमा से विशाल पैमाने पर सैनिक कार्रवाई संभव नहीं है, परन्तु इस क्षेत्र में स्थित रियासतें

भारत के रक्षा मन्त्री

स० बलदेवसिंह

भारत की रक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और इन पहाड़ी रियासतों—काश्मीर, जम्मू, पंजाब के पहाड़ी राज्य, गढ़वाल, नेपाल और सिक्कम को किसी भी मूल्य पर भारत की रक्षापंक्ति में रखना आवश्यक है। काश्मीर के पश्चिमी भाग से इन तमाम पहाड़ी घाटियों में मार्ग जाते हैं। इस पहाड़ी प्रदेश का एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण रहस्य यह है कि भारत की प्रथम रक्षापंक्ति भंग हो जाने तथा शत्रु के मैदानी भाग में घुस आने पर इस पहाड़ी प्रदेश में पीछे हटी हुई सेना दक्षिण की सुरक्षित सेना तथा नौसेना के साथ मिल कर प्रभावशाली रक्षात्मक कार्रवाई कर सकती है और शक्ति प्राप्त होने पर पीछे से शत्रु पर हमला कर सकती है। काश्मीर या नेपाल के किसी भी भाग का पाकिस्तान के हाथ पड़ जाना भारत के लिये अत्यन्त घातक सिद्ध होगा।

उत्तर-पूर्वी सीमा

विभाजन के बाद इस सीमा की रक्षा की स्थिति भी बड़ी डावाडोल हो गयी है। पश्चिमी बंगाल और पूर्वी बंगाल के बीच की सीमा सर्वथा अस्वाभाविक और अभौगोलिक है। पाकिस्तान से युद्ध छिड़ने पर न्यूनाधिक शक्ति के अनुपात से दोनों देशों को एक दूसरे

के कारण उत्पन्न हो सकता है। प्राचीन इतिहास काल से लेकर ब्रिटिश सत्ता की स्थापना तक ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी से होकर ब्रह्म देश आदि की मंगोल जातियां भारत के आसाम प्रदेश में प्रविष्ट होती रही हैं परन्तु आसाम और बंगाल के पार्वत्य तथा जंगल युक्त प्रदेश ने इनको आगे बढ़ने से रोक दिया है। १९४४ में भारत पर जापानी आक्रमण के समय मनीपुर राज्य से लेकर चटगांव तक का तमाम सीमावर्ती प्रदेश युद्ध क्षेत्र में परिवर्तित हो गया था। भारत सरकार को आसाम की रक्षा के लिये यथाशीघ्र रेल तथा सड़क यातायात की व्यवस्था करनी चाहिये। वास्तव में इस क्षेत्र में बर्मा के सहयोग से ही पाकिस्तान की आक्रमणात्मक गतिविधियों पर नियंत्रण करना सुगम हो सकेगा। पाकिस्तान का बर्मा के अराकान के प्रदेश पर भी काफी दिनों से दांत है। बंगाल की खाड़ी और हिन्द महासागर में किसी भी विदेशी नौसेना से भारत और बर्मा की रक्षा के लिये उपरोक्त दोनों राष्ट्रों में सैनिक सन्धि होना आवश्यक है।

इन सीमाओं के अतिरिक्त भारत की आन्तरिक रक्षापंक्ति भी है जो चिरकाल से आक्रमणकारी के दक्षिणी प्रायद्वीप के आंतरिक भाग में अग्रसर होने में बाधा डालती रही है। इस पंक्ति को विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर्वत बनाते हैं। इस पंक्ति में नर्मदा और ताप्ती नदी की घाटियों के अतिरिक्त कुछ अन्य दर्रे भी हैं, जहां आधुनिक रक्षापंक्तियों का निर्माण करके उत्तर से शत्रु सेना को दक्षिण की ओर बढ़ने से सहज ही में रोका जा सकता है। इस पंक्ति के पीछे बिहार में आवश्यक कच्चा माल होने के कारण युद्ध के लिए आवश्यक भारी उद्योगों की स्थापना भी की जा सकती है।

भारत का विस्तृत समुद्र तट

भारत की वर्तमान नौसैनिक तथा हवाई शक्ति को देखते हुए भारत का विस्तृत समुद्रतट एक प्रकार से सर्वथा अरक्षित है। ब्रिटिश सत्ता के हट जाने पर भी दो विदेशी राष्ट्रों —पुर्तगाल और फ्रांस के उपनिवेश इस तट पर स्थित हैं। इनका अन्त करने के लिये भारत को यथाशीघ्र मित्र राष्ट्र संघ में प्रश्न उठाना चाहिये और वहां इस समस्या का समाधान न होने पर यथा समय सैनिक कार्रवाई करनी चाहिए। इन प्रदेशों के जन—आंदोलनों में भारत को सक्रिय सहायता देनी चाहिये। इस विस्तृत तट की रक्षा के लिए शक्तिशाली नौ सैनिक अड्डों की स्थापना और एक जबरदस्त यातायात तथा जंगी बेड़े के निर्माण की आवश्यकता है। भारत की नौ सेना इस समय शैशवावस्था में ही है और उसके निर्माण में भी अपार धन राशि और काफी लम्बा समय लगेगा। अतः भारत सरकार को जहाजों के निर्माण और नौ सैनिक शिक्षा का कार्यक्रम यथाशीघ्र आरम्भ करना चाहिए। भारत के पास इस समय केवल दो लाख टन से कुछ अधिक व्यापारिक जहाज हैं, जो इतने बड़े देश के लिए अत्यंत लज्जास्पद है। इससे भारत को करोड़ों रुपये की आर्थिक हानि प्रति वर्ष उठानी पड़ती है। समुद्र तट की रक्षा के लिये गुजरात और काठियावाड़ के छोटे बन्दरगाहों को उन्नत किया जाय। मारिशस, लंका में त्रिंकोमाली और अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में भारत के नौ सैनिक तथा हवाई अड्डों की स्थापना आवश्यक है। इसके लिए ब्रिटेन और लंका की सरकारों से सम्पर्क कायम किया जाय।

भारत का गृह मोर्चा

दीर्घकालीन परतन्त्रता, आध्यात्मिकता प्रधान-संस्कृति और वर्तमान युग में अहिंसावाद के प्रभाव ने इस देश में क्षात्र धर्म का प्रायः एक प्रकार से लोप ही कर दिया है। जातीयता के कारण भी ब्राह्मण, वैश्य तथा शूद्र जातियां अत्यन्त प्राचीन इतिहास काल से युद्ध से विमुख रही हैं। इस प्रकार देश की तीन चौथाई से अधिक जनता का रक्षा कार्य से तटस्थ रहना देश हित की दृष्टि से अत्यन्त घातक है। भारत में मुसलमानों की विजय का प्रमुख कारण यही था और आज भी इसी कमजोरी से हम पाकिस्तान के आक्रमण से भयभीत हैं, अन्यथा इन साधनों से सम्पन्न ३०-३२ करोड़ जन संख्या के राष्ट्र पर मध्यपूर्व के सब मुस्लिम देश मिलकर भी आक्रमण करने का साहस नहीं कर सकते। इसीलिये भारत की तमाम वयस्क जनता को अनिवार्य रूप में दो वर्ष सैनिक शिक्षा देने की आवश्यकता है। गृह मोर्चे की दृढ़ता के बिना प्रबल सशस्त्र सेना भी आज कल के दीर्घकालीन युद्धों में किसी देश की रक्षा नहीं कर सकती। विगत महायुद्ध में गृह मोर्चे की दृढ़ता के कारण ही ब्रिटेन और रूस युद्ध में टिके रहे और फ्रांस का कुछ दिनों के युद्ध के बाद ही पतन हो गया। भारत के वर्तमान शस्त्र कानून को रद्द करके अधिकतम जनता को पाकिस्तान की तरह शस्त्र रखने का अधिकार दिया जाय। अहिंसा से स्वतन्त्रता की रक्षा नितान्त असम्भव है।

तीनों सेनाओं का निर्माण

विभाजन के बाद भारत की जल, स्थल तथा हवाई सेना की शक्ति काफी कम हो गई है। इस समय ब्रिटेन की ९ लाख, फ्रांस की १० लाख तथा रूस और अमरीका की पचास—पचास लाख से भी अधिक स्थल सेनाओं को देखते हुवे भारत में केवल अढ़ाई लाख सेना का होना उसकी सुरक्षा के लिये पर्याप्त नहीं समझा जा सकता। स्थायी शान्ति होने तक भारत में कम से कम १० लाख स्थायी सेना तथा इससे दुगुनी रिजर्व या नागरिक गृह रक्षक सेना होनी चाहिये। भारत के युवकों की अभिरुचि नौ सेना तथा हवाई सेना की ओर बहुत कम है। इसी कमी को शीघ्र दूर किया जाना चाहिये। इन दोनों सेनाओं का भारतीय करण यथाशीघ्र किया जाय। सेनाओं की भर्ती बिना किसी प्रकार के जातीय भेदभाव के श्रमिक और कृषक वर्गों में से ही अधिकतर की जानी चाहिये। सेना के पुष्ट युवक प्राप्त करने के लिये ग्रामों और शहरों में शारीरिक व्यायाम की ओर अधिक ध्यान दिया जाय।

युद्ध उद्योगों की स्थापना

रक्षा की दृष्टि से भारत की सब से बड़ी कमजोरी यहां युद्ध उद्योगों का अभाव है। विगत युद्धकाल में छोटे छोटे शस्त्रों के निर्माण के लिये कुछ सरकारी कारखाने स्थापित हुवे हैं, परन्तु टैंक, मोटर, वायुयान तथा नौ सेना के युद्धपोतों के निर्माण का कार्य अभी तक यहां प्रारम्भ भी नहीं हुआ है। राष्ट्रीय सरकार को इस उद्योग को सुविधानुसार अवश्य प्राथमिकता देनी चाहिये। रक्षा तथा सर्वतोमुखी विकास के लिये वैज्ञानिक शिक्षा तथा विशाल वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं की स्थापना अवश्यक है। अणु शस्त्र ने जापान की सशस्त्र सेनाओं को कुछ घण्टों में ही आत्म समर्पण करने के लिये बाध्य कर दिया था। आज कल संसार में घातक अस्त्रों के निर्माण की जो होड़ लगी हुई है, इसके सर्व संहारक प्रभाव से बचने के लिये भारत के वैज्ञानिक अनुसन्धान कार्य में अग्रसर हों।

वास्तव में, शक्ति से ही सर्व सुख हो सकते हैं तथा स्वतन्त्रता की रक्षा की जा सकती है। इसलिये भारत को अपनी शक्ति बढ़ाने का अवसर नहीं चूकना चाहिये।

विशेष कमी—अवसर मत चूकिये—आज ही मगावे ३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें

पति-पत्नी जीवन(सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनाने वाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १), सफल सिद्ध—मन चाहा कार्य सिद्ध करना १।), व्यौपारिक तेजी-मन्दी—तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त कर हजारों रुपया पैदा कीजिये १।), हिन्दी अंग्रेजी शिक्षा—घर बैठे अंग्रेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखलो १), हुस्न पैरिस—केवल पति-पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १॥), ६ पुस्तकों के सैट का मूल्य केवल ३॥) पोस्टेज पैकिंग ॥) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, कैलाश (१) अलीगढ़ सिटी

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम ३) डाक खर्च पृथक।

हिमालय कैमिकल फार्मेसी हरद्वार।

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी और उधर उस के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विकृत होकर अपकीर्ति के रूप में फैल रही थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत होगया और चम्पा ने जमींदारी का काम सभाल लिया।

चम्पा के जमींदारी संभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बड़े भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बंटवारे पर सहमत कर लिया और एक दिन माधवकृष्ण को बुलाकर यह प्रस्ताव पेश भी कर दिया। बेचारा भोला माधवकृष्ण इस अकल्पित प्रस्ताव को सुन कर भौचक रह गया। इन्हीं दिनों बिहार भूकम्प के कार्य में सेवा करने के लिये आये हुए श्री रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत परिचित हो गये थे।

[गतांक से आगे]

(६)

जमींदारी के बटवारे के प्रस्ताव से माधवकृष्ण को दुःख तो बहुत हुआ, परन्तु उसके मन में उदासीनता से अधिक कोई तीव्र भाव पैदा नहीं हुआ। रमा ने तो एक बार यह बात उठाई थी कि यदि बटवारा होना ही है, तो वह न्यायपूर्ण होना चाहिये। इसके लिये मुस्तैदी से मामले की पैरवी करनी चाहिये। परन्तु माधवकृष्ण का रुख देखकर वह भी चुप हो गयी। माधवकृष्ण का कहना था कि मैं बड़े भाई से टक्कर नहीं लेना चाहता, वह हमारा हिस्सा समझकर जो कुछ भी दे देंगे, उससे हम दोनों का गुजारा चल जायगा, फिर हम सिर-दर्दी क्यों करें।

प्रत्यक्ष में सरजानपुर की जमींदारी के बंटवारे का बेलूर की जमींदारी पर कोई असर नहीं पड़ता था, क्योंकि वह दोनों पहिले ही विभक्त हो चुकी थीं। परन्तु वस्तुतः चम्पा के लिये इस समय विकट समस्या खड़ी हो गयी थी। विभक्त हो जाने पर दोनों जमींदारियां परस्पर ऐसी गुथी हुई थीं कि उनमें हर समय संघर्ष पैदा किया जा सकता था। राधाकृष्ण-सिंह की सल्तनत के नये मैनेजर बाबू बजरंगलाल ने शासन की बागडोर सम्भालते ही सीमा-प्रान्त पर हलचल मचा दी। कहीं चम्पा की जमीन दबाने का उद्योग होने लगा, किसी जगह उसके किसानों को डराया धमकाया गया और यह उद्योग तो प्रायः सारे सीमा-प्रान्त पर शुरू हो गया कि उसके मौरूसी काश्तकारों को फांसा जाय। इन समाचारों से चम्पा बहुत विक्षुब्ध हो गई। सारी परिस्थिति पर विचार करने के लिये चम्पा ने माधवकृष्ण और रमा को आदमी भेजकर बुलवा लिया। उनके आने के दूसरे दिन ही रामनाथ पटने से आ पहुंचा था। उस दिन दोपहर के समय भोजन के बाद जब घर के सब लोग परामर्श के लिये बैठक में बैठे, तब रामनाथ भी उनमें सम्मिलित था। माधवकृष्ण ने विस्तार से देवकी द्वारा युद्ध-घोषणा का पूरा वृत्तान्त सुनाया। उसे सुनकर चम्पा और सरला को बहुत दुःख हुआ, और क्रोध भी हुआ कि जब उनकी ओर से कोई विरोध-युक्त कार्य नहीं किया जाता तो दूसरी ओर से अकारण झगड़ा क्यों खड़ा किया जाता है। रामनाथ की तबीयत बहुत ही निःसंकोच और मिलनसार थी। उसे अपरिचित समाज में घुल जाने और गहरा परिचय प्राप्त करने में कुछ भी देर नहीं लगती थी। चम्पा के परिवार में बस १५ दिनों में वह बिल्कुल घुल-मिल गया था। प्रतीत होने लगा था कि जैसे जन्म से वह इस परिवार का सदस्य रहा हो। परिवार में सबसे अधिक निःसंकोचता पैदा करने वाली चीज़ रसोई होती है। तकल्लुफ भी नहीं होता है, और बेतकल्लुफी भी नहीं। आप किसी परिवार की रसोई में बनी हुई वस्तुओं की प्रशंसा कर दीजिये, फिर अपनी पसन्द की चीजों की खुली घोषणा करके फर्माइशी चीजें बनवा लीजिये और इनके बनने के समय रसोई घर में जाकर घर की मालकिन की तारीफ और खाने की तारीफ कर दीजिये, आप किसी भी भले परिवार के अन्तरङ्ग सदस्य बन जावेंगे। यह परिवार का मर्मस्थल रामनाथ इस कला में स्वभाव से ही निपुण था। वह किसी विशेष उद्देश्य को लेकर इस रीत से नहीं चलता था, यह उसकी प्रकृति का एक हिस्सा था कि वह जहां भी जाता था, वहां बहुत शीघ्र निस्संकोच भाव पैदा करके परिवार के अन्तस्तल में घुस जाता था। यही कारण था कि रामनाथ ने उस दिन की परामर्श-सभा में परिवार के सदस्य की भांति हिस्सा लिया।

विरोधी-आक्रमण के सम्बन्ध में चम्पा किंकर्तव्यविमूढ़ थी और माधवकृष्ण हथियार डाल चुका था। स्वभावतः विचार की बागडोर रामनाथ के हाथ में आगयी। सब समाचार सुनकर रामनाथ ने यह उत्तर दिया 'कि चुप बैठे रहने से काम नहीं चलेगा'। जब तक ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया जायेगा, तब तक जमींदारी की रक्षा नहीं की जा सकती। माधवकृष्ण ने अपने सम्बन्ध में आपत्ति उठाते हुए कहा—

'भाई, मुझ से तो यह काम नहीं हो सकेगा। मैं संसारभर से लड़ सकता हूं, परन्तु बड़े भैय्या से नहीं लड़ सकता। [illegible] है, अब मुकाबला कैसे कर सकूंगा'।

रामनाथ ने आपत्ति उठायी—

'माधव बाबू, आपकी यह दलील बिल्कुल लचर है, यह तो धर्म-युद्ध है। अपनी और भाभी की सम्पत्ति की रक्षा के लिये आपको भाई से लड़ने के लिये भी तैयार रहना चाहिये अन्याय करना पाप है, तो अन्याय के सामने दबना भी तो पाप है। क्यों सरला जी, इस विषय में आप मुझसे सहमत हैं'।

सरला को रामनाथ की वीरतापूर्ण बात पसन्द आई उसने चम्पा की ओर देख कर कहा—

'क्यों माभी, क्या लिबारीजी ठीक नहीं कहते? मैं तो समझती हूं कि चाचाजी को उदासीन नहीं होना चाहिये।'' चम्पा ने माधवकृष्ण की ओर देखा। मानो पूछ रही है कि तुम्हारी क्या राय है? माधव ने गम्भीर भाव धारण करते हुए उत्तर दिया—

'मैं यह तो नहीं कहता कि इस सम्बन्ध में कुछ भी न करना चाहिये। मेरा कहना तो केवल इतना है कि मुझ में बड़े भैया से लड़ने का साहस नहीं है। उन्होंने बचपन से मुझे बच्चा समझ कर पाला है, और मैंने उनका पिता के समान आदर किया है। अब मुझसे यह नहीं हो सकेगा, कि मैं उनका मुकाबला करूं। इसे चाहो तो मेरी कमजोरी समझ सकते हो। अगर बंटवारे में वह मुझे कुछ भी न दें, तब भी मैं उनसे लड़ने की शक्ति नहीं रखता।' रमा ने बात काटते हुए कहा—

'परन्तु यह झगड़ा तुम्हारे भैय्या जी का नहीं है, यह तो मेरी जेठानीजी का खड़ा किया हुआ है।'

माधवकृष्ण ने उत्तर दिया—''मेरी दृष्टि में भाई और भाभी दोनों एक हैं। मैं दोनों में से किसी से भी नहीं लड़ सकता?'

रमा ने पूछाः— 'तब हम लोगों का जीवननिर्वाह कैसे होगा?'

अगर ऐसा वक्त आ ही पड़ा, तो मेहनत मजदूरी करके गुजारा कर लेंगे।'

इसके बाद बातचीत का सूत्र रामनाथ ने अपने हाथ में लिया। उसने कहा—

'माधव बाबू, क्षमा कीजियेगा, मैं जरा साफगो का आदमी हूं।' आप मुझे बहुत कमजोर आदमी मालूम होते हैं। भाई हो या बाप, जो अन्याय करे, उसका मुकाबला करना ही चाहिये और फिर यह भी तो सोचिये कि आपके साथ रमा बहिन को भी तो मुसीबतों में फसना पड़ेगा। आपको यह अधिकार नहीं है कि जिसे आपने जीवन-संगिनी बनाया है, उसे कंगाली का जीवन बिताने के लिये मजबूर करें। खैर, इसे भी जाने दीजिये। इस समय तो बटवारे की इतनी चिन्ता नहीं है, जितनी भाभी की जिमींदारी के संरक्षण की। आपके भाई साहब का या उनके कारिन्दों का यह अत्याचार कैसे सहा जा सकता है? इसकी रोक-थाम तो होनी ही चाहिये।

सरला सहमति प्रगट करती हुई बोली—'चाचा जी! आप ऐसी उदासीनता प्रगट न करें। अन्याय किसी ओर से हो, उसे सहना पाप है, और यह भी तो सोचिये कि ऐसे कामों में हमारा सहायक आपके सिवाय कौन है।'

इससे पूर्व कि माधवकृष्ण कुछ उत्तर देता, रामनाथ बीच में बोल उठा—

'सरलाजी! आप इतनी चिन्ता न करें। जब से मैं बेलूर आया हूं, मैंने आपकी भाभी को अपनी माता बना लिया है, अब से मैं इन्हें माताजी कहा करूंगा। मैं इनका बड़ा बेटा बन गया हूं। माधव बाबू को कुछ दिन आराम करने दीजिये। रामनाथ माताजी की आज्ञानुसार सब जिमींदारी के सम्बन्ध में सब काम किया करेगा। क्यों माधव बाबू, आपको इसमें कोई शिकायत तो नहीं होगी?'

रामनाथ की इस अद्भुत स्पष्टवादिता से माधवकृष्ण कुछ आश्चर्यचकित सा होकर चम्पा की ओर देखने लगा। चम्पा रामनाथ की बातों से स्वयं कुछ दुविधा में पड़ गई थी, उसमें अपनापन भी था और कड़वापन भी। अपनापन चम्पा के लिये था और कड़वाहट माधवकृष्ण के लिये। चम्पा ने कड़वाहट के असर को दूर करने के लिये कहा—

'यह तो तुम्हारी कृपा ही है तिवारी जी, कि तुम हम लोगों से इतनी अपनापन बरतते हो। यह तुम्हारे लायक ही है कि तुम बेटे का कर्त्तव्य पालन करने का संकल्प रखते हो। उस दशा में तुम्हें ध्यान रखना होगा कि माधव भैय्या तुम्हारे चचा हैं। तुम्हें उनकी सलाह से ही काम करने होंगे।

'हां हां क्यों नहीं, माधव बाबू मेरे बुजुर्ग तो हैं ही। तुम्हें आगे रख कर ही तो सब काम करूंगा। बात यह है माता जी कि हमारे देश में स्त्रियों पर बहुत अत्याचार होते हैं। उन्हें शिक्षा नहीं दी जाती। (सरला की ओर देख कर) कुछ देवियों को छोड़ दीजिये जो सुशिक्षिता और समझदार हैं। बाकी सब शिक्षा के अभाव से बाहर के संसार का व्यवहार चलाने में असमर्थ रहती हैं। तब उन्हें लोग मूर्ख और नासमझ कहने लगते हैं, कैसा घोर अन्याय है। सरला जी प्राय इस अन्याय पर रोष प्रकट किया करती हैं। मैं उनसे पूरी तरह सहमत हूं। मैंने भी निश्चय कर लिया है कि अपनी मातृभूमि की सेवा के साथ-साथ हिन्दू स्त्रियों की सेवा भी अपने जीवन का उद्देश्य समझूंगा। उन पर किये जाने वाले अन्यायों के हटाने में अपनी जान दे दूंगा।'

यह प्रभावशाली व्याख्यान देकर रामनाथ ने चम्पा और सरला की ओर जिज्ञासा की दृष्टि से देखा। उसने देखा कि उसके व्याख्यान का काफी असर हुआ है। दोनों की आंखों में उसे अपने लिये कृतज्ञता और आदर की भावना दिखाई दी।

हम देख आये हैं, कि किसी दूसरे को अपने से बड़ा स्वीकार करना रामनाथ की प्रकृति के विरुद्ध था। माधवकृष्ण को बड़ा मानना पड़ेगा, यह बात उसे चुभ-सी रही थी। दिल को हलका करने के लिये वह माधवकृष्ण की ओर उन्मुख होकर बोला—

'चचा घबराओ मत। आप बैठे हुक्म देते रहो। मैं सब ठीक कर दूंगा। करबानपुर' वालों को पता लग जायेगा कि किसी से वास्ता पड़ा है।' इन वाक्यों के शब्दों और कहने के ढंग का माधवकृष्ण पर बहुत प्रतिकूल असर हुआ। माधवकृष्ण को अनुभव हुआ कि जैसे रामनाथ उसका उपहास कर रहा हो। परन्तु बात इतनी ऐसे ढंग से कही गई थी कि यदि माधवकृष्ण नाराज होता, तो उसी की तुनकमिजाजी समझी जाती। वह रूखे स्वर से बोला — अच्छा भाई! तुम लायक भी हो और जवान भी। जो ठीक समझो, करो। मैं भी तुम्हारे साथ हूं।

रामनाथ ने सन्तोष से चारों ओर ऐसे देखा जैसे विजयी सेनापति रणक्षेत्र को देखता है, मानो उसने एक मुहिम जीत ली हो। (क्रमशः)

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्तें लिखा लें। मूल्य २॥)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (६२)
पो० बेगोंसराय (मुंगेर)

प्रेम दूती

श्री विराम जी रचित प्रेम काव्य। सुरुचिपूर्ण शृंगार की सुन्दर कवितायें। मू० ।॥) डाक व्यय पृथक।

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अद्भुत दावक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार

पिकाक दंतमंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के दुकानदार से मांगिये।

ऐजेन्टों की जरूरत है

ऐनसा ट्रेडिंग कम्पनी
चांदनी चौक, देहली।

७५०० रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं।

आटोजम (विटामिन टानिक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक वोझ बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विटजरलैंड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं पर उसने एक युवती से ब्याह भी कर लिया।

आटोजम के बर्तने से ८० तथा ९० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्ट्रेसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगती हैं। और पर्दा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इसका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाए रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Otogem आटोजम Otogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रक्खा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंगलैंड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। आटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशा में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देखें फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। आटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिए इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य १०) रुपया कर दिया जाएगा। आज ही इसे मंगवाने के लिए आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता—

दी मैकसा लैबोरेटरीज ५७७ बेला रोड
पोस्ट बक्स नं० ४५ (A. B. D.) देहली।

ब्रिटेन की कृषि-परीक्षणशाला का एक दृश्य। इसमें विभिन्न फसलें विज्ञान द्वारा नियन्त्रित सर्द या गर्म आबो-हवा में पैदा की जाती हैं।

ब्रिटिश पार्लमेण्ट (हाउस आफ कामन्स) का नया भवन बन रहा है। फौलादी ढांचे का एक दृश्य।

(ऊपर) बैंक आफ इंग्लैण्ड की स्थापना १६९४ ई० में कुछ व्यापारियों ने की थी। लेकिन अब यह बैंक सरकार की सम्पत्ति बन गया है। डाकू और लुटेरों से बचाव के लिए बैंक की एक तिजोरी चित्र में देखिये।

(बायीं ओर) अमेरिका के बड़े बैंकों ने कोई असमय आकर वाल्ट न खोल सके, उसकी व्यवस्था के लिए विशेष घड़ियां बनाई हैं। बैंक बन्द करते समय इन्हें इस तरह नियन्त्रित किया जाता है कि दूसरे या तीसरे चौथे दिन नियत समय से पूर्व कोई भी बैंक को वाल्ट नहीं खोल सकता। चित्र में एक कर्मचारी ऐसी घड़ियों में नियत समय की व्यवस्था कर रहा है।

(दायीं ओर) उड़ाकों के कभी कभी गलत चाबी पर हाथ रख देने से वायुयान दुर्घटना में ग्रस्त हो जाते हैं अमेरिकन वैज्ञानिक इन चाबियों की आकृति अलग अलग बनाने लगे हैं, जिससे चाबी घुमाने में गलती न हो जाय। चित्र में एक उड़ाका आंखों पर पट्टी बांधे स्पर्श मात्र से विभिन्न चाबियों को पहचान रहा है।

सुन्दर नरगिस अपनी त्वचा को कोमल एवं मृदु रखने के लिये लक्स टॉयलेट साबुन पर निर्भर रहती है!
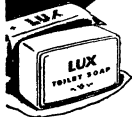
इस सुन्दर फिल्म अभिनेत्री का सौन्दर्य-उपचार लक्स टॉयलेट साबुन है। वह जानती है कि उस की त्वचा को स्वच्छ एवं कोमल रखने के लिये इस की सुगंधि-युक्त मज़ाईदार झाग के समान कोई दूसरा साधन नहीं है। जो अपनी त्वचा को कोमल एवं मनोहर रखने के सदा अभिलाषी हैं, उनसबों के लिये वह लक्स टॉयलेट साबुन के नियमित प्रयोग की सिफारिश करती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

फिल्मी अभिनेत्रियो का सौन्दर्य साबुन

LTS. 173-172 HI

चन्द्रप्रभा वटी

नया खून पैदा करती है। नस नस को स्फूर्ति देती है। शरीर के धातुओं को पुष्ट करती है। कमजोर शरीर में नए रक्त का सचार करती है।

मूल्य १) तोला, ४) छटांक

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी [हरीद्वार]

देहली प्रांत मेरठ कमिश्नरी व रुहेलखण्ड के सोल एजेण्ट — रमेश एण्ड कम्पनी चांदनी चौक देहली। राजपूताना के सोल एजेण्ट — राजस्थान औषध भण्डार, चौड़ा रास्ता, जयपुर। मध्यभारत के सोल एजेण्ट—बृहद् औषध भण्डार, १६ जेल रोड, इन्दौर।

१५०००) की असली घड़ियां तथा रेडियो इनाम

जवा मर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्न दोष, प्रमेह, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट पुष्ट बनता है तथा नित्य के सेवन से कभी बुढ़ापा नहीं आता। मूल्य ४० दिन की खुराक ३॥)। तीन डिब्बे एक साथ मगाने से ६॥।) डाक खर्च माफ। बेकार साबित करने पर ५००) नकद इनाम। हर डिब्बे के साथ इनामी कूपन भेजा जाता है जिनसे आप असली घड़ी, रेडियो साइकिल तथा मोटर साइकिल प्राप्त कर सकते हैं। पेशगी मूल्य भेज कर नाम रजिस्टर करा ले ताकि पछताना न पड़े। एजेंसी नियम मुफ्त मगायें।

पता—श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

आत्मरक्षार्थ आटोमेटिक ६ खानोंवाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिए बड़े काम की है। दागनेपर पिस्तौल के मुंह से आग और धुआं निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥ इंच × ४ इंच और वजन १२ औंस मूल्य ८) और साथ में एक दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों के दाम २) स्पेशल ताम्बे की बनी ९९९ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। बेल्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंगका अतिरिक्त १०)। प्रत्येक आर्डर के साथ एक शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसन्द होने पर दाम वापस

INTERNATIONAL IMPORTERS, P B 199, Delhi.

इन्टरनेशनल इम्पोर्टर्स पो० बाक्स १९९ दिल्ली।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घु घरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी न्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (सन्धन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट —माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी सन्धन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आवेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवेल्टी स्टोर्स पो० ब० नं० ४५ दिल्ली।

General Novelty Stores P B 45,Delhi

सन् १९४८ में क्या होने वाला है

ज्योतिष की विद्या अंधेरी दुनियां में सूरज की रोशनी है। अगर आप भी इस अंधेरी दुनिया में बदलने वाली किस्मत के होने वाले उलट फेर का साफ साफ उतरा हुआ फोटो वक्त से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर किसी दिल पसंद फूल का नाम या पत्र लिखने का समय और साफ साफ अपना पूरा पता फौरन लिख कर भेज दें। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आने वाले बारह माह की तकदीर की तस्वीर लाभ हानि, किस प्रकार से रोजगार मिलेगा, किस व्यापार में लाभ होगा, नौकरी में तरक्की, तबादला, पतन, स्वास्थ्य, बीमारी, देश परदेश की यात्रा, और सन्तान का सुख, किसी से क्या मेलजोल, दिल पसंद सगाई, शादी, जमीन में गड़ा हुआ धन, जायदाद, लाटरी, सट्टा या किसी अज्ञात प्रकार से सुख और धन का मिलना अर्थात कार्ड की तारीख से लेकर कुल साल में पेश आने वाली सब बातों के खुलासे के साथ मासिक वर्ष फल बना कर केवल सवा रुपये [१।)] में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिख देंगे। ठीक न होने पर कीमत वापिस की गारन्टी है। एक बार अवश्य आजमाइश करें।

श्री महावीर स्वामी ज्योतिष कार्यालय, (V A) करतारपुर, जालंधर।

प्रण की होली

(पृष्ठ ८ का शेष)

किया। उसने देखा धन, पैसा और पेट उससे उसको प्यारी बहन को छीन रहे हैं। उसे लगा कि उसके हृदय में से किसी ने टुकड़ा काट लिया हो। वह जाती हुई नीलू की आकृति को देखता रहा और जब वह आकृति आंखों से ओझल हो गई तब वह अपना सिर पकड़ कर बैठ गया।

सायंकाल को जब नीलू आई, तब उसके कपोलों पर पसीने की बूंदे और उसका कोमल देह मुरझा गया था। उसके ओंठ सूख गये थे। बहन की यह स्थिति देख कर उसे अपने टूटे हाथ पर क्रोध आया। उसके नेत्रों में सान्त्वना के बिन्दु चमक उठे। उसने अपनी बहन को हृदय से चिपका लिया।

नीलू एक युवती थी। उसका सौंदर्य उसके शरीर से फूट २ कर निकलता था। वह शीघ्र ही मजदूरों के आकर्षण का केन्द्र हो गई। पहले वह उन सबसे अलग रहती। परन्तु बाद में उसे उनमें मिलना ही पड़ा। अपनी सहेलियों के प्रणय व्यवहार को देख कर उसे ग्लानि होती थी। उसे संसार पर क्रोध आता परन्तु संसार को बदलने के लिये वह कोई ईश्वर तो थी नहीं। सिर्फ मन में जलती रहती था।

परन्तु फिर भी स्त्री थी और वह जवानी में पदार्पण कर चुकी थी। धीरे धीरे उसकी ग्लानि परिवर्तित होती गई और एक दिवस वह स्वयं एक प्रेमिका में परिवर्तित हुई। उसका क्रोध ममता में परिवर्तन हुआ और वह जिस जाल से आंखमिचौनी खेल रही थी उसी से अटक गई।

नारायण सहज ही अपने काम करने की जगह गया। यदि थक गई होगी तो मीठे वचन सुना कर सान्त्वना दूंगा। सोचते सोचते वह उस स्थान पर पहुंचा। उसने देखा — हजारों मजदूर काम कर रहे थे। कोई हुक्का पीने में व्यस्त था और कोई चिलम भरने में। कोई किसी युवती से खेल रहा था और कोई कहीं पत्थर फेंकने में व्यस्त था। हथोड़ों की ध्वनि ताल ताल स तबले की ध्वनि के समान आ रही थी। परन्तु नारायण का मन था कहां — उसकी आंखें अपनी बहन को खोज रही थीं। उसे बड़ा घोर निराशा हुई। उसके पग आगे बढ़े। उसके नेत्र वह सुन्दर मुखड़ा खोजने में व्यस्त थ। कई मजदूरों ने उसकी तरफ देखा और तुच्छता का दिग्दर्शन करते हुए मुंह फेर लिया। जो युवतियां उसको जीतने का प्रयत्न कर चुकी थीं, वे अब उसे 'लूला' कह तिरस्कार करने लगीं। परन्तु नारायण को कहां परवाह थी। उसने भी उन्हें प्रेम भरी निगाहों से ढूंढा — शायद नीलू को पाजाय इस प्रलोभन, से परन्तु उसे वहां से भी खाली हाथ लौटना पड़ा। उसने विचार किया, चौकीदार से पूछा जाय और उसके पग उस ओर मुड़े जिस ओर चौकीदार का मकान था। उसने देखा — और उसके हृदय को बड़ा आघात पहुंचा। उसने ऐसा अनुभव किया कि उसे हजारों मधु मक्खियों ने एक साथ डस लिया हो। हजारों पत्थर एक साथ उस पर गिरे हों। उसके नीचे की धरती खिसकती मालूम होने लगी। उसने नीलू को धर्म से पतित होते देखा। उसने नीलू को राह से भटकते देखा। उसने अपने प्यारी बहन को एक वृद्ध, पापी, शराबी ठेकेदार के पञ्जे में देखा। क्या मालूम कितनी स्त्रियों को वह पतित कर चुका था और उसकी बहन भी पतित होने जा रही थी। उसकी बहन भी उसी खाई में गिरने जा रही थी, जिसमें आजतक अनेक पतिव्रताएं, कुमारिकाएं गिरकर अपना स्वत्व खो बैठी थीं। उसने सोचा और अपने प्रण को धूल में मिलते देखा। उसने अपने प्रण की होली होते देखी। और देखी उसने अपने निश्चय की राख

उसमें चेतना शक्ति का प्रसार हुआ। बूढ़ा नारायण फिर जवान हो उठा। उसके रग रग में शक्ति दौड़ गई। उसका रक्त उबल उठा। उसके पग दौड़ पड़े और उसके टूटे हाथों ने प्रहार किया। चौकीदार लड़खड़ाकर गिर पड़ा। उसके पास कुछ न था। प्रणय

बहुत ही प्राचीन काल में जब कि समाज असभ्य ही था केवल अदल-बदल का ही व्यापार होता था। जैसे - एक शिकारी बाघ की खाल दे कर बकरी या अन्न ही नहीं बल्कि पत्नि भी प्राप्त कर सकता था। और यदि किसी को बाघ की खाल की आवश्यकता न होती तो कुछ प्राप्त नहीं हो सकता था।
अनिश्चित भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा होने पर भी ऐसी अवस्था मे बचत करना न तो सहज था और न ही उचित। क्योंकि बचत विभिन्न वस्तुओं के रूप में ही की जा सकती थी, जैसे केला के ढेर, अन्न की बोरिया, भेड़ों के समूह, इत्यादि। क्या ये सब नाश होने वाले पदार्थ नहीं ? और फिर वर्ष की समाप्ति पर लाभ भी कुछ नहीं होता था।

इस के विपरीत आज कल माल के खरीदने में या बचत करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। बुद्धिमान खर्च करने की बजाय बचाना अच्छा समझता है और वह अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सुरक्षित और लाभप्रद मद में लगाता है। नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर इस का मूल्य ५०% बढ़ जाता है-अर्थात १०) बारह वर्ष पूरे होने पर १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप अब ५) से १५००० तक की मालियत के सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं। जिनकी बचत थोड़ी हो वे),) और १) के नेशनल सेविंग्ज स्टाम्प्स खरीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइये

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्स ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

AC 210

साधना में शस्त्र की क्या आवश्यकता थी। चौकीदार नारायण के प्रहार से क्षणभर के लिए मूर्च्छित हो गया, परन्तु वह भी नारायण से कम न था। दोनों सिंह आपस में जूझ उठे। नीलू अपने भाई को देखकर अचेत हो गई।

दूसरे दिन नारायण का दुर्बल शरीर कराह उठा। उसने अपनी बहन को पास बुलाया। उसके अटकते प्राण निकलने लगे। उसने ठंडा जल दिया, परन्तु उसके हृदय की आग बुझ न सकी। उसने अपने प्यारी बहन को स्नेह से देखा। दोनों के नेत्रों में अश्रु थे। नीलू के मुख पर पश्चाताप था। उसने आज पहिचाना था अपने भाई को।

नारायण ने क्षीण कण्ठ से कहा — "नीलू! मुझे क्षमा करो। मैं तुम्हारा अपराधी हूं। मैंने तेरे हृदय को तोड़ा है। तू मेरे हृदय को तोड़ दे।... बहन ने उसके ओंठ बन्द कर दिये। नारायण ने फिर कहा — "नीलू! मेरी एक अन्तिम इच्छा है, पूरी करोगी? नीलू ने सिर हिला दिया। नारायण ने अटकते अटकते कहा — नीलू! मेरी प्यारी नीलू! जब तुम्हें भगवान् सन्तान दे, जब तुझे और तेरे उस पापी को ईश्वर पुत्र दे, तब उस पुत्र को, मेरे प्यारे भतीजे को, मेरे जीवन की कहानी यह मेरे 'प्रेम की होली' सुना देना! उसे मेरी राख का तावीज बांध देना। अच्छा अब अ.. पने को...संभालना, मैं ...... चला ईश्वर ... तेरा भ' ला'" ।

और.. उसका मस्तक एक ओर लुढ़क गया। उस पिंजरे का पक्षी उड़ गया। उस बहन का भाई चला गया।

नीलू उसके शव पर 'क्षमा' कहते हुए गिर पड़ी। मृत नारायण के फिरे हुए नेत्रों में दो आंसू थे और नीलू के नेत्रों में से पश्चाताप के आंसू बह रहे थे।

—:०:—

दिल्ली से राजौरी तक

(पृष्ठ १० का शेष)

८ मील दूर था। पर उस घोर तमिस्रा में फिसलनी सड़क पर यात्रा करना किसी भी हालत में सुरक्षित नहीं। आखिर रात को कस्बर में ही पड़ाव करने का निश्चय हुआ। एक दुकान भी सड़क के किनारे मिल गई। लालसिंह नाम के एक सिख मुसाफिर ने यहीं उतरना था। उनका घर लगभग मील भर दूर है।

लारी रुक गई। सब मुसाफिर उतर पड़े। जो दुकान सड़क के किनारे थी उसमें सिवाय चावल और गुड़ के कोई खाद्यपदार्थ नहीं। सो भी तीन आदमियों से अधिक का पेट भरने के लायक नहीं। भूख लगी है, सर्दी भी तंग कर रही है। पचीस मुसाफिर दुकान में सो भी नहीं सकते! भला हो सरदार लालसिंह का — वेष विन्यास और बातचीत से सम्भ्रान्त व्यक्ति समझकर वे अपने साथ हमें भी अपने घर ले चले। मील भर दूर की बात सुन कर पहले तो जाने को जी न चाहा पर उनका आग्रह। २० मुसलमान मुसाफिर भी साथ हो लिये, क्योंकि सरदार लालसिंह ने बतलाया कि उनके घर के साथ ही पन्द्रह बीस मुसलमानों के भी घर हैं।

जब रात को सोने लगे तो लालसिंह पास आकर बैठ गये और पूछने लगे — 'इस समय लाहौर का क्या हाल है?'

तूफान का एक झोंका गुजर चुका था। बात कुछ कुछ पुरानी हो गई थी। उस समय तो लाहौर जैसे प्रगति-पथ पर पुनः तेजी और उत्साह से आगे बढ़ने के लिए कुछ सुस्ता कर आराम की सांस ले रहा था। मैंने कहा— 'लाहौर की बात तो छोड़ो। तुम कुछ अपने यहां की सुनाओ। तुम एक अकेले यहां जंगल में बस्ती बसाये पड़े हो — तुम्हारे आस पास न तो और कोई हिन्दू है, न ही सिख। कभी विस्फोट हुआ तो क्या करोगे?'

लालसिंह ने निर्विकार चित्त से कहा — "यह तो ठीक है कि मेरे सिवाय यहां आसपास और किसी हिन्दू का घर नहीं है, न ही कोई संगी साथी है। दांतों के बीच में जिस तरह जीभ रहती है — उसी तरह रह रहा हूं। परन्तु आज तक तो इन सब मुसलमान पड़ोसियों से कभी कोई बिगाड़ नहीं हुआ। आपसमें कोई भेद भाव नहीं है। पचास एकड़ जमीन मेरे पास है और उसे ये सब मुसलमान मुजारे ही जोतते बोते हैं। अभी तक तो परमात्मा की दया है। जब कभी विस्फोट होगा तब क्या होगा, यह कुछ नहीं कह सकता। ज्वालामुखी पर बैठा हूं। भगवान् मालिक है।"

भविष्य के लिये शंकाकुल मन लिये अपने अपने स्थान पर सो गये।

सवेरे ५ बजे ही आतिथ्य के लिये सरदार जी को धन्यवाद देते हुए उनसे विदाई ली। ६ बजे मोटर चली और ७ बजते बजते जब हम नदी पार करके पुल के सामने मोटर से उतर कर खड़े हुए तो पूर्व में उदय होते हुए सूरज की किरणों ने हमारा स्वागत किया। पुल के पार वह सामने राजौरी शहर है।

———

❀ विवाहित जीवन ❀

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मंगाये।

१—कोक शास्त्र (सचित्र) १॥)	२—८४ आसन (सचित्र) १॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १॥)	४—१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
५—सोहागरात (सचित्र) १॥)	६—चित्रावली (सचित्र) १॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो १॥)	८—गर्भ निरोध (सचित्र) १॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १५) अलीगढ़ सिटी।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले और व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में है, जो थोड़े ही मूल्य का है।

यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमाव। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम किस्म कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० २०१ कीमत ४॥≈) क्वालिटी नं० २१२ कीमत ६।॥) की बक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० २२० कीमत ८॥), पैकिंग व डाकव्यय १≈)

नोट—एक समय में ६ कमरों के ग्राहक को कैमरा नं० २२० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस

वेस्ट एण्ड ट्रेडर्स (V. A. D.) पोस्ट बाक्स १९९, दिल्ली।

West End Traders, (V. A. D.) 199, P. B. Delhi.

मुफ्त

नवयुवकों की अवस्था तथा धन के नाश को देखकर भारत के सुविख्यात वैद्य कविराज सज्जानचन्द्र जी बी० ए० (स्वर्णपदक प्राप्त) गुप्त रोग विशेषज्ञ घोषणा करते हैं कि गुप्त रोगों की अचूक औषधियां परीक्षा के लिए मुफ्त दी जाती हैं ताकि निराश रोगियों की तसल्ली हो जावे और धोके की सम्भावना न रहे। रोगी कविराज जी को विजय फार्मेसी, होज काजी दिल्ली में स्वय मिल कर या छः आने के टिकट भेज कर औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए छः आने भेज कर ११६ पृष्ठ की अंग्रेजी की पुस्तक Sexual Guide प्राप्त करें।

शीतकाल का उपहार

संसार में स्तम्भन की केवल पुरुषों के लगाने की एक अद्भुत औषधि।

— सुई फन सी —

Solution

पुरुषों के लिए केवल बाहर से व्यवहार करने लायक रुकावट की संसार में अद्वितीय तथा अद्भुत औषधि है। लाखों गृहस्थ इसकी मांग कर रहे हैं। जिन पुरुषों का शीघ्र ही वीर्य पतन हो जाता है, उनके लिये यह दवा बेजोड़ है। इस के लगाने से रुकावट सम्बन्धी अपूर्व शक्ति तथा सामर्थ्य प्राप्त होता है। इस दवा की एक शीशी बहुत दिनों तक चलती है।

मूल्य प्रति शीशी रुपये १२) डाक खर्च ।॥) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चायनीज मेडिकल स्टोर, नया बाजार —देहली।

हैड आफिस—२८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता, रीची रोड—अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी केसरा मेडीकल, स्टोर्स—आगरा।
दी जनरल मेडीकल स्टोर्स—अजमेर।
दी यूनाईटेड केमिस्ट्स—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकी वल्लभ—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी—मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—अजमेर
मेसर्स खरे ब्रादर्स—उरई।
मे० गोपीलाल चिरंजीलाल—श्री माधोपुर।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
दी वर्मा मेडीकल स्टोर्स—शिकोहाबाद।
मे० कालीलाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी दवाखाना मोरेना

तीसरा परमाणु बम कहां गिरेगा

[पृष्ठ ७ का शेष]

बनाए गए हैं। सदस्यों की संख्या में क्रान्तिकारी भूमध्यसागर के जंगली द्वीपुओं में निर्वासित कर दिये गये हैं। और यह सब अमेरिकन सलाहकारों की सहमति से हो रहा है। यूनान की आर्थिक दशा यह है कि एक ओर भुखमरी बुरी तरह फैली है, प्रायः ५००००० अनाथ बच्चों के सिर पर संकट के बादल हैं, दूसरी ओर एथेन्स के होटलों और नाचघरों में ऐसे ऐसे खाद्यान्न मिल सकते हैं, जो न्यूयार्क में भी सम्भव नहीं। चोर बाजार के कारण धनी और धनी बनते जा रहे हैं। परन्तु यूनान में कोई इनकम टैक्स नहीं। सरकार की ओर से प्रत्येक निवासी पर दस डालर का टैक्स लगा है — चाहे धनी हो चाहे निर्धन। सेना तथा सरकारी व्यय के लिए अमेरिका धन दे ही रहा है। अमेरिका से मिलने वाले डालरों से क्या खरीदा जा रहा है यह व्यापार तथा अर्थ विभाग की एक रिपोर्ट से पता चलता है। पिछली ३० करोड़ डालर की सहायता में से ९० प्रतिशत से मोटरें, बन्दूकें, गोलियां, फाउन्टेनपेन, पाउडर, लिपस्टिक, नकली जवाहरात, रेशमी मोजे (औरतों के) तथा सिगरेट मगाये गये हैं। बाकी १० प्रतिशत से खाद्यान्न जो सबका सब चोर बाजार में चला जाता है।

यह दुर्दशा !

अमेरिकन सहायता मिलने से पहले संयुक्तराष्ट्र संघ की सहायता संस्था "अनरा" की ओर से यूनान को बहुत सा सामान भेजा गया था। उसका उपयोग किस ढंग से हुआ यह यूनान की फासिस्ट सरकार की कुव्यवस्था का अच्छा प्रमाण है। सन् १९४६ की सर्दियों में जब कि यूनानी जनता जाड़े में ठिठुरती रही और कपड़े की मिलें बन्द हो गयीं सरकारी गोदामों में ३००० टन रुई और ऊन सड़ा दी गयी। राजधानी एथेन्स के मालगोदामों में ७ करोड़ ५० लाख डालर के सामान जिसमें खाद्यान्न, हल, कपड़े, कृषि की मशीनें, साईकिल, बीज तथा रेफरीजरेटर थे नष्ट हो गये। सैलोनीका प्रान्त के पेगा नामक स्थान में ३०००० टन खाद्यान्न खराब हो गया। सबसे हाल के समाचार के अनुसार पेराउस के सरकारी मालगोदाम में ९०४२० पौण्ड "चीज", १३८५८७ पौण्ड चीनी, १२०००० डब्बे दूध, २१५ टन मछली, और १६५००० पौण्ड दाल सड़ रही है।

अमेरिकन सलाहकारों और यूनानी सरकार को सब पता है परन्तु कम्युनिस्टों को खत्म करना अधिक जरूरी है। स्वयं अमेरिकन संवाददाताओं के अनुसार गुरिल्ला सैनिकों में केवल १० प्रतिशत कम्युनिस्ट हैं और नयी स्थापित "स्वतन्त्र सरकार' में भी आधे से अधिक मन्त्री कम्युनिस्ट नहीं हैं। स्वय प्रधान सेनापति और प्रधान मन्त्री जेनरल मारकोस (जो बालकन के दूसरे टीटो कहे जाते हैं) सन् ४४ तक कम्युनिस्ट नहीं थे। जनरल मारकोस १९०६ में एशिया माइनर में उत्पन्न हुए थे और तुर्की तथा बलगेरिया के विरुद्ध यूनान के युद्धों में लड़े थे। सन् १९२९ से लेकर आज तक वे ९ बार "देशभक्ति" के अपराध में जेल की हवा खा चुके हैं। जर्मनों की पराजय में सहायता पहुंचाने के लिए स्वयं ब्रिटेन ने उन्हें पुरस्कृत किया था।

कम्यूनिस्टों को कुचलने के लिये

दूसरी ओर यूनानी सरकार भी निकम्मी नहीं बैठी है। जर्मनों ने अपने शासन काल में यूनानियों की एक "काली सूची" बनायी थी। उसी की सहायता से सरकार सहस्त्रों की संख्या में यूनानियों को गिरफ्तार कर रही है। अभी पिछले सप्ताह ५०० व्यक्तियों को रातोंरात गिरफ्तार किया गया। साम्यवादी दल गैर कानूनी है। सरकार की आलोचना करने वाले सब समाचार पत्र बन्द कर दिए गए हैं।

चिकागो न्यूज के सवाददाता फ्रेड स्पार्क की निम्नलिखित दो छोटी घटनाएं स्थिति की विषमता का अनुमान दिलाती हैं।

वोलोस नामक नगर में एक १७ साल की लड़की को मृत्युदंड की आज्ञा इसलिए दी गयी कि उसने अपने भाई को जो गुरिल्ला सैनिकों में भर्ती हो गया था खाने का सामान भेजा था। दूसरे दिन लड़की को जगल में ले जाया गया, उसके कपड़े उतार लिए गये क्योंकि वे किसी "जीवित" के काम में आ सकते थे, और उसे गोली मार दी गयी।

एक गाव में रात को क्रान्तिकारियों ने गाव के चौधरी के मकान को घेर लिया और रोटियों की माग की। दस औरतों ने मिल कर रोटियां पकायीं जिसे लेकर क्रातिकारी चले गये। दुर्भाग्यवश रोटियों में जहर मिला दिया गया था। पचासों क्रान्तिकारी इस प्रकार मर गये। तीसरे दिन क्रान्तिकारियों ने फिर गाव को घेर लिया। दसों स्त्रियों को सड़कों पर घुमाया और अन्त में गोली मार दी।

प्रारम्भ से ही अमेरिका इस बात का हल्ला मचा रहा है कि यूनान के उत्तरी साथी अलबानिया, युगोस्लाविया, तथा बलगारिया गुरिल्ला सैनिकों को सहायता पहुंचाते हैं। इसकी जांच करने के लिए संयुक्तराष्ट्र संघ की ओर से एक जांच कमीशन भी भेजा गया है परन्तु उपरोक्त देशों ने स्पष्ट रूप से कमीशन का बहिष्कार कर दिया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अलबानिया, युगोस्लाविया तथा बलगारिया यूनान के गुरिल्ला सैनिकों को सहायता दे रहे हैं, परन्तु अमेरिका भी तो दूसरी ओर सहायता दे रहा है और शुरू ब्रिटेन अमेरिका ने ही किया। पिछले वर्ष ४७ जहाजों में ७४००० टन हथियार अमेरिका ने यूनान को दिये। प्रायः १६७ अमेरिकन अफसर यूनानी सेना के सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे हैं। यूनान के पास सुसज्जित १४०,००० सेना है तथा इसी सप्ताह इसे डेढ़गुना करने के प्रस्ताव और उसके लिए हथियार भेजने के प्रस्ताव पर अमेरिका ने मुहर लगा दी है। ब्रिटेन से ४००८० पिस्तौलें यूनान भेजी जा रही हैं परन्तु तो भी सिर्फ २९००० गुरिल्ला सैनिकों को वे परास्त नहीं कर सकते!

नई सरकार का अस्तित्व

"स्वतन्त्र यूनान सरकार" की स्थापना करते हुए जेनरल मारकोस ने निम्नलिखित उद्देश्यों की घोषणा की — (१) अमेरिकन साम्राज्यवाद से यूनान को मुक्ति दिलाने के लिए शक्तिशाली सेना की स्थापना। (२) न्याय शासन, (३) उद्योग धधों का राष्ट्रीयकरण, (४) धरती को किसानों में बाट देना, (५) राजतंत्र का खात्मा कर प्रजातन्त्र की स्थापना, (६) सयुक्तराष्ट्र संघ के मित्र देशों से मित्रता सम्बन्ध स्थापित करना, (७) शीघ्र से शीघ्र आम चुनाव द्वारा राष्ट्रीय संघ की स्थापना (८) अल्पमतों को समान अधिकार प्रदान करना, (९) और जल स्थल तथा वायु सेना को संगठित करना।

"स्वतन्त्र यूनान सरकार" की स्थापना के तुरन्त बाद ही सयुक्तराज्य अमेरिका के उप परराष्ट्रमंत्री श्री लावेट ने बालकन देशों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि वे इस सरकार को स्वीकार न करें अन्यथा परिणाम बुरा होगा। परन्तु सभावना यही है कि यूनानी क्रान्तिकारी सरकार को न केवल बालकन देश स्वीकार करेंगे परन्तु नये स्थापित होने वाले "युनाइटेड सोवियत स्लाव रिपब्लिक" में भी उसे सम्मिलित कर लिया जायगा। पिछले कुछ सप्ताहों से बालकन देशों में भीतर ही भीतर युगोस्लाविया, बलगारिया रूमानिया, पोलैण्ड, जेकोस्लोवाकिया, अलबानिया, हगरी तथा उत्तरी यूनान को मिला कर एक "सयुक्त बालकन प्रजातंत्र" की स्थापना करने की जबरदस्त तैयारी हो रही है। इस प्रजातन्त्र का ढाचा भी सोवियत रूस की भाति ही होगा जो कई देशों, जातियों, धर्मों से बना है। इस नये सोवियत प्रजातन्त्र के प्रधान मार्शल टीटो होंगे। इससे एक लाभ और भी होगा। बलगारिया, रूमानिया और हंगरी (शत्रु देशों) को संधिपत्र के अनुसार मित्रराष्ट्रों को जुर्माना देने से मुक्ति मिल जायगी क्योंकि वर्तमान बलगारिया का अस्तित्व लुप्त हो जायगा। सधिपत्र के अनुसार बलगारिया केवल ५०००० सैनिक रख सकता है। इस प्रकार बलगारिया की सैनिक शक्ति बढ़ायी जा सकेगी। यही सुविधा हगरी और रूमानिया को भी मिलेगी।

इस सोवियत प्रजातंत्र की स्थापना में अनेक कठिनाइयां हैं, मुख्यत. जातीय परन्तु सोवियत रूस की तरह समानता के आदर्श पर तथा "पेट" की समस्या को लेकर इस गुट की स्थापना होने की शीघ्र सभावना है। यदि यूनान का ऊपरी आधा भाग भी इसमें शामिल कर लिया गया तो इस बुनियाद पर कि इस "सोवियत प्रजातन्त्र" के आधे भाग (बाकी के यूनान) पर अमेरिकन अधिकार है सारा का सारा बालकन समुदाय मिलकर लड़ेगा। इस प्रकार अमेरिका को एक नहीं वरन दो सोवियत समुदायों का सामना करना पड़ेगा। अमेरीका यथाशक्ति' युद्ध का खतरा उठा कर भी इसे रोकना चाहता है। इस बात की भी सभावना है कि उत्तरी इटली में भी "स्वतन्त्र इटली सरकार" की स्थापना हो तथा उसे भी बालकन प्रजातंत्र में शामिल कर लिया जाय। अन्तर्राष्ट्रीय नगर ट्रिस्टी में इस सप्ताह से दंगे प्रारम्भ हो गये हैं।

"स्वतन्त्र यूनान सरकार" ने उत्तरी यूनान में कोनिटसा नगर को राजधानी बनाने के लिए उस पर आक्रमण किया था परन्तु जबरदस्त अमेरिकन सहायता के कारण वे सफल न हो सके। इस समय गुरिल्ला सैनिकों ने कोनिटसा से १७ मील उत्तर पूर्व लिकोराकी नगर को राजधानी बनाया है।

यदि युद्ध शीघ्र प्रारम्भ हुआ तो वह सयुक्तराज्य अमेरिका और सोवियत स्लाव रिपब्लिक में होगा। बूढ़ा भालू (सोवियत रूस) कुछ समय तक चुप रहेगा और अपने "बच्चों" की शक्ति आजमायश करेगा। तीसरा परमाणु बम ट्रिस्टी से लेकर सैलोनीका के बीच, जहा साम्यवादी क्रान्तिकारियों का अधिकार है, किसी भी समय गिर सकता है।

१००) इनाम

(गवर्नमेण्ट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्मा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० ताबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।

श्री कामरूप कमख्या आश्रम ५५

पो० कतरीसराय (गया)

भरतपुर व मेव विद्रोह

[पृष्ठ ११ का शेष]

विवरण देने लगे। भरतपुर की सरहद पर ही एक गाव में साचौली के एक चौबे पहलवान पडा को मार कर उसका शीश भाले पर टाग गाव २ प्रदर्शन किया गया ब्राह्मण पडे की इस नृशंस हत्यासे हिन्दुओं में रोष की लहर फैल गई। भरतपर राज्य में नौगा। के पास ही एक छोटे हिन्दू गाव पर मेवों ने हमला बोल दिया। और उनके बाद ही हिन्दुओं के प्रसिद्ध गाव नौनेरा पर चढ बैठे। परन्तु यथा समय राज्य की पुलिस ने पहुच कर उक्त गाव को बचा लिया।

मेवा की पहले दिन का चढ़ाई के समाचार गावा में फैल चुके थे। मथुरा व गुड़गांवा जिले के पास वाले गावों के हिन्दुओं ने नौगावा पर टक उसी दिन जब कि मेव नौनेरा पर चढाई करने गये हुये थे धावा बोल दिया और गाव जला डाला गया। नौनेरा म इस समाचार को पाकर मव उधर से नौगावा को भागे। और दोनों की खूब मुठभेड़ हुई। फिर दोनों ओर व्यूह रचना हो गई और दोनों एक दूसरे पर हमले करते रहे। इसके बाद में तो मेवात म हिन्दुओं और मेवों में स्थान स्थान पर युद्ध शुरू हो गया और हिन्दुओं ने भी बदला लेने में सकोच नहीं किया। नवई और खुबावर में मेवों की भारी क्षति ने उनकी कमर तोड़ दी और सदैव के लिये भरतपुर की छातीया जो विद्रोह का खतरा बन रहा था उसे जड़ मूल से नष्ट कर दिया। जो लोग दम भरते थे कि पहली दौड़ में यमुना व दूसरी में गगा पार पहुचेंगे वह यमुना के पार तक भी न पहुंच सके। यदि भरतपुर समय पर न चैतन्य हुआ होता तो भरतपुर-अलवर तो क्या प्यारा व्रज भी नहीं बच पाता।

पेट भर भोजन करिये

गेसहर—(गोलिया) गैस चढ़ना या पैदा होना, पेट में पवन का घूमना, भूख की कमी, पाचन न होना, खाने के बाद पेट का भारीपन, बेचैनी, हृदय की निर्बलता, दिमाग अशान्त रहना, नींद का न आना, दस्त की रुकावट वगेरह, शिकायतें दूर करके दस्त हमेशा नियमित साफ लाती है, अन्न पचा कर कड़ाके की भूख लाती है, आंत को ताकत देती है। शरीर में रुधिर बढ़ा कर शक्ति प्रदान करती है। आव, लीवर तिल्ली और पेट के हर एक रोग में अद्वितीय दवा है। कीमत रुपया १।) तीन का ३॥) डाक खर्च अलावा।

पता—दुग्धानुपान फार्मेसी ४ जामनगर
दिल्ली—एजेंट जमनादास क० चावड़ी चौक

आवश्यकता है

सुयोग्य नार्मल तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के मध्यमा उत्तीर्ण राष्ट्रीय विचार वाले तथा अनुभवी अध्यापकों की, जो ग्राम पाठशालाओं में प्राथमिक शिक्षा दे सकें। वेतन योग्यतानुसार ३०) से ५०) रु० मासिक तक दिया जावेगा। प्रमाण पत्रों सहित लिखिये—

अध्यक्ष, आदर्श सेवा संघ
पोहरी, गवालियर।

साबुनो का मुकुट मणि

साबुन नम्बर १००

हर तरह के कपड़ो ऊनी, सूती, रेशमी की बहतरीन सफाई के लिये। सुन्दर और रगीन रैपर म लिपटा हुआ। हर अच्छे स्टोर और साबुन के दुकानदार से मिलेगा। एक बार खरीद कर अवश्य परीक्षा करें।

एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है।

होलसेल डिस्ट्रीब्यूटर्स—
कैलाशचन्द्र प्रकाशचन्द्र
छत्ता सराय सराय हाफिज बन्ना
सदर बाजार देहली।

मौसम का उपहार

उ मे श घी

यह गाय भैसों का शुद्ध पवित्र घी धी स्वास्थ्य, बल तथा शक्ति के लिए अनुपम है।

गवर्नमैंट की हर परीक्षा से पास तथा उनकी पवित्रता की लाल रग की 'स्पेशल एगमार्क' सील लगा बिकी होता है।

स्वादिष्ट तथा पौष्टिक भोजन के लए उमेश घी ही व्यवहार करें।

दिल्ली एजेण्ट—हरीराम जगत नारायन खारी बावली (फतेहपुरी की तरफ) दिल्ली।

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरु कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

जिस प्रकार आजादी का झण्डा सदा ऊंचा रखने के लिए महात्मा गांधी की शिक्षा पर चलना जरूरी है। ठीक उसी प्रकार बालों को नर्म, चमकीला, लम्बा तथा हमेशा काला रखने के लिये। दिमाग को ताजा और चित्त की प्रसन्नता के लिए

जुल्फे कशमीर हेअर आयल

का प्रयोग अति आवश्यक है।

काश्मीर परफ्यूमरी वर्क्स
कुतुब रोड, दिल्ली

शरियत के शासन से हिन्दुओं को डरने की जरूरत नहीं। — जिन्ना

दिल्ली बद्रीनाथ के दर्शन कर आई है, इसलिए हे चूहो, चौकस रहो या न रहो, डर की कोई बात नहीं।

× × ×

प्रजातन्त्र समाज में हड़तालों को कोई स्थान नहीं। —गांधी जी

मगर मूख हड़ताल?

× × ×

अब लोग अंग्रेजों और अंग्रेजी राज्य को भूल जायें।

— हैदराबाद में के० एम० मुन्शी

आओ भी, क्यों छाती पर मूंग दलने आ गये। पुरानी मोहब्बत की क..ी से होती है यह हमारे दोस्त रिजवी से पूछो। बुरा हाल है गरीब का—

इक हूक-सी सिर में उठती है
और दर्द कमर में होता है,
रिजवी बैठा रोता है
जब सारा आलम सोता है।

× × ×

ईसाइयों ने इस्लाम से बड़ी-बड़ी आशाएं लगाई थीं पर अब पाकिस्तान में उन्हें बुरी तरह तंग किया जा रहा है। — एस० पी० सिंह

म० सिन्हा, ईसाइयों ने तो खैर क्या आशा बांधी थी, मगर आपने गर्म दूध पर बिलैया की सी जरूर ताक रखी थी। धत तेरी किस्मत की ऐसी तैसी।

बहुत शोर सुनते थे हाथी की दुमका
आया जो हाथी तो इक रस्सा बंधा था।

× × ×

मंडल को जिन्ना-सरकार से निकाला जायगा। — एक समाचार

अब इस २० वीं सदी के विभीषण के गले में एक 'गलखोर' डालकर कराची के म्यूजियम में भेज दिया जाय।

× × ×

अवध-तिरहुत रेलवे में पाकिस्तानियों को रखने से हानि का डर है।

—गांधी जी से एक रेलवे अफसर

क्यों श्रीमान् जी, कहीं और नौकरीकी तलाश कर ली है या नहीं। उपवास के समय गांधी जी द्वारा निर्मित और मौ० आजाद द्वारा प्रचारित उद्देश्यों को इतनी जल्दी भूल गये।

× × ×

अफजला और आयंगर खुले दिल से मिले। — एक खबर

बिल्कुल गलत। जिस समय दोनों मिल रहे थे, अपने दिलों पर हाथ रखे हुए थे कि कहीं वह मिल मिलाकर अदल-बदल न हो जायें।

× × ×

अमेरिकनों ने हिटलर के पतन से कोई लाभ नहीं उठाया। —सरलोव

मगर आपने तो उठाया है न?

× × ×

सुरक्षा कौंसिल को हिन्द और पाकिस्तान के सारे मामलों पर विचार करना चाहिए। — अर्जेण्टाइना

तो जनाब पहिले तो आप "कायदे आजम" की काली करतूतों का संग्रह कीजिए और फिर लीगी लफंगों के लुच्चेपन की कुछ कापियां छपवा कर बंटवाइये — फिर तमाशा सामने दीखिये।

× × ×

रूस ब्रिटेन को कम्यूनिस्ट नहीं बना सकता। —एटली

अजी राम का नाम लो — दिवालिया साहूकार और छुटा जमींदार तो कलदार वाले की ही तलाश में रहता है।

× × ×

गांधी जी की कृपा से हमें ५० करोड़ मिल गये और अर्थ-संकट टल गया। —पाकिस्तानी राजदूत

अगर फिर कभी संकट आ जाये, तो जरा जल्दी बता देना। यहां का हिसाब जानते ही हो —

'गदहा मरे कुम्हार का, धोबिन सती होय।'

× × ×

जापान को ताकतवर बनाओ, वह दीवार का काम देगा। — अमेरिकन एडमिरल

दीवार का दरवाजा चीन की तरफ खुला जाय या पर्ल हार्बर की तरफ?

× × ×

पहले अपना संघ बनाओ फिर रूस से मित्रता का हाथ बढ़ाओ। — चर्चिल

मित्रता के लिए जो कमीशन जाये उसमें चचा चर्चिल जरूर हों। अगर मित्रता की पटरी न पटी तो शत्रुता तो कहीं गई ही नहीं।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों! औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इस के ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें —)॥ का टिकट भेजकर शर्तें लिखा लें। मूल्य ३) रु०

दिगम्बर नाथ औषधालय नं० १
पो० कतरी सराय (गया)

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकेमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त।
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट(रजिस्टर्ड)अलीगढ़।

फिल्म स्टार
बनने की इच्छा वाले शीघ्र पत्र लिखें। रजीत फिल्म आर्ट कालेज बिरला रोड हरिद्वार।

आपके स्वाध्याय के लिए उपयोगी पुस्तकें

आहार—हिन्दी में आहार-विज्ञान पर लिखी हुई अपूर्व पुस्तक। मूल्य ५)

वैदिक ब्रह्मचर्य गीत—आध्यात्मिक ज्ञान के पिपासुओं के लिए तपस्वी अभयदेव जी लिखित वेद के ब्रह्मचर्य सूक्त का सुन्दर स्पष्टीकरण। मूल्य २)

बृहत्तर भारत—विदेशों में भारतीय संस्कृति के संस्थापकों की विस्तृत गौरव गाथा। मूल्य ७)

विज्ञान प्रवेशिका — मिडिल स्कूलों के लिए हिन्दी में लिखी गई विज्ञान शिक्षा की अति सरल पाठ्य पुस्तक। दोनों भागों का मूल्य २॥)

वैदिक-विनय (तीन भाग)	५)
भारत का इतिहास (तीन खंड)	७)
ब्राह्मण की गौ	॥)
सन्ध्यासुमन	१।)
वरुण की नौका (दो भाग)	६)
वेद गीतांजलि	२)
तुलसी	२)
लहसुन प्याज	२॥)
आत्म मीमांसा	२)
अथर्व वेदीय मन्त्र विद्या	१॥)
देहाती इलाज	१)
सोम सरोवर	१॥)
वैदिक उपदेश माला	।–)

पता—प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

*इतने उत्कृष्ट व्यंगचित्र, फोटो और विस्तृत जानकारी आपको आजतक देखने को न मिली होगी—यह आप स्वीकार करेंगे।

*चालू वर्ष भर उद्यम में फोटोग्राफी की जानकारी खेती, उद्योगधंधे, व्यापार, आरोग्यता व मितव्ययिता आदि विषयों के लेख पढ़िये। हिन्दुस्थान के सभी न्यूज पेपर एजेंटों ने और अधिक प्रतियों की मांग की है। प्रत्येक गांव में ग्राहकों की संख्या बढ़ रही है। उद्यम का वार्षिक चंदा ७) रु० भेज कर अपने उपयोग का मासिक मंगवाइये। उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर।

विवाह के अवसर पर कन्याओं को उपहार देने योग्य

कसीदा काढ़ने की मशीन

यह चार सुइयों की मशीन भांति भांति के काम करती है। इससे कसीदा काढ़ना बड़ा ही आसान है। दिल पसन्द फूल, पत्ती, बेल, बूटे, पशु पक्षियों के चित्र, कालीन, सीन-सीनरी इत्यादि आसानी से काढ़े जा सकते हैं। बड़ी सुन्दर और मजबूत है। मूल्य ४ सुइयों सहित ३) डाक खर्च ॥) कसीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक मूल्य २) डाक खर्च ॥)।

पता—कमल कम्पनी [A] अलीगढ़ सिटी।

T. B. टी बी. तपेदिक रोग के हताश रोगियो—

जबरी (Jabri) का नाम नोट करलो,यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचाने वाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देखलो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगीकी जान बचावें। पता— 'जबरी' आफिस (३) जगाधरी (पंजाब)

[पृष्ठ ६ का शेष]

मेंटरी प्रणाली पर ही आधारित था। कौंसिल प्रवेश और राजनीतिक सुधारों तक ही उसका कार्यक्रम सीमित था। तिलक एवं अरविंद घोष ने कांग्रेस के इस रूप को स्वीकार नहीं किया। तिलक का स्वप्न था कि कांग्रेस केवल शिक्षितों की निवेदन वादी संस्था मात्र ही न रहे, वरन् वह सारी पीड़ित दलित भारतीय जनता की प्रतिनिधि संस्था बन कर आगे बढ़े।

तिलक और अरविंद ने भारत के राष्ट्रवाद को बलवान् पार्श्वभूमि देने के हेतु उसे अपने अतीत से पोषण प्राप्त करने की ओर प्रवृत्त किया। कांग्रेस को जनता की संस्था बनाने के लिए उसके नैतिक और सांस्कृतिक शिरा जाल को भारत के अतीत से सम्बद्ध करना था जहां वह अपने विकास और शक्ति संवर्धन के अनुरूप आवश्यक पोषण पा सके— ऐसा पोषण पा सके जिसका क्रम कभी टूटे नहीं। अरविंद और तिलक दोनों ने इसी दिशा में अनवरत परिश्रम किया — दोनों ने गीता को ही अपने राष्ट्रीय कर्तृत्व का प्रेरणा स्रोत बनाया। महाराष्ट्र की भांति बंगाल ने भी कांग्रेस के विनम्र सुधारवादी कार्यक्रम का विरोध किया और सन् १९०५ में लाल-बाल-पाल (लाला लाजपतराय — बालगंगाधर तिलक — विपिनचन्द्रपाल) ने कांग्रेस की मशीनरी पर अधिकार जमाने की बाजी लगाई किंतु १९०७ में फिरोजशाह मेहता के प्रभुत्व के सामने वे असफल रहे — हां १९१६ में उन्हें यथेच्छ सफलता मिल गई।

अतीत के पुनरुद्धार ने जहां भारत के राष्ट्रवाद को नवजीवन प्रदान किया वहां उसने पश्चिम के आगन्तुक श्रेय तत्वों का भी बहिष्कार नहीं किया। वस्तुत पूर्ण बहिष्कार की भावना भारतीय संस्कृति में है ही नहीं। शाश्वतजीवन की प्राण शक्ति का रहस्य तो उसकी ग्रहण शक्ति या समन्वय की भावना में है। अपमानित निराहत वर्तमान के विषाद और नराश्य को उज्ज्वल अतीत की प्रेरणाओं से आलोकित और उत्फुल्ल किया गया। अरविंद घोष ने सन् १९०५ में देश के सामने स्पष्ट रूप से राष्ट्रवाद के भावी रूप का इस प्रकार निरूपण किया था।

"संसार की आशा इसी में है कि पूर्व की अतीतकालीन आध्यात्मिक व्यावहारिकता का पुनर्जागरण किया जावे और पश्चिम के आग्रहपूर्ण सम्पर्क के अन्तर्गत व्यापक और गम्भीर दृष्टि और और संगठन-शक्ति को ग्रहण किया जावे — विश्व कल्याण की आशा इसी में है कि समस्त पाश्चात्य जगत् पर एशिया के प्रकाश की अपरिमित रश्मियां छा जावें—हां, उन रूपों को अंगीकार नहीं किया जावे जो जड़, नश्वर औरअप्राण हो चुके हैं। हमें नवीन पद्धतियों को अपनाना होगा जो जाग्रत, क्रियाशील और प्रभावशाली हैं।"

बाद में गांधी जी के उत्कर्ष में इसी दृष्टि को अपनाने का प्रयत्न है जिसकी सन् ४७ के जवाहरलाल में सांगोपांग अभिव्यक्ति हो गई है।

अफीम बन्द हो जायगी

चौधरी रामलाल जी लिखते हैं—

मैं बीस साल से अफयून ४० तोले खाता था इसलिए मैंने ठेका अफीम ६६०००) रु० सालाना पर ले रखा था। ताकि मुझे अच्छी अफयून खाने के लिए मिलती रहे। मैंने अपने धन, शरीर का नाश होते देखकर डा० ऋषिराम मण्डी कोटफत्ता की बलैत टिकिया मगाकर ८ दिन में आनन्द के साथ अफीम छोड़ दी। छोड़ते वक्त या बाद में कोई तकलीफ नहीं हुई। मैं एक रईस कई गांव का मालिक हूं। जनता के लाभ के लिए यह इश्तहार देता हूं। जो भाई इस बुरी बला को छोड़ना चाहते हों वे जितने तोले माहवार अफीम खाते हों कीमत टिकिया दुगने रुपये का खत लिखकर वी० पी० मगा लें। पता — डा० ऋषिराम शर्मा अफयून छुड़ाऊ अस्पताल मण्डी कोटफत्ता (स्टेट पटियाला)।

आठवीं लाटरी के नतीजे

★

पंचवर्षीय ब्याज रहित प्राइज (इनामी) बाण्ड्स, १९४६ की आठवीं छमाही लाटरी के निम्नलिखित नतीजे, जो १५ जनवरी १९४८ को बम्बई में निकाली गई थी, आम सूचना के लिये प्रकाशित किये जाते हैं।

१०० रु० वाले बांड

इनाम	इनाम जीतने वाले बांडों के नम्बर			
	सीरीज ए	सीरीज बी	सीरीज सी	सीरीज डी
५०,००० रु०	०८७०६३	०२६८२३	००३६४१	०८५५३४
२०,००० रु०	०४६०५४	०७१०७०	०३८२६४	०३१६६६
२०,००० रु०	०७५१४५	०७६७३७	०४५०८०	०५०३७६
५,००० रु०	०२३०६१	०६१५३४	०६०२३१	००२०३०
५,००० रु०	०७४६००	०५८३०४	०६०७७६	०२६६५५

१० रु० वाले बांड

इनाम जीतने वाले बांडों के नम्बर

इनाम	सीरीज ए ए	सीरीज ए बी	सीरीज ए सी	सीरीज ए डी	सीरीज ए ई	सीरीज ए एफ	सीरीज ए जी	सीरीज ए एच	सीरीज ए जे	सीरीज ए के	सीरीज ए एल	सीरीज ए एम	सीरीज ए एन
२,५०० रु०	०५४४३६	००४५७७	००२७२२	०१६५२०	०४२२६५	०६१४६१	०६८००६	०५७८६४	०२०३३१	०६०६६६	०४०१०७	०५७६६५	०१६०६०
१,२५० रु०	०२८६८०	०७०३११	०१३२१६	०५४३४४	०१८३२६	०४६५२२	०३११२६७	०७३७६१	०७३७८५	०४६३८७	००४७०६	००३६८१	०१७८४४
१,२५० रु०	००७०१६	०३५७८३	००३१४१	०४०२५७	०४१०८०	०७००५२	०७७२४५	०५८७३१	०८२०६३	०८२१७२	०१३४८०	०४५८४१	०३६५१०
५०० रु०	०१७०७६	०४२७०६	०४६५००	००६४३२	०५१५८४	००२३८२	०५४६७६	०४२६१५	०७१२०७	०७६७०५	०२८८५८	०३०२२७	०३६४६६
५०० रु०	०४१४४१	००५४४१	०७८०५८	०१८२१६	०३१७१०	०८६०२६	०८४३४०	०८६१८३	०३६७८८	०६१५६०	०७४३२३	०६३३२७	०७६५७६
५०० रु०	०१०६७३	०८४५०४	०५७३५०	०५४४३६	०६६६८०	००७०८३	०७५४६४	०१५४०५	०६६६४७	०४१६३७	०१२६१६	०६४०६५	०८६५५५
५०० रु०	०४६०६६	०८८००४	०६६५४७	०५००७३	०५८६११	०००६८४	०५५७८८	०६६६२१	०७१५८७	००८७५५	०१७४६६	०३६८८१	०१७२६३
५०० रु०	०७४८४६	०६५२०४	०४४४५३	०८१५०४	०११७६८	०५११४७	०८३३१६	०८५६६६	०६०४२८	०३३८२८	०५६८६६	०१०४४८	०४७२४३
२५० रु०	०१६६३४	०१७०५१	०७४६६७	०११६६५	०८८७८०	०६०६६१	०१४५१५	०१००६४	०५६६७४	०१७१२२	०५६३६२	०४६६६५	०७८६३६
२५० रु०	०६६४८१	०३१६१६	०६२८१५	०२६११६	०४१३ ६	०३३०८३	०४०८१३	०५८४७१	०७३५०३	००४०१८	००६६७३	०५६६१५	०८२७६८
२५० रु०	०४६०७३	०६३४४८	०५८५८६	०६६५१७	०६७१८८	०४०११८	०३७१६५	०३५५५६	०२५४८२	०४२२१६	०७२३००	०६२५६६	००७३०७
२५० रु०	०६७४०३	०५६६३०	०७३७११	०६७३३८	०८३३४३	०३३४०१	०८२७६१	०२६२७३	०२००२३	०२८४२१	०५१६३३	०८१४३०	०६६६४६
२५० रु०	०८४३७१	०८८३०१	०५४६६१	०५३६११	०४४१४८	०६३६५८	०३०३६८	०६१६४७	०२२६६४	०१५७१७	००६८०१	०६३६६८	०६४४१७
२५० रु०	०४६७००	०६६५६४	०८६४६८	००८०६३	०६११२६	०८६०१०	०५५२७५	०१७६१२	०५३२७१	००७८४८	०६३४५४	०५०२५७	०८७१५०
२५० रु०	०२६४०७	०८०५२१	०७७७४४	०४८८०५	०८०२८८	०६७६१८	०८६४१३	०४३७६२	०२६२१५	०८६६०४	०८८०७३	०५३६१६	०३७००७
२५० रु०	०४८७६६	०८२२५३	०६७५०८	१०७६२६	०६५५६०	०६६५१२	०५१०६२	०२२५०७	०८०१६६	०१४६६३	०६७६४८	०२५८३१	०४०३६६
२५० रु०	०२८६५२	०८१८७५	०१७०३७	०१७४१६	०१३१६२	०१८१३८	०२३८०५	०६५६२३	०५५०४६	००८१३१	०२५४३१	०४४३२८	०४५४६३
२५० रु०	०४६७०३	०८७८६८	००७०८८	०७५६६०	०६७७४०	०५२०४३	०७६१८०	००३८६३	०१८६२४	०५६५६०	०५२७५६	०८८२७१	००८०७६

पिछली लाटरियों में निकले हुए इनाम जिनकी रकम १५ जनवरी १९४८ तक वसूल नहीं की गई

लाटरी की तारीख	वसूल न किये गये इनामों का विवरण — बांड की कीमत रु०	इनामी बांड का नम्बर	इनाम की रकम रु०
१५ जुलाई १९४४ प्रथम ड्रा	१०	एए०७००९८	२५०
		एए०८६१६०	२५०
		एसी०६२९११	२५०
१५ जनवरी १९४५ दूसरा ड्रा	१०	एबी०७९७३८	१,२५०
		एडी०२७६२७	२,५००
		एसी-६४३९६	५००
		एई०१३४२८	५००
		एएफ००२१४८	२५०
		एजी०५७६४२	२५०
		एएच०७८४९७	२५०
		एजे०९१६०५	२५०
		एजे००९८३८	२५०
१३ जुलाई १९४५ तीसरा ड्रा	१००	सी०२०९४७	२०,०००
	१०	एबी०४३१७९	५००
		एबी०५७१९९	२५०
		एसी०११३३४	१,२५०
		एडी००६२००	२५०
		एएफ०७५९९६	२५०
		एएफ०७५३७७	२५०
		एएफ०९६८९५	२५०
		एएफ००२१०८	२५०
		एजे००१३१५	१,२५०
		एजे०६११३०५	५००
		एजे०७७४११	२५०
		एके०७००६५	५००
		एएल०५७८२६	२५०
१५ जनवरी १९४६ चौथा ड्रा	१०	एबी०५७१७१	५००
		एबी०१०३५७	५००
		एबी००८१०८	२५०
		एबी०७०७३९	२५०
		एसी०६५२०५	२,५००
		एसी०१८४०६	२५०
		एसी०४१३०९	२५०
		एई०७३६३४	२५०
		एई००८८२६	२५०
		एएफ०७२९०९	२५०
		एके०१२६२६	१,२५०
		एएल००२६०१	२,५००
		एएल०८२०८९	५००
		एएल०६१३६०	२५०
		एएल०७३९५५	२५०
		एएल०६११७७	२५०
		एएम००६०९०	५००
		एएन०३०१४५	२५०
१५ जुलाई १९४६ पांचवां ड्रा	१०	एबी०४७९९८	२५०
		एसी००६८९४	२,५००
		एडी०७११५८	२५०
		एई०७२६२१	२,५००
		एएफ०६९६७७	१,२५०
		एएफ०८३४०५	२५०
		एएफ०२१६६०	२५०
		एएफ०१३०८९	२५०
		एजी०६००३३	२५०
		एबी०४८११८	२५०
		एएच०१८५८०	१,२५०
		एएच०३८१९५	५००
		एएच०१९१४५	२५०
		एजे०५९४७६	५००
		एजे०४१९६४	५००
		एजे०४५८५२	२५०
		एजे०२९५२४	२५०
		एजे०७६९८८	२५०
		एके०६९६४१	५००
		एएल०२२५२१	२५०
		एएल०९७१२०	२५०
		एएल०४२१५२	२५०
		एएम०३५१०९	५००
१५ जुलाई १९४६ पांचवा ड्रा	१०	एएम०९२५११	२५०
		एएम०३८१४६	२५०
		एएम०८७४८३	२५०
		एएन०१८६५६	५००
१५ जनवरी १९४७ छठा ड्रा	१०	एए०६३५१२	१,२५०
		एए०७४१००	५००
		एए०४९८६०	२५०
		एए०५५९४७	२५०
		एबी०२६५११	१,२५०
		एबी०२४९६२	२५०
		एबी०६३९३७	२५०
		एसी०२३६९३	२,५००
		एसी०९२७६५	५००
		एसी०९११०१	५००
		एसी०५३८२८	२५०
		एडी०५४२७६	२५०
		एडी०४७७६७	२५०
		एडी०३४९८३	२५०
		एई००२०३९	२५०
		एबी०५८६३४	५००
		एबी०२६४५०	२५०
		एबी०३४७९२	२५०
		एबी०६८४१३	२५०
		एएच०९१७७१	१,२५०
		एएच०४१९६३	५००
		एएच०७६४९१	५००
		एएच०४४९०६	२५०
		एएन०४४८८९	१,२५०
		एजे०८९४६३	१,२५०
		एजे०१६५७९	५००
		एजे०७६९४०	५००
		एजे०१६७४८	२५०
		एजे०३४४७५	१,२५०
		एके०९०५३१	१,२५०
		एके०६६५७६	२५०
		एएल०७४८४५	१,२५०
		एएल०९४७६६	२५०
		एएम०१७८०१	१,२५०
		एएम०१८७२२	५००
		एएन०४३९७९	२५०
१५ जुलाई १९४७ सातवा ड्रा	१००	बी०२७१९६	२०,०००
		सी०४७०२१	५०,०००
		सी०९८६८३	५,०००
		डी०९४०३७	२०,०००
	१०	एए०५९८०७	१,२५०
		एए०२००२५	१,२५०
		एए०४७७२८	५००
		एए००७१७७	५००
		एए०००७५८	२५०
		एए०००३३९	२५०
		एए०५७४७३	२५०
		एए०७७५१६	२५०
		एबी०३२०१९	५००
		एबी०७३१५१	५००
		एबी०९५३४१	२५०
		एबी०५६३८३	२५०
		एबी०२०८१५	२५०
		एबी०६११५८	२५०
		एबी०४१३१३	२५०
		एबी००३९११	२५०
		एबी०७१२९१	२५०
		एसी०१८३२९	५००
		एसी००७९७१	५००
		एसी०७५४२२	५००
		एसी०८०११२	२५०
		एसी०२०२४४	२५०
		एसी०५४३६४	२५०
		एसी०३२३१९	२५०
१५ जुलाई १९४७ सातवा ड्रा	१०	एडी०४७८०५	२ ५००
		एडी०४४७६६	५००
		एडी०२९५६१	५००
		एडी०९७११७	५००
		एडी०२९१७३	२५०
		एडी०३४१३१	२५०
		एडी०६०८६५	२५०
		एडी००४०७४	२५०
		एई०८२७२६	१ २५०
		एई०२०९०४	५००
		एई०७१६४३	२५०
		एई०८९९०८	२५०
		एई००७०१५	२५०
		एई०९६४१७	२५०
		एएफ०६८१२१	१,२५०
		एएफ०१३१०७	५००
		एएफ०३६७६३	५००
		एएफ०१४०६८	५००
		एएफ०२९९७४	२५०
		एएफ०५०७६९	२५०
		एएफ०१२९३१	२५०
		एएफ०६६०६७	२५०
		एबी०३०५७९	२,५००
		एबा०४७७२०	५००
		एबी०३८६१०	५००
		एबी०७९३४४	५००
		एबी०६१३९१	२५०
		एएच०२३६११	५००
		एएच००३७४	५००
		एएच०६०७७६	२५०
		एएच०६६५०५	२५०
		एएच०८३६६७	२५०
		एजे०५९३४९	१,२५०
		एजे००२२४१	५००
		एजे०५८९९८	५००
		एजे०८३५५९	२५०
		एजे०७५४४३	२५०
		एजे००५६५४	२५०
		एजे०९१५७३	२५०
		एके०६२७२५	१,२५०
		एके०३४७७९	५००
		एके०३४८८०	२५०
		एके०७८५४१	२५०
		एके०१२८५८	२५०
		एके०८४७७०	२५०
		एके०५३२००	२५०
		एएल०८७६०१	१,२५०
		एएल०१७३४८	२५०
		एएल०१८४५०	२५०
		एएल०२९५६९	२५०
		एएम०६६९२९	१,२५०
		एएम०६२२८५	५००
		एएम०९२२३९	५००
		एएम०५९९४१	५००
		एएम०८७५४२	५००
		एएम०९७४४४	२५०
		एएम०२१४९८	२५०
		एएम०१६२६३	२५०
		एएम०८०५७०	२५०
		एएम०५०५१७	२५०
		एएन०३७०४९	१,२५०
		एएन०२२४६०	५००
		एएन०२५२६४	५००
		एएन०९८४६९	२५०
		एएन००७९५०	२५०
		एएन०४३६०५	२५०
		एएन०९४०९४	२५०
		एएन०६४८७०	२५०
		एएन०२५१३४	२५०

फाईनेंस मिनिस्ट्री, गवर्नमेंट आफ इंडिया द्वारा प्रकाशित।

भारत सेवक औषधालय

नई सड़क, दिल्ली।

को

कुछ दवाएं

आरोग्यदा वटी

कब्ज और मदाग्नि को दूर करके, भूख बढ़ाकर और वीर्यशुद्ध व गाढ़ा करके पुरुषत्व बढ़ाने वाली दवा।

मूल्य फी शीशी ११।=) डा० व्यय पृथक

बलवर्धक वीर्य स्तम्भक-वृष्य मोदक

शीतकाल में बाजी करण के लिये अत्यन्त उपयोगी औषध।

मूल्य १ सप्ताह ६) डाक व्यय पृथक

भारत दन्त मंजन

दात, मुंह और मसूढ़ों के तमाम रोग दूर करके दात मोती जैसे चमकीले बनाता है।

मू० फी शीशी ।।।) डाक व्यय पृथक

प्रदरान्तक रस

स्त्रियों के सब तरह के पुराने प्रदर रोग, चक्कर, बेहोशी शिर और कमर का दर्द दूर करके बल और भूख बढ़ाता है।

१ सप्ताह का ४।।) डाक व्यय अलग

नोट— तैल घृत, आसवारिष्ट, रस, भस्में चूर्ण आदि दवाएं सस्ते मूल्य पर सदैव तैयार मिलती हैं।

एजेन्सी के नियम और सूचीपत्र मुफ्त मंगायें।

पहेली नं० ३१ की संकेतमाला

दायें से बायें

१. स्वर्गीय राष्ट्रीय व सामाजिक नेता।
२. समुद्र।
६. जीवित पदार्थों का स्वभाव है।
७ अच्छा लगता है।
८. विशिष्ट मेधावी ही-कोई बन पाता है।
१०. गरमी सरदी की एक सीमा।
११. इसके बिना दुनिया में रहना सरल नहीं।
१३ कभी न कभी इससे सभी का वास्ता पड़ता है।
१४. इसमें अन्धकार अधिक होता है।
१५. इसके पास होने से जीव की सुरक्षा रहती है।
१६. इसके अभाव में कई बार बड़ी दिक्कत रहती है।
१७. आज कल जो —— चाहे वही होता है।
१९. अच्छा लगता है।
२१. एक पेड़।
२४. कभी कभी अच्छी लगती है।
२५. कोई चाहे तो पिया जा सकता है।
२६. पूर्ण विजय से पहले—— उचित नहीं।
२७. भगवान सब को दे!

ऊपर से नीचे

१ मजदूर।
२. मारने वाला।
३ दूसरे का / की ही—— देखने में सुख है।
४. अत्यधिक—— पीना हानिकर है।
५. अच्छी—— आनदित करती है।
९. चमकीली हो तो सुन्दर जान पड़ती है।
१० आसव को पाकर प्रसन्नता होती है।
१२. इसके सामने सब हार मान जाते हैं।
१७. माता।
१८. प्रारम्भ इसमें दिक्कत होती है।
२०. चाह न हो तो किसी श्रम का होना कठिन है।
२२. दही ——।
२३ कार्य सिद्धि इससे सरलता से हो जाती हैं।
२४. वस्तु को और ही रूप दे देता है।

अफीम

की आदत छूट जायगी। काली डायन अफीम से छुटकारा पाने के लिये "काया कलप काली" सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स सात रुपया डाक खर्च पृथक।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका ढूंढना असम्भव साम है।

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

केवल १५ दिन के लिये भारी रिआयत

३।।) में ६ पुस्तकें?

१. रति-रहस्य—दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने वाली चित्र संयुक्त मूल्य १)
२. खजाना रोजगार—थोड़ी पूंजी से हजारों रुपये पैदा करने के गुरुभेद मूल्य १)
३. भविष्य फल—लूट, दगा, फसाद, सुख-दुख आगे क्या होना है मूल्य १)
४. बंगालजादू—वशीकरण जादू के आश्चर्यजनक खेल तमाशे इत्यादि मूल्य ।।)
५. हुस्न पैरिस—सुन्दरता के अद्भुत फोटो विवाहितों के देखने योग्य मूल्य १।।)
६. इन्द्रजाल—जादू के आश्चर्यजनक खेल यन्त्र मन्त्र मैस्मरेज्म यक्षिणी साधन मू० १।)

उपरोक्त ६ पुस्तकें एक साथ लेने से मूल्य ३।।) डाक खर्च ।।)

पता—कमल कंपनी (V) अलीगढ़ सिटी।

१००) इनाम

सिद्ध योगेन्द्र कवच

सिद्ध वशीकरण — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २।।), चादी का ३), सोने का १२), झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री महाशक्ति आश्रम, ६३ सालेमपुर कुड़ा पो० कदम कुआ (पटना)

१५०) नकद इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २।।), चादी का ३), सोने का १३) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम

गारंटी पत्र साथ भेजा जाता है पता:— आनन्द यन्त्र कं० रजिस्टर्ड, (अलीगढ़)

माहवारी

यदि माहवारी ठीक समय पर न आवे तो मुझे मिलें फौरन ठीक कर दूंगी, यदि मेरे पास न आ सकें तो हमारी दवाई मेन्सोल स्पेशल इस्तेमाल करें कीमत १२) एक्स्ट्रा स्ट्रांग दवाई जो कि एक दम असर करके अन्दर साफ कर देती है। कीमत २५)

बर्थ कण्ट्रोल

हमेशा के लिए पैदाइश औलाद बन्द करने की दवाई बर्थकण्ट्रोल कीमत २५) दो साल के लिए १२) इन दवाइयों से माहवारी ठीक तौर पर आती रहती है और सेहत बहुत अच्छी हो जाती है। नवाबों महाराजों के सार्टिफिकेट।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती (आफ लाहौर)

२७ बाबरलेन न्यू देहली, (निकट बंगाली मार्केट कनाट सरकस की ओर)

२५०) [सुगमवर्ग पहेली नं० ३१] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार १५०) न्यूनतम अशुद्धियों पर १००)

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे मैनेजर का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

इन तीनों वर्गों को पृथकन करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजे तो शेष दो पर आड़ी लकीर खींच दें।

इस लाइन पर काटिये

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२ उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा सदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३ उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये

४ निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहिये। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर १५०) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर १००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक सख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बाट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटाई बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १६ फरवरी के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ११ फरवरी १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९ पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् इ भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३१, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलिया आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धिया होंगी दिया जायेगा।

★★★

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि ७ फरवरी १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

जीवन संग्राम

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय ।-)

विविध

बृहत्तर भारत
[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ।।।=)

बहन के पत्र
[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व सखियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य १)

प्रेमदूती

श्री विराज जी रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण श्रृंगार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ।।।)

वैदिक वीर गर्जना
[श्री रामनाथ वेदालंकार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ।। -)

भारतीय उपनिवेश-फिजी
[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले० —श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय
[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १।।) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १६४५ तक, आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना, आज़ाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आज़ाद
[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ।।=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १।।) डाक व्यय ।=)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इस लिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं
[सम्पादक—श्री बसन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

नया आलोक : नई छाया
[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)
लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १।।), डाक व्यय ।=)।

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत का ... और आकार रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १।।) रुपया।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तेल विज्ञान

तिलहन से लेकर तेल के ... उद्योगों की विवेचना सविस्तार ... ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।-

तुलसी

तुलसीवन के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर

अंजीर के फल और वृक्ष से ... रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य ... डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १। डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे अविस्मरणीय बीस दिन मूल्य ।।)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के ... भूह से कैसे निकला ... मूल्य ।

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर ...

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

साप्ताहिक

वर्ष १४ | अङ्क ४५

दिल्ली, सोमवार

२५ माघ सम्वत २००४

9th FEBRUAR 1948

हम इस अमूल्य निधि की रक्षा नहीं कर सके !

सम्पादक—
रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

एक प्रति का मूल्य ≈)

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन
मनोरञ्जन मासिक

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* विजय पुस्तक भण्डार

* अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १६४४	१० प्रतिशत
सन् १६४५	१० ”
सन् १६४६	१५ ”

१६४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
* अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २५ माघ सम्वत् २००४

मानवता का पुजारी

विश्ववन्द्य विभूति, युगस्रष्टा और नव भारत के जनक म० गांधी एक आततायी के क्रूर हाथों द्वारा हम से छीन लिये गये। भारत के इतिहास में ही नहीं, विश्व के इतिहास में इससे बड़ी दुघटना नहीं हुई। समय समय पर अनेक महापुरुष, जो इस विश्व को एक नया संदेश देने आये, पहले भी हम से छीने गये हैं, परन्तु समस्त विश्व में अपने जीवनकाल में जो श्रद्धा और सम्मान म० गांधी ने प्राप्त कर लिया था, वह इससे पूर्व कोई भी युगपुरुष प्राप्त नहीं कर सका। उनके अमर पद प्राप्त करने पर समस्त विश्व में शोक का जो सागर उमड़ा, वही इस बात का प्रमाण है।

नवीन भारत के वे जनक थे। यद्यपि वे राजनैतिक क्षेत्र में पहले पहले प्रविष्ट हुए और अन्त तक भी उनका नेतृत्व करते रहे, तथापि उन्होंने राष्ट्र-निर्माण के सभी क्षेत्रों में असाधारण कार्य किया। राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक सभी क्षेत्रों पर वे अपनी अमिट छाप छोड़ गये हैं। कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिसमें उन्होंने कोई स्वर्गीय देन न दी हो। इस दृष्टि से भारत के राजनीतिज्ञ और देशभक्त, अर्थशास्त्री, किसान, मजदूर और साधारण जनता, हिन्दू और मुसलमान, पुरुष और नारी, दलित, या सवर्ण, तत्वज्ञानी और सांस्कृतिक या आध्यात्मिक क्षेत्र में रुचि रखने वाले, कलाकार और साहित्यिक सभी उनके निकट ऋणी हैं।

भारतवर्ष-सा महान् राष्ट्र पराधीन था। उसकी राजनैतिक चेतना सुप्त थी। गांधी जी ने उसे जाग्रत कर जाग्रत राष्ट्र बना दिया और स्वाधीनता-प्राप्ति के संग्राम का नेतृत्व कर अपने जीवन में ही कल्पनातीत सफलता प्राप्त कर ली। अंग्रेजों का कठोर पाश टूट गया। आज भारत स्वतन्त्र है। राजनैतिक संग्राम का नया मार्ग और नयी पद्धति गांधी-जी का भारत को ही नहीं, संसार को नई देन है।

राजनैतिक दासता से बढ़कर भारत मानसिक दासता के चंगुल में था। पुरातन भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना के हम सब शिकार थे। विदेशी वेषभूषा और विदेशी रहनसहन तथा विदेशी विचारधारा हम पर हावी हो रही थी।

गांधी जी निरी भौतिक स्वतन्त्रता की अपेक्षा सांस्कृतिक स्वराज्य को अधिक महत्व देते थे। अपने विमल और अनुपम चरित्र द्वारा वे प्राचीन ऋषियों का पदवी पा चुके थे। भारतीय संस्कृति के वे प्रतिष्ठाता थे। राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र में शायद उनकी क्षति कभी पूर्ण की जा सके, लेकिन सांस्कृतिक क्षेत्र में उनकी पूर्ति सदियों में भी पूरी हो सकेगी, इसमें पूर्ण संदेह है।

हिन्दू धर्म से उन्हें अगाध प्रेम था। ईश्वर में उनकी अटूट श्रद्धा थी। हिन्दू धर्म के मूल भूत तत्व 'सर्वभूत हित' के वे सच्चे उपदेष्टा थे। मानवता के वे महान पुजारी थे। इसी लिये वे न नारी को पद दलित देख सकते थे और न अवर्ण हिन्दू समाज को। अस्पृश्यता की प्रथा को वे हिन्दू जाति का कलंक समझते थे। वे मानव द्वारा मानव का अपमान और अवहेलना या उनकी हत्या नहीं देख सकते थे। यही कारण था कि वे हरिजनसेवा के लिये वे सदा तत्पर रहते थे। उद्योगपति द्वारा मजदूर के शोषण को वे सहन नहीं कर सकते थे। वे तो सरकार द्वारा भी मानव के स्वतन्त्र विकास पर बंधन डालने के विरोधी थे। चरखा ग्रामोद्योग, पंचायत सब के मूल में मानवता की विशुद्ध भावना ही गांधी जी के हृदय में विद्यमान थी। हिन्दू मुस्लिम संघर्ष उन की मानवता पर चोट करता था। उसे वे कैसे सहन करते!

भारत उसे विश्ववंद्य विभूति पर गर्व करता था। आज वह नहीं है। हम उस अमूल्य निधि की रक्षा नहीं कर सके। अब वह वापस भी नहीं आ सकती। लेकिन हम उनके सदेशों से शिक्षा तो ले सकते हैं। वे भारतवर्ष को सच्चा भारत बनाना चाहते थे, यूरोपियन संस्कृति और भौतिक आदर्श उन्हें प्रिय न थे। हम उसी पथ पर चलने का प्रयत्न करें।

आज गांधीजी के महान् बलिदान से बहुत सी व्यावहारिक उलझनें भी पैदा हो गई हैं। आदर्शवाद के चक्र में पड़ कर हम उनकी उपेक्षा न करें। आज हिन्दू मुस्लिम ऐक्य की भावना जोरों पर है, लेकिन हमें यह न भूलना चाहिए कि पाकिस्तानी सरकार द्वारा एक भी बड़ी शरारत समस्त देश की भावना को बदल सकती है। सोशलिस्ट और कम्यूनिस्ट नेता आज गांधी जी के प्रति जनता की श्रद्धा का दुरुपयोग गांधी जी को अत्यन्त अप्रिय वर्गयुद्ध के लिए कर रहे हैं। गांधी जी की हत्या के लिए संगठित दल भी कितनी शक्ति अन्दर ही अन्दर प्राप्त कर रहा था, यह भी हम नहीं जान पाये। इन सब समस्याओं के प्रति जागरूक, दृढ़ और सतर्क रह कर ही हम उस स्वातन्त्र्य की रक्षा कर सकते हैं, जिस के लिये भगवान ने अत्यन्त दयालु होकर इस पुण्य भूमि पर गांधी जैसे महान आत्मा को अवतीर्ण किया था।

महात्मा जी की अमर-कीर्ति

(लेखकः प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

महात्मा गांधी देखने में तो वर्त्तमान काल से निकल कर अतीत काल में विलीन हो गये, परन्तु वस्तुतः अनन्त भविष्य के अन्तरिक्ष में विस्तीर्ण हो गये। वर्त्तमान में वह महात्मा थे, अहिंसा-धर्म के प्रचारक थे, विविध सार्वजनिक संस्थाओं के संचालक थे और राजनीति के क्षेत्र में सब से अधिक प्रभावशाली नेता थे। उनके महाप्रयाण के साथ राजनीति में वर्तमान नेतृत्व उन महानुभावों के हाथ में चला गया, जो वर्त्तमान राष्ट्रीय सरकार को चला रहे हैं। प्राकृतिक देह से विमुक्त हो जाने पर प्रचलित राजनीति से महात्मा जी का सम्बन्ध टूट गया, परन्तु भविष्य के साथ उनका आत्मिक सम्बन्ध और अधिक दृढ़ हो गया। उनका यश और प्रभाव जिन कारणों से था, वे शरीर के साथ नष्ट नहीं हुए। वे अमर रहेंगे और फलतः महात्मा जी का यश और प्रभाव भी अमर रहेगा।

भारतवर्ष में और भारत से बाहिर भी महात्मा जी का जो अद्भुत प्रभाव था, वर्त्तमान राजनीति के अतिरिक्त उसके तीन मुख्य कारण थे। सबसे पहिला कारण उनका ऊंचा और शुद्ध निजू जीवन था। जब से वे सार्वजनिक जीवन में प्रविष्ट हुए, तभी से उनके जीवन का एक-एक पृष्ठ जनता के सामने खुली पुस्तक की तरह स्पष्ट रूप में आ गया था। उसका कोई भाग भी गुप्त नहीं रहा था। यह सर्वसम्मत बात है, और इससे उनके विरोधी भी इन्कार नहीं करते, कि उनका जीवन अत्यन्त पवित्र, निःस्वार्थ और तपोमय था। संसार में ऐसे ऊंचे और विशुद्ध जीवन के प्रति भक्ति की भावना बनी रही है, और सदा बनी रहेगी। वर्त्तमान विषयों पर मतभेद के कारण कुछ समय के लिये सूर्य पर भी बादल की टुकड़ी छायी जा सकती है, परन्तु जब मृत्यु उस बदली को छिन्न भिन्न कर देती है, तब मनुष्य का निजू जीवन बिल्कुल स्पष्टरूप में सब के सामने आ जाता है। वह उसकी अमर कीर्ति का मुख्य कारण होता है। महात्मा जी का भी ऊंचा और विशुद्ध जीवन उनकी अमर कीर्त्ति का सबसे मुख्य आधार रहेगा।

जिस दूसरी वस्तु के लिये मनुष्य-जाति महात्मा जी को सदा स्मरण किया करेगी, वह अहिंसा के सम्बन्ध में उनकी विचार धारा थी। अहिंसा-धर्म का प्रतिपादन अनादि काल से होता आया है। मनुष्य-जाति के सबसे प्रथम धर्म-पुस्तक वेद में अहिंसा का प्रतिपादन है। उसके पश्चात् जितने मत या सम्प्रदाय प्रचलित हुए, उनके आचार्यों ने न्यूनाधिक रूप में अहिंसा-धर्म को उत्तम बतलाया। महात्मा बुद्ध और हजरत ईसा ने अहिंसा पर विशेष बल दिया। इस तरह हम देखते हैं कि अहिंसा का उपदेश तो बहुत पुराना है, परन्तु उसके जीवनव्यापी प्रयोग के सम्बन्ध में उनकी जो विचार-धारा थी वह नयी थी। जीवन के प्रत्येक भाग में, यहां तक की राजनीति में भी अहिंसा के व्यावहारिक प्रयोग का प्रबल महात्माजी ने लगभग ५० वर्ष तक किया। यह एक नवीन बात थी और बिल्कुल मौलिक विचारधारा थी, जिसके उद्भावक और प्रचारक महात्मा जी थे। इसने उन्हें संसार के विचारकों की कोटि में रख दिया है। यह स्मरण रखना चाहिए कि किसी विचार की स्मृति को अमर या चिरस्थायी बनाने के लिए, आवश्यक नहीं कि सब उससे सहमत हों। महात्मा बुद्ध, ईसा, शंकराचार्य, मुहम्मद, कार्ल मार्क्स आदि विचारक अपने विचारों के लिए अमर-पद पा गये हैं। यद्यपि ऐसे लोगों की संख्या अगणित है जो उनके विचारों के किसी न किसी भाग से पूर्णरूप से असहमत है। विचारक होने के लिए यह आवश्यक नहीं कि उसके विचारों को सारा संसार समान रूप से मान ले। यदि मनुष्य जाति को अपनी समस्याए हल करने के लिए किसी ने कोई प्रबल विचार-धारा दे दी, तो वह उसे विचारक की पदवी प्राप्त कराने के लिए काफी है। महात्मा जी ने मनुष्य जाति को अपनी सामाजिक और नैतिक समस्याए हल करने के लिए जो नयी विचार-धारा दी है, उसके लिए वह व्यावहारिक विचार के रूप में सदा स्मरण किये जायेंगे।

महात्मा जी के प्रभाव का तीसरा आधार था — उनकी अद्भुत संगठन-शक्ति। मेरा मत है कि वह अपने समय के सबसे बड़े संगठन-कर्ता थे। करोड़ों व्यक्तियों को एक राजनैतिक संस्था के कट्टर अनुयायी बना देना, देश की ऊंची और नीची सभी श्रेणियों और सभी धर्मों के लोगों को एक सूत्र में बांध देना और लगभग ३० वर्ष तक एक बड़े देश की राजनीति की बागडोर को सँभाले रहना साधारण संगठन शक्ति का काम नहीं था। इसके अतिरिक्त चर्खा-संघ, हरिजन-सेवा संघ, ग्रामोद्योग संघ, तालीमी संघ और कस्तूरबा स्मारक फण्ड आदि अनेक विशाल और सफल योजनाए, उनकी अद्भुत कार्य शक्ति के प्रमाण हैं। इन संस्थाओं और इनमें कार्य करने वाले व्यक्तियों का भारत पर स्थायी प्रभाव रहेगा, जो उनके यश को चिरस्थायी बनायेगा। कोई आश्चर्य नहीं कि भारत में महात्मा जी के विचारों और कार्यों में भक्ति की भावना रखने वाले महानुभाव मिलकर एक ऐसे संघ की योजना करें, जैसे संघ अन्य आचार्यों के अनुयायियों ने बना लिये थे। वह संघ महात्माजी का जीवित स्मारक बन जायेगा। यह तो मैंने एक संभावना बतलायी। वह बने या न बने, भविष्य रूपी अन्तरिक्ष में सदा चमकने वाले सितारों में महात्मा गांधी का नाम तो निश्चित ही है।

देश का घटना-चक्र

मर्त्य मानव की अमर्त्य यात्रा और उसके पश्चात्

इस सप्ताह की एक घटना — एक नर – पिशाच द्वारा महात्मा गांधी की हत्या — अपने आप में इतनी बड़ी है कि इसने केवल हिन्दुस्तान के ही नहीं, अपितु विश्वभर के लोगों को चकित कर दिया है। हमारे देश में तो जनता के दिल और दिमाग पर यह इस तरह छा गयी है कि इसकी छाया में बाकी सब कुछ ओझल हो गया है। जनता के मानसिक व्यामोह की यह अवस्था कितने समय तक रहेगी, यह क्या कहा जा सकता है!

असोशियेटेड प्रेस के एक प्रतिनिधि ने इस हृदय – विदारक घटना का आंखों देखा वर्णन इस प्रकार किया है —

"प्रार्थना के सभा - स्थल पर ५०० व्यक्ति आतुरता से बापू के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। बापू सभा स्थल पर पहुंचने में पांच मिनट देर कर गये थे। आप अपनी पौत्रिया - आभा गांधी और मनु ... कन्धे पर हाथ रखे सदा की भांति तीव्र गति से प्रार्थना सभा में आ रहे थे। ज्यों ही बापू सभा - स्थल में पहुंचे उपस्थित भीड़ दो पंक्ति में खड़ी हो गयी। भीड़ ने बापू के जाने के लिए रास्ता कर दिया।

"जब बापू सभा - मंच से १५ गज दूर थे, मैंने देखा कि दो गज की दूरी पर आगे खड़े एक व्यक्ति ने बापू पर गोली चलायी। वह अपने दाहिने हाथ में दाहिनी ओर रिवाल्वर लिए था। लगा - तार चार गोलियां चलायी गयीं। बापू का प्राणान्त होते देखा। उनके उदर में गोली लगी थी। बापू के शरीर से रक्त बह रहा था। उनकी दुग्ध सी उज्ज्वल धोतियां लाल हो रही थीं। यह हृदय विदारक दृश्य देख कर मैं स्तम्भित रह गया। तुरन्त चतुर्दिक घबराहट फैल गयी। मैं अवाक् रह गया।

"ज्यों ही यह घटना घटित हुई, हत्यारे के पीछे खड़े लोग उस पर कूद पड़े और उसे पकड़ लिया। उसका रिवाल्वर भूमि पर गिर गया। हत्यारा खाकी कमीज और पायजामा पहने था। पहरे पर उपस्थित पुलिस ने उसे पकड़ लिया। इसके बाद ही मैं उस स्थल पर पहुंचा जहां बापू के नेत्र बंद हो गये थे। उनका मस्तक झुक गया था। उनके दोनों हाथ इस तरह अपने आप जुट गए थे मानों बापू प्रार्थना कर रहे हों। उनकी दोनों पौत्रियां बैठे बापू को पकड़े थीं। इसी समय तीन चार व्यक्ति गांधी जी को बिड़ला भवन उठा ले गये।

मैंने दीवान चमनलाल को ५ बज कर १५ मिनट पर कमरे से बाहर आते देखा। मैंने पूछा बापू की क्या हालत है। उन्होंने कहा कि बापू अभी जीवित हैं। पांच मिनट बाद ही दूसरा व्यक्ति बाहर आया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह बेचैन था। उसने बताया कि बापू का प्राणान्त हो गया।"

जो व्यक्ति जीवन भर अहिंसा का प्रचार करता रहा वह भी अन्त में हिंसा का शिकार बना, संसार को प्रेम का पाठ पढ़ानें वाले और अपने विरोधियों से भी मित्रवत् बर्ताव करनें वाले 'अजात शत्रु' को एक अपने ही देश के, अपने ही धर्म के तथा अपनी ही जाति के व्यक्ति की गोलियों का निशाना बनना पड़ा — यह आश्चर्य की बात है। परन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि महापुरुषों का अंत प्राय ऐसा ही दुःखद होता है।

म० गांधी के हाथ की एक कलाकृति

अपने ही हाथ के कते हुए सूत से बुना हुआ यह सुन्दर मेजपोश इंग्लैंड की युवराज्ञी के विवाह के अवसर पर महात्मा गांधी ने उपहार रूप में भेजा था।

संसार भर के देशों की सरकारों ने, शासकों ने, जन नेताओं ने, राजनीतिज्ञों ने, पत्रों ने और पत्र - सम्पादकों ने, तारों, टेलिफोनों और रेडियो - सन्देशों द्वारा महात्मा गांधी की इस आकस्मिक मृत्यु पर जो अपनी अपनी श्रद्धांजलियां प्रस्तुत की हैं उनसे, कम से कम, यह अवश्य पता लग जाता है कि महात्मा गांधी इस युग की जनता के कितनी अधिक श्रद्धा के भाजन थे। जितना अधिक आदर अपने जीवन - काल में महात्मा गांधी ने पाया और जिस प्रकार वे कोटि - कोटि जन - मन के बेताज बाद- शाह बने रहे उतना सन्मान और उतना आदर शायद ही कभी किसी ने पाया हो। उनकी इस नृशंस हत्या से करोड़ों के हृदय आहत हुए हैं। प्रार्थना - सभा के जिस स्थान पर उनको गोली लगी, बिड़ला हाउस के जिस स्थान पर उनका शव रखा गया, यमुना तट के जिस राजघाट पर उनके शव की दाहक्रिया की गई, त्रिवेणी में जहां उनकी अस्थियां प्रवाहित की जा रही हैं — वे सब स्थान अब लाखों लोगों के लिए तीर्थ स्थान बन गये हैं।

बापू तो अब सदा के लिए चले गये। परन्तु उनकी मृत्यु से सारे देश में जो प्रतिक्रिया की लहर फैली है वह भी बड़ी भयानक है। यह कल्पना की जा रही है कि इस हत्या में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और हिंदू महासभा के कुछ प्रमुख व्यक्तियों का हाथ है। इसी का यह परि- णाम हुआ कि बम्बई, पूना, कोल्हापुर और मिरज आदि स्थानों पर क्रुद्ध जनता ने हिंदू महासभा और संघ के कार्य कर्ताओं और उनके निवास स्थानों पर आक्रमण किये, उनकी सम्पत्ति को हानि पहुंचाई। अकेले मिरज में ही ७५ लाख रुपये का नुकसान हुआ है। कई स्थानों पर पुलिस को गोली भी चलानी पड़ी जिससे कि उपद्रवी जनता आपे से बाहर न हो जाए।

इधर भारत की केन्द्रीय सरकार ने भी साम्प्रदायिकता के इस विषैले वाता- वरण को दूर करने के लिए कठोर कदम उठाने का निश्चय किया है और इस सम्बन्ध में दो प्रस्तावों की घोषणा की है। प्रथम प्रस्ताव में कहा गया है—

घृणा और हिंसा की प्रसारक शक्तियों से देश की स्वाधीनता खतरे में पड़ रही है। इन शक्तियों का शीघ्र नियन्त्रण करके उन्मूलन करना आवश्यक है। अधिकांश भारतीय जनता के मनोभावों को ध्यान में रखते हुए सरकार न्याय और दृढ़ता से काम लेगी। अब देश में किसी भी हिंसा व साम्प्रदायिक घृणा का प्रचार करने वाली संस्था को सहन नहीं किया जायगा। किसी भी गैर सरकारी प्राइवेट सेना की अनुमति नहीं दी जाएगी।

दूसरे प्रस्ताव में कहा गया है—

भारत सरकार देश के लोगों को इस राष्ट्रीय शोक के अवसर पर भी उनके कर्तव्य का स्मरण कराती है और उनसे अनुरोध करती है कि भविष्य का दृढ़ता से और विवेक से मुकाबला करें। इस समय जो हिंसात्मक वृत्तियां हमारे बीच काम कर रही हैं उनका मुकाबला करने में जनता को भारत सरकार की सहायता करनी चाहिये। हमें गांधी जी और भारत के प्रति सत्यनिष्ठ होना चाहिये और उनके बताये मार्ग पर चल कर भारत सम्बन्धी उनके स्वप्न को सच्चा बनाना चाहिये।

इस प्रकार सरकारी नीति की स्पष्ट घोषणा हो जाने के पश्चात् उस पर अमल करने के लिये देश भर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को गैर कानूनी संस्था करार दे दिया गया है। भारत सरकार की विज्ञप्ति में कहा गया है कि संघ के सदस्य हिंसात्मक कार्यों में, आगजनी लूटपाट और कत्ल में तथा गैर कानूनी शस्त्रास्त्रों व गोला-बारूद का संग्रह करने में तथा सरकार के विरुद्ध घृणा फैलाने और पुलिस व सेना को शिथिल करने के लिए आतंककारी हलचलों में भाग लेते रहे हैं।

परिणाम-स्वरूप हिन्दूमहासभा के भूतपूर्व प्रधान श्री विनायक दामो- दर सावरकर, श्री जमनादास मेहता, हिन्दूमहासभा के मन्त्री श्री देशपांडे, श्री पराञ्जपे तथा अन्य अनेक प्रमुख कार्य- कर्ता और सरसंघ संचालक श्री गोलव- लकर तथा अन्य अनेक संघ के प्रति- ष्ठित स्वयं सेवक और पदाधिकारी गिरफ्तार कर लिये गये हैं। बम्बई, दिल्ली, नागपुर, नासिक में सब मिला कर सैंकड़ों ही गिरफ्तारियां हो चुकी हैं और अभी यह गिरफ्तारियों का चक्र चल ही रहा है।

बापू के ऐसे दृश्य फिर देखने को दुनिया तरसेगी
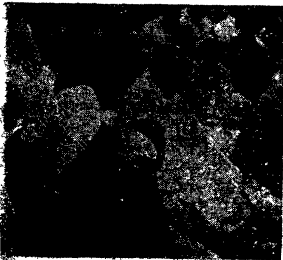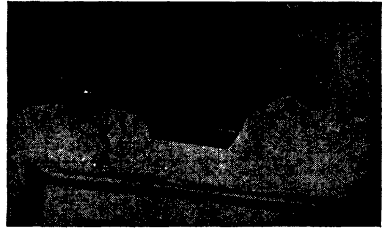
युग का पथ-प्रदर्शक

[प्रह्लाद चन्द्र गोस्वामी]

आज युग का पथ-प्रदर्शक खोगया है ॥

आज युग की हसरतें खामोश हैं,
आज रग रग में भरा अफसोस है।
आज संसृति शून्यता से है भरी,
आज मुरझा ही गई दुनिया हरी।
अस्त युग का प्रखर भास्कर होगया।
आज युग का पथ-प्रदर्शक खोगया ॥

जिसके कि कम्पन से धरा थी कांपती।
जिसके दृगों की दृष्टि दुनिया मापती।
जिस के सहारे से बचा शृंगार था।
जिसके सहारे हिन्द जीवन-सार था।
वह सहारा लुप्त हट क्या होगया।
आज युग का पथ प्रदर्शक खोगया ॥

श्वास में जिसकी स्वराज्य-दुलार था,
प्राण में बस ऐक्य का सुविचार था।
परिस्थितियां हाथ बांधे झेलतीं,
मुश्किलें आसान होकर बोलतीं।
एकता का सुदृढ़ हार पिरो गया।
आज युग का पथ-प्रदर्शक खोगया ॥

रूप मानव का धरे अवतार था,
स्कन्ध पर निज राष्ट्र का ही भार था।
जिसके कि आश्रित राष्ट्र का उद्धार था,
जिसकी रगों में मातृभू का प्यार था।
बीज वह राष्ट्रीयता का बोगया।
आज युग का पथ प्रदर्शक खोगया ॥

मान कर आदर्श चल पदचिह्न पर,
सभी संसृति हो सकेगी अग्रसर।
छोड़ करके शून्य दुनिया चल पड़े,
किन्तु पथ पर रख गये सब के दिये।
वह महात्मा साथ हमको खोगया।
आज युग का पथ प्रदर्शक खोगया ॥

अस्थि का कंकाल फिर भी शक्तिमय,
वृद्ध एव शुष्क फिर भी ज्योतिमय।
नेत्र थे कुछ क्षीण फिर भी अग्निमय,
था अरे कृशकंठ फिर भी ओजमय।
राष्ट्र बापू सर्वदा को सोगया।
आज युग का पथ प्रदर्शक खोगया ॥

बापू भारत के भगवान् !

(हरिश्चन्द्र वर्मा)

देश, काल सब खड़े रह गये,
निस्पन्द से ठहरा पवमान।
देख दनुजता के हाथों यों
आज मनुजता का बलिदान।

देख रही शंकित मानवता,
टूट गई उसकी पतवार।
कैसा उल्कापात हुआ यह,
समझ न पाता है संसार।

उमड़ रही है सघन वेदना,
उमड़ा तम का पारावार।
गिरि, भू, अम्बर, जड़, चेतन में,
'बापू' 'बापू' हाहाकार।

भारत की सांसें रोती हैं,
आज पितामह! तेरे साथ।
जर्जर, पीड़ित, असहायों से,
छूट गया तव करुणा हाथ।

जन-जन की छलकी आंखों में,
शेष तुम्हारी ज्योतित मूर्ति।
तुम में ही पाई थी हमने,
आकुल इच्छाओं की पूर्ति।

भारत के कण-कण में 'बापू'!
'बापू' में भारत छवि मान।
देख सका था फिर से यह जग,
गौतम की उज्ज्वल मुसकान।

अरे! स्वर्ग के अग्रदूत ओ —
सत्य, अहिंसा के वरदान।
धवल – धर्म की धुरी रहे तुम,
विश्व वेणु की मादक तान।

आज दीप आंखों से ओझल,
अमर-ज्योति से भरा दिगंत।
नव-युग – वाणी से गूंजेगा,
रह रह कर आकाश अनन्त।

काल — पृष्ठ पर अमर रहेगा,
यश तुम्हारा युग– इतिहास।
भावी सन्ततियों के संग-संग,
फूलेगा तब स्वप्न – पलाश।

यह दधीचि का अस्थिपुञ्ज था,
व्यर्थ न जायेगा बलिदान।
इसके कण-कण, अणु-अणु, रज से
होगा नव — नूतन निर्माण।

आदर्शों पर मरने वाले — तुमको शत-शत बार प्रणाम।
बापू! भारत के भगवान्! तुमको शत-शत बार प्रणाम।

मानवता का अन्त

[निरंकारदेव सेवक, एम० ए०]

यह कैसा भीषण वज्रपात,
सहसा हृद्-गति हो गई मौन।
विश्वास नहीं होता इस पर,
यह बार-बार कह रहा कौन?
सो गया सदा के लिए आज,
चिर अविनाशी सेगांव सन्त।
किस दुर्दिन में इस भारत की
मानवता का हो गया अन्त।
है बिलख रहा जन-जन का मन,
शोकातुर है सब दिग-दिगन्त।

कैसा स्वतन्त्र स्वाधीन देश,
कैसी होली ... सा बसन्त।
यह किस कायर की कमजोरी
बन गई विश्व के लिए शाप।
है विकल वायु कण-कण उदास,
दुनिया रो-रो करती विलाप।
कर गया सिद्ध यह निर्विवाद
मानवता पर निर्दय प्रहार।
इस दुनिया में अति का आग्रह
होना भी भ्रम है निराधार।

म० गांधी द्वारा कांग्रेस का निर्माण

[श्री गोवर्धनदास मेहता]

जिस समय गांधी जी भारत के राजनीतिक गगन मण्डल पर उदय हुए, उस समय तक कांग्रेस में यद्यपि स्वर्गीय दादा भाई नौरोजी, फीरोजशाह मेहता, तिलक, गोखले आदि देश भक्त नेताओं ने स्वाधीनता प्राप्ति की लगन पैदा कर दी थी, लेकिन संस्था का दायरा छोटा था और मध्य श्रेणी के थोड़े से पठित समुदाय के अतिरिक्त जन साधारण में आजादी की ज्योति नहीं जगी थी। गांधीजी ने कांग्रेस में प्रवेश करते ही सबसे बड़ा और क्रांतिकारी परिवर्तन यह किया कि उसे जन साधारण की संस्था बना दिया। किसानों मजदूरों, शोषितों-दलितों-पीड़ितों सबके पास — देश के घर घर में — कांग्रेस का स्वाधीनता-संदेश हजारों कार्यकर्ताओं द्वारा पहुंचाया गया। गांधी जी के प्रवेश से पूर्व कांग्रेस केवल आवेदन भेजने वाली और प्रस्ताव पास करने वाली संस्था थी। लोग वर्ष में एक बार वार्षिक अधिवेशन कर लिया करते थे और लम्बी चौड़ी तकरीरें दे दिया करते थे। कोई निश्चित प्रोग्राम स्वराज्य प्राप्ति का न था। गांधी जी ने कांग्रेस को नव-जीवन दिया और उसे संघर्षशील और निर्माणशील संस्था का रूप देकर इतना शक्तिशाली बना दिया कि आज देश का शासन कांग्रेस के हाथ में है। कांग्रेस को इतनी लोक-प्रिय बना देना कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आकांक्षाओं का मूर्त रूप उस संस्था में देखने लगे, गांधीजी की कांग्रेस को सबसे बड़ी देन है।

नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा

कांग्रेस को गांधीजी की दूसरी देन यह है कि उन्होंने उसमें नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा की। सामान्यतः माना जाता है कि राजनीति में छल कपट, असत्य आदि साधन भी आवश्यकता पड़ने पर त्याज्य नहीं हैं। पर गांधी जी ने शुद्ध नैतिक आदर्शों पर चल कर स्वराज्य-प्राप्ति के लिये जनता को संगठित किया। सत्य और अहिंसा को अभी तक लोग व्यक्तिगत रूप में ही आवश्यक मानते थे। राजनीति में और सामूहिक रूप में इतनी सफलता के साथ प्रयोग करने वाले गांधी जी ही हुए। उन्होंने सर्वोदय पुस्तक के उपसंहार में लिखा है:— "स्वराज्य हमें नीति मार्ग से प्राप्त करना है। वह नाम का नहीं वास्तविक स्वराज्य होना चाहिए। ऐसा स्वराज्य न्याय-पूर्ण उपायों से नहीं मिल सकता। उद्योग की आवश्यकता है, पर उद्योग सच्चे रास्ते से होना चाहिए। यदि प्रत्येक भारतीय 'सत्य' का ही आग्रह करेगा तो भारत को घर बैठे स्वराज्य मिल जायगा"।

सत्याग्रह का अमोघ अस्त्र

गांधी जी की कांग्रेस को तीसरी सबसे बड़ी देन है: ब्रिटिश साम्राज्यशाही से संघर्ष करने की अनोखी प्रणाली। उन्होंने कांग्रेस को ब्रिटिश हुकूमत से बिना हथियार के लड़ना सिखाया। गांधी जी ने सन् २० सन् ३० और सन् ४२ इन तीन बड़ी बड़ी आजादी की लड़ाइयों में कांग्रेस का सफल नेतृत्व किया प्रत्येक लड़ाई में उन्होंने शांतिपूर्ण उपायों से सत्याग्रह चलाया जिसे सविनय अवज्ञा आंदोलन कहते हैं। वह खुली लड़ाई थी, कोई भी गुप्त कार्य करना वर्जित था। जब जब आंदोलन में हिंसा हुई, तब तब गांधी जी ने उसकी निंदा की और चौरा-चौरी काण्ड के कारण तो आन्दोलन ही स्थगित कर दिया। सत्याग्रह आन्दोलन ने किस प्रकार ब्रिटिश शासन की जड़ें हिला दीं, यह सर्वविदित है। ब्रिटिश संगीनों, गोलियों, लाठियों आदि का लाखों निहत्थी जनता ने सामना किया। न जाने कितने व्यक्ति फांसी की तख्तियों पर झूल गये और अन्य प्रकार से शहीद हुए। सन् १८५७ के बाद से भारत के हथियार छीने गये थे उस निहत्थी प्रजा को अपने आत्मिक बल से और संघर्ष का बिल्कुल नया तरीका बता कर सशस्त्र सेनाओं के मुकाबले में खड़ा कर देना — यह गांधी जी की कांग्रेस को तीसरी सब से बड़ी देन थी। उन्होंने अंग्रेजों की सात अनैतिक किलेबन्दियों का भेद दिया — (१) सिविल सर्विस (२) व्यवस्थापिका सभाएं, (३) अदालतें, (४) कालेज, (५) स्वशासन सभाएं, (६) व्यापार और (७) उपाधिधारी वर्ग।

रचनात्मक कार्यक्रम

गांधीजी ने कांग्रेस को चौथी सब से बड़ी देन दी— रचनात्मक कार्यक्रम। १४ सूत्री कार्यक्रम द्वारा देश का आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान जारी रहा। जब लड़ाई बन्द हो जाती, तब रचनात्मक कार्य शुरू हो जाते। इसे खादी के रूप में आर्थिक, अस्पृश्यता निवारण के रूप में सामाजिक और मद्य-निषेध के रूप में नैतिक कार्यक्रम कहा जा सकता है। खादी पर गांधी जी ने सब से अधिक जोर इस लिए दिया कि अंग्रेजों ने सर्व प्रथम भारत के इसी पेशे को खतम किया था। प्रत्येक देश में पहले संघर्ष ही संघर्ष हुआ है, बाद में निर्माण ही निर्माण, पर भारत में गांधी जी ने कांग्रेस को चरखा, अस्पृश्यता निवारण आदि का भी कार्यक्रम साथ दिया। देश के प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र निर्माण के विभिन्न कार्यों में लगाया गया, जिससे हमारी स्वाधीनता की बुनियाद ठोस हुई।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा का समावेश

गांधीजी की कांग्रेस को पांचवीं सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने कांग्रेसियों को भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा से प्रेम सिखाया, लोगों के जीवन में सादगी आई। गांधी जी ने वेष भूषा के मामले में तो गजब का परिवर्तन किया। वे स्वयं किसानों जैसे वस्त्र पहिनने लगे और लंगोटी लगाए हुए ही स्वर्गीय सार्व पंचम से भेंट करने गये। इसका प्रभाव यह हुआ कि भारत के लाखों कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने भी खादी धारण की और घर में प्रत्येक वस्तु स्वदेशी रखने लगे। बड़े-बड़े पूंजीपतियों ने भी वेषभूषा बदली। अंग्रेजी सूटेड बूटेड कांग्रेसी नेताओं पर भी प्रभाव पड़ा। खादी के वस्त्र शोभा की, मान की और देश-भक्ति की निशानी बन गये। पहले कांग्रेसी और देशवासी

[शेष पृष्ठ २९ पर]

दीप बुझ गया

(रघुवीर शरण 'मित्र')

हाय ! दीप बुझ गया देश का — जलता जलता।
कर्णधार चल दिया सृष्टि का — चलता चलता॥
ढलता ढलता सूर्य किन्तु — दे गया उजाला।
हा ! हा ! काल कराल ! हाय ! यह क्या कर डाला॥
मानवता का रत्न छीन ले गया कहां तू।
ले चल सब को वहीं उन्हें लेगया जहां तू॥
क्यों प्रभात से हमें रात में लाकर डाला।
तेरा मुंह है स्याह, अमर वह मरने वाला॥
बापू ! तेरे बिना बिलखते हृदय हमारे।
आज दृगों का नीर ढूंढता चरण तुम्हारे॥
नौकायें मझधार हमारी डोल रहीं हैं।
बापू ! बालो, आंखें तुम्हें टटोल रहीं हैं॥

उच्छ्वास !

[रामप्रकाश]

'आज गांधी दिवगत' — क्या सत्य यह सन्देश !
उठ गया साया हमारा, छुट गया क्या देश !

सत्य है यह अटल है यह अमिट यह सम्वाद,
क्या कभी झूठे हुए हैं काल के आघात !
आह ! केवल आह उठती, एक भीषण आह !!
शून्य में निश्शब्द फैली आज एक कराह !

छुट गया संसार केवल एक क्षण में आज,
मेघ तो थे, पर न मालूम था गिरेगी गाज।
हाय निर्मम ! यह अचानक ही किया था वार !
या कि सचमुच प्राण लेने के लिये था वार !

किस नियति ने बुद्ध पर तेरी किया अधिकार ?
रे अभागे ! स्वयं भी क्या सह सकेगा भार ?
आंख ! पत्थर क्यों बनी ! दो बूंद आंसू डाल,
हृदय – तल की वेदना को बूंद बूंद निकाल।

आज रोले, फिर न रोना भी रहेगा शेष,
और रोने के लिये अब रह गया क्या शेष !
आज आंखों और कानों से उठा विश्वास,
जा रही है कहां ? किसकी खोज में निश्वास ?

गगन में नक्षत्र नूतन उदय होगा आज,
भूमि का याचक करेगा स्वर्ग में अब राज।
शान्ति धर ओ हृदय ! तेरा बढ़ गया विस्तार,
शान्ति के उस दूत का हो शान्तिमय आगार।

युग-पुरुष का जीवन परिचय

[घटनावलि का तिथि-क्रम]

२ अक्तूबर, १८६६ — जन्म
स्थान — पोरबन्दर काठियावाड़
पिता — श्री करमचन्द गांधी
माता — श्रीमती पुतलीबाई

१८७६ — शिक्षारम्भ

१८८३ — विवाह— कस्तूरबासे

१८८७—काठियावाड़ हाईस्कूल से मैट्रिक

१८८७ — ८८ — सांवलदास कालेज भावनगर में शिक्षा

४ सितम्बर १८८८—शिक्षा के लिए विलायतयात्रा

७ जुलाई १८९१ — बैरिस्टरी की परीक्षा पास कर भारत आगमन

अप्रैल, १८९३ —दक्षिण अफ्रीका में वकालत के लिए प्रस्थान

१८९६—ढाई वर्ष तक नैटाल में राजनैतिक कार्य

२८ नवम्बर, १८९६ — नेटाल के लिये पुनः प्रस्थान

१९०१ —भारत के लिए प्रस्थान

१३ जनवरी १८९७—जहाज से उतरने पर अपमान

१० अक्तूबर १८९९—बोअर युद्ध में गांधी जी की सेवा व भारत यात्रा

दिसम्बर १९०१—भारतीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में सहयोग

दिसम्बर, १९०२—अफ्रीका पुनः प्रस्थान

१ जनवरी १९०३—प्रिटोरिया पहुंचे

अप्रैल, १९०३—सुप्रीम कोर्ट में एडवोकेट नियुक्त

१९०४ — 'इण्डियन ओपीनियन' का अंग्रेजी, हिन्दी, तामिल, गुजराती में सम्पादन

अप्रैल १९०६—जुलू विद्रोह में सेवाकार्य

२२ अगस्त, १९०६—प्रवासी भारतीयों के प्रति ट्रान्सवाल सरकार के आर्डिनेंस

११ सितम्बर,१९०६ — जोहान्सबर्ग में विरोध सभाएं

१२ सितम्बर, „ —कानून स्वीकृत

१ जुलाई १९०७—काला कानून लागू हुआ। वकालत छोड़ कर सार्वजनिक सेवा का संकल्प

जून १९०९—इंग्लैण्ड के लिए प्रस्थान

नवम्बर १९०९—दक्षिण अफ्रीका की यात्रा और 'हिन्द स्वराज्य' का प्रणयन

३० मई, १९१०—जोहान्स बर्ग में टाल्सटाय फार्म की स्थापना

१९१२ —युरोपियन वेशभूषा का त्याग

जुलाई, १९१४—इंग्लैण्ड यात्रा

२५ मई १९१५ साबरमती में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना

१९१५-१६—भारत और बर्मा की यात्रा

२७ अप्रैल १९१८—वाइसराय की युद्ध समिति में उपस्थित रंगरूटों की भर्ती के लिए १३ जिलों का दौरा

सितम्बर १९१९—गुजराती मासिक 'नवजीवन' का संपादन आरम्भ। बाद में साप्ताहिक रूप में

अक्तूबर, १९१९ —अंग्रेजी साप्ताहिक 'यंग इण्डिया' का सम्पादन

२४ नवम्बर, १९१९—दिल्ली में खिलाफत सम्मेलन की अध्यक्षता

सितम्बर १९२०—कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में असहयोग का कार्यक्रम स्वीकृत

नवम्बर १९२०—गुजरात विद्यापीठ की स्थापना

दिसम्बर १९२०—नागपुर कांग्रेस में कांग्रेस का उद्देश्य स्वराज्य स्वीकृत होना

जुलाई,१९२१—विदेशी वस्त्र बहिष्कार

१२ जनवरी १९२४— एपेण्डेसाईटिस का आपरेशन

हत्या के प्रयत्न

(१) ८ फरवरी १९०८ समझौते के विरोध में पठानों द्वारा आक्रमण

(२) १९३४ पूना में गांधी जी की ट्रेन उलटने की असफल चेष्टा

(३) २० जनवरी १९४८ को बम द्वारा हत्या की असफल चेष्टा

(४) ३० जनवरी को गोली द्वारा घायल और महाप्रयाण

दिसम्बर १९२४— बेलगाम कांग्रेस की अध्यक्षता

सितम्बर १९२५ — अखिल भारतीय चर्खा संघ की स्थापना

फरवरी १९२९—सत्याग्रह संचालन के लिए कांग्रेस के अधिनायक नियुक्त

१२ मार्च १९३०—दण्डी यात्रारम्भ

फरवरी-मार्च १९३१— गांधी—इरविन समझौता

२९ अगस्त, १९३१—द्वितीय गोलमेज के लिए लन्दन यात्रा

सितम्बर- दिसम्बर „ गोलमेज सम्मेलन

११ फरवरी, १९३३—'हरिजन' साप्ताहिक का प्रारम्भ

७ नवम्बर, १९३३—हरिजनों के लिए दौरा

१४ दिसम्बर, १९३४— अखिल भारतीय ग्रामोद्योग का स्थापना

३० अप्रैल, १९३६—सेवाग्राम में निवास का निश्चय

३० दिसम्बर ९४१—कांग्रेस के नेतृत्व से मुक्ति, सदस्य भी न रहे

८ अगस्त १९४२—बम्बई के कांग्रेस अधिवेशन में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पर भाषण

२२ फरवरी, १९४४— कस्तूर बा का निधन

२ अक्तूबर, १९४४—कस्तूर बा स्मारक के लिए १ करोड़ १० लाख की थैली भेंट

१९४५ —नेताओं की रिहाई

२ सितम्बर, १९४६—प्रथम राष्ट्रीय सरकार की स्थापना

जनवरी १९४७ — गांधी जी की नोआखाली की ऐतिहासिक पैदल यात्रा

२५ फरवरी, १९४७ —पटली की घोषणा पर गांधी जी का वक्तव्य

२६ मार्च, १९४७ — लार्ड माउण्टबैटन का गांधी जी का निमन्त्रण

१३ मार्च, १९४७ — गांधी जिन्ना द्वारा शांति की संयुक्त अपील

२७ अक्तूबर १९४७—एशियाई सम्मेलन

गांधी जी की जेल यात्राएं

दक्षिणी अफ्रीका में

१० जनवरी १९०८ — जोहान्सबर्ग में दो मास, ३० जनवरी १९०८ को रिहाई

१५ अक्तूबर, १९०८— वोलक्रस्ट और प्रीटोरिया की विभिन्न जेलों में दो मास।

६ नवम्बर १९१३ — पामफोर्ड में गिरफ्तारी और जमानत पर रिहाई।

८ नवम्बर, १९१३ — स्टेंडर्टन में गिरफ्तारी और जमानत पर रिहाई।

९ नवम्बर, १९१३ — टिकवर्थ में गिरफ्तार हो डण्डी प्रवास।

११ नवम्बर, १९१३ — डण्डी में नौ मास के लिए कड़ी कैद की सजा।

१७ नवम्बर, १९१३ — वोलक्रस्ट में तीन मास कड़ी कैद।

नवम्बर, १९१३ — ब्लूम फोनटीन से वोलक्रस्ट में तबादला और १८ दिसम्बर, १९१३ को रिहाई।

भारत में

१७ अप्रैल, १९१७ — मोतीहारी में नोटिस, गिरफ्तारी नहीं।

१० अप्रैल, १९१९ — कोसी में गिरफ्तारी और बम्बई ले जाकर रिहा।

१० मार्च, १९२२ — साबरमती में राजद्रोह में गिरफ्तार।

१८ मार्च, १९२२ — यरवदा में ६ वर्ष कैद, ५ फरवरी, १९२४ को रिहाई।

५ मई, १९३०—गिरफ्तार होकर यरवदा जेल में,

४ जनवरी, १९३२ — बम्बई में गिरफ्तार हो यरवदा जेल में, ८ मई १९३३ को रिहाई।

३१ जुलाई, १९३३ —यरवदा में नजरबन्दी, ४ अगस्त को रिहाई।

४ अगस्त १९३३—पूना में एक वर्ष की सजा, २३ अगस्त १९३३ को रिहा

९ अगस्त १९४२—बम्बई में गिरफ्तार हो पूना के निकट आगाखां महल में नजरबन्द, ६ मई १९४४ को बीमारी के कारण रिहा

सत्याग्रह - आंदोलन

दक्षिण अफ्रीका में

(१) ११ सितम्बर,१९०६—जोहान्स बर्ग में आरम्भ। गांधी जी तथा दो सौ व्यक्तियों को सजा।

(२) ३० जनवरी १९०७ को स्मट्स से समझौता। १६ अगस्त, १९०८ जोहान्सबर्ग में स्मट्स का वाद खिलाफी के कारण पुनः सत्याग्रह, गालीकाण्ड, गिरफ्तारियां आदि।

(३) २८ अक्तूबर, १९१३ न्यू कासेल से वोलक्रस्ट की यात्रा। २१ जनवरी १९१४ को स्मट्स से पत्रव्यवहार के बाद स्थगित, १९१४ जुलाई में भारतीयों की विजय।

भारत में

१९१५ वीरमगांव (गुजरात) में चुंगी के विरोध में, १९१७ में चुंगी हटी।

अप्रैल १९१७—चम्पारण बिहार में नीलहे गोरों के दमन के खिलाफ ६ मास में शिकायतें दूर हुई।

मई, १९१७ —अहमदाबाद मजदूरों की हड़ताल के सम्बन्ध में

मार्च, १९१८—खेड़ा, गुजरात—लगान में छूट के लिए

६ अप्रैल १९ १९—रौलट एक्ट सत्याग्रह, १८अगस्त, १९१९ स्थगित, प्रथम देशव्यापी आदोलन

१ अगस्त १९२०—असहयोग आंदोलन जिसमें ३० हजार व्यक्तियों की जेल यात्रा — नवम्बर १९२२ में स्थगित—द्वितीय देशव्यापी आदोलन

१९२४, वैकोम त्रावणकोर में — हरिजनों के लिए

अगस्त १९२७ —मद्रास में नील की मूर्ति हटाने के सम्बन्ध में

१२ फरवरी १९२७—बारडोली गुजरात—लगानबन्दी आंदोलन

१२ मार्च १९३०—असहयोग आंदोलन तृतीय देशव्यापी आन्दोलन

मार्च १९३१—सिरसी कर्नाटक में लगान में छूट के लिये (शेष से)

राष्ट्र नेताओं की राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलियां

२० वीं सदी का ईसा फिर उठ खड़ा हुआ

[सरोजिनी नायडू]

विश्व के कोने कोने से आये सन्देशों ने यह सिद्ध कर दिया है कि महात्मा गांधी विश्व का एक ऐसा मानव था, जिसे शांति, न्याय और ईमानदारी के आदर्शों पर विश्वास करने वाले प्यार करते थे और पूजा की दृष्टि से देखते थे।

हम में से कुछ लोग महात्मा गांधी के साथ इतने घनिष्ट सम्बन्ध में बंधे हुए थे कि हमारा और उनका जीवन एक दूसरे के अविच्छिन्न अंग थे। हम में से कुछ लोग सचमुच ही उनके साथ मर गये हैं। हम में से कुछ लोगों का उनकी मृत्यु से जीते-जी देहविच्छेद कर दिया गया है क्योंकि हमारे स्नायु, मांसपेशियां, जीवनतन्तु, नसनाड़ियां, हमारे हृदय और रक्त उनके जीवन के साथ गुंथे हुए थे। किन्तु यदि हम निराश हो जायेंगे और यह मानने लगेंगे कि उनकी मृत्यु हो गई है, यदि हम यह समझने लगेंगे कि उनके चले जाने से सब कुछ चला गया है तो हम द्रोह करके उनका साथ छोड़ने वाले बन जायेंगे। हमारे विश्वास का, हमारी निष्ठा और आस्था का क्या मूल्य होगा यदि हम यह विश्वास करने लगें कि उनके नश्वर देह के हमारे मध्य से उठ जाने से अब सब नष्ट हो गया है। क्या उनके उत्तराधिकारी, उनके आध्यात्मिक वंशज, उनके महान् आदर्शों की थाती सम्भालने वाले और उनके महान् कार्य को उनके पीछे चलाते रहने वाले हम जीवित नहीं हैं। दुख और विलाप का अब समय नहीं रहा। छाती पीटने और बाल नोचने का समय भी गुजर गया है। अब समय है जबकि हमें खम ठोक कर उन लोगों की चुनौती स्वीकार करनी चाहिये जिन्होंने महात्मा गांधी का विरोध किया।

हम उनके जीवित प्रतीक हैं, हम उनके सिपाही हैं, और युद्धाक्रांत संसार में उनकी शान्ति-पताका फहराने वाले हैं। हमारी पताका है सत्य, हमारी ढाल अहिंसा और हमारी तलवार है रक्तपात के बिना विजय करने वाली आत्मा की तलवार। क्या हमें अपने स्वामी के पदचिह्नों का अनुकरण नहीं करना? क्या हमें अपने पिता की आज्ञा का पालन नहीं करना? क्या हम उनके सिपाही नहीं हैं और क्या हम उसकी लड़ाई को विजयी नहीं बनायेंगे? क्या हम संसार को महात्मा गांधी का पूर्ण संदेश नहीं देंगे? यद्यपि उसकी वाणी अब फिर उच्चरित नहीं होगी तो भी क्या हमारे कण्ठों में उसके सन्देश को वहन करने वाली छोटी-छोटी वाणियां नहीं हैं?

महात्मा गांधी का दुर्बल शरीर कल अग्नि शिखाओं में भस्म हो गया है, पर वे मरे नहीं हैं। पुरातन काल के ईसामसीह की तरह अपनी जनता की पुकार के उत्तर में, अपने पथप्रदर्शन, प्रेम, सेवा और प्रेरणा को जारी रखने के लिए संसार के आह्वान के उत्तर में मृत्यु के तीसरे दिन वह फिर उठ खड़ा हुआ है।

अंतिम प्रणाम

[श्री सुमित्रानन्दन पन्त]

बार बार अन्तिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, तुम कब थे भंगुर तन ?

व्याप्त हो गये जनमन में तुम आज चिरन्तन।
नव प्रकाश बन, आलोकित कर फिर जग जीवन।

पार कर चुके थे तुम निश्चय 'जन्म औ' निधन,
इसीलिये बन सके आज तुम दिव्य जागरन।

श्रद्धानत अन्तिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, हे जीवन के जीवन।

हमारे जीवन की ज्योति पुंज

[जवाहर लाल नेहरू]

हमारे जीवन की रोशनी गायब हो गयी है। चारों तरफ अंधेरा छा रहा है। हमारे प्यारे नेता, पूज्य बापू, हमारे राष्ट्र-पिता अब नहीं रहे। किन्तु शायद मेरा यह कहना गलत है। फिर भी अब हम उनको उस तरह से देख न सकेंगे जिस तरह से उनको इतने वर्षों से देखते आ रहे थे। अब हम सलाह के लिए उनके पास दौड़ते हुए न पहुंचेंगे और न उनसे सान्त्वना प्राप्त करेंगे। यह न केवल मेरे लिए बल्कि इस देश के करोड़ों व्यक्तियों के लिए एक भयानक आघात के रूप में है।

रोशनी गायब हो गयी है और अंधेरा छा गया है। पर यह कहना भी गलत है। क्योंकि पूज्य बापू ने इस देश को जो प्रकाश दिखाया वह कोई साधारण प्रकाश नहीं था। पिछले इन तमाम वर्षों में इस प्रकाश से यह देश जाज्वल्यमान हो उठा और वह आगे और भी बहुत वर्षों तक प्रकाशित होता रहेगा और आज से एक हजार वर्ष बाद भी वह प्रकाश इस देश में दिखायी देता रहेगा और इससे देश के असंख्य हृदयों को सान्त्वना प्राप्त होगी। वह प्रकाश सत्य का, अमर सत्य का प्रतीक है। यह हमें उचित मार्ग का स्मरण दिलाने वाला तथा गलतियों से उबारने वाला और इस प्राचीन देश को स्वतन्त्रता की प्राप्ति कराने वाला है।

एक पागल आदमी ने उनके जीवन का अन्त कर दिया। जिस व्यक्ति ने उनकी हत्या की है, उसे मैं पागल ही कहूंगा। फिर भी पिछले कुछ वर्षों और महीनों से देश में काफी जहर फैल रहा था। इस जहर का प्रभाव देश की जनता के मस्तिष्क पर पड़ा है। हमारे सामने उत्पन्न हुए सारे खतरों को पागलपन के साथ नहीं बल्कि ऐसे तरीके से सामना करना चाहिए जिस तरह से सामना करने के लिए पूज्य बापू ने हमें सिखाया है। अब हमें पहली जो बात याद रखनी है वह यह है कि हममें से कोई भी व्यक्ति नाराजगी के कारण कोई अनुचित कार्य न कर बैठे। हमें साहस और दृढ़तापूर्वक कार्य करना चाहिए। हमारे सामने जो खतरे पैदा हुए हैं उनका दृढ़ संकल्प के साथ सामना करना चाहिए। हमारे राष्ट्र-पुरुष ने हमें जो उपदेश दिए उनको अमल में लाने के लिए हमें संकल्प करना चाहिए और हमें सदैव यह ख्याल करना चाहिए कि उनकी आत्मा हमें अब भी देख रही है और हमें ऐसा कोई कार्य न करना चाहिए जिससे कि उनकी आत्मा को रंज पहुंचे।

हमारी कमर टूट गई

[सरदार पटेल]

मेरा दिल दर्द से भरा हुआ है। क्या कहूँ क्या न कहूं। जबान चलती नहीं। आज का अवसर भारत के लिए बड़े दुःख, शोक व शर्म का है। आज ४ बजे मैं गांधी जी के पास गया था। एक घंटे तक उनके साथ बात की। फिर वे घड़ी निकाल कर कहने लगे कि प्रार्थना का समय हो गया है। मुझे जाने दीजिये। वे भगवान् के मन्दिर के लिए चल पड़े। मैं मकान पर पहुंचा भी नहीं, रास्ते में एक भाई ने आकर कहा कि एक नौजवान हिन्दू ने गांधीजी की प्रार्थना की जगह पर पिस्तौल से तीन गोली उन पर चलाई। गांधी जी गिर पड़े। उन्हें उठाकर बिड़ला भवन पहुंचाया गया।

मरने के बाद भी चेहरे पर वही शान्ति थी, जो हमेशा दिखाई देती थी। दया व माफी का भाव प्रकट हो रहा था। बहुत से लोग वहां जमा हो गये।

गांधीजी को जो काम करना था करके चले गए। चन्द दिनों से उनका दिल खट्टा हो गया था। उपवास के बीच ही चले गये होते तो बहुत अच्छा होता। वे अब भगवान् के मन्दिर में पहुंच गये हैं। यह समय दुःख-दर्द का है गुस्से का नहीं। यदि गुस्सा करेंगे तो गांधी जी ने जीवन भर जो सबक हमें सिखाया है उसके यह प्रतिकूल होगा। हमें धब्बा लगेगा। मेरी प्रार्थना है कि कितना भी दुख-दर्द पहुंचे, गुस्सा रोका जाय। आज हमारी परीक्षा का समय है। हमें शान्ति व विनय के साथ मिल कर मजबूती से जमीन पर पैर रख कर खड़ा होना है।

इस समय हमारे ऊपर इतना बोझ है कि कमर टूट जाए। उनका जीवन तो हमारे लिए एक बड़ा सहारा था, चला गया। लेकिन वह हर मिनट हमारे सामने रहेगा। कल ४ बजे सायंकाल उनकी मिट्टी तो भस्म हो जायगी किन्तु आत्मा अमर है।

जो काम वे छोड़ गये हैं वह पूरा हो जाये। नाहिम्मत न होना चाहिए। सबको दृढ़ता से, हिम्मत से वह काम करना चाहिए जो सामने है। हमें यह संकल्प करना चाहिए कि जो काम गांधी जी ने प्रारम्भ किया था उसे पूरा करेंगे।

— ३० जन० के रेडियो भाषण से

विश्व विभूति के चरणों में विश्व की श्रद्धांजलियां

राष्ट्रों के कर्णधार

मैं तथा मेरी पत्नी को गांधी जी का निधन समाचार अवगत कर अतीव दुःख हुआ। इस महान् विभूति की जिसने सब रूप से मानवता की सेवा की है, क्षति-पूर्ति नहीं हो सकती। भारतवासियों के साथ मेरी हार्दिक सहानुभूति है।

—ब्रिटिश सम्राट

गांधीजी अन्तर्राष्ट्रीय नेता थे और उनकी इस संकटकालीन युग में अतीव आवश्यकता थी।

— अमेरीकन प्रेजिडेन्ट ट्रूमैन

महात्मा गांधी आज के युग में एक अद्भुत व्यक्ति थे। ऐसा जान पड़ता था कि वे इतिहास के किसी अन्य युग के पुरुष थे क्योंकि वे एकान्त तपस्वी का जीवन व्यतीत करते थे। उनके करोड़ों देशवासी उन्हें दिव्य सन्त के रूप में पूजते थे। गत चौथाई शताब्दी में भारतीय समस्या पर विचार करते समय सदा यही व्यक्ति प्रमुख विचार का केन्द्र रहा है।

वह भारत की जनता की आजादी की आकांक्षाओं का प्रतीक बन गया था किन्तु फिर भी वह एकान्त राष्ट्रवादी नहीं था। वह पश्चिम के विरुद्ध पूर्व के विद्रोह का भी प्रतीक था। वह स्वयं पश्चिम के भौतिकवाद के विरुद्ध विद्रोही था और सरल समाज प्रणाली की ओर लौटने का पक्षपाती था, किन्तु उसका सब से अधिक विलक्षण सिद्धान्त था अहिंसा।

हत्यारे के हाथ ने उसे नीचे गिरा दिया है और शांति और बन्धुत्व का सन्देश देने वाली वाणी को शान्त कर दिया है तथापि मुझे निश्चय है कि उसकी आत्मा उसके देश-वासियों को अनुप्राणित करती रहेगी और शान्ति व सौहार्द की प्रेरणा देती रहेगी।

—एटली

सज्जनता की अन्तिम पराकाष्ठा पर पहुंचना आज के युग में कितना घातक है — यह गांधी जी की हत्या स्पष्ट संकेत कर रही है।

—जार्ज बर्नार्ड शा

महात्मा गांधी के उठ जाने से केवल भारत की ही हानि नहीं हुई, अपितु सारे संसार की हानि हुई है। वे संसार में शांति स्थापित करने वाले इस युग के प्रमुख व्यक्ति थे।

—लार्ड लिस्टोवेल।

गांधी जी उन लोगों में से थे जो कि जमाने से बहुत आगे रहते हैं।

महात्मा गांधी की दुःखद मृत्यु पर आस्ट्रेलिया की सरकार व जनता को भारी शोक है। आस्ट्रेलिया में महात्मा गांधी को एक ऐसे महान व्यक्ति के रूप में याद किया जायगा, जिन्होंने सारी आयु मानवता की भलाई व शांति के लिए कार्य किया है।

[आस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्री] जोसफ बी० चीफ ले।

एक महान् ज्योति बुझ गई है और भविष्य अन्धकारमय हो गया है। मेरे ख्याल में गांधी जी के निधन से संसार की भारी क्षति हुई है। गांधी जी सब के थे।

श्री बैरन (फ्रांसीसी भारत के गवर्नर)

किसी भी व्यक्ति ने अपने देश के इतिहास में इतना महान पार्ट अदा नहीं किया जितना कि महात्मा गांधी ने किया है। गांधी जी की मृत्यु के दुःखद संवाद से सम्राट् की सरकार को गहरा धक्का लगा है। उनकी मृत्यु पर संसार के सभी देशों में लक्ष लक्ष नरनारी शोक मनाएंगे। ब्रिटिश सरकार को आशा है कि लोग उनके उदाहरण का अनुकरण करेंगे और उनका नैतिक प्रभाव भविष्य में भी लोगों को शान्ति की राह दिखाता रहेगा।

—ब्रिटिश सरकार का वक्तव्य

महात्मा गांधी की मृत्यु के समाचार से लंका की जनता व सरकार स्तब्ध रह गये हैं। हम भारत व विश्व की इस न पूरी होने वाली क्षति पर भारी शोक मनाते हैं।

श्री लंका के प्रधान मन्त्री सेना नायकम्

हम गांधी के निधन से हुई भारत की क्षति अपनी क्षति समझते हैं और हमें इस पर भारी शोक है।'

डा० मोहम्मद हत्ता [हिंदेशिया के जनरल]

विदेशी राजनीतिज्ञ

गांधी जी ने साम्प्रदायिक संघर्ष के जो कि साम्राज्यवादी विभाजन की बुरी हालत में मिला था, विरुद्ध लड़ाई में एक शहीद की भांति अपना बलिदान किया है। आशा है कि अब भी भारत व पाकिस्तान के नेता अपने भेदभावों को भुलाकर एक हो जायेंगे।

श्री रजनी पामदत्त
[ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के उपाध्यक्ष]

महात्मा गांधी की हत्या उस उद्देश्य की महान् क्षति है, जिसके लिये उन्होंने अपने प्राण अर्पण किये हैं। उनसे अधिक भक्ति भाव से भारत की किसी ने सेवा नहीं की। इतिहास में ऐसे थोड़े से ही व्यक्ति होंगे, जिन्होंने अपने चरित्र से अपनी पीढ़ी को इतना अधिक प्रभावित किया हो।

—लार्ड हेलीफैक्स

मुझे विश्वास है कि सारा संसार उनकी मृत्यु से दुःखी होगा। मैं उन्हें ३० वर्ष से जानता हूं और मेरी श्रद्धा उन पर अधिकाधिक होती गई। इस क्षति की पूर्ति नहीं हो सकती।

— जनरल स्मट्स

यह बड़ा भीषण समाचार है। ऐसे महापुरुष का अन्त ऐसी दुर्घटना से हुआ! हर्बर्ट मौरिसन।

यह बड़े शोक की बात है कि इतने महान शांतिवादी व्यक्ति पाशविक व हिंसात्मक शक्ति के शिकार हुए हैं, किन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारतीय जनता महान् भारतीय नेता की इच्छा को महसूस करेगी और उनका अनुकरण करेगी।

भारत ने अपना पिता खो दिया है और विश्व ने मानवता के नेता को खो दिया है। मेरा विश्वास है कि महात्मा गांधी जीवन की अपेक्षा मृत्यु से और भी अधिक बड़े होंगे।

सर ओलीवर गुनेटिल्लेक

बुद्ध के बाद वे ही भारत के महानतम पुरुष थे।

— जापानस्थित भारतीय हाईकमिश्नर

कलह, घृणा, सन्देह और कटुता से भरे इस संसार में महात्मा गांधी की वाणी निर्जन-दीप की तरह प्रेम, भ्रातृत्व और बन्धुता का मार्ग दिखाया करती थी।

मास्को – इण्डियन नेता श्री फ्राकरेन्धली

वे जीवन भर मनुष्यों को हिंसा से दूर रहने तथा उनमें भ्रातृभाव उत्पन्न करने का यत्न करते रहे हैं। धर्मान्धता और घृणा ने उन्हें अमर शहीद बना दिया।

कैण्टरबरी के आर्कबिशप

पाकिस्तानी नेता

भारत और मानवता की सेवा में समर्पित किये गये एक जीवन की ज्योति को, इस नाजुक मौके पर जब कि उसे अपने घावों पर मरहम लगाने वाले एक व्यक्ति की अत्यधिक आवश्यकता थी, एक कातिल के हाथों ने बुझा कर महत्तम संकट पैदा कर दिया है।

—पाकिस्तान के विदेशमन्त्री सर जफरुल्लाखां

गांधी जी संसार के एक महानतम पुरुष थे। भारत को और वास्तव में सारे संसार को इससे जो क्षति पहुंची है उसकी पूर्ति कठिनाई से हो सकेगी।

—अब्दुर्रब निश्तर

दुःखद समाचार सुन कर हृदय को भारी धक्का पहुंचा। भारतीय इस बात पर ध्यान रखें कि उनके प्रिय नेता द्वारा प्राप्त की गयी आजादी खो न जाये।

फिरोज खां नून

बापू की मृत्यु का प्रभाव भारत और पाकिस्तान दोनों स्थानों पर पड़ेगा। इस अवस्था में उनकी मृत्यु अत्यधिक हानिकर है।

चुन्द्रीगर

वे हमारे युग के महापुरुष और शांति तथा सद्भावना के दूत थे। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति सम्भव नहीं है।

लियाकतअली खां

इस समाचार से मुझे इतना आघात पहुंचा है कि मैं कुछ कह नहीं सकता। केवल हत्या कांड की कड़े से कड़े शब्दों में निन्दा कर सकता हूं।

—हबीब इब्राहीम रहीमतुल्ला

दिल्ली में २१ वर्ष १ मास ७ दिन पूर्व होने वाले एक दूसरे महान् बलिदान का दृश्य

ऊपर — अमर हुतात्मा स्वा० श्रद्धानन्द का बलिदान। घातक को गिरफ्तार करने वाले श्री धर्मपाल विद्यालंकार और श्री धर्मसिंह के चित्रों के बीच अन्तिम संस्कार का दृश्य

क्या आप फाउंटेन पेन रखते हैं

[ले० उमाशंकर शुक्ल]

★

आजकल जिसे देखो वही अपने पास फाउ टेन पेन रखे हुए है। मैं समझता हूं कि अस्सी प्रतिशत कालेज स्टूडेंट्स फाउ टेन पेन जरूर रखते हैं। प्रोफेसर तो शतप्रतिशत—संपादकों, लेखकों व संवाददाताओं का तो इसके बिना काम ही नहीं चलता। आज के जमाने में फाउ टेन पेन बहुत ही जरूरी चीज समझी जाने लगी है और है भी। किसी के पास अगर फाउ टेन पेन नहीं तो समझो उसकी पढ़ाई लिखाई बेकार है। फाउंटेन पेन का होना एक शान भी समझी जाती है। फाउ टेन पेन अंग्रेजी नाम है। हिन्दी नाम अभी अच्छी तरह से प्रचलित नहीं हुआ—धीरे धीरे प्रचलित हो जायगा। फाउंटेनपेन के लिए 'निर्झरिणी' शब्द प्रयुक्त किया गया था। कोई कोई 'झरनी' भी कहना पसंद करते हैं।

× × ×

उस दिन मैं नागपुर गया था। 'लोकमान्य' व 'लोकमत' के संचालक पं० रामशंकर जी त्रिपाठी बम्बई से आये हुए थे। उन्हीं से मिलने गया था। २२ जनवरी की बात है। मैं उनसे बातें कर रहा था। दूसरे ही दिन नेता जी जयंती थी। उन्हें सहसा ख्याल आया कि नेताजी पर कुछ लिखा जाय। उन्होंने कहा कि नेताजी का और उनका बहुत संबंध रहा है। नेताजी उन्हें अपना प्रगाढ़ मित्र समझते रहे हैं। लोकमान्य नेताजी का पत्र समझा जाता रहा है। हां तो उन्होंने नेताजी पर कुछ लिखना चाहा। उस दिन पंडित जी ने कुछ ऐसे संस्मरण सुनाये कि नेता जी की याद में हृदय भर आया। खैर—पंडित जी ने सामने कागज रखे और लिखने के लिए कलम उठाने ही वाले थे कि मैंने अपना फाउ टेन पेन उनके आगे बढ़ा दिया। पेन "पारकर ५१" था। पेन हाथ में लेते हुए पंडित जी ने कहा कि उस दिन बंबई में मेरा पेन खो गया। किसी को लिखने के लिए दिया—उसने लौटाया ही नहीं। पेन देना नहीं चाहिए। यह कहकर पंडित जी लिखने लगे और अपने लेख का शीर्षक उन्होंने दिया—नेताजी और "लोकमत",

× × ×

पंडितजी का फाउ टेनपेन गुम हो गया—मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। अक्सर ऐसा हो जाया करता है। इसीलिए मेरा कीमती पेन देखकर कुछ अनुभवी लोग कहते हैं कि देखिए आप इतना कीमती पेन पास में न रखा कीजिए। पेन हमेशा सस्ता रखा करिए — अगर खो भी जाय तो रंज नहीं होता। मैं भी हां में हां मिला देता हूं। पेन अक्सर खो जाते हैं। मेरे ही अपने अब तक दो पेन खो गये हैं — याद आती है तो दो मिनट तक दिल दुःखित हो उठता है। रंज के मारे तो कई महीने तक मैंने पेंसिल से ही काम चलाया — पर पेंसिल आखिर पेंसिल ही है और पेन-पेन ही। जब तक लड़ाई चलती रही — भारत में पेन दिखाई ही नहीं देते थे और अगर किसी व्यापारी के पास थे भी तो वह काले बाजार में एक के चार करता था और ऊपर से अहसान भी लादता था कि हमने देखो तुम्हें पेन दिया है। जैसे मुफ्त में ही देता हो। लड़ाई के बाद पेन इतने आये कि पूरा बाजार पट गया और आज जितने चाहो उतने पेन खरीद लो — मिट्टी मोल। रोज रोज दाम गिर रहे हैं।

× × ×

हां तो मैं फाउंटेन पेन के बारे में कह रहा था। फाउंटेन पेनों पर चार लोग दांत गड़ाये ही रहते हैं। नजर चूकी कि पेन गायब। दूसरी चीज अगर खो जाती है तो उसके मिलने की कुछ आशा भी रहती है पर पेन—पेन का नाम मत लो। कुछ लोग दिखाने के लिए अपना पेन कोट या कुरते के ऊपरी जेबों में लगाते हैं ताकि दूसरे लोग यह समझें कि हां — भई है यह भी कोई शौकीन। ऐसे पेन तो बहुत जल्दी हड़प कर लिये जाते हैं।

हमारे एक मित्र हैं। वकालत करते हैं। सतीर्थ्य (क्लास फेलो) भी हैं। रोज उठते बैठते हैं और घण्टों बातें करते हैं। मैंने जब पारकर लिया तो कहने लगे—इतनी महगी कलम नहीं लेना चाहिए — खो जाती है। मैंने कहा अब नहीं लूंगा — ले ली है तो इसे हिफाजत से रखूंगा। गुम नहीं होने पाएगी। एक दिन उन्हें मैंने 'एवर शार्प' पेन खरीदवा दिया। १५ अगस्त, जिस दिन स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया था, — उनकी कलम भीड़ भाड़ में किसी ने हड़प ली। उन्हें बहुत रंज हुआ पर रंज करने से फायदा—पेन तो किसी भाग्यशाली के भीतरी पाकेट की शोभा बढ़ा रहा होगा। मेरे उक्त मित्र ने निश्चय किया है कि अब पेन से लिखूंगा ही नहीं। देखना है उनकी यह प्रतिज्ञा कब तक कायम रहती है !

× × ×

मेरा ख्याल है कि पेन रखा जाय तो अच्छा ही पेन रखा जाय। नहीं तो कभी २ रद्दी पेन खास मौकों पर धोखा दे जाते हैं और उस समय बड़ी आफत होती है। कीचड़ में फसी हुई गाय की तरह इधर उधर लोगों का मुंह ताकना पड़ता है। एक बार की बात है। उन दिनों वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक थी। राजा जी भी आये थे। उनके पास कुछ विद्यार्थी पहुंचे और कहने लगे हस्ताक्षर कर दीजिए। एक विद्यार्थी ने तो अपनी कापी और अपना पेन राजा जी की ओर बढ़ा दिया। राजा जी पेन से हस्ताक्षर करने लगे पर पेन ही नहीं चलता था। उन्होंने उसे झटका भी — पर पेन नहीं चला। इस पर उन्होंने उस विद्यार्थी से कहा कि ऐसी खराब कलम का उपयोग न किया करो। विद्यार्थी बिचारा झेंप गया। राजा जी ने अपनी कलम से हस्ताक्षर कर दिए।

पेन उड़ाने की फिराक में सब रहते हैं। मौका पाया नहीं कि पेन पर हाथ साफ। यहां तक विश्व की महान् विभूति गांधी जी का पेन भी किसी ने चुरा लिया था। तब से गांधी जी ने निश्चय किया है कि वे पेन से नहीं लिखेंगे और इस लिए वे आज कल कलम दावात से अपना लेखन कार्य करते हैं या फिर अपने प्रायवेट सेक्रेटरी को नोट करा देते हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के गत पैंतीसवें अधिवेशन में 'शुभचिंतक' सम्पादक तथा हिन्दी के रसीले कवि श्री नर्मदाप्रसाद खरे की "पारकर ५१" पेन किसी ने साफ कर दी। पेन के सम्बन्ध में बहुत ही सावधान रहने की जरूरत है। पेन चोरी न जाय इसके लिए निम्न उपाय काम में लाये जा सकते हैं —

(१) पेन हमेशा भीतर की जेब में ही रखा जाय।

(२) कभी भी दूसरे को पेन लिखने के लिए न दिया जाय क्यों कि लोग पेन लिखने के लिए ले तो लेते हैं पर उसे वापस करना भूल जाते हैं।

(३) यात्रा के समय पेन भीतर की जेब में भी न रखा जाय बल्कि उसे ट्रंक में बन्द करके रखा जाय।

(४) घर में जब पेन से लिखा जाय तो काम होने पर उसे हिफाजत से रखा जाय। टेबुल पर यों ही न छोड़ा जाय—क्योंकि अवसर पाते ही कोई हाथ साफ कर सकता है।

(५) पेन लगा कर शहर में न घूमा जाय और अगर घूमा भी जाय तो हर पांच पांच मिनट पर उसे टटोल लिया जाय।

आशा है फाउंटेन पेन रखने वाले उपर्युक्त बताये हुए उपाय काम में लावेंगे और इस तरह वे फाउण्टेन पेन के खो जाने की चिंता से मुक्त हो जावेंगे।

एक बार मेरा पेन चोरी चला गया। पता नहीं वह जेब से निकाल लिया गया या कहीं गिर गया। बड़ी आफत आई — क्योंकि उस समय नये फाउण्टेन पेन बाजार में नहीं बिकते थे। मैंने अपने मित्र श्री भावसे जी जो कि मेरे सहयोगी हैं — से कहा और उन्होंने अपना पेन उधार दिया। वह पेन मेरे पास करीब ढाई साल तक रहा। सबसे ज्यादा चिंता मुझे उक्त 'पेन' की ही रहती थी और मैं बड़ा सतर्क रहता था। अब वह पेन मैंने सधन्यवाद उन्हें वापस कर दिया है क्योंकि मैंने अब दो फाउण्टेन पेन खरीद लिये हैं।

मैंने जो ये पेन खरीदे हैं — उन्हें रखता तो हूं बड़ी हिफाजत से पर हमेशा चिंता लगी रहती है कि कहीं कोई हाथ साफ न कर दे। क्योंकि मेरे पेन की दोस्त लोग बहुत तारीफ करते हैं।

अगर कोई मित्र पेन सुरक्षित रखने के और कुछ उपाय बता सकेंगे तो उन्हें सधन्यवाद अपने दूसरे लेख में उल्लेख करूंगा।

युगद्रष्टाओं का अन्त दुःखद ही होता है !

[श्री शिवनारायण]

> गांधीजी भी उसी बलिदान पथ के पथिक हो गये, जिसके सुकरात, ईसा, दयानन्द और श्रद्धानन्द पहले हो चुके हैं। शायद विश्व की महान् विभूतियों का अन्त इसी तरह होना सनातन परिपाटी है।

पिछले सप्ताह हमारे राष्ट्रपिता और अहिंसा के अवतार का जो दुःखद अवसान हुआ है, उसने हमें फिर से इतिहास की याद दिला दी है। वास्तव में इस संसार में जितने भी महान् पुरुष हुए हैं, यदि हम उनके जीवन पर एक दृष्टि डालें, तो हमें प्रायः यह दिखाई पड़ेगा कि वह एक साधारण घराने में पैदा हुए, उन्होंने जीवन भर निःस्वार्थ होकर लोक सेवा की और अन्त में उनकी मृत्यु एक ऐसे दुःखद रूप से हुई, जिसकी संसार ने कल्पना भी नहीं की थी। एक व्यक्ति ने सत्य को अनुभव किया और उसने यदि इसके प्रचार का साहस किया तो उस समय तो शायद उसके कुछ शिष्य भी बन गए, परन्तु उसके शत्रुओं का पलड़ा हमेशा ही भारी रहा। उस वीर, साहसी पुरुष का अन्त या तो गोली मार कर, या तलवार से और या उसको जीवित ही चिता में डाल करके कर दिया गया। इतिहास में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है।

सुकरात

विश्व के ज्ञात इतिहास में इस श्रेणी में सबसे पहला नाम शायद सुकरात या 'साक्रेटीज' का है। वह यूनान देश के एथेन्स राज्य का प्रसिद्ध फिलासफर था और हमेशा सत्य की तलाश में रहता था। उसके लिए सच्चा ज्ञान ही ऐसी वस्तु थी, जिसे वह प्राप्त करने योग्य समझता था। वह अपने मित्रों और जान पहचान के लोगों से प्रायः कठिन समस्याओं पर विचार और चर्चा करता रहता था, जिससे बहस – मुबाहिसे में शायद कोई सचाई निकल आए। उसके कई शिष्य भी थे, उनमें से सबसे बड़ा प्लेटो या अफलातून था। अफलातून ने कई किताबें लिखी हैं, जो आज भी मिलती हैं। इन्हीं किताबों से हमें उसके गुरु सुकरात का कुछ हाल मिलता है। यह तो साफ है कि सरकारें ऐसे मनुष्यों को पसन्द नहीं किया करतीं, जो हमेशा नई नई खोज में लगे रहते हों — वह सचाई की तलाश पसन्द नहीं करती। एथेन्स की सरकार को, सुकरात का यह रंग ढंग पसन्द नहीं आया। उस पर मुकदमा चलाया गया और मौत की सजा दी गई। सरकार ने उससे कहा कि वह यदि लोगों से वाद विवाद करना छोड़ दे और अपनी चाल ढाल बदल दे, तो उसे छोड़ दिया जा सकता है लेकिन सुकरात ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और जिस बात को वह अपना कर्तव्य समझता था, उसे छोड़ने के बजाय जहर के प्याले को अच्छा समझा — जिसे पीकर उसने प्राण छोड़ दिए। मरते समय उसने एथेन्स वासियों से कहा था — "मैं आप लोगों का धन्यवाद करता हूँ। परन्तु मैं आपकी बात मानने की बजाय ईश्वर का ही हुक्म मानूंगा।" इस प्रकार संसार के बहुत बड़े पुरुष को केवल इस लिए समाप्त कर दिया गया क्योंकि वह सत्य का अभिलाषी था।

ईसा

विश्व के महापुरुषों में ईसा का अन्त भी इस दुःखद इतिहास का दूसरा अध्याय है। ईसा यहूदी थे। वह बेथलम में पैदा हुए। गेलिली में उन्होंने प्रचार किया और तीस वर्ष से ज्यादा आयु होने पर जेरूसेलम आये। यहूदी एक मसीहा का इन्तजार कर रहे थे और ईसा से उन्होंने ऐसी आशाएं की थीं। लेकिन बहुत शीघ्र उनकी उम्मीदों पर पानी फिर गया, क्योंकि ईसा एक अजीब भाषा में चालू तरीकों और सामाजिक संगठन के खिलाफ बगावत की बातें कहा करते थे। खास तौर से वे अमीरों और उन ढोंगियों के खिलाफ थे, जिन्होंने खास तरह की पूजा पाठ और रस्म रिवाज को ही धर्म बना रखा था। धन दौलत और ऐश्वर्य बढ़ाने की आशा दिलाने के बजाए वह उल्टे स्वर्ग का अव्यक्त और काल्पनिक राज्य प्राप्त करने के लिए, लोगों को, उनके पास जो कुछ था उसे भी त्याग देने को कहा करते थे। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह जन्म से ही ऐसे विद्रोही थे, जो मौजूदा हालत को रोक नहीं सकते थे और उसे बदलने को तुले बैठे थे। लेकिन यह तो वह बात न थी, जो यहूदी चाहते थे इसलिए उनमें से ज्यादातर लोग उनके खिलाफ हो गए और उनको पकड़ कर रोमन अधिकारियों के सुपुर्द कर दिया। जब रोमन गवर्नर पान्टियस पाइलेट के सामने ईसा पेश किए गए, तो इस मुकदमे में मजहबी पहलू की तनिक भी चिन्ता न हुई। ईसा एक राजनैतिक विद्रोही और यहूदियों की दृष्टि में सामाजिक विद्रोही समझे जाते थे और इसी जुर्म में उन पर मुकदमा चलाया गया और फांसी की सजा दी गई और बाद में गोलगोथा स्थान पर उन्हें सूली पर दोनों हाथ और पैरों पर कीलें ठोक कर लटका दिया गया। उनकी इस मुसीबत की घड़ी में, उनके चुने हुए शिष्य तक उन्हें छोड़कर भाग खड़े हुए और यहां तक कह बैठे कि वह उनको जानते तक भी नहीं। अपने इस विश्वासघात से उन्होंने ईसा की पीड़ा को बहुत अलग बना दिया, जिससे मरते समय वह विचित्र रूप से दिल को हिला डालनेवाले इन शब्दों में चिल्ला उठे, "मेरे ईश्वर! मेरे ईश्वर! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

गैलीलियो

इस श्रेणी में तीसरा नाम हमारे सामने गैलिलीयो का आता है। वह शायद योरप के प्राचीन काल में पहला व्यक्ति था, जिसने यह पहले पहल कहने का यत्न किया था कि भूमि चपटी नहीं, गोल है। लोग इसको बिल्कुल सहन नहीं कर सके और उसको विधर्मी और घातक कहने लगे। सब ने उसके खिलाफ आन्दोलन-सा खड़ा कर दिया और अन्त में उस बिचारे को बुरी तरह जीवित ही चिता में जला दिया गया।

अब्राहम लिंकन

अमेरिका के भूतपूर्व प्रधान श्री अब्राहम लिंकन भी इसी श्रेणी में सम्मिलित हैं। वह अमेरिका के बड़े से बड़े शूरवीरों में एक स्थान रखते हैं। उनका स्थान दुनियाभर के महान पुरुषों में भी है। शुरू में वह बहुत ही छोटा आदमी था। स्कूल में उसने थोड़ी सी तालीम पाई थी और जो कुछ उसने सीखा, ज्यादातर अपनी ही मेहनत से सीखा था। फिर भी पढ़ते २ एक बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ और वक्ता बन गया। उस ने अमेरिका से गुलामी को समाप्त करने में बहुत बड़ा काम किया। पहिले उन्होंने यह प्रस्ताव किया था कि मालिकों को मुआवजा देकर कांग्रेस (सरकार) गुलामों को आजाद कर दे। परन्तु इस बात पर आगे चल कर बहुत भारी झगड़ा हो गया और उत्तरी और दक्षिणी रियासतों का एक गृहयुद्ध छिड़ गया। इस गृहयुद्ध को टालने की लिंकन की सारी कोशिशें बेकार रहीं। वास्तव में गृह-युद्ध की असली वजह दासप्रथा नहीं थी। झगड़े की जड़ तो असल में दक्षिण और उत्तर के जुदा २ और कुछ विरोधी आर्थिक स्वार्थ थे और आखिर में लिंकन को संघ की रक्षा के लिए लड़ना पड़ा। चार वर्ष के महायुद्ध के पश्चात्, १८६५ ई० में यह महायुद्ध समाप्त हुआ। जैसे २ लड़ाई बढ़ती गई, वैसे २ लिंकन भी दास-प्रथा को हटाने में और दृढ़ और इस सम्बन्ध में और अधिक स्पष्टवादी होता गया और १८६२ ई० के सितम्बर में उसने पूर्ण मुक्ति की घोषणा कर दी कि पहली जनवरी १८६३ ई० में सारे बागी राज्यों के गुलाम आजाद हो जाएंगे। युद्ध में विजय पालेने के बाद भी लिंकन ने हारे हुए दक्षिण के साथ उदारता का बर्ताव करना शुरू कर दिया परन्तु इसके शीघ्र ही पश्चात् किसी क्रुद्ध व्यक्ति ने उनको एक थियेटर हाल में गोली से उड़ा दिया। इस महान् पुरुष का अन्त भी इसी प्रकार एक ऐसे व्यक्ति से हुआ जिसका बड़ा कारण विचारों का मत भेद ही था।

ऋषि दयानन्द

ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। उन्होंने हिन्दू धर्म में पीछे से पैदा हुई रूढ़ियों का खण्डन किया और जात पात के साथ भी युद्ध छेड़ा। श्री स्वामी दयानन्द ने जीवन भर ब्रह्मचारी रह कर दिन रात सामाजिक और मानसिक तथा धार्मिक क्रान्ति का लक्ष्य सामने रख कर देश सेवा की। वह एक पौराणिक पण्डित के घर उत्पन्न हुए थे परन्तु उन के मन में शुरू से ही सच्चे शिव की प्राप्ति अभिलाषा थी। वह घर से निकल भागे और अन्त में बहुत स्थानों पर भटकने के पश्चात् स्वा० विरजानन्द के पास मथुरा में पहुंचे। स्वा० विरजानन्द से सच्ची दीक्षा ली और फिर से वैदिक भारतीय संस्कृति व धर्म के प्रचार करने का निश्चय किया। स्वामी दयानन्द इसी के लिए जीवित रहे और इसी के लिए ही उन्होंने अपनी जान दे दी। बड़े २ राजाओं और महाराजाओं को उन्होंने स्पष्ट शब्दों में अपना चरित्र सुधारने की शिक्षा दी। उन्होंने इसके लिए बड़े से बड़ा प्रलोभन ठुकरा दिया। अपने प्रचार के सिलसिले में वह कई बार मुसलमानों के घर भी जा कर ठहरते थे, परन्तु फिर भी वह इसलाम की समालोचना करने से कभी नहीं घबराते थे। सत्य के वे महान जिज्ञासु और प्रचारक थे और इस सत्य-प्रचार में उन्होंने बड़े से बड़े विरोध की परवा न की। उन्होंने जाति रूप से कभी किसी से विरोध की भावना नहीं रखी। उन्हों ने अपने जीवन में प्रत्येक कुरीति की ओर ध्यान दिया। स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह का प्रचार पहले पहल उन्होंने ही आरम्भ किया था। वह भारत में पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने यह कहा था कि सुराज्य से स्वराज्य कहीं अच्छा होता है।

इस महान् पुरुष का अंत भी एक जगन्नाथ नामी व्यक्ति ने किया जो कि उनके पास रसोइये के रूप में रहता था। किसी के लालच दिए जाने पर उसने स्वामी जी को एक दिन दूध में शीशा पीस कर दे दिया और वह इसको पी गये। इसका प्रभाव तो शीघ्र ही उनके

[शेष पृष्ठ २२ पर]

२० वीं सदी के महात्मा बुद्ध के महान् ऐतिहासिक निर्वाण की कुछ करुण झांकियां

राष्ट्रनायक महात्मा गांधी के महाप्रस्थान पर युगपुरुष के अन्तिम दर्शन के लिए विलाप करती हुई जनता का अपार पारावार ।

बिड़ला हाउस में अपने नेता के दर्शन के लिए एकत्र जनसमूह । निष्प्राण शरीर छत पर रक्खा गया है।

राष्ट्रपितामह की शोक-सभा में शोकसंतप्त राष्ट्र को नेताओं का आश्वासन ।

ये हैं इस युग के महात्मा बुद्ध ।

आर्मर्ड कारों का एक दस्ता भी शव के आगे आगे था।

पवित्र कालिन्दी तट पर अंत्येष्टि संस्कार के समय उपस्थित नेता मौंटबेटनदम्पति, मौ० आज़ाद, चौनी राजदूत, सरदार पटेल, श्रीमती नायडू और सर० बलदेवसिंह आदि

यह राजघाट श्मशान है, अस्थिचयन के लिए एकत्र नेता व लक्षाधिक जन समूह ।

इस स्थान पर नर-पिशाच ने अपने हाथ खून से रंगे थे

बिड़ला हाउस से बापू की अन्तिम यात्रा की तैयारी ।

मौ० आज़ाद श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर रहे हैं।

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

[गतांक से आगे]
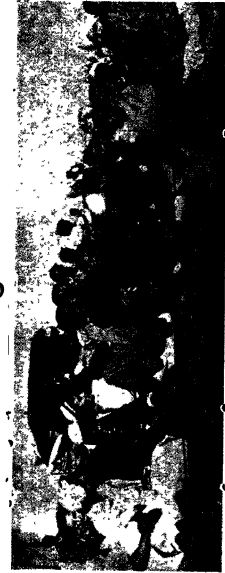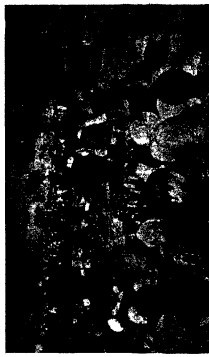
[१०]

उस दिन के परिवार सम्मेलन के निश्चयों ने रामनाथ के अधिकारों में जो वृद्धि कर दी थी, उनके उपयोग का अवसर उसी दिन सायंकाल आगया। जब यह खबर गाव में फैली, कि तिवारी जी आए हैं, तो लोग दर्शनों की अभिलाषा से आने लगे। ग्रामीणों की श्रद्धा किस क्रम से हीन होती है। तिवारी जी देश के लीडर हैं, जमींदार की कोठी पर ठहरे हुए हैं, बड़े भारी व्याख्यानदाता हैं, और ब्राह्मण हैं। ये सभी बातें उनके पक्ष में जाती थीं। उसकी तबीयत में एक खास ढग की सादगी थी, जो ग्रामवासियों को बहुत पसन्द थी। जोर की आवाज से खुल कर बातें करना, घर के और बालबच्चों के हाल-चाल पूछना, गाव की भाषा में बात चीत करने का यत्न करना ये सब विशेषताएं थी, जिन्होंने एक ही दिन के परिचय में गाव वालों को तिवारी जी का मुरीद बना दिया था। जब उन्होंने सुना कि तिवारी जी पटना से आए हैं तो आस पास के गांवों से दल बांध-बांध कर लोग दर्शनों के लिए आने लगे।

दर्शनाभिलाषियों का तांता शाम तक लगा रहा। सीधे सादे ग्रामीण लोग रामनाथ की मिलनसारी से बहुत ही प्रभावित हुए। सन्ध्या के समय जो लोग आए, उनमें कैलाश भी था। हम देख आये हैं, कि कैलाश गत दो वर्षों से बेलूर परिवार के साथ गहरा परिचय प्राप्त करने का निरंतर प्रयत्न कर रहा था। हमने यह भी देखा है कि उसके सम्बन्ध में सरला की भावना प्रतिकूलता की थी। वह उसके रग ढंग और व्यवहार को अच्छा नहीं समझती थी। सरला की यह प्रतिकूलता रामनाथ को मालूम हो चुकी थी। कैलाश को देखते ही रामनाथ के मन में शरारत की भावना उठ खड़ी हुई। वह चारपाई पर से उठा और हाथ बढ़ा कर कैलाश का हाथ पकड़ लिया। फिर 'आईये, डाक्टर कैलाश। आपने खूब दर्शन दिए'—इन शब्दों से स्वागत करते हुए, उसके हाथ इतने जोर से भींचे, कि उस बेचारे ने अपनी चीख को दबाने की चेष्टा से दबते हुए कहा—'अ रे! तिवारी जी, यह क्या कर रहे हो, क्या मेरे हाथ को तोड़ कर ही छोड़ोगे। रामनाथ ने हंसते हुए कैलाश के हाथ छोड़ दिए और कहा—

'अरे भाई! क्या करूँ, तुमसे एक बार की मुलाकात में ही इतना प्रेम हो गया है कि मिलने के समय हाथ काबू से निकल गए, लेकिन भाई, गांव के आदमी होकर भी तुम फिसड्डी ही रहे। मालूम होता है खाते पीते कम हो। डाक्टरी कैसी चल रही है?'

यह कहते हुए रामनाथ ने कन्धे पर थपकी देकर कैलाश को पास की चारपाई पर बिठा लिया। तब दोनों में निम्न प्रकार से बातें होने लगीं। बात चीत के समय चार-पाच और दर्शनाभिलाषी भी उपस्थित थे।

कैलाश — डाक्टरी काहे की, तिवारी जी। किसी तरह गुजारा चल रहा है। गाव में पहले तो लोग बीमार कम होते हैं। बीमार हो जाय, तो तब तक डाक्टर के पास नहीं जाते जब तक मौत सामने न दिखाई दे,"

रामनाथ — और जब मौत सामने आजाय तब मौत के भाई के पास चले जाते हैं। खाई से बचकर कुए में जा पड़ते हैं। क्यों कैसी रही?

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी और उधर उस के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विकृत होकर अपकीर्ति के रूप में फैल रही थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत होगया और चम्पा ने जमींदारी का काम सभाल लिया।

चम्पा के जमींदारी संभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बडे भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बंटवारे पर सहमत कर लिया और एक दिन माधवकृष्ण को बुलाकर यह प्रस्ताव पेश भी कर दिया। भ्रातृ भक्त माधवकृष्ण इस अकल्पित प्रस्ताव को सुन कर भौंचक रह गया। इन्हीं दिनों बिहार भूकम्प के कार्य में सेवा करने के लिये आये हुए श्री रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत परिचित हो गये थे।

यह कह कर रामनाथ ताली बजा कर हंस पड़ा। कैलाश अप्रतिभ सा होकर उसके मुंह की ओर देखने लगा।

रामनाथ ने फिर कहा — अरे भाई, मेरी ओर देखते क्या हो। मैंने कोई गलत बात तो नहीं कही। हमारे शास्त्रों में ऐसा ही लिखा है कि वैद्य मृत्यु का भाई है।

कैलाश ग्रामीणों के सामने अपना अकारण अपमान सहन नहीं कर सका, और क्रोध से कांपते हुए स्वर से बोला —

"देखो तिवारी जी, आप बराबर मेरा अपमान कर रहे हैं। मैंने आप से कोई बुरी बात नहीं कही, और आप बार बार मुझे गाली देते जा रहे हैं।"

रामनाथ लापरवाही से चारपाई पर लेटता हुआ बोला —

अरे बदतमीज, तुझे यह भी मालूम नहीं कि बड़ों से कैसे बोला करते हैं। न डाक्टर और न डाक्टर की दुम, चला है तिवारी जी महाराज को अक्ल बतलाने।

अब तो कैलाश आपे से बाहिर हो गया। जोर की आवाज़ से बोला —

देखो जी, मुंह सभाल कर बोलो, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। क्या तुमने मुझे कोई जुलाहा समझ लिया है जो मनमानी कहे जाते हो!

इस पर रामनाथ चार पाई से उठ कर खड़ा हो गया, और खूब चिल्ला कर बोला —

"क्या कहा? जुलाहा। तेरी यह बद जुबानी कि मुझे जुलाहा कह रहा है। और वह भी हमारे घर पर आकर। निकल जा यहां से। यदि मैंने महात्मा जी का अहिंसा व्रत न लिया होता तो मैं तेरा सिर फोड़ कर रख देता।"

कैलाश की आखिरी बात और रामनाथ की इस चिल्लाहट ने वहा बहुत सी भीड़ इकट्ठी करदी थी। दरवाजे के दरबान और घरके नौकरों के अतिरिक्त हवेली के अन्दर से चम्पा सरला रमा और माधवकृष्ण भी निकल कर आ गये थे। जब उन्होंने रामनाथ के मुंह से यह सुनी कि कैलाश ने उसे जुलाहा कह कर गाली दी है तो सब को बड़ा क्रोध आया। नौकरों ने कैलाश को पकड़ लिया और धक्के देकर कोठी से बाहिर निकाल दिया। कैलाश की यह पुकार किसी ने नहीं सुनी कि 'मैंने जुलाहे की गाली तिवारी जी को नहीं, अपने आप को दी थी।' भला यह कैसे माना जा सकता था कि कैलाश जैसा व्यक्ति सच बोलता हो, और रामनाथ जैसा व्यक्ति झूठ।

कैलाश के निकल जाने पर घर के सब लोग रामनाथ से कुशल पृच्छिका करने लगे। बड़ा कमबख्त था वह। आप पर उसने हाथ तो नहीं उठाया न। आपके कहीं चोट तो नहीं लगी?

रामनाथ हस कर सब का उत्तर देता रहा। "अजी वह मुझ पर हाथ क्या उठा सकता था? मेरा एक थप्पड़ लग जाता तो वह पानी भी न मागता। पर मैंने तो अहिंसा का व्रत लिया है। इसी से मूंछी को छोड़ दिया। पर वह इस लायक आदमी नहीं कि इस कोठी में पैर भी रखे। ऐसे जलील आदमियों का यहां आना बिल्कुल बन्द हो जाना चाहिये।

इस प्रस्ताव से सभी सहमत हो गये चम्पा और सरला कैलाश से पहले ही परेशान रहती थीं, फिर अब तो अपने मेहमान का अपमान किया था — उसे जुलाहा कहा था यह क्षन्तव्य कैसे हो सकता था।

इस घटना से बेलूर के निवासियों पर रामनाथ की वीरता की और अहिंसा व्रत की इकट्ठी ही धाक बैठ गई।

(११)

रामनाथ पुरुषार्थी था, व्यावहारिक, प्रतिभा-सम्पन्न था, और साहसी था। ऐसे व्यक्ति का सार्वजनिक कार्य क्षेत्र में ऊंचा उठ जाना स्वाभाविक ही था। उसके स्वभाव में एक बड़ा दोष था। वह शीघ्र ही बिगड़ उठता था, और जब बिगड़ उठता था तब विरोधी को हानि पहुंचाने में उचित अनुचित का कोई भेद नहीं करता था। उसका सिद्धांत था कि परिणाम अच्छा हो तो उपाय में कोई बुराई नहीं आती। परन्तु यह दोष कांग्रेस के उस समय के जीवन में विशेष रूप से बाधक नहीं समझा जाता था। कांग्रेस देश की स्वाधीनता के लिये विदेशी सरकार से लड़ रही थी। लड़ाई के मैदान में उसी का बोल बाला है, जो खूब डट कर लड़ सके। रामनाथ गजब का लड़ाका था, और साथ ही वक्ता भी अच्छा था। बिहार के राजनीतिक नक्षत्र के रूपमें वह शीघ्र ही चमक उठा।

उस दिन बिहार की प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी का चुनाव था। चुनाव के लिए होने वाली प्रान्तिक कमेटी की बैठक से पहिले स्वयं सेवकों की एक सभा बुलाई गयी थी। सभा में स्वयं सेवकों के अतिरिक्त प्रान्तिक-कमेटी के और सेन्ट्रल रिलीफ कमेटी के अधिकारी भी उपस्थित थे। सभापति के आसन पर बिहार के एक प्रमुख नेता विराजमान थे। सभा का विशेष उद्देश्य यह था, कि कुछ स्वयं-सेवकों के सम्बन्ध में प्राप्त हुई उस

गुप्त रिपोर्ट पर फैसला सुनाया जाय जो कुछ दिन पूर्व भूकम्प के कार्यक्षेत्र से प्राप्त हुई थी। मुजफ्फरपुर के इलाके के अध्यक्ष ने रिलीफ का काम करने वाले कुछ स्वयसेवकों पर यह आरोप लगाये थे, कि उन्होंने सार्वजनिक धन का अपव्यय किया और अधिकारियों द्वारा ताड़ना होने पर उनका सामना किया। अपराध बहुत संगीन थे, केन्द्रीय कार्यालय द्वारा शिकायतों की तहकीकात का काम बाबू बलधारी सिंह के सुपुर्द किया गया था। बाबू बलधारी सिंह को वकील और अध्यक्ष का विश्वास पात्र होने के कारण इस योग्य समझा गया, कि वह तहकीकात का काम कर सकें। बाबू बलधारी सिंह ने छान-बीन के पश्चात् जो रिपोर्ट पेश की, उसका अभिप्राय यह था कि शिकायतें न केवल ठीक थीं, अपितु यथार्थता से कम थी। स्वयं सेवकों का अपराध बहुत अधिक था, अध्यक्ष ने उसे बहुत हल्का करके दखाया। स्वयं-सेवकों की सभा और चुनाव की सभा में भाग लेने के लिए रामनाथ तिवारी विशेष रूप से बेलूर गये थे। यों सभा से रामनाथ का कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था, क्योंकि मुजफ्फरपुर के स्वयसेवक दल का प्रबन्ध पटना या मुंगेर के प्रबन्ध से बिल्कुल अलग था। परन्तु एक तो स्वयं-सेवकों का मामला और दूसरे बलधारीसिंह का नाम, दोनों चीजें रामनाथ को काफी आकर्षक प्रतीत हुईं, जिनसे खिंच कर वह सभा के दिन विशेष रूप से पटने आ पहुंचा और अपने मित्र बांकेलाल शुक्ल के साथ सभा में सम्मिलित हुआ। बांकेलाल शुक्ल पटना में भूकम्प पीड़ितों की सेवा करने वाले स्वय सेवक दल का उपकप्तान था। वह गत मास भर में रामनाथ का गहरा मित्र बन गया था।

(क्रमशः)

मुफ्त

नवयुवकों की अवस्था तथा धन के नाश को देखकर भारत के सुविख्यात वैद्य कविराज खजानचन्द जी बी० ए० (स्वर्णपदक प्राप्त) गुप्त रोग विशेषज्ञ घोषणा करते हैं कि गुप्त रोगों की अचूक औषधियां परीक्षा के लिए मुफ्त दी जाती हैं ताकि निराश रोगियों की तसल्ली हो जाये और धोके की सम्भावना न रहे। रोगी कविराज जी को विजय फार्मेसी, होज काजी दिल्ली में स्वय मिल कर या छः आने के टिकट भेज कर औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए छः आने भेज कर ११६ पृष्ठ की अंग्रेजी की पुस्तक Sexual Guide प्राप्त करें।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्तें लिखा लें। मूल्य २॥)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (६२) पो० बेगूसराय (मुंगेर)

प्रेम दूती

श्री विराज जी रचित प्रेम काव्य। सुरुचिपूर्ण शृंगार की सुन्दर कविताएं। मू० ।॥) डाक व्यय पृथक।

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार

पिकाक दंतमंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के दुकानदार से मांगिये।

ऐजेन्टों की जरूरत है

ऐनसा ट्रेडिंग कम्पनी

चांदनी चौक, देहली।

७५०० रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं।

आटोजम (विटामन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विटजरलैंड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं पर उसने एक युवती से ब्याह भी कर लिया।

आटोजम के वर्तने से ८० तथा ६० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्ट्रसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगती हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इसका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाए रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Otogem आटोजम Otogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंगलैंड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। आटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशा में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देखें फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। आटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिए इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जाएगा। आज ही इसे मंगवाने के लिए आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता:—

दी मैकसो लैबोरेटरीज ५७७ बेला रोड

पोस्ट बक्स नं० ४५ (A. B. D.) देहली।

दिवंगत बापू को भारत की श्रद्धाजलियां

कांग्रेसी नेता

संसार का सब से बड़ा महापुरुष अपनी ही जन्मभूमिमें, जिसकी स्वाधीनता के लिए उसने सारे जीवन काय किया, एक हत्यारे के हाथों खत्म कर दिया गया ।

ओ० पी० रामस्वामी रेड्डियर

यह महान् क्षति है। आने वाली सन्ततियां महात्मा गांधी को मानव-समाज के एक सब से बड़े गुरु के रूप में याद करेंगी।

गोपीनाथ बारदोलाई

देश पर जो सब से बड़ी विपत्ति आ सकती थी, वह आ गयी है ।

प० रविशंकर शुक्ल

राष्ट्र का पिता चला गया है । हम आज आंसू बहा रहे हैं, किन्तु हमें इन अांसुओं के साथ ही अपने क्रोध को भी बहा देना चाहिए।

हरेकृष्ण मेहताब

हा बापू ! आपकी हत्या से किसी को क्या मिला ?

पुरुषोत्तमदास टण्डन

गांधी जी मर गए हैं, पर वे भारत के, बल्कि समस्त संसार के हृदयों में सदा जीवित रहेंगे ।

सय्यदमहमूद

गांधी जी हमारे युग के सत्य, प्रेम और शान्ति की सब से अधिक विद्योतमान प्रतिमूर्ति और उनके उपदेष्टा थे। शान्ति के अग्रदूत ईसा मसीह की तरह वे भी बलिदान हो गये हैं, उनका सन्देश समूची मानव जाति के लिए था।

— आसफअली

यह हमारे समय की सब से बड़ी दुर्घटना है । महात्मा गांधी जिन्हें अपने पीछे छोड़ गये हैं, उनका यह कर्त्तव्य है कि वे उनके अधूरे कार्य का पूरा करें ।

—बी० जी० खेर

भारत पितृहीन हो गया है ।

जयप्रकाशनारायण

यह अत्यन्त भयंकर और अवर्णनीय काण्ड है और मानवता पर अत्यन्त नृशंसतापूर्ण प्रहार है। परमात्मा मानव समाज की रक्षा करे ।

मोहम्मद इस्माइल

गांधीजी की मृत्यु से राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता की ज्योति बुझ गई है।

—एस०ए० अय्यर

महात्मा गांधी जी की मृत्यु से दुनिया की सबसे बड़ी आत्मा उठ गई है। हरिजनों ने तो अपना महानतम हितैषी खो दिया है।

—जगजीवनराम

३० वर्ष से महात्मा गांधी राष्ट्र का संचालन करते रहे। हाय अब हम किसके पास जाएंगे।

— श्रीप्रकाश

महात्मा गांधी इस युग के मसीहा थे। गांधी जी ने भारत में नवीन प्राण का संचार किया और संसार में पुनः एक बार भारत को प्रतिष्ठित स्थान दिलाया। उन्होंने केवल स्वतन्त्रता ही नहीं दिलाई, बल्कि भारतवासियों का ध्यान सभ्यता व संस्कृति के आधारभूत सिद्धान्तों की ओर आकर्षित किया।

— गो० ब० पन्त

एक दुष्ट द्वारा गांधी जी की हत्या से सारा देश अनाथ हो गया है।

— शरत्चन्द्र बसु

म० गांधी की मृत्यु के लिए समस्त भारत सामूहिक रूप से उत्तरदायी है।

—अरुणा आसफअली

उनके लिए केवल एक ही मानवता थी और एक ही कानून था। वह कानून था नैतिक कानून,' जिसके कारण सारा संसार संयुक्त है तथा बंधा हुआ है।

—कृपलानी

इन अन्धकारपूर्ण दिनों में गांधी जी हमारे लिए एक प्रकाश किरण के समान थे। उनकी सत्य प्रेम और अहिंसा की भावना हमारा मार्ग दर्शन करती रहेगी।

— अब्दुलगफ्फार खां

गांधी जी की मृत्यु से देश का एक मार्ग दर्शक चला गया। उनकी आत्मा अब मुक्त है।

— खान साहब

अपने युग के सब से बड़े महापुरुष, भारत को नींद से जगाने वाली सब से बड़ी शक्ति, दलितों के सब से बड़े समर्थक महात्मा गांधी आज हमारे बीच से जघन्य कार्य के द्वारा बलात् हटा लिये गये हैं।

— खरे

गत २८ वर्ष से गांधी जी स्वतः ही भारत रहे हैं। हमारी जनता केवल इसी भारत को जानती है। जब तक दुनिया कायम है, गांधी जी सभी युगों के महानतम व्यक्ति के रूप में याद किये जायेंगे।

श्रीकृष्ण मेनन

यद्यपि बापूजी की मृत्यु देश के लिये अत्यन्त हानिकर है तथापि जनता को क्रोध नहीं करना चाहिये, वरन् शांति के साथ देश के उत्थान कार्य में हाथ बटाना चाहिये।

शंकरराव देव

यद्यपि गांधी जी हमारे बीच नहीं रहे, यथापि वे अमर हैं। उनके मरने से संसार एक भयंकर दुर्घटना का शिकार हुआ है।

एन० जी० रंगा

बापू के रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं हो सकती इस लिये समस्त देशवासी मिल कर उनके रिक्त स्थान की पूर्ति करें।

भीमसेन सच्चर

भारत ने अपना पिता खो दिया है। देश को जो यह भयानक धक्का लगा है वह डरावना है। यद्यपि बापू नहीं रहे, तथापि उनका गांधी बाबा अमर रहेगा।

गोपीचन्द्र भार्गव

एक नादान दीवाने ने हमारी सबसे बड़ी निधि हमसे छीन ली है। परमात्मा भारत को उसके इस सबसे बड़े संकट में सहायता दे।"

राजगोपालाचार्य

प्रतिष्ठित भारतीय

उनकी मृत्यु से सर्वाधिक देशभक्त, सबसे अधिक उदार और भारतीय स्वतन्त्रता का पिता जाता रहा।

सर तेजबहादुर सप्रू

जिस व्यक्ति ने भारत को स्वतन्त्र करके अपने पावों पर खड़ा किया, जो सबका मित्र था और किसी का भी शत्रु नहीं था, जिसे करोड़ों व्यक्ति प्रेम और आदर करते थे, उसका अपनी ही जाति और अपने ही धर्म के एक कातिल के हाथों मारा जाना अत्यधिक लज्जा और दुःख की बात है। गांधी जी ऐसे व्यक्ति हैं जिनका प्रभाव कभी नहीं मिटता बल्कि समय गुजरने के साथ निरंतर बढ़ता जाता है। हत्यारे की गोली ने महात्मा गांधी के नश्वर देह को ही नहीं बींधा बल्कि हिन्दू धर्म और भारत के हृदयों को भी बींध डाला है जो कि केवल तभी जीवित रह सकते हैं जब कि लोग दृढ़ निश्चय के साथ ऐसे तरीकों का अपनाया जाना असम्भव बना दें।

श्याम प्रसाद मुखर्जी

यदि संसार में कोई ऐसा व्यक्ति था, जिसने मित्रराष्ट्रसंघ के आदर्शों व सिद्धान्तों को अपने जीवन और व्यवहार में मूर्त रूप दिया था तो वह महात्मा गांधी ही थे।

— गोपालस्वामी आयंगर

गांधी जी दूसरों के लिए जिए और दूसरों के लिए ही मरे।

सर महाराजसिंह बम्बई के गवर्नर

महात्मा गांधी जी का देहान्त सारे संसार के लिए एक दुर्घटना है।

श्री अणे बिहार के गवर्नर

महात्मा गांधी और ईसामसीह बलिदान की दृष्टि से भाई हैं।

एम० आर० जयकर

यह हत्या राष्ट्र पर कलंक है।

हुसेनभाई लालजी

यह कैसी अनहोनी हो गई। इतने पुनीत, प्रेरक और हमारे युग के उद्बोधक पुरुष को भी एक पागल आदमी क्रोधवश मार सकता है इससे स्पष्ट है कि ईसामसीह की शूली के समय से अब तक हमारा सुधार नहीं हुआ। हमने उनके नश्वर शरीर का अन्त कर दिया, पर उनके हृदय का प्रकाश, सत्य और प्रेम की दैवी ज्योति कभी बुझ नहीं सकती।

—डा० राधाकृष्णन्

भारत का सबसे बड़ा नेता हमसे छीन लिया गया है और पागलपन के इस काम ने हमारे देश को अन्धकार व शोक के सागर में डाल दिया है। गांधी जी अब हमारे साथ नहीं रहे हैं, किन्तु उनकी आत्मा व स्मृति हमें सदा प्रेरणा देती रहेगी और हमारा पथ प्रदर्शन करेगा। मैं और मेरी जनता संसार के महान व्यक्ति की अमर स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

महाराजा पटियाला

— — –

❋ विवाहित जीवन ❋

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मंगायें।

१—कोक शास्त्र (सचित्र) १॥)　　२—८४ आसन (सचित्र) १॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १॥)　　४—१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
५—सुहागरात (सचित्र) १॥)　　६—चित्रावली (सचित्र) १॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो १॥)　　८—गर्भ निरोध (सचित्र) १॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १५) अलीगढ़ सिटी।

विवाह के अवसर पर कन्याओं को उपहार देने योग्य

कसीदा काढ़ने की मशीन

यह चार सुइयों की मशीन भांति भांति के काम करती है। इससे कसीदा काढ़ना बड़ा ही आसान है। दिल पसन्द फूल, पत्ती, बेल, बूटे, पशु पक्षियों के चित्र, कालीन, सीन-सीनरी इत्यादि आसानी से काढ़े जा सकते हैं। बड़ी सुन्दर और मजबूत है। मूल्य ४ सुइयों सहित ३) डाक खर्च ॥।) कसीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक मूल्य २) डाक खर्च ॥)।

पता—कमल कम्पनी [A] अलीगढ़ सिटी।

भूले हुये प्राचीन काल में एक अपूर्व बुद्धि वाले उद्योगी व्यक्ति ने ऐसी गणना की कठिनाइयों से तंग आकर—जैसे कि एक गधे के बदले कितने चावलों की आवश्यकता होगी – यह उपाय सोचा कि प्रत्येक वस्तु के मूल्य को जिनिस के रूप में ही दिया जावे। आज कल भी पूर्वी अफ्रीका की कुछ जातियों में ऐसा व्यवहार है। यह एक जिनिस कदाचित् बकरी थी।

एक शिकारी-चाकू १० बकरियों के तुल्य समझा जाता था। ५० केले बकरी के एक बच्चे के बदले में प्राप्त हो सकते थे। और इसी प्रकार अन्य वस्तुएं भी मिल सकती थीं। किसी व्यक्ति के धन का अनुमान बकरियों की संख्या से किया जाता था। तनिक विचार कीजिए कि माल खरीदने के लिये अपनी बकरियां लिये लिये फिरना कितना विचित्र और कठिन प्रतीत होता होगा। बचत भी बकरियों के रूप में ही होती थी। यह कोई विशेष लाभप्रद मद न थी। बकरियों के पालन पोषण पर भी व्यय करना पड़ता और चोरों, जंगली पशुओं और रोगों के भय का तो कहना ही क्या! एक धनी रात भर में दरिद्र हो सकता था।

इस के विपरीत आज कल माल के खरीदने या बचत करने में कोई विशेष असुविधा नहीं होती परन्तु लाभप्रद मद का चुनाव अभी भी सहल नहीं। एक अच्छा व्यापारी जानता है कि आज कल की रक़म लगाने की सर्वोत्तम मद नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स हैं। ये पूर्णतया सुरक्षित हैं और अवधि की समाप्ति पर इन का मूल्य ५०% बढ़ जाता है – अर्थात १० रुपये १२ वर्ष के पश्चात १५) बन जाते हैं। ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब सर्टिफिकेट्स १८ मास के पश्चात भी भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफिकेट १ वर्ष के पश्चात भुनाया जा सकता है)। थोड़ी बचत वाले ।), ॥), और १) की कीमत के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

अफीम बन्द हो जायगी

चौधरी रामराय जी लिखते हैं—

मैं बीस साल से अफ़यून ४० तोले खाता था इसलिए मैंने ठेका अफीम ६६०००) रु० सालाना पर ले रखा था। ताकि मुझे अच्छी अफ़यून खाने के लिए मिलती रहे। मैंने अपने धन, शरीर का नाश होते देखकर डा० ऋषिराम मण्डी कोटफत्ता की बलैत टिकिया मंगाकर ८ दिन में आनन्द के साथ अफीम छोड़ दी। छोड़ते वक्त या बाद में कोई तकलीफ़ नहीं हुई। मैं एक रईस कई गाव का मालिक हूं। जनता के लाभ के लिए यह इश्तहार देता हूं। जो भाई इस बुरी नशा को छोड़ना चाहते हों वे जितने तोले माहवार अफीम खाते हों कीमत टिकिया दुगने रुपये का खत लिखकर वी० पी० मंगा लें। पता – डा० ऋषिराम शर्मा अफ़यून छुड़ाऊ अस्पताल मण्डी कोटफत्ता (स्टेट पटियाला)।

फिल्म स्टार

बनने की इच्छा वाले शीघ्र पत्र लिखें। रंजीत फिल्म आर्ट कालेज बिरला रोड हरिद्वार।

मौसम का उपहार

उमेश घी

यह गाय भैंसों का शुद्ध पवित्र घी व स्वास्थ्य, बल तथा शक्ति के लिए अनुपम है।

गवर्नमेंट की हर परीक्षा से पास तथा उनकी पवित्रता की लाल रंग की 'स्पेशल एगमार्क' सील लगा बिकी होता है।

स्वादिष्ट तथा पौष्टिक भोजन के लिए उमेश घी ही व्यवहार करें।

दिल्ली एजेण्ट—हरीराम जगत नारायन खारी बावली (फतेहपुरी की तरफ़) दिल्ली।

युगस्रष्टा को देशी विदेशी पत्रों की श्रद्धांजलियाँ

गांधी जी के लिए स्मारक की आवश्यकता नहीं। जब तक मानवता समाप्त नहीं होती तब तक वे हमारी भावी पीढ़ियों के हृदय और मन मन्दिर में निवास करेंगे।

बम्बे क्रोनिकल

जिन्होंने देश को मुक्त किया उनकी कायरतापूर्ण हत्या की गई। इस गंभीर अवसर पर हम ऐसे स्वतंत्र, ऐक्यपूर्ण भारत के निर्माण की प्रतिज्ञा करते हैं, जिसमें भूख और गरीबी का नाश कर दिया जायगा, मानवता की पूजा होगी, नम्रता और सेवा हमारा मन्त्र होगा।

फ्री प्रेस जर्नल

हमारे भाग्य में क्या बदा है, सो हम नहीं जानते परन्तु गांधी जी ने हमें एक ऐसा मूलमंत्र बता दिया है जिसकी सहायता से भारत भविष्य में अपनी राह पार कर सकता है।

नेशनल स्टेंडर्ड

महात्मा गांधी अब नहीं रहे, वे हत्यारे की गोलियों के शिकार हो गये। इस प्रकार अपने युग का सर्वाधिक पुनीत, सर्वाधिक प्रभावयुक्त और सर्वाधिक महान आत्मा अन्तर्धान हो गया। वे चले गये, परन्तु उनका प्रभाव कायम रहेगा। वह मानवता की भावी पीढ़ियों को प्रोत्साहित करने उन्हें पारस्परिक सहिष्णुता सिखाने तथा शांति का मार्ग दिखाने के लिए सदैव अमर रहेगा।

ईवनिंग न्यूज

समस्त विश्व के तारों और रेडियो को प्रेरित करने वाले सन्देश बता रहे हैं कि महात्मा जी ने शांति के देवदूत तथा मानवता के द्वितीय मसीहा के रूप में विश्व के हृदय पर कितनी गहरी छाप डाली है।

हिंदू

आज जब कि उनकी मृत्यु की घटी बज रही है, करोड़ों को महसूस होगा कि वह हमारे लिए ही बज रही है।

इंडियन एक्सप्रेस

अपना मृत्यु और उसके तरीके से गांधी जी हमारे लिये 'करो या मरो' की वसीयत छोड़ गये हैं। अपने जीवन में किसी व्यक्ति ने ४० करोड़ दलितों को स्वतन्त्र करने जैसी सफलता नहीं पाई अपनी मृत्यु और उसके तरीके से किसी ने दो अरब मानवों के हृदय मन्दिर में अवस्थित देवत्व का प्रयत्न करने, विजय प्राप्त करने और आत्म समर्पण न करने के लिए आह्वान नहीं किया।

अमृत बाजार पत्रिका कलकत्ता

भारत का पाप बहुत बड़ा है, भले ही यह दुष्कृत्य किसी एक पागल ने क्यों न किया हो। उसका प्रायश्चित तभी हो सकता है जब कि गांधी जी की मृत्यु से भारत तथा पाकिस्तान की अन्तरात्मा जाग उठे और हिन्दू तथा मुसलमान सदैव के लिए एक दूसरे के गले लग जाय।

जय हिंद

"प्रकाश बुझ गया नहीं है" शीर्षक के अन्तर्गत उक्त पत्र ने लिखा है कि गांधी जी का मृत्यु शब्द के प्रत्येक अर्थ में हुतात्मा की मृत्यु है

मुस्लिम दनिक स्टार आफ इंडिया'

गांधी जी की हत्या बताता है कि वे कितने तत्व सम्प्रदायिक विद्वेष को मिटाने का प्रयत्न कर रहे थे। हाल के उपवास और उसकी सफलता से दृढ़ हुई उनकी हिन्दू मुस्लिम भ्रातृत्व की पुकार के सफल होने के लक्षण दीखने लगे थे, परन्तु कुछ काल उसे सुनने को तैयार न थे गांधी जी के स्मरण और उदाहरण की अब कसौटी है और भारत तथा पाकिस्तान के भविष्य की बाजी लगी हुई है।

टाइम्स

अब भारत में क्या होगा, सोचना कठिन है, फिर भी गांधी जी के कार्य के बाद चमत्कार की आशा करना दुस्साहस न होगा। हो सकता है कि सर्वाधिक जनता द्वारा पूजित इस नेता की मृत्यु से वह जनता अभूतपूर्व रूप में जग उठ जाय। यह भी हो सकता है कि जिस प्रेम के विरुद्ध गोली की कोई ताकत नहीं चलती वह इस दुखान्त घटना से शांति और ऐक्य का द्वार खोल दे।

उदर टन न्यूज क्रानिकल

बहुत समय तक संसार इस क्षति को अनुभव करता रहेगा। भावी सन्ततियां कभी यह विश्वास नहीं करेंगी कि महात्मा गांधी ने अपने राष्ट्र की मुक्ति के लिए इतना महान् संघर्ष करके संसार को चकित कर दिया था।

—डेमोक्रेट ईरान

अफीम

की आदत छूट जायगी। कली डायन अफीम से छुटकारा पाने के लिये 'काया कल्प काली' सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स सात रुपया डाक खर्च पृथक। हिमालय केमीकल फार्मेसी हरद्वार।

आसान पहेली

प्रतियोगिता नाई 4

Rs 25,000 इनाम यदि पूरा हो सका तो

पिछला हल 38

क्या करना है—बाईं तरफ के ऊपर वाले कोने से शुरू करें और 4 से 19 तक की संख्याएं इस प्रकार भरें कि प्रत्येक पंक्ति (खड़ी पड़ी व कर्ण की पंक्ति) का योग 46 हो। प्रत्येक संख्या एक बार ही प्रयोग की जाए।

16	?	11	9
5	15	6	12
7	13	4	14
10	8	17	3

पांच इनाम

Rs 10,000, 6000, 4000, 3000, और 2000,

पहला इनाम सब हल कर्ता को मिलेगा जिसका हल रिजर्वेशन बैंक आफ इण्डिया, मद्रास में रखे हुए सोल्यूशन हल से बिलकुल मिल जायेगा। दूसरा इनाम चाहे तो हल कर्ता को मिलेगा अर्थात् प्रथम दो पंक्तियां मिलने पर। तीसरा इनाम चौथाई शुद्ध हल पर अर्थात् पहली पंक्ति मिलने पर। चौथा इनाम प्रथम दो संख्याओं के मिलने पर। पांचवां इनाम प्रथम संख्या के मिलने पर। यदि कुल आगत रुपया २५०००) से कम होगा तो इनामों का कोर्स अनुपात से कम कर दी जायगा।

पहले और दूसरे इनाम जीतने वालों को सूचना तुरन्त तार द्वारा दी जायगी। इनाम जीतने वालों की तालिका प्रतियोगिता में शामिल होने वाले समस्त लोगों के पास भेज दी जाएगी।

अंतिम तारीख 21-2 48 फल 14-3 48

प्रवेश शुल्क—Rs 1 प्रति हल, 6 हलों के लिए Rs. 5

नियम—आवश्यक फीस [पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर] के साथ अपने वांछित संख्या में भरे कागज पर लिए गए हल स्वीकार कर लिए जाते हैं। परिणाम के लिए डाक के टिकट भी भेजें। रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजना चाहिए। साधारण डाक से भेजने पर हम पहुंचने में कोई खोने या देर के लिए जिम्मेवार नहीं हैं। समस्त बातों पर हमारा निर्णय अंतिम और कानूनन मान्य होगा। अन्य नियम पूर्ववत्। नोट—केवल हिंदी में ही लिखें।

लक एण्ड कं० गवर्नमेन्ट से रजिस्टर्ड नं० 1564 43.18 हल्लाम हरीम मद्रास 17

केवल १५ दिन के लिये भारी रियायत

३॥) में ६ पुस्तकें ?

रति-रहस्य—दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने वाली चित्र संयुक्त मूल्य १)
घर बैठे रोजगार—थोड़ी पूंजी से हजारों रुपये पैदा करने के गुर भेद मूल्य १)
भविष्य फल—युद्ध, दंगा, फसाद, सुख-दुख आगे क्या होना है मूल्य १)
बंगाल का जादू—वशीकरण जादू के आश्चर्यजनक खेल तमाशे इत्यादि मूल्य ॥)
हुस्न पैरिस—सुन्दरता के अद्भुत फोटो विवाहितों के देखने योग्य मूल्य १॥)
इन्द्रजाल—जादू के आश्चर्यजनक खेल यंत्र मन्त्र मैस्मरेज्म सहित साधन मू० १।)
उपर्युक्त ६ पुस्तकें एक साथ लेने से मूल्य ३॥) डाक खर्च ॥)
पता—कमल कंपनी (V) अलीगढ़ सिटी।

युग द्रष्टाओं का अंत दुःखद ही होता है !

[पृष्ठ १३ का शेष]

शरीर पर पड़ा और वह बुरी तरह से छालों से भर गया और इसी व्यथा में उन्होंने 'तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते हुए प्राण त्याग दिए।

राजर्षि श्रद्धानन्द

दिल्ली के निकट अतीत के इतिहास में श्री स्वामी श्रद्धानन्द की भी हत्या इसी तरह हुई। वह जालन्धर के रहने वाले थे और उन्होंने शुरू शुरू में वकालत का काम शुरू किया था परन्तु जब इन्होंने एक बार स्वामी दयानन्द का भाषण सुना तो बहुत प्रभावित होकर, वह काम शीघ्र ही छोड़ दिया। उन्होंने आर्य समाज में प्रविष्ट होकर हिंदू जाति की सेवा की। हरिद्वार के पास एक छोटे से गांव कांगड़ी के पास एक गुरुकुल की स्थापना उनके जीवन का एक महान् कार्य था।

गुरुकुल जब फलने फूलने लगा तो श्री स्वामी जी राजनीतिक क्षेत्र में पहुंचे। इस क्षेत्र में वह और भी चमके और गांधी जी के सहयोग में उन्होंने कांग्रेस का जो कार्य किया, वह सुप्रसिद्ध है। ३१ मार्च १९१९ ई० को दिल्ली के चांदनी चौक में जब उन्होंने सन्यासी के वेश में खुले हुए सीने और न झपकने वाली आंखों से गुरखों की किरचों का सामना किया वे दिन किस को भूल सकते हैं ? हिन्दु मुस्लिम संगठन के लिए, जिसके लिए गांधी जी भी मृत्यु पर्यन्त प्रयत्नशील रहे, उन्होंने बहुत काम किया और शायद वह पहले और अन्तिम हिंदू थे जिनको जामा मसजिद के मिम्बर पर खड़े होकर भाषण देने का अवसर दिया गया। इसके बाद उन्होंने अनुभव किया कि हिंदू जाति की सामाजिक बुराइयों के कारण उसका लगातार ह्रास हो रहा है। उन्होंने उसके संगठन का बिगुल बजाया और दलितोद्धार व शुद्धि का मंत्र देकर जर्जर प्राय हिंदू धर्म को पुनर्जीवन दिया।

इससे साम्प्रदायिक मुसलमान खिज गये। उन्हीं की प्रेरणा से इस महापुरुष का अन्त अब्दुल रशीद नामी एक मुसलमान ने किया। दिसम्बर १९२६ ई० में जब वह अपने मकान में रोग ग्रस्त थे, तो वह इस्लाम-पर कुछ बातचीत करने के बहाने उनके कमरे में आया। स्वामी जी ने कहा 'भाई मैं बीमार हूं, तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊंगा, तो बातचीत करूंगा। पानी मांगने पर जब सेवक पानी लेने के लिए गया तो उसने आस्तीन की झपक में तीन फायर कर दिए और निर्दोष स्वामी का अन्त कर दिया।

ऐसे उदाहरण संसार के प्रत्येक देश में कुछ न कुछ पाये जाते हैं। लेकिन इन सबका यहां वर्णन सम्भव नहीं है। गुरु तेगबहादुर, जोन आफ आर्क और रूस का क्रान्तिकारी नेता ट्राट्स्की भी इसी प्रकार अपने २ देश की सेवा करते हुए बलिदान हो गए।

म० गांधी

अन्त में हमारे सामने राष्ट्रपितामह महात्मा गांधी का दुःखद अवसान आता है। यह भारत का ज्योति पुंज और विश्व की अद्वितीय विभूति भी गोली का ही निशाना बनाया गया है। महात्मा जी एक ऐसे समय हम से पृथक् हो गए जब कि हमें उनकी सब से अधिक आवश्यकता थी। लाखों शरणार्थियों को यदि फिर अपने घर जाने की कुछ आशा थी, तो उन्हीं के सहारे। परन्तु अब वह उम्मीदें मिट्टी में मिल के रह गई हैं। जवाहर और पटेल के वह गुरु, इस आधुनिक भारत के, हिन्दु मुसलमान के एक मात्र गुरु अब इस संसार में नहीं रहे। भारत ने आज जो स्वतन्त्रता पाई है वह केवल उन्हीं के ही परिश्रम का फल है। अफ्रीका से लौटते ही उन्होंने कांग्रेस को नया जीवन प्रदान किया और इस के बाद तो उनका जीवन और कांग्रेस का स्वतन्त्रता संग्राम, एक हो गया। सत्याग्रह भी इसी महान् पुरुष की ही ईजाद है। मानवता का, सत्य अहिंसा का, मूर्तरूप गांधी भारत में होने वाले साम्प्रदायिक और पैशाचिक अकाण्ड ताण्डव को सहन नहीं कर सका। एकता और प्रेम का प्रचार अन्तिम दम तक करता रहा और इसी को सहन न करने वाले एक आततायी ने उनका अन्त कर दिया। गांधी जी ने भारत का निर्माण किया, नवयुग का संदेश दिया। उनके गुणों की गणना सम्भव नहीं है।

गांधी जी भी उसी बलिदान मार्ग के पथिक हो गये, जिसके सुकरात, ईसा, दयानन्द, श्रद्धानन्द पहले पथिक हो चुके हैं। शायद महान् विभूतियों का अन्त इसी तरह होना सनातन परिपाटी है।

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम ३) डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

राष्ट्र भाषा हिन्दी को अपनाइये और उसकी उन्नति में हाथ बटाइये।

२००१) दिनेश पहेली नं० १२ में प्राप्त कीजिये

१०००) सर्वशुद्ध पूर्तियों पर, ८२५) न्यूनतम ३ अशुद्धियों तक। विशेष पुरस्कार-२५), १५), और १०) क्रमशः सर्वाधिक पूर्तियां भेजने वालों को, १०१) सर्वप्रथम विद्यार्थी के शुद्ध उत्तर पर २५) सर्वप्रथम प्राप्त बाहर की पूर्ति पर।

पूर्तियां भेजने की अंतिम तारीख २ मार्च, १९४८ ई०

संकेत बायें से दायें — १. भारत का वह महान् नेता जिसको हमने अपनी ही मूर्खता से खो दिया। ४. स्त्रियां इसकी रक्षा में विशेष सावधानी रखती हैं। ५. विलासी मनुष्य बड़ी उत्सुकता से इसकी बाट जोहता है। ७. एक धार्मिक कृत्य ८. शिक्षित महिलाओं का स्वभाव बहुधा '......' ही हुआ करता है। ११. सच्चे सेवकों में यह होना आवश्यक है। १२ मनुष्य को कोई शुभ कार्य करते समय '......' नहीं चाहिये १३. इसको अपने पक्ष में करना सरल नहीं है।

संकेत ऊपर से नीचे — १ एक राक्षसी जिसने कृष्ण को मारने का यत्न किया था। २ भारत की अधिकांश कृषि को इसी का आधार है। ३ पूजा करने का स्थान ६ एक प्राचीन मन्दिर जिसका राष्ट्रीय सरकार पुनरुद्धार करा रही है। ९ निर्बल के अधिक '......' नहीं चाहिये। १०. प्राणी के लिये नाशकारी है।

नियमावली:—एक नाम से एक पूर्ति का शुल्क १॥), इसके पश्चात प्रत्येक पूर्ति के ॥) जो मनी आर्डर द्वारा भेजा जाना चाहिए। म० आ० की रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य भेजें। सादे कागज पर इच्छानुसार पूर्तियां भेजी जा सकती हैं। पूर्तियों के अन्त में और मनीआर्डर कूपन पर नाम और पूरा पता हिन्दी में अवश्य लिखें। जो व्यक्ति एजेण्टों की मारफत से पूर्तियां भेजें वे पूर्तियों के नीचे एजेन्ट के नाम का उल्लेख अवश्य करें। (रजिस्टरी के लिये ≈) अधिक भेजें। शुद्ध उत्तर १६ मार्च के साप्ताहिक वीर अर्जुन में देखें। एजेन्ट बनने के इच्छुक हमसे पत्र व्यवहार करें। पूर्तियां और म० आ० भेजने का पता —

सी. एम. त्रिपाठी, हितकारी विद्यालय, कोटा (राजपूताना)

पहेली नं० ११ का शुद्ध उत्तर—बायें से दायें— १. राजेन्द्रबाबू ६ मधु, ७. विदा, ८. दमन, ९. कस, १०. बालक, ११. आरत, १२. जापान १३. चलनी। ऊपर से नीचे— १. राजनीति २. जेठानी, ३. बात, ४. बुध्दा, ५ मधुबाला ६. मदन सर्वशुद्ध ७ प्रत्येक को १४३, एक अशुद्ध १४ प्रत्येक को २५), दो अशुद्ध ४१ प्रत्येक को ६), ३ अशुद्ध ८२ प्रत्येक को २॥)। सर्वाधिक पूर्तियों का पुरस्कार १००, ८२, ३८, पूर्तियों पर और सर्वप्रथम सर्वशुद्ध पूर्ति का १०१) श्री ओ३म्प्रकाश देहली को प्राप्त हुआ। सब पुरस्कार २५ फरवरी तक भेज दिये जावेंगे।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघराले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अजीब सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी ब्रूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (रूल्ड गोल्ड न्यू गोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत वापस कर दी जाती है। तीन शीशी इकट्ठी के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी रूल्ड न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आवेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नॉवेल्टी स्टोर्स पो० ब० नं० ४३ दिल्ली।

General Novelty Stores P. B. 43, Delhi.

गांधीजी भला क्या नहीं थे ?

[संकलित]

बच्चे — गांधी जी को बच्चे बहुत ही प्यारे थे। वे हम लोगों से खूब हंसते बोलने और प्रेम करते थे। हमारी तरह कभी वह भी गाया करते थे — एक्के एक, पापड़ सेंक। पापड़ कच्चो !, मारो .. । और, गुरु जी को गाली देना भी सीखा था।

जवान — बापू में सदा जवानों जैसी चुस्ती - फुर्ती और क्रियाशीलता रही है।

बूढ़े — बापू बूढ़े हो गए थे। उनके दांत टूट गए थे। और बाल सफेद हो गए थे। लाठी टेककर अथवा सहारा लेकर हमारे समान चलते थे।

प्रणयी — गांधी जी सफल प्रणयी भी थे। बा के कहने पर उन्होंने नमक छोड़ दिया था। जवानी के दिनों में यही सोचते थे कि कब शाम हो और बा से मिलें। जिन्दगी भर वह बा के साथ प्रेम करते रहे। और बुढ़ापे में भी बा के मरने पर आंसू बहाए।

सिगरेट पीने वाले — गांधी जी भी कभी सिगरेट पीते थे।

सिनेमा प्रेमी — बापू सिनेमा - प्रेमी भी थे।

विनोदी — बापू बहुत बड़े विनोदी थे। विनोद के बिना उनका काम चल ही नहीं सकता था।

मांसाहारी — भाई, बापू भी मांस खाते थे, सो भी उधार लेकर। मांस का पैसा चुकाने के लिए उन्हें भाई के तावीज में से सोना बेचना पड़ा था।

निरामिष भोजी — वाह, बापू तो शाकाहारी भोजन करते थे।

राजनीतिज्ञ — बापू विश्व के सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञों में से थे। भारतीय राजनीति के तो वह आचार्य थे।

धार्मिक — जी नहीं, बापू तो कट्टर धार्मिक थे। वह ईश्वर के अवतार थे।

हिन्दू — बापू हिन्दू थे। उन्हें हिंदुत्व का गर्व था।

मुसलमान — अजी, गांधी तो मुसलमान थे। उन्हें कुरान की आयतें बहुत पसंद थीं। वे महरौली के उर्स में भी शरीक हुए थे।

ईसाई — नो, नो, नाट, महात्मा जी ईसाई थे। ईसामसीह के आदर्श पर चलने वाले कट्टर ईसाई। शहादत भी तो वैसी ही पाई।

बौद्ध — बापू बौद्ध थे। बुद्धदेव के समान ही उनका उपदेश होता था। और बुद्ध की ही तरह दया और अहिंसा से ओतप्रोत थे।

लेखक — गांधी जी बहुत बड़े लेखक थे। हिंदी गुजराती और अंग्रेजी सभी भाषाओं में बहुत ही सुन्दर लिखते थे।

पत्रकार — गांधी जी महान् पत्रकार थे। कई पत्रों का उन्होंने सम्पादन किया था।

समाज सुधारक — गांधी जी प्रबल समाज सुधारक थे। अछूतोद्धार का श्रेय उन्हें ही प्राप्त है। नारी जागरण में उनका बहुत बड़ा हाथ था। अंतर्जातीय विवाह के वे कायल थे।

हरिजन — गांधी जी भंगी थे। हरिजनों जैसे उन्होंने अनेक कार्य किए। हरिजनों के उत्थान के लिए उन्होंने क्या नहीं किया ?

संगीत प्रेमी — गांधी जी संगीत के अनन्य प्रेमी थे। इसे अपने आश्रम की व्यवस्था में भी उन्होंने स्थान दिया था। उनकी प्रार्थना सभा में संगीत - भजन आवश्यक रहता था।

किसान — बापू महान् और मिहनती किसान थे। दक्षिणी अफ्रीका में उन्होंने खुद खेती की थी। चंपारण (बिहार) के किसानों का दुख दर्द दूर किया था। खेड़ा के किसानों के आंदोलन का नेतृत्व किया था। भारत के किसानों को वह शोषण मुक्त और स्वावलम्बी देखना चाहते थे। वह भारत के किसानों के सात लाख गांवों के देवता थे।

मजदूर — गांधी जी मजदूर थे। अपना अधिक से अधिक काम वह खुद कर लेते थे। अहमदाबाद के मजदूरों को अपनी मांगें मनवाने के लिए हड़ताल करने की सलाह दी थी और हड़ताल कमजोर पड़ने पर, खुद २१ दिनों तक उपवास कर मजदूरों को विजयी बनाया था। वे हमारे त्राता थे।

व्यापारी—गांधी जी जन्म से ही व्यापारी जाति (वैश्य) के थे। उन्होंने जीवन भर में नुकसान का सौदा कभी नहीं किया। जाते जाते भी कण्ट्रोल हटवा कर व्यापार को उन्मुक्त कर गये।

पूंजीपति – गांधी जी पूंजीपतियों के भी मित्र थे। इसी लिये कई पूंजीपति उनके इतने भक्त थे कि इशारेमात्र से थैलिया खोल देते थे।

वैज्ञानिक — गांधी जी महान् वैज्ञानिक थे, पर भौतिक नहीं, आध्यात्मिक। गांधी जी ने 'अहिंसा' नामक एक ऐसे अमोघ अस्त्र का आविष्कार किया था, जिसके आगे संसार के सभी वैज्ञानिक अस्त्र - शस्त्र यहां तक कि 'ऐटम बम' भी मात खा गये।

दार्शनिक — गांधी जी दर्शन के आचार्य थे। उनके दार्शनिक विचारों को मानने से ही संसार का कल्याण हो सकता है।

हिंसावादी — गांधी जी कहते थे, युद्ध होगा। यदि पाकिस्तान का यही रवैया रहा, तो भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध अनिवार्य है।

संसार का जनमत — महात्मा जी भारत के राष्ट्रपिता और एशिया की महान् आत्मा थे। संसार के शोषित - पीड़ितों का उद्धार वही कर सकते थे। बापू मानवता का आधार - स्तम्भ थे। विश्व बन्धुत्व शांति और अहिंसा के अनन्य पुजारी थे। वर्तमान समय में वह विश्व के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष थे। भावी विश्व युगयुगांत तक उनका पूजन - अर्चन - वंदन करेगा।

कराची के चीफ कोर्ट के सामने स्थापित प्रतिमा

ये सज्जन कौन हैं ?

किसी को विश्वास भी न होगा जब जगत् विख्यात हास्य अभिनेता चार्ली चेप्लिन ने गांधी जी से मिलने की इच्छा व्यक्त की तब गांधी जी ने पूछा कि—"ये सज्जन कौन हैं ?" परन्तु जब उन्हें पता चला कि चार्ली-चेप्लिन एक साधारण व्यक्ति हैं, और साधारण जन के लिए ही जीते हैं और खूब हास्य निर्माण करके जनता के दुःख भुलाने का प्रयत्न कर, आनन्द से उन्हें हंसाते हैं तब गांधी जी ने झट से उनसे डा॰ अटोल के घर पर भेंट का समय निश्चित कर लिया।

पर्दे पर दिखायी देने वाले चेप्लिन, और प्रत्यक्ष चेप्लिन में कितना अन्तर है ?

इतने बड़े कलाकार ने इतने बड़े राष्ट्रनेता से कौन-सा प्रश्न पूछा होगा ? उसे गांधी जी के चरखे का पता था। उसने पूछा—आप मशीनों के विरुद्ध क्यों हैं ?

गांधी जी को उस प्रश्न से बहुत आनन्द हुआ। छः महीने तक भारती किसान कैसे बेकार रहते हैं, इसका पूरा विवेचन उन्होंने किया।

चेप्लिन—"तो आपका विरोध केवल यन्त्र मशीन के कपड़ा की मिलों के लिए ही है ?"

गांधी जी—'निःसन्देह, कपड़ा और अन्न प्रत्येक देश को अपने ही देश में मिलना चाहिये। पहले हमारे यहां इस प्रकार स्वयं पूर्ण उत्पादन होता था आज भी होना चाहिये। इंग्लैण्ड का उत्पादन बहुत अधिक है, परन्तु उसे दुनिया के बाजारों की ओर देखना पड़ता है। इसे ही मैं कहता हूं—ऐसा शोषण करने वाला इंग्लैण्ड दुनिया के लिए भयंकर है। यदि भारत भी उसी मार्ग का अनुकरण करेगा तो दुनिया को उससे कितना भय लगेगा !"

"तो क्या —यह केवल भारत व्याप्त है ? पर मान लीजिये कि यदि भारत को रूस की भांति स्वतन्त्रता मिली और बेकारों को और कुछ काम मिल के यदि आर्थिक समता निर्मित हो सकी तो फिर भी आप मशीनों का विरोध करेंगे क्यों कि उससे मजदूरों को कम आराम मिलेगा न ?"

'क्यों नहीं'—गांधी जी ने जोरों से कहा। गांधी जी ने इस विषय पर कई विदेशियों की चर्चा की थी। किन्तु झट से विषय समझकर बात स्पष्ट रूप से बताने वाला वह पहला समझदार विदेशी उन्हें मिला। इसका कारण वह था कि चार्ली चेप्लिन का मन दूषित नहीं था। उसके दीन दलितों के प्रति हार्दिक और सहज सहानुभूति थी।

इस तरह गांधी जी के जीवन की अनेक घटनाएं हैं, जिनसे उनकी महत्ता का परिचय मिलता है। यदि उनका संग्रह किया जाय तो एक बड़ा पोथा तैयार हो सकता है।

म० गांधी द्वारा कांग्रेस का निर्माण

[पृष्ठ ७ का शेष]

ग्रेजी भाषा में बोलने में गर्व करते थे, पर गांधी जी ने उन्हें प्रांतीय भाषा व मातृभाषा में बोलने को प्रेरित किया।

अन्तिम देन

छोटी-मोटी सैकड़ों देनों के अलावा जिनमें से कई कांग्रेस अपना सकी और कई नहीं अपना सकी, गांधी जी की छुटी और सब से बड़ी अन्तिम देन वह लेख है, जो उन्होंने 'हरिजन' में 'कांग्रेस की स्थिति' शीर्षक से अपने अवसान से पूर्व विरासत के रूप में छोड़ा है। उस में उन्होंने कांग्रेस को सेवकों की संस्था बनाने के लिये क्रांतिकारी परिवर्तनों का सुझाव रखा। उन्होंने आर्थिक सामाजिक और नैतिक स्वाधीनताओं की प्राप्ति के लिये कांग्रेस को एक बिल्कुल नया कार्यक्रम दिया गया। उन्होंने अपने जीवनपर्यन्त कांग्रेस की सेवा की और अंत समय भी कांग्रेस के जीवित रहने के लिये अपनी विचारधारा प्रगट करके महान सेवा की। देखना यह है कि कांग्रेस किन अंशों में उनकी विचार धारा को अपनाती और उस पर चलती है।

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता उद्बोधन का मार्ग है।
इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोह-निद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

भारत के सर्वप्रिय मासिक पत्र

मनोरंजन

का

फरवरी १९४८ का सर्वांग सुन्दर अङ्क प्रकाशित हो गया।

इस अङ्क की कुछ विशेषतायें—

* "मन्दिर और मस्जिद दोनों ईश्वर का घर हैं"—साम्प्रदायिक एकता के दिव्य-दूत महात्मा गांधी के इन वचनों के आधार पर रचित प्रसिद्ध कहानी-लेखिका श्रीमती उषादेवी मित्रा की कहानी।
* काश्मीर की महत्वपूर्ण समस्या पर हिन्दी के यशस्वी सम्पादक श्री रामगोपाल विद्यालंकार का सारगर्भित लेख—'हमारा काश्मीर'
* हिन्दी के प्रमुख लेखक व पत्रकार श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति के लम्बे साहित्यिक जीवन के संस्मरण।
* कबाइलियों द्वारा अपहृत चार काश्मीरी स्त्रियों की वीरता की एक ओजपूर्ण कहानी, लेखक—हिंदी के यशस्वी कहानीकार श्री रामचन्द्र तिवारी।
* हिन्दी जगत के मतवाले कवि श्री बच्चन का एक भावपूर्ण गीत।
* 'अंचल,' निरंकारदेव सेवक इत्यादि हिंदी के प्रमुख कवियों की उच्चकोटि की सरस कवितायें।
* बच्चों के लिये पुरस्कार-पहेली।

इनके अतिरिक्त अनेकों उच्चकोटि की कहानियां, लेख, चित्र, हास-परिहास, सलोनी दुनिया, रंगमंच व चित्रलोक, कलापूर्ण मुख पृष्ठ, बढ़िया गेट-अप, दोरंगी छपाई इत्यादि।

एक प्रति आठ आने वार्षिक मूल्य ५।।)

श्री श्रद्धानंद पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानंद बाजार, दिल्ली।

तोष की

हाथी ब्रांड
बढ़िया चाय
दार्जिलिंग आरेंज पेको

ए० तोष एण्ड सन्स
कलकत्ता।

इन्कम टैक्स से छुटकारा

इन्कम टैक्स, सुपर टैक्स, ... इस नई पुस्तक 'इन्कमटैक्स क्या है' ...

१००) इनाम
(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्दमा, कुश्ती लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।

श्री कामरूप कमच्छा आश्रम ५५
पो० कनरोसराय (गया)

व्यापारी वर्ग की आवाज को सबल बनाने वाला

प्रमुख हिंदी "व्यापार विज्ञान" मासिक पत्र

व्यापारियों को कानूनी सलाह, तेजी मन्दी, मासिक राशिफल, स्वास्थ्य, कहानी, कविता, धारावाहिक आदि से पूर्ण मेरठ से प्रकाशित हो गया। नमूना ।) वार्षिक ३) एजेन्सी, विज्ञापन तथा अन्य जानकारी के लिये—

मैसर्स एन० के० शर्मा एण्ड कम्पनी, सदर मेरठ

१५०००) की असली घड़ियां तथा रेडियो इनाम

बच्चा मर्द बूढ़ा हो सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्न दोष, प्रमेह, खून विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट पुष्ट बनता है तथा नित्य के सेवन से कभी बुढ़ापा नहीं आता। मूल्य ४० दिन की खुराक ३।।) तीन डिब्बे एक साथ मंगाने से ६।।।) डाक खर्च माफ। बेकार साबित करने पर ५००) नकद इनाम। हर डिब्बे के साथ इनामी कूपन भेजा जाता है जिनसे आप असली घड़ी, रेडियो साइकिल तथा मोटर साइकिल प्राप्त कर सकते हैं। पेशगी मूल्य भेज कर नाम रजिस्टर्ड करा लें ताकि पछताना न पड़े। एजेंसी नियम मुफ्त मंगायें।

पता—श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

वर की आवश्यकता

कुछ राजपूत जागीरदारों की कन्याओं के लिए वर की जरूरत है। राजघरानों में शादी करने के इच्छुक राजपूत ग्रेज्युएट्स अपना कुल विवरण फोटू सहित भेजें।

मैं राज्य घरानों के अलावा राजपूत जागीरदारान, ताल्लुकेदारान, जमींदारान साहबान के पुत्र और कन्याओं के लिए भी सुयोग्य वर, वधू की तलाश करवाने का प्रबन्ध किया करता हूं पत्र व्योहार किसी भी भाषा में किया जा सकता है और वह बिल्कुल गुप्त रखा जाता है।

जे. एल. रायजादा रिटायर्ड, सुपरिन्टेन्डेन्ट, कोर्ट आफ वार्ड्स ४२३० सिंगी गली आगरा (यू० पी०)

स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद सबसे बड़ी महत्वपूर्ण समस्या शत्रुओं से देश की रक्षा है। इसके सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी देने के लिये

'वीर अर्जुन' का

देश रक्षा-अंक

बड़ी शान के साथ १ वैशाख २००५ को प्रकाशित होगा। उसकी तैयारियां शुरू होगई हैं। पाठक अपनी कापी के लिए अभी से एजेन्ट से कह दें और विज्ञापक अपना विज्ञापन बुक करा लें।

अंक-सम्बन्धी विस्तृत जानकारी फिर दी जायगी।

—मैनेजर

पहेली नं० ३२ की संकेतमाला

दायें से बायें

१. भारत के अतिविख्यात सम्राट् और हिन्दी का नूतनतम सुन्दर नाटक।
४. अपने समय पर इसी का बहुत महत्व है।
६. चाहे खेती बाड़ी में हो या हमारे दैनिक जीवन में, इसकी आवश्यकता रहती ही है।
११. चिकित्सक इन क्रियाओं का खूब प्रयोग करते हैं।
१२. निर्धनता के पर्यायवाची का अपभ्रंश।
१३. लोग इससे बचने का सदा प्रयत्न करते हैं।
१४. वाद विवाद के अंग है।
१५. कभी २ बड़ी विपत्ति का कारण होता है।
१६. यह चार अक्षरों का शब्द है, अन्तिम दो अक्षरों से बनी वस्तु भूमण्डल पर सर्वत्र पायी जाती हैं।
१७. वैज्ञानिक इसका बहुत विचार रखते हैं।
१८. कुछ विद्वानों के मत से वैदिक साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

ऊपर से नीचे

१. जीवन में — ता होती ही रहती है।
२. आप इसे चाह सकते हैं।
३. सूर्य का पर्याय है।
४. यह क्रिया प्रतिदिन व्यवहार में आती है।
५. मदारी इसकी प्रायः दुहाई देते हैं।
७. कर्णकटु ध्वनि का अनुकरण है।
८. अपने बगीचे को ऐसा बनाने की बहुधा इच्छा होती है।
९. इसकी उत्पत्ति पानी से होती है।
१०. वह चाहे — हो, उसका अपमान नहीं करना चाहिये।
१४. अपने अपने स्वभाव की बात है कि पसन्द करें या नहीं।
१५. व्यक्तियों की शक्ति का बोधक है।

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

निश्चय पुत्र ही होगा

जो सज्जन अपने गोद में पुत्र जैसे अमूल्य वस्तु को खिलाना चाहते हैं तो अपनी गर्भवती स्त्री को हमारी ४६ वर्ष से प्रसिद्ध

समर—हयात

सेवन करावें। यह वह अमूल्य औषधि है जिसके व्यौहार से सैंकड़ों अन्धेरे घरों में दीपक जल चुका है इसका वार कभी भी खाली नहीं जाता और अवश्य पुत्र ही पैदा होता है।

मूल्य १०॥)

नोटः—तीन मास तक की गर्भवती इसका सेवन कर लाभ उठा सकती हैं।

पता—हकीम राजनरायन (२४) हौज़काजी देहली।

संतान प्यारा बच्चा चाहिये

यदि आप सन्तान से वंचित हैं तो मुझे लिखें आपके घर का दीपक शीघ्र रोशन हो उठेगा, यदि आ न सकें तो हमारी औषध अकसीर औलाद मंगाएं, जिससे सैंकड़ों बेऔलाद बहनों की गोदें हरी भरी हुई हैं मूल्य २५) पुरुष के लिये मैंमोल २०)

संतान बस और नहीं चाहिये

सदा के लिये सन्तान उत्पत्ति बन्द करने वाली दवाई की कीमत २५) ५ वर्ष के लिये २०) और दो साल के लिये १२) इन दवाइयों से मासिक धर्म ठीक प्रकार आता रहता है। रुकी हुई माहवारी जारी करने वाली दवाई मैन्सोल स्पेशल १२) मैन्सोल स्ट्रांग २५)

लेडी डाक्टर कविराज, सत्यवती (पास लाहौर)
चान्दनी चौक देहली [फव्वारा और इम्पीरियल बैंक के दरम्यान]
कोठी २७ बाबरलेन न्यू देहली (निकट बंगाली मार्केट)

चटपटी, मजेदार और सुन्दर पुस्तकें

- लखनऊ की रंगीन रातें, लखनऊ के विलासी जीवन की रंगीन कहानियां मू० १।=)
- फिल्मी अप्सरायें, ५० फिल्मी अभिनेत्रियों की जीवनी एवं चित्र मू० २।=)
- फिल्मी जलतरंग, नये एवं पुराने फिल्मो के चुने हुए गानों का संग्रह मू० १।=)
- बम्बई की चांदनी रातें, बम्बई के सिनेमा क्षेत्र का मनोरंजक वर्णन। मू० १।=)
- दरजी की उत्तम पुस्तक, इसमें कपड़ा काटना एवं सीना सिखाया गया है। मू० २॥=)
- सोहागरात, यह पुस्तक आपके विवाहित जीवन को सुखमय बना देगी मू० १॥=)

डी० सी० भाटिया एण्ड को० मथुरा (२)

१००) इनाम

सिद्ध योगेन्द्र कवच

सिद्ध वशीकरण — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का १२), झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री महाशक्ति आश्रम, ६३ सालीमपुर अहरा पो० कदम कुआं (पटना)

२५०) [सुगमवर्ग पहेली नं० ३२] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार १५०) न्यूनतम अशुद्धियों पर १००)

इस लाइन पर काटिये

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ......

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ......

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ......

इस लाइन पर काटिये

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण इस प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३. उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर १५०) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर १००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटाई बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १५ मार्च के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ११ मार्च १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जांच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३२, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

★★★

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि ६ मार्च १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ हैं। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय ।–)

विविध

बृहत्तर भारत

[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ।।।=)

बहन के पत्र

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व लड़कियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य १)

प्रेमदूती

श्री विराज की रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण श्रृङ्गार की सुन्दर कवितायें। मूल्य ।।।)

वैदिक वीर गर्जना

[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जागृत करने वाले एक सौ से अधिक वेद-मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ।।।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी

[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले० –श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १।।) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ।।=) डाक व्यय ।–)

पं० जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक को उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १।।) डाक व्यय ।=)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इस लिये

हिन्दू–संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं

[सम्पादक—श्री जयन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।–)

नया आलोक : नई छाया

[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमाञ्चकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था; देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १।।), डाक व्यय ।=)।

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १।।) रुपया।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।–)

तेल विज्ञान

तिलहन से लेकर तैल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना अधिकार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।–)

तुलसी

तुलसीवन के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर

अंजीर के फल और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १।।) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ।।)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला! मूल्य ।।)

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य ।।)

श्री प० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुनप्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

वीर अर्जुन

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी दूवारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में इसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन
मनोरञ्जन मासिक

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* विजय पुस्तक भण्डार

* अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४ १० प्रतिशत
सन् १९४५ १० „
सन् १९४६ १५ „

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

- इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
- 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
- अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

- इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
- राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
- अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
- आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्
सोमवार ६ फाल्गुन सम्वत् २००४

उपयुक्त निश्चय

"इस समय सरकार का ध्यान केवल उत्पादन पर है। हम वही काम करेंगे, जिससे उत्पादन पर किसी तरह का धक्का न लगे। एक व्यवस्था को भंग कर देने से ही काम नहीं चलता; जब तक दूसरी व्यवस्था तैयार न हो जाय। हमें समय और स्थिति के साथ चलना है।" इन शब्दों में भारतवर्ष के प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू ने व्यावसायिक नीति को स्पष्ट किया है। उनकी इस विचारधारा का सभी विवेकशील देशवासी स्वागत करेंगे।

भारतवर्ष के सामने आज साम्प्रदायिक समस्या बहुत विकट है, इसमें हमें सदेह नहीं, लेकिन जो लोग स्थिति का अध्ययन कर रहे हैं, वे जानते हैं कि भारतवर्ष में साम्प्रदायिक समस्या अपने अन्तिम दम पर है। अब सरकार यदि साम्प्रदायिकता की समाप्ति कर दे, तो यह समस्या भी समाप्त हो जायगी। अब तो साम्प्रदायिक समस्या का रूप केवल राष्ट्रीय हो जायगा — पाकिस्तान व हिन्दुस्तान का। आज जो वास्तविक समस्या देश के सामने आ गई है, जिसका प्रत्यक्ष रूप कुछ समय में बहुत स्पष्ट हो जायगा, वह है आर्थिक संघर्ष की समस्या। राजनीतिक क्षेत्र में आज कांग्रेस की प्रतिस्पर्धिनी संस्थाएं सोशलिस्ट और कम्यूनिस्ट पार्टियां के नाम से देश में जोर पकड़ रही हैं। हम प्रजातन्त्र के सिद्धान्त पर विश्वास करते हैं और यह मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राजनैतिक और आर्थिक मान्यताएं रखने व उनके प्रचार का अधिकार है। इस दृष्टि से सोशलिस्टों व कम्यूनिस्टों को भी अपने विचारों के प्रचार का अधिकार है किन्तु इस संबंध में एक अपवाद भी है। किसी व्यक्ति या संस्था को हम ऐसा कोई काम नहीं करने दे सकते, जिससे देश का अहित हो। यह दुःख की बात है कि सोशलिस्ट और कम्यूनिस्ट उत्साही प्रचारक आज देशहित की भी उपेक्षा करने लगे हैं।

आज भारतवर्ष की एक प्रमुखतम समस्या उत्पादन की वृद्धि है। आज किसान, मजदूर या अन्य जनता मुद्राप्रसार और महंगाई के कारण परेशान है। इसका सर्वोत्तम उपाय उत्पादन की वृद्धि है। हमें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये, जिससे उत्पादन के कार्यों में किसी तरह की बाधा पड़े। सोशलिस्ट व कम्यूनिस्ट विचारक आज कल कारखानों के राष्ट्रीयकरण की आवाज उठा रहे हैं। जहां तक सिद्धान्त का प्रश्न है, भारत सरकार के नेता और विशेषतः प० नेहरू भी इससे सहमत हैं। भारत सरकार के कांग्रेसी नेता वर्षों से जनता के स्वराज्य की आवाज उठाते आये हैं। वे जनता के बल पर ही लड़े हुये हैं और उन्हीं का हित ही उनका सदा लक्ष्य रहा है। थोड़े से उद्योगपतियों का हित उनका कभी लक्ष्य नहीं रहा। हमें आज भी उनपर पूर्ण विश्वास है। आज ही सब कल-कारखानों को सरकार अपने हाथ में ले ले, अथवा कुछ समय बाद, किन उद्योगों को सरकार अपने हाथ में ले और किनको नहीं, ये ऐसे प्रश्न है। जिन पर हम यदि जल्दबाजी में और सिद्धान्तों के आवेश में आकर विचार करेंगे, तो शायद हम लक्ष्य से दूर चले जायेंगे। उद्योगों का राष्ट्रीयकरण साधन है न कि लक्ष्य। लक्ष्य तो जनहित है और आज के असाधारण संकट काल में जनहित राष्ट्रीयकरण की अपेक्षा भी उत्पादन की वृद्धि में है। इस सत्य को हमारे नेता समझ रहे हैं। प० नेहरू ने और कांग्रेस की आर्थिक उपसमिति ने इस प्रश्न पर इसी दिशा में विचार किया है। रिपोर्ट में यह साफ कहा गया है कि "प्रमुख चालू उद्योगों को छोड़कर सरकार नये उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करे। इससे हमारी शक्ति चालू उद्योगों में व्यय न होकर नये उद्योगों को चलाने में लगेगी और हम उत्पादन-वृद्धि में सहयोग दे सकेंगे। यदि सरकार चालू उद्योगों के राष्ट्रीयकरण में अपना रुपया आज व्यय करे तो ऐसा भी समय आ सकता है कि उसके पास नये उद्योगों को चालू करने के लिये पैसा भी पास न रहे। अतएव आज हमें नये उद्योगों को स्थापित करने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये न कि चालू उद्योगों को" उद्योगपतियों के हाथ से खींचने में। प० नेहरू ने इसके साथ यह भी स्पष्ट कर दिया कि पांच साल के बाद कुछ और महत्वपूर्ण परिवर्तन भी हो सकेंगे। फिलहाल हमें उत्पादनवृद्धि के लिये ही अपनी समस्त शक्ति अर्पित कर देनी चाहिये।

वस्तुत: यही विचारधारा है, जिसकी ओर हमने इन पंक्तियों में पिछले सप्ताह यह कहकर संकेत किया था "हमारे कानून-निर्माता भावुकता के आवेश में आकर इन प्रश्नों का निर्णय न करें। व्यावसायिक और औद्योगिक प्रगति व उत्पादन ही उनका एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। हमारी सरकार इसी दिशा में प्रयत्न कर रही है। रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण का निश्चय इस बात का सूचक है कि हमारे नेता समाजवाद के समर्थक हैं, किंतु इसके साथ ही वे आवेश में आकर आज की मुख्य समस्या से उस तरह आंखें नहीं फेरना चाहते, जिस तरह कम्यूनिस्ट व सोशलिस्ट भाई कर रहे हैं। वे तो आज उत्पादन के मार्ग में बाधाएं डालकर देश के सामने नया संकट खड़ा करने से भी नहीं चूकते। यदि देशवासी स्थिति को पूर्णतः न समझें तो यह सम्भव है कि आर्थिक समस्या आकर समस्त देश पर हावी हो जाय।

स्व० सुभद्राकुमारी चौहान

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री एवं कहानीलेखिका श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का आकस्मिक देहावसान एक मोटर दुर्घटना के कारण हो गया। हिन्दीसाहित्य की वृद्धि में जिन महिलाओं ने भाग लिया है, उनमें श्रीमती सुभद्रा कुमारी का अपना एक स्थान था। 'खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी' इस कविता के कारण आपकी ख्याति हिन्दी संसार में बहुत बढ़ गयी थी। 'मुकुल' और 'बिखरे मोती' नामक पुस्तकों पर आपको दो बार सेकसरिया-पुरस्कार भी हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्राप्त हुआ था। आप कांग्रेस कार्यों में भी बहुत समय तक भाग लेती रहीं और इस कारण कई बार जेलयात्रा भी करनी पड़ी। आजकल आप मध्यप्रान्तीय असेम्बली की सदस्य थीं। आपका जन्म बादा जिले में १६०४ ई० में हुआ था। आपका विवाह जबलपुर के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ था। आप अपने परिवार में पति के अतिरिक्त तीन पुत्रों व पुत्रियों को शोकाकुल छोड़ गई हैं। भगवान भगवान आपकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

हिन्दूसभा का राजनीति से सँन्यास

हिन्दू महासभा की कार्यसमिति ने सभा के स्वरूप और कार्यक्षेत्र को बदलने की जो सिफारिश की है, उसका हम स्वागत करते हैं। हम प्रारम्भ से इस मत का प्रतिपादन करते रहे हैं कि हिन्दू महासभा को राजनैतिक साम्प्रदायिकता के क्षेत्र से निकल कर विशुद्ध सामाजिक क्षेत्र तक अपने को सीमित कर लेना चाहिए। हिन्दू सभा में नवजीवन का संचार करते समय राजर्षि श्रद्धानन्द ने सभा को यही परामर्श दिया था। हिन्दू जाति की कमजोरी का वास्तविक कारण कांग्रेस की मुस्लिमपक्षपातिनी नीति नहीं थी, प्रत्युत हिन्दू जाति की सामाजिक रूढ़ियां और कुप्रथाएं थीं। अस्पृश्यता, बलात् वैधव्य, जन्मना जातिभेद आदि कुप्रथाओं के कारण ही हिन्दू जाति का महान् भवन जीर्ण हो गया था। इन्हीं के कारण हिन्दू जाति का विशाल परिवार लगातार क्षीण हो रहा था। यह देश का और उससे अधिक हिन्दू जाति का दुर्भाग्य था कि हिन्दू सभा के नेताओं ने राजर्षि श्रद्धानन्द के उपदेश का तिरस्कार किया। कांग्रेस की प्रतिस्पर्धा में आकर राजनैतिक मंच के रूप में सभा का उन्होंने प्रयोग किया। मुस्लिमलीग की जिस साम्प्रदायिकता को वे नष्ट करना चाहते थे, हिन्दू सभा की वेदी से वे भी उसीका पोषण करते रहे और देश लगातार साम्प्रदायिकता के गर्त में डूबता गया। हिन्दू सभा के अतीत २० वर्षों पर एक दृष्टि डालने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि कांग्रेस की कठोर आलोचना ही उसका एकमात्र कार्यक्रम था। राष्ट्रोन्नति के लिए कभी उसने कोई रचनात्मक कार्य नहीं किया। आज सभा के नेता यह अनुभव कर रहे हैं कि उनको अपना मार्ग बदल देना चाहिये। इसलिये हम इस विचार का अभिनन्दन करते हैं। आज भी उसके सामने विशाल कार्यक्षेत्र पड़ा है। हिन्दू जाति महान् है। उसकी सामाजिक हीन परंपराओं को दूर करके उसे सबल, स्वस्थ और प्रगतिशील जाति में परिणत करने के लिये उसके कार्यकर्ताओं को महान् परिश्रम व त्याग करना होगा।

साम्प्रदायिकता का अन्त

इसके साथ ही हम यह न कहकर हिन्दू नेताओं के साथ अन्याय करेंगे कि उनकी साम्प्रदायिकता मुस्लिमलीगी मनोवृत्ति और कांग्रेस की मुस्लिमतोषिणी नीति की प्रतिक्रिया के कारण पोषण प्राप्त कर रही थी। इसीलिये आज हम हिन्दू महासभा के नेताओं की इस मांग का दृढ़ समर्थन करना चाहते हैं कि राजनीति में साम्प्रदायिकता को किसी तरह सहन नहीं करना चाहिए। किसी भी धर्म — हिन्दू, मुसलमान, सिख या ईसाई की सत्ता राजनीतिक दृष्टि से स्वीकार नहीं करनी चाहिए। साम्प्रदायिक चुनाव और किसी संप्रदाय विशेष को संरक्षण भी नहीं मिलना चाहिये। केवल मुस्लिमलीग या हिन्दू महासभा का राजनैतिक संस्था रूप नहीं, अकाली पार्टी का भी राजनैतिक रूप आज समाप्त कर देना चाहिये और भारत के कानून में किसी भी धर्म को दृष्टि से नहीं, नागरिक की दृष्टि से ही विचार करना चाहिए। यदि कांग्रेस इस दृष्टिकोण को पहले अपना लेती, तो शायद साम्प्रदायिक प्रतिक्रिया इतने घृणित रूप में न फैलती।—

सौराष्ट्र प्रान्त का उद्घाटन

१५ फरवरी को भारत के उपप्रधान मन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने सौराष्ट्र के नव-प्रान्त का अपने कर-कमलों से उद्घाटन किया। देशी रियासतों की राजनीति में सरदार पटेल की यह अद्वितीय विजय है। भारतीय इतिहास में यह ऐसा अवसर आया है जिसे आगामी सन्ततियां सदियों तक याद करेंगी।

नवानगर के जाम साहब ने राजप्रमुख के रूप में, श्री यू० एन० ढेबर ने प्रधान मन्त्री के रूप में व अन्य मन्त्रियों ने विशेष रूप से आयोजित एक दरबार में शपथ ग्रहण की।

काठियावाड़ के एकीकरण में महात्मा गांधी की भी बड़ी दिलचस्पी थी। उनका एक स्वप्न इस प्रकार पूरा हो गया।

यू० पी० असेम्बली की लीग-पार्टी भंग

युक्त प्रान्त की धारा सभा में १० वर्ष तक विरोधी पार्टी के रूप में रहने के पश्चात् मुस्लिम लीग धारा सभा दल ने अपने को २९ फर्वरी से समाप्त करने का निश्चय कर लिया है। संयुक्त निर्वाचनद्वारा प्रजातन्त्री राज्य में चुनाव होने के कारण अलग साम्प्रदायिक पार्लिमेण्ट्री पार्टी रखना न तो सम्भव है और न आवश्यक। डोमीनियन सरकार ने अल्प संख्यकों के अधिकारों की रक्षा का आश्वासन दे ही दिया है।

भारत में विदेशियों का प्रवेश निषिद्ध

'इण्डिया गजट' की विदेशी आज्ञा में घोषणा की गई है कि नागरिक अधिकारियों की आज्ञा के बिना कोई भी विदेशी भारत में प्रविष्ट नहीं हो सकेगा। यदि बिना आज्ञा के कोई विदेशी प्रविष्ट होगा तो उसे नजर बन्द कर लिया जाएगा। किसी भी विदेशी को बिजली, पेट्रोल, प्रकाश और पानी के किसी भी विभाग में नौकरी नहीं दी जाएगी।

दक्षिणी रियासतें बम्बई में सम्मिलित

कोल्हापुर के अतिरिक्त दक्षिणी रियासतों के अन्य सब नरेश बम्बई के प्रधानमन्त्री श्री खेर से मिले। कुछ विचार विनिमय के पश्चात् — सबने एक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये। इस समझौते के अनुसार उनकी रियासतें बम्बई प्रान्त में मिला दी गई है।

जूनागढ़ की रियासतें भारतीय संघ में

पश्चिमी भारत और गुजरात की रियासतों के जुडीशियल कमिश्नर श्री सी० वी० नगड़कर ने, जो इस समय जनमत संग्रह के अधिकारी हैं, मांगरोल, मानवदार, बन्तवा सरदारगढ़ और बाव रियासतों के जनमत संग्रह का परिणाम घोषित कर दिया है। इन पांच रियासतों में भारत के पक्ष में ३१३९५ मत

आये और पाकिस्तान के पक्ष में सिर्फ ३९। जूनागढ़ का मतसंग्रह होना अभी बाकी है।

लुहारू पूर्वी पंजाब में

लुहारू के नवाब ने अपनी रियासत की प्रजा की इच्छानुसार लुहारू को पूर्वी पंजाब में मिलाने की स्वीकृति दे दी है। रियासत तत्काल ही पूर्वी पंजाब में मिलाई जा रही है।

दक्षिण की मुस्लिम रियासत

इसी प्रकार बंगनापल्ली के नवाब ने अपनी रियासत को मद्रास प्रान्त में मिलाने की सहमति प्रकट कर दी है। यह रियासत भी तुरन्त मद्रास में मिलाई जा रही है।

स्वतन्त्र भारत का प्रथम रेलवे बजट

स्वतन्त्र भारत का, १९४८-४९ के लिए, रेलवे बजट भारतीय पार्लिमेण्ट में पेश कर दिया गया है। बजट को प्रस्तुत करते हुए रेलवे सदस्य श्री जानमथाई ने घोषणा की है कि रेलों के किरायों में और महसूलों में वृद्धि नहीं होगी। कुल आमदनी ३२ करोड़ ४० लाख रु० होने का अनुमान है, जिससे सरकार से उधार ली गई धनराशि का २२ करोड़ ५३ लाख रु० ब्याज काट कर ९ करोड़ ८७ लाख रु० बचत होने की आशा है।

हिन्दू महासभा का राजनैतिक रूप समाप्त

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा की कार्यसमिति ने सभा की राजनैतिक प्रवृत्तियों को स्थगित करके उसे सब संगठन कार्य में लगाने का निश्चय किया है। शरणार्थियों को सहायता और शक्तिशाली हिन्दू समाज के निर्माण के लिये विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करेगी। साम्प्रदायिकता का मूलोच्छेद करने के लिये साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व को हटाने की भी सभा ने मांग की है।

गांधी जी की हत्या की जांच

गांधी जी की हत्या के षड्यन्त्र का अनुसन्धान करने में लगभग १०० पुलिस अफसर लगे हुए थे। पूना के 'हिन्दू राष्ट्र' के मैनेजर एन० डी० आप्टे और अहमद नगर के करकरे — इन दो व्यक्तियों को पुलिस ने बड़ी छानबीन के बाद चालाकी से पकड़ लिया है। पुलिस गांधी जी की हत्या के दिन से इन दोनों को तलाश कर रही थी। इन दोनों के पकड़े जाने से हत्या की जांच लगभग पूरी हो गई है। मामले को अदालत में पेश करने के लिये पुलिस बिल्कुल जानकारी जमाकर रही है। अतः जांच में कोई बाधा उपस्थित न हो सके इसके लिये दिल्ली के चीफ कमिश्नर ने एतद्विषयक सब खबरों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।

दुमदार दोहे

'गुस्ताख'

है गई धारा सभा की, लीग पार्टी भंग।
हाय! सुनी जब ही हम नु, तब ही रहि गये दंग॥
राय हम से न ली।

राजनीति में, मेहरबां, अब न अड़ाओ टांग।
भोपटकर ने मान ली, जनता की ये मांग॥
मैं जानूं, डरि गये।

यू० एन० ओ० में सुनै ना, कोऊ हमरी बात।
श्री आयंगर जी फिरे, लांघि समन्दर सात॥
शिकायत करन कूं।

नेहरू और पटेल में, भये बहुत मतभेद।
प्रेस पिशाचा का सुना, जब ही झूठ सफेद॥
हंसी तब आ गई।

जब देखो तब धर पकड़, आफत में है जान।
संघ प्रेमियों की मिली, यार, धूरि में शान॥
छिपाते मुंह फिरें।

केवल पुलिस दबाव से, हृदय न बदलें, यार।
लावे तातें काम में, और दवा सरकार॥
राय हम नीक दें।

श्री डी वेलरा हार गये

आयरलैण्ड के प्रधान मन्त्री श्री एमन डी० वेलरा चुनाव में हार गये और उनके स्थान पर ५७ वर्षीय बैरिस्टर श्री जान कोस्टैलो प्रधान मन्त्री चुन लिये गये। डी वेलरा गत १६ वर्षों से निरन्तर आयरलैण्ड के प्रधान मन्त्री थे।

बर्मा में भारतीयों पर प्रहार

बर्मा में भारतीयों के पास २५ लाख एकड़ भूमि है। बर्मा की सरकार सारे देश की भूमि का राष्ट्रीय करण करने की योजना बना रही है। इसके कारण भारतीयों की भी भूमि उनके हाथ से निकल जाएगी। भारत सरकार उस भूमि का मुआवजा प्राप्त करने का प्रयत्न करेगी।

फिलस्तीन विभाजन के लिये अन्तर्राष्ट्रीय सेना

संयुक्त राष्ट्रीय फिलस्तीन कमीशन ने अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करके फिलस्तीन के विभाजन को क्रियान्वित करने के लिये सुरक्षा कौंसिल में एक अन्तर्राष्ट्रीय सशस्त्र सेना के निर्माण का सुझाव पेश किया है। फिलस्तीन की स्थिति इस समय अत्यन्त गम्भीर है और अरब लोगों का स्वार्थ देश के अन्दर व बाहर जनरल असेम्बली के निर्णय को शक्ति के द्वारा बदलने की जानबूझ कर कोशिशें कर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सेना के बिना कानून व व्यवस्था की स्थापना नहीं की जा सकती।

भारत का विधान पूर्ण

भारत के विधान का मसविदा तैयार हो गया है। यह विधान ३०० पृष्ठों में है और इसमें ३०० धाराएं व ८ परिशिष्ट हैं।

चीन को ५० करोड़ डालर

चीन की राजधानी मुकदन की प्राप्ति के लिए जो भीषण संघर्ष हो रहा था वह इस समय निर्णायक स्थिति में पहुंच गया है। कम्यूनिस्ट सेना कब मुकदन पर अधिकार कर लेगी यह कुछ नहीं कहा जा सकता। प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन ने नानकिंग सरकार की सहायतार्थ चीन की सहायता के ५७ करोड़ डालर के कार्यक्रम को स्वीकार करने के लिये अमरीकन कांग्रेस से कहा है। इस राशि से आवश्यक सामान भेजा जायेगा और पुनर्निर्माण योजना पूरी की जायेगी।

———

महान् नेता का अंतिम भौतिक समारोह—अस्थि-विसर्जन
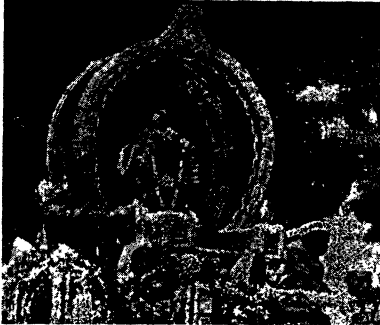
प्रयाग में इस रथ पर महात्मा गांधी की अस्थियां त्रिवेणी संगम पर विसर्जन के हेतु ले जाई जा रही हैं। सरदार पटेल व प० पन्त रथ पर दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

प्रयाग में महात्मा गांधी की अस्थियों के रथ पर भारतीय विमान नीचे झुक कर पुष्प-वर्षा कर रहा है।

प्रयाग में इस नौका पर गांधी जी की अस्थियां त्रिवेणी में प्रवाहित करने के लिये ले जाई जा रही हैं प० नेहरू चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

प्रयाग में प० नेहरू अस्थियां ले जाने वाले रथ को पुष्प हारों से सजा रहे हैं।

दिल्ली में गांधीजी के भस्म को प्रवाहित किया जा रहा है।

दिल्ली में राजघाट पर स्मारक के लिये नियत स्थान

राष्ट्रदेव के ऐतिहासिक स्मृति चिन्ह

राष्ट्रदेव गांधीजी के अन्तिम २४ घण्टे

[श्री प्यारेलाल]

२९ जनवरी को सारे दिन गांधीजी को इतना ज्यादा काम रहा है कि दिन के आखिर में उन्हें खूब थकान मालूम होने लगी। कांग्रेस विधान के मसविदे की तरफ इशारा करते हुए, जिसे तैयार करने की जिम्मेदारी उन्होंने ली थी, उन्होंने आभा से कहा — 'मेरा सिर घूम रहा है। फिर भी मुझे इसे पूरा करना ही होगा। मुझे डर है कि रात को देर तक जगना होगा।'

आखिरकार वे ९। बजे रात को सोने के लिए उठे। एक लड़की ने उन्हें याद दिलाया कि आपने हमेशा की कसरत नहीं की है। 'अच्छा, तुम कहती हो तो मैं कसरत करूंगा' — गांधीजी ने कहा और वे दोनों लड़कियों के कन्धों पर, जिमनास्टिक के पैरेलल बार की तरह, शरीर को तीन बार उठाने की कसरत करने के लिए बढ़े।

हमेशा की तरह काम

बिस्तर में लेटने के बाद गांधीजी आम तौर पर अपने हाथ पांव और दूसरे अंग सेवा करने वालों से दबवाते थे। ऐसा करवाने में उन्हें अपना नहीं, बल्कि सेवा करने वालों की भावनाओं का ही ज्यादा ख्याल रहता था। मन से तो उन्होंने अपने आप को इस बात से एक अरसे से उदासीन बना लिया था, हालांकि मैं जानता हूं कि उनके शरीर को इन छोटी-मोटी सेवाओं की जरूरत थी। इससे उन्हें दिन भर के कुचल डालने वाले काम के बोझ के बाद मन को हलका करने वाली बातचीत और हंसी-मजाक का थोड़ा मौका मिलता था। अपने मजाक में भी वे हिदायतें छोड़ देते थे। गुरुवार रात को वे आश्रम की एक महिला से बातचीत करने लगे, जो संयोग से मिलने आ गयी थी। उन्होंने उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी न होने के कारण उसे डांटा और कहा कि अगर राम नाम तुम्हारे मन-मन्दिर में प्रतिष्ठित होता, तो तुम बीमार नहीं पड़तीं। उन्होंने आगे कहा — 'लेकिन उसके लिये श्रद्धा की जरूरत है।'

एक दूसरे आश्रमवासी भाई से बात करते हुए गांधीजी ने यह राय फिर दोहरायी, जो उन्होंने प्रार्थना के बाद अपने भाषण में जाहिर की थीः 'मुझे गड़बड़ी के बीच शान्ति, अंधेरे में प्रकाश और निराशा में आशा पैदा करनी होगी।' बातचीत के दौरान में 'चलती लकड़ियों' का जिक्र आने पर गांधीजी ने कहाः 'मैं लड़कियों को मेरी चलती लकड़ियां बनने देता हूं। लेकिन दर-असल मुझे उनकी जरूरत नहीं है।' यह छोटी-सी बात-चीत तब तक चलती रही, जब तक गांधी जी सो न गये।

३० जनवरी को सुबह गांधी जी हमेशा की तरह ३॥ बजे प्रातःकालीन प्रार्थना के लिये उठे। प्रार्थना के बाद वे काम करने बैठे और थोड़ी देर बाद दूसरी बार थोड़ी-सी नींद लेने के लिये लेटे।

आठ बजे उनका मालिश का वक्त था। मेरे कमरे में से गुजरते हुये उन्होंने कांग्रेस के नये विधान का मसविदा मुझे दिया, जो देश के लिये उनका आखिरी वसीयतनामा था। इसका कुछ हिस्सा उन्होंने पिछली रात को तैयार किया था। मुझसे उन्होंने कहा कि इसे 'पूरी तरह' दोहरा लो। 'इसमें कोई विचार छूट गया हो, तो उसे लिख डालो, क्योंकि मैंने इसे बहुत थकावट की हालत में लिखा है।'

मालिश के बाद मेरे कमरे में से निकलते हुये उन्होंने पूछा कि मैंने उसे पूरा पढ़ लिया या नहीं। और मुझसे कहा कि नोआखाली के अपने अनुभव और प्रयोग के आधार पर मैं इस विषय पर एक टिप्पणी लिखूं कि मद्रास के सिर पर झूमते हुये अन्न-संकट का किस तरह सामना किया जा सकता है। उन्होंने कहा — 'वहां का खाद्य-विभाग हिम्मत छोड़ रहा है। मगर मेरा ख्याल है कि मद्रास जैसे प्रान्त में, जिसे कुदरत ने नारियल, ताड़, मूंगफली और केला इतनी ज्यादा तादाद में दिये हैं — कई किस्म की जड़ों और कन्दों की तो बात ही जाने दो — अगर लोग सिर्फ अपनी खाद्य सामग्री का संभाल कर उपयोग करना जानें, तो उन्हें भूखों मरने की जरूरत नहीं है।' मैंने उनकी इच्छा के अनुसार टिप्पणी तैयार करने का वचन दिया। इसके बाद वे नहाने चले गये। जब वे नहाकर लौटे, तो उनके बदन पर काफी ताजगी नजर आती थी। पिछली रात की थकावट मिट गयी थी और हमेशा की तरह प्रसन्नता उनके चेहरे पर चमक रही थी।

उनका आखिरी वसीयतनामा

बंगाली लिखने के अपने रोजाना के अभ्यास को पूरा करने के बाद गांधीजी ने साढ़े नौ बजे अपना सबेरे का भोजन किया। अपनी पार्टी को तितर-बितर करने के बाद जब वे पूर्व बंगाल के गांवों में अपनी 'करो या मरो' की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए नंगे पावों श्रीरामपुर गये, तब से वे नियमित रूप से बंगाली का अभ्यास करते रहे हैं। जब मैं विधान के मसविदे को दोहराने के बाद उनके पास ले गया, तब वे अभी भोजन ही कर रहे थे। उनके भोजन में ये-ये चीजें शामिल थीं : बकरी का दूध, पकाई हुई और कच्ची भाजियां, सतरे और अदरख का काढ़ा, खट्टे नींबू और 'घृत कुमारी'। उन्होंने अपनी विशेष सतर्कता से मसविदे में बढ़ाई हुई और बदली हुई बातों को एक एक करके देखा और पंचायती नेताओं की संख्या के बारे में जो गलती रह गई थी, उसे सुधारा।

उनकी अन्तिम चिन्ता

दोपहर को थोड़ी झपकी लेने के बाद गांधीजी श्री सुधीर घोष से मिले। श्री घोष ने और और बातों के अलावा 'लंदन टाइम्स' की कतरन और एक अंग्रेज दोस्त के खत के कुछ हिस्से पढ़कर उन्हें सुनाये। इनमें लिखा था कि किस तरह कुछ लोग बड़ी तत्परता के साथ पण्डित नेहरू और सरदार पटेल के बीच फूट डालने की कोशिश कर रहे हैं।

साढ़े चार बजे आभा उनका शाम का खाना लाई। इस धरती पर उनका यह आखिरी भोजन था, जिसमें करीब करीब सबेरे की ही सब चीजें शामिल थीं। उनकी आखिरी बैठक सरदार पटेल के साथ हुई। जिन विषयों पर चर्चा हुई, उनमें से एक केबिनेट की एकता को तोड़ने के लिए सरदार के खिलाफ किया जाने वाला गन्दा प्रचार था। गांधी जी की यह साफ राय थी कि हिन्दुस्तान के इतिहास में ऐसे नाजुक मौके पर केबिनेट में किसी तरह की फूट पैदा होना बड़ी दुःखपूर्ण बात होगी। सरदार से उन्होंने कहा कि आज मैं इसी को अपनी प्रार्थना सभा के भाषण का विषय बनाऊंगा। प्रार्थना के बाद पण्डितजी मुझ से मिलेंगे; मैं उनसे भी इसके बारे में चर्चा करूंगा। अगर जरूरी हुआ, तो मैं २ तारीख को अपना वर्धा जाना मुल्तवी कर दूंगा और तब तक दिल्ली नहीं छोड़ूंगा, जब तक दोनों के बीच फूट डालने की कोशिश के इस भूत का पूरी तरह खात्मा न कर दूं।

प्रार्थना – मैदान में जाने के पहले ज्यों ही गांधी जी गुसलखाने में जाने के लिए उठे, वे बोलेः 'अब मुझे आपसे अलग होना पड़ेगा।' रास्ते में वे उस शाम को अपनी 'चलती लकड़ियों' आभा और मनु के साथ तब तक हंसते और मजाक करते रहे, जब तक वे उठे हुये प्रार्थना-मैदान की सीढ़ियों पर नहीं पहुंच गये।

दिन में जब दोपहर के पहले आभा गांधी जी के लिये कच्चे गाजरों का रस लाई, तो उन्होंने उलाहना देते हुये कहाः 'तो तुम मुझे ढोरों का खाना खिलाती हो।' आभा ने जवाब दियाः 'बा तो इसे घोड़ों की खुराक कहती थीं।' उन्होंने पूछाः 'इस चीज को दूसरा पूछेगा भी नहीं, उसे स्वाद से खाना क्या मेरे लिये बड़ी बात नहीं है?' और हंसने लगे।

"राम ! राम !"

जब गांधीजी प्रार्थना-सभा के बीच रस्सियों से घिरे रास्ते में चलने लगे, उन्होंने प्रार्थना में शामिल होने वाले लोगों के नमस्कारों का जवाब देने के लिए लड़कियों के कंधे से अपने हाथ उठा लिये। एकाएक भीड़ में से कोई दाहिनी ओर से भीड़ को चीरता हुआ उस रास्ते पर आया। छोटी मनु ने यह सोचा कि वह आदमी बापू के पांव छूने को आगे बढ़ रहा है। इसलिए उसने उस को ऐसा करने के लिए झिड़का क्योंकि प्रार्थना को पहले ही देर हो चुकी थी। उसने रास्ते में आने वाले आदमी का हाथ पकड़ कर उसे रोकने की कोशिश की। लेकिन उसने जोर से धक्का दिया, जिससे उसके हाथ की आश्रम भजनावलि, माला और बापू का पीकदान नीचे गिर गये। ज्यों ही वह बिखरी हुई चीजों को उठाने के लिये झुकी, वह आदमी बापू के सामने खड़ा हो गया — इतना नजदीक खड़ा था कि पिस्तौल से निकली हुई गोली का खोल बाद में बापू के कपड़ों की पर्त में उलझा हुआ मिला। सात कारतूसों वाली ऑटोमेटिक पिस्तौल से जल्दी जल्दी तीन गोलियां छूटीं। पहली गोली नाभि से ढाई इंच ऊपर और मध्य रेखा से साढ़े तीन इंच दाहिनी तरफ पेट की दाहिनी बाजू में लगी। दूसरी गोली मध्य रेखा से एक इंच की दूरी पर दाहिनी तरफ घुसी और तीसरी

[शेष पृष्ठ २१ पर]

गांधीजी के नेतृत्व की भावभूमि

[श्री कुमार योगी, एम० ए०]

गांधी जी जन्मजात नेता थे। युग-निर्माण का दायित्व लेकर इस पृथ्वी पर वे अवतरित हुए थे। यही कारण है कि सारे संसार के विरोध का सामना करने के लिए भी वे सदैव तत्पर रहते थे। दुर्गासप्तशती में एक आख्यान है कि दानवों के अत्याचारों से पृथ्वी को मुक्त करने के लिए जब महादुर्गा का अवतरण हुआ तो उसके अंग-प्रत्यंग में सब देवताओं ने अपने-अपने तेज का संचार किया था और इस प्रकार महादुर्गा इस ब्रह्माण्ड के सारे तेज को लेकर अवतरित हुई थी। गीता के विराट् रूप में भी इसी प्रकार चराचर-व्याप्त सारी विभूतियों का केन्द्रीभूत तेज था। अलौकिकता पर आधारित इन आख्यानों को वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसना उनके अंतर्भूत उद्देश्य का उपहास करना है — लौकिक मानदण्डों के द्वारा उनका परीक्षण अनुचित ही नहीं, अन्यायपूर्ण भी है। वे तो लौकिक अभिव्यक्ति में अन्तरात्मा के रूप हैं। उस अन्तरात्मा को ही हमें शिरोधार्य करना है। इस स्तर का स्पर्श करने की क्षमता विज्ञान में अभी तक नहीं आ पाई है। यदि विज्ञान की सूक्ष्म दृष्टि में इतनी सामर्थ्य होती तो महात्मा गांधी के व्यक्तित्व के सम्मुख सिर झुका कर आज के विश्व का सबसे बड़ा वैज्ञानिक आइन्स्टीन ये उद्गार क्यों प्रकट करता :

— 'आनेवाली पीढ़ियां कठिनाई के साथ विश्वास करेंगी कि कभी ऐसे शरीरधारी ने इस पृथ्वी पर पदार्पण किया था।'

गांधीजी का व्यक्तित्व भी विराट् था। संसार का सारा सत्य तेजोरूप बन कर उनके अन्तःकरण में केन्द्रीभूत हो गया था।

महानता का रहस्य

इसका अभिप्राय यह नहीं है कि हम गांधी जी को ऐसी अलौकिक विभूति के रूप में स्वीकार करें जो हमारी नश्वर लौकिकता के पार्थिव स्पर्श से पूर्णतया परे हो। यह भावना तो उनके निरादर के समान होगी। गांधीजी की महानता का रहस्य यह नहीं है कि वे दैवी तत्वों से बने थे। उन्होंने स्वयं कभी ऐसा दावा नहीं किया था। वे तो लौकिक से भी परम लौकिक थे। इसी त्रिगुणात्मक पृथ्वी पर आविर्भूत होकर वे इसी की रज से सत्यान्वेषक बन पाये थे और हमारे-जैसे सामान्य जन-समुदाय की भ्रातृत्व-शृंखला की एक कड़ी थे। जो दिव्य तेज और मनस्विता उन्होंने प्राप्त की थी, वह हमारे ही बीच में जीवन-यापन करते हुए प्राप्त की थी। अतः उनको हमारे मनःस्पर्श से परे मान कर अपनी दुर्बलताओं पर आवरण डालना गांधीजी के प्रति हमारी उपेक्षा ही होगी। उनके कार्य-कलापों को ईश्वरत्व के तेज की परिधि से आविष्ट करके हम अपने नैतिक दायित्व से कायरतापूर्ण पलायन की जो चेष्टा करते हैं, वह उनके देशवासी होने के नाते हमारे लिये कभी शोभनीय नहीं हो सकती। गांधीजी की तेजस्वी साधना का भी मूल्यांकन इस मनोवृत्ति के द्वारा सही-सही नहीं हो सकता। हमें तो बार बार अपने को यह स्मरण दिलाना होगा कि इस लौकिक जीवन में रहकर गांधीजी के अलौकिक व्यक्तित्व अर्जित करने का मूल रहस्य यह है कि उन्होंने आजीवन मनुष्यत्व के व्यापक आदर्शों को अपने दैनिक जीवन में चरितार्थ करने की निर्भीक साधना की है और इस पथ में आने वाले प्रत्येक कष्ट को सहर्ष स्वीकार किया है।

नरसिंह की अहिंसा

गांधीजी ने अहिंसा का जो पथ अपनाया था और अपने अनुगामियों को भी जिस पर अग्रसर होने के लिये उन्होंने आदेश दिया था, उसके भीतर दुर्बलता या साहसहीनता की प्रेरणा नहीं थी। इतिहास साक्षी है — उनके समान साहसी पुरुष संसार में कितनी बार पैदा हुआ है? अहिंसा को अपना जीवन दर्शन स्वीकार करने के भीतर मूल प्रेरणा यह थी कि शारीरिक शक्ति और हिंसा उनके दृष्टिकोण में व्यर्थ और मानवीय गौरव के प्रतिकूल थी। उनके अंतःकरण में यह धारणा अचल रूप से बद्धमूल हो गई थी कि हिंसा और नर-संहार मानवीय विद्रूपताएँ हैं और व्यर्थ होने के साथ-साथ वे प्रकृति के भूकम्प या विस्फोट जैसे उद्गारों की भांति स्वाभाविक एवं अनिवार्य नहीं हैं। वे प्रकृत न होकर हमारे अनेक सृजनों की भांति पूर्णतया मनुष्य-कृत हैं। गांधीजी युद्धों को मानवीय विकृतियों के परिणाम मानते थे और इसी तर्क से यह सिद्ध करते थे कि उनको रोकने की शक्ति भी मनुष्य में ही है। अपने प्रसिद्ध लेख 'तलवार का सिद्धांत' में उन्होंने अहिंसा के मूलभूत तत्वों का बड़ा सुन्दर और ओजस्वी निरूपण किया है और हिंसा को पशुत्व की प्रेरणा साबित करते हुये यह स्पष्ट कर दिया है कि मनुष्य का एकमात्र जीवन-दर्शन अहिंसा है। वे लिखते हैं, —'बर्बर की आत्मा प्रसुप्त रहती है और शारीरिक शक्ति के सिवाय वह दूसरा कानून नहीं जानता। किन्तु मानवीय गौरव के लिये उच्चतर कानून चाहिये— और वह है आत्मिक शक्ति।'

राजनीति का परिमार्जन

गांधीजी की अहिंसा की परिधि सीमित नहीं थी। सारी मानवता के दोषों का प्रक्षालन करने के लिये उन्होंने सत्यान्वेषण का पथ अंगीकार किया था। गेरीबाल्डी, वाशिंगटन या कमालपाशा के साथ उनकी समता नहीं की जा सकती, क्यों कि उनका कर्मक्षेत्र गांधी जी की अपेक्षा काफी संकुचित था। वे केवल मात्र एक राष्ट्रीय नेता, सुधारक और सेनापति ही नहीं थे। उनके कर्म के तंतु तो सारी मानवता तक फैले हुये थे। यही कारण है कि भारत का स्वातन्त्र्य-संग्राम अन्य देशों के स्वातन्त्र्य संग्रामों की भांति साधन एवं साध्य के प्रति उदासीन नहीं रहा है। गांधीजी ने साधन और साध्य को एक रूपता के स्तर पर प्रतिष्ठित करके आधुनिक राजनीति के कलुष का परिमार्जन किया है। यूरोपीय सभ्यता के आडम्बरों के कारण राजनीति व्यवसाय ही नहीं बन गई थी, वरन् वह भद्रता के स्तर से नीचे उतर कर छल छद्म एवं पाखण्ड का सजीव रूप हो गई थी। राजनीति से परिचालित जीवन पर इसका प्रभाव कितना भयानक पड़ सकता है — आज के ध्वस्त यूरोप के देश इस के ज्वलन्त प्रमाण हैं। भारतीय स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में भी राजनीति के इस रूप का प्रवेश होता जा रहा था। किन्तु गांधीजी को यह सहन नहीं हो सका। सत्यान्वेषण के प्रयोग में प्राणों की बलि चढ़ा देने वाला सत्यवीर गांधी विकृति के साथ कैसे समझौता कर सकता था? सिद्धान्त की रक्षा के सामने उन्हें बड़ी से बड़ी राजनीतिक पराजय भी शिरोधार्य थी। राजकोट और गांधी इर्विन पैक्ट में उन्होंने राजनीतिक उद्देश्य की उपेक्षा करते हुये नैतिक सिद्धान्त की ही रक्षा की है।

कर्मभूमि की अभिव्यक्ति

मनुष्य के प्रकृत गौरव की रक्षा के लिये किया गया यह साहसी प्रयत्न अन्धकार ग्रस्त मानवता के लिये ऐसा ज्योतिर्मय स्तम्भ है, जिसकी किरणें अनन्तकाल तक मनुष्य को पशुत्व के सामने सिर ऊंचा करके निर्भीक खड़ा रहने का साहस देती रहेंगी। यह अमर दीप है और इसके साथ गांधीजी भी शत-शत पीढ़ियों तक अमर बने रहेंगे। मानवीय गौरव और मनुष्यत्व की रक्षा के लिये कब-कब आवश्यकता अनुभव नहीं हुई है? अपना निरादर कब-कब मनुष्य ने ज़हर के घूंट की तरह नहीं पिया है। मनुष्यत्व के मूलभूत तत्वों में विश्वास जमाने के लिये गांधीजी से पूर्व और उनके समय में भी कितनी सिफारिशें नहीं की जाती रही हैं? किन्तु गांधीजी की सिफारिश सब से भिन्न थी। मन का विरोध वाणी तक ही सीमित रह कर निश्चेष्ट नहीं हो गया। हिंसा एवं अन्याय के प्रतिकूल नैतिक विरोध की अभिव्यक्ति करके ही वे मौन रहने वाले व्यक्ति नहीं थे। पत्र पत्रिकाओं में लम्बे वक्तव्य प्रकाशित करा के संसार की हलचल से परे भाग कर एकान्तवास में सन्तोष खोजने वाले दार्शनिक भी वे नहीं थे। वे तो दूसरी ही मिट्टी के साबित हुये। उनके मन का प्रतिरोध वाणी में व्यक्त हुआ — और वाणी के स्तर से नीचे उतर कर कर्म के रूप में मूर्त हुआ। अन्तःकरण में समाई सारी दुनिया उनकी कर्मभूमि में अवतरित होकर साकार हो गई। अपने सारे जीवन को उन्होंने मन, वचन और कर्म के ऐक्य का मंच बना दिया।

एक मात्र कर्मयोगी

यूरोप में एक बार गांधीजी के महत्व को गिराने की दिशा में प्रचार की एक लम्बी हिलोर उठी थी और उन्हें अन्य शांतिवादी सुधारकों की श्रेणी में रख कर अकर्मण्य साबित करने का दुराग्रह किया गया था। किन्तु मिथ्या के आवरण में सत्य की आभा कब तक अवगुंठित रहती? स्वयं यूरोप में उसका प्रतिरोध प्रारम्भ हो गया। यूरोप के मनीषी, लेखक विचारक और दार्शनिक रोम्यां रोलां ने इस कलुषित प्रचार के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई। उन्होंने गांधी जी को युग का एकमात्र कर्मयोगी सिद्ध करते हुए दुःसाहसी प्रचारकों को अपनी कुचेष्टायें समेटने की चेतावनी दी। रोम्यां रोलां ने गांधी जी को 'वाणी का देवता' न कह कर 'कर्म का देवता' कहा है।

नो वन हैज ए ग्रेटरहोरर आफ दे अकते हैं पैस्सीविटी देन दिस फीयरलेस फ्लाइटर हूं, इज वन आफ दि मोस्ट हीरोइक इनकार्नेशन्सआफ ए मैन हू रेजिस्ट्स दि सोल आफ हिज मूवमेंएट इज दि एक्टिव फोर्स आफ दि लव, फेथ ऐण्ड सेक्रिफाइस।')

'किसी को भी निष्क्रियता का इतना अधिक भय नहीं रहा है, जितना इस निर्भीक योद्धा को है। पाप का विरोध करने वाले मानव अवतारों की परम्परा में उनका शौर्य सबसे महान् है। प्रेम, विश्वास और त्याग की सक्रिय शक्ति उनके आंदोलन की अन्तरात्मा है।'

रोम्यां रोलां के इन उद्गारों ने गांधीजी की ओर से उदासीन कई भार-

[शेष पृष्ठ २० पर]

कुर्बानी

[कुमारी पुष्पा सिंहलकुला]

(पिछले अङ्क का शेष)

रजिया की विनय भरी आंखों की मूक याचना को सतीश न टाल सका। और वह कर भी क्या सकता था। फातिमा द्वारा दिखाए गए कमरे की ओर जाते २ वह ठिठक गया। न जाने क्या सोच कर वह चौक में आया। चारों तरफ एक तीक्ष्ण दृष्टि डाल कर वह वहां का पूरा परिचय प्राप्त करना चाहता था, एकाएक बाहर गली के शोर गुल से वह कुछ घबरा उठा। वह शोर गुल निरन्तर इधर ही आ रहा था इससे वह लौट आया और कमरा अन्दर से बन्द कर लिया। कमरा बहुत बड़ा तो नहीं था पर सजा हुआ था। एक बड़ा सा पलंग मय बिस्तर के था। शीशे सहित एक बड़ी सी अलमारी कोने में खड़ी थी इसके सिवाय ड्रेसिंग टेबिल, मेज कुर्सी सब करीने से सजा था। सब एक ही दृष्टि में देख कर उसने दरवाजा बन्द करना चाहा पर ऊपर की चिटकनी टूटी हुई थी केवल मुट्ठे को घुमाने से ही दरवाजा बन्द हो सकता था। देखकर सतीश का माथा ठनका।

उसने मेज उठाई और दरवाजेसे अड़ा दी पर वह तो धक्के से हट सकती थी। सतीश कुछ घबरा गया। एक दरवाजा और था, शायद दूसरे कमरे में खुलता था जो इस समय बन्द था। इसके अलावा दो खिड़कियां थी जो चौक में खुलती थी। उसने पास आ कर खिड़किया देखीं। दोनों में लोहे के सींखचे थे। सतीश का सहारा टूट गया।

आखिर चारों तरफ से निराश हो कर सतीश धम्म से कुर्सी पर जा गिरा और विचार में मग्न हो गया। जैसे उसके चारों ओर मौत मडरा रही हो। जिस घर के पुरुष गलियों में हिंदुओं को मारने के लिये मोर्चा लगाए खड़े हों—वह आदमी घरमें आए एक हिन्दू को कैसे जीता छोड़ेंगे। दो चार का तो वह सामना कर सकता है — उसने अपनी पैंट की जेब थपथपा कर देखी — उसका रिवाल्वर सुरक्षित था। पर गोलियां केवल तीन हैं — पर जब तक सांस तब तक आशा। हो सकता है ये लोग उसे छेड़ें ही नहीं — इस पर उसका चित्त ठहरता नहीं था।

इसी उलझन में था कि एकाएक बाहर से बहुत से आदमियों के बोलने की आवाज सुनाई दी। शायद चौक में बहुत से आदमी खड़े बातचीत कर रहे हैं। सतीश ने बिजली पहले ही बन्द कर दी थी — अब कुर्सी से उठ कर खिड़की पर कान लगा दिए — झांकना चाहा पर बाहर अन्धेरे में कुछ दीखा नहीं।

बातचीत काफी स्वतन्त्रता से और उत्साह पूर्वक हो रही थी। शायद उन्हें अभी स्वप्न में भी ख्याल न था कि पास के कमरे में एक शत्रु पक्ष का आदमी उन की गुप्त सलाह सुन रहा है।

"देखो मिर्जा, यह प्रोग्राम ठीक है कि नहीं — यह सोचने का मौका नहीं। सर पर पड़ी है और काम भी बड़ा है। इस समय ८ बज कर आठ या दस मिनट ही हुये हैं। इस समय घरों को जाओ, ठीक ११ बजे पश्चिम वाले नाके से हमला बोलेंगे। सब रमजान के अहाते में जमा होना। मिर्जा तुम वो कनस्तर भी उठवाते लाना। गोदाम में दो ही रह गए होंगे। आज के लिये एक ही काफी है।

पर वो इलाका क्यों चुना है वहां के बनिए तो तैयार हैं कई चौकीदार रात भर पहरा देते हैं, आवाज सुनते ही सतीश उस कड़कती हुई आवाज को पहचान गया हालांकि इस समय वह काफी नर्म थी।

'तुम नहीं समझते नूरू, वहां रहनेवाले लाला हैं बड़े पक्के आसामी साथ ही डरपोक, मार के डरसे कौड़ी २ निकलवालेंगे।

वाह, खां साहब यह भी खूब ही रहेगी मैं लाला पूरन मल के यहां से १०००) का कर्जदार हूं आज मौत से उसको गिरा कर सब कर्जा अदा कर आऊंगा — हां हां उसकी बढ़ी हुई तोंद सोने से भरी हुई है — एक मोटी और भद्दी आवाज वाले आदमी ने कहा

हकीम साहब, यह लौंडे भी शोर मचाते हैं सो इनको गली के नुक्कड़ पर रखना जिससे घर की हिफाजत रहे और तुम इब्राहीम, महल्ले के सब घरों में कह देना — और जो वो चालीस जवान बुलाए हैं उनकी रोटी का इन्तजाम तो हो ही गया।"

'जनाब वो तो खा पी कर लड़ और छुरे लिए तैयार बैठे हैं — बस, इशारे की देर है!'

'बस — अब घरों को जाओ — होश्यार रहना। ११ बजे याद रखो' —

बात खत्म करके कुछ बाहर चले गए और दो चार अन्दर आ गए। सतीश सांस रोके खिड़की के पास उसी तरह बैठा रहा। उसे जीवन के आसार नजर नहीं आ रहे थे। ये खाना खाने अन्दर जायेंगे और उन्हें पता चल जायगा। बहिश्त जाने का ऐसा सुन्दर मौका भला कैसे छोड़ देंगे।

थोड़ी देर आसपास के कमरों में खटपट होती रही उसके बाद सब निस्तब्धता। सतीश ने समझ लिया सब खाने पीने अन्दर चले गये हैं।

सतीश ने सोचा ऐसा मौका फिर न मिलेगा! उसने कुछ सोचकर कपड़ों की अलमारी खोली, कपड़े भरे हुए थे पर सतीश ने उसमें से एक शेरवानी और तुर्की टोपी चुन ली। वह स्वयं कोट न पहने था, सिर भी खाली था। शेरवानी पहन कर टोपी हाथ में ले ली और दरवाजा खोल कर देखा गेलरी खाली थी। पास के कमरे में रोशनी थी पर हलचल नहीं। सतीश ने बाहर आकर दरवाजा झुक के से बन्द कर दिया और चौक में आ गया। बाहर निकलने का उपाय सोच ही रहा था —दो व्यक्तियो की बातचीत सुनाई दी, सतीश अहाते में रखी बग्घी के पीछे छिप गया। टीन का बड़ा दरवाजा खोल कर दो युवक अन्दर आ गये। दोनों लापरवाही से बातचीत करते करते वहीं खड़े हो गये। वे लोग सतीश के बिल्कुल सामने थे पर अपनी बातों में इतने मस्त थे कि कुछ देख न सके।

एक युवक जो अपेक्षाकृत उमर में छोटा था, पैंण्ट और कमीज पहने था, दूसरा बड़ा और दढ़ियल था, साथ ही भयानकता उसके चेहरे से बरस रही थी। पहले वे दोनों धीरे धीरे बात करते रहे जो सतीश न सुन सका, पर एकाएक पहले युवक की तीक्ष्ण आवाज ऊंची हो गई। वह कह रहा था—

'मुझे तुम कायर क्यों समझते हो यार, जब समय आये तो देख लेना खुर्शेद कभी पीछे न रहेगा। हकीम साहब ने कहा हम गली की हिफाजत अपने पर ले लें — ठीक है, जान पर खेलकर करेंगे! पर तुम क्यों बार बार कहते हो कि तेरे किए कुछ न होगा! आवाज में कुछ झुंझलाहट और क्रोध था —

दढ़ियल व्यक्ति जोर से ठहाका मार कर हंस पड़ा —'अरे खुर्शेद, तू अमीर का बेटा है, आराम में पला है, इसी से कहता हूं। अगर तू अपने में हिम्मत महसूस करता है तो बड़ा अच्छा है।'

'देखो अब्दुल्ला, मैंने सोच लिया है कि एक न एक हिन्दू की गर्दन आज अपने हाथ से काटूंगा।'

अब्दुल्ला अपनी मूंछें मरोड़ता हुआ फिर हंस पड़ा — 'यह तुम्हारे किए न होगा — यह तो इस हिम्मत का और इन हाथों का जोर है — आज दिन भर में सात काफिरों को इन हाथों ने जहन्नुम पहुंचा दिया — फिर भी ये बाजू फड़क रहे हैं — अभी तो छुरे की धार भी लाल नहीं हुई। जब उस शामलाल की छाती पर छुरा ताना तो रो पड़ा, बोला दस हजार ले ले, बीस हजार ले ले। मुझे हंसी आई — अरे काफिर तेरे मरने पर माल तो मेरे बाप का है ही। बस, झुक के छुरा मारा — धार निकल पड़ी — पर क्या कहूं — इन हिन्दुओ की औरतें बड़ी जोखम की होती हैं — मेरे साथ अशरफ था — उसने ज्योंही शामलाल की घरवाली पर हाथ डाला — तो शेरनी सी तड़प उठी और चाकू दे मारा — वह तो यह कहो चाकू उसकी बांह पर लगा — मैंने देखा अशरफ हाय करके बैठ गया था। मैं भागा, सोच लिया था कि पकड़ कर तड़पा तड़पा कर के मारेंगे पर वाह, मेरे पहुंचने से पहले ही उसने वही चाकू अपनी छाती में दे मारा — और वहीं ढेर हो गई।

खुर्शेद उसी तरह स्तब्ध भाव से खड़ा रहा फिर धीरे से सांस छोड़ कर बोला — भाई है तो बड़ा वहशियाना काम। कभी का पड़ोसी, पड़ोसी का दुश्मन हो रहा है, खून का प्यासा बन गया है — ये जज्बात तो जैसे अल्ला ने अपनी कुदरत को मेंटने को ही इंसान के दिल में पैदा कर दिए हैं। कहां तो दुश्मनों की औरतों को मुहम्मद साहब इज्जत की नजर से देखते थे। इस्लाम के परवाने औरतों को तड़पा तड़पा कर, उनकी इज्जत ले ले कर टुकड़े टुकड़े करके मार रहे हैं —

'रहने दो। फिलासफी के लेक्चर तो प्रोफेसर साहब के लिए ही बख्श दो। तुम अपने दिल को कहो, रात को घर से निकलोगे कि नहीं! हम लोग काफी हैं, मिलकर सब इन्तजाम कर लेंगे, तुम आराम करना — तुमसे देखा न जायगा। अच्छा कल सवेरे मुलाकात होगी" मूछों में मुस्कराते हुए दूसरे ने कहा —

खुर्शेद लज्जित हो उठा, बोला— 'मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं रात को नहीं

[शेष पृष्ठ १९ पर]

हिन्दी वालों का कर्तव्य

बिहार व उड़ीसा में संघर्ष

[श्री दीनदयालु शास्त्री]

अंगरेजी शासन में हमारा देश अनेक टुकड़ों में विभक्त था। उसके कुछ भाग सीधा अंगरेजों द्वारा शासित थे और कुछ भाग स्थानीय राजाओं, महाराजाओं के प्रबन्ध में थे। इन प्रान्तों व रजवाड़ों के निर्माण में भाषा, संस्कृति, प्रकृति व यातायात की कोई सुविधा न देखी गयी थी। परिणाम यह था कि प्रकृति द्वारा विविध खनिजों व अन्य वस्तुओं से पूर्ण होते हुए भी देश विकास न कर पाता था। अब अंगरेजों के चले जाने के बाद जहां हम स्वतन्त्र हुए हैं वहां इस देश के राजे रजवाड़े अपना हित आत्म समर्पण द्वारा जनता के शासन में समझने लगे हैं। अंगरेजों की तो जाते समय भी यह इच्छा थी कि ये देशी राजा बने रहें और भारत एक व अखण्ड न हो सके। वहां के बहुत से राजा महाराजा भी अपनी स्वतन्त्र सत्ता में अपना मान व हित मानते थे, किन्तु वे केवल दीर्घकालीन अंगरेजी सत्ता से प्रभावित हो कर ही सम्भवतः ऐसा मानते थे। जब अंगरेज यहां से गये, तो उनका जादू भी चला गया और राजा महाराजाओं ने समझा कि हमारा यथार्थ हित जनता के हित में है अतः हमें इस दृष्टि से ही सब कार्य करने चाहियें। इस सद्बुद्धि व देश में चल रही विविध प्रगतियों का ही यह परिणाम है कि अब छोटे मोटे राजे रजवाड़े अपनी स्वतन्त्र सत्ता समाप्त कर रहे हैं और अपनी वृत्ति, जायदाद व अन्य स्वार्थों का संरक्षण पाकर रियासतों का शासन भारत सरकार को सौंप रहे हैं। इस परिवर्तन से भारत सरकार यथार्थ में लाभ उठा रही है और इन रियासतों को भाषा व संस्कृति के अनुसार विभिन्न प्रान्तों में शामिल कर रही है। इस नीति से रियासतों का तो लोप होगा ही, प्रान्तों का भी भाषा, संस्कृति की दृष्टि से यथार्थ विकास होगा और वे राजनैतिक दृष्टि से पूर्ण इकाई बनकर इस देश के आवश्यक अंग बन सकेंगे।

रियासतों का लोप

छोटे राजाओं में सर्वप्रथम समाप्ति उड़ीसा के छत्तीसगढ़ के ३९ रजवाड़ों की हुई है। इनके देखा देखी बम्बई, बुन्देलखण्ड व काठियावाड़ के राजा भी आत्मसमर्पण के लिये तैयार हुये हैं। छत्तीसगढ़ की रियासतें गिनती में १६ हैं और ये उस प्रदेश के अन्तिम छोर में अवस्थित हैं जो हिन्दी मां का प्रदेश है। वहां की जनता यद्यपि अधिक शिक्षित नहीं है किन्तु वह हिन्दी भाषा बोलती है वह सर्वमान्य है। अतः उन्हें पड़ोसी मध्य-प्रदेश में संयुक्त करके भारत सरकार ने उचित ही किया है। इनमें से सरगुजा व जशपुर रियासतें किसी समय में बिहार के छोटा नागपुर प्रदेश का अंग थीं अतः ये पुनः उसमें शामिल की जायें यह बिहारियों की मांग है। बिहार व मध्य-प्रदेश दोनों हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश हैं, ये रियासतें इन दोनों में से किसी प्रदेश का अंग बनें हिन्दी मां का अपकार नहीं होता, फिर भले ही बिहार या मध्य प्रदेश की कुछ हानि हो जाये। बम्बई की कुछ रियासतें मराठी भाषा बोलती हैं और कुछ कन्नड़ भाषा। पहले इन रियासतों का स्वतन्त्र संघ बन रहा था, उसमें दो भाषाओं में से किस का प्रचलन हो यह गहरी समस्या थी। अब इन रियासतों ने बम्बई प्रान्त में शामिल होने का निश्चय किया है अतः यह समस्या हल हो गयी है। अब ये रजवाड़े पड़ोसी जिलों में शामिल होंगे और भाषा के अनुसार विभक्त हो जायेंगे। काठियावाड़ में हमारे देश की आधे से अधिक रियासतें विद्यमान हैं, इन सब की मातृ भाषा गुजराती है अतः वे अपना पृथक् संघ बनायें या गुजरात में समा जायें भाषा व संस्कृति की दृष्टि से कोई भेद नहीं आता। यही बात हम बुन्देलखण्डी रजवाड़ों के सम्बन्ध में कह सकते हैं। ये सब रियासतें युक्त प्रान्त व मध्यप्रान्त के मध्य में अवस्थित हैं और हिन्दी भाषा-भाषी हैं, वे पृथक् रहें या पड़ोसी प्रान्त में समा जायें। भाषा की दृष्टि से कोई अनौचित्य नहीं उपस्थित होता।

भाषा का प्रश्न

अब रह जाती हैं उड़ीसा की रियासतें। ये २३ हैं और इन्होंने सर्वप्रथम देश हित की दृष्टि से आत्मसमर्पण की नीति अपनायी थी। पिछली सदी के अन्त में इनमें से कुछ रियासतें छोटा नागपुर का अंग थीं, अब पन्द्रह वर्ष से वे एक एजन्सी में एकत्र कर दी गयी हैं। इस एजन्सी का नाम उड़ीसा एजन्सी है, आत्म समर्पण के समय भारत सरकार ने यह समझा कि इनका प्रबन्ध उड़ीसा सरकार को सौंप दिया जाये। यह प्रबन्ध अस्थायी था किन्तु उड़ीसा वालों ने समझा कि शायद ये रियासतें स्थायी तौर पर उनके प्रान्त में शामिल हो रही हैं, इस से उन्हें प्रसन्नता हुई। अपनी जमीन जायदाद के विस्तार से किसे हर्ष नहीं होता, गरीब उड़ीसा तीस लाख आबादी का प्रदेश पा जाये इस से उसे हर्ष होना ही था किन्तु यथार्थ में ये सब रियासतें उड़िया भाषा भाषी न थीं अतः भाषा व संस्कृति के आधार पर एक नया संकट उपस्थित हो गया। बात यह हुई कि इन २३ में से खरसावन और सरायकेला नाम की दो रियासतें आज से कुछ काल पहले तक छोटा नागपुर के सिंहभूम जिले के अन्तर्गत थीं। इस जिले के डिप्टी-कमिश्नर ही इन के शासन की देखरेख करते थे। इन रियासतों में जो लोग रहते हैं वे वही बोली बोलते हैं जो सिंहभूम जिले में बोली जाती है। भूगोल की दृष्टि व यातायात का लिहाज भी उन्हें सिंहभूम जिले का अंग बनाता है। पन्द्रह वर्ष पहले ये रियासतें सिंहभूम से निकल कर उड़ीसा की एजन्सी में शामिल की गयीं यह परिवर्तन केवल नाम का परिवर्तन था क्यों कि इस से रियासतों की स्वतंत्र-सत्ता में कोई भेद न आता था। फिर भी इन रियासतों में विरोधी आन्दोलन चला था कि हमें सिंहभूम जिले से अलग न किया जाये। अब ये रियासतें उड़ीसा में शामिल हों यह यथार्थ परिवर्तन है, अब भाषा व संस्कृति के लिहाज से इन रियासतों को उड़ीसा का अंग बनना है जो कि यहां के मूल निवासियों को अभीष्ट नहीं है। उड़ीसा प्रान्त की मातृभाषा उड़िया है और सिंहभूम जिले की राज भाषा हिन्दी। इस लिहाज से सिंहभूम जिले से घिरी हुई खरसावन व सरायकेला की भाषा भी हिन्दी है। उड़ीसा में जाने का अर्थ है हिन्दीको छोड़ कर उड़िया को अपनाना, यह इन रियासतों के निवासियों को स्वीकार्य नहीं है। यही कारण है कि इन दोनों रियासतों के मूल निवासियों ने प्रदर्शन किया था कि हमें उड़ीसा में नहीं बिहार में शामिल किया जाये। स्वयं बिहार प्रान्त की जनता व मंत्रीमण्डल ने भी यह मांग की थी कि ये रियासतें उड़ीसा में शामिल न की जायें। उड़ीसा की सरकार को बिहार का यह आन्दोलन पसन्द नहीं है और उसने इन रियासतों की जनता पर गोली चला कर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट भी कर दिया है। इस बीच भारत सरकार ने ये रियासतें किस प्रान्त का अंग बनें इसका निर्णय एक स्वतंत्र अदालत में पेश कर दिया है।

हिन्दी या उड़िया

हमें देखना यह है कि खरसावन और सरायकेला नाम की ये दो रियासतें किस प्रदेश का अंग हैं। इन दोनों रियासतों की कुल आबादी दो लाख है, भूमि का अधिक भाग जंगलों व पहाड़ों से पूर्ण है, इन पहाड़ों में खनिजों की भरमार है, किन्तु रियासती शासन के कारण अब तक इन खनिजों का अधिक उपयोग नहीं हो पाया है। इन रियासतों की अधिकआबादी मूल निवासियों की है, यही लोग पड़ोस के छोटा नागपुर प्रदेश में अधिक संख्या में निवास करते हैं। प्राचीन काल में इस सारे प्रदेश का नाम झाड़खण्ड था और यहां कोल, मुण्डा व सन्थाल आदि लोग रहते थे। मध्यकाल में इस प्रदेश में पास पड़ोस से सभ्य व शिक्षित लोग आने लगे और यहां बसने लगे। अब इस काल में यहां ईसाई पादरियों का भी आगमन हुआ है। परिणाम यह है कि पिछले कई सौ साल से इस झाड़खण्ड पर दो विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव पड़ रहा है। उत्तर व पश्चिम से आने वाली संस्कृति हिन्दी व हिंदुस्तानी के रूप में यहां प्रगट होती है और दक्षिण की संस्कृति उड़िया भाषा के लिबास में। छोटा नागपुर के मूल-निवासी अपने घर में चाहे कोई भी बोली बोलें उनकी सामान्य भाषा अब हिन्दी है, इसी प्रकार दक्षिणी रियासतों की सामान्य भाषा अब उड़िया है। ये मध्यवर्ती सरायकेला व खरसावन नाम की दो रियासतें मुख्यतः छोटा नागपुर से सम्बद्ध हैं, वे सिंह भूम जिले को अपनाती हैं अतः उस जिले की सामान्य भाषा हिन्दी ही इन रियासतों में भी सम्मान पाये, ऐसा यहां के मूलनिवासी चाहते हैं। उड़ीसा से आये लोग इन रियासतों में उड़िया भाषा का प्रसार चाहते हैं और अब नवीन प्रबन्ध से लाभ उठाना चाहते हैं। उनके इस उपक्रम से ये रियासतें हिन्दी भाषा भाषी न रह कर उड़िया भाषी हो जायेंगी। यह मूल-निवासियों को अखरता है। अतः वे प्राणपण से इस परिवर्तन को रोकना चाहते हैं। दो भाषाओं व संस्कृतियों का यह संघर्ष ही आज से कुछ दिन पहले यहां गोली कांड के रूप में जनता के सामने आया था। इससे पहले बिहार निवासी अपने कर्तव्य से विमुख थे और चुपके चुपके अपने इस हिन्दी प्रदेश को उड़ीसा में लुप्त होते देख रहे थे। मूलनिवासियों ने हिन्दी मां के प्रति अपने कर्तव्य को पहले पहल समझा और बिहारियों को भी इसके लिए जागरूक किया। अब समूचा बिहार समझने लगा है कि खरसावन व सरायकेला हिन्दी प्रदेश के अन्तर्गत है और इन्हें उड़ीसा का नहीं बिहार का प्रदेश बनना चाहिये। अन्त में हिन्दी व उड़िया का यह संघर्ष ही दो प्रशान्त कांग्रेसी सरकारों बिहार उड़ीसा के संघर्ष का आधार बन रहा है।

एक रहस्य

सत्य यह है कि इस संघर्ष में कहीं उड़ीसा बाजी न ले जाये। उड़ीसा की रियासतों में मूल निवासियों ने उड़िया भाषा को अधिक गहराई से अपनाया है, इसके विपरीत छोटा नागपुर के पांच छः जिलों में हिन्दी के प्रति यह आकर्षण नहीं हो पाया है। यही कारण है कि इन

(शेष [illegible] पर)

हिन्दी-परीक्षोपयोगी

प्रकृतिवादी—पन्त

[श्री नरेन्द्र सोढ़ा]

आज के महान् छायावादी कवि श्री पंत को कविता करने की प्रेरणा प्रकृति से ही मिली। वे स्वयं लिखते हैं —

"कविता करने की प्रेरणा मुझे सब से पहले प्रकृति-निरीक्षण से मिली है। कवि-जीवन से पहले भी मुझे याद है, मैं घंटों एकांत में बैठा, प्राकृतिक दृश्यों को एकटक देखा करता था। कोई अज्ञात आकर्षण, मेरे भीतर, एक अव्यक्त सौन्दर्य का जाल बुन कर मेरी चेतना को तन्मय कर देता था।"

कलाकारों का दृष्टिकोण सदैव भिन्न रहा है। जहां 'बच्चन' 'हाला' और 'मधुशाला' ही में जगत् का सुख व क्षण-भंगुरता का अमर सिद्धान्त देखते हैं, जहां 'दिनकर' प्रलय-नृत्य का रक्तमय साज सजाते हैं, जहां 'नेपाली' अपने राग-मल्हार में विलीन हैं, वहां कोई इस भिखमंगी दुनिया में स्वच्छन्द प्यार लुटाने में मस्त है; और इस प्रकार कवि अपनी कल्पना या अपने स्वप्न में ही, संसार के दार्शनिक सिद्धान्तों की अनुपम व्याख्या करता है। पर छायावादी पंत ने तो अमर, चिर-सुखदायी प्रकृति-माता की गोद में ही, अपने लय-युक्त सौन्दर्य पाठ में चरम उत्कृष्टता प्राप्त की। पंत को प्रकृति के साहचर्य से, किंचित् क्षणों के लिये भी, अलग रहना दूभर है। प्रकृति-प्रेम की छाप उन पर यहां तक पड़ी है, कि वे संसार के कोलाहल से बहुत घबराते हैं, और वे कहते हैं, 'प्रकृति के साहचर्य ने जहां एक ओर मुझे सौन्दर्य, स्वप्न और कल्पना-जीवी बनाया वहां दूसरी ओर जन-भीरु भी बना दिया है।' इन कथनों तथा उनकी प्रारम्भिक रचनाओं को सन्मुख रख, हम श्री पंत के प्रकृतिवाद की प्रमुख विशेषताओं का सफल अध्ययन कर सकते हैं।

'प्रकृति को मैंने अपने से अलग, सजीव सत्ता रखने वाली नारी के रूप में देखा है। कभी जब मैंने प्रकृति से तादात्म्य का अनुभव किया है, तब मैंने अपने को भी नारी रूप में अंकित किया है।' उनकी कई रचनायें, प्रकृति के इस रूप का सजीव-चित्रण मात्र ही हैं। जैसे—

"मंजरित विश्व में यौवन के,
जगकर जग की पिक, मतवाली
निज अमर प्रणय स्वर मदिरा से,
भर दे फिर नव युग की प्याली!"

प्रकृति की मनोरंजक सामग्रियों तथा आनन्ददायक रूपों के प्रति भी पंत का वही दृष्टिकोण है। वे सब, पंत जी द्वारा नारी रूप में ही चित्रित किये गये हैं। जैसे वायु के प्रति पंत कहते हैं —

"निखिल छवि की छवि! तुम
छवि हीन अप्सरी सी अज्ञात!"

और चांदनी को सम्बोधन करते हुये लिखते हैं।

'वह स्वप्न-जड़ित नत चितवन
छू लेती अग जग का मन,
श्यामल, कोमल, चल चितवन
जो लहराती जग-जीवन!
···अपनी छाया में छिप कर
वह खड़ी शिखर पर सुन्दर,

—और सब से सुन्दर चित्र—प्रकृति के नारी-रूप का — निम्न पंक्तियों में अंकित है।

'वह छवि की छुई-मुई-सी
मृदु मधुर लाज से मर-मर।

यहीं पर 'सजीव सत्ता रखने वाली नारी' का सुन्दरतम रूप कवि ने व्यक्त किया है।

फिर, पन्त की प्रारम्भिक रचनाओं में, उनकी चेतना को तन्मय कर देने वाला, अव्यक्त सौन्दर्य का जाल सर्वत्र फैला हुआ है। वे प्रकृति के अमर सौन्दर्य को ही, सुन्दरतम समझते हैं, अन्य किसी रूप से आकर्षित नहीं हैं। जैसे —

कोयल का वह कोमल बोल,
मधुकर की वीणा अनमोल।
कह, तब तेरे ही प्रिय स्वर से
कैसे भर लूं, सजनि
श्रवण!

और फिर —

ऊषा — सस्मित किसलय दल,
सुधा — रश्मि से उतरा जल,
ना, अधरामृत ही के मद
में कैसे डूबूं जीवन!

उपरोक्त पंक्तियों में प्रारम्भिक पन्त की महान् आत्मा का कितना स्पष्ट परिचय मिलता है! यह पावन सौन्दर्योपासना महान् कलाकार 'बच्चन' के 'मधुकलश' में भी तरंगित हो उठती है — जैसे —

'विगत बाल्य वसुन्धरा के,
उच्च तुंग उरोज उभरे।
तरु उगे हरिताभ पट पर,
काम के ध्वज मत्त फहरे।
प्यास, वारिधि से बुझा कर,
भी रहा अतृप्त हूं मैं।
कामिनी के कुच कलश से,
आज क्या अभिसार मेरा!'

सांसारिक सौन्दर्य से पन्त, अधिक आकर्षित नहीं। कभी कभी तो, यह एक सन्देहजनक प्रश्न हो जाता है कि प्रकृति प्रेयसी की उनके काव्य पर छाप है अथवा प्रकृति के मनोरम चित्र, उन्हीं के काव्य के प्रतिबिंब है। कुछ भी सही, प्रकृति-प्रेम की पवित्र भावना में ओत-प्रोत होकर ही पन्त लिखते हैं —

'इस तरह मेरे चितेरे हृदय की,
बाह्य प्रकृति बनी चमत्कृत चित्र थी।'

साथ ही साथ, प्रकृति के पावन प्रेम-व्यवहारों का वैज्ञानिक अवलोकन कर, पन्त इस अमर-प्रेम की उत्कृष्टता, नश्वर, अस्थिर तथा सांसारिक प्रेम पर, कितनी सफलतापूर्वक प्रमाणित करते हैं। दोनों की तुलना करते हुये, जब वे सांसारिक वर्णन पर आते हैं, तो अचानक उनकी चैतन्यता, न जाने कहां, विलीन हो जाती है। जैसे —

देखता हूं, जब उपवन
पियालों में फूलों के
प्रिये, भर भर अपना यौवन
पिलाता है मधुकर को;
नवोढ़ा बाल-लहर
अचानक उपकूलों के
प्रसूनों के ढिंग रुक कर
सरकती है सत्वर
और तब....
तुम्हारे ही मुख का तो ध्यान
मुझे करता तब अन्तर्धान;

और फिर, सांसारिकता में इधर उधर भटक, जगत् की नश्वरता से दुःखित हो, कवि अपनी आस लगाता है— प्रकृति निर्मित-कठोरतम वस्तुओं से।

"··· मग्न को
बालुका भी क्या बचाती है नहीं?
निठुर का मुख को भरोसा है कहां
गिरि शिलाएँ ही, अभय आधार हैं।

पंत को, प्रकृति — साहचर्य में ही परम सुख तथा अक्षय विलास-सामग्री की झलक दीख पड़ती है।

जहां 'बच्चन', 'मधुशाला'को थके मांदे शोषित श्रमिकों के जीवन के लिये, परम-आवश्यक समझते हैं; वहां प्रकृतिवादी पंत, अपने प्रकृति-निर्मित अक्षय विश्राम शिविर में समस्त संसार को आमंत्रित करते हैं। उनके विचारानुसार प्रकृति की गोद ही में मानव अपने दुःखों को भूल सकता है। प्रकृति की प्रत्येक सौन्दर्यमयी वस्तु पंत के लिये, एक अनुपम 'मधुकलश' है —

"संध्या का मादक पराग पी,
झूम मलिंदों से अभिराम,
नभ के नील कमल में निर्भय,
करते हम विमुग्ध विश्राम"

और फिर, जगत् की नश्वरता का स्मरण उन्हें दुःखित कर देता है ......

"कभी हवा में महल बना कर,
सेतु बांध कर कभी अपार,
हम विलीन हो जाते सहसा ...

[शेष पृष्ठ १८ पर]

हिन्दी परीक्षोपयोगी लेख

कामायनी के पात्र

[श्री गणेश शर्मा शास्त्री, साहित्य रत्न]

(गतांक से आगे)

मनु

श्रद्धा के बाद काव्य में मनु का चरित्र महत्व रखता है। कामायनी के मनु के सम्बन्ध में कुछ आलोचकों ने भ्रम फैला दिया है कि वह पशु है, दानव है। वस्तुतः ऐसा है नहीं। उसका चरित्र एक साधारण मानव का चरित्र है। जो यथार्थवाद की कसौटी पर खरा उतरता है। उसमें मानव स्वभाव के सभी ऊंच नीच विद्यमान हैं। मैं तो यों कहूंगा कि मनु के चरित्र से उपादान लेकर ही मानव चरित्र का निर्माण हुआ है, क्यों कि मनु ही तो आदि मानव था। उसके चरित्र में आज के मानव की भांति सत् और असत् दोनों प्रकार की प्रवृत्तियां विद्यमान हैं। परिस्थिति के अनुकूल कभी सत् का प्राबल्य हो जाता है, कभी असत् का। जैसे एक साधारण मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है, वैसे ही मनु भी था। परिस्थितियों के अनुसार वह कहीं सात्विक है तो कहीं भावुक। कहीं अति विलासी, कहीं सर्वथा विरक्त; कहीं परुष तो कहीं उदार एवं कहीं चिंताशील तो कहीं आशान्वित।

मनु को पशु या दानव की संज्ञा देने वालों के तर्क प्रायः मनु की स्वच्छंद प्रियता, स्वायत्त शासन की भावना एवं उसकी अति विलासी प्रकृति तथा मर्यादोल्लंघन तक के लिए उतारू हो जाना आदि होते हैं। निस्सन्देह मनु के चरित्र में ये सभी बातें विद्यमान हैं, परन्तु इनके आधार पर उसे मनुष्य की कोटि से बाहर नहीं किया जा सकता वास्तव में मनु के चारित्रिक गुणों की विवेचना करते हुए हमें बीसवीं शताब्दी की ऐनक उतार कर सृष्टि के आदि युग में जाना होगा। मनु देव योनि से मानव बने थे। देवसंस्कृति में स्वच्छन्दता और विलासिता स्वाभाविक थे। इतिहास के आग्रह से मनु के चरित्र में उनकी अवहेलना नहीं की जा सकती। इड़ा पर, बलात् करने की भावना भी मनु में नई नहीं कही जा सकती। पुराणों का अध्ययन करने वालों को ज्ञात है कि ब्रह्मा भी अपनी पुत्री पर आसक्त हुए थे। तब ये सभी तर्क मनु को यथार्थवाद की सीमा में लाकर खड़ा कर देते हैं न कि पशु कोटि में।

चिन्ताशीलता से, हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, अवयव की दृढ़ मांसपेशियों वाले मनु का वैयक्तिक चरित्र प्रारम्भ होता है। विगत वैभव की स्मृति मिट जाने पर उसमें आशा का संचार हुआ और वह जीवन संग्राम में संलग्न हो गया। उसमें स्पष्टवादिता है। बात को घुमा फिरा कर उसे कहना नहीं आता। श्रद्धा और इड़ा दोनों के सम्मुख प्रथम-दर्शन के अवसर अपनी सच्ची अवस्था का वर्णन है। श्रद्धा के मातृत्व से दबे हुए रूप को देखकर प्रेम के बंटने एवं अपनी विलासिता में बाधा की सम्भावना से उसमें ईर्ष्या का उदय होता है, परन्तु इससे यह न समझना होगा कि मनु विवेकशील नहीं था अथवा उसमें पिता की भावना का अभाव था। दूर जाकर दिल और दिमाग के ठंडे होने पर इड़ा सर्ग में वह पश्चात्ताप करता है। इतना ही नहीं — घायल अवस्था में श्रद्धा द्वारा उपकृत होने पर उसके हृदय में यह विचार उठता है कि 'श्रद्धा को यह कलुषित काया कैसे दिखाऊं'।' पुत्र दर्शन के पश्चात् उसके अन्दर का पिता भी जाग जाता है। उसका हृदय वात्सल्य से छलछला उठता है—

> सुनता था वह वाणी शीतल,
> कितना दुलार कितना निर्मल।

इस प्रकार गार्हस्थ्य जीवन की विषमता भरी यात्रा के तय हो जाने पर पुत्र को राष्ट्र कल्याण के लिये छोड़ कर मनु श्रद्धा को लेकर वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर लेता है। कैलाश पर्वत के इस समतल पर मानसरोवर के किनारे मनु को अखंड आनन्द अनुभव होता है। और यहीं उसका जीवन समाप्त होता है।

जिस प्रकार श्रद्धा में नारी जाति की शाश्वत भावनाओं का एकीकरण हुआ है, ठीक उसी प्रकार मनु में पुरुष जाति की शाश्वत भावनायें प्रतिबिंबित हुई हैं। पुरुष मस्तिष्क प्रधान है। मस्तिष्क का प्रधान धर्म है — मनन करना। मनु का चरित्र चिन्ता से ही प्रारम्भ होता है। साहसिकता और कर्मण्यता मनु में कूट-कूट कर भरी हुई है। प्रलय खेल को मनु धैर्य से खेलता है। कर्म करने से कभी घबराता नहीं। सारस्वत नगर को पुनः बसा कर वह अपने बुद्धि कौशल का परिचय देता है। सम्पूर्ण प्रजा के साथ संघर्ष उसकी निर्भीकता और सहिष्णुता का परिचायक है। स्वच्छन्दता तो मानों मनु का जन्म जात स्वभाव है। कहीं भी अपनी इच्छाओं में व्याघात उसे सह्य नहीं। क्या श्रद्धा के पास और क्या इड़ा के समीप। कहीं भी वह अपनी इच्छा का विरोध स्वीकार नहीं करता। एक जगह भाग जाता है और दूसरी जगह युद्ध के लिए डट जाता है। ये ही सब गुण हैं जिनसे पुरुष की स्त्री की अपेक्षा विशिष्ट सत्ता है।

संक्षेप में मनु का चरित्र व्यापक मानव जीवन का छोटा सा 'मौडल' है जिसमें उसकी सभी स्थितियों का दिग्दर्शन हुआ है। साथ ही उसके चरित्र में पौरुष का पूर्ण रूप भी हमें देखने को मिलता है।

इड़ा

इड़ा, काव्य का दूसरा स्त्री पात्र है। ऐतिहासिकता रखते हुए भी हमें ऐसा प्रतीत होता है कि कामायनी के कवि ने उसको बुद्धि के प्रतीक के रूप में अधिक देखा है। उसके प्रारंभिक परिचय में ही 'बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल' कह कर उसकी बौद्धिकता उपस्थित की गई है। फिर उसके मुख को 'प्रतिभा-प्रसन्न' विशेषण देकर इस तथ्य को और स्पष्ट किया गया है। जब इतने पर भी संतोष नहीं तो आगे चल कर मनु द्वारा स्पष्ट शब्दों में कहला ही दिया —

> 'अवलम्ब छोड़कर औरों का,
> जब बुद्धिवाद को अपनाया।
> मैं बढ़ा सहज तो बुद्धि को,
> मानो आज यहां पाया ॥

फिर भी यह कहा नहीं जा सकता कि उसका अपना व्यक्तित्व है ही नहीं। उसके चरित्र का परिचय लेने के लिए यदि उसे श्रद्धा के सम्मुख ले जा कर खड़ा कर दें, तो अधिक स्पष्ट रूप से उसे देखा जा सकेगा। जहां श्रद्धा में करुणा और समवेदना है वहां इड़ा प्रेरणामयी है। मनु की प्रारम्भिक दशा देख कर श्रद्धा द्रवित हुई थी और उसने आत्मसमर्पण कर दिया था, परन्तु उस 'समर्पण में केवल उत्सर्ग झलकता था।' कुछ पहली जैसी ही दयनीय दशा में मनु का इड़ा के साथ भी परिचय होता है और वह भी उसका स्वागत करती है, परन्तु यह स्वागत निःस्वार्थ हो, यह बात नहीं। उसमें नगर बसाने की साध है। श्रद्धा में हृदय की कोमल वृत्तियां एकत्रित हैं और इड़ा बुद्धि की तर्कमयी वृत्तियों का प्रतीक है। मनु ने श्रद्धा से प्रश्न किया था —

> "कौन हो तुम, खींचते यों मुझे
> अपनी ओर।
> और ललचाते स्वयं हटते
> उधर की ओर ॥"

और श्रद्धा झुक गई थी। ऐसा ही कुछ जब इड़ा से पूछा गया —

> सुन्दर मुख, आंखों की आशा,
> किन्तु हुये ये किस के हैं,
> बोल अरी मेरी चेतनते
> तू किसकी ये किसके हैं।

तो इड़ा तर्कना करती हुई उसी से पूछ बैठती है —

> प्रजा तुम्हारी, प्रजापति
> सबका गिनती हूं मैं।
> यह सन्देह भरा कैसा,
> नया प्रश्न सुनती हूं मैं!

श्रद्धा व्यवस्था कर सकती है, पर केवल एक गृहस्थी की, जिसमें सद्भावना की आवश्यकता है। इड़ा भी व्यवस्थापिका है — एक राष्ट्र की, जिसमें शासन का प्राधान्य है। श्रद्धा ने मनु को अग्रसर किया था आध्यात्मिकता की ओर। इड़ा ने मनु के लिए मार्ग खोला भौतिकता का। श्रद्धा में प्राचीन ग्रामीण संस्कृति के दर्शन होते हैं और इड़ा में आज की विज्ञान-विधूत नागरिक सभ्यता के।

व्यक्तिगत रूप में इड़ा का चरित्र कोई बुरा नहीं। एक स्त्री होने के नाते उसमें स्त्रीत्व की भावना विद्यमान है। वह प्रेम करती है, परन्तु मर्यादा चाहती है। मनु के लिए उसके हृदय में स्थान नहीं — ऐसी बात नहीं, परन्तु वह लोक धर्म का निर्वाह चाहती है। श्रद्धा जैसी उदार भावना इड़ा में नहीं, फिर भी उसमें दया और कोमलता का एकान्त अभाव नहीं। अवसर आने पर किसी की दयनीय और दुखी अवस्था देख कर वह भी द्रवित होती है। मनु को युद्धस्थल में घायल पड़ा हुआ देख उसके हृदय में अनेकों कोमल भावनाएं उठती हैं। उसी अवसर पर श्रद्धा की कारुणिक वाणी को सुन कर उसका चित्त चंचल हो उठता है और वह उसकी व्यथा गांठ सुलझाने के लिए अधीर हो जाती है।

आगे चल कर जब उसे इसका पता लगता है कि उसने श्रद्धा का सुहाग छीना है, तो उसका अन्तर ग्लानि से भर जाता है, और तत्काल क्षमा याचना करने लगती है। इस प्रकार उसने अपनी नम्रता का भी परिचय दिया है। श्रद्धा की भांति मां बनने की उत्कट लालसा तो इड़ा में नहीं परन्तु कुमार (मानव) के लिये उसके हृदय में स्नेह खूब है। श्रद्धा जब घायल मनु की सेवा करती है एवं उसी की चिन्ता में स. जाती है, तब इड़ा मानव को अपने पास बुलाती है। आगे चल कर श्रद्धा की आज्ञानुसार उसे 'दुलार' से 'क्रोड' में लेती है, जिस से उस के हृदय की कोमलता का पता चलता है। अंत में इड़ा के चरित्र में अनुताप भी दिखाई देता है। वह श्रद्धा के चरणों पर झुक कर अपने अज्ञान को स्वीकार करती हुई कहती है—

> अब समझी मैं तब तक
> समझ न थी मुझ को।
> सब को ही भुला रही थी,
> अभ्यास नहीं था मुझ को।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

पर वह भी कितने दिन। अन्त में तो राम ही उन्हें अपने मन्दिर में लेगये।

उनके अंतिम उपवास ने उनके निकटस्थ लोगों में काफी चिन्ता पैदा की। उपवास के समय मैंने काफी बहस की। मैंने कहा, मेरा आपका ३२ साल का सपर्क है। आपके अनेक उपवासों में मैं आपके पास रहा हूं। मुझे लगता है कि आपका यह उपवास सही नहीं है। पर गांधी जी अटल थे। पर यह कहना भी गलत है कि गांधी जी आसपास के लोगों से प्रभावान्वित नहीं होते थे। बुद्धि का द्वार उनका सदा खुला रहता था। बहस करने वाले को प्रोत्साहन देते थे और उसमें जो सार होता उसे लेते थे, चाहे वह कितने ही छोटे व्यक्ति से क्यों न मिलता हो। बार बार बहस करते करते मुझे लगा कि उनके उपवास के टूटने के लिए काफी सामग्री पैदा हो गयी है। मुझे बम्बई जाना था। जरूरी काम था। मैंने उनसे कहा, मैं बम्बई जाना चाहता हू। मुझे लगता है कि अब आपका उपवास टूटेगा। न टूटने वाला हो तो मैं न जाऊं। मैंने यह प्रश्न जान बूझ कर उन्हें टटोलने के लिये किया। उन्होंने मजाक शुरु किया। कहा — जब तुम्हें लगता है कि उपवास का अन्त होगा तो फिर जाने में क्या रुकावट है। अवश्य जाओ, मुझसे क्या पूछना है। मैंने कहा- मुझे तो उपवास का अन्त लगता है, पर आप को लगता है या नहीं, यह कहिये। उन्होंने मजाक जारी रखा और साफ उत्तर न देकर फंदे में फंसने से इन्कार किया। मैंने कहा--नचिकेता यम के घर पर भूखा रहा तो यम को क्लेश हुआ, क्योंकि ब्राह्मण घर में भूखा रहे तो पाप लगता है। आप यहां उपवास करते हैं तो मुझ पर पाप चढ़ता है इसलिए अब इसका अन्त होना चहिए। गांधी जी ने कहा--मैं ब्राह्मण कहां हू। पर आप तो महाब्राह्मण हैं। इस पर बड़ा मजाक रहा। मैंने कहा—अच्छा आप यह आशीर्वाद दीजिए कि मैं शीघ्र से शीघ्र आपके उपवास टूटने की खबर बम्बई सुनूं। फिर भी उनका मजाक तो जारी ही रहा। मैंने कहा अच्छा आप यह बताइये कि आप जिन्दा रहना चाहते हैं या नहीं। उन्होंने कहा-- हां यह कह सकता हूं कि मैं जिन्दा रहना चाहता हूं। बाकी तो मैं राम के हाथ में हू। उपवास तो समाप्त हुआ लेकिन राम ने उन्हें छोड़ा नहीं।

मृत्यु

शुक्र को करीब सवा पांच बजे गांधी जी को गोली लगी और उसी दम उनका देहांत हो गया। मैं उस समय पिलानी था। करीब ६ बजे कालेज के छात्र दौड़ते हुए आए और उन्होंने रेडियो की खबर बताई कि किस तरह गांधी जी चल बसे। सन्नाटा छा गया। दिल्ली पहुंचा तो बापू को पड़ा पाया। चेहरे पर उनके कोई विकृति नहीं थी। वही प्रसन्न मुद्रा, वही क्षमा भाव और वही मुस्कान। पर अब तो वह भी देखने में नहीं आयेगी।

एक दीपक बुझ गया पर हमारे लिए रोशनी छोड़ गया।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (६२)
पो० बेगूसराय (मुंगेर)

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

प्रेम दूती

श्री विराज जी रचित प्रेम काव्य। सुरुचिपूर्ण शृंगार की सुन्दर कवितायें। मू० ।॥) डाक व्यय पृथक।

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

७५०० रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं।

आटोजम (विटामिन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विटजरलैंड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं पर उसने एक युवती से ब्याह भी कर लिया।

आटोजम के वर्तने से ८० तथा ९० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्ट्रसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगती हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इसका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाए रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Otogem आटोजम Otogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंगलैंड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। आटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशा में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देखें फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। आटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिए इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जाएगा। आज ही इसे मंगवाने के लिए आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता:—

दी मैकसो लैबोरेटरीज ५७७ बेला रोड
पोस्ट बक्स नं० ४५ (A. B. D.) देहली।

सन्त और नेता बहुत देखे पर ऐसे मानव नहीं

[श्री घनश्यामदास बिरला]

गाधीजी का मेरा प्रथम सम्पर्क १६१५ में जाड़ों में हुआ। वे दक्षिण अफ्रीका से नये ही आये थे और हम लोगों ने उनका एक वृहत् स्वागत करने का आयोजन किया था। मैं उस समय केवल २२ साल का था। गांधी जी की उस समय की शक्ल यह थी, सिर पर काठियावाड़ी साफा, एक लम्बा अगरखा, गुजराती ढग की धोती और पांव बिल्कुल नंगे। यह तस्वीर आज भी मेरी आखों के सामने ज्यों की त्यों नाचती है। हमने कई जगह उनका स्वागत किया। उनके बोलने का ढंग, और भाषा बिल्कुल ही अनोखे मालूम दिये। न बोलने में जोश, न कोई अतिशयोक्ति, न कोई नमक मिर्च। सीधी सादी भाषा और सो भी हिन्दी। हर सभा में वे एक बात दुहराते रहते थे। मेरे राजनैतिक गुरु गोखले की आज्ञा है कि सब चीजों का मैं दो साल तक अध्ययन करूं और चट पट अपनी राय न दूं। नर्म मिजाजी गोखले की यह प्रशंसा मुझे अखरती थी और साथ में गाधी जी की स्पष्ट नीति कुछ असर भी जमाती थी।

१६१५ में जो सम्पर्क बना वह अन्त तक चलता रहा और इस तरह ३२ साल का गांधी जी के साथ का यह अमूल्य सम्पर्क मुझ पर एक पवित्र छाप छोड़ गया है जो मुझे तमाम आयु स्मरण रहेगा। शुरू शुरू में कई साल तक मैं गांधी जी का समालोचक होके उनके पास जाता था। उनकी हर चीज का मैं लोकमान्य तिलक की चीजों से मिलान करता था और जहां गाधी जी नकल में, मेरी दृष्टि में कम उतरते वहां उलाहना देता था। पर ज्यों ज्यों मैं गहरे पानी में उतरा त्यों त्यों उनकी बातों का सार मेरे दिल पर एक छाप लगाने लगा। उनका सत्य, उनका सीधापन, उनकी अहिंसा, उनका शिष्टाचार उनकी आत्मीयता, उनकी व्यवहार कुशलता इन सब चीजों का मुझ पर दिन प्रति दिन असर पड़ता गया और समालोचक से धीरे २ मैं उनका भक्त बन गया। जब समालोचक था तब भी मेरी उन में श्रद्धा थी। जब भक्त बना तो श्रद्धा और भी बढ़ गई।

गांधी जी को मैंने सन्त के रूप में देखा, राजनीतिक नेता के रूप में देखा और मनुष्य के रूप में भी देखा। मेरा यह भी ख्याल है कि अधिक लोग उन्हें सन्त या नेता के रूप में ही पहचानते हैं। मैं न तो उनकी राजनीति का अनुगामी रहा, न उनके पीछे साधू बना, इसलिये जिस रूप ने मुझे मोहित किया, वह तो उनका एक मनुष्य का रूप था। न नेता का और न एक सन्त का। उनकी मृत्यु पर अनेक लोगों ने उनकी दु:ख गाथाएं गायी हैं और उनके अद्भुत गुणों का वर्णन किया है। मैं उनके क्या गुण गाऊं? पर वे किस तरह के मनुष्य थे यह मैं बता सकता हूं।

मनुष्य क्या थे वे कमाल के आदमी थे। राजनीतिक नेता की हैसियत से वे अत्यन्त व्यवहार कुशल तो थे ही। किसी से मैत्री बना लेना यह उनके लिये चन्द मिन्टों का काम था। द्वितीय राउन्ड टेबिल कान्फ्रेंस में जब वे इगलैन्ड गये थे तब उनकी कट्टर दुश्मन सैम्युल होर से मैत्री हुई तो इतनी कि अन्त तक दोनों मित्र रहे। लिनलिथगो से उनकी न निभी पर यह दोष सारा लिनलिथगो का ही था गाधी जी ने मैत्री रखने में कोई कसर न रखी, पर लिनलिथगो का स्वभाव पूरा साम्राज्यवादी था।

निर्णय करने में वे न केवल दक्ष थे पर साहसी भी थे। चोरीचोरा के काड को लेकर सत्याग्रह का स्थगित करना और हिमगिरि जितनी अपनी बड़ी भूल मान लेना इसमें काफी साहस की जरूरत थी। सत्याग्रह स्थगित करने पर वे लोगों के रोष के शिकार बने, गालियां खाईं, मित्रों को काफी निराश किया पर अपना दृढ़ निश्चय उन्होंने नहीं छोड़ा। १६३७ में कांग्रेस ने जब गवर्नमेंट बनाना स्वीकार किया तब गाधी जी के निर्णय से ही प्रभावान्वित हाकर कांग्रेस ने ऐसा किया पर गाधी जी ने जहां कदम बढ़ाया सब पीछे चल पड़े। कांग्रेस नायकों में उस समय झिझक थी, वे शका शील थे। १६४२ में जब कि क्रिप्स आये तब हाल इसके विपरीत था। कांग्रेस के कुछ नेता चाहते थे कि क्रिप्स की सलाह मान ली जाय और क्रिप्स प्रस्ताव स्वीकार किया जाय। पर गाधी जी टस से मस न हुए। बल्कि हिन्दुस्तान छोड़ो की धुन छेड़ी और लड़ पड़े। इस समय भी उन्होंने निर्णय करने में काफी साहस का परिचय दिया।

आत्मीयता

आत्मीयता उनकी देखने लायक थी। यही चीज उनके पास एक ऐसे हर में थी कि जिसके कारण लोग उनके बेदाम गुलाम बन जाते थे।

बहुत वर्षों की बात है। करीब २२ साल हो गए। जाड़े का मौसम था। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। गाधी जी दिल्ली आये थे। उनकी गाड़ी सुबह चार बजे स्टेशन पर पहुंची, मैं उन्हें लेने गया। पता चला कि एक घटे बाद ही जाने वाली गाड़ी से वे अहमदाबाद जा रहे हैं। उनके गाड़ी से उतरते ही मैंने पूछा — एक दिन ठहर कर नहीं जा सकते? उन्होंने कहा, क्यों, मुझे जाना आवश्यक है। मैं निराश हो गया। उन्होंने फिर पूछा, क्यों? मैंने कहा—घर में कोई बीमार है। मृत्यु-शय्या पर है। आपके दर्शन करना चाहती है। गाधी जी ने कहा — मैं अभी चलूंगा। मैं ने कहा— मैं इस जाड़े में लेजा कर आप को कष्ट नहीं दे सकता। उन दिनों मोटरें भी खुली होती थीं। जाड़ा और ऊपर से जोर की हवाएं, पर उनके आग्रह के बाद मैं लाचार हो गया। मैं उन्हें ले गया दिल्ली से कोई १५ मील की दूरी पर। वहां उन्होंने रोगी से बात कर उसे सान्त्वना दे दिल्ली केन्टूनमेन्ट पर अपनी गाड़ी पकड़ी। मुझे आश्चर्य हुआ कि इतना बड़ा व्यक्ति मेरी जरा सी प्रार्थना पर सुबह के कड़ाके के जाड़े में इतना परिश्रम कर सकता है और कष्ट उठा सकता है। पर यह उनकी आत्मीयता थी जो लोगों को कत्ल कर देती थी। मृत्यु शय्या पर सोने वाली यह मेरी धर्मपत्नी थी।

कोढी की सेवा

परचुरे शास्त्री एक साधारण ब्राह्मण थे। उन्हें कुष्ट था। उसको गाधी जी ने अपने आश्रम में रखा सो तो रखा, पर रोजमर्रा उनको तेल की मालिश भी स्वयं अपने हाथों करते थे। लोगों को डर था कहीं कुष्ट गाधी जी को न लग जाय। पर गाधी जी को इसका कोई भय न था। उनको ऐसी चीजों से अत्यन्त सुख मिलता था।

४२ के शुरू में मैं वर्धा गया। कुछ दिनों के बाद उन्होंने मुझसे कहा —तुम्हारा स्वास्थ्य गिरा मालूम देता है, इसलिए मेरे पास सेवा ग्राम आजाओ और यहां कुछ दिन रहो। मैं तुम्हारा उपचार करना चाहता हूं। मैंने कहा—वर्धा ठीक है। सेवाग्राम में क्यों आपको कष्ट दूं। मुझे संकोच तो यह था कि सेवाग्राम में पाखाना साफ करने के लिये कोई महतर नहीं होता। वहां के पाखाने की सफाई आश्रम के लोग करते हैं। वहा मुझे ठहराना निश्चित किया गया था, वहां का पाखाना महादेव भाई साफ किया करते थे। मैंने उन्हें अपना सकोच बताया क्यों मैं सेवा ग्राम नहीं आना चाहता था। मैं स्वयं अपना पाखाना साफ नहीं कर सकता और यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि महादेव भाई जैसा विद्वान् और एक तपस्वी ब्राह्मण मेरा पाखाना साफ करे। गाधी जी को मेरा सकोच निरा वहम लगा। पाखाना उठाना क्या कोई नीच काम है? महादेव भाई ने भी मजाक किया, परन्तु मेरे आग्रह पर मेहतर रखना स्वीकार कर लिया गया। आगाखा पैलिस में जब उनका उपवास चलता था तो मैं गया। बड़े बेचैन थे। बोलने की शक्ति करीब करीब नहीं के बराबर थी। मैं ने सोचा कि कुछ राजनीतिक बातें करूंगा। पर आश्चर्य हुआ। पहुंचते ही हम सब का कुशल मगल, छोटे मोटे बच्चों के बारे में सवाल और घर गृहस्थी की बातें। इसी में काफी समय लगा दिया। मैं उनको रोकता जाता था कि आप में शक्ति नहीं है, मत बोलिये, पर उनको इसकी कोई परवाह नहीं थी।

इसी तरह की उनकी यह आत्मीयता थी जिसने हजारों को उनका दास बनाया। नेता बहुत देखे, सन्त भी बहुत देखे, मनुष्य भी देखे पर एक ही मनुष्य में सन्त, नेता और मनुष्य की ऊंचे दर्जे की आत्मीयता मैंने और कहीं नहीं देखी। मैं अगर गाधी जी का कायल हुआ तो उनके सन्तपने या नेतागिरी का नहीं पर उनकी आत्मीयता का। यह सबक है जो हर मनुष्य के सीखने लायक है। यह एक मिठास है जो कम लोगों में पाई जाती है।

गाधी जी करीब पौने पाच महीने के इस मर्तबा मेरे घर में रहे। जैसा कि उनका नियम था उनके साथ एक बड़ी बारात आती थी। नये नये लोग आते थे और पुराने जाते थे। भीड़ बनी रहती थी। घर तो उनके ही सुपुर्द था। कितने मेहमान उनके ऐसे भी आते थे जो मुझे पसन्द नहीं थे, जो उनके पास वालों को पसन्द नहीं थे। बम गिरने के बाद बहुतों ने उन्हें बे रोकटोक भीड़ में घुस जाने से मना किया। सरदार वल्लभभाई ने उनके लिए करीब ३० मिलिटरी पुलिस और १५-२० खुफिया बिरला हाउस में तैनात कर रक्खे थे जो भीड़ में इधर उधर फिरते रहते थे। पर मैं जानता था इस तरह से उनकी रक्षा हो ही नहीं सकती। जो लोग आते थे उनकी तलाशी लेने का विचार पुलिस ने किया मगर गाधी जी ने रोक दिया। हर सवाल का एक ही जवाब उनके पास था, मेरा रक्षक तो राम है।

उपवास के बाद उनका हाजमा बिगड़ा। मैं ने कहा—कुछ दवा लीजिये। फिर वही उत्तर। मेरा वैद्य राम है। मेरी दवा राम है। कुछ अदरख, नीबू, घृतकुमारी का रस, नमक और हींग साथ मिला कर उनको देना निश्चय किया। आग्रह के बाद साधारण खान पान की चीज समझ कर उन्होंने इसे लेना स्वीकार किया।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

विशेष कमी—

अवसर मत चूकिये—आज ही मंगाये ३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें

पति-पत्नी जीवन(सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनाने वाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १), सफल सिद्ध—मन चाहा कार्य सिद्ध करना १।), व्योपारिक तेजी-मन्दी—तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त कर हजारों रुपया पैदा कीजिये १।), हिन्दी अंग्रेजी शिक्षा—घर बैठे अंग्रेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखलो १), हुस्न पैरिस—केवल पति पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १॥), ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) पोस्टेज पैकिंग ॥।) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, भठक स्ट्रीट, जैगंज (१) अलीगढ़ सिटी

❀ विवाहित जीवन ❀

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मंगायें।

१—कोक शास्त्र (सचित्र) १॥)	२—८४ आसन (सचित्र) १॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १॥)	४—१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
५—सोहागरात (सचित्र) १॥)	६—चित्रावली (सचित्र) १॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो १॥)	८—गर्भ निरोध (सचित्र) १॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १५) अलीगढ़ सिटी।

बचत भिन्न भिन्न काल में

④ चमड़े का रुपया

सिक्कों के रूप में धातुओं के प्रयोग में आ आने के कारण लोगों के आपस के झगड़ों और मुकद्दमेबाज़ी से तंग होकर किसी बुद्धिमान राजा ने धातु के डलों पर मोहर लगाने की सोची जिस से धातु की शुद्धता का प्रमाण हो सके। समय के साथ साथ घटिया धातुओं की बजाय सोना चांदी की धातुएं प्रयोग में आने लगीं और डलों का आकार भी छोटा हो गया। इस प्रकार सिक्का पहली बार प्रयोग में आया। सहस्रों वर्ष पीछे की यह बात है। परन्तु राजा प्रायः इस में असफल रहता कि लोग उस की आकृति घटिया धातु के सिक्कों पर न बनायें। यह कठिनता और भी बढ़ जाती थी यदि पुलिस अयोग्य होती या राजा रणक्षेत्र में गया होता। याद रखिए कि एक बार हुमायूं बादशाह के गंगा नदी में डुबकने पर चमड़े के टुकड़े भी सरकारी सिक्के बन गये थे। राजवंशों के बहुधा अदल-बदल से रुपये का मूल्य भी कम व अधिक होता रहा।

जब रुपये का मूल्य ऐसा अस्थिर था और राजवंश प्रायः बदलते रहते थे तो बचत करने के लिये उत्साह बढ़ाने वाले कारण कम थे। इस के अतिरिक्त जो कुछ भी बचत की जाती वह सुरक्षित रखने के विचार से भूमि में दबा दी जाती और प्रायः नष्ट हो जाती थी।

आज कल सिक्कों की अस्थिरता का कोई भय नहीं और न ही यह आवश्यक है कि बचत 'संचित धन' का ही रूप धारण करे। आप अपने रुपये को किसी उपयोगी मद में लगा कर उस में वृद्धि कर सकते हैं। नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स की मद में लगाया हुआ रुपया पूर्णतया सुरक्षित है और यह अवधि की समाप्ति पर ५०% बढ़ जाता है—अर्थात प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। अब आप ५) से १५०००) तक की मालियत के सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं। थोड़ी बचत वाले ।), ॥) और १) मूल्य के नेशनल सेविंग्ज स्टाम्प्स खरीद सकते हैं। अब आप सर्टिफिकेट १८ मास के पश्चात भी भुना सकते हैं (५ रु० के सर्टिफ़िकेट्स एक वर्ष के पश्चात भी भुनाये जा सकते हैं)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC 213

सम्राट् विक्रमादित्य

(नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १॥), डाक व्यय ।=)।

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

१००) इनाम

(गुर्वमेण्ट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।

श्री कामरूप कमच्छ्या आश्रम ५५
पो० कतरीसराय (गया)

मासिक रुकावट

बन्द मासिक धर्म रजोलीना दवाई के उपयोग से बिना तकलीफ शुरू हो नियमित आता है, ऋतु की फर्याद समय पर होती है। यह दवा गर्भवती को प्रयोग न करावे की० रु० ४), तुरंत फायदे के लिए तेज दवाई की० रु० ६) पौस्टेज अलावा।

गर्भांकुश — दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता, गर्भनिरोध होता है, मासिक धर्म नियमित होगा, विश्वसनीय और हानि रहित है। की० ४) पो० अलावा

पताः—दुग्धानुपान फार्मेसी जामनगर ५, देहली एजेंट—जमनादास कं० चांदनीचौक

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

(गतांक से आगे)

हम पहले बता आये हैं कि देवकी रानी के आदेश से सरखानपुर की जमींदारी का बंटवारा होना तय हो गया था। बंटवारा तो राधाकृष्ण और माधवकृष्ण का होने वाला था, परन्तु अच्छा अवसर देखकर साथ ही साथ चम्पा की जमींदारी के उन हिस्सों पर हाथ साफ करने का भी निश्चय कर लिया गया था, जो सरखानपुर की जमींदारी के बीच में पड़े हुए थे। इस कार्य को पूरा करने के लिए सब उचित अनुचित उपायों को काम में लाने का अधिकार बजरङ्ग को दे दिया गया था, जिसका बजरङ्ग पूरा पूरा उपयोग ले रहा था।

बजरङ्ग बाहर की बैठक में बैठा कारिन्दों से भावी कार्यक्रम के बारे में बातें कर रहा था कि एक नये व्यक्ति ने बैठक में प्रवेश किया। वह व्यक्ति हमारे लिए नया नहीं था, हां बजरङ्ग बाबू के लिए अवश्य नया था। वह था बेलूर का डाक्टर कैलाश।

बजरङ्ग ने नये आदमी को अन्दर आते देखकर मन्त्रणा बन्द कर दी और प्रश्नसूचक दृष्टि से कैलाश की ओर देखा। कैलाश ने पूछा — 'क्या बजरङ्ग बाबू आप ही हैं?'

बजरङ्ग ने उत्तर दिया — 'जी हां, बजरङ्ग बाबू मुझे ही कहते हैं, कहिये; आपको क्या काम है।'

कैलाश ने कुर्सी पर बैठते हुए उत्तर दिया — 'आप से कुछ बातें करनी हैं।'

बजरङ्ग लापरवाही से बोला — 'क्यों, लगान का रुपया बहुत चढ़ गया है क्या? भैय्या, रुपये का काम तो रुपये से चलेगा, बातों से घर कैसे पूरा होगा अगर.....'

कैलाश ने बात काटते हुए कहा — 'जी, आप समझे नहीं। मैं आपका काश्तकार नहीं हूं। मैं तो आप से एक जरूरी मामले पर बातें करने आया हूं।'

बजरङ्ग ने बात काटने से कुछ असन्तुष्ट सा होकर कड़ता हुआ जवाब दिया — 'आप देख रहे हैं कि मैं काम की बातें कर रहा हूं, मेरे पास आपके मामले की फजूल बातें सुनने का समय नहीं है। आप, फिर किसी वक्त आइयेगा।'

कैलाश इस उत्तर से निराश नहीं हुआ, वह जल्दी हारने वाला नहीं था, बोला — 'मामला, जितना मेरा है उससे ज्यादा आपका है। मैं आपके काम की ही बात करने आया हूं। फिर आने की शायद मुझे फुर्सत न मिले।' यह कहते हुए उसने कुर्सी पर से उठने का अभिनय किया।

बजरंग पर कैलाश की इस बात का असर हुआ। वह दुनिया में एक ही चीज़ का पुजारी था, और वह चीज़ थी 'स्वार्थ'। कैलाश ने उसी चीज़ का प्रलोभन दिखा दिया। कैलाश का हाथ पकड़ते हुए कहने लगा — 'बस इतनी सी बात पर रूठ कर चल दिए। बैठो भई, तुम्हारी बात ही सुनते हैं। पहिले यह तो बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है और कहां से आये हो?'

इस पर कैलाश ने चारों ओर देखा, जिसका अभिप्राय यह था कि वह अकेले में बातचीत करना चाहता है। बजरंग उसका अभिप्राय समझ गया और वहां से उठकर बाहर सेहन में पेड़ के नीचे चारपाई खींचकर बैठ गया। वहां बहुत देर तक दोनों व्यक्ति लगभग दो घण्टे तक बातें करते रहे। प्रारम्भ में कुछ सावधानता से और रुक-रुककर बातचीत चली, परन्तु थोड़ी ही देर में दोनों घुल-मिल गये और ऐसे मशविरा करने लगे जैसे पुराने परिचित हों, और एक ही अखाड़े के दो पहलवान हों। अकेले में दोनों की जो मन्त्रणा हुई उसकी पूरी रिपोर्ट देना तो हमारी शक्ति में नहीं, पर हां, जितनी बातें अन्त में सबके सामने हुईं, वह निम्न लिखित हैं —

चारपाई पर से उठते हुए बजरंग ने कैलाश से पूछा — 'तो आजकल तिवारी बेलूर में नहीं है।'

कैलाश ने उत्तर दिया — 'नहीं, वह पटने गया है।'

'कब तक लौटने की बात है?'

'सुनते हैं, एक हफ्ते तक पटने में रहेगा।'

'हूं', एक हफ्ता। एक हफ्ता हमारे काम के लिये बहुत है। एक हफ्ते में तो बजरंग हकूमत पलट सकता है। हां, यह तो कहो, कि आजकल माधव बाबू कहां हैं?'

'मैंने सुना है कि माधव बाबू इन दिनों देख-भाल करने के लिये देहात गये हुये हैं, उनके भी दस-बारह दिन में लौट कर आने की खबर है।'

'तब तो सब ठीक है। अच्छा कैलाश बाबू, अब तुम जाओ। आज से तीसरे दिन रात के समय मेरा आदमी तुम से मिलेगा। सब ठीक ठाक रहे।'

'बहुत अच्छा,' कह कर कैलाश सन्तुष्ट मन से बजरंग का हाथ दबा कर विदा हुआ।

> बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी और उधर उस के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विकृत होकर अपकीर्ति के रूप में फैल रही थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत होगया और चम्पा ने जमींदारी का काम संभाल लिया।
>
> चम्पा के जमींदारी संभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बड़े भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बंटवारे पर सहमत कर लिया और एक दिन माधवकृष्ण को बुलाकर यह प्रस्ताव पेश भी कर दिया। आज अक माधवकृष्ण इस अकल्पित प्रस्ताव को सुन कर भौंचक रह गया। इन्हीं दिनों बिहार भूकम्प के कार्य में सेवा करने के लिये आये हुए श्री रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत परिचित हो गये थे।

(२)

वह भारत के प्रसिद्ध 'तीजों' के त्यौहार का प्रभात था। प्रत्येक शहर और प्रत्येक गांव में घरों में अलग-अलग और समूह रूप से उत्सव मनाने की तैयारी हो रही थी। प्रातःकाल से ही बेलूर की कन्यायें इकट्ठी होकर गाने और फूल इकट्ठे करने का कार्यक्रम बनाने लगीं। भारत में दो ही फूलों के मौसम हैं, इधर बरसात का उत्तर भाग और उधर बसन्त। गांव के बाहर निकलकर सड़कों के दोनों ओर और खेतों की बाड़ों पर दृष्टि डालें तो छोटे-बड़े हर रंग के फूल खिले हुए दिखाई देंगे। गांव की कन्यायें हंसती, गाती और खेलती और फूलों को तोड़ती हुई घूमती हैं और पेड़ों पर बैठे पक्षियों की तरह चहचहाती हैं। सरला अभी नित्यकर्मों से निवृत्त होकर घर के काम काज में लगी ही थी कि कन्याओं की एक टोली हवेली में आ पहुंची और सम्मिलित स्वर से लगी चिल्लाने — 'सरला जीजी' 'सरला जीजी।'

शोर सुनकर चम्पा कमरे से बाहर निकल आई। लड़कियों ने नमस्कार किया, और फिर पूछा — 'सरला जीजी कहां है?'

चम्पा ने उत्तर दिया — 'सरला घर का कामकाज कर रही है, कहो तुम्हें क्या काम है?'

'हम सरला जीजी को बुलाने आई हैं, फूल तोड़ने चलेंगे।' कई लड़कियों ने इकट्ठे ही उत्तर दिया।

चम्पा ने कहा — 'अरी! तुम तो जानती ही हो कि सरला कहीं बाहर नहीं जाती। गये वर्ष भी तो वह नहीं गयी थी। उसे त्योहार का ऐसा शौक नहीं है।'

लड़कियों के दल की सरदार चन्द्रकला ने बच्चों की सी ज़िद करते हुए कहा — 'मां जी, गये साल तो सरला जीजी हमें चकमा दे गयी थी। इस बार हम आपस में कसम खाकर आयी हैं कि टलेंगी नहीं, उन्हें साथ लेकर ही जायंगी, मां जी, उन्हें तुम मत रोकना।'

चम्पा को लड़कियों के लड़कपन पर हंसी आ गयी, बोली — 'तो भाई, अंदर जाकर खुद ही सरला से बात करलो, वह जाय तो ले जाओ, मैं काहे को रोकूंगी।'

अनुमति पाकर बालिका-दल हवेली के उस भाग में घुस गया, जहां रमा और सरला रसोई के काम की देखभाल कर रही थीं। सरला तख्त पर बैठी उस दिन के लिये सब्जी छील रही थी और रमा गोदाम से भोजन की अन्य सामग्री निकलवा रही थी। लड़कियां वहां पहुंचकर 'सरला जीजी' 'सरला जीजी' का शोर मचाने लगीं। सरला समझ गयी कि यह चिड़ियादल अपने साथ उसे भी उड़ाने आया है। अत्यन्त गम्भीर होकर सब्जी छीलते ही छीलते बोली —

'क्या है बहना। मुझे किसलिए बुला रही हो।'

चन्द्रकला ने उत्तर दिया — 'जैसे तुम्हें पता ही नहीं कि आज 'तीजों' का त्योहार है, बड़ी भोली बनती हो। गये साल तुमने हमें चकमा दे दिया था। इस बार हम तुम्हें लिये बिना यहां से टस से मस न होंगी। हमने मां जी से भी पूछ लिया है, तुम्हें हमारे साथ चलना ही पड़ेगा। छोड़ो, यह घर का काम! नौकरानी कर लेगी।' यह आदेश देने के साथ ही चन्द्रकला और उसके साथ और लड़कियां भी सरला के पास जा पहुंची। एक ने हाथ से छुरी छीन ली, दूसरी ने सब्जी ले ली और तीसरी ने हाथ पकड़ कर कहा — 'अब चलो।'

[क्रमशः

प्रकृतिवादी—पन्त

(पृष्ठ १२ का शेष)

जगत की नश्वरता तथा संसार की क्षणभंगुरता के प्रति, उनका क्षोभ पग २ पर मिलता है।

जैसे —

अखिलयौवन के रंग — उभार
हड्डियों के हिलते कङ्काल
गूंजते हैं, सब के दिन चार,
फिर सभी हा हा कार!
आज बचपन का कोमल गात
जरा का पीला पात!
चार दिन सुखद चांदनी रात,
और फिर अन्धकार अज्ञात!

कवि, अपनी उत्कृष्टता निम्न पंक्तियों में प्राप्त कर लेता है। प्रकृति-पाठ करते हुए भी, वह अपने सिद्धान्त को कैसे असीम सत्य के रूप में, हमारे सन्मुख रखते हैं।

'शून्य सांसों का विधुर वियोग
छुड़ाता अधर-मधुर संयोग;
मिलन के पल केवल दो-चार
विरह के कल्प—अपार!'

और फिर, कवि मानव को संसार के क्षणिक सुख का सच्चा मूल्य समझा कर प्रकृति से ही शिक्षा ग्रहण करने को कहता है। कवि, प्रकृति के अन्तर में ही, 'सत्य, शिवम्, सुन्दरम्' को अवश्य देखता है।

'एक ही तो असीम उल्लास
विश्व में पाता विविधाभास
विविध द्रव्यों में विविध प्रकार
एक ही मर्म, मधु झङ्कार!
वही प्रज्ञा का सत्य स्वरूप
हृदय में बनता प्रणय अपार
लोचनों में लावण्य अनूप
लोक सेवा में शिव अविकार

समय के साथ साथ प्रौढ़ होकर पंत हमें 'मानव' में अपने प्रकृति-संगीत का अमर निष्कर्ष प्रदान करते प्रतीत होते हैं —

'मानव का मानव पर प्रत्यय
परिचय, मानवता का विकास
विज्ञान ज्ञान का अन्वेषण,
सब एक एक-सब में प्रकाश!
प्रभु का अनन्त वरदान तुम्हें,
उपभोग करो प्रतिक्षण नव-नव,
क्या कमी तुम्हें है त्रिभुवन में
यदि बने रह सको तुम मानव!'

कवि कहता है, कि सृष्टि में मनुष्य ही के उपभोग के लिये सब कुछ है। मानव ही श्रेष्ठतम है — पर आज का मानव तो, 'मानव' बने रहने में भी असमर्थ है। कलाकार 'बच्चन' भी इस वर्तमान समाज के वास्तविक चित्र को हमारे सामने निम्न पंक्तियों में व्यक्त करते हैं —

'मरी मानवता ही क्यूं आज
रही अपने पर परदा डाल'

दोनों कवि आज के मानव में, मानवता को लोप होते हुये देखते हैं। और यह भलीभांति कहा जा सकता है कि पंत जी का काव्य—

'सत्-युक्त सौन्दर्य की सृष्टि के साथ साथ, मानव और प्रकृति का एक सजीव प्रतिबिंब है।'

प्रकृतिवादी पंत ने प्रकृति के उग्र रूप को कहीं भी नहीं व्यक्त किया है। ठीक है; उच्चतम शृङ्ग से ही पर्वत की ऊंचाई ज्ञात होती है, न कि छोटे मोटे टीलों से। महान् कवि का सम्बन्ध उत्कृष्ट सौन्दर्य से ही होना चाहिये।

प्रकृतिवादी पंत के प्रकृति-पाठ का निष्कर्ष अति सुन्दर तथा गम्भीर है। आज के 'मानव' को प्रकृतिवादी पंत का अमर संदेश— कितना समयानुकूल है!

(पृष्ठ १३ का शेष)

इस प्रकार इड़ा के चरित्र में ऐतिहासिकता, वैयक्तिकता और प्रतीक — तीनों का सुन्दर निर्वाह हुआ है।

यद्यपि इनके अतिरिक्त कामायनी में मानव, किलात, आकुलि आदि अन्य भी पात्र हैं, जिनका इतिहास में भी स्थान हो सकता है और व्यक्तिगत गुण भी उन में हैं एवं प्रतीक रूप में भी उन्हें सर्वथा हेय नहीं कहा जा सकता, तथापि काव्य में उनका गौण स्थान होने एव उनके चरित्रों के एकांगी होने के कारण इन पंक्तियों में उन्हें स्थान नहीं दिया जा सकता।

तिल्ली और पीलिया के लिए जड़ी बूटी
गरीब लोग ।।।) डाकखर्च भेज कर मुफ्त मंगावें और अमीर अच्छा होने पर श्रद्धानुसार भेंट दे दें।
पता—महात्मा हरीदास, प्रेमाश्रम सोहन आर्डिट गाइड, मथुरा।

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त।
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

१५०) नकद इनाम
सिद्ध वशीकरण यन्त्र—इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का ११) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम
मित्र कूट आश्रम नं० ५५ पो० कस्तूरी सराय (गया)

हैदराबाद (दक्षिण) में हमारे एजेण्ट
पुरुष एण्ड कम्पनी
हिमायतनगर, हैदराबाद से दैनिक, साप्ताहिक वीर अर्जुन तथा मनोरंजन मासिक खरीदें।

चन्द्रप्रभा वटी
नया खून पैदा करती है। नस नस को स्फूर्ति देती है। शरीर के धातुओं को पुष्ट करती है। प्रमेह, स्वप्नदोष व बवासीर में विशेष लाभकारी है।
मूल्य १) तोला, ४) छटांक
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी [हरिद्वार]
देहली प्रांत, मेरठ कमिश्नरी व रुहेलखण्ड के सोल एजेण्टः — रमेश एंड कम्पनी, चावड़ी चौक देहली। राजपूताना के सोल एजेण्ट — राजस्थान औषध भण्डार, चौड़ा रास्ता, जयपुर। मध्यभारत के सोल एजेण्ट—वृहद् औषध भण्डार, १६ जेल रोड, इन्दौर।

डालडा में तली हुई आलू की टिकियां सदैव स्वादिष्ट होती हैं!

आलुओं को धो कर बिना छिले ही उबालिये। जब नरम पड़ जायें तो छिलका उतार कर थोड़ा सा दूध मिला कर भुरता बनाइये और स्वादिष्ट बनाने के लिये नमक, काली मिरच, और हरे धनिये के पत्ते कुतर कर डालिये। इस की चपटी टिकियां बनाइये, अंडे की सफ़ेदी में अथवा चावलों के गीले आटे में भिगोइये और डबल रोटी का चूरा अथवा मैदा लगाइये। गरम डालडा में तवे पर तब तक तलिये जहां तक कि टिकियां दोनों तरफ से लाल हो जायें। गरम गरम टिकियां खाइये—आप को बहुत पसंद आयेंगी। डालडा में बनाने से हर एक वस्तु स्वादिष्ट बन जाती है।

किस प्रकार से रुचिकर और पौष्टिक खाने बनाये जायें इन्हें बनाने की ठीक ठीक विधि, अपने रोज भोजन के ठीक ठीक उपयोग के बारे में मुफ़्त सलाह के लिये निम्न पते पर लिखिये.—

दि डालडा एड्वायज़री सरविस
पोस्ट बॉक्स नं० ३५३, बम्बई १

HVM. 74-172 HI

कुर्बानी

[पृष्ठ १० का शेष]

आऊंगा, मैं जरूर ही ११ बजे पहुंच आऊंगा — तुम कहां मिलोगे ?

'मैं तो सीधा घर जाऊंगा — रोटी से पेट भर कर फिर सब सामान इब्राहीम के अहाते में पहुंचाना है — तुम्हें मालूम नहीं, उधर का ही प्रोग्राम है — अच्छा देर हो रही है। आ सको तो आ जाना' —भेद भरी हंसी के साथ कह कर वह चलने लगा।

दूसरे ने रोका-'देखो अब्दुल्ला, मुझे कायर न समझो। समय पड़ने पर पीछे नहीं रहूंगा' —

'हां हां, यह कैसे समझ सकता हूं' — अच्छा चला' —

वह टूटियल टीन का दरवाजा सरका कर बाहर हो गया, युवक उसे विदा करके अन्दर चला गया तब सतीश धीरे से बाहर निकला और अपने को छिपाते हुए गली में आ गया। फिर तुर्की टोपी लगा ली और यथा सम्भव निडर बनकर गली में चलने लगा। मोटर साइकिल वहीं छूट गई थी — लेकर चलने में खतरा था। रास्ता सुनसान था, किसी ने रोका नहीं। आखिर वहीं आ पहुंचा जहां उसको रोका गया था — अन्धेरे में दो चिनगारियां दीख रहीं थीं। साफ था दो व्यक्ति बीड़ी पी रहे थे। सतीश को देख कर एक ने लापरवाही से देखा — एक उठा पर सतीश जान कर खिड़की से आती रोशनी के सामने से निकला। पहले ने दूसरे का हाथ पकड़ कर बैठा लिया — 'यार बैठ भी जाओ — देखते नहीं अपना ही आदमी है'—दोनों शायद किसी विशेष दिलचस्प बात में मशगूल थे। पहला भी 'हूं' करके बैठ गया। सतीश ने चैन की सांस ली और अन्धेरे में आते ही कदम तेज कर दिए — अब धीरे २ वह हिन्दू बस्ती में आ गया था। अतः सिर की टोपी उतार कर पास की नाली में फेंक दी और शेरवानी एक दुकान के आगन में डाल कर वह एक तरह से बचता हुआ अपने घर की ओर चला।

घर के अन्दर पैर रखते ही उसके सामने का अन्धेरा सा हट गया। सामने ही दरवाजे पर मां और वीणा खड़ी थीं। वीणा रो रही थी— अपनी मूर्खता पर और मां की डांट पर भी।

भाई को देखते ही वीणा भागकर सतीश से लिपट गई और उसकी छाती पर सिर रखकर रोती हुई बोली - 'भैय्या, मां कह रही थीं तूने अपने भाई को अपने हाथों जिबह होने भेज दिया — भैय्या, तुम आ गए — रजिया का भाई तुम्हें छोड़ गया है क्या ? तुम्हारी साइकिल कहां है ? भैय्या, मां मुझे डांट रही थी, मैंने कहा, मेरे भैय्या का बाल भी बांका हुआ तो मैं भी नहीं जीऊंगी भैय्या, मां से कहदो मुझ से ऐसे गुस्से न हुआ करे।' सिसकती हुई वीणा की आवाज हर्ष और आंसुओं से भीगी हुई सतीश के हृदय में उथल पुथल मचा रही थी। बहन के सिर पर हाथ फेर कर बोला — 'पगली, तेरा भाई तरे से बिना पूछे कैसे मर सकता था। अब मैं आ गया। रो मत और देखो अम्मा, वीणा को मत गुस्सा हुआ करो। बस, वीणा अब सो रहो — सारा रास्ता पैदल आया हूं। थक गया सोऊंगा।'

'पैदल क्यों आया ? मोटर साइकिल कहां गई ?' मां ने पूछा —

'मोटर साइकिल की बात मत पूछो। जान बचाकर ही मैं आगया इस वीणा के भाग्य से, यही बहुत है।'

'बात क्या हुई ? दोनों ने एक साथ पूछा,

'कुछ नहीं—पहले बताओ कितने बजे हैं — आह, ११ बजने में १५ मिनट" व्यस्त भाव से भाग कर सतीश पिता के औफिस में पहुंचा। क्षण भर में ही उसने पुलिस औफिस को फोन कर दिया जो भी वह वहां से सुन आया था सब कह सुनाया — पर यह क्या ? पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट ने कह दिया कि वह कुछ नहीं कर सकता।

सतीश क्या कर सकता था ? दिमाग में महान् विप्लव और हलचल लेकर बिस्तर पर पड़ गया। अभी १० मिनट में मारकाट शुरू हो जाएगी। पुलिस आंख बन्द किए है — हिन्दुओं का कत्लेआम होगा — स्त्रियों का अपमान होगा, नन्हें बच्चे मार दिए जायेंगे या यतीमखाने में मुसलमान बना लिए जायगे। शहर में हाहाकार मच जायगा— और यह अकर्मण्य सतीश कुछ नहीं कर सकता। अगर उसके सिर देने से यह भाई २ का युद्ध रुक सकता तो एक सतीश ही नहीं सैकड़ों सतीश सरीखे युवक अपना सिर सहर्ष देने को तैयार हो जाते।

'अम्मी, अम्मी' — उठने का प्रयत्न करते हुए अर्धचेतन रजिया ने पुकारा। 'क्या है मेरी बेटी'—बेगम ने सजल नेत्रों से बेटी की ओर देखा।

'अम्मी, अम्मी'—रजिया भयभीत हो कर जोर से चीख पड़ी '—अम्मी, सतीश बाबू को बचाओ — वीणा रो रही है — मेरी तरफ इशारा कर रही है — बचाओ — मत मारो, मत मारो, उसने मेरी जान बचाई है — वो देखो छुरा उठाया — हटो २ मुझे बचाने दो — रजिया बिस्तर पर ही उठ कर बैठ गई— बेगम ने रोते हुए दोनों हाथों से उसे पकड़ लिया।

'रजिया, मेरी बेटी—लेट जा घाव खुल जायगा — खुर्शेद को मैंने मना कर दिया, वह किसी को नहीं मारेगा।'

'झूठ, बिल्कुल झूठ — तुमने कह दिया मैंने अपने कानों से सुना — छोड़ो मुझे बचाने दो — छोड़ो —

रजिया — ने दोनों हाथों से मां को धक्का देकर हटा दिया और कूद कर दरवाजे की ओर भागी और बेगम चिल्लाती हुई पीछे पीछे भागी — 'रजिया फातमा।'

बेहोश रजिया दरवाजे से आगे न बढ़ सकी — दरवाजा पकड़ कर एक चीख मारी — 'मार दिया, मार दिया — यह खून — सतीश बाबू सतीश बाबू... वीना — वीना — माफ करना — आखिरी शब्दों को बड़बड़ाती रजिया बेहोश होकर पकड़ती हुई बेगम के ऊपर गिर पड़ी —

बेगम सम्भालकर उसे बिस्तर तक लाई — लिटाकर अपनी बदनसीब रजिया का पीला चेहरा, अधखुली आंखें देखती रहीं इस इन्तजार में कि वे फिर खुलेंगी। वे भोली आखें और कमल की पलकों से होठ फिर मुस्कराएंगे —

बेगम सूनी आखों से कितनी देर तक इन्तजार करती रहीं और करती रहेंगी — पर वे अधखुली आखें उसी तरह निश्चेष्ट हैं वे किलकारी मारने वाले होंठ उसी तरह मिचे हुए हैं, रजिया का सुकुमार शरीर उसी तरह पड़ा हुआ है, पर वह उदार आत्मा जिसे कोई न पहचान सका, अनन्त में, ऐसे लोक की खोज करती फिर रही है जहां कोई किसी का शत्रु नहीं।

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता उद्बोधन मांगे है
इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोह-निद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अफीम की आदत छूट जायगी। काली डायन अफीम से छुटकारा पाने के लिये "काया कल्प काली" सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स सात रुपया डाक खर्च पृथक।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघराले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत फौरन वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिल्कुल माफ, और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आवेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवेल्टी स्टोर्स पो० ब० नं० ४५ दिल्ली।
General Novelty Stores P. B. 45, Delhi.

बिहार व उड़ीसा में संघर्ष

(पृष्ठ ११ का शेष)

जिलों में पड़ोसी बंगला व उड़िया घर करना चाहती हैं। मानभूम, सिंहभूम व सन्थालपरगने के पर्याप्त प्रदेशों की भाषा बंगला है, अतः यह हमें मिलने चाहिये, बंगालियों की यह माग बहुत पुरानी है। अब सरायकेला व खरसावन की आड़ में उड़ीसा भी छोटा नागपुर के कुछ प्रदेश को हड़पना चाहता है, उसके नेताओं का कहना है कि इन दो रियासतों की ही नहीं सिंहभूम जिले की मातृभाषा उड़िया है अतः यह जिला उड़ीसा को मिलना चाहिये। केवल भाषा व संस्कृति के नाम पर उड़ीसा इस जिले को अपनाना चाहता है ऐसी बात नहीं है, हमारे देश का ही नहीं सारे एशिया का प्रमुख उद्योग केन्द्र टाटा नगर इस सिंहभूम जिले में ही अवस्थित है। उड़िया भाई थोड़े दिनों से ही राजनैतिक चेतना पाये हैं किंतु अब अपने प्रदेश की स्वतन्त्र सत्ता पाकर वे भाषा व संस्कृति के नाम पर इस टाटा-नगर को हड़प लेना चाहते हैं। समय रहते हम हिन्दी भाषाभाषियों को इस का प्रबन्ध करना चाहिये और अपने प्रदेश की सीमा को भाषा व संस्कृति के आधार पर सुदृढ़ बनाना चाहिये। नहीं तो सराय केला व खरसावन में हिन्दी-विरोधी जो खतरा हमारे सामने आया है वह अधिक उग्ररूप धारण करेगा और हमारे पर्याप्त प्रदेश को हमसे छीन लेगा। खरसावन व सराय केला हमारे हिन्दी प्रदेश की अंतिम सीमायें हैं, आज वे संकट में हैं। हम हिंदी भाषाभाषियों को जो केवल राष्ट्रभाषा के विस्तार के मद में सो रहे हैं, सचेत होना चाहिए और समय रहते अपनी रक्षा की चिन्ता करनी चाहिए, नहीं तो केवल बंगाल व उड़ीसा ही नहीं, आन्ध्र, महाराष्ट्र, गुजरात, सिन्ध व पंजाब भी हमारे प्रदेश को हड़पने का प्रयत्न करेंगे। खरसावन में तो यह भूमिका मात्र है। आगे की सुधि लेना हमारा कर्तव्य है और इस के लिये हमें सदा तैयार रहना चाहिए।

गांधी जी के नेतृत्व की भावभूमि

(पृष्ठ ६ का शेष)

तीयों का भी नेत्रोन्मीलन किया था।

बिन्दु से सिंधु तक

मानवता के इतिहास में गांधीजी का नाम महात्मा बुद्ध एवं ईसा से भी अधिक आदरणीय रहेगा, क्योंकि उन्होंने जीवन के सर्वांगीण क्षेत्र में आध्यात्मिक मान्यताओं का प्रकाश फैलाया है। मानव-जीवन का कोई पक्ष उसके तप से अस्पर्श्य नहीं रहा है। युग-पुरुष तो वे थे ही, साथ ही पूर्ण पुरुष भी थे। किंतु इतने अलौकिक होते हुए भी वे हमारी लौकिकता के पोषण से ही महान् बने थे। भारत के कोटि-कोटि दरिद्रों के सामने अपने अंतःकरण का करुणालय उड़ेल कर ही वे दरिद्र नारायण बने थे। वे उनके अभावों की मूर्ति ही नहीं थे, बल्कि उनकी पूर्ति भी थे। लेकिन निम्नतम स्तर पर असहाय बड़ी जनता के लिये वे जितने बड़े आश्रय थे, बड़े से बड़े राष्ट्रीय नेता के लिये भी वे उतने ही बड़े सम्बल थे। स्वयं नेहरू जी ने लिखा है—

'और तब गांधी का आविर्भाव हुआ। मानो जीवनदायिनी वायु का एक प्रबल प्रवाह हमारे बीच में आ गया जिसमें हम अपने आपको विस्तीर्ण कर सकते थे और विश्वास की सांस ले सकते थे — मानो प्रकाश की एक बौछार हमारे ऊपर पड़ी हो जिसने अन्धकार को वेध दिया हो और हमारी दृष्टि के क्षितिज को प्रकाशित कर दिया हो। उनका आगमन एक भयंकर बवंडर की भांति था जिसने अचलता को कंपा दिया था और हमारे सब के निश्चयों को झकझोर दिया था।'

गांधी जी की महानता का क्षितिज इतना असीम है। क्या काल का अपर्याप्त माप दंड उसे माप सकेगा?

संतान प्यारा बच्चा चाहिये

यदि आप सन्तान से वंचित हैं तो मुझे मिलें आपके घर का दीपक शीघ्र रोशन हो उठेगा, यदि आ न सकें तो हमारी औषध अकसीर औलाद मंगाएं, जिससे सैंकड़ों बेऔलाद बहनों की गोदें हरी भरी हुई हैं मूल्य २२) पुरुष के लिये मैनोल २०)

संतान बस और नहीं चाहिये

सदा के लिये सन्तान उत्पत्ति बन्द करने वाली दवाई की कीमत २२) ५ वर्ष के लिये २०) और दो साल के लिये १२) इन दवाइयों से मासिक धर्म ठीक प्रकार आता रहता है। रुकी हुई माहवारी जारी करने वाली दवाई मैन्सोल स्पेशल १२) मैन्सोल स्ट्रांग २२)

लेडी डाक्टर कविराज, सत्यवती (लाक लाहौर)
चान्दनी चौक देहली [कम्पनी बाग और इम्पीरियल बैंक के दरम्यान]
कोठी २७ बाबरलेन न्यू देहली (निकट बंगाली मार्केट)

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले और व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में है, जो थोड़े ही मूल्य का है।

यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमिकल्स, सरल प्रयोग सहित नं० २०१ कीमत ४॥।≈) क्वालिटी नं० २४२ कीमत ६॥।) डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० २२० कीमत ८॥), पैकिंग व डाकव्यय १≈)

नोट—एक समय में ६ कमरों के ग्राहक को कैमरा नं० २२० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस

वेस्ट एण्ड ट्रेडर्स (V. A. D.) पोस्ट बाक्स १९९, दिल्ली।
West End Traders, (V. A. D) P. B. 199, Delhi.

आत्मरक्षार्थ आटोमेटिक ६ खानोंवाली पिस्तौल

जिसकी कोई जरूरत नहीं ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिए बड़े काम की है। दागनेपर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआं निकलता है।

असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥ इंच × ४ इंच और वजन १२ औंस। मूल्य ८) और साथ में एक दर्जन गोलियां (एक्सार्म किस्म) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों के दाम २) स्पेशल लम्बे की नाली ९९९ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। बेल्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंगका अतिरिक्त १०)। प्रत्येक आर्डर के साथ एक शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसन्द होने पर दाम वापस

INTERNATIONAL IMPORTERS, P. B. 199 Delhi.
इण्टर नेशनल इम्पोर्टर्स पो० बाक्स १९९, दिल्ली।

'कहां गये ?'

[प्रेमदत्त पाराशर शास्त्री]

कहां गये !
शत शत लक्ष कण्ठों से,
फूट पड़ी
रोती-सी,
खोई सी,
अस्फुट,
अनियन्त्रित-सी,
वाणी।
कहां गये !
बापू ! ....
प्यारे ....
हमारे ......
बापू ! कहा गये !

× × ×

प्राणिमात्र पर दया,
और सत्य
जिसके दो अस्त्र थे।
विश्व भर मित्र था,
दानव भी,
मानव भी,
और देव वृन्द भी,
उससे अभिन्न थे।
उस त्रिगवारि को
देव को,
महर्षि को,
विश्व की विभूति को,
हम से पृथक् कर,
मृत्यु लोक भेज दिया
एक हत्यारे ने क्या !
नहीं ... नहीं .
झूठ है, मिथ्या है
अमर था, अमर है,
अमर ही रहेगा
शत शत कल्पों तक।
भूल जाओ
'बापू कहा गये !'
मरे नहीं, जीवित हैं,
यहां नहीं, वहा नहीं,
त्रिंश कोटि मानवों के,
हृदयों में,
मायामय रूप रख,
बैठे हैं।
मत कहो
'बापू कहां गये !

× × ×

द्वेष छोड़,
ईर्ष्या, अहंकार त्याग,
प्रेम से,
स्नेह से
निर्बलों को, दीनों को
और असहायों को
गले से लगा लो।
सब ही समान हैं,
भाई हैं, बान्धव हैं।
छोटा, बड़ा, ऊंच नीच,
कुछ नहीं, कुछ नहीं।
झूठा प्रपच है,'
माया का जाल है।
तोड़ डालो बन्धन को,
आगे बढ़ देखो तो,
कैसा प्रकाश है।
उसकी पुकार थी
उसका संदेश था।
अभी नहीं —
पूरा कर कहना तब
'बापू कहा गये'

महान् गांधी

[कुमारी श्री लेखा]

महान् गाधी !
हमें छोड़ गये !!
यह दुःख !
यह उदासी।
कुछ नहीं है उत्साह —
न दिल —
कि दिल की भावना को
व्यक्त कर सकूं —
छन्दों में।

हृदय दबा है व्यथा से —
उमड़ उमड़ के दुःख
आसूंओं को रोकता है।
हुआ है अभाव हर ओर।
हमारे राष्ट्र
के पिता !

हर एक दल की मां !
तुम्हारे जाने में
क्या भेद !
तुम्हारी स्मृति
आत्मा तुम्हारी —
देगी क्या हमें
आत्म-प्रकाश !
और कर सकेगी
सगठित हमें !!
राष्ट्रीयता —
जो सो रही थी
क्या अब उठेगी !

क्या तुमने बताया हमें —
साम्प्रदायिकता में
है विष !
मैं क्या समझूं !
मैं क्या सोचूं !!
मेरे हृदय में दो प्रकाश !!!

स्वप्न दोष और प्रमेह
केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम ३) डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

अपने बालक का स्वास्थ्य आपके लिये कितना मूल्यवान है ?

माता पिता के रूप में क्या आप अनुभव करते हैं कि प्रत्येक मक्खी, झींगर, खटमल, मच्छर और पिस्सू-प्रत्येक कीड़ा जो रेंगता है या उड़ता है चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो — आपके बालक के लिये बड़ा भारी खतरा है, क्योंकि ये घरेलू कीड़े गंदे और घातक कीटाणुओं के वाहक होते हैं ! आपकी सुरक्षा के लिये आधुनिक विज्ञान द्वारा विकसित अतिरिक्त रूप से सशक्त कृमि-विनाशक टार्च-ब्रांड के द्वारा अपने स्वयं के और अपने परिवार के स्वास्थ्य-संरक्षण के हेतु घर को इन घातक कीड़ों से मुक्त करने का प्रयत्न कीजिये। यह काफी सस्ता है यह प्राणों का संरक्षक है। आज ही एक ले लीजिये।

महापुरुषों के अन्तिम वचन

(पृष्ठ ८ का शेष)

समय उन्हें इसका आभास होने लगा कि मेरा अन्त निकट है। सध्या से कुछ पूर्व वे ध्यानमग्न हो गए। आधी रात के बाद जब उनका ध्यान टूटा तो उन्होंने कुछ दलिया लिया। थोड़ी देर बाद सिरहाने के सहारे झुक कर उन्होंने तीन बार कहा —'काली ! काली !! काली !!!' और वे महासमाधि में लीन हो गए।

महादेव गोविन्द रानाडे

त्याग की मूर्ति, बम्बई हाईकोर्ट के जस्टिस और गोखले के राजनीतिक गुरु रानाडे हृदय रोग से पीड़ित थे। उनको कुछ स्वास्थ्य लाभ भी हो गया था। सायकाल वह अपनी पत्नी के साथ घूमने गये और देर तक घूमते रहे। रात्रि को भोजन के पश्चात् उनकी बहन ने उन्हें कुछ गीत सुनाए। तदुपरान्त वह उपनिषद् का पाठ करने बैठ गये। इसी समय उनका पुराना हृदय रोग उमड़ पड़ा। उनके अंतिम शब्द थे —

'अब मेरी मौत आ गयी।'

गोपालकृष्ण गोखले

श्री गोपालकृष्ण गोखले भारत के स्वतन्त्रता युद्ध के सर्वप्रथम सेनानियों में थे। गोखले का वसीयतनामा आज भी भारत इतिहास में अपना एक ही स्थान रखता है। मृत्यु के समय उन्होंने अपने एकत्रित हुए मित्रों तथा परिवार वालों से कहा था — 'इतने वर्षों तक मैंने इस दुनिया का तमाशा देखा। अब मुझे दूसरी दुनिया का तमाशा देखने के लिये जाने दीजिये।'

पं० लेखराम

"आर्यसमाज में तहरीर का काम खतम न होने पावे", ये अन्तिम शब्द शहीद आर्यपथिक वीर लेखराम के थे।

लोकमान्य तिलक

भारत को 'स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है' का नारा प्रदान करने वाले का नाम था लोकमान्य तिलक। अंतिम दिनों वे बम्बई में थे। ज्वर के कारण उनकी अवस्था नाजुक थी। मृत्यु-शय्या पर पर पड़े हुए वे गीता के निम्न श्लोक का जाप कर रहे थे —

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

और उनके अंतिम राष्ट्र प्रेम से भरे हुए शब्द निम्न थे —

'जब तक स्वराज्य की प्राप्ति नहीं होती, भारत समृद्धिशाली नहीं हो सकता। हमारे अस्तित्व के लिये ही स्वराज्य की आवश्यकता है।'

स्वामी श्रद्धानंद

आज से लगभग २१ वर्ष पूर्व २३ दिसम्बर सन् १९२६ को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी भी महात्मा गांधी की भांति तीन गोलियों के शिकार हुए थे। देहावसान से दो दिन पूर्व जब वे निमोनिया से कुछ अच्छे ही हुये थे, पं० दीनदयालु शास्त्री ने उनसे कहा था—अभी तो आपको बहुत सा काम करना है। इतनी जल्दी क्यों मोक्ष की तैयारी कर रहे हैं। स्वामी जी ने उत्तर देते हुए कहा — इस कलियुग में मोक्ष की इच्छा नहीं है। यह शरीर सेवा के योग्य नहीं रहा। मैं यही चाहता हूं कि चोला बदल कर दूसरा शरीर धारण करूं और भारत में उत्पन्न होकर इसकी सेवा करूं। देहावसान से कुछ घंटे पूर्व भी उन्होंने एक कुशल प्रश्न के उत्तर में राजा रामपाल सिंह को इसी आशय का तार दिलाया था। शाम को हत्यारा अब्दुल रशीद आया, उसने इस्लाम के सम्बन्ध में कुछ बात करनी चाही। सेवक के रोकने पर भी स्वामी जी ने कहा, इसे अन्दर आने दो। जब उसने पानी पीने की इच्छा प्रकट की, तब स्वामी जी ने कहा, "प्यासे को पानी पिला दो।" इसके एक दो मिनट बाद आततायी की की तीन गोलियों से वे अमर धाम चले गए।

पं० मोतीलाल नेहरू

युवक-हृदय सम्राट् प० जवाहरलाल नेहरू के पिता श्री मोतीलाल इलाहाबाद में रुग्ण पड़े थे। अपने पुत्र और पत्नी के सम्मुख उन्होंने प्राणों का विसर्जन किया। उन्होंने मृत्यु से पूर्व अपनी अन्तिम इच्छा प्रगट की थी —

'हिन्दुस्तान के भाग्य का फैसला स्वराज्य भवन में ही हो। मेरी मौजूदगी में ही फैसला कर लीजिये। मेरी मातृ-भूमि के भाग्यनिर्णय के अन्तिम सम्मान-पूर्ण समझौते में मुझे भी साझीदार होने दो। अगर मुझे मरना हो तो स्व-तन्त्र भारत की गोद में मरने दो।'

कस्तूरबा

२२ फरवरी १९४४ को सन्ध्या समय शिवरात्रि के पवित्र दिवस पर हृदयरोग के कारण बन्दी अवस्था में आगांखा महल में आपका देहान्त हो गया। श्री हीरालाल एवं देवदास गांधी उन्हीं के पास थे। शव जब अर्थी पर से हटाया गया, तो महात्मा गांधी की आंखों में भी आंसू आ गये, जिन्हें उन्होंने शाल से पूछा। तीन बार गोविन्द नामोच्चार कर उनकी चिता में श्री देवदास गांधी ने आग लगा दी। उनके अंतिम शब्द थे —

"प्रभो, तुम्हीं मेरे आश्रय हो, मैं तुम्हारी दया चाहती हूँ।"

प्रेज़िडेण्ट रुजवेल्ट

अमेरिका के प्रधान रूजवेल्ट को कौन नहीं जानता। केवल वही एक ऐसे प्रधान थे जिन्हें चार बार प्रधान बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके अंतिम वाक्य थे —

मेरे सिर में जोरों का दर्द हो रहा है।"

इन्कम टैक्स से छुटकारा

इन्कम टैक्स का नक्शा भरना, पेशगी टैक्स, जुरमाने, टैक्स की वापसी, अपील, टैक्स अधिकारी व उनके अधिकार आदि सभी विषयों पर पूरा प्रकाश डालने व उनकी कठिन उलझनों से छुटकारा दिलाने वाली एक दम नई पुस्तक 'इन्कमटैक्स क्या है' पढ़िये मूल्य ३), डाक व्यय |—) एजेन्सी आदि के लिए लिखिये मैनेजर एन० के० शर्मा एण्ड कम्पनी, सदर मेरठ (यू०पी०)

धनाढ्य बनें

आप थोड़े समय में बिना रुपया लगाये अमीर बनने के सरल उपायों के लिये "व्यवसाय" मासिक पढ़ें वार्षिक मूल्य ३) नमूना |—)
मिलने का पता—
व्यवसाय पन्नागज, अलीगढ़।

मुफ्त

नवयुवकों की अवस्था तथा धन के नाश को देखकर भारत के सुविख्यात वैद्य कविराज खजानचन्दजी बी०ए० (स्वर्ण-पदक प्राप्त) गुप्त रोग विशेषज्ञ घोषणा करते हैं कि स्त्री पुरुषों सम्बन्धी गुप्त रोगों की अचूक औषधियां परीक्षा के लिए मुफ्त दी जाती हैं ताकि निराश रोगियों की तसल्ली हो जावे और धोके की सम्भावना न रहे। रोगी कविराज जी को विजय फार्मेसी, हौज काजी दिल्ली में स्वयं मिल कर या छः आने के टिकट भेज कर औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए छः आने भेज कर ११६ पृष्ठ की अंग्रेजी की पुस्तक SexuaGluide प्राप्त करें।

T.B टी बी. **"तपेदिक" चाहे फेफड़ों का हो या आंतड़ियों का बड़ा भयङ्कर रोग है**

(१) पहली स्टेज	(२) दूसरी स्टेज	(३) तीसरी स्टेज	(४) चौथी स्टेज	अंतिम स्टेज
मामूली ज्वर खांसी	ज्वर खांसी की शरीर में अधिकता	सूखना-ज्वर खांसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर जख्म, दस्त आदि का शुरू हो जाना	रोगी मौत और भयंकर जख्मों का इधर उधर फैलना
(जबरी)	(JABRI)	(जबरी)	(JABRI)	

T.B. टी. बी. **'तपेदिक' और पुराने ज्वर के रोगियो ! देखो—**

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी मास्टर स्कूल महुआमा पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं। मैं अनेक दिनों से ज्वर, खांसी से बीमार था, डाक्टर आदि की परीक्षा पर 'तपेदिक' [राजयक्ष्मा] रोग हो साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबरा गया। इसी बीच परमात्मा की कृपा से आप की अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना मैंने तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को विधिपूर्वक सेवन किया, उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया, थोड़े दिनों में ही शरीर का रंग ही बदल गया, ऐसा मालूम होने लगा जैसे कुछ रोग ही नहीं रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषध इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी प्रशंसा की जावे, कम है।

इसी प्रकार के पहले भी दर्जनों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं, भारत के कोने कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। जबरी के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं, यदि आप सब तरफ से निराश हो चुके हैं तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस आज ही आर्डर दें। अन्यथा वही कहावत होगी कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़ियां चुग गईं खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य, अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जाबरी" (JABRI JAGADHARI) काफी है। तार में अपना पता पूरा दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नं० १ जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिये मोती, सोना अभ्रक, आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं पूरा ३० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन २०)। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) नमूना १० दिन ६) रु० महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें। पता—

राय साहब—के० एल० शर्मा, रईस एण्ड बैंकर्स [२] जगाधरी [पूर्वी पंजाब] E. P.

राष्ट्रदेव गांधी के अंतिम २४ घण्टे

[पृष्ठ ६ का शेष]

गोली छाती की दाहिनी तरफ लगी। पहली और दूसरी गोली शरीर को पार कर पीठ पर बाहर निकल आईं। तीसरी गोली उनके फेफड़े में ही रुकी रही। पहले वार में उनका पांव जो गोली लगने के वक्त आगे बढ़ रहा था, नीचे आ गया। दूसरी गोली छोड़ी गई तब तक वे अपने पांव पर ही खड़े थे। और उसके बाद वे गिर गये। उनके मुंह से आखिरी शब्द "राम-राम" निकले। उनका चेहरा राख की तरह सफेद पड़ गया। उनके सफेद कपड़ों पर गहरा सुर्ख धब्बा फैलता हुआ दिखाई पड़ा। उनके हाथ जो सभा को नमस्कार करने के लिए उठे थे, धीरे धीरे नीचे आ गये, एक हाथ आभा के गले में अपनी स्वाभाविक जगह पर गिरा। उनका लड़खड़ाता हुआ शरीर धीरे से लुढ़क गया। सिर्फ तभी घबराई हुई मनु और आभा ने महसूस किया कि क्या हो गया है।

अवसान

हरएक को इस घटना से एक धक्का लगा। डा० राम सभरवाल ने, जो उनके पीछे आईं, गांधी जी के सिर को धीरे से अपनी गोद में रख लिया। उनका कांपता हुआ शरीर डाक्टर के सामने औंधा लिटा हुआ था और आंखें अध-मुंदी थीं। हत्यारे को बिरला-भवन के माली ने मजबूती से पकड़ लिया था। दूसरों ने भी साथ दिया और थोड़ी खींचतान के बाद उसे काबू में कर लिया गया। बापू का शान्त और ढीला पड़ा हुआ शरीर दोस्तों के द्वारा अन्दर ले जाया गया और उस चटाई पर उसे रखा गया, जिस पर बैठ कर वे काम किया करते थे। मगर कुछ इलाज करने से पहले ही घड़ी की आवाज बन्द हो चुकी थी। उन्हें भीतर लाने के बाद उनको दो छोटे चम्मच भर शहद और गरम पानी पिलाया गया, उसे भी वे पूरी तरह निगल न सके। करीब करीब फौरन ही उनका अवसान हो गया।

डा० सुशीला बहावलपुर गई थी। जहां बापू ने उसे दया के मिशन पर भेजा था। डा० भार्गव, जिन्हें बुलाया भेजा था, आये और 'एड्रेनलिन' के लिए डा० सुशीला की संकट के समय काम में आने वाली दवाइयों की सन्दूक को पागल की तरह तलाश करने लगे। मैंने उनसे दलील की कि वे उस दवाई को ढूंढने की मेहनत न उठायें, क्योंकि गांधी जी ने कई बार हमसे कहा है कि उनकी जान बचाने के लिये भी कोई निषिद्ध दवाई उनको न दी जाय। जैसे जैसे वर्ष बीतते गये, उन्हें ज्यादा ज्यादा विश्वास होता गया कि सिर्फ राम-नाम ही उनकी और दूसरों की सारी बीमारियों को दूर कर सकता है। थोड़े ही दिनों पहले अपने उपवास के दर्मियान उन्होंने यह सवाल पूछकर साइन्स की कमियों के बारे में अपने मत को पक्का कर दिया था कि गीता में जो यह कहा गया है 'कि एकांशेन स्थितो जगत्'— उसके एक अंश से सारा संसार टिका हुआ है — का क्या मतलब है? रामनाम की सब बीमारियों को दूर करने की शक्ति पर अपने विश्वास के बारे में बोलते हुए एक आह के साथ गांधी जी ने घनश्याम दास जी से कहा था — "अगर मैं इसे अपने जीते जी साबित नहीं कर सकता, तो यह मेरी मौत के साथ ही खत्म हो जायगा।" जैसा कि आखिर में हुआ, डा० सुशीला की संकटकालीन दवाइयों की पेटी में एड्रेनलिन नहीं मिला, क्योंकि एड्रेनलिन की जो एकमात्र शीशी सुशीला ने कभी ली थी, वह नोआखाली के काजीरखिल कैम्प में छूट गई थी। गांधी जी उसकी इतनी कम परवाह करते थे।

उनके साथियों में सबसे पहले सरदार वल्लभभाई पटेल आये। वे गांधी जी के पास बैठे और नाड़ी देख कर उन्होंने ख्याल कर लिया कि वह अभी भी धीरे-धीरे चल रही है। डा० जीवराज मेहता कुछ मिनट बाद पहुंचे। उन्होंने नाड़ी और आंखों की परीक्षा की और उदास और दुःखी होकर सिर हिलाया। लड़कियां सिसक उठीं। लेकिन उन्होंने तुरन्त दिल को कड़ा किया और राम नाम बोलने लगीं। मृत शरीर के पास सरदार चट्टान की तरह अचल बैठे थे। उनका चेहरा उदास और पीला पड़ गया था। इसके बाद पंडित नेहरू आये और बापू के कपड़ों में अपना मुंह छिपाकर बच्चे की तरह सिसकने लगे। इसके बाद देवदास और डा० राजेन्द्रप्रसाद आये। तब बापू के पुराने रखवालों में से बचे हुए श्री जयरामदास, राजकुमारी अमृतकुंवर और आचार्य कृपलानी आये। जब कुछ देर बाद लार्ड मौण्टबेटन आये, उस समय बाहर लोगों की भीड़ इतनी बढ़ गई थी कि वे बड़ी मुश्किल से अन्दर आ सके। कड़े दिल के योद्धा होने के कारण उन्होंने एक पल भी नहीं गंवाया और वे

पंडित नेहरू और मौलाना आजाद साहब को दूसरे कमरे में ले गये और महान् दुर्घटना से पैदा होने वाली समस्याओं पर अपने राजनीतिक दिमाग से विचार करने लगे। एक सुझाव यह रखा गया कि मृत शरीर को मसाला देकर कुछ समय के लिए सुरक्षित रखा जाय। लेकिन इस बारे में गांधीजी के विचार इतने साफ और मजबूत थे कि बीच में पड़ना मेरे लिये जरूरी और पवित्र फर्ज हो गया। मैंने उनसे कहा कि बापू मरने के बाद पार्थिव शरीर को पूजने का कड़ा विरोध करते थे। उन्होंने मुझे कई बार कहा था; 'अगर तुम मेरे बारे में ऐसा होने दोगे, तो मैं मौत में भी तुम्हें कोसूंगा। मैं जहां कहीं मरूं, मेरी यह इच्छा है कि बिना किसी दिखावे या झमेले के मेरा दाह सत्कार किया जाय।' डा० राजेन्द्रप्रसाद, श्री जयरामदास और डा० जीवराज मेहता ने मेरी बात का समर्थन किया। इसलिए मृत शरीर को मसाला देकर रखने का विचार छोड़ दिया गया। बाकी रात में गीता के श्लोक और सुखमणि साहब के भजन मीठी राग में गाये जाते रहे और बाहर दुःख से पागल बने लोगों की भीड़ दर्शन के लिए कमरे के चारों तरफ इकट्ठी होती रही। आखिरकार मृत शरीर को ऊपर ले जाकर बिड़ला भवन के छज्जे पर रखना पड़ा, ताकि सब लोग दर्शन कर सकें।

अलविदा !

सुबह जल्दी ही शरीर को हिन्दू विधि के अनुसार नहलाया गया और कमरे के बीच में फूलों से ढक कर रख दिया गया। विदेशी राजदूत सुबह थोड़ी देर बाद आये और उन्होंने बापू के चरणों पर फूल की मालायें रखकर अपनी मौन श्रद्धांजलि अर्पण की।

अवसान के दो दिन पहले ही गांधीजी ने कहा था। 'मेरे लिये इससे प्यारी चीज क्या हो सकती है कि मैं हंसते हंसते गोलियों की बौछार का सामना कर सकूं?" और मालूम होता है, भगवान ने उन्हें यह वरदान दे दिया।

जो कुछ हुआ था, उसके अर्थ पर मैं विचार करने लगा। पहले मैं घबराहट महसूस करने लगा, लेकिन बाद में धीरे धीरे यह पहेली अपने आप सुलझने लगी। उस दिन जब बापू ने एक आदमी के भी अपना फर्ज पूरी और अच्छी तरह अदा करने के बारे में कहा था, तो मुझे ताज्जुब हुआ था कि आखिर कहने का ठीक ठीक मतलब क्या है? उनकी मृत्यु ने उसका जवाब दे दिया। पहले जब गांधीजी उपवास करते, तो वे दूसरों से खेलने और प्रार्थना करने के लिए कहते थे। वे कहा करते थे; 'जब तक पिता बच्चों के बीच हैं, तब तक उन्हें खेलना और खुशी से उछलना कूदना चाहिये। जब मैं चला जाऊंगा। तब आज मैं जो कुछ कर रहा हूं, वह सब वे करेंगे।' अगर आज जो आग की लपटें देश को निगल जाने की धमकी दे रही हैं उन्हें शान्त करना है और बापू ने जो आजादी हमारे लिए जीती है उसका फल हमें भोगना है, तो उनकी मौत ने वह रास्ता दिखा दिया है, जिस पर हमें चलना है।

—हरिजन सेवक से

तोष की

हाथी ब्राण्ड

बढ़िया चाय

दार्जिलिंग ऑरेंज पैको

ए० तोष एण्ड सन्स

कलकत्ता।

५००) नकद इनाम

जवामर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३॥।) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम।

श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

सूचीपत्र और एजेंसी के नियम मुफ्त मंगाइये

व्यापारी वर्ग का प्रमुख हिन्दी मासिक मेरठ से प्रकाशित

"व्यापार विज्ञान"

पढ़िये। वार्षिक ३), नमूना ॥)

कानूनी विचार, व्यापारिक तेजी मन्दी, मासिक राशिफल, स्वास्थ्य, उद्योग धन्धे, कहानी, कविता, आदि से पूर्ण सर्वथा संग्रहणीय।

इन्कम टैक्स की उलझनों से छुटकारा पाने के लिये आज ही मंगाइए। "इन्कम टैक्स क्या है?" थोड़ी प्रतियां शेष हैं। मूल्य २), डाक व्यय ।–) विज्ञापन, एजेन्सी तथा अन्य जानकारी के लिये लिखिये:—

मैसर्स एन० के० शर्मा एण्ड कम्पनी, सदर मेरठ।

फरवरी अंक में

पारितोषक का नतीजा देखिये।

- सौंदर्य प्रसाधन-विषयक प्रथम पारितोषक की उत्तर-पत्रिका पढ़ना न भूलें।
- फोटोग्राफी का इतिहास, बच्चों के साथ फोटोग्राफी आदि
- चाकलेट व टाफी तैयार करना, सिलाई कला
- किसानों का बजट, मिश्र फसलें
- रेडियो संबंधी लेखमाला इस अंक से पढ़िये

फोटोग्राफी विशेषांक की बहुत अधिक मांग होने के कारण जिल्दर अंकों की बिक्री बंद करनी पड़ी। नये ग्राहकों के लिये बहुत थोड़े अंक सुरक्षित रखे गये हैं। आगे प्रत्येक अंक में वर्ष भर फोटोग्राफी संबंधी जानकारी प्रकाशित की जायगी। वार्षिक चंदा रु० ७-४-० (रजि० डाक व्यय सहित) भेज कर जनवरी से ग्राहक बनने वालों को फोटोग्राफी अंक व फरवरी अंक रजिस्टर पोस्ट से भेजा जायगा। शीघ्रातिशीघ्र रकम भेजने वालों को ही विशेषांक मिलने की आशा करना चाहिये।

उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर

१०००) रुपया इनाम अवश्य जीतिये

प्रतियोगिता १ जोड़ १२०

पूर्तियां भेजने की अन्तिम तारीख २५—२—४८

	५०	

इसका सही उत्तर बन्द लिफाफे में रखा गया है जो ता० २ मार्च ४८ को दोपहर १२ बजे खोला जायगा और जिसका नतीजा ता० १० मार्च तक प्रकाशित हो जायगा और सही उत्तर वालों को पुरस्कार भी भेज दिया जायगा। पूर्तियां सादे कागज पर चाहे जितनी भेज सकते हैं अधिक जानकारी के लिये ≠) के टिकट भेजें। फीस १पूर्ति का १), चार पूर्ति का ३), अधिक के लिये ॥) प्रति पूर्ति, पूर्ति साफ लिखी जानी चाहिये और साथ में मनीआर्डर रसीद भी आनी चाहिये।

पता—प्रभात ट्रेडिंग कम्पनी [प० वि० १३] सेवका बाजार, आगरा।

गर्भ रुक जायगा

यदि स्त्री की निर्बलता, सन्तान की ज्यादती या किसी और वजह से सन्तान पैदा करना नहीं चाहते वह ४६ वर्ष से प्रसिद्ध

अखत्यारी उर्फ बर्थकंट्रोल

औषध का सेवन करावें? इस से गर्भ का रहना बन्द हो जायगा।

सूचना—गर्भवती स्त्री इस को सेवन न करें इस से गर्भपात हो जायगा। मूल्य १०) डा० खर्च ॥।)

पता—हकीम राजनरायन (२४) हौजकाजी देहली।

लीग पार्टी को चलाना अब सम्भव नहीं ! — बहुरुद्दीन

एक मामूली का पत्र जिन्ना को भी लिख दीजिये। मजमून हम लिखे देते हैं, टिकट आप लगा देना —

बदल गया जब दिल मुस्लिम का
लीग चलाऊं क्या जाकर,
नक्शा अपना रहा अधूरा
कौन करे पूरा आकर।
मुसलमान गांधी का बुत बनाते
कहना जिन्ना से जाकर,
लीग तेरी चल बसी हिन्द में,
मर्सिया पढ़जा तू आकर।

× × ×

सुरक्षा-कौंसिल के सदस्य असली मामले को छोड़ कर अपने-अपने दांव में लग गये। — नेहरू जी

जनाब वह दूसरों के सिर दर्द को अपने सिर लेने के लिए नहीं बैठे। वह तो आंख के अन्धे और गांठ के पूरे की ताक में बैठे हैं।

× × ×

देहरादून से छोड़े गये अफगानी काश्मीर में लड़ने चले गये। — एक समाचार

फिर क्या हुआ, वह भी तो गोरी खानदान के हैं।

× × ×

इस समय कोई स्वस्थ विरोधी पार्टी नहीं। — त्यागी जी

निराश होने की आवश्यकता नहीं। लीग की बकरे के लिए दो घड़े पानी का इन्तजाम कर दो या बरसात की इन्तजार करो।

× × ×

सोवियत्-सरकार ने भारत सरकार को शोक-सन्देश भेजा था। — सोवियत सरकार

अफगानिस्तान के रास्ते या वजीरिस्तान के ?

× × ×

मार्शल-योजना में हमें भी शामिल किया जाय। — जिन्ना

माफ करना, भूल से आपको दिया गया जवाब हमारे पास आ गया है। सुन लो —"अगर काश्मीर की जायदाद आपके हत्थे चढ़ गई तो आपकी दर्खास्त पर सब से पहले विचार होगा।

— अमेरिकन विदेश मन्त्री"

× × ×

अटक तक का इलाका हमें दे दो। — फकीर इपी

क्षमा, हम से मांगो तो सारा पाकिस्तान ही तुम्हें दे दें।

× × ×

पाकिस्तान के प्रकाशन अधिकारी पर भिखारियों ने भाषण सुनते हुए हमला कर दिया। — एक समाचार

भला कोई इस भले आदमी से पूछे कि भिखारियों को भाषण से मतलब है या रोटी से !

× × × ×

सरकार मुसलमानों की गिरफ्तारियों से बाज आये। — ईशाक सेठ

सेठ साहब, वाकई ठीक ही फरमाते हैं। गिरफ्तारियों के लिए अभी हिन्दू क्या कम हैं ?

× × ×

दहेज में लड़कियों को पिस्तौल मिलें। — बेगम कमालुद्दीन

देखिये, बेगम साहबा, लेने के लिये तो आप चाहें ३०३ नम्बर की डबल बेरल ले लीजिये। मगर देखना मौके पर कहीं यह मत कह बैठना —

नजर झुक गई मेरी,
दुश्मन के सामने
पिस्तौल गिरी जमीं पर,
जालिम के सामने।

आप का
चिर प्रतीक्षित उपन्यास

शाह आलम की आंखें

(लेखक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति)

पुनः प्रकाशित हो गया

- इसका प्रथम संस्करण तीन वर्ष पूर्व छपा था, पर आज भी इसकी मांग ज्यों की त्यों है।
- इस उपन्यास की कथा का आधार ऐतिहासिक है जो कि सत्य है। इस लिए इसे पढ़ते समय वास्तविक घटना चक्र सामने उपस्थित हो जाता है।
- उपन्यास की भाषा ओजपूर्ण है और कथानक बहुत ही रोचक है।
- पुस्तक की मांग बहुत अधिक है इसलिए अपनी कापी आज ही मंगा लें।

मूल्य केवल ३।) सवा तीन रुपये।

विजय पुस्तक भण्डार
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

शीतकाल का उपहार

संसार में स्तम्भन की केवल पुरुषों के लगाने की एक अद्भुत औषधि।

— सुई फन सी —
Solution

पुरुषों के लिए केवल बाहर से व्यवहार करने लायक रुकावट की संसार में अद्वितीय तथा अद्भुत औषधि है। लाखों गृहस्थ इसकी मांग कर रहे हैं। जिन पुरुषों का शीघ्र ही वीर्य पतन हो जाता है, उनके लिये यह दवा बेजोड़ है। इस के लगाने से रुकावट सम्बन्धी अपूर्व शक्ति तथा सामर्थ्य प्राप्त होता है। इस दवा की एक शीशी बहुत दिनों तक चलती है।

मूल्य प्रति शीशी रुपये १२) डाक खर्च ।||) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चायनीज मेडिकल स्टोर,
नया बाजार — देहली।

हेड आफिस—२८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता, रीची रोड-अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी बेलगाम मेडीकल स्टोर्स—बालरा।
दी जनरल मेडीकल स्टोर्स—अजमेर।
दी युनाईटेड केमिस्ट्स—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
. गिरधरदास जानकी वल्लभ—उदयपुर।
वैजनाथ विश्वनाथ त्रिवेदी—मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—लश्कर
मेसर्स खरे ब्रादर्स—डबई।
डी० पी० फार्मास्युटिकल वर्क्स कटनी।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
सोगानी जनरल स्टोर्स भोपाल।
मे० चारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी दवाखाना मोरिस

त्याग का मूल्य

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी अनुवाद मूल्य ५) डाक व्यय ।≈) मिलने का पता— विजय पुस्तक भण्डार श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

मोम बत्तियां बनाओ। लाख बनाओ। **घर बैठे १५०) रुपये माहवार कमायें** स्कूल के चाक बनाओ।

मोमबत्तियों के काम में एक छोटे सांचे की मदद से पाच छः रुपये रोजाना बखूबी कमाये जा सकते हैं। यह केवल १५०) रु० की पूंजी से अच्छी तरह चालू हो सकता है। तरीका सांचे के साथ बताया जाता है। १२ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ४०) रु० डाकखर्च अलग। १७ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ६०) ३४ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ११०) रु० डाकखर्च अलग। २४ स्कूल चाक के सांचे की कीमत ६०)। ३ बत्तियों वाला लाख बनाने का सांचा व लाख बनाने का तरीका कीमत २०) रु० रबड़ के गोले व फूकनों में गैस भरने वाली मशीन की कीमत ५०) रु० आर्डर के साथ आधी कीमत पेशगी आनी जरूरी है।

ए० दीवानचन्द एण्ड कम्पनी (V.A.D.) पोस्ट बैग नं० ३१ A. देहली।

सुगमवर्ग पहेली नं० ३१ के
पुरस्कार विजेता

सर्व शुद्ध :— प्रतियोगिता में भाग लेने वालों में से किसी का भी सर्व शुद्ध उत्तर नहीं था।

एक गलती :— एक गलती का भी कोई उत्तर नहीं था।

दो गलती :— दो गलतियों के तीन उत्तर थे। इसलिए प्रथम पुरस्कार १५०) निम्न तीन व्यक्तियों में बांट दिया गया है, प्रत्येक को ५०) पुरस्कार प्राप्त हुआ।

१. श्री नन्दलाल अरोड़ा, मारफत श्री भगवान दास जी रईस एण्ड बैंकर, जालन्धर।
२. श्री हरिश्चन्द्र जी 'अंचल,' शिक्षा विभाग, लखनऊ।
३. श्री माताप्रसाद जी गुप्ता, देहरादून।

तीन गलती — तीन गलतियों के के ११ उत्तर थे, इस श्रेणी में कुल ५५) पुरस्कार दिया गया और प्रत्येक व्यक्ति को ५) दिया गया।

१. श्री रघुवंश सिंह वर्मा, गोंडा।
२. श्री सीताराम जी माहेश्वरी, खारी बावली, दिल्ली।
३. श्री लालसिंह जी त्यागी, बिजनौर
४. श्री योगेश्वर जी चौधरी, बिजनौर
५. श्री बाबूराम जी वर्मा, बरेली
६. श्री कल्याणसहाय 'अनिल', सागर।
७. श्री राधारमण जी चतुर्वेदी, मथुरा।
८. श्री निरंजन वर्मा, खण्डवा।
९. श्री नीलमणि एम० ए० एल० टी०, श्री गंगानगर (बीकानेर)
१०. श्री रामप्रसाद खण्डेलवाल, कालकादेवी रोड, बम्बई।
११. श्री चन्द्रदेव शर्मा, नवल गढ़

चार गलती — कोई उत्तर नहीं।

पांच गलती — पांच गलतियों के २० उत्तर थे। कुल ४०) पुरस्कार दिया गया। प्रत्येक को दो रुपये पुरस्कार प्राप्त हुए।

१. श्री प्रेमनारायण सक्सेना, इलाहाबाद।
२. श्री चन्द्रकिरण आचार्य, मुरादाबाद।
३. श्री रामबिहारीलाल, हैदराबाद (दक्षिण)
४. श्री वागीश्वर बिहारीलाल, हैदराबाद (दक्षिण)
५. श्री प्रभातकिरण शर्मा, गुलबर्गा (हैदराबाद दक्षिण)
६. श्री ओमप्रकाशनाथ चौबे, मथुरा।
७. मुंशीराम वकील, उदयपुर।
८. श्री शंकरसहाय रामसहाय, जोधपुर।
९. श्री हरिश्चन्द्र अग्रवाल, जोधपुर।
१०. श्री महावीर प्रसाद सिंह त्यागी, नहटौर।
११. श्रीमती मधुप्रभावती मा० श्री किशोरी लाल बिहारीलाल पटवा, अहमदाबाद।
१२. श्री भूपेन्द्रपति त्रिपाठी, नागपुर
१३. श्री रणवीर म० श्री रामदेव जी, कनाट सरकस, नई दिल्ली
१४. सूर्यनारायण शर्मा, जबलपुर।
१५. श्री हृदयेश्वर 'कमल' देहरादून।
१६. श्री त्रिलोचनकान्त शास्त्री, कोटा।
१७. श्री सजमल नेमा, अजमेर।
१८. श्री पी० एल० गुप्ता, सहारनपुर।
१९. श्री गंगीलाल श्रीवास्तव, बीकानेर।
२०. श्री गुलाबचन्द साहू, उज्जैन।

निम्न पांच व्यक्तियों को एक एक रुपये का विशिष्ट पुरस्कार दिया गया है। इन लोगों को नकद रुपये न भेज कर यहां से एक अधिकार पत्र भेजा जायगा और वे सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ की एक पूर्ति निःशुल्क भेज सकेंगे। पूर्ति के साथ इस अधिकार-पत्र को लौटा देना होगा।

१. गुरुदास अग्रवाल, मुजफ्फर सागर।
२. श्री लक्ष्मी दत्त जोशी, दिल्ली।
३. श्री भैरवप्रसाद मिश्र, आलमपुर।
४. श्री वागी दत्त नवाल, पहाड़पुर
५. सुश्री कुमारी विद्यावती, डगशाही।

सूचना — नियम सं० ६ के अनुसार जो अपने उत्तरों की जांच कराना चाहें वे १) भेज कर जांच करा सकते हैं। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा।

प्रबन्धक, सुगमवर्ग पहेली सन् ३२, अर्जुन कार्यालय, दिल्ली

१००) इनाम
सिद्ध योगेन्द्र कवच

सिद्ध वशीकरण — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का १२), झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री महाशक्ति आश्रम, ६३ सालीमपुर अहरा पो० कदम कुआं (पटना)

पहेली नं० ३२ की संकेतमाला

दायें से बायें

१. भारत के प्रतिविख्यात सम्राट् और हिन्दी का नूतनतम सुन्दर नाटक।
४. अपने समय पर इसी का बहुत महत्व है।
६. चाहे खेती बाड़ी में हो या हमारे दैनिक जीवन में, इसकी आवश्यकता रहती ही है।
११. चिकित्सक इन क्रियाओं का खूब प्रयोग करते हैं।
१२. निर्धनता के पर्यायवाची का अपभ्रंश।
१३. लोग इससे बचने का सदा प्रयत्न करते हैं।
१४. वाद विवाद के ढंग है।
१५. कभी २ बड़ी विपत्ति का कारण होता है।
१६. यह चार अक्षरों का शब्द है, अन्तिम दो अक्षरों से बनी वस्तु भूमण्डल पर सर्वत्र पायी जाती है।
१७. वैज्ञानिक इसका बहुत विचार रखते हैं।
१८. कुछ विद्वानों के मत से वैदिक साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

ऊपर से नीचे

१. जीवन में — सा होती ही रहती है।
२. आप इसे चग सकते हैं।
३. सूर्य का पर्याय है।
४. यह क्रिया प्रतिदिन व्यवहार में आती है।
५. मदारी इसकी प्रायः दुहाई देते हैं।
७. कर्णकटु ध्वनि का अनुकरण है।
८. अपने बगीचे को ऐसा बनाने की बहुधा इच्छा होती है।
९. इसकी उत्पत्ति पानी से होती है।
१०. वह चाहे — हो, उसका अपमान नहीं करना चाहिये।
१४. अपने अपने स्वभाव की बात है कि पसन्द करें या नहीं।
१५. व्यक्तियों की शक्ति का बोधक है।

तिरंगा झण्डा

श्री विराजजी रचित तीन एकांक नाटकों का संग्रह—स्वाधीन देश के झण्डे के लिए बलिदान की पुकार। मूल्य १) डाक व्यय ।—)। मिलने का पताः—

विजय पुस्तक भंडार, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

दिव्य सिद्ध अंगूठी

इसके धारण करने से आप जो चाहेंगे। वह हो जायेगा जैसे गरीबी दूर भाग जायेगी, आपकी प्रेमिका आप से प्रेम करने लगेगी, जिससे आप शादी करना चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी। नाराज अफसर खुश होगा इससे भाग्योदय नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा लौटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य २॥) पोस्टेज ॥।)

पता— बी० सी० भाटिया एण्ड को० (६) मथुरा

पीकॉक दन्तमंजन

दांतों को मोती सा चमका कर मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। शीशी ॥)

एम्पायर ट्रेडिंग कं०

एजेण्टों की जरूरत है— जमनादास एण्ड कं०, के० डी० जगदीश एण्ड क० चांदनी चौक, दिल्ली।

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

२५०) [सुगमवर्ग पहेली नं० ३२] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार १५०) न्यूनतम अशुद्धियों पर १००)

—इस लाइन पर काटिये—

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये कूपन।
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे मैनेजर का निर्णय स्वीकार होगा।
नाम.........................
पता.........................
ठिकाना.................. उत्तर नं०.........

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है
नाम.........................
पता.........................
ठिकाना.................. उत्तर नं०.........

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है
नाम.........................
पता.........................
ठिकाना.................. उत्तर नं०.........

इन तीनों वर्गों को पृथक करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजी है तो शेष पर खाली लकीर खींच दें।

—इस लाइन पर काटिये—

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि ६ मार्च १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल परीक्षा में किए जायेंगे और ना ही उनकी प्रवेश फीस वापिस की जायेगी। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर १५०) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर १००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटाई बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १५ मार्च के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ११ मार्च १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायेगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जांच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३२, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

★★★

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ हैं। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय।–)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय
[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १।।) डाक व्यय।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य २) डाक व्यय।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद
[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ।।=) डाक व्यय।–)

पं० जवाहरलाल नेहरू
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १) डाक व्यय।=)

महर्षि दयानन्द
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १।।) डाक व्यय।=)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १।।) मात्र।

विविध

बृहत्तर भारत
[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ।।।=)

बहन के पत्र
[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व लड़कियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य ३)

प्रेमसूती

श्री विराज की रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ।।।)

वैदिक वीर गर्जना
[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद-मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ।।।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी
[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इस लिये

हिन्दू–संगठन
[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

उपयोगी विज्ञान

लहसुन विज्ञान

लहसुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय।–)

तेल विज्ञान

तिलहन से लेकर तेल के चार नये उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय।–)

तुलसी

तुलसीगन्ध के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक

अंजीर

अंजीर के फल और दूध से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १।।) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं
[सम्पादक—श्री जयन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय।–)

नया आलोक : नई छाया
[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)
लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था; देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिबद्ध तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरञ्जक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १।।), डाक व्यय।=)।

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी प्रतियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ।)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला ? मूल्य ।।)

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य ।।)

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

१४] दिल्ली, सोमवार १६ फाल्गुन, सम्वत् २००४ *DELHI* 1st MARCH *1948.* [अङ्क ४८

भारत और प्रान्तों के वैधानिक शासक

ऊपर खड़े हुए — सर अकबर हैदरी (आसाम), श्री मंगलदास पकवासा (मध्यप्रान्त), सर चन्दूलाल त्रिवेदी (पूर्वी पंजाब), श्री माधव श्रीहरि अणे (बिहार) और डा० कैलाशनाथ काटजू (उड़ीसा)
बैठे हुए — श्री महाराजसिंह (बम्बई), सर आर्चिबाल्ड नाई (मद्रास), लार्ड मौंटबेटन (भारत), श्री राजगोपालाचार्य (पश्चिमी बंगाल) और श्रीमती सरोजिनी नायडू (युक्त प्रान्त)

सम्पादक—
रामगोपाल विद्यालंकार
कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

एक प्रतिका मूल्य ≶)

[illegible] पुरस्कार [illegible] पृष्ठ १०

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका सञ्चालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन
मनोरञ्जन मासिक

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* विजय पुस्तक भण्डार

❀ अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० „
सन् १९४६	१५ „

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका सञ्चालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
* अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के सञ्चालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १६ फाल्गुन सम्वत् २००४

दो नये विधान

पिछले दिनों दो विधान देश के सामने आये हैं। एक है कांग्रेस का और दूसरा है भारतसंघ का। कांग्रेस देश की सब से बड़ी संस्था है। यों उसकी सदस्य संख्या लाखों में ही रही हो परन्तु म० गांधी के शब्दों में कांग्रेस देश की सब श्रेणियों की प्रतिनिधि रही है और उसने पिछले २०-२५ वर्षों में वस्तुत सभी के हित के लिए संघर्ष किया है। स्वराज्य न केवल किसानों को मिला है, बल्कि बड़े-बड़े भूमिपति और रियासतों के सम्पन्न राजा तक भी कांग्रेस के महान् संग्राम के परिणाम स्वरूप ब्रिटिश सत्ता से मुक्त हो गये हैं। इसलिए कांग्रेस सब श्रेणियों की प्रतिनिधि होने का दावा कर सकती है।

× × ×

कांग्रेस अपने राजनैतिक उद्देश्य प्राप्त कर लिया। इस से वह अत्यन्त सफल सिद्ध हुई है। लेकिन यहीं उसका जीवन समाप्त नहीं हो गया। केवल वैदेशिक शासन से मुक्ति कांग्रेस का उद्देश्य नहीं रहा। भारतीय जनता का हितसाधन कांग्रेस का अन्तिम लक्ष्य रहा है। म० गांधी कांग्रेस के लक्ष्य के सम्बन्ध में कभी भ्रम में नहीं रहे। इसी लिए वे राष्ट्र को दिये गये अन्तिम आदेश या परामर्श में कांग्रेस को सामाजिक व आर्थिक कार्य-क्रम का निदेश कर गये हैं। उनके परामर्श कांग्रेस के स्वरूप और संगठन में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने वाले हैं। वे कांग्रेस को आज राजनैतिक पार्टी का रूप न देकर समाजसेवक संस्था बनाना चाहते थे। इसीलिए वतमान संगठन को तोड़ने तक की उनकी सलाह के अनुसार कांग्रेस को राजनैतिक दलों की प्रतिस्पर्धा से ऊंचा उठकर विशुद्ध सामाजिक सेवा में लग जाना चाहिए। पाठक इसी अंक में अन्यत्र गांधी जी द्वारा प्रस्तुत विधान पढ़ेंगे। उसके प्रत्येक अक्षर से यह स्पष्ट है कि म० गांधी कांग्रेस को किस रूप में देखना चाहते थे। वे उसे विशुद्ध सेवा भाव से ग्रामीण समाज का जीवन धरातल ऊंचा करने वालों की एक संस्था बनाना चाहते थे।

× × ×

देश के नेता भी कांग्रेस के विधान में परिवर्तन की आवश्यकता को बहुत समय से अनुभव कर रहे थे। पिछले कुछ वर्षों से और विशेष कर जब से भारत में अन्तःकालीन सरकार स्थापित हुई है, तब से कांग्रेसी कार्यकर्ता अपनी प्रतिष्ठा खोते जा रहे थे। देश की सब से बड़ी और गौरवशील संस्था कांग्रेस का नैतिक पतन चरम सीमा तक पहुंच गया था। म० गांधी ने भी पिछले उपवास के दिनों कांग्रेस की इस अवस्था पर बहुत दुःख प्रकट किया था। इस कारण कांग्रेस के विधान में परिवर्तन की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ गई। पिछले अधिवेशन में कांग्रेस महासमिति ने नया विधान स्वीकृत भी कर लिया। पाठक वह भी पृष्ठ ६ पर इसी अंक में पढ़ेंगे।

गांधीजी द्वारा प्रस्तावित विधान और महासमिति द्वारा स्वीकृत विधान में बहुत सी समानतायें हैं। दोनों में रचनात्मक कार्यक्रम पर बहुत जोर दिया गया है। दोनों में कांग्रेस की सदस्यता भी करीब करीब समान रूप से बताई गई है। साथ ही दोनों में चरखासंघ आदि सेवा संस्थाओं को कांग्रेस की संस्था के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। लेकिन देखने पर दोनों विधानों में एक मूलभूत अन्तर स्पष्ट हो जायगा। महात्मा गांधी कांग्रेस को राजनैतिक दलदल से ऊंचा उठाने के लिये प्रयत्नशील थे, जबकि कांग्रेस महासमिति कांग्रेस को राजनैतिक क्षेत्र से पृथक् रखने को तैयार नहीं है। कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की यह इच्छा स्वाभाविक भी है। उनका समस्त जीवन राजनैतिक रहा है। आज जबकि उनके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप देश स्वाधीन हो गया है, तब वे राजनीति से सन्यास ले लें, यह ऐसा ऊंचा आदर्श है, जिस तक बहुत कम आदमी पहुंच सकते हैं। इसीलिए आज भी राजनैतिक उद्देश्य की प्राप्ति के बाद भी वे कांग्रेस का राजनैतिक रूप छोड़ने को तैयार नहीं हैं। यही दोनों विधानों में मूल अन्तर है।

× × ×

राजनीतिक क्षेत्र आकर्षक और प्रभावकारी होता है। देश की स्वतन्त्रता के लिये रण में जूझ जाना यद्यपि बहुत ऊंचा कार्य है, तथापि उस व्यक्ति का बलिदान कहीं अधिक पवित्र और उच्च है, जो एक अज्ञात स्थान में बैठा हुआ अपना समस्त जीवन अज्ञान दरिद्र ग्रामीणों की मूक सेवा में अर्पित कर देता है। उसे इस बात की चिन्ता नहीं होती कि उसका नाम कभी पत्रों में भी छपेगा या नहीं। महात्मा गांधी कांग्रेस को ऐसे ही निःस्वार्थ मूक सेवकों की संस्था बनाना चाहते थे। फिर उनकी सम्मति में वर्तमान स्वरूप वाली कांग्रेस का काम भी नहीं रहा, प्रचार के वाहन और धारा सभा की प्रवृत्ति चलाने वाले तन्त्र के नाते उसकी उपयोगिता भी समाप्त हो गई है। लेकिन आज उससे भी पवित्र उद्देश्य हमारे सामने हैं। लोकतन्त्र के लक्ष्य की ओर भारत को प्रगति करनी है और इसके लिये यह आवश्यक है कि सैनिक बल नागरिकों पर कभी हावी न होने पावे और इसी लिये महात्मा गांधी कांग्रेस को राजनैतिक पार्टियों और साम्प्रदायिक संस्थाओं के साथ की गयी होड़ से बचाकर वर्तमान रूप की बजाय लोक-सेवक संघ का रूप देना चाहते थे। यही कारण है कि उनके प्रस्तावित विधान में ग्राम सेवा पर बहुत जोर दिया गया है।

× × ×

कांग्रेस के नेता और विशेषकर कार्यकर्ता राजनैतिक क्षेत्र छोड़ने को तैयार नहीं हैं। यह तो स्वाभाविक है। वे कांग्रेस की बजाय किसी अन्य राजनैतिक संस्था के रूप में भी संगठित हो सकते थे। लेकिन तब कांग्रेस के नाम के पीछे का आकर्षण और बल है, वह कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को प्राप्त न होता। तब सोशलिस्ट या कम्यूनिस्ट कार्यकर्ता अपनी विचारधारा का प्रचार जोरों से करते और कांग्रेस के दक्षिणपक्षी नेताओं के पास कोई जोरदार मंच न रहता। सम्भव है इसी कारण कांग्रेस महासमिति ने म० गांधी के प्रस्तावित विधान की बाह्य रूप रेखा की रक्षा करते हुए भी अपने मूलभूत आधार को नहीं छोड़ा।

× × ×

कांग्रेस के प्रस्तुत विधान में दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि अब कांग्रेस का कोई सदस्य दूसरी राजनैतिक संस्था का सदस्य नहीं हो सकेगा। इसका सबसे बड़ा प्रभाव सोशलिस्ट पार्टी पर पड़ेगा। सोशलिस्ट कांग्रेस के नाम की दुहाई देकर अब उसके अन्दर ही विरोध नहीं कर सकेंगे। लेकिन इसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि सोशलिस्ट कांग्रेस से सम्बन्ध विच्छेद कर लेंगे और देश में दो या तीन राजनैतिक दल बन जावेंगे। कांग्रेस इस तरह विरोधी तत्वों को पृथक् कर के अधिक शक्तिशाली हो जायगा अथवा पहले की अपेक्षा दुर्बल, यह आज नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः इस प्रश्न का उत्तर कांग्रेस के सूत्रधारों की व्यवहारकुशलता और समय को समझने की शक्ति देगी। आगामी कुछ वर्ष बतायेंगे कि देश का नेतृत्व गांधीवाद की विचारधारा करेगी अथवा वर्गयुद्ध को उत्साहित करने वाली सोशलिस्ट विचारधारा।

× × ×

विधान परिषद् द्वारा भावी विधान की रूपरेखा भी इन दिनों प्रकाशित हुई है। मौलिक अधिकार, समानता, न्याय और स्वतन्त्रता तथा समस्त जनता के लिए आर्थिक, वैधानिक राजनैतिक और सामाजिक न्याय आदि स्वतन्त्रताएं इसकी आधारभूत विशेषताएं हैं। संघ का राजनैतिक संगठन अमेरिका और ब्रिटेन के विधानों के सम्मिश्रण से बनाया गया दीखता है। हम देश के विचारशील पाठकों का ध्यान इस विधान की ओर खींचना चाहते हैं। विधान के निर्माण में अधिक से अधिक विचार कर लेना चाहिए। ये विधान समय समय पर बदला नहीं करते। इसीलिए आज देश के विवेकशील वर्ग का कर्तव्य है कि वह इस पर गम्भीरता से विचार करके उचित परामर्श दे, ताकि प्रत्येक पहलू पर विधान निर्माता अच्छी तरह विचार कर सकें।

× × ×

इस विधान की सब से बड़ी विशेषता यह है कि साम्प्रदायिकता के उन्मूलन का इस निश्चय इससे प्रकट होता है। ब्रिटिश शासन का मूल आधार ही साम्प्रदायिकता की वृद्धि था। इसीलिए नया विधान राजनीति और नागरिक अधिकारों की दृष्टि से किसी धर्म की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। कानून के निकट सभी नागरिक हैं, हिन्दू मुसलमान या सिख नहीं। हमें विश्वास है कि साम्प्रदायिकता के समूल उन्मूलन के लिए संयुक्त चुनाव अत्यन्त आवश्यक है और किसी भी सम्प्रदाय के आधार पर कोई संरक्षण अनावश्यक एवं हानिकर है। इसी दृष्टि से हमें विश्वास है कि कुछ सिख नेताओं की सिखों को विशेष संरक्षण की अदूरदर्शिता पूर्ण मांग के आगे, चाहे वह कितने भी बल से क्यों न रखी गई हो, देश के नेता एक इंच भी नहीं झुकेंगे। साम्प्रदायिकता का विष पहले ही भारत को क्षतविक्षत कर चुका है, अब वह एक मिनट के लिए भी इसे सहन करने को तैयार नहीं।

× × ×

म० गांधी राष्ट्र पितामह थे, इसलिये यह स्वाभाविक था कि देश के विभिन्न ग्रामों, नगरों, और प्रांतों में उनके स्मारक बनाने की इच्छा हो। गांधी जी के नाम से स्मारक बनाने के सैकड़ों हजारों प्रस्ताव किये जा रहे हैं। इसी समय पं० जवाहरलाल नेहरू ने सामयिक चेतावनी देकर राष्ट्र को यह बताया है कि गांधी जी की साधारण मूर्तियां बना कर या सड़कों, नगरों और संस्थाओं के नाम गांधीजी के साथ जोड़ कर हम सच्चा स्मारक नहीं बना सकते। इसी तरह सरदार पटेल ने अत्यन्त तीव्र शब्दों में गांधीजी की प्रतिमा बना कर मन्दिर निर्माण का विरोध किया है। ऋषि दयानन्द की भांति म० गांधी भी अपने पीछे कोई समाधि बनाने का घोर विरोध कर गये थे। वस्तुतः जब हम भावुकतावश किसी महान् आत्मा को देवता मान कर उनकी पूजा करने लगते हैं, हम उनकी शिक्षाओं से उतना ही दूर चले जाते हैं। गांधी जी का स्मारक उनके संदेश का पालन है, न कि उनकी प्रतिमा बना कर उसे मंदिरों में सीमित कर देना। हमें आशा है कि म० गांधी के अनुयायी सरदार पटेल व पं० नेहरू की इस चेतावनी पर ध्यान देंगे।

भारत और पाकिस्तान में व्यापार बन्द

२९ फरवरी की अर्ध रात्रि के पश्चात् भारत और पाकिस्तान में मुक्त व्यापार बन्द हो जायगा और दोनों देश परस्पर एक दूसरे को विदेश मानने लग जायेंगे। यद्यपि अभी सीमाप्रान्त की चुंगी से उत्पन्न कठिनाइयां अव्यक्त हैं फिर भी पाकिस्तान को तात्कालिक कठिनाई झेलनी ही पड़ेगी। समुद्र-मार्ग से जाने वाले माल पर जो ड्यूटी लगाई जाती है वैसी ही चुंगी स्थल मार्ग से जाने वाले माल पर भी लगाई जायेगी। इस प्रकार मुक्त व्यापार समाप्त हो जाने के बावजूद १ अप्रैल तक लोगों के निर्बाध आवागमन का सिलसिला जारी रहेगा।

बुन्देलखण्ड की ३५ रियासतें

बुन्देलखण्ड तथा बघेलखण्ड की समस्त रियासतों का एक संघ बनाने का निश्चय हो चुका है जिसे 'विन्ध्य प्रदेश' के नाम से पुकारा जायेगा। रियासती विभाग के सेक्रेटरी श्री मेनन, प्रस्तावित प्रदेश की व्यवस्था के लिये रियासत छतरपुर की राजधानी नौगांव जा रहे हैं। इस प्रदेश में ३५ रियासतें हैं जिनमें से ७ चारों ओर युक्तप्रान्त के जिलों से घिरी हुई हैं। ये सात रियासतें युक्तप्रान्त में मिलादी जायेंगी।

सुकेत रियासत पंजाब में सम्मिलित

भारत सरकार के रियासती सचिवालय ने पूर्वी पंजाब की सरकार को तुरन्त सुकेत रियासत का शासन संभाल लेने का आदेश दिया है क्योंकि सुकेत राज्य की शासन व्यवस्था पूर्णतः भंग हो गई थी।

जूनागढ़ भारत का अंग

जूनागढ़ रियासत की जनता ने भारी बहुमत से भारतीय डोमिनियन में सम्मिलित होने का निर्णय किया है। जनमत-संग्रह में १९०,७७९ मत भारत के पक्ष में आये हैं।

हैदराबाद में दमनचक्र

हैदराबाद रियासत की सरकार ने 'दि डेक्कन क्रानिकल,' 'दि डेली न्यूज,' 'पयाम' और 'इमरोज' नाम के दो अंग्रेजी और दो उर्दू अखबारों पर सेन्सर लगा दिया है। विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं ने — जिनमें भूतपूर्व मन्त्री श्री रामाचारी भी शामिल हैं एक संयुक्त वक्तव्य द्वारा इस आदेश की निन्दा की है।

इत्तिहादुल मुसलमीन के रजाकारों के अस्तित्व और हलचलों के कारण रियासत भर में उत्पन्न अव्यवस्था के विरोध स्वरूप हैदराबाद और सिकन्दराबाद के १५० वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार करने और अनिश्चित काल तक वकालत न करने का निश्चय किया है।

इत्तिहादुल मुसलमीन के रजाकारों की संख्या इस समय २ लाख से ऊपर

पहुंच गई है। संस्था के रूप में इनका इतना अधिक प्रभाव है कि राज्य का कोई अधिकारी या पुलिस भी इनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकती।

२०० विद्यार्थियों ने स्वास्थ्य मन्त्री मलिक अरगुनप्पा के मकान के आगे प्रदर्शन किया और मन्त्री पद से इस्तीफा देने की मांग की।

रियासती हिन्दू सभा के अध्यक्ष श्री वामनराव जोशी गिरफ्तार कर लिये गये हैं।

निजाम की सेना और इत्तिहाद के रजाकारों के २००० व्यक्तियों के एक दल ने वारंगल जिले के पलवञ्च ताल्लुके पर आक्रमण करके ५० गांवों को आग लगा दी। आतंक के कारण इस सीमावर्ती स्थान से २०,००० आदमी भाग कर मद्रास प्रान्त के गोदावरी जिले में चले गये हैं।

कांग्रेस महासमिति का महत्वपूर्ण प्रस्ताव

असाम्प्रदायिक और प्रजातन्त्रात्मक राज्य स्थापित करने के सम्बन्ध में कांग्रेस कमेटी में जो प्रस्ताव रखा गया है वह इस प्रकार है :—

'कांग्रेस कमेटी जनता से, विशेषकर कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं से, अपील करती है कि वे साम्प्रदायिकता के दानव को खत्म करने के लिये पूरी तरह सचेष्ट रहें क्योकि यदि साम्प्रदायिकता फौरन खत्म न की गयी तो वह हमारी स्वतन्त्रता को नष्ट कर देगी और हमारे ध्येय को पराजित कर देगी।

'कमेटी यह कभी नहीं भुला सकती कि हत्या के कुछ दिन पहले ही महात्मा गांधी ने साम्प्रदायिकता को खत्म करने और देश में शांति और सद्भावना स्थापित करने के लिये अनिश्चितकाल तक के लिये उपवास किया था और उसके छः दिन बाद सभी सम्प्रदायों की इस प्रतिज्ञा पर कि मुसलमानों की सुरक्षा और आत्मसम्मान की हिफाजत की जायेगी उन्होंने व्रत तोड़ा था।

'फिरकापरस्ती के जहर को खत्म करने के लिए और शांति, सद्भावना कायम करने के लिये जिस समय गम्भीर प्रयत्न शुरू हुए उनकी हत्या का जघन्य कृत्य उसी समय होने से अधिक निन्दनीय और दयनीय हो गया है।'

हमारे कर्त्तव्य की याद दिलाने वाला और ध्येय पर बढ़ने के लिये प्रेरणा देनेवाला राष्ट्रपिता हमारे बीच आज नहीं है किन्तु कमेटी उनके आधे छोड़े हुए काम को पूर्ण करने और उनके बताये रास्ते पर चलने का प्रण करती है।

'कमेटी कांग्रेस वर्किंग कमेटी की ६ फरवरी की बैठक में पास हुये उस प्रस्ताव का भी समर्थन करती है जिसमें सरकार और जनता को हिंसा और घृणा की शक्तियों से सावधान रहने और सामाजिक जीवन से उनको जड़ उखाड़ फेंकने की अपील की गयी है।

फिरका परस्ती के जहर को जानबूझकर फैलाने वाली, नफरत का प्रचार करने वाली और कुछ देशवासियों के दिमागों को विकार से भरने वाली साम्प्रदायिक संस्थाओं के खिलाफ फौरन कार्रवाई करने पर कमेटी केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों को बधाई देती है।

साम्प्रदायिक वैमनस्य घृणा और अशान्ति पैदा करने वाली ताकतों के खिलाफ मोर्चा लेने में कमेटी सरकार को हर प्रकार की सहायता देने का आश्वासन देती है।

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

भारत के सर्वप्रिय मासिक पत्र

मनोरंजन का

गांधी-स्मृति-अंक

इस अङ्क की कुछ विशेषतायें—

* डा० रामकुमार वर्मा, बच्चन, श्री नारायण चतुर्वेदी, श्री मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रा कुमारी सिनहा, चिरंजीत इत्यादि हिंदी के प्रमुख कवियों की विश्ववंद्य महात्मा गांधी के शोक में लिखी हुई अभूतपूर्व तथा भावपूर्ण कवितायें।
* गांधी जी के आदर्श जीवन की अनेकों छोटी २ कहानियां जिनसे उन के व्यक्तित्व की अलौकिकता झलकती है।
* हिंदी के यशस्वी कहानीकार श्री विष्णु प्रभाकर की कहानी 'स्मृति-पूजा'— उस महामानव के आकस्मिक निधन से भारत के हृदय पर पड़े प्रभाव का चित्र
* 'बापू की पावन स्मृति'—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की गांधी जी से प्रथम भेंट का हृदयग्राही वर्णन।
* भारतीय साहित्य पर गांधी जी का प्रभाव—श्री प्रभाकर माचवे का एक खोजपूर्ण साहित्यिक लेख।
* श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार अपने एक लेख में पूछते हैं—'क्या हम गांधी जी के दिव्य संदेश को समझ भी पाये ?'
* 'मैं भी कलाकार हूं' — गांधी जी ने प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री दिलीपकुमार राय के सम्मुख यह बात कैसे सिद्ध की।
* इनके अतिरिक्त गांधी जी के बहुमुखी जीवन, व्यक्तित्व और आदर्शों के सम्बन्ध में अनेकों लेख, चित्र और टिप्पणियां, सलोनी दुनियां, वाल पहेली, बहुरंगी छपाई, मुख पृष्ठ पर गांधी जी का दो रंगा चित्र।

एक प्रति आठ आने वार्षिक मूल्य ५।।)

श्री श्रद्धानंद पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानंद बाजार, दिल्ली।

शरणार्थियों के दिल्ली में आने पर रोक

शरणार्थी पुनस्स्थापन बोर्ड ने एक बैठक में पूर्वी पंजाब के १२ नगरों में ४००० नये मकान बनाने की योजना स्वीकार की है। दिल्ली में और शरणार्थियों के आने पर रोक लगा दी गई है।

युक्तप्रान्त में नया बजट प्रस्तुत

युक्तप्रान्तीय धारा सभा में अर्थमन्त्री श्रीकृष्ण दत्त पालीवाल ने १९४८-४९ का बजट प्रस्तुत कर दिया है। वर्ष में आय ४५ करोड़ ८७ लाख और व्यय ५० करोड़ ५० लाख होगा। ४ करोड़ ७० लाख रुपये के घाटे को नये टैक्स लगा कर पूरा किया जायेगा। खर्चे की मोटी रकमें निम्न हैं :—

(१) राष्ट्र निर्माण के कार्यों पर २४ करोड़ १ लाख (२) शरणार्थियों की सहायतार्थ २ करोड़ १६ लाख (३) सरकारी शासनप्रबन्ध पर १२ करोड़ १३ लाख (४) इमारतों के निर्माण पर १० करोड़ ४१ लाख ६० व्यय होंगे।

मि० जिन्ना लीग के अध्यक्ष नहीं रहे

मुस्लिम लीग कौंसिल द्वारा स्वीकृत पार्टी के नये विधान के लागू होने पर पाकिस्तान के गवर्नर जनरल श्री जिन्ना मुस्लिम लीग के अध्यक्ष नहीं रहेंगे। कोई भी सरकारी पदाधीन व्यक्ति लीग का अधिकारी नहीं बन सकता। चौ० खलीकुज्जमा पाकिस्तान लीग कौंसिल के अस्थायीअध्यक्ष चुने गये हैं।

समाचार चित्रावलि

स्वराज्य टिकट की आकृतियों के निर्णायक श्री चैंपमैन श्री कृष्णप्रसाद श्री चौधरी श्री कूपर और श्री भास्कर

पं० नेहरु महासमिति में आ रहे हैं।

अ० भा० कांग्रेस महासमिति का एक दृश्य — नेता समिति में बैठे हैं।

काश्मीर की अस्थायी सरकार के प्रमुख श्री अब्दुल्ला दिल्ली में भाषण दे रहे हैं।

काश्मीर के मोर्चे पर आक्रमणकारियों से छीनी गई बन्दूकों का निरीक्षण सरदार बलदेवसिंह कर रहे हैं।

श्री जयरामदास दौलतराम पशुप्रदर्शिनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

हरद्वार में गांधीजी की भस्म विसर्जन का जलूस।

अ० भा० कांग्रेस महासमिति द्वारा स्वीकृत कांग्रेस का नया विधान

पिछले दिनों अ० भा० कांग्रेस कमेटी ने अपने जिस नये विधान को स्वीकृत किया, वह यहां दिया जा रहा है। इस सम्बन्ध में गांधीजी जो अन्तिम परामर्श देश को दे गये थे, वह पाठक आगामी पृष्ठ पर पढ़ेंगे। दोनों में अन्तर है, या नहीं, इस विवादास्पद प्रश्न का निर्णय भी पाठक स्वयं करेंगे।

भारतीय कांग्रेस का लक्ष्य हिन्द की जनता की भलाई और उन्नति करना तथा हिन्द में सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों की समानता के आधार पर एक ऐसे सहकारी जनतन्त्र का निर्माण करना है, जिसका लक्ष्य विश्वशांति और मैत्री भाव हो।

मताधिकार

कोई भी व्यक्ति जिसकी उम्र २१ वर्ष हो और कांग्रेस के उद्देश्यों को स्वीकार करता हो, कांग्रेस की आरम्भिक पंचायतों के चुनाव में वोट दे सकेगा।

आरंभिक कांग्रेस पंचायत

गांव, गांवों के एक समूह अथवा नगर के एक भाग में एक आरम्भिक कांग्रेस पंचायत होगी।

प्रतिनिधियों के चुनाव

इन पंचायतों के चुनाव के लिये देश को विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित किया जायगा और पंचायतों के लिये चुने गये सदस्यों का अनुपात लगभग ५०० लोगों पर १ सदस्य का होगा। कोई पंचायत ५ व्यक्तियों से कम की नहीं होगी। पंचायत के चुनाव के लिए उम्मेदवार को नीचे लिखी शर्तों पर हस्ताक्षर करने होंगे :—

वह आदतन खादी पहनेगा और मादक द्रव्यों का सेवन न करेगा। किसी प्रकार की भी अस्पृश्यता न रखेगा। सभी सम्प्रदायों की एकता में विश्वास करेगा और सभी धर्मों का आदर करेगा। वह सभी के लिये — चाहे वे किसी भी जाति, धर्म या लिंग के हो, उन्नति के लिये समान अवसर दिये जाने में विश्वास करेगा।

आरंभिक पंचायतों के सदस्यों की फीस १) वार्षिक होगी। आरम्भिक पंचायत के चुनाव में उम्मेदवारों को १) फीस देनी होगी। जो उम्मेदवार चुनाव में सफल हो जायगे उन्हें उस वर्ष की वार्षिक फीस नहीं देनी होगी।

आरम्भिक पंचायतों के सदस्य कांग्रेस के लिये प्रतिनिधि चुनेंगे। इन्हीं प्रतिनिधियों से प्रांतीय कांग्रेस का चुनाव होगा। ये प्रतिनिधि जिला और ताल्लुक कांग्रेस कमेटियों के भी सदस्य होंगे। प्रत्येक प्रांत में प्रति १ लाख पर १ प्रतिनिधि कांग्रेस के लिये चुने जायगे।

प्रभावशाली सदस्य

प्रभावशाली सदस्यों को नीचे लिखी शर्तें स्वीकार करनी होंगी :—

वह हाथ की कती बुनी खादी आदतन पहनेगा और मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करेगा; किसी प्रकार की भी अस्पृश्यता न रखेगा; सभी सम्प्रदायों की एकता में विश्वास रखेगा और सभी धर्मों का आदर करेगा, सभी व्यक्तियों के लिये समान रूप से उन्नति का अवसर देने का समर्थन करेगा।

(२) वह प्रतिदिन अपना कुछ समय कांग्रेस द्वारा समय-समय पर घोषित राष्ट्रीय और रचनात्मक कार्यों में लगावेगा और इस प्रकार के एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करेगा।

प्रभावशाली सदस्य ही कांग्रेस कमेटियों के चुनाव के लिये खड़े हो सकेंगे। लेकिन आरम्भिक कांग्रेस पंचायत के लिये खड़े होने वाले उम्मेदवारों की शर्तें आरम्भिक कांग्रेस पंचायत के नियमों के सिलसिले में उल्लिखित है।

निर्वाचित कांग्रेस कमेटियों — जिसमें आरम्भिक कांग्रेस पंचायत भी है — का कोई भी सदस्य किसी अन्य दल का जिसका पृथक् विधान, कार्यक्रम और सदस्यता के नियम हैं — सदस्य न हो सकेगा।

कार्य काल

आरम्भिक कांग्रेस पंचायत तथा अन्य कांग्रेस कमेटियों का कार्य काल ३ वर्ष होगी।

रियासतें

जो रियासतें हिन्द में शामिल होती हैं, उनके साथ हिन्द के दूसरे भागों की तरह ही व्यवहार किया जायगा। इन रियासतों के या तो अलग प्रान्त बनाये जायंगे अथवा मौजूदा प्रांतों में मिला दिया जायगा। इस सम्बन्ध में कार्यसमिति जैसा उचित समझेगी करेगी।

प्रान्त

कांग्रेस हिन्द में कार्य करेगी और इसके नीचे लिखे प्रान्त होंगे :—

अजमेर मेरवाड़ा, आन्ध्र, आसाम, दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक, केरल, महाकोशल, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिमी बंगाल, बम्बई सिटी, नागपुर, पूर्वी पंजाब, तामिलनाड, युक्तप्रांत, उत्कल, विदर्भ और ऐसी रियासतें, जिनका अलग प्रांत बनाया जायगा।

वार्षिक अधिवेशन

कांग्रेस का अधिवेशन प्रतिवर्ष होगा।

कांग्रेस नीचे लिखी संस्थाओं को स्वीकार करेगी :—

(१) अखिल भारतीय चरखा संघ।

(२) अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ।

(३) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ।

(४) हरिजन सेवक संघ।

(५) गोसेवा संघ।

नोट.— कांग्रेस कार्य कर्त्ताओं तथा कांग्रेस पंचायतों के लिए वास्तविक कार्यक्रम कार्यसमिति तैयार करेगी।
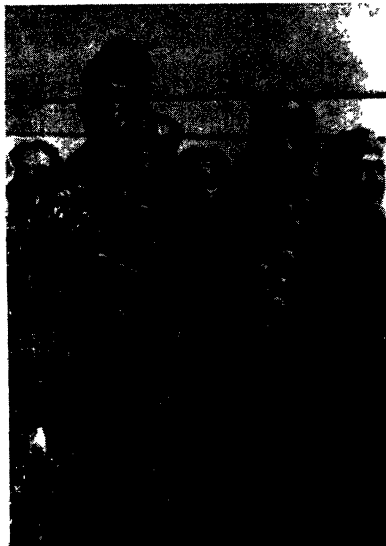
काश्मीर के प्रश्न पर सुरक्षासमिति में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के नेता श्री गोपालस्वामी आयंगर और श्री शेख अब्दुल्ला भारत वापस आये हैं।

शरणार्थी विद्यार्थी सहायताकोश के लिए बाजार — आयोजन का एक दृश्य।

एक छात्रा ज्योतिषी का रूप धारण कर हाथ दिखाने वालों की प्रतीक्षा में खड़ी है।

बापू कांग्रेस का कैसा विधान चाहते थे ? : गांधीजी का अंतिम आदेश

म० गांधी ने अपने महाप्रस्थान से एक दिन पूर्व २६ जनवरी को कांग्रेस के जिस नवविधान का निर्माण किया था, उससे उनके हृदय की उच्च आकांक्षाएं प्रकट होती हैं। वह यहां दिया जा रहा है।

देश का बंटवारा होते हुए भी, हिन्दी राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा तैयार किये गये साधनों के ज़रिये हिंदुस्तान को आज़ादी मिलने के कारण मौजूदा स्वरूपवाली कांग्रेस का काम अब ख़त्म हुआ — यानी प्रचार के वाहन और धारा सभा की प्रवृत्ति चलाने वाले तन्त्र के नाते उसकी उपयोगिता अब समाप्त हो गयी है। शहरों और कस्बों से भिन्न उसके सात लाख गांवों की दृष्टि से हिन्दुस्तान की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक आज़ादी हासिल करना अभी बाकी है। लोकशाही के मकसद की तरफ़ हिन्दुस्तान की प्रगति के दरमियान फौजी सत्ता पर मुल्की सत्ता को प्रधानता देने की लड़ाई अनिवार्य है। कांग्रेस को हमें सियासी पार्टियों और साम्प्रदायिक संस्थाओं के साथ की गन्दी होड़ से बचाना चाहिए। इन और ऐसे ही दूसरे कारणों से अखिल भारत कांग्रेस कमेटी नीचे दिये हुए नियमों के मुताबिक अपनी मौजूदा संस्था को तोड़ने और लोक-सेवक-संघ के रूप में प्रकट होने का निश्चय करे। ज़रूरत के मुताबिक इन नियमों में फेरफार करने का इस संघ को अधिकार रहेगा।

गांव वाले या गांव वालों जैसी मनोवृत्ति वाले पांच बालिग मर्दों या औरतों की बनी हुई हर एक पंचायत एक इकाई बनेगी।

पास-पास की ऐसी हर दो पंचायतों की, उन्हीं में से चुने हुये एक नेता की रहनुमाई में, एक काम करने वाली पार्टी बनेगी।

जब ऐसी १०० पंचायतें बन जाय तब पहले दरजे के पचास नेता अपने में से दूसरे दरजे का एक नेता चुनें और इस तरह पहले दरजे के नेता दूसरे दरजे के नेता के मातहत काम करें। दो सौ पंचायतों के ऐसे जोड़ कायम करना तब तक जारी रखा जाय, जब तक कि वे पूरे हिन्दुस्तान को न ढक लें। और बाद में कायम की गई पंचायतों का हर एक समूह पहले की तरह दूसरे दरजे का नेता चुनता जाय। दूसरे दरजे के नेता सारे हिन्दुस्तान के लिये सम्मिलित रीति से काम करें और अपने अपने प्रदेशों में अलग अलग काम करें। जब ज़रूरत महसूस हो, तब दूसरे दरजे के नेता अपने में से एक मुखिया चुनें, जो चुनने वाले चाहें तब तक, सब समूहों को व्यवस्थित करके उनकी रहनुमाई करे।

(प्रान्तों या ज़िलों की अन्तिम रचना अभी तय न होने से सेवकों के इस समूह को प्रान्तीय या ज़िला समितियों में बांटने की कोशिश नहीं की गई। और किसी भी वक़्त बनाये हुये समूह या समूहों को सारे हिन्दुस्तान में काम करने का अधिकार रहेगा। सेवकों के इस समुदाय को अधिकार या सत्ता अपने उन स्वामियों से यानी सारे हिन्दुस्तान की प्रजा से मिलती है, जिसकी उन्होंने अपनी इच्छा से और होशियारी से सेवा की है।)

१. हरएक सेवक अपने हाथों कते हुये सूत की या चरखा-संघ द्वारा प्रमाणित खादी हमेशा पहनने वाला और नशीली चीज़ों से दूर रहने वाला होना चाहिये। अगर वह हिन्दू है, तो उसे अपने में से और अपने परिवार में से हर किस्म की छुआछूत दूर करनी चाहिये और जातियों के बीच एकता के, सब धर्मों के प्रति समभाव के और जाति, धर्म या स्त्री-पुरुष के किसी भेदभाव के बिना सबके लिये समान अवसर और दरजे के आदर्श में विश्वास रखने वाला होना चाहिये।

२. अपने कार्यक्षेत्र में उसे हर एक गांव वाले के निजी संसर्ग में रहना चाहिये।

३. गांव वालों में से वह कार्यकर्त्ता चुनेगा और उन्हें तालीम देगा। इन सब का वह रजिस्टर रखेगा।

४. वह अपने रोज़ाना के काम का रेकार्ड रखेगा।

५. वह गांवों को इस तरह संगठित करेगा कि वे अपनी खेती और गृह-उद्योगों द्वारा स्वयंपूर्ण और स्वावलम्बी बनें।

६. गांववालों को वह सफाई और तन्दुरुस्ती की तालीम देगा और उनकी बीमारी व रोगों को रोकने के लिये सारे उपाय काम में लायेगा।

७. हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की नीति के मुताबिक नई तालीम के आधार पर वह गांव वालों की पैदा होने से मरने तक सारी शिक्षा का प्रबन्ध करेगा।

८. जिनके नाम मतदाताओं की सरकारी लिस्ट में न आ पाये हों, उनके नाम वह उसमें दर्ज करायेगा।

९. जिन्होंने मत देने के अधिकार के लिये ज़रूरी योग्यता अभी हासिल न की हो, उन्हें उसे हासिल करने के लिये वह प्रोत्साहन देगा।

१०. ऊपर बताये हुये और वक़्त-ब-वक़्त बढ़ाये हुये मकसद पूरे करने के लिये, योग्य फ़र्ज अदा करने की दृष्टि से, संघ के द्वारा तैयार किये गये नियमों के मुताबिक वह खुद तालीम लेगा और योग्य बनेगा।

संघ नीचे की स्वाधीन संस्थाओं को मान्यता देगा:

१. अखिल भारत चरखा-संघ
२. अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघ
३. हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ
४. हरिजन सेवक-संघ
५. गोसेवा-संघ

संघ अपना मकसद पूरा करने के लिये गांव वालों से और दूसरों से चंदा लेगा। गरीब लोगों का पैसा इकट्ठा करने पर खास ज़ोर दिया जायगा।

शरणार्थी विद्यार्थियों की सहायता के लिए प्रधानमन्त्री पं० नेहरू ने जिस कोष की अपील की है, उसके लिए इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स कालेज में मनोरंजक बाजार का आयोजन किया गया था। कन्याओं द्वारा वस्तुओं की बिक्री के दो दृश्य।

पाकिस्तान का मेहमान

[श्री गोविन्ददास विनीत]

जब भारत के कोने कोने में कण्ट्रोल और राशनिंग ने रईसों को भी रूखी ज्वार और बाजरा खाने के लिये बाध्य कर दिया था, तब भी जहां खीर और मालपुए उतरा कर खाये जाते थे; जब तीन झोंपड़ियों वाले ग्राम में भी हिन्दू-मुस्लिम-वैमनस्य के कारण वैषम्य, अविश्वास, भय, आशंका और सतर्कता ने गुप्त हथियारों की योजना करा दी थी, तब भी जहा दोनों का सहभोज हो रहा था और एक-दूसरे के यहा व्यवहार रूप में भोजन को जा रहे थे, वहा भी अखबारी तूफान आखिर आकर छूटा। रेल, डाकखाना और तिकड़मी दुनिया या यों कहिये कि पढ़े-लिखे समाज से बहुत दूर होकर भी वह प्रान्त पारस्परिक विद्वेष की विषैली वायु से अछूता न रह सका। परन्तु प्रसन्नता कहिये या दुःख यह छूत-रोग केवल स्लाम नाम के जीवन खां की बीबी को ही हुआ। वह कुछ पढ़ी लिखी थी और उसका भाई कभी-कभी उर्दू का अखबार भी अपने पत्र के साथ भेज दिया करता था।

'पाकिस्तान' जीवन ने अन्न-भोज से लौट कर अपनी बीबी को अखबार में पढ़ते सुना।

'सब मुसलमान पाकिस्तान में रहेंगे और हिन्दू हिन्दोस्तान में'—बीबी ने अखबार की तह करते हुए कहा।

'कहा है यह पाकिस्तान ? मैं भी अभी भोजन करते वक्त सुन रहा था। बड़े महराज कह रहे थे — 'जीवन ! पाकिस्तान जाओगे ? मेरी समझ में कुछ नहीं आया और मैंने उन्हें कोई जवाब भी न दिया। अब तुम भी ...'

'भाई जान जानें, कहा है ? उन्होंने लिख दिया है बारीक हरफों में इसी पर कि तैयारी करके आ जाओ। साथ ही चलेंगे। चलोगे न ?'

जीवन का असली नाम था जूना खा। उसे कहना पड़ा — 'बिरादरी और रिश्तेदारों का साथ कैसे छोड़ सकता हूं ? फिर आगे बिटिया भी तो सयानी है, इसका विवाह तो बिरादरी में ही होगा। पर यह जायदाद, बैल ?...' वह असमंजस में पड़ गया। उसकी फसल खेत में खड़ी थी।

'दस-पांच दिन पीछे सही। धीरे धीरे सब ठिकाने लगा दो। मैं भाई जान को लिखे देती हूं।'

'हां, हजार-दो हजार का डेरा एक ही दिन में तो मिटाया नहीं जा सकता।'—जीवन चिलम ढूंढने लगा।

× × ×

'कैसे तैयार हों भाई जान ! रुपये के आठ आने हो रहे हैं। फकीरों का घर थोड़े ही है कि कमली उठायी और चल बाबा' —अपने भाई कासिम को जीवन की बीबी खाना खिलाती हुई कह रही थी। जीवन रस्सा बट रहा था।

'गनीमत समझ रजिया ! हम लोग तो रुपये की चीज दो आने में छोड़कर आ रहे हैं और फिर पाकिस्तान में रुपये की क्या कमी ? अरबों-खरबों का माल हम लोगों के हाथ आ चुका है — इन हिन्दुओं का। वह सब क्या होगा ? क्या उसका एक ही मालिक होगा ? नहीं — सब मुसलमानों में तकसीम होगा। पाकिस्तान में सब बराबर, न कोई, अमीर न गरीब। हमें जरूरत क्या, यहा के माल की। सिर्फ रास्ते भर का खर्च चाहिये।'— कासिम लीग का नया मेम्बर था और लीगियों के दिये हुए प्रलोभनों के बल पर ही बोल रहा था। उसका दिल और दिमाग कह रहा था — पाकिस्तान का गेट देखा कि मक्का मदीना पा लिया।

'जरूर ले चलो मामू ! मां चाहे न जाय, पर मैं देखूंगी पाकिस्तान' रजिया की लड़की फातिमा बोल उठी। चक्की चलाते चलाते कुछ देर रुक रही थी वह। उम्र थी लगभग चौदह साल।

मैं कब मना करती हूं फातिमा ! बाप को समझाले, जो माया के पीछे मरे जा रहे हैं।' — रजिया ने कहा। उसे पता न था कि जीवन बगल के ही दालान में है।

जीवन से अब रहा न गया। वहीं से बोला — 'मैं सड़क पर खड़ा हूं। तुम सब आ जाना। घर गृहस्थी को चाहे बेच कर चाहे आग लगा कर। माई बहिन की बातों का कुछ ठिकाना ही नहीं पड़ता। चलो, मैं' — वह कहते कहते वहीं आ पहुंचा था।

'यों चलने से क्या ? कुछ सबाब करके चलो।' — कासिम ने कहा।

'सबाब क्या ? जीवन ने पूछा।

'यानी' ... कासिम बीच में ही रुक कर रजिया का मुंह देखने लगा। 'ठहरो— मैं तुम्हें समझाऊंगा — सबाब' ... उसने फिर कहा।

× × ×

'कौन, जीवन !' — गोपापण्डित के इतना कहते ही जीवन के हाथ से कुल्हाड़ी छूट कर उनके सिराहने की ओर गिर पड़ी और मुंह से निकला — 'हा महाराज !'

उसकी आवाज का कम्प बादलों की गड़गड़ाहट में समझ न पड़ता था। बिजली की कौंद ने उसकी सूरत अवश्य दिखा दी थी।

'अभी से पसर (बुन्देल खण्ड की ओर रात में भैंसों का चराना 'पसर' कहलाता है) ले जाकर क्या करेगा ? आधी भी तो नहीं हुई। हाल ही तो आल्हा बन्द हुआ है। हमने तो आंख भी नहीं मीची। तमाखू चाहिये ? वहीं रखा है अगियाने (अलाव) पर।'

'कुल्हाड़ी गिर पड़ी है महाराज ! घुप अंधेरी में कुछ भी तो नहीं सूझता। मचेरिये (पलग के पाये) से टकरा गया हूं।' जीवन कैसे कहदे कि तुम्हारा खून करके सबाब (पुण्य) लेने आया था। वह गोपा की साझी में खेती करता था और उनकी भैंसें भी चराता था। निजी भूमि उसके पास न थी।

'यहीं हमारे सिरहाने की तरफ टटोलो। जीव जन्तु का डर है।' — गोपा पंडित बैठ गये थे, जीवन को कुल्हाड़ी उठा कर भैंसों के खिरक की तरफ बढ़ता हुआ देखा उन्होंने।

सुबह चौपाल पर बातें हो रही थीं— जीवन अपने बाल बच्चों सहित रात ही में भाग गया। गोपा पण्डित असमंजस में थे — जब उसने भैंसें नहीं खोलीं, तब उतनी रात आने का कारण ?

× × ×

'गेट पास ?' — एक तुर्की टोपी वाले ने जीवन को रोकते हुए पूछा।

जीवन अपने पीछे आते हुए लोगों की तरफ देखता हुआ खड़ा रह गया।

'रुके रहो सभी, यहीं सामान रखलो, कहते हुए कासिम ने गेट कीपर से पूछा— 'कहां मिलेगा ? साहब !'

'सामने के आफिस में जाओ। कहां के हैं ये जगली मेंढ़े' गेट कीपर ने हंस कर पूछा और एक उड़ती सी नजर फातिमा पर डाली।

जीवन को उसके सालों ने सलवार और पाजामा पहिनाकर सचमुच ही एक जंगली या विदूषक सा बना दिया था। सर पर वही मैला सा दुपट्टा और बुन्देलखण्डी जूता।

'देहाती हैं बेचारे, जान बचाके भागे .. ..'

'बात की फुरसत नहीं, जाओ।'— गेट कीपर शरणार्थियों के कटक-कटक की ओर देखने लगा। रजिया, फातिमा और कासिम की बीबी भी उस मेले में उलझ सी गई। यहां यह कहना अनुचित न होगा कि एक सप्ताह से उनमें से किसी ने भी भर पेट खाना न खाया था।

कासिम और जीवन ने लौट कर देखा — वहा एक भी स्त्री जाति में से न थी और न वह असबाब। सिर्फ जीवन की एक बिखरी सी पोटली पड़ी थी, जिसमें थीं — तीन फटी पुरानी गुदड़िया।

एक ने दूसरे का मुंह देखा। 'फातिमा ?......' जीवन ने न जाने किससे पूछा।

'और वह गेट बाबू ?' — कासिम चारों तरफ नजर फेंक रहा था।

'क्यों मां ! यहा से तीन औरतें......' जीवन ने एक बुढ़िया से पूछना चाहा। 'अमा ! तुम ऐसे सैकड़ों यहां औरतों की तलाश में घूम रहे हैं। मेरी आठ साल की बच्ची का छः दिन से पता नहीं।' बुढ़िया ने हैरानी की हालत में जवाब दिया।

'पाकिस्तान की मेहमानी है मा ! दिल्लगी थोड़े ही है।' उसी के पास बैठा हुआ दूसरा शरणार्थी कह रहा था। जो अपना सब कुछ गुडों के हवाले करके पाकिस्तान सरकार से न्याय की आशा की प्रतीक्षा में था।

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता उद्बोधन मार्ग है
इसलिये
हिन्दू-संगठन
[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]
पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोह-निद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)
विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

हमारी नयी आर्थिक नीति क्या हो ?

न्यूनतम जीवनस्तर और न्यूनतम आय – उन्नति का पूर्णअवसर – ग्रामोद्योग के विकास में पूर्ण शक्ति – धन का न्यायोचित वितरण – न्यूनतम और अधिकतम आय में २० गुना अन्तर – जमींदारीप्रथा की समाप्ति – कृषि का विकास – अधिकतम उत्पादन – प्रादेशिक स्वावलम्बन – नये बड़े धन्धे सरकार खोले – ५ वर्ष बाद धन्धों का राष्ट्रीयकरण – धन्धों के प्रबन्ध में श्रम का सहयोग।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने देश की आर्थिक योजना के सम्बन्ध में विचार करने के लिए जो उपसमिति बनाई थी, उसकी इस रिपोर्ट को अ० भा० कांग्रेस कमेटी ने पास किया है।

उद्देश्य

(१) केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों के सारे आर्थिक कार्य तथा तत्सम्बन्धी कानूनों में मुख्य विचार यह होना चाहिए कि किस प्रकार जनता के जीवन यापन का स्तर शीघ्र तथा क्रमशः ऊंचा उठे। हमारी आर्थिक उन्नति की सभी योजनाओं का व्यावहारिक लक्ष्य होना चाहिए उचित काल के अन्दर शारीरिक तथा सामाजिक भलाई-सम्बन्धी आवश्यकताओं के विषय में राष्ट्रीय न्यूनतम जीवन-स्तर की प्राप्ति।

(२) राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था का एक समानान्तर उद्देश्य होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण रूप से कार्य करने के अवसर की ऐसी व्यवस्था, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति समाज की सेवा में अपनी सारी शक्ति लगा सके एव अपनी सर्वोच्च उन्नति कर सके। पूरे काम की ऐसी व्यवस्था का फल यह होना चाहिए कि विशेषकर भूमि तथा ग्रामोद्योग में हमारी सारी जन-शक्ति खप सके।

(३) इस दोहरे उद्देश्य की शीघ्रातिशीघ्र पूर्ति के लिए पर्याप्त एव बढ़ते हुए उत्पादन की आवश्यकता अनिवार्य है। सरकार की सारी योजना एवं कार्य इस तरह होने चाहिए, जिससे राष्ट्र की सारी जन शक्ति एव भौतिक साधनों को पूर्ण रूप से काम में लगाया जा सके।

(४) न्याय पर सामाजिक व्यवस्था की स्थापना तथा जनता के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने के लिए वर्तमान आय एवं धन का न्यायोचित वितरण तथा देश की औद्योगिक उन्नति के समय आर्थिक असमानता को रोकना आवश्यक है।

असमानता को मिटाने के कार्य में सर्व-प्रथम उन लोगों की आय घटाने पर ध्यान दिया जाय, जिनकी आय राष्ट्रीय न्यूनतम आय से अत्यधिक हो।

आय का सर्वोच्च-स्तर निश्चित कर देना चाहिए, जो राष्ट्रीय न्यूनतम आय से ४० गुने से किसी तरह अधिक न हो। न्यूनतम आय का आधार भोजन, वस्त्र इत्यादि प्राथमिक आवश्यकताएं होना चाहिए। सर्वोच्च आय-स्तरको धीरे धीरे नीचे लाना चाहिए, जबतक वह राष्ट्रीय न्यूनतम आयसे बीस गुना न रह जाय। न्यूनतम आयस्तर का निर्णय समय समय पर जीवन-व्यय तथा जनता की उत्पादन शक्ति को ध्यान में रख कर करना चाहिए। इन नियमों के उल्लंघन को रोकने के लिये समय-समय पर पूंजी तथा आय के आंकड़े एकत्र करने चाहिए। राष्ट्रीय आय की गणना की जानी चाहिए।

(५) समुचित उपयोगी कार्य करने के अवसर के विस्तृत वितरण के लिए तथा शोषण के अवसरों को कम से कम कर देने के लिये देश के आर्थिक संघटन का कार्य, पर्याप्त जीवन-स्तर और देश की आन्तरिक तथा बाह्य दशा को ध्यान में रखते हुये, जहा तक हो सके, विकेन्द्रीकरण के आधार पर होना चाहिये। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए देश की आर्थिक उन्नति की योजना बनाने में, राष्ट्रीय एव प्रादेशिक स्वावलम्बन तथा ग्रामीण और नागरिक आर्थिक संतुलन की ओर भी ध्यान रखना चाहिये।

कृषि

(१) संतुलित कृषि के आधार पर यह निश्चित कर दिया जाय कि प्रत्येक

कांग्रेस की आर्थिक उपसमिति के सदस्य

प्रान्त तथा निर्दिष्ट क्षेत्र कम से कम कितनी भोजन सामग्री, वस्त्र और गृह निर्माण की सामग्री उत्पन्न करे।

(२) कृषक तथा राज्य के सभी मध्यवर्ती स्वार्थों का अन्त कर दिया जाय और उनके स्थान की पूर्ति सहकारी समिति जैसी संस्थाओं से की जाय, जिनका उद्देश्य लाभ उठाना न हो।

(३) कृषिजनित वस्तुओं तथा शिल्पजात वस्तुओं और व्यापारिक तथा अन्य सामाजिक सर्विसों का इस प्रकार उचित मूल्य निर्धारित किया जाय कि कृषि द्वारा उत्पादित वस्तुओं का लाभ पूर्ण मूल्य तथा कृषि-मजदूरों को जीवन-वेतन मिल सके।

(४) साधारण कृषक इतना साधनहीन है कि उससे उन्नत कृषि-योजना की सारी जिम्मेदारी उठाने की आशा नहीं की जा सकती। इसलिये एक ऐसी केन्द्रीय संस्था (प्रान्तीय) की आवश्यकता है जो उसे अप्रत्यक्ष रूप से बहुधंधी ग्राम सहकारी समिति द्वारा औजार, खाद, बीज, बैल तथा अन्य ऐसी आवश्यक वस्तुएं प्रदान कर सके।

(५) सरकार को भूमि-विलयन रोकन, सिंचाई तथा नालियों के प्रबन्ध जैसे भूमि की स्थायी उन्नति के कार्यों में अनावर्तक व्यय करना चाहिये, जिसमे सरकार के साधन तथा गाव वालों का श्रम लगे।

(६) सभी बच्चों, बालकों, एवं प्रौढ़ों को साधारण शिक्षा के साथ साथ शिल्प-शिक्षा देना भी आवश्यक है। कृषि की बुनियाद पर वर्धा-शिक्षण योजना को अपनाना चाहिये।

(७) प्रान्तीय सरकारों को चाहिये कि वे ऐसे स्कूल तथा प्रदर्शन-फारम स्थापित करें और चलावें जिनमें आभ्यासिक शिक्षा दी जाय और किसान युवकों तथा दक्ष कृषकों को वर्तमान उन्नत कृषि-योजना के साथ ही साथ बही-खाते, बाजार सम्बन्धी तथा कृषि से लगे हुये अन्य व्यापारों की व्यावहारिक शिक्षा मिल सके।

(८) छोटे खेतवाले किसानों में सहकारी कृषि के प्रयोग के लिये सरकार मार्ग दर्शन योजना की व्यवस्था करे।

(९) जिन गांवों में सम्भव हो, उनमें पशुशालाएं तथा पशुचिकित्सालय की स्थापना करके वर्तमान पशुपालन प्रणाली में होने वाले अधिक व्यय एव क्षति को रोकने की हर प्रकार की चेष्टा की जानी चाहिए, जिससे कृषकों के लिए किराये पर पशु मिलना सम्भव हो सके। गायों के दूध देने तथा बच्चे पैदा करने, दोनों कार्य के लिए सांड तथा भ्याऊ का प्रबन्ध होना चाहिए।

(१०) सरकार को एक उद्योगी कृषि तथा सरकारी सूचना विभाग की व्यवस्था करनी चाहिए, जो स्थानीय सरकारी संस्थाओं, ग्राम पचायतों और कृषक संस्थाओं के साथ मिल कर कार्य करे और इस बात का ध्यान रखे कि प्रत्येक ग्राम का इससे प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो।

(११) सभी केन्द्रों में एक ढग तथा योजना के अनुकूल सहकारी बहुधन्धी संस्थाओं तथा उनकी शाखाओं का संगठन किया जाय, जिससे कृषि-ऋण, कृषि द्वारा उत्पन्न माल विक्रय, शहर में से गाव आने वाले प्रस्तुत माल तथा गांवों को कारखानों और औद्योगिक सहकारी समितियों से मिलने वाले माल के मूल्य में कमी हो।

(१२) भूमि व्यवहार के लिए हो और उनसे लोगों को काम मिले। उस भूमि के, जो खेती न करने वाले मालिकों के हाथ में है, या जिसके मालिक किसी अन्य कारण से उसमें खेती न कर सकते हों, व्यवहार का अधिकार ग्राम सहकारी समिति को मिलना चाहिए, किन्तु इसके साथ यह शर्त हो कि कभी भी भूमि का वैध मालिक या उसके वारिस सचमुच खेती करने के लिए उस भूमि पर अधिकार कर सकते हैं। जहां तक नाबालिगों तथा अशक्तों का सम्बन्ध है, भूमि की उपज का कुछ भाग उन्हें देना चाहिए।

(१३) खेतों का अधिकतम क्षेत्रफल (आकार) निश्चित कर देना चाहिए। इससे अधिक भूमि को सरकार ले ले और ग्राम-सहकारी समितियों के आधीन दे दें। छोटे खेत मिला दिये जाय और ऐसी व्यवस्था की जाय कि खेतों के और टुकड़े न हों।

(१४) सरकार को अपनी योजनाओं में नदियों की घाटियों के शीघ्र विकास की ओर सर्व-प्रथम ध्यान देना चाहिये। साथ ही ग्रामो उद्योगधन्धों और खेती के लिए सस्ती बिजली के उत्पादन और वितरण तथा कृषि क्षेत्रों की रक्षित सिंचाई के लिये पर्याप्त जल की व्यवस्था की ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

(१५) राज्य तथा सहकारी समितियों द्वारा बीज गोदामों, ग्राम के यातायात के साधनों, खाद एकत्र करने और उसकी रक्षा करने, पेड़ लगाने ईंधन देने तथा जीवोत्पादक फारमों की व्यवस्था की जानी चाहिये, ताकि सभी खेतों की

(शेष पृष्ठ २१ पर)

हिन्दी जगत् की सुकवि

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

[प्रो० हरीकृष्ण खरे एम० काम]

★

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की आकस्मिक तथा असामयिक मृत्यु पर केवल हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में ही शोक नहीं छाया है परन्तु मध्य प्रान्त के राजनैतिक क्षेत्र में भी शोक के बादल छा गये हैं। रविवार, १५ ता० को वे जबलपुर से नागपुर मोटर कार पर आ रही थीं, मार्ग में मोटर दुर्घटना होने के कारण उनकी मृत्यु हुई। अभी हम पूज्य बापू के शोक से समस्त भी न पाये थे कि यह सूचना हमें मिली। श्रीमती चौहान की अल्पकालिक मृत्यु मध्य प्रान्त के लिये एक हृदय विदारक घटना है। यहा के राजनैतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में उनकी प्रगति किसी से भी छिपी नहीं है।

राजनैतिक क्षेत्र में वह एम० एल० ए० तो थीं ही साथ साथ राजनैतिक लड़ाइयों में वे बराबर भाग लेती रहीं। वह भी स्वतन्त्रता का विगुल बजता वे तिरंगे झंडे के नीचे, देश के प्रति त्याग तथा श्रद्धा से परिपूर्ण हो आ खड़ी होतीं। स्वतन्त्रता संग्राम में वे कभी भी पीछे नहीं हटीं। उन्हें इस देशानुराग के कारण कृष्ण मन्दिर के दर्शन भी करने पड़े।

साहित्यिक क्षेत्र में वे हमारे सामने वीर क्षत्राणी के रूप में आती हैं। उनकी 'झांसी की रानी' शीर्षक कविता में नारी जीवन का उत्साह और अभिवादन एक साथ ही दर्शनीय है।

'बुन्देले हरबोलों के मुख
हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मरदानी वह तो
झांसी वाली रानी थी।

यह कविता देश के हर युवक के मुख पर है। बुन्देलखण्ड में घर घर यह जोशीला गीत सुना जा सकता है।

श्रीमती चौहान की रचनाओं में राष्ट्रीयता का उन्मेष विशेष रूप से है। देशभक्ति के साथ नारी के सरल मनोविज्ञान का सामञ्जस्य इनकी काव्यगत विशेषता है। क्षत्राणी की दर्पमयी और आत्मगौरवपूर्ण निर्भीक वाणी सुभद्रा कुमारी के कण्ठ से निकल कर दिग् दिगन्तर में गूंज उठी है। राष्ट्रीय उन्मेष में शक्ति सचय कर कुमारी जी ने स्वदेश तथा मातृभूमि की पवित्र वेदी पर उन भावपुष्पों की अंजलियां भेंट की हैं जो कभी मलिन नहीं हो सकतीं। 'उनकी राष्ट्रीय कविताओं ने कविता के क्षेत्र में उस बसन्त का प्रादुर्भाव कर दिया है, जहां कोकिलाओं की वाणी में पराधीन देश की हूक तड़प रही है।'

'वीरों का कैसा हो बसन्त' कविता में देश के युवकों से, उनकी खिल खिला की ओर ध्यान आकर्षित करते हुये वे पूछती हैं —

गलबाहें हों या हो कृपाण,
चल चितवन हो, या धनुष-बाण,
हो रस-विलास या दलित त्राण,
अब यही समस्या है दुरन्त,
वीरों का कैसा हो बसन्त?

'राष्ट्रीय स्वाभिमान के क्रोड में मातृत्व की भावना ही श्री सुभद्रा कुमारी की प्रेरक शक्ति है। उन्होंने जननी हृदय से कुछ ऐसी कविताओं की सृष्टि की है, जिन में अनन्य वात्सल्य है। उन्होंने बालजीवन की उन मधुर क्रीड़ाओं को लेखनी की नोक में केन्द्रित कर दिया है, जिनमें वात्सल्य अपनी स्वाभाविक गति-विधि में निर्झर की भांति प्रवाहित हो उठा है।'

'बालिका का परिचय' में वे लिखती हैं।

प्रभु ईसा की क्षमा शीलता
नबी मुहम्मद का विश्वास।
जीव दया जिनवर गौतम की
आओ देखो इसके पास॥
परिचय पूछ रहे हो मुझसे
कैसे परिचय दूं इसका।
वही जान सकता है इसको
माता का दिल हो जिसका॥

'इसका रोना' कविता में तो वात्सल्य शब्द शब्द में माता के अनुराग के साथ है।

तुम कहते हो मुझको
इसका रोना नहीं सुहाता है।
मैं कहती हूं इस रोने से
अनुपम सुख छा जाता है॥

'मेरा नया बचपन' में तो स्वयं अपनी बालिका के साथ बालिका बन जाती है और इस भांति अपने बाल्यकाल का अनुभव कर लेती हैं।

किये दूध के कुल्ले मैंने
चूस अंगूठा स्वाद लिया।
किलकारी कल्लोल मचाकर
सूना घर आबाद किया॥

× × ×

मैं बचपन को बुला रही थी
बोल उठी बिटिया मेरी।
नन्दन वन सी फूल उठी यह
छोटी सी कुटिया मेरी॥
'मां ओ' कह कर बुला रही थी
मिट्टी खा कर आई थी।
कुछ मुंह में कुछ लिये हाथ में
मुझे खिलाने आई थी॥

× × ×

पाया मैंने बचपन फिर से
बचपन बेटी बन आया।
उसकी मञ्जुल मूर्ति देख कर
मुझ में नवजीवन आया।
मैं भी उसके साथ खेलती
खाती हूं तुतलाती हूं।
मिल कर उसके साथ स्वय
मैं भी बच्ची बन जाती हूं।

'मुकुल' और 'त्रिधारा' में आपकी कविताएं संकलित की गई हैं। आप सफल कहानीकार भी थीं। 'बिखरे मोती' आपकी कहानियों का संग्रह है। सामाजिक क्षेत्र में भी वे आधुनिक महिला आन्दोलन की प्रमुख कार्यकर्त्री थीं। प्रान्त के महिला उत्थान में उनका अधिक हाथ रहा है। आज उनके निधन से सामाजिक जीवन में एक ऐसी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना असम्भव सा प्रतीत होता है।

परिचय

आप का जन्म १९०४ में प्रयाग में हुआ था। आप के पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। आप के पिता भी संगीत तथा कविता के प्रेमी थे। आप की प्रारंभिक शिक्षा प्रयाग में ही हुई। कविता लिखना आपने अपने छात्र-जीवन में ही आरम्भ कर दिया था। आप प्रयाग के क्रास्थवेट-गर्ल्स कालेज की छात्रा थीं। कुछ दिनों तक आपने काशी के थियोसोफिकल स्कूल में भी शिक्षा पाई थी। आप का विवाह १६ वर्ष की आयु में ही श्री लक्ष्मण सिंह जी चौहान के साथ हो गया था। आप के पति भी अच्छे कवि तथा कांग्रेस के कार्यकर्ता हैं। इसमें सन्देह नहीं कि राजनैतिक क्षेत्र में इन्हें अपने पति से अधिक प्रेरणा मिली थी। आप कुछ दिनों तक झांसी के गर्ल्स-स्कूल में अध्यापिका का कार्य करती रहीं, इसके पश्चात् अपने पति के साथ ही जबलपुर में रहकर, राजनैतिक कार्यों में व्यस्त हो गईं। १९४२ के असहयोग आन्दोलन में आपने सराहनीय कार्य किया। आप को जेल भी जाना पड़ा था। इसके पश्चात् आप प्रान्तीय धारा सभा की सदस्या चुनी गई थीं, और प्रान्त की कई कमेटियों की सदस्या भी थीं।

आज उनकी मृत्यु केवल उनके कुटुम्ब के लिये ही दुःख दायी नहीं है परन्तु मध्य-प्रान्त के लिये तथा हिन्दी साहित्य के लिये एक दुःखपूर्ण घटना है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

[भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा]

मोम बत्तियां बनाओ। लाख बनाओ। **घर बैठे १५०) रुपये माहवार कमायें** स्कूल के चाक बनाओ।

मोमबत्तियों के काम में एक छोटे सांचे की मदद से पांच छः रुपये रोजाना बखूबी कमाये जा सकते हैं। यह केवल १५०) रु० की पूंजी से अच्छी तरह चालू हो सकता है। तरीका सांचे के साथ बताया जाता है। १२ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ४०) रु० डाकखर्च अलग। १७ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ६०) ३४ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ११०) रु० डाकखर्च अलग। २४ स्कूल चाक के सांचे की कीमत ६०)। ३ बत्तियों वाला लाख बनाने का सांचा व लाख बनाने का टरीका कीमत २०) रु० रबड़ के गोले व फूकनों में गैस भरने वाली मशीन की कीमत ५०) रु० आर्डर के साथ आधी कीमत पेशगी आनी जरूरी है।

ए० दीवानचन्द एण्ड कम्पनी (V.A.D.) पोस्ट बैग नं० ३३ A. देहली।

रेलवे के नये किराये व भाड़े

[श्री शिवनारायण]

★

भारत सरकार के रेलवे मन्त्री श्री जान मथाई ने जो नया रेलवे बजट पेश किया है, उसमें रेलवे का किराया या भाड़ा बढ़ाने का कोई प्रस्ताव नहीं रखा गया। वस्तुतः १ जनवरी से ही रेलवे किराये काफी बढ़ गये थे और अब और बढ़ाने की आवश्यकता भी न थी।

इस किरायावृद्धि से पूर्व भारत सरकार ने किरायों की अधिकतम और न्यूनतम सीमाएं निश्चित की हुई थीं। यह सीमाएं पहले दर्जे वाले यात्रियों के लिए ३२ और १२ पाई, दूसरे दर्जे के लिए ७½ और ३ पाई और तीसरे दर्जे वालों के लिए ५ और ३॥ पाई थीं। परन्तु किराए प्रत्येक लाइन पर भिन्न २ थे। विशेष अवस्थाओं में किराये इन सीमाओं से बढ़ा भी दिये जाते हैं, जैसा कि कालका और शिमला के बीच। इसका कारण उन २ स्थानों पर लाइनें इत्यादि बिछाने का असाधारण व्यय होता है।

कब कब किराये बढ़े?

भारतीय रेलों की ३० प्रतिशत आय तीसरे दर्जे के यात्रियों से होती है। इसलिए १९३६ ई० में रेलवे को घाटे से बचाने के लिए तीसरे दर्जे के किरायों में ५० से ३०० मील की दूरी पर किरायों की सीमा २½ पाई से ३ पाई कर दी गई थी। फिर पहली मार्च १९४० ई० से युद्ध के कारण सब दर्जों के किरायों में ६¼ फीसदी वृद्धि कर दी गई। मई १९४२ ई० में पहले, दूसरे, ड्योढ़े और तीसरे दर्जे के १०,७,५ और १४ प्रतिशत किराये क्रमशः फिर बढ़ा दिये गये। पहली मार्च १९४७ ई० से आय और व्यय में बड़ा अन्तर होने के कारण किरायों में फिर ६¼ प्रतिशत की वृद्धि कर दी गई।

इस वर्ष जो किरायों में वृद्धि हुई है, वह इस प्रकार है—

पहली जनवरी से पूर्व प्रति मील	पहली जनवरी के पश्चात प्रति मील
पहला दर्जा	
२४ पाई (३०० मील तक)	३० पाई
१८ पाई (इसके बाद)	
+ ११ प्रतिशत	
दूसरा दर्जा	
१२ पाई (३०० मील तक)	१६ पाई
६ पाई (इसके बाद)	
+ ११ प्रतिशत	
ड्योढ़ा दर्जा	
डाक गाड़ी ५.४७ पाई	९ पाई
साधारण गाड़ी + १३ प्रतिशत	७½ पाई
तीसरा दर्जा	
डाक गाड़ी ३.६ पाई	५ पाई
साधारण गाड़ी + १३ प्रतिशत	४ पाई

इसमें सन्देह नहीं है कि बढ़ते हुए व्यय को पूरा करने के लिए यात्रियों का किराया बढ़ाना अति आवश्यक था। चीजों का भाव बढ़ जाने से और फिर उनको कम भाव पर रेलवे के कर्मचारियों को देने से और इसमें भी अधिक "पे कमीशन" की सिफारिशों को क्रियात्मक रूप देने में, रेलों का व्यय ३६ करोड़ रुपये प्रति वर्ष बढ़ जाने की आशा है। कोयले के दाम बढ़ जाने से भी व्यय में १६ करोड़ रुपये की वृद्धि हो जायेगी। पहली जनवरी से जो किराये बढ़ाये गये हैं, उनसे २१ करोड़ रुपये प्रति वर्ष की आय की सम्भावना की गई है, वह इस प्रकार है —

	पिछली आय (करोड़ों में)	सम्भावित आय (करोड़ों में)	आय में वृद्धि (करोड़ों में)
पहला दर्जा	२.८८	५.२२	२.३४
दूसरा दर्जा	५.०७	७ २२	२.१५
ड्योढ़ा दर्जा	४.४३	७ ४८	२ ०५
तीसरा दर्जा	४४ ७७	५९.१६	१४ ४०
योग	५७ १५	७८ ०९	२० ९४

किराए दूसरे देशों में भी बढ़ाये गये हैं। ब्रिटेन में युद्ध से पहले जितना किराया था। अब उस से ५५% बढ़ा दिया गया है। पाकिस्तान में भी पहली जनवरी से ३७॥% वृद्धि हो जायगी। भारत में किरायों में इस बार जो वृद्धि की गई है, उस में यह विशेषता है कि तीसरे दर्जे वाले यात्रियों पर कम भार डाला गया है। एक और विशेषता यह रखी गई है कि साधारण, एक्सप्रेस और डाकगाड़ियों का किराया भी अलग २ कर दिया गया। डा० मथाई ने अपने पिछले भाषण में कहा था कि सरकार की इच्छा तीसरे दर्जे वाले यात्रियों पर भार डालने की नहीं प्रायः तीसरे दर्जे वाले औसतन ५० मील तक सफर करते हैं। इस फासले के लिए तो पुराने और नये किराये में कोई अन्तर नहीं पड़ा। इस से कुछ अधिक दूरी पर भी किराए का बहुत कम अन्तर पड़ा है। अमृतसर से लुधियाना ८४ मील है, इस पर किराया बढ़ जाने के पश्चात केवल चार आने का ही अन्तर पड़ा है। इतने तक तो डा० मथाई का भाषण ठीक सिद्ध होता है, परन्तु आजकल समय की बचत आवश्यक हो गई है और प्रत्येक व्यक्ति १०० से ५०० मील का फासला कम से कम समय में तय करना चाहेगा। परन्तु डाक गाड़ी से जाने पर उसको पिछले वर्ष की अपेक्षा बहुत अधिक किराया देना पड़ेगा। अब किराया बढ़ जाने के पश्चात अमृतसर से लुधियाना का डाकगाड़ी का किराया २ रु० ३ आने हो गया है, जब कि पिछले वर्ष यही किराया १ रु० २ आने था। इसका अर्थ यह है कि लग भग ५०% वृद्धि हो गई। परन्तु कठिनाई यह है कि डाक, एक्सप्रेस और साधारण गाड़ियों की चाल में कोई विशेष अन्तर नहीं दिखाई देता, इस लिए जनता को पहले की अपेक्षा बहुत अधिक किराये देने पड़ रहे हैं। इतना अधिक किराया बढ़ा कर इस १४४० करोड़ रुपये की आय में वृद्धि हुई है।

नए किराये में एक और न्यूनता यह है कि दूरी चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न हो, उस पर किराया एक ही हिसाब से लगेगा इसके विपरीत पहले दूरी बढ़ते जाने के साथ २ किराए का दर कम होता जाता करता था। यहां इस व्यापक नियम का बिल्कुल विचार नहीं किया गया। कि बहुत वस्तु लेने वाले से थोड़ी वस्तु की अपेक्षा अधिक दर लगाया जाता है। लम्बी यात्रा करने वालों को इस से बहुत नुकसान पहुंचेगा। देहली से कलकत्ता का पहले दरजे का किराया पिछले साल ९६ रु० २ आने था, परन्तु अब १४२ रु० १ आना होगा। डाक गाड़ी के तीसरे दरजे का किराया २३ रु० ९ आने होगा, हालांकि पिछले साल १३ रु० १५ आने था। यह बात तो ठीक है कि साधारण गाड़ियों का किराया बहुत नहीं बढ़ा, परन्तु लम्बे सफर के लिए भारत की सुस्त गाड़ियों में जाना कौन पसंद करेगा? साधारण गाड़ियों और डाकगाड़ियों के किरायों में बहुत अन्तर रखा गया है। अनुभव यह बतलाता है कि लम्बे सफर में यदि समय थोड़ा लगे और किराये की भी कुछ बचत हो जाये तो लोग मोटर में जाना अधिक पसन्द करते हैं। इसलिए हमारा तो यह विचार है कि शीघ्र ही सरकार को फिर पहले वाले किरायों पर विचार करना होगा, नहीं तो पहले दूसरे दर्जे वाले मन्त्री तो हवाई जहाज में चले जायगे और तीसरे दर्जे वाले मोटर में जाना अधिक पसन्द करेंगे।

मालगाड़ी के भाड़े

मालगाड़ी के भाड़े बहुत नहीं बढ़ाये गये, क्योंकि वह पहले ही पर्याप्त बढ़े हुए हैं। अब जो वृद्धि की गई है, उससे केवल १०.०५ करोड़ रुपये वार्षिक आय की सम्भावना है। माल का भाड़ा बढ़ाने का सबसे अच्छा यही उपाय है कि माल के बहुत से विभाग बना दिए जायें। पहली जनवरी से पूर्व

डा० जानमथाई

१६ ऐसे भाग बनाए जा चुके थे। अब इन में से पहले ६ पर ०४ पाई प्रति मन प्रति मील किराया बढ़ा दिया गया है। यह भाड़ा सारी दूरी के लिए एक जैसा ही होगा। दूसरे दस भागों में भी, जो कि अब रह गये हैं, पहले ६०० मील पर भाड़ा बढ़ा दिया गया है, परन्तु इससे अधिक दूरी के लिए किराये पहली पहले की तरह रहने दिए गये हैं। अधिकतम सीमा पहले की तरह अब भी १२७ पाई प्रति मन प्रति मील रखी गई है।

मालगाड़ी का किराया बढ़ाने का यह उपाय है कि आरम्भ के भाड़े बढ़ा दिये जाय। देखने में तो ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसा करने से आय बहुत बढ़ जाएगी। परन्तु वास्तव में ऐसा होता है कि २० प्रतिशत माल प्रामाणिक भाड़े से भी कम भाड़े पर बुक किया जाता है। फरवरी १९४७ ई० के बजट में मथाई ने कहा था कि रेलों को अधिकतम सीमा से बढ़ने के बिना ही अपनी आय बढ़ानी चाहिए। इसके लिए उन्होंने यह प्रस्ताव किया था कि पास पास वाले स्टेशनों के बीच जो माल बुक किया जाता था, उस पर किराया बहुत कम लिया जाता था, क्योंकि उसमें बहुत आय होती थी परन्तु अब ऐसा नहीं है, अब किराये लगभग दुगने कर दिए गये हैं।

आजकल जो माल के किराये बढ़ाये गये हैं, उनमें यह विशेष ख्याल रखा गया है कि अनाज के किरायों में कोई वृद्धि न होने पावे और कपड़े पर भी अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़े। परन्तु कोयले और फौलाद को इसमें शामिल नहीं किया गया, इसलिए उनके भाव में ४ आने प्रति टन और २० प्रतिशत भाड़ा वृद्धि होने की आशा है। आय बढ़ाने के लिए निम्नलिखित कुछ और भी उपाय किए गए हैं —

(१) कई स्थानों पर १९३८-३९ वाले किराए लागु के, जो कि अब के

[शेष पृष्ठ १८ पर]

दामोदर नदी के संकट पर विजय की योजना

चीन की हांग हो अर्थात् मृत्यु की नदी के नाम से तो सारे ही भूगोल के विद्यार्थी परिचित होंगे। इसका नाम ही उसके गुणों का परिचायक है; किन्तु दक्षिण-पूर्वी भारत की दामोदर नदी अपने गुणों में इतनी ही भयानक होने के बाद भी दामोदर नाम से पुकारी जाती है।

दामोदर नदी का उद्गम पश्चिमी बिहार में छोटा नागपुर के पर्वतों में है। वहां से निकलकर यह नदी दक्षिण पूर्व की ओर कोई ३१६ मील मन्द तथा कहीं कहीं असाधारण रूपेण तीव्रगति से बहती हुई कलकत्ते से ३० मील दक्षिण एक स्थान पर हुगली से मिल जाती है।

यह नदी भारत की और नदियों के समान पहाड़ों पर की बर्फ गलने से नहीं उत्पन्न होती। यह तो बरसाती पानी की एक धारा है, जो नदी रूप होकर अपनी विनाश लीला बखेरती भारत के इस प्रदेश में बहती है। इसकी तह की मिट्टी में कुछ ऐसे धातुओं का सम्मिश्रण है जो पानी सोख नहीं सकतीं। इसके कारण शीघ्र ही बाढ़ आ जाना इसकी प्रकृति है। जब से इस प्रदेश के और विशेषकर इस नदी के दोनों ओर के जंगल काट लिये गए हैं, इसका रूप और भी भयानक हो गया है, क्योंकि पहले तो घने जंगली वृक्षों की शाखाएं अपने सहज गुण के अनुसार पर्याप्त मात्रा में पानी सोख लेती थीं और धीरे धीरे उसे धारा का रूप देती थीं जिसकी अब सम्भावना ही नहीं रह गई है। अब नदी का यह हाल है कि कुछेक घण्टों के अन्दर ही यदि इसका पानी ५ या १० फीट तक भी बढ़ जाय तो आपको आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

साधारणतया नदी का तल जितना ऊंचा होता है तथा बाढ़ के दिनों में यह जितना हो जाता है इन दोनों अवस्थाओं में २५ फीट का अन्तर रहता है। वर्ष में कई बार नदी में बाढ़ आ जाती है, आसपास के मीलों के प्रदेश में प्रसुत हो जाती है, सैकड़ों व कभी कभी तो हजारों जानों की आहुति ले लेती है, खड़ी की खड़ी फसल चौपट कर देती है, सड़कें व रेल की लाइनें उखाड़ फेंकती है और इस सबके अतिरिक्त उस दुर्भाग्यशाली प्रदेश को मलेरिया आदि व्याधियों के चंगुल में छोड़ जाती है। पता नहीं इस संकटदायिनी नदी का कब संकटग्रस्त हाथ रुके और वह भी बिना सूचना दिए।

दामोदरघाटी योजना क्यों ?

दामोदर घाटी योजना इसलिए प्रस्तुत की गई है, कि इस विनाशशील नदी के विध्वंसकारी पानी पर नियन्त्रण रखा जा सके। पिछले सौ वर्षों के अनुभवों से स्पष्ट है कि यदि ऐसी बाढ़ों का सब प्रतिशत निवारण करना है तो यह केवल बांध देने से ही सम्भव नहीं हो सकता। बांध तो छोटी मोटी बाढ़ के लिए रोक है किन्तु यदि पानी इस बांध की सीमा का उल्लंघन कर जाय तो वह सर्वनाश ही समझिये। इसलिए सबसे बड़ी आवश्यकता है पानी को स्थान स्थान पर रोक कर विशेष जल-कुण्डों में इकट्ठा करने की जहां से कई एक लाभदायक योजनाएं कार्यान्वित की जा सकती हैं जैसे जल विद्युत् योजनाएं, सिंचाई योजनाएं, जल यातायात योजनाएं आदि २।

इस प्रकार की अनपेक्षित बाढ़ों से तीन प्रकार की क्षति हो सकती है, प्रकट, अप्रकट और परोक्ष।

प्रकट क्षति तो वह है जो प्रकट रूपेण खड़ी फसल, गाय,बैल, बाग-बगीचा, इमारतों, सड़कों, रेल की लाइनों आदि को पहुंचती है।

अप्रकट क्षति वह है जिसका रूप प्रकट न हो जैसे शरणार्थियों की आय की हानि, व्यापार को धक्का, भूमि का मूल्य गिर जाना आदि, आदि। जैसे जान की हानि या बाढ़ या प्रकोप-जन्य मलेरिया आदि व्याधियों से जन समु-दाय के स्वास्थ्य की हानि आदि इसके अतिरिक्त हैं।

दामोदर बाढ़ जांच पड़ताल कमेटी का परिणाम यह था कि १८ जुलाई १९४३ से ८ अक्टूबर १९४३ तक रेल की लाइनें टूटी रहीं और इन्हें ठीक करने में ईस्ट इण्डियन रेलवे को ५३ लाख रुपये व्यय करने पड़े। इस संख्या में नए पुल बनाना व ऐसी दूसरी दुर्घटना से बचने के लिए रोक थाम के कार्यों पर व्यय शामिल नहीं है जो अवश्य ही इस खर्चे से कई गुना अधिक रहा होगा। यह बाढ़ कोई असाधारण नहीं थी। सन् १९१३ में तो, कहा जाता है, जब बाढ़ का पानी अपने उच्चतम शिखर पर था और जब उसने बांध तोड़ा तो यदि दुर्भाग्य से वह पूर्व वाला बांध तोड़ देता तो बर्दवान का तो सर्वनाश हो ही जाता, पानी कलकत्ते को भी अछूता न छोड़ता।

यह नद बिहार तथा बङ्गाल के प्रान्तों से होकर बहता है। जिन इलाकों का पानी बह कर इस नद में आता है, उन्हें उनकी औद्योगिक सम्भावनाओं के ख्याल से भारत का "रूर प्रदेश" कहा जा सकता है। दामोदर नद की घाटी के निचले भाग में जो उद्योगधन्धे स्थापित किये जायगे, उन्हें बाढ़ से बचाना होगा। इसी प्रकार कलकत्ते के बन्दरगाह को शेष भारत से जोड़ने वाले यातायात के साधनों को भी बाढ़ से बचाना होगा। इसलिये बाढ़ की रोकथाम करना, इस नदोन्नति योजना का एक मुख्य अंग है। इसका कार्य दामोदर पर तथा उसकी सहायक नदियों पर अनेक बांध तैयार करके पूरा किया जायगा और जल को थामने के लिये विशाल कुण्ड बनाये जायगे, जिन में पानी को रोक कर बाढ़ की रोकथाम होगी। बाढ़ के मौसम में इन कुण्डों में सारा पानी खींच लिया जायगा और बाद में धीरे धीरे उसकी निकासी होगी, ताकि घाटी के किसी भी भाग में बाढ़ न आने पाये। ख्याल है कि सब बांधों के द्वारा लगभग ३५६६००० एकड़ फुट पानी जमा रखा जा सकेगा।

योजना के लाभ

इस योजना से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जो लाभ होंगे वे बड़े ही महत्व-पूर्ण हैं।

विशाल कुण्डों में जो जलराशि एकत्र की जायगी, धीरे-धीरे उसकी अनवरत निकासी होती रहेगी और इस जल-प्रपात के द्वारा बिजली पैदा की जायगी। हर बांध के पास ही इसके लिये बिजली के केन्द्र खोले जायगे और पानी की बिजली पैदा की जायगी। समझा जाता है कि कुल बिजली-केन्द्रों से लग भग २०००० किलोवाट पानी की बिजली पैदा की जा सकेगी। किन्तु पानी की बिजली का यह उत्पादन इस समय न जारी रह सकेगा, जिसके कारण भाप से चलने वाले इंजन अलग फिट किये जायगे और गरमी से बिजली पैदा करने का भी एक केन्द्र रहेगा। अनुमान है कि भाप द्वारा इस केन्द्र से डेढ़ लाख किलोवाट बिजली पैदा की जा सकेगी। ख्याल किया जाता है कि पानी तथा भाप से इस प्रकार जो बिजली पैदा होगी उससे दक्षिणी बिहार तथा दक्षिणी-पश्चिमी बङ्गाल का बिजली का सारा खर्च चल जायगा। समझा जाता है कि यह बिजली बड़े सस्ते दामों में पड़ेगी, जिस से घाटी के लम्बे-चौड़े प्रदेश में उद्योग-धन्धों के खोले जाने को पर्याप्त प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

इस समय दामोदर नद से बर्दवान जिले की करीब १८६००० एकड़ जमीन की आंशिक सिंचाई होती है। सूखे वर्षों में जब मानसून फेल हो जाती है, तो इस इलाके को अक्टूबर के महीने में भी पर्याप्त जल नहीं मिल पाता। इसके अलावा ग्रीष्म में किसी भी फसल के लिये जल उपलब्ध नहीं होता। समझा जाता है कि उक्त योजना के पूरे हो जाने पर बर्दवान, बांकुड़ा, हुगली तथा हावड़ा के जिलों में लगभग ६६२८०० एकड़ जमीन की सिंचाई हो सकेगी और एक ही जगह दो फसलें पैदा की जा सकेंगी। इसके अतिरिक्त बिहार में भी काफी जमीन की सिंचाई की जा सकेगी। इसके लिए नदी के निचले भाग में बांधों की एक पंक्ति तैयार करने की योजनाएं हैं। इस बांध-पंक्ति की सहायता से नदी के दोनों तटों के प्रदेश में अनेक नहरों द्वारा पानी पहुंचाया जा सकेगा। जो इनसे बड़ी नहर होगी, उसमें छोटे मोटे जहाज भी आ-जा सकेंगे। ख्याल है कि कलकत्ते और प्रादेशिक कोयला क्षेत्रों के बीच इस नहर के जरिये से आवागमन में सुविधा होगी और यातायात की इस अतिरिक्त सुविधा से घाटी के औद्योगिक विकास में सहायता मिलेगी।

इसके अतिरिक्त समीपवर्ती कस्बों को जल की सप्लाई, भूमि की वैज्ञानिक व्यवस्था, खेती के अधिक अच्छे तरीके, नमूने के फार्म, वनरोपण, देहाती इलाकों के लिए बिजली की सस्ती सप्लाई, ग्रामोद्योगों का स्थापन, सहकारिता आंदोलन आदि अनेक ऐसे कार्य हैं जिनकी व्यवस्था उक्त योजना के अन्दर शामिल है। यह भी विचार है कि जलराशि को एकत्र रखने के लिये जो विशाल कुण्ड बनाए जायंगे, उनका स्वरूप झीलों का सा हो जायगा, जिन के आस पास मनोरंजन की व्यवस्था रहेगी और कल-कारखानों में काम करने वाले मजदूर उससे लाभ उठा सकेंगे।

सम्राट विक्रमादित्य

(नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की, रोमाचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक गज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित कर रखें। मूल्य १॥), डाक व्यय [illegible])।

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

तिल्ली और पीलिया के लिए मुफ्त बूटी

गरीब लोग ॥) डाकखर्च भेज कर मुफ्त मंगावें और अमीर अच्छा होने पर श्रद्धानुसार भेंट दे दें।

पता—महात्मा हरीदास, प्रेमाश्रम लोहबन आफिट नाहब, मथुरा।

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी और उधर उस के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विकृत होकर अपकीर्ति के रूप में फैल रही थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहान्त होगया और चम्पा ने जमींदारी का काम सभाल लिया।

चम्पा के जमींदारी संभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बड़े भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बंटवारे पर सहमत कर लिया और एक दिन माधवकृष्ण को बुलाकर यह प्रस्ताव पेश भी कर दिया। भ्रातृ भक्त माधवकृष्ण इस अकाल्पत प्रस्ताव को सुन कर भौंचक रह गया। इन्हीं दिनों बिहार भूकम्प के कार्य में सेवा करने के लिये आये हुए श्री रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत परिचित हो गये थे।

[गताङ्क से आगे]

सरला इस पर भी नहीं उठी, और कहने लगी — 'ऐसी जल्दी मत करो बहना! आओ, तख्त पर बैठ जाओ। पहिले मेरी बात सुन लो।'

'हम तुम्हारी बात सुन लेंगे, तो तुम चलोगी! पहिले वायदा करो कि चलोगी, तब बात सुनेंगे।'

'अभी वायदा कैसे करूं, बातचीत के बाद ही तो निश्चय होगा कि मैं क्या करूं?'

इस पर चन्द्रकला ने कहा — 'हम समझ गई सरला जीजी! तुम हमें बातों के चक्कर में डालना चाहती हो, हमने आज फैसला कर लिया है कि इस चक्कर में न पड़ेंगे। तुम हम सब में बड़ी हो। त्योहार के दिन तुम्हारे बिना बाहर जाना हमें अच्छा नहीं लगता।'

इस समय रमा भी गोदाम का ताला बन्द करके वहां आ गयी थी, वह तो सरला की वैराग्य वृत्ति के विरुद्ध थी ही, लड़कियों की हां में हां मिलाती हुई बोली — 'अरी, यह ठीक तो कह रही हैं लड़कियां, त्योहार के दिन तो बराबर-वालियों में मिलकर हंसना-खेलना ही चाहिए, तेरे बिना यहां कौनसा काम रुका रहेगा? जा! घूम-आ इनके साथ।'

सरला इस पर भी अपनी जगह से नहीं हिली, और रमा से बोली — 'चाची! तुम सब कुछ जानती-बूझती भी बच्चों की बातों में शामिल हो जाती हो, तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं ऐसे कामों में क्यों शामिल नहीं होती। फिर भी तुम मुझ पर इनके साथ जाने के लिये जोर दे रही हो।'

रमा ने कुछ तेज होकर कहा — 'बाबा! मैं तो कुछ भी नहीं जानती, और तुम पढ़-लिख कर बहुत कुछ जानती हो। मैं तो यह कहती हूं कि भाड़ में जाय ऐसा पढ़ना-लिखना, जिससे हंसना-खेलना भी बन्द हो जाय। तेरा यह साधुओं की तरह बाल फैलाये रहना और बिना चूड़ियों के नगे हाथ घूमना मुझे बिल्कुल नहीं भाता। भाई, मानना न मानना तेरी मर्जी पर है, मैं तो यह कहती हूं कि तुझे लड़कियों के साथ फूल चुनने के लिए चले जाना चाहिए।'

सरला दुःखित स्वर से बोली — 'चाची, तुम जो मुझसे हमेशा ही नाराज रहती हो। मैं कई बार कह चुकी हूं कि मुझे इस तरह के कामों में सुख नहीं मिलता। मैं चाहती हूं कि इस जीवन में कुछ सेवा का कार्य कर सकूं। हंसी-खेल में मेरा जी नहीं लगता।'

रमा और अधिक तेज होकर बोली — 'तू भी अजीब लड़की है। तेरे अन्दर लड़कियों की-सी कोई बात ही नहीं रही? हंसी-खेल अच्छी नहीं लगती, ब्याह करेगी नहीं, तो क्या जन्म भर रसोई में बैठकर सब्जियां छीलेगी या पराये बच्चों के पोतड़े धोयेगी।'

कुछ आवाज की कर्कशता और कुछ बात के तीखेपन से सरला का धैर्य टूट गया। उसकी आंखों से टप टप आंसू गिरने लगे, जिन्हें वह मुंह फेर कर पोंछने लगी। इसी बीच में रमा की आवाज सुन कर चम्पा भी वहां आ गयी थी। उसने जब सरला को आंसू पोंछते देखा तो सब बात समझ गयी। उसने लड़कियों से कहा — 'जाओ बेटी, तुम फूल तोड़ने जाओ, सरला नहीं जायगी।' लड़कियां अपने उत्साहभरे निमन्त्रण का ऐसा दुःखमय अन्त देखकर स्वयं दुःखित हो रही थीं। चम्पा का आदेश पाकर वहां से जाती हुईं, सरला को सूचना दे गयीं कि सरला जीजी, इस बार तुमने रोकर छुटकारा पा लिया। याद रखना — अगले साल हम किसी तरह न छोड़ेंगे।

लड़कियों के चले जाने पर चम्पा ने रमा से पूछा — 'क्या बात हो गयी?'

रमा जो सरला को रोते देखकर स्वयं दुःखी हो गयी थी और अपनी बात के तीखेपन पर मन ही मन में पछता रही थी, बोली — 'बहन क्या कहूं, अब तो कसूरवार मैं ही बन गयी, क्योंकि अब मैंने कड़वी बात कहकर इस तुम्हारी बेटी रानी को रुला दिया, पर क्या करूं, इसकी दुनिया से अनोखी बातों से मेरा जी जला रहता है। तुम भी उसे कुछ नहीं समझातीं, उसकी हां में हां मिलाती रहती हो। तुम्हीं बताओ, यह उसकी साधुनी बनने की उमर है या हंसने-खेलने और शादी करने की?'

चम्पा स्वयं अपने मन से यही प्रश्न पूछती रहती थी। कभी कभी हल्के तौर पर सरला से शादी की चर्चा भी चलाती थी, परन्तु अपने स्वभाव के अनुसार सरला की ओर से जरा सी अनिच्छा प्रगट होते ही चुप हो जाती थी। वह अपने सम्बन्ध में जो निश्चय कर लेती थी उसके बारे में जितनी दृढ़ थी, दूसरे की इच्छा के प्रतिरोध में उतनी ही निर्बल थी। इस विशेषता का मनोवैज्ञानिक कारण यह था कि वह सब दुःख और सब बलिदान अपने तक ही परिमित रखना चाहती थी। इच्छा के प्रतिरोध से दूसरे को जो दुःख होता है, उससे भी वह घबरा जाती थी। वह स्वयं इतनी अच्छी होती हुई भी आस-पास की परिस्थितियों को वश में न ला सकी और जीवन के अधिक भाग में दुःखी रही इसका यही कारण था। वह इतनी भली थी कि उसका सुखी रहना असम्भव सा था। उसने रमा को उत्तर दिया — रमा तू ही बता मैं क्या करूं?'

'मुझसे तुम क्या पूछती हो जीजी, तुम बड़ी हो, मैं तुम्हें क्या बता सकती हूं! मैं बड़ी होती तो अब तक सरला कुंवारी न रहती। घर में इतनी बड़ी लड़की का कुंवारी रहना क्या मंगल की बात है?' रमा ने कहा —

चम्पा बोली — 'इसमें बड़े-छोटे की क्या बात है, चल तू यही बता कि अगर तू बड़ी होती तो क्या करती?' रमा ने उत्तर दिया — 'मैं? मैं अगर तुम्हारी जगह होती तो सबसे पहिला काम तो यह करती कि इस लाडो से पूछती कि जब दुनिया की सभी लड़कियां शादी करती हैं तो तेरे कन्धों पर ही ऐसे क्या सुर्खाब के पर लगे हैं कि तू जनम भर कुंवारी रहना चाहती है।'

चम्पा ने खिन्न स्वर में कहा — 'रमा मैं तो यह बात सरला से कई बार पूछ चुकी हूं। मुझे तो इसने कभी ठीक-ठीक जवाब दिया नहीं, अधिक कहूं तो रोने लगती है। मैं क्या करूं? मेरे भाग्य ही खोटे थे जो वह मुझे अकेली छोड़कर चले गये। घर में कोई पुरुष नहीं जिससे कुछ कह सकूं। तुम लोग कभी कभी आ जाते हो, तो दो बात करने का मौका भी मिल जाता है, नहीं तो हम दोनों दीवारों से सिर फोड़ती रहती हैं। इसे कई बार कहा कि अगर तू शादी कर ले तो घर में एक मर्द ऐसा हो जायगा जो बाहर के सब कामों की देखभाल कर लिया करेगा। पर इसका भी यह कुछ-न कुछ जवाब दे देती है और मेरी बात को टाल देती है। इसके लिए और किसी को क्या दोष दूं, यह भी मेरे अपने कर्मों का ही खोट है' यह कहते कहते चम्पा की आंखों से आंसू बहने लगे।

रमा ने भर्त्सना के स्वर में सरला से कहा — 'अरी लड़की, तेरा दिल क्या पत्थर का है जो अपनी दुखिया मां के आंसू देखकर भी नहीं पसीजता।'

सरला को अपनी मां से असीम प्रेम था। वह उसके जरा से कष्ट को भी नहीं सह सकती थी। हम देख आये हैं कि उसने विवाह न करने का जो निश्चय किया था वह भी अपनी मां के दुःख भरे जीवन से प्रभावित हो कर ही किया। यदि केवल शब्दों की ही बहस होती तो शायद सरला उत्तर-प्रत्युत्तर देने का प्रयत्न करती, परन्तु अब तो आंसुओं की बहस छिड़ गयी जिसमें सरला को परास्त हो जाना पड़ा। मां को सान्त्वना देने के लिये उसने कहा—

'भाभी, तुम मुझे विवाह के लिये कहती तो हो, परन्तु क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि यदि उस विवाह का परिणाम अच्छा न हुआ तो क्या होगा? इसका क्या पता है कि तुम जिससे मेरी शादी करोगी, वह तुम्हें सुख ही देगा।'

चम्पा ने उत्तर दिया—'अभी तू मेरी बात छोड़ दे, अगर मेरे भाग में सुख लिखा होता तो ऐसे ऊंचे घर में पैदा होकर और ऐसे राजा घर में ब्याही जाकर इतने दुःख क्यों भोगती? मेरे माथे में जो कुछ लिखा होगा, वह तो होकर ही रहेगा। मैं तो यह सोच रही हूं कि तेरी सारी उम्र इस तरह कैसे कटेगी? तुझे इस उम्र में साधुनी सी बनी देख कर मैं दिन-रात अन्दर ही अन्दर घुली जा रही हूं और एक तू है कि कोई बात सुनती ही नहीं।' यह कहते कहते चम्पा की आंखों से आंसू बहने लगे। रमा ने

(शेष पृष्ठ १६ पर)

हिन्दी परीक्षोपयोगी लेख—

वर्तमान शृंगार काव्य

[श्री शिवशंकरलाल शुक्ल]

मनुष्य सदा से प्रेम का पुजारी रहा है। प्रेम की सरिता में स्त्री और पुरुष युग युगान्तरों से बहते चले आ रहे हैं। प्रेम के ही कारण मनुष्य खिलती हुई कलियों को देखकर हंसा और बिखरी हुई ओस की बूंदों पर रो पड़ा। प्रेम ही वास्तव में मधुर रस की चरम परिणति है। प्रणय परिणय की वही मधु यामिनी है। जब मानव मन किसी रागमयी कल्पना से उद्वेलित होकर अभिव्यक्त हो उठता है तब वह अभिव्यक्ति भाव गीत के रूप में प्रगट होती है। इस चिर सत्य के अनुसार ही कवि हृदय की प्रणय भावना ने प्रेम काव्य का सृजन किया।

प्रेम के गीत प्राचीन काल से गाए गए हैं। आज भी कवि का मानव हृदय प्रेम की कोमल और मधुर भावना से उन्मत्त होकर प्रेम का संगीत सुना रहा है। आज के कवियों ने कामिनी के सिर शृंगार को सजाया उसे देख कर मनुष्य एकान्त भाव से मुग्ध हुआ है। कवियों ने रमणी के वात्सलता रूपी जीवन में स्नेह, दया, प्रेम, श्रद्धा और भक्ति रूपी लहरें देखीं। आधुनिक कवि अपनी प्रेयसी के साथ प्रेम की शुद्ध सरिता में विहार करता है —

'तुम्हारे छूने में क्या प्राण,
सङ्ग में पावन गङ्गा स्नान।
तुम्हारी वाणी में कल्याणि
त्रिवेणी की लहरों का गान।'

इसमें कवि अपनी प्रेयसी को तीर्थ राज समझता है तभी तो प्रेयसी की वाणी में लहरों का गान सुनता है।

आह वेदना मिली विदाई।
मैंने भ्रम वश जीवन संचित,
मधु करियों की भीख लुटाई।

इसमें नारी हृदय के प्रेम की पूर्ण झलक है — कितना पश्चात्ताप और कितना निराशा।

आज के उत्कृष्ट कवियों के प्रणय गीतों में अश्लीलता नहीं है। उसमें शुद्ध, सरल, कोमल तथा लज्जा युक्त रमणी हृदय का अमर संगीत है। 'इसमें सौन्दर्य की पूर्ण व्यंजना रहती है।' इन प्रेम गीतों में सजीवता, सरलता और मधुरता है। भगवती चरण वर्मा के हृदय का जीवन की क्षणिकता से भयभीत होकर पल भर के लिए प्रेम के लिए उतावला हो उठना कितना अनुभूतिमय है —

पल भर अपने फिर सुना पन
पल भर तो हंस बोल प्रिये।
कर लो निज प्यासे अधरों का,
प्यासे अधरों से मोल प्रिये।
योवन की इस मधुशाला में,
है प्यासों का ही स्थान प्रिये।
फिर किसका भय उन्मत्त बनो है
प्यास यहां वरदान प्रिये।

कवि का हृदय पल भर जीवन का स्मरण कर विहर उठता है। अपनी प्यास को बुझा में ही बुझा लेना चाहता है। वह प्यास उसके लिए अभिशाप नहीं वरन् वरदान है। कवि आगे फिर कहता है —

मैं बनूं प्रेम का कथन,
तुम उसकी मधुर कहानी।
मेरे जीवन में आओ,
मेरे जीवन की रानी॥

सुभद्रा कुमारी में निराशा और करुणा नहीं है। उनका प्रेमकाव्य हर्ष और आनन्द से ओतप्रोत है। अपने प्रेमी के लिए अपना पूर्ण समर्पण कर देती है —

चरणों पर अर्पित है, इसको
चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है,
ठुकरा दो या प्यार करो॥

इस में कितनी श्रद्धा और कितना त्याग है।

महादेवी वर्मा का प्रेम संगीत करुणा और वेदना से पूर्ण है। उस में पीड़ा है और कसक। वे अपने प्रेमी से मिलने के लिए आकुल हैं। उनके प्रभु प्रेमी के एक बार आ जाने से ही पुलक उठते हैं —

जो तुम आ जाते एक बार।
आंसू लेते पद पखार
खिल उठते पल में आर्द्र नैन
धुल जाता होठों से विषाद
छा जाता जीवन में वसंत।

कवयित्री के हृदय में प्रेमी के प्रति कितनी करुणा है। इस करुणा में शुद्धता और सरलता है। वे अपने आंसुओं की माला पिरोती हैं और उसके लिए प्रेमी चाहती हैं, परन्तु कैसा प्रेमी —

'चिर चिर ने दुख पाला हो,
वर दो यह आंसू मेरा
उसके उर की माला हो।'

कैसी सुन्दर है प्रेमी की कल्पना। इस प्रेम गीत में वासना का नाच नहीं है।

शशि मुख पर घूंघट डाले,
अंचल में दीप छिपाए।
जीवन की गोधूली में,
कौतूहल से तुम आए॥

जीवन की गोधूली में कितनी पीड़ा है और कसक। परन्तु जीवन की गोधूलि में प्रियतम का आजाना कितना सुखकर और कौतूहल पूर्ण है।

प्रेयसी के लिए प्रिय का आना कितना सुखद है।

पतझड़ था झाड़ खड़े थे
सूखी सी फुलवारी में।
किसलय नव कुसुम बिछाकर
आए तुम इस क्यारी में॥

यह किरण बाल सी उज्ज्वल है
मानस की विमल मराली है।
अग में चपला खेल रही है
फिर भी भोली भाली है।

प्रेयसी किरण बाल के समान चंचल है उसके रग रग में चंचलता है पर उस चंचलता में वासना नहीं वरन् भोला पन है।

अतीत की स्मृतियों से कवि-हृदय भी मर्माहत हुआ। उसके फलस्वरूप वर्तमान प्रेम काव्य में स्मृतिवाद प्रधान हो गया। स्मृतिवाद में करुणा का स्रोत बहा। उसमें पीड़ा और वेदना है। वह स्वाभाविक भी है क्योंकि मनुष्य के हृदय में जो करुण वेदना की ध्वनि उठती है तथा क्षणिक संयोग के बाद अनन्त वियोग की दारुण निशा आती है उसी से मर्माहत हो कर कवि के हृदय से निकले हुए उद्गारों से स्मृतिवाद का सृजन हुआ। इसमें मानव जीवन की गंभीर और सुकुमार वेदना निहित है।

स्मृति वाद की पूर्ण झलक 'प्रसाद' के काव्य में दृष्टिगोचर होती है। प्रसाद के मर्माहत हृदय की वेदना आंसुओं के रूप में छलकी और साहित्य में वे ही आंसू 'आंसू' के रूप में साकार हुए। कवि स्वयं अपनी वेदना का कारण पूछ उठता है।

इस करुणा कलित हृदय में,
क्यों विकल रागिनी बजती।
क्यों हा हा कार स्वरों में,
वेदना असीम गरजती।

उसका कारण अतीत की स्मृतियां हैं —

जो घनी भूत पीड़ा थी,
मस्तक में स्मृति सी छाई।
दुर्दिन में आंसू बनकर,
वह आज बरसने आई।

कवि के हृदय में अतीत के प्रति बड़ा आग्रह है। वह उसे भुला नहीं सकता। तभी तो कराह कर कह उठता है।

'आह रे, वह अतीत जीवन।'

परन्तु कवि अपनी पीड़ा में मधुरता का अनुभव करता है। उसकी सभी पंक्तियां मधुर विरह स्मृतियों में डूबी हुई हैं।

[शेष पृष्ठ १६ पर]

स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद सबसे बड़ी महत्वपूर्ण समस्या शत्रुओं से देश की रक्षा है। इसके सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी देने के लिये

'वीर अर्जुन' का

देश रक्षा-अंक

बड़ी शान के साथ १ वैशाख २००५ को प्रकाशित होगा। उसकी तैयारियां शुरू होगई हैं। पाठक अपनी कापी के लिए अभी से एजेन्ट से कह दें और विज्ञापक अपना विज्ञापन बुक करा लें।

अंक सम्बन्धी विस्तृत जानकारी फिर दी जायगी।

—मैनेजर

वि दे श चि त्रा व ली
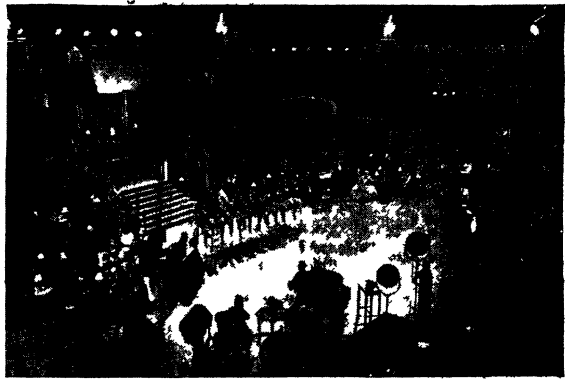
लन्दन में होने वाला एक खेल रेडियो कार्पोरेशन के स्टूडियो से टेलिविजन द्वारा प्रदर्शित किया जा रहा है।
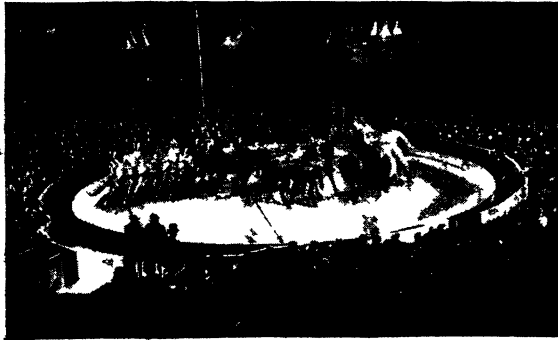
विश्वविख्यात बरट्रम मिल्स सर्कस में घोड़ों के खेल का एक दृश्य।

१६ वर्षों तक प्रधानमंत्री बनने के बाद इस पद के चुनाव में पराजित आयरिश नेता डी वेलरा

इंग्लैंड के परराष्ट्रमंत्री मि० बेविन भारत के व्यापारमंत्री श्री भाभा के साथ।

स्वीडन के राजा गुस्ताव १९४७ का नोबल पुरस्कार ब्रिटिश वैज्ञानिक सर एडवर्ड एपलटन और सर राबर्ट रॉबिन्सन को दे रहे हैं।

वर्तमान श्रृंगार काव्य

(पृष्ठ १४ का शेष)

कवि अपने विकास मय जीवन के वैभव के अभाव में रोता है और कहीं कहीं तो वैभवहीन शान्त पड़ा रहना चाहता है। कोयल की पुकार से उसकी हृत्तन्त्री सिहर उठती है और करुण रागिनी तड़प उठती है—

न छेड़ना उस अतीत स्मृति से,
खिंचे हुए बीन तार कोकिल।
करुण रागिनी तड़प उठेगी,
सुना न ऐसी पुकार कोकिल॥

वास्तव में प्रसाद ने "वैभव की समाधि पर विरह का सजा पूर्ण स्मारक खड़ा किया है।"

महादेवी का जीवन वेदना स्पर्श करता है। वे प्रिय के वियोग में व्याकुल हैं।

कहीं से आई हूं कुछ भूल।
कसक कसक उठती सुधि किसकी
रुकती सी गति क्यों जीवन की।
क्यों अभाव छाए लेता है,
विस्मृति सरिता के कूल।

कवयित्री के हृदय में प्रियतम की स्मृति रह रह कर कसक उठती है। परन्तु दूसरी ओर अबोध बचपन की स्मृति मीठी लगती है—

किस भांति कहूं कैसे थे,
वे जग से परिचय के दिन,
मिश्री सा घुल जाता था,
मन छूते ही आंसू कन।

सुभद्रा कुमारी चौहान का हृदय भी बचपन की याद में तड़फ उठता है। यौवन की अशान्ति से व्याकुल होने पर उनकी अतीत स्मृतियां जाग्रत हो उठती हैं। उनके शैशव और यौवन का संगम मानस नेत्रों के सामने नाचने लगता है, तभी तो वह कह उठती है—

लाज भरी आंखें थीं मेरी,
मन में उमग रंगीली थी।
तान रसीली थी कानों में,
चचल छल छबीली थी।
दिल में एक चुभन सी थी यह,
दुनिया सब अलबेली थी।
मन में एक पहेली थी
मैं सबके बीच अकेली थी।

'मुकुल' में भी स्मृतियों की कसक है। जब वह बगास में आता है तो गत जीवन की मधुर कल्पनाएं, कोमल कामनाएं और मनोहर संस्मरण याद आ जाते हैं। वह निराश होकर कह उठती है—

"ओ स्वप्नों के संसार विदा,
ओ बालक पन के प्यार विदा।
अब मेरे हृदय—सरोवर का,
ओ सुन्दर सुखद मराल विदा।
जिसको पी पी कर मस्त हुई मैं,
वह मादक मुस्कान विदा।
ओ भ्रांति विदा, ओ शांति विदा
ओ अपनी भोली भूल विदा॥

(पृष्ठ १३ का शेष)

भावना से भरा हुई आंखों से सरला की ओर देखा। सरला दुःख से रुआनी-सी होकर बोली—'यह मेरे बुरे भाग्य ही हैं भाभी, कि मेरे विवाह न करने के कारण तुम्हें इतना दुःख हो रहा है। मैं तो जब यह सोचती हूं कि यदि तुमने मेरी शादी की और तुम्हारे उस होने वाले दामाद ने तुम्हें कष्ट पहुंचाया तो मेरा क्या हाल होगा, तो मैं व्याकुल हो उठती हूं। मुझे तो विश्वास नहीं होता कि कोई ऐसा आदमी मिल जायगा जो हमें सुखी कर सके। पुरुषों में स्वार्थ की मात्रा इतनी अधिक रहती है और वह स्त्रियों को इतना तुच्छ समझते हैं कि उनसे सुख नहीं मिल सकता।'

चम्पा ने सरला की बात को रोकते हुए कहा—'राम! राम! सरला, ऐसी ना-समझी की बात तुझे नहीं कहनी चाहिये। क्या सब मर्द एक से ही होते हैं? यही देख, तिवारी जी हैं, बेचारे! स्त्रियों का कितना आदर करते हैं। हम लोगों से कितना प्यार करते हैं। मैं तो सोचती हूं कि कोई ऐसा आदमी मिल जाय, तो उससे तेरी शादी करके निश्चिन्त हो जाऊं।

रमा ने इस प्रकारान्तर से किये गये सुझाव का समर्थन करते हुए कहा—'और मैं पूछती हूं कि तिवारी जी ही क्या बुरे हैं। वे भी तो आखिर कुंवारे भी हैं।' सरला रमा की बात को काटती हुई बोली—'बस चाची, तुम्हारा तो यही काम है कि भाभी के मुंह से कोई बात निकली और तुमने उस पर अपनी मोहर लगाकर मेरे सामने रख दी। भला, तिवारी जी में क्या....

(क्रमशः)

ओ मेरी मुरझाई आशाओं,
की समाधि के फूल विदा।"

परन्तु हम देखते हैं कि इस स्मृति वाद की निराशा में आशा है। "इसमें प्रेम भी, स्वप्न भी और उन्मेष भी।"

इसमें कवि रोता है परन्तु रोकर अपने जीवन का अन्त नहीं कर लेता। "निराशा और दुःख के अन्त में हम आशा का संदेश पाते हैं।" सुभद्रा कुमारी का बचपन चिड़िया के रूप में आ जाता है—

"बुला रही थी मैं बचपन को,
बोल उठी चिड़िया मेरी।"

महादेवी वर्मा में जहां स्मृतियां कसक पैदा करती हैं वहीं "आ मेरी चिर-मिलन यामिनी" शांति प्रदान करती है।

'प्रसाद' अतीत की स्मृतियों में रोने के उपरान्त अब अपने प्रेम को पुकारते हैं। कवि मानव जीवन को सुन्दर संदेश देता है—

ओ मेरे प्रेम विहसते,
जागो मेरे मधुवन में।
फिर मधुर भावनाओं का,
कलरव हो इस जीवन में॥

स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा

ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १॥) रुपया।

मैनेजर—

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

चन्द्रप्रभा वटी

नया खून पैदा करती है। नस नस को स्फूर्ति देती है। शरीर के धातुओं को पुष्ट करती है। प्रमेह, स्वप्नदोष व बवासीर में विशेष लाभकारी है।

मूल्य १) तोला, ४) छटांक

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी [हरिद्वार]

देहली प्रांत, मेरठ कमिश्नरी व रुहेलखण्ड के सोल एजेण्टः—रमेश एण्ड कम्पनी, चांदनी चौक देहली। राजपूताना के सोल एजेण्ट—राजस्थान औषध भण्डार, चौड़ा रास्ता, जयपुर। मध्यभारत के सोल एजेण्ट—शारद औषध भण्डार, १६ जेल रोड, इन्दौर।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघराले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी ब्रेसलेट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (गोल्ड मोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट:—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी मंगाने वाले खरीदार को डाक खर्च बिल्कुल माफ, और चार अंगूठी गोल्ड मोल्ड, और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नौवेल्टी स्टोर्स पो० ब० नं० ४५ दिल्ली।
General Novelty Stores P. B 45,Delhi.

सौराष्ट्र—भारत का नया प्रान्त

[संकलित]

★

१५ फरवरी को संयुक्त सौराष्ट्र प्रांत का कार्य शुरू हो [illegible] बन कर कार्यान्वित न होने तक की अवधि के लिए श्री ढेबर भाई की अध्यक्षता में एक अन्तर्कालीन सरकार का भी निर्माण हो गया और उस सरकार ने कार्य करना भी शुरू कर दिया है। इस नये प्रांत में १३ बड़ी और ६० छोटी रियासतें शामिल हो गई हैं। और काठियावाड़ की शेष छोटी रियासतें भी जिनका क्षेत्रफल दो चार वर्गमील से लेकर कुछ सौ वर्गमील तक है, इनमें शामिल हो जावेंगी। इस नये सौराष्ट्र प्रांत के बन जाने से गुजरात के क्षेत्र की समस्या का तो हल हो गया लेकिन गुजरात का बहुत-सा भाग अब भी ऐसा है जो बड़ौदा और उसके आसपास की अन्य छोटी बड़ी रियासतों व बम्बई प्रान्त में शामिल है। भाषा के आधार पर जिस नये गुजरात प्रांत के निर्माण की चर्चा चल रही है, उसमें सौराष्ट्र के अलावा बड़ौदा व बम्बई के उत्तर का गुजराती भाषाभाषी क्षेत्र भी है। सम्पूर्ण गुजरात का क्षेत्रफल करीब १ लाख ५३ हजार वर्गमील है। जिसमें सौराष्ट्र के इस नये प्रान्त का क्षेत्रफल बहुत थोड़ा है।

सन् १९४३ के पहले तक गुजरात छोटी बड़ी ३८६ रियासतों में और बम्बई प्रांत के ५ जिलों में बटा हुआ था। उस समय सम्पूर्ण रियासतों की एक इकाई का विचार करने वालों का कड़ा विरोध किया जाता था। भारत सरकार का ध्यान जब इन छोटी रियासतों के शासन कार्यों में होने वाले भारी खर्चों और कर भार से दबी हुई गरीब जनता के कष्टों की ओर आकर्षित किया गया। तो उसने काफी सोच विचार के बाद इन रियासतों को बड़ी रियासतों में शामिल करने का निश्चय किया। बड़ी मुश्किलों के बाद उन राजाओं ने भारत सरकार की योजना को अनिच्छा से स्वीकार किया और ऐसी रियासतें, जिनके स्वतन्त्र अस्तित्व की व्यावहारिकता की दृष्टि से कभी कल्पना ही नहीं की जा सकती थी बड़ौदा व काठियावाड़ की अन्य बड़ी रियासतों में मिलाई गई।

यह सौराष्ट्र का नया प्रांत एक उपजाऊ प्रांत है। इस में जगह जगह खानें भी हैं जो अभी तक खोदी नहीं जा सकी थीं। जूनागढ़ के पास गिरनार पहाड़ के आस पास जंगल भी हैं इस नये प्रान्त के समुद्र तट पर कई बन्दरगाह भी हैं जिनमें कुछ आधुनिक ढंग बने हुए हैं और कई अच्छे बन्दरगाह बन जाने के योग्य भी हैं।

इस समय भावनगर में तेल, जामनगर में नमक, गोंडल में ऊनी व सूती कपड़े, कच्छ में लोहे व कोयले की खानें व रेशम के कपड़े, पोरबन्दर में सीमेंट व नमक के कारखाने, रणजीतपुर में जिनिंग प्रेस, नवानगर में सोप स्टोन आदि के कारखाने हैं। काठियावाड़ की इन रियासतों में भारी रासायनिक पदार्थों, सूती कपड़े, तेल व साबुन आदि के कारखाने खोले जा सकते हैं।

काठियावाड़ में नवलखी, बेदी, ओखा, पोरबन्दर, नवानगर आदि प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

भारत में कुल ६२८ देशी रियासतें हैं, अकेले गुजरात में इनकी संख्या ३८६ है जिनमें से २२२ काठियावाड़ में हैं। राजनीतिक दृष्टि से गुजरात में ये रियासतें निम्नलिखित इकाइयों में बंटी हुई हैं।

प्रदेश	राज्यों की संख्या
१. बड़ौदा राज्य	१
२. पश्चिमी भारत की रियासतें	१८
३. पश्चिमी काठियावाड़ एजेंसी	
(ज्युडिशियल)	४७
(नान ज्युडिशियल)	५०
४. पूर्वी काठियावाड़ एजेंसी	
(ज्युडिशियल)	१५
(नान ज्युडिशियल)	६६
५. साबरकांठा (ज्युडिशियल)	४६
(नान ज्युडिशियल)	[illegible]
६. गुजरात राज्य एजेंसी	
(ज्युडिशियल)	८१
७. पालनपुर और दान्ता (राजपूताना एजेंसी)	२
८. थाना एजेन्सी	२०
कुल	३८६

गुजरात की ये रियासतें ७६,९५६ वर्ग मील के क्षेत्रफल में फैली हुई हैं। गुजरात के उन पांच जिलों का क्षेत्रफल, जो बम्बई सरकार के अन्तर्गत है, ७६,१४३ वर्गमील है। इस तरह देखा जाय तो पता चलेगा कि इन दोनों राजनीतिक इकाइयों का क्षेत्रफल एक ही बराबर है। गुजराती रियासतों की जन-संख्या १४, ८७४,२४६ है और बम्बई प्रान्त में शामिल ५ जिलों की जन-संख्या ३०, ८४६,८४० है।

रियासतों का वर्गीकरण

गुजरात की रियासतों का वर्गीकरण निम्नलिखित ढंग से किया गया है—

(१) पश्चिमी भारत राज्य एजेंसी

(२) गुजरात राज्य एजेंसी

पश्चिमी भारत राज्य एजेंसी के भी चार भाग किये गये हैं—

(अ) पश्चिमी काठियावाड़ एजेंसी—इस में जूनागढ़, नवानगर, मोरवी, पोरबन्दर गोंडल और जफराबाद नामक ६ रियासतें शामिल हैं।

(आ) पूर्वी काठियावाड़ एजेंसी—इस एजेंसी में शामिल रियासतों में भावनगर और ध्रांगध्रा प्रथम श्रेणी की रियासतों में से हैं और पालीताना, वधवान, वांकानेर, लिमड़ी दूसरी श्रेणी में हैं।

(इ) साबरकांठा एजेंसी

(ई) कच्छ

इस क्षेत्र के पुराने नामों के अनुसार पश्चिमी काठियावाड़ एजेंसी हलार और सोरठ से मिलकर बनी है और पूर्वी काठियावाड़ एजेन्सी झालावाड़ और गोहिलवाड़ से मिलाकर।

गुजरात राज्य एजेन्सी दो भागों में विभाजित है—

(क) रेवाकांठा एजेन्सी—इसमें (नर्मदा) नदी तटवर्ती ३१ छोटी रियासतें शामिल हैं। प्रमुख रियासतों में राजपीपला, छोटा उदयपुर, देवगढ़बारिया, लूनावाड़ा, कुछ, बालासिनोर का नाम लिया जा सकता है।

(ख) दक्षिणी नर्मदा रियासतें—इनमें चार रियासतें मुख्य हैं—बांसदा, धर्मपुर, सचीन और जवहार।

काठियावाड़ में ४ श्रेणियों की रियासतें शामिल हैं।

(१) सलामी की हकदार रियासतें

(२) सलामी की गैर हकदार रियासतें

(३) अर्धज्युडिशियल रियासतें

(४) गैर ज्युडिशियल रियासतें

सलामी की हकदार रियासतों के सलामी शासक विशेष अवसरों पर तोपों की सलामी लेने के अधिकारी होते हैं। ऐसी रियासतों की कुल संख्या १४ है, यथा—जूनागढ़, नवानगर, भावनगर, पोरबन्दर, ध्रांगध्रा, मोरवी, गोंडल, जाफराबाद, वांकानेर, पालीताना, कच्छ, लिमड़ी, राजकोट, वधवान।

इंडियन टी मार्केट एक्सपेन्शन बोर्ड द्वारा प्रकाशित

जिन रियासतों के शासकों को तोपों की सलामी का हक नहीं है वे ये हैं — लखतर, सैला, चुदा वसा, लाथी, मुली, बजना, पटदी, वढवन, मानवदार, थानो-देवली, वाडिया, वीरपुर, मालिया, कोटदसगनी, जेतपुर, बिलखा सीरधार। उपर्युक्त रियासतों का न्यायाधिकार सीमित है और ये तीसरी तथा चौथी श्रेणी में आती हैं।

इसके बाद ऐसी रियासतें आती हैं जिन्हें अत्यन्त सीमित न्यायाधिकार प्राप्त हैं। उन रियासतों के न्यायालय केवल १२ रोज की कैद और २५) जुर्माने की सजा दे सकते हैं। ऐसी रियासतों की संख्या ४४ है। ये रियासतें ५ वीं और छठी श्रेणी में आती हैं।

इसके बाद १४६ ऐसी रियासतें भी हैं जिन्हें कुछ भी कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं है। काठियावाड़ की एक चौथाई भूमि ऐसी है जिसका शासन भारत सरकार की पश्चिमी भारत एजेंसी के कार्यालय द्वारा नियुक्त १३ थानेदारों द्वारा किया जाता है। इन राज्य प्रबन्धकों के कार्यालय निम्नांकित १३ स्थानों पर हैं — बाबरी, लखवाड़ा, आगधा, सोंधड़, देदान, भोटाका, दसड़ा, भिलवाड़ा, धूधरेल, चोतिला, पलियाद, सोनगढ़, कोकसाठा। इस प्रकार काठियावाड़ की सलामी की हकदार और गैर हकदार तथा अन्य प्रकार की सब रियासतों की, कुल संख्या २२२ होती है।

काठियावाड़ में बड़ौदा राज्य का भी एक बड़ा भाग है। बड़ौदा के अमरेला और ओखाल ताल्लुके काठियावाड़ के अन्तर्गत आते हैं। इन ताल्लुकों का फैलाव १३५२ वर्ग मील और जन-संख्या १,५०,००० है।

संयुक्त काठियावाड़ राज्य

काठियावाड़ के सभी नरेशों ने पिछले दिनों एक समझौता किया है जिसके अनुसार काठियावाड़ के सभी देशी राज्य १२ अप्रैल, १९४८ के पूर्व एक संयुक्त काठियावाड़ राज्य सौराष्ट्र का संगठन करेंगे। इस समझौते के अनुसार किसी भी नरेश का निजी खर्च के लिए अधिक से अधिक एक लाख रुपये वार्षिक और कम से कम २० हजार रुपये वार्षिक मिलेगा। सभी नरेशों को मिलने वाली कुल रकम इस प्रकार लगभग ७० लाख रुपये होगी। सौराष्ट्र की कुल आय लगभग ८ करोड़ है। इसे देखते हुए राजाओं को दी जाने वाली रकम उनके द्वारा आजकल ली जाने वाली मोटी रकमों से कहीं कम है।

नागरिकों के अधिकार

नये विधान के अनुसार काठियावाड़ की ४५ लाख जनता को ४५ प्रतिनिधियों की एक विधान परिषद् चुनने का अधिकार होगा। नये विधान के अनुसार दो शासन संस्थाएं होंगी।

(१) पांच नरेशों का राज-मण्डल,

(२) जन-प्रतिनिधियों का एक परामर्श मण्डल। राजमण्डल में जामनगर और भावनगर को स्थायी रूप से स्थान प्राप्त होगा। शेष तीन सदस्यों का चुनाव हर दूसरे वर्ष होगा। इनमें से दो सदस्य सलामी की हकदार रियासतों से लिए जायगे और शेष १ गैर सलामी वाली रियासतों से लिया जायगा।

मन्त्रिमण्डल का संघटन

सौराष्ट्र के नये प्रान्त के प्रथम राज्य प्रमुख नवा नगर के जाम साहब होंगे और भावनगर के महाराजा उपाध्यक्ष होंगे। सौराष्ट्र के मन्त्रिमण्डल का संघटन भारत संघ के अन्य प्रान्तों के अनुसार ही होगा।

रेलवे के नये किराये व भाड़े

(पृष्ठ ११ का शेष)

किरायों से एक तिहाई हैं। उन्हें बिल्कुल बन्द कर दिया गया है।

(२) कई वस्तुओं की फिर से बांट की गई है और उनको नीचे वाले दर्जे से उठाकर ऊपर वाले दर्जे में कर दिया गया है। ऐसा करने से उनका भाड़ा बढ़ जाएगा।

(३) थोड़ी दूरी वाले स्थानों का किराया भी कम से कम .१७५ पाई से .२५ पाई प्रति मन प्रति मील कर दिया गया है।

कोयले के किराये में जो वृद्धि की गई है, वह तो आवश्यक थी क्यों कि कोयला माल के यातायात में एक बहुत बड़ा स्थान रखता है। परन्तु किराये में वृद्धि हो जाने पर भी किराया अब भी काफी कम है। फौलाद, कपड़े और कोयले के किरायों में जो वृद्धि हो गई है उससे व्यापारिक संसार में अशान्ति फैल रही है। इसमें संदेह नहीं कि ६०० मील से ऊपर किराये नहीं बढ़ाए गए, परन्तु भारत में माल यातायात की औसत दूरी २१४ मील है। भारत में कार्य प्रवृत्ति पहले ही बहुत कम है और इन किरायों के बढ़ जाने से और भी कुछ बुरा प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो सकती है। हम यह तो कह सकते हैं कि चीजों के भाव बढ़ते जाने के साथ २ किराया भी बढ़ा देना चाहिए, परन्तु यह उतना ही हानिकारक है कि जितना चीजों के भाव के साथ २ वेतनों का बढ़ते जाना, क्यों कि यह एक दुष्ट चक्र को जन्म देता है।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

घर पर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकेमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

स्त्री की विजय सौन्दर्य में है

और सौन्दर्य का भेद है उसके बाल। जुल्फे काश्मीर हेअर आईल स्त्री के बालों को घने, लम्बे, मजबूत और चमकीले बनाने में अद्वितीय है। बाजारी तेलों पर धन नष्ट करने की बजाए जुल्फे काश्मीर हेअर आईल सेवन करें। यह एक शताब्दि से भी अधिक ख्याति प्राप्त है। आप सदैव इसे ही पसन्द करेंगे।

काश्मीर परफ्यूमरी वर्क्स
कुतबरोड. दिल्ली

भारत सेवक औषधालय

नई सड़क, दिल्ली।

को

कुछ दवाएं

आरोग्यदा वटी

कब्ज और मदाग्नि को दूर करके, भूख बढ़ाकर और वीर्यशुद्ध व गाढ़ा करके पुरुषत्व बढ़ाने वाली दवा।

मूल्य फी शीशी १।।=) डा० व्यय पृथक

भारत दन्त मंजन

दांत, मुंह और मसूढ़ों के तमाम रोग दूर करके दांत मोती जैसे चमकीले बनाता है।

मू० फी शीशी ।।।) डाक व्यय पृथक

बलवर्धक वीर्य स्तम्भक-वृष्य मोदक

शीतकाल में वाजीकरण के लिये अत्यन्त उपयोगी औषध।

मूल्य १ सप्ताह ६) डाक व्यय पृथक

प्रदरान्तक रस

स्त्रियों के सब तरह के पुराने प्रदर रोग, चक्कर, बेहोशी सिर और कमर का दर्द दूर करके बल और भूख बढ़ाता है।

१ सप्ताह का ४।।) डाक व्यय अलग

नोट — तैल घृत, आसवारिष्ट, रस, भस्में चूर्ण आदि दवाएं सस्ते मूल्य पर सदैव तैयार मिलती हैं।

एजेन्सी के नियम और सूचीपत्र मुफ्त मंगायें।

कालिदास की दृष्टि में

नारी के शृंगार साधन

[श्री विराम]

★

[हमारा विश्वास है कि कालिदास विश्व के सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्यप्रिय कवियों में से थे, अतः इस लेख में हम कालिदास की रचनाओं में वर्णित नारी के सौन्दर्य प्रसाधनों का उल्लेख करने लगे हैं। ले०]

नारी स्वभाव से शृंगारप्रिय है। अपनी सुन्दर देह को आभूषणों से सजा कर सुन्दरतर बनाने का चाव उसे सब देशों और सब कालों में रहा है। परन्तु सब देशों और सब कालों में उसके शृंगार साधन अलग २ रहे हैं क्योंकि सौन्दर्य की धारणाएं अलग अलग रही हैं।

प्रारम्भ करने से पहले इतना कह देना उचित होगा कि कवि द्वारा अपनी रचनाओं में किये गये वर्णन कुछ तो अपनी कल्पना द्वारा रचित होते हैं और कुछ समकालीन परम्परा के अनुसार होते हैं। हम अभी यह नहीं कह सकते कि आगे वर्णित प्रसाधनों में से कौन से कल्पनाप्रसूत है और कौन से समकालीन परम्परा से प्राप्त।

यों तो सुन्दर आकृतियों को जो कुछ पहिना दिया जाय, वही आभूषण बन जाता है, परन्तु फिर भी —

'हस्ते लीलाकमलमलके
बालकुन्दानुविद्धं,
नीता लोध्रप्रसवरजसा
पाण्डुतामानने श्रीः,
चूडापाशे नवकुरवकं
चारु कर्णे शिरीषं
सीमन्ते च त्वदुपगमजं
यत्र नीपं वधूनाम्।

स्त्रियां हाथ में लीला कमल रखती थीं, अलकों में कुन्द की कलियां; वेणी में कुरबक के ताजा खिले फूल, कान में शिरीष की सुगन्धित मञ्जरी और मांग में कदम्ब का मेंद-उरीखा फूल सजाया जाता था।

परन्तु जिनकी रुचि भिन्न थी वे कानों में ताजा कर्णिकार का फूल और काले बालों में अशोक के फूल सजाती थीं। चंचल रर कदम्ब, नवकेसर और केतकी की मालाएं भी लपेटी जाती थीं। (कनेर को कर्णिकार शायद कान में सजाने के कारण ही कहा जाता था।)

बालों की सजावट सरल न थी। पहले धूप, अगर आदि के सुगन्धित धूएं से गीले बालों को सुखाया जाता था, फिर उन्हें तेल से सिंचित करके दूर्वायुक्त पीले मधूक (महुए) की माला से बांध दिया जाता था। अलकों में हरसिंगार के फूल भी गूंथे जाते थे, जो प्रतिदिन बदले जाते थे।

सम्पन्न महिलाएं सिर के ऊपर मोतियों की जाली भी धारण करती थीं।

सिर के बाद मस्तक की बारी आती है। मस्तक पर तिलक के अतिरिक्त अन्य किसी प्रसाधन का उल्लेख नहीं मिलता। यह तिलक हरताल या मनसिल से किया जाता था। इस दृष्टि से आज की नारी कालिदास की नारी से आगे है।

नयनों में शलाका से कालाजन लगाने की प्रथा थी। सौन्दर्यवर्धन के अतिरिक्त अंजन लगाना मंगलसूचक भी समझा जाता था।

कानों में स्त्रियां कभी कुण्डल और कभी नीलकमल धारण करती थीं। कमल के आकार वाले सोने के आभूषणों का भी वर्णन है। इसके अतिरिक्त नव पल्लव और यवांकुर भी कानों में लटकाये जाते थे, जो कपोलों पर झूलते हुए विशेष शोभा बढ़ाते थे।

नाक छेद कर कालिदास की नारी ने अपने आपको कुरूप नहीं बनाया था, इसलिये शुकाकृति नासिका अपने आप में सुन्दर जान पड़ती थी।

कपोलतल की शोभा बढ़ाने के लिये फेस पाउडर का आविष्कार आज का नहीं है। उस समय भी फूलों और केसर का पराग मुखचूर्ण के रूप में प्रयुक्त होता था। मुखचूर्ण शब्द रघुवंश में इसी प्रकार के वर्णन में आया है।

मुख को गोरा बनाने के लिये लोध्र के फूलों का पराग काम आता था। इसी उद्देश्य से गोरोचना का भी प्रयोग किया जाता था।

गोरोचना और लोध्र कल्क (काढ़ा) का प्रयोग सारे शरीर को गोरा बनाने के लिए भी होता था।

बिम्बाधरों के सौन्दर्यवर्धन के लिये अलक्तराग प्रयुक्त होता था। ताम्बूल के अतिरिक्त आलक्तक से भी होंठ रंगे जाते थे।

कपोत के से कण्ठों में हार झूलते थे। ये हार स्वर्ण, मुक्ता और मणियों के बने होते थे। कण्ठ से लटक कर ये स्तनों के ऊपर झूल जाते थे, जिन स्तनों के ऊपर काले अगर, चन्दन और सफेद चन्दन का लेप किया होता था।

स्तनों के ऊपर केसरिया रंग के महीन वस्त्र धारण करने का उल्लेख है।

गोरी कलाइयों में कंकण पहने जाते थे। कभी कभी इन कंकणों में घुंघरू भी होते थे। तब इन्हें 'शिंजावलय' कहा जाता था। पर सम्भवतः 'शिंजावलय' गायन, वादन के समय ही पहने जाते थे। तपोवन वासिनी शकुन्तला ने कमलनाल के भी कंकण बना कर पहने थे।

बाहुओं में स्त्रियां भी अंगद (बाजूबन्द) पहनती थी।

नखों को रंजित करने का उल्लेख नहीं है।

कटि में रशना (मेखला) पहनी जाती थी। मेखला स्वर्ण की बनी और मणिजटित होती थी। इन मेखलाओं को सर्दियों में नहीं पहना जाता था, क्योंकि ये ठंडी हो जाती थीं। ढीली हो जाने पर ये मेखलाएं बजती भी थीं।

चरणांगुलियों में नूपुर पहने जाते थे और पैर के तलुओं को लाक्षारस से रंग कर लाल किया जाता था।

वस्त्रों का वर्णन कम आता है, परन्तु 'चीनांशुक' और कौशेय वस्त्र (रेशम) धारण किए जाते थे। नाभि तक ऊंचा रेशमी वस्त्र — सम्भवतः साड़ी रहता था। परन्तु नीवीबन्ध — नाड़े का वर्णन इतनी बार आया है कि यह मानना पड़ता है कि कोई नाड़े वाला वस्त्र वे अवश्य पहनती थीं। यह नाड़े वाला वस्त्र सलवार, सुथन, लहंगा, या पेटीकोट जैसी कोई भी चीज हो सकती है। कालिदास ने जिनका वर्णन किया है अर्थात् सम्पन्न स्त्रियों के ये वस्त्र कौशेय—रेशम के होते थे। इसके साथ रेशमी दुकूल (दुपट्टा) ऊपर लिया जाता था।

इसके अतिरिक्त नामाङ्कित अंगूठियों का भी प्रचलन था।

इस प्रकार कालिदास के ग्रन्थों को देखने से मालूम होता है कि स्त्रियों में उस समय भी शृंगार की प्रवृत्ति कम नहीं थी। जहां तक हमारा विचार है, उपरोक्त शृंगार अत्यन्त सुरुचिपूर्ण एवं कलात्मक था। प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट देन फूल इस शृंगार के सबसे बड़े साधन थे। शृंगार साधन होने के कारण फूलों की कृषि भी उचित परिमाण में होती होगी और इस प्रकार यह शृंगार मानव हृदय को प्रकृति के अधिकाधिक निकट ले जाने में सहायक होता होगा।

यह कहना कठिन है कि उपरोक्त शृंगार आज की रूपसियों को कितना रुचेगा, परन्तु यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि यदि वे एक दिन इस प्रकार का शृंगार करके देखें, तो यह उन्हें फबेगा अवश्य। (कापी राइट)

आपके स्वाध्याय के लिए उपयोगी पुस्तकें

आहार—हिन्दी में आहार-विज्ञान पर लिखी हुई अपूर्व पुस्तक। मूल्य ५)

वैदिक ब्रह्मचर्य गीत—आध्यात्मिक ज्ञान के पिपासुओं के लिए तपस्वी अभयदेव जी लिखित वेद के ब्रह्मचर्य सूक्त का सुन्दर स्पष्टीकरण। मूल्य २)

बृहत्तर भारत—विदेशों में भारतीय संस्कृति के संस्थापकों की विस्तृत गौरव गाथा। मूल्य ७)

विज्ञान प्रवेशिका — मिडिल स्कूलों के लिए हिन्दी में लिखी गई विज्ञान शिक्षा की अति सरल पाठ्य पुस्तक। दोनों भागों का मूल्य २॥)

वैदिक-विनय (तीन भाग)	५)
भारत का इतिहास (तीन खण्ड)	७)
ब्राह्मण की गौ	॥।)
सन्ध्यासुमन	१।)
वरुण की नौका (दो भाग)	६)
वेद गीताञ्जलि	२)
तुलसी	२)
लहसुन प्याज	२॥)
आत्म मीमांसा	२)
अथर्व वेदीय मन्त्र विद्या	१॥)
देहाती इलाज	१)
सोम सरोवर	१॥)
वैदिक उपदेश माला	।-)

पता—प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

शीघ्र मंगाइये

थोड़ी प्रतियां ही शेष इन्कम टैक्स की उलझनों से छुटकारा दिलाने वाली। सरल हिन्दी में एक दम नई पुस्तक—

"इन्कम टैक्स क्या है ?" मूल्य २), डाक व्यय ।-)

नकशा भरना, पेशगी टैक्स, जुरमाने, अपील, टैक्स फैसलों के चार्ट आदि २।

मैसर्स एन० के शर्मा एण्ड कम्पनी, सदर मेरठ।

❀ विवाहित जीवन ❀

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मंगायें।

१—कोक शास्त्र (सचित्र) १॥) २—८४ आसन (सचित्र) १॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १॥) ४—१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
५—सोहागरात (सचित्र) १॥) ६—चित्रावली (सचित्र) १॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो १॥) ८—गर्भ निरोध (सचित्र) १॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १५) अलीगढ़ सिटी।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक (१३२५ से १३५१) पहला बादशाह था जिसने भारतवर्ष में काग़ज़ के नोट प्रचलित करने का विचार किया। इस के अमितव्ययी राज्य प्रबन्ध ने राजकोष को खाली कर दिया। इन कठिनाइयों से छुटकारा पाने का साधन सोचते सोचते उसे चीन देश के काग़ज़ के नोटों का ध्यान आया। उस ने सोचा "यदि चीन का सम्राट अपने देश में काग़ज़ के नोट सफलता पूर्वक चला सकता है तो क्यों न मैं भी अपनी राजकीय शक्ति के आधार पर चांदी की मुद्रा की बजाय तांबे की मुद्रा चलाऊं ?" परन्तु भारतवर्ष उस समय सांकेतिक सिक्के के लिये तैयार न था।

उस समय बचत चांदी या सोने की ईंटों या मुद्राओं को संचय करके ही की जाती थी। और अब सुल्तान के आदेश से वे केवल तांबे के साथ ही बदली जा सकती थीं। इस कारण प्रजा ने इन नये सिक्कों का दृढ़ता पूर्वक विरोध किया। और तांबे के यह सिक्के प्रचलित न हो सके। इस कारण इन व्यर्थ तांबे के सिक्कों के ढेर के ढेर जिन का मूल्य कंकड़ समान था तुग़लकाबाद में एकत्रित होने आरम्भ हो गये।

आज कल रुपये के मूल्य की अस्थिरता का तनिक भी भय नहीं। अब हर कोई काग़ज के नोट शीघ्र ही स्वीकार कर लेता है क्योंकि भारतवर्ष की सम्पत्ति इन का आधार है। यह भी आवश्यक नहीं की सोना चांदी के संचय करने के रूप में ही बचत की जावे। आप अपनी बचत सुरक्षित मद में लगा कर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर यह ५०% बढ़ जाता है अर्थात् प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब आप ५) से १५,०००) तक इस मद में लगा सकते हैं। (थोड़ी बचत वाले),), और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद सकते हैं)। ये सर्टिफिकेट्स अब १८ मास के उपरान्त भुनाये जा सकते हैं (५ रु० के सर्टिफिकेट्स १२ मास के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइए
नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स ख़रीदिए
रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC 214

मुफ्त

नवयुवकों की अवस्था तथा धन के नाश को देखकर भारत के सुविख्यात वैद्य कविराज खज़ानचन्दजी बी०ए० (स्वर्ण-पदक प्राप्त) गुप्त रोग विशेषज्ञ घोषणा करते हैं कि स्त्री पुरुषों सम्बन्धी गुप्त रोगों की अचूक औषधियां परीक्षा के लिए मुफ्त दी जाती हैं ताकि निराश रोगियों की तसल्ली हो जावे और धोके की सम्भावना न रहे। रोगी कविराज जी को विजय फार्मेसी, हौज़ काजी दिल्ली में स्वयं मिल कर या छः आने के टिकट भेज कर औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए छः आने भेज कर ११६ पृष्ठ की अंग्रेजी की पुस्तक SexuaGluide प्राप्त करें।

तुलसी

ले० श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार

तुलसी के प्रति पूज्य भाव रखने वाली देवियां और धर्म परायण लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि इस धार्मिक पौदे में कितने रहस्य छिपे पड़े हैं। तुलसी के पौदे की तरह यह पुस्तक भी हमारे हरघर में पहुंच जानी चाहिए। सचित्र, सजिल्द। मूल्य २)

मिलने का पताः—
विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

पेट भर भोजन करिये

गेसहर—(गोलिया) गैस चढ़ना या पैदा होना, पेट में पवन का घूमना, भूख की कमी, पाचन न होना, खाने के बाद पेट का भारीपन, बेचैनी, हृदय की निर्बलता, दिमाग अशान्त रहना, नींद का न आना, दस्त की रुकावट वगैरह, शिकायतें करती है। आंत, लीवर तिल्ली और पेट के हर एक रोग में अद्वितीय दवा है। कीमत रुपया १।) तीन का ३॥) डाक-खर्च अलावा।

पता—सुधानुपान फार्मेसी ४ आमनगर दिल्ली—एजेंट रामनाथदास क० चांदनी चौक

हमारी नई आर्थिक नीति क्या हो ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

भूमि में विभिन्न प्रकार के पुष्ट बीज काम में लाये जायं।

(१६) प्रत्येक ग्राम या ग्राम-समूह में स्व-शासन के लिये पर्याप्त वैधानिक अधिकारों, आर्थिक साधनों तथा अन्य स्थानीय संस्थाओं की देख-रेख करने के अधिकारों से युक्त वैधानिक ग्राम-पंचायतों की स्थापना की जाय।

(१७) वर्तमान भूमि-कर प्रणाली के स्थान पर कृषि-आय के ऊपर क्रमागत वर्धमान कर लगाने के नियम बनाये जाय।

(१८) कृषि के कार्यों और उसकी उन्नति के अर्थ-प्रबन्ध के लिये सरकार कृषि-अर्थ-प्रबन्ध कारपोरेशन (एग्रिकल-चरल फायनान्स कार्पोरेशन) स्थापित करे, या सहकारी समितियों के द्वारा कार्य करे।

(१९) भूमिवाले तथा भूमिहीन खेतिहरों के बीच के झगड़ों के निबटारे तथा पारस्परिक सहायता के लिये उपयुक्त संस्था स्थापित की जाय।

(२०) कृषि-मजदूरों को ऋण-मुक्त करने के लिये प्रांतीय सरकारें व्यवस्था करें।

ग्राम तथा गृह उद्योग

(१) छोटे तथा गृह उद्योगों के सम्बन्ध में आर्थिक योजना का उद्देश्य देश के सारे मानवी, पशु सम्बन्धी तथा प्राकृतिक साधनों का अधिकतम उत्पादन-क्षमता के साथ पूर्णरूप से कार्य में लग जाना होगा, ताकि राष्ट्रीय जीवन का न्यूनतम स्तर ऐसा बन सके जिसमें प्रत्येक परिवार के लिए युक्ताहार, पर्याप्त वस्त्र और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक न्यूनतम वासस्थान की व्यवस्था हो सके।

(२) गृह उद्योगों की कार्य क्षमता में वृद्धि एवं प्राप्य प्राकृतिक साधनों को और अच्छी तरह काम में लाने के लिए सरकार अन्वेषण की व्यवस्था करे तथा उसे प्रोत्साहन दे। इस उद्देश्य के लिये एक अस्थाई अन्वेषण बोर्ड की स्थापना हो।

(३) अच्छे औजारों और कार्य-प्रणाली को काम में लाने की शिक्षा तथा उसके प्रदर्शन की व्यवस्था हो इस उद्देश्य के लिए वर्धा शिक्षण योजना की बुनियादी तालीम के बाद के नियमों के आधार पर शिक्षा हो।

(४) छोटे तथा गृह उद्योगों के संघटन में लाभ उठाने के सिद्धांतों का परित्याग किया जाय। इनका संचालन ऐसी औद्योगिक सहकारी समितियों द्वारा हो जो प्रस्तुत माल बेच सकें और यदि संभव हो तो उनके लिए एक ऐसे कारखाने की व्यवस्था कर सकें जहां वे सम्मिलित रूप से उत्पादनकार्य कर सकें।

(५) किसी व्यक्ति को केवल उसकी सहकारी समिति की मार्फत ही सरकारी सहायता दी जाय।

(६) जहा तक हो सके उद्योगों का संगठन इस प्रकार किया जाय कि कच्चे माल का स्थान परिवर्तन कम से कम करना पड़े।

(७) इन उद्योगों के श्रमिक आवश्यक पूंजी नहीं एकत्र कर सकते। यदि सरकार हानिपूर्ति का दायित्व लेने को प्रस्तुत हो तो सहकारी बैंकों और अन्य स्थानीय साधनों से आर्थिक सहायता ली जा सकती है। कई उद्योगों में प्रारम्भिक अवस्था में सरकारी ऋण तथा सहायता आवश्यक होगी, विशेषतया ऐसे उद्योगों में जिनमें घाटा हो या जो नये हों। यह सरकारी ऋण तथा सहायता सहकारी समितियों की मार्फत दी जानी चाहिये।

(८) इन उद्योगों द्वारा तैयार हुई वस्तुओं का अधिकांश भाग उपभोक्ता समितियों तथा बहुधन्धी कृषक समितियों द्वारा बेचा जाना चाहिये। जिनके साथ औद्योगिक समितियों तथा उनकी संस्थाओं का निकट सम्पर्क हो। औद्योगिक समितियों तथा संस्थाओं द्वारा चलाये जाने वाले बिक्री विभागों को, विशेषकर नगरों में प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

(९) सरकारी तथा सार्वजनिक संस्थाएं छोटे तथा गृह उद्योगों द्वारा तैयार की गई वस्तुओं को अपने विभागों में उपयोग के लिए तरजीह दें।

(१०) इन उद्योगों की वस्तुओं के विषय की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि परिवहन प्रणाली (ट्रांसपोर्ट सिस्टम) पर उसका कम से कम भार पड़े।

(११) गृह तथा ग्रामोद्योगों के लिये आवश्यक कच्चा माल, औजार तथा उनके द्वारा निर्मित वस्तुएं, चुंगी, अन्तिम स्थान कर, विक्रय कर तथा अन्य ऐसे करों से मुक्त की जा सकती है।

(१२) सरकार को अपने खर्च से अखबार, रेडियो, सभा, संग्रहालय, प्रदर्शिनी प्रदर्शन, पर्चे, मैजिक लालटेन इत्यादि के द्वारा प्रचार एवं विज्ञापन का प्रबन्ध करना चाहिए।

(१३) इन उद्योगधन्धों के विकास का पथ-प्रदर्शन करने के लिए उपयुक्त प्रकार के नेता तैयार करने की आवश्यकता पड़ेगी।

(१४) उद्योग धंधों को माल देने के सम्बन्ध में, अर्थात् लोहा, कोयला, कास्टिक सोडा एवं अन्य रासायनिक पदार्थ जैसे कच्चे माल के वितरण के नियंत्रण के लिए यदि कोई नियमित या अनियमित योजना बने तो उसमें ग्राम तथा गृह उद्योगों की आवश्यकता-पूर्ति के लिए पर्याप्त तथा निश्चित व्यवस्था कर दी जाय।

(१५) आयात-निर्यात कर बोर्ड (टैरिफ़ बोर्ड) को उद्योगधन्धों के सम्बन्ध में सिफ़ारिशें करते समय ग्राम तथा गृह उद्योग के विशेष हितों का ध्यान रखना चाहिए।

उद्योगधंधे

(१) भारतीय अर्थव्यवस्था के विकेन्द्रित भाग में भोजन, वस्त्र तथा अन्य उपभोग्य वस्तुएं तैयार करने वाले उद्योग धंधे होंगे और जहा तक सम्भव हो ये सहकारिता के सिद्धांत पर विकसित हों और चलाये जाय। ऐसे उद्योग धंधे अधिकतर गृह उद्योग या छोटे पैमाने पर चलाये जावें। बड़े उद्योग धंधों के लिए जैसे यंत्र तथा उत्पादन सामग्री के निर्माण के लिए, बड़े घटक रखना अनिवार्य होगा। आकार का निश्चय आर्थिक और सामाजिक लाभ की तुलना करके निश्चित किया जाय और बड़े का बजाय छोटे घटकों को तरजीह दी जाय।

(२) आर्थिक अरक्षितता तथा हानिकर प्रतियोगिता से बचने के लिए बड़े, छोटे तथा गृह उद्योगों के क्षेत्र अधिक से अधिक स्पष्ट कर दिये जायें, विभिन्न प्रकार के उद्योगधंधों में सामञ्जस्य लाया जाय तथा उन्हें एक दूसरे का पूरक बनाने का प्रयत्न किया जाय। बड़े उद्योगधंधों को चाहिये कि वे ऐसे कामों में जो दस्तकारी से, कार्यक्षमता में अधिक हानि न होते हुए हो सकते हैं, गृह उद्योग धंधों से पूरा लाभ उठायें। देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए इस पर जोर दिया जायगा कि हमें जो बहुसंख्यक मजदूर मिल सकते हैं — जो पूर्णतया या अंशतया बेकार हैं — उन्हें काम करने का अवसर प्रदान किया जाय और कीमती मशीनों का उप-

अब—
टार्च ब्रांड डीडीटी
पावडर!

प्रतिष्ठित-शक्तिशाली कृमिनाशक टार्च ब्रांड छिड़काव के रूप में अपने सस्तेपन और शीघ्र प्रभाव के कारण भारत भर में प्रख्यात हो गया है। कीड़ों के विरुद्ध युद्ध में विशिष्ट रूप से प्रयोग में आने वाला टार्च ब्रांड डी डी टी पावडर भी अब तैयार है—

पुस्तकें—
अपनी पुस्तकों में इस पावडर को छिड़कने से किताबों में दाग लगाये या क्षति पहुंचाये बिना ही यह कसारियों को नष्ट कर देता है और उन्हें दूर रखता है।
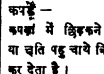
कपड़े—
कपड़ों में छिड़कने से यह जादुई पावडर उन पर दाग बनाये या क्षति पहुंचाये बिना ही पतिंगों एवं अन्य कृमियों का नाश कर देता है।

झींगर—
टार्च ब्रांड डी डी टी पावडर जहां कहीं भी हों झींगरों के लिए विशेष रूप से लाभदायक है। खाद्य के तहखानों और दराजों एवं अंधेरे कोनों में उसे छिड़किये।

बगीचे—
फूल, फल और तरकारी को क्षति पहुंचाने वाले और मुर्गियों के दड़बों में सन्निविष्ट होने वाले कीड़ों का भी यह भली भांति नियंत्रण करता है।

(इसमें १० प्रतिशत पूर्ण शक्ति वाला डीडीटी रहता है)
मनुष्यों और पशुओं के लिए निरापद
निर्माता—प्रोग्रेसिव केमिकल कार्पोरेशन
मुख्य विक्रय एजेन्ट्स—टाटा आयल मिल्स क० लिमि०।

बोझ कम किया जाय।

(३) सब तरह के उद्योगधंधों के संबंध में उद्देश्य होना चाहिये प्रादेशिक स्वावलम्बन। इस तरह की आर्थिक प्रगति में इस बात की व्यवस्था होनी चाहिए कि प्रत्येक क्षेत्र की जन-शक्ति तथा कच्चे माल का विभिन्न तथा पूर्ण उपयोग उसी क्षेत्र में हो सके और परिवहन प्रणाली का बोझ घटे। उद्योगों की स्थापन-योजना ऐसी बने कि लोगों की दैनिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये आवश्यक उपभोग्य वस्तुओं के संबंध में लगभग १० लाख जन-संख्या का औसत आकार का प्रत्येक जिला यथा-समय स्वावलम्बी हो।

(४) कच्चे माल की स्थिति तथा अन्य कारणों से कुछ उद्योग धंधे कुछ ऐसे प्रदेशों में स्थापित या केन्द्रित हो सकते हैं। प्रादेशिक विकास की दृष्टि से यह वांछनीय न होगा कि वस्तुओं के एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने में कोई कृत्रिम रुकावट डाली जाय।

(५) विभिन्न प्रकार के उद्योग धंधों के प्रभावकारी सम्बन्धों तथा सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए चाहिए कि पूंजी लगाने पर नियन्त्रण रखने तथा नये कारखानों के लिए लाइसेंस देने की प्रथा चलायी जाय।

(६) देश रक्षा तथा सार्वजनिक उपयोगिता सम्बन्धी और आधारभूत उद्योग-धंधों में नये कारबार सरकारी स्वामित्व में खुलने चाहिएं। ऐसे नये कारबार जो एकाधिकार के रूप में हों या जिनके कार्यक्षेत्र के विस्तार के कारण सारे देश या एकाधिक प्रांत का लाभ होता हो, सरकारी स्वामित्व में चलने चाहिएं।

(७) वर्तमान कारबारों को निजी स्वामित्व से सरकारी स्वामित्व में लाने का कार्य ५ वर्ष के बाद आरम्भ किया जाना चाहिए। खास मामलों में एक योग्य समिति उचित विचार के बाद ५ वर्ष से पहले भी ऐसा करने का निश्चय कर सकती है। प्रथम ५ वर्ष के समय में तैयारी की जाय जिस में इन कारबारों को लेने और उनको योग्यतापूर्वक चलाने का प्रबन्ध किया जाय।

(८) इन कारबारों के निजी स्वामित्व से सरकारी स्वामित्व में परिवर्तित करने के कार्य पर नियंत्रण रहे ताकि देश के आर्थिक जीवन में कोई अव्यवस्था न हो, उत्पादन घटने न पावे, वर्तमान पूंजी का इतना बड़ा मूल्य न देना पड़े जो आर्थिक दृष्टि से हानिकर हो और मूल्यवान् साधनों को अधिक आवश्यक से कम आवश्यक कार्यों में न लगाना पड़े।

(९) इन कारबारों को सरकारी स्वामित्व में लाने का कार्य उस समय किया जाय जब उचित कानून या सरकारी उपाय के अभाव अथवा मूल्य घटने के फलस्वरूप वर्तमान असाधारण स्थिति में होने वाला अत्यधिक लाभ घट कर उचित स्तर पर आ जाय।

(१०) सरकारी स्वामित्व में आये हुए उद्योगधंधों के समुचित विकास और प्रबंध के लिए उपयुक्त प्रबंध संस्थाएं स्थापित की जानी चाहिएं। निम्नलिखित विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए —

(क) एक आर्थिक सिविल सर्विस का निर्माण जिससे उद्योगधंधों को विभिन्न श्रेणी के प्रबन्धक मिला करें, (ख) आवश्यक औद्योगिक कार्यकर्ता दल की शिक्षा (ग) श्रमिकों की साधारण एवं शिल्प शिक्षा (घ) सूचना एवं अनुसंधान की व्यवस्था (ङ) पूंजी लगाने तथा दुर्लभ अथवा नितांत आवश्यक साधनों का नियंत्रण और (च) विस्तृत और तफसीलवार आर्थिक जांच।

(११) राज्य का विभागीय नियंत्रण केवल नीति के संबंध में रहे। उद्योग व्यवसाय तथा परिवहन के प्रबंध के लिये वैधानिक कार्पोरेशन की प्रणाली विकसित की जाय जिसका भारतीय परिस्थिति से सामञ्जस्य रहे।

(१२) निजी उद्योगधन्धों में वर्तमान मैनेजिंग एजेंसी प्रणाली यथासम्भव शीघ्र उठा दी जाय। निजी उद्योगधन्धों पर वे सारे नियम एवं नियन्त्रण रहें जो औद्योगिक विकास सम्बन्धी राष्ट्रीय नीति के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आवश्यक हों।

(१३) पूंजी पर लाभ की गणना का आधार लगी हुई पूंजी, अर्थात् पूंजी और रक्षित कोष हो। इस बात के लिये कार्रवाई की जाय कि किसी उद्योग या कारबार में अत्यधिक लाभ न वितरित हो। वितरित लाभ पर अवतरित लाभ की अपेक्षा अधिक कर लगाया जाय। लाभ के वितरण के लिए लाभांश की उच्चतम सीमा लगी हुई पूंजी का ५ प्रतिशत हो। लाभ का वही भाग रक्षित कोष में कार्य के लिए उपयोग हो सकता हो। किसी वर्ष के लाभ में से लगी हुई पूंजी का ३ प्रतिशत लाभांश के लिए और सरकार द्वारा कुछ निश्चित भाग सामाजिक भलाई एव औद्योगिक विकास के लिए निकाल कर शेषांश सरकार द्वारा निश्चित अनुपात में श्रमिक एवं हिस्सेदारों में बांटा जाना चाहिए। किसी भी हालत में श्रमिकों का हिस्सा आधारभूत मजदूरी या राष्ट्रीय न्यूनतम आय के दोनों में जो अधिक हो—एक तिहाई से अधिक नहीं होगा।

(१४) उद्योग धंधों में लगने वाले सभी प्राप्य साधनों पर राज्य का नियंत्रण एवं संचालन रहे। उद्योग धंधों के लिए पूंजी का प्रबन्ध करने के हेतु अर्थप्रबन्धक कारपोरेशन (फाइनेंस कारपोरेशन) स्थापित किये जांय। बैंक एवं बीमे के व्यवसाय का राष्ट्रीकरण हो।

औद्योगिक सम्बन्ध

उद्योग के प्रबन्ध कार्य में श्रमिकों को अधिकाधिक सम्मिलित कर तथा लाभ में उन्हें हिस्सा देकर श्रम तथा पूंजी के बीच स्थायी तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए। ऐसे कारखानों में दिन-प्रति-दिन के प्रबन्ध कार्य सम्बन्धी झगड़ों के निबटारे के लिए जिन वर्क्स कमेटियों की तथा प्रत्येक उद्योग धंधे में मजदूरी तथा श्रम की अवस्था का निश्चय करने के लिए जिन प्रादेशिक श्रम बोर्डों की स्थापना की जाय, उन में पर्याप्त संख्या श्रमिकों के निर्वाचित प्रतिनिधियों की रहे। अबाध उत्पादन की दृष्टि से यह आवश्यक है कि मालिक-मजदूरों के सब झगड़े समझौते, पंचायत या न्यायालय द्वारा निबटाये जांय। श्रमिकों को न्यूनतम वेतन, उचित निवास तथा वृद्धावस्था, अस्वस्थता और बेकारी के आर्थिक परिणाम से संरक्षण की गारंटी दी जाय।

सहकारिता

(१) ऐसी सन्तुलित प्रगतिशील अर्थव्यवस्था के लिए जिसमें नियंत्रित वितरण देश की विस्तृत आर्थिक योजना का अविभाज्य अंग रहेगा, सहकारिता सिद्धांत पर वितरण का विकास आवश्यक है।

(२) ग्रामों के लिये सम्बद्ध अर्थव्यवस्था का विकास करने के हेतु बहुधन्धी सहकारी समिति स्थापित की जानी चाहिए जिसमें कृषि उत्पादक, उपभोक्ता तथा छोटे उद्योगधंधों के लिए शाखाएं हों।

(३) साधारण कार्य प्रणाली यह होनी चाहिए कि निम्न श्रेणियों के लोगों के जीवनावश्यक पदार्थों के फुटकर व्यापार को अधिकाधिक नियन्त्रण में रखने के लिये सहकारी उपभोक्ता समितियां स्थापित और प्रोत्साहित की जाय और जहां आवश्यक हो वहां उन्हें सहायता दी जाय। संघटन पूरे क्षेत्र के लिए या ऐसे दैनिक, और जहां संभव हो मासिक, वेतन पाने वाले श्रमिकों के समूहों के लिए हो सकते हैं जो निजी या सरकारी संस्थाओं में काम करते हों।

(४) राज्य को चाहिए कि सहकारी समितियों को परिवहन, संग्रह आदि की विशेष सुविधाएं दे और उन्हें वाणिज्य संबंधी जानकारी मुफ्त देती रहे।

(५) जहां सरकारी उत्पादक समितियां हों वहां राज्य को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे व सरकारी उपभोक्ता समितियों से ही प्रत्यक्ष व्यवहार करें।

---

५००) नकद इनाम

जवांमर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३॥।) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम।

श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

[सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

यह नेताजी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र है। इसमें जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि कार्यों का समस्त विवरण आ गया है। मूल्य १) डाक व्यय ।=)।

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

१००) इनाम

(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।

श्री कामरूप कामाख्या आश्रम ५५

पो० कतरीसराय (गया)

साबुनों का मुकुट मणि

साबुन नम्बर १००

हर तरह के कपड़ों ऊनी, सूती, रेशमी की बहतरीन सफाई के लिये। सुन्दर और रंगीन रैपर में लिपटा हुआ। हर अच्छे स्टोर और साबुन के दुकानदार से मिलेगा। एक बार खरीद कर अवश्य परीक्षा करें।

एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है।

होलसेल डिस्ट्रीब्यूटर्स—

कैलाशचन्द्र प्रकाशचन्द्र

कूचा सराय हाफिज बन्ना

सदर बाजार देहली।

धनाढ्य बनें

आप थोड़े समय में बिना रुपया लगाये अमीर बनने के सरल उपायों के लिये "व्यवसाय" मासिक पढ़ें वार्षिक मूल्य ३) नमूना ।–)

मिलने का पता—

व्यवसाय पन्नागंज, अलीगढ़।

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें –)॥ का टिकट भेजकर शर्तें लिखा लें। मूल्य २॥)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (६२)

पो० बेगूसराय (मुंगेर)

हमारी पूर्वी पंजाब की चिट्ठी

पूर्वी पंजाब में आज क्या हो रहा है?

★

जनवरी मास में मुझे पूर्वी पजाब के मुख्य नगरों की यात्रा करने का अवसर मिला। इस यात्रा में पूर्वी पजाब की राजनैतिक सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अवलोकन कर दर्शक के हृदय पर निराशा की छाप अङ्कित हुए बिना नहीं रहती।

पजाब विभाजन के बाद शिमला और जालन्धर दो स्थानों पर पूर्वी पजाब सरकार के कार्यालय अवस्थित किये गये। शिमला में पजाब का हाई कोर्ट है। पूर्वी पंजाब के कण्ट्रोल तथा कचहरियों से सम्बद्ध व्यक्ति समय २ पर इस प्रबन्ध से असन्तोष प्रकट करते हैं। निवास स्थान को तेजी तथा मुवक्किलों का शिमले पहुँचना अनेक प्रकार की असुविधाएं पैदा करता है। पता नहीं पूर्वी पजाब सरकार के कर्णधारों ने हाईकोर्ट को शिमले किस दृष्टि से रखा है? जालन्धर में सरकारी कार्यालय इस्लामिया कालेज की बिल्डिङ्ग में रखे गये हैं। यह स्थान शहर से दूर है। मुख्य सड़क से सरकारी दफ्तर दिखाई देते हैं। कपूर्थला रियासत की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर स्थित हैं। कालेज के सामने के मैदान में मिनिस्टरों की मोटरें दिखाई देती हैं। हम भी वहां कार्यवश गये तो सब सरकारी विभागों के कार्यालयों का अवलोकन किया। हरेक विभाग, मन्त्री और उपविभागों के नाम अंग्रेजों की भाषा में लिखे हुए दिखाई दिये। केवल मात्र प्रधान मन्त्री के पोलिटिकल सेक्रेटरी के कमरे के बाहर टूटी फूटी हिन्दी में यह सूचना लिखी थी कि प्रधान मन्त्री से मिलने का समय २-४ तक है। सरकारी दफ्तरों के वातावरण में खादी की विशेषता को छोड़कर शेष सारा व्यवहार नौकरशाही की भांति दिखाई देता था। हां, गवर्नर साहब के कार्यालय ने इस वातावरण में कुछ परिवर्तन किया हुआ था। पंजाब सरकार के कुछ दफ्तर अमृतसर में हैं, कुछ अम्बाला में। नई राजधानी के नियत होने तक यदि सब दफ्तर एक ही शहर में एक ही स्थान में होते तो इससे पूर्वी पजाब के प्रबन्ध में काफी सुधार होता। अब भी पजाब सरकार को अपने सब सरकारी दफ्तर एक ही स्थान पर कर लेने चाहिए इससे जनता को भी सुविधा होगी और शासनतन्त्र का सचालन करने वाले भी प्रान्त में नियन्त्रण कर सकेंगे। नई राजधानी का स्थान निश्चय होने पर पर भी कम से कम उस स्थान पर काम आरम्भ होने में ४-५ साल लगेंगे। इस दशा में, इतने समय तक प्रान्तीय प्रबन्ध का शिथिल तथा असगठित होना हानिकारक है।

पूर्वी पंजाब की सरकार को कांग्रेसी सरकार कहा जाता है। इसके प्रधान मन्त्री कांग्रेसी हैं, परन्तु यथार्थ में इस सरकार को अकाली कांग्रेसी सरकार कहना चाहिए। साम्प्रदायिक दृष्टिकोण वाले सिख नेता समय २ पर सिख शक्ति को बढ़ाने की कोशिश करते हैं। पश्चिमी पजाब के कांग्रेसी तथा सिख एम० एल० ए० भी पूर्वी पजाब सरकार की असेम्बली में सम्मिलित हो रहे हैं। इस परिवर्तन से पजाब में फिर पुरानी दल बन्दी की भावना प्रबल हो जायगी। कांग्रेस हाई कमाण्ड तथा कांग्रेसी जनता को चाहिए कि अपने लोकमत द्वारा इस बुराई को पैदा ही न होने दें।

सामाजिक स्थिति

पश्चिमी पजाब से आए हुए शरणार्थियों के कारण पूर्वी पंजाब का सामाजिक सगठन आमूल चूल शिथिल हो गया है। शिक्षणालयों के बन्द हो जाने से स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थी और अध्यापक खाली हैं। शरणार्थी कैम्पों में उन्हें कार्यों पर नियुक्त किया गया है। परन्तु इससे विशेष लाभ नहीं हुआ। कुछेक स्थानों पर विद्यार्थियों और अध्यापकों ने कार्य किया है, परन्तु ज्यादातर स्थानों में परीक्षाओं में आवश्यक उपस्थिति को पूर्ण करने का ही इसको साधन बनाया गया है। पूर्वी पजाब सरकार ने पूर्वी पजाब के लिये युनिवर्सिटी बनाने का श्रीगणेश किया है, परन्तु अभी तक इसने कोई निश्चित रूप धारण नहीं किया। सोलन में पूर्वी पंजाब यूनिवर्सिटी खोलनेका निर्णय ठीक नहीं है। पूर्वी पजाब युनिवर्सिटी का अस्थायी कार्यालय भी पर्वतीय प्रदेश में नियत नहीं करना चाहिए। साधारण जनता के लिये यह प्रबन्ध अत्यन्त कष्टप्रद है।

पश्चिमी पजाब से आने वाले हिन्दू सिखों के रहन सहन में, और पूर्वी पजाब के हिन्दू-सिखों के रहन सहन और खान-पान में काफी भेद होने से दोनों के स्वभाव-भेद के कारण अनेक स्थानों पर इन लोगों में परस्पर सघर्ष हो जाता है। विशेषतः मांस-मदिरा-प्रधान भोजन के कारण पूर्वी पंजाब के मुख्य मुख्य शहरों के बाजार तथा गली कूचे उद्विग्नता तथा ग्लानि के भाव पैदा करते हैं। इस बात की आवश्यकता है कि इनके स्वभावों तथा रहन सहन में सामंजस्य पैदा किया जाय।

सामाजिक सगठन के विघटित होने से पूर्वी पजाब का धार्मिक जीवन भी निस्तेज और निष्प्राण हो गया है। आर्य समाज, सनातनधर्म सभा और हिन्दू सभा के नेता दिल्ली चले गये हैं। इनके धर्म मदिरों में, प्रायः शरणार्थी निवास करते हैं। मुसलमानों की मस्जिदों में भी कहीं कहीं शरणार्थी टिके हुए हैं। 'परमात्मा के घर' शरणार्थियों के कैम्प बने हुए हैं। ये सभाएं अपने मुख्य कार्यालय लाहौर में छोड़ आई हैं। पूर्वी पजाब में अभी तक इन सस्थाओं को उन सस्थाओं के बदले में कोई स्थान नहीं मिला। केवल मात्र पजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी और सिंह सभा को जालधर में शानदार मुख्य स्थान मिले हैं, क्योंकि उन्हें कांग्रेसी अकाली सरकार का सहारा है। शेष प्रान्तीय धार्मिक सगठन अपने अपने केन्द्र स्थानों की तलाश में, सरकारी दफ्तरों के दरवाजे खटखटा रहे हैं।

सामाजिक — सार्वजनिक जीवन पर प्रभाव डालने वाले समाचार पत्रों में से अधिकांश दिल्ली चले गये हैं। जालधर अमृतसर और लुधियाना से कुछ समाचार प्रकाशित हो रहे हैं। इनमें से अधिकांश समाचार पत्र-कोरे समाचार पत्र हैं - सार्वजनिक जीवन को सगठित बनाने के लिए उनके पास न सामान है न योग्यता ही दिखाई देती है। अधिकांश समाचार पत्रों के संचालक पश्चिमी पजाब के शरणार्थियों की भावनाओं को उत्तेजित कर अपनी प्रकाशन सख्या बढ़ाने में ही अपनी योग्यता का परिचय दे रहे हैं। अधिकांश यंत्रालय (छापखाने) पश्चिमी पजाब की राजधानी लाहौर में रह गये हैं। पूर्वी पजाब में गिनती के दो तीन प्रेस हैं— इनमें भी कार्यकर्ताओं और सामान की कमी होने से छपाई की दरें ४०) फार्म तक पहुँची हुई हैं। इस कारण नये प्रकाशन तथा नये मासिक पत्र भी प्रकाशित नहीं हो रहे। पूर्वी पजाब की मानसिक भूख को पूरा करने के भी साधन नहीं हैं।

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का सीमाप्रान्त

पूर्वी पजाब अब सीमाप्रान्त बन गया है। फिरोजपुर, अमृतसर और पठानकोट सीमाप्रान्तीय नगर बन गये हैं। जब कभी काश्मीर के युद्ध समाचार उग्र हो जाते हैं अथवा सीमा रेखा पर दोनों राष्ट्रों की रक्षक टुकड़ियों में झड़प हो जाती है तब इन शहरों में भगदड़ मच जाती है। जनवरी के प्रथम सप्ताह में अमृतसर से भगदड़ इस मात्रा तक पहुँची कि शहर से स्टेशन आने वालों को तांगे मिलने मुश्किल हो गये। अमृतसर के धनी व्यापारी व्यवसायी अपने माल यू० पी० में पहुंचा रहे हैं। इसी प्रकार से जालंधर, कपूर्थला और फिरोजपुर से भी व्यापारी व्यवसायी दौड़ रहे हैं। यह प्रवृत्ति हिन्दुस्तान के लिये घातक है। इस प्रवृत्ति के पैदा करने में अधिकांश भाग पजाब के कई समाचार पत्रों के आतक फैलाने वाले शीर्षक हैं। लाहौर से हिन्दू भागे तो इन अखबारों की मेहरबानी से, अब पूर्वी पजाब के शहरों से हिन्दू भाग रहे हैं तो इन्हीं की सनसनी प्रधान सम्पादनकला से। पूर्वी पजाब के नेताओं को चाहिए कि इस भयभीत होने की प्रवृत्ति को रोकें। अमृतसर से लोग भाग रहे हैं, परन्तु लाहौर में पजाब विभाजन से पहले १० लाख की आबादी १६ लाख तक हो गई है। पंडित जवाहरलाल प्रधान मन्त्री के दौरों ने अमृतसर और जालधर के आतक व त्राहि २ को कम अवश्य कर दिया है।

आर्थिक स्थिति

इस आतक पूर्ण वातावरण में कोई कारोबार विकसित नहीं हो सकता। जनता सोचती है, पता नहीं कब कहां जाना पड़े। साथ ही साथ न्यू बैंक, ट्रेडर बैंक, कामर्स बैंक, नीलीबार बैंक, आदि के सगठन भी शिथिल हो गये हैं इन से भी पूर्वी पजाब के आर्थिक जीवन को भारी धक्का पहुंच रहा है।

—भीमसेन विद्यालङ्कार

सूचित करें

मुंगफली तेल, व मुंगफली के लिये नव भारत ट्रेडर्स करनूल (मद्रास प्रेसिडेन्सी) को लिखें। हर प्रकार का आढ़त का काम सन्तोषजनक रूप से किया जाता है।

तार का पता—MAHANSARKA

फिल्म-स्टार बनने की इच्छा वाले शीघ्र पत्र

लिखें। थोड़ा पढ़ा लिखा होना आवश्यक है। रजीत फिल्म-आर्ट कालेज बिरला रोड (V D) हरद्वार यू० पी०।

३॥) रु० में ६ पुस्तकें

प्रेम जीवन — पति पत्नि के पढ़ने योग्य काम विज्ञान की नई पुस्तक १।)
वशीकरण मंत्र—वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह मू० १।)
हिन्दी अंग्रेजी शिक्षक मू० १)
दुल्हन पेरिस-पति पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो मू० १॥)
खजाना रोजगार मू० १)
हारमोनियम टीचर मू० १)
६ पुस्तकों का सेट ३॥), डा. ख. ॥)
संतोष ट्रेडिंग कम्पनी (वी. ए. डी.) पाठक स्ट्रीट, जैगंज, अलीगढ़।

सुमशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू कीजिए. सर्वत्र मिलता है

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर अन्दर या हल्की हरारत और आंखों की जलन, मूत्रमार्ग में जलन की जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, तबखी, कठिन मलबन्ध, नियमित पेशाबदस्त, रक्तविकार, अशक्ति, निरमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, युवा सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि आपन्नसत्वा स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

पर्ल कम्पनी
आर्य भवन
का र खाना
बम्बई २७

सरगोधा के सुप्रसिद्ध

दांतों के

डा क्ट र बा ली

फतहपुरी देहली

दांतों के मुकम्मल इलाज का इलाज किया जाता है। दांत बगैर दर्द निकाले जाते हैं। और हर किस्म की बतकें व मजबूत दांतें मिल सकती हैं।

अफीम

की आदत छूट जायगी। काली डायन अफीम से छुटकारा पाने के लिये 'काया कल्प कान्ती' सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स आठ रुपया डाक खर्च पृथक।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरिद्वार।

मिर्गी

का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार

५०० रु. इनाम

धन कवच—के द्वारा मनुष्य कुबेर जैसा धनवान होने का शुभअवसर प्राप्त करता है और लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। घर में तमाम दुष्ग्रहों की शान्ति होकर हर तरह से घर में धन की वर्षा होती है। जिससे पुश्त दर पुश्त के लिए गरीबी से छुटकारा मिल जाता है। कीमत ४॥), चादी का ६॥।), सोने का ७॥≈)

सिद्धवशीकरण यन्त्र—जिसे आप चाहते हैं वह चाहे कितना ही पत्थर दिल का हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आप से मिलने चला आयेगा। इसे धारण करने से लाभ, मुकदमा, नौकरी लाटरी में जीत परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति होती है। कीमत ४), चादी का ५) सोने का ७॥) गलत साबित करने पर ५००) इनाम। अपना पता पूरा और साफ लिखें।

श्री आनन्द स्वामी, (AWD) बाग रामानन्द, अमृतसर।
SHREE ANAND SWAMI (AWD) Bagh Ram a Nand Amritsar

रु० ३०००) जीतिये

रु० २०००) प्रथम पुरस्कार—सर्व शुद्ध हल पर दिया जाएगा जो कि हमारे सीलबन्द हल से बिलकुल मिलता होगा। रु० १०००) के रनर्स अप पुरस्कार—किन्हीं दो पंक्तियां, एक पंक्ति अथवा दो अंकों को ठीक ठीक भर कर भेजने वालों को दिए जाएंगे।

कम्पीटीशन नं० जे

[६४]

समस्त पूर्तियां १५-३-४८ तक अवश्य प्राप्त हो जानी चाहिये।

परिणाम तिथि—३१-३-४८

दिये हुए वर्ग में [१६] से [३१] तक के अंक इस प्रकार भरो कि प्रत्येक पंक्ति तथा दोनों कर्णों का योगफल [६४] हो प्रत्येक अंक एक बार ही प्रयोग किया जाए।

प्रवेश-शुल्क—१) प्रति पूर्ति के लिए या पाच रुपये छः पूर्तियों के लिए।

नियम और प्रतिबन्ध — आवश्यक फीस के साथ सादे कागज पर मनो वांछित पूर्तियां भेजी जा सकती हैं। प्रवेश शुल्क मनीआर्डरों द्वारा या पोस्टल-आर्डरों द्वारा जो कि क्रास न हो, भेजी जानी चाहिये। अपना नाम, पता और पूर्ति के अंक स्पष्ट रूप से केवल इंगलिश या मराठी में ही लिखें। पूर्तियों के साथ परिणाम मंगवाने के लिये डेढ़ आने के डाक के टिकट भेजें। इस कम्पीटीशन से सम्बन्धित सब मामलों में मैनेजर का निर्णय अन्तिम व वैधानिक रूप से सर्वमान्य होगा और यह प्रवेश की एक स्पष्ट शर्त है। पुरस्कार में दी जाने वाली रकम एकत्रित हुई रकम के अनुपात से बांटी जाएगी। अपनी पूर्तियां और फीस निम्न पते पर भेजें —

मैनेजर :— मार्डन एडवरटाईजिङ्ग कं० नं० 'जे'
जामदार क्लब के पास, कोल्हापुर।

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

अमरीकन माडल

६ खानों वाली पिस्तौल

लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिए बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुआं निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तरह की नं० ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १≈)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त। अपना पूरा पता साफ साफ लिखें। नापसन्द होने पर दाम वापिस।

अमरीकन ट्रेडिंग एजेन्सी, (AWD) हलका नं० २१, अमृतसर।
American Trading Agency (AWD) Halka No 21 Amritsar.

अमेरिका परमाणु बमों के हमले के लिये तैयार रहे।

— आइजन हावर

तुम्हें हिटलर की कसम, जरा सच-सच बताना कि किसी रूसी की जेब में बम चमक गया या सुपना देखा था।

× × ×

अमेरिकन नीति युद्ध के बीज बोने वाली है।

— हेनरी वालेस

डालर के पानी से आपकी राय में फसल कब तक तैयार हो जायेगी।

× × ×

सिंधी के कबीले वालों को पाकिस्तान ने ५० हजार रुपये दिये।

यह हिस्सा गुजरात की गाड़ी की लूट का था या सिन्ध की।

× × ×

रेलवे अफसर रिश्वत नहीं लेते।

— जानमथाई

......स्टेशन के कई बाबुओं का नाम इकन्नी बाबू और चवन्नी बाबू है। यह डिगरी उन्हें कैसे मिली, जरा इसका हाल तो यार लोग भी जानना चाहते हैं।

× × ×

मेरे पास सरकार में जाने के बहुत से मौके आये।

— जयप्रकाश का भाषण

जुम्मा-जुम्मा आठ दिन हुए, बनी हुई नेहरू-सरकार को, क्या वे चचा चर्चिल की सरकार के जमाने का जिक्र कर रहे हैं।

× × ×

पौण्ड-पावने का समझौता पाकिस्तान ने अलग किया है।

—एक समाचार

लेने का तो अलग कर लिया। मगर देने में तो कम-से-कम यारों की सरकार को साथ रखना।

× × +

दोनों देश अपने-अपने मामले आप ही सुलझायें।

— गजनफरअली

और कबायलियों के ?

× × ×

ईरान १ करोड़ के शस्त्र अमेरिका से खरीदेगा।

— ईरान सरकार

बिल्कुल बेकार। हिरोशिमा पर गिरा खाली बम का खोल ऊपर से मगा कर रूस की तरफ को मुंह करके खड़ा ले जाय।

× × ×

काश्मीर की नदियां, रेल, सड़कें, सब पाकिस्तान की तरफ जाती हैं।

— इब्राहीम

रुक क्यों गये, बता दो न कि जाली नहीं जाती मय लूट के माल के साथ जाती हैं।

× × ×

८१ हजार टन कोयला अमेरिका ने पाकिस्तान को दिया।

— अमेरिकन सरकार

जिन्ना का दिमाग जिन्दगी भर गरम रखने के लिए काफी है।

× × ×

भारत सरकार जूनागढ़ के शासक को बुलाकर गद्दी सौंप दे। — जफरुल्ला

पहिले किसी अखबार में गुम शुदा की तलाश का विज्ञापन देकर उसका पता तो लगाओ।

× × ×

१०० मुसलमानों का एक शांति-दल पाकिस्तान जायगा।

— एक समाचार

ठहरने के ठिकाने की अगर दिक्कत हो तो खलीकुज्जमा का पता हमसे ले जाना।

× × ×

आंग्ल-अमेरिकन और रूस के बीच नेहरू जी एक दीवार खड़ी करेंगे।

—प्रवक्ता (मिश्र)

दीवार का पाकिस्तान की तरफ का दरवाजा जरा मजबूत बनाना।

× × ×

जेरूसलम के विस्फोट से दसों ब्रिटिश सैनिक मरे और एक मील तक मैदान साफ हो गया। —एक समाचार

इसीलिए तो बेचारा बेविन कहता था कि इस पूंछ से लड़ूरे ही भले हैं।

× × ×

डालमिया की सीमेंट फैक्टरी पाकिस्तान में रोक ली गई। —एक समाचार

क्यों रोकी गई, सुनिये — कायदे आजम का इरादा हिन्द से उखड़े हुए बे-मुल्के नवाबों को एक एक कोठी देने का है।

आवश्यकता है

मेरे एक ३५ साला मित्र के लिए जिनकी आय लगभग २००) से अधिक है, शरणार्थी विधवा की आवश्यकता है। जात पात का कोई विचार न होगा।

बाक्स नं० ६३ 'वीर अर्जुन' दिल्ली से पत्र व्यवहार करें।

तिलिस्म सिद्ध अंगूठी

इसके धारण करने से आप जो चाहेंगे। वह हो जायेगा जैसे गरीबी दूर भाग जायेगी, आपकी प्रेमिका आप से प्रेम करने लगेगी, जिससे आप शादी करना चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी। न राज अफसर खुश होगा इससे भाग्योदय नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा लौटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य २।) पोस्टेज ।।।)

पता— बी० सी० भाटिया एण्ड को० (६) मथुरा

एजेण्टों की जरूरत है—
जमनादास एण्ड कं०, के० डी० जगदीश प्र० कं० चांदनी चौक, दिल्ली।

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक आविष्कार

स्लीपो (SLEEPO) किसी सोते या जागते हुए को सुंघा दीजिए वह एक घन्टे के लिए गहरी नींद में सो जायगा और हिलाने से भी न जागेगा। मूल्य केवल १) रु० डाकखर्च ।।।)।

यदि आप एक घन्टे से पूर्व जगाना चाहते हैं तो एवेको (AWAKO) सुंघाएं। मूल्य केवल ३) रु० कम मिकदार का नमूना मुफ्त नहीं मिल सकता। गारंटी की जाती है कि सलीपो या एवेको दिल को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाती। आज ही आर्डर दें और अपना पता पूरा और साफ लिखें।

पता—इम्पीरियल चम्बर आफ साइंस (A.W.D) हलका न०. २१, अमृतसर

१००) इनाम

सिद्ध योगेन्द्र कवच

सिद्ध वशीकरण — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २।।), चांदी का ३), सोने का १२), झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री महाशक्ति आश्रम, ६३ सलीमपुर अहरा पो० कदम कुआं (पटना)

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम २) डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमायें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ६२१ कीमत ७।।।=) डाकखर्च व पैकिंग १।=)।

नोट—एक समय में २ कैमरों के ग्राहक को एक कैमरा मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें। अन्यथा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस। अपना पता पूरा और साफ साफ लिखें।

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइन्स (AWD) हलका न० २१ अमृतसर।
Imperial Chamber of Science (AWD) Halka No 21 Amritsar.

संतान प्यारा पुत्र चाहिये

यदि आप सन्तान से वंचित हैं तो मुझे मिलें आपके घर का दीपक शीघ्र रोशन हो सकेगा, यदि आ न सकें तो हमारी औषध अकसीर औलाद मंगवा लें, जिससे सैकड़ों बेऔलाद बहनों की गोदी हरी भरी हुई है। मूल्य २२) और दवाई औलाद नरीना जिसके सेवन से पुत्र ही पैदा होगा चाहे पहले लड़कियां ही लड़कियां क्यों न पैदा होती रही हों मूल्य १२)।

संतान और नहीं चाहिये

दो साल के लिये सन्तान उत्पत्ति बन्द करने वाली दवाई की कीमत १२) २ वर्ष के लिये २०) और सदा के लिये २२)—इन दवाइयों से माहवारी हर महीने ठीक जारी रहती है। मासिक धर्म जारी करने वाली दवाई मेन्सोल स्पेशल का मूल्य १२) और इससे तेज दवाई मेन्सोल स्ट्रांग जो अन्दर अच्छी प्रकार साफ कर देती है मूल्य २२)।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती (आफ लाहौर)

चान्दनी चौक देहली [फव्वारा और इम्पीरियल बैंक के दरम्यान]

कोठी २७ बाबरलेन न्यू देहली (निकट बंगाली मार्केट)

उत्साही व उद्यमी लोग नियमित उद्यम पढ़ते हैं।

उद्यम

- उद्योगधन्धे व्यापार, खेती बागबानी ग्रामसुधार, मितव्ययिता आरोग्यता आदि विषयों की व्यवहारोपयोगी जानकारी उद्यम में प्रतिमाह प्रकाशित होती है।
- परिवार का प्रत्येक व्यक्ति उद्यम से लाभ उठा सकता है।
- उद्यम मासिक के खोजपूर्ण खबरें, विज्ञान जगत महिला-व्यवसाय आदि स्तम्भ व उत्कृष्ट व्यंगचित्र आप अवश्य पसन्द करेंगे।
- आज ही एक अंक मंगवा कर उद्यम की उपयुक्तता का अनुभव कीजिये।
- ~~देशके कुछ भागों व हर गांव के~~ बुकस्टालों के पास उद्यम के अंक मिलते हैं।
- उद्यम का वार्षिक चन्दा रु० ७-४० (रजि० डाक व्यय सहित) भेजकर अपने उपयोग का मासिक संग्रह कीजिये। जनवरी से ग्राहक बनने पर जनवरी का फोटोग्राफी विशेषांक भी मिलेगा। उद्यम मासिक धर्मपेठ नागपुर

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल न० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तुहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता उनको लम्बे, घूंघर वाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥) रु० इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है। तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ म्यूट घड़ियां व ४ अंगूठियां (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं।

बाल उमर भर नहीं उगते !

हमारी प्रसिद्ध दवाई जौहरे हुस्न रजिस्टर्ड के इस्तेमाल से हर जगह के बाल बगैर किसी तकलीफ के हमेशा के लिये दूर हो जाते हैं और फिर जीवन भर दोबारा उस जगह बाल कभी पैदा नहीं होते जगह रेशम की तरह मुलायम नरम और खूबसूरत हो जाती है। कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स ६॥) रु० इस दवाई को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठा सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है। तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ घड़ियां व ४ अंगूठियां बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं।

नोट — माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है शीघ्र मंगा लें क्योंकि ऐसा समय बार बार हाथ नहीं आयेगा।

लन्दन कमरशियल कम्पनी (AWD) बागरामानन्द, अमृतसर।

London Commerc al Co (AW D) Bagh Ramanand Amritsar

पहेली नं० ३२ की संकेतमाला

दायें से बायें

१ भारत के अतिविख्यात सम्राट् और हिन्दी का नूतनतम सुन्दर नाटक।

४ अपने समय पर इसी का बहुत महत्व है।

६ चाहे खेती बाड़ी में हो या हमारे दैनिक जीवन में, इसकी आवश्यकता रहती ही है।

११ चिकित्सक इन क्रियाओं का बहुत प्रयोग करते हैं।

१२ निपुणता के पर्यायवाची का अपभ्रंश।

१३ लोग इससे बचने का सदा प्रयत्न करते हैं।

१४ वाद विवाद के अंग है।

१५ कभी २ बड़ी विपत्ति का कारण होता है।

१६ यह चार अक्षरों का शब्द है, अन्तिम दो अक्षरों से बनी वस्तु भूमण्डल पर सर्वत्र पायी जाती हैं।

१७ वैज्ञानिक इसका बहुत विचार रखते हैं।

१८ कुछ विद्वानों के मत से वैदिक साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

ऊपर से नीचे

१ जीवन में — सा होती ही रहती है।

२ आप इसे चाह सकते हैं।

३ सूर्य का पर्याय है।

५ यह क्रिया प्रतिदिन व्यवहार में आती है।

६ मदारी इसकी प्राय दुहाई देते हैं।

७ कर्णकटु ध्वनि का अनुकरण है।

८ अपने बगीचे को ऐसा बनाने की बहुधा इच्छा होती है।

६ इसकी उत्पत्ति पानी से होती है।

१० यह चाहे — हो, उसका अपमान नहीं करना चाहिये।

१४ अपने अपने स्वभाव की बात है कि पसन्द करें या नहीं।

१५ व्यक्तियों की शक्ति का बोधक है।

फैंसी सिल्क साड़ी

आकर्षक डिजाइन

कलापूर्ण ३४ इंच चौड़ा बार्डर

न० ७ ८ ६

१८) २३) २८)

२) पेशगी बाकी वी० पी० से

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

जमाको इन्डस्ट्रीज

कुली न० २१ कानपुर।

२०००) रुपये इनाम

NOW YOU CAN LAUGH AT THE CALENDAR!

मासिक धर्म एक दिन में जारी

मैन्सोली पिल्ज—एक दिन के अन्दर ही कितने समय के रुके हुए मासिक धर्म को जारी कर देती है कीमत ५) रु०।

मैन्सोली स्पेशल पिल्ज—जो कि फौरन जारी करके मासिक धर्म को बिल कुल आसानी से साफ कर देती है। कीमत ११॥) रु०। याद रखो गर्भवती इसे सेवन न करें क्योंकि यह बच्चेदानी को बिलकुल साफ कर देती है। २०००) रु० इनाम जो मैन्सोली पिल्ज को नाकामयाब साबित करे। पत्र व्यवहार गुप्त रखा जाता है।

लेडी डाक्टर असली दवाखाना

(AWF) हलका न० २१ अमृतसर।

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२

ये वर्ग आपके घर की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

२५०) [सुगमवर्ग पहेली नं० ३२] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार १५०) न्यूनतम अशुद्धियों पर १००)

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण इस प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले या संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहां मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहां वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विस्तार सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर १५०) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर १००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर १५ मार्च के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल ११ मार्च १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जांच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा। पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली नं० ३२, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

★★★

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि ६ मार्च १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
'जीवन संग्राम'
का
संशोधित मूल्य अवश्य पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।
मूल्य १) डाक व्यय ।-)

विविध

बृहत्तर भारत
[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]
भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ॥=)

बहन के पत्र
[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]
गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व स्त्रियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य १)

प्रेमदूती
श्री विराज की रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण श्रृंगार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ॥)

वैदिक वीर गर्जना
[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]
इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ॥=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी
[श्री ज्ञानीदास]
ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास
सरला की भाभी
[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]
इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी प्रतियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय
[श्री रामगोविन्द मिश्र]
महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य २॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस
नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का सञ्चालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।≈)

मौ० अबुलकलाम आजाद
[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]
मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ।≈) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]
जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]
अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य २॥) डाक व्यय ।=)

हिन्दू संगठन दोषा नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इस लिये
हिन्दू-संगठन
[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी]
पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं
[सम्पादक—श्री जयन्त]
प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

नया आलोक : नई छाया
[श्री विराज]
रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)
लेखक—श्री विराज
उन दिनों की रोमाचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुडध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरञ्जक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १॥), डाक व्यय ।=)।

प्राप्ति स्थान
विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा
इस पुस्तक में लेखक ने भारत का और भावी रूप रेखा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति का होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।
मूल्य १॥) मात्र।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान
साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तेल विज्ञान
तिलहन से लेकर तेल के सारे नये उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तुलसी
तुलसीगण के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के ढंग बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर
अंजीर के फल और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज
अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली कम कीमती कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक
अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १॥) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान
घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

प्रथम खण्ड—खिलाड़ी के कैसे सफल जीव बिन मूल्य ॥)
द्वितीय खण्ड—मैं चित्रित के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)
दोनों भाग व एक साथ लेने पर मूल्य ॥)

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इसी प्रकाशन-संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन
मनोरञ्जन मासिक

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* विजय पुस्तक भण्डार

❀ अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० प्रस्तुत पूंजी २,००,०००

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४ १० प्रतिशत
सन् १९४५ १० "
सन् १९४६ १५ "

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
* अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २६ फाल्गुन सम्वत् २००४

आज भी स्थिति जटिल है

पिछले एक सप्ताह में समाचारों की अधिकृत एजेन्सियों ने कुछ ऐसे समाचार अखबारों में प्रकाशनार्थ भेजे हैं, जिनकी ओर हम अपने पाठकों का ध्यान खींचना चाहते हैं।

(१) केन्द्रीय असेम्बली या हिन्द पार्लमेन्ट के अधिवेशन में भारत सरकार के रक्षामन्त्री सरदार बलदेवसिंह ने बताया कि पिछले फरवरी मास में पाकिस्तान से भारत की सीमा पर २७ आक्रमण हुए, जिसके परिणामस्वरूप ६ गाव जलाये और लूटे गये। यह भी बताया गया कि ये हमले समाप्त नहीं हुए, समय समय पर होते रहते हैं और उन्हें पीछे हटा दिया जाता है।

(२) पाकिस्तान के एक मन्त्री ने कुछ समय पूर्व काश्मीर के उडी क्षेत्र का दौरा किया था। इसके परिणामस्वरूप आक्रान्ताओं ने भारतीय अग्रिम सैन्य दल पर आक्रमण कर दिया था।

(३) युक्तप्रान्तीय असेम्बली के मुस्लिम सदस्यों के प्रश्न का जवाब देते हुए प्रान्त के पुलिस मन्त्री ने बताया कि मुस्लिमलीगियों के घरों की तलाशियां लेने पर बड़ी संख्या में छुरे, पिस्तौल, तलवारें और भाले बरामद हुए। यू० पी० लीग के अध्यक्ष के घर की तलाशी लेने पर कुछ ऐसे कागजात मिले, जिनमें भारत का कुछ प्रदेश पाकिस्तान को देने का समर्थन किया गया था।

(४) उन्होंने यह भी बताया कि फिलस्तीन ब्रिगेड के नाम से स्थापित मुस्लिम संस्था ने फिलस्तीन भेजने के नाम पर मुसलमानों को एकत्र करके काश्मीर के हमलावरों की मदद करने भेजा।

(५) युक्तप्रान्तीय असेम्बली की मुस्लिम लीग पार्टी के नाम बदल देने पर महाराजकुमार महमूदाबाद ने एक वक्तव्य में बताया है कि पाकिस्तान के ... पर असेम्बली का सदस्य बनने वाले ... राज्य में ही जनता का ... करने ... नहीं बन सकते। ... मात्र है। उनकी मनोवृत्ति या ... में तनिक भी परिवर्तन नहीं हुआ ... [illegible]

(६) [illegible] के प्रतिनिधि ... आज लन्दन गये हैं और वहां ब्रिटिश मन्त्रियों से मिल रहे हैं।

(७) हैदराबाद के प्रधान मन्त्री श्री लायकअली जो भारत संघ से समझौते के सिलसिले में दिल्ली आये थे, दिल्ली से करांची रवाना हो गये हैं।

(८) पाकिस्तान में हैदराबाद सप्ताह मनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य पाकिस्तान को हैदराबाद की वस्तुस्थिति से परिचित कराना है।

(९) हैदराबाद की इत्तिहादुल मुसलमीन की निजी संस्था के रजाकार सैनिकों ने पिछले दिनों ३८ गांवों को जला दिया, जिससे करीब १॥ करोड़ रु० की क्षति हुई, ५० गांव लूटे और १०॥ लाख रु० लूट लिये गये, ६१ आदमी मार दिये, १३५ स्त्रियों के साथ बलात्कार किया गया। इस सशस्त्र आतंक के कारण करीब साढे चार लाख आदमियों ने अपने घर छोड़ दिये हैं। भारतीय सीमा पर रजाकारों ने १८ बार हमले किये। रजाकार स्वयंसेवक जिस प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करते हैं, उसमें लिखा है कि 'मैं दक्षिण भारत में मुस्लिम शक्ति की प्रभुता को बनाये रखने के लिए अन्तिम दम तक लडूंगा।' इन रजाकारों की संख्या ६०००० है, जो नवीन शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित हैं। इन्हें पैट्रोल आदि की भी पूर्ण सुविधा सरकार से प्राप्त है।

(१०) अभी तक भी मुस्लिमलीग अपना पृथक् अस्तित्व कायम रख रही है। बम्बई के कारपोरेशन के चुनावों में मुस्लिम लीग ने अपने पृथक् उमीदवार खड़े किये। ट्रावनकोर में भी यही हो रहा है। केन्द्रीय पार्लमेण्ट के २७ मुस्लिम लीगी सदस्यों में से केवल १० ने लीग तोड़ने का निश्चय किया। ४ ने विरोध किया और शेष १३ सभा में ही उपस्थित नहीं हुए। अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों के यूनियन के चुनाव में प्रधान मंत्री मुस्लिमलीगी ही चुने गये हैं।

(११) लाहौर में तीन सप्ताह तक विश्राम के बाद फिर हिन्दुस्तान के विरुद्ध जहाद के लिए कुछ शरारती मुसलमानों ने प्रचार शुरू कर दिया है। उन्होंने समस्त लाहौर के सैनिकीकरण की भी मांग की है।

(१२) पाकिस्तान सरकार ने पुराने समझौते को बदल कर १ अप्रैल से नये सिक्के जारी करने तथा भारत जाने वाले माल पर निर्यात कर लगा दिया है।

(१३) केन्द्रीय असेम्बली में शरणार्थियों को सहायता देने के प्रश्न पर जो विचार हुआ था, उसमें भी श्री ... [illegible] कि वे पुरानी साम्प्रदायिकता को नहीं भूले।

(१४) पूर्वीय बंगाल में हिन्दुओं पर अत्याचार जारी है और वे वहां से पश्चिमी बंगाल में आने को विवश किये जा रहे हैं।

ये कुछ समाचार हैं, जिनकी यथार्थता से इन्कार नहीं किया जा सकता। इनसे एक बात स्पष्ट है कि म० गांधी के महान बलिदान के बाद भी स्थिति में विशेष सुधार नहीं हुआ। वस्तुत स्थिति अभी तक जटिल है। भारतवर्ष के बाहर ही नहीं, देश के अन्दर भी जो स्थिति है वह वाञ्छनीय नहीं है। आज भी देश का दुर्भाग्य है कि इतने महान् बलिदान और विध्वंस की असह्य क्षति उठाकर भी भारत के बहुत से मुसलमान स्थिति की न गंभीरता को समझते हैं और न महमूदाबाद के राजकुमार के शब्दों में लीगियों की मनोवृत्ति एक रात में बदल गयी है। पाकिस्तान की तो मनोवृत्ति बिलकुल नहीं बदली।

देश के नेताओं से हम इतना ही नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि वे स्थिति की गम्भीरता का किसी तरह 'अण्डर एस्टिमेट' न करें। जालंधर में प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल ने भाषण देते हुए देश को आश्वासन दिया है कि भारतवर्ष अपनी रक्षा करने व शान्ति कायम रखने के लिए पूर्ण सतर्क ही नहीं, समर्थ भी है। इसी तरह का आश्वासन अन्य अनेक अधिकारियों ने दिया है। देश इसी आश्वासन की उनसे आशा करता है। आज भी वस्तुतः हमारा नवजात स्वतन्त्र राष्ट्र विषम समस्याओं और उलझनों को पार नहीं कर सका है। भयंकर संकटों का अभी हमने सामना करना है। हमारी सद्भावनाओं और सदिच्छाओं के सफल होने में अभी देर है। इस लिए हमें आज भी देश के आन्तरिक और बाह्य विरोधियों से सतर्क रहना चाहिए।

लेकिन इस के साथ ही हम यह भी उतने ही जोर के साथ कहना चाहते हैं कि केवल जोश नहीं, विवेक और साधन सम्पन्नता समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक हैं। अपनी सरकार को दृढ़ करने के लिए संगठन और अनुशासन और भी अधिक जरूरी है। हमें यह सत्य हृदयंगम कर लेना चाहिए कि जितना आर्थिक अनुशासन व संगठन देश में होगा, उतना ही अधिक देश शक्तिशाली होगा और देश के शत्रु कुछ भी करने में संकोच करेंगे। इसीलिए हम जनता से यह कहना चाहते हैं कि वे भारतवर्ष में शान्ति और अनुशासन कायम रखते हुए सरकार को अधिक से अधिक सहयोग दें ताकि वह देश की आन्तरिक समस्याओं से निश्चिन्त होकर बाह्य समस्याओं की ओर अपनी शक्ति अर्पित कर सकें।

सिख साम्प्रदायिकता

जब हम मुस्लिमलीगी साम्प्रदायिकता की निन्दा करते हैं, तब यह देख कर और भी दुःख होता है कि मा० तारासिंह के नेतृत्व में सिखों का एक बड़ा दल भी अन्धी साम्प्रदायिकता का शिकार हो रहा है। पृथक् चुनाव और सम्प्रदाय के आधार पर पृथक् राजनैतिक संगठन ही वह तीव्र विष है, जिसका परिणाम पाकिस्तान और देश का भीषण रक्तपात हुआ है। इसलिए आज हम सब को साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिकोण से प्रत्येक प्रश्न पर विचार करना चाहिए। आज हमारे विधान और हमारे दृष्टिकोण में केवल दो धर्म होने चाहिए — राष्ट्रीय और अराष्ट्रीय। जो देश का विरोध करता है, वह चाहे मुसलमान हो या हिंदू, सिख, ईसाई, देश का शत्रु है। देश का हितचिन्तक ही सच्चा नागरिक है। इसलिए हम एक ओर जहां मुस्लिम लीगी साम्प्रदायिकता के खतरे से देश को सावधान करना चाहते हैं, वहां सिख या हिंदू साम्प्रदायिकता की भी निन्दा बल के साथ करना चाहते हैं।

हमारा पहला बजट

भारत-सरकार के अर्थमन्त्री श्री षण्मुखम चेट्टी ने स्वतन्त्र भारत का प्रथम बजट पेश कर दिया। उसके कुछ मुख्य अंश अन्यत्र दिये गये हैं। इसकी विस्तृत आलोचना में न जाते हुए भी हम यह कहना चाहते हैं कि इसके मूलभूत आधार दो हैं — साधारण जनता का हित और देश को आने वाले स्पर्धात्मक युग में व्यावसायिक दृष्टि से अधिक समर्थ बनाना। केवल साधारण जनहित का नाद लगा कर हम देश की पेचीदी समस्याओं को हल नहीं कर सकते। कभी कभी ऐसे अवसर आते हैं, जब देश की उन्नति के लिए समस्त जनता को कष्ट उठाने पड़ते हैं। पिछले युद्धकाल की अपेक्षा आज की समस्याएं और अधिक बलिदान की अपेक्षा रखती हैं। केवल आवेश या नारों से नहीं, वस्तुस्थिति के यथार्थ अध्ययन से ही हम लाभ उठा सकते हैं। पार्लमेण्ट के सदस्यों से हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि वे बजट पर दोनों दृष्टियों से विचार करें।

बजट-सप्ताह

इस सप्ताह को बजट-सप्ताह कहा जा सकता है। विभिन्न प्रान्तों के अर्थमन्त्रियों ने अपने अपने प्रान्त के बजट इस सप्ताह पेश किये। भारत के अर्थमन्त्री श्री षण्मुखम् चेट्टी ने भी केन्द्रीय सरकार का बजट इसी सप्ताह पेश किया है। (वह इसी अङ्क में अन्यत्र दिया जा रहा है।) मद्रास, बिहार और बम्बई के बजट लगभग सन्तुलित बजट हैं। युक्तप्रान्त के बजट में ४ करोड़ ७० लाख का घाटा है। उड़ीसा के बजट में भी घाटा है। केन्द्रीय सरकार के बजट में २६ करोड़ ८६ लाख का घाटा है। विभिन्न टैक्स लगाकर इस घाटे को पूरा करने का प्रयत्न किया गया है।

काश्मीर और सुरक्षा कौंसिल

भारतीय प्रतिनिधिमण्डल जो महत्त्वपूर्ण विषयों पर सरकार से परामर्श करने दिल्ली आया हुआ था, पुन: न्यूयार्क रवाना हो गया है। शेख अब्दुल्ला का इस समय काश्मीर में रहना आवश्यक था इसलिए उनके स्थान पर सर गिरिजा शंकर वाजपेयी — विदेश सचिवालय के मन्त्री — नियुक्त किये गये हैं। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के पहुंचने तक तीन दिन के लिए बहस और स्थगित करदी गई है।

पाकिस्तान के प्रतिनिधि श्री जफरुल्ला इस समय लन्दन गये हुए हैं और ब्रिटिश सरकार के प्रमुख मन्त्रियों से प्राइवेट मुलाकातें कर रहे हैं। लन्दन के वक्तव्य में उन्होंने कबायलियों का पाकिस्तान की सीमा में से होकर आना तो स्वीकार कर लिया है परन्तु साथ ही यह भी कहा है कि जब तक भारतीय सेनायें काश्मीर में विद्यमान हैं तब तक जनमत पाकिस्तान के पक्ष में होने की आशा नहीं।

ब्रिटिश अमेरिकन गुट काश्मीर को आगामी युद्ध के समय रूस विरोधी अड्डा बनाने के लिये काश्मीर को पाकिस्तान के हवाले करने के पक्ष में है और यहां तक अफवाह है कि भारतीय जनता के असन्तोष को दबाने के लिए वह पूर्वी बंगाल को भारत में सम्मिलित करने का प्रस्ताव करने वाला है।

जयपुर में वैधानिक सुधार

जयपुर के एक विशेष गजट में वैधानिक सुधारों की घोषणा की गई है। इस घोषणा के अनुसार मन्त्रिमण्डल में फिलहाल ५ मन्त्री होंगे। श्री जयनारायण व्यास प्रधानमन्त्री बने हैं। मन्त्रिमण्डल का कार्य शासन सचालन और विधान-परिषद् की स्थापना करना होगा।

निजाम द्वारा बरार की पुनः मांग

हैदराबाद के प्रतिनिधि-मण्डल के नेता मि० लियाकतअली ने भारतीय गवर्नर जनरल लार्ड माउण्ट बेटन के

सामने भारतीय संघ के साथ दीर्घकालीन समझौता करने के लिये जो आवेदन पत्र दिया है उसकी मुख्य मांगें निम्न हैं—

१. बरार की समस्त संस्थाओं पर निजाम का झण्डा फहराया जाय।

२. बरार से जो प्रतिनिधि धारासभा में चुने जावें वे निजाम के प्रति निष्ठा की शपथ लें।

३. बरार में निजाम स्टेट के दफ्तरों को काम करने की सहूलियतें दी जायें।

पाकिस्तान में एक अप्रैल से नये नोट

पाकिस्तान सरकार ने भारत से निर्यात व्यापार जारी न रख कर सीमा पर आयात निर्यात चुंगी लगाने का निश्चय करने के बाद यह फैसला किया है कि १ अप्रैल १९४८ से नई मुद्रा प्रचलित की जाये। रिजर्व बैंक १ अप्रैल से पाकिस्तान का हिसाब रखना बन्द कर देगा। रिजर्व बैंक की पाकिस्तान स्थित शाखाओं में ८० करोड़ के नोट एक अप्रैल से गैर कानूनी हो जायेंगे और पाकिस्तान के नये नोट इनका स्थान लेलेंगे।

पुनस्संस्थापन-अर्थ व्यवस्था बिल

पाकिस्तान से आये शरणार्थियों की सहायता करने के लिये भारतीय पार्लियामेंट में अर्थमन्त्री द्वारा पेश किया गया बिल पास हो गया है। इस बिल के अनुसार १० करोड़ रुपए शरणार्थियों की सहायता के लिये दिया जायेगा। यद्यपि विपद् ग्रस्त शरणार्थियों की संख्या को देखते हुए यह राशि थोड़ी प्रतीत होती है परन्तु अर्थमन्त्री ने आश्वासन दिया है कि इस बिल के द्वारा सर्वांगीण सहायता देने का विचार नहीं है, बल्कि इसका क्षेत्र सीमित है। आवश्यकता पड़ने पर पार्लियामेंट से और अधिक राशि स्वीकार करने के लिये कहा जायेगा।

संयुक्त प्रान्त के स्कूलों में अनिवार्य सैनिक शिक्षा

संयुक्त प्रान्तीय सरकार ने हाईस्कूल की ९वीं कक्षा से लेकर १२ वीं कक्षा तक अनिवार्य सैन्य शिक्षा की वृहद् योजना तय्यार करने का निश्चय किया है।

मोटरों की प्लेट हिन्दी में

१ ली अप्रैल से पूर्वी पंजाब की तमाम मोटर कारों की प्लेटों पर नम्बर हिन्दी में लिखे जायेंगे। पूर्वी पंजाब की सरकार ने ऐसा ही निश्चय किया है। प्रधानमन्त्री डा० भार्गव ने अपनी कार का नम्बर हिन्दी में करा लिया है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन को सहायता

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लिये ५ लाख रुपये की सहायता एक मुश्त तथा ४० हजार रु० प्रतिवर्ष की सहायता स्वीकार की गई है। दिल्ली में एक सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना पर भी विचार किया जा रहा है।

ग्वाटीमाला का ब्रिटेन से सम्बन्ध-विच्छेद

ग्वाटी माला (दक्षिण अमेरिका) के राष्ट्रपति की पार्टी की ओर से शहर में पर्चे बांट कर ब्रिटेन से कूटनीतिक सम्बन्ध तोड़ने तथा माल के ठेके रद्द करने की मांग की गई है। ब्रिटिश होण्डुरास में ब्रिटिश सेनाओं की उपस्थिति के कारण संघर्षात्मक वातावरण उत्पन्न हो गया है और वहां के अखबार होण्डुरास पर तत्काल हमला करने की मांग कर रहे हैं। ब्रिटिश फौजों को लेकर एक क्रूजर 'डेवनशायर' जेमिका से होण्डुरास पहुंच गया है।

आर्यसमाज के प्रवर्तक

महर्षि दयानंद सरस्वती

शिवरात्रि (इस बार ९ मार्च) के दिन आपको सत्य का बोध हुआ था।

मंचूरिया पर कम्यूनिस्टों का दबाव

मुकडेन से प्राप्त समाचारों के अनुसार कम्यूनिस्ट सेनायें मंचूरिया के दूसरे बड़े नगर मुकडन से ३० मील पश्चिम में सिनमिन पर जोरदार आक्रमण कर रही हैं। महत्वपूर्ण रेलवे केन्द्र होने से सिनमिन सरकारी सेनाओं का अन्तिम गढ़ सौंपा है। कम्यूनिस्टों ने सिनमिन की समस्त रक्षा पंक्तियों को भंग कर दिया है। सिनमिन का रेलवे स्टेशन विनष्ट हो चुका है। आशान नगर की रक्षक सेना के सरकारी सेनाध्यक्ष ने नगर का पतन होने पर आत्मघात कर लिया।

होली के शुभ अवसर पर

१००००) रु० इनाम

निहाल पहेली नं० ५ में जीतिये

सही हल पर प्रत्येक व्यक्ति को ५००) रु० — सर्वाधिक हलों पर
एक अशुद्धि पर प्रत्येक व्यक्ति को २५) रु० — १००) ६०) ४०) रु०
दो अशुद्धि पर प्रत्येक व्यक्ति को ५) रु० — अन्तिम तारीख
तीन अशुद्धि पर प्रत्येक व्यक्ति को १) रु० — ३१ ३ ४८

यह इनाम प्रत्येक विजेता को उनकी संख्या का विचार न करते हुए दी जायेंगी।

संकेत—संकेत एक से लेकर सात तक तो अखण्ड भारत (भारत या पाकिस्तान) के नगर हैं। आठवा संकेत एक रिश्ता है।

१ — ट ना
२ । सी
३ — ट क
४ म ु र
५ । — पु र
६ ग लौ र
७ दे — ली
८ । ।

फीस—एक रु० प्रति हल व तीन हलों के लिए २॥) रु० है। प्रति दस हलों के लिए ८) रु० है जो मनीआर्डर द्वारा आनी चाहिये। रसीद पूर्तियों के साथ भेजें अन्यथा पूर्तिया स्वीकार न की जायेंगी।

नियम—उपरोक्त फीस के साथ सादे कागज पर इच्छानुसार तरीके से इच्छानुसार पूर्तियां भेजी जा सकती हैं। मैनेजर का निर्णय अन्तिम तथा माननीय होगा। नियम के लिए ≈) अवश्य भेजें।

पता—मैनेजर निहाल पहेली नं० ५, पो० बा० १५ शिमला।

याद रखें—अपने द्वारा … की पूर्तियें भिजवाने पर एक पूर्ति बिना फीस भेज सकते हैं। निहाल पहेली नं० १ में एक विजेता ने सही हल १३००) रु० लिये। आप भी अवश्य लीजिये।

नोट—समस्त भारत में एजेंटों की आवश्यकता है। एजेन्सी के इच्छुक पत्र व्यवहार करें। एजेन्टों को २०% से १०% तक कमीशन … ।

अखिल भारतीय पशु प्रदर्शिनी के चार चित्र

प्रथम पुरस्‍ार प्रा त ल।
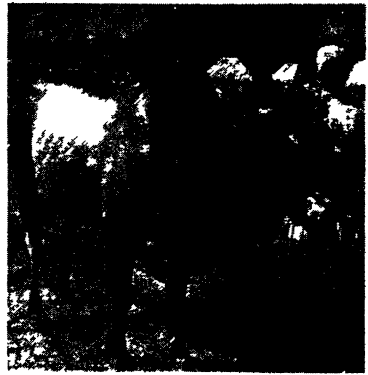
प० जवाहरलाल नेहरू मेथी साहब के महन्त हिज हेलीनैस महाराजा प्रतापसिंह को विभिन्न पशुओं की उत्तमता के लिए कप भेंट कर रहे हैं।

(ऊपर) प्रथम पुरस्कार प्राप्त गौ। हरियाणा की यह गाय १६ सेर दूध देती है।

प्रथम पुरस्कृत भैंस। मेथी साहब की यह लाखो ३६ पौ० दूध (२३ छटाँक घी) देती है।

आ० हि० फौ० के सदस्य प्रधानमन्त्री के साथ

स्थानीय शिशु स्वास्थ्य-प्रदर्शनी में X अंकित बच्चा प्रथम रहा।

श्री षण्मुखम् चेट्टी

स्वतन्त्र भारत का प्रथम बजट

★

टैक्स की कमी

व्यापारिक आयकर (बिजनेस प्राफिट टैक्स) अब तक १ लाख रु० या लगाई हुई पूंजी के ६ प्रतिशत में से जो भी ज्यादा होता है वह छूट की रकम स्वीकृत की जाती है। टैक्स की दर १६-२३ प्रतिशत है। भविष्य में दो लाख रु० या लगाई हुई पूंजी के ६ प्रतिशत में से जो भी अधिक हो वह छूट की रकम समझी जाये। इससे २ करोड़ रु० की क्षति होगी, जिसमें से १ करोड़ इन्कमटैक्स की आमदनी से पूरी हो जायेगी।

सुपर टैक्स

गत वर्ष के बजट में अधिकतम टैक्स की दर लगाने की राशि घटाकर खुद कमाई हुई आय के लिये २॥ लाख और बेकमाई आमदनी के लिये १ लाख २० हजार कर दी गई थी। अब अधिकतम टैक्स की दर लगाने की सीमा बढ़ा कर दोनों प्रकार की आय के लिये ३॥ लाख रुपया कर दी गई है

अविभक्त आय पर टैक्स में कमी

कम्पनियों की अनबंटी आमदनी के टैक्स में एक आना कमी कर दी गई है। इस रियायत से २ करोड़ रुपये का घाटा होगा। यह प्रस्ताव इसलिये किया गया है ताकि उद्योगपति अपनी कमाई पूंजी को फिर उद्योगों की उन्नति व विस्तार में लगा सकें।

छोटी कम्पनियों को रियायत — २५००० रु० या उससे कम आमदनी वाली कम्पनियों पर लगने वाले इन्कम टैक्स को घटा कर वर्तमान दरों की अपेक्षा आधा कर दिया गया है। इससे छोटी कम्पनियों को पनपने का अवसर मिलेगा।

दान के लिये छूट

सरकार द्वारा स्वीकृत संस्थाओं के लिये दान और चन्दे की रकम पर टैक्स नहीं लगेगा बशर्ते कि वह कम्पनियों के बारे में टैक्स वाली आय के ५ प्रतिशत और व्यक्तियों के बारे में १० प्रतिशत से अधिक न हो।

जायदाद पर म्युनि० टैक्सों की छूट

यह प्रस्ताव किया गया है कि जायदाद पर जो म्युनिसिपल टैक्स दिये जाते हैं उन्हें अन्य करों से बरी रखा जावे।

विदेशी कम्पनियों पर टैक्स

कार्पोरेशन टैक्स दो आने से बढ़ा कर ३ आना कर दिया जायेगा और भारत में अपना डिवीडेंड घोषित व वितरण करने वाली कम्पनियों के टैक्स में एक आने की छूट दी जायेगी।

अप्रत्यक्ष करों में कमी

कपड़े और सूत निर्यात कर की दर २५ प्रतिशत की निश्चित मात्रा में बदल देने का प्रस्ताव किया गया किन्तु हाथ करघे के सूत और कपड़े को इससे बरी रखा जायेगा।

सूत पर वर्तमान आबकारी कर को सर्वथा हटा लिया जायेगा।

नये टैक्स

निर्यात कर तिलहन (तेल के बीजों) पर प्रतिटन ८० रु० तथा वनस्पति तेल (घी) पर २०० रु० प्रति टन निर्यात कर लगाया गया है। मैंगनीज पर प्रति टन २० रु० निर्यात कर होगा।

अतिरिक्त आयात-कर

मोटरकारों के आयात करने पर टैक्स बढ़ा कर ४५ से ५० प्रतिशत कर दिया है, किन्तु ग्रेट ब्रिटेन से आने वाली मोटर पर आयात कर में ७॥ प्रतिशत छूट दी जायेगी।

सिगरेट, सिगार और तैयार तम्बाकू पर आबकारी कर कुछ बढ़ा दिया जाएगा ताकि वह नए आबकारी कर के समानान्तर हो। इन परिवर्तनों से ६२ लाख रु० की आमदनी होगी।

केन्द्रीय आबकारी-करों में वृद्धि

सिगरेटों के कारखानों के भावों पर २५ प्रतिशत की वृद्धि के समान आबकारी कर लगाने से ७ करोड़ का मुनाफा होगा। इसके साथ ही कुछ किस्मों के कच्चे तम्बाकू पर लगाए करों को ९ आना प्रति पौंड से बढ़ा कर १२ आना तथा कुछ किस्मों के बारे में ३ आना प्रति पौंड से ४ आना कर दिया जायेगा। इससे दो करोड़ रु० की आय होने की आशा है।

चाय पर आबकारी कर ३ आना से बढ़ाकर ४ आना प्रति पौंड कर दिया जायेगा, ताकि वह निर्यात कर के समान हो जावे।

इसी प्रकार कहवा पर भी कर ४ आना प्रति पौंड कर दिया जायगा।

वनस्पति तेल (घी) पर ५० प्रतिशत कर बढ़ा उसे ७॥ रु० प्रति हंड्रडवेट कर दिया जायेगा।

टायरों पर ड्यूटी ५० प्रतिशत बढ़ जायेगी।

माचिस पर ५० सलाइयों वाली डिबिया के एक ग्रुस पर २॥ रु० आबकारी कर होगा।

डाक व टेलीफोन

डाक और टेलीफोन की दरों में दो मामूली परिवर्तन किये गये हैं। रजिस्टरी चिट्ठी फीस तीन आने से बढ़ा कर चार आने की गई है तथा ट्रंक (दूर के) टेलिफोन करने पर सरचार्ज ४० से बढ़ा कर ६० प्रतिशत कर दिया गया है।

पाठकों पर बजट का प्रभाव

अर्थ मन्त्री ने इन वस्तुओं पर कर वृद्धि की घोषणा की है —

चाय, तमाखू, सिगरेट और वेजिटेबिल घी।

तिलहन तथा वजिटेबिल तेल का निर्यात कर क्रमशः ८०) रुपया तथा २०० रुपया प्रतिटन कर दिया गया है।

मोटरों के आयात कर में भी वृद्धि की गयी है।

टेलिफोन — सरचार्ज तथा डाक की रजिस्टरी की फीस भी बढ़ा दी गयी है।

सुपारी पर टैक्स हटा लिया गया है।

व्यापारिक मुनाफा कर में रियायत दी गया है।

स्पष्टीकरण

यह निश्चय किया गया है कि रेलवे की बचत में से ४॥ करोड़ रु० आम बजट में दे दिये जावें, जिससे घाटा कुछ कम हो जायेगा। किन्तु टैक्सों में कमी करने तथा इन्कमटैक्स में कुछ परिवर्तन — कर देने से घाटा ६ करोड़ ४६ लाख रु० और बढ़ कर २२ करोड़ ३५ लाख के बजाय २८ करोड़ ८१ लाख हो जायगा। इसमें से १० करोड़ रु० तो कार्पोरेशन टैक्स की अधिक आमदनी से पूरा हो जायगा। नये आयात करों से ३ करोड़ ३० लाख, नये निर्यात करों से ६२ लाख, अतिरिक्त आबकारी करों से ११ करोड़ ४० लाख रु० और डाक व टेलीफोन की दरों में परिवर्तनों से ४० लाख की पूर्ति होगी।

१ करोड़ ९ लाख का घाटा

इस प्रकार २७ करोड़ ७२ लाख रु० का घाटा पूरा करने के बाद अन्त में १ करोड़ ९ लाख का घाटा रह जायेगा। यह घाटा शेष रह जाने में कोई दोष नहीं दीखता। यदि विभाजन के समय पाकिस्तान का जो ऋण था, उसका ब्याज अदा किया जाता तो यह घाटा भी भारी बचत के रूप में सामने आ जाता।

बजट के बाद निम्न स्थिति सामने आई है। —

आय (संशोधित) १९४६-४७ में — १ अरब २६ करोड़ ७७ लाख।
बजट में — २ अरब ५६ करोड़ २८ लाख रु०।

व्यय (संशोधित) १९४६-४७ में — १ अरब ८५ करोड़ २९ लाख।
बजट में — २ अरब ५७ करोड़ १७ लाख।

घाटा (संशोधित) १९४६-४७ में — ६ करोड़ ५२ लाख।
बजट में — १ करोड़ ९ लाख।

साथ ही, १४ करोड़ ९९ लाख का अतिरिक्त व्यय किया जायेगा।

१९४६-४७ का घाटा संशोधित अनुमान के अनुसार २४ करोड़ ५९ लाख के बजाय ६ करोड़ ५९ लाख रु० होगा।

शरणार्थियों की मदद

शरणार्थियों के पुनर्निवास तथा सहायता के लिए १० करोड़ ४ लाख रुपये की व्यवस्था है। सरकार पुनर्निवास आर्थिक शासन की स्थापना के लिए १० करोड़ रुपया पेशगी देगी। अन्तरिम बजट में शामिल किये गये २२ करोड़ रुपये के विरुद्ध चालू वर्ष में पुनर्निवास तथा सहायता पर १४ करोड़ ८६ लाख रु० व्यय होने का अनुमान है।

१९४८-४९ में खाद्य पदार्थों पर १९ करोड़ ९१ लाख रुपये के व्यय का अनुमान है।

आर्थिक कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार विविध खर्चों में ढाई करोड़ की कटौती की गयी है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

[सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

यह नेताजी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र है। इसमें जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना, आज़ाद हिन्द फौज का संचालन आदि कार्यों का सरल विवरण आ गया है। मूल्य ३) डाक व्यय ॥=)।

राजस्थान एक प्रान्त हो

[श्री आचार्य, बीकानेर]

भारत विश्व की एक शक्ति बने, इस के लिये यह आवश्यक है कि इसके नक्शे का रंग सारा ही एक सा बन जाय। इसको शक्ति शाली बनाने के लिए भिन्न भिन्न अंगों का एकीकरण जरूरी है। आज इसके प्रान्त भी भिन्न भिन्न टुकड़ों में बंटे हुये हैं।

राजस्थान भी अनेक इकाइयों में विभक्त है। विभक्त राजस्थान का धन विभक्त है, उसकी धन शक्ति विभक्त है और उसके विभाजित अङ्ग न केवल उसको ही क्षीण करते हैं, वरंच देश की ताकत को भी अपने प्रतिक्रियावादी संस्कारों के कारण कम करते हैं। राजपूताने का वीर प्रान्त करीब २२ रजवाड़ों और एक अजमेर मारवाड़े के इलाके में विभक्त है। अनुमान से इसका क्षेत्रफल करीब २ लाख वर्गमील है। इसकी आबादी करीब २ करोड़ की और आमदनी १२ करोड़ रुपयों की है। इन बारह करोड़ रुपयों में से सालाना करीब १ करोड़ रुपया तो हमारे २२ राजाओं पर ही खर्च हो जाता है। राजस्थान के एक हो जाने पर हम इस लम्बी और भारी रकम को राजाओं के व्यक्तिगत विकास में खर्च करके भी इतनी रकम बचा सकते हैं कि करीब २५००० अध्यापकों को २००) माहवार वेतन देकर कम से कम १२॥ लाख व्यक्तियों को साधारणतया अच्छी शिक्षा दे सकें। जिस रकम से १२॥ लाख को शिक्षा दी जा सकती है, आज वह केवल २२ मानव व्यक्तियों द्वारा विषय-विलास में अपव्यय की जा रही है।

व्यापारिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से भी राजस्थान का एक होना परमावश्यक है। आज रजवाड़ों में न तो व्यापारिक सुविधा है और न व्यावसायिक। हर एक रियासत ने अपनी अपनी सीमा में कर लगा रखे हैं, जो नेगार और पैदार दोनों पर हैं। मनुष्य की प्राणवायु को छोड़कर अधिकांश रियासतों में सभी वस्तुओं पर कर लगा हुआ है। इससे हमारे प्रान्त का व्यापार और व्यापारी दोनों ही नहीं पनप सके। माल की खपत करने वालों को भी चीजें महंगी ही मिलीं। अजमेर में जो चीज एक रुपये में मिलती है, वह जोधपुर में एक रुपया छः आने में मिलेगी। यदि बीकानेर से घी डेढ़ सौ रुपया मन हो तो जैसलमेर को सौ रुपया मन बेचना पड़ेगा, क्योंकि जैसलमेर का ४५) मन सिंगकी का कर और २) मन बीकानेर में आने पर कर व ३) मन खर्च ढुलाई (ट्रान्स पोर्ट) लग जाता है।

राजस्थान की विभिन्न रियासतों में न्याय विभाग पर जो व्यय होता है, उसमें एक प्रान्त के रूप में राजस्थान के बन जाने पर कम से कम ५० प्रतिशत खर्चा कम हो जायगा। अभी राजपूताना में कम से कम १० हाईकोर्टों का खर्चा है जिस में करीब २० लाख लगे हुए हैं। इन का वेतन-खर्च कम से कम २० हजार रुपया है। यदि राजस्थान एक प्रान्त बन जाय तो १० लाख १० हजार रुपये के वेतन में एक ही हाई कोर्ट बना कर ज्यादा लाभ पहुंचा सकेंगे।

यही हाल काश्तकारी और पशु-पालन का है। रजवाड़ों के रहते भूमि पद्धति में समानता और सुधार की आशा नहीं। न काश्त की बेहतरी है न काश्तकार की। इसी प्रकार उपयोगी पशु-संरक्षण भी अभी रसातल में पहुंचा हुआ है।

भारतके दो डोमिनियनों में बट जाने से सैनिक दृष्टि से राजस्थान का एक *प्रान्त होना निहायत जरूरी हो गया है।* हम राजस्थानी भारत और पाकिस्तान की सीमा पर हैं। इस प्रान्त को सबसे ज्यादा ताकतवर बन कर रहना पड़ेगा, अन्यथा हर वक्त हमें लूट खसोट और हमले का खतरा है। भिन्न भिन्न स्थानों में कमान्ड हैडक्वार्टर्स से ठीक समय में न तो सूचना पहुंचाई जा सकती और न इन्तजाम फुर्ती से हो सकता है। अभी एक रियासत में ज्यादा से ज्यादा ताकत ५००० सिपाहियों की है और सारे राजपूताना में करीब एक लाख है। किन्तु राजस्थान के एक प्रान्त होने पर हमारी फौजी ताकत १० लाख तक बढ़ाई जा सकती है और आवश्यकता पड़ने पर तीस चालीस लाख तक। अहीर तथा गूजर जो भी क्षत्रियों के ही अङ्ग हैं हमारे वीर क्यामखानी गोमटिया खालसा आदि मुसलमान भाइयों के साथ एक लाइन में खड़े हो कर राष्ट्र की ध्वजा को सदा आकाश में फहराते रहेंगे। हमें फिर किसी पड़ोसी राज्य का भी खतरा नहीं रहेगा और देश की ताकत बढ़ जायगी।

सात करोड़ मुसलमानों का

नवजात राष्ट्र — पाकिस्तान

[१७ जनवरी १९४८ के 'लाइफ' से]

पिछले दिनों पाकिस्तान की उत्तरी सीमा के निकट की ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों में मुस्लिम कबाइलियों की भारत के नियमित सैन्य दलों से कुछ घमासान लड़ाइयां हुईं। इस नये मुस्लिम देश के एक छोर से दूसरे छोर तक हथियार तथा स्वयंसेवकों से भरी हुई रेलगाड़ियां आईं ताकि पड़ोसी काश्मीर का हमला सफल बनाया जा सके। इसके बावजूद, पाकिस्तान की राजधानी कराची में देश के रोगग्रस्त निर्माता व तानाशाह मोहम्मद अली जिन्ना यही कहते रहे कि इसमें उनका कुछ भी हाथ नहीं है।

यह दावा उस समय बड़ा विचित्र जान पड़ता है, जब नित्य ही पाकिस्तानियों के भारी संख्या में हताहत होने के संवाद मिलते रहते हैं और जब कि स्वयं जिन्ना ही काश्मीर के राजा की निन्दा कर चुके हैं कि उन्होंने मुस्लिम बहुल रियासत को हिन्दू बहुल भारत की आधीनता में कर दिया है। परन्तु इसका मतलब साफ है— जिन्ना के आगे मुसलमानों की धार्मिक भावना को उत्तेजना देने के सिवाय और कोई कार्यक्रम नहीं था। यदि इसके परिणामस्वरूप जिन्ना के ७ करोड़ अनुयायी आजाद काश्मीर का नारा लगाते हुए लड़ने के लिये झपट पड़ें तो कायदे आजम कर ही क्या सकते थे।

सात वर्षों के आन्दोलन का स्वाभाविक परिणाम

जिन्ना इतना ही जानते थे, किन्तु वे पाकिस्तान की अन्य समस्याओं से अनभिज्ञ थे। काश्मीर का युद्ध उनके हिन्दू व मुसलमानों को अलग करने के सप्त वर्षीय आन्दोलन का स्वाभाविक परिणाम था। परन्तु पाकिस्तान को अपनी कपास से कपड़ा तैयार करने के लिये भारत की मिलों की, अपने प्राकृतिक साधनों के विकास के लिये भारतीय पूंजी की और सलाह में अपने विश्वास को पूर्ण बनाने के लिये भारत यो के शासन की आवश्यकता थी। पिछले महीने, जब यह दुःखद विभाजन अधिक गंभीर हुआ और जब ७२ वर्षीय जिन्ना की कमजोरी बढ़ी — यह स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तान जीवन संग्राम में ही पराजित नहीं हो सकता, बल्कि अपने नेता से भी हाथ धो सकता है।

आर्थिक दिवालियेपन से युद्ध

जब पाकिस्तान को १५ अगस्त के दिन अचानक आजादी मिल गयी तो उसके उत्साही देशभक्तों ने डींग मारनी आरम्भ कर दी कि उन्होंने एक ऐसे राष्ट्र को जन्म दिया है, जिसके पास फ्रांस की तुलना में अधिक भूमि है और जिसमें जर्मनी की तुलना में अधिक बनता है। इन तुलनाओं को मानते हुये भी यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि पाकिस्तान में आधुनिक राष्ट्र की अनेक विशेषताओं का अभाव है। आज इसकी राजधानी कराची आंशिक रूप से तम्बुओं का शहर है, जैसा कि अगले पैरा में प्रगट किये चित्र से प्रगट होगा।

७ करोड़ पाकिस्तानियों में से ८० प्रतिशत से अधिक किसान, कुछ धनी जमींदार और शेष दस्तकार व दूकानदार हैं। पाकिस्तान के अधिकांश पूंजीपति तथा पेशेवाले लोग उन ४० लाख हिन्दुओं में से थे, जो भाग कर भारत आ गये हैं। भारत से पाकिस्तान को लगभग ६०,००,००० निर्धन किसान मिले हैं, जो अपना साज-सामान पीछे छोड़ आये हैं। आज पाकिस्तान में कुशल कारीगरों या कारबार करने वालों का पूर्ण अभाव है।

पाकिस्तान सिर्फ एक ही बात में आत्मभरित है। देश में रहने वाली जनता का पेट भरने के लिए वहां पर्याप्त अन्न उपजता है। १९३८-३९ में पाकिस्तान में ४,३६,००,००० एकड़ की खेती होती थी। पूर्वी पाकिस्तान में अधिकांश चावल व पश्चिमी पाकिस्तान में अधिकांश गेहूं उत्पन्न होता है। यदि फसल साधारण तौर पर अच्छी हो तो सिन्ध, पश्चिमी पंजाब और पूर्वी बंगाल के अतिरिक्त अन्न वाले सूबे सीमाप्रान्त व बिलोचिस्तान के कमी वाले प्रदेशों का काम चला सकते हैं। परन्तु पाकिस्तान की यातायात व्यवस्था पर इतना भार है कि अन्न की ढुलाई नहीं हो सकती।

कच्चा माल व उद्योग

पाकिस्तान की सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक फसल जूट है। पिछले वर्षों में ब्रिटिश भारत का जूट के विषय में प्रायः विश्वव्यापी अधिकार था। आशा की जाती है कि १९४७-४८ में पाकिस्तान अधिभाजित भारत की फसल का ७२.३ प्रतिशत भाग उत्पन्न करेगा। हाल ही में पाकिस्तान ने जूट पर कड़ा निर्यात कर लगाया था और भारत ने भी उतने ही कड़े निर्यात कर से उसका बदला दिया। पाकिस्तान की धन उगलने वाली दूसरी फसल कपास है, जो १५ लाख गांठों के बराबर है। पाकिस्तान के

(शेष पृ २५ पर)

हर्ष या विषाद

[श्री गोपेश भट्ट 'अरुण']

रवि किरणों से प्रकाशित हो मस्जिद की धवल मीनारें चमक उठीं, और कुछ ही समय बाद मीनार पर से अज़ान की गम्भीर ध्वनि सुनाई दी। अज़ान की मार्मिक ध्वनि को सुन ऐसा आभास होता है मानों जन्नत के फ़रिश्ते चिल्ला चिल्ला कर रहे हों—'यह दुनिया फ़ान है, अनन्त-स्थिर-चिदानंद है केवल 'ब्रह्म' उससे बढ़ कर कुछ नहीं।

एक जीर्ण शीर्ण मकान के दरवाजे पर खड़े लड़के ने अन्दर की तरफ़ झांक कर पुकारा — 'अब्बा जान ! अज़ान लग चुकी है।'

एक वृद्ध ने जिसकी लम्बी दाढ़ी छाती पर लहरा रही थी, बाहर निकलते हुए कहा — 'खुदा तुम्हें खुश रखें बेटा। तुम ने मुझे याद दिलाई।'

वे दोनों तेज़ी से मस्जिद की ओर बढ़े।

मस्जिद में चारों ओर शान्ति का पूर्ण साम्राज्य था। सब लोग कतारों में पास पास खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे। श्रद्धा उमड़ी पड़ रही थी।

नमाज़ खत्म हो जाने पर वह वृद्ध जिसे लोग 'रहमान चाचा' कह कर पुकारते थे, अपने पुत्र हमीद को साथ लिये घर की ओर चला। राह में हमीद ने पूछा — अब्बा ! क्या 'इस्लाम' अच्छा नहीं है, रहमान चौंक उठा, उसने कहा — 'किसने कहा तुझे यह बेटा ! मोहम्मद का चलाया इस्लाम, पैग़म्बरों का इस्लाम, कभी बुरा नहीं हो सकता — वह दुनिया के लिये 'खुदा' और नेक जिन्दगी का सब से अच्छा रास्ता है —

हमीद ने कहा — सो तो है अब्बा— पर कल रामू कह रहा था मुझ से — 'मुसलमान खराब होते हैं, वे दगाबाज़ पत्थर दिल होते हैं, उनके दिल में दया नहीं होती। मुसलमानों ने, बंगाल में पंजाब और सारे देश के कोने कोने में हिन्दुओं को मारा — उनके घरों को जला दिया—औरतों को बेइज़्ज़त किया। क्या यह सब सच है अब्बा ! मुस लमानों ने ऐसा क्यूं किया ?

हमीद के उत्तेजित शब्दों की वास्त- विकता ने रहमान के दिल पर चोट की उसकी आंखों के सामने उन क्रूर-पशुता पूर्ण कार्यों का नग्न चित्र खिंच गया और उसकी आंखों से आंसुओं की बूंदें चू पड़ीं। भर्राये गले से उसने कहा—हमीद ! सब सच है, बेटा। इसके यह माने नहीं कि इस्लाम मज़हब भी बुरा है — इस्लाम नहीं कहता की अपने पड़ोसियों के खून से अपने हाथ रंगो — ये सब कुकृत्य इस्लाम पर नहीं मढ़े जा सकते। कुछ बेईमान मुसलमानों ने जिन्हें कहते ही शरम आती है, यह सब कुछ मुसलमान किया है।

हमीद ने टोक कर पूछा — अब्बा यह 'पाकिस्तान' क्या है ? किसका है यह पाकिस्तान ?

रहमान ने कहा — बेटा ! पाकि- स्तान का मतलब तो है वह जगह, जहां खुदा के नेक बन्दे ही बसते हों पर आज इसे कुछ और माने में लिया जा रहा है। मुसलमानों के रहने का हिन्दुस्तान से अलग हिस्सा हो, जिसमें कोई मुस्लि- मेहतर न रहे, बस केवल मुसलमान ही रहें।

'हम भी तो मुसलमान हैं अब्बा। क्या हमें भी अपना घर छोड़, वहां जाना पड़ेगा ? अब्बा मैं नहीं जाऊंगा वहां। अपने दोस्तों को, अपने घर को छोड़ कर कभी वहां न जाऊंगा। न जाने वहां कैसा घर मिले। इन्दर, कला, मोहन, रघु वीर वहां नहीं होंगे। वे कितने अच्छे हैं। मोहन की मा मुझे कितना प्यार करती है। कहती है, हमीद मोहन से कितना अच्छा है, मोहन तो ज़िद्दी है, वह निरा बुद्धू है।' — और हमीद कल्पना में भूल गया अपने आप को – उसे ख्याल न रहा कि वह अपने अब्बा के साथ सड़क पर चल रहा है। 'जाने' की कल्पना नामात्र से उसकी आत्मा कांप उठी।

हमीद के हाव भाव से उसके अंतर की व्यथा को समझ रहमान ने कहा — 'हां बेटा ! यह कभी नहीं हो सकता। हम अपने घर, उन प्यारे झोंपड़ों को छोड़ कहीं नहीं जावेंगे, जिनमें हमारे बाप दादाओं ने अपने सुख दुख के दिन गुज़ारे, जहां हम बच्चे से बड़े हो हंसते खेलते अपने सुख दुख को भुलाते रहे – हम यहां पैदा हुये हैं और यहीं दफ़न होंगे। हमारे वतन, हमारे देश, को हमसे कोई नहीं छुड़ा सकता। हम सब हिन्दुस्तानी हैं। यह लहलहाती बल खाती नदियों, ऊंचे पहाड़ों व हरे भरे खेतों की भूमि हमारी मा है, जिसकी छाती पर खेल कूद हम बड़े हुए हैं।'

हमीद ने स्वीकृति-सूचक सर हिलाया और कहा — ठीक कहते हो दादा ! हम कहीं नहीं जावेंगे, हम सब एक हैं, चाहे हमारे मज़हब अलग अलग हों — हम हिन्दुस्तानी हैं, हमारे जिस्म का खून एक ही मिट्टी का है। क्यों है न यही मतलब ?

हमीद की बातों ने रहमान को आश्चर्य चकित कर दिया। इतनी कम उम्र में इतनी समझ, यह ज़रूर आगे जाकर दुनिया में नाम रोशन करेगा उसने उसकी पीठ ठोकते हुए कहा — 'शाबाश बेटा ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। वे सब अपने वतन के दुश्मन हैं जो हमें लड़ने को उकसाते हैं ......। बातें करते करते अब वे दोनों घर के नज़दीक पहुंच गये थे।

पास के मकान की खिड़की से मुंह निकालकर रघुबीर ने कहा — चचा राम राम, आज तो सवेरे सवेरे ही बाप बेटे में बड़ी घुट घुट कर बातें हो रही हैं। यह हमीद तो बड़ा बातूनी हो गया है चचा ! न जाने कहां की बेसिर पैर की बातें करता है – रहमान ने मुस्कराते हुए कहा — अरे तू अभीं तक सो रहा है रघुबीर ! कितनी बार समझाया कि ज़रा सुबह जल्दी उठ जाया कर। खुदा का नाम भी नहीं लेता कभी। बड़ा आलसी है।'

रघुबीर बोला — मैं तो कभी का उठ गया चचा ! सध्या वदन से निपट यहां बैठा यह किताब पढ़ रहा था... और उसने खिड़की से हाथ बाहर निकाल पुस्तक दिखलादी।

रहमान ने कहा — बहुत अच्छा बेटा ! खूब इलम पढ़ो और तरक्की करो.. ... और वह हमीद की ओर मुड़ा तो देखा.. हमीद पहले से ही खिसक गया था। रहमान को विस्मययुक्त आल्हाद हुआ। उसने मन ही मन कहा — 'कैसा चुपचाप खिसक गया, अरे हां - नदी पर हमजोली जो इन्तज़ार करते होंगे .' हंसते हंसते उसने अपने घर में प्रवेश किया।

करीब एक साल बीत गया — हमीद और रहमान वही थे, रघुबीर वही था, कस्बा, कस्बे की गलियें वही थीं, किन्तु संसार का नियम है परिवर्तन और नियमा- नुसार दुनिया बहुत बदलचुकी थी। दुनिया के नक्शे में एक नये राष्ट्र का जन्म हुआ था 'पाकिस्तान'— कैसे वह अलिफ़लैला के किस्से-सी कल्पना पूरी हो गई। चारों ओर मारकाट और आपसी दंगों का दौर शुरू हो चुका था। हज़ारों लाखों की संख्या में हिन्दू-सिख, हिन्दुस्तान आ रहे थे, और मुसलमान पाकिस्तान भाग रहे थे। रोज़मर्रा की ज़िंदगी दूभर हो चली थी, किंतु आश्चर्य था कि अभी तक उस छोटे से कस्बे में ज़िंदगी का वेग ही ढग चल रहा था।

सारे गांव में 'शांति-समिति' की शाखायें फैल गई थीं। रघुबीर अपने सारे मोहल्ले की कमेटी का नेता था। उसके नीचे मोहल्लेभर के नवयुवक थे। हमीद उमर में छोटा था फिर भी हर एक कार्य में यथाशक्ति सहयोग देता था। उनकी यह टोली जब 'हिंदू मुस्लिम भाई भाई' 'भारत मा की जय' 'महात्मा गांधी की जय' के नारे लगाती हुई निकलती तो बुड्ढा रहमान हर्ष के आवेग में, सबके साथ बोल उठता 'गांधी बाबा की जय।'

यकायक एक रोज़ यह खबर चारों ओर फैल गई—'पाकिस्तान से भाग कर शरणार्थी आये हैं' — लोग देखने स्टेशन की ओर भागे। रहमान-रघुबीर वगैरा भी वहां पहुंचे। साम्प्रदायिक पागलपन के शिकार नरनारियों का दल वहां डेरा डाले पड़ा था, रहमान सोचने लगा — 'ये सब बेचारे ! निरपराध ! पागलपन के शिकार हुये हैं। इनकी खिलती बगिया उजाड़ दी गई। हे खुदा ! इन पर अपनी रहमत अता फरमा। इनको हिम्मत दे। इसी प्रकार के विचारों के साथ साथ उसके सारे शरीर में एक अपूर्व सिहरन फैल गई। उसने इकट्ठी हुई भीड़ की ओर मुख़ातिब हो तेज़ आवाज़ में कहा — भाइयों। खूंखारी, पशुता और साम्प्रदायिकता के पागलपन से उजाड़े गये ये हमारे भाई हमारी हम- दर्दी के हकदार हैं। सताये गयों को राहत पहुंचाना — उनकी मदद करना हरएक का इन्सानी फ़र्ज़ है। इसके साथ साथ हमें यह भी नहीं भूलना है कि हमारे यहां कोई ऐसा न होने दे। पागलपन को मत पनपने, दो वरना यह हरा भरा गुलशन भी बरबाद हो जायेगा।

सब लोग रहमान की बातें बड़े ध्यान से सुनते रहे और उन्होंने हर्ष ध्वनि कर उसका अनुमोदन किया ..... किन्तु उन लोगों को जो पाकिस्तान से अपने घरबार, घर जेवर, सब कुछ खोकर आये थे यह सब कुछ ठीक न लगा। वे चाहते थे जो उन पर बीती है वही उस जगह रहने वाले सब मुसलमानों पर बीते।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

व्हाइट हाउस में अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रूमैन

विश्वव्यापी आर्थिक संकट

क्या १९४८ में आकर रहेगा ?

[श्री अविनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार]

[क्या आर्थिक मन्दी अपरिहार्य है इसको टाला नहीं जा सकता ? यदि यह अनिवार्य है तो अगला प्रश्न है यह कब आयेगी ? इन प्रश्नों का उत्तर इस लेख में पढ़िये ।]

अमेरिका के विदेशमन्त्री जार्ज मार्शल — मार्शल योजना के प्रवर्तक

न्यूयार्क का 'स्टाक एक्सचेंज' — शेयर बाजार — डावांडोल है। इसकी प्रतिछाया भारत के स्टाक एक्सचेंज पर भी पड़ रही है और शेयरों के भाव बराबर गिरते जाते हैं। पिछले दो सप्ताह से बराबर गिरावट आ रही है। न्यूयार्क के बाजार में लोहे के शेयरों में ४ प्वाइन्ट — बिन्दु — एक दिन में गिरावट आई। उपज २००० से गिर कर १७६५ पर पहुंच गया। यह क्या इस बात का सूचक है कि १९३०-१९३१ के समान पुन विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी आ रही है?

अमरीका के गल्ले के भाव के गिरने का कारण है। अर्जेन्टाइना में गेहूं विपुल प्रमाण में हुआ है।

आशा से अधिक पैदावार बढ़ने के कारण अन्न का भाव गिरना स्वाभाविक है। पर औद्योगिक शेयरों के भावों का गिरना असाधारण बात है। यह गिरावट सटोरियों के कारण नहीं हुई है। सटोरियों के कारण एक दिन के अन्दर लोहे के दाम में ४ डालर की कमी नहीं आती। यह इस बात का सूचक है कि उद्योगों में पूंजी लगाने वाले लोगों का विश्वास डगमगा गया है फलत 'स्टाक एक्सचेंज' के बाजार में सनसनी मच गई है। सम्भव है यह अस्थाई हो, पर यह निश्चित है कि यदि इस समय सावधानी न बरती गई और बुद्धिमानी से काम न लिया गया तो एक नये आर्थिक संकट का देश को सामना करना पड़ेगा।

कारण क्या है ?

स्वभावत प्रश्न उठता है कि सहसा मन्दी के लक्षण क्यों प्रकट हो रहे हैं। तात्कालिक कारण स्पष्ट है। यूरोप को मार्शल योजना के अन्तर्गत दी जाने वाली आर्थिक सहायता में कटौती की जा रही है। इसका अर्थ है कि अमरीका के उद्योगों का विस्तार चरम सीमा पर पहुंच गया है और अधिक औद्योगिक उत्पादन की सम्भावना न रहने से पहले के समान पूंजी मिलने की सम्भावना नहीं रही। फलत उद्योगों में पूंजी लगाने वाले पूंजी लगाने में संकोच कर रहे हैं।

फ्रांक के मूल्य में ४० प्रतिशत कमी होने से भी मन्दी आने के लक्षण प्रकट होने लगे हैं। फ्रांस ने अपना निर्यात व्यापार बढ़ाने और आयात घटाने के लिए फ्रांक का मूल्य गिराया है। इसके कारण यह भी सम्भावना उत्पन्न हो गई है कि स्टर्लिंग का मूल्य गिराया जायगा। यदि ऐसा हुआ — जिसकी अत्यधिक सम्भावना है — तो अमरीका के उद्योगों पर इसका भारी असर पड़ेगा। उनके तैयार माल के लिये न केवल बाजार संकुचित हो जायगा, बल्कि उनका उत्पादन कम हो जायगा। उत्पादन कम होने से मुनाफा स्वय गिर जायगा। शेयर-बाजार औद्योगिक जगत का ममस्थल है। इस पर सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का तुरन्त असर होता है। इसलिये शेयरों के भावों के गिरने को १९४८ में आने वाली मन्दी का पूर्व लक्षण समझना चाहिए।

अनर्थकारी मन्दी

मन्दी आर्थिक विपत्ति है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। स्थिर जीविका वृत्ति वाले अवश्य मन्दी में सुख अनुभव करते हैं। पर इन लोगों की संख्या ही कितनी है? समाज के अधिक संख्यक लोगों की वृत्ति और आय स्थिर नहीं है। इसलिए मन्दी आई तो बेकारी बढ़गी। बी० ए० पास युवक ३० रु० की नौकरी के लिए दर दर भटकते फिरेंगे। कर्ज भार से दबे किसान और सिर पर टोकरी रखे मजदूर मन्दी के कारण निराशा से आसमान देखेंगे। इस मन्दी राक्षसी को दूर रखने के विचार से मित्रराष्ट्र विजय की आशा होने के बाद से प्रयत्न कर रहे हैं और उन्होंने अनेक अन्तरराष्ट्रीय संगठनों की स्थापना की। पर मन्दी की मडराती काली छाया आती हुई नजर आ रही है।

पुनर्निर्माण कार्य

लड़ाई समाप्त होने पर शान्तिकाल के अनुरूप यदि आर्थिक क्रियाकलाप प्रारम्भ हो जाते तो मन्दी आने का कोई कारण नहीं था। युद्धकाल में नागरिक जीवन की अनेक आवश्यक चीजों का अभाव था। उसको पूरा करने के लिए देश विदेश के सब उद्योगों को जोरों से चलना चाहिए था। नित्योपयोगी वस्तु, दीर्घकाल टिकने वाले घरों, मैशीनरी, मार्गों, रेल, जहाज आदि का उत्पादन पूरी शक्ति से होना चाहिए था। यदि ऐसा होता तो सब नवीन उत्साह और नूतन जीवन दिखाई देता। पर प्रत्यक्ष रूप में क्या दिखाई दे रहा है? देशों के पुनर्निर्माण की योजनायें कागज पर ही लिखी रह गईं। कारण क्या है? मानव इस प्रयत्न को करने के लिए उत्सुक था। पर आज की आर्थिक व्यवस्था में मानव की अपेक्षा मैशीनरी का महत्व है। यह आर्थिक युग है। पर मैशीनरी और प्लाण्ट—यन्त्रसामग्री मिलनी कठिन हो गई है। जर्मनी और जापान की औद्योगिक उत्पादन की क्षमता ही नष्ट हो गई है। यूरोप के अन्य देशों का भी विनाश इस सीमा तक हुआ है कि वे बिना बाह्य सहायता के युद्ध पूर्व के समान उत्पादन करने में असमर्थ हैं। इसके सिवाय युद्ध बन्द हो जाने पर वाञ्छित शान्ति अभी नहीं हुई है। जर्मनी और जापान से आज तक स्थायी सन्धि नहीं हो सकी है। रूस अमरीका यहूदी अरब कम्युनिस्ट पूंजीपति हिंदु मुसलमान, डचइंडोनेशिया, फ्रेंच हिंदचीन, आदि के बीच तनाव उत्पन्न रहने के कारण आर्थिक पुनर्निर्माण को दूसरा स्थान प्राप्त हो गया है। इन सब का सम्मिलित परिणाम यह हो रहा है कि आर्थिक कठिनाई से निकलने के पहले ही मन्दी की छाया के फैलने का भय उपस्थित हो गया है।

अमरीका

दुनिया का बाजार आज अमरीका बना हुआ है। युद्धकाल में उसका उत्पादन बढ़कर दुगना हो गया है। लड़ाई की आंच भी उस तक नहीं पहुंची। यह सारी उत्पादन शक्ति आज अमरीका का व्यापार बढ़ाने के काम आ सकती है। भारत चीन सदृश पिछड़े देश और हिटलर के बम प्रहार से ध्वस्त फ्रांस और ब्रिटेन सदृश सब अपने आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए अमरीका की ओर देख रहे हैं। अकेला सोवियत् रूस केवल अपनी प्राकृतिक सम्पत्ति और योजनापूर्ण व्यवहार का समाजवादी तत्र होने के कारण अपने पैरों पर खड़ा है। राजनीतिक मतभेद और आर्थिक हित सम्बन्धों में विरोध होने के कारण भी रूस अमरीका से मदद की आशा नहीं कर सकता। पर भय यह है कहीं अमरीका की उत्पादन शक्ति को ही पक्षाघात न मार जाय क्योंकि अमरीका के माल के ग्राहकों के पास माल का मूल्य चुकाने की सामर्थ्य नहीं है।

ग्राहकों को कर्ज

दो देशों के बीच व्यापार लेन देन के आधार पर हो सकता है। अमरीका से यदि माल मंगाना है तो अमरीका या अमरीका से सम्बन्धित देश को माल भी भेजना आवश्यक है। इसी का नाम क्रयशक्ति है। यही क्रय शक्ति आज अपर्याप्त मात्रा में है। यदि माल के बदले सोना भेजने की नौबत आई तो वह पहले से ही अमरीका के भूगर्भ में बने लोहे के स्वर्ण दुर्ग में पहुंच चुका है। इस लिए अमरीका की उत्पादन शक्ति और अमरीका के बाहर माल की गरज इन दोनों के बीच मेल बैठ नहीं सकता। चारों ओर डालर की कमी ही कमी है। पर अमरीका भी शान्त होकर नहीं बैठ सकता। क्योंकि ग्राहक न रहेंगे तो उसके उद्योग धंधे डूब जायेंगे। इस लिए अमरीका विभिन्न देशों को बड़ी राशि में कर्ज दे रहा है। परार साल ब्रिटेन को ४४० कोटि डालर दिए थे इन के अतिरिक्त फ्रांस, ग्रीस, तुर्की ईरान, चीन आदि को भी पिछले साल दिया। इस प्रकार अमरीका अपने ग्राहकों को कर्ज देकर माल बेच रहा है। इस प्रकार मिले कर्ज से यूरोप के देश अमरीका का माल ले रहे हैं और उनकी डालर की आवश्यकता पूरी हो रही है। पर युद्ध ने यूरोपियन देशों को इतना अधिक पायमाल कर दिया है

कि इतने से भी उनकी आर्थिक व्यवस्था सुधरी नहीं। उसके सुधरे बगैर उनके लिए अपने उत्पादन से अमरीका का माल लेने के लिए आवश्यक क्रय शक्ति उत्पन्न होनी सम्भव नहीं है। इस लिए यूरोप को और अधिक प्रमाण में कर्ज देने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसका फल मार्शल योजना है।

ग्राहक घटेंगे

पर अमरीका अपना माल बेचने के लिए बराबर अव्याहत रूप से कर्ज नहीं देता रह सकता। इस की भी एक सीमा है। अत अपने माल के ग्राहक तैयार करने के लिए अन्य देशों की आर्थिक व्यवस्था शीघ्र व्यवस्थित करनी चाहिए। पर ऐसा करने से दुनिया के बाजार में अमरीकी माल के प्रतिस्पर्द्धी भी तैयार हो जावेंगे। यदि अमरीका के द्वारा दिए गए कर्जे से ब्रिटेन ने अपने मोटर के कारखानों को बढ़ाया, तो ब्रिटिश मोटर कार फोर्ड कार की प्रतिस्पर्धा बाजार में करने लगेगी। फलत अमरीका के ग्राहक कम होंगे। यही बात अन्य वस्तुओं की है। पर अमरीका को यह पसन्द नहीं है। इसलिए अमरीका मार्शल-योजना के अन्तर्गत कर्ज देते हुए इस प्रकार की शर्तें रखना चाहता है कि इस कर्ज का व्यवहार किस रूप में होगा, यह जानने का सुविधा उसको मिले। इस शर्त को न मानने के ही कारण रूस और रूस के सहयोगी पूर्वीय यूरोप के देश इस मार्शल-योजना में सम्मिलित नहीं हो रहे। इस रीति से अमरीका कुछ काल तक अपना माल बेच सकेगा और अपनी उत्पादन शक्ति को अभग्न तथा साबुत रख सकेगा। पर अमरीका अन्य देशों का माल अपने देश में बिकने देना नहीं चाहता और उनके मार्ग में अड़चन डालता है। जैसे उसने आस्ट्रेलिया की ऊन पर जकात बढ़ा दिया। इसलिये अमरीका की इस नीति के होते हुए भविष्य में भी उनको अमरीका का माल लेना सम्भव न होगा। यदि कहा जाय कि अमरीका के कर्जदार राष्ट्र अमरीका के उद्योग धन्धों का पोषक कच्चा माल तैयार करेंगे, और इस प्रकार अमरीका को प्रतियोगिता का भय न रहेगा तो यह न भूलना चाहिये कि इस प्रकार के औद्योगिक पुनर्निर्माण से जो कुछ शक्ति उत्पन्न होगी, वह अमरीका का उत्पन्न सब माल खरीदने के लिये अपर्याप्त होगी। इस प्रकार अमरीका के उत्पन्न माल के ग्राहकों के घटने की सम्भावना हर हालत में बनी रहेगी।

सम्भव नहीं

इससे स्पष्ट है कि युद्ध के कारण बाजार में आई तेजी को और बहुत दिन टिकाये रखना अमरीका के लिये सम्भव नहीं। हिसाब लगाने वालों का कहना है कि अमरीका के निर्यात और व्यापार के बीच १६ अरब डालर का अन्तर प्रति वर्ष कर्ज देकर इस अरब डालर आयात की कमी की पूर्ति करना अमरीका की सामर्थ्य से भी परे है। फलत ग्राहकों के अभाव में माल गोदाम में पड़ा रहेगा और मन्दी का चक्र आरम्भ हो जावेगा। गोदामों में माल जमा कर रखने के लिये कोई माल तैय्यार नहीं करता। अत उत्पादन में कमी होगी। उत्पादन में कमी होने से छुटनी होगी, बेकारी बढ़ेगी, मजदूरी, वेतन आदि के रूप में जनता की जेबों में जाने वाली क्रय शक्ति कम होगी। इससे देश के आन्तरिक बाजार में भी पहले की अपेक्षा माल की माग कम हो जावेगी। इससे और बेकारी बढ़गी, कीमतें नीचे उतरेंगी, मुनाफे का प्रमाण घट जावेगा। फायदा कम होने पर स्वभावत मजदूरी भी कम होगी। उत्पादन और कम होगा और जनता का हाल और अधिक बिगड़ेगा। यह स्थिति केवल अमरीका तक सीमित न रहेगी। अमरीका में माल की कीमत घटने से अन्य देश भी अपना माल बचने की गरज से अपने माल की कीमत घटा देंगे। भारत जैसे कृषिप्रधान देशों के कच्चे माल के बाहरी ग्राहकों में कमी होने के कारण खेती की पैदावार का मूल्य गिरेगा। अत किसानों की आमदनी घटेगी। बहुसंख्यक जनता के खेती पर निर्भर रहने के कारण चारों ओर मन्दी की छाया फैल जायेगी, और १९३१ का सा पिछला अनुभव पुन सबको होगा।

प्रश्न यह है क्या यह आर्थिक मन्दी अपरिहार्य है, इसको टाला नहीं जा सकता? यदि यह अनिवार्य है तो अगला प्रश्न है, यह कब आयेगी? पहले का उत्तर तो निश्चय से दिया जा सकता है कि पूंजीवादी व्यवस्था के रहते मन्दी का आना अनिवार्य और इसको टाला नहीं जा सकता। यह देर में आए, इसके लिए प्रयत्न किए गए और किए जा रहे हैं, पर फ्रांस ने अमरीका और ब्रिटेन की सलाह की परवाह न कर के फ्रांक का मूल्य गिरा कर जो चक्र आरम्भ कर दिया है, उसको देखते हुए कहा जा सकता कि मन्दी का चक्र आरम्भ हो गया है। अमरीका के अन्दर अनेक उद्योगों का उत्पादन घट गया है, दुकानों में माल जमा होने लगा है। मूल्य नियंत्रण अल्प मात्रा में या उचित रीति से न करने के कारण मूल्य अत्यधिक बढ़ गया है और आवश्यकता होने पर भी माल लेना ग्राहकों के लिए सम्भव नहीं हो रहा है। कानूनों के सहारे मजदूरी की दर नीचे रखने का यत्न हो रहा है। पूंजीपतियों को इससे कुछ काल के लिए अवश्य लाभ हो जायगा। पर अन्त में इसके कारण भी क्रय शक्ति में कमी होगी। फलत माल कम मात्रा में बिकेगा। अमरीका के लिए बाह्य बाजार की अपेक्षा आन्तरिक बाजार अधिक महत्व का है। अतः इन सब बातों का परिणाम अन्त में आर्थिक मन्दी के रूप में प्रगट होगा।

मन्दी कब आयेगी

इसकी निश्चित तिथि बताना कठिन है। मार्शल योजना द्वारा इसको दूर से दूर ढकेलने का यत्न किया जा रहा है। यूरोप की आर्थिक पुनर्निर्माण की योजना सम्भवत १९४८ के अन्त में बहुत अंशों में सफल होगी। इसी समय मन्दी आरम्भ हो सकती है। अमरीका मन्दी को टालने के लिए उद्योगों को बढ़ाने का भी विचार कर रहा है। आत्मरक्षार्थ प्रचण्ड युद्ध-सामग्री और शस्त्रास्त्र तैयार करने की योजना अमरीका बना रहा है। पर यह युद्ध की तैयारी भी मन्दी को आने से न रोक सकेगी। क्योंकि इससे बेकारी यदि दूर भी हुई तो भी युद्ध के लिए उत्पन्न किये जा रहे माल से नागरिक जीवन की आवश्यकतायें एक सीमा तक ही पूरी की जा सकेगी। अत जीवन निर्वाह का मान गिरेगा और मन्दी में भी यही होता है। इस व्यवस्था ने 'आर्थिक मन्दी और युद्ध' को पर्याय वाची बना दिया है। इस व्यवस्था के रहते मन्दी का आना अनिवार्य है। फ्रांक के मूल्य में ८० प्रतिशत गिरावट आई है। यह भावी आर्थिक मन्दी की पूर्वसूचना है। स्टर्लिंग जब फ्रांक का अनुसरण करेगा, तभी विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी पसरने लगेगी। यदि १९४८ के अन्त तक ऐसा हो जाय तो आश्चर्य न मानना चाहिए। भारत को इस आर्थिक विपत्ति का सामना करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद सबसे बड़ी महत्वपूर्ण समस्या शत्रुओं से देश की रक्षा है। इसके सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी देने के लिये

'वीर अर्जुन' का

देश रक्षा-अंक

बड़ी शान के साथ १ वैशाख २००५ को प्रकाशित होगा। उसकी तैयारियां शुरू होगई हैं। पाठक अपनी कापी के लिए अभी से एजेन्ट से कह दें और विज्ञापक अपना विज्ञापन बुक करा लें।

अंक सम्बन्धी विस्तृत जानकारी फिर दी जायगी।

—मैनेजर

सम्राट विक्रमादित्य

(नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमाचकारी तथा सुखद स्मृतियां जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरञ्जक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित कर रखें। मूल्य १॥), डाक व्यय ।=)।

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

इतिहास अपने आपको दोहराता है

[श्री जगदीशचन्द्र अरोड़ा कोलम्बिया]

छुट्टी दिन (१२ फरवरी)

१३९ वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका के कन्टकी राज्य के एक गांव में एक ऐसे बालक का जन्म हुआ था जो अपने ५२वें वर्ष में संयुक्तराज्य का १६वां राष्ट्रपति बना। वह राष्ट्रपति बनना नहीं चाहता था, बनकर वह कभी खुश नहीं रहा क्योंकि वह समझता था कि वह एक 'साधारण नागरिक' रह कर जनता की अधिक सेवा कर सकता है। परन्तु जनता उसे राष्ट्रपति बनाना चाहती थी। कहते हैं अमेरिका में और कोई भी जनता के उत्साह से उसकी भांति राष्ट्रपति नहीं चुना गया।

अमेरिकन व्यक्तिवादी होने के नाते अपने राष्ट्रपति का बड़ा सुन्दर और प्रभावशाली व्यक्तित्व चाहते हैं। यह व्यक्ति अत्यन्त कुरूप था। छः फुटा लम्बा शरीर, दुबला पतला, लम्बी लम्बी हड्डी-दार बांहें, तंग सीना प्रभावोत्पादक न था। न्यूयार्क राज्य की वेस्ट फील्ड कस्बे की ११ वर्षीया कुमारी ग्रेस बेडेल ने इस व्यक्ति को पत्र लिखा —

श्रीमान् जी,

मैंने अभी अभी आपका सर्वप्रथम चित्र देखा है। आपका मुंह बड़ा पतला है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप हमारे देश के राष्ट्रपति चुने जांय। इसलिए अच्छा होगा आप दाढ़ी रख लें, इससे आपके चेहरे का व्यक्तित्व बढ़ जायगा। स्त्रियां दाढ़ी पसन्द करती हैं। वे अपने पतियों से आपको वोट देने को कहेंगी। (उस समय तक अमेरिका में स्त्रियों को वोट देने का अधिकार नहीं मिला था। यह घटना १४ जुलाई १८६० की है। स्त्रियों को वोट देने का अधिकार १९२० में मिला था। —लेखक) यदि पत्र का उत्तर स्वय न दे सकें तो आपकी कोई पुत्री हो उससे उत्तर लिखवा दें।

विनीत

ग्रेस बेडेल

उत्तर आया।

प्रिय मिस ग्रेस बेडेल !

तुम्हारी राय के लिए धन्यवाद। मैं विचारूंगा। दुःख है कि मेरे कोई पुत्री नहीं। सत्तरह, नौ और सात वर्ष के तीन पुत्र हैं। कृपा बनाए रहना।

हितेच्छु

..

ग्रेस बेडेल की सलाह मानी गयी। दाढ़ी ने प्रचार कार्य में बड़ी सहायता पहुंचाई और वह राष्ट्रपति चुन लिया गया। इससे पूर्व वह इलिनायस राज्य के स्प्रिंगफील्ड में वकील था। अपने देश में इसने बड़ा नाम कमाया — धन कम। न्याय और सत्य के सम्मुख उसने कई बार धन को ठुकरा दिया, झूठे और धूर्त मुकदमों को अपने हाथ में लेने से उन्होंने इन्कार कर दिया।

फरवरी १८६१ में जब राष्ट्रपति का पद ग्रहण करने वह स्प्रिंगफील्ड से वाशिंगटन रवाना हुआ तो रेलगाड़ी अचानक अपना मार्ग बदल कर वेस्ट फील्ड स्टेशन पर खड़ी हो गयी। जनता ने नये राष्ट्रपति का स्वागत किया। स्टेशन पर फूल लिए ग्रेस भी मोजूद थी परन्तु धक्के के कारण वह पीछे ढकेल दी गयी। राष्ट्रपति ने भाषण में कहा — 'इस नगर में मेरी एक मित्र है .. क्या वह मंच पर आने का कष्ट करेंगी।'

कोई आगे नहीं बढ़ा।

'उसने मुझ से कहा था कि मैं दाढ़ी रख लूं और सचमुच दाढ़ी ने मुझे बड़ी सहायता पहुंचाई। क्या कुमारी ग्रेस बेडेल यहां हैं।'

अब तो ग्रेस को कन्धों पर उठाकर मंच पर लाया गया। राष्ट्रपति ने स्वय मंच से उतर कर बालिका के हाथ सम्मान चूम लिये। ग्रेस लजा गयी। फूल फेंक फांक कर भाग आयी।

यह राष्ट्रपति दूसरों से भिन्न था। सब से बड़ा अन्तर यही था कि यह मानव था। — 'मुझे इस बात की चिन्ता नहीं कि मेरे दादा क्या थे। मुझे चिन्ता है कि उनका पोता क्या बनेगा।' दादा और बाप अफ्रीका से काले हब्शियों को गुलाम के रूप में पकड़ कर अमेरिका लाये थे। पोते को गुलामी पसन्द नहीं थी राष्ट्रपति बनते ही उसने घोषणा की— 'हब्शी (नीग्रो) जाति के सब व्यक्ति गुलामी से मुक्त किये जाय और उन्हें भी नागरिकता के अधिकार दिये जायं।'

'दासता और स्वामित्व दोनों प्रजातन्त्र के असूलों के विरुद्ध हैं' — राष्ट्रपति की यह वाणी दक्षिण के उन राज्यों को पसन्द नहीं आयी जिनमें पहले पहल राष्ट्रपति के दादा गुलामों को लाये थे। परन्तु पोता दादा से आगे बढ़ने का निश्चय कर चुका था।

'दक्षिण के राज्य, विलग होना चाहते हैं। उन्होंने देश के विरुद्ध शत्रुता की है, दूसरे गुलामी मिटाने का विरोध कर उन्होंने मानवता का विरोध किया है। यह सह्य नहीं। मैं रक्तपात पसन्द नहीं करता, परन्तु न्याय आवश्यक है'— राष्ट्रपति ने राष्ट्रीय सेना को पृथकत्व की नीति अपनाने वाले दक्षिणी प्रदेश पर बढ़ने की आज्ञा दे दी। उद्देश्य था नीग्रो गुलाम का उद्धार—'इमैनसिपेशन'— जो इतिहास में इसे अमेरिकन गृहयुद्ध के नाम से पुकारा जाता है।

राष्ट्रपति रक्तलोलुप नहीं थे। परन्तु एक जाति को सदा के लिए कानूनी गुलामी से मुक्ति दिलाने में उन्होंने दृढ़ता से काम लिया। राष्ट्रपति केवल इसी एक कार्य के लिए अमर नहीं बने। उनकी अमरता उनकी मानवता में थी। शत्रुओं और विरोधियों के प्रति भी उन्होंने दया और क्षमा का बर्ताव किया। राजनीति में अपने चिरशत्रु एडविन स्टैन्टन के सेनाधिपति तथा सालोमन चेस को सर्वोच्च न्यायाधीश बना दिया। वे विरोधियों से सदा मुस्कराकर मिलते थे, जनता तक व्यक्तिगत रूप से पहुंच जाते थे — अधिकारी रूप से नहीं। उन्होंने कई बार कहा — "राष्ट्रपतित्व से नागरिकता भली।" अमेरिका में आज तक उनके लिए प्यार और आदर है।

नौ अप्रैल १८६५ को दक्षिणी राज्यों ने आत्मसमर्पण कर दिया। नीग्रों को कानूनी दृष्टि से मुक्त करने का राष्ट्रपति का स्वप्न पूरा हो गया। अमेरिका विधान में १३ वें संशोधन द्वारा नीग्रो समान नागरिक बना दिए गये। राष्ट्रपति का दूसरा स्वप्न था इस कानून पर पूर्ण रूपेण अमल होते देखना, परन्तु आत्म समर्पण के ठीक ६ दिन बाद १५ अप्रैल को शाम के ६ बजे के लगभग जे० विलक्स बूथ ने एक थियेटर में राष्ट्रपति के सीने में एक गोली मार दी। राष्ट्रपति लड़खड़ा कर गिर पड़े— हत्यारा भाग गया — जो बाद में पकड़ कर मारा गया। राष्ट्रपति दूसरे दिन सुबह सात बजे मर गये।

राष्ट्रपति — अब्राहम लिंकन थे।

लिंकन की हत्या की जांच में भेद खुला कि केवल लिंकन ही नहीं, अन्य सरकारी अधिकारियों को भी मार डालने का षड्यंत्र बनाया गया था — जिसमें दक्षिणी प्रांतों का हाथ था। केन्द्र तथा उत्तर ने दक्षिण पर कीचड़ उछाला और खूब दण्डित किया। चार फांसी पर लटके, सहस्रों पकड़े गये। दक्षिण आज तक लिंकन का हत्यारा होने के कारण घृणा का पात्र है।

परन्तु लिंकन का स्वप्न अधूरा ही रहा। कानूनी दृष्टि से स्वतन्त्र हो जाने पर भी यथार्थ में नीग्रो आज भी दास ही हैं। उसे श्वेतों के साथ उठने, बैठने, छूने, खाने, पीने आदि का अधिकार नहीं। अधिकांशत वह बहुत गरीब, अशिक्षित और असभ्य है। नीग्रो अमेरिका का सबसे बड़ा कलंक है।

३० जनवरी १९४८ को नई दिल्ली नाथूराम विनायक गोडसे ने राष्ट्रपिता म० गांधी के सीने और पेट . तीन गोलियां मार दीं। कारण सिवाय इसके और कुछ नहीं कि बापू मानवों में सबसे बड़े मानव थे — संभवतः एक मात्र "मानव" थे। सारा जीवन अछूतों को सवर्णों के बन्धन से छुड़ाने में लगे रहे। एक बन्धन नहीं — दो दो एक साथ। विदेशियों के हाथ से देश को बन्धनमुक्त किया और सवर्ण हिंदुओं की दासता से हरिजनों को। दोनों ही सफलताएं केवल कानूनी दृष्टि से ही प्राप्त हुईं। देश अब भी विदेशियों की कूटनीति और स्वार्थ का शिकार बन रहा है और विधान निर्माण समिति द्वारा अस्पृश्यता गैर कानूनी घोषित किये जाने पर भी अछूत अभी अछूत ही है।

कहते हैं, लिंकन का जीवन असफलताओं, निराशा, और उदासी से भरा था, यद्यपि चेहरे पर सदा मुस्कान थी। कौन कहता है कि बापू के मुख पर अन्तिम दम तक मुस्कान नहीं थी — परन्तु असफलता और निराशा तथा पिछले वर्ष के रक्तपात का दुःख ही साथ लिये वे चले गये।

लिंकन की हत्या की भांति ही गांधी की हत्या का भी एक षड्यन्त्र था। जिसमें नेहरू, पटेल और आजाद भी घसीट लिये जाते। अब इसका बदला महासभा तथा 'हिन्दू' से लिया जा रहा है। विशेषकर दक्षिण में।

इतिहास की पुनरावृत्ति होती है।

परन्तु क्या भारत का अछूत भी अमेरिका के नीग्रो की तरह सदा देश का कलंक बना रहेगा ?

यह प्रश्न है जिस पर हर एक भारत संतान को आज गम्भीरता पूर्वक विचारना है।

× × ×

नीग्रो को केवल कानूनी दृष्टि से नागरिक बनाने के प्रश्न पर ही उत्तर और दक्षिण में गृहयुद्ध हुआ था। अमेरिकन जनता को अब यह ज्ञात हो गया है कि बिना कानूनी सुरक्षा दिये अपने आप श्वेत समाज नीग्रो को कभी भी सामाजिक समानता नहीं देगा। पिछले कई वर्षों से सरकार ऐसा कानून बनाने— विशेषकर शिक्षा और नौकरियों में समान वेतन के लिये — का विचार कर रही है और हर बार दक्षिण पुनः 'गृहयुद्ध' की धमकी देता है। दक्षिण में नीग्रो बहुत हैं और उनके वोट से चुनाव का पलड़ा पलट जा सकता है। वे अधिकांशत. डिमोक्रेटिक हैं। इस समय उनकी सहानुभूति डिमोक्रेटिक दल के 'बागी' तथा स्वतन्त्र उम्मेदवार हैनरी वालेस के साथ है। राष्ट्रपति ट्रूमैन उन्हें अपनी

[illegible]

स्वतन्त्र भारत का नया विधान

समानता, स्वतन्त्रता और बन्धुता का अमर सन्देश

विधान का जो अधिकृत सार प्रकाशित हुआ है वह इस प्रकार है—

प्रस्तावना

इस विधान की प्रस्तावना विगत जनवरी में विधान-परिषद द्वारा स्वीकृत उद्देश्य-प्रस्ताव से मिलती जुलती है। इसमें बताया गया है कि नये विधान का उद्देश्य भारत को सर्वतन्त्र प्रजातन्त्र के रूप में परिवर्तित करना, उसके तमाम नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय, विचारों, अभिव्यक्ति, धर्म और प्रार्थना की स्वाधीनता तथा दर्जे व अवसर की समानता दिलाना तथा सब वर्गों में बन्धुत्व की भावना पैदा करना है, ताकि एक व्यक्ति व राष्ट्र की एकता की शान बनी रहे।

मसविदे के अन्त में एक नोट देते हुए कमेटी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत प्रजातन्त्र तथा ब्रिटिश राष्ट्रसमूह के आपसी सम्बन्धों का प्रश्न बाद में निबटाया जायगा। प्रस्तावना में वर्णित 'बन्धुत्व' को विशेष महत्व दिया गया है। कारण यह है कि इस समय भारत में भ्रातृ-भावना की अत्यधिक आवश्यकता है।

भाग १ —भारत संघ, उसका प्रदेश

भारत को विभिन्न राज्यों का संघ कहा जायगा। सामञ्जस्य स्थापित करने के लिए संघ के एक घटक को 'राज्य' कहा जायगा, चाहे वे गवर्नरों के प्रांत हों, चाहे चीफ कमिश्नरों के प्रांत चाहे भारतीय रियासतें हों। इन राज्यों को निम्नलिखित तीन विभागों में बांटा जायगा:—

(१) इसमें वे राज्य आयगे जो प्रथम सूची के प्रथम भाग में वर्णित हैं। इन में वर्तमान गवर्नरों के प्रांत आ जाते हैं।

(२) वे स्टेटें जो प्रथम शिड्यूल के द्वितीय भाग में वर्णित हैं। इसमें वर्तमान चीफ कमिश्नरों के प्रांत आ जाते हैं।

(३) वे राज्य जो प्रथम सूची के तृतीय भाग में वर्णित हैं। इनमें वे रियासतें आ जाती हैं जो भारत के साथ शामिल हो चुकी हैं।

अंडमान व निकोबार

इसके अतिरिक्त अंडमान व निकोबार के टापू भी भारत की सीमा में हैं। इनका जिक्र प्रथम सूची के चौथे भाग में दिया गया है। संघ और भी किसी प्रदेश पर कब्जा करेगा तो वह भी भारत की सीमा में आ जायगा।

नवीन राज्यों को सम्मिलित करने स्थापित करने व निर्माण करने का भी [illegible] दिया गया है।

भाग २ — नागरिकता

मसविदे की धारा ५ में बताया गया है कि जिस तारीख को नया शासन-विधान लागू होगा, उस दिन से कौन व्यक्ति भारत का नागरिक कहलायगा। वे सब व्यक्ति जो स्वयं अथवा जिनके माता पिता अथवा दादा-परदादा विधान के अनुसार प्रतिपादित भारत की सीमा में पैदा हुए हों और जो १ अप्रैल १९४७ से किसी विदेश में न रहने लग गये हों, वे सब व्यक्ति जो स्वयं अथवा जिनके माता-पिता अथवा दादा-परदादा १९३५ के भारतीय विधान में प्रतिपादित भारत की सीमा में बर्मा में, लंका में, अथवा मलाया में पैदा हुए हों और विधान में प्रतिपादित भारत की सीमा जिनका निवासस्थान हो, वे भारत के नागरिक कहलायेंगे बशर्ते कि इस विधान के लागू होने से पहले वे किसी विदेश के नागरिक न बन गये हों।

इस धारा में मुख्य सिद्धांत यह रहेगा कि शुरू शुरू में भारत का नागरिक बनने के लिए एक व्यक्ति का संघ के साथ प्रादेशिक सम्बन्ध अवश्य होना चाहिए, चाहे यह सम्बन्ध जन्म अथवा विरासत अथवा निवासस्थान किसी भी कारण से क्यों न हो। इस धारा में उन लोगों का भी खास तौर से ध्यान रखा गया है जिन्हें पिछले महीनों में भारत आ जाना पड़ा है और उनके लिए निवासस्थान पाने और इसी लिए नागरिकता का अधिकार पाने में एकदम सरल विधि निश्चित कर दी गई है। कारण यह है कि इस धारा की व्याख्या करते हुए यह बता दिया है कि उस व्यक्ति को भारत का बाशिन्दा मान लिया जायगा जिसका रिहायशी स्थान ऐसे प्रदेश में हो, जिसका भारतीय उत्तराधिकार कानून १९२५ के भाग २ में उल्लेख है, बशर्ते कि उक्त भाग उस पर लागू होता हो। अथवा इस विधान के लागू होने से पहले जिस व्यक्ति ने जिला मजिस्ट्रेट के दफ्तर में यह लिख कर न दे दिया हो कि मैं भारत का बाशिन्दा होना चाहता हूं और यह लिख देने की तारीख से एक महीना पहले भारत की सीमा में रह रहा हूं।

विधान लागू होने के बाद नागरिकता के अधिकार पाने के सम्बन्ध में नियम बनाने का काम संघ की लोकसभा पर छोड़ दिया गया है।

भाग ३ — बुनियादी अधिकार

विधान परिषद् के निर्णयों के अनुसार बुनियादी अधिकार निश्चित किये गये हैं। ये अधिकार निम्न लिखित हैं:—

समानता के अधिकार, धर्म संस्कृति व शिक्षा सम्बन्धी अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार, धर्म, नस्ल, जाति व लिंग के कारण किसी किस्म का भेदभाव न किया जा सकेगा। सरकारी नौकरियों में सब नागरिकों को समान अवसर मिलेगा छुआछूत को उड़ा दिया गया है। अब उसे किसी भी रूप में अमल में न लाया जा सकेगा। सरकार की ओर से किसी को खिताब नहीं दिये जायेंगे और किसी भी नागरिक को किसी विदेशी राज्य के खिताब मंजूर न करने होंगे।

भाषण-स्वातंत्र्य

भाषण स्वातंत्र्य; शांति से तथा बिना हथियारों के जमा होने की, सभा व संघ बनाने की, समूचे भारत में आजादी से घूमने की, अथवा रहने व आबाद होने की आजादी, जायदाद बनाने, उस पर कब्जा करने, उसका निर्णय करने की आजादी, कोई-सा पेशा अपनाने अथवा कोई-सा काम अथवा व्यापार व कारोबार शुरू करने की आजादी के सम्बन्ध में विशेष अधिकारों का प्रतिपादन कर लिया गया है।

यह घोषित किया जाता है कि सब लोग आत्मा की आजादी तथा कोई भी धर्म अपनाने, उसके अनुसार आचरण करने अथवा उसका प्रचार करने के समान रूप से हकदार होंगे।

नर-व्यापार, बेगार तथा ऐसे ही जबरन मजदूरी लेने के तमाम तरीके निषिद्ध होंगे। अल्पसंख्यकों के सांस्कृतिक तथा शिक्षा सम्बन्धी अधिकार सुरक्षित रहेंगे। बुनियादी अधिकारों को कार्यान्वित कराने के लिए किसी भी नागरिक को सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने की पूरी छूट होगी।

भाग ४—सरकारी नीति

विधान के इस भाग में सरकार-नीति के आधारभूत सिद्धान्त बताए गये हैं। यद्यपि ये सिद्धान्त अदालत द्वारा कार्यान्वित नहीं किये जा सकेंगे तथापि देश के शासन का इन्हें आधार समझा जायगा और यह स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि देश के लिए कानून बनाते समय इन पर चलना सरकार का कर्तव्य है।

नई सरकार को एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था द्वारा जनता की भलाई करनी होगी जिसमें राष्ट्रीय जीवन की सब संस्थाओं में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय हो। इस भाग में शिक्षा के अधिकार, काम करने के लिए माननीय तथा न्याय युक्त स्थिति, मजदूरों के लिए अच्छी मजदूरी आदि के बारे में आदेश दिये गये हैं।

भाग ५—संघ

कार्य-कारिणी—शासनव्यवस्था का अध्यक्ष भारत का राष्ट्रपति कहलाएगा। संघ की शासन सम्बन्धी शक्ति राष्ट्रपति के पास होगी। वह इस शक्ति को उत्तरदायी मन्त्रियों की सलाह से काम में लायेंगे। राष्ट्रपति का चुनाव एक ऐसे चुनाव बोर्ड द्वारा होगा जिसमें लोक सभा की दोनों सभाओं के सदस्य होंगे। वह अपने पद पर पांच वर्ष तक रहेंगे तथा दुबारा चुनाव केवल एक बार ही लड़ सकेंगे। राष्ट्रपति ३५ वर्ष की आयु के नागरिक होने चाहिएं और लोक सभा के सदस्य चुने जाने योग्य होने चाहिये। राष्ट्रपति पर विधान तोड़ने के सिलसिले में मुकदमा चलाया जा सकता है। मसविदे में एक उपराष्ट्रपति का जिक्र किया गया है। वह राज्य-परिषद का भी अध्यक्ष होगा। उस का चुनाव लोकसभा की दोनों सभाओं के संयुक्त अधिवेशन में होगा। उपराष्ट्रपति भी ५ वर्ष तक अपने पद पर रहेंगे। जब राष्ट्रपति का पद खाली हो जायगा तो उपराष्ट्रपति उस समय तक के लिए राष्ट्रपति का कार्य करेंगे जब तक नये राष्ट्रपति का चुनाव न हो जाय। राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के चुनाव के सिलसिले में सब

[शेष पृष्ठ १७ पर]

स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा

ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १॥) रुपया।

मैनेजर—

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी और इधर उस के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विकृत होकर अपकीर्ति के रूप में फैल रही थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहात होगया और चम्पा ने जमींदारी का काम सभाल लिया।

चम्पा के जमींदारी सभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बडे भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बटवारे पर सहमत कर लिया और एक दिन माधवकृष्ण को बुलाकर यह प्रस्ताव पेश भी कर दिया। भ्रातृ भक्त माधवकृष्ण इस अकल्पित प्रस्ताव को सुन कर भौंचक रह गया। इन्हीं दिनों बिहार भूकम्प के कार्य में सेवा करने के लिये आये हुए श्री रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत परिचित हो गये थे।

[गतांक से आगे]

सरला अभी इतना ही कह पायी थी कि बाहर से आकर चौकीदार ने खबर दी कि माधव बाबू ने गाव से एक आदमी भेजा है वह मालकिन से तुरन्त ही मिलना चाहता है।

इस तरह बातचीत का सिलसिला बीच में ही टूट गया और तीनों बनी बाहर की बैठक की ओर चली गयीं।

(४)

दरबान ने जिस व्यक्ति के आने की सूचना दी थी, उसका नाम वैदेहीशरण था। वह बिसरामपुर गाव का रहने वाला था। बिसरामपुर गाव, बेलूर और सरजान पुर की जिमींदारियों की सीमा पर था। उस गाव का आधा भाग बेलूर की रियासत में था और आधा भाग सरजानपुर की रियासत में था। जब से बजरङ्ग बाबू के सेनापतित्व में जिमींदारी-युद्ध शुरु हुआ है, तब से बिसरामपुर झगडे का केन्द्र बना हुआ है। बजरङ्ग के पिठ्ठू बेलूर के किसान पर तरह-तरह के आक्रमण करते रहते हैं। वैदेहीशरण उस गांव का एक खास आदमी है। वह न बड़ा किसान है और न बड़ा दुकानदार तो भी वह गाव का खास आदमी है, क्योंकि दूसरों के जलते हुए छप्पर की आग से हाथ सेकना उसका पेशा है। गाव, में शायद ही कोई ऐसा मामला चलता हो जिसके किसी न किसी पक्ष में वैदेहीशरण का हाथ न रहता हो। इसीलिये वैदेहीशरण गाव का खास आदमी था। जमींदार लोग ऐसे व्यक्तियों से बहुत से काम लेते हैं। वैदेहीशरण भी बिसरामपुर गाव का गैर सरकारी कारिन्दा बना हुआ था। खटपट करना उसका पेशा था। जो फीस दे, वह उसकी वकालत करने को तय्यार रहता था। ऐसे ही कामों के लिये वह प्रायः राधाकृष्णसिंह के समय में भी बेलूर की कोठी में आता जाता रहता था।

चम्पा, रमा और सरला के आने पर वैदेहीशरण ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और कहा —

'मा जी, मुझे बाबू ने आपके पास भेजा है।'

'क्या कहलाया है' — चम्पा ने पूछा।

इस प्रश्न के उत्तर में वैदेहीशरण दायें बायें देखने लगा जिसका अभिप्राय यह था कि वह सूनापन चाहता है। चम्पा ने उसे आश्वासन देते हुए कहा — 'घबराओ नहीं भाई, यहां कोई पराया नहीं है, जो बात कहनी हो कहो।' वैदेहीशरण धीमे स्वर से बोला —

'सो तो ठीक है मा जी, लेकिन दीवार के भी कान होते हैं। आप की आज्ञा हो तो दरवाजा बन्द करदू।'

'तुम डरते ह', दरवाजा बन्द कर दो भाई।'

'मैं तो अचम्भे में हूं कि तुम इतने क्यों घबरा रहे हो। ऐसी क्या बात है।'

वैदेहीशरण ने उठकर दरवाजा कस कर बन्द कर दिया और फिर धीमे स्वर से कहा —

'बात यह है मा जी, कि दो तीन दिन हुए बिसरामपुर में कुछ झगड़ा हो गया था। आपके और सरजानपुर के आदमियों में कहा-सुनी हो गयी। नौबत बढ़ते-बढ़ते मारपीट तक पहुंच गई। चोटें दोनों ही ओर आयी हैं, पर सरजान-पुर के आदमियों के जो घाव लगे हैं वह गिन्ती में अधिक हैं और गहरे हैं। पुलिस इस मामले में दस्तन्दाजी करेगी तो हमारे ही लोगों को अधिक दोषी ठहरायेगी।'

'यह तो बहुत बुरा हुआ भाई। इस वक्त माधव भैय्या भी यहा नहीं हैं, होते, तो उन्हें बिसरामपुर भेज देते' — चम्पा ने चिन्तित भाव से कहा।

वैदेहीशरण ने आश्वासन देते हुए कहा — 'माधव बाबू तो कल वहा पहुंचे थे मा जी! उन्हीं ने तो मुझे तुम्हारे पास भेजा है।'

'क्या कहलाया है भैय्या ने' — चम्पा ने उत्सुकता से पूछा।

वैदेहीशरण ने उत्तर दिया — 'उन्हें काम से कल शाम ही दूसरे गाव चले जाना पड़ा। जाते हुए मुझसे कह गये कि मां जी को यहां लिवा लाना, मैं भी परसों तक आ जाऊंगा। गाव वालों पर जो असर मा जी का पड़ सकता है और किसी का नहीं। उनके आने से गाव वालों की शहादतें हमारे अनुकूल हो जायगी।'

'तो मुझे वहा जाना होगा, पर मैं अकेली क्या करूंगी उसके यहा' — चम्पा ने रमा की ओर देखते हुए कहा। रमा बोली — 'जब उन्होंने बुलाया है तो जाना तो चाहिये ही। जरूरी काम होगा तभी तो बुलाया है। अकेले न जाना हो तो सरला को साथ लेते जाओ।'

सरला ने बात काटते हुए कहा — 'तुम भी साथ चलो चाची।'

रमा ने उत्तर दिया — 'मैं क्या करूंगी भाई, मैं घर सभालूंगी, तुम जीजी के साथ जाओ। शायद वहा लिखने-पढ़ने का भी काम पड़े।'

कुछ और सलाह के पश्चात् निश्चय हुआ कि चम्पा और सरला भोजन करके दिन के दो तीन बजे बिसरामपुर के लिये रवाना होंगी। साथ वैदेहीशरण जायगा और एक घर का नौकर रहेगा। बेलूर से बिसरामपुर कोई सात मील की दूरी पर था। उसी समय आज्ञा दे दी गई कि दो बजे बड़ा बैल-तागा तय्यार रहे।

समय पर बड़ा बैल-तागा आ गया। तागे के बैल खूब तेज थे, परन्तु सफर केवल सात मील का था। कोई जल्दी या घबराहट की बात नहीं थी, इस कारण गाड़ी वान को आज्ञा दी गई कि बैलों को धीरे धीरे चलने दे जिससे रास्ते में पड़ने वाले अपने गावों पर भी दृष्टि डाली जा सके। चम्पा और सरला छत-दार तागे में बैठ गई, वैदेहीशरण तागे के साथ साथ चल रहा था। वह जमींदारी के अतिरिक्त इलाके के सम्बन्ध की अन्य बातें भी करता जाता था। घर का नौकर तागे के पीछे पीछे आ रहा था।

वैदेहीशरण उस इलाके का कीड़ा था। इंच इंच जमीन उसकी देखी हुई थी, प्रत्येक गाव की मालगुजारी की रकमें उसे कण्ठस्थ थीं, और हर एक खास आदमी के सात पुरखों तक की कहानी उसे याद थी। वह चलता जाता था, और मार्ग में और प्रसग से आने वाले गाव और व्यक्तियों के किस्से सुनाता जाता था। उन किस्सों में जितनी सचाई थी, लगभग उतनी ही गप्प या जन श्रुति मिली हुई थी, और नमक मिर्च इन दोनों से अलग था। जब कोई गाव दिखायी देता तब वह ठहर जाता, जिससे तागे को भी ठहरना पड़ता, तब वह उस गाव की लम्बी कहानी सुनाकर दो चार समस्यायें 'सरकार' के सामने पेश कर देता। सरकार अर्थात् चम्पा उस पर कुछ स्वय विचार करती, और कुछ वैदेहीशरण से सलाह मागती। इस तरह कई स्टेशनों और जकशनों पर रुकती हुई वह रेलगाड़ी अत्यन्त धीमी चाल से चलती हुई जब बिसरामपुर से दो मील की दूरी पर एक बड़ के पेड़ के समीप पहुंची तो सन्ध्या काल हो रहा था, आकाश में गहरे बादल छाये हुए थे, जिन्होंने आकाश को समय से पूर्व ही अन्धकारमय बना दिया था। पेड़ के नीचे एक कुआ था, जिसके समीप एक छोटी सी कोठरी बनी हुई थी, जो आये गये राहियों के लिये सराय का काम देती थी। वहा पहुंच कर वैदेहीशरण ने गाड़ीवान को गाड़ी रोकने का इशारा किया। गाड़ीवान ने गाड़ी रोक दी। इस पर आश्चर्यित होकर चम्पा ने पूछा — 'गाड़ी क्यों रोक ली।' वैदेहीशरण ने उत्तर दिया — 'मैंने रुकवाई है।' चम्पा ने फिर पूछा — 'यहा क्या काम है।' 'थोड़ी देर तक यहा ठहरकर बैलों को विश्राम दे देना होगा।' वैदेहीशरण ने उत्तर दिया।

वैदेहीशरण ने जिस स्वर में उत्तर दिया, उसमें कुछ रुखाई थी। अब तक वह जिस स्वर में बोल रहा था वह नम्र बल्कि खुशामद भरा था। बात की शैली में अकस्मात् परिवर्तन का अनुभव करके चम्पा ने ध्यान से वैदेहीशरण के मुह की ओर देखा। उसने देखा कि वैदेहीशरण के चेहरे और चक्षुओं का भाव बदल गया है। अब तक टपकती हुई आजिजी का कोई निशान बाकी नहीं था। मेघाच्छन्न सन्ध्याकाल के उस हल्के प्रकाश में वैदेहीशरण के चेहरे पर चम्पा को गुस्ताखी और ढिठाई के भाव दिखाई

दिये। चम्पा कुछ सहम गयी परन्तु सरला कुछ अधिक संसार देख चुकी थी और बम्बई में रहने के कारण तरह-तरह की परिस्थितियों का मुकाबला कर चुकी थी। उसने दृढ़ता पूर्वक कहा — 'गाड़ी यहां नहीं रुकेगी, सुरखा, गाड़ी चलाओ।' इस पर वैदेहीशरण ने बैल की रस्सी थाम कर कहा — 'जब तक मैं न कहूं तब तक गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती।' सरला ने चिल्लाकर कहा — 'सुरखा, गाड़ी चलाओ।' सुरखा बेलूर से चलने से पहिले ही जेब गरम कर चुका था, बोला — 'सरकार। यह गाड़ी को नहीं चलने देते, मैं बेबस हूं।' यह कहकर सुरखा बैलों की रस्सी छोड़कर गाड़ी से नीचे कूद पड़ा। तब सरला ने आगे बढ़-कर बैलों की रस्सी हाथ में ले ली, और उन्हें चलने का इशारा किया।

इस पर वैदेहीशरण ने बैलों के जुए को पकड़ कर डाट के स्वर में जोर से कहा — 'खबर-दार लड़की, गाड़ी को आगे बढाने की कोशिश न करना। यदि अपना भला चाहती हो तो दोनों जनी चुपचाप तांगे से नीचे उतर आओ।' साथ ही अपने मुंह में दो अंगुलियां डालकर एक खास ढंग से सीटी बजाई, जिसके पश्चात् कुछ दूरी पर कई पैरों की आहट सुनाई दी और झुरमुट के घने अन्धकार में से निकलकर सड़क के हल्के अन्धकार में आते हुये चार व्यक्ति दिखायी दिये। उस आत-तायी दल के मुखिया ने दूर से ही ऊंचे स्वर से आदेश दिया — 'दोनों को गाड़ी से नीचे उतार लो। बैलों को थामे रहो, वे आगे न बढ़ने पायें। अब इन दोनों को मालूम हो जायगा कि किसी भले आदमी का बेइज्जत करके घर से निका-लने का क्या नतीजा होता है।' चम्पा और सरला दोनों ने पहिचान लिया कि वह आवाज कैलाश की है। दोनों कांप गईं।

[क्रमशः]

मुफ्त

नवयुवकों की अवस्था तथा धन के नाश को देखकर भारत के सुविख्यात वैद्य कविराज सजानचन्दजी बी०ए० (स्वर्ण-पदक प्राप्त) गुप्त रोग विशेषज्ञ घोषणा करते हैं कि स्त्री पुरुषों सम्बन्धी गुप्त रोगों की अचूक औषधियां परीक्षा के लिए मुफ्त दी जाती हैं ताकि निराश रोगियों की तसल्ली हो जावे और धोके की सम्भावना न रहे। रोगी कविराज जी को विजय फार्मेसी, हौज काजी दिल्ली में स्वयं मिल कर या छः आने के टिकट भेज कर औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए छः आने भेज कर ११६ पृष्ठ की अंग्रेजी की पुस्तक Sexual Guide प्राप्त करें।

३॥) रु० में ६ तर्क

प्रेम जीवन — पति पत्नि के पढ़ने योग्य काम विज्ञान की नई पुस्तक १)
वशीकरण मंत्र—वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह मू० १)
हिन्दी अंग्रेजी शिक्षक मू० १)
हुस्न पैरिस पति पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो मू० १॥)
खजाना रोजगार मू० १)
हारमोनियम टीचर मू० १)
६ पुस्तकों का सेट ३॥), डा. ख ॥)
संतोष ट्रेडिंग कम्पनी (वी ए डी) पाठक स्ट्रीट, जैगंज, अलीगढ़।

१००) इनाम
(गवर्मेण्ट रजिस्टर्ड)
सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।
श्री कामरूप कमख्या आश्रम ५५ पो० कतरीसराय (गया)

तुलसी

ले० श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार
तुलसी के प्रति पूज्य भाव रखने वाली देवियां और धर्म परायण लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि इस धार्मिक पौदे में कितने रहस्य छिपे पड़े हैं। तुलसी के पौदे की तरह यह पुस्तक भी हमारे हरघर में पहुंच जानी चाहिए। सचित्र, सजिल्द। मूल्य २)
मिलने का पता —
विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

मासिक रुकावट

बन्द मासिक धर्म रजोलीना दवाई के उपयोग से बिना तकलीफ शुरू हो नियमित आता है, ऋतु की फर्याद समय पर होती है। यह दवा गर्भवती को प्रयोग न करावें की० रु० ४), दुरंत फायदे के लिए तेज दवाई की० रु० ६) पोस्टेज अलावा। गर्भांकुश — दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता, गर्भनिरोध होता है, मासिक धर्म नियमित होगा, विश्वसनीय और हानि रहित है। की०४)पो० अलावा पताः-दुग्धानुपान फार्मेसी जामनगर ५, देहली एजेंट-जमनादास क०चांदनी चौक

❀ विवाहित जीवन ❀

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मंगायें।

१—कोक शास्त्र (सचित्र) १॥)	२—८४ आसन (सचित्र) १॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १॥)	४—१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
५—सुहागरात (सचित्र) १॥)	६—चित्रावली (सचित्र) १॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो १॥)	८—गर्भ निरोध (सचित्र) १॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।
पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १५) अलीगढ़ सिटी।

सरगोधा के सुप्रसिद्ध
दांतों के
डाक्टर बाली
फतहपुरी देहली
दांतों के तमाम इमराज का इलाज किया जाता है। दांत बगैर दर्द निकाले जाते हैं। और हर किस्म की एनकें व मसनूई आंखें मिल सकती हैं।

५०० रु. इनाम

धन कवच—के द्वारा मनुष्य कुबेर जैसा धनवान होने का शुभअवसर प्राप्त करता है और लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। घर में तमाम दुष्ग्रहों की शान्ति होकर हर तरह से घर में धन की वर्षा होती है। जिससे पुश्त-दर-पुश्त के लिए गरीबी से छुटकारा मिल जाता है। कीमत ४॥), चांदी का ६॥), सोने का ७॥=)
सिद्धवशीकरण यन्त्र—जिसे आप चाहते हैं वह चाहे कितना ही पत्थर दिल का हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आप से मिलने चला आवेगा। इसे धारण करने से लाभ, मुकदमा, नौकरी, लाटरी में जीत परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति होती है। कीमत ४), चांदी का ५), सोने का ७॥) गलत साबित करने पर ५००) इनाम। अपना पता पूरा और साफ लिखें।
श्री आनन्द स्वामी, (AWD) बाग रामानन्द, अमृतसर।
SHREE ANAND SWAMI (AWD) Bagh Rama Nand Amritsar

आत्मरक्षा
ओटोमेटिक
अमरीकन माडल
६ खानों वाली पिस्तौल
लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिए बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १।=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त। अपना पूरा पता साफ साफ लिखें। नापसन्द होने पर दाम वापिस।

अमरीकन ट्रेडिंग एजेन्सी, (AWD) हलका नं० २१, अमृतसर।
American Trading Agency (AWD) Halka No 21 Amritsar.

हिन्दी परीक्षोपयोगी लेख

भारतेन्दु के पश्चात् हिंदी-कविता

[श्री जोधसिंह रावत, साहित्यरत्न]

हिन्दी साहित्य में भारतेन्दुयुग ऐसे समय में उदय हुआ, जिस समय एक ओर प्राचीनता की रजनी की समाप्ति हो रही थी और दूसरी ओर नवीन युग की ऊषा सुन्दरी की छटा छिटक रही थी। ऐसे समय में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य में अवतरित हुए। उन्होंने एक ओर प्राचीन को अपने पूर्वजों की धरोहर सम्पत्ति के रूप में ग्रहण किया तो दूसरी ओर नवीनता को नवजात शिशु के रूप में अपनी गोदी में बिठा कर प्यार किया। यही कारण था कि भारतेन्दु तुलसी व सूर के स्वर में स्वर मिला कर अपने प्रभु का पद-चिंतन करते थे तो दूसरी ओर बिहारी तथा पद्माकर की प्याली को पहिन कर कविता-कामिनी की शृंगारमय सेवा करते थे। नवीनता के रंगमंच के सूत्र भी उन्होंने खुलने आरम्भ कर दिये थे। भारतेन्दु ही सर्व प्रथम जातीय गौरव को लेकर अवतरित हुए, वह देशभक्ति थी, परन्तु हिन्दू राष्ट्र की। उनकी कविता में यवनों से विद्रोह और अंग्रेजी राज्य के प्रति मोह था, परन्तु साथ भारत के भविष्य की चिन्ता भी थी। आप ऐसे संगम में थे, जहां देश काल की सीमा निर्णय करना कठिन ही नहीं, असम्भव भी था। आपकी कविताओं में सन्देश था और आदर्श का यथार्थ चित्रण।

द्विवेदी युग का आरम्भ

द्विवेदी युग का आरम्भ, भारतेन्दु का अवशेष मात्र था। भारतेन्दु ने दूरदर्शीयन्त्र का निर्माण मात्र किया था, उसकी आभा द्विवेदी युग मे थिरकनी शुरू हुई। प्रतिक्षण प्राचीन तथा नवीन की सन्धि टूटने सी लगी। देश में नवीन युग का प्रभात चमकने लगा। प्राचीनता के प्रति रोष ही नहीं, असन्तोष भी बढ़ता जा रहा था। रीति काल की भावनाओं तथा भाषा दोनों को तिलांजलि दी जाने लगी। व्रजभाषा की अमा पर खड़ी बोली की प्रतिपदा की चांदनी छिटकने लगी। जहां गद्य खड़ी बोली मे अपने विविध अंगों की पूर्ति कर रहा था, वहां कविता भी खड़ी बोली को अपना साधन बनाने लगी। श्री श्रीधर पाठक जी ने सर्वप्रथम कविता के लिये खड़ी बोली अपनाई। इस काल में भाषा ही ने नया रूप धारण नहीं किया, अपितु भावों ने भी इन्द्र-धनुषी वितान ताना। वह शृंगार के पर्यंक की ओर न झाक कर सीधे राष्ट्रीय रण-क्षेत्र की ओर चल पड़ी। अपनी प्राचीन संस्कृति के अनुसार उसने प्रभु स्तवन भी किया। इस नवीन राष्ट्रीय कविता की विशेषता यह थी कि वह व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को अपना विषय न बना कर मानव समाज के परिणाम की ओर प्रवृत्त हुई। पहिले जातीय उद्धार और फिर विश्वोद्धार का व्रत उसने लिया।

इस युग की तीन मुख्य विशेषतायें थीं। प्रथम, इस काल में सूर तथा तुलसी जाग्रत हुए। दूसरे, तिलक गोखले तथा गांधी की नई राष्ट्रीय भावना पैदा हुई तीसरे कबीर तथा रवीन्द्र भी काव्यक्षेत्र में चमकने लगे। गुप्तजी ने तुलसी और अयोध्याप्रसाद जी उपाध्याय ने सूर के विषय को लेकर 'साकेत' तथा 'प्रियप्रवास' की रचना की। फिर राष्ट्रीय व देशप्रेम के सन्देश को जहां हमारे पूज्य नेताओं ने समाज के रंगमंच पर खड़े होकर सुनाया वहां हमारे राष्ट्रीय कवियों — 'भारतीय आत्मा', रामनरेश त्रिपाठी, 'गुप्त', सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने राष्ट्रीय नेताओं के स्वर में काकली की मधु-गुंजार भर कर राष्ट्रीयता का शंखनाद किया। राष्ट्र के बाह्य कलेवर को जहां राष्ट्रीय कवियों ने सुरक्षित रखा, वहां राष्ट्र की आध्यात्मिक ज्योति को प्रदीप्त करने का कार्य 'रवीन्द्र' की प्रतिकृति के रूप में छायावादी तथा रहस्यवादी कवियों ने किया। इस भावना को जयशंकरप्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त, निराला तथा महादेवी वर्मा आदि कवियों ने जाग्रत किया। इस काल की कविता का मुख्य उद्देश्य प्राचीनता के प्रति मोह तथा नवीनता के प्रति उत्कट आकर्षण था।

द्विवेदी युग के इस यौवन काल मे बाह्य तथा आन्तरिक दोनों चेतनायें जाग्रत हुईं। इनका एकीकरण हम गुप्त जी की कला में देखते हैं। जहां उनकी कला में देशभक्ति का स्वरूप है, वहां प्रभु भक्ति भी। उपाध्यायजी करुणा के कवि हैं, वे वस्तु जगत् के नहीं। उनकी भावनाओं में कोमलकान्त पदावली की छटा है। वे भाव जगत में प्रकृति पुरुष के बीच करुणा या सजलता के कवि हैं। परन्तु गुप्तजी वस्तु जगत की भावुकता के साथ अन्तर जगत की सचेत कल्पना के कवि हैं। वहां विश्व है, राजनीति है और है आशा का आदर्श मानव चित्रण— दूसरी ओर द्विवेदी युग में जिन नवयुवक कवियों ने पदार्पण किया, उन्होने बाह्य चेतना की अपेक्षा अन्तश्चेतना को प्रमुख स्थान दिया। कोमल भावुकता के इन कवियों ने सूर तुलसी तथा मीरा की मधुर भावनाओं के प्राचीन कलेवर पर बीसवी सदी की वैज्ञानिक साड़ी पहिना कर अपनी कला का परिचय दिया। प्रसाद जी इस भावना के प्रवर्त्तक हैं। प्रसाद जी की सजल भावनायें 'आंसू' से 'झरना' में परिवर्तन हो कर 'लहर के रूप को धारण करती हैं और फिर कामायनी में उस असीम आनन्दमय लोक में लुप्त हो जाती हैं, जहां :—

> समरस थे जड़ या चेतन,
> सुन्दर साकार बना था।
> चेतनता एक विलसती,
> आनन्द अखण्ड घना था।

'प्रसाद' जी के सहपाठी पंत जी ने शस्यश्यामला वसुन्धरा को मखमली जवनिका, कविता कामिनी का रंगभूमि में सजा कर कला का सरस स्वरूप स्थिर किया। वहां कल कल छल छल प्रवाहिता सरिता है, मधुकरों की मधुर गुंजार है, कोयल की काकली की सुवासित वेणु है, सौरभ की धुंध वाली झलकें हैं, पुष्पों की शतरंगी छटा है और मानव जीवन का प्रगतिशील सन्देश। निराला और पंत में वही अन्तर है, जो उनके छन्दों में है। यदि पहिला विचारों का ज्वारभाटा है, तो दूसरा भावना की शान्त सरिता। इधर अन्तर जगत की मूक पुजारिन, जहां विरह है, जलन है, अभिन्नता है और है जागनी की एकान्त साधना, वे हैं श्रीमती महादेवी वर्मा। आप अनुभूति की निर्झरिणी हैं। उनमें 'दीपशिखा' की लौ है, जो अविराम प्रियतम के मार्ग का आलोकित करती है। नेत्रों में जल है, हृदय में प्रेम और ऊपर से आदर्श।

रहस्यवाद

कवि कल्पना ही काव्य का चेतन स्वरूप है। व्यक्ति जब कवि न रह कर सांसारिक प्राणी-मात्र रहता है, तब वह वस्तु जगत को ही वास्तविक तथा सत्य समझ कर उसे प्रेम करता है। कवि की अनुभूतियों का मार्ग साधारण प्राणी की अपेक्षा भिन्न होता है। स्थूल वस्तुओं में चिर स्थायित्व नहीं होता। कवि की कल्पना कोमल अनुभूतियों के द्वारा तत्व रहस्य को काव्य जगत के सुधा-रस में प्रवाहित करती है। जो गोचर है वह सत्य नहीं। जो अगोचर अदृश्य है वह सत्य है। वैज्ञानिक रेडियो जब अदृश्य स्वरों को विश्व के वायुमण्डल में विकीर्ण करता है, तब उसको लोग सत्य मानते हैं, परन्तु जब कवि अगोचर चेतना को काव्य के रस में भरता है तो उस सत्य को ग्रहण करने की कृपणता क्यों की जाय? जीवन के चरम सत्य भावनाओं को कला से पाने का नाम रहस्यवाद है। 'साधना जगत में जो ब्रह्मवाद या अद्वैतवाद है वही भावना जगत में रहस्यवाद है। असीम में ससीम अर्थात परमात्मा में आत्मा का एकीकरण ही रहस्यवाद है। रहस्य का अर्थ है सार या तत्व और वाद का अर्थ है सिद्धान्त या अभिव्यक्ति। जब कवि की सहृदयता अभाव की अग्नि में द्रवित हो कर पिघल जाती है, तब वह अदृश्य सत्य के तत्व को भावनाओं के रूप में अभिव्यक्त करता है। बस, यही भावनाओं की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति ही रहस्यवाद है। आत्मा तथा परमात्मा की अभिन्नता रहस्यवाद का अन्तिम लक्ष्य है। आधुनिक कवियों में 'प्रसाद', निराला तथा महादेवी जी को ही रहस्यवादी माना जा सकता है। महादेवीजी के शब्दों में रहस्यवाद की कितनी मार्मिक व्याख्या है :—

> चित्रित तू मैं हूं रेखा क्रम,
> मधुर राग तू मैं स्वर संगम।
> तू असीम मैं सीमा का भ्रम,
> काया छाया में रहस्यमय।
> प्रेयसी! प्रियतम का अभिनय क्या!

छायावाद

छायावाद, रहस्यवाद की पिछली सीढ़ी है। छायावाद की कविता न पूर्ण शृंगारी है और न पूर्ण भक्तिरंजित। वह

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता उद्बोधन का मार्ग है
इसलिये
हिन्दू-संगठन
[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी]
पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोह-निद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)
विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

दोनों के बीच की कड़ी है। उसको दोनों से अनुराग है। आधुनिक छायावाद, हिंदी कविता की सम शांति युग की देन है, जब हिन्दी साहित्य एक लम्बी यात्रा की थकान मिटा कर अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करता है। छायावादी कवि प्रकृति के उपासक होते हैं। वे प्रकृति में केवल अदृश्य की ही झांकी नहीं देखते, अपितु उससे अपना आत्मीय सम्बन्ध भी स्थापित करते हैं। वे कवि उस मधुकर के समान होते हैं जो अपने प्रियतम कमल की सुन्दरता पर मुग्ध हैं, परन्तु उसको स्पर्श करना नहीं चाहते। उसको स्पर्श करने में कहीं कमल का सौन्दर्य बिगड़ न जाय। वह ऊपर ही ऊपर मंडराता है, और चुपके से उसका रसपान करता है। फिर उस रस के आनन्द में वह स्वयं गुंजार बन जाता है। छायावादी, रहस्यवादी कवि के समान अभिन्नता नहीं चाहता। वह तो जीवन और जीवनदाता दोनों में समझौता करता है। वह अदृश्य से कुछ लेना चाहता है। अतएव छायावादी कवि प्रकृति के प्रत्येक कण कण में जीवन का अनुभव करता है। उसकी प्रकृति हसती है, खेलती है, वह रोती है तथा मुस्कराती है अर्थात् वहां निर्जीव में सजीवता तथा जड़ में चेतनता है। कवि पंत छायावाद के प्रवर्तक हैं। प्रसाद जी, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा तथा 'मिलिन्द' जी छायावादी कवि हैं। 'पंत' जी के निम्न पद्य में छायावाद की सर्वांगीण व्याख्या है —

"हा सखी आओ बांह खोल हम,
लग कर गले जुड़ा लें प्राण।
फिर तुम तम में मैं प्रियतम में,
हो जावें द्रुत अन्तर्ध्यान।"

प्रगतिवाद

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। इस युग ने समय को पलटने में देर न लगाई। नई क्रान्ति की नई चिनगारियां विश्व प्रांगण में विकीर्ण होने लगीं मानव चेतना व्यक्तिगत उद्धार की सीमा को लांघ कर मानव समुदाय के उद्धार की ओर अग्रसर हुई। जहां पहले धर्म, काम तथा मोक्ष की ओर प्रगति थी, वहां इस घोर कठोर स्वार्थपरायण युग में मानव समाज केवल अर्थ की प्रगति की ओर उन्मुख हुआ। मानव-मानव का भक्षी हुआ। साम्राज्यवाद का जुआ प्रजा के कंधों पर रखा गया। पूंजीवाद गरीबों का शोषण करने लगा। मानव के नागरिक अधिकार उससे छिन गये। व्यक्ति का मापदण्ड धन बना। इस आर्थिक विषमता के भयंकर परिणाम को देखते हुए भावुक चेतनाओं का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। राजनैतिक रूप में संगठन की उत्पत्ति हुई, जिसका एक मात्र उद्देश्य पूंजीवाद तथा साम्राज्यवाद का नाश करना था। राजनैतिक परिभाषा में जिसको समाजवाद कहते हैं, उसी को भावनाओं की परिभाषा में प्रगतिवाद कहते हैं। प्रगति का अर्थ है आगे बढ़ना। सोतों को जगाना, कुचलों को स्वस्थ बनाना तथा गिरों को उठाना ही प्रगतिवाद का लक्ष्य है। प्रगतिवाद सामूहिक चेतना की जागृति का उपासक है। वह भौतिक शरीर को स्पर्श करता है, आध्यात्मिक जगत को नहीं। वहां क्रांति है, वर्तमान के प्रति विद्रोह है। विश्व मानव समाज को उलटने की चिनगारियां हैं। वहां जीवन है परन्तु केवल अर्थ का, वहां चेतना के स्फुलिंग हैं, परन्तु भौतिक तथा बौद्धिक प्रेरणा के। हिन्दी साहित्य में वर्तमान प्रगतिवादी कवि दो प्रकार के हैं — पहले वे जो वर्तमान समाज को नष्ट भ्रष्ट कर एक नवीन स्वप्निल विश्व का निर्माण करना चाहते हैं। इस श्रेणी के कवि भी 'नवीन' जी, भगवतीचरण वर्मा तथा 'दिनकर आदि हैं। और दूसरी श्रेणी उन कवियों की है, जो वर्तमान के प्रति असंतोष रख कर जागृति का सन्देश देते हैं। इस श्रेणी के कवि सियाराम शरण, प्रेमी जी, उदयशंकर भट्ट तथा मिलिन्द जी आदि हैं। 'मिलिन्द' जी के शब्द में —

"तेरे सिंहासन के नीचे,
कुचले जाने वाले जागे,
अब वे भी बढ़ना चाह रहे हैं,
जीवन पथ पर आगे।"

उपसंहार

आज हिन्दी कविता में सामूहिक परिवर्तन हो रहा है। इसका कारण विश्व में फैली हुई ट्रेजडी है। दुर्भिक्ष, पराधीनता, अराजकता, आदि कई प्रत्यक्ष घटनाओं ने जीवन-चक्र को परिवर्तित कर दिया। फलतः आज की करुणा ने आर्थिक चिन्ताओं के कारण जीवन को अनेकों उत्पीड़ितों के रूप में परिवर्तन कर दिया। कविता भी निराशा के चीत्कार में परिवर्तित हुई। कहीं उसमें किसानों का अभिवाद है तो कहीं दीन श्रमिकों की करुण पुकार। अब चेतना भी जागृत हो रही है। निराशा में आशा की ध्वनि गूंजने लगी है, जीवन ज्योति का प्रदीप जलने लगा है। गांधी युग का गांधीवाद बाह्य तथा आंतरिक दोनों कोनों को झांकने लगा है। आशा है कि हमारी कविता मानवीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती हुई श्रृंगार के कक्षों की ओर न झांक कर जीवन संग्राम को नये शस्त्रों से सुसज्जित करने में अग्रसर होगी।

———

सूचीपत्र और एजेंसी के नियम मुफ्त मंगाइये
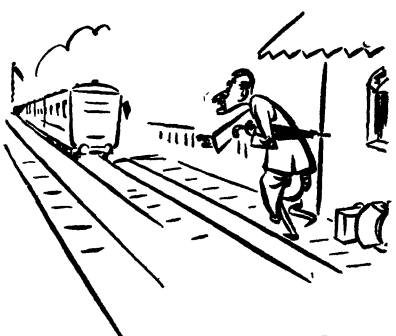
स्वतन्त्र भारत की भाषा हिन्दी होगी

[पृष्ठ १२ का शेष]

शर्तें संघ अदालत के सामने पेश की जायेंगी जिसका निर्णय अन्तिम होगा।

मंत्रिमण्डल

मसविदे में मन्त्रिमण्डल का विधान है। मन्त्रिमण्डल का अध्यक्ष प्रधान मन्त्री होगा, जो कि राष्ट्रपति को सहायता व सलाह देगा। मन्त्रिमण्डल लोक सभा के प्रति उत्तरदायी होगा। शासन सम्बन्धी सब कार्य राष्ट्रपति के नाम से हुआ करेंगे। राष्ट्रपति को संघ के शासन के सम्बन्ध में सूचना देना और राष्ट्रपति के कहने पर उसे कानून सम्बन्धी सुझाव देना प्रधान मन्त्री का कार्य होगा। एटोरनी जनरल की नियुक्ति का भी विधान रखा गया है।

दो सभाएं

सघ-पार्लियामेण्ट —संघ पार्लियामेण्ट में एक प्रधान होगा तथा दो सभाएं होंगी जिनका नाम राज्य परिषद् और लोक सभा होगा। राज्य परिषद में २५० सदस्य होंगे जिनमें से १५ सदस्य राष्ट्रपति नियुक्त करेगा जो कि साहित्य, कला और विज्ञान का प्रतिनिधित्व करेंगे और शेष राज्यों के प्रतिनिधि होंगे। लोक सभा में बालिग मताधिकार द्वारा चुने हुए ५०० प्रतिनिधि होंगे। ७५०,००० की जन सख्या का एक से कम प्रतिनिधि नहीं होगा। ५००,००० की जन सख्या पर एक से अधिक प्रतिनिधि नहीं होगा।

राज्य परिषद भग नहीं की जाया करेगी किन्तु प्रति दो वर्ष में लगभग एक तिहाई सदस्य नये चुने जाया करेंगे।

लोक सभा की आयु ५ वर्ष होगी और ५ वर्ष के बाद वह खत्म समझी जायगी किन्तु किसी संकटकाल में इसकी आयु एक वर्ष तक और बढ़ाई जाती जा सकती है।

पार्लियामेंट की दोनों धारा सभाएं बुलाने, स्थगित करने और उन्हें खत्म करने दोनों सभाओं में कार्य करने के नियम, उनके सदस्यों की अयोग्यता की शर्तें, और कानून बनाने के नियम उस ही प्रकार हैं जैसे की सन् १९३५ के भारत कानून के अन्तर्गत थे। किन्तु ब्रिटेन की पार्लियामेंट की तरह यह व्यवस्था की गई है कि प्रत्येक अधिवेशन के आरम्भ में प्रधान राष्ट्रपति पार्लियामेण्ट की दोनो सभाओं में भाषण देंगे और पार्लियामेंट के संयुक्त अधिवेशन को बतायेंगे कि अधिवेशन बुलाने का उद्देश्य क्या है।

ब्रिटेन की पार्लियामेंट की तरह से अर्थ बिल के सम्बन्ध में एक विशेष तरीका रखा गया है।

पार्लियामेंट का कार्य हिंदी में

संघ पार्लियामेंट का कार्य हिंदी या अंग्रेजी में होगा किन्तु सभा के अध्यक्ष किसी भी सदस्य को जो दानों भाषाओं को अच्छी प्रकार नहीं जानता उसको मातृभाषा में बोलने की इजाजत दे सकते हैं।

राष्ट्रपति का कानून निर्माण अधिकार

जब पार्लियामेंट की दोनों सभाओं का अधिवेशन हो उस समय को छोड़ कर राष्ट्रपति कभी भी आर्डीनेंस जारी कर सकते हैं। राष्ट्रपति ऐसे आर्डीनेंस अपने मन्त्रियों की सलाह से जारी कर सकते हैं और संघ पार्लियामेंट के अधिवेशन शुरू होने के ६ सप्ताह बाद ये समाप्त हो जायंगे।

सर्वोच्च अदालत

संघ अदालतः— एक भारत की सर्वोच्च अदालत होगी जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश तथा सात से कम न्यायाधीश नहीं होंगे। कनाडा की अदालत के तरीके पर भारत का न्यायाधीश निश्चित समय के लिए हाईकोर्ट के जजों को सर्वोच्च अदालत के लिए नियुक्त कर सकता है। ब्रिटेन और अमरीका की तरह अवकाश प्राप्त जज भी सर्वोच्च अदालत में बैठ सकते हैं। जो व्यक्ति सर्वोच्च अदालत में (या हाईकोर्ट में) न्यायाधीश रह चुका है वह भारत की किसी अदालत में वकालत नहीं करसकता। सर्वोच्च अदालत का कार्य अपीलों को करना तथा सलाह देना होगा। इसका कार्य सघ और राज्य के झगड़े तथा दो राज्यों के बीच के झगड़ों को निपटाना है। कुछ समझौतों के सम्बन्ध के झगड़े सर्वोच्च अदालत के क्षेत्र से बाहर हैं। अपील सम्बन्धी मामलों में इसका अधिकार उन मामलों में है जिनमें विधान की व्याख्या के सम्बन्ध में झगड़ा हो। वे मामले जो अब सघ अदालत या प्रीवी कौंसिल में जाते हैं इसके अधिकार में होंगे। आर्थिक मामलों में दीवानी अपील कम से कम २०,०००) रु० की हो सकती है। जो मामले राष्ट्रपति सर्वोच्च अदालत के सामने पेश करेगा उन पर वह अपनी राय दे सकती है।

इस बात की भी व्यवस्था की गई है कि भारत के किसी प्रदेश को अदालत के किसी फैसले, निर्णय या आज्ञा के विरुद्ध सर्वोच्च अदालत में अपील की जाने की इजाजत दी जा सकती है।

एक टिप्पणी में विधान समिति ने कहा है कि अमरीका की सर्वोच्च अदालत के सब जज हर एक मामले की सुनवाई में बैठ सकते हैं; अदालत कभी विभाजित रूप में नहीं बैठती और उस अदालत के जज इस बात को बहुत महत्व देते हैं। समिति की राय में कम से कम दो मामलों में यह प्रथा भारत में भी अपनाई जानी चाहिए। एक तो विधान की व्याख्या करते समय और दूसरे उन मामलों में जो राष्ट्रपति राय लेने के लिये सर्वोच्च अदालत के सामने पेश करें। वह प्रथा दूसरे मामलों में भी लागू की जाय या नहीं यह पार्लियामेंट के निश्चय पर छोड़ दी जाय।

भारत के प्रधान हिसाब निरीक्षक

सन् १९३५ के भारत कानून के समान ही भारत के एक प्रधान हिसाब निरीक्षक की भी व्यवस्था की गई है।

भाग ६ — राज्य

राज्यों में शासन व्यवस्था

प्रत्येक राज्य में एक गवर्नर होगा और राज्य की शासन सम्बन्धी शक्ति उसमें निहित होगी।

गवर्नर के चुनाव के सम्बन्ध में मसविदे में दो वैकल्पिक तरीके बताये गये हैं। एक विकल्प में बताया गया है कि गवर्नर, राज्य के सब मतदाताओं द्वारा जो कि वहां की धारासभा के भी मतदाता होंगे, चुना जायगा। यह निर्णय विधान परिषद् ने भी किया है। दूसरे विकल्प का समर्थन समिति के कुछ सदस्य करते हैं। वे सदस्य यह महसूस करते हैं कि आम जनता द्वारा निर्वाचित गवर्नर और धारासभा के प्रति उत्तरदायी प्रधान मन्त्री होने से उनमें मतभेद पैदा हो सकता है और फलस्वरूप शासन कमजोर हो जायगा। उन सदस्यों के विचार में गवर्नर ४ व्यक्तियों की सूची में से (यह आवश्यक नहीं कि वे सबंधित राज्य के नागरिक हों) राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाय। ये चार व्यक्ति राज्य की धारासभा द्वारा निर्वाचित होने चाहिए।

गवर्नरों का कार्यकाल पांच वर्ष होगा। विधान को तोड़ने पर गवर्नर पर मुकदमा चलाये जाने की व्यवस्था भी कर दी गई है।

समिति ने डिप्टी गवर्नर की व्यवस्था करना आवश्यक नहीं समझा है, क्योंकि गवर्नर के रहते हुए एक डिप्टी गवर्नर के पास कोई कार्य नहीं रहेगा। केन्द्र में स्थिति भिन्न है, क्योंकि केन्द्र के उपराष्ट्रपति राज्य परिषद् के स्थायी सभापति भी होंगे। किन्तु अधिकतर राज्यों में बड़ी सभाएं नहीं होंगी और डिप्टी गवर्नर को उपराष्ट्रपति की तरह का कार्य भार सौंपना सम्भव नहीं होगा। अकल्पित घटना में गवर्नर के कार्य को करने के लिये मसविदे में योजना रखी गई है। राज्य की धारासभा (या राष्ट्रपति) इसका प्रबन्ध करेंगे।

मन्त्रिमंडल

गवर्नर की सहायता व सलाह देने

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!
भारत के सर्वप्रिय मासिक पत्र
मनोरंजन का
गांधी-स्मृति-अंक
इस अङ्क की कुछ विशेषतायें—
* डा० रामकुमार वर्मा, बच्चन, श्री नारायण चतुर्वेदी, श्री मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रा कुमारी सिनहा, चिरंजीत इत्यादि हिंदी के प्रमुख कवियों की विश्ववंद्य महात्मा गांधी के शोक में लिखी हुई अश्रु सिक्त तथा भवपूर्ण कवितायें।
* गांधी जी के आदर्श जीवन की अनेकों छोटी २ कहानियां जिनसे उन के व्यक्तित्व की अलौकिकता झलकती है।
* हिंदी के यशस्वी कहानीकार श्री विष्णु प्रभाकर की कहानी 'स्मृति-पूजा'— उस महामानव के आकस्मिक निधन से भारत के हृदय पर पड़े प्रभाव का चित्र
* 'बापू की पावन स्मृति'—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की गांधी जी से प्रथम भेंट का हृदयग्राही वर्णन।
* भारतीय साहित्य पर गांधी जी का प्रभाव—श्री प्रभाकर माचवे का एक खोजपूर्ण साहित्यिक लेख।
* श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार अपने एक लेख में पूछते हैं—'क्या हम गांधी जी के दिव्य संदेश को समझ भी पाये ?'
* 'मैं भी कलाकार हूं' — गांधी जी ने प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री दिलीपकुमार राय के सम्मुख यह बात कैसे सिद्ध की।
* इनके अतिरिक्त गांधी जी के बहुमुखी जीवन, व्यक्तित्व और आदर्शों के सम्बन्ध में अनेकों लेख, चित्र और टिप्पणियां, सलोनी दुनिया, बाल पहेली, बहुरंगी छ र्इं, मुख पृष्ठ पर गांधी जी का दो रंगा चित्र।
एक प्रति आठ आने वार्षिक मूल्य ५॥)
श्री श्रद्धानंद पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानंद बाजार, दिल्ली।

असेम्बली : गवर्नर : व्यवस्था

के लिये एक मन्त्रिमण्डल की व्यवस्था की गई है। जिसका अध्यक्ष प्रधान मन्त्री होगा। कुछ विषयों को छोड़कर गवर्नर मन्त्रियों की सलाह से कार्य करेगा। धारासभा को बुलाना, और खत्म करना, सरकारी नौकरी समिति के सदस्य और उसके अध्यक्ष और राज्य के प्रधान हिसाब निरीक्षक की नियुक्ति और जब राज्य की शांति और अमन को खतरा हो तो विधान को कुछ समय के लिये रोकने के अपने कार्य में गवर्नर अपने मन्त्रियों की सलाह नहीं लेगा।

विधान स्थगित करने की शक्ति को दो सप्ताह से अधिक काम में नहीं लाया जा सकता और गवर्नर को इस मामले को राष्ट्रपति के सामने रखना चाहिए। राज्य की सरकार के शासन सबंधी सब कार्य गवर्नर के नाम में किये जायेंगे। यह प्रधान मंत्री का काम है कि वह राज्य के शासन सम्बंधी कार्यों के संबंध में गवर्नर को सूचना दे और पूछने पर कानून बनाने के सुझावों के संबंध में गवर्नर को सूचना दे।

राज्यों के लिये प्रधान सरकारी वकील

प्रत्येक राज्य के लिये एक प्रधान सरकारी वकील होगा जिसके कार्य वैसे ही होंगे जैसे सन १९३५ के भारतीय विधान कानून में प्रांतीय गवर्नरों के थे। प्रधान सरकारी वकील राज्य के प्रधान मंत्री के त्याग पत्र देने पर हट जायेगा।

कुछ राज्यों में राज्य की व्यवस्थापिका में गवर्नर और दो सभायें होंगी एक असेम्बली और दूसरी कौंसिल। अभी उन राज्यों के नाम नहीं दिये गये हैं जिनमें दो सभायें होंगी।

असेम्बली

असेम्बली में ऐसे सदस्य होंगे जिनका चुनाव सीधी चुनाव-प्रणाली से वयस्क मताधिकार के आधार पर प्रादेशिक निर्वाचन-क्षेत्रों में किया जायगा। असेम्बली में किसी भी अवस्था में ३०० से अधिक और ६० से कम सदस्य नहीं होंगे। एक लाख आबादी के लिये एक से अधिक सदस्य नहीं चुना जायेगा इसके लिये आसाम के कुछ क्षेत्र खुदमुख्त्यार जिले कहलायेंगे, अपवाद होंगे।

एक राज्य की कौंसिल के सदस्यों की कुल संख्या राज्य की असेम्बली के सदस्यों की कुल संख्या की २५ प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये। कौंसिल के आधे सदस्य समितियों में से धन्धों के आधार पर चुने जायेंगे और तिहाई आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एक वैकल्पिक मत के द्वारा चुने जायेंगे। शेष सदस्यों को गवर्नर नामजद करेगा।

असेम्बली की आयु ५ वर्ष होगी और उसके बाद वह स्वतः भंग हो जावेगी। कौंसिल भंग नहीं होगी; बल्कि उसके लगभग एक तिहाई सदस्य प्रत्येक तीसरे वर्ष हट जाया करेंगे।

राज्य की व्यवस्थापिका

व्यवस्थापिका सभा या सभाओं को बुलाने, स्थगित करने और भंग करने के सम्बन्ध में, उनमें कार्य के संचालन, उनके सदस्यों को अयोग्य करार देने और व्यवस्थापिका की कार्यविधि संबंधी धारायें भी दी गई हैं। इसमें आर्थिक मामले भी सम्मिलित हैं।

व्यवस्थापिका की भाषा

यह भी व्यवस्था की गई है कि राज्य की व्यवस्थापिका में कार्य प्रांत में सामान्यत काम में आने वाली भाषा या भाषाओं में या हिन्दी में या अंग्रेजी में संचालित किया जायेगा, किन्तु धारा सभा का कार्य संचालक अधिकारी किसी सदस्य को, जो इनमें से किसी भाषा में अपने विचार प्रकट न कर सके, अपनी मातृभाषा में भाषण देने की अनुमति दे सकता है।

गवर्नर के कानूनी अधिकार

राज्यों के गवर्नरों को किसी भी समय जब धारासभा का अधिवेशन न हो रहा हो, विशेषादेश निकालने का अधिकार दिया गया है। गवर्नर ऐसे विशेषादेशों को मन्त्रियों की सलाह से निकालेगा। ये विशेषादेश राज्य की असेम्बली की फिर बैठक होने के ६ सप्ताह बाद समाप्त हो जायेंगे।

संकटकालीन-व्यवस्था

गम्भीर संकट काल में, जब राज्य की शांति को खतरा हो, गवर्नर को अधिकार दिया गया है कि वे विधान की कुछ धाराओं को दो सप्ताह के लिये स्थगित कर सकते हैं। गवर्नर को उसकी सूचना अध्यक्ष को देनी पड़ेगी। रिपोर्ट की प्राप्ति पर गवर्नर या तो घोषणा को रद्द कर सकता है या अपनी नई घोषणा निकाल सकता है जिसके फलस्वरूप राज्य के शासन के स्थान में केन्द्रीय शासन स्थापित हो जायगा और राज्य की व्यवस्थापिका का स्थान केन्द्रीय व्यवस्थापिका ले लेगी। दूसरे शब्दों में घोषणा काल में सम्बन्धित राज्य केन्द्र द्वारा शासित क्षेत्र हो जायगा। यह व्यवसाय सन् १९३५ के भारतीय विधान की धारा ९३ के स्थान में की गई है।

परिगणित और कबाइली क्षेत्र

विधान के मसविदे की पांचवीं और छठी परिशिष्ट में आसाम से भिन्न राज्यों

स्त्री की विजय सौन्दर्य में है

और सौन्दर्य का भेद है उसके बाल। जुल्फे काश्मीर हेअर आईल स्त्री के बालों को घने, लम्बे, मजबूत और चमकीले बनाने में अद्वितीय है। बाजारी तेलों पर धन नष्ट करने की बजाए जुल्फे काश्मीर हेअर आईल सेवन करें। यह एक शताब्दि से भी अधिक ख्याति प्राप्त है। आप सदैव इसे ही पसन्द करेंगे।

काश्मीर परफ्यूमरी वर्क्स
कुतबरोड. दिल्ली

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार

स्वप्न दोष और प्रमेह
केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम ३) डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमायें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ६२१ कीमत ७॥।=) डाकखर्च व पैकिंग १।=)।

नोट—एक समय में २ कैमरों के ग्राहक को एक कैमरा मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें। अन्यथा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस। अपना पता पूरा और साफ साफ लिखें।

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइन्स (AWD) हलका नं० २१ अमृतसर।
Imperial Chamber of Science (AWD) Halka No 21 Amritsar.

वि दे श चि त्रा व लि —

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल सम्बन्ध विभाग के नये मन्त्री मि० फिलिप नोयलबेकर।

ब्रिटेन का प्रसिद्ध साइकिल चालक रेजि० हैरिस साइकिल चलाते हुए।

सर फ्रेडरिक बरो बंगाल के भूतपूर्व गवर्नर एग्रीकल्चरल लैंड कमीशन के सभापति चुने गये हैं।

प्रसिद्ध खिलाड़ी जवान पुरविस स्केटिंग की ट्रेनिंग देते हुए।

भूमिगत एअरक्राफ्ट फैक्टरी में काम करने का एक युद्धकालीन दृश्य।

इतिहास अपने आपको दोहराता है

[पृष्ठ ११ का शेष]

और मिलाना चाहते हैं, इसीलिये पिछले सप्ताह उन्होंने नाम्रो के साथ 'समान ०१म ह र के लिये एक बिल पेश किया। इस पर दक्षिण के राज्य बिगड़ पड़े हैं और डिमोक्रेटिक दल से अलग होकर स्वतन्त्र उम्मदवार चुनने की धमकी दे रहे हैं। दक्षिण क ११ गवनर्रो की कान्फ्रेंस ने राष्ट्रपति को अपना विचार बदलने के लिये १२ सप्ताह का समय दिया है।

अवश्य ही १८६१ ६५ का गृहयुद्ध अब पुन नहीं होगा और सम्भवत डिमोक्रेटिक दल में भी फूट न पड़े परन्तु रंगभेद के कारण खिंचाव बढ़ जायगा। इस विरोध से यह स्पष्ट हो जाता है क लिंकन का स्वप्न कितना अधूरा रहा।

परन्तु ट्रूमैन का बिल — जो एक राजनातिक चाल है — कांग्रेस में ही स्वीकृत नहीं होगा क्योंक कांग्रेस पर विरोधी दल-रिपब्लिकन दल — का अधिकार है और वह और भी कट्टर 'श्वेत' है।

× × ×

क्या सन् ३० ३२ का आर्थिक संकट पुन आयगा? पिछले सप्ताह सारा संसार अमेरिका में अचानक गिरते भावों की ओर आतंकपूर्वक देखता रहा। वर्षों से भाव बढ़ रहे थे, मजदूरी बढ़ रही थी, भाव और बढ़ते थे, मजदूरी और बढ़ती थी। उधर बैंक और सरकार बरा बर नोट पर नोट छापते गये। मुद्रा का यह असंतुलन इतना संकटमय हो गया कि इस समय अमेरिकन डालर का यथार्थ मूल्य ६० सेण्ट है — असल से ४० सेण्ट कम। अंत में एक समय आता है जब यह सारा कृत्रिम जाल छिन्न भिन्न हो जाता है और सारा आर्थिक शासन बिगड़ जाता है। सन् ३०—३२ में यही हुआ था।

पिछले सप्ताह अचानक गेहूं, अन्य खाद्यान्न, रुई आदि के भाव गिरने लगे। एक नए आर्थिक संकट की आशंका ने सबको घेर लिया। पूंजीपति शासन प्रथा के अनुसार प्रति १० २० वर्ष के उपरान्त आर्थिक संकट आवश्यक है। इसे रोकने का एकमात्र उपाय है युद्ध-अर्थात् वस्तुओं का भस्मसात्।

परन्तु पिछले सप्ताह की घटना सरकारी षड्यन्त्र मालूम होता है। सरकार मार्शल योजना कार्यान्वित करने के लिये जनता को हर तरीके से मना रही है। परन्तु जनमत विरोधी है। यदि आर्थिक संकट का भय आया और उसका एक मात्र उपाय यही दिखायी दिया कि सरकार स्वयं खरीद करे और चीजों का मूल्य ऊंचा रखे तो सम्भवत जनमत राजी हो जाय। सरकार यह खरीद कर मार्शल योजना में खर्च करेगी। पिछले सप्ताह सम्भवत किसी सरकारी इशारे पर एक व्यापारी ने २० लाख बुशल गेहूं एक साथ बाजार में ला पटका। भाव गिर गये। तीन दिन के संकट ने लोगों को चौकन्ना कर दिया। सरकार ने घोषणा की कि सरकार ४ लाख बुशल स्वयं खरीद लेगी और भाव अधिक न गिरने देगी। स्थिति अभी स्पष्ट नहीं हुई — और गम्भीरतापूर्वक देखने की आवश्यकता है।

सिक्कों और कागज के नोटों से यह सुविधा थी कि वे आसानी से प्रत्येक स्थान पर ले जाये जा सकते थे। परन्तु ज्यों ज्यों यातायात के साधनों और व्यापार की उन्नति हुई अत्यन्त दूर के स्थानों से भी रुपये का लेन देन आवश्यक हो गया। प्रत्येक बार किसी हरकारे के हाथ रुपया भेजना सम्भव न था। इस के लिये किसी दूसरे सरल उपाय की आवश्यकता हुई। इस समस्या को सुलझाने के लिये भारतीय महाजनों ने 'बिल आफ एक्सचेंज' अर्थात् हुण्डियों का तरीका निकाला। यह हुंडी किसी विशेष व्यापारी के नाम एक चिट्ठी के रूप में होती है कि लिखित व्यक्ति को निश्चित रुपया दे दिया जाये। यही आगे चल कर वर्तमान युग के चैक ड्राफ्ट बन गये। जरा सोचिये प्राचीन काल के अदल-बदल के व्यापार की अपेक्षा यह कितनी उन्नति है। आज कल आप भारतवर्ष या संसार के किसी भी स्थान में माल खरीद सकते हैं और किसी प्रसिद्ध बैंक के नाम चैक या ड्राफ्ट भेज सकते हैं।

बचत भी सुरक्षित और लाभदायक बन गई है। आप सिक्योरिटी खरीद सकते हैं या किसी बैंक में रुपया जमा कर सकते हैं। परन्तु एक योग्य व्यापारी समझता है कि आज कल नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स सब से अधिक लाभदायक होने के साथ साथ पूर्णतया सुरक्षित हैं। ये अवधि पूरी होने पर ५०% बढ़ जाते हैं—प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप ५) से १५०००) की मालियत के सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं। थोड़ी बचत वाले ।), ।।) और १) के नेशनल सेविंग्ज स्टाम्प्स खरीद सकते हैं। आप सर्टिफिकेट्स १८ मास के उपरान्त भुना सकते हैं (५ रु० के सर्टिफिकेट्स १२ मास के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्वप्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC 215

न्यायालय, संघ-राज्य, नौकरियां

(पृष्ठ १८ का शेष)

के परिशिष्ट क्षेत्रों और आसाम के उन कबाइली क्षेत्रों के शासन के लिए विशेष धारायें रखी गई हैं, जो अधिकांश में सन् १९३५ के विधान कानून के पृथक कृत या आंशिक पृथकृत क्षेत्रों से मिलते हुये हैं।

उच्च न्यायालय

गवर्नरों और चीफ कमिश्नरों के प्रांतों में उच्च न्यायालय संबधी धारायें प्रायः वे ही हैं, जो सन् १९३५ के विधान कानून में हैं। किन्तु यह व्यवस्था की गई है कि उच्च न्यायालय के न्यायाधीश तब तक पदस्थ रहें, जब तक उनकी आयु ६० वर्ष की न हो जाय या ६५ वर्ष से अधिक न हो जैसा भी राज्य की व्यवस्थापिका इस सम्बन्ध में निश्चय करें। यह व्यवस्था भी की गई है कि जो उच्च न्यायालय का न्यायाधीश होगा वह भारत के प्रदेश में किसी दूसरे न्यायालय में या किसी अधिकारी के सामने वकालत नहीं कर सकता।

अवकाश-प्राप्त न्यायाधीशों को उच्च न्यायालय की बैठकों में ब्रिटेन और संयुक्त राज्य की भांति नियुक्त करने के सम्बन्ध में भी धारा रखी गई है।

यह भी व्यवस्था की गई है कि संघ पार्लमेंट कानून द्वारा उच्च न्यायालय का न्यायाधिकार जिस राज्य में स्थित है उससे भिन्न राज्य तक बढ़ा सकती है या उसके न्यायाधिकार से किसी दूसरे राज्य को अलग कर सकती है।

प्रधान हिसाब-निरीक्षक

राज्य में जो व्यक्ति प्रधान हिसाब-निरीक्षक का कार्य करेगा, वह प्रधान हिसाब निरीक्षक कहलायेगा और समस्त भारत का हिसाब-निरीक्षक सर्वोच्च हिसाब निरीक्षक कहा जायेगा।

भाग ७—केन्द्रित द्वारा शासित प्रांत

सातवें भाग में उन राज्यों का वर्णन है, जो दिल्ली, अजमेर-मेरवाड़ा कुर्ग और पंथ पीपलोदा में बनाये जायेंगे और जिनका शासन इस समय केन्द्र द्वारा संचालित किया जाता है। इन राज्यों का शासन चीफ कमिश्नर, लेफ्टिनेंट गवर्नर या गवर्नर या समीप के किसी राज्य के शासक के द्वारा कराने की व्यवस्था की गई है। किसी विशेष क्षेत्र में क्या किया जायेगा यह, राष्ट्रपति अपनी आज्ञा से तय करेगा। राष्ट्रपति को इन क्षेत्रों के लिये स्थानीय धारा-सभा और परामर्शदात्री समितियां बनाने और उनका विधान और अधिकार भी दिया गया है।

यह व्यवस्था की गई है कि भारतीय रियासतें (जैसे उड़ीसा का रियासत समूह) जिन्होंने पूरा अधिकार, न्यायाधिकार और सत्ता केन्द्रीय सरकार को दे दी है, ऐसे ही शासित होंगी जैसे केन्द्रीय शासन दूसरे दूसरे क्षेत्र। इसका अर्थ यह है कि इनका शासन भी चीफ कमिश्नर, लेफ्टिनेंट गवर्नर या समीपस्थ राज्य के शासक द्वारा जैसी आवश्यकता होगी वैसे किया जायेगा।

भाग ८ — अण्डमान

आठवें भाग में उन प्रदेशों का वर्णन है जो भारतीय प्रदेश में स्थित हैं, किन्तु राज्य नहीं हैं, जैसे अण्डमान और नीकोबार द्वीप। इन प्रदेशों का शासन चीफ कमिश्नर या राष्ट्रपति के नियुक्त किये हुये किसी दूसरे अधिकारी द्वारा किया जायेगा। राष्ट्रपति को इन प्रदेशों में शान्ति और सुशासन कायम रखने के लिये कानून बनाने का अधिकार होगा।

भाग ९ — संघ और राज्य

नवें भाग में संघ और राज्यों के बीच कानून निर्माण और शासन सम्बन्धी सम्बन्ध बताये गये हैं। मसविदा-समिति ने प्रायः उस कानून निर्माण-सम्बन्धी सूची में कोई परिवर्तन नहीं किया है जिसकी सिफारिश संघ सत्ता समिति ने की थी और जिसे विधान परिषद ने स्वीकृत किया था।

किन्तु समिति ने यह व्यवस्था की है कि जो विषय राज्य की सूची में है, वह राष्ट्रीय महत्व प्राप्त कर ले तो संघ-पार्लियामेंट उसके सम्बन्ध में कानून बना सकती है। राज्यों के अधिकारों में कोई अवांछनीय कमी न हो, इसके लिये यह व्यवस्था की गई है कि यह तभी किया जा सकता है जब राज-सभा जो राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है, इस आशय का प्रस्ताव दो ... कर दें।

उत्तराधिकार

समिति ने संयुक्त सूची में "कृषि-योग्य भूमि से भिन्न दूसरी सम्पत्ति के उत्तराधिकार के स्थान में "उत्तराधिकार" का पूरा विषय रखना वांछनीय समझा है।

समिति ने संयुक्त सूची में वे सभी मामले भी रखें हैं, जिनके सम्बन्धमें यहां पर निजी कानून लागू होता है। इसका उद्देश्य इन मामलों में समस्त देश में एक समान कानून बनाने की सुविधा उत्पन्न करना है। समिति ने संघ के लिए भूमि प्राप्त करना संघ की सूची में और राज्यों के लिए भूमि प्राप्त करना राज्यों की सूची में रखते हुए यह व्यवस्था दी है कि भूमि प्राप्ति के मुआवजे का निर्धारण संयुक्त सूची में ही रहेगा, जिससे इस सम्बन्ध में एक नीति रह सके।

इसके अतिरिक्त वर्तमान असाधारण स्थितियों को ध्यान में रखते हुए जिस में आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति पर केन्द्रीय नियन्त्रण आवश्यक है, १९४६ के भारतीय कानून के आधार पर यह व्यवस्था की गई है कि विधान के प्रारम्भ से ५ वर्ष तक व्यापार और व्यवसाय, कुछ आवश्यक वस्तुओं जैसे सूती कपड़ा, खाद्य पदार्थ और तेल की उत्पत्ति प्राप्ति वितरण और अपने घरों से हटाए हुए लोगों को फिर से बसाने पुनर्वासित करने के कार्य उसी आधार पर किए जायेंगे जिस आधार पर संयुक्त सूची के दूसरे विषय सम्पादित किए जायेंगे।

संघ और राज्यों के बीच शासनिक सम्बन्धों के बारे में यह व्यवस्था की गई है कि रियासतें संघ से या संघ के दूसरे राज्य से जहां गवर्नर का शासन हो, ऐसा समझौता कर सके, जिससे संघ या वह दूसरा राज्य रियासतों के शासन, व कानून निर्माण और न्याय के अधिकार अपने हाथों में ले सके। राज्यों के बीच पानी की प्राप्ति सम्बन्धी झगड़ों को तय करने के लिए सन् १९३५ के विधान कानून की वर्तमान धारा के आधार पर व्यवस्था की गई है।

राज्यों के बीच के व्यापार और व्यवसाय के सम्बन्ध में यह निर्णय किया गया है कि एक राज्य द्वारा दूसरे को रियायत देना या पक्षपात करना निषिद्ध है। किंतु यह व्यवस्था भी की गई है कि सार्वजनिक हित की दृष्टि से कोई भी राज्य उचित प्रतिबन्ध लगा सकता है।

राष्ट्रपति द्वारा राज्यों के बीच के झगड़े मिटाने के लिए और नीति के अधिक अच्छे एकीकरण के लिये एक अन्तर्राज्य परिषद की नियुक्ति की व्यवस्था भी की गई है।

भाग-१०-अर्थ

यह भाग अर्थ, सम्पत्ति, ठेकों और मुकदमों से ताल्लुक रखता है।

केन्द्र और राज्यों के बीच आय के वितरण और राज्यों को आर्थिक सहायता की धारायें फिलहाल वही रखी गई हैं, जो भारत सरकार के १९३५ के कानून में हैं। नए विधान के लागू होने के ५ वर्ष बाद एक अर्थ कमीशन की नियुक्ति की धारा शामिल कर दी गई है। यह कमीशन इस आय के वितरण तथा संघ और राज्यों के बीच अन्य मामलों के बारे में सिफारिशें करेगा।

इस भाग की अन्य धाराएं बहुतांश में वही हैं जो भारत सरकार १९३५ के कानून में हैं।

भाग ११-संकटकालीन अधिकार

यह भाग संकटकालीन अधिकारियों से सम्बन्धित है। राष्ट्रपति को 'संकटकालीन' अवस्था घोषित करने का अधिकार दिया गया है। ऐसा उस अवस्था में किया जायेगा जब कोई ऐसी संकटावस्था उत्पन्न हो जाये, जिसके कारण भारत की सुरक्षा को युद्ध या गृहयुद्ध से खतरा उत्पन्न हो गया हो। संकटावस्था घोषित करने की धाराएं उन्हीं धाराओं के आधार पर बनाई गई हैं जो भारत सरकार के १९३५ के कानून में हैं।

भाग १२ - नौकरियां

नौकरियों के बारे में तफसीलवार धाराओं के निर्माण को धारासभा पर छोड़ दिया गया है।

संघ और राज्यों की पब्लिक सर्विस कमीशन की धारायें उसी आधार पर शामिल की गई हैं जो भारत सरकार के १९३५ के कानून में हैं।

भाग १३-चुनाव

लोक सभा के लिए चुनावों की देख रेख निर्देश और नियंत्रण के लिए चुनाव कमीशन बनाने की व्यवस्था की गई है। चुनाव कमीशनकी नियुक्ति राष्ट्रपति करेंगे और राज्यों की धारसभाओं के समस्त चुनावों के लिए जो चुनाव कमीशन होगा, उसकी नियुक्ति राज्य के गवर्नर करेंगे।

समिति ने विधान की चुनाव-तफसीलों को जोड़ना उचित नहीं समझा। इन तफसीलों में चुनाव क्षेत्रों को भंग करना भी शामिल है। इन्हें धारासभायें तय करेंगी।

भाग १४ - अल्पसंख्यक

यह भाग अल्पसंख्यकों की सुरक्षा से संबन्धित है। मुसलमानों, परिगणित

मोमबत्तियां बनाओ। **घर बैठे १५०) रुपये माहवार कमायें** स्कूल के चाक बनाओ।

मोमबत्तियों के काम में एक छोटे सांचे की मदद से पांच छः रुपये रोजाना मजदूरी कमाये जा सकते हैं। यह केवल १५०) रु० की पूंजी से अच्छी तरह चालू हो सकता है। तरीका सांचे के साथ बताया जाता है। १२ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ४०) रु० १७ की कीमत ६०) ३४ की कीमत ११०) रु० डाकखर्च अलग। २४ स्कूल चाक के सांचे की कीमत ६०)। मोमबत्तियां बनाने का सामान भी हमारे से मिल सकता है। आर्डर के साथ आधी कीमत पेशगी आनी जरूरी है।

ए० हीरालाल चन्द एण्ड कम्पनी (W.D.) पोस्ट बैग नं० ११ A. देहली।

जातियों, परिगणित कबीलों और भारतीय ईसाइयों (केवल मद्रास और बम्बई) के लिए लोक सभा और राज्यों की धारा सभाओं में १० वर्ष के लिए सीटें रिजर्व कर दी गई हैं। एंग्लो-इंडियनों की नौकरियों के अधिकारों और शैक्षणिक सहायताओं को दस वर्ष तक जारी रखने के लिए धारा बना दी गई है।

विशेष अधिकार

संघ और राज्यों में अल्पसंख्यकों के लिए एक विशेष अफसर और पिछड़ी जातियों की हालतों की जांच करने के लिए समय समय पर नियुक्त किए जाने वाले कमीशन की नियुक्ति के लिए धाराएं बना दी गई हैं। परिगणित क्षेत्रों (जो वर्तमान विधान में अधिकांशत: आंशिक बहिर्गत क्षेत्रों के समान ही हैं) की व्यवस्था पर रिपोर्ट देने के लिए एक कमीशन की नियुक्ति और परिगणित कबीलों की भलाई के लिए भी व्यवस्था रखी गई है।

भाग १५ —संरक्षण

राष्ट्रपति और गवर्नरों का संरक्षण: इस भाग में राष्ट्रपति और गवर्नरों के कार्यकाल में दैनिक व नागरिक कार्यवाहियों के विरुद्ध उनके संरक्षण की व्यवस्था की गई है।

भाग १६ — संशोधन

इस भाग में विधान के संशोधन की व्यवस्था है। साधारणतया ऐसे संशोधनों के लिए संघ पार्लमेंट की प्रत्येक सभा में उपस्थित तथा मत देने वाले सदस्यों का दो तिहाई बहुमत तथा समस्त सभा के सदस्यों का बहुमत भी आवश्यक होगा। ऐसे संशोधन के लिए जिसमें धारासभा में विचारणीय विषयों, या पार्लमेंट में राज्यों के प्रतिनिधित्व अथवा सर्वोच्च अदालत के अधिकारों में परिवर्तन की बात हो उसमें यह भी आवश्यक होगा कि कम से कम आधे राज्यों, जो गवर्नरी प्रांत हैं और कम से कम आधे १ तिहाई राज्यों जो भारतीय रियासतें हैं, की धारासभाएं उस संशोधन की पुष्टि करें।

कुछ विशेष मामलों के सम्बन्ध में राज्यों की धारासभाओं को सीमित वैधानिक अधिकार देने की व्यवस्था भी की गई है।

भाग १७—अस्थायी व्यवस्थायें

यह व्यवस्था की गई है कि तमाम वर्त्तमान कानून जारी रहेंगे, लेकिन नए विधान के अनुसार राष्ट्रपति चाहेंगे तो एक हुक्म निकाल कर उनमें संशोधन कर सकेंगे। यह भी व्यवस्था की गई है कि जब तक पार्लमेंट की दोनों सभाओं की स्थापना नहीं होती और जब तक उनके अधिवेशन नहीं बुलाये जाते, तब तक विधान-परिषद ही संघीय पार्लमेंट का काम करेगी। जब तक नये विधान के अनुसार राष्ट्रपति का चुनाव नहीं हो जाता तब तक भारत की विधान परिषद द्वारा चुने हुए व्यक्ति भारत के अस्थायी राष्ट्रपति माने जायेंगे।

नए विधान के लागू होने से ठीक पहले जो लोग भारतीय उपनिवेश के मंत्री होंगे वे ही नए विधान के अनुसार अस्थायी राष्ट्रपति के मंत्री बन जायेंगे।

गवर्नरों, धारासभाओं तथा गवर्नरों के प्रांतों की तरह रियासतों के मन्त्रियों के सम्बन्ध में भी ऐसी ही व्यवस्थाएं की गई हैं।

संघ अदालत के न्यायाधीश जब तक और कोई फैसला नहीं होता तब तक सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहेंगे, तमाम राज्यों के हाईकोर्टों के न्यायाधीश जब तक और फैसला नहीं होता, तब तक हाईकोर्टों के न्यायाधीश बने रहेंगे।

इस भाग में उठने वाली समस्त कठिनाइयों को राष्ट्रपति के हुक्मों से दूर किए जा सकेगा। नए विधान के अनुसार स्थापित पार्लमेंट की बैठक जब तक शुरू नहीं हो जाती, तब तक उक्त हुक्म दिये जाते रहेंगे।

भाग १८ — मंसूख

नया विधान किस तारीख को कार्यान्वित किया जायगा, इसका जिक्र नहीं किया गया। तारीख का फैसला बाद में किया जायगा। नए विधान के लागू हो जाने के बाद भारतीय स्वाधीनता-कानून १९४७; भारत कानून १९३५ तथा इस कानून के संशोधन व पूरक कानून मंसूख समझे जायगे।

सूचियां

प्रथम सूची :— प्रथम सूची के ४ भाग हैं। पहिले भाग में उन राज्यों का जिक्र है, जो गवर्नरों के प्रांत हैं। द्वितीय भाग में वे राज्य हैं, जो इस समय चीफ-कमिश्नरों के प्रांत माने जाते हैं। तृतीय भाग में वे रियासतें हैं, जो नये विधान के शुरू होने से ठीक पहिले भारत संघ में शामिल हो जायगी। चौथे भाग में अंडमान और निकोबार का जिक्र है।

द्वितीय सूची :— इस सूची में राष्ट्रपति, गवर्नरों, मन्त्रियों; सर्वोच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों और हाईकोर्ट के न्यायाधीशों के वेतनों व भत्तों का जिक्र है।

तृतीय सूची :— इस सूची में संघ व राज्यों के मन्त्रियों द्वारा ली जाने वाली शपथों का, तथा संघीय पार्लमेंट के सदस्यों और राज्यों की धारासभाओं के सदस्यों तथा सर्वोच्च न्यायालय व हाईकोर्ट के न्यायाधीशों द्वारा की जाने वाली घोषणाओं का प्रतिपादन है।

चतुर्थ सूची :—इस सूची में राज्य के गवर्नरों के लिए आदेश-पत्र दिये गये हैं। ये आदेश-पत्र वैसे ही हैं, जैसे कि भारत-कानून १९३५ में प्रतिपादित हैं।

५वीं व ६ठी सूची :—इन सूचियों में आसाम को छोड़कर अन्य राज्यों के परिगणित क्षेत्रों तथा परिगणित कबीले वालों के सम्बन्ध में विभिन्न नियमों का प्रतिपादन किया गया है।

७वीं सूची :— इसमें धारासभा-सम्बन्धी सूचियों का जिक्र है।

८वीं सूची :—इसमें उन रियासतों के परिगणित कबाइलियों की सूची है, जो गवर्नरों के प्रांतों से मिलते जुलते हैं।

यदि जीना चाहते हो तो
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
'जीवन संग्राम'
का
संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषी के मनन और संग्रह योग्य है। मूल्य १) डाक व्यय ।-)
विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

देहली प्रांत के सोल एजेन्ट—रमेश एण्ड को०, चांदनीचौक, देहली। अजमेर—नवज्योति जनरल स्टोर बड़े डाकखाने के सामने। मध्यभारत के सोल एजेन्ट—वृहद् औषध भण्डार, १६ जेल रोड, इन्दौर। मुजफ्फरनगर—चैतन्य औषधालय, नई मण्डी।
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार)।

अफीम की आदत छूट जायगी। काली नागन अफीम से छुटकारा पाने के लिये "काया कलप काली" सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि बूढ़ी रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स सात रुपया डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरिद्वार।

आर्य जगत्

आर्यसमाज का उत्थान मार्ग

[श्री विश्वम्भरसहाय प्रेमी]

शिवरात्रि के पर्व पर १९ वीं शताब्दी में बालक मूलशंकर को सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ, उस ज्ञान की आभा में वह स्वयं प्रकाशित होकर महर्षि पद पर पहुंच कर संसार को प्रकाशित करने में सफल हुए, उस दिव्य दयानन्द के मार्ग पर चलकर अनेकों संतप्त प्राणियों ने जीवन प्राप्त किया, हमें सोचना है कि वह कौन सा मार्ग था और इस समय दयानन्द के अनुयायी उस मार्ग पर कहां तक चल रहे हैं।

१९ वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व नास्तिकता के विचारों का अधिक जोर हो रहा था। मिथ्या और अन्ध विश्वास को दूर करना कठिन था परन्तु महर्षि ने अपने तप, त्याग और परिश्रम से उन मिथ्या विचारों को हटाने का भारी प्रयत्न किया, वेदिक धर्म के प्रचार द्वारा आस्तिकवाद को जन साधारण में फैलाया, महर्षि दयानन्द के समस्त जीवन में यह विशेषता रही कि वे वेदों के आधार पर भारतीय संस्कृति को पुनः स्थापित करते रहे। उस समय के आर्य समाज के कार्य को हम चार भागों में विभक्त करके आर्य समाज के महत्व का समझ सकते हैं।

(१) आर्य समाज द्वारा एक ईश्वर की उपासना का जन साधारण में प्रचार —

इसके द्वारा आर्य समाज ने आध्यात्मिक जगत में भारी क्रान्ति उत्पन्न कर दी, वेदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय बढ़ा और मिथ्या विचारों की ओर से जनता का ध्यान हटा, यज्ञ, उपासना की ओर रुचि बढ़ी और एक नये आध्यात्मवाद ने जो वेदानुकूल था अपना स्थान बना लिया। स्थान स्थान पर मूर्ति पूजा का विरोध किया जाने लगा। उस समय आर्य समाज ने हिन्दुओं, मुसलमानों तथा ईसाइयों से भारी मुकाबला किया और अपने वेदिक तत्वों को उनमें भी प्रतिष्ठित करने का यत्न किया।

(२) सामाजिक कुरीतियों का निवारण

महर्षि दयानन्द ने भारतवर्ष में फैली हुई कुरीतियों के निवारण में भारी शक्ति लगा दी। मत मतान्तरों का खण्डन करके जन साधारण को वेदिक धर्म की ओर अग्रसर किया।

(३) सामाजिक सेवा कार्य

आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के अनुयायियों ने जहां सामाजिक कुरीतियों का खण्डन किया और उनको जन साधारण में फैलने से रोका वहां सामाजिक सेवा के कार्य में भी महत्वपूर्ण भाग लिया। जिस जिस समय जहां भी कोई आपत्ति आई, वहां आर्यसमाज [illegible] बाजी लगा कर सेवा का कार्य किया। १९ शताब्दी के अन्तिम वर्षों का इतिहास इस बात को प्रगट करता है कि भारतवर्ष में आर्यसमाज के सिवा समाज सेवा का कार्य करने वाली कोई अन्य संस्था न थी। यद्यपि उस समय कुछ और संस्थाये विद्यमान थीं परन्तु उनकी सेवा का कार्य सीमित था। रामकृष्ण मिशन के कार्य का भारत के विभिन्न केन्द्रों में सेवा कार्य काफी प्रशंसनीय माना जाता है। परन्तु इस कार्य और आर्यसमाज द्वारा की गई समाज सेवा में भारी अन्तर था। मोपला विद्रोह के अवसर पर लाहौर से आर्य भाई दक्षिण में सेवा कार्य करने के लिये दौड़े गये। जहां जहां कोई विपत्ति आई आर्यसमाज ने पूर्ण शक्ति लगा कर जन साधारण की बिना भेद भाव सेवा की।

शिक्षा में क्रांति

(४) आर्यसमाज ने शिक्षा को परिवर्तित करने में बड़ा कार्य किया है। शिक्षा के ऊपर किसी देश का उत्थान पतन निर्भर होता है। आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व भारत भर में स्त्री शिक्षा का प्रबन्ध बहुत कम था। केवल ईसाइयों की कहीं कहीं पाठशालाएं थीं। आर्यसमाज ने स्थान स्थान पर स्त्री शिक्षा का प्रबन्ध करके लड़कियों को सद्गृहस्थी बनाने का कार्य प्रारम्भ किया। साथ ही जनता की विचार धारा को परिवर्तित करने के लिए स्वतंत्र शिक्षा का भी विचार दिया जिसके फलस्वरूप गुरुकुलों की स्थापना की गई। इसमें मुख्य बात यही थी कि गुलामी की गहरी छाप लगाने वाली शिक्षा की ओर से जनता का ध्यान दूसरी ओर हटा दिया जाय। देखा जाय तो आर्य समाज की उस समय की शिक्षा ने राजनैतिक विचारों की ओर जनता को अग्रसर कर दिया। इसका मुख्य कारण यह भी था कि ऋषि दयानन्द धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक तीनों प्रकार की क्रान्ति के कार्यक्रम को लेकर आगे बढ़े थे। उनके समय के आर्यसमाजी उग्र विचार वाले राजनैतिक पुरुष समझे जाते थे। आर्यसमाज के शिक्षणालयों पर उस समय सरकार की कुपित दृष्टि रहती थी।

इन चारों बातों की जांच हमें स्पष्ट करती है कि हम कहां तक उस मार्ग पर चल रहे हैं, उदाहरणार्थ को लीजिए, [illegible] की [illegible] मूर्ति पूजा, नास्तिकता तथा भ्रम मूलक विचारों की ओर बराबर झुकती जा रही हैं, आर्य समाज की ओर से ऐसी प्रवृत्तियों को रोकने का कोई उपाय नहीं रहा। वेदिक अमृतधारा बरसाने वाले प्रभावशाली सन्यासियों का आज अभाव सा हो गया, चरित्रवान मार्ग प्रदर्शक दिखाई नहीं देते, पारस्परिक कलह,द्वेष ने इतना स्थान कर लिया कि अध्यात्मवाद की ओर इतनी शक्ति नहीं लग पाती जितनी की आज आवश्यकता है।

गुरुकुल कांगड़ी का दीक्षान्त समारोह

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी का ४६ वां वार्षिकोत्सव २७, २८, २९, मार्च ४८ को होगा। २८ मार्च को दीक्षान्त संस्कार होगा। दीक्षान्त भाषण प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री डा० शान्ति स्वरूप भटनागर देंगे। २९ मार्च को नये बालकों का प्रवेश संस्कार होगा। रात्रि को व्याख्यान और ब्रह्मचारियों के खेल हुआ करेंगे।

केवल इस आशा पर कि हमारे धर्म ग्रन्थों में सब कुछ लिखा है, आर्य समाज जीवित नहीं रह सकता। जो कुछ लिखा है, उसे जन साधारण में प्रविष्ट कराने से ही काम चलेगा, यदि राधेश्याम राधेश्याम के उच्चारण करने वालों की संख्या बढ़ती रही तो [और राम धुन वालों की ! — स०] आर्यसमाज को भारी धक्का पहुंचेगा।

दूसरी बात सामाजिक कुरीतियों को लीजिये, आज हमारे देश में कुरीतियों की कमी नहीं, गत पचास वर्षों के इतिहास को सामने रखकर आप विचार करें तो आपको वेश्याओं की संख्या दूनी मिलेगी। शराबखाने भी शायद गत वर्षों में दूने हो गये सिगरेट व बीड़ी का प्रचार तो शायद दस गुना हो गया, बड़े बूढ़े गावों में हुक्का पीते थे परन्तु अब छोटे छोटे बच्चे सिगरट बीड़ी पीने लगे। होटलों की संख्या बढ़ गई, मांस का प्रचार बढ़ गया, क्या इन सब दोषों का निवारण करने के लिये आर्यसमाज ने महान् कार्य नहीं किया ? यदि किया था तो आज आर्यसमाज इन सब दोषों को जन समाज में से दूर करने का उद्योग क्यों नहीं करता ? आज स्वतन्त्र भारत में तो आर्यसमाज की ओर भी अधिक आवश्यकता है।

तीसरी बात सामाजिक सेवा की है, आज देश में कितना विनाश हुआ है। कितनी भयंकर उथल पुथल मची है, क्या आर्यसमाज की संस्थाएं सम्मिलित रूप में सामाजिक सेवा का कार्य कर रही हैं ? व्यक्तिगत या किसी किसी संस्था द्वारा सहायता कर देने की बात तो अलग है। परन्तु सामूहिक रूप से सामाजिक सेवा का कार्य इस समय रुका पड़ा है, कम से कम इतना तो कहा ही जाता है कि जन साधारण में यह भावना नहीं रही कि देश की आपत्ति में आर्यसमाज अग्रसर है। इस खोये हुए सम्मान को हमें फिर से वैसा ही स्थिर रखना है जैसा स्व० श्रद्धानन्द जी महाराज, स्व० लाजपतराय के समय में आर्यसमाज को प्राप्त था। कुछ महानुभाव, सम्भव है, यह कहें कि अब अनेकों संस्थाएं सामाजिक सेवा कार्य में लग चुकी हैं तो आर्यसमाज को अपना क्षेत्र सीमित करना पड़ा। हम इस विचार से सहमत नहीं, हमारा तो कहना है कि अन्य कार्य करने वाले व्यक्ति आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के संरक्षण में सामाजिक सेवा कार्य करते दिखाई देने चाहियें।

चौथी बात शिक्षा में क्रान्ति करने की है। इस समय आर्यसमाज इस दिशा में काफी शान्त है। आर्यसमाज द्वारा कुछ गुरुकुल, कुछ कन्या विद्यालय भले ही चलाये जा रहे हैं। परन्तु मुख्य बात यह देखनी है कि सार्वजनिक रूप में जो शिक्षा आर्यसमाज के तत्वाधान से दी जा रही है उसमें हम अन्य शिक्षा संस्थाओं की अपेक्षा किस बात की विशेषता रखते हैं। आर्यसमाज की ओर से जितनी भी कन्या पाठशालाएं चलाई जा रही हैं उनमें वही शिक्षा का कोर्स है जो सरकार द्वारा निश्चित किया हुआ है। प्रारम्भ में तो आर्यसमाज ने अपनी पाठशालाओं में स्वतन्त्र कोर्स चालू किया परन्तु सरकारी सहायता प्राप्त होने पर वह सब बन्द करके सरकारी कोर्स ही चालू कर दिया। गुरुकुल भले अपने स्थान पर वृद्धि करते रहें, परन्तु जन साधारण के बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा में सुधार कराने का महत्वपूर्ण कार्य अपनी अलग विशेषता रखता है। अपने देश के स्वतन्त्र होने पर तो शिक्षा को विस्तार देने, उसकी प्रणाली में संशोधन करने, नया कोर्स तैयार करने आदि कार्यों में आर्य समाज के विद्वान भारी सहायता पहुंचा सकते हैं।

अन्त में हम अपने समस्त आर्य बन्धुओं से प्रार्थना करेंगे कि वे आत्म निरीक्षण करने के उपरान्त आर्य समाज की वर्तमान स्थिति को सम्भालने की चेष्टा करें, आर्य समाज के पुराने गौरव को फिर से प्राप्त करें। अपने राष्ट्र का निर्माण कार्य करने में अग्रगामी बनकर जनता का हित करने में समर्थ हों, तभी हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रदर्शित किये मार्ग पर चलने वाले कहे जा सकते हैं।

हर्ष या विषाद

(पृष्ठ ८ का शेष)

'शरणार्थी-सहायता-कैम्प' बने। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सब ने मानवीय कर्त्तव्य को पूरा करने की पूरी कोशिश की हमीद भी आगे था—वह दिन रात काम में लगा रहता। वह कैम्पों में जा जाकर लोगों से उनके हाल चाल पूछता किन्तु शरणार्थियों में कुछ ऐसे भी थे जिन्हें उसकी सेवायें फूटी आंखों न सुहाती थीं।

उस रोज संध्या को घर लौटने पर बापने बेटे से पूछा — कैसा चल रहा है तुम्हारा काम?

हमीद ने प्रत्युत्तर में कहा — सब कुछ ठीक है दादा। खुदा ने चाहा तो सब ठीक होगा।

रहमान ने कहा — खुदा बड़ा नेक है बेटा। वह नेक कामों में हमेशा कामयाबी देता है।

हमीद ने कहा — न जाने क्यूं, दादा वे लोग फिर भी मुझ से नफरत करते हैं — कभी कभी तो उनकी तीखी नजर से मेरा कलेजा भी कांप उठता है।

'कुछ नहीं बेटा! मुसीबत में पड़े इन्सान अपना चैन खो देते हैं। मुसलमानों ने इन्हें सताया है और इसीलिये हरएक मुसलमान इनके लिये क्रूर और कठोर है। हमारे सहधर्मियों के किये गये बुरे कर्मों और पापों का प्रायश्चित करने के लिये हमें हर तरह तैयार रहना चाहिये।' रहमान ने हमीद के कन्धे पर हाथ रखते हुवे कहा। उत्साहित स्वर में हमीद ने कहा — अब्बा! तुम कितने अच्छे हो। तुम सच्चे मुसलमान हो। तुम्हारे दिल में खुदा का वास है अब्बा! मैं हमेशा तुम्हारा कहा करूंगा अब्बा! तुम्हारे उसूलों पर मैं अपनी जान तक निसार करने में न हिचकिचाऊंगा।

रहमान ने गद्गद् हो हमीद को अपनी भुजाओं में बांध लिया —

एक दिन सब मुसलमानों ने मस्जिद में इकट्ठे होकर निश्चय किया — हम उन्हें मार भगावेंगे, हम कम हैं क्या? ताकत और हिम्मत में उनसे कम नहीं—भाला छुरी, बर्छा, बंदूक, लाठी जो मिली लेकर उनका दल 'अल्ला हो अकबर' के नारों से आकाश को गुंजाता चला। जाते हुए लोगों ने देखा रहमान अपने दरवाजे पर, सर पर हाथ दिये बैठा था, मानो उसका सब कुछ लुट गया हो।

उधर हिन्दुओं का दल भी सुसज्जित हो आगे बढ़ा। रणधीर बढ़ती हुई भीड़ के सामने आकर लेट गया — भीड़ के नेता ने आगे बढ़कर कहा — क्या चाहते हो तुम? क्यों राह रोक रहे हो? तुम हिन्दू होकर मुसलमानों को मार भगाने से हमें रोक रहे हो। हम उन्हें जरूर मारेंगे। हम पाकिस्तान का बदला लेंगे। भीड़ ने चिल्ला कर उसका अनुमोदन किया। रणधीर उठा, अपने मस्तक को ऊंचा कर — सीना तान उसने कहा — भाइयो! अपने हाथों अपनी हरी भरी बगिया न उजाड़ो। हम पीढ़ियों से साथ रह रहे हैं, हम सारे देश को मुसलमानों से खाली नहीं कर सकते। संस्कृति और सभ्यता के महान् देश भारतवर्ष को संसार की दृष्टि में न गिराओ। भीड़ में से आवाज आई — 'अगर हम लौट गये तो वो हमें कायर कहेंगे, वो लड़ने को तैयार हैं।'

रणधीर ने कहा —'आप इसकी चिंता न करें। वे कुछ नहीं करेंगे। मैं उन्हें समझा दूंगा — उनके पाव पड़ूंगा और उन्हें लौट जाने को मना लूंगा। आप यहीं ठहरें — मैं अभी लौटता हूं।

वह तेजी से मुसलमानों के दल की ओर बढ़ा — हमीद उसके साथ था। उसने रणधीर को रोकते हुये कहा — भइया! तुम न जाओ। मैं जाकर उन्हें समझा दूंगा — तुम लौट जावो।' किन्तु रणधीर न माना — दोनों भीड़ के पास पहुंच गये थे। लोगों ने जब रणधीर को आते देखा तो क्रोध से चिल्लाये, 'काफिरको मारो मारो, कहीं भाग न जाय।' भीड़ में से कुछ लोग उस पर झपटे — रणधीर दोनों हाथ उठाये उन्हें शान्त रहने को कह रहा था किन्तु कोलाहल में उसकी कौन सुनता था। एक व्यक्ति ने रणधीर की ओर निशाना बांध छुरा फेंका — सम्भव था कि वह रणधीर की छाती में घुस जाता किंतु इसी बीच हमीद झपट कर रणधीर के आगे आगया। रणधीर को लक्ष बना कर फेंका गया छुरा उसकी छाती में घुस गया — एक हृदय विदारक चीत्कार के साथ हमीद लड़खड़ा कर भूमि पर गिर पड़ा। भीड़ में सनसनी फैल गई। कौन? अरे हमीद! हमीद के लग गया छुरा। भीड़ हमीद और रणधीर के चारों ओर इकट्ठी हो गई। हमीद के कंठ से निकली अस्फुट ध्वनि 'हिंदु मुसलिम एक हो' केवल सुनाई दी उसके प्राण पखेरू अनंत में लीन हो गये। रणधीर पागलों की तरह हमीद की लाश से चिपट गया, भीड़ स्तब्ध खड़ी थी।

कुछ समय बाद रणधीर उठा, उसने हमीद की लाश अपने हाथों पर उठा ली — फिर चीख उठा — भाइयो! हमीद शहीद हो गया। उसकी कुर्बानी से सबक लो अविरल बहते अश्रुओं और हिचकियों से वह आगे न बोल सका। भीड़ निश्चल खड़ी थी।

यकायक भीड़ को चीरता रहमान सामने आ खड़ा हुआ — उसकी आंखों में आंसू न थे, थी, केवल एक आग जो बरस कर उस साम्प्रदायिकता के पागलपन को जला देना चाहती थी — उसने चिल्ला कर कहा — 'हथियार डाल दो।' एक एक कर भीड़ के सब लोगों ने हथियार जमीन पर डाल दिये। इसी समय हिन्दुओं का दल आ पहुंचा — वे स्तब्ध रह गये। देखा रणधीर हमीद की लाश उठाये खड़ा आंसू बहा रहा है और पास ही हथियारों का ढेर पड़ा है। रणधीर ने कहा — 'क्या देख रहे हैं आप — हथियार डाल दीजियेगा — ये हथियार देश के शत्रुओं से लड़ने में काम आवेंगे — इनसे शांति और सुरक्षा का काम लिया जावेगा।' एक बार फिर हथियार एक एक कर गिरने लगे।

उसी रोज सन्ध्या को जनाजा निकला, फूलों से लदा, पग पग पर पुष्प वृष्टि हो रही थी, अपार जनसमूह साथ था। आगे आगे गर्व से सीना ताने रहमान चल रहा था, मानों हमीद की बारात ले शादी कराने जा रहा हो। उसकी आंखें मुसकरा रही थीं। मजमे में किसी ने धीरे से रणधीर से कहा — "रहमान चचा कहीं पागल तो नहीं हो गये हैं।" और सचमुच रणधीर ने देखा रहमान चचा की आंखों में आंसू न थे वे आंखें किसी महान् कार्य की सफलता पर मुस्करा रही थीं।

लाश दफना दी गई, सब लोग लौट आये—

उसी रात जब रणधीर चक्कर काटता कब्रिस्तान की ओर से गुजरा तो देखा-रहमान घुटनों के बल कब्र के पास बैठा है। कब्र पर फूल बिखरे हुवे हैं। टिमटिमाती मोमबत्ती के प्रकाश में उसने देखा, रहमान की आंखों के अश्रु बिन्दु बूंद बूंद कर कब्र पर गिर रहे थे किन्तु वह न जान सका कि वे आंसू हर्ष के थे या विषाद के?

एन० के० शर्मा एण्ड कं० मेरठ।

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (६२) पो० बेगूसराय (मुंगेर)

धनाढ्य बनें

आप थोड़े समय में बिना रुपया लगाये अमीर बनने के सरल उपायों के लिये "व्यवसाय" मासिक पढ़ें वार्षिक मूल्य १) नमूना।-)

मिलने का पता—
व्यवसाय पन्नागार, अलीगढ़।

सूचित करें

मुंगफली तेल, व मुंगफली के लिये नव भारत ट्रेडर्स करनूल (मद्रास प्रेसिडेन्सी) को लिखें। हर प्रकार का आढ़त का काम सन्तोषजनक रूप से किया जाता है।

तार का पता-MAHANSARKA

फिल्म-स्टार बनने की इच्छा वाले शीघ्र पत्र लिखें। थोड़ा पढ़ा लिखा होना आवश्यक है रंजीत फिल्म-आर्ट कालेज बिरला रोड (V D) हरिद्वार यू० पी०।

(१५०) नकद इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का १३) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम गारंटी पत्रसाथ भेजा जाता है पता:— आजाद एन्ड कं० रजिस्टर्ड, (अलीगढ़)

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक आविष्कार

स्लीपो (SLEEPO) किसी सोते या जागते हुए को सुंघा दीजिए वह एक घन्टे के लिए गहरी नींद में सो जायगा और हिलाने से भी न जागेगा। मूल्य केवल ३) रु० डाकखर्च ॥)।

यदि आप एक घन्टे से पूर्व जगाना चाहते हैं तो एवेको (AWAKO) सुंघाएं। मूल्य केवल ३) रु० कम किफायत या नमूना मुफ्त नहीं मिल सकता। गारंटी की जाती है कि स्लीपो या एवेको दिल को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाती। आज ही आर्डर दें और अपना पता पूरा और साफ लिखें।

पता—इम्पीरीयल चेम्बर आफ [illegible] (A.W.D) [illegible]

वन्देमातरम् के गायन के साथ रायल इन्फैन्ट्री की महिला बटालियन हिन्द से कूच कर गई।

— एक समाचार

वन्देमातरम् को चादर से निकलने वाले ब्रिटिश नेताओं के मुख से यह वन्देमातरम् बनाम ब्रिटिश साम्राज्य का 'राम-नाम सत्त' सुनकर चर्चिल के दिल पर क्या बीतेगी, यह राम जाने।

× × ×

बैंकोक जाते हुए एक जहाज का कराची में ८० हजार का सोना गायब हो गया।

पाकिस्तान वालों की रोटियां किस रोजगार से चलती हैं — पता चला या नहीं?

× × ×

ऊधा को एक अंग्रेज ने शस्त्र दिये थे। — एक समाचार

ऊधा के भाई गोडसे की तो किसी चाचा के भतीजे से दोस्ती नहीं है।

× × ×

हैदराबाद की रक्षा की लड़ाई में अगर तुम न लड़े तो मैं तुम्हारी उन औरतों को लड़ाऊंगा जिन्हें पर्दे में ट्रेनिंग दी जा रही है और तुम डूब मरना। — कासिम रिजवी

बड़े मियां बेफिक्र रहो, इस मोर्चे की मार के आगे तो बड़े बड़े बिन पानी ही तड़प गये। अगर कहीं पर्देदारों की ट्रेनिंग कुछ कच्ची हो तो कुछ निशानेबाज पर्दे वालों कुछ दिन के लिए पाकिस्तान से बुला लेना। रही डूबने की बात सो तुम्हारे मुंह में मिश्री।

× × ×

मजलिस राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नहीं जिसे किसी में तोड़ने की हिम्मत हो। — वही

जो मर्जी आये करे जाओ,
धन्धे को अपने चालू रख,
और मौज तू उड़ाये जा।
उल्लू सुनेंगे बहुत-से,
तू ढोलको बजाये जा॥

× × ×

रजाकारों ने ५० गांव और फूंक दिये। — एक शीर्षक

लाहौर की लूट के सरदार के वे शब्द, जिनसे वह लूटने के लिए अपने साथियों को उभारता था, सुनलो —
इन हाथों से होता है, कब खून खन्जर,
ये बाजू मेरे आजमाये हुए हैं!

× × ×

उद्योगों का राष्ट्रीयकरण धीरे धीरे होगा। —नेहरू जी

ताकि गरीब कारखानेदार कारखानों में लगे अपने चार पैसों को ४×४तो कर लें।

× × ×

पाकिस्तान सरकार ने रूई के निर्यात-कर को और बढ़ा दिया।

दिल्ली के सिनेमा घरों में ६ आने का टिकट १८ आने में बेचने वाले सारे के सारे बिजनिसमैन शायद पाकिस्तान के अर्थ विभाग में ही लगा दिये गये हैं।

× × ×

अमेरिकन-भारत बमवर्षक सौदा टूट गया। — एक समाचार

टूटा-टाटा क्या, शायद उसमें ८१ हजार टन कोयला जो पाकिस्तान को दिया गया है, भर भर कर भेज दिया होगा।

× × ×

ब्रिटेन अपने किसी भी उपनिवेश से हटने या निकलने को तैयार नहीं। — एटली

अलबत्ता किस्मत की मार के आगे मनुष्य लाचार हो जाता है।

(पृष्ठ ७ का शेष)

कोयला, तेल व लोहे के साधनों का अभी विकास नहीं हुआ है और इसीलिए उसमें बड़े उद्योगों का भी अभाव है।

उत्पादन प्रधान राष्ट्र के रूप में पाकिस्तान को शीघ्र ही आत्मभरित बनने के लिए अपने यहां औद्योगीकरण करना चाहिए या उसे किसी दूसरे उद्योग प्रधान राष्ट्र के प्रति परस्पर निर्भरता का सम्बन्ध कायम करना चाहिए। अभी पाकिस्तान में लगभग २६,००० मजदूर उद्योगों में लगे हैं। वहां रेलों की मरम्मत के १४-वर्कशाप हैं। पाकिस्तान में दियासलाई, जूट या कागज के कारखानों का अभाव है। उसमें सूती कपड़े की १६ मिलें हैं, जबकि भारत में ८५७ मिलें हैं। पाकिस्तान के पास न तो पूंजी है और न औद्योगीकरण की योग्यता ही है। इसलिये यदि पाकिस्तान हिंदू भारत से व्यापारिक समझौता कर ले तो वह अपनी जनता के लिए पर्याप्त कपड़ा उपस्थित कर सकता है।

पाकिस्तान की ३,७०,००० वर्ग मील भूमि में केवल ७२६० मील रेलें और सिर्फ ६,५७२ मील पक्की सड़कें हैं। उसमें ५३,००० मील कच्ची सड़कें भी हैं। विभाजन के समय दंगों के कारण कपास या खाद्य के यातायात का अभाव हो चला है। रेलों को चलती हुई रखने के लिये पाकिस्तान को पर्याप्त कोयला नहीं मिलता और जितना मिलता है उसका उसे तिगुना मूल्य चुकाना पड़ता है। अकेले सितम्बर के मास में ही की रेलों को १ करोड़ डालर का हुआ था। दंगों के कारण व्यापार कमी हुई है और शरणार्थियों के यातायात के लिये रेलों का उपयोग किया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप आय में भारी कमी होगी।

पाकिस्तान की आर्थिक कठिनाइयां उसकी राजनीतिक, व्यापारिक व औद्योगिक असफलताओं का परिणाम हैं। विभाजन के समय हिंदू व्यापारी अपने साथ सोना, गहने व अन्य चल सम्पत्ति लेकर भारत चले आये। अब साधारण व्यापार घट जाने के कारण पाकिस्तान की आय में और भी कमी होगी। पाकिस्तान के अधिकारी अपने यहां विदेशी पूंजी लगाये जाने या ऋण प्राप्त करने की बात करते हैं। किन्तु पाकिस्तान की वर्तमान परिस्थिति में इसके लिये खतरे बहुत अधिक हैं।

तिल्ली और पीलिया के लिए मुफ्त बूटी
गरीब लोग ।।।) डाकखर्च भेज कर मुफ्त मंगावें और अमीर अच्छा होने पर श्रद्धानुसार भेंट दे दें।
पता—महात्मा हरीदास, प्रेमाश्रम
लोहवन आफिट साइड, मथुरा।

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकेमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त।
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

यदि आपको कायमी बदहजमी और अरुचि जैसी उष्णता की शिकायतें हों, रातको बारम्बार सख्त प्यास आपको लगती रहती हो, खाना खानेके बाद जलन होती हो और खट्टी डकारें आती हों, पिचाशय में कायमी मन्द कब्ज रहती हो, सारे शरीरके ऊपर और अन्दर जलन रहती हो, आंखें जलती हों, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन होती हो, मूत्र-मार्ग में जलन होती हो, वजन कम हो गया हो, पंडुरोग हो, सामान्य कमजोरी महसूस होती हो तो आजाही एक बोतल का सेवन शुरू कीजिये, २५ से भी ज्यादा सालों से पर्लकाढ़ा ने इस दवाई को सेवन करनेवाले हजारों लोगों को अच्छा कर दिया है।

पर्लकाढ़ा जवान और बुढ़े स्त्री, पुरुष और बच्चे – सभीको समान रूपसे फायदा करता है। प्रसूता स्त्रियों को भी फायदा करता है।

शारीरिक उष्णता के लिये मशहूर अनुभूत इलाज!

शीतल शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल कंपनी आयुर्वेदी कारखाना

संतान प्यारा पुत्र चाहिये

यदि आप सन्तान से वंचित हैं तो मुझे मिलें आपके घर का दीपक शीघ्र रोशन हो उठेगा, यदि आ न सकें तो हमारी औषध अकसीर औलाद मंगवा लें, जिससे सैकड़ों बेऔलाद बहनों की गोदी हरी भरी हुई है। मूल्य २२) और दवाई औलाद नरीना जिसके सेवन से पुत्र ही पैदा होगा चाहे पहले लड़कियां ही लड़कियां क्यों न पैदा होती रही हों मूल्य १२)।

संतान और नहीं चाहिये

दो साल के लिये सन्तान उत्पत्ति बन्द करने वाली दवाई की कीमत १२) ५ वर्ष के लिये २०) और सदा के लिये २२)—इन दवाइयों से माहवारी हर महीने ठीक आती रहती है। मासिक धर्म जारी करने वाली दवाई मैन्सोज स्पेशल का मूल्य १२) और इससे तेज दवाई मैन्सोज स्ट्रांग जो अन्दर अच्छी प्रकार साफ कर देती है मूल्य २२)।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती (बाद डाकौर)
चान्दनी चौक देहली [इलाहाबाद और इम्पीरियल बैंक के दरम्यान]
कोठी ६७ कनाट प्लेस न्यू देहली (निकट बंगाली मार्केट)

...नी सं० ३३ की संकेतमाला

दायें से बायें

९. विष्णु।
३. हनुमान।
७. झरोखा।
८. दूसरों को बीतना—के लिए सरल है।
१०. बजमाव।
११. एक अनुपम गुण।
१२. जय हो।
१४. अपने लाभ के लिये कुछ न कुछ—उचित है।
१५. पारस्परिक सम्बन्धों पर —— का बड़ा प्रभाव पड़ता है।
१७. सुख और शान्ति देता है।
१८. जब तक मनुष्य—में है, शान्ति नहीं।
२०. दिया।
२२. सुन्दर हो तो और अधिक अच्छी लगती है।
२३ कमल से नयनों वाला।
२५. जिसकी आशा हो।
२७. जिसे — मिल जाय, तर जाता है।
३१. —की प्रवृत्ति नीचे की ओर होती है।
३२. स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।
३३. स्त्री का — गौरव भी समझा जाता था।

ऊपर से नीचे

१. सापों का स्वामी।
२. कुबेर।
३. — सीताराम।
४. अति विशालता इसका गुण है।
५. गंगा।
६. क्रोध से लाल हो जाना।
८. जो समय पर — जानता है वही सफल होता है।
१३. कीर्ति।
१७. वृक्ष विशेष का बगल।
२१ इसके आगे बड़े बड़े असफल रह जाते हैं।
२३. इसका आकर्षण किसे अज्ञात है।
२४. बाटना।
२५. एक — अभी देश से उठ गया है।
२६. — में मग्न व्यक्ति सफल कम होता है।
२८. एक पक्षी।
२९. — के आश्रय में सुख मालूम होता है।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३३

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तुहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता उनको लम्बे, घूंघर वाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥) रु० इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फन्सी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्डन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है। तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ म्यूट घड़िया व ४ अंगूठियां (लन्डन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं।

बाल उमर भर नहीं उगते!

हमारी प्रसिद्ध दवाई 'बोहरे हुसन रजिस्टर्ड' के इस्तेमाल से हर जगह के बाल बगैर किसी तकलीफ के हमेशा के लिये दूर हो जाते हैं और फिर जीवन भर दोबारा उस जगह बाल कभी पैदा नहीं होते जगह रेशम की तरह मुलायम नरम और खूबसूरत हो जाती है। कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स ६॥) रु० इस दवाई को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्डन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है। तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ घड़िया व ४ अंगूठिया बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं।

नोट— माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है। शीघ्र मंगा लें क्योंकि ऐसा समय बार बार हाथ नहीं आयेगा।

लन्डन कमरशियल कम्पनी (AWD) बागरामानन्द, अमृतसर।
London Commercial Co. (AWD) Bagh Ramanand, Amritsar

२०००) रुपये इनाम

मासिक धर्म एक दिन में जारी

मेन्सोली पिल्ज—एक दिन के अन्दर ही कितने समय के रुके हुए मासिक धर्म को जारी कर देती है कीमत ५) रु०।

मैन्सोली स्पेशल पिल्ज—जो कि फौरन जारी करके मासिक धर्म को बिलकुल आसानी से साफ कर देती है। कीमत ११॥) रु०। याद रखो गर्भवती इसे सेवन न करें क्योंकि यह बच्चेदानी को बिलकुल साफ कर देती है। २०००) रु० इनाम जो मेन्सोली पिल्ज को नामुफीद साबित करे। पत्र व्यवहार गुप्त रखा जाता है।

लेडी डाक्टर असली दवाखाना (AWD) हलका नं० २१ जालन्धर।

पॉयोरिया दन्त मंजन

दांतों को मोती सा चमकदार, मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। शीशी ॥)

एन्ग्लो ट्रेडिंग कं०

एजेन्टों की जरूरत है—.
जमनादास एण्ड कं०, के० डी० जगदीश एण्ड क० चांदनी चौक, दिल्ली।

फैंसी सिल्क साड़ी

आकर्षक डिजाइन
कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९
१८) २१) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता
कमको इन्डस्ट्रीज
कुली नं० २१ कानपुर।

५००) नकद इनाम

जवांमर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३॥।) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम।
श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

स्टील केस ठीक समय देने वाली ३ वर्ष की गारंटी मोल का स्क्वायर शेप १६॥) सुपीरियर-२०॥) स्क्वायर शेप क्रोमियम केस २२) स्क्वायर केस रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारंटी २२), स्क्वायर केस १५ ज्वेल क्रोम केस-१८), स्क्वायर केस १५ज्वेल रोल्ड गोल्ड-४२)

रेक्टेंगुलर फर्म या टोनो शेप

क्रोमियम केस-१२), सुपीरियर-१५), रोल्ड गोल्ड १०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल दुगुना १०) स्वीस सुन्दर [illegible] १८)२२) [illegible] १२) [illegible] कोई दो घड़ी लेने से डाक खर्च माफ।

[V. A.]
पो० बाक्स नं० ११२२२ कलकत्ता।

५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३३] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)

——इस लाइन पर काटिये——

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम………………………

पता………………………

ठिकाना……………… उत्तर नं०……

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम………………………

पता………………………

ठिकाना……………… उत्तर नं०……

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम………………………

पता………………………

ठिकाना……………… उत्तर नं०……

इन तीनों वर्गों को पृथक न करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो शेष दो पर आड़ी लकीर खींच दें।

——इस लाइन पर काटिये——

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि १७ अप्रैल १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा संदिग्ध रूप में लिखे हुए [illegible] और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले या संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहा मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहा वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बाट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर २६ अप्रैल के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल २३ अप्रैल १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३३, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलिया आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धिया होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १।।) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना, आज़ाद हिन्द फौज का सञ्चालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आज़ाद

[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर सङ्कलन। मूल्य ।।=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य २।) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १।।) डाक व्यय ।=)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्बोधन का मार्ग है।

इस लिये

हिन्दू—संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं

[सम्पादक—श्री जयन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

नया आलोक : नई छाया

[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १।।), डाक व्यय ।=।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

जीवन संग्राम

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और [illegible] के योग्य है।

[illegible] डाक व्यय ।-)

विविध

वृहत्तर भारत

[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालङ्कार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ।।।=)

बहन के पत्र

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार]

[illegible]-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व लड़कियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य १)

प्रेमदूती

श्री विराज जी रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ।।।)

वैदिक वीर गर्जना

[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ।।।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी

[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर सङ्कलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य [illegible]

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़िए मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तैल विज्ञान

[illegible] से लेकर तैल के प्रकार बने [illegible] की विवेचना [illegible] दी गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तुलसी

तुलसीदल के [illegible] का [illegible] विवेचन और उनसे लाभ उठाने के ढंग बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर

अंजीर के फल और दूध से [illegible] रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य [illegible] डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में [illegible] इलाज घर बाज़ार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १।।) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति जी की

जीवन की झांकियां

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ।।)

द्वितीय खण्ड—मैं [illegible] के [illegible] से कैसे निकला? मूल्य ।।)

[illegible]

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाज़ार, दिल्ली

श्री पं० [illegible] शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द [illegible] के लिये [illegible] [illegible]

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

दिल्ली, सोमवार ३ चैत्र
सम्वत् २००४

[DE]LHI-15th MARCH. 1948.

सम्पादक—
[श्री] रामगोपाल विद्यालंकार
[श्री] कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

वर्ष १४
संख्या ५०

दिल्ली विश्वविद्यालय के उपाधि वितरण के दो दृश्य

गत रविवार (७ मार्च) को दिल्ली विश्वविद्यालय के दीक्षान्त के अवसर पर पं० नेहरू, मौ० आजाद और राजकुमारी अमृतकौर को डाक्टरेट (आनरेरी) की डिग्री सादर भेंट की गई।

दिल्ली विश्वविद्यालय के चांसलर लार्ड माउण्टबेटन अन्य सम्माननीय व्यक्तियों के साथ।

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन　　　　* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
मनोरञ्जन मासिक　　　　* विजय पुस्तक भण्डार

❀ अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,०००　　　　**प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० "
सन् १९४६	१५ "

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

- इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
- 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
- अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

- इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
- राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
- अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
- आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

सूचना

[अनिवार्य परिस्थितियों के कारण २२ मार्च का अंक प्रकाशित नहीं हो सकेगा। १५ मार्च का अंक भी विलम्ब से प्रकाशित हो रहा है — कृपालु पाठक क्षमा करेंगे।] — मैनेजर

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ३ चैत्र सम्वत् २००४

मुस्लिम लीग और भारतीय मुसलमान

भारत का विभाजन होकर पाकिस्तान की स्थापना हुए छे मास से अधिक का समय बीत गया। इसलिये अब हम पीछे की ओर दृष्टिपात करके यह विचार कर सकते हैं कि जिन शक्तियों ने मिलकर पाकिस्तान की स्थापना करवाई थी, उन की आज भारत में क्या स्थिति है।

गत ६ मास असाधारण घटनापूर्ण थे। उनमें जो घटनाएं घटित हुई उनका प्रधान प्रेरक कारण साम्प्रदायिकता और धर्मान्धता थी। यद्यपि इन अनिष्ट घटनाओं को रोकने के लिये इनके प्रेरक कारण साम्प्रदायिकता का विनाश आवश्यक मानकर भारत के अधिकतर नेताओं ने और पीछे उनकी देखा देखी पाकिस्तान के नेताओं ने भी हिन्दू मुस्लिम और सिख — तीनों साम्प्रदायिकताओं की भरपूर निन्दा की। तथापि गत तीन चार वर्षों के घटनाक्रम का निष्पक्ष ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो हम इस परिणाम पर पहुंचे बिना नहीं रह सकते कि गत ६ महीनों की हिन्दू और सिख साम्प्रदायिकता प्रधानतः मुस्लिम साम्प्रदायिकता की प्रतिक्रिया-मात्र थी। इसलिये गत ६ मास की घटनाओं का पर्यालोचन करना हो तो उसकी प्रधान कसौटी यह होनी चाहिए कि मुस्लिम साम्प्रदायिकता इस काल में कितनी बढ़ी या घटी और आज उसकी स्थिति क्या है।

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के पृथक् देश हो जाने के कारण स्वभावतः हमें पाकिस्तान की आन्तरिक स्थिति का विशद और प्रामाणिक ज्ञान नहीं। वहां के विषय में जो थोड़ा बहुत हाल समाचार-पत्रों से ज्ञात होता है उससे इतना परिणाम अवश्य निकलता है कि वहां भी शासकवर्ग साम्प्रदायिकता की भावना को जनता में कम करने का यत्न कर रहा है। वहां के मन्त्री जो सार्वजनिक भाषण करते हैं उनमें बहुधा लोगों को यही समझाते हैं कि हमारा देश असाम्प्रदायिक है और इस्लाम की पहली सीख यह है कि वे अपने पड़ोसी गैरमुस्लिमों की आदमी की समान रक्षा करो। इस प्रकार उनके भाषणों का लक्ष्य तो लोगों की उग्र साम्प्रदायिक भावना को नष्ट करना रहता है, परन्तु उन्हें आश्रय लेना पड़ता है इस्लाम की सीख का और शासकों के अतिरिक्त पाकिस्तान के अन्य जन नेता तो आज भी बात बात में इस्लाम और शरियत की लाठी पकड़ कर ही चलना चाहते हैं। वे खाना और छींकना भी इस्लाम और शरियत के अनुसार ही चाहते हैं।

पाकिस्तान के विपरीत हिन्दुस्तान में, मुसलमानों को इस्लाम और शरियत का मार्ग दिखाने वालों की संख्या यद्यपि बहुत नहीं रही है तो भी वहां मार्ग मुसलमानों को इस्लाम की ही लालटेन से दिखलाया जा रहा है। हां उस मार्ग की दिशा में अवश्य बड़ा भेद है। यह एक बड़ी विचित्र और मनोरञ्जक बात है कि पाकिस्तान की स्थापना से पूर्व तक हिन्दुस्तान के जिन प्रान्तों के मुसलमानों में पाकिस्तान की स्थापना और मुसलमानों के विशेष अधिकारों के लिए जितना ही अधिक उत्साह था, उन प्रांतों में अब इन बातों के लिये मुसलमानों का उत्साह उतना ही मन्द हो गया है। इसके विपरीत भारत के जिन प्रांतों में पाकिस्तान की स्थापना के पूर्व उक्त उत्साह मन्द था उनमें अब यह कुछ तीव्र दृष्टिगोचर होने लगा है।

संयुक्तप्रान्त, बिहार, और पश्चिमी बंगाल पाकिस्तान की स्थापना से पूर्व तक अविभक्त हिन्दुस्तान में पाकिस्तानी प्रवृत्तियों के प्रधान केन्द्र थे। इन प्रान्तों के मुसलमानों का पाकिस्तानी उत्साह पाकिस्तान के मुसलमानों से भी कुछ अधिक ही उग्रता से नजर आता था, परन्तु अब इन प्रान्तों के मुसलमानों की वृत्ति उधर से इतनी पराङ्मुख हुई है कि ये मुस्लिम नाम पर एक भी काम नहीं करना चाहते। संयुक्तप्रांतीय लेजिस्लेटिव असेम्बली के मुस्लिमलीगी सदस्यों ने अपनी पार्टी का संगठन तो समाप्त कर ही दिया है। अपना पुनः संगठन भी 'जनता पार्टी' के नाम से किया है और उसके द्वार मुस्लिमेतरों के लिए मुक्त रखे हैं। इतना ही नहीं, कल तक इस पार्टी के जो सदस्य प्रत्येक बात को निरे मुस्लिम स्वार्थ की कसौटी से परखते थे और पग पग पर मुस्लिम हितों और विशिष्ट मुस्लिम अधिकारों की लड़ाई लड़ा करते थे, वे ही आज स्वयं इस आशय के प्रस्ताव पेश करने में दूसरों के साथ होड़ बद रहे हैं कि पृथक् निर्वाचन प्रणाली में भी आज मुसलमान अन्य वर्गों के लिए कोई स्थान सुरक्षित न रखे जायें। ये अपने प्रांत में ही नहीं भारत में अन्यत्र भी मुसलमानों का कोई किसी प्रकार का पृथक् संगठन फूटी आंखों भी देखना नहीं चाहते। संयुक्त प्रान्तीय मुसलमानों की नेता बेगम एजाज रसूल और मुहम्मद इस्माइल आदि ने अन्य प्रान्तों के मुस्लिम प्रतिनिधियों की इच्छा और प्रयत्नों के बावजूद भारतीय पार्लियामेंट की मुस्लिम लीग पार्टी को भंग कर दिया और मद्रास के मौलवी मुहम्मद इस्माइल ने मि० जिन्ना आदि पाकिस्तानी मुस्लिम लीगियों के आदेश से मुस्लिम लीग कौंसिल के भारत में बचे खुचे सदस्यों की जो बैठक बुलाई उसको इन संयुक्त प्रान्तीय मुस्लिम नेताओं ने अवैधानिक और उनकी अनधिकार चेष्टा बतलाई।

भारतीय पार्लियामेंट की मुस्लिम लीग पार्टी की जिस बैठक में पार्टी का संगठन भंग कर देने का निश्चय हुआ उसमें सत्ताईस में से केवल १२ सदस्य उपस्थित थे और इनमें अधिकतर संयुक्त प्रान्त के थे। अन्य प्रान्तों के सदस्य उस दिन देहली में रहते हुए भी उस बैठक में प्रायः कोई नहीं आये और उन बारह सदस्यों ने भी यह निर्णय कर डाला कि पार्टी का संगठन भंग कर दिया जाय।

मद्रास के मौलवी मुहम्मद इस्माइल ने संयोजक की हैसियत से अखिल भारतीय मुस्लिम लीग कौंसिल की जो बैठक बुलाई उसमें १४० सदस्यों में से केवल ३० वहां पहुंचे और इन ३० में अधिकतर दक्षिण भारत के ही थे। संयुक्तप्रान्त, बिहार आदि जिन प्रान्तों के मुसलमानों को पाकिस्तान की स्थापना के परिणामों का गत महीनों में प्रत्यक्ष अनुभव हो चुका था उनके प्रतिनिधित्व के नाम पर दो एक सदस्य मद्रास पहुंचे थे। यद्यपि स्थिति यह है कि विभक्त भारत में भी मुसलमानों की पन्द्रह आना आबादी दक्षिण भारत में नहीं, संयुक्तप्रान्त आदि अन्य प्रान्तों में बसती थी। मद्रास में रचाई गई मुस्लिम लीग कौंसिल ने मौलाना हसरत मोहानी आदि लगभग ८ मुसलमानों के विरोध के बावजूद यह निर्णय कर लिया कि मुस्लिम लीग का संगठन भारत में भी जारी रखा जाय। इन लोगों ने अपनी नई मुस्लिम लीग का नया विधान तय्यार करने के लिए जिन १४ सदस्यों की एक कमेटी नियुक्त की है उनमें भी केवल दो व्यक्ति बरार और मध्यप्रान्त के हैं शेष सब दक्षिण भारत के।

इस प्रकार वस्तुस्थिति का अध्ययन बतलाता है कि पाकिस्तान की स्थापना के पश्चात् भारत के उन प्रान्तों के निवासी मुसलमानों का साम्प्रदायिक उत्साह अब अति मन्द हो चुका है, जिन का देश के विभाजन से पूर्व अति उग्र था और भारतीय मुसलमानों का साम्प्रदायिक नेतृत्व अब उत्तर भारत से हटकर दक्षिण भारत के इन अपेक्षाकृत मुस्लिम लीगियों के हाथ में आ गया है। इनका यह उत्साह किस रूप में क्रियान्वित होकर अपना असर दिखाएगा यह तो अभी भविष्य के गर्भ में है, परन्तु इतना स्पष्ट है कि मुस्लिम साम्प्रदायिकता का वह कांटा जिसके कुफल देश इतने बड़े परिमाण में भोग चुका है, अभी एक दम कुण्ठित नहीं हुआ है।

हिन्दी टेलीप्रिंटर की आवश्यकता

हिंदी साहित्य सम्मेलन के पैंतीसवें अधिवेशन में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है। जो इस प्रकार है —

स्वतन्त्र भारत में राष्ट्रभाषा हिंदी और राष्ट्रलिपि देवनागरी के महत्व को देखते हुए इस बात की नितांत आवश्यकता है कि देश के समाचारपत्रों को हिंदी भाषा द्वारा समाचारों के मिलने की सुविधा हो और हिन्दी के दूर-मुद्रक यन्त्रों (टेलीप्रिंटरों) के लगाने का शीघ्र प्रबन्ध हो। अत यह सम्मेलन केन्द्रीय-सरकार से अनुरोध करता है कि वह समाचार भेजने के हेतु एक तार (लाइन) हिन्दी के लिये नियत करे। हिन्दी प्रेमियों को सम्मेलन का आदेश है कि वे अब अविलम्ब सामूहिक रूप से एक व्यापार-संघ बनाकर हिंदी समाचार-समिति की योजना को कार्य रूप में शीघ्र परिणत करें।

उपर्युक्त प्रस्ताव की महत्ता और सामयिकता के विषय में कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। हिन्दी-पत्रकारिता का तो भविष्य ही इस पर निर्भर है। अभी तक विदेशी राज्य और विदेशी भाषा का प्रभुत्व होने के कारण हिन्दी-पत्रकारों को मन मसोस कर और झख मार कर अंग्रेजी भाषा से ही समाचार संग्रह करना पड़ता है। केन्द्रीय सरकार को तुरन्त हिन्दी-तार-लाइन का प्रबन्ध करना ही चाहिए।

साथ ही हम उन व्यापारियों का भी ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं जो दिनरात सिनेमा-प्रभृति मनोरंजन-प्रधान व्यापारों की ओर तो तुरन्त दौड़ते हैं, परन्तु इस प्रकार के राष्ट्रहित के कार्य की ओर उनका ध्यान कदाचित् ही जाता है। यदि कुछ पूंजीपति इस प्रकार एक व्यापार संघ बनाकर हिन्दी समाचार समिति की योजना को कार्यान्वित करें तो वहां देश की बढ़ती हुई गति का वे साथ देंगे वहां व्यापारिक लाभ भी उन्हें कम नहीं होगा। आने वाला युग तो हिन्दी का ही है।

भारत में मुस्लिम लीग

इण्डियन यूनियन मुस्लिम लीग कौंसिल ने अपनी मद्रास की बैठक में १० घंटे की बहस के बाद एक प्रस्ताव स्वीकार कर भारतीय यूनियन में एक नये विधान के साथ लीग को कायम रखने का निश्चय किया है। अब लीग मुसलमानों के धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक व आर्थिक हितों पर ध्यान देगी और राजनैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये किसी भी अन्य पार्टी में शामिल हो सकेगी। राजनीतिक रूप में अब मुस्लिम लीग की समाप्ति हो गई है। परन्तु जिस इमारत में बैठक हुई उसमें राष्ट्रीय झण्डे के साथ मुस्लिम लीग के झण्डे का भी फहराया जाना इस बात का सूचक है कि अभी पृथकता की भावना सर्वथा लुप्त नहीं हुई है।

सौराष्ट्र संघ में दस रियासतें शामिल

भावनगर और अन्य नौ रियासतें नये सौराष्ट्र राज्य के अन्तर्गत आगई हैं। काठियावाड़ की अन्य रियासतें भी इस मास के अन्त तक सौराष्ट्र संघ के अन्तर्गत आ जायेंगी, ऐसी आशा है। इन दस रियासतों का क्षेत्रफल लगभग ४००० वर्गमील है।

रेलकर्मचारियों को सुविधायें

भारत सरकार ने ६ सरकारी रेलों और उनके कर्मचारियों के बीच झगड़े का फैसला करने के लिये श्री राजाध्यक्ष को पंच नियुक्त किया था। श्री राजाध्यक्ष ने अपने फैसले में रेलवे कर्मचारियों के काम करने के घण्टे घटा दिये हैं। लगातार काम करने वालों को सप्ताह में एक दिन की छुट्टी तथा अन्य कर्मचारियों को दो सप्ताह में २४ घण्टे की छुट्टी की आपने सिफारिश की है। इस फैसले के कारण भारतीय रेलों में ७९००० कर्मचारी और लगाने पड़ेंगे तथा साढ़े छै करोड़ रुपया प्रति वर्ष खर्च और बढ़ जायगा।

माउण्ट बेटन की जून में विदाई

बंगाल प्रेस एडवाइजर कमेटी की ओर से कलकत्ता क्लब में एक मानपत्र के उत्तर में लार्ड माउण्टबेटन ने यह बात प्रकट की कि जून के तीसरे सप्ताह में वे भारत से विदा हो रहे हैं।

पूर्वी पंजाब की ग्यारह रियासतें भारतीय संघ में शामिल

पूर्वी पंजाब की ग्यारह पर्वतीय रियासतें भारतीय संघ में विलीन हो गई हैं। रियासतों के राजाओं ने एतद्विषयक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। शामिल होने वाली रियासतों के नाम निम्न हैं —

चम्बा, सुकेत, बघाट, मंगल, भज्जी, बेजा, सांगरी, धामी, कुमारसेन, कुठार और थरोच।

इन पर्वतीय रियासतों का प्रदेश 'हिमाचल प्रदेश' कहलायेगा और इसका शासन पर्वतीय रियासतों के तीन राजाओं की परामर्शदात्री समिति की सलाह से एक लेफ्टीनेण्ट गवर्नर करेगा। एक स्थानीय धारासभा भी बनाई जायेगी।

इस प्रकार ११००० वर्गमील का प्रदेश, जिसकी आमदनी लगभग एक करोड़ है। केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत आ [illegible]।

पूर्वी पंजाब
अनिवार्य सैनिक शिक्षा

पूर्वी पंजाब के प्रधान मन्त्री डा० गोपीचन्द भार्गव ने प्रान्तीय असेम्बली में बजट पेश करते हुए यह घोषणा की है कि सरकार प्रान्त के तमाम कालेजों में अनिवार्य सैनिक शिक्षा देने का विचार कर रही है।

साथ ही प्रधान मन्त्री ने यह भी घोषणा की है कि १९४८-४९ से सरकार ने शिक्षा का माध्यम हिन्दी या पंजाबी को रखने का निश्चय किया है। दूसरी भाषा वह चाहे कोई भी हो, तीसरी अंग्रेजी से पढ़ाई जायगी।

रियासती शासकों के खर्च

भारत के रियासती सचिवालय ने यूनियन में शामिल होने वाले शासकों के लिए स्वीकृत राशि का निश्चय करने के लिए एक योजना तय्यार की है। किसी भी शासक को १ अप्रेल के बाद अपने खर्चों के लिए १० लाख रु० वार्षिक से अधिक नहीं मिलेगा। एक लाख आय वाली रियासत के शासक को १५ हजार रु०, उससे चार लाख की आय पर १० प्रतिशत (४० हजार रुपये) तथा अगले प्रति लाख पर ७॥ प्रतिशत राशि शासक के निजी खर्च के लिए दी जायेगी।

यूरोप के ५ देशों सन्धि

ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, हालैंड और लक्समबर्ग के बीच 'पंच देशीय पश्चिमी यूनियन सन्धि' के मसविदे के प्रमुख सिद्धान्तों पर समझौता हो गया है। इस सन्धि में सम्मिलित होने के इच्छुक अन्य राष्ट्रों को इसमें शामिल होने की छूट रहेगी। इटली को भी शामिल करने का विचार हो रहा है।

ढुमदार दोहे

'गुस्ताख'

भाषा पाकिस्तान की, उर्दू, इंगलिश, दोय।
लियाकत की फटकार सुनि बंगाली रहे रोय॥
सुने पर बोले ना।

भारत कू अब ना रह्यो, डर काहू को, यार।
यू० एन० ओ० ने जब सुनी, नेहरू की फटकार॥
होश गुम ह्वै गये।

सैनिक शिक्षा ह्वै रही, भारत में अनिवार्य।
श्री जिन्ना को चाहिए, रोकें अब यह कार्य॥
नहीं पछितायेंगे।

यदि भारत के पक्ष में, काश्मीर [illegible]।
दूनी कर देंगे हम तु, अपनी लूट खसोट॥
यही अन्दाज यों।

श्री [illegible] की कोर्ट में, चारिज भई अपील।
यहां अंग्रेज वकील की, चली न एक दलील॥
खाइ मुंह की फिरे।

पूर्वी बंगाल के १० लाख शरणार्थी

पश्चिमी बंगाल के प्रधान मन्त्री डा० विधानचन्द्र राय ने एक पत्रकार-सभा में घोषणा की है कि पूर्वी बंगाल से लगभग १० लाख शरणार्थी पश्चिमी बंगाल पहुंच चुके हैं। इन शरणार्थियों की सहायता के लिए एक पृथक विभाग खोल दिया गया है।

शरणार्थी कम्पनियों के हिस्सेदार नहीं रहे

पाकिस्तान के शरणार्थी सम्पत्ति के डिपुटी कस्टोडियन ने यह आदेश जारी किया है कि पाकिस्तान-स्थित कम्पनियों में जो पाकिस्तान से गये हुए गैरमुस्लिमों के शेयर हैं वे अब उनके न रह कर कस्टोडियन के बन चुके हैं। ब्रिटेन-स्थित ब्रिटिश शेयर होल्डरों को तथा भारत स्थित मुसलमानों को भी डिविडेण्ड यथापूर्व मिल रहे हैं। परन्तु पाकिस्तान हिन्दू व सिखों की सम्पत्ति हड़पने पर तुला हुआ है।

काश्मीर में अन्तःकालिक सरकार

काश्मीर के महाराजा हरीसिंह ने एक राज घोषणा करके शेख मुहम्मद अब्दुल्ला को प्रधानमन्त्री नियुक्त कर दिया है। प्रधान मन्त्री के परामर्श से मन्त्रिमण्डल के अन्य मन्त्री नियुक्त किये जायेंगे। मन्त्रिमण्डल संयुक्त उत्तरदायित्व के आधार पर कार्य करेगा। प्रजा के सब वर्गों को सैनिक तथा असैनिक सेवाओं का पूरा पूरा अवसर दिया जायगा। सामान्य परिस्थिति होते ही वयस्क मताधिकार के आधार पर मन्त्रिमण्डल एक राष्ट्रीय सभा बुलाने के लिए समुचित कार्रवाई करेगा। विधान में अल्पमतों की रक्षा की व्यवस्था होगी।

इस घोषणा के कारण महाराजा के दीवान श्री मेहरचन्द महाजन ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया है।

चैक विदेशमन्त्री द्वारा आत्म हत्या

चैकोस्लोवाक जनतन्त्र के संस्थापक के पुत्र, चैकोस्लोवाकिया के विदेशमन्त्री डा० जान मेसरिक ने अपने सरकारी निवास स्थान की खिड़की से कूदकर आत्म हत्या कर ली। इनके स्थान पर कम्यूनिस्ट उपनिवेश मन्त्री श्री व्लादीमीर क्लीमेंटिस सम्भवतः विदेशमन्त्री चुने जायेंगे। सरकार अब पूर्णतः रूस पक्षपाती बन जायेगी।

फिलस्तीन में यहूदियों का संयुक्त मोर्चा

यहूदियों की तीन गैर कानूनी संस्थाओं — हेगनाह, इरगुन ज्वाई-ल्यमी और स्टर्नगैंग — ने अरबों के खिलाफ लड़ाई का संयुक्त मोर्चा कायम करने के लिये पूर्ण समझौता कर लिया है। इन संस्थाओं में उत्तम कोटि के ४० हजार लड़ाकू स्त्री पुरुष शामिल हैं।

चीन का युद्ध

मुकदन से १०० मील उत्तर में सेपिंगकाई के महत्वपूर्ण रेल केन्द्र का पतन हो गया है और उस पर कम्यूनिस्ट फौजों ने अधिकार कर लिया है। मंचूरिया की राजधानी चांगचुन को लक्ष्य करके कम्युनिस्ट दस्ते पैमाने पर आक्रमण कर रहे हैं।

समाचार चित्रावली

राजकुमारी अमृतकौर हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन के अधिवेशन में।

श्री शेख अब्दुल्ला काश्मीर के वर्तमान प्रधान मन्त्री और भाग्य-विधाता।

शिक्षामन्त्री मौ० आज़ाद इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स कालिज में।

डा० बी० एस० मुंजे
(जन्म सन् १८८२, मृत्यु ४ मार्च १९४८)

'उत्पादन बढ़ाओ या मर जाओ' —
उद्योगमन्त्री श्री श्यामप्रसाद मुकर्जी।

रेडियो विभाग के सहायक डायरेक्टर जनरल श्री नारायण चतुर्वेदी सम्मान में एकत्रित दिल्ली के हिन्दी-साहित्यिक।

काश्मीर के आक्रमण की तैयारी

[काश्मीर के सम्बन्ध में भारतीय पार्लमेण्ट में एक 'श्वेत-पत्र' प्रकाशित किया गया है जिसके अनुसार काश्मीर के युद्ध में ८८००० पठान भाग ले रहे हैं। १३००० पठान तो इस समय काश्मीर के मोर्चे पर लड़ाई कर रहे हैं, और ७५००० पाकिस्तान के विभिन्न केन्द्रों में बसे हुए हैं। काश्मीर पर आक्रमण करने के लिए सीमाप्रांत और पश्चिमी पंजाब में किस प्रकार तैय्यारियां की गईं थी उस विषय में कुछ प्रत्यक्षदर्शियों के बयान नीचे दिये जाते हैं। इनमें से अधिकांश ऐसे सैनिक हैं जो भारतीय सेना द्वारा युद्ध में बन्दी बनाये गये हैं। काश्मीर-युद्ध में पाकिस्तान की सहायता क्या अब भी संदिग्ध है ? सं०]

१. अब्दुल अजीजखां (भूतपूर्व इन्सपेक्टर फ्रंटियर पुलिस) के पुत्र अब्दुल हक द्वारा दिया गया वक्तव्य —

अपने इलाके के अन्य १०० व्यक्तियों के साथ मैंने रावलपिंडी से काश्मीर के लिए १ नवम्बर को प्रस्थान किया। इससे अनेकों मौलवियां द्वारा यह अफवाह फैलाई जाती रही है कि डोगरा तथा सिख काश्मीर के मुसलमानों पर अत्याचार कर रहे हैं। मौलवी शाबिरहुसेन ने तो यहां तक कहा कि प्रत्येक मुसलमान का काश्मीर चलना एक धार्मिक कर्तव्य है। जब हम लोग सरकारी अधिकारियों द्वारा प्रदान की गई लारियों द्वारा चल पड़े। जिस काफिले में मैं था वह रावलपिंडी के रावल नामक कैम्प में ठहराया गया। इस स्थान पर लगभग ७०० पजाबी पठान, पुलिस के साधारण सिपाही तथा उच्च अधिकारी नागरिक वेश भूषा में थे। हम लोगों को यहां पर अस्त्र शस्त्र वितरित किये गये और प्रत्येक व्यक्ति को ६० कारतूसें दी गईं। कुछ दूर चलने पर उसी कैम्प में से लगभग पांच हजार व्यक्ति जिनमें पठान, अफरीदी तथा अन्य मुसलमान भी थे, हमारी टोली में मिल गये। अनुमानतः हमारे साथ दस हजार की सुसंगठित तथा सशस्त्र सेना थी। बारामूला, पिंडी तथा ऐबटाबाद के मध्य सशस्त्र सेना पर्याप्त मात्रा में तैनात थी। बेतार के तार द्वारा काश्मीर के सरकारी अधिकारियों से हमारा सम्बन्ध स्थापित किया गया था। ६ नवम्बर को हम मंथियाल नामक स्थान पर गये वहां के निवासियों ने पठानों द्वारा किये गये बलात्कारों तथा लूट की कथायें अत्यन्त करुणाजनक ढंग से सुनाईं। उन्होंने बताया कि सिक्खों और हिन्दुओं ने नहीं अपितु स्वयं पठानों ने ही हम पर नाना प्रकार के अत्याचार किए। मुझे यह देख कर अत्यधिक वेदना हुई कि मेरे ही मुसलमान भाई मुसलमानों के सामने हाथ जोड़े अश्रुपूर्ण नेत्रों से जीवन दान मांग रहे हैं। मैंने बारामूला पहुंच कर यह दुःखद घटना अपने साथियों को सुनाई और हममें से प्रत्येक ने वापस चलने की इच्छा प्रकट की किन्तु हमें बलात् रोका गया और उसी रात श्रीनगर पर आक्रमण करने की योजना बनाई गई।

७ नवम्बर की प्रातःकाल को हमें श्रीनगर कूच करने के लिए बाध्य किया गया तथा बेना कोट नामक ग्राम पर अधिकार करने की आज्ञा दी गई। जब हमने उस गांव का दौरा किया, हमें पठानों द्वारा मुसलमानों पर किये गये अमानुषिक अत्याचारों की दुःखद कथायें फिर से सुनाई गईं।

२ जिला हजारा के सेवक नामक ग्राम के निवासी हमीदुल्ला (भूतपूर्व सैनिक) का वक्तव्य—

काश्मीर पर आक्रमण करने के लिए हमें जिन्होंने भड़काया उनमें मेमसेल के बादशाह साहब, अमीरुल्लाउद्दीन और मकी का पीर मुख्य थे। भोपाल स्टेट का भूतपूर्व सेनाधिकारी शेर अहमदखां हमारा नेतृत्व कर रहा था। ३ नवम्बर को हम ऐबटाबाद पहुंचे। सायंकालीन भोजन में ३०० आदमी शामिल हुये हमारे साथ सशस्त्र अफरीदी, पठान, बलूची तथा साधारण वेष में सेनाधिकारी काफी संख्या में थे। बारामूला में हमें पूर्णतया अस्त्रशस्त्रों से सुसज्जित कर दिया गया। निश्चित स्थान पर पहुंचने पर हमें ज्ञात हुआ कि वजीरी तथा महसूद इस्लाम की सेवा न कर निर्दोष मुसलमानों पर आक्रमण कर रहे थे।

३. जिला पेशावर के बजाल नामक ग्राम के निवासी शेरमुहम्मद के पुत्र इकबाल ने आक्रमण का इस प्रकार विवरण दिया—

पाकिस्तान की स्थापना के समय से ही मुसलिमलीगी नेताओं तथा विशेषतः प्रधानमंत्री अब्दुल कयूम द्वारा, जो कि पेशावर में आक्रमण की योजना बनाने वालों में से मुख्य थे, नाना प्रकार की अफवाहें उड़ाई जाती थीं और काश्मीर चलने के लिए मुसलमानों को उत्साहित किया जाता जाता था। मुझे इसका बड़ा दुःख है कि मुसलमानों द्वारा ही मुसलमान सताये जा रहे हैं। ईश्वर अब्दुलकयूम को उसके कुकृत्यों की सजा दे।

४. जिला पेशावर के मीरहम्जा नामक ग्राम के निवासी गुलरंग का बयान

'पेशावर के काबुली गेट पर मैं कुछ आवश्यक सामग्री खरीदने गया। वहां मैंने देखा कि सहस्रों व्यक्ति काश्मीर चलने के लिए उद्यत थे। वहां मैं तुरंगजी के हाजी मोहम्मद खलीफा से मिला और उसने मुझे आशीर्वाद दे कर लारी पर बैठा दिया। हमारे लीडरों ने हमें धोखा दिया। वजीरियों और महसूद ने हिन्दू मुसलमान सबको लूटा। मुस्लिम स्त्रियों के साथ भी बलात्कार किये गये। बारामूला की सारी जनता उनके व्यवहार से क्रुद्ध थी।

मरदान के याकूब खां का बयान—

अतिरिक्त पुलिस, भूतपूर्व सैनिक, सेनाधिकारी तथा पाकिस्तान सेना से पृथक् हुए सैनिकों का इस आक्रमण में पूर्ण सहयोग है। ये साधारण वेष में होते हैं तथा टामी गन, ब्रेन गन, स्टेनगन तथा विमान भेदी बन्दूकें एवं अन्य नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों से पूर्णतया सुसज्जित होते हैं। ये बेतार के तार द्वारा मि० जिन्ना, अब्दुल कयूमखां तथा अब्दुल रबनिश्तर को समाचार देते रहते हैं।

काश्मीरियों के विरुद्ध किये गये तथा-कथित जहाद में जिन्ना, सर जार्ज कनिंघम, अब्दुल रब निश्तर तथा मंकी के पीर का पूर्ण सहयोग है। मैं कुपवारा में छिपा हुआ था कि सहसा स्थानीय मुसलमानों द्वारा पकड़ लिया गया। यहां पर मुझे ज्ञात हुआ कि हमें जिन लोगों पर आक्रमण करने के लिये उत्साहित किया जाता है उनमें अधिकांश मुसलमान ही हैं। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस योजना में पाकिस्तानी अधिकारियों तथा ब्रिटिश अधिकारियों का सम्मिलित हाथ है। मैं यह बयान जिन्ना और कनिंघम के सामने भी देने को तैयार हूं। मेरी इच्छा है कि प० नेहरू के पास भी मेरा सन्देश पहुंचा दिया जाये ताकि वे जिन्ना को समझायें जिससे मुसलमान मुसलमान से न लड़ें।

५. पेशावर पुलिस के सरदार प्रीतम सिंह का बयान जो २२ अक्टूबर के आक्रमण के समय मुजफ्फराबाद में था —

आक्रमण से कुछ दिन पहले ऐसी अफवाहें आ रही थीं कि पाकिस्तान हमला करेगा। सीमाप्रांतीय सरकार ने १७ अक्टूबर को काश्मीर की सब लारियों को हजारा में हाजिर करने का आदेश दिया। १७ और १८ अक्टूबर को हजारा का सारा यातायात बन्द कर दिया गया और हमें पता लगा कि मानसेरा में आक्रान्ताओं की मदद के लिये ४०० लारियां तैय्यार हैं।

६. एफ० सी० वैक्रम ने बताया —

मैं २२ अक्टूबर को पेशावर फोर्ट में था। पुलिस सुपरिटेण्डेण्ट ने खुरशिद खां (स्पेशल पुलिस सुपरि० पशावर) को फोन किया। मुजफ्फराबाद के पतन पर उन्हें बधाई दी और शस्त्रास्त्र भेजने को कहा। खुरशिद खां ने उसी दिन ११ बजे एक खास गाड़ी में पुलिस स्टोर से ७३००० राउण्ड ऐबटाबाद भेजे।

इसी प्रकार अन्य अनेक बन्दियों के बयान हैं जो विस्तारभय से यहां दिये नहीं दिये जाते।

[जम्मू और काश्मीर की सूचनाओं से संकलित]

हैदराबाद में मजलिस के मंसूबे

★

रजाकार भर्ती होते समय जो प्रतिज्ञा लेते हैं वह बड़ी अर्थपूर्ण है। वह निम्न प्रकार है — "मैं जो कि इत्तिहादुल मुस्लिमीन की रजाकार सेना का स्वयंसेवक हूं, शपथ लेता हूं कि मैं अपनी पार्टी और हैदराबाद के लिए अपने नेता के आदेश पर अपना बलिदान करने के लिये उद्यत रहूंगा। अल्लाह के नाम पर मैं शपथ लेता हूं कि मैं दक्षिण में मुस्लिम प्रभुत्व को सर्वोच्च रखने के लिए अन्तिम दम तक लड़ता रहूंगा।"

इस समय रजाकारों की संख्या १,००,००० है जिनमें से ६०,००० के पास बन्दूकें हैं। ये बन्दूकें पहले रियासती मुस्लिमों के पास थीं पर अब रियासती पुलिस को ओटोमेटिक हथियारों से सज्जित कर दिये जाने के कारण ये बन्दूकें खाली हो गई हैं। रजाकारों को ये बहुत सस्ते दामों में दे दी गई हैं। हिन्दुओं से छीने हुए हथियार भी रजाकारों को ही मिल गये हैं। इसके अतिरिक्त इनके पास ३ टन वाली १८ लारियां, १ टन वाली ४० लारियां और २२ जीपकारें भी हैं और ये लोग आवश्यकता पड़ने पर निजाम स्टेट रेलवे, सड़क और अमीर-मुसलमानों की अपनी मोटरों का भी स्वेच्छया उपयोग कर लेते हैं। निजाम-सरकार उन्हें उदारतापूर्वक पेट्रोल देती है जिसके परिणामस्वरूप इनके पास काफी पेट्रोल सुरक्षित जमा है। इनके पास हिन्दू गावों से लूटा हुआ अनाज भी काफी मात्रा में जमा है। इत्तिहादियों का अपना एक अंग्रेजी दैनिक है, ७ उर्दू दैनिक हैं और ६ उर्दू साप्ताहिक हैं जिनसे वे रियासत भर में हिन्दुओं व भारतीय यूनियन के विरुद्ध अपना जहरीला प्रोपेगेण्डा फैलाते हैं। युक्तप्रान्त के एक मुस्लिम परिवार के वंशज रजाकार आन्दोलन के नेता कासिम रजवी ने भारत के मुसलमानों को यूनियन सरकार से मुक्त करने का काम सौंपा।

मजलिस की स्थापना १९२८ में निजाम के धर्मप्रचार विभाग के तत्कालीन डाइरेक्टर ने की थी। शुरू में इस ने हरिजनों को मुसलमान बनाने का काम उठाया और उन्हें तरह तरह के प्रलोभन देकर १८००० को मुसलमान बनाया। १९३९ में जबकि रियासत में वैधानिक सुधारों की बातचीत आरम्भ हुई मजलिस ने राज्य की आन्तरिक राजनीति में भाग लेना आरम्भ किया। ऐसा प्रतीत होता है कि निजाम ने इस संस्था को प्रोत्साहन व आर्थिक सहायता दी ताकि यह उसके निरंकुश शासन का समर्थन करे। स्वर्गीय बहादुर यारजंग ने इस पार्टी को एक नवीन दिशा दी। उनके सहायक पाकिस्तान के वर्तमान अर्थमन्त्री श्री गुलाम मोहम्मद और भूतपूर्व अर्थमन्त्री श्री अब्दुल अजीज थे। १८ मास पूर्व कासिम रजवी ने इस संगठन पर कब्जा कर लिया और अब उसी के हाथ में सारी सत्ता है।

पहले उसने १००००० स्वयंसेवक भर्ती करने की घोषणा की थी और अब ५००,००० भर्ती करने की घोषणा की है।

हैदराबाद में मजलिसे इत्तिहादुल मुस्लिमीन की प्राइवेट सेना-रजाकारों, द्वारा रियासत में किये गये विध्वंसपूर्ण कृत्यों का जो विवरण मिला है उससे पता चला है कि ३८ गांवों को आग लगाई गई जिससे डेढ़ करोड़ की सम्पत्ति नष्ट हो गई, ५० गावों से १०॥ लाख की सम्पत्ति लूटी गई, ६१ व्यक्तियों की हत्या की गई और १३५ स्त्रियों से बलात्कार किया गया। ४॥ लाख व्यक्ति इन गुण्डों की सशस्त्र ताकत के आगे असहाय होकर भारतीय यूनियन में भाग गये हैं। लगभग १२ बार रजाकारों ने भारतीय यूनियन के प्रदेश पर हमले किये।

सीधी कार्यवाही

तीन सप्ताह पूर्व निजाम के युद्धसार-निर्माण के मन्त्री श्री करीमुद्दीन के घर पर मजलिस की कार्यकारिणी की एक बैठक हुई और उसमें निश्चय किया गया कि अगर विभिन्न जातियों को उनकी संख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व देने वाले वैधानिक सुधार किये जायगे तो हम सीधी कार्यवाही करेंगे। सीधी कार्यवाही के कार्यक्रम में निम्न चीजें भी हैं — १. मौलवी बशीर मोहम्मद के नेतृत्व में एक समानान्तर सरकार कायम की जाय। २. एक निश्चित दिन सब सरकारी मकानों व दफ्तरों को आग लगा दी जाय। ३. मजलिस के मन्त्री वर्तमान सरकार से स्तीफे दे दें। ४. मुस्लिम कर्मचारी सरकारी नौकरियों से स्तीफे दे दें। ५. कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं को मार डाला जाय। ६. व्यापारियों तथा पूंजीपतियों को लूट लिया जाय।

यह भी निश्चय किया गया कि अगर दिल्ली में चल रही बातचीत भंग हो जाय तो रजाकारों की सेवायें भारतीय यूनियन के विरुद्ध लड़ने के लिए निजाम को अर्पित कर दी जाय।

युद्ध की तैयारी

युद्ध के लिए मजलिस ने निम्न तैयारियां की हैं — १ गावों में इत्तिहाद के शिक्षण कैम्प स्थानीय मुस्लिमों के हितों की रक्षा करेंगे। २ सीमा के गावों में ये रजाकार सरकारी सेना के साथ सहयोग करेंगे। ३ इस प्राइवेट सेना के सेनापति के गुप्तचरों का जाल सरकारी सेना के हिन्दू सैनिकों पर निगाह रखता है। ४. गद्दारी के सन्देह पर ग़ैर-मुस्लिम सैनिकों को सेना से हटा दिया जायगा पर इसकी सूचना सरकारी सैनिक कमांडर को पहले दे दी जायगी। ५. अगर हैदराबाद की सेना का कोई गैर मुस्लिम व्यक्ति मजलिस के पक्ष में नहीं होगा तो उसे मजलिस की सेना के सेनापति के सुपुर्द कर दिया जायगा। ६. सीमा के गावों में रहने वाले हिन्दुओं को मजलिस की हिरासत में ले लिया जायगा। ७. मजलिस कांग्रेस वालों तथा उनसे सहानुभूति रखने वालों की एक सूची तैयार कर रही है ताकि युद्ध से पहले ही उन्हें समाप्त कर दिया जाय। ८. कांग्रेस-दफ्तरों के कागजात लूट कर जला दिए जाय। ९. हिन्दू मन्दिरों पर आक्रमण न किया जाय। १०. आन्ध्र, महाराष्ट्र और करनाटक में कम्युनिस्टों की पूरी सूची बनाई जाय और उन्हें बारी बारी से समाप्त कर दिया जाय।

———

एलोपैथी और जल-चिकित्सा

[श्री लक्ष्मीनारायण गाडोदिया]

सृष्टि जड़ चैतन्य निर्मित है। जड़ के पांच भाग हैं — पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश। इनका आधार उत्तरोत्तर है — यथा पृथ्वी का आधार जल, जल का तेज, तेज का वायु और वायु का आधार आकाश है। एवम् सर्वाधार चैतन्य है। स्थूल शरीर मिट्टी, पानी, गरमी और वायु के समयोग से बना और इनमें उत्तरोत्तर एक से दूसरे का महत्व अधिक है। सर्वोपरि वायु है। वायु ही शरीर की तमाम क्रियाओं का संचालन करती है, वायु का यथोचित संचार ही स्वास्थ्य है, वायु की विषमता रोग है और वायु का अभाव मृत्यु है। मिट्टी, पानी, गरमी और हवा इनका हमारे शरीर पर क्या प्रभाव होता है एवम् इनका यथोचित सम्मिश्रण किस प्रकार रख सकते हैं इसे यदि हम समझ लें तो रोगों से मुक्ति पाकर स्वास्थ्यमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं। इस सम्मिश्रण का समावेश आहार-विहार, दिन चर्या, रात्रि चर्या और ऋतु चर्या में है। इनकी जो व्याख्या लुई कोने द्वारा की गई है उसके मनन से स्वास्थ्यमय जीवन बनाया जा सकता है।

लुई कोने के चिकित्सा तन्त्र हिप बाथ (कटि स्नान), सिट्ज बाथ (उपस्थ स्नान), स्टीम बाथ (वाष्प स्नान,) सन बाथ (सूर्य स्नान), मिट्टी का प्रयोग एवम् गरम ठण्डी पट्टी के प्रयोग से डाक्टरों द्वारा त्यक्त एवम् असाध्य रोग भी अच्छे हो जाते हैं। आरम्भ में रोगी को ठंडे स्नानों से भय लगता है, परन्तु उसके परिणाम रोगी आश्चर्य चकित होता है और अन्य किसी भी चिकित्सा के प्रति उसका आकर्षण नहीं रहता। जिन्हें इसका यथार्थ अनुभव हो जाता है वे अपना, अपने कुटुम्बियों का व जनसमुदाय का बड़ा उपकार कर सकते हैं। लुई कोने के सिद्धान्त सर्वथा वैज्ञानिक युक्तियों पर अवलम्बित हैं। मैं यह निःसंकोच कहता हूं कि गत तेरह वर्षों के अनुभव में तीव्र व क्लिष्ट एवं जीर्ण रोगों की चिकित्सा में भी आश्चर्यजनक सफलता मिली है। इस चिकित्सा के चार साधन मिट्टी, पानी, गरमी और हवा मुफ्त मिलते हैं। आम लोगों की यह जो धारणा बन गई है कि पुराने और क्लिष्ट रोगों में बढ़िया एवं कीमती दवाएं व इन्जेक्शन, जैसे पेनसिलीन इत्यादि, लाभ देते हैं वह मिथ्या है, क्योंकि विवेकपूर्ण विचार दृष्टि से देखने पर यह स्वीकार करना पड़ेगा कि यह सारी बढ़िया औषधियां एवं इन्जेक्शन मिट्टी, पानी, गरमी और हवा के सम्मिश्रण ही से बनते हैं। यदि इनसे बनी हुई दवाएं लाभ पहुंचा सकती हैं तो इनके सीधे प्रयोग से लाभ प्राप्त होना तो निर्विवाद है।

साठ वर्ष पूर्व जनसाधारण का जीवन अधिकांश रूप में प्राकृतिक था और इसीलिए जन स्वास्थ्य भी अच्छा था। एलोपैथी का आरम्भ भी इसी समय से हुआ एवं ज्यों ज्यों एलोपैथी का प्रचार और मशीनों द्वारा निर्मित औषध व्यापार बढ़ता गया त्यों २ रोगों की वृद्धि भी होती गई। एलोपैथी के सिद्धांत ही दूषित हैं क्योंकि इसकी अनुसंधानशाला (लेबोरेटरी) मृत शरीर-छेदन, मशीनों द्वारा औषध निर्माण इत्यादि जड़ ज्ञान तक ही सीमित है जबकि शरीर जड़-चैतन्य मिश्रित है। औषधियों में विटामिन एवं क्षारों के प्रतिशत सम्मिश्रण का उल्लेख रहता है परन्तु शरीर उन्हें कहां

(शेष पृष्ठ २१ पर)

विश्वविख्यात सायकलिस्ट : जानकीदास

[श्री बाबूराव जोशी 'साहित्यरत्न']

बहुत कम लोग ऐसे हैं जो जानकीदास के नाम से भी परिचित हैं।

जानकीदास पंजाब निवासी हैं। वे बचपन में बड़े नटखट थे। एक दिन किसी कारण पिटाई हो गई। बस फिर क्या था ? आप उसी समय घर से चल दिये और लाहौर में रत्ना नामक एक वेश्या के यहां रहने लगे। उनका बचपन शरारतों से भरा हुआ रहा, लेकिन वे बराबर पढ़ते भी रहे। सायकलिंग की ओर उनकी रुचि किस प्रकार हुई यह बात एक मनोरञ्जक घटना के साथ सम्बद्ध है। जब वे लाहौर विश्वविद्यालय में बी० ए० के विद्यार्थी थे तब शकुंतला नामक एक धनी व्यक्ति की लड़की भी वहां पढ़ती थी। जानकीदास उसकी ओर आकर्षित हुए। उसकी प्रबल इच्छा हुई कि शकुन्तला के साथ विवाह किया जाय। उन्होंने शकुन्तला के साथ परिचय बढ़ाया और उसके अच्छे अच्छे मित्रों की श्रेणी में आ गये। एक दिन वह बोली — 'जानकीदास, मैं सोचती हूं कि युवकों को किसी न किसी दिशा में विशेष प्रगति करनी चाहिए। चाहे वे अच्छे लेखक बनें, कवि बनें, पत्रकार बनें, दार्शनिक बनें, खिलाड़ी बनें, देश सेवक बनें या और कुछ बनें। लेकिन कुछ न कुछ बनें अवश्य। क्या तुम किसी विशेष दिशा में प्रगति करने की बात नहीं सोचते ? मेरा विचार है तुम्हें सायकलिंग की ओर ध्यान देना चाहिए। हमारे देश में अभी इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया है। मुझे विश्वास है इस दिशा में तुम बहुत आगे बढ़ सकते हो।' जानकीदास पर उसके इन शब्दों का बड़ा असर पड़ा। उसी दिन से सायकलिंग उनके जीवन का ध्येय हो गया। फिर तो वे इस काम में इतने जुट गये कि न उन्होंने किताबों की ओर देखा न कपड़ों की सफाई की ओर। न मित्रों से मिलने लगे न शकुन्तला से ही।

जानकीदास ने सायकलिंग किसी से सीखा नहीं। उन्होंने अपने ही अनुभव के आधार पर एक खास तरीका अपना लिया। गति बढ़ाने के लिए आपने दो बातों की ओर ध्यान दिया। पहले तो यह कि शरीर के किसी भी भाग पर जोर या वजन न पड़े और दूसरी यह कि हवा के सतत प्रतिरोध को टाला जाय। इन बातों के लिए उन्होंने अपनी बैठक हेण्डल से थोड़ी ऊंची बनाई और वायु के प्रतिरोध को कम करने के लिए उन्होंने झुक कर बैठने का नया उपाय ढूंढ निकाला। ऊंची सीट पर वे इस प्रकार झुक कर बैठने लगे कि पीठ, सीट और हेण्डल को जोड़ने वाले डण्डे से समानान्तर हो जाती थी। उन्होंने अनुभव किया कि इस प्रकार बैठने से थकावट कम लगती है और पैडल भी तेजी से घुमाये जा सकते हैं।

इस प्रकार तीन मास तक उन्होंने अभ्यास किया। अब इसी समय पंजाब विश्वविद्यालय में खेलों की प्रतियोगिता हुई। इसमें ४ मील की साइकल की दौड़ भी थी। इस प्रतियोगिता में १४ कालेज के खिलाड़ी सम्मिलित हुए थे। उस समय यह उत्तर भारत की सब से बड़ी प्रतियोगिता थी। दौड़ मैदान में प्रारम्भ हुई। इस मैदान के १६ चक्कर लगाने थे। इस दौड़ में २३ खिलाड़ियों ने भाग लिया। पहले दो चक्करों में वे काफी पीछे रह गये। अब उन्होंने अपनी गति बढ़ाई। पांचवे चक्कर में वे बहुत आगे आ गये। उनके आगे केवल एक खिलाड़ी था। सातवें चक्कर में तो उन्होंने उसे भी पीछे छोड़ दिया। अब वे इतने वेग से साइकल चला रहे थे कि जब उन्होंने १६ वा चक्कर समाप्त किया तब दूसरे १४ वा चक्कर पूरा कर रहे थे। उन्होंने ११ मिनिट १३ सेकण्ड में चार मील का फासला तय किया। इसके पहले ११ मिनिट २५ सेकण्ड का रेकार्ड था। जानकी दास के इस नये रेकार्ड को आज तक कोई नहीं तोड़ सका है। इस विजय से वे कालेज में चमक गये।

अब तो प्रतियोगताओं में भाग लेना और जीतना आप का नित्य का कार्य क्रम हो गया। यहां तक कि उनको इससे अरुचि सी हो गई क्योंकि अब प्रतियोगिता के पहले ही सब लोग जान जाते थे कि जानकी दास ही विजयी होंगे। अतः उन्हों ने अपना ध्यान अन्तर राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं की ओर लगाया। उन्हाने पजाब के पत्रों में इस बात का प्रचार आरभ किया कि सायकलिंग को भी ओलम्पिक खेलों में स्थान प्राप्त हो। उनके इस प्रचार का प्रभाव हुआ और पजाब की ओलम्पिक संस्था ने ५० मील की सायकल की दौड़ प्रारम्भ की।

इस ५० मील की दौड़ में भाग लेने के लिए जानकी दास ने अभ्यास प्रारंभ किया। वे प्रतिदिन लाहौर से अमृतसर जाने आने लगे। लाहौर से अमृतसर जाने तथा आने में ७० मील का फासला तय करना पड़ता था। ४० दिन तक अभ्यास करने के बाद वे इसे पौने तीन घंटे में तय करने लग गये।

पचास मील की दौड़ के पहिले जानकीदास १० मील की दौड़ में सम्मिलित हुए। उन्होंने यह फासला २४ मि० ६ से० में तय किया। ५० मील की दौड़ में भाग लेने के लिए २२ खिलाड़ी आये थे। दौड़ शुरू हुई। एक के बाद एक सभी पीछे पड़ने लगे। केवल एक अंग्रेज खिलाड़ी उनका पीछा कर रहा था। लगभग एक मील के बाद वह भी पीछे रह गया। जानकी दास बिना रुके हुए पैडल मार रहे थे। सब से आगे एक मोटर-सायकल वाला था जो गाड़ियों को रास्ते से हटा रहा था। जानकी दास उसी के पीछे पीछे चले जा रहे थे। आखिर में तो उनके तथा दूसरे सायकलिस्टों के बीच १५ मील का अन्तर हो गया। इस से उनकी गति की सहज ही कल्पना की जा सकती है। यह फासला उन्होंने २ घटे ४ मिनिट १२ सेकण्ड में तय किया। आज तक उनके इस रेकार्ड को भी कोई नहीं तोड़ सका है।

इस विजय ने उनको चारों ओर प्रसिद्ध कर दिया। अब अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने की इच्छा और प्रबल हुई। शकुन्तला ने भी इसके लिए प्रोत्साहित किया। अतः उन्होंने 'इण्डियन ओलम्पिक असोसिएशन' के तत्कालीन मन्त्री मि० सोंधी से मुलाकात की और अपनी इच्छा प्रकट की। उनको जानकी दास की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होने इधर उधर पूछ ताछ की और दूसरे दिन उनकी परीक्षा के लिए पंजाब सायकलिस्ट असोसिएशन के चेअरमेन स्वामी जगन्नाथ को नियुक्त किया। दूसरे दिन परीक्षा शुरू हुई। जानकी दास ने २७ मील की रफ्तार से सायकल चलाना शुरू किया। ४२ वें मील के पास स्वयं परीक्षक ने उनको रोका। जानकी दास के चेहरे पर थकान का कोई चिन्ह न देख कर स्वामी जगन्नाथ चकित रह गये।

मि० सोंधी ने अपने प्रेसीडेन्ट सर गिरजा शंकर वाजपेयी से जानकी दास की सिफारिश की। लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिन्दुस्तान का प्रतिनिधि भेजते हुए उन्हें झिझक हुई। कारण यह था कि अब तक हॉकी के अतिरिक्त अन्य सब प्रतियोगिताओं में असफलता ही मिली थी। अतः मि० सोंधी ने राय दी कि वे स्वयं सर वाजपेयी से मिलें। जानकी दास दिल्ली पहुंचे। पूछ ताछ करने पर मालूम हुआ कि पत्रव्यवहार करके इजाजत प्राप्त किये बिना कोई भी सर गिरजाशंकर से नहीं मिल सकता। जानकीदास उनके सेक्रेट्री मि० पार्किन्सन से मिले लेकिन उन्होंने भी यह बात कही। जब मि० पार्किन्सन उनसे बात कर रहे थे तभी सर गिरजाशंकर ने उनको बुलाया जानकीदास भी दबे पैर पीछे पीछे गये और कमरे में पहुंच गये। आपने सर गिरजाशंकर को नमस्कार किया और अपना परिचय देने के बाद अपनी इच्छा व्यक्त की। सर गिरजाशंकर उन से प्रभावित हुए। बोले — 'मि० पार्किन्सन, ओलम्पिक असोसिएशन को पत्र लिख दीजिये कि ब्रिटिश इम्पायर के खेलों में भाग लेने के लिए जानकी दास को आस्ट्रेलिया भेजा जा रहा है।'

जानकीदास की इच्छा पूरी हुई। वे खुशी खुशी घर लौटे और एक सप्ताह में ही जाने की तैयारी करके कोलम्बो पहुंच गये। वहां से वे एक जहाज पर सवार हुए। जहाज में ४० अंग्रेज तथा अन्य यूरोपियन खिलाड़ी भी थे। इनमें एशिया निवासी केवल जानकीदास ही थे। इस समूह में कुछ विश्वविख्यात सायकलिस्ट भी थे। उनके सबके पास रेसिंग सायकल, स्पीड गीअर्स, सायकलिंग शूज, तोकिप्स और तरह तरह के हेण्डल थे। जानकीदास इन सबको देख कर चकित रह गये।

पोर्ट जैक्सन के बन्दरगाह पर जानकीदास अन्य खिलाड़ियों के साथ उतरे। सिडनी के प्रमुख बाजारों में से उनका जुलूस निकला। लोगों ने बड़ी धूमधाम से उनका स्वागत किया। रास्ते के दोनों ओर जनता की अपार भीड़ खड़ी थी। इस प्रकार का भव्य स्वागत जानकीदास ने पहले कभी नहीं देखा था। इन खिलाड़ियों के सम्मान में 'एम्पायरविलेज' में एक सभा हुई। सभा में ५० हजार व्यक्ति उपस्थित थे। प्रत्येक देश के प्रतिनिधियों ने भाषण दिया। लोग हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि का भाषण सुनने के लिए उत्सुक थे। सब बोल उठे— "हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि को बुलाइये।"

जानकीदास बुलाये गये। धड़कते दिल से उन्होंने बोलना शुरू किया। १५ मिनिट तक बोलते रहे। यह भाषण अन्य सारे भाषणों से अच्छा सिद्ध हुआ। तालियों की झड़ी लग गई। भाषण समाप्त होते ही पत्रकारों और फोटोग्राफरों ने उनको घेर लिया। ७-८ दिन तक उन्हें इन लोगों से ही फुरसत नहीं मिली ८ फरवरी १९३८ को इम्पायर गेम्स की शुरूआत हुई। इसके लिए सिडनी का सुप्रसिद्ध क्रिकेट का मैदान चुना गया। सबसे पहले आधे मील की सायकल की दौड़ हुई। वहां आये हुए सारे प्रसिद्ध सायकलिस्टों ने इसमें भाग लिया। जानकीदास ने यह फासला ६०.१ सेकण्ड में तय किया। मेक्सवेल को भी इतना समय लगा। इस विजय ने यह निश्चित कर दिया कि आगे भी उनकी ही विजय होगी। जानकीदास के सब एक नई समस्या खड़ी हुई। उनकी

(शेष पृष्ठ २३ पर)

नया राजस्थान

[श्री दीनदयालु शास्त्री]

★

अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली इन चार रियासतों को मिला कर 'मत्स्य राज्य' की स्थापना की चर्चा पिछले कुछ दिनों से हो रही है। "हमारी स्पष्ट राय है कि ये चार रजवाड़े राजस्थान से पृथक् करके युक्तप्रान्त में शामिल किये जाने चाहिये।" लेखक की इस राय से क्या हमारे पाठक भी सहमत हैं? राजस्थान नये प्रान्त का सर्वाङ्गीण विवेचन इस लेख में किया गया है।

आजादी के बाद हमारी सबसे बड़ी समस्या रियासतों की थी। ये गिनती में ६०० से अधिक थी और देश के चारों कोनों में फैली थीं। इनके शासक भी विभिन्न प्रकृति के थे, कोई उदार था तो कोई दकियानूसी और किसी किसी को तो बाहरी दुनिया का भी पता न था। इससे ऐसा लगता था कि ये राजे रजवाड़े हमारे देश की प्रगति में बाधक होंगे। किन्तु पिछले कुछ मासों में जो प्रतिक्रिया इन रजवाड़ों में हुई है उससे यह प्रतीत होता है कि हमारे देश की रियासतों में अंग्रेजी शासन का जो जादू था वह निकल गया है और वहा के शासक समय की गति को पहचानने लगे हैं। अंग्रेजी नीति के कारण जो पंगुता व असमर्थता उनमें आ गई थी उसे अधिकांश राजाओं ने भांप लिया है और अब वे जनहित व देशहित की दृष्टि से हमारा कर्तव्य क्या है इसे समझने लगे हैं। इस समझ का ही परिणाम है कि हमारे देश का पीला रंग जो एक डेढ़ शतक से रियासतों का द्योतक था, चोला बदलने लगा है और क्या तो वह पड़ोस के प्रांतीय रंग में परिवर्तित हो रहा है या स्वयं ही बड़े संगठन का आवरण लेकर प्राचीनता को छोड़ रहा है। यह मानी हुई बात है कि रियासतों के मामले में आज जो कुछ हो रहा है उसका अधिक श्रेय सरदार पटेल को मिलना चाहिए। रियासतों का वर्तमान रूप बदले, वे जनहित का मार्ग अपनायें, देश के नये संगठन में सहायक हों और राजा भी इस में अपनापन मानकर स्वार्थ त्याग करें —पटेल की नीति का यही निचोड़ है। इस नीति से राजा, प्रजा व देश सभी का हित है। अतः सभी रजवाड़ों में यह नीति अपनायी जा रही है यह विशेष महत्व की बात है। इस नीति को अपनाकर कुछ राजा अपना स्वतंत्र सत्ता समाप्त कर रहे हैं और पड़ोसी प्रांतों में मिल रहे हैं। ये रजवाड़े आकार-प्रकार में छोटे हैं अतः उनकी स्वतंत्र सत्ता समाप्त होने में ही सब का लाभ है किन्तु हमारे देश के एक बड़े भाग में जो रियासतों का जाल सा बिछा हुआ है उन्हें किसी प्रान्त में नहीं मिलाया जा सकता, उन्हें तो संगठित कर हमें नवीन प्रान्त का रूप देना होगा। काठियावाड़, राजस्थान व मध्यभारत में अवस्थित पांच सौ राजा इसी प्रकार नवीन संगठन में शामिल हो सकते हैं अन्यथा नहीं।

प्रान्तीय भावना

रियासती विभाग के अध्यक्ष सरदार पटेल की जन्मभूमि गुजरात है। हमारे देश के आधे से अधिक रजवाड़े इसी गुजरात व काठियावाड़ में विद्यमान हैं। इनमें से अधिकांश के शासक अभी हाल तक अंग्रेजों के भक्त व दकियानूसी विचारों के थे। समझ में नहीं आता था कि इन काठियावाड़ी शासकों का नवीन संगठन किस प्रकार का होगा किन्तु सरदार पटेल ने सौराष्ट्र का प्रांत बना कर जो जादू काठियावाड़ में किया है इससे उस प्रदेश के राजा भी प्रसन्न हैं और जनता भी आल्हादित है। इसके साथ ही मालवा व राजस्थान के नरेशों के लिए भी वह मार्ग खुल गया है। यह सत्य है कि वर्तमान राजस्थान का क्षेत्रफल व आबादी सौराष्ट्र से कहीं अधिक है किन्तु वह किसी भी सरकारी प्रान्त से इस नाते बढ़ा हुआ हो ऐसा भी नहीं है। अतः इसका प्रान्त रूप में संगठन किया जा सकता है यह स्पष्ट है। हां! पेचीदगी इसमें यह है कि मध्यप्रदेश से यहा के मेवाड़, मारवाड़, जयपुर व बीकानेर नाम के रजवाड़े पृथक् सत्ता रखते रहे हैं। उनमें से अनेक ने समय समय पर मुगलों के भी दांत खट्टे किये हैं तो क्या अब वे अपनी स्वतंत्र सत्ता समाप्त कर दें? हमारा ख्याल है कि कुछ राजाओं का यह अहंभाव राजस्थान के नवीन संगठन में बाधक नहीं होगा। वे चाहें तो अपनी प्रान्तीय स्वतंत्रता को कायम रख कर कुछ विषयों में प्रान्तीय संगठन बना सकते हैं अन्यथा सौराष्ट्रों के प्रमुख राजाओं की भांति क्रमशः प्रमुख बन कर भी वे अपनी अहं भावना को पूर्ण कर सकते हैं। केवल इस अहंभाव के कारण राजस्थान का उचित विकास न हो यह सोचना तो राजपूती शान को बट्टा लगाना होगा जो कि कुछ जंचता सा नहीं है। कहने का सारांश यह है कि हम राजस्थान का नवीन संगठन आवश्यक मानते हैं और इसमें यहा के राजा साधक रहेंगे, बाधक नहीं इसे भी खुले दिल से स्वीकार करते हैं।

ब्रज प्रदेश

वर्तमान राजस्थान में कुल २२ रियासतें हैं, इन रियासतों को शासन की दृष्टि से चार भागों में विभक्त किया गया है। एजन्सियों के नाम हैं, पूर्वी पश्चिमी, मेवाड़ व जयपुर एजन्सी। जयपुर, मेवाड़ व जोधपुर राजस्थान के प्रमुख रजवाड़े हैं, इनकी प्रमुखता बनाये रखने के लिए ही यह आयोजन अंग्रेजों ने किया था, उनके साथ साथ कुछ रजवाड़े अवश्य जोड़ दिये गये थे। केवल पूर्वी एजन्सी का निर्माण इस दृष्टि से न हुआ था और शायद इसी लिए समय समय पर इसमें सबसे अधिक परिवर्तन भी हुआ। इस एजन्सी का कार्यालय भरतपुर में है और इसमें भरतपुर, धौलपुर, करौली, कोटा, बूंदी व झालावाड़ नाम की ६ रियासतें शामिल हैं। इनमें से किसी भी रियासत की आबादी १० लाख से अधिक नहीं है अतः उन्हें देश की विधान-परिषद् में कोई पृथक् स्थान प्राप्त नहीं हुआ है। केवल कोटा रियासत की आबादी आठ लाख से अधिक है अतः उसे एक सीट विधान परिषद् में मिली है। इन ६ में से पहली तीन रियासतों में राजपूतों की अपेक्षा जाट अधिक आबाद हैं, भाग्यवश इनके शासक भी जाट हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि इनकी भाषा राजस्थानी नहीं अपितु ब्रजभाषा है। यही हाल पड़ोसी अलवर का है, उसका सांस्कृतिक सम्बन्ध गुड़गावा व मथुरा भरतपुर से अधिक है, राजस्थान से कम। अलवर के शासक राजपूत हैं फिर भी जनहित का ध्यान उन्हें रखना होगा। हमारी स्पष्ट राय है कि ब्रज भाषा भाषी ये चार रजवाड़े राजस्थान से पृथक करके पड़ोसी युक्त प्रान्त में शामिल किये जाने चाहिये। इन चारों रियासतों की संयुक्त आबादी बीस लाख से कुछ कम है, इन के शामिल होने से युक्त प्रान्त की ६ करोड़ आबादी में कोई खास भेद नहीं आवेगा किन्तु ब्रज भाषा भाषी प्रदेश एकत्र हो जायेगा यह लाभ की बात होगी। इन दिनों इन चारों रजवाड़ों ने मिल कर जो पृथक् मत्स्य राज्य निर्माण की योजना बनायी है उस से हम सहमत नहीं हैं। आज से पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत के जमाने में भले ही कोई पृथक् मत्स्य देश हो किन्तु इस बीसवीं सदी में भी यह पुनः प्रगट हो यह हास्यास्पद है। यदि इन रजवाड़ों की यथार्थ में समाप्ति होनी है तो फिर यह लाखों की नहीं करोड़ों की आबादी में क्यों न समायें? हां! ये राजस्थान में रहें या युक्त प्रान्त में इस पर अवश्य विचार किया जा सकता है। हमारी राय में भाषा के नाते इन रियासतों को युक्त प्रान्त का अंग बनना चाहिये।

नया राजस्थान

इस पूर्वी एजन्सी की शेष तीन रियासतों में से कोटा व झालावाड़ का सांस्कृतिक सम्बन्ध ग्वालियर व मालवा से अधिक है अतः उन्हें भी नवीन राजस्थान का नहीं मालवा का अंग बनना चाहिए। बूंदी व कोटा का खान्दान एक है और बोली भी एक है अतः उसे भी मालवा में जाना चाहिए किन्तु यदि वहां की जनता राजस्थान में रहना पसन्द करे तो यह स्वतन्त्रता भी उसे रहनी चाहिए। यातायात की दृष्टि से भी ये तीनों रियासतें मध्यभारत की रेल का अंग हैं अतः भाषा व संस्कृति के आधार पर शासन की दृष्टि से भी यह उसका ही अंग होना चाहिये। वर्तमान राजस्थान की विभिन्न रियासतें परस्पर मिलकर सुविधानुसार तीन चार यूनियन बना लें, हम इस सिद्धान्त को तर्कहीन मानते हैं। रियासतें टूटें तो वे विशाल प्रान्त का निर्माण करें अन्यथा वर्तमान रूप में बनी रहें। बीच की प्रक्रिया देशहित के लिए घातक है। वर्तमान राजस्थान व मध्यभारत दो प्रांतों में बदल जायें यह अच्छा है, क्षेत्रफल व आबादी दोनों दृष्टियों से भाषा व संस्कृति का भी यह तकाजा है किन्तु ये रजवाड़े टूटें भी और फिर भी पांच सात गुट बनें इसमें कुछ भी तुक नहीं है। इसी दृष्टि से हम कोटा, बूंदी या झालावाड़ की पृथक सत्ता के विरोधी हैं, हम चाहते हैं कि भरतपुर से रतलाम तक की रेल लाइन का प्रदेश मालवा में समा जाये, किन्तु यदि यह प्रदेश राजस्थान में ही रह जाये तो भी आपत्ति नहीं। राजस्थान की वर्तमान सात रियासतें उसमें से निकल जानी चाहिए। शेष १६ रियासतों का राजस्थान प्रान्त बने और उसका केन्द्र अजमेर में रहे। इस राजस्थान में उदयपुर, जयपुर, जोधपुर व बीकानेर बड़ी रियासतें हैं, इनके नरेश अहम्मन्य भी हैं। मुगलकाल में राजस्थान की तबाही में इन रियासतों की आपसी ईर्ष्या काफी सहायक थी। अब वह ईर्ष्या सदा के लिए समाप्त होनी चाहिये और इन रियासतों का विलयन होकर नवीन राजस्थान का निर्माण हो। इन चार बड़ी रियासतों का विलयन होते ही शेष छोटे रजवाड़े खुद ही खत्म हो जायंगे। रजवाड़ों की एक नवीन प्रवृत्ति के हम विशेष विरोधी हैं, स्थान स्थान पर मन्त्रीमण्डल बन रहे हैं, स्थानीय लोगों को ओहदा मिल रहा है अतः कल के प्रजामण्डली नेता आज राजाओं के भक्त हो रहे हैं। हमारी राय में इन नेताओं को स्थानीय स्वार्थ छोड़कर देश का बड़ाहित सोचना चाहिए। जोधपुर में दीवान जुदा है और जयनारायण व्यास

(शेष पृष्ठ २१ पर)

कसौटी

[श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त']

नलिन के परिचितों की संख्या कम नहीं है। इनमें से कुछ तो ऐसे हैं, जो नलिन का गाढ़ा दोस्त होने का दम भरते हैं। नलिन ने जब कभी इन परिचितों को अपने घर आमन्त्रित किया, और अपनी सरलता, ईमानदारी और दुनियादारी का परिचय दिया, तब तब इनकी बातों से मानों अमृत की वर्षा हुई। आत्मीयता का स्रोत फूट निकला और नलिन ने अव्यक्त सन्तोष का अनुभव किया। अपने आत्मीयों से दूर — परदेश में — आ बसने पर भी वह एकाकी रहने की कटुता को भूलने लगा।

एक बहुत बड़े शहर में नलिन अपने छोटे से परिवार के साथ रहता है। कहते हैं, शहर में रहने वाले बड़े स्वार्थी हो जाते हैं। पास-पड़ोस वालों के दुःख दर्द से भी उन्हें किसी पीड़ा का अनुभव नहीं होता। परिचितों से भी वे सदा शाब्दिक सहानुभूति का नाता रखते हैं। कभी मिल गए, तो लम्बा चौड़ा नमस्कार और चिकनी चुपड़ी दो चार बातें। बस, यही उनका व्यवहार होता है। इससे अधिक की आशा करना भ्रम समझा जाता है।

नलिन को अब तक ऐसा मौका कभी हाथ नहीं लगा कि शहर वालों के इस पाखण्ड को वह कभी निकट से परख सकता और 'सोना जाने कसे, आदमी जाने बसे' वाली उक्ति की वास्तविकता को समझ सकता। कदाचित् इसीलिए वह अपने परिचितों की व्यावहारिकता, और चिकनी-चुपड़ी बातों की रङ्गीनी ही अब तक देख सका था। लेकिन दूर के ढोल सुहावने होते हैं न। मृग मरीचिका की तरह कभी न-कभी इनकी यथार्थता प्रकट हो ही जाती है।

इस शहर में नलिन की जितनी घनिष्ठता कुमार से है, उतनी अन्य किसी से नहीं। दोनों परिवारों में भाई चारे का नाता है। यों ये दोनों परिवार सजातीय नहीं हैं लेकिन देखने सुनने वाले कभी यह नहीं समझ सके कि ये विजातीय हैं। दोनों परिवारों का हेल मेल, खान पान और पारस्परिक व्यवहार — सभी ऐसा था कि कोई इनके विजातीय होने की कल्पना भी नहीं कर सकता था।

इसी तरह दिन बीत रहे थे कि नलिन यह शहर छोड़कर एक देहात में चले जाने का निश्चय कर चुका। नलिन हिन्दी पत्रकार है। हिन्दी पत्रकार का जीवन हमारे देश में अब तक तपस्या का जीवन है। वह जहा रहता है, साधना ही उसे करनी पड़ती है। जीवन के सुखों से मानों वह सदा दूर रहता है।

जिस पत्र को नलिन अपनी सम्पादकीय सेवाएं दे रहा था, उसके संचालक से उसकी पटरी नहीं बैठती थी। दोनों में गहरा मतभेद रहता। ऐसी दशा में जब काफी अधिक वेतन पर नलिन को एक देहात में नव प्रकाशित पत्र का सम्पादक बनाए जाने का अवसर हाथ लगा, तो शहर छोड़ कर चले जाने का निश्चय उसे करना ही पड़ा।

नलिन जानता था कि शहर में रह चुकने पर अब देहात में शायद वह सुविधापूर्वक न रह सकेगा। लेकिन सर्वव्यापी महगाई के सामने उसे अपनी इस आशका को एक बारगी दबा देना पड़ा। सोचा, एक प्रयोग ही सही। पत्रकार का सारा जीवन ही जब एक प्रयोग मात्र है, तब क्या शहर और क्या देहात।

नलिन जब सपरिवार अपनी नई जगह पर जाने लगा, तब कुमार उसे स्टेशन तक विदा करने आया। ट्रेन जब चलने लगी, तो कुमार ने कहा — 'नलिन जी, आपके यहा से चले जाने पर मुझे बहुत दुःख हो रहा है। लेकिन भरपूर वेतन पर आप जा रहे हैं, अतः मैंने आपको रोका नहीं। आप जहा रहें, सुख से रहें। मेरे योग्य जब जो काम पड़े, आप निःसकोच लिख सकते हैं।'

'इस आत्मीयता का मैं कायल हू, भाई।' नलिन ने अपने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा।

इसी बीच ट्रेन चल पड़ी। प्लेटफार्म पर खड़े कुमार को जब तक नलिन देख सका, चलती ट्रेन में से झाककर बराबर देखता रहा। जब कुमार आखों से ओझल हो गया, तब इण्टर क्लास के डिब्बे में वह चुपचाप अपनी सीट पर जा बैठा। शायद कुमार को और इस शहर को छोड़कर चले जाने में उसे आन्तरिक पीड़ा हो रही थी।

तभी नलिन की वृद्धा मा ने कहा— इस शहर में कुमार तुम्हारा सच्चा दोस्त था, नलिन !'

'बहुत भले और नेक।' नलिन की पत्नी ने अपनी सास का समर्थन किया।

'हा अब तक तो कुमार सचमुच भला और नेक प्रतीत होता है, लेकिन कसौटी पर कसने का अब तक अवसर नहीं आया, कह नहीं सकता कि हम लोगों का ऐसा सोचना कहा तक दुरुस्त है।'

'शहर के वातावरण का प्रभाव तुम पर भी पड़ चुका है नलिन !' वृद्धा मा ने नलिन की इस आशंका पर शायद खीझ प्रकट की। एक क्षण रुक कर फिर कहा — 'यह जरूरी नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति को कसौटी पर कसना चाहिए।'

'तुम्हीं ने तो कभी यह सिखाया था मा।' नलिन की पत्नी ने परोक्ष रूप से शायद अपने पति का समर्थन करना चाहा — 'कि सोना जाने कसे और आदमी जाने बसे।'

'ठीक कहती हो बहू।' नलिन की मा ने कहा — 'लेकिन एक नियम सभी पर लागू नहीं होता — हो नहीं सकता। अपवाद भी तो होता है न।'

'इसी लिए तो मैं कह रहा हू, मा।' नलिन बोल उठा — 'कि अब तक तो कुमार नेक और भला प्रतीत होता है। आगे की राम जाने।'

मैं तो यही समझती हूं कि कुमार सदा सच्चा साबित होगा।' मा ने अपनी दृढ़ता प्रकट की।

'यह मैं कब कहता हूं कि वह खोटे साबित होगा।' नलिन ने कहा — 'लेकिन कसौटी के लिए समय की प्रतीक्षा करनी होगी।'

और इसके बाद नलिन की पत्नी ने बात चीत का रुख बदल दिया। देहात में जाकर किस प्रकार कम खर्च में काम चल जाएगा, घर-खर्च में किस मद से कितनी बचत होगी, आदि बातें छेड़ कर उसने अपने पति और सास दोनों को ही अपनी ओर केन्द्रित कर लिया। कुमार की बात अपने आप इस प्रकार दब गई।

लेकिन देहात में पहुंच कर नलिन ने बचत का जो स्वप्न देखा था, वह पूरा न हो सका। नलिन की पत्नी ने जो अनुमान किया था, वह भी पूरा न हो सका।

हरी भरी पर्वत मालाओं से परिवेष्ठित एक सघन पहाड़ी अचल में वह गाव था, जिस में नलिन अब रहता था। चारों ओर बियाबान जगल। रेलवे स्टेशन से ३० मील दूर और जिले के सदर मुकाम कहे जाने वाले एक छोटे से नगर से १८ मील दूर रहने पर भी एक पक्की सड़क के किनारे अवस्थित इस गाव पर शहर का पूरा-पूरा प्रभाव पड़ चुका था। बल्कि शहर की अपेक्षा इस गाव का कृत्रिम रहन सहन बेहद महगा और घोर असुविधा जनक था।

जिस पत्रिका के सम्पादक होकर नलिन बाबू इस देहात में आए थे, उसके सचालक ने उन्हें काफी सुविधाए दे रखी थीं। रहने के लिए एक खासा बड़ा पक्का मकान, सेवा टहल के लिए एक अर्दली और कार्यालय में आने जाने का कोई बन्धन नहीं। समय की पाबन्दी से कहीं अधिक उन्हें उत्तरदायित्व का ही ध्यान था। कार्यालय भी पर्याप्त सुव्यवस्थित था। अनेक हिन्दी पत्रों के कार्यालयों में सम्पादकों को 'पीर बवर्ची भिश्ती-खर' का जैसा पार्ट अदा करना पड़ता है, वैसा यहा नहीं था।

व्यक्तिगत सुख और सुविधाओं का जहा तक सम्बन्ध था, नलिन इस गाव में आकर यथेष्ट सुखी था। लेकिन किसी भी विवेकशील मानव की दृष्टि में महज व्यक्तिगत सुख ही सब कुछ नहीं होता। जब तक अपने साथ परिवार के सभी सदस्यों को सुख-सुविधाएं समान रूप से प्राप्त न हों, तब तक उसे आत्मीय सन्तोष नहीं होगा।।

गाव आखिर गाव ही था। शहर जैसी सुविधाए यहा कहा ! नलिन जब देखता कि परिवार में किसी के अस्वस्थ हो जाने पर वह शहर की तरह उसका उचित उपचार नहीं करा सकता, समय पर परिवार की कितनी ही आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता और दैनिक आवश्यकताओं की साधारण सी चीजों के लिए भी उसे पग पग पर अनेक कठिनाइयों का सामना पड़ता है। तब वह अपने व्यक्तिगत सुख को भी एक विडम्बना मात्र समझने लगता, फिर, शहर से प्रभावित इस गाव में कोई बचत भी उसके घर-खर्च में सम्भव नहीं रही। प्रत्येक वस्तु शहर की अपेक्षा दुगने दामों पर मिलती, सो भी काफी दिक्कतों के बाद।

ऐसी दशा में नलिन ने स्वीकार किया कि उसने शहर छोड़, इस देहात में आकर अपने हाथों एक परेशानी मोल ले रखी है। 'आधी छोड़ एक को धावे, ऐसा डूबा थाह न पावे।' हुआ यह कि राम-राम करके डेढ़-दो साल ही वह यहा रह सका और पुनः शहर जाने का इरादा उसे कर लेना पड़ा।

सम्भवतः अभी कुछ समय और इस देहात में वह बना रहता, लेकिन पत्नी की अस्वस्थता ने उसे विवश कर दिया। व्यक्तिगत सुखों के लिए वह अपनी जीवन

(शेष पृष्ठ २२ पर)

हिमालय के चित्रकार से भेंट

[श्री चक्रधरण]

सन् १९४३ के जुलाई के महीने की बात है। एक बार पुनः कुल्लू जाने का अवसर हाथ आया। पहुंचने से पहले ही मन में यह निश्चय कर लिया था कि इस बार रोरिक के दर्शन अवश्य करेंगे। इससे पूर्व की यात्रा में यह आवश्यक और महत्वपूर्ण यात्रांश छूट गया था।

× × ×

हिमालय महान् है। हिमालय की कल्पना, उसका चित्र और तत्सम्बन्धी कविता भी महान् है। परन्तु सबसे महान् है हिमालय का दर्शन। संसार के सबसे ऊंचे, सबसे महान्, सबसे भव्य इस पर्वत की विभिन्न शृंखलाओं के रूप में प्रकृति ने जो अपना निसर्ग सुन्दर उच्च-उदार, हिम धवल अन्तर प्रकट किया है वह बिना प्रत्यक्ष दर्शन किये किसी भी तरह समझ में नहीं आ सकता। इस महान् पर्वत शृंखला का साक्षात् करने पर इस बात का कुछ-कुछ आभास होता है कि सौन्दर्य रहस्यमय क्यों होता है और क्यों प्रकृति जन-जीवन से परे — एकांत में ही, अपना शृंगार किया करती है। विभिन्न प्रकार की वृक्षावलि, रंगबिरंगे वन्य पुष्प, लता - वितान, कलकल छल-छल करते जल-प्रपात, पहाड़ी नद-निर्झर, उच्चावच मार्ग, और इन सबके ऊपर प्रकृति की ऐकान्तिकता का गहरा आवरण — इन सबके संयोग से मन-मोहक सौन्दर्य कहां से आ टपकता है यह तो मनोविज्ञान की खाल खींचकर भी शायद ही बताया जा सके, परन्तु इतना निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि संस्कृत के महाकवि कालिदास ने अपने अमर काव्यों में स्थान स्थान पर जो हिमालय के सौन्दर्य की सुध होकर चर्चा की है, वह अकारण नहीं है।

निकोलस रोरिक ने कदाचित् महान् हिमालय की इस सौन्दर्य-प्रेरणा से अनुप्राणित होकर ही कुल्लू की उपत्यका — देवताओं की घाटी — में नगर नामक स्थान पर अपना वासस्थान बनाया और भारतभूमि को अपनी मातृभूमि का-सा मान दिया।

प्रो० निकोलस रोरिक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त कलाकार थे। कला के वर्तमान जगत् में उन्हें 'सन्त कलाकार' के रूप में अद्भुत स्थान प्राप्त है। ज़ार के समय रूस में गवर्मेण्ट आर्ट कालिज के बरसों अध्यक्ष रहे और मैक्सिम गोर्की द्वारा आयोजित 'वर्ल्ड आर्ट कांग्रेस' के सभापति। रूसी रंगमंच पर सामूहिक नृत्य के लिए जो 'डिजाइन' रोरिक ने प्रस्तुत किये वे ही उनको रूसी जनता में अमर करने के लिए पर्याप्त थे। परन्तु विगत महायुद्ध के पश्चात् जो रूस में क्रांति की आग सुलगी तो जनता में 'हुंआ' लोगों के प्रति विरोध की भावना फैली और तब इन्हें अमेरिका जाना पड़ा। वहां न्यूयार्क में 'रोरिक म्यूज़ियम' के नाम से जो कलाकेन्द्र स्थापित हुआ वह न केवल इनके चित्र प्रेमियों का, अपितु पश्चिम जगत् के समस्त संस्कृति-प्रेमियों का तीर्थ स्थान बन गया। अमेरिका में रोरिक को 'सौंदर्य का सहस्रजिह्व गायक' कहा गया और कहा गया —"बाइबिल के मूसा की तरह यह बहुमुखी प्रतिभा वाला व्यक्ति उच्चतम ज्योति के नीलम-श्वेत फेन की ओर अपनी भुजायें फैलाये हुए है।"

पिछले २४ साल से नगर में रहते हुए कला के क्षेत्र में जो साधना इन्होंने की थी उसके कारण वे 'पर्वत गुरु' ('मास्टर आव माउण्टेन्स') के उपनाम से याद किये जाते थे।

रोरिक केवल अध्यात्मवादी स्वप्न द्रष्टा ही नहीं थे। एक अन्वेषक और पुरातत्वज्ञ के रूप में उन्होंने तिब्बत के सुदूर प्रदेशों—लाहौल और स्पिती की यात्रा की थी — यह दुनिया का ऐसा भूभाग है जिसे आजकल 'रोरिक प्रदेश' के नाम से पहचाना जाता है। तिब्बत की यात्रा करते हुए एक बार तो चीनी तुर्किस्तान की सीमा पर वे, उनका पुत्र और उनके सब साथी गिरफ्तार कर लिये गये थे। हिमालय के अन्तर्वर्ती प्रदेशों में लगभग दस हजार मील की यात्रा करके उन्होंने इस 'नगाधिराज' के लगभग ४०० चित्र बनाये थे।

भारतीय दर्शन और भारतीय विचार धारा से रोरिक को बड़ी प्रेरणा मिली थी और इस विषय में अपने विद्यार्थी जीवन के समय से ही उनकी रुचि थी। सांस्कृतिक क्षेत्र में कलाकार, लेखक, दार्शनिक और पुरातत्वज्ञ के रूप में रोरिक एक अविश्रान्त कार्यकर्ता थे। कला के माध्यम से संसार के समस्त देशों और समस्त जातियों में सद्भावना उत्पन्न करना उनका उद्देश्य था। इसी सिलसिले में कलापूर्ण और सांस्कृतिक संस्थाओं और स्मारकों की अन्तर्राष्ट्रीय रक्षा के लिये एक 'रोरिक पैक्ट' बनाया गया जिस पर २१ देशों ने हस्ताक्षर किये थे। उसके हस्ताक्षरकर्ताओं में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर, महात्मा गांधी तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर सी० वी० रमन भी हैं। हिन्दुस्तान में उस पैक्ट के प्रतिनिधि सर षण्मुखम् चेट्टी, श्री अमरनाथ झा, और श्री विजयलक्ष्मी पण्डित हैं।

× × ×

सो इस महान् व्यक्ति के दर्शन के लिये '४३ की जुलाई के अन्तिम सप्ताह में एक दिन (डायरी पाकिस्तान में रह जाने के कारण दिनांक इस समय स्मरण नहीं) हम कुल्लू के सुलतान बाजार से मोटर पर सवार हुए। १२ मील पर कटराई है। मार्ग में दूर दूर तक सीढ़ीनुमा हरे २ खेतों में सिर पर लाल कपड़ा बांधे ये पहाड़ी तरुणियां दूर से ऐसी लगती हैं जैसे हरी मखमल पर वीर बहूटियां चली आ रही हों। व्यास नदी के किनारे सघन वृक्षों के वनप्रान्त से लगी सड़क — पता ही नहीं लगता कि मोटर कब कटराई पहुंच गई। यहां से दो मील दूर हल्की २ चढ़ाई लिये नगर है। इस प्रदेश की अदालत नगर में है इस लिये किसी किसी दिन लोगों का अच्छा याता-यात रहता है।

पैदल ही बढ़ते चले गये। मोटर जा नहीं सकती। और किसी सवारी की

हिमालय का चित्रकार

प्रो० निकोलस रोरिक

आवश्यकता ही क्या थी।

कोई चालीस मिनट लगे होंगे — नगर आ गया। बस्ती के ऐन शुरू में ही अदालत है। देहाती छिट फुट बस्ती पहाड़ के पार्श्व में कहीं कहीं छितरी पड़ी है। बस्ती के अन्त में है रोरिक-निवास। एक तरफ गहरी घाटी है, दूसरी तरफ एक छोटी सी पहाड़ी वक्ष ताने गर्व से खड़ी है। सामने दूर पर हिम से आच्छादित पर्वत शृंग हैं। पीछे उन्मुक्त आकाश है। निवास के लिये ऐसे सुन्दर स्थान के चुनाव को देख कर ही मैं सोचता हूँ कि यह भी कहीं धरती के फलक पर अंकित रोरिक निर्मित चित्र ही तो नहीं है। ज़रा देखो तो सही — हरे पेड़ों के झुरमुट में यह लाल बंगला। थोड़ा सा और पीछे हट कर देखो तो साक्षात् चित्र जैसा ही लगता है।

प्राइवेट सेक्रेटरी से भेंट हुई। उन्हें 'परिचय पत्री' दी। मैं दफ्तर में बैठा चारों तरफ आंखें दौड़ा कर प्रत्येक वस्तु को भावभरी दृष्टि से देखने लगा। देखा, प्रत्येक चीज कलापूर्ण ढंग की है। सामान्य डाक के कार्डों पर भी रोरिक की तूलिका द्वारा चित्रित नयनमोहक चित्र छपा हुआ है। दृष्टि वहीं आकर अटक गई। पता नहीं कब तक अटकी रहती। इतने में ही आवाहन हुआ। इतनी जल्दी आवाहन से ससम्भ्रम-सा मैं प्राइवेट सेक्रेटरी के पीछे पीछे चला।

लकड़ी के बने साथ के बंगले में एक ओर की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। कुछ कदम बाद ही स्वप्नलोक आरम्भ हो गया। सीढ़ियों की रेलिंग पर और पार्श्व की दीवार पर बहुमूल्य कालीन टंगे हुए थे। उनमें से अधिकांश पर की गई चित्रकारी से तिब्बती कलम का परिचय मिलता था। इतने में ही मुझे ख्याल आया कि अभी कुछ दिन पहले प० जवाहरलाल नेहरू जब इस 'देवताओं की घाटी' में आये थे तो रोरिक के अतिथि बने थे।

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता उद्बोधन का मार्ग है

इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोह-निद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

उस दिन सारा 'नगर' सजाया गया था, सारा मार्ग साफ किया गया था और जब मि० स्वेतोस्लोव (प्रो० रोरिक के पुत्र) से किसी पहाड़ी ने पूछा था — 'यह सजावट कैसी, स्वेतोस्लाव ने तत्काल उत्तर दिया था — 'जानते नहीं, आज हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा आदमी हमारा अतिथि बनकर आ रहा है। इस उत्तर में ही प० नेहरू के प्रति रोरिक परिवार का प्रेम प्रकट होता है।

साथ ही ख्याल आया कि वह विश्व का महान् राजनीतिज्ञ, यह विश्व का महान् कलाकार — ये दोनों महान् जब एक साथ बैठे होंगे। तो वह कैसा स्वर्गीय दृश्य रहा होगा। सम्भव है कि जिस कमरे में इन दोनों महान् पुरुषों ने बैठ कर वार्तालाप किया होगा उसी कमरे में मुझे भी ... करने का

— कि इतने में सीढ़ियां समाप्त गईं। सामने क्या देखता हूं — दुमंजिले पर यह छोटा सा कमरा — चन्द्रशाला-सा, कालीन का फर्श, चारों ओर दीवारों पर भी जैसे कालीनों का कोटिंग कमरे का वातायन खुला हुआ — सामने अनतिदूर क्षितिज के पास पर्वत के हिम शृंग — सूर्य की किरणों में चमकते हुए और उस वातायन के सामने बैठे ऋषि-कल्प रोरिक — सफेद कोट सफेद पैण्ट, सफेद जुराब और काला जूता — सब चमकते हुए। हा सफेद दाढ़ी और प्रोफेसोरियल टाइप का खल्वाट सिर।

इधर-उधर की बातचीत के पश्चात् चित्रकला की चर्चा चली। उनके चित्रों, जो कभी कभी पत्र पत्रिकाओं में देखे थे — की हार्दिक प्रशंसा के सिवाय बात चीत कर ही क्या सकता था। एक कला का महान् आचार्य और एक कला का विनम्र विद्यार्थी।

फिर अध्यात्मवाद की चर्चा चली — वेद-दर्शन, उपनिषद् — सभी की, हा उपनिषदों से इस महान् कलाकार को गहरा प्रेम था। चर्चा करते हुए प्रत्येक शब्द से प्राचीन भारतीय आदर्शों के प्रति गम्भीर श्रद्धा की भावना प्रकट होती थी।

कोई विशेष प्रश्नावलि तैयार करके गया नहीं था। केवल मात्र दर्शन की ही अभिलाषा थी। वह पूरी हो गई। फिर समय यों ही अतिवाहित करने का लाभ क्या ? आखिर भेंट का उपसंहार करते हुए निवेदन किया — "मेरे साथियों को कोई सन्देश दीजिये ?" और यह कहकर अपनी डायरी उनके आगे कर दी।

"जिस मार्ग पर तुम चल रहे हो उसी पर बढ़े चलो, बढ़े चलो।" — कलाकार ने डायरी में लिखा।

कला और ज्ञान के पिपासु विद्यार्थियों के लिए इससे अच्छा सन्देश और क्या हो सकता है।

× × ×

'हिमालय का चित्रकार' जब अपनी आंखों में हिमालय का चित्र बन्द किये १३ दिसम्बर को सदा के लिये सो गया तब भी कला और ज्ञान के उपासकों के नाम उनका यह सन्देश तो जागता ही रहा —

'जिस मार्ग पर चल रहे हो उसी पर बढ़े बढ़े चलो, बढ़े चलो।'

जब विदा होकर चलने लगा तो हाथ मिलाने का अवसर आया। मैंने श्रद्धा से अपने दोनो हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और साथ ही कहा —

"हमारा भारतीय शिष्टाचार यह है कि जब किसी वयोवृद्ध का आदर करना होता है तो करबद्ध होकर प्रणाम करते हैं और आप न केवल वयोवृद्ध हैं, अपितु कला-वृद्ध भी।" और तब उस कला-वृद्ध के प्रशस्त मुखमण्डल पर जो स्मित की शुभ्रता चमक उठी, उसे देख कर लगा कि वातायन के बाहर क्षितिज पर जो शुभ्र हिम-राशि दिखती है वह उसी हास्य की छाया है। या शायद वह हास्य ही उस हिम-राशि की छाया हो।

त्याग का मूल्य

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी अनुवाद मूल्य ५) डाक व्यय ।≈) मिलने का पता— विजय पुस्तक भण्डार श्रद्धानन्द बाजार,

बहुत ही प्राचीन काल में जब कि समाज असभ्य ही था केवल अदल-बदल का ही व्यापार होता था। जैसे - एक शिकारी बाघ की खाल दे कर बकरी या अन्न ही नहीं बल्कि पत्नि भी प्राप्त कर सकता था। और यदि किसी को बाघ की खाल की आवश्यकता न होती तो कुछ प्राप्त नहीं हो सकता था।

अनिश्चित भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा होने पर भी ऐसी अवस्था में बचत करना न तो सहल था और न ही उचित। क्योंकि बचत विभिन्न वस्तुओं के रूप में ही की जा सकती थी, जैसे केलों के ढेर, अन्न की बोरियां, भेड़ों के समूह, इत्यादि। क्या ये सब नाश होने वाले पदार्थ नहीं ? और फिर वर्ष की समाप्ति पर लाभ भी कुछ नहीं होता था।

इस के विपरीत आज कल माल के खरीदने में या बचत करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। बुद्धिमान खर्च करने की बजाय बचाना अच्छा समझता है और वह अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सुरक्षित और लाभप्रद मद में लगाता है। नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर इस का मूल्य ५०% बढ़ जाता है-अर्थात १०) बारह वर्ष पूरे होने पर १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप अब ५) से १५,००० तक की मालियत के सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं। जिनकी बचत थोड़ी हो वे ।), ।।), और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए
नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए
रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

वेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहात हो गया और चम्पा ने जमींदारी का काम संभाल लिया।

चम्पा के जमींदारी संभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बडे भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बटवारे पर सहमत कर लिया। बंटवारे से ही सन्तुष्ट न होकर देवकी ने चम्पा और सरला को उड़ाने का षडयन्त्र किया और इसके लिए वैदेहीशरण और कैलाश को नियुक्त किया। बिहार भूकम्प के बाद सेवा के लिए आया हुआ रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत हिल मिल गया था। उसकी अनुपस्थिति में ही इस षड्यन्त्र के अनुसार कार्य करने का निश्चय किया गया।

[गतांक से आगे]

वैदेहीशरण, जो अब तक भीगी बिल्ली की भूमिका में दिखाई दे रहा था, अब बाघ का प्रत्यक्ष रूप धारण कर चुका था। उसने सरला का हाथ पकड़ कर कहा — नीचे उतर। इस पर चम्पा और सरला दोनों चिल्ला उठीं। सरला ने झटका देकर अपना हाथ तो छुड़ा लिया, परन्तु इसी बीच में कैलाश और उसके तीनों साथियों ने वहां पहुंच कर गाड़ी को घेर लिया। गाड़ीवान गाड़ी से उतरते ही वहां से भाग कर एक झाड़ी के पीछे जा छुपा था। जब दो आदमियों ने चम्पा को गाड़ी के एक ओर से और बाकी दो ने सरला को दूसरी ओर से नीचे घसीटा तो उनके आर्त्तनाद को सुनने वाला परमात्मा के सिवा वहां कोई नहीं था। दोनों ने पहिले एक दूसरे को खूब जोर से पकड़कर किलाबन्दी करने की कोशिश की। परन्तु पाशविक बल के सामने उनकी एक न चली, और किला टूट गया। तो उन्होंने गाड़ी से लिपटकर बचने की चेष्टा की। साथ ही वह सहायता के लिये पुकार भी करती रहीं। दोनों ने गाड़ी को काफी मजबूती से पकड़ा, मानों गाड़ी ही उनकी अक्षौहिणी सेना हो। परन्तु वह सहारा भी देर तक न रहा। आततायियों ने उन्हें बलपूर्वक घसीट कर गाड़ी से अलग कर दिया। इस छीना-झपटी में दोनों के बहुत-सी चोटें लग गयीं और कई जगह से खून जारी हो गया। सरला का सिर गाड़ा के पहिये से इस जोर से टकराया कि वह बेहोश हो गयी। चम्पा निरन्तर सहायता के लिये चिल्ला रही थी, उसे रोकने के लिये कैलाश ने, जो सरला के घसीटने में लगा हुआ था, ऊंचे स्वर से चिल्ला कर कहा — "इसके मुंह पर कपड़ा बांध दो और उठाकर उस जगह ले जाओ, जहां हम लोग बैलगाड़ी को छोड़ आये हैं, वहीं हमारी इन्तजार करना।"

अभी कैलाश की बात समाप्त न होने पाई थी कि उस घने अन्धकार को भेदती हुई घोड़ों की टाप सुनाई दी, जिससे आततायियों के कान खड़े हो गये। घोड़े सरपट भागे आ रहे थे। आन की आन में सिर पर आ पहुंचे, मालूम होता था कि घुड़सवारों ने, जो संख्या में दो थे, चम्पा की चिल्लाहट सुन ली थी। उनमें से एक घुड़सवार ने गगनभेदी स्वर से ललकारते हुए कहा — "खबरदार, सब लोग हाथ ऊंचा कर लो, नहीं तो गोली मार दी जायगी। इस ललकार के साथ ही घुड़सवार ने आकाश में रिवाल्वर का फायर कर दिया। फायर आततायियों के लिये यह काफी था। वह सरला और चम्पा को छोड़ कर भाग निकले और अन्धकार में विलीन हो गये। सड़क पर गाड़ी खड़ी थी और उसके दोनों ओर चम्पा और सरला बेहोश पड़ी थीं। आततायी जाते हुए नृशंसता की यादगार के रूपमें चम्पा के सिर पर एक लाठी का प्रहार करते गये थे।

(५)

रामनाथ को पटने में कई दिन लग गये। स्वय सेवकों की सभा में उसने जो अभिनय किया था, वह उस बड़े संघर्ष का एक हिस्सा था, जो अनायास ही रामनाथ और बलधारीसिंह में आरम्भ हो गया था। 'दर्शन मात्र से प्रेम' की भांति 'दर्शन मात्र से द्वेष' भी एक वास्तविक वस्तु है। इस में पूर्वजन्म के कोई संस्कार कारण बन जाते हैं या यह केवल आकस्मिक चीज है, इन प्रश्नों का उत्तर देना कठिन है। हमें इन प्रश्नों का उत्तर देने की आवश्यकता भी नहीं है। रामनाथ और बलधारीसिंह का विरोध पूर्वजन्म का अवशेष था या इसी जन्म की उपज थी, इस समस्या को सुलझाये बिना भी हमारे लिये इतना जान लेना पर्याप्त है कि उन दोनों ने जब से मुंगेर के खडहरों में एक दूसरे को देखा है, तब से उनमें प्रतिस्पर्धा का भाव पैदा हो गया है। स्वभाव में दोनों एक दूसरे से भिन्न थे, परन्तु एक बात में दोनों समान थे। दोनों उग्र महत्त्वाकांक्षी थे, उनके हृदयों में आगे बढ़ने और प्रसिद्ध होने की लालसा बहुत प्रबल थी। भाग्यों ने उन्हें एक ही रंगमंच पर लाकर खड़ा कर दिया था। परिणाम यह हो रहा था कि वे जब भी एक दूसरे को ओर देखते थे, तब ऐसे उत्तेजित हो उठते थे, जैसे घुड़दौड़ के मैदान में दो घोड़े। उन दोनों में जो प्रतिस्पर्धा चल रही थी, उसमें स्वभाव-भेद के कारण लड़ाई के ढंग अलग-अलग थे, परन्तु मानसिक प्रेरणा एक ही थी।

स्वयंसेवकों की सभा का दूसरा दिन दोनों प्रतिस्पर्धियों ने अपने २ ढंग पर व्यूह-रचना करने में गुजारा। बलधारीसिंह ने सभा की घटनाओं का विवरण खूब नमक-मिर्च लगाकर अपने ढंग पर कांग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष तक पहुंचाया और एक लिखित रिपोर्ट भी कार्यालय में दाखिल की, जिस में सभा में गड़बड़ करने का सारा दोष रामनाथ पर लगाया गया था। उधर रामनाथ दिन भर स्वयं सेवकों और कमेटी के सदस्यों में घूम घूम कर बलधारीसिंह की 'बेईमानियों' और 'बत्तमीजियों' के विरुद्ध जोरदार प्रचार करता रहा। उसके दो एक दिन और भी इसी 'पवित्र' कार्य में व्यतीत हो गये। उस के पश्चात् वह रक्षा कैम्प के शिशु-विभाग में गया, वहा उसे मालूम हुआ कि दो बच्चे ऐसे आये हुए हैं, जिन्हें बेलूर के शिशु गृह में पहुंचा देना चाहिये। पटना का कार्य समाप्त हो चुका था, वह स्वय बेलूर जाने को उत्सुक था। और दो पहर के समय घोड़ा-गाड़ी किराये पर लेकर बच्चों के साथ बेलूर के लिये रवाना हो गया।

जब दो पहर बाद वह बेलूर पहुंचा, तो उसने देखा कि हवेली में हलचल सी मची हुई है। दरबान और अन्य नौकर घबराहट में इधर-उधर भागदौड़ कर रहे हैं। अन्दर जाने पर माधवकृष्ण से भेंट हुई, जो उत्तेजित दशा में बाहर जाने को तैयार थे। रामनाथ के पूछने पर उन्होंने बतलाया कि बड़ा अनर्थ हो गया है। झूठा बहाना बनाकर बिसरामपुर का मशहूर धूर्त वैदेहीशरण भाभी को और बिटिया को ले गया है। गाड़ी पर जो गाड़ीवान् गया है, वह भी विश्वासपात्र नहीं। माधवकृष्ण ने रामनाथ के सामने यह भय प्रकट किया कि यह सारी घटना किसी गहरे षड़यन्त्र का परिणाम है। रामनाथ भी इस बात से सहमत हुआ कि मामला पेचीदा है और किसी भारी षड़यन्त्र की भूमिका है। दोनों इस बात में भी सहमत हुए कि बिना किसी विलम्ब के बैलगाड़ी का पीछा करना चाहिये, अन्यथा किसी अनर्थ की आशङ्का है। अस्तबल में से दो घोड़े कसवा कर मंगवाये गये। जमींदारी में बन्दूक और रिवाल्वर दोनों का लाइसेन्स था। चलते समय माधवकृष्ण ने रिवाल्वर भरकर अपनी कमर में रख लिया। इस तरह यदि कोई संघर्ष हो तो उसके लिये तय्यार होकर माधवकृष्ण और रामनाथ घोड़ों पर सवार हो गये और जिस रास्ते से बैलगाड़ी गयी थी, उस रास्ते पर तीव्र गति से रवाना हो गये।

माधवकृष्ण उन रास्तों से परिचित था। पीछा करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई। रास्ते में दोनों में सिंह परिवार की आन्तरिक राजनीति के सम्बन्ध में चर्चा होती रही। माधवकृष्ण ने गोपालकृष्ण के विलायत से लौटने से प्रारम्भ करके बटवारे के निश्चय तक की सब घटनाओं का संक्षिप्त विवरण रामनाथ को सुनाया। अन्त में उसने कहा कि 'यह किस्मत की बात थी कि मैं आज कुछ सलाह करने के लिये अकस्मात् यहां आ निकला। यदि मैं इधर न आता तो हमें पता भी नहीं लगता कि क्या हुआ? अवश्य ही यह धूर्त्त बजरङ्ग का मायाजाल है।'

रामनाथ सारे किस्से को बड़ी अधीरता से सुनता रहा, बीच बीच में उग्र भाषा में टिप्पणी भी करता जाता था। वृत्तान्त के अन्त में उसने भावुकतापूर्ण शब्दों में कहा 'क्या ही अच्छा होता, यदि मैं कुछ वर्ष पहले इस परिवार के सम्पर्क में आ जाता। बेचारी सरला को इतने कष्ट न उठाने पड़ते।'

जिस समय वे दोनों बिसरामपुर से ३ मील के लगभग पहुंचे, तब सूर्य अस्त हो रहा था। वे गांव के बहुत समीप पहुंच गये थे और गाड़ी की ताजा लीक बिल्कुल सीधी जा रही थी। उनके मन में जो घबराहट थी, वह दूर होने लगी। वे सोचने लगे कि शायद व्यर्थ ही संदेह किया। यदि कोई धोखा होता तो गांव के इतने समीप तक गाड़ी न आती। अब तक उन्होंने रास्ते का अधिक भाग घोड़ों की दुलकी चाल से तय किया था, आश्वासन पाकर चाल ढीली कर दी। दोनों घोड़े कदम-कदम चलने लगे।

इधर सूर्य अस्त हो गया और पूर्व दिशा से अन्धकार का ओढन धीरे धीरे आकाश पर छाने लगा। दोनों जने बातचीत में व्यस्त थे कि इतने में उस झुटपुट अन्धकार को चीरती हुई चील की आवाज उसके कानों में पड़ी। उन्हें यह पहिचानने में देर न लगी कि आवाज चम्पा की है। इसके आगे जो कुछ हुआ वह पाठक सुन ही चुके हैं।

माधवकृष्ण और रामनाथ ने गाड़ी के समीप पहुंच कर जो दृश्य देखा, उसका हम ऊपर वर्णन कर आये हैं। सन्ध्याकाल की हल्की-हल्की रोशनी में उन्होंने देखा कि बैल-तांगे के दोनों ओर भूमि पर दो मनुष्य-शरीर पड़े हुए हैं, जो लाशों की तरह निश्चेष्ट हैं। पास जाकर उन दोनों को पहिचाना तो दोनों बहुत दुःखी हुए। यह देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ कि गाड़ीवान् भी लापता था। गाड़ीवान् नौकर था, उसके भाग जाने पर माधवकृष्ण को बहुत दुख हुआ।

पहिला कार्य चम्पा और सरला को भूमि पर से उठाकर तांगे में डालने का था। वह थोड़ी देर में पूरा हो गया। तब वह समस्या उठी कि तांगा कौन चलावे। पुराने ढंग के जमींदार प्रायः जमींदारी से सम्बन्ध रखने वाले सब कार्यों का अभ्यास रक्खा करते थे। यही कारण था कि वे अपनी जमींदारी का प्रबन्ध ऐसा अच्छा कर सकते थे। अब आराम तलबी और विलासिता बढ़ जाने के कारण अन्य अंग्रेजों के पूंजीपतियों की तरह भूमि के मालिक ने भी खेतों और उनकी उपज की देखभाल नौकरों पर छोड़ दी है। भूमि भी उन्हें उतना ही पुरस्कार देती है जितना नौकरों को मिलना चाहिये। माधवकृष्ण भी गाड़ी हांकना जानता था। उसने बैलों की लगाम हाथ में ली और बैलों को गांव की ओर ले चला।

गाड़ीवान् इस सारी घटना को झाड़ी के पीछे से देख रहा था। बैलगाड़ी के दूर निकल जाने पर वह वहां से निकला और जिधर उसके षड्यन्त्र के साथी गये थे, उधर ही चला गया।

(क्रमशः)

तुलसी

ले० श्री रमेश बेदी आयुर्वेदालंकार

तुलसी के प्रति पूज्य भाव रखने वाली देवियां और धर्म परायण लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि इस धार्मिक पौदे में कितने रहस्य छिपे पड़े हैं। तुलसी के पौदे की तरह यह पुस्तक भी हमारे हरघर में पहुंच जानी चाहिए। सचित्र, सजिल्द। मूल्य २)

मिलने का पता:—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

मुफ्त

नवयुवकों की अवस्था तथा धन के नाश को देखकर भारत के सुविख्यात वैद्य कविराज खजानचन्दजी बी०ए० (स्वर्ण-पदक प्राप्त) गुप्त रोग विशेषज्ञ घोषणा करते हैं कि स्त्री पुरुषों सम्बन्धी गुप्त रोगों की अचूक औषधियां परीक्षा के लिए मुफ्त दी जाती हैं ताकि निराश रोगियों की तसल्ली हो जावे और धोके की सम्भावना न रहे। रोगी कविराज जी को विजय फार्मेसी, हौज काजी दिल्ली में स्वयं मिल कर या छः आने के टिकट भेज कर औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए छः आने भेज कर ११६ पृष्ठ की अंग्रेजी की पुस्तक Sexual Guide प्राप्त करें।

३॥) रु० में ६ पुस्तकें

प्रेम जीवन — पति पत्नि के पढ़ने योग्य काम विज्ञान की नई पुस्तक १)

वशीकरण मन्त्र—वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह मू० १)

हिन्दी अंग्रेजी शिक्षक मू० १)

फुल पेरिस पति पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो मू० १॥)

खजाना रोजगार मू० १)

हारमोनियम टीचर मू० १)

६ पुस्तकों का सेट ३॥), डा. ख ॥)

संतोष ट्रेडिंग कम्पनी (बी ए डी)

पाठक स्ट्रीट, जैगंज, अलीगढ़।

१००) इनाम

(गवर्नमेण्ट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्दमा, कुश्ती लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।

श्री कामरूप कमख्या आश्रम ५५

पो० कतरीसराय (गया)

यह मोहिनी फिल्मी अभिनेत्री कहती है — "मैं अपनी त्वचा को साफ़ और कोमल रखने के लिये लक्स टॉयलेट साबुन पर निर्भर रहती हूँ। इस का उत्तम झाग त्वचा को साफ़ और रेशमकी तरह मृदु एवं मुलायम बना देता है। हर एक स्त्री को अपनी त्वचा सौन्दर्य की रक्षा लक्स टॉयलेट साबुन से करनी चाहिये।"

लक्स टॉयलेट साबुन

फिल्मी अभिनेत्रियों का सौन्दर्य-साबुन

LTS. 175-172 HI

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

अमरीकन माडल

६ खानों वाली पिस्तौल

लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिए बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म ब्लिक) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १।=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ सीटी रिवाल्वर का सेट मुफ्त। अपना पूरा पता साफ साफ लिखें। नापसन्द होने पर दाम वापिस।

अमरीकन ट्रेडिंग एजेन्सी, (AWD) हलका नं० २१, अमृतसर।

American Trading Agency (AWD) Halka No 21 Amritsar.

विविध चित्रावली

लन्दन कौण्टी कौंसिल की ओर से आयोजित व्याख्यान माला में डा० हूवर जेट इंजिन पर व्याख्यान दे रहे हैं और श्रोताओं के प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं।

लन्दन में बरमा का स्वाधीनता समारोह। बरमी राजदूत भाषण दे रहे हैं।

माननीय सी० एच० भाभा और सर चार्ल्स कनिंघम।

वायुयान प्रदर्शिनी में ब्रिटिश युवकों को वायुयानों का परिचय दिया जा रहा है।
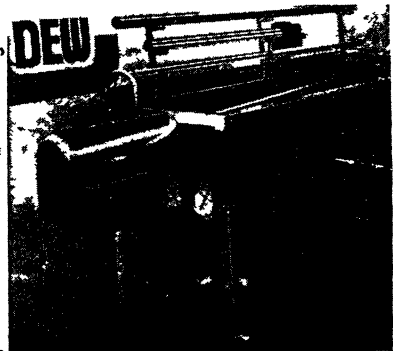
दूध को कीटाणु रहित करने के लिए नलियों का प्रयोग किया जा रहा है। भाप बड़े नलों से गुजारी जाती है और ब्रुश से नलियां साफ की जाती हैं।

तोष की

हाथी ब्रान्ड

बढ़िया चाय

दार्जिलिंग ऑरेंज पेको

प० तोष एण्ड सन्स

कलकत्ता ।

एन० के० शर्मा एण्ड क० मेरठ ।

सूचित करें

मुंगफली तेल, व मुंगफली के लिये नव भारत ट्रेडर्स करनूल (मद्रास प्रेसिडेन्सी) को लिखें। हर प्रकार का आर्डर का काम सन्तोषजनक रूप से किया जाता है।

तार का पता-MAHANSARKA

धनाढ्य बनें

आप थोड़े समय में बिना रुपया लगाये अमीर बनने के सरल उपायों के लिये "व्यवसाय" मासिक पढ़ें वार्षिक मूल्य ३) नमूना ।-)

मिलने का पता—

व्यवसाय पत्नालय, अलीगढ़ ।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त ।

इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

फिल्म-स्टार

बनने की इच्छा वाले शीघ्र पत्र लिखें। थोड़ा पढ़ा लिखा होना आवश्यक है रणजीत फिल्म-आर्ट कालेज विरला रोड (V D) हरद्वार यू० पी० ।

५००) नकद इनाम

बचपन की बुरी आदतों से उत्पन्न कमजोरी, सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३।।।) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम।

श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़ ।

२०००) रुपये इनाम

मासिक धर्म एक दिन में जारी

मैन्सोली पिल्ज—एक दिन के अन्दर ही कितने समय के रुके हुए मासिक धर्म को जारी कर देती है कीमत ५) रु० ।

मैन्सोली स्पेशल पिल्ज—जो कि फौरन जारी करके मासिक धर्म को बिलकुल आसानी से साफ कर देती है। कीमत ११।।) रु०। याद रखो गर्भवती इसे सेवन न करे क्योंकि यह बच्चेदानी को बिलकुल साफ कर देती है। २०००) रु० इनाम जो मैन्सोली पिल्ज को नामुफीद साबित करे। पत्र व्यवहार गुप्त रखा जाता है।

लेडी डाक्टर असली दवाखाना

(AWD) हलका न० २१ अमृतसर ।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)।। का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २।।)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (६२)

पो० बेगूसराय (मुंगेर)

फैंसी सिल्क साड़ी

आकर्षक डिजाइन

कलापूर्ण २४ इन्च चौड़ा बार्डर

नं० ७ ८ ६

१८) २३) २८)

२) पेशगी बाकी वी० पी० से

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

धमाको इन्डस्ट्रीज

कुली नं० २१ कानपुर ।

"ये हैं आनन्द मिश्र...

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताब हैं। घर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती, सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

★

१ सिर्फ ताजा और फौरन् खौला पानी लीजिये। २ चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३ हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४ तीन से पांच मिनट तक चाय को खौलने दीजिये। ५ दूध प्याले में मिलाइये बर्तन में नहीं। ●

चाय चर्चा नामक पुस्तिका अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मंगाई जा सकती है।

सबसे अच्छी

चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

कसौटी

(पृष्ठ १० का शेष)

कामिनी का स्वास्थ्य किसी खतरे में नहीं डाल सकता था। नलिन ने सोचा, एक प्रयोग करने के लिए ही वह यहां आया था। वह प्रयोग ही शुरू। प्रयोग की कोई अवधि नहीं होती। वह जल्दी भी पूरा हो सकता है और देर में भी। पत्र सचालक से उसने छुट्टी लेली — सदा के लिए। नलिन की पत्नी की गिरती दशा का ध्यान रखते हुए सचालक इच्छा रहने पर भी नलिन को रोक नहीं सके।

अब शहर आने के सिलसिले में कुमार को कसौटी पर कसने का मौका नलिन को मिला। शहर में आकर नलिन ने सीधा कुमार का दरवाजा खटखटाया। कुमार ने खुले हृदय से उसका स्वागत किया। अपने घर में नलिन को उसने सपरिवार ठहराया। उसने अपनी ईमानदारी और मित्रता का पूरा निर्वाह करना चाहा। लेकिन यह ईमानदारी और मित्रता सिर्फ हुआ। तक ही सीमित रही।

अपने घर में नलिन को सपरिवार ठहराने पर कुमार की पत्नी को दो-चार दिन ही में ही असन्तोष होने लगा। प्रारम्भ में शायद उन्होंने समझा होगा कि दो एक दिन में कहीं न कहीं नलिन को किराए का मकान मिल जायगा और वह उनके घर से हट जाएगा।

परन्तु मकानों की समस्या बड़े शहरों में, इस बीच असाध्य हो चुकी थी। हमारे महायुद्ध के अभिशापों की छाया अब तक लोगों को परेशान किए जा रही थी। खाने-पीने और पहनने की चीजों पर युद्ध-काल की तरह ही नियन्त्रण था।

नलिन ने जी तोड़ परिश्रम किया। तमाम परिचितों से किराए पर कहीं मकान दिलवाने की प्रार्थना उसने की, परन्तु मकान तो क्या, दो-एक कमरे भी कहीं किराए पर उसे नसीब न हो सके। यह हालत देख, कुमार की पत्नी शायद यह समझने लगी कि नलिन अब महीनों उन्हीं के घर रहेगा।

यद्यपि नलिन ने अस्थायी रूप से अपने परिवार के लिए राशनिंग आदि की अलग व्यवस्था कर ली, और कुमार के बहुत कहने-सुनने पर भी वह अपना खाना-पीना सब कुछ अलग करने लगा, लेकिन इतने पर भी कुमार की पत्नी का असन्तोष छिपा नहीं रहा। स्त्रियों की स्वभावजन्य संकीर्णता कुमार की पत्नी में स्पष्ट दीखने लगी। कुमार के घर में एक दुधार गाय थी। उस समय वह गाय प्रतिदिन दो-तीन सेर दूध दे रही थी। लेकिन कुमार की पत्नी की संकीर्णता को चीर कर, नलिन की पुत्री तीसरे दिन से ही अपनी दो साल की बच्ची के लिए अलग एक ग्वाले से दूध खरीदने लगी थी।

नलिन की पत्नी इस घर के वातावरण से त्रस्त हो उठी। नलिन भी एक पत्रकार था, अतः उड़ती चिड़िया परखने की क्षमता रखता था। स्वाभिमान उसके रोम-रोम में व्याप्त था। वह अपमानजनक का व्यवहार उसे सह्य नहीं था। लेकिन विपन्न का बेचारा। मकान न मिलने के कारण उसे एक दिन नहीं, लगातार इक्कीस दिनों तक अपमान और उपेक्षा के इसी वातावरण में सांसें लेनी पड़ी। उसे आश्चर्य था कि दो साल पहले उसे कुमार की पत्नी का व्यवहार कितना मधुर और आत्मीयता से ओत प्रोत दीखता था। लेकिन आज इस प्रकार बदल गया।

बाइसवें दिन नलिन को एक गन्दी सी गली में किसी तरह एक कच्चा कमरा किराए पर मिल गया। इस कमरे को घोंसला कहना अधिक उपयुक्त होगा। वृद्धा मां, तरुण पत्नी और बच्चों के साथ इसी घोंसले में नलिन रैन बसेरा करने लगा। चूंकि अपमानजनक वातावरण से मुक्ति पाने का अन्य कोई मार्ग नहीं था, अत इस कमरे में ही वह अपना मन मसोस कर रहने लगा। लाख कठिनाइयां इस कमरे में थीं। लेकिन इसे वह अपना तो कह सकता था। इसमें रह कर वह किसी के आराम में खलल डालने का अपराधी तो नहीं था। किसी की अप्रसन्नता का आभास पाने और तज्जन्य अप्रकट ज्वालाओं से भस्मसात् होने का तो कोई अवसर यहां नहीं था।

नलिन को अफसोस था कि उसने अपने एक मित्र को — कुमार को — इक्कीस दिन उसके घर रह कर, उसे नहीं तो उसकी पत्नी को ही सही, परोक्ष रूप से और अनजाने ही कष्ट पहुंचाया।

किराए के कच्चे कमरे में आकर नलिन की पत्नी ने कहा — 'इस शहर से देहात में चलते समय तुमने ठीक ही कहा था कि कुमार अब तक तो भला और नेक प्रतीत होता है, आगे ही राम जाने।'

'हां, बहू!' वृद्धा मां ने कहा — 'नलिन की इस बात पर मुझे उस समय विश्वास नहीं होता था। मैं समझती थी, हमारा नलिन भी शहरवालों की तरह अपने मित्रों पर अविश्वास करने लगा है। लेकिन उसने जो कुछ कहा था वह बावन तोले पाव रत्ती सही था। कुमार कसौटी पर खरा नहीं उतर सका।'

नलिन ने गर्व का अनुभव करते हुए कहा था, मैं तो अपना सारा जीवन ही एक प्रयोग समझ रहा हूं। यह प्रयोग आजीवन चलता रहेगा। इस प्रयोग में अपने-पराए सभी धीरे धीरे कसौटी पर आएंगे और सभी की परख होती जाएगी।

नया राजस्थान

(पृष्ठ ६ का शेष)

प्रधानमन्त्री हैं इस नवीन शासन पद्धति का क्या अर्थ है? इसमें जनतन्त्र व राजतन्त्र का क्या समन्वय है? यही हाल जयपुर व उदयपुर का है। यथार्थ यह है कि जनतन्त्र के उठते ही जवहर में हम अपने पन को बनाये रखना चाहते हैं और सभी निःसार वस्तुओं में महत्व मान रहे हैं। सचाई यह है कि अब छोटे रजवाड़ों का दस, बीस व तीस लाख आबादी की स्वतन्त्रता का जमाना निकल गया। समूचे भारत में, सगठित भारत में पर्याप्त क्षेत्रफल व आबादी के प्रान्तों का निर्माण हमें करना होगा और बीच की लीपापोती को हमें खत्म करना होगा। हमारी दृष्टि से जो राजस्थान बनेगा उसमें १६ रियासतें होंगी और एक सरकारी प्रदेश, इन सबकी मिलकर आबादी एक करोड़ होगी। हम रे जानते वर्तमान आसाम, उत्कल व सौराष्ट्र से यह नवीन राजस्थान बड़ा होगा। व्यवसाय, कृषि व खनिज की दृष्टि से किंवा फौजी दृष्टि से भी यह प्रान्त महत्वपूर्ण होगा।

सीमान्त प्रदेश

हम इस नवीन प्रान्त के निर्माण में फौजी दृष्टि को सब से अधिक महत्व पूर्ण मानते हैं। आज से ६ साल पूर्व हमारे देश की पश्चिमी सीमा बिलोचिस्तान में थी अब वह राजस्थान में है। इस सीमा का कुछ भाग पंजाब व काश्मीर में भी है किन्तु उसका अधिक भाग राजस्थान की जोधपुर, जैसलमेर व बीकानेर रियासतों में है। इस सीमा की दृष्टि से हमें इन तीन रियासतों की समाप्ति शीघ्र से शीघ्र करनी चाहिये। यह रियासतें पहाड़ों से घिरी होतीं तो सम्भवत स्वाभाविक सीमा के कारण हम इससे निश्चिन्त हो सकते किन्तु इन रियासतों की जमीन तो रेगिस्तान है। पड़ोसी सिन्ध से कभी भी फौजें यहां पहुंच सकती हैं। यह सत्य है कि विदेश, यातायात व रक्षा की दृष्टि से ये तीनों रियासतें आज भी हमारे देश का अंग हैं किन्तु आन्तरिक दृष्टि से तो वे मनमानी करने में स्वतन्त्र हैं। यह उपहासास्पद स्थिति समाप्त होनी चाहिये और भले ही देश के अन्य भागों में रियासतें बनी रहें किन्तु राजस्थान में उनका विलोप आवश्यक है। वीर, बांके राजपूतों का यह प्रदेश सीमा पर रहे तो सगठित होकर रहे हमें तो यही अभीष्ट है। हम राजाओं का सम्मान करते हैं, वे व्यक्तिगत दृष्टि से अत्यन्त भले हो सकते हैं किन्तु उनके कारण राजस्थान बिखरा रहे हमें यह कतई अभीष्ट नहीं है। हमारा सीमान्त स्थिर व संगठित हो हमें तो यह अभीष्ट है और हम इसी दृष्टि से भिन्न २ रजवाड़ों का विलयन व राजस्थान का एकत्व चाहते हैं। सरदार पटेल व विभिन्न राजा जितना जल्दी इस दृष्टि कोण को समझेंगे उतना जल्दी ही राजस्थान का निर्माण कर अपने सीमान्त की रक्षा में समर्थ होंगे।

और, उस कच्चे कमरे में ही कितने दिन नलिन को सपरिवार अपने दिन काटने पड़े, यह हमें ज्ञात नहीं।

तिल्ली और पीलिया के लिए जड़ बूटी गरीब लोग ||) डाकखर्च भेज कर मुफ्त मगावें और अमीर अच्छा होने पर श्रद्धानुसार भेंट दे दें।
पता—महात्मा हरीदास, प्रेमाश्रम मोहन आविट साइड, मथुरा।

स्वीस मेड ठीक समय देने वाली ६ वर्ष की गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥) सुपीरियर २०॥) फ्लाट शेप क्रोमियम केस२५) फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारंटी २२), फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस १८), फ्लाट शेप १५ज्वेल रोल्ड गोल्ड—७५)
रेक्टेंगुलर कर्म या टोनो शेप
क्रोमियम केस—१२), सुपिरियर-२५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल शुक ६०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) वीग भाइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेने से माफ।
न्यू० डेमीड० वाच क० [V A]
पो० बक्स न० ११०२२ कलकत्ता।

एजेण्टों की जरूरत है—
जमनादास एण्ड क०, के० डी० जगदीश एण्ड० चांदनी चौक, दिल्ली।

राष्ट्र भाषा हिन्दी को अपनाइये और उसकी उन्नति में हाथ बंटाइये।

२००१) दिनेश पहेली नं० १३ में प्राप्त कीजिये

१०००) सर्वशुद्ध पूर्तियों पर, ७५०) न्यूनतम ३ अशुद्धियों तक। विशेष पुरस्कार—२५), १५), और १०) क्रमशः सर्वाधिक पूर्तियां भेजने वालों को और १०१) सर्वप्रथम प्राप्त विद्यार्थी के शुद्ध उत्तर पर अधिक दिये जावेंगे।

पूर्तियां भेजने की अंतिम तारीख ५ अप्रैल, १९४८ ई०

१ रा	बा	२ प्र	३ ता	४ प	■	५ ा
य	■	ा	क	ल	६ पा	७
	८	र	ा	बा		ग
	र	■	■	ा	क	द
	■	९ चा		■	■	■
■	१०	य	न	■	११	ा
१२ भू	ा			■	१३ ए	ा

संकेत बायें से दायें — १. राजस्थान के गौरव प्रसिद्ध मेवाड़ी वीर। ५. एक अनाज का नाम। ९. इसका सेवन हानिकारक होता है। १०. मनुष्य इनके द्वारा अपने मन के भाव प्रकट कर सकता है। ११. वस्त्र की कमी को भारत में यह ही दूर करेगा। १२. एक राज्य जहां की प्रजा बहुमत से भारत में सम्मिलित होने का निश्चय कर चुकी है। १३. वह साधन जिसके द्वारा देश उन्नति कर सकता है।

संकेत ऊपर से नीचे—१ राजा का महल। २. प्रतिद्वन्दी को नीचा दिखाने का एक साधन यह भी है। ३. इसका नाम ही भयभीत कर देने वाला है। ४. पन्द्रह दिन का समय यह कहा जाता है। ६ इसके बिना भोजन तैयार नहीं हो सकता। ७. बालि का पुत्र। ८. आजकल अच्छा ' ढूढने में भी बड़ी कठिनाई होती है।

नियमावलीः—एक नाम से एक पूर्ति का शुल्क १॥), इसके पश्चात् प्रत्येक पूर्ति का ॥) जो मनीआर्डर द्वारा भेजा आना चाहिए। म० आ० की रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य भेजें। सादे कागज पर इच्छानुसार पूर्तिया भेजी जा सकती हैं। पूर्तियों के अन्त में और मनीआर्डर कूपन पर नाम और पूरा पता हिन्दी में अवश्य लिखें। जो व्यक्ति एजेण्टों की प्रेरणा से पूर्तियां भेजें वे पूर्तियों के नीचे प्रेरक के नाम का उल्लेख अवश्य कर दें। परिणाम के लिये =) अधिक भेजें। शुद्ध उत्तर १६ अप्रैल के साप्ताहिक वीर अर्जुन में देखें। एजेण्ट बनने के इच्छुक हमसे पत्र व्यवहार करें। पूर्तियां और म० आ० भेजने का पताः—

सी. एम. त्रिपाठी, हितकारी विद्यालय, कोटा (राजपूताना)

पहेली नं० १२ का शुद्ध उत्तर—बायें से दायें—१. पूज्य बापू, ४. लाल, ५. यामिनी, ७ यजन, ८ नरम, ११. श्रम, १२. झिझकना, १३ जनमत। ऊपर से नीचे—१. पूतना, २. बादल, ३ पूजागृह, ६. सोमनाथ, ९ जगाना, १० दर्प। सर्वशुद्ध ६ प्रत्येक को १८३॥), एक अशुद्धि १० प्रत्येक को ३०), दो अशुद्धि २२ प्रत्येक को १०), ३ अशुद्धि ८६ प्रत्येक को ३॥)। सर्वाधिक पूर्तियों का पुरस्कार ८४, ६०, ४८, पूर्तियों पर दिया। किसी भी विद्यार्थी का सर्वशुद्ध उत्तर इस बार प्राप्त न होने से १०१) सर्वशुद्ध पुरस्कारों में बांटा गया। प्रथम प्राप्त पूर्तियों को २५) पांच व्यक्तियों को मिला। सब पुरस्कार २५ मार्च तक भेज दिये जावेंगे।

देहली प्रांत के सोल एजेन्ट—रमेश बुक डिपो, चांदनीचौक, देहली। अजमेर—नवज्योति जनरल स्टोर बड़े डाकखाने के सामने। मध्यभारत के सोल एजेन्ट—वृहद् औषध भण्डार, ११ जेल रोड, इन्दौर। मुजफ्फरनगर—चैतन्य औषधालय, नई मण्डी।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार)।

५०० रु. इनाम

धन कवच—के द्वारा मनुष्य कुबेर जैसा धनवान होने का शुभअवसर प्राप्त करता है और लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। घर में तमाम दुष्ग्रहों की शान्ति होकर हर तरह से घर में धन की वर्षा होती है। जिससे पुश्त-दर-पुश्त के लिए गरीबी से छुटकारा मिल जाता है। कीमत ४॥), चांदी का ६॥), सोने का ७॥=)

सिद्धवशीकरण यन्त्र—जिसे आप चाहते हैं वह चाहे कितना ही पत्थर दिल का हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आप से मिलने चला आवेगा। इसे धारण करने से लाभ, मुकद्दमा, नौकरी, लाटरी में जीत परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति होती है। कीमत ४), चांदी का ५), सोने का ७॥) गलत साबित करने पर ५००) इनाम। अपना पता पूरा और साफ लिखें।

श्री आनन्द स्वामी, (AWD) बाग रामानन्द, अमृतसर।

Shree Anand Swami (AWD) Bagh Rama Nand Amritsar

सबसे अच्छा निराला और जादुई माडल

पचास व छ फायर वाले

अमरीकन पिस्तौल

जान व माल की रक्षा के लिये इससे अच्छी कोई चीज नहीं। यह माल असली की मानिन्द अब पहली बार आया है।

मूल्य छ फायर वाले शाट के साथ माडल डी० नं० १, ३॥=)

माडल डी० नं० २, ४॥=) स्पेशल माडल डी० नं० २, ७॥=)

पचास ५० फायर वाले शाट के साथ नया माडल डी० नं० १, ३॥=)

स्पेशल माडल डी० नं० २, १०॥=) फालतू शाट १) दर्जन

पिस्तौल का तेल ॥) चमड़े की पेटी पांच रुपये डाक खर्च अलग

तीन एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ

EASTERN IMPORTERS P. B 45, DELHI

ईस्टर्न इम्पोर्टर्स पो०ब० ४५, दिल्ली

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल ब्रलिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघराले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी न्यू रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (रोल्ड न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी रोल्ड न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आवेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवेल्टी स्टोर्स पो० ब० नं० ४५ दिल्ली।

General Novelty Stores P. B. 45, Delhi.

विश्वविख्यात सायकलिस्ट : जानकीदास

[पृष्ठ ८ का शेष]

परीक्षा लेने के लिए वे उस पर चढ़े। वे उसे जोर से चलाने लगे लेकिन उसके पेडल का कू_ ढीला था। निकल गया। जानकीदास जोर से गिर पड़े और उनको जोर की चोट आई। बेहोशी की हालत में उन्हें अस्पताल ले जाया गया। डाक्टरों ने कहा कि दस दिन तक उन्हें किसी भी प्रतियोगिता में भाग नहीं लेना चाहिये।

लेकिन जानकीदास का उत्साह दुर्दमनीय था। उन्होंने डाक्टरों की राय की चिन्ता नहीं की और जख्मी अवस्था में ही एक हजार मीटर की दौड़ में भाग लिया। शुभचिंतकों की बात भी नहीं सुनी। दौड़ शुरू हुई। कुछ समय तक उन्होंने मेक्सवेल का मुकाबला किया लेकिन चोटों ने आगे नहीं बढ़ने दिया। इस दौड़ में मेक्सवेल विजयी हुआ। डाक्टरों के मना करने पर भी दौड़ में भाग लेने का परिणाम यह हुआ कि उनके कन्धे और हाथ का दर्द बढ़ गया। इसके दो दिन बाद १० मील की दौड़ हुई। इस बार भी उन्होंने डाक्टरों की कुछ नहीं सुनी और दौड़ में सम्मिलित हुये। शुरू से ही मेक्सवेल और जानकीदास में होड़ होने लगी। कभी मेक्सवेल आगे हो जाते कभी जानकीदास। दसवां चक्कर लगाते समय तो हाथ की पीड़ा इतनी असह्य हो गई कि जानकीदास सायकल से गिर पड़े। इस बार उनको इतनी चोट लगी कि वे आगे किसी भी प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सके। लेकिन उन्होंने पहिले जो रेकार्ड कायम कर दिया था उसे वहां कोई भी तोड़ नहीं सका। अतः जब वह वहां से लौटने की तैयारी करने लगे तो ब्रिटिश एम्पायर गेम्स की ओर से सिडनी के स्पोर्टस् स्टेडियम में उनके सम्मानार्थ सभा की गई।

जब वे जहाज पर चढ़े तो कई लोग उन्हें विदा करने आये। सबने उन्हें बड़े आदर के साथ विदाई दी। पुस्तकें, बिस्किट, चाकलेट, हार आदि के उपहारों से उनकी पेटियां भर गईं। लेकिन जब वे ही जानकीदास बम्बई के बन्दरगाह पर उतरे तो किसी ने पूछा तक नहीं। जब लाहौर पहुंचे तो उनको एक और जबर्दस्त धक्का लगा। उनकी प्रेमिका शकुन्तला ने किसी धनवान् व्यक्ति से विवाह कर लिया।

कुछ दिन बाद जानकीदास ने फिर सायकलिंग पर ध्यान दिया। समाचार पत्रों में प्रचार करके उन्होंने 'नेशनल सायकलिस्ट फेडरेशन आफ इंडिया' नामक एक अखिल भारतीय संस्था को जन्म दिया। सन् १९४० में जापान में एक बड़ी भारी प्रतियोगिता में जानकीदास हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि चुने गये। इसमें सम्मिलित होने के लिए वे टोकियो पहुंचे। इस प्रतियोगिता में उन्हें जापानी, चीनी तथा फिलिपिन सायकलिस्टों का मुकाबला करना था। एक फिलिपिन सायकलिस्ट के अलावा और कोई उनका मुकाबला नहीं कर सका। उनके रेकार्डों को तो वह भी कोई नहीं तोड़ सका। इस विजय ने पटियाला के महाराजा को आकर्षित किया। उन्होंने पटियाला में ओलम्पिक स्टेडियम बनवाया। इस स्टेडियम में सायकलिंग के लिए सीमेंट की एक विशेष सड़क बनवाई गई।

सन् १९४५ में यूनियन सायकलिस्ट एसोसिएशन की ओर से पेरिस के स्पोर्टस् पेलेस में उनका एक तैल चित्र लगाया गया। सन ४६ में जूरिक (स्वीटजरलेंड) में २७ अगस्त से १ सितम्बर तक 'वर्ल्ड सायकलिंग कांग्रेस' का जल्सा हुआ। इस जल्से में दो कार्य क्रम थे। पहिला रेकार्ड कायम करने वालों का सम्मान और दूसरा प्रतियोगितायें।

जानकी दास के रेकार्ड अभी तक कोई नहीं तोड़ सका था अतः उन को भी निमन्त्रण मिला। इस सम्मान के लिए चारों ओर उनका अभिनन्दन किया गया। स्वयं गांधी जी ने भी उनको आशीर्वाद दिया और अपनी शुभकामनाएं प्रकट कीं। लड़ाई अभी २ समाप्त हुई थी अतः यात्रा की अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए वे अन्तिम दिन वहां पहुंचे। इस दिन वहां की अन्तिम प्रतियोगिता में उन्होंने रेफ्री का काम किया। इसके बाद स्विस रेडियो पर हिन्दुस्तानी खेल, खिलाड़ियों तथा इसी प्रकार के अन्य विषयों पर उनके कई भाषण हुए।

विश्व विजयी खिलाड़ियों का सम्मान-समारोह सितम्बर के प्रथम सप्ताह में प्रारम्भ हुआ। इस समारोह में नया रेकार्ड कायम करने वालों के हाथ से उन्हींके देश के झण्डे फहराने का कार्यक्रम रखा गया था। इस समारोह में लगभग पांच लाख व्यक्ति इकट्ठे हुए थे। इस से पता चलता है कि यूरोपीय देश में खिलाड़ियों का कितना सम्मान किया जाता है। और जनता इस ओर कितनी रुचि रखती है। पांच लाख दर्शकों का समूह चारों ओर बैठा था। बीच में एक मंच पर चालीस विभिन्न देशों के झण्डे फहराने के लिए ऊंची २ बल्लियां लगाई गई थीं। इसके नीचे उन देशों के विश्व विख्यात खिलाड़ी खड़े किये गये। सायकलिंग में जानकी दास विश्व विजयी सिद्ध हो चुके थे अतः वे भारत वर्ष के झंडे के नीचे खड़े किये गये। बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। बैण्ड मार्चिंग गीत बजा रहा था और जनता एक टक सारी कार्यवाही देख रही थी। एक कुमारी धीरे २ इन विश्व विजयी की ओर बढ़ी। यह कुमारी उस वर्ष की सौंदर्य प्रतियोगिता में दुनिया की सर्व श्रेष्ठ सुन्दरी सिद्ध हो चुकी थी। कुछ दिनों से इन खेलों में सर्व प्रथम आने वाले वीरों का सम्मान दुनिया की सर्व श्रेष्ठ सुन्दरी के हाथों करवाने की ही प्रथा चली आरही थी। अन्य विजयी वीरों के साथ २ जानकी दास का सम्मान भी इसी सुन्दरी ने किया। उसने जानकी दास के सिर पर पुष्प मुकुट रखा और सारा वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज गया।

इसके बाद झंडे को फहराने का कार्य क्रम शुरू हुआ। उस समय हिन्दुस्तान पराधीन था अतः जानकी दास के हाथ से यूनियन जेक फहराने की योजना की गई। जानकी दास ने यूनियन जेक फहराने से साफ इन्कार कर दिया। उनके अंग्रेज मित्र नाराज भी हुए लेकिन वे दृढ़ रहे। उनकी दृढ़ता पर इन्टरनेशनल को हार माननी पड़ी। उनके हाथों तिरंगा झंडा फहराया गया। वे फूले न समाये। जन समूह ने हर्ष ध्वनि की। उस झंडे को वे आते समय अपने साथ लाये। इस सम्मान सूचक झंडे को उन्होंने पं० जवाहर लाल जी नेहरू को अर्पण कर दिया।

ऐलोपैथी और जल-चिकित्सा

[पृष्ठ ७ का शेष]

तक ग्रहण कर सकता है? अर्थात् रोगी की पाचन शक्ति की प्रतिक्रिया क्या होती है इस बात से डाक्टर समुदाय अनभिज्ञ है, जबकि वैद्यक में औषधियों की मात्रा एवं रस, वीर्य और विपाक का विचारमय उल्लेख है।

लेबारेट्री — परीक्षा द्वारा मल, मूत्र, रक्त इत्यादि की विभिन्न प्रतिक्रिया का माप बताना, एक्सरे द्वारा शरीर के आन्तरिक अवयवों की स्थिति तथा अणुवीक्षण यंत्र द्वारा कीटाणुओं की उपस्थिति एवं यन्त्रों द्वारा रक्त गति के माप का निर्देश हो कर दिया जाता है परन्तु वास्तविक चिकित्सा के सम्बन्ध में यह पद्धति अंधेरे में है। इसी लिए ज्यादातर डाक्टर औपरेशन की ओर दौड़ते हैं।

'विजातीय द्रव्य की उत्तेजना सब रोगों का कारण है' — यह लुई कोने का सिद्धान्त है और यही वैद्यक का भी है —

सर्वेषा हि रोगाणाम्
निदानम् कुपिता॰ मलाः।

यह सुश्रुत का वाक्य है — अर्थात् मल का सचित होकर कुपित होना ही सब रोगों का एक मात्र कारण है — वमन, विरेचनादि पंच कर्म, लंघन, और स्वाद चिकित्सादि द्वारा बड़े बड़े और दुःसाध्य रोगों का निवारण किया जा सकता है। परन्तु आज कल के रोगी समुदाय को यह झंझट पसन्द नहीं। आधुनिक रोगियों की मांग तो यह है कि बिना आहार-विहार सुधारे ही व बिना किसी भी पथ्य के उनके रोगों को दूर किया जाय और वह भी अतिशीघ्र ताकि उनके आधुनिक ढङ्ग के खान पान, सिनेमा - मनोरंजनादि में किसी प्रकार का हर्ज न पहुंचे। इस मांग को पूरा करने के लिए आयुर्वेद नाम का भी ऐलोपैथिक ढङ्ग पर व्यापार बढ़ता जा रहा है। इस व्यापार द्वारा कुछ अस्थायी आराम भले ही मिले, वास्तविक स्वास्थ्यलाभ सम्भव नहीं। यही कारण है कि अज्ञानवश लोग कह देते हैं कि आयुर्वेद चिकित्सा वैज्ञानिक नहीं है।

प्रेम दूती

श्री विराज जी रचित प्रेम काव्य। सुरुचिपूर्ण शृंगार की सुन्दर कवितायें। मू० ।।।) डाक व्यय पृथक।

विजय पुस्तक भण्डार,
श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

प्यारा पुत्र चाहिए

संतान

यदि आप सन्तान से वंचित हैं तो मुझे लिखें आपके घर का दीपक शीघ्र रोशन हो उठेगा, यदि आ न सकें तो हमारी औषध अकसीर औलाद मंगवा लें, जिससे सैकड़ों बेऔलाद बहनों की गोदी हरी भरी हुई है। मूल्य २२) और दवाई औलाद नरीना जिसके सेवन से पुत्र ही पैदा होगा चाहे पहले लड़कियां ही लड़कियां क्यों न पैदा होती रही हों मूल्य १२)।

और नहीं चाहिए

संतान

दो साल के लिये सन्तान उत्पत्ति बन्द करने वाली दवाई की कीमत १२) ५ वर्ष के लिये २०) और सदा के लिये २२)—इन दवाइयों से माहवारी हर महीने ठीक आती रहती है। मासिक धर्म जारी करने वाली दवाई मैन्सोल स्पेशल का मूल्य १२) और इससे तेज दवाई मैन्सोल स्ट्रांग जो अन्दर अच्छी प्रकार साफ कर देती है मूल्य २२)।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती (जाफ लाहौर)
चान्दनी चौक देहली [फव्वारा और इम्पीरियल बैंक के दरम्यान]
कोठी २७ बाबरलेन न्यू देहली (निकट बंगाली मार्केट)

चटपटी मजेदार सस्ती और सुन्दर पुस्तकें

हिन्दी इंगलिश टीचर — स्त्रियां, बालक, बालिकायें घर बैठे कुछ ही दिनों में अंग्रेजी लिखना पढ़ना बोलना सीख लेंगी, मू० २), पोस्टेज ।=) ।

हारमोनियम तबला गाइड — हारमोनियम, बेला, सितार, जलतरङ्ग, बैंजो और तबला सिखाने की एकमात्र पुस्तक मू० १॥) पोस्टेज ।≈) ।

फिल्मी अप्सरायें — यौवन की मस्ती के बोझ से लदी हुई पचास अभिनेत्रियों के चित्र एवं उनकी जिन्दगी के गोपनीय रंगीन और मनोरंजक हालात मू० २), पोस्टेज ।≈) ।

मजनूं की चिट्ठियां — इसमें फिल्म एक्ट्रेसों और एक्टरों की प्रेम लीलाओं, फिल्म स्टूडियोज में होने वाले व्यभिचार का भण्डाफोड़ किया गया है मू० २), पोस्टेज ।≈) ।

पिंगल प्रवेशिका — बिना गुरू हिन्दी, उर्दू में कविता करना व शायरी करना सीखो मू० २), पोस्टेज ।≈) ।

टेलरिंग कटिंग — घर में स्त्रियों को हर प्रकार का कपड़ा सीना सिखा देगी, मू० १॥।), पोस्टेज ।≈) ।

विवाहित मनोरंजन — इस में नव विवाहितों को बतलाया गया है कि वह परस्पर सम्भोग का सच्चा सुख किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं मू० २), पो० ।=)

सोहाग रात सचित्र — प्रथम मिलन की भांति मोहक यह पुस्तक आपके विवाहित जीवन को सुखमय बना देगी, मूल्य १॥), पोस्टेज ।=) ।

स्त्री-पुरुष रोग चिकित्सा — स्त्री पुरुषों के समस्त रोगों का इलाज । अपूर्व पुस्तक मू० २), पोस्टेज ।≈) ।

खजाने की कुंजी — अनेक हुनर सीख थोड़ी पूंजी से हजारों रुपया पैदा कीजिये, मू० १), पोस्टेज ।–)

सौन्दर्य और शृंगार — सुन्दरता को स्थिर रखने का उपाय, फिल्मी शृङ्गार वगैरह मू० २), पोस्टेज ।≈) ।

फिल्मी संसार — सिनेमा विज्ञापन पर नया ग्रन्थ, फिल्म कैसे खिचता है, आवाज कैसे भरी जाती है, अभिनेत्री, अभिनेत्रियों की रङ्गीन कहानी, अभिनेत्री, अभिनेता डाइरेक्टरों की जीवनी, इतिहास मू० ३॥) रु० पोस्टेज ॥=) ।

लखनऊ की रंगीन रातें — लखनऊ के नवाबों, वेश्याओं और बिगड़े हुए रईसों के पतन की नङ्गी तस्वीर देखना चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें, मू० १), पो० ।=) ।

बम्बई की चांदनी रातें — इसमें एक अभिनेत्री की आत्म कथा जिसे पढ़कर आप सिनेमा जगत का असली रूप देख सकेंगे, मू० १), पोस्टेज ।=) ।

गोरे खूबसूरत बनने के उपाय — सचित्र हिन्दी में नयी पुस्तक इसमें क्रीम, पोमेड, तेल, सेन्ट उबटन, चन्द्रमुखी अर्क गोरे होने की दवा मुहासे नाशिक पाउडर, लिपस्टिक, गालों की लाली, सुहाग बिन्दी, नेल पालिश, महावर आदि समस्त सौन्दर्य सामग्री बनाने की सरल सच्ची तरकीबें लिखी हैं, मू० १॥) रु० पोस्टेज ।=) ।

गर्भ निरोध — इसमें गर्भ न रहने के सैकड़ों ही देशी विलायती सुगम प्रयोग लिखे हैं, मू० ।॥), पोस्टेज ।) ।

वशीकरण मन्त्र — अनेक प्रकार के वशीकरण मन्त्रों, तन्त्रों, यन्त्रों का अपूर्व संग्रह, मू० १।), पो० ।≈) ।

प्रेम चित्रावली — स्त्री पुरुषों के देखने योग्य आर्ट पेपर पर छपे हुए २४ चित्र, मू० ३।), पोस्टेज ॥=), विद्यार्थी तथा अविवाहित न मगावें ।

हिन्दी उर्दू शिक्षा — हिन्दी से उर्दू, उर्दू से हिन्दी लिखना पढ़ना सीखो मू० १।), पोस्टेज ।–) ।

पुस्तकों पर कोई कमीशन नहीं दिया जाता है कृपया वी० पी० मंगा कर वापिस न करें ।

पताः— एस० के० सक्सेना १) रंगमहल अलीगढ़ सिटी ।

❋ विवाहित जीवन ❋

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मंगावें ।

१—कोक शास्त्र (सचित्र)	१॥)	२—८४ आसन (सचित्र)	१॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र)	१॥)	४—१०० चुम्बन (सचित्र)	१॥)
५—सुहागरात (सचित्र)	१॥)	६—चित्रावली (सचित्र)	१॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो	१॥)	८—गर्भ निरोध (सचित्र)	१॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा ।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १५) अलीगढ़ सिटी ।

मिर्गी

का २४ घण्टों में खात्मा । हिमालय के तपस्वियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत तुल्य । मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक ।

पता — एम० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार ।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं । यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तुहफा है । यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता उनको लम्बे, घूंघर वाले और चमकदार बनाता है । जहां बाल न उगते हों वहां फिर पैदा होने लगते हैं । आंखों की रोशनी तेज करता और सिर को ठण्डक पहुंचाता है । अतीव सुगन्धित है । कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रिआयत कीमत ६॥) रु० इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्डन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है । तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ म्यूट घड़िया व ४ अंगूठियां (लंडन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं ।

बाल उमर भर नहीं उगते !

हमारी प्रसिद्ध दवाई 'जोहरे हुस्न रजिस्टर्ड' के इस्तेमाल से हर जगह के बाल बगैर किसी तकलीफ के हमेशा के लिये दूर हो जाते हैं और फिर जीवन भर दोबारा उस जगह बाल कभी पैदा नहीं होते जगह रेशम की तरह मुलायम नरम और खूबसूरत हो जाती है । कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स ६॥) रु० इस दवाई को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लंडन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है । तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ घड़िया व ४ अंगूठिया बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं ।

नोटः— माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है । शीघ्र मंगा लें क्योंकि ऐसा समय बार बार हाथ नहीं आयेगा ।

लंडन कमर्शियल कम्पनी (AWD) बाग रामानन्द, अमृतसर ।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है । इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले और व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में है, जो थोड़े ही मूल्य का है ।

यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें । मूल्य सस्ता कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० २०१ कीमत ४॥≈) क्वालिटी नं० २२२ कीमत ६।॥) की बजाय दूसरा स्पेशल क्वालिटी नं० २२० कीमत ४॥), पैकिंग व डाकव्यय १≈)

नोट—एक समय में ६ कमरों के ग्राहक को कैमरा नं० २२० मुफ्त । स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अन्यथा निराश होना पड़ेगा । माल पसंद न होने पर कीमत वापिस

वेस्ट एण्ड ट्रेडर्स (V. A. D.) पोस्ट बाक्स १९९, दिल्ली ।

West End Traders, (V. A. D.) P. B. 199, Delhi.

मोम बत्तियां बनाओ ।

घर बैठे १५०) रुपये माहवार कमायें

स्कूल के चाक बनाओ ।

मोमबत्तियों के काम में एक छोटे सांचे की मदद से पांच छः रुपये रोजाना बखूबी कमाये जा सकते हैं । यह केवल (५०) रु० की पूंजी से अच्छी तरह चालू हो सकता है । तरीका सांचे के साथ बताया जाता है । १२ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ४०) रु० १७ की कीमत ६०) ३४ की कीमत ११०) रु० डाकखर्च अलग । २४ स्कूल चाक के सांचे की कीमत ६०) । मोमबत्तियां बनाने का सामान भी हमारे से मिल सकता है । आर्डर के साथ आधी कीमत पेशगी आनी जरूरी है ।

ए० दीवानचन्द एण्ड कम्पनी (W.D.) पोस्ट बैग नं० ११ A. देहली ।

पहेली सं० ३३ की संकेतमाला

दायें से बायें

१. विष्णु।
३. हनुमान।
७. झरोखा।
८. दूसरों को जीवन —के लिए जरूर है।
९. बहुत — हानिकारक होता है।
१० प्रभात।
११ एक अत्युत्तम गुण।
१२ जय हो।
१४ अपने लाभ के लिये कुछ न कुछ— उचित है।
१५ पारस्परिक सम्बन्धों पर —— का बड़ा प्रभाव पड़ता है।
१६ कारे का — कारे का बाना।
१७ सुख और शान्ति देता है।
१८ जब तक मनुष्य— में है, शान्ति नहीं।
२० दिया।
२२ सुन्दर हो तो और अधिक अच्छी लगती है।
२३ कमल से नयनों वाला।
२५ जिसकी आशा हो।
२७ जिसे — मिल जाय, तर जाता है।
३० पास होने से प्रतिष्ठा होती है।
३१ —की प्रवृत्ति नीचे की ओर होती है।
३२ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।
३३ स्त्री का — गौरव भी समझा जाता था।

ऊपर से नीचे

१ सापों का स्वामी।
२ कुबेर।
३ — सीताराम।
४ अति विशालता इसका गुण है।
५ गगा।
६ क्रोध से लाल हो जाना।
८ जो समय पर — जानता है वही सफल होता है।
१३ कीर्ति।
१७ वृक्ष विशेष का जगल।
१९ एक आकाशवर्ती पिण्ड की चमक।
२१ इसके आगे बड़े बड़े असफल रह जाते हैं।
२३ इसका आकर्षण किसे अज्ञात है।
२४ बाटना।
२५ एक — अभी देश से उठ गया है।
२६ — में मग्न व्यक्ति सफल कम होता है।
२८ एक पक्षी।
२९ — के आश्रय में सुख मालूम होता है।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३२ का शुद्ध उत्तर

१ वि	क	२ मा	३ दि	ख	■	४ व	पा	५ ना
फ	■	न	न	■	६ च	ल	■	ग
ल	७ क	■	पा	८ फ	■	ना	■	रा
■	ह	■	ल	ल	९ वा	■	१० पा	ल
११ टा	क	ना	■	१२ दा	रि	द	चि	■
■	■	■	१३ क	र	द	■	का	■
१४ ल	गह	न	■	■	१५ म	हा	रा	ल
टा	■	१६ अ	प	र	व	■	■	■
१७ ई	त	क	■	■	१८ मा	र	व	■

सुगमवर्ग पहेली सं० ३३

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, मगर भेजने के लिये नहीं।

साबुनो का मुकुट मणि

साबुन नम्बर १००

हर तरह के कपड़ों ऊनी, सूती, रेशमी की बहतरीन सफाई के लिये। सुन्दर और रगीन रैपर मे लिपटा हुआ। हर अच्छे स्टोर और साबुन के दुकानदार से मिलेगा। एक बार खरीद कर अवश्य परीक्षा करें।

एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है।

होलसल डिस्ट्रीब्यूटर्स—
कैलाशचन्द्र प्रकाशचन्द्र
कूचा राय हाफिज बका
सदर बाजार देहली।

सलेट पैंसले बनाएं

और लाखों स्कूलों और दुकानदारों को बेचें॥ घर बैठे यह काम सीख लें। हम आप को सलेट पैंसल बनाने की दस्ती मशीन मजुरवा के लिखे जरूरी वस्तुएं और बनाने का आसान तरीका पारसल द्वारा भेज देंगे। लिख अनुसार पैंसलें बनाये जायें इस मशीन में ५ ६ मिन्ट में २४ पैंसलें बन जाती हैं। कीमत ४५) रुपया, १५) रुपया पेशगी भेजें।

रिसला रोजगार (१) कुतुब रोड देहली

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम २) डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

रबड़ के गुब्बारे व खिलौने बनाना सीखिये

मेरी लिखी हुइ विधि को पढ़ कर आप तरह २ के डिजाइनदार सादे व रगीन रबड़ के गुब्बारे गेंदे और खिलौने बनाने का काम केवल दो सौ रुपये की पूंजी लगा कर सफलता पूर्वक कर सकते हैं। विधि बहुत सरल तथा चित्रात्मक है। फीस ६) रु०। गुब्बारे बनाने के सांचे भी मेरे यहां मिल सकते हैं।

काली चरन गुप्त १७, बुध का बाजार मुरादाबाद।

२०००) रुपया इनाम अवश्य जीतिये [प्रतियोगिता न० २]

न० १ का हल

२१	३०	२
१	२०	३३
२८	२	३१

१२००) हमारे सील बन्द उत्तर से मिलाने वालों को जो स्थानीय बैंक में जमा है ७००) न्यूनतम अशुद्धियों पर, १००) सब से अधिक भेजने वाले को दिये जायेंगे। पूर्तियां भेजने की अन्तिम ता० २२—३—४८, खुलने की तारीख ३०-३-४८, उत्तर के लिये ≈) के टिकट भेजें, फीस १ पूर्ति का १), चार पूर्ति का ३), अधिक के लिये ॥) प्रति पूर्ति व पता, अधिकारीयों के सूचनों के कोष्ठों व पूर्तियों के नीचे नाम व पता पूरा लिखा जाना चाहिये।

जोड़ १८०

	६०	

पता—"कल्पना" पूर्ति प्रबन्धक [ ] रोड बाजार, कानपुर।

५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३

प्रथम पुरस्कार ३००) **न्यूनतम अशुद्धियों**

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....

पता ....

ठिकाना .... उत्तर नं० ....

इस लाइन पर काटिये

...अर ...संदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अ... इस प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले या संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहां मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहां वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि के बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर २६ अप्रैल के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल २३ अप्रैल १९४८ को दिन के २ बजे खोला जा गा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जांच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा। पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३३, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

१२ वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि १७ अप्रैल १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय
[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और ...रों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना, आज़ाद हिन्द फौज का सचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य २) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आज़ाद
[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ।।=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द
[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्बोधन का मार्ग है।

इस लिये

हिन्दू–संगठन
[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत ... और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है

मूल्य १॥) रुपया।

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तेल विज्ञान

तिलहन से लेकर तेल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।-)

तुलसी

तुलसीगण के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक

अंजीर

अंजीर के फल और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य १॥) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

...रों के लिये संग्रह ... योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय ।-)

विविध

बृहत्तर भारत
[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ।।=)

बहन के पत्र
[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व सखियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये आदर्श पुस्तक। मूल्य १)

प्रेमदूती

श्री विराज जी रचित प्रेममय, सुरुचिपूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ॥)

वैदिक वीर गर्जना
[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद-मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ।।।=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी
[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी
[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं
[सम्पादक—श्री जयन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

नया आलोक : नई छाया
[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)
लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १॥), डाक व्यय ।≈।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ॥)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य ॥)

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुनप्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

दिल्ली, सोमवार १७ चैत्र

MARCH 1948

वर्ष १४
संख्या ५१

बम्बई में गरबा नृत्य की कुछ विजयी बालिकाएं

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन
मनोरञ्जन मासिक

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* विजय पुस्तक भण्डार

❀ अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,०००   **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० ,,
सन् १९४६	१५ ,,

> १९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
> १० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

- इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
- 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
- अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

- इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
- राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
- अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
- आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १७ चैत्र सम्वत् २००४

एक दृष्टि

स्वतंत्र होने के बाद भारतवर्ष को जिन अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, काश्मीर की समस्या उनमें प्रमुख है। इसकी अपनी असाधारण विशेषताओं के कारण यह प्रश्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों महत्व प्राप्त कर गया है। पाकिस्तान की सहायता से और उसी की प्रेरणा पर कबायली आक्रान्ता काश्मीर राज्य में जो उपद्रव कर रहे हैं, उसका प्रतीकार भारतीय सेनाएं कर रही हैं। सर्दियां समाप्त हो गई हैं और सैनिक प्रवृत्तियां बढ़ने की पूर्ण सम्भावना है। इस युद्ध का परिणाम असाधारण होगा — काश्मीर जैसी महत्वपूर्ण रियासत भारतीय संघ में सम्मिलित रहेगी या उस से पृथक् हो जायगी। काश्मीर का सैनिक और भौगोलिक महत्व सभी जानते हैं। काश्मीर भारत में रहे, तो भारत का बल बहुत बढ़ जायगा और यदि वह पाकिस्तान में मिलेगा, तो उसकी शक्ति बहुत अधिक बढ़ जायगी। भारत सरकार की साम्प्रदायिक नीति पर भी इस का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ रहा है। काश्मीर की भौगोलिक स्थिति ही उस को अन्तर्राष्ट्रीय संकट का प्रश्न बना रही है। ब्रिटेन और अमरीका पाकिस्तान को प्रश्रय दे रहे हैं, रूस की सीमा पर स्थित काश्मीर को वे भारत के साथ मिलने नहीं देना चाहते। यह एक सत्य है, यद्यपि इसे ये दोनों देश स्वीकार नहीं करना चाहते। यही कारण है कि सुरक्षा समिति में चीनी प्रतिनिधि श्री सियाग के प्रस्ताव के पास होने में अनेकानेक बाधाएं आ रही हैं। काश्मीर के प्रश्न ने भारत को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक चक्रमें बुरी तरह उलझा दिया है। देखना यह है कि भारतीय नेता इस नई गुत्थी को कैसे सुलझाते हैं।

× × ×

काश्मीर के प्रश्न के साथ अन्य भी अनेक प्रश्न पाकिस्तान व भारत के बीच विवादास्पद हैं। इन पर सुरक्षा समिति में सर जफरुल्ला जोर दे रहे हैं। इन प्रश्नों पर सुरक्षासमिति कोई शीघ्र निर्णय करेगी, इसकी सम्भावना कम है लेकिन इस कारण इनका महत्व कम नहीं हो जाता। पाकिस्तान व भारतीय संघ की सरकारें सम्पत्ति के परिवर्तन, शरणार्थी नारियों के वापस दिलाने और बैंकों व पुराने कर्जों के बटवारे या अदायगी आदि के प्रश्नों पर आपसी समझौते की चर्चा कर रही हैं। इन सब के शान्तिपूर्वक समझौते के लिए आवश्यक यह है कि पाकिस्तान की सरकार अल्पसंख्यकों के साथ न्याय की नीति स्वीकार करे। भारत सरकार तो अत्यन्त उत्साह व दृढ़ता से अपने को असाम्प्रदायिक सिद्ध करने का प्रयत्न कर रही है। म० गांधी के अमर बलिदान ने साम्प्रदायिक ऐक्य की भावना को बहुत अधिक बल दिया है। इस भावना को स्थायी रखने की जिम्मेवारी पाकिस्तान सरकार पर आती है। लेकिन हमें भय है कि जब तक मि० जिन्ना के हाथ में पाकिस्तान की बागडोर है, यह नहीं होगा उनकी सफलता का मुख्य आधार ही साम्प्रदायिकता रहा है और उनका पाकिस्तान इसी की नींव पर ही खड़ा किया गया है। वे अपने मूल आधार को नहीं छोड़ सकते। ढाका में दिया गया मि० जिन्ना का भाषण भी इसी का प्रमाण है।

× × ×

पिछले दिनों पाकिस्तान में सीमान्त के तपस्वी प्रतिष्ठित नेता खां अब्दुल गफ्फार खां ने एक नये दल की स्थापना की है। इसका आधार असाम्प्रदायिकता और साम्यवादी प्रजातन्त्र है। पाकिस्तान की नयी समस्याएं जो रूप धारण कर रही हैं, वे बहुत सम्भवतः इस दल के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करेंगी। आज पाकिस्तान के नागरिकों के सामने हिन्दू या सिख का हौआ खड़ा नहीं किया जा सकता। रोटी और कपड़े का सवाल ही आज वहां का बड़ा सवाल है और इसके लिए राज्य को धर्मान्धता के चंगुल से बचाकर विशुद्ध आर्थिक संगठन की दशा में चलाना होगा। धर्मान्धता का नारा समाप्त होते ही साम्प्रदायिक एकता की प्रवृत्तियां जोर पकड़ना आरम्भ करेंगी। लेकिन यह सब परिवर्तन कितने समय तक होता है, यह अभी नहीं कहा जा सकता।

× × ×

भारत वर्ष के अन्दर में भी इस समय महान् परिवर्तन हो रहे हैं, जो इसके भविष्य पर असाधारण प्रभाव डालेंगे। इनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण है रियासतों का संगठन। सरदार पटेल की प्रतिभा, व्यवहारकुशलता तथा योग्यता के कारण जो काम कुछ महीने पहले अत्यन्त कठिन प्रतीत होता था, वह अब प्रायः समाप्त होने लगा है। पिछले दिसम्बर मास से रियासतों का एकीकरण प्रारम्भ हुआ है और आज तक अधिकांश रियासतें एक सूत्र में ग्रथित हो गई हैं। इस दशा में 'राजस्थान संघ' की स्थापना सबसे नया समाचार है। कोटा, बूंदी, शाहपुरा, झालावाड़ आदि ६ रियासतों ने मिल कर इस संघ की स्थापना की है। इस नये संघ का क्षेत्रफल १६००० वर्ग मील, आबादी २५ लाख तथा आय २ करोड़ रु० के करीब है। उदयपुर के भी इस में सम्मिलित होने की चर्चा है। जोधपुर, जयपुर, बीकानेर तथा सिरोही आदि रियासतें अपना निश्चय यथा शीघ्र करेंगी, ऐसी आशा है। अलवर, भरतपुर, धौलपुर तथा करौली की रियासतें इससे पूर्व ही मत्स्य संघ में सम्मिलित हो चुकी हैं। रीवा और बुन्देलखण्ड की रियासतों को मिला कर एक विन्ध्यप्रदेश संघ बना लिया गया है, जिसकी स्थापना मई तक हो जाने की सम्भावना है इस संघ का क्षेत्रफल २५०००० वर्गमील, आबादी ३६ लाख और वार्षिक आय २॥ करोड़ रु० होगी। उड़ीसा व मध्यप्रान्त में बहुत सी रियासतें मिल चुकी हैं, बम्बई प्रान्त में मिलने वाली रियासतों का क्षेत्रफल २७,००० वर्ग मील है। सौराष्ट्र संघ में करीब ३०० रियासतें संगठित हो चुकी हैं शेष भी अनेक रियासतें परस्पर संगठित होकर भारत की एक बड़ी समस्या को सरल कर देंगी दूसरी ओर हैदराबाद की समस्या विकटतर हो रही है। वहां रजाकार जिस उद्दण्ड प्रवृत्ति का परिचय दे रहे हैं, उसका प्रभाव शायद उसके हक में अच्छा न पड़ेगा। समाजवादियों ने रियासत से बातचीत बन्द करके कठोर नीति का आश्रय लेने का संकेत दिया है। सरदार पटेल जिस धैर्य बुद्धिमत्ता दृढ़ता व शान्ति के साथ रियासतों की समस्या हल कर रहे हैं, उससे प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में हैदराबाद का भी वे कोई समाधान ढूंढ निकालेंगे।

× × ×

देश के सार्वजनिक जीवन की दिशा में पिछले दिनों दो महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं एक है सर्वोदय समाज की स्थापना और दूसरा है समाजवादी दल का कांग्रेस से सम्बन्धविच्छेद। सर्वोदय समाज का उद्देश्य गांधीजी के आदर्शों पर स्थापित प्रवृत्तियों को जारी रखना है। राजेन्द्र बाबू जैसे तपस्वी और निष्ठावान् व्यक्ति इसके नेता हैं। गांधी जी का व्यक्तित्व महान् था, उसकी छाप भी भारत के हृदयों पर है और उनका नाम लेकर अब भी जनता को आकृष्ट किया जा सकता है। लेकिन हमें भय अवश्य है कि गांधी जी के आदर्शों को अमल में लाने के लिए जिस असाधारण व्यक्तित्व और क्रान्तिकारी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, वह हम में नहीं है। हमारा अधिकारी वर्ग जिस यूरोपियन दृष्टिकोण का समर्थक हो गया है और दुनिया की दौड़ में व्यावसायिक प्रगति की जिन योजनाओं को अमल में लाने का प्रयत्न कर रहा है, उनके साथ सर्वोदय समाज की प्रवृत्तियों का कहां तक समन्वय होगा, यह हम अभी नहीं समझ पाये हैं। आज सरकारी व्यवसाय नीति गांधीवाद से स्पष्ट विरोधी मार्ग पर चलने की है इसे हजार बार दिये गये आश्वासन भी गलत सिद्ध नहीं कर सकते। तब गांधीवाद को सर्वोदय समाज कहां तक आगे बढ़ा सकेगा? गांधी जी के आदर्शों का पालन करने के लिए जिस उच्च-चरित्र और निष्ठा की आवश्यकता है, वह आज देश में दुर्लभ है। स्वयं कांग्रेस कार्यकर्ताओं के जीवन भ्रष्टाचार और बेईमानी से पूर्ण हो रहे हैं।

× × ×

समाजवादी दल की स्थापना कांग्रेस के प्रति स्पष्ट विद्रोह है। यों समाजवादी नेता कांग्रेस में रहते हुए भी उसकी कठोर आलोचना कर रहे थे। दिनों दिन कांग्रेस के साथ उनका मतभेद लगातार बढ़ रहा था। दोनों का सम्बन्धविच्छेद अनिवार्य था। प० जवाहर लाल नेहरू ने पिछले दिनों समाजवादियों से यह अपील की थी कि वे दो साल तक अपने मतभेदों को दबा कर कांग्रेस से सम्बन्ध विच्छेद न करें। लेकिन यह नहीं हुआ और अब समाजवादी दल भारत सरकार के विरोधी दल के रूप में खड़ा हो गया है। विरोधी दल किसी भी प्रजातन्त्रीय सरकार को नियन्त्रित करने के लिए आवश्यक है। लेकिन हमें संदेह है कि यह नया दल भारत के सार्वजनिक जीवन को अधिक कटुतापूर्ण बना देगा तथा भारत की समस्याओं को अधिक तीव्र बना देगा। मजदूरों में ही मतभेद पैदा करने के लिए उन्होंने एक और मजदूर संघ स्थापित करने का निश्चय किया है। इस तरह भारतवर्ष में साम्प्रदायिक संघर्ष के स्थान पर आर्थिक संघर्ष स्थान ले लेगा। यह संघर्ष भी कम कटु न होगा और देश को नये मार्गों में विभक्त कर देगा। वर्तमान सरकार आर्थिक संघर्ष में समन्वय की नीति अपना रही है, लेकिन यह समाजवादी दल इस नीति के मार्ग में बड़ी बाधाएं डालेगा और यही नयी समस्या देश की प्रधान समस्या बन जायगी।

× × ×

भारतवर्ष इस तरह जिन विभिन्न समस्याओं में उलझ रहा है, उन से भी अधिक कठोर और विषम समस्याएं आज विश्व के प्रांगण में हो रही हैं। रूस और अमेरिका जिस तरह अपनी बल वृद्धि करने के लिए तरह तरह की कुटिल चालें चल रहे हैं, वे आज यहां तक बढ़ गई हैं कि निकट भविष्य में तीसरे विश्व-युद्ध की भविष्यवाणी प्रायः सारे विश्व में की जाने लगी है। जेकोस्लावेकिया पर रूस के नियन्त्रण, जर्मनी की 'नियंत्रण' समिति का भंग, ट्रूमेन की नई अनिवार्य सैनिक शिक्षा तथा मार्शल योजना और फिलस्तीन के प्रश्न पर नई अमरीकन नीति ने संसार की स्थिति को १६३६ से भी

काश्मीर के प्रश्न पर पुनः गतिरोध की आशंका

सुरक्षा कौंसिल में काश्मीर सम्बन्धी बहस एक सप्ताह के लिए स्थगित हो गई है। चीन ने जो सुझाव रखा था कि जनमत संग्रह के दौरान में भारतीय सेना काश्मीर में रहे और शेख अब्दुल्ला की वर्तमान सरकार को ही जनमत संग्रह का परिणाम निकलने तक काश्मीर का शासन सूत्र सम्भाले रखना चाहिये, उसी के कारण उलझन पड़ी हुई है। पाकिस्तान इस सुझाव को मानना नहीं चाहता। और कोई व्यावहारिक हल किसी को सूझता नहीं। मित्रराष्ट्र संघ की अपनी कोई अन्तर्राष्ट्रीय सेना नहीं है, जिसके तत्वावधान में जन मत लिया जा सके।

प्रधानमन्त्री ने भारतीय पालियामेण्ट में यह बताया है कि हैदराबाद की कुछ फर्में कुछ समय से निजाम सरकार की सहायता से पिस्तौलें, रायफिलें और गोला बारूद तय्यार कर रही है।

राजस्थान संघ

निर्माण मन्त्री श्री गाडगिल ने कोटा में राजस्थान संघ का उद्घाटन किया है। यह संघ सात रियासतों को मिला कर बनाया गया है।

चन्द्रनगर द्वारा भारत में शामिल होने की घोषणा

चन्द्रनगर एक फ्रेंच उपनिवेश है। वहा की शासन-कौंसिल ने अविलम्ब भारत में शामिल होने की घोषणा कर दी।

अधिक विषम बना दिया है। इसका कोई समाधान शीघ्र न हुआ तो अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और भी अधिक विषम हो सकती है। विश्व के तीसरे महा युद्ध की विकराल ज्वाला से बचाने का एक उपाय आज यही है कि एशिया स्वय इतना समर्थ और शक्तिशाली हो जावे कि रूस व अमरीका कोई भी उसे अपने दावपेचों का अखाड़ा न बना सके। जिस दिन एशिया अपने पैरों पर स्वय खड़ा हो जायगा, उसे कोई अपना हथियार न बना सकेगा, उसी दिन प्रभाव वृद्धि की होड़ का यह विषम चक्र समाप्त हो जायेगा। तीसरे महा युद्ध को रोकने का अन्य कोई मार्ग नही है।

पूर्वी पंजाब की राजधानी

पूर्वी पंजाब की स्थायी राजधानी रोपड़ तथा चण्डीगढ़ के मध्य पहाड़ की तराई में बनेगी। यह स्थान अम्बाला से २० मील के लगभग दूर है निकटतम रेलवे स्टेशन चण्डीगढ़ है, जो अम्बाला-कालका लाईन पर स्थित है।

ठेकों को मानने से पाकिस्तान का इंकार

१५ अगस्त से पूर्व भारत सरकार के उद्योग व रसद विभाग द्वारा किये गये ठेकों की देनदारी से पाकिस्तान मुकर गया है। ये देनदारियां कई करोड़ रुपये की हैं।

पाकिस्तानी नोट भारत में नहीं चलेंगे

रिजर्व बैंक आफ इण्डिया ने घोषणा की है कि पाकिस्तान में जारी किये जाने वाले नये बैंक नोट, जिन पर अंग्रेजी व उर्दू में गवर्नमेण्ट आफ पाकिस्तान छपा होगा, भारत में नहीं चल सकेंगे। पाकिस्तान में एक अप्रैल से नये नोट चलेंगे। भारत सरकार के नोट पाकिस्तान में ३० सितम्बर तक चलते रहेंगे।

कलात के खान का विरोध

पाकिस्तान सरकार ने कलात रियासत की तीन जागीरों — लासबेला, खरन, और मकराना — के पाकिस्तान में मिलने की घोषणा की है। कलात के खान ने इसका प्रतिवाद किया है।

पूर्वी पंजाब की भाषा

पूर्वी पंजाब के प्रधानमन्त्री ने घोषणा की है कि पूर्वी पंजाब की राजभाषा हिन्दी और गुरुमुखी होगी। कर्मचारियों को तीन मास के अन्दर हिन्दी सीखने का आदेश दे दिया गया है।

समाजवादी पन्द्रह अप्रैल से कांग्रेस से अलग

सोशलिस्ट पार्टी के कन्वेन्शन ने एक प्रस्ताव पास करके सब समाजवादी दल के सदस्यों को आदेश दिया है कि वे पन्द्रह अप्रैल तक कांग्रेस की प्रारम्भिक सदस्यता तथा उसके निर्वाचित पदों से त्याग पत्र दे दें।

अमेरिका बेड़ा भूमध्य सागर में

अमेरिकन कांग्रेसमैन मिलर ने यह रहस्य प्रकट किया है कि इस समय अधिकांश अमेरिकन जहाज भूमध्य-सागर में पहुंचे हुए हैं। इन जहाजों में जापान में फेंके गये परमाणु बमों से भी अधिक शक्तिशाली परमाणुबम हैं।

फिलस्तीन की समस्या

अमेरिका ने फिलस्तीन के विभाजन की योजना छोड़ दी है और सुरक्षा कौंसिल में यह सुझाव रखा है कि फिलस्तीन को ट्रस्टीशिप में ले लिया जाय। फ्रांस और कनाडा ने इस प्रस्ताव का समर्थन नहीं किया। इधर अमेरिका के इस निश्चय के बाद भी ब्रिटेन की नीति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। विदेश मन्त्री बेविन ने घोषणा की है कि १५ मई को ब्रिटिश सेनाएं फिलस्तीन को अवश्य ही खाली कर देंगी फिर चाहे अराजकता ही क्यों न हो। अराजकता से फिलस्तीन को बचाना मित्रराष्ट्र संघ का काम है, न कि ब्रिटेन का। अलबत्ता ब्रिटेन अरबों और यहूदियों में अपनी ओर से समझौता कराने का पूरा प्रयत्न करेगा।

होली

[देवराज "दिनेश"]

रक्त रंग से खेल रही जब होली दुनिया सारी,
ज्ञात नहीं, तुम क्यों ले आई रंग भरी पिचकारी।

तुम से नहीं, शत्रु से मुझको आज खेलनी होली,
तुम को भी सगिनि बन करके चलना होगा भोली।
दुनिया जब बारूद बिखेर रही है सब के ऊपर,
ज्ञात नहीं तुम क्यों मुट्ठी में भर लाई हो रोली।

जाओ सखि, सखियों से कह दो करले तेज कटारी,
ज्ञात नहीं तुम क्यों ले आई रंग भरी पिचकारी।

क्या कहती हो, शक्तिहीन क्या होली खेल सकेगा,
कैसे नर कंकाल शत्रु का झटका झेल सकेगा।
भूख, नंग, औ' तड़प देश में बिखरी हुई पड़ी है,
रंग ठीक है, रक्त हीन क्या रक्त उडेल सकेगा।

प्रथा पुरानी मना रहे हैं भारत के नर नारी,
रक्त रंग से खेल रही जब होली दुनिया सारी।

मै मानव, पर अब दानव बन कर होली खेलूंगा,
बनकर अचल हिमालय रिपु के सब झटके झेलूंगा।
बहुत दिनों से खेल रहा हूं नीली पीली होली,
सब उपकरण प्रलय के अपने साथ आज ले लूंगा।

कुछ दिन दूर हटादो रानी मानवता बेचारी,
ज्ञात नहीं तुम क्यों ले आई रंग भरी पिचकारी।

आज होलिका नहीं मुझे पग पग पर चिता जलानी,
चारों ओर आज फिर मुझको बुझी अग्नि दहकानी।
ऐसे लगे कि जैसे मरघट आज जल रहा जग में,
आज दूध की नहीं रक्त की होगी नदी बहानी।

निर्माता तो नहीं आज कहलाना है संहारी,
रक्त रंग से खेल रही जब होली दुनिया सारी।

किन्तु अभी तो मुझको है यह दूषित महल गिराना,
बाद प्रलय के इसी खंडहर पर है महल बनाना।
फिर हम तुम दोनों खेलेंगे रानी मिल कर होली,
जैसी इच्छा हो मन मानी होली प्रिये मनाना।

सुरभित मादक पवन चल रही हो जब प्यारी प्यारी,
कुछ दिन दूर हटादो रानी मानवता बेचारी,

स्वीस मेड ठीक समय देने वाली ३ वर्ष की गारंटी सोल्ड या स्क्वायर शेप १६॥) सुपीरियर-२०॥) स्क्वायर शेप क्रोमियम केस २४) स्क्वायर शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारंटी २२), स्क्वायर शेप १५ ज्वेल क्रोम केस-२८), स्क्वायर शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड-७२)

रेक्टेंगुलर फर्म या टोनो शेप

क्रोमियम केस-२२), सुपिरियर-२२), रोल्ड गोल्ड ३०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ... १८)२२) ... २४) पोस्टेज खर्च कोई दो घड़ी लेने से माफ।

एच० डेविड० एण्ड कं० [V. A.]
पो० बक्स नं० ११०२२ कलकत्ता।

समाचार चित्रावली

रामलीला मैदान, दिल्ली में हुए सैनिक समारोह का भारत के प्रधानमन्त्री श्री पं० जवाहरलाल नेहरू, पश्चिमी सैनिक क्षेत्र के सेनापति श्री करियप्पा तथा रक्षा मन्त्री श्री सरदार बलदेवसिंह निरीक्षण कर रहे हैं।

श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज के दीक्षान्त समारोह में।

मत्स्य संघ का उद्घाटन श्री गाडगिल कर रहे हैं। धौलपुर के राजा, जो मत्स्य संघ के प्रमुख हैं, साथ खड़े हैं।

श्री जयप्रकाशनारायण ने कांग्रेस की सदस्यता से स्तीफा देने का निश्चय कर लिया है।

अफगानिस्तान में भारतीय दूत विंग कमाण्डर श्री रूपचन्द।

सेवाग्राम में सर्वोदय समाज की स्थापना श्री राजेन्द्र बाबू के नेतृत्व में की गई।

पूर्वी पंजाब की चिट्ठी

पंजाब में क्या हो रहा है ?

पूर्वी पंजाब के सीमाप्रांतीय शहर

१६ फरवरी से २८ फरवरी तक हमें पूर्वी पंजाब के सीमाप्रान्तीय शहरों-कपूरथला फिरोजपुर अबोहर, भटिंडा में जाने का अवसर मिला। इन स्थानों में हमने यह अनुभव किया कि अमृतसर और जालन्धर की जनता की अपेक्षा इन शहरों की जनता कम भयभीत है। फिरोजपुर में नदी के पार एकाध सीमा सूचक लाइन पर पाकिस्तान के मुसलमान और हिन्दुस्तान के पंजाबी हिन्दू रविवार के दिन भेंट करते हैं। कई तो परस्पर लेन देन करते हैं। नदी पार शहीद भगतसिंह की समाधि पर, जो पाकिस्तान में है। तिरंगा लहरा रहा है।। पिछले दिनों कसूर के एक हिन्दू मारा गया था। इस पर कसूर शहर के मुसलमानों ने हड़ताल कर डिप्टी कमिश्नर को इस प्रकार की हत्या को रोकने के लिये सतर्क होने के लिये बाधित किया। फिरोजपुर शहर तथा छावनी में हत्याकांड तथा अग्निकांड कम मात्रा में हुए। आज कल देहातियों को हथियार भी दिये जा रहे हैं।

परन्तु जल प्रलय के कारण शानदार इमारतें भी निकम्मी हो गई हैं। फिरोजपुर छावनी में फौजों का विशेष प्रबन्ध है। इन दिनों साधारण जनता को सेना में भर्ती कर विशेष रूप से शिक्षित किया जा रहा है। भटिंडा आदि पटियाला रियासत के शहरों से भी जनता भयभीत होकर जा रही थी, परन्तु पटियाला महाराजा ने विशेष विज्ञप्ति निकाल कर घोषणा की कि जो व्यक्ति शहर छोड़ेगा उसका मकान जायदाद उसको वापिस नहीं मिलेगी। इससे जनता का निष्क्रमण रुक गया। अबोहर की मंडी से ३०, ४० मील पर हिन्दू मलकोट स्थान इधर से सीमाप्रान्त का अन्तिम स्थान है। प्रारम्भ में अबोहर में भी जनता की भगदड़ शुरू हुई। व्यापारी मंडी छोड़ गये। परन्तु अब फिर जनता टिक रही है। अबोहर का 'साहित्य सदन' इन राजविप्लव के दिनों में सुरक्षित रहा। इन दिनों अबोहर भी फिरोजपुर की भांति पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की जनता के परस्पर मिलने का स्थान बना हुआ है।

इसी यात्रा प्रसंग में हमें सर छोटूराम के रोहतक शहर में जाने का अवसर मिला। यहां झंग मुजफ्फरगढ़ के और मुलतान की ओर के शरणार्थियों को टिकाया गया है। कई साल पहले यह शहर सुनसान-सा शहर दिखाई देता था, परन्तु इन दिनों शरणार्थियों के कारण शहर की रौनक बदल गई है। पंजाब के अनेक शहरों में रोहतक एक ऐसा शहर है, जहां मुसलमान जाटों की शानदार बिल्डिंगें उनके वैभव को अब तक प्रकट करती हैं। सौभाग्य से इन मकानों में अग्निकाड नहीं हुए। इसलिये शरणार्थियों को मकान अच्छी हालत में और जल्दी मिल रहे हैं।

नई राजधानी ?

इधर भटिंडे से हम पटियाला के मार्ग से अम्बाला छावनी होते हुए कुरुक्षेत्र कैम्प में रहकर शिमला पहुंचे। इन दिनों एक मार्च से शिमला में पूर्वी पंजाब सरकार के कार्यालय आ रहे हैं। इस यात्रा में हमने अनुभव किया कि पटियाला रियासत की जनता पटियाला महाराजा के प्रति विशेष रूप से आकृष्ट हो रही है। अब यह भी पता लगा है कि पाकिस्तान के अनेक नारों में से एक नारा यह भी है। तुम्हारा दुश्मन कौन है? (उत्तर) पटियाला और पटेल।' हमने अनेक सिखों तथा हिन्दुओं में पुनः पाकिस्तान जाने और पाकिस्तान को पुनः हिन्दुस्तान का अंग बनाने के लिये हिंसा अहिंसा, व्यापार व्यवसाय द्वारा उत्सुक और उत्कण्ठित देखा। पूर्वीय पंजाब की नई राजधानी अम्बाला के आस पास बनने की अफवाह ने अम्बाला नगर, अम्बाला छावनी में विशेष प्रगति पैदा कर दी है। अनेक लोग इधर आकर बसने की सोच रहे हैं। लाहौर के ट्रिब्यून के प्रेस अखबार शिमला शैल से उतर कर अम्बाला छावनी में आ रहे हैं। प्रेस तथा अखबार के लिये अम्बाला छावनी में कोठी भी ले ली है। इसी प्रकार से अम्बाला शहर में पानी की तंगी होने के बावजूद लाहौर डी० ए० वी० कालेज को शिक्षणालय की शानदार बिल्डिंग उन्हें मिल गई है। अम्बाला छावनी में फौजी दफ्तर विशेष रूप में बनाए जा रहे हैं। अम्बाला छावनी की इसलाटमैण्ट कमेटी की कार्य नीति से जनता अत्यन्त असन्तुष्ट है। कांग्रेस पार्टी के अन्दरूनी झगड़ों ने स्थिति को और भी बिगाड़ दिया है। कुछेक राष्ट्रवादी यहीं अम्बाला छावनी में महात्मा गांधी की स्मृति में नया कालेज खोल रहे हैं। सनातन धर्म सभा वाले भी लाहौर के सनातनधर्म कालेज को यहां ला रहे हैं—यह सब कार्य अम्बाला के समीप राजधानी बनने की सम्भावना के भरोसे किये जा रहे हैं परन्तु पूर्वी पंजाब की सरकार ने अभी तक इस विषय में कोई घोषणा नहीं की।

हमारी सम्मति में अम्बाला के आस पास राजधानी बना कर पंजाब की सरकार जनता में पाकिस्तान से भयभीत होने की भावना को दृढ़ कर रही है। यदि पेरिस सीमा लाइन के पास होते हुए फ्रांस की राजधानी बन सकती है, तो जालन्धर लुधियाना भी पंजाब की राजधानी बन

[शेष पृष्ठ १४ पर]

रूस के नागरिकों की आय

[श्री एम० विस्लेनेस्की]

स्वर्गीय वलेरी चकलोव एक महान् सोवियत हवाबाज था। वह पहला पुरुष था, जिसने बिना विश्राम के सोवियत यूनियन से अमरीका तक उड़ान की थी। एक अमरीकी संवाददाता ने उससे पूछा — तुम्हारी सम्पत्ति क्या है? हवाबाज ने उत्तर दिया —'मुझे इस बारे में कोई शिकायत नहीं। मैं अपने आपको संसार का सबसे धनी पुरुष समझता हूं।' संवाददाता यह सुन कर दंग रह गया। उसने पूछा — तुम्हारे पास कितना धन है? उसने उत्तर दिया — तुम स्वयं अनुमान लगा सकते हो। मैं सोवियत यूनियन की सारी सम्पत्ति का हिस्सेदार हूं। हरेक मेरे लिए कोई न कोई काम करता है। मैं भी दूसरों के लिए कुछ न कुछ काम करता हूं।

यह हास्य की बात नहीं थी, न ही यह ऊंचे उद्देश्य की शेखी बघारना था। इस प्रसिद्ध सोवियत हवाबाज के यह शब्द बिलकुल सच्चे हैं, क्योंकि सोवियत यूनियन में यही स्थिति विद्यमान है। हरेक सोवियतवासी चाहे उसका सामाजिक स्थान कुछ ही हो, उसकी जाति भिन्न हो, अपने आपको देश की सम्पत्ति का भागी समझता है। धन किसी व्यक्ति का नहीं सबका साझा है, जनता का है। इसीलिए सारे लोग और हरेक सोवियतवासी सोवियत उद्योग कृषि और व्यापार के फलों को चखता है। इसका सबूत क्या? १९४८ का सरकारी बजट देखें। इसकी आय राष्ट्रीय कामों से होती है। इस आय का ३५ प्रतिशत भाग राष्ट्रीय योजनाओं पर खर्च होता है, ३० प्रतिशत शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक बीमा और पेनशन पर खर्च होता है। जितनी राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओं से आमदनी होती है, उतना अधिक जनता के हितों के लिए खर्च होता है। यह स्वाभाविक है कि आमदनी के बढ़ने से श्रमजीवियों की सम्पन्नता बढ़ती है और लाखों लोगों के जीवन में सुधार होता जाता है।

सोवियतवासियों की आय के क्या साधन हैं? एक तो वे अपने परिश्रम से धन कमाते हैं। बीमारी के समय उनकी आमदनी कायम रहती है। अवकाश के समय भी उनको पूरा वेतन मिलता है। अपनी योग्यता को बढ़ाने के लिए उन्हें सरकार से पूरी सहायता मिलती है।

सोवियत यूनियन में शिक्षा निःशुल्क मिलती है। इस वर्ष के सरकारी बजट में ५६ अरब दस करोड़ रूबल (दस आने का रूबल) शिक्षा के लिए लगाए जायेंगे। हरेक सोवियत शहरी को अवसर प्राप्त है कि वह अपने बच्चों को शिक्षा दे सके। उनको कोई काम सदा मिल सकता है, क्योंकि इस देश में बेकारी का सवाल ही नहीं पैदा होता।

शिक्षा के अतिरिक्त डाक्टरी सहायता भी बिना खर्च किए मिलती है। अच्छे से अच्छे डाक्टर इलाज के लिए प्राप्त हैं। क्या यह सुविधाएं आमदनी का हिस्सा नहीं हैं? १८ अरब रूबल १९४७ में जनता के स्वास्थ्य पर खर्च किये गए। इस साल २० अरब ५० करोड़ रूबल लोगों के स्वास्थ्य पर खर्च होंगे। यह धन कहां से आता है? उद्योगों और व्यापार से प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त रहने के लिए मकानों पर काफी धन खर्च किया जाता है। किराया बहुत कम लिया जाता है। यह व्यक्ति की आय का ५, ६ प्रतिशत भाग से अधिक नहीं होता। यदि एक शहरी को अपना मकान रखना पड़े तो इससे कहीं अधिक खर्च हो। क्या यह सोवियत जनता की आय का एक भाग नहीं है?

बूढ़ों को पेनशन मिलती है। काम के लिए जो अयोग्य हो जाय, इनको भी इसी आय से सहायता मिलती है। बड़े बड़े परिवारों को विशेष सहायता मिलती है। बच्चों को सुख पहुंचाने के लिए और उनकी देखभाल के लिए काफी धन खर्च किया जाता है।

सोवियत यूनियन की जनता को पूरी आशा और विश्वास है कि उसका भविष्य उज्ज्वल है। उसे आर्थिक संकट का कोई भय नहीं है। गरीबी, बेकारी का सवाल ही पैदा नहीं होता। सोवियत जनता अपने परिश्रम का फल स्वयं चखती है। यूनियन की सारी सम्पत्ति व सारे साधन लोगों के हित में लगाये जाते हैं।

———

आर्यसमाज और राजनीति

[प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

[शिवरात्रि के अवसर पर आर्यसमाज दीवान हाल के ऋषि बोधोत्सव में सभापति के आसन से दिये गये भाषण का सारांश]

राजनैतिक स्वाधीनता का आधार

आज हम प्रसन्न हैं कि हमारा देश स्वाधीन हो गया और हम स्वाधीन देश के नागरिक हैं।

इस प्रसन्नता के समय में हमें गम्भीरता से यह विचार करना चाहिये कि हम लगभग दस सदियों की राजनैतिक दासता से कैसे छूट गये गत ६० वर्षों में जो राष्ट्रीय आन्दोलन हुआ, उसे हम जानते हैं। वह वर्तमान समय की घटना है। उसमें हम सब ने न्यूनाधिक भाग लिया। जिन देशभक्तों की आहुतियों से वह यज्ञ पूर्ण हुआ, उनके नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे गये हैं। बहुत से कारणों ने दासता के किले को तोड़ने और स्वराज्य प्राप्त करने में सहायता दी है। परन्तु हमें और अधिक गहराई में जाकर यह भी विचार करना चाहिये कि वर्तमान राजनैतिक क्रान्ति के मूल कारण क्या थे। इस प्रश्न पर सोचते हुए हमें एक ऐतिहासिक सचाई पर ध्यान देना चाहिये। भारत के प्राचीन इतिहास में हम एक विशेष बात पाते हैं। ईसा की ८वीं शताब्दी से पहले भारत पर विदेशियों के अनेक आक्रमण हुए। यूनानी लोग, विश्व विजेता सिकन्दर के नेतृत्व में भारत पर चढ़ कर आये, परन्तु व्यास नदी से आगे न बढ़ सके और थोड़ा बहुत समय व्यतीत होने पर ही देश की सीमाओं से बाहर धकेल दिये गये। सीथियन, हूण और शक जातियों ने समय-समय पर भारत पर आक्रमण किये, कुछ समय के लिये सफलता प्राप्त की। परन्तु अन्त में या तो भारतीय राष्ट्र में समा गये अथवा मार कर भगा दिये गये। जो जाति इस तरह कई युगों तक विदेशियों को मुंहतोड़ जवाब देती रही, वही मुसलमान आक्रान्ताओं से परास्त होती गई और लगभग दस सदियों तक मुसलमानों और फिर दो सदी तक अंग्रेजों के न्यूनाधिक प्रभुत्व में रही। स्वाधीनता की इन सदियों की भी यह विशेषता है कि जहां पहली आठ नौ सदियों तक कोई देशव्यापी राजनैतिक क्रान्ति उत्पन्न होती नहीं हुई १६वीं १७वीं शताब्दी में महाराष्ट्र और पंजाब में और १९वीं २०वीं शताब्दी में जो क्रान्तियां उत्पन्न हुईं, वे बहुत कुछ सफल हुईं। उनमें भेद इतना ही था कि जहां महाराष्ट्र और पंजाब की क्रान्तियां कुछ सीमित थीं, वहां १९वीं २०वीं शताब्दी की क्रान्ति देशव्यापी होने से बहुत विस्तृत और गहरी होकर अन्ततः में सफल हो गयी। हमें सोचना चाहिये कि पहली नौ सदियों की क्रान्तियों की असफलता और पिछली ३-४ क्रान्तियों की सफलता का क्या कारण था।

मानसिक और सामाजिक क्रान्ति

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि राजनैतिक दासता किसी जाति पर एकाएक नहीं आ जाती। वह उस जाति की मानसिक और सामाजिक दासताओं का परिणाम होती है राजनैतिक दासता के किले की बुनियाद और दीवार मानसिक और सामाजिक दासता से बनती है। राजनैतिक दासता तो उस किले की मीनारों का काम देती है, जो बाहर से दिखाई तो अधिक स्पष्टता से देती हैं, परन्तु उसकी जड़ें अधिक गहरी नहीं होतीं केवल मीनारों को तोड़ने से कोई गढ़ नहीं टूटता। गढ़ तो टूटता है उस की दीवारों को नष्ट कर देने से। केवल मीनारों को तोड़ने का यत्न करने से तो गोला बारूद का ही व्यर्थ व्यय होता है।

इस ऐतिहासिक सत्य को सामने रखकर विचार करें तो हमारी समझ में क्रान्तियों की सफलता और असफलता का रहस्य आ जायेगा। जब तक कोई जाति मानसिक और सामाजिक दासता में नहीं जकड़ी जाती, तब तक वह स्थिर रूप से राजनैतिक दासता में नहीं फंस सकती। जहां यूनानी, सीथियन, हूण और शक विजेता असफल हुए वहां मुसलमान आक्रान्ताओं को भारत पर विजयी होने का अवसर केवल इसलिये मिल गया कि उनके आक्रमणों के समय हमारी जाति में हर प्रकार की बुराइयां घर कर चुकी थीं, जिससे समाज का शरीर बिल्कुल खोखला हो चुका था। मुसलमानों के लम्बे शासन काल में किसी राजनैतिक क्रांति के सफल न होने का कारण यह था कि उनके पीछे धर्म, समाज या संस्कृति की सुधारणा का कोई आन्दोलन नहीं था। जब समाज की बुराइयां वैसी की वैसी विद्यमान रही हों, तब उसके कारण आयी हुई राजनीतिक गुलामी कैसे दूर हो सकती थी। छत्रपति शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह को जो राजनीतिक सफलता प्राप्त हुई, उसका कारण यह था कि समर्थ गुरु रामदास और गुरु नानक जैसे आचार्यों और सन्तों ने मानसिक और सामाजिक दासता के गढ़ की दीवारों को हिला दिया था। वर्तमान युग में कांग्रेस और महात्मा गांधी की अद्भुत सफलता का भी यही रहस्य था कि महर्षि दयानन्द तथा अन्य सुधारक आचार्यों और आर्य समाज जैसी संस्थाओं ने जाति में विचार और गहरी मानसिक तथा सामाजिक क्रान्ति पैदा कर दी थी, जिससे भारतीय सत्ता का दुर्ग आमूलचूल हिल चुका था। इस कारण हमारा यह कहना सर्वथा न्यायसंगत है कि जाति की वर्तमान राष्ट्रीय स्वाधीनता का आदि कारण महर्षि दयानन्द का सुधार कार्य है। आज ऋषिबोधोत्सव के दिन हमें इस सत्य का स्मरण करना चाहिये।

मानसिक क्रान्ति का प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द

यह असन्दिग्ध बात है कि भारत के वर्तमान युग में जिस महापुरुष ने युगों पुराने कुसंस्कारों और कुरीतियों के ढेरों को आग लगा कर सुधार का मैदान साफ किया, वह महर्षि दयानन्द था। महर्षि ने उस विचार क्रान्ति का प्रारम्भ किया, जिससे धार्मिक और सामाजिक क्रान्तियां उत्पन्न हुईं। और यह उस सर्वतोमुखी क्रान्ति का ही परिणाम हुआ कि लगभग १२ सदियों के बाद भारत की भूमि पर व्यापक राज्य क्रान्ति को पूरी सफलता मिली। यह निश्चित बात है कि हमारे देश में १९वीं शताब्दी की विचार क्रान्ति के बिना २० वीं सदी की सफल राज्य क्रान्ति असम्भव थी। महर्षि दयानन्द ने जिस विचार क्रान्ति को जन्म दिया उसका बीज रूप यह था कि उन्होंने रूढ़ि का स्थान तर्क को, जड़पूजा मनुष्यपूजा का स्थान ईश्वर-पूजा को और पाश्चात्य शासकों की अन्धी गुलामी का स्थान स्वतन्त्र राष्ट्रीय विकास को दिया। आर्यसमाज महर्षि दयानन्द का उत्तराधिकारी होने से उसी मिशन का प्रचारक और उसी क्रान्ति का अग्रदूत है, जिसके लिये महर्षि ने अपना जीवन अर्पण किया। इस तरह आर्यसमाज भारत की सफल राज्यक्रान्ति का कारण होता हुआ भी उससे बहुत विशाल, उससे बहुत गहरा और उससे अलग है। हिन्दू महासभा आदि अन्य सामयिक संस्थाओं के साथ भी आर्य समाज का यही सम्बन्ध है। महर्षि दयानन्द और उनके निर्देशानुसार आर्यसमाज ने भारत के विचारसागर में जो हलचल पैदा की है ऐसी सब संस्थाओं और आन्दोलनों के उद्भव में उसका पूरा हिस्सा है। जब देश में आन्दोलन की कोई बड़ी आंधी उठती है, तो हम लोग महर्षि दयानन्द के मिशन के असली रूप को भुला कर आपा में बह जाते हैं, और कभी उसे कांग्रेस का और कभी हिन्दू महासभा का परिशिष्ट बनाने का यत्न करने लगते हैं। महर्षि दयानन्द का मिशन किसी आंदोलन का परिशिष्ट नहीं है, अपितु ऐसे सब आंदोलनों का जन्मदाता है, जिसका उद्देश्य निर्बलताओं और कुरीतियों को नष्ट करके जाति में स्वाधीन और तेजस्वी जीवन का संचार करना है। जिस संस्था का उद्देश्य ऐसा मौलिक और इतना व्यापक हो, उसे किसी परिमित और क्षणिक संस्था के के साथ नत्थी करना पहले दर्जे की नासमझी का काम है।

भविष्य

कुछ लोग यह प्रश्न करते हैं कि अब तो देश स्वाधीन हो गया, अब आर्यसमाज की क्या आवश्यकता है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि इस स्वाधीनता की प्राप्ति के साथ महर्षि के बताये सिद्धान्तों की तथा आर्यसमाज की आवश्यकता घटी नहीं, अपितु बढ़ गई है। एक बात तो यह है कि अभी हमारी जाति की मानसिक, धार्मिक और सामाजिक दासता सर्वांश में नष्ट नहीं हुई। मैं यह कहूं तो अत्युक्ति नहीं होगी कि अभी हानिकारक रूढ़ियों का कम भाग नष्ट हुआ है और अधिक भाग शेष है। दूसरी बात यह है कि अब भी उन्हीं पुरानी रूढ़ियों के फिर से जागृत होने की सम्भावना बनी हुई है, जिनका अन्तिम परिणाम राजनैतिक दासता है। एक दृष्टान्त लीजिये। महर्षि दयानन्द ने हमें यह सिखाया था कि किसी महापुरुष का असली और स्थिर स्मारक उसका मिशन है, उसकी पत्थर की मूर्ति या ईंट चूने का बना मंदिर नहीं। अभी गुजरे हुए महीने में हम मूर्तियों और मंदिरों की उठती हुई बाढ़ सी देख आये हैं। घातक वनस्पतियों और हानिकारक रूढ़ियों की यह विशेषता है कि वह मर मर कर फिर जन्म ले लेती हैं। आर्यसमाज को यह चौकीदारी करनी है कि सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों के रूप में मानसिक दासता फिर से उद्भूत न हो जाये। अन्यथा यह निश्चित है कि जो राजनैतिक स्वाधीनता हमने प्राप्त की है, वह चिरस्थायी नहीं रहेगी।

दो प्रश्न

मुझ से दो प्रश्न किये गये हैं। पहला प्रश्न यह है कि आर्यसमाजियों को मुसलमानों से क्या सलूक करना है? प्रत्येक वैदिकधर्मी की यह अभिलाषा है कि वह विश्वभर के मनुष्यों को आर्य बनाये। वैदिक धर्म तलवार के बल से धर्म प्रचार के पक्ष में नहीं है। किसी व्यक्ति को अपने धर्म में लाने का उचित उपाय यही है कि हम प्रेम और सेवा द्वारा उसके मन को जीतें और उसके हृदय पर अपने धर्म का महत्त्व अंकित करें। एक आर्यसमाजी का

(शेष पृष्ठ २३ पर)

आधी दुनिया—

नारी और प्रेम

[श्री प्रेमदत्त पाराशर शास्त्री]

भारतीय दर्शन शास्त्र के अनुसार आत्मा की अमरता पर विश्वास करने वाले पाश्चात्य दार्शनिक प्लेटो ने लौकिक प्रेम का विवेचन करते हुए कहा है :— 'प्रेमी अपने हृदय में अपनी रुचि के अनुकूल एक व्यक्तित्व गढ़ता है, तब अपने उस कल्पित व्यक्तित्व को प्रेमिका के मुख पर मढ़ देता है। इस प्रकार जो कुछ वह देखता है, वह कोई अन्य व्यक्तित्व न हो कर उस का मनोवांछित व्यक्तित्व ही रहता है।' उस के अनुसार यही प्रेम सच्चा प्रेम है। पीछे होने वाले विद्वानों ने ऐसे प्रेम को 'प्लेटोनिक लव' की संज्ञा दी है।

प्लेटो की इस विचारधारा की तुलना जब हम भारतीय प्रेम दर्शन से करते हैं, तब हम एक उलझन में फंस जाते हैं। संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत प्राचीन तथा अर्वाचीन सभी प्रेम उपाख्यानों में हम प्रेम के उस स्वरूप को पाते हैं जिसे 'प्रथम दृष्टि का प्रेम' कहते हैं। दुष्यन्त शकुन्तला को देख कर ही प्रेम में फंस जाता है। 'कादम्बरी' में महाश्वेता पुण्डरीक से तथा कादम्बरी चन्द्रापीड से प्रथम मिलन में ही प्रेम करने लगती है। शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' में मिरान्डा भी इसी प्रकार प्रेम में फंस जाती है। यह रूप स्वाभाविक है या नहीं, यह बात विवादग्रस्त है। हो सकता है यह स्त्री पुरुष का स्वाभाविक आकर्षण मात्र ही हो, सकता है कि ऐसे प्रेम में वासना प्रधान हो, पर हम यह कहने का साहस नहीं रखते कि यह स्वरूप प्रेम के अन्तर्गत नहीं आता।

नारी-प्रेम का रूप

नारी का प्रेम से क्या सम्बन्ध है—यह बात कुछ अप्रत्याशित सी प्रतीत होती है। नारी के बिना प्रेम का अस्तित्व ही क्या—इस बात को भूल कर ही हम उपर्युक्त बात उठा सकते हैं। नारी को 'प्रेम की देवी' कहा गया है। प्यार उस का एक स्वाभाविक गुण है, जो वात्सल्य आदि रूपों में आये दिन संसार को आप्लावित करता रहता है। प्रेम स्वरूपा हो कर नारी ने पुरुष को जितनी प्रेरणा दी है, जितनी आत्मशक्ति प्रदान की है, उसकी रगों में जितने बल का संचार किया है, उतना पुरुष को प्रकृति के किसी अन्य अंग से नहीं मिला। इसी कारण से नारी को अर्द्धांगिनी कहा गया है, पुरुष नारी के बिना पूर्ण नहीं। उस में पौरुष है, बल है और है साहस, पर प्यार की, प्रेम की वह कोमलता नहीं जिस से जीवन स्निग्ध बन जाता है। वह प्यार मिलता है उस को नारी से। इस के लिए वह नारी का चिर-ऋणी है।

नारी का प्रेम पुरुष को कितने रूपों में प्राप्त होता है—इस पर विचार करते समय हमको कविवर जयशंकर 'प्रसाद' के प्रेम सिद्धान्त का ध्यान आ जाता है। उनकी दृष्टि में नारी-प्रेम के दो स्वरूप हो सकते हैं। एक स्वरूप वह जिस में नारी आदान प्रदान की भावना से प्यार करती है। प्यार के बदले में प्यार उसका मन्तव्य रहता है। दूसरा स्वरूप वह है जिस में नारी सर्वस्व त्याग की भावना लेकर प्रेम करती है, उसे बदले में कुछ नहीं चाहिए, वह अपने जीवन को प्रेम के लिए बलिदान कर देती है। 'प्रसाद' के नाटकों में हम अधिकतर दूसरे स्वरूप को पाते हैं। 'चन्द्रगुप्त' की मालविका, 'स्कन्दगुप्त' की देव-सेना तथा 'ध्रुवस्वामिनी' की व्योमा इस के ज्वलन्त उदाहरण हैं। उनके काव्य संसार में इस प्रकार का नारी प्रेम ही उच्च रूप में पाया जाता है।

आज के संसार में हम आदान प्रदान के स्वरूप को ही अधिक पाते हैं। नित्य प्रति के स्वार्थी व्यवहारों को देख नारी में यदि आदान प्रदान की भावना जाग पड़ी है तो अस्वाभाविक नहीं। पर यदि उच्चता की दृष्टि से देखा जाय तो नारी-प्रेम का सर्वस्व त्याग वाला रूप ही श्रेष्ठ दिखाई पड़ता है। भारतीय नारी के आदर्श के मूल में सर्वदा ही बलिदान की भावना रही है। अपने अस्तित्व को भुला कर, प्रेम में अनन्य हो कर नारी ने अपने को ऊंचा ही उठाया है, पर आज जैसे वह उसे जान बूझ कर भुला रही है। प्रेम के आदान प्रदान वाले स्वरूप में व्यवसाय की सी दुर्गन्ध आने लगती है, उस में वह कोमलता तथा स्निग्धता नहीं रहती, जो सर्वस्व त्याग वाले रूप में होता है।

कविवर 'प्रसाद' के मत में "प्रेम करने की भी एक ऋतु होती है, उसमें चूकना और सोच समझ कर चलना बराबर है।" वास्तव में यदि देखा जाय तो प्रत्येक नारी और पुरुष के जीवन में एक समय आता है, जब उसका हृदय किसी को प्रेम करने के लिये छटपटाता है। पुरुष के प्रेम में एक प्रकार की सरलता होती है, उसमें उद्वेग की मात्रा अधिक बढ़ जाती है और वह चाहता है कि शीघ्र से शीघ्र सफल हो सके। इसके विपरीत नारी का प्रेम सधत होता है, किसी को हृदय देने से पूर्व वह उसे परख लेना चाहती है। यह नारी की विशेषता है। इसी कारण से बहुत कम अवसर ऐसे आते हैं जब उसे असफलता का शिकार होना पड़ता है। संभव है गंभीरता की प्रवृत्ति स्त्री-सुलभ लज्जा के कारण हो, पर है वह स्वाभाविक। उसकी प्राथमिक गंभीरता अनन्तर फल देने वाली होती है।

प्रेम का नारी से घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्राचीन काल से लेकर आज तक अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं, जिन में कठिनतम कार्य भी नारी की प्रेम प्रेरणा के कारण अनायास ही हो गये जान पड़ते हैं। बड़े बड़े विकट अवसरों पर नारी ने पुरुष को विजय दिलाई है। लोहे की शृंखला तोड़ने वाले वीर नारी के प्रेम-पाश को तोड़ने का साहस नहीं कर सकते।

अनादि काल से प्रेम पर नारी का आधिपत्य चला आया है और अनन्त तक चलेगा — यह एक कठोर सत्य है। हमें इसे भुलाने की चेष्टा स्वप्न में भी नहीं करनी चाहिये। यदि हम ने इस को समझने में किंचिन्मात्र भी भूल की तो हमारा अधः पतन निश्चित है।

४ मार्च को पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति की सुपुत्री कुमारी पुष्पा विद्यालंकृता और श्री धर्मवीर विद्यालंकार परिणय सूत्र में आबद्ध हो गये।

पिता का पुत्री को उपहार

इस शुभ विवाह के अवसर पण्डित इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने पुत्री सौ० पुष्पा को निम्न उपदेश दिया :—

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु
प्रिय सखीवृत्तिं सपत्नीजने।
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया
मा स्म प्रतीपं गमः
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने,
भाग्येष्वनुत्सेकिनी,
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो
वामाः कुलस्याधयः ॥

हे पुत्रि ! पति-कुल में जाकर तू सास ससुर आदि बुजुर्गों की सेवा करना। अपने समान आयु वाली सम्बन्धिनियों से सखीभाव से बर्तना। भर्ता से यदि किसी बात पर मतभेद भी हो जाय तो रुष्ट होकर कभी प्रतिकूल मत चलना। अपने आश्रित-जनों के साथ सदा उदारता से बर्तना और अपने सौभाग्य पर कभी अभिमान न करना।

पुष्पा बेटी, कुल की इस मर्यादा पर चलने वाली लड़कियां गृहिणीपद की अधिकारिणी होती हैं और अपने पितृ-कुल के मान को बढ़ाती हैं, परन्तु जो इससे विपरीत चलती हैं, वे दोनों कुलों की पीड़ा का कारण बनती हैं।

सम्राट विक्रमादित्य

(नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुडध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित कर रखें। मूल्य २||), डाक व्यय |=)।

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

फिल्म-स्टार बनने की इच्छा वाले शीघ्र पत्र लिखें। थोड़ा पढ़ा लिखा होना आवश्यक है रंजीत फिल्म-आर्ट कालेज विरक्षा देव (V. D.) इलाहाबाद यू० पी०।

गांधी संवत्सर की योजना का वैज्ञानिक-स्वरूप

[श्री ज्योतिर्विद् प० कन्हैयालाल 'मस्त']

★

संसार के सभी देशों, जातियों व समाजों का यह नियम रहा है कि वे अपने उद्धारकों, धर्म-प्रवर्तकों अथवा किसी अभूतपूर्व महान् व्यक्ति के संस्मरण में तात्कालिक युग की काल-प्रणाली में कुछ समुचित परिवर्तन करके एक नये युग का सूत्रपात किया करते हैं। सूत्रपात तो वास्तव में उन महान् युगनिर्माताओं के जीवन काल में ही हो जाता है — देश, राष्ट्र अथवा भक्तालु जनता तो कालान्तर में इतिहास के उस पृष्ठ को अपने अतीत और भावी इतिहास के सूत्र में पिरोने के लिए विवश हो उठती है। इस विवशता में कृतज्ञता की अनेकों भावनाएं छुपी होती हैं, उन में से एक यह भी है कि उस महान् व्यक्ति के अवतरण अथवा अवसान की तिथियों को भी राष्ट्रीय प्रयोजन के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।

महात्मा गांधी का जीवन और अवसान भारतवर्ष की राष्ट्रीय चेतना की बीती-जागती कहानी है, अतः यह स्वाभाविक ही है कि राष्ट्र के इस उद्धारक की स्मृति में राष्ट्र के इस नवीन युग को भी वर्तमान काल-प्रणाली में गुम्फित किया जाय और पंचाङ्गों में ऐसा परिवर्तन किया जाय जो चिरस्थायी एवं सर्वजन-स्वीकृत हो।

गत कुछ दिनों से पत्रों में अनेक प्रकार के व्यक्तिगत अथवा दल-गत सुझाव आ रहे हैं। उनमें से प्रायः सभी सुझाव भावुकतापूर्ण तो हैं ही, साथ ही साथ कुछ अवैज्ञानिक भी हैं। कुछ ऐसे भी हैं जिनका उपयोग में आना ही असम्भव है—उदाहरण के लिए, वारों तथा मासों का नाम परिवर्तन। ऐसी दशा में इस विषय के मर्मज्ञों का यह कर्त्तव्य है कि वे कोई अधिकारपूर्ण योजना प्रस्तुत करें और सर्वसम्मति से निर्णय देकर जनता का मार्ग दर्शन करें। इस से दो लाभ होंगे। एक तो जनता अनर्गल बातों से बच कर उचित दिशा में सोचने लगेगी, दूसरा गांधी संवत्सर की योजना को वैज्ञानिक रूप प्राप्त हो सकेगा।

अपनी योजना को प्रस्तुत करने के पूर्व मैं यह बता देना चाहता हूं कि वारों और मासों की नामावलि का हमारी पूर्व संस्कृति एवं विज्ञान से क्या सम्बन्ध है और ऐसी दशा में उन में परिवर्तन करना कहां तक उचित और लाभप्रद होगा।

वार सात होते हैं, ये सातों ग्रह ग्रहों के नाम पर हैं। ये हैं—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, और शनि। इन सातों ग्रहों के अतिरिक्त अभी तक किसी भी ऐसे ग्रह का पता नहीं चल सका है जो मनुष्य की नग्न आंखों से दीख पड़े। यही कारण है कि संसार के प्रायः सभी देशों में "सप्ताह" का ही प्रचार है। (यों चीन में "पंचाह" का और यूनान में "दशाह" का भी प्रचलन पाया जाता है।) दैवयोग से वार गणना का यह क्रम सभी देशों में एक सा पाया जाता है और इसका कारण सभी जातियों में पाये जाने वाली एक उभयनिष्ठ धार्मिक आस्था है। फलित ज्योतिष में आकाशीय ग्रह मण्डल की एक राज्य-परिषद् की कल्पना की गई है। वही कल्पना अपने छोटे रूप में पारिवारिक विधान के लिए भी कर ली गई है जो निम्न तालिका से स्पष्ट हो जायगी :—

ग्रह	राज्य-परिषद् में प्राप्त स्थान	विभाग	गृह-परिषद् में प्राप्त स्थान	धर्म
सूर्य	राजा	राज्य सचालन	पिता	पालन-पोषण प्रजनन आदि
चन्द्रमा	गृह मंत्री	गृह विभाग	माता	मातृत्व, शिशु पालन
मंगल	सेनापति	सैन्य सचालन, रक्षा विभाग	भाई	पुरुषार्थ
बुध	राज कुमार	विज्ञान, वाणिज्य, व्यवसाय, अर्थ	मामा	आर्थिक सहायता
गुरु	धर्म-मंत्री	विधान सबंधी मंत्रणा, शिक्षा विभाग	पुत्र शिक्षक	पठन, आज्ञापालन शिक्षण-कार्य
शुक्र	शासन-मंत्री	शासन तंत्र, विदेश विभाग	स्त्री	गृह-तंत्र
शनि	राज्य सेवक	दूतत्व, उद्योग-विभाग	नोकर	सेवा शुश्रूषा

तालिका पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होगा कि उपर्युक्त क्रम कितना गठित एवं सुव्यवस्थित है। ग्रीक, रोमन आदि पौराणिक आख्यानों से भी यही ध्वनि निकलती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सूर्य अपने मण्डल के सम्पूर्ण ग्रह पिण्डों का जनक है। सारे ग्रह उन्हीं के अंशभूत शरीर हैं तथा दूरी और परिभ्रमण-काल के परिवर्तन के कारण उनमें सूर्य के कुछ उभयात्मक गुण होते हुए भी स्वयं अपने भी पृथक् २ गुण विद्यमान हैं।

अब द्वादश मासों की नामावलि को लीजिये। मेषादि संक्रान्तियों के नाम तो द्वादश राशियों के नाम पर ही हैं अतः उनमें परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि ऐसे परिवर्तनों से भारतवर्ष ही नहीं अपितु सारे संसार का ज्योति-विज्ञान उलट पुलट हो जायगा। रहे द्वादश चान्द्रमासों के नाम — सो उनमें भी एक वैज्ञानिक तत्व छिपा हुआ है। इन मासों के नाम उन २ नक्षत्रों पर हैं जिन पर मासारम्भ में चन्द्रमा का संक्रमण होता है अर्थात् वही नक्षत्र मासारम्भ में चन्द्रमा के सहित पूर्व-दिशा में उदय होता है। उदाहरण के लिए —

मासनाम	चन्द्रमा द्वारा सक्रांत नक्षत्र का नाम
चैत्र	चित्रा
वैशाख	विशाखा
ज्येष्ठ	ज्येष्ठा
आषाढ	पूर्वाषाढा व उत्तराषाढा
श्रावण	श्रवण
भाद्रपद	पूर्वा व उत्तरा भाद्रपद
आश्विन	अश्विनी
कार्तिक	कृत्तिका
मार्गशीर्ष	मृगशिरा
पौष	पुष्य
माघ	मघा
फाल्गुन	पूर्वा व उत्तराफल्गुनी

अतः यह स्पष्ट है कि वारों और मासों के नामकरण के साथ हमारा पुराना इतिहास, संस्कृति और सब से विलक्षण वस्तु विज्ञान का मर्म छिपा हुआ है। ऐसी दशा में उनमें परिवर्तन करना मानों इन सब पर घातक प्रहार करना है। फिर ऐसे परिवर्तन सर्वमान्य एवं सर्व सम्मत भी न हो सकेंगे। जिस परिवर्तन को जनता के सभी वर्ग विशेषतः बुद्धि जीवी लोग स्वीकार न कर लें उसे प्रयोग में लाने से न कोई लाभ होगा और न वह स्थायी ही रह सकेगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि परिवर्तन क्या और किस प्रकार का होना चाहिये? इस प्रश्न का उत्तर देने के पहिले हमें यह जान लेना होगा वर्ष क्या होता है और उसके कितने प्रकार हैं। 'वर्ष' या 'वत्सर' किसी ग्रहण द्वारा सूर्य के चारों ओर परिभ्रमण करने के काल को कहते हैं। पृथ्वी पर तो वर्ष-काल परिमाण सूर्य (अथवा पृथ्वी) तथा चन्द्रमा के ही भचक्र भोग की अवधि मानी जाती है। उसी के सूक्ष्म-विभाग करके मासादि और दिनादि की कल्पना की गई है।

इस प्रकार के सूक्ष्म भेदानुसार वर्ष ४ प्रकार के होते हैं —

(१) नाक्षत्र वर्ष (सिडीरियल ईयर)— किसी ध्रुव नक्षत्र से उसी ध्रुव नक्षत्र तक का भ्रमण इसका दिन संख्या ३६५.२५६३७४ मध्यम सौर दिवस है। इसके द्वारा लाये हुए मास और दिनादि क्रियात्मक जीवन का वस्तु नहीं होते।

(२) सौर वर्ष (ट्रोपीकल ईयर) मेषान्त से मेषान्त तक का भ्रमण इसका दिन-प्रमाण ३६५.२४२२१६ मध्यम सौर दिवस है। इसके द्वारा लाये हुए मासादि कुछ तो निश्चित हो भी सकेंगे परन्तु दिनादि तिथियों की तरह घटते बढ़ते रहेंगे। यह भी दैनिक जीवन में सुगमता से प्रयोग नहीं किया जा सकता अतः केवल गणित के ही काम की वस्तु है।

(३) सावन या सायन वर्ष (सिविल ईयर) इसकी दिन संख्या पूर्णाङ्क ३६५ या ३६६ होने के कारण जन साधारण के बड़े काम का है। वास्तव में इसे इस योग्य बनाया गया है।

(४) चान्द्र-वर्ष (लूनर ईयर) इस वर्ष के प्रत्येक मास की दिन संख्या मेषान्त के हिसाब से २७ दिन ७ घण्टा ४३ मिनट ४.६१४ सेकण्ड हैं। इसकी गणित भी कुछ पेचीदा है परन्तु धार्मिक व्यवहार में केवल इसी का प्रयोग मान्य है।

उपर्युक्त वर्षों के नाम पर ही उनसे लाये हुए मासों और दिनों के भी नाम रख लिये गये हैं। इनमें से प्रत्येक वैज्ञानिक सत्य है अतः यह कह देना कि अमुक वर्ष त्रुटिपूर्ण है — नितान्त भ्रम है। प्रत्येक के प्रयोग पर तो अवश्य मत-भेद हो सकता है। धार्मिक उत्सवों में जहां चान्द्र दिवस (तिथि) और चान्द्र-मासों की उपादेयता है वहां राज्य-कार्य केवल सावन दिन, मास, वर्षादि से ही चल सकते हैं। सौर और नाक्षत्र गणना-क्रम दैनिक व्यवहार की वस्तु नहीं, यही कारण है कि जनता ने केवल चान्द्र और सावन गणना-क्रम को ही अपनाया है।

वर्ष या वत्सर का प्रारम्भ कब से मानना युक्तियुक्त होता है इसमें भी एक वैज्ञानिक रहस्य छिपा हुआ है। प्रत्येक प्रकार के वर्ष का प्रारम्भ क्रान्ति-वृत्त के सम्पातों से ही माना जाना युक्ति-संगत होता है। क्रान्तिवृत्त पर चार प्रमुख सम्पात पड़ते हैं —

(१) उत्तरायण-सम्पात (विन्टर सोल्स्टिस)....... २२ दिसम्बर।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

मनुष्य के चमड़े के व्यापारी

[श्री धर्मवीर तरनेजा बी० ए०]

कहानी

श्री ठाकुर सिंह ने जिस देश में जन्म लिया उसे वे अपना न सके। क्या मालूम था उनके मां-बाप को कि उनका पुत्र इंग्लैंड पढ़ने जायगा और फिर वहा से वापिस न आयगा।

वह इकलौता बेटा था। उनका बड़ा प्यारा, आंखों का तारा था। ठाकुर सिंह की पढ़ाई भारत में ठीक तरह से न हो सकती थी। मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास तो अनुकूल वातावरण में ही हो सकता है। ऐसा वातावरण भारत में कहां मिले ?

आखिरकार पुत्र विलायत गया ही। ऐसा गया कि हाथ से ही खोया गया।

ठाकुर सिंह के विचार भी अनोखे थे। पिता ने लिखा कि तुम्हारी पढ़ाई अब समाप्त हो चुकी, अब घर की राह लो। ठाकुर सिंह ने जवाब में लिखा—मैं इंग्लैंड से भारत में वापिस न आऊंगा। मैं सब कुछ सह सकता हूं, पर गुलामी का वातावरण नहीं सह सकता। यह गुलामी राजनीति के क्षेत्र तक ही अपना जाल नहीं फैलाती, यह तो छूत की बीमारी की तरह, धन, धर्म, कर्म, ज्ञान, आत्मा, समाज आदि सब में फैल जाती है और सर्वनाश कर के ही दम लेती है। मैं इंग्लैंड रह कर ही आप के व्यापार की देख भाल करूंगा। पिता जब ऐसे पत्र पढ़ते तो उनका माथा ठनक जाता। कहते इस पूत की दलीलें ही अनोखी हैं। भला इनका जवाब दूं क्या ? हाथ पर हाथ धरने के सिवाय कोई चारा न था।

श्री ठाकुर सिंह की मित्रमण्डली के लिये उनके विचार मजाक का मसाला थे। कहते—इनकी देश भक्ति की बलिहारी ! जिस भारत की देश भक्ति की नित दुहाई देते हैं, उसके नजदीक भी नहीं फटकते। अरे बाबा यदि दुःखी देश की सेवा ही करनी है तो स्वदेश लौटो। मुल्ला जी की तरह दूर से बांग दे रहे हैं। स्वदेश में घोर अत्याचार हो रहा है। नेता जेलों में पड़े सड़ रहे हैं। और यहां परदेश में बैठे बैठे स्वदेश पर बलिदान हुए जाते हैं। क्या ठिकाना है इस बुद्धिवाद का ?

श्री ठाकुर सिंह बात को बीच में ही काट देते, कहते—'गलत बिलकुल गलत। मेरा निश्चय है और दृढ़ मूल निश्चय है कि मैं दूर रह कर देश सेवा बहुत अच्छी तरह से कर सकता हूं। मैं उन देश भक्तों में से नहीं जो अपने देश का मान बेच कर चार टकों के लिये पराई सरकार की जूतियां साफ करते रहें।'

ये बड़ी बड़ी बातें उन के मित्रों के मुंह पर मुहर लगा देतीं। ठाकुर सिंह और कहते—मुझे भारतीय होने का गर्व है पर मैं भारत में जा निवास करूं—यह सोचते ही मेरी आत्मा में ठेस सी लगती है। मैं सोच नहीं सकता कि जहा मानवता के साथ इतना घोर अत्याचार होता हो वहां कैसे रहा जा सकता है ?

अपनी बात कटती देख कर उनके एक मित्र कृष्ण कुमार ने जरा व्यंग से कहा 'भरथा, कहीं दो मुल्कों में बट तो नहीं गये ?'

'चुप' उन्होंने कहा—'आज तो तुमने यह कहा, फिर कभी मुंह से ऐसी बात न कहना। दुनिया में लड़कियां होंगी लेकिन मैं कश्मीर में पैदा हुआ हूं। कश्मीर वह देश है जहा कण कण में सौन्दर्य निवास करता है। यदि मैं किसी रमणी से इस लिए ब्याह कर लूं कि वह सुन्दर है तो समझो मैंने अपने आप को धोखा दिया। इस देश की रमणियों का रूप और यौवन मेरे देश की रमणियों के आगे पानी भरता है।'

इस प्रकार यदि वह अपने मित्रों के लिए विस्मय का कारण थे तो विलायत के लोगों के लिए रहस्य थे।

उनका यौवन, रूप, ऊंचा कद, गठा हुआ शरीर, बड़ी बड़ी आंखें, पाश्चात्य वेषभूषा, चाल ढाल, बात चीत, गोरा रङ्ग—यह सब कुछ देख कर किसी को शक न हो सकता था कि ठाकुर सिंह इंग्लैंड के वासी नहीं।

यूरोप का दूसरा महायुद्ध शुरू हुआ और उसके साथ जर्मनी के उड़ते बम वर्षक विमानों का प्रकोप भी। इंग्लैण्ड पहले तो हारता रहा पर उसकी जिद प्रबल थी। ठाकुर सिंह भी इंग्लैण्ड क्यों छोड़ने लगे।

इधर भारत में उनकी मां इंग्लैण्ड के संवाद सुन सुनकर कांप उठती। वह सोचती, मेरा जिगर का टुकड़ा मौत के मुंह में बैठा है, उसका क्या बनेगा ! रोज बमों से सैकड़ों के मरने की खबर आती, बेचारी बेबस थी। बिलख बिलख कर रोती। पति को मजबूर करती। उन्होंने चिट्ठियों और तारों का तांता ही बांध दिया। आखिरकार पिता ने एक पत्र में लिख भेजा, 'बेटा जो भारत नहीं लौटना चाहते तो भगवान के वास्ते इंग्लैण्ड मत रहो, किसी दूसरे देश में चले जाओ।''

इस पत्र ने ठाकुर सिंह के हृदय को भी नरम कर दिया।

इंग्लैंड के सिविलियन लोग सिवाय दक्षिणी अफ्रीका के जहाज द्वारा और कहीं भी न जा सकते थे। इसलिये उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका का ही निश्चय किया। मित्रों से परामर्श किया। निश्चय हुआ कि ठाकुरसिंह नेटाल के किसी छोटे से शहर में डेरा डालें, जब तक युद्ध की स्थिति नहीं सुधरती।

जहाज ने जाकर दक्षिणी अफ्रीका के किनारे लंगर डाला। उतर कर श्री ठाकुरसिंह ने स्टेशन की राह ली।

अब तक ठाकुरसिंह के मन में 'भारतीय' होने की हीनवृत्ति का उदय नहीं हुआ था। पर न जाने किसी विचित्र प्रेरणा ने उनकी सोई हुई स्मृति को जगा दिया। इसी देश ने तो, इस युग के दिव्य पुरुष, शान्ति के देवता महात्मा गांधी को कुली समझा था। उन्हें रेलवे के फर्स्टक्लास के डिब्बों में घुसने न दिया था। इसीलिये न कि वह हिन्दुस्तान का वासी था, काला था। सब कुछ होते भी ठाकुरसिंह के मन ने सोचा कि हूं तो मैं भी भारतीय।

मन ने कहा — "ठाकुरसिंह, क्यों घबड़ाते हो। गर्दन सीधी करके चलो। लड़खड़ाते क्यों हो, भारतीय होकर क्यों किसी के सामने झुकते हो। वह देखो सामने फर्स्टक्लास का टिकटघर है। नाक की सीध में चले जाओ। ठाकुरसिंह मन को यों ढाढ़स देने लगे। अपने को संभाला और चले सीधा टिकट घर को। दिल में संशय उठा कि कहीं इस कम्बख्त ने मुझे पहचान लिया कि मैं भारतीय हूं, तो टिकट न देगा। शायद पुलिस के ही हवाले करदे। फिर दिल में शंका हुई, क्या इसी बलबूते पर देश की सेवा करोगे ! बोलो।..."अजी, फर्स्टक्लास का प्रिटोरिया तक का टिकट दो।' बाबू ने झट टिकट काटा। ठाकुरसिंह ने उठाया, मूछों पर जरा ताव दिया और समझा पहली जीत तो हमारे हाथ लगी।

इसी फर्स्ट-क्लास में एक और सज्जन भी सफर कर रहे थे। ठाकुर सिंह को अब भी डर था कि यदि साथ के सज्जन के साथ मैंने लम्बा बातचीत की और उसे मालूम हो गया कि मैं भारतीय हूं तो मेरी खैर नहीं। डरबन के स्टेशन से गाड़ी छूटने के बाद साथ के सज्जन ने पूछा — 'आपका नाम ? आप कहा से आ रहे हैं।'

इस सवाल ने ठाकुर सिंह के दिल में तूफान खड़ा कर दिया। वह यह तो बता सकते थे कि कहां से आ रहे हैं। पर यदि उन्होंने यह भी बता दिया कि मैं कौन हूं तो शोर मच जायगा और उन्हें उतार दिया जायगा। लोगों की भीड़ इकट्ठी हो जायगी। उन्हें शायद पीटा भी जाए। दिल में इस तूफान को समझा और बोले, 'मेरा नाम 'एरिक नाइट' है। यहां रह कर अपनी सेहत ठीक करूंगा। मैं इंग्लैंड से यहां व्यापार करने आया हूं।' इधर अपने मन को शाबाश दे रहे थे कि तू ऐसा चालाक निकला कि एक सोलह आने अंग्रेज को भी चकमा दे दिया। यह मेरी दूसरी जीत है।

उत्तर मिला—"बड़ी अच्छी बात है। उम्मीद है, आप इस देश को पसन्द करेंगे।"

एरिक ने इस सज्जन से पूछा — "मैं आपका नाम पूछ सकता हूं ?"

उसने उत्तर दिया — "मैं इस देश का गृह-मन्त्री हूं।"

गाड़ी जब तक प्रिटोरिया तक न पहुंची, गृह-मन्त्री महाशय ने ब्रिटेन और चालू लड़ाई की बाबत सवालों का तांता बांध दिया। उसने एरिक नाइट को भी सवालों का खजाना पाया। जब ट्रेन से वह उतरा तो बड़ा प्रसन्न था।

जार्ज टाउन — प्रिटोरिया से १८ मील दूर है। सुन्दर स्वच्छ शहर है। भारतीयों की संख्या आधे से कम है। भारत के अछूतों की दशा इन प्रवासी भारतीयों से कहीं अच्छी है। यह ठीक है कि ये अनपढ़ हैं। ऊंची जात के लोग उनसे घृणा करते हैं। पर पहले से अवस्था सुधर रही है। ये पढ़ लिख कर शहर में बस रहे हैं, कई डाक्टर हैं, कई बैरिस्टर हैं। इधर जार्ज टाउन के भारतीय तो पढ़े लिखे हैं। कई धनाढ्य व्यापारी हैं, कई प्रोफेसर हैं, कई डाक्टर हैं। यदि ये अपने देश में होते तो समाज के आदर के पात्र होते। पर जिस दक्षिणी अफ्रीका को उन्होंने बसाया, जिसका व्यापार उन्हीं के पुरुषार्थ से चलता फूलता है, उसी दक्षिणी अफ्रीका में वे अत्याचार और अपमान का शिकार ...

हमारे औद्योगिक क्षेत्र की समस्यायें

['पत्रकार']

★

> [देश के व्यापक आर्थिक रोगों का उपचार अनाज की कीमतें उतरना है।.. हमारे अर्थमन्त्री ने 'उत्पादन करो या मर जाओ' का जो नारा उठाया है वह यथार्थवाद पर आधारित है।]

पिछला एक वर्ष भारत की आर्थिक व्यवस्था के लिए सबसे अधिक हानिकर रहा है। कलकत्ता और पूर्वीय बंगाल के साम्प्रदायिक दंगों से यह वर्ष प्रारम्भ होता है। इन दंगों ने सारे देश के जन-जीवन को विषाक्त कर दिया था। लीग के मंत्रियों को लार्ड वेवल ने केन्द्रीय सरकार में प्रवेश दिया और उस क्षण से ही सरकारी शासन का नक्शा बदल गया। सरकार अपने ही घर में विभाजित हो गई। मुस्लिमलीग के मंत्रीगण साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से ही अपने दायित्व को पूरा करते थे। इस प्रतिगामी नीति से देश की अर्थ व्यवस्था का सारा सन्तुलन बिगड़ गया और सामान्य जनता के सामने भी यह स्पष्ट हो गया कि सरकार अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करने में असमर्थ है। सरकार के तन्त्र में इस आंतरिक विग्रह के साथ देश का वातावरण भी आर्थिक सन्तुलन के लिए लाभकर नहीं था। सारा राष्ट्र साम्प्रदायिक दंगों से आक्रांत था और स्वयं इस आग सरकार को बुझाने में इतनी व्यस्त थी कि आर्थिक योजनाओं को रूप देने का अवकाश ही उसे नहीं मिल पा रहा था।

इन्हीं शोचनीय परिस्थितियों में लियाकतअली का तथाकथित 'समाजवादी' बजट प्रकाशित हुआ जिसने देश के आर्थिक ढाँचे को ऐसा अस्थिर कर दिया कि उसके आघात से वह अभी तक सम्हल नहीं सका है। वस्तुतः वह साम्प्रदायिक बजट था जिसके प्रहार का मूल लक्ष्य हिन्दू पूँजी को पंगु करना था।

लियाकत-बजट

व्यावसायिकों और उद्योगपतियों का विश्वास ही सरकार पर से उठ गया। टैक्सों का ऐसा भार उनके ऊपर डाला गया कि उद्योगों के विस्तार की दिशा में वे आगे बढ़ने का साहस नहीं कर सके। राष्ट्रीय सरकार के आगमन से देश के उद्योगपतियों को आशा हुई थी कि सरकार नये उद्योग और व्यावसायिक विकास में उनको समुचित सहयोग देगी। किन्तु लियाकत बजट ने उनकी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया। राजा जी और सरदार पटेल ने बजट के दृष्टिबिंदु का इसी लिये विरोध किया था और उन्हीं के प्रयत्नों से उसके टैक्स-अंश में कुछ परिवर्तन भी किये गये थे; किंतु इसके बावजूद टैक्सों का प्रहार घातक ही बना रहा। युद्ध के बाद संसार के सब देशों ने निर्माणात्मक बजट बनाये और तत्कालीन अर्थ व्यवस्था के साथ देश की परिस्थिति और भावी सम्भावनाओं को दृष्टिकोण में रक्खा गया जिससे देश की सर्वांगीण व्यवस्था का सामंजस्य न बिगड़े, किंतु ऐसे संक्रांति-काल में भारत ने ध्वंसात्मक बजट बनाया जिसका आंतरिक उद्देश्य यह था कि देश के नाम मात्र के उद्योग भी नष्ट हो जावें। लियाकत बजट ने सबसे बड़ा धक्का शेयर मार्केट को दिया जिसका आघात आज तक भी उसे अस्थिर बनाये हुये है। बजट के प्रकाशित होते ही शेयर मार्केट एक दम लड़खड़ा गया। स्टाक मार्केट ऐसे प्रहार के सामने खड़ा रहता — यह बिल्कुल असम्भव था। सारे भारत के बाजारों पर इसका असर हुआ। फलत अपर्याप्त उत्पादन की प्रगति उत्तरोत्तर आपत्ति जनक होने लगी। उद्योगपतियों का असंतोष और अविश्वास उत्तरोत्तर बढ़ता गया।

विभाजन के परिणाम

१५ अगस्त को जब देश दो खण्डों में विभक्त हो गया तो अधिकांश राजनीतिज्ञों ने कल्पना की कि भारत में शांति और समृद्धि का नव प्रभात उदित हुआ है। उसके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रोगों का इस प्रकार परिहार हो जावेगा। किन्तु भ्रांति पर आधारित आशायें अंकुरित होने के पूर्व ही ध्वस्त हो गईं। कांग्रेस को अपनी समझौता-पसन्द नीति की निरर्थकता का ज्ञान हुआ — पाकिस्तान के निर्माता देश के दो टूक करके ही शांत नहीं रहे, उन्होंने कई रूपों में भारत के नवीन ढाँचे को निर्बल करने के षड्यंत्र शुरू कर दिये। ऐसी परिस्थिति में जनता और उसके नेताओं के दृष्टिकोण में परिवर्तन आना अवश्यम्भावी था। कांग्रेस ने सतर्क होकर आगे कदम बढ़ाना शुरू किया और शुभेच्छा एवं सहयोग के लिये पाकिस्तान के नेताओं के सामने अनिमन्त्रित बाहु फैलाना बंद कर दिया। यदि कांग्रेस इस अध्याय को यहीं बंद नहीं करती तो देश का सारा नैतिक मेरुदण्ड ही डगमगा जाता — लेकिन इतने पर भी देश की आर्थिक व्यवस्था को जो आघात लगा उसकी पीड़ा से उसे आज तक भी मुक्ति नहीं मिल पाई है। व्यावसायिक क्षेत्र में नैराश्य और निरुपायता की भावना अभी भी विद्यमान है और जो भी व्यवसाय या उद्योग आज सक्रिय है वह अस्थि-पंजर मात्र ही है। देश के व्यापारी वर्ग का आत्मविश्वास अभी तक जम नहीं पाया है। पाकिस्तान की ओर से इतने प्रहार किये जाने के बाद भी भारत सरकार ने उसके सम्बन्ध में अपने भावी दृष्टिकोण का संकेत नहीं दिया है और इस सम्बन्ध में जो भी नीति परिवर्तन उसने किया है वह व्यावसायिक क्षेत्रों की आशा के अनुरूप नहीं है क्योंकि उसमें इस साहस और दृढ़ता का आभास नहीं है जो उखड़े हुये विश्वासों को फिर से अपनी बुनियादों में प्रतिष्ठित कर दे।

सबसे प्रथम उपचार

भारत को कृषिप्रधान देश कहा जाता है किन्तु आज के खाद्यसङ्कट की परिस्थितियों में भी उसके इसी रूप पर जोर देना वस्तुत एक करुण व्यंग है। अन्न का जैसा दुर्भिक्ष इस समय भारत भर में व्याप्त है वैसा भारत के इतिहास में कभी नहीं आया था। भारत की कोटि-कोटि जनता अपने पेट की ज्वाला बाहर से आये अनाज द्वारा बुझाये, यह वास्तव में हमारी परम्परा का घोर अपमान है। पिछले पन्द्रह महीनों में ही अनाज के आयात का मूल्य १२५ करोड़ रुपया तक अदा किया गया है। इसके बावजूद भी खाद्य सङ्कट ज्यों का त्यों बना हुआ है और यदि आगामी वर्ष में अन्न के उत्पादन को किसी प्रकार बढ़ाया नहीं गया तो यह निश्चित है कि भारत अन्न-संकट का निवारण नहीं कर सकेगा। डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी जैसे महान् व्यक्तित्व के प्रभाव से भी अन्न का उत्पादन बढ़ नहीं सका तो यह स्पष्ट है कि इस सम्बन्ध में कहीं न कहीं गलती अवश्य है।

असल बात यह है कि केन्द्रीय सरकार ने अन्न के उत्पादन के सम्बन्ध में जो लक्ष्य निर्धारित किया प्रांतीय सरकारों ने उसमें सहयोग नहीं दिया। भारत-जैसे देश में जहां करोड़ों एकड़ जमीन अभी भी बेकार पड़ी हुई है वहां अनाज उत्पन्न करने की समस्या क्यों हल नहीं हो सकती यह बात समझ में नहीं आती। भारत की अधिकांश जनता निर्धन है और इसलिये देश की सारी अर्थ-व्यवस्था का आधार अनाज की कीमतें हैं। अनाज की कीमतें बढ़ने से जीवन-यापन का व्यय भी बढ़ जाता है जिसे देश की अधिकांश जनता सहन नहीं कर सकती क्योंकि खेतों की मजदूरी या किराये की खेती करने के सिवाय उसके पास आमदनी के और कोई साधन नहीं है। अतः देश के व्यापक आर्थिक रोगों के निराकरण के लिए पहला उपचार अनाज की कीमतें नीचे उतारना है।

पतनोन्मुख प्रवृत्तियां

वर्तमान भारत सरकार के सामने सब से आवश्यक और महत्वपूर्ण दायित्व यह है कि वह अपनी सर्वोच्च शक्ति लगा कर देश के औद्योगिक उत्पादन की पतनोन्मुख प्रवृत्तियों को नियन्त्रित करे और उन्हें फिर से ऐसे आधार पर प्रतिष्ठित करे कि भविष्य में वे पथ भ्रष्ट न हो सकें। सन् १९३९ से आज तक जहां अन्य देशों का औद्योगिक उत्पादन उत्तरोत्तर उत्कर्षोन्मुख रहा है वहां भारत का औद्योगिक उत्पादन दिन प्रति दिन नीचे ही गिरा है। १९३९ में हमारे उत्पादन के आंकड़े १२७ ५ तक पहुंच गये थे किन्तु १९४५-४६ में वे १०८.२ तक नीचे उतर आये। सन् १९४७ में तो देश के उत्पादन की अवस्था और भी शोचनीय रही है। वस्त्र उद्योग जो १९४४ में ४८५१० लाख गज कपड़ा पैदा करता था उसका अनुपात १९४६ में केवल ४०२१० लाख गज ही रह गया। फौलाद के उत्पादन में भी इसी प्रकार अवनति हुई है। उसका उत्पादन १२००९८० से घट कर ८९७०३८ टन रह गया है। यही दुर्व्यवस्था चीनी के उद्योग के सम्बन्ध में देखी जा सकती है। १९४३-४४ में चीनी का उत्पादन ११२५००० टन था। सन् १९४५ ४६ में वह ८४६५०० टन ही रह गया। कोयला भी पतन के इन थपेड़ों से सुरक्षित नहीं रहा। १९४६ के अप्रैल मास से लेकर दिसम्बर मास तक उसके उत्पादन में ११८००० टन की कमी आई। इस प्रकार देश के प्रमुख उद्योगों को अपरिमित क्षति पहुंची है जिससे हमारी दैनिक आवश्यकताओं का प्रासंगिक अभाव हमारी सामान्य दिनचर्या हो गई है और जिनके कारण हमारे सारे समाज की बुनियाद ही बुरी तरह कांप उठी है। इस दुर्गति के कारण अनेक और विचित्र हैं। कुछ तो पुरानी गलतियां हैं जो हमें विरासत में मिली हैं और कुछ हमारे ही द्वारा निर्मित अवरोध हैं।

औद्योगिक क्षेत्र में आज की सब से बड़ी समस्या श्रमिकों की है। राष्ट्र-निर्माण के क्षेत्र में श्रमिकों का महत्व सर्वोपरि है। लेकिन आज का भारत हड़तालों के ज्वार में डूबा जा रहा है। पिछले वर्ष के तीन चौथाई भाग में १४३५ बार काम बन्द हुआ और १४१७७२७ मजदूरों ने उसमें भाग लिया और इस अनुपात में ८९२५२५१ दिनों की क्षति हुई। १९४६ के अगस्त तक मासिक उत्पादन के आंकड़ों के आधार पर यह अनुमान

(शेष पृष्ठ १७ पर)

संगीनों के पहरे में अहिंसा के प्रयोग ?

[प्रो० रंजन]

उस दिन जब राजेन्द्र बाबू से मिलने गया तो देखा बजाज-वाड़ी (वर्धा) का गेस्ट हाउस चारों ओर से बन्दूक धारियों से घिरा था। पुलिस के दरोगा और नीली वर्दी वाले सिपाही फाटक पर चक्कर काट रहे थे। सहज भाव से उधर निकलने वालों से प्रश्न किये जाते। शंका और सन्देह की बहार थी। फौज के सैनिकों के लिये अलग अलग कनातें लग रही थीं...। सुरक्षा फौज की छोटी छोटी आंखें उनके भीतर से झांक रहीं थीं। जैसे अंगरेजी जमाने के किसी गवर्नर या मेम्बर की रखवाली की जा रही हो। इनकी रक्षा के लिये यह अति आवश्यक था। देश के प्यारे नेताओं के जानों की रक्षा सैनिक और पुलिस के हाथों होनी ही चाहिये। पर इसके बावजूद भी दिमाग पर पिछले वर्षों के नक्शे खिंच रहे थे मन उन्हें पास पास रख कर तौल रहा था। हरएक अवस्था पर प्रश्न वाचक चिन्ह अपने आप लग जाता था। पहिले जब राजेन्द्र बाबू या जवाहरलाल सरीखे नेता वर्धा में आते थे तो स्वयं सेवकों की कतारें उन्हें घेर कर चलती थीं। पुलिस को पास नहीं फटकने दिया जाता था। नम्रता और सेवा के ये अहिंसक सैनिक उस कांग्रेसी गौरव के प्रतीक थे। गरीब जनता पलक पावड़े बिछा देती थी उनके रास्ते में। उत्सुक जन समुद्र उमड़ पड़ता था उनकी कदम पोशी को। पर इस बार क्या होगा? वर्धा की वह सुनहरी परम्परा क्या धूल में मिल जायेगी? अधिकार और शासन की काली नलिया अब उस जनसमुद्र का स्वागत करने आगे बढ़ेंगी। नहीं अब तो शायद उन्हें उस एरिया के पास भी नहीं फटकने दिया जायगा। और यह सब इस लिये हो रहा था कि कोई विद्रोही नागरिक महात्मा जी की प्राणान्तक घटना को फिर न दुहरा सके। राजनैतिक दृष्टि से यह सब ठीक है। सत्ता का शौर्य इसी से जाहिर होता है। पर इससे एक सवाल मनमें उठता है।

बापू की अहिंसा की इससे बड़ी हार और क्या हो सकती है?

अपने देश का एक लोक प्रिय नेता अपने देश में सावधानी और शंका के इस बोझ को लेकर कब तक चल सकेगा? क्या यह जनतन्त्र की कटु पराजय नहीं है? क्या अहिंसा के सहज सिद्धांत आज पछाड़ खाकर वर्धा में रो नहीं रहे हैं?

बापू को गये अभी सिर्फ ४० दिन हुये हैं। और इसी बीच में उनके सिद्धांतों की ऐसी मिट्टी पलीत! बापू के नाम पर स्मारक बनवाने, और रचनात्मक कार्य की योजनायें तैयार की जायेंगी और सबसे मजेदार बात यह है कि यह सब होगा पहरे और संगीनों के घेरे में बैठ कर। ४०० बापू के कर्मठ शिष्य अहिंसा और ग्राम उद्योग की चर्चा करेंगे जब कि चारों ओर फौज और पुलिस के सिपाही गश्त कर रहे होंगे! व्यवहार और सिद्धांत के वैषम्य का इससे सुन्दर उदाहरण क्या कहीं और मिलेगा। और यहां के किये गये निर्णय जनता के जीवन को कितनी गहराई तक स्पर्श करेंगे। जिस अहिंसा की रक्षा में 'बापू' ने अपना बलिदान दिया, जिसे बचाने में वे खुद अपने शरीर को न बचा सके आज उसी अहिंसा का वर्धा में खून किया जा रहा है .. व्यक्ति के प्राणों की रक्षा करके उसकी आत्मा को कुचला जा रहा है जिस अहिंसा पर से देश के अगण्य नेताओं और सत्ता का विश्वास 'स्वराज्य' के विषय में भी नहीं रहा...वही अहिंसा जीवन व्यापी सिद्धांतों और राजनैतिक गुत्थियों को अब सुलझाने में, कहां तक सफल होगी?

आप मुझ से पूछ सकते हैं कि संकट के ऐसे वातावरण में अपने इन कर्णधारों को क्या अरक्षित छोड़ दिया जाता? मैं यह कब कहता हूं। पर मैं तो आप से स्वयं पूछना चाहता हूं कि जिस अहिंसा की रक्षा में बापू ने अपने प्राण दिये उन प्राणों का मूल्य अहिंसा की आत्म रक्षा से कम था या अधिक और अगर बापू ने शरीर से अधिक श्रेष्ठ माना अपनी प्यारी अहिंसा को तो क्या आज उनके पीछे व्यक्तियों के प्राणों से भी गई गुजरी अहिंसा हो गई है? दिखाई दे रहा है — स्वरक्षा और प्रबन्ध के नाम पर उसका गला घोंटा जा रहा है और वह भी साधना

अहिंसा का देवता

> प्राचीन काल में जब सम्राट् भी ऋषि-आश्रम या तपोभूमि में पहुंच कर अस्त्रशस्त्रों को उतार देते थे..। आज हमारे सामने प्रश्न है — प्राणों की रक्षा श्रेष्ठ है या अहिंसा का विश्वास? .. 'बापू' की अहिंसा उनके घर में ही पराजित होगी? —सच!!

और तपस्या की उस पीठस्थली सेवाग्राम और वर्धा में जहां बापू ने ११ वर्षों तक विश्व को, राष्ट्र को, और राष्ट्र के नागरिकों को प्रेम और विश्वास के पाठ पढ़ाये थे। आज उसी भूमि पर, उन्हीं के पन्थानुगामियों की यह दशा देख दिल रो उठता है। मन बार बार पूछना चाहता है कि आखिर यह सब क्या हो रहा है? क्या वर्धा में आज पूर्ण लोकतंत्र का, जन प्रिय शासन का, "शिलान्यास" हो रहा है या कूटनीति पूर्ण पश्चिमी प्रजातंत्र को उसकी नसों में उतारा जा रहा है।

अखबारों में रोज पढ़ा करता था की दिल्ली में पटेल और नेहरू के बंगलों में चारों ओर तार कसे जा रहे हैं। सैनिकों का कड़ा पहरा बिठा दिया गया है। ठीक था। दिल्ली के दल दल में यह सब शोभा देता था। पर जब उस दिन सेवाग्राम की पवित्र भूमि पर सैनिकों की कदम पड़ने की बात सुनी तो कुछ समझ न सका। इसका अंजाम क्या होगा।

गौतम बुद्ध के शिष्य उनके प्रतिद्वन्दी के भय से जब उन्हें विशेष सावधान रहने को कहते तो वे हमेशा हंस कर कहा करते थे —'प्रेम और विश्वास के हरे भरे अंकुरों को शंका और भय से दूषित मत करो — प्राणों की रक्षा से अधिक मूल्य है उस अहिंसा का जिसके बल पर संसार की घृणा को जीतना है।' बापू ने भी यही कहा और यही किया पर उनके नाम की जय बोल कर गांधी की इस नगरी में आज ये सैनिक और असंख्य गुप्तचर जवाहर और प्रसाद के प्राणों की रक्षा नहीं कर रहे हैं वरन् बापू की जीवन-ज्योति अहिंसा के सीने में गोलियां मार रहे हैं। सोचता हूं १४ तारीख को सेवाग्राम में रचनात्मक कमेटी की बैठक होगी —विनोबा, जाजू, किशोरी लाल बापू की नामकी माला जपने वाले उनके लेफ्टिनेंट वहां शोभित होंगे, बीच में नेहरू और प्रसाद होंगे। फाटक के भीतर 'प्रवेश-पत्र' के बिना प्रवेश निषिद्ध होगा और सेवाग्राम की सीमा की चप्पा चप्पा जमीन संगीनों की चमचमाहट से भर जावेगी।

काश! इन अहिंसा और बापू के पुजारियों से कोई पूछता कि तुम्हारी अहिंसा का जनाजा उसी समय निकल गया जिस दिन सेवाग्राम की कुटी—प्रेम और अहिंसा की कुटी— चारों ओर से सैनिकों द्वारा परिवेष्ठित की गई। तुम्हारी विश्वास और प्रेम की इमारत तो उसी दिन ढह चुकी जिस दिन आत्मरक्षा के

(शेष पृष्ठ १८ पर)

काश्मीर की समस्या का विश्लेषण

[श्री केशवकुमार एम० ए०]

आज का काश्मीर जिन ज्वालाओं के बीच विदग्ध हो रहा है और भारत-प्रायद्वीप (विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान) जो विरोधी विचारधाराओं के जिस संघर्ष में उलझा हुआ है उसका एक तटस्थ दर्शन द्वितीय महायुद्ध के पूर्व के गृह युद्ध-ग्रस्त स्पेन का स्मरण दिला देता है। स्पेन में भी यही अभिनय किया गया था जिसका अशुभ परिणाम इस समय भी स्पेन के नागरिक जीवन की जड़ों में विष सींच रहा है और यह सब इसलिये है कि ऐंग्लो-अमेरिकन साम्राज्यवाद उसे संरक्षण और पोषण दे रहा है।

स्पेन में जो रक्त-रंजित-अभिनय हुआ था उसका परिणाम अकेले स्पेन के लिये ही अशुभ नहीं हुआ बल्कि सारे संसार को इस मथन का कालकूट पीना पड़ा था। द्वितीय महायुद्ध का प्रथम अध्याय स्पेन का गृहयुद्ध ही था। क्योंकि स्पेन का घरेलू विग्रह केवल स्थानीय या पारिवारिक संघर्ष ही नहीं था, वरन् समस्त यूरोप में द्वंद्व-ग्रस्त दो विरोधी विचारधाराओं की प्रभुत्व-प्रतियोगिता का एक व्यापक मोर्चा था। स्पेन के रिपब्लिकन जनतन्त्रीय आदर्शों को स्पेन के जन-जीवन में मूर्त करना चाहते थे और उनके विपक्ष में था जनरल फ्रांको का दल जो जर्मनी एवं इटैली की भांति स्पेन में भी फासिस्ट शासन कायम करना चाहता था। वस्तुस्थिति यह थी कि रिपब्लिकन पार्टी जनता की सबसे बड़ी प्रतिनिधि पार्टी थी और जनता के सक्रिय सहयोग के आधार पर ही वह फ्रांको की सेनाओं को पराजित करने और तदुपरान्त नई सरकार कायम करने की क्षमता रखती थी; किंतु इतने पर भी वह असफल हो गई। क्यों?

प्रश्न का उत्तर

इस प्रश्न का उत्तर सरल है। संसार की अन्य जनतन्त्रात्मक शक्तियों ने स्पेन के गृह युद्ध के वास्तविक रूप को तो हृदयंगम कर लिया था किन्तु अपनी अनुभूति को कार्यान्वित करने का साहस उन्हें नहीं हुआ था। पक्ष ग्रहण करना उन्हें अनुचित प्रतीत हुआ। अतः संसार के प्रगतिशील राष्ट्रों ने केवल नैतिक समर्थन के रूप में ही रिपब्लिकनों को अपनी सक्रिय सहायता दी थी। इस मर्यादित परिधि से आगे बढ़ने का साहस उनके भीतर जाग्रत न हो सका। इसके विपरीत तत्कालीन फासिस्त शक्तियों ने जनतन्त्रों की इस मनोवैज्ञानिक और नैतिक दुर्बलता से पूरा पूरा लाभ उठाया और अपना प्रभुत्व विस्तीर्ण करने के लिये फ्रांको को शरण ही नहीं दी, बल्कि उसे पर्याप्त सैन्य सहायता भी दी। जर्मनी और इटैली की फासिस्त फौजें नग्नरूप में स्पेन में जाकर लड़ीं। रिपब्लिकनों के लिये यह दबाव असह्य था और वही हुआ जो अनिवार्य था। रिपब्लिकन पराजित हो गये और प्रतिगामी ताकतों को विजय के साथ राज्य भी मिल गया।

हिटलर और मुसोलिनी ने फ्रांको-शासित स्पेन से अगणित लाभ उठाये हैं। यदि द्वितीय महायुद्ध कुछ दिन के लिये और टल जाता तो स्पेन इंग्लैण्ड पर नाजी आक्रमण का मोर्चा बना दिया जाता। इसके अलावा जापान के युद्ध में आने तक स्पेन, जर्मनी और जापान के परस्पर विनिमय का माध्यम रहा है। इस विनिमय का असली रूप किसे ज्ञात नहीं है? स्वयं अमेरिकन कारखानों से युद्ध की सामग्री यहां आती थी और यहां से जर्मनी और इटैली में जाती थी। काश्मीर में यह परिस्थिति नहीं है किन्तु भावी सुरक्षा की दृष्टि से हमें परिस्थिति को इस पराकाष्ठा तक समझना होगा।

दो विरोधी दृष्टिबिंदु

काश्मीर में आज जो हत्याकांड चल रहा है उसका वर्गीकरण गृह-युद्ध में नहीं किया जा सकता। किन्तु उसके विन्यास की काफी रूपरेखाओं का स्पेन की परिस्थिति से साम्य है। स्पेन की भांति काश्मीर में भी दो विपरीत विचारधारायें अपने अपने प्रभुत्व विस्तार के लिये परस्पर संघर्ष कर रहे हैं। एक वर्ग में शेख अब्दुल्ला द्वारा संचालित नेशनल कान्फ्रेंस है जो प्रगतिशील और जनतंत्रीय आदर्शों पर आधारित सबसे बड़ी जन-प्रतिनिधि संस्था है। नेशनल कान्फ्रेंस का मूल प्रेरणा-स्रोत भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस है। जातीय भेद-भाव रहित इस संस्था में हिन्दू मुसलमान और सिख समान स्तर पर मिल कर व्यापक जनतंत्रीय आदर्शों को कार्यान्वित करने का प्रयत्न करते हैं। दूसरे वर्ग में साम्प्रदायिक संकीर्णता पर आधारित मुस्लिम कान्फ्रेंस है जिसकी प्राण-शिराओं को मुस्लिमलीग के सिद्धान्तों से पोषण मिलता है। स्पेन में जनरल फ्रांको ने हिटलर और मुसोलिनी का प्रोत्साहन प्राप्त करके अपने देश के साथ जो विश्वासघात किया था वही मुस्लिम कान्फ्रेंस मि० जिन्ना के प्रोत्साहन से काश्मीर में करने जा रही है। पाकिस्तान के सर्वेसर्वा काश्मीर को भी अपने राज्य की परिधि में सम्मिलित करना चाहते हैं। यह अवश्य है कि पाकिस्तान के नेता हिटलर और मसोलिनी की भांति अपनी अभिलाषा को स्पष्ट करने का साहस नहीं कर सके हैं किन्तु छिपाने का काफी प्रयत्न करने पर भी उनका पाखण्ड छिप नहीं सका है और स्पेन की भांति फासिस्टों को वहां सफलता भी नहीं मिल सकी है। क्योंकि काश्मीर का पड़ौसी जनतन्त्रीय भारत यूरोप के जनतंत्रीय राष्ट्रों की भांति मौन होकर बैठा नहीं रह सका।

प्राकृतिक विवरण

काश्मीर का क्षेत्रफल ८४४७१ वर्ग मील है जो हैदराबाद के क्षेत्रफल से भी अधिक है [१-स०] लेकिन हैदराबाद के विपरीत काश्मीर की अधिकांश भूमि पहाड़ी है। समुचित शासन-प्रबन्ध की सुविधा के उद्देश्य से सारी रियासत तीन प्रान्तों में विभाजित है। उन तीन रियासतों के नाम जम्मू, काश्मीर और सीमान्त है और तीनों का क्षेत्रफल क्रमश: १०६५१ वर्गमील, ८५३९ वर्गमील और ६३५५४ वर्गमील है। सीमान्त क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा भूभाग है। पर्वतीय भूमि में आवागमन की कठिनाइयों के कारण इस प्रान्त को भी तीन भागों में विभक्त कर दिया गया है — लद्दाख जिला, गिल्गित एजेन्सी और सरहदी इलाका इनका क्षेत्रफल क्रमशः ४५७६२ वर्गमील ३११२ वर्गमील और १४६८० वर्गमील है।

काश्मीर प्रान्त उत्तुंग हिम शृंग-मण्डित घाटियों, सघनवनों और अगणित सुन्दर झीलों से आच्छादित प्रान्त है — प्रकृति का परिपूर्ण सौन्दर्य जितने शृंगार और आकर्षण के साथ इस स्थल पर व्यक्त हो रहा है उसकी प्रतिच्छवि अन्यत्र दुर्लभ है। संसार भर में काश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य की जो महिमा फैली हुई है वह काश्मीर झेलम नदी के तट पर बसा हुआ यह प्रान्त ही है। मूल काश्मीर यही है और अधिकांश काश्मीरी यहीं रहते हैं। इसी प्रदेश के लिये 'राजतरंगिणी' के गायक कल्हण ने कहा है :

"त्रिलोक में रत्नगर्भा पृथ्वी परम प्रशंसनीय है, उससे भी अधिक कुवेर का प्रदेश है, उससे भी बढ़कर हिमालय की शृंगमाला है और उससे भी अधिक महिमामयी इस पर्वत शृंखला से आवृत भूमि है।"

जन संख्या एवं व्यवस्था

झेलम की घाटी के उत्तर में लद्दाख का विस्तृत भूभाग है जो शेष सारी रियासत के क्षेत्रफल से बड़ा है। समुद्रीय धरातल के हजारों मील ऊपर यह एक पर्वतीय विस्तार है जहां की भूमि घास भी अंकुरित नहीं कर सकती है। प्रसिद्ध कराकोरम पर्वत-श्रेणी की प्रकम्प झलकों से आच्छादित यह प्रदेश जितना विस्तृत है जन संख्या की दृष्टि से उतना ही अभागा है — इतने बड़े भूभाग में केवल लगभग तीस हजार व्यक्ति ही रहते हैं जिनमें आधे बौद्ध हैं और आधे मुसलमान। शरीराकृति से ये लोग तिब्बती मंगोल जाति के ही ज्ञात होते हैं। उनकी भाषा भी ८० प्रतिशत तिब्बती है और रहन-सहन एवं खान-पान में भी तिब्बत की जन संख्या से ही ये विशेष साम्य रखते हैं।

काश्मीर की घाटी के पूर्व में पुंछ है जिसमें काश्मीर-महाराजा के आधीन एक हिन्दू राजा राज्य करता है। पुंछ की जन संख्या तीस हजार है जिनमें सब मुसलमान हैं और पश्तो बोलते हैं (?)। नस्ल की दृष्टि से ये लोग उसी प्रकार पठान हैं जिस प्रकार लद्दाख के लोग तिब्बती हैं। यहां के लोगों का मूल व्यवसाय फौज में भर्ती होना है। पाकिस्तान से जो आक्रमक काश्मीर में आये हैं वे पुंछ के द्वारा ही आये हैं।

दक्षिण भाग में जम्मू का प्रान्त है जहां की ७३ प्रतिशत जन संख्या हिन्दू है। भौगोलिक और भाषा की दृष्टि से जम्मू पंजाब का ही अंश है। यहां के निवासियों की भाषा भी पंजाबी है और वे काश्मीरी इसी कारण कहलाते हैं कि महाराजा हरीसिंह के पूर्वजों ने इस भूभाग को अंग्रेजों से खरीद लिया था। जम्मू की जन संख्या लगभग चार लाख है।

समग्ररूप से रियासत की जन संख्या उसके क्षेत्र फल के अनुपात से सामंजस्य नहीं रखती। विशेष रूप से सरहदी इलाकों की जन संख्या का औसत प्रति वर्गमील पांच व्यक्ति हैं। रियासत का तीन-चौथाई भाग सरहदी इलाकों में पड़ता है। केवल जम्मू और काश्मीर प्रान्त की आबादी का घनत्व ही १६० से २०२ व्यक्ति प्रति मील होता है। इस प्रकार क्षेत्रफल के विस्तार की दृष्टि से रियासत की जन संख्या सन्तोषप्रद नहीं है। १९४१ की जन-गणना के अनुसार सारे राज्य की आबादी ४०२१६१६ थी जिसमें गैर मुसलमानों की संख्या २३ प्रतिशत गिनी गई थी। विभाजन के पूर्व भारत में भी मुसलमानों की आबादी का यही प्रतिशत था। ब्रिटेन के टोरी आज जो भारत विभाजन की भांति काश्मीर के विभाजन की सिफारिश कर रहे हैं उनकी प्रेरणा एवं तर्क का आधार आबादी के प्रतिशत का यह साम्य ही है। पाकिस्तान के नेताओं की आंतरिक मंशा यही है। गत २८ दिसम्बर के 'न्यूयार्क पोस्ट' में उनके संवाददाता ने काश्मीर के सम्बन्ध में पाकिस्तान के नेताओं के मन्तव्यों का जो सारांश प्रकाशित किया है उससे इस धारणा की पुष्टि होती है। मूल काश्मीर प्रान्त की आबादी में ८० प्रतिशत से भी अधिक मुसलमान हैं। इसके विपरीत जम्मू प्रान्त की जन संख्या में हिन्दुओं का प्राधान्य है। जम्मू में गत जन-गणना के अनुसार ७३ फी सदी

हिन्दू हैं। अतः विभाजन के समर्थकों ने अपनी धारणा को इन आंकड़ों पर स्थिर कर लिया है। वे काश्मीर का प्रान्त पाकिस्तान को एवं जम्मू का प्रांत भारत को देने की योजना पेश कर रहे हैं।

अनुचित प्रश्न

भारत-विभाजन की स्वीकृति से काश्मीर के विभाजन का सूत्र ग्रहण करना कोई भी औचित्य नहीं रखता। सबसे पहिला तर्क काश्मीर विभाजन के पक्ष में यह है कि वहां मुसलमानों का बाहुल्य है अतः वह स्वभावतः ही पाकिस्तान के सार्वभौमत्व में आना चाहिये। आज के युग में ऐसा संकीर्ण और स्तर-विहीन तर्क बौद्धिक दिवालियापन का द्योतक है। यदि पाकिस्तन के इस तर्क को उसकी मंशा के अनुसार मान्यता दी जावे तो इंडोनेशिया, अफगानिस्तान और मध्य-पूर्व के समस्त मुस्लिम जन-संख्या-प्रधान देश पाकिस्तान के सार्वभौमत्व की परिधि में आने चाहियें। क्या ब्रिटेन के टोरी इस न्याय के औचित्य को स्वीकार करेंगे ?

वस्तु स्थिति यह है कि काश्मीर के सामने विभाजन का प्रश्न ही अनुचित है क्यों कि विभाजन या सम्मिलन की निर्णायक जनता है। राष्ट्रसंघ का शिलान्यास ही जनता के मूलभूत अधिकारों की रक्षार्थ हुआ है। काश्मीर की जनता ने अब्दुल्ला के प्रेरक नेतृत्व को स्वीकार करते हुये आक्रमकों को अपनी मातृभूमि से बाहर निकालने का जो भीष्म सकल्प किया है उससे ही उसका अभिप्राय स्पष्ट हो जाता है। काश्मीर की जनता न तो पाकिस्तान के दामन में शरणागत होना चाहती है और न अपने देश का खंडित होना ही सहन कर सकती है। जनता ने अपना अंतिम निर्णय दे दिया है। सुरक्षा-परिषद् के सामने सारी समस्या प्रकाशित दोपहरी की भांति स्पष्ट है। इतना होते हुये भी यदि प्रतिगामिता को अपना स्वार्थ आधारित निर्णय बलात् आरोप करने का एकाधिकार मिलता है तो यह अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता की हत्या ही है।

एक ही संस्कृति

जातीयता की दृष्टि से तो सारे काश्मीर प्रांत की जनसंख्या वहां के पूर्व निवासी काश्मीरी पंडितों की है जो मुस्लिम आक्रमणों के समय मुसलमान बना लिये गये थे। आधुनिक सारे काश्मीरी मुसलमानों के पूर्वज इतिहास-प्रसिद्ध काश्मीरी पंडित ही हैं। इसी प्रकार जम्मू प्रांत के मुसलमान सब राजपूतों के वंशज हैं। लद्दाख और सरहदी इलाकों में जो मुसलमान हैं उनकी भी यही अवस्था है। उनके पूर्वज मूलतः मंगोल नस्ल के थे और बौद्ध धर्मानुयायी थे। संस्कृति की दृष्टि से जैसे बंगाली मुसलमान में बंगाली हिन्दू से किसी प्रकार का वैभिन्न्य नहीं दीखता है उसी प्रकार काश्मीरी मुसलमान और काश्मीरी हिन्दु में भी कोई अंतर नहीं दिखाई देता है। जम्मू वासी हिन्दु और मुसलमान के सम्बन्ध में भी यही बात अपवाद-रहित है। काश्मीर के प्रत्येक प्रांत में वही भाषा, वही सामाजिक रीति-रिवाज, वही परम्परा और वही वेश-भूषा वहां के विभिन्न धर्मावलम्बी जन-समुदायों को एक सूत्र में वर्षों से आबद्ध करती आई है — आज भी बाहरी आक्रमण के सामने सबकी प्रेरणा का आदि स्रोत वह बाह्य एवं आंतरिक साम्य ही है। भारतीय संस्कृति महान् ही नहीं है, विशाल भी है। हिमालय के गगन चुम्बी हिमश्रृंगों से लेकर कन्याकुमारी की उत्ताल तरंगों तक एक ही संस्कृति की आत्मा विभिन्न आकारों में जीवन चेतना फूंक रही है। बंगाल और मद्रास प्रांत की संस्कृति के बाह्य आकारों में कितना अंतर है किन्तु दोनों के भीतर एक ही प्राण का स्पन्दन है। यही बात काश्मीर के सम्बन्ध में है। जातीयता की दृष्टि से ही नहीं, संस्कृति की दृष्टि से भी काश्मीर प्राण रूप से भारत का ही एक जीवित अंग है।

अशुभ वर्ग-वैषम्य

काश्मीर के प्रश्न को राष्ट्रसंघ में लेजाने से भारत और पाकिस्तान के आंतरिक मतभ्यों की एक झांकी संसार के अन्य राष्ट्रों को मिल गई है और भारत ने संसार की नैतिक तुला पर पाकिस्तान के अनाचार और अपराध को रख दिया है। किन्तु इसकी एक और विचारणीय प्रतिक्रिया भी हुई है। काश्मीर का प्रश्न राष्ट्र संघ की द्वंद्व-ग्रस्त राजनीति में उलझ गया है और काश्मीर की सीमा पर सोवियत् रूस और चीन के अवस्थित होने से इस राजनीति का सारा रूप ही षड्यन्त्रात्मक हो गया है। इस मसले को समझने के लिये हमें संसार में सभी दिशाओं में बिखरे ऐसे ही स्थलों को अपनी स्मृति पर उतारना पड़ेगा। अजरबैजान, कोरिया, मचूरिया और जर्मनी ऐसे भूभाग हैं जहां संसार के दो विरोधी शिविर अपने वैयक्तिक स्वार्थों को सिद्ध करने के लिये किसी भी पराकाष्ठा का अनौचित्य करने के लिये कटिबद्ध हो गये हैं। युद्धोत्तर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में जो अशुभ वर्ग वैषम्य आ गया है और संसार की महान् शक्तियां जिस प्रकार अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षायें पूरी करने की योजनायें बना रही हैं क्या सामरिक महत्व की भूमि पर अवस्थित काश्मीर उस से अछूता रह सकेगा ? अपनी विदेशी नीति में भारत ने अभी तक किसी पक्ष की नीति को नहीं अपनाया है। किन्तु पाकिस्तान निश्चित रूप से एंग्लो अमेरिकन सभ में है। काश्मीर पर सोवियत् की सीमा मिलती है। एंग्लो-अमेरिकन सभ के स्वार्थ को उत्तेजित करने के लिये यह तथ्य काफी प्रभावोत्पादक है। दूसरी ओर सोवियत् रूस भी आज मुस्लिम जगत् को प्रसन्न करने में सचेष्ट है। काश्मीर के भविष्य की रेखायें इसी पार्श्व भूमि में से बनेंगी।

मुफ्त

नवयुवकों की अवस्था तथा धन के नाश को देखकर भारत के सुविख्यात वैद्य कविराज ज्ञानचन्द्जी बी०ए० (स्वर्ण-पदक प्राप्त) गुप्त रोग विशेषज्ञ घोषणा करते हैं कि स्त्री पुरुषों सम्बन्धी गुप्त रोगों की अचूक औषधियां परीक्षा के लिए मुफ्त दी जाती हैं ताकि निराश रोगियों की तसल्ली हो जावे और धोके की सम्भावना न रहे। रोगी कविराज जी को विजय फार्मेसी, होज काजी दिल्ली में स्वयं मिल कर या छः आने के टिकट भेज कर औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए छः आने भेज कर ११६ पृष्ठ की अंग्रेजी की पुस्तक Sexual Guide प्राप्त करें।

३॥) रु० में ६ पुस्तकें

प्रेम जीवन — पति पत्नि के पढ़ने योग्य काम विज्ञान की नई पुस्तक १)
वशीकरण मंत्र—वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह मू० १)।
हिन्दी अंग्रेजी शिक्षक मू० १)
हुस्न पैरिस-पति पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो मू० १॥)
खजाना रोजगार मू० १)
हारमोनियम टीचर मू० १)
६ पुस्तकों का सेट ३॥), डा० ख० ॥)
संतोष ट्रेडिंग कम्पनी (वी. ए. डी.) पाठक स्ट्रीट, सैगंज, अलीगढ़।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट(रजिस्टर्ड)अलीगढ़।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित न० ६२१ कीमत ७॥।≈) डाकखर्च व पैकिंग १।=)।

नोट—एक समय में २ कैमरों के ग्राहक को एक कैमरा मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें। अन्यथा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस। अपना पता पूरा और साफ साफ लिखें।

इम्पीरियल चेम्बर आफ साइन्स (AWD) हलका नं० २१ अमृतसर।
Imperial Chamber of Science (AWD) Halka No 21 Amritsar

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले और व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० २०१ कीमत ४॥≈) क्वालिटी नं० २२२ कीमत ६॥।) की जगह दूसरा स्पेशल क्वालिटी नं० २२० कीमत ६॥), पैकिंग व डाकव्यय १=)

नोट—एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० २२० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अन्यथा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस

वेस्ट एण्ड ट्रेडर्स (V. A. D.) पोस्ट बाक्स १९९, दिल्ली।
West End Traders, (V. A. D.) P. B. 199, Delhi.

साप्ताहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे। सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत हो गया और चम्पा ने जमींदारी का काम संभाल लिया।

चम्पा के जमींदारी संभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बड़े भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बंटवारे पर सहमत कर लिया। बंटवारे से ही सन्तुष्ट न होकर देवकी ने चम्पा और सरला को उड़ाने का षड्यन्त्र किया और इसके लिए वैदेहीशरण और कैलाश को नियुक्त किया। बिहार भूकम्प के बाद सेवा के लिए आया हुआ रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत हिल मिल गया था। उसकी अनुपस्थिति में ही इस षड्यन्त्र के अनुसार कार्य करने का निश्चय किया गया। बिसरामपुर की दुर्घटना के पश्चात् —

[६]

[गताङ्क से आगे]

बिसरामपुर में उन लोगों को तीन दिन तक ठहरना पड़ा। चम्पा को हल्की ही चोट आयी थी। वह शीघ्र ही स्वस्थ हो गयी, परन्तु सरला के, आघात गहरे और संख्या में अधिक थे। खींचातानी में उसके शरीर पर कई जगह रगड़ लग कर रुधिर बह निकला था। झटका लगने से बांये हाथ की कलाई की हड्डी उतर गयी थी। सरला के हृदय पर उस सारे दृश्य का धक्का भी बहुत जोर का लगा था। उसे होश में आने में कई घण्टे लग गये। जब होश में आयी तब भी हिलने-जुलने योग्य नहीं थी। तीन दिन की परिचर्या और गांव के घरेलू इलाज से उसकी दशा इतनी सुधर गयी कि उसे बैल-तांगे में गद्दों पर लिटाकर बेलूर तक ले जाया जा सके। उपर्युक्त घटना के चौथे दिन प्रातः काल वे लोग बिसरामपुर से बेलूर के लिये चल पड़े।

घटना की रिपोर्ट दूसरे ही दिन थाने में करा दी गयी थी। कैलाश, वैदेही-शरण और गाड़ीवान् ये तीन आदमी तो पहिचाने हुए थे ही। दूसरे दिन सायं-काल उनकी गिरफ्तारी के वारण्ट जारी हो गये।

देहात के लिये यह बहुत बड़ी और सनसनी पूर्ण घटना थी, ऐसी ही बड़ी और सनसनी पूर्ण जो जैसी राष्ट्रों की की दुनिया में किसी राज-परिवार पर गोली चलने या दो देशों के आपस में टकरा जाने की समझी जाती है। आस-पास के २०-२५ गांवों में बहुत दिनों तक इस घटना की चर्चा और व्याख्या होती रही। जब सब समाचार खूब नमक मिर्च के साथ सरला-नपुर पहुंचे, तब हवेली में मानो शादि-याने बजने लगे। देवकी रानी ने सन्तोष-पूर्वक सिर हिलाते हुए कहा — 'यह तो एक दिन होना ही था। महारानी जी अपनी जवान लड़की को लिये बहुत सैर करती फिरती थीं। दोस्त भी बहुत-से बना रक्खे थे। कुल की मर्यादा तोड़ने का यही इनाम होता है।'

बेलूर पहुंच कर सरला का विधि-पूर्वक इलाज आरम्भ किया गया। पटने से बंगाली डाक्टर को बुलाया गया, जिसने आघातों पर दवा लगायी और कलाई की हड्डी को ठीक जगह पर जोड़ कर पट्टी बांध दी। कलाई दायें हाथ की थी, इस कारण उसे हर काम के लिये दूसरे की सहायता की आवश्यकता होती थी। फलतः उसे दो-तीन सप्ताह तक रोगी और पराधीन बनकर रहना पड़ा।

माधवकृष्ण को परिवार के बेलूर पहुंच जाने पर एकदम ही जमींदारी की देखभाल और मुकदमे की पैरवी के लिये बाहर चले जाना पड़ा। रमा अपने मायके की रिश्तेदारी में एक शादी पर गयी हुई थी और चम्पा स्वयं अर्धरोगी और निर्बल हो रही थी। उसके शरीर और मन पर जीवन भर के कष्टों का जो बुरा असर हुआ था, उसे उस रात की घटनाओं ने और अधिक गहरा कर दिया। फलतः सरला की परि-चर्या का अधिकतर बोझ रामनाथ पर ही पड़ा। रामनाथ ने वह कार्य जिस तत्परता से किया, उससे यह अनुमान लगाना कठिन नहीं था कि वह उसे प्रसन्नतापूर्वक कर रहा था, अनिच्छापूर्वक नहीं। वह चौबीस घण्टे के दिन में लगभग १६-१७ घण्टे सरला की परिचर्या में व्यतीत करता था। केवल थोड़े बहुत सोने या नित्यकर्मों से निवृत्त होने के लिये रोगी से अलग होता था। उसका शेष सारा समय सरला की सेवा में ही गुजरता था।

यह तो पाठक समझ ही गये होंगे कि रामनाथ रोगी का आदर्श सेवक नहीं बन सकता था। उसकी तबीयत में न इतना धैर्य था और न इतना सन्तोष कि वह एक रोगी का आदर्श परिचारक बन सकता। इस कारण बीच-बीच में कलह भी उपस्थित होते रहते थे। कभी वह रोगी के किसी बात पर स्वाभाविक आग्रह करने पर चिल्ला उठता था, तो कभी बच्चों की तरह रूठकर बैठ जाता था। फिर भी उस की तत्परता प्रेम और परिश्रम का सम्मि-लित रूप से यह प्रभाव हुआ था कि चम्पा और सरला उसकी प्रकृति के विस्फोटों को क्षमा कर देती थीं और उबाल के शान्त हो जाने पर रामनाथ फिर सेवा के कार्य में लग जाता था।

स्त्री हृदय स्वभाव से ही भावुक होता है। उस पर प्रेम, साहस और सेवा जैसे गुणों का बहुत शीघ्र और तीव्र प्रभाव पड़ता है। चम्पा और सरला दोनों पर ही उसका पुष्कल प्रभाव पड़ा। उन दोनों पर पड़े हुए प्रभावों की भी यदि परस्पर तुलना करनी हो तो हम कह सकते हैं कि चम्पा पर जो प्रतिक्रिया हुई, वह अधिक गहरी थी। प्रकृति ने पुरुष और स्त्री दोनों को अपने आप में अधूरा बनाया है। पुरुष कितना ही शक्ति-सम्पन्न हो, स्त्री के सहयोग के बिना लूला रहता है, और स्त्री कैसी ही प्रतिभा-सम्पन्न हो, पुरुष का साथ न होने पर अपने को अपूर्ण ही अनुभव करती है। वस्तुतः दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। बेचारी चम्पा के जीवन में भी एक बहुत बड़ी अपूर्णता आ गई थी। वह जमींदारी का प्रबन्ध भी करती थी और घर की देखभाल भी। परन्तु किसी कार्य में उसका दिल नहीं जमता था। माधवकृष्ण से उसे जमीं-दारी के बंटवारे की बात छिड़ने के पश्चात् कुछ सहायता मिलने लगी थी, परन्तु वह भी अधूरी थी। माधवकृष्ण को मुख्य चिन्ता अपने हिस्से के बंट-वारे की थी। साथ साथ लगते हाथ वह बेलूर की जमींदारी की भी देख-भाल करने लगा था परन्तु वह तो गांव को जाते हुए तिनका छूने के समान ही था। घर के मामलों में तो चम्पा को सरला के बिना और किसी की सहायता नहीं मिलती थी। रंगभूमि में रामनाथ के प्रवेश ने एक नई परिस्थिति पैदा कर दी। रामनाथ में कई विशेषतायें थीं। वह शरीर से हृष्ट-पुष्ट, साहसी और वाक्पटु व्यक्ति था। उसके बेलूर में आते ही यह बात अनुभव होने लगी थी कि वह देशभक्त और वीर पुरुष होने के साथ-साथ बहुत उदार विचारों वाला व्यक्ति है। वह बातचीत में स्त्रियों के अधिकारों का जोरदार समर्थन करता था और हिन्दू समाज में पुरुषों की ओर से स्त्रियों पर जो अत्याचार होते हैं, उनकी कठोर शब्दों में निन्दा किया करता था। उसके स्वभाव में बहुत उग्रता थी और जब वह किसी कार्य के करने का निश्चय कर लेता था, तब यह नहीं देखता कि उस कार्य को पूरा करने में वह जिन साधनों का प्रयोग कर रहा है, वह अच्छे हैं या बुरे। "अन्त भला सो भला" उसका यही आदर्श था। उसके स्वभाव का यह दोष सामान्य रूप से हरएक की दृष्टि में नहीं आता था। चम्पा के भावुक हृदय पर रामनाथ के गुणों का बहुत गहरा असर हो रहा था। उसे वह अपने बुढ़ापे की लकड़ी समझने लगी थी। और मन में सोचने लगी थी कि क्या ही अच्छा होता यदि रामनाथ मेरा पुत्र होता। बिसरामपुर के समीप संकट के समय पहुंच कर रामनाथ ने उन लोगों की रक्षा की और फिर बीमारी की दशा में सरला की इतनी अच्छी सेवा की, कि उसके प्रति चम्पा का स्नेह और भी बढ़ गया और वह इस निश्चय पर पहुंच गयी कि रामनाथ से सरला का विवाह करके उसे वस्तुतः परिवार का अंग बना लिया जाय।

उपर्युक्त सब घटनाओं का असर सरला के हृदय पर भी हो रहा था। परन्तु उसमें इतना भेद था कि वह रामनाथ के स्वभाव की उग्रता से परिचित हो चुकी थी, इस कारण घबराती थी। विवाह की बात तो अभी उसके दिल में आयी ही नहीं थी। बीमारी में रामनाथ ने जो सेवा की, उससे भी सरला के हृदय पर मीठे-कड़ुवे दोनों तरह के प्रभाव पड़े। उसकी तत्परता मधुर थी। परन्तु विस्फोट भयानक था। चम्पा विस्फोट के समय कांप उठती थी।

इधर रामनाथ के मस्तिष्क और हृदय का प्रवाह वेग से बह रहा था। उसे बेलूर के वातावरण में पहुंच कर बहुत सन्तोष मिलता था। जिमींदारी का पुश्तैनी गौरव, चम्पा का मातृ वात्सल्य और आस-पास की ग्रामीण जनता का आदर-भाव पाकर वह अपने को कुछ ऊंचा उठा हुआ अनुभव करता था। प्रारम्भ से ही सरला के प्रति उसका हृदय आकृष्ट होने लगा था। इससे पूर्व अपने अक्खड़ जीवन में वह कभी स्त्री की समीपता में नहीं आया था। ऐसे व्यक्ति के लिये एक युवती का सान्निध्य हो

वृत्तियों को उत्तेजित करने के लिये काफी था, फिर यहां तो सरला की नैसर्गिक मधुरता से रामनाथ की भावुकता से भरी हुई उस प्रकृति पर तीव्र प्रतिक्रिया हो रही थी। रामनाथ का मस्तिष्क 'सिंह परिवार' के साथ स्थिर सम्बन्ध करने को आत्म-गौरव का बढ़ाने वाला समझने लगा था और उसका हृदय सरला को अपनाने के लिये उतावला हो गया था।

(क्रमशः)

सूचित करें

मुंगफली तेल, व मुंगफली के लिये नव भारत ट्रेडर्स करनूल (मद्रास प्रेसिडेन्सी) को लिखें। हर प्रकार का आढ़त का काम सन्तोषजनक रूप से किया जाता है।

तार का पता—MAHANSARKA

१००) इनाम

(गवर्मेण्ट रजिस्टर्ड)

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।

श्री कामरूप कमख्या आश्रम ५५

पो० कतरीसराय (गया)

२०००) रुपये इनाम

मासिक धर्म एक दिन में जारी

मैन्सोली पिल्ज—एक दिन के अन्दर ही कितने समय के रुके हुए मासिक धर्म को जारी कर देती है कीमत ५) रु०।

मैन्सोली स्पेशल पिल्ज—जो कि फौरन जारी करके मासिक धर्म को बिलकुल आसानी से साफ कर देती है। कीमत ११॥) रु०। याद रखो गर्भवती इसे सेवन न करे क्योंकि यह बच्चेदानी को बिलकुल साफ कर देती है। २०००) रु० इनाम जो मैन्सोली पिल्ज को नामुफीद साबित करे। पत्र व्यवहार गुप्त रखा जाता है।

लेडी डाक्टर असली दवाखाना

(AWD) हलका नं० २१ अमृतसर।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें —)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (६२)

पो० बेगूसराय (मुंगेर)

फैंसी सिल्क साड़ी

आकर्षक डिजाइन

कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर

नं० ७	८	९
१८)	२३)	२८)

२) पेशगी बाकी वी० पी० से

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

वमाको इन्डस्ट्रीज

जुही नं० २१ कानपुर।

धनाढ्य बनें—आप थोड़े समय में बिना रुपया लगाये अमीर बनने के सरल उपायों के लिये "व्यवसाय" मासिक पढ़ें वार्षिक मूल्य ३) नमूना।—) पता—

व्यवसाय पन्नागंज, अलीगढ़।

बचत भिन्न भिन्न काल में

२ जब रुपया चञ्चल था

भूले हुये प्राचीन काल में एक अपूर्व बुद्धि वाले उद्योगी व्यक्ति ने ऐसी गणना की कठिनाइयों से तंग आकर—जैसे कि एक गधे के बदले कितने चावलों की आवश्यकता होगी — यह उपाय सोचा कि प्रत्येक वस्तु के मूल्य को जिनिस के रूप में ही दिया जावे। आज कल भी पूर्वी अफ्रीका की कुछ जातियों में ऐसा व्यवहार है। यह एक जिनिस कदाचित् बकरी थी।

एक शिकारी-चाकू १० बकरियों के तुल्य समझा जाता था। ५० केले बकरी के एक बच्चे के बदले में प्राप्त हो सकते थे। और इसी प्रकार अन्य वस्तुएं भी मिल सकती थीं। किसी व्यक्ति के धन का अनुमान बकरियों की संख्या से किया जाता था। तनिक विचार कीजिए कि माल खरीदने के लिये अपनी बकरियां लिये लिये फिरना कितना विचित्र और कठिन प्रतीत होता होगा। बचत भी बकरियों के रूप में ही होती थी। यह कोई विशेष लाभप्रद मद न थी। बकरियों के पालन पोषण पर भी व्यय करना पड़ता और चोरों, जंगली पशुओं और रोगों के भय का तो कहना ही क्या! एक धनी रात भर में दरिद्र हो सकता था।

इस के विपरीत आज कल माल के खरीदने या बचत करने में कोई विशेष असुविधा नहीं होती परन्तु लाभप्रद मद का चुनाव अभी भी सहल नहीं। एक अच्छा व्यापारी जानता है कि आज कल की रुपया लगाने की सर्वोत्तम मद नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स हैं। ये पूर्णतया सुरक्षित हैं और अवधि की समाप्ति पर इन का मूल्य ५०% बढ़ जाता है — अर्थात १० रुपये १२ वर्ष के पश्चात १५) बन जाते हैं। ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब सर्टिफ़िकेट्स १८ मास के पश्चात भी भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १ वर्ष के पश्चात भुनाया जा सकता है)। थोड़ी बचत वाले ।), ॥), और १) की कीमत के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्स ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

हमारे औद्योगिकक्षेत्र की समस्यायें

(पृष्ठ ११ का शेष)

लगाया गया कि उत्पादन में इस प्रकार कमी आवेगीः—

रुई-के-कपड़ों में ...... ६० करोड़ गज
रुई के सूत में ... ... २० करोड़ पौंड
इस्पात में .... ३०००० टन
सीमेंट में .... २ लाख टन
कागज में .... ८४००० टन

सन् १९४० में श्रमिकों का असंतोष और भी गहरा और तीव्र होता गया। वर्ष के प्रथम चार मास में ही औद्योगिक झगड़ों की संख्या ६३१ तक पहुंच गई जिसमें ३२०४६५५ श्रम-दिनों की क्षति हुई। १९४३ वाले राजनैतिक अस्थैर्य के वर्ष में औद्यागिक झगड़ों की सख्या ७३१ से आगे नहीं बढ़ सकी थी और पूरे वर्ष भर में केवल २३४२२८७ श्रम-दिनों का ही ह्रास हुआ था। श्रम-दिनों की इस क्षति के साथ साथ श्रमिकों के मनोविज्ञान को भी दृष्टिकोण में लाना होगा। क्षुब्ध, असतुष्ट और पूंजीपति से घृणा करने वाला मजदूर अपेक्षाकृत कम उत्पादन करेगा। इन हड़तालों के वास्तविक कारणों के विषय में काफी छानबीन की गई है और कई योजनायें इस सबध में बनाई गई हैं। किन्तु मजदूरों के असतोष में किसी प्रकार का शैथिल्य अभी तक नहीं आ पाया है। विभिन्न विचारधाराओं के परस्पर सघर्ष में श्रमिको की समस्यायें ऐसी उलझ रही हैं कि आज उन्हें सुलझाना बड़ा कठिन है।

श्रम और पूंजी का संघर्ष

यह तथ्य सवमान्य रूप से निश्चित हो चुका है कि देश के आर्थिक सतुलन को स्थिरता देने के लिये आज की सबसे बड़ी आवश्यकता कृषिगत और औद्योगिक उत्पादन बढ़ाना है। यदि यह कार्य यथाशीघ्र प्रारम्भ नहीं किया गया तो सारा अर्थ-तंत्र खड खड हो कर नष्ट हो जावेगा। लेकिन इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये सब से पहिले श्रम-एवं पूंजी के सघर्ष को पराभूत करना है। यदि इस सघर्ष की परिस्थितियों को नहीं मिटाया गया तो यह निश्चित है कि देश को इसका बड़ा भारी मूल्य चुकाना पड़ेगा। श्री गुलजारी लाल नदा ने इस बढ़ते हुये सकट की ओर देश का ध्यान इन शब्दों में आकृष्ट किया है :— 'देश के इतिहास का यह सकट काल है। इस समय राष्ट्र के उत्पादक संगठन को विशृंखल करना राष्ट्र के जीवन और उसकी राजनैतिक दृढ़ता पर सीधा आघात करना है।'

श्रम और पूंजी का संघर्ष अकेले पारस्परिक समझौते से ही दूर किया जा सकता है। यह सही है कि आज सरकारी और जनता के दबाव से पूंजी में काफी सहिष्णुता आई है और श्रमिकों के असंतोष को दूर करने के काफी प्रयत्न किये गये हैं। लेकिन साथ ही हमें अमेरिका के मजदूर संगठन-निर्माता मार्टिन आवन्यास्टर के इस निष्कर्ष को भी मानना पड़ेगा कि मजदूर केवल मजाक के लिये ही हड़ताल नहीं करते हैं। व्यावसायिक अड़चनों के अलावा हड़ताल का कोई भी अभिनदन नहीं करता। औसत मजदूर उग्र राजनीतिज्ञ नहीं होता है। जब तक उनके असतोष का कोई उचित आधार न हो तब तक वे अपनी आमदनी को खतरे में डाल कर विघटित करने के लिये तैयार नहीं हो सकते।"

श्रमिकों के असतोष का मूल कारण आज का उत्तरोत्तर बढ़ने वाला जीवन-यापन खर्च है। कीमतें नीचे उतरने के बजाय अप्रतिहत प्रगति से बढ़ता ही जा रही हैं। उसके साथ साथ वेतन भी बढ़ता जा रहा है। दोनों की वृद्धि में परस्पर प्रतियोगिता हो रही है — एक ऐसा अशुभ चक्र इस प्रकार कायम हो गया है कि वेतन भागी व्यक्ति सतोष के साथ अपना निर्वाह ही नहीं कर पा रहा है। मूल्य वेतन के पीछे भाग रहा है और वेतन मूल्य के पीछे —इस क्रम की प्रगति उत्तरोत्तर तीव्र ही होती जा रही है। दूसरे शब्दों में, हमारे दुर्भाग्य-ग्रस्त राष्ट्र की सारी अर्थ-व्यवस्था स्फीति के चगुल में फस गई है और जब तक सरकार की ओर से इस व्याधि का समुचित उपचार नहीं किया जावेगा तब तक सामान्यजनता को इससे राहत नहीं मिल सकती। लेकिन सरकार की ओर से अभी तक इस सबध में कोई योजना नहीं बनाई गई है। मूल्यों और वेतनों के पारस्परिक द्वद्व को मिटाने के लिये अभी तक सरकार ने वास्तव में यथोचित विचार भी नहीं किया है। अन्न-सकट, वस्त्र-सकट एव दैनिक आवश्यकता के उपकरणों की कमी के निष्कासन का एक-मात्र उपाय सर्वांगीण उत्पादन है। हमारे वर्तमान अर्थ सचिव श्री षणमुखम् चेट्टी ने 'उत्पादन करो या नष्ट हो जाओ' का जो नारा उठाया है वह दूरदर्शिता और यथार्थवाद पर आधारित है और जनता के साथ श्रम एव पूंजी को भी इस सत्य को मूर्त करने में पूरे दायित्व के साथ सक्रिय हो जाना चाहिये।

———

तिल्ली और पीलिया के लिए जड़ बूटी
गरीब लोग ।॥) डाकखर्च भेज कर मुफ्त मंगावें और अमीर अच्छा होने पर श्रद्धानुसार भेंट दे दें।
पता—महात्मा हरीदास, प्रेमाश्रम सोहन आदि बाग, मथुरा।

स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद सबसे बड़ी महत्वपूर्ण समस्या बाह्य और आन्तरिक शत्रुओं से देश की रक्षा है। इसके सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी देने के लिये

'वीर अर्जुन' का

देश रक्षा-अंक

बड़ी शान के साथ १ वैशाख २००५ को प्रकाशित होगा। उसकी तैयारियां शुरू होगई हैं। पाठक अपनी कापी के लिए अभी से एजेन्ट से कह दें और विज्ञापक अपना विज्ञापन बुक करा लें।

देश-रक्षा अङ्क की विषय-सूची

यह वह विषय सूची है, जिन पर प्रामाणिक और विद्वान् लेखकों के लेख मगवाये जा रहे हैं। पाठक इसी से अंक के महत्व की कुछ कल्पना कर सकते हैं।

१ सामरिक दृष्टि से भारतवर्ष की भौगोलिक सीमा
२. भारत ने विदेशियों को कब कब पराक्ष किया ?
३ क्या पाकिस्तान भारत पर आक्रमण कर सकता है ?
४ भारत में देशरक्षा की तैयारियां
५. भारत की जलस्थल और वायुसेना
६. महात्मा गाधी और देशरक्षा
७ ससार के कुछ प्रधान सेनापति
८. भारत के सम्भावित शत्रु और मित्र राष्ट्र
९. अन्तर्राष्ट्रीय सङ्कट मे भारत की स्थिति
१०. क्या एशिया में कोई महान् युद्ध होगा ?
११. सेना नहीं, समस्त राष्ट्र युद्ध करता है
१२. सामरिक दृष्टि से व्यावसायिक प्रगति
१३ जनता में रक्षा की भावना कैसे पैदा हो ?
१४ रूस की जनता ने युद्ध कैसे जीता ?
१५ अनिवार्य शस्त्र शिक्षा
१६ ब्रिटेन और स्वतन्त्र भारत की रक्षा नीति में भेद
१७ भारत में सम्भावित पांचवा दस्ता
१८. राष्ट्र-रक्षा में साहित्य का स्थान
१९. पाकिस्तान बनने से हमारी सैनिक शक्ति पर क्या प्रभाव पड़ा ?
२०. निकट भविष्य में क्या भारत को युद्ध में कूदना होगा ?
२१ विविध देशों में निजी सैनिक सङ्गठन
२२ भारत की अन्तर्राष्ट्रीय नीति
२३ शस्त्र कानून का इतिहास
२४ भारत पर आक्रमण किस दिशा से सम्भव है ?
२५ पाकिस्तान और भारत का बलाबल
२६ रियासतों का देशरक्षा में स्थान
२७. देश में प्रगति विरोधी शक्तियां

सुन्दर कहानियां, उत्कृष्ट कविताएं और बीसियों रंग बिरंगे चित्र।

—मैनेजर

सङ्गीनों के पहरे में अहिंसा के प्रयोग ?

(पृष्ठ १२ का शेष)

नाम पर अस्त्र-प्रयोग की उपयोगिता को मान्य किया गया। सुना है देश भर के ४०० गुप्तचरों ने बरं के छत्ते के समान घर्षा का भर दिया है। केन्द्र और प्रात के गृह विभाग अपनी सावधानी की सीमा को पार कर गया है — और इस वातावरण और सुरक्षा के बीच हमारे 'जन नायक' जवाहर बापू की उस कुटिया में प्रवेश करेंगे।

कहा जाता है कि प्राचीन काल में एक सम्राट् भी ऋषि आश्रम या तपोभूमि में पहुंच कर अपने अंगरक्षकों को पीछे छोड़ देता था — आश्रम की पवित्रता को विनाशक अस्त्रों से दूषित नहीं किया जाता था और आज हमारे सामने प्रश्न है प्राणों की रक्षा श्रेष्ठ है या अहिंसा का विश्वास। और सबका उत्तर यही मिलता है — दोनों पक्षों की तुलना करते हुए भी यह तो सत्य है कि 'बापू' की अहिंसा की उन्हीं के घर में यह सबसे बड़ी हार है।

शादी

दरखास्तें और दूसरी पूरी लिखी शादी योग्य लड़कियों की सूची पत्र और फोटो ५) रु० भेजकर या वी-पी मंगवा लें। और इच्छा-अनुसार रिश्ता चुन लें।

आनन्द स्वामी
शादी डीपार्टमैंट
बाग रामानन्द अमृतसर

...ों को मोती सा चमका कर, ...सूड़ों को मजबूत बनाता ...। पायरिया का खास ...शमन है। शीशी ॥)

...सा ट्रेडिंग कं० चांदनी चौक, देहली

एजेण्टों की जरूरत है—
...स एण्ड कं०, के० डी० जगदीश एण्ड ... चांदनी चौक, दिल्ली।

५००) नकद इनाम

जवामर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु ...विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३॥) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम।
श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

१५०) नकद इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र — इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का ...३) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम गारंटी पत्रसाथ भेजा जाता है पता:—
आजाद एण्ड क० रजिस्टर्ड, (अलीगढ़)

"मेहमान आ गये...

ये गप शप करेंगे और चाय पियेंगे. इन्हें गप-शप में तो जरूर मजा आयेगा पर चाय में नहीं। उनकी मेजमान ने ठण्डे और गीले बर्तन में चाय बनाई है। अच्छी चाय के लिये सूखा और गर्म बर्तन चाहिये।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती, सिर्फ पाँच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

१ सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २ चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३ हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४ तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५ दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपेन्सन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मंगाई जा सकती है।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्सन बोर्ड द्वारा प्रचारित

मनुष्य के चमड़े के व्यापारी

(पृष्ठ १० का शेष)

रहे हैं। उन्हें हुक्म है कि वे अफ्रीका के शहरों के एक तुच्छ कोने में रहें। अस्तबल में नये घोड़े की सी उनकी दशा है। इनको नागरिकता का कोई अधिकार नहीं।

इस शहर के चौधरी थर सर्ट एमर्सन हैं। वे दो बातों के लिये विख्यात थे। एक था उनका ठाठबाट, दूसरी थी उनकी भारतीयों के प्रति प्रबल घृणा। यदि कोई उनसे ठाठबाट में बराबरी करता तो वे उसे अपना दुश्मन समझने लगते। वे भारतीयों के विषय में समय असमय कहते रहते—"ये भारतीय काले हैं, यहां आते हैं गन्दगी फैलाते हैं। इन्हें रहने की कोई तमीज नहीं। युद्ध हम जीतें, आदमी हमारे मरें और ये भारतीय राजपाट में हिस्सा मांगें। यदि दक्षिणी अफ्रीका फल फूल रहा है तो यह अंग्रेजों और डचों की तपस्या का फल है।" इन भारतीयों को ये गुण्डों से पिटवाते। इन पर झूठा दोष लगा कर इन पर मुकदमे चलवाते। इन कामों में ये सिद्ध हस्त थे।

जार्ज टाउन में यह खबर फैल गई कि आज तक रोल्स रोयस (मोटर) में एमर्सन ही चढ़ते थे। एक और अजनबी आया है वह भी ऐसी गाड़ी में चढ़ता है। वह सेसिल होटल में ठहरा है। जब यह खबर एमर्सन साहब के कानों तक पहुंची तो वे इस पर विश्वास ही न करते थे। पर जब हर एक से यही बात सुनी तो झट कुछ नौकरों को साथ ले वे होटल पर आ धमके। चौधरी साहब इसलिए आए थे कि इस अजनबी पर रोब जमायेंगे। अपने फन्दे में डाल कर घर पर चाय के लिये निमन्त्रण देंगे। जब यह आगन्तुक उनके घर पर आयेगा तो चौधरी साहब के ठाठ-बाठ की तारीफ किए बिना न रहेगा।

खूब। एरिक नाइट की पहली टक्कर एक पुराने पापी से हुई। पहले एमर्सन ने अकड़ दिखाने में कोई कसर न की। पर जब देखा कि यहां भी ईंट का जवाब पत्थर से मिलता है तो बातचीत की गाड़ी का कांटा ही बदल दिया।

लाचार चौधरी साहब ने सम्मान से बातचीत शुरू की। एरिक नाइट भी ऐसे नम्र और विनीत बने मानो चौधरी साहब को सज्जनता के कई पाठ पढ़ा दें।

चौधरी साहब ऐसे फंसे कि नाइट को निमन्त्रण ही दे बैठे। कहने लगे—आप होटल से यहां चले आइये। मैं आपके लिये साथ वाली कोठी खाली करवा दूंगा। आप हमारे मनकीय पड़ोसी होकर रहिये। मैं आपको साथ देख [illegible] है। आप से मिलकर बड़ी प्रसन्न होगी।

चौधरी एमर्सन साहब जितने धर्मीले थे उतने उदार भी थे। उन्हें महसूस होने लगा कि नव आगन्तुक महाशय चाल ढाल, वेषभूषा, शिक्षा दीक्षा, रहन सहन बातचीत से नर रत्न लगता है। ऐसों से टक्कर लेने का कोई फायदा नहीं। एमर्सन साहब ने चाय का निमन्त्रण एरिक नाइट को दिया और उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। आज की चाय पर कोई २५ जने निमन्त्रित थे।

शहर के सब गण्य मान्य लोग आज चाय पर उपस्थित थे। बातचीत के सिलसिले में एरिक नाइट ने बताया कि वे खालों और चमड़ों के व्यापारी हैं। हिन्दुस्तान में भी उनकी कई एजेंसियां हैं।

ज्योंही हिन्दुस्तान का नाम सुना, उपस्थित लोग उनके पीछे पड़ गये। वे लगे पूछने हिन्दुस्तान की बाबत तरह तरह के सवाल।

एरिक ने जरा सम्भल कर कहा—"मैं तो इम्पोर्ट की बिजिनेस करता हूं। आपका हर रोज इनसे वास्ता पड़ता है। आप तो इन हिन्दुस्तानियों के बाबत मुझ से कहीं ज्यादा जानते हैं।

उपस्थित लोगों ने समझा कि वे उनसे इस विषय के अधिक ज्ञाता हैं। कह उठे—"हां हां! बड़ी मुसीबत है। हमें तो इन कम्बख्तों से रोज वास्ता पड़ता है। बड़े गन्दे हैं। न मालूम इन लोगों को किसने हमारे गले बांध दिया। किसी दिन आप भी डूबेंगे और हमें भी साथ डुबावेंगे।"

दूसरे ने कहा—'हम इनके गन्दे रहन-सहन की भी परवाह न करें। हम इन्हें शहरों से बाहर रहने को मजबूर कर देंगे। ऐसे कानून बन जाएंगे। पर ये व्यापार में ऐसे निपुण हैं कि हमारा सारा व्यापार अपनी ओर खींच कर पैसा बटोरने में लगे रहते हैं। यहां देखो हमारे मुकाबले में आ खड़े होते हैं और कुछ सालों में हमारे पांव तले से जमीन खिसकने लगती है। एरिक नाइट ने चतुर खिलाड़ी की तरह वार से अपने को बचा लिया। बात टाल दी।

कुछ देर बाद एरिकनाइट ने कहना शुरू किया—"मैं हिन्दुस्तान से माल मंगा कर इंग्लैण्ड और अमेरिका भेजता हूं। पर इन लड़ाई के दिनों में जहाज नहीं मिलते, काम रुक गया है। मैंने सोचा कि दक्षिणी अफ्रीका नई आबादी है। यहां जरा स्वास्थ्य भी ठीक कर आऊं और आप सज्जनों से परिचय पाकर उस देश में नये बहुत से मित्र भी बना आऊं। सो एमर्सन साहब ने मुझे ऐसा सुनहरी अवसर स्वयं ही दे दिया। आप से परिचय और मित्रता अपने आप ही हो गयी। क्या खूब!" यह कह कर वे हंस पड़े और सारी जनता भी हंस पड़ी।

एमर्सन साहब की बेटी 'मेरी' भी वहीं मौजूद थी। यूं तो बोलने में बहुत मशहूर थी। पर आज क्या चुप थी और बारीकी से एरिक नाइट की चित्त वृत्ति को माप रही थी।

किसी ने पूछा—"मिस्टर एरिकनाइट! क्या हम पूछ सकते हैं कि आपका किस बड़े खानदान से ताल्लुक है?"

मिस्टर नाईट ने जवाब दिया "आप दिल के बड़े हैं। आप मेरा सम्मान कर रहे हैं।" यह कह कर वे जोर से हंसे और बाकी लोग भी उस हंसी में शामिल हो गये।

फिर एक प्रस्ताव हुआ कि आज की महफिल बहुत सफल रही। हमें एक क्लब अपने ही गांव में खोलना चाहिये। आज तक वे साथ वाले गांव में जाया करते थे।

सबके आग्रह से एरिक ने उस क्लब का सभापति बनना सहर्ष स्वीकार कर लिया।

(शेष अगले अंक में)

परन्तु डालडा में
बनाने से कितना स्वादिष्ट !

अन्डे की सफेदी को अन्डे के पीले भाग से पृथक करें और सफेदी को गाढ़ा होने तक फेंटिये, फिर अन्डे के पीले भाग को इस में मिलाकर ५ मिनिट तक फेंटिये। इस में कतरे हुए प्याज, कम कुचले हुए मटर अथवा टमाटर के बारीक बारीक टुकड़े, नमक और काली मिर्च स्वादिष्ट बनाने के लिये डालिये। एक तवे पर डालडा को गरम कीजिये और इस में यह मिलाव उंडेलिये। एक तरफ कुछ लाल होने तक तलिये फिर दोहरा कर के पलट दीजिये। दूसरी ओर भी पहिली तरह लाल कीजिये और गरम गरम परोसिये। आप इसे स्वादिष्ट पायेंगे।

डालडा से भोजन किस प्रकार स्वादिष्ट बनाये जायें... दैनिक भोजन के लिये अथवा खास अतिथि के लिये क्या बनाया जायें... ऐसी विशेष सूचना पाने के लिये लिखें।

दि डालडा एड्वायज़री सरविस
पोस्ट बॉक्स नं. ३५३, बम्बई १

चटपटी मजेदार सस्ती और सुन्दर पुस्तकें

हिन्दी इंगलिश टीचर — स्त्रियां, बालक, बालिकायें घर बैठे कुछ ही दिनों में अंग्रेजी लिखना पढ़ना बोलना सीख लेंगी, मू० २) पोस्टेज ।=) ।

हारमोनियम तबला गाइड — हारमोनियम, वेला, सितार, जलतरङ्ग, बेंजो और तबला सिखाने की एकमात्र पुस्तक मू० १।।) पोस्टेज ।≠) ।

फिल्मी अप्सरायें — यौवन की मस्ती के बोझ से लदी हुई पचास अभिनेत्रियों के चित्र एवं उनकी जिन्दगी के गोपनीय रंगीन और मनोरंजक हालात मू० २), पोस्टेज ≠) ।

मजनू की चिट्ठियां — इसमें फिल्म एक्ट्रेसों और एक्टरों की प्रेम लीलाओं, फिल्म स्टूडियोज में होने वाले व्यभिचार का भण्डाफोड़ किया गया है मू० २), पोस्टेज ।≤) ।

पिंगल प्रवेशिका — बिना गुरू हिन्दी, उर्दू में कविता करना व शायरी करना सीखो मू० २), पोस्टेज ।≠) ।

टेलरिंग कटिंग — घर में स्त्रियों को हर प्रकार का कपड़ा सीना सिखा देगी, मू० १।।।), पोस्टेज ।≤) ।

विवाहित मनोरंजन — इस में नव विवाहितों को बतलाया गया है कि वह परस्पर संभोग का सच्चा सुख किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं मू० १), पो० =)

सोहाग रात सचित्र — प्रथम मिलन की भांति मोहक यह पुस्तक आपके विवाहित जीवन को सुखमय बना देगी, मूल्य १।।), पोस्टेज ।=) ।

स्त्री पुरुष रोग चिकित्सा — स्त्री पुरुषों के समस्त रोगों का इलाज । अपूर्व पुस्तक मू० २), पोस्टेज ।≠) ।

खजाने की कुंजी — अनेक हुनर सीख थोड़ी पूंजी से हजारों रुपया पैदा कीजिये, मू० १), पोस्टेज ।–)

फिल्मी संसार — सिनेमा विज्ञापन पर नया ग्रन्थ, फिल्म कैसे खिंचता है, आवाज कैसे भरी जाती है, अभिनेत्री, अभिनेत्रियों की रङ्गीन कहानी, अभिनेत्री, अभिनेता डाइरेक्टरों की जीवनी, इतिहास मू० ३।।) रु० पोस्टेज ।।=) ।

लखनऊ की रंगीन रातें — लखनऊ के नवाबों, वेश्याओं और बिगड़े हुए रईसों के पतन की नग्न तस्वीर देखना चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें, मू० १), पो० ।=) ।

बम्बई की चांदनी रातें — इसमें एक अभिनेत्री की आत्म कथा जिसे पढ़कर आप सिनेमा क्षेत्र का असली रूप देख सकेंगे, मू० १), पोस्टेज ।=) ।

गोरे खबसूरत बनने के उपाय — सचित्र हिन्दी में नयी पुस्तक इसमें क्रीम, पामेड, तेल, सेंट उबटन, चन्द्रमुखी अर्क गोरे होने की दवा मुहासे नाशक पाउडर, लिपस्टिक, गालों की लाली, सुहाग बिन्दी, नेल पालिश, [illegible] आदि समस्त सौन्दर्य सामग्री बनाने की [illegible] सच्ची तरकीबें लिखी हैं, मू० १।।) [illegible] पोस्टेज –) ।

गर्भ निरोध — इसमें गर्भ न रहने के सैकड़ों ही देशी विलायती सुगम प्रयोग लिखे हैं, मू० ।।।), पोस्टेज ।) ।

वशीकरण मन्त्र — अनेक प्रकार के वशीकरण मन्त्रों यन्त्रों, तन्त्रों का अपूर्व संग्रह, मू० १।), पो० ।≠) ।

प्रेम चित्रावली — स्त्री पुरुषों के देखने योग्य आर्ट पेपर पर छपे हुए २[illegible] चित्र, मू० ३), पोस्टेज ।।=), विद्यार्थी तथा अविवाहित न मगायें ।

पुस्तकों पर कोई कमीशन नहीं दिया जाता है कृपया वी० पी० मगा कर वापिस न करें ।

पताः— एस० के० सक्सेना १) रंगमहल अलीगढ़ सिटी ।

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर । दाम १) डाक खर्च पृथक ।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार ।

❋ विवाहित जीवन ❋

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मगायें ।

१—कोक शास्त्र (सचित्र) १।।)	२—८४ आसन (सचित्र) १।।)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १।।)	४—१०० चुम्बन (सचित्र) १।।)
५—सोहागरात (सचित्र) १।।)	६—चित्रावली (सचित्र) १।।)
७—गोरे खूबसूरत बनो १।।)	८—गर्भ निरोध (सचित्र) १।।)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा ।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १५) अलीगढ़ सिटी ।

मिर्गी

का २४ घण्टों में खात्मा । हिमालय के तपस्वियों के गुप्त अनुभूत भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत तुल्य । मूल्य १०।।) रुपये डाकखर्च पृथक ।

पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का दवाखाना हरिद्वार

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल न० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं । यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तुहफा है । यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता उनको लम्बे, घूंघर वाले और चमकदार बनाता है । जहां बाल न उगते हों वहां फिर पैदा होने लगते हैं । आंखों की रोशनी तेज करता और सिर को ठण्डक पहुंचाता है । अतीव सुगन्धित है । कीमत एक शीशी २।।) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६।।) रु० इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है । तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ म्यूट घड़ियां व ४ अंगूठियां (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं ।

बाल उमर भर नहीं उगते !

हमारी प्रसिद्ध दवाई 'बोहरे दुश्मन रजिस्टर्ड' के इस्तेमाल से हर जगह के बाल बगैर किसी तकलीफ के हमेशा के लिये दूर हो जाते हैं और फिर जीवन भर दोबारा उस जगह बाल कभी पैदा नहीं होते जगह रेशम की तरह मुलायम नरम और खूबसूरत हो जाती है । कीमत एक शीशी २।।) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स ६।।) रु० इस दवाई को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है । तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ घड़ियां व ४ अंगूठियां बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं ।

नोट— माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है । शीघ्र मगा लें क्योंकि ऐसा समय बार बार हाथ नहीं आयेगा ।

लन्दन कमर्शियल कम्पनी (AWD) बाग रामानन्द, अमृतसर ।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं । यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघराले और चमकदार बनाता है । जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं । आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुंचाता है । अतीव सुगन्धित है । कीमत एक शीशी २।।) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६।।) । इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है ।

जरूरी नोट ,—माल पसन्द न होने पर कीमत वापस कर दी जाती है । तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिल्कुल माफ, और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं । जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा । आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें ।

जनरल नोवेल्टी स्टोर्स (V A. D) पो० ब० नं० ४५ दिल्ली ।

General Novelty Stores (V A D.) P. B. 45, Delhi.

मोम बत्तियां बनाओ । घर बैठे १५०) रुपये माहवार कमायें स्कूल के चाक बनाओ ।

मोमबत्तियों के काम में एक छोटे सांचे की मदद से घर पर अपने रोजाना खर्च जितना कमा सकते हैं । यह केवल १५०) रु० की पूंजी से अच्छी तरह चालू हो सकता है । तरीका सांचे के साथ बताया जाता है । १२ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ४०) रु० १७ की कीमत ६०) २४ की कीमत ११०) रु० डाकखर्च अलग । २४ स्कूल चाक के सांचे की कीमत ६०) । मोमबत्तियां बनाने का सामान भी हमारे से मिल सकता है । आर्डर के साथ आधी कीमत पेशगी आनी चाहिये ।

ए० [illegible] कम्पनी (W.D.) [illegible] १२ A [illegible] ।

गांधी संवतसर की योजना का वैज्ञानिक-स्वरूप

(पृष्ठ ६ का शेष)

(२) दक्षिणायन-सम्पात (समर सोलिस्टिस) …… २१ जून।

(३) शरद् विषुव-सम्पात (औटमनल ईक्वी नौक्स) …… २३ सितम्बर।

(४) वसन्त विषुव सम्पात (वर्नल ईक्वी नौक्स) … .. २२ मार्च।

इनमें भारत-रेखा के गतिमान् होने के कारण जो अयनांशों की वृद्धि या अल्पता होती है उसका संस्कार करने से ये तिथियां क्रमशः १ जनवरी, १ जुलाई, १ अक्टूबर और एक अप्रेल बन जाती हैं। सूर्य संक्रान्तियों के हिसाब से यही मकरादि, कर्कादि, तुलादि और मेषादि बन जाते हैं अत एव वर्षारम्भ के लिए ये अवसर ही उपयुक्त होते हैं। निम्न तालिका में संसार के कुछ प्रसिद्ध सम्वत् और उनके आरम्भ-काल लिखे गये हैं जिन पर दृष्टि-पात करने से पता चलेगा कि अधिकतर वर्षों के आरम्भ चैत्र शुक्ला• (अथवा मेष-सक्रमण) से ही माने गये हैं।

तिथियों का एकीकरण कर लिया गया है और अब-ही जब ईसवी सन् को भी सम्मिलित कर लिया गया है। किन्तु राजकीय काम-काज के लिए जितना उपयोगी ईसवी सन् सिद्ध हुआ है उतना और कोई नहीं। सौर तथा चान्द्र मास एवं वर्ष तो जनता के धार्मिक व्यवहार की वस्तु हैं, अतः इनमें से कोई भी त्रुटिपूर्ण नहीं हो सकते। प्रत्येक अपने स्थान पर वैज्ञानिक तथा व्यवहार्य है।

अब प्रश्न यह है कि गांधी-सम्वत्सर को भारतीय पञ्चाङ्ग में कहां और कैसे गुम्फित किया जाय। इस प्रश्न के दो उत्तर हो सकते हैं और उन दोनों उत्तरों के पहले यह जान लेना भी आवश्यक होगा कि गांधी सम्वत् को धार्मिक व्यवहार की वस्तु बनायी जाय अथवा राजकीय एवं दैनिक व्यवहार की। यदि हम इसे धार्मिक व्यवहार के योग्य बनाना चाहते हैं तो हमें विक्रम व शाका के समकक्ष बनाना होगा और यदि इसे दैनिक व्यवहार के योग्य बनाना

सम्वत्	आरम्भ	मास-गणना	वर्ष-गणना
(१) युधिष्ठिर या कलि	चैत्र-शुक्ला या मेष-सक्रमण	चान्द्र	सौर तथा चान्द्र
(२) मौर्य विक्रम	चैत्रशुक्ला	चान्द्र	सौर तथा चान्द्र
(३) शाका	„	„	चान्द्र
(४) चेदि, गुप्त वल्लभी, श्री हर्ष और चालुक्य	„	„	„
(५) पार्श्व पारसी और नगला	मेष सक्रमण	सौर	सौर
(६) नेपाली और महावीर (जैन)	कार्तिकशुक्ला	चान्द्र	सौर तथा चान्द्र
(७) हिजरी और लक्ष्मणसेन (बंगाल)	श्रावणशुक्ला	„	चान्द्र
(८) दयानन्द	शिव-रात्रि	„	„
(९) सत्यकेतु	१ अक्टूबर	सौर (सायन)	सौर (सायन)
(१०) ईस्वी	१ जनवरी	„	„

[केवल उक्त तालिका स्व• बा• जगनलाल मुख्तार की "संसार के संवत्" नामक पुस्तक के आधार पर]

इसके अतिरिक्त चीनी और तुर्की संवतों में सौर एवं चान्द्र दोनों वर्ष-गणनाएं प्रचलित हैं। उपर्युक्त सम्पूर्ण संवतों में ईसवी सन् का सार्वभौम प्रचलन है। इसके दो कारण हैं — प्रथम तो ईसाइयों के त्योहार जो भी थोड़े बहुत होते हैं उनमें चान्द्र-तिथि का विशेष महत्व नहीं होता, दूसरे सावन दिन-गणना में तिथियों की तरह घट-बढ़ी न होने के कारण जनता तथा राजकीय कर्मचारियों के काम-काज में सुविधा हो जाती है। इस सुगमता के कारण ही संसार के प्रायः सभी देशों के पंचांगों में इसे स्थान मिल गया। भारतीय पंचांगों की विशेषता यह है कि [illegible]

चाहते हैं तो इसे ईसवी सन् का स्थान दे देना होगा। ऐसी दशा में केवल दो ही मार्ग हो सकते हैं :—

प्रथम

नाम— गांधी सम्वत्, दिन-प्रमाण— चान्द्रतिथिवत्, मास प्रमाण—चान्द्रमास, वर्षप्रमाण— चान्द्रवर्ष।

और प्रत्येक तीसरे वर्ष क्षय तथा अधिक मास की क्रिया द्वारा इसे सौर वर्ष से मिला दिया जाय। वारों व महीनों के नाम यथावत रहेंगे। इस वर्ष का आरम्भ कार्तिक शुक्ला (गांधी जी की जन्म-तिथि में कुछ क्षेपक दिनों का संस्कार करके) प्रतिपदा को माना जाय अथवा चैत्र शुक्ला (गांधी जी की निधन-तिथि में कुछ क्षेपक मासादि का संस्कार करके) प्रतिपदा को माना जाय। इस योजना के अनुसार अगले वर्ष चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से [illegible] के साथ ही गांधी-संवत्

२ अथवा (जीवन के वर्ष जोड़ कर) गांधी सवत् ८१ किया जा सकता है। कुछ लोग यह भी सुझाव कर सकते हैं कि निधन-तिथि में कुम्भ और मीन इन दो संक्रान्तियों को प्रक्षिप्त करके मेष-सक्रमण से वर्षारम्भ माना जाय किन्तु उस दशा में उस वर्ष गणना के मास व दिनादि संक्रान्तियों के अंश-योग आदि के कारण आगे पीछे [Dilatory] होते रहेंगे, अतः मेरी सम्मति में यह अव्यवहार्य रहेगा।

ऊपर कुछ दिनों व मासादि के क्षेपक संस्कार इस लिये सुझाये गये हैं जिससे कि वर्ष का क्रम निर्बाध गति से चलता रहे। गांधी जी की जन्म अथवा निधन तिथियों में से किसी से भी वर्षारम्भ करने से पचाङ्गों के क्रम बिगड़ जायेंगे और यह सवत् व्यवहार्य एवं स्थायी न होगा। अब तक जो भी वर्ष क्रमहीन तिथियों से आरम्भ किये गये हैं वे या तो सीमित क्षेत्र में ही रह गये अथवा केवल प्राचीन पुस्तकों की ही शोभा बढ़ा रहे हैं।

द्वितीय

नाम—गांधी सन्, दिन-प्रमाण—सावन दिन (=२४ घंटे), मास-प्रमाण—अंगरेजी मासों की तरह वर्ष-प्रमाण—सायन वर्ष (=३६५ या ३६६ दिन)

और इस वर्ष फर्वरी मास में, ईसवी सन् की तरह, प्रत्येक ४ वे, ४०० वें ४००० वें वर्ष में १ दिन जोड़ना होगा। वारों के नाम वही रहेंगे। मासों के नामों में परिवर्तन किया जा सकता है परन्तु यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि मासों के नामों में परिवर्तन करने से यह सार्वभौम न बन सकेगा। फिर भी, यदि जनता की इच्छा ही हो तो जन्म अथवा अवसान के दोनों मासों—अक्टूबर और जनवरी—में से केवल एक का नाम परिवर्तित करके 'गांधिविः' [Gandhivis] रखदेना चाहिये। इस वर्ष का आरम्भ १ जनवरी से किया जाना चाहिये। इस योजना के अनुसार जनवरी मास को क्षेपक बना कर बड़ी सुगमता के साथ ईसवी सन् १९४८ को ही गांधी सन् १ या ८० मान सकते हैं। अगले और पिछले इतिवृत्तों के लेखन में हम B. C. और A D के स्थान पर 'गांधी पूर्व' (संक्षिप्त गा० पू०,' अंगरेजी में B. G. = Before Gandhi) और 'अवसान के पश्चात्' (संक्षिप्त 'अ० प०,' अंगरेजी में A. G. = After Gandhi) को प्रयोग में ला सकते हैं।

आशा है कुछ विद्वान् ज्योतिषी तथा सैद्धान्तिक रुचि रखने वाले मनीषी इस विषय पर और अधिक प्रकाश डालने की कृपा करेंगे। पत्र-सम्पादकों से भी प्रार्थना है कि यदि उनके पत्रों में इस विषय की कोई सविस्तर योजना प्रकाशित हो तो वे उसकी एक प्रति निम्न लिखित पते पर भी भिजवाने की कृपा करें —

प० कन्हैया लाल 'मस्त,' १६४ पट्टा वाली गली, गाजियाबाद (यू० पी०)

अफीम की आदत छूट जायगी। काफी डाक्टर अफीम से छुटकारा पाने के लिये "काया कल्प काढ़ी" सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स पन्द्रह रुपया डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरिद्वार।

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिए बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥×४ इंच और वजन १६ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एक्सप्रेस डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १।=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त। अपना पूरा पता साफ साफ लिखें। नापसन्द होने पर दाम वापिस।

अमरीकन ट्रेडिंग एजेन्सी, (AWD) हलका नं० २१, अमृतसर।
American Trading Agency (AWD) Halka No 21 Amritsar

हर एक परिवार में 'उद्यम' की उपयोगिता की प्रशंसा की जाती है।

मार्च **उद्यम** अवश्य
अंक में ! पढ़िये !!

- सेवाग्राम की विशेषता।
- [illegible] व्यवसाय का उज्ज्वल भविष्य।
- [illegible] को मि० [illegible] की आवश्यकता है।
- [illegible] कागज (Carbon Paper) बनाना।
- [illegible] व्यवसाय, मजदूरों की [illegible]।
- सन्तरे की फसल अधिक किस तरह की जा सकेगी ?

इसके अतिरिक्त फोटोग्राफी का गृह-व्यवसाय, रेडियो, सिलाई-कला, खाद्य-पदार्थ आदि विषयों के लेख व व्यंगचित्र आप पसन्द करेंगे। रेलवे-बुकस्टालों व हर गांव के एजेंटों के पास उद्यम के अंक मिलेंगे। उद्यम मासिक का वार्षिक चंदा ७) रु० भेजकर अत्यन्त उपयोगी मासिक संग्रहीत कीजिये।

'उद्यम' मासिक, धर्मपेठ, नागपुर।

२०००) रु० इनाम।

अवश्य पढ़ें मामूली विज्ञापन समझ कर न छोड़ें

अजायबात आलम की आठवीं अद्भूत !

हम अपने धर्म व परम पिता परमात्मा की सौगन्ध खाकर सच कहते हैं कि साइन्स की नई आविष्कार (१) मैजिक अटीमनी (Magic Antimony) जादू का सुरमा इसे हिदायत आप अपनी आंखों में डाल कर जिस किसी स्त्री या पुरुष चाहे वह कैसा ही पत्थर दिल मगरूर व सख्त कलाम क्यों न हो आप उसके सामने चले जावें वह उसी समय आपको देखते ही आप पर फ़रेफ्ता हो कर आपके प्रेम में व्याकुल हो जावेगी। आपके बिना पलभर चैन नहीं पड़ेगा आपकी मनोकामना पूरी हो जावेगी। कीमत ५) रु० डाक खर्च पैकिंग ॥–) आने।

(२) डिलैक्सो (Delexo) इस दवाई का एक भाग पूरे सात वर्ष में तैयार होता है। जिसकी परीक्षा स्वीटजरलैण्ड में सूखे हरे दरख्तों व पौदों पर अद्भुत तर्क़ से की गई जो थोड़े दिनों में ही हरे-भरे हो गये ... पर लगाते ही मुरदा रगों व पट्ठों में बिजली की सी ताकत व फौलाद की सख्ती पैदा करके ७ दिन में पूरा मर्द बना देती है। ढीलापन, टेढ़ापन छोटापन के लिये खाने वाली दवाइयों से यह लगाने वाली दवा हजार दरजा बहतर साबित हुई है। कीमत फी शीशी ५) रुपया डाक खर्च पैकिंग ॥।–) आने। बड़े बड़े साइन्सदान व डाक्टर इन अद्भुत आविष्कारों को देखकर दंग रह गये हैं। अगर गलत साबित हो तो इनाम हासिल करें। दोनों एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ़।

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइन्स (×) हलका नं० २१ अमृतसर।

५०० रु. इनाम

धन कवच—के द्वारा मनुष्य कुबेर समान धनवान होने का शुभअवसर प्राप्त करता है और लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। घर में तमाम मुसीबतों की शान्ति होकर हर तरह से घर में धन की वर्षा होती है। जिससे पुश्त दर-पुश्त के लिए गरीबी से छुटकारा मिल जाता है। कीमत ४॥), चांदी का ६॥), सोने का ७॥।=)

सिद्धवशीकरण यन्त्र—जिसे आप चाहते हैं वह चाहे कितना ही पत्थर दिल का हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आप से मिलने चला आवेगा। इसे धारण करने से लाभ, मुकदमा, नौकरी, लाटरी में व हर परीक्षा में सफलता, नफ़ा व शान्ति होती है। कीमत ४), चांदी का ५), सोने का ७॥) गलत साबित करने पर ५००) इनाम। अपना पता पूरा और साफ़ लिखें

श्री आनन्द स्वामी, (AWD) बाग रामानन्द, अमृतसर।

Shri Anand Swami (AWD) Bagh Rama Nand Amritsar

देहली प्रान्त के सोल एजेन्ट—रमेश एण्ड को०, चांदनीचौक, देहली।
अजमेर—नवज्योति जनरल स्टोर बड़े डाकखाने के सामने।
मध्यभारत के सोल एजेन्ट—वृहद औषध भण्डार, १६ जेल रोड, इन्दौर।
मुजफ्फरनगर—चैतन्य औषधालय, नई मण्डी।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार)।

१००० रुपया नकद इनाम **मासिक धर्म** एक दिन में जारी

मैक्सो अकसीर हैज़ एक दिन के अन्दर २ रुका हुआ मासिक धर्म जारी कर देती है। कितने समय के उपरान्त और किसी कारण से क्यों न हो। मूल्य ५॥)

मैक्सो अकसीर हैज़ स्पैशल जो कि तुरन्त खून जारी करके बड़ी सुगमता से अन्दर साफ कर देती है। मूल्य १२) रुपया याद रखो गर्भवती इसका प्रयोग न करें क्योंकि यह हानिकारक होगी।

बर्थ आफ पांच वर्ष के लिये सन्तान न होने वाली औषधि मूल्य ५।) सदैव के लिये १०।) एक हजार रु० इनाम उसको दिया जायगा जो मैक्सो अकसीर हैज़ और बर्थ आफ को हानिकारक प्रमाणित करे।

अमरीकन मेडीकल स्टोर नं० १९९ A. B. D. देहली।

इसको रखने के लिए लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं हर घर में होना चाहिए

अमरीकन पिस्तौल

[illegible]

INTERNATIONAL IMPORTERS, P.B. 46, (V.A.D.) Delhi
[illegible] (V.A.D.) दिल्ली।

(पृष्ठ ७ का शेष)

मुसलमान तथा किसी भी अन्य मतावलम्बी से ऐसा व्यवहार होना चाहिये जिससे वह उसके हृदय को जीत सके और उसे यह निश्चय दिला सके कि वैदिक धर्म एक ऊंचा और उदार धर्म है। प्रचारक के लिये, अन्यों के प्रति द्वेष भाव रखने की कोई गुंजाइश नहीं है। दूसरा प्रश्न यह उठाया गया है कि आर्यसमाजी अपने राजनैतिक हितों की रक्षा कैसे करे ? इस का उत्तर यह है कि प्रत्येक आर्य नर-नारी को नागरिक की हैसियत से अपने देश की राजनीति में अवश्य भाग लेना चाहिए। यह भी उसका एक धार्मिक कर्तव्य है कि वह अपने मन्तव्य के अनुसार राष्ट्रीय के प्रति उत्तरदायित्व को पूरा करे। परन्तु उसे दो बातों की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिये। पहली बात तो यह कि उसे अपनी धार्मिक भावना पर दृढ़ रहना चाहिये और दूसरे यह कि उसे आर्यसमाज को अपने पीछे न घसीटना चाहिये। आर्यसमाज अपने ऊंचे आसन पर कायम रहे, और आर्यसमाजी हरेक क्षेत्र में आगे बढ़कर सार्वजनिक सेवा का कार्य करते रहें, यही आदर्श स्थिति है।

फिल्म-स्टार बनने के इच्छुक नवयुवकों तथा स्त्रियों को शीघ्र अपने नाम हमारे पास रजिस्टर करा लेने चाहिये ताकि उन्हें उचित पथ प्रदर्शन किया जा सके और वह धोखेबाजी से बच सकें प्रवेश पत्र बिना मूल्य मगाइये। पता

व्यवसाय, पत्थरगंज अलीगढ़

सनद हासिल करो

डाक्टरी वैद्यक और हिकमत की सनद घर बैठे मंगवा कर प्रैक्टिस करें। नियमावली मुफ्त।

डाक्टर शिवचरणदास

फतेहाबाद (हिसार)

मासिक रुकावट

बन्द मासिक धर्म रजोलीना दवाई के उपयोग से बिना तकलीफ शुरू हो नियमित आता है, ऋतु की मर्यादा समय पर होती है। यह दवा गर्भवती को प्रयोग न करावे की० रु० ४), तुरंत फायदे के लिए तेज दवाई की० रु० ६) पोस्टेज अलावा। गर्भकुश — दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता, गर्भनिरोध होता है, मासिक धर्म नियमित होगा, निरुपद्रवी और हानि रहित है। की०४)पो० अलावा गुप्त-गुणकुसन फार्मेसी जामनगर ५, ब्रांच-आफिस जामनगर कं०फार्मेसी चौक बाजार—मैस्ट मार्केट नया बाजार।

'वीर अर्जुन' के पाठकों—ध्यान पूर्वक पढ़ो

एक आश्चर्यजनक सच्ची घटना

(श्रीयुत बी० पी० खरे टिकट कलक्टर रेलवे स्टेशन 'आगरा सिटी' का दिल हिला देने वाला पत्र)

ता० १ मई १९४७ को ८ बजे ड्यूटी पर पहुंचा। आगरे जैसी भयानक गर्मी कहीं नहीं देखी थी, एक आरामकुर्सी डालकर बैठ गया। वहां अनेक आदमी और भी बैठे इधर उधर की बातें कर रहे थे, इसी तरह डेढ़ घण्टा व्यतीत हुआ था कि एकाएक खांसी का ठसका आया, उससे पहले न मुझे बुखार था, न खांसी थी न कोई शिकायत थी, पहले ठसका आया तो कोई ख्याल न हुआ, एक मिनट बाद दूसरा फिर तीसरा ठसका आया, मुंह में पानी जैसी पतली कोई चीज मालूम दी, दिल में कुछ शक हुआ, बत्ती मंगाकर उजेले में देखा, तो खून था, खून तेजी से गिरने लगा, सांस गले से नीचे आना बन्द हो गया, ऐसा मालूम होने लगा कि कुछ ही मिनटों में ही हार्ट फेल हो जावेगा, पास में बैठने वाले घबरा गये। दौड़ शुरू हुई—पहले एक हकीम जी आये, नब्ज हालत आदि देखकर कहने लगे कि देसी इलाज से खून देर में बन्द होगा, किसी डाक्टर को बुलाकर इन्जेक्शन कराया जाय जिसमें खून जल्दी बन्द हो जावे, वह २) रु० फीस लेकर यह तो चल दिये। डाक्टर को बुलाने के लिये आदमी गया। करीब पौन घण्टे में डाक्टर साहब का तांगा आया, पहिला इन्जेक्शन दिया, खून थमने लगा, फिर दूसरा इन्जेक्शन दिया, जमे हुए खून के टुकड़े गले से बाहर आने लगे, अपनी ३७ साल की उमर में यह बीमारी कभी नहीं देखी थी। आध घण्टे में जितना जमा हुआ खून था, सब निकल आया। तबियत कुछ हल्की मालूम हुई। तीसरा इन्जेक्शन देकर डाक्टर साहब जाने लगे तो अपनी फीस मांगी। ३३) इन्जेक्शन के ८) खुद की फीस ४) तांगे का किराया—इस तरह ४५) लेकर विदा हुये। जाते समय कह गये कि सुबह दवा मंगा लेना और हर दूसरे दिन इन्जेक्शन दिया जायगा, कुल ६ इन्जेक्शन होंगे और इलाज कम से कम १ महीने तक चलना चाहिये।

नियमानुसार रेलवे डाक्टर को भी दिखाना जरूरी होता है। रात को उन्हें भी इत्तला करदी और उसी रातको सिक रिपोर्ट (sick report) दे दी। दूसरे दिन रेलवे डाक्टर आये, देखकर और तसल्ली देकर चले गये। खैर—इलाज शुरू हुआ। सुबह दवा आई, १ खुराक का मूल्य १॥) हुआ। कमजोरी मेरे शरीर में कितनी थी, कुछ बयान नहीं कर सकता हूं। डाक्टर साहब के कहने के मुताबिक १२ दिन में ६ इन्जेक्शन ले लिये। जिनका मूल्य ६०) रु० दिया। पन्द्रह दिन तक दवा चालू रही, परन्तु कमजोरी आदि में कोई फर्क न आया। तबियत परेशान हुई। इलाज बन्द किया। दूसरे डाक्टर के पास पहुंचा। तसल्ली के शब्दों के साथ इलाज शुरू हुआ। दस दिन में हालत वहां की वहां रही। डाक्टरों को लूटने का मौका मिला, प्रत्येक डाक्टर थोड़े से शब्दों में तसल्लीमात्र ही दे सका। रोग का इलाज किसी ने भी ठीक तरह से करने की कोशिश न की। २४ जून तक पांच डाक्टरों का इलाज किया। परन्तु हालत में कोई फर्क न हुआ। इस अरसे में करीब ३००) खर्च हो गया। मेरी हस्ती ही कितनी है। घर में १०) या १५) नकदी थी। उसके निकल जाने पर बीमार पड़ने के सुबह दूसरे दिन से स्त्री का जेवर निकालना शुरू कर दिया। आज उसकी हालत मुझसे देखी नहीं जाती। मैं फकीर हो गया हूं। सिक रिपोर्ट में रहने से तनखाह सब कटती गई। इलाज और घर खर्च के लिये स्त्री का जेवर ही काम आया, कुछ पैसा हाथ में न रहा, स्त्री और बच्चों की भूख से बिलबिलाहट देखी न गई, लाचार होकर १५ जून से सब इलाज बन्द करके ड्यूटी पर आ गया। ताकि तनखाह का कुछ तो भरोसा हो जाय, मुझे तनखाह ही क्या मिलती है, यदि पूरे मास की तनखाह मिले तो ६७॥) होते हैं, सिक में होने से २॥-) प्रति दिन के हिसाब से कटते हैं। ७ प्राणियों की परवरिश का भार सिर पर। कैसे बैठकर उनका बिलखना देखता रहूं। कमजोरी की हालत में ड्यूटी पर जाना पड़ा। सिवाय नौकरी के दूसरा कोई जरिया ही नहीं। जीवन से हताश होकर एक दिन 'सैनिक' अखबार पढ़ रहा था कि (Jabri) के विज्ञापन पर नजर पहुंची। देखा और सोचा कि जो दवा हताश हुए चौथे स्टेज में पहुंचे हुए रोगियों को भी उठाकर खड़ा कर सकती है, उस दवा से मेरा रोग क्यों दूर नहीं होगा। तुरन्त आपकी सेवा में दवा के लिये पत्र भेज दिया। वी० पी० आने से तुरन्त छुड़ा ली गई। विधि अनुसार परमात्मा का नाम लेकर दवा शुरू कर दी। वाह ! औषधि की शक्ति, परमात्मा का सच्चा आशीर्वाद, पांचवीं खुराक के बाद ही शरीर में जमीन आसमान का फर्क हो गया। एक सप्ताह में करीब बारह आने शरीर सुधर गया। मैं यथाशक्ति पूरा स्वस्थ होने तक इलाज चालू रखूंगा, परन्तु निर्धनता के कारण एक साथ ४० दिन की दवा नहीं मंगा सकता। कृपया पहले के समान ही फिर पार्सल भेज दें। यह लम्बा पत्र लिखकर मैंने आपका काफी समय नष्ट किया है। क्षमा करेंगे। घबराया हुआ गरीब हर तरह की तलाश में रहता है। आशा है तारीख २९-३० तक आपका पार्सल आ जावेगा। इति ॥

TB टी बी. तपेदिक और पुराने ज्वर के रोगियों—अब भी समझो

इसी प्रकार के पचासों प्रशंसापत्र पहले भी आप इन्हीं कालमोंमें देख चुके हैं। भारत के कोने कोनेमें लोगोंने यह मान लिया है कि इस भयंकर रोगसे रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र 'जबरी' (JABRI) ही है। 'जबरी' के नाममें ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिनसे ही इस दुष्ट रोगके कर्म नष्ट होना शुरू होजाते हैं, यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो परमात्मा का नाम लेकर एकमात्र 'जबरी' की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना भी रख दिया है, जिसमें आपकी तसल्ली हो सके। बस—आजही आर्डर देकर रोगीकी जान बचावें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत। दसों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियोंपर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं, तार आदिके लिये हमारा पता केवल 'जबरी' (जगाधरी) (JABRI JAGADHARI) लिख देना ही काफी है तार से आर्डर दें तो अपना पता पूरा लिखें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल न० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक, आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०। नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। "जबरी" न० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं। पूरा कोर्स २०) रु०। नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर में पत्र का हवाला तथा न० १ या न० २ साफ साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचा लें।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा एण्ड संस, रईस एण्ड बैंकर्स (३) 'जगाधरी' (पूर्वी पंजाब) E P

मनोरंजन

वास्तव में हिंदी का उच्चकोटि का मासिक पत्र है

डा० रामकुमार, इलाहाबाद

'मनोरंजन' वास्तव में हिन्दी का उच्च कोटी का पत्र है। आज जब हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा हो गई है, तब उच्चकोटि के पत्रों की जितनी अधिक संख्या हो, उतनी ही अच्छी है।

श्री उदयशंकर भट्ट, आल इण्डिया रेडियो, दिल्ली

तुम्हारा 'मनोरंजन' मेरा मनोरंजन है। चुनाव, शैली, और सामग्री की दृष्टि से यह सुन्दर तो है ही, संग्राह्य भी है। वस्तुतः तुमने इस पत्र द्वारा अपनी साहित्यिक प्रतिभा तथा सुरुचि संग्राहकता का परिचय दिया है।

श्री बच्चन, इलाहाबाद

'मनोरंजन' बहुत सुरुचिपूर्ण निकल रहा है। आशा है तुम्हारे सम्पादकत्व में पत्र बहुत जल्दी ही हिंदी के प्रथम श्रेणी के पत्रों में आ जायेगा।

मनोरंजन की अंग-प्रत्यंग उन्नति देख कर मुझे खुशी होती है और तुम्हारे नाते उसे मैं अपनी ही चीज समझता हूं।

श्री अंचल, जबलपुर

'मनोरंजन' का अंक मिला। लेखों और कविताओं का चयन तथा सम्पादन बड़ी कुशलता के साथ हुआ है। मुझे विश्वास है, तुम्हारे जैसे जागरूक कलाकार के हाथों 'मनोरंजन' हिन्दी के मासिक पत्रों में शीघ्र अपना गौरवपूर्ण स्थान बना लेगा।

श्री प्रेमनारायण टण्डन, लखनऊ

'मनोरंजन' का अंक मिला। वस्तुतः पत्र सभी दृष्टियों से अपना नाम सार्थक करता है। और प्रत्येक गृहस्थ के लिये उपयोगी ही नहीं, प्रत्युत दैनिक आवश्यकता की चीज है। इसके प्रकाशन के लिए बधाई स्वीकार करें।

श्री सूर्यनारायण व्यास, उज्जैन

'मनोरंजन' मुझे बहुत पसन्द आया है। बड़ा सुरुचिपूर्ण सुन्दर पत्र है।

श्रीमती सावित्री निगम, लखनऊ

मुझे 'मनोरंजन' की सभी सामग्री, सभी लेख, कवितायें आदि पसन्द आयीं। नारी स्तम्भ, बालस्तम्भ को स्थान देकर अपने सभी अवस्था के लोगों की अभिरुचि का ध्यान प्रशंसनीय ढंग से रखा है। मेरी हार्दिक कामना है कि 'मनोरंजन' साहित्य-जगत् में अमर ख्याति प्राप्त कर जनता का मनोरंजन करता रहे।

श्री महेन्द्र, 'साहित्य-सन्देश' आगरा

'मनोरंजन' का गांधी-स्मृति अंक प्राप्त हुआ। अंक बहुत सुन्दर है। मुझे पढ़ने का अवकाश बहुत कम मिल पाता है। पर आपका का अंक मैंने आद्योपान्त पढ़ लिया। ऐसे सुन्दर अंक निकालने के लिये आपको बधाई।

श्री भोलानाथ सिंह, सम्पादक 'दीदी,' इलाहाबाद

आपने यह बहुत ही सुन्दर पत्र निकाला है। बहुत-बहुत बधाई।

मासिक 'वीणा' इन्दौर

यह नवीन सहयोगी गत नवम्बर से ही निकलना शुरू हुआ है। और अपने नामानुरूप आबाल-वृद्ध सब के लिए मनोरंजक सामग्री से युक्त कहानी प्रधान पत्रों में विशेष स्थान रखता है। मनोरंजन के ही साथ-साथ ज्ञानवर्धन की सामग्री भी इसमें संकलित की जाती है। पत्र उच्चकोटि के लेखकों की सचित्र सामग्री से युक्त है।

दैनिक 'हिंदुस्तान' दिल्ली

—मनोरंजन को प्रकाशित हुए अभी ६ महीने ही हुए हैं इस काल में इसने कितनी उन्नति करली है, इसका परिचय प्रस्तुत विशेषांक से प्राप्त किया जा सकता है। विषय-वैविध्य, गम्भीर लेखों और हृदयग्राही कविताओं व कहानियों के कारण यह विशेषांक सर्वांग सुन्दर निकला है।

एक प्रति आठ आने, वार्षिक मूल्य ५॥)

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स, लि० श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

A Novelty Watch

'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very strong, Durable, accurate timekeeper, long lasting lifetime machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a secondcan be counted by this watch With a plastic strap & velvet box

Price Rs. 30/- POSTAGE AS. 12.
Free For 2 Watches.

ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec.
(78) Colony Road, DUMDUM.

सरगोधा के सुप्रसिद्ध

दांतों के डाक्टर बाली

फतहपुरी, देहली।

दांतों के सब रोगों का इलाज किया जाता है और वह बिना दर्द निकाले जाते हैं। सब प्रकार की एनकें व मसनूई आखें मिल सकती हैं।

पहेली लाटरी नहीं बौद्धिक कला है। बौद्धिक बल पर आप--

२५००) मनोरंजन पहेली नं० ४६ में अवश्य जीतिये।

१३००) सर्वशुद्ध पूर्तियों पर, १०००) न्यूनतम ३ अशुद्धि तक

विशेष इनाम – १५०) किसी महिला व विद्यार्थी के सर्वशुद्ध हल पर और २५), १५), १०), क्रमशः सर्वाधिक पूर्तियां भेजनेवालों को दिया जायगा।

पूर्तियां भेजने की अन्तिम तारीख २४ अप्रैल १९४८ ई०।

१ शि	२ म	ला		३	र	४ खि
	धु		५	क		ला
६ ा	व			क		
	७ न	त	८ द		९ ि	न
१०			ा			
ी		११ ा	ई		म	१२
ला		ग		१३	र	ल

संकेत बायें से दायें—१. ठंडी आब हवा के लिये प्रसिद्ध है, ३ छोटा तालाब. ५. यह बहुत ऊंचे भी होते हैं। ६. किसी को जब तक यह न हो वह दूकान से कभी चीज न खरीदेगा, ७. नहीं तो ६. जो व्यक्ति इसमें ज्यादा हो वह बड़ा समझा जाता है। ११. छोटे गांव में इसका अभाव अक्सर खटकता है। १३. पत्थर की कूंडी जिसमें औषधियां कूटी जाती हैं।

ऊपर से नीचे को:— २. व्रज का एक बन। ३. आने जाने का चौड़ा रास्ता ४. किसी को यह देना कोई सरल काम नहीं है। ८. जब मनुष्य का चित्त ठिकाने पर न हो तो बात करते २ प्रायः यह आ जाती है। ९. एक अंग्रेजी महीना। १०. किसी की रचना की यह करना साधारण काम नहीं है। ११. इससे प्रायः सभी डरते हैं। १२. इससे कितने ही काम बड़ी आसानी से हो जाते हैं।

नियमावली:— एक नाम से एक पूर्ति की प्रवेश फीस १) रु० तीन पूर्ति भेजने की २) रु० फिर आगे हर पूर्ति ॥) है, जो मनीआर्डर या इ० पो० आर्डर बिना क्रास (Uncrossed) द्वारा भेजी जाना चाहिये। जारी म० आ० रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य भेजें। पूर्तियों के लिये फार्म बनाना आवश्यक नहीं। एक व्यक्ति को उसकी पहेली के अनुसार केवल एक ही इनाम मिल सकेगा। शुद्ध उत्तर व इनामों का विवरण ६ मई को प्रकाशित कर भेजा जावेगा। जिसके लिए =) आने अधिक भेजें पूर्तियों और म० आ० के नीचे कूपन पर अपना पूर्ण पता हिन्दी में अवश्य लिखें। पूर्तियां एवं फीस भेजने का पता —

मैनेजर — मनोरंजन पहेली कार्यालय, राहतगढ़ (सागर) सी० पी०।

प्रत्येक शहर में मनोरंजन पहेली के प्रवेश-शुल्क-पत्र बेचने के लिये एजेंटों की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

पहेली नं० ३२

पुरस्कार विजेता

सर्वशुद्ध — कोई उत्तर नहीं।

एक अशुद्धि — एक अशुद्धि का एक ही उत्तर था इसी पर सर्वप्रथम पुरस्कार १५०) दिया गया।
मदनलाल श्री चोरड़िया, ६०७, बाली-गंज, कलकत्ता।

दो अशुद्धियां — दो अशुद्धियों के २४ उत्तर प्राप्त हुए। प्रत्येक को २॥, पुरस्कार दिया गया। कुल पुरस्कार ६०) बांटा गया।

१. सर्व श्री प्रकाशचन्द्र बहुगुणा, कनखल, २. राजेश्वरसिंह यादव, बुलन्दशहर ३. कमलनयन अग्रवाल, शाहाबाद (अम्बाला) ४. विभूतिचरण गुप्ता, शाहजहांपुर, ५. बी० एन० करहीकर, नागपुर, ६ मोहनसिंह भट्ट, कोटद्वार (गढ़वाल) ७. रामाश्रय पीलीभीत, ८. के० के० अहलूवालिया. करनाल, ९. शकरराव बोशा, इन्द्र निवास जयपुर, १० जे० एन० सेठ, जयपुर ११. कुमारी स्वर्णलता c/o जे० एन० सेठ, जयपुर, १२. धर्मप्रकाश लोहिया, सदर, मेरठ, १३. तेजसिंह चौधरी, पानीपत, १४. कुंजबिहारी लाल-बिहारी सक्सेना, बांदा १५. छोटेलाल चौबे, मथुरा १६. कन्हैयालाल सर्राफ, दिल्ली १७. रतनचन्द मेहता, अम्बाला छावनी १८ निगमपाल शर्मा, पलवल (गुड़गावा) १९. कान्तिचन्द्र बिष्ट, देवप्रयाग, २०. मुकुन्दराम मास्टर, उदयपुर २१ लक्ष्मणदेव गाबा, भिवानी, २२ आर्यमुनि तनेजा, हरिद्वार, २३. कृपाशंकर सविता अलीगढ़ २४. रामेश्वर देशमुख, हैदराबाद (दक्षिण)।

तीन अशुद्धि — तीन अशुद्धियों के ३५ उत्तर थे, प्रत्येक को एक रुपये का पुरस्कार दिया गया। निम्न व्यक्तियों को एक रुपया मनी आर्डर से न भेजकर एक रुपये का अधिकार पत्र भेजा जायेगा और वह पहेली नं० ३४ को भर कर उसके साथ लौटा देना चाहिये।

१. सर्व श्री विष्णुराम गुप्ता, कलकत्ता, २. ब्रजेन्द्रमोहन मैत्र, मुरादाबाद, ३. मिहरचन्द्र मिश्र, मेरठ ३ सत्यनारायण विरमानी, जालन्धर ५. सम्पूर्णसिंह चावला, अमृतसर ६। बालकराम फरीदाबाद, ७. मीठीमल जैन, अजमेर ८. सत्येन्द्रस्वरूप, आगरा ९ सत्यभक्त, इन्दौर १०. महेन्द्रसिंह आबेराय, लुधियाना, ११. चन्द्रप्रकाश वोहरी, लुधियाना १२. हरिहरशरण भार्गव, उज्जैन, १३. गंगासहाय, रतलाम, १४. के० एल० भटनागर, बरेली, १५. रवीन्द्रनाथ बी० ए० नईदिल्ली १६. युगलकिशोर, अकोला १७. विमलकुमार जैन झरिया १८. हेमनारायण सहाय, बदायूं १९. गुरुमुखदयाल, झांसी, २०. शिवरतनसिंह, भागलपुर, २१ अच्युतनन्दन, ग्वालियर २२. सुबोधकुमार जबलपुर, २३. कृष्णदेव, अहमदाबाद २४. बी० टी० ठाकुर पटना, २५ c/o प्रमीला बी० टी० ठाकुर, पटना, २६. अर्पणा c/o बी० टी० ठाकुर, पटना २७. जेठाभाई लल्लूभाई, अहमदाबाद, २८. बी० बी० सक्सेना, गया २९. जगन्नाथ कोले, मुजफ्फरपुर, ३०. सेठ किशनचन्द लेखराज, जोधपुर, ३१. मंगलदास, मुजफ्फरनगर ३२. धर्मवीरसिंह वर्मा (बुलन्दशहर) ३३. सत्येन्द्रकुमार वर्मा, शाहजहांपुर, ३४. सुरेशचन्द्र वर्मा, शाहजहांपुर, ३५. गोपालदास अग्रवाल, हाथरस।

विशेष पुरस्कार — निम्न ८ व्यक्तियों को सर्वाधिक पूर्तियां भेजने के कारण एक रुपये का अधिकार-पत्र भेजा गया है।

१. सर्व श्री दीनदयाल मिस्त्री, दि० क्लाथ मि० दिल्ली २ ऊषा माथुर, करौलबाग, दिल्ली, ३ केशवनाथ गुप्त, बदायूं ४. अवधबिहारीलाल, गया ५. सुलतानसिंह, करनाल, ६ मास्टर दीनानाथ, सागर ७. रमेशचन्द्र, अल्मोड़ा ८. ठाकुर ऊधोसिंह, खुर्जा।

सूचना — सुगमवर्ग पहेली प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कभी कभी अपना पता पूरा नहीं भेजते जिससे निर्णय आदि में कठिनाई होती है। कृपया पूर्ति भेजते समय भली प्रकार जांच कर लिया करें कि आपका पता पूरा और ठीक है। — प्रबन्धक

सुगमवर्ग पहेली सं० ३३

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

पहेली सं० ३३ की संकेतमाला

दायें से बायें

१. विष्णु।
३. हनुमान।
७. झरोखा।
८. दूसरों को जीतना—के लिए सरल है।
९. बहुत — हानिकारक होता है।
१०. वज्रपात।
११. एक अनुत्तम गुण।
१२. जय हो।
१४. अपने लाभ के लिये कुछ न कुछ— उचित है।
१५. पारस्परिक सम्बन्धों पर —— का बड़ा प्रभाव पड़ता है।
१६. कांटे का — कांटे का जाना।
१७. सुख और शान्ति देता है।
१८. जब तक मनुष्य—में है, शान्ति नहीं।
२०. दिया।
२२. सुन्दर हो तो और अधिक अच्छी लगती है।
२३. कमल से नयनों वाला।
२५. जिसकी आशा हो।
२७. जिसे — मिल जाय, तर जाता है।
३०. पास होने से प्रतिष्ठा होती है।
३१. —की प्रवृत्ति नीचे की ओर होती है।
३२. स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।
३३. स्त्री का — गौरव भी समझा जाता था।

ऊपर से नीचे

१. नावों का स्वामी।
२. कुबेर।
३. — सीताराम।
४. अति विशालता इसका गुण है।
५. गंगा।
६. क्रोध से लाल हो जाना।
८. जो समय पर — जानता है वही सफल होता है।
१३. कीर्ति।
१७. वृक्ष विशेष का जंगल।
१९ एक आकाशवर्ती पिण्ड की चमक।
२१. इसके आगे बड़े बड़े असफल रह जाते हैं।
२३. इसका आकर्षण किसे अज्ञात है।
२४. बाटना।
२५. एक — अभी देश से उठ गया है।
२६. — में मग्न व्यक्ति सफल कम होता है।
२८. एक पक्षी।
२९. — के आश्रय में सुख मालूम होता है।

होली के शुभ अवसर पर

१५००) रु० इनाम

नमस्ते पहेली नं० १ में जीतिये

पहला इनाम १००० रु० सर्व शुद्ध पर

दूसरा इनाम ५०० रु० १ अशुद्धि पर

आखिरी तारीख २२ अप्रैल

१. वीर मराठा जिसने मुगलों के दांत खट्टे कर दिये।	— ।जी
२. कितने शरणार्थी इसकी तलाश में मारे मारे फिरते हैं।	— का न
३. आदमी को पागल बना देता है।	— म
४. अच्छे "—" की कमी फिल्म को खराब कर देती है।	।य क
५. दुखियों को यही कहते सुना है "अब कौन "—" है ?"	— ।रा
६. लड़की के लिए अच्छे — की चिन्ता पिता को परेशान कर देती है।	— र
७. अच्छा — किसे नहीं भाता।	।ना
८. एक मिठाई जिसे छोटे बड़े सभी शौक से खाते हैं।	— ब ही
९ बारिश में अगर — खराब हो तो सारे कपड़े खराब हो जाते हैं	— ता
१०. पहेली इतनी — है कि हर कोई इनाम जीत सकता है।	स — ल

प्रत्येक खाली स्थान की पूर्ति कीजिये।

कुछ नियम—एक नाम की पहली पूर्ति की फीस १) इसके पश्चात प्रत्येक की।) चार आना। मनीआर्डर की रसीद पूर्ति के साथ अवश्य आनी चाहिये। फीस सिर्फ मनीआर्डर से आनी चाहिये। सादे कागज पर भी पूर्तियां भेजी जा सकती हैं। पूर्तियों के नीचे अपना नाम पूरे पते सहित साफ साफ लिखें। मैनेजर का निर्णय सर्व मान्य होगा। नतीजा ता० २६ अप्रैल के अर्जुन में छपेगा।

पता—नमस्ते पहेली नं० १ पोस्ट रामनगर (नैनीताल) यू० पी०।

५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३३] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।

नाम ....
पता ....
ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....
पता ....
ठिकाना .... उत्तर नं० ....

सुगमवर्ग पहेली नं० ३२ फीस १)

इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है

नाम ....
पता ....
ठिकाना .... उत्तर नं० ....

इन तीनों वर्गों को पृथकन करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्त्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो शेष दो पर आड़ी लकीर खींच दें।

इस लाइन पर काटिये

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि १७ अप्रैल १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा सदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले वा संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहा मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहा वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलिया जाच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक सख्या मे आने पर पुरस्कार बराबर बाट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटायी बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८. पहेली का ठीक उत्तर २६ अप्रैल के अङ्क मे प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल २३ अप्रैल १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जाच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जाच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा। पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१०. पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३३, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलिया आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धिया होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित
'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय ।–)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य २) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनके जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ।=) डाक व्यय ।–)

पं० जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है।

मूल्य १॥) मात्र।

विविध

बृहत्तर भारत

[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ॥=)

बहन के पत्र

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाइयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व सखियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य १)

प्रेमसुती

श्री विराज जी रचित प्रेमकाव्य, सुरुचिपूर्ण श्रृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ॥)

वैदिक वीर गर्जना

[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जाग्रत करने वाले एक सौ से अधिक वेद-मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ॥=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी

[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर संकलन। मूल्य २)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी प्रतियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्बोधन का मार्ग है।

इस लिये

हिन्दू—संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।–)

तेल विज्ञान

तिलहन से लेकर तेल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय ।–)

तुलसी

तुलसीदल के पौधों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के ढंग बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्

अंजीर

अंजीर के फल और वृक्ष से अनेक रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में अपना इलाज घर बाजार और जंगल में सुगमता से मिलने वाली इन कौड़ी कीमत की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। मूल्य १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक तैयार करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये और धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं

[सम्पादक—श्री बसन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।–)

नया आलोक : नई छाया

[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा दुःखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था; देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १॥), डाक व्यय ।=।

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे [illegible] बीस दिन मूल्य ॥)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला [illegible] मूल्य [illegible]

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य [illegible]

[illegible] प्रकाशक ने श्रद्धानन्द [illegible] लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से मुद्रित कर प्रकाशित किया।

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

दिल्ली, सोमवार २४ चैत्र
सम्वत् २००४
DELHI 5th April 1948

स्वातन्त्र्य-समर
के
ये वीर योद्धा !

कांग्रेस के मंच पर अब
इनके दर्शन नहीं होंगे।

श्री आचार्य नरेन्द्रदेव

श्रीमती अरुणा आसफअली

वर्ष १४
संख्या ५२

श्री जयप्रकाश नारायण
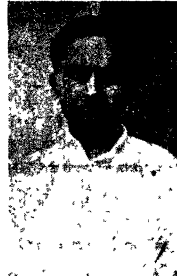
श्री अच्युत पटवर्धन

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय

दैनिक वीर अर्जुन

की

स्थापना अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हुई थी

इस पत्र की आवाज को सबल बनाने के लिये

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि.

के स्वामित्व में उसका संचालन हो रहा है। आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वावधान में

दैनिक वीर अर्जुन
मनोरञ्जन मासिक

* सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
* विजय पुस्तक भण्डार

❀ अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। इस प्रकाशन संस्था की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है

अधिकृत पूंजी ५,००,००० प्रस्तुत पूंजी २,००,०००

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० ”
सन् १९४६	१५ ”

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को
१० प्रतिशत लाभ देने का निश्चय किया है।

आप जानते हैं ?

- इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
- 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने में लगी रही हैं।
- अब तक इस वर्ग के पत्र युद्धक्षेत्र में डट कर आपत्तियों का मुकाबला करते रहे हैं और सदा जनता की सेवा में तत्पर रहे हैं।

आप भी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

- इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
- राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
- अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
- आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदन-पत्र की मांग कीजिये।

मैनेजिंग डायरेक्टर—
इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

सूचना

साप्ताहिक अर्जुन का आगामी अंक साधारण अंक न होकर देश-रक्षा अंक के रूप में निकलेगा। प्रेमी पाठक और ...ट नोट कर लें।

—मैनेजर

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २४ चैत्र सम्वत् २००४

एक दृष्टि

पिछले दिनों सोशलिस्ट पार्टी ने ...स और उस के टिकट पर प्राप्त स्थानों से निकल आने का निश्चय किया था। यह निश्चय पिछले कुछ दिनों से ...र्यरूप में परिणत होने लगा है और ...ांग्रेस से वे महारथी अलग हो रहे हैं, ...नके बिना कांग्रेस सूनी सी प्रतीत ...ी। श्री जयप्रकाशनारायण, आचार्य ...न्द्रदेव, श्रीमती अरुणा आसफअली, श्री ...युत पटवर्धन और श्रीमती कमलादेवी ...दि ने कांग्रेस की छत्रछाया में रह कर ...्य संग्राम में जो भाग लिया है ...स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। ...सब का कांग्रेस से संबंध विच्छेद ...मुच एक दुःखद घटना है — हमारे ...लए भी और उनके लिए भी। उन्होंने ...ून पसीना एक करके कांग्रेस को शक्ति-...ाली बनाया है। उन्होंने राष्ट्र के ...ातन्त्र्य यज्ञ में अपना सर्वस्व बलिदान ...या है। आज वे कांग्रेस से पृथक् हो ...ते हैं, ऐसा करते हुए वे विवश हैं और ...ी यह जानते हैं कि उन्हें स्वयं कांग्रेस ...छोड़ते समय दुःख होगा। जनता उनके आह्वान पर सदा युद्ध में ...खड़ी है। वे उसके तपे हुए, सधे ... परखे हुए सेनापति रहे हैं। ...कि रण-निमन्त्रण में, ललकार में और ...की आवाज में, एक विशेष ओज था, ...अपनापन था। आज उन्हें कांग्रेस नेतृत्व से अलग होते दुःख होना ...स्वाभाविक है।

लेकिन यह संसार ही अद्भुत, ...कल्पनातीत समस्याओं और परिस्थि...ों और असाधारण संकटों का नाम ...। ...रम में वही सब कुछ नहीं होता, जो ...चाहते हैं। अनेक अवाञ्छनीय परि-...स्थितियों और अवाञ्छनीय घटनाक्रम का ...सामना हमें करना पड़ता है। समाज-...वादियों का कांग्रेस से सम्बन्ध-विच्छेद ...घटना है।

स्वराज्य प्राप्ति का उद्देश्य ऐसा था, जिस पर सभी सहमत थे—भारत के सभी वर्ग और सभी श्रेणियां सिवाय मुस्लिमलीगी नेतृत्व के कारण भ्रान्त लाखों मुसलमानों के। इस लिए सब मतभेद भूल कर सभी विचारक राष्ट्र के स्वातन्त्र्य यज्ञ में आहुति देने लगे। अब वह उद्देश्य पूर्ण हो गया। कांग्रेस ने सरकार बना ली। अब प्रश्न है भारत के भावी विधान और आर्थिक व सामाजिक संगठन का। समाजवादी यह कहते हैं और ईमानदारी से कहते हैं कि उनका इन प्रश्नों पर सरकार से — दक्षिणपन्थी नेताओं से — भारी मतभेद है। इसमें संदेह नहीं कि इस कथन में सचाई है। प्रजातन्त्र के नाम पर विरोधी दल की आवश्यकता को अनिवार्य बता कर स्वतन्त्र दल बनाने में कोई दोष भी नहीं है। लेकिन हमें भय है जब एक ओर वे इंगलैण्ड के प्रजातन्त्र की दुहाई देते हैं, तब वे यह भूल जाते हैं कि पिछले युद्ध काल में अनुदार और मजदूर दल दोनों मिल कर सरकार का संचालन करते थे। किसी विश्वव्यापी युद्ध में भारत की सेनाएं नहीं लड़ रहीं, यह ठीक है, किन्तु हमारा यह विश्वास है कि जिन असाधारण कल्पनातीत परिस्थितियों में से भारत को आज गुजरना पड़ रहा है, वे युद्ध-काल से भी अधिक कठिन हैं। भारतवर्ष की आन्तरिक कठिनाइयां लगातार विषम होती जा रही हैं। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां भी कम उलझन भरी नहीं हैं। स्वयं सोशलिस्ट नेत्री श्रीमती कमलादेवी पाकिस्तान को तीसरे युद्ध की संभावना के कारण आंग्ल अमेरिकन गुट द्वारा अपना सैनिक व आर्थिक अड्डा बनाने का रहस्योद्घाटन कर रही हैं। अन्य सोशलिस्ट भी देश की विषम परिस्थिति से अपरिचित नहीं हैं, इसलिए यह अच्छा होता कि आज सभी दल मिलकर भारतीय शासन की समस्याओं का समाधान करते। लेकिन यह नहीं होना था और अभी भारत को आपसी संघर्ष की गहरी खाई से गुजरना है।

पिछले दिनों केन्द्र या विभिन्न प्रान्तों की धारासभाओं से जिन सोशलिस्ट सदस्यों ने स्तीफे दिये हैं, उनके रिक्त स्थानों पर चुनाव होंगे और विरोधी दल का स्थान लेने के लिए सोशलिस्ट उन स्थानों पर निश्चितरूपेण चुनाव लड़ेंगे। आज के प्रजातन्त्र में चुनाव अपना बुराइयों को उग्ररूप में साथ लाता है। बदतमीजी, बदमजगी और आपसी स्वार्थबुद्धि तथा दूसरे के प्रति घृणित प्रचार — ये सब बातें आज के प्रजातन्त्र के अनिवार्य अंग बन गये हैं। सोशलिस्ट नये चुनावों में इनको बचा सकेंगे, ऐसी ... परिणाम देश के लिए अमंगल ही हो सकता है। यही भय एक विकट समस्या के रूप में आज सामने उपस्थित है।

× × ×

सोशलिस्ट देश के रचनात्मक कार्यों में सहयोग तो दे रहे हैं, परन्तु कम्यूनिस्टों का खतरा तो आज ही भारत पर मंडराने लगा है। वे अमेरिका और इंगलैण्ड से शक्ति तथा प्रभाव वृद्धि की प्रतिस्पर्धा की होड़ में भारतवर्ष पर भी हावी हो जाना चाहते हैं। प्रजातंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं है, परन्तु कम्यूनिस्टों के लिए सभी कुछ संभव है। वे बंगाल में हिंसात्मक अभियान को संगठित कर रहे हैं। सरकारी शासन चक्र में लगातार गतिरोध पैदा करने के षड्यन्त्र किये जा रहे हैं। पश्चिमी बंगाल से पूर्वी पंजाब तक कम्यूनिस्टों का जाल बिछ गया है। भाकरा बांध की महत्वपूर्ण योजना को भी छिन्न-भिन्न करने का इनका प्रोग्राम है। पश्चिमी बंगाल में सरकारी कर्मचारियों को भड़काना उनकी उसी प्रकार की निश्चित योजना का एक अंश है, जिसके वर्णन हम यूरोप के बलकान राष्ट्रों के घटनाचक्र के प्रसंग में पढ़ते हैं। पं० जवाहरलाल नेहरू स्वभाव से साम्यवादी हैं और उन पर कम्यूनिस्टों के प्रति द्वेषी होने का कोई आरोप नहीं लगा सकता। लेकिन आज वे भी यह कहते हैं कि राजनैतिक उद्देश्य से बड़े भारी षड्यन्त्र किये जा रहे हैं। बरमा में भी ये षड्यन्त्र किये जा रहे हैं और इन सब का उद्देश्य वस्तुतः भारत को जबर्दस्ती रूस के गुट में सम्मिलित करना है। सोशलिस्टों के समान और उससे भी बड़ा कम्यूनिस्टों की समस्या हमारे लिए खतरनाक रूप में आज देश के सामने उपस्थित है। पं० नेहरू की अपील के बावजूद कलकत्ते में कर्मचारियों की हड़ताल आरम्भ हो गई है।

× × ×

एक ओर देश के सामने ये आन्तरिक समस्याएं उग्र रूप धारण कर रही हैं, दूसरी ओर पाकिस्तान भी बराबर उलझनें पैदा कर रहा है। अभी पूर्वी पाकिस्तान में भारतीय डाक के ४०० थैले पुलिस ने रोक लिये हैं। काश्मीर की समस्या अभी तक वैसी ही है, स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के कारण हमारा प्रश्न खटाई में पड़ा हुआ है। गर्मियों का प्रारम्भ होते ही काश्मीर के रणक्षेत्र में फिर सरगर्मियां बढ़ गई हैं। काश्मीर की समस्या भारत के लिए असाधारण महत्व की है।

× × ×

आज का संसार अब दूर दूर परस्पर वैज्ञानिक यातायात और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के कारण दुनिया के किसी कोने में होने वाली घटना का प्रभाव भारत पर पड़ सकता है। रूस और एंग्लो-अमरीकी संघर्ष लगातार बढ़ता जा रहा है। बर्लिन जाने वाली ब्रिटिश गाड़ियों को रूस द्वारा रोका जाना तथा बर्लिन नियन्त्रण समिति में गतिरोध समस्या की उग्रता को बताने के लिए पर्याप्त उदाहरण हैं। इटली, आस्ट्रिया और ग्रीस को अपनी अपनी ओर करने की चालें सभी बड़े विजेता कर रहे हैं। कल के शत्रुओं को आज मित्र बनाया जा रहा है और कल तक कंधे से कंधा भिड़ाकर जो विजेता राष्ट्र लड़े थे, वे आज एक दूसरे के प्राणों के ग्राहक बन रहे हैं।

× × ×

मार्शल योजना भी इसी प्रतिस्पर्धात्मक संघर्ष का एक अंग है। इस योजना का सूत्रपात कई मास पहले हुआ था, और इस सप्ताह उसे अमेरिकन कांग्रेस व सीनेट का भी अधिकृत समर्थन मिल चुका है। अब मि० ट्रूमैन के हस्ताक्षर होते ही उस पर अमल भी प्रारम्भ हो जायगा। चीन को तथा मध्य और दक्षिणी यूरोप के राष्ट्रों को अब अमरीका करोड़ों डालरों की सहायता प्रदान करके अपने गुट में शामिल करने का प्रयत्न कर रहा है। अमेरिका के अनेक विचारक मि० ट्रूमैन की योजना को तीसरे विश्वयुद्ध की प्रस्तावना के रूप में देखने लगे हैं। सचमुच युद्ध प्रतिदिन पास आता जा रहा है।

× × ×

फिलस्तीन की समस्या भी अन्य प्रश्नों की तरह उलझती जा रही है। अमरीका विभाजन की सारी योजना को वापस लेने की तैयारी कर रहा है। परन्तु ब्रिटेन अब व्यर्थ में सिरदर्द मोल लेने और अधिक बलिदान के लिए तैयार नहीं है। यहूदियों एवं अरबों का संघर्ष लगातार बढ़ता जा रहा है। फिलस्तीन का प्रश्न ही किसी दिन अन्तर्राष्ट्रीय संकट रूप धारण कर सकता है, क्योंकि अमरीका, रूस और समीपवर्ती मुस्लिम राष्ट्र सभी की इसमें खास दिलचस्पी है और आज संसार के किसी कोने का संघर्ष विश्वव्यापी रूप धारण करने में अधिक समय नहीं लेता।

ये सब संभावनाएं स्थिति का एक रूप रखती हैं। दूसरा रूप भी है, परन्तु वह इसके सामने नगण्य है। इन सब पर दृष्टिपात करते हुए आज प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह स्थिति की गम्भीरता को समझे, अपने देश तथा अपनी राष्ट्रीय सरकार को पूर्णतः शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करे।

क नये अध्याय का काल का मसीहा। ... गतिशील भी विरोधाभास। ... राजदूत नियुक्त हुए हैं।

दिल्ली म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष श्री डा० युद्धवीर सिंह के सम्मान में एकत्रित मेहतर यूनियन के सदस्य।

समाजवादियों का स्तीफा

समाजवादियों ने नासिक सम्मेलन में कांग्रेस को १५ अप्रैल से छोड़ने का निश्चय किया था। वह निश्चय अब क्रियारूप में परिणत होने लगा है। समाजवादी धड़ाधड़ कांग्रेस से अलग हो रहे हैं। युक्तप्रान्तीय धारासभा की कांग्रेस पार्टी से निम्न सदस्यों ने स्तीफे दिये हैं — आचार्य नरेन्द्रदेव, श्री रामनरेश सिंह, श्री सर्वजीत लाल वर्मा श्री हरिश्चन्द्र बाजपेयी, श्री मलखान सिंह, श्री कन्हैया लाल महेन्द्र श्री रघुकुल तिलक श्री गगाधर प्रसाद श्री चन्द्रिका लाल, श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री दामोदर दास। कौंसिल से श्री चन्द्रदास मिश्र ने इस्तीफा दिया है। इन बारह सदस्यों के अलग हो जाने के कारण अब धारा सभा कांग्रेस पार्टी की सदस्य संख्या १८६ रह गई है। दिल्ली में भी अनेक लोग कांग्रेस से अलग हो गये हैं।

श्री भाभा का त्याग-पत्र

श्री हुरमसजी कुवरजी भाभा ५ अप्रैल को व्यापारमन्त्री का पद छोड़ रहे हैं। श्री भाभा ने जनवरी से ही अपना त्यागपत्र दिया था, परन्तु प्रधान मन्त्री के आग्रह से बजट अधिवेशन की समाप्ति तक आपने कार्य करना स्वीकार किया था।

कम्यूनिस्ट गैरकानूनी

पश्चिमी बंगाल की सरकार ने अपने प्रान्त में हिन्दुस्तान की कम्यूनिस्ट पार्टी को गैर कानूनी करार दे दिया है। कम्युनिस्टों से सम्बद्ध संस्थाओं तथा उनके कार्यालयों की तलाशियां ली गई हैं और लगभग १५५ कम्यूनिस्ट गिरफ्तार किये गये हैं। दिल्ली में कम्यूनिस्टों के घरों की तलाशियां ली गई हैं और लगभग २० आदमी गिरफ्तार हुए हैं। बिहार, पूर्वी पंजाब और बम्बई में भी धरपकड़ हुई है। कम्यूनिस्ट पार्टी के लोग मजदूरों में आर्थिक असन्तोष भड़का कर और निम्न वर्ग को शस्त्र सज्जित करके शासन सूत्र को हड़पने का प्रयत्न कर रहे थे। इसी लिये ऐसा किया गया है।

पाकिस्तान से प्राप्त अपहृत स्त्रियां

भारतीय पार्लिमेंट में शरणार्थी विभाग के मन्त्री श्री नियोगी ने बताया है कि पश्चिमी पाकिस्तान से अब तक २६५१ अपहृत स्त्रियां हिन्दुस्तान को मिल चुकी हैं और यहां से ३८१२ स्त्रियां पाकिस्तान भेजी जा चुकी हैं। इसके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र कैम्प से ६८२ काश्मीरी स्त्रियां प्राप्त हुई हैं। अपहृत स्त्रियों से पैदा होने वाले बच्चों के लिए राज्य की ओर से एक धात्री गृह खोलने पर विचार किया जा रहा है।

इंदौर में उत्तरदायी शासन

होल्कर महाराज ने राज्य के वैधानिक प्रमुख के रूप में कार्य करना स्वीकार कर लिया है और जनता के वास्तविक प्रतिनिधियों को सब शासनाधिकार सौंप दिये हैं। मन्त्रिमंडल में निम्न व्यक्ति लिये गये हैं —

श्री खोडे (प्रधान मन्त्री) के० ए० चितले (व्यापार अर्थ और सूचना मन्त्री), बी० एस० खरे (शिक्षामन्त्री), नन्दलाल जोशी (मालमन्त्री), मिश्रीलाल गंगवाल (खाद्यमन्त्री) वैजनाथ महोदय (कृषि), बी० पी० द्रविड़ (श्रममन्त्री) और मनोहरसिंह मेहता (सामान्य)।

निजाम को अतिमेत्थम्

भारत सरकार के एजेन्ट जनरल श्री कन्हैयालाल मुन्शी ने भारत सरकार की ओर से हैदराबाद के प्रधानमन्त्री को एक कूटनीतिक पत्र दिया है जिसमें निजाम द्वारा यथास्थित समझौता करने का विस्तृत विवरण है। पत्र में रजाकारों की सेना को भंग करने और निरशस्त्र करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इस पत्र उत्तर सप्ताह के अंत तक मिल जाने की आशा है यद्यपि कोई अवधि नियत नहीं की गई है।

जयपुर में उत्तरदायी सरकार

जयपुर के नये मन्त्रिमंडल में दीवान बी० टी० कृष्णामाचारी के अलावा प्रजामण्डल के चार तथा ... दो प्रतिनिधि हैं। प्रजामंडल की ओर से श्री हीरालाल शास्त्री, देवीशंकर तिवारी, दौलतमल भण्डारी और टीकाराम पालीवाल हैं। सरदारों की ओर से राव रामसिंह व ठाकुर कुशालसिंह हैं। इस नये मन्त्रिमण्डल ने कार्यभार संभाल लिया है।

सर्वोदय समाज की समिति

कांग्रेस के अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा श्री किशोरलाल मशरूवाला ने सर्वोदय समाज के लिये निम्न सदस्यों की कमेटी नियुक्त की है — आर० एस० धत्रे (संयोजक), सुशील नाई, श्री धीरेन्द्र मजूमदार, एम० सत्यनारायण, श्री रामदेव ठाकुर, श्री वेदरत्नम् पिल्ले, श्री मनमोहन चौधरी, श्री थिमप्पनायक, श्री बाबलभाई मेहता, श्री महेशदत्त मिश्र, श्री काशीनाथ त्रिवेदी, श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल। इस कमेटी के ५ सदस्य और को आमन्त्रित किये सकेंगे।

चीन में भारतीय राजदूत

बीकानेर रियासत के भूतपूर्व दीवान सरदार के० एम० पणिक्कर को चीन में भारत का राजदूत नियुक्त किया गया है। वह शीघ्र ही नानकिंग रवाना हो रहे हैं।

भारत के सर्वप्रिय, सर्वाङ्ग-सुन्दर मासिक पत्र

मनोरंजन

का

अप्रैल १९४८ का अंक प्रकाशित हो गया

इस अंक की कुछ विशेषतायें

* कई साम्राज्यों की लीलास्थली भारत की राजधानी दिल्ली के सम्बन्ध में कविवर बच्चन' की एक अत्यन्त सुन्दर कविता जो हिंदी साहित्य में अद्वितीय है।
* सास बहू के परम्परागत कलह के सम्बन्ध में हिन्दी के यशस्वी कवि व नाटककार डा० रामकुमार वर्मा का एक अनूठा एकांकी।
  "अगम अथाह"—साम्प्रदायिक मार काट की पृष्ठभूमि पर लिखी गई श्रेष्ठतम कहानी जिसमें मानवीय हृदय की शाश्वत भावनायें उजागर हुई है। ले० हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ कहानीकार श्री विष्णु प्रभाकर।
* हिंदी के पुजारी'—हिंदी जगत के यशस्वी लेखक व पत्रकार श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति के लम्बे साहित्यिक जीवन के रोचक संस्मरणों की दूसरी किस्त।
* होली के रंगीले त्यौहार का प्रारम्भिक स्वरूप क्या था, यह श्री चिरंजीत द्वारा लिखित रेडियो रूपक "अबीर गुलाल" में पढ़िये।
* 'साहित्यकार की पत्नी कभी सुखी नहीं रहती'—यह चौंका देने वाली बात पंडित शंकरदेव विद्यालंकार ने अपने लेख में कही है।
* श्री गिरिजाकुमार माथुर, प्रो० सुधीन्द्र प्रो० इन्द्रशेखर इत्यादि के सुप्रसिद्ध कवियों की उच्चकोटि की रचनायें।
* श्रीमती कमला त्रिवेणीशंकर, श्री राधी श्री नारायण श्यामराव चिताम्बरे की रोचक कहानियां।
* मुखपृष्ठ पर होली का तिरंगा कलात्मक चित्र, मनो बन, चित्रावली, दो रंगी कलापूर्ण छपाई, बढ़िया गेट अप, सलोनी दुनिया, चित्रलोक, बाल मन रंजन इत्यादि विशेष स्तम्भ।

मूल्य आठ आना वार्षिक मूल्य ५॥)

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०

श्रद्धानन्द बाजार दिल्ली

समाचार चित्रावलि

इरविन स्टेडियम में खेलों का सैनिक प्रदर्शन करते हुए एक मोटर साइकिल पर ७ सैनिक आरोही।

बड़ौदा इनफैन्टरी के घोड़ों के खेल।

रायल इण्डियन नेवी के युवकों का स्तम्भ के सहारे स्तूप-निर्माण।

भारत और पाकिस्तान की सीमा।

सीमा पर एक सिक्ख और एक मुसलमान परस्पर मिल रहे हैं।

अखिल भारतीय व्यापार व्यवसाय मण्डल के नये अध्यक्ष श्री लाल जी मलहोत्रा।

गांधी जी की योजनाओं को मूतरूप देने के लिये गतिशील श्री विनोबा भावे।

श्री पणिकर चीन में हिन्दुस्तान की ओर से राजदूत नियुक्त हुए हैं।

एक जन-सेविका राजकुमारी

[पविश्रा विद्याविभूषिता]

कपूर्थला रियासत के स्वर्गीय सरदार हरनाम सिंह के सात सन्तानें थीं। उन सातों में से कन्या केवल मात्र राजकुमारी अमृत कौर ही थी। हरनाम सिंह पूर्वी पंजाब की रियासत कपूरथला के वर्तमान महाराजा के चाचा थे। कई वर्षों तक अवध में कपूरथला की जागीर के वे मैनेजर रहे और १८९५ में वहां से रिटायर्ड हुए। राजा हरनाम सिंह प्रान्तीय धारासभा के अनेक वर्षों तक सदस्य रहे थे और गवर्नर जनरल की कौंसिल के भी सदस्य रहे थे। एक प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ और सुवक्ता होते हुए भी उन्होंने सपरिवार ईसाई मत की दीक्षा ले ली थी इसी कारण वे कपूर्थला की गद्दी के उत्तराधिकार से वंचित हो गये।

राजकुमारी अमृतकौर का जन्म २ फवरी १८८७ को हुआ था। लण्डन के शेरबोर्न के गर्ल्स स्कूल में उनकी शिक्षा हुई और पीछे वे उसी स्कूल में पढ़ाने का काम करने लगीं। कुछ दिनों बाद मुख्य अध्यापिका बनने का अप्रतिम गौरव उन्हें मिला। इतना अधिक पाश्चात्य संस्कार होने पर भी मजेदार बात यह है कि वे कट्टर खद्दरधारी हैं, पक्की निरामिष भोजी हैं, दृढ़ धार्मिक विचारों में श्रद्धा रखने वाली हैं और साथ ही गांधीवादी आदर्शों की अनुयायी हैं। सन् १९३५ से वे गांधी जी के अत्यन्त निकट उनके आश्रम में रही हैं और अपना सारा समय और शक्ति गांधी जी और हिन्दुस्तान के कार्यों लिये लगाती रही हैं। बीसवीं सदी के प्रारम्भिक दिनों से जो राष्ट्रीयता की भावना हिन्दुस्तान के नौनिहालों को अनुप्राणित करती रही है उसी राष्ट्रीयता के स्रोत में से राजकुमारी होते हुए भी इन्होंने आकण्ठ अमृत पान किया है। भारतीय राष्ट्र के पिता, अपने गुरु, सुहृद् और पथ प्रदर्शक महात्मा गांधी की पुकार के पीछे इस राजकुमारी ने अपना समस्त राजसी वैभव ठुकरा दिया और भारत की आजादी की लड़ाई में कूद पड़ी।

'इण्डियन नेशनल कांग्रेस के इतिहास' में डा० पट्टाभि सीतारामैया ने इनकी गिरफ्तारी और नजरबन्दी का उल्लेख किया है। १९४२ की तीसरी अक्टूबर को कालका में रात के साढ़े आठ बजे ये गिरफ्तार हुईं और जब सन् १९४५ में महात्मा गांधी 'शिमला कान्फ्रेंस' में सम्मिलित होने के लिये शिमला आये तो इनको जेल से छोड़ दिया गया।

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन ('आल इण्डिया वीमैन्स कान्फरंस') का सूत्रपात श्रीमती सरोजिनी नायडू और राजकुमारी अमृत कौर जैसी विभूतियों के द्वारा ही हुआ है। १९३० में राजकुमारी अमृत कौर अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के समाज विभाग की मन्त्री बनीं और १९३१-३३ में सम्मेलन की सभा नेत्री। डा० एनीबीसेण्ट, श्रीमती सरोजिनी नायडू और राजकुमारी अमृत कौर -- ये ही तीन प्रमुख महिलायें हैं जिन्होंने ब्रिटिश पार्लियामेण्ट के मेम्बरों से व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा हिन्दुस्तान की स्त्रियों का राजनैतिक स्तर ऊंचा चढ़ाया है।

ये १९३२ में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की प्रेजीडेण्ट चुनी गईं और आल इण्डिया वीमैन्स फण्ड एसोसियेशन का कार्य १९३७-४१ में सभाध्यक्षा के रूप में करती रहीं। राजकुमारी अमृत कौर सबसे पहली महिला थीं जो गवर्नमेंट आफ इण्डिया की शिक्षा विभाग की परामर्शदात्री समिति की सदस्या के रूप में चुनी गईं। सन् १९४२ में तत्कालीन गवर्मेण्ट की नीति के विरोध स्वरूप इन्होंने उस समिति से त्यागपत्र दे दिया। ये महिला मण्डल की प्रधान हैं और 'आल इण्डिया वीमैन्स कान्फरेंस', 'आल इण्डिया वीमैन्स फण्ड एसोसियेशन' और 'स्टेट कांग्रेस' की कार्यकारिणी की सदस्या हैं। दलित वर्ग की महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक उन्नति में इनका तीव्र अनुराग है।

राजकुमारी अमृतकौर

धीरे धीरे इनका व्यक्तित्व देश की सीमा को लांघ कर उचित अर्थ में अन्तर्राष्ट्रीय हो गया। संयुक्तराष्ट्र के शिक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठनों में इन्होंने हिन्दुस्तान का प्रतिनिधित्व किया। इनकी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति इसी से प्रकट है कि लंदन में नवम्बर १९४६ में विभिन्न राष्ट्रों के एकत्रित प्रतिनिधियों के सम्मेलन द्वारा चुने हुए तीन उपप्रधानों में से एक उपप्रधान आप भी चुनी गईं थीं।

[लेडी इरविन कालेज की यह छात्रा खेलों में सर्वश्रेष्ठ रही।

स्वास्थ्य विभाग के मन्त्री के रूप में राजकुमारी अमृतकौर ने सर्वप्रथम कार्य यह किया कि पंजाब के उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया और स्वास्थ्य विभाग की मिनिस्ट्री को यथोचित रूप से संगठित किया। एक महिला के मन्त्रिमण्डल में आने से ही समस्त पुरानी प्रथाएं छिन्नभिन्न हो गईं और यह प्रमाणित हो गया कि स्त्रियां जीवन के किसी भी क्षेत्र में पुरुषों के बराबर ही काम कर सकती हैं।

अपने प्रेस भाषण में उन्होंने शरणार्थियों की आवश्यकताओं पर जोर दिया। उन्होंने घोषणा की कि शरणार्थी समस्या का हल सबसे पहले होना चाहिए और दोनों ओर से शरणार्थियों को सुरक्षित अवस्था में लाने और ले जाने का प्रबन्ध सबसे पहले किया जाना चाहिए। सैनिक संगठनों में भी साम्प्रदायिकता का विष फैल गया है और किसी भी ओर के अल्पसंख्यकों का काफला अन्य धर्मावलम्बी सेनाओं के अवधान में सुरक्षित पहुंच जायगा, ऐसी आशा नहीं करनी चाहिए। सबसे बड़ी बात यह थी कि पंजाब के उपद्रवों के कारण यातायात के सारे साधन बंद हो गये थे। आखिर लेडी माउण्टबेटन के साथ राजकुमारी ने जालन्धर, अमृतसर, लाहौर रावलपिंडी, स्यालकोट और गुजरांवाला में सात हस्पताल यूनिटों का और विभिन्न १२ शरणार्थी कैम्पों का निरीक्षण किया। स्वास्थ्य विभाग की ओर से चिकित्सोपयोगी औषधियां भेजी गईं। उस समय हस्पतालों के स्टाफ ने और सेना के कमाण्डरों ने जो रिलीफ का कार्य करके दिखाया, माननीय स्वास्थ्यमंत्री ने उसकी प्रशंसा की।

बी० बी० सी० द्वारा ब्राडकास्ट करते हुए लेडी माउण्टबेटन ने इस सारे कार्य के लिए नई स्वास्थ्य मन्त्री श्री राजकुमारी अमृतकौर को निम्न शब्दों में श्रद्धाञ्जली भेंट की — "सामाजिक सेवा कार्यों को पूरा करने के लिए अभी नये हिन्दुस्तान के सामने हिमालय जितना बड़ा कार्यक्षेत्र पड़ा है।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

मैं शिव का संहार लिये हूँ

[श्री कृष्ण । 'सरल']

मेरा मार्ग न रोको मेरे
इस रक्तिम पथ से हट जाओ,
मेरी बढ़ती हुई अनल में
पंख-हीं अपने झुलसाओ।
बच जाओगे बच न सकोगे
व्यर्थ न अपने प्राण गवाओ
मेरी इन उठती लपटों को
अन्यायी ! तुम घृत न चढ़ाओ।

महाकाल हूँ मैं कराल, मैं श्वासों में अंगार लिये हूँ।
मैं शिव का संहार लिये हूँ

आज उठा है डमरू मेरा,
मेरा रोम रोम गाता है।
मीठा राग नहीं अब देखो
महानाश का स्वर आता है।
जीर्ण जगत् हो ध्वंस भले ही
रुक न सकेगा ताण्डव मेरा,
मुझ में आंधी और बवण्डर
मुझ में जोश बढ़ा आता है।

अन्यायों का भक्षण करने, उठता भीषण ज्वार लिये हूँ।
मैं शिव का संहार लिये हूँ

मेरी प्यास बढ़ रही प्रतिपल
आज गरल का पान करूंगा,
मेरे हाथ उठे लो देखो
शत शत-शर सन्धान करूंगा।
छोड़ो अब वह राग पुराना
गाना है तो भैरव गाओ,
काल कूट पी मैं जी भर कर
नवयुग का सम्मान करूंगा।

सैनिक हूँ मैं, अग्निदूत हूँ, ज्वालाओं का हार लिये हूँ।
मैं शिव का संहार लिये हूँ।

★

गीत

['शलभ']

हृदय-गगरी से पिलादो नीर, दो पल!
अंजली भर! अजली भर।

प्यार का वैभव लिये उर
है हिलोरित आज भू पर,
बह रही मंदार मलयज
सिहरती-सी फेन पी कर।

श्वेत नीलम सिंधु तो है प्यार का कुल।
है न सुन्दर! है न सुन्दर!

मधुर वन-श्री मौर रस की
बह रही सरिता युगों से!
तोड़ती चट्टान—भूधर
कुचल कर अपने पगों से।

टूट पर पाई न अब तक, कब गई गल!
प्राण गागर। प्राण गागर!

बिखर कुंकुम डगर मग में
विश्व-पथ में फूल फैले।
विकल आलोकित हुए जो
तिमिर से थे स्याह-मैले।

मुखर नूपुर, सकुच धरती चरण-उत्पल!
निखर सुन्दर! निखर सुन्दर!

रूप-सागर से निकाले
प्राण अमृत-गागरी को,
तुम लिये रति-रूप रानी
आ रही नव नागरी ओ!

झिझकता मन मृग तुम्हारे पास चंचल!
पर, ठिठक कर! पर, ठिठक कर!

हृदय-गगरी से पिला दो नीर, दो पल!
अंजली भर। अजली भर!

मांग कर किन्तु अखबार पढ़ते हैं आप—

त्याग दिये तांगे, साइकिल की सवारी छोड़ी,
कूद कर 'कार' सरकार चढ़ते हैं आप!
बीड़ी, सिगरेट का न रेट पूछते हैं कभी,
नित्य 'मित्र-मुख' में सिगार मढ़ते हैं आप!
पोटली 'पदों' की लूटने में लाखों खर्च करें,
'लीडरी' की ओर बेकरार बढ़ते हैं आप!
"अरुण कवि" दुनिया की दौलत लुटा दें चाहे,
मांग कर किन्तु अखबार पढ़ते हैं आप!!

अवसरवादी

सूट, बूट, पेण्ट में कचहरी को जाते देखे,
आते जो 'सभा' में तो पहिन लेते खादी हैं!
त्याग, बलिदान करे कौन, मौन साधे रहें,
नागरिक — नेता बनने को बकवादी हैं!
हिन्दी की हिमायत के अब गीत गाने लगे,
गालिब को भूले, शेखसादी के न आदी हैं!
सांचे में तुरत ढल जाते 'साम्प्रदायिकता' के,
जानता हूँ "अरुण" आप अवसरवादी हैं!!

श्री अम्बादत्त शर्मा "अरुण"

फरीदकोट में बर्बरता का नंगा नाच

टिहरी गढ़वाल और सुकेत के बाद उत्तर भारत में फरीदकोट ही ऐसी रियासत है जहा की प्रजा ने राजा के अत्याचारों के खिलाफ संगठित होकर सिर उठाया और अब जल्दी ही अपने इस प्रयत्न का फल पूर्वी पंजाब की रियासतों के संघ के रूप में उसे मिलने वाला है। फरीदकोट में १ मार्च से उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के उसी संघर्ष की पुनरावृत्ति हो रही है जो दो वर्ष पूर्व १९४६ में वहा हुआ था। सत्याग्रहियों के साथ उस समय भी वहशियाना ढंग के बर्त्ताव कम नहीं किये गये थे किन्तु इस बार जो अत्याचार किये गये हैं उनसे राजा ने जंगलीपन और पागलपन में अपने अन्य सहयोगी निरंकुश राजाओं को मात दे दी है। प्रजामंडल की प्रतिद्वन्द्वी सरकार के निर्माण की घोषणा से राजा साहब अत्यधिक विचलित हो उठे और उन्होंने उसे अपने विरुद्ध एक असह्य चुनौती समझा और वे अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठे। उन्होंने न केवल प्रजामंडल के नेताओं या कार्यकर्त्ताओं को बल्कि प्रजामंडल से सहानुभूति रखने वाले अपने उच्च प्रतिष्ठित अफसरों तक को अपने हाथों से बेरहमी से पीटा और अपमानित किया। मजिस्ट्रेट, इन्स्पेक्टर सिविल सप्लाइज, ज्युडीशियल व रेवेन्यु सेक्रेटरी, सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस और एक्साइज सबइन्सपेक्टर जैसे पदाधिकारियों का खुले आम या उनके मकानों पर जा कर पीटा जाना, केशों से पकड़ कर सेक्रेटरियट की इमारत से घसीटा जाना, जीप के पीछे बाघ कर खींचा जाना, और यह सब भी स्वयं राजा के हाथों, कुछ सामान्य घटना नहीं है। इससे जहा राजा साहब के दिमागी सन्तुलन खो बैठने का कुछ आभास मिलता है वहां उत्तरदायी शासन की मांग व आन्दोलन की गहराई की थाह भी पता लगती है। एक बात स्पष्ट है कि प्रजामंडल की जनतंत्रीय शासन की माग केवल मुट्ठीभर नेताओं या कुछ पीड़ित व्यक्तियों की ही पुकार नहीं है, बल्कि राजा साहब के राजयंत्र के पुर्जों तक में उसका असर पहुंच गया है। इसी लिए राजा साहब के हाथों पीड़ित हो कर, मर्माहत होकर या केवल उनके अत्याचार की विभीषिका से ही राज्य के १५० के लगभग अफसर व कर्मचारी राज्य से बाहर पनाह ले चुके हैं। इनमें स्वायत्त शासन मंत्री, हाईकोर्ट के जज, एक्साइज डिपार्टमेंट के प्रमुख, आडीटर जनरल और असिस्टेंट सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस भी शामिल हैं। इनके इलावा कितने ही उच्च पदाधिकारी जेलों में सड़ रहे हैं। इन सरकारी अधिकारियों के इलावा कितने ही बड़े व्यापारी और साहूकार भी राज्य से भाग कर अन्यत्र चले गये हैं।

इस प्रकार राजा की निरंकुश शासन सत्ता के विरुद्ध आम जनता एवं अमीर और गरीब दोनों का संगठित मोर्चा बहुत कम देखनें में आता है।

पुराना इतिहास

राजा साहिब की इस 'नर्वसनेस' और बदहवासी के पीछे एक इतिहास है। फरीदकोट फीरोजपुर जिले में भारत-पाकिस्तान सीमा से १८ मील पर अवस्थित एक छोटी सी रियासत है जिसकी ८५ प्रतिशत प्रजा सिख जाट है। करीब सौ साल पहले इस रियासत का जन्म हुआ था जब कि वर्तमान राजा हरीन्द्र सिंह के दादा सरदार पहाड़ा सिंह को सिख युद्ध में सिखों के विरुद्ध तलवार उठाने के पुरस्कार में अंग्रेज बहादुर की ओर से जागीर के रूप में यह रियासत बख्शी गयी थी। यद्यपि सिख लोग पहाड़ा सिंह के इस जाति द्रोह, विश्वासघात और छल को माफ नहीं कर सकते थे,' तथापि अंग्रेज-कूटनीति और अंग्रेज सेना की सुखद छत्रछाया में यह रियासत बिना विघ्न बाधा के फलती-फूलती रही। किन्तु अब अंग्रेजों की प्रभुता की समाप्ति के साथ सिख लोग अपने जातिद्रोह के इस कलंक को भी मिटा डालना चाहते हैं।

परन्तु केवल भावुकता के आधार पर ही राजा हरीन्द्र सिंह के खिलाफ विद्रोह के झंडे के नीचे राज्य की ६० प्रतिशत प्रजा को एकत्र नहीं किया सकता। जो आग फरीदकोट में भड़की है वह मात्र इस भावुकता का ही नतीजा नहीं हो सकती। यह आग राख के नीचे देर से संचित थी। देश व्यापी जन आंदोलन की हवा के झोंकों से इस राख के उड़ते ही वह भड़क उठी।

प्रजा के धन की लूट

राज्य में मुकम्मल जागीरदारी प्रथा है, जिसके अनुसार राज्य की अधिकतर जमीन राजा की या राजपरिवार के लोगों की जमींदारी है, कृषक प्रजा इस में काश्तकार या मजदूर के रूप में ही काम करती है और उसे अपनी मेहनत का प्रतिफल नहीं मिलता। जो थोड़ी बहुत जमीन दूसरे लोगों की निजी मिल्कियत है उसे भी वे लोग राजा की अनुमति के बिना बेच नहीं सकते और यदि वे बेचने का ही आग्रह करें तो उन पर ड्योढ़ा से दुगुना तक टैक्स लगा दिया जाता है। इधर पंजाब के विभाजन के परिणाम स्वरूप राज्य के [illegible] मुसलमान राज्य छोड़कर पाकिस्तान चले गये हैं और उन की यह हिजरत राजा के लिए वरदान साबित हुई है। उसने इन हिजरतियों की सारी जमीन, जायदाद और घरेलू सम्पत्ति पर अपना निजी अधिकार कर लिया है। फरीदकोट ही एक मात्र पूर्वी पंजाब की ऐसी रियासत है जहा कि एक भी शरणार्थी को नहीं बसाया गया।

जमीन के इलावा राजा ने पिछले दिनों अनाज के निर्यात में चोर बाजारी और व्यापारियों से नाजायज घूस लेकर लाखों रुपयों की सम्पत्ति बनाई है। भारत सरकार की नीति के विरुद्ध फरीदकोट के नरेश ने ५०) रु० प्रति जानवर के हिसाब से नजराना लेकर दुधारू पशुओं के निर्यात की आज्ञा दी जिससे हजारों पशु भारत से बाहर चले गये और इस नजराने की सारी आय को राजा के निजी खजाने में स्थान मिला।

सन् १९४२ में राजा साहब ने ४० लाख रुपये का सोना ४० रु० प्रति तोले की दर पर राज्य के कोष से खरीदा था किन्तु बाद में सोने का मूल्य बढ़ जाने पर यह सोना ८६) रु० तोले के हिसाब से बेच दिया गया और इसका समस्त लाभ राजा के निजी कोष में डाल दिया। गया।

जिस समय सन् १९३४ में राजा हरीन्द्र सिंह राजगद्दी पर बैठे उस समय तक राज्य की २ करोड़ रु० की सार्वजनिक सम्पत्ति पर जो कि सरकारी सिक्यूरिटियों और बैंकों में लगाई गयी थी, ४॥ लाख रु० प्रतिवर्ष ब्याज की आय होती थी और यह आय राज्य के बजट में भी दिखाई जाती थी। किन्तु अब यह २ करोड़ रुपये की पूंजी और उसकी आय दोनों ही एकाएक अदृश्य हो गये हैं। यह पूंजी अभी कुछ वर्ष पूर्व तक भी विद्यमान थी किन्तु अब ज्ञात हुआ है कि यह राशि गत १५ जुलाई के स्टर्लिंग समझौते से पूर्व ही ८५ लाख की एक तथा ४०-४० लाख रुपये की दो किश्तों में लायड्स बैंक की मार्फत राजा ने चुपचाप अपने भाई कुंवर मन जीत इन्द्रसिंह को आस्ट्रेलिया भेज दी है, और उसे वहा जमीन जायदाद खरीदने में लगाया जा रहा है। कहा जाता है कि यह राशि पहले ब्रिटेन भेजी गयी थी और राजा साहब वहीं जायदाद खरीदना चाहते थे किन्तु बाद में मृत्यु-कर के भय से उन्होंने यह राशि अर्जेण्टाइना भिजवाई। लेकिन वहा भी डालरों में उसका विनिमय न हो सकने के कारण अंत में उन्होंने यह रकम आस्ट्रेलिया भेज दी। राज्य के तोशखाने से भी बहुत बड़ी मात्रा में कीमती सार्वजनिक जवाहरात और अस्त्र-शस्त्र बेचे गये और उनका करोड़ों का मूल्य राजा के निजी कोष में जमा हो गया।

केवल यही नहीं, फरीदकोट नरेश शराब और अफीम के गैर कानूनी आयात और बिक्री से प्रतिवर्ष लाखों रुपया पैदा कर रहे हैं। गत ५ वर्षों में उन्होंने १०००० गैलन से बढ़ाकर शराब की बिक्री १७५००० गैलन प्रतिवर्ष कर दी है। केन्द्रीय सरकार से केवल २४ मन अफीम का वार्षिक कोटा बंधे होने पर भी इससे कई गुनी अफीम चोरी से प्रतिवर्ष रियासत में आती है और उससे राजा साहब की तिजोरी भारी होती रहती है।

इधर कुछ समय से प्रजा की कथा को देखकर जन-आन्दोलन दबाने और सैनिक पुलिस राज करने के लिये राजा ने पुलिस की संख्या १६०० कर दी है जबकि १९३४ में यह संख्या १९२ तथा १९४२ में ३०० थी। इसी प्रकार सेना की संख्या भी बढ़ाकर २५० से ७५० कर दी गयी है और इस पुलिस व सेना का काम राज्य की प्रजा की रक्षा करना नहीं बल्कि उसे लूटना व आतंकित करना है।

प्रजा क्या चाहती है

यह सब अभियोग हैं जिनके कारण जनता नहीं चाहती कि रियासत मंत्रालय इन सिख रियासतों के बारे में नर्मी या कमजोरी का रुख दिखाये। इनके शासकों को कठोर केन्द्रीय राजदंड से सीधा करने की जरूरत है। फरीदकोट की प्रजा रियासत को केवल संघ में मिलाने से ही संतुष्ट नहीं हो सकती, वह चाहती है कि इसके राजा को भी उसी रास्ते का पथिक बनाया जाय जिसके पथिक अलवर, भरतपुर और कोल्हापुर के राजा बने हैं। अर्थात् उसे दिल्ली में नजरबन्द करके उसके अमानुषिक बर्त्ताव व अन्य अभियोगों की निष्पक्ष जांच की जाय।

—श्री कृष्णचन्द्र मेहता

तुलसी

ले० श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार

तुलसी के प्रति पूज्य भाव रखने वाली देवियां और धर्म परायण लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि इस धार्मिक पौदे में कितने रहस्य छिपे पड़े हैं। तुलसी के पौदे की तरह यह पुस्तक भी हमारे हरघर में पहुंच जानी चाहिए। सचित्र, सजिल्द। मूल्य २)

मिलने का पता:—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

ट्रूमैन की नीति का यह फल !!!

[श्री जगदीशचन्द्र अरोड़ा]

★

चेकोस्लोवाकिया में एकदीन साम्यवादी क्रान्ति सफल हो गयी है (२५ फरवरी) और बूढ़े तथा रोगी राष्ट्रपति डाक्टर बेनेस को कम्युनिस्ट दबाव के सन्मुख सिर झुकाने पर विवश होना पड़ा है। स्विटजरलैंड के अतिरिक्त चेकोस्लवाकिया ही इस समय समस्त युरोप में एकमात्र प्रजातन्त्रतीय राज्य था और यह देश सदा भारत का मित्र रहा है। हाल ही में काश्मीर समस्या में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रस्तावित तीन व्यक्तियों की समिति में भारत ने चेकोस्लोवाकिया को ही अपना सदस्य चुनने का निश्चय किया था।

चेकोस्लावाकिया के एकतन्त्रीय शासन में चले जाने का प्रत्येक प्रजातन्त्रीय व्यक्ति को दुख होगा। यों तो पिछले दो वर्षों से संसार ने एक एक कर पोलैण्ड, रूमानिया, बलगारिया, युगोस्लाविया, अलबानिया आदि को कम्युनिस्ट बनते देखा है। राजतन्त्रात्मक शासन में युगोस्लाविया, रूमानिया, यूनान और बलगारिया की साधारण जनता बराबर पीसी जाती रही है। धरती की दशा भारत की जमींदारी प्रथा के समान रही है और राजनीतिक दृष्टि से विरोध करते हुए भी स्वय सयुक्त राज्य के परराष्ट्रविभाग के बुलेटिन से ज्ञात होता है कि आज इन देशों की दशा सदा से अच्छी है। लेकिन वे धरती के मालिक हैं और प्रसन्न हैं। यह न भूल जाना चाहिए कि धरती ही किसी राष्ट्र और समाज का प्राण है और राज्य शासन की व्यवस्था, तथा समाज की अवस्था का बहुत बड़ा दारोमदार इसी बात पर है कि धरती का मालिक कौन है। जहां तक सामाजिक अवस्था, आर्थिक खुशहाली और व्यक्तिगत वैभव का सम्बन्ध है, बाल्कन के कम्युनिस्ट देश आज पहले से अच्छे हैं, परन्तु चेकोस्लोवाकिया की अवस्था भिन्न है। यह देश कभी भी पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था में नहीं रहा और राष्ट्रपति बेनेस बहुत अधिक रूप से समाजवादी रहे हैं।

परन्तु कम्युनिस्ट अपने अतिरिक्त कभी किसी और पर विश्वास नहीं करते क्योंकि उनमें 'सुलह' की स्पिरिट बिल्कुल नहीं है। यदि कम्युनिस्ट मार्क्स की आर्थिक नीति पर ही विश्वास करें और यह भूल जाय कि प्रधान मन्त्री कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य है या नहीं तथा सोवियत रूस की परराष्ट्र नीति का समर्थक है या नहीं तो सम्भवतः आज संसार का प्रत्येक विचारवान युवक कम्युनिस्ट हो जाय। भारत के जवाहरलाल नेहरू, संयुक्त राज्य के हेनरी एस० वालेस, तथा ब्रिटेन के हैरोल्ड जे० लास्की जब खुल्लमखुल्ला अपने को कम्युनिस्ट घोषित कर दें यदि यह 'प्रमुख' भेद मिट जाय। परन्तु मार्क्स की आर्थिक नीति और आज की कम्युनिस्ट विचारधारा तथा कार्य-प्रणाली में उतना ही अन्तर है जितना हिटलर और गांधी में।

चेकोस्लोवाकिया भी कम्युनिस्टों की 'हिटलरी' कार्यप्रणाली का शिकार हो गया। इस प्रकार सोवियत रूस की पश्चिमी सीमा पोलैण्ड से लेकर आधे पूर्वी जर्मनी तक तथा बाल्टिक सागर से लेकर अलबानिया तक सुदृढ़ हो गयी है।

अभी कुछ ही दिन हुए जब एक दिन एकाएक सयुक्त राज्य ने सन् १९३९-४१ के बीच जर्मनी रूसी सन्धि के गुप्त पत्र प्रकाशित कर दिये तो उसका उत्तर देते हुए रूस ने चेकोस्लोवाकिया का ही उदाहरण पेश किया था। अमरीका द्वारा प्रकाशित गुप्त पत्रों में रूस पर दोषारोपण किया गया था कि रूस ने जर्मनी से सन्धि कर हिटलर को महायुद्ध प्रारम्भ करने की खुली छुट्टी दे दी। सम्भवतः अमेरिका का परराष्ट्र विभाग अपने किसी कार्य पर इतना अधिक नहीं पछताया होगा, जितना इस मूर्खता पर। अमेरिका ने सोचा था कि इन पत्रों के प्रकाशन से संसार में वह रूस का सिर नीचा कर सकेगा परन्तु हुआ उल्टा। सोवियत रूस ने तुरन्त और गुप्त पत्रों को प्रकाशित कर दिया, जिसने अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी राष्ट्रों की पोल खोल दी। रूस द्वारा लगाए कुछ दोषारोपण ये हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से सत्य हैं।

(१) पहले महायुद्ध के बाद ध्वस्त जर्मनी का पुनर्निर्माण अमेरिकन पूंजीपति से ही हुआ। जर्मनी के कलकारखानों को अमेरिकन पूंजीपतियों ने ही जर्मन सरकार की सिक्योरिटी बान्डों को खरीद कर पुनः अस्त्र शस्त्र उत्पादन के योग्य बनाया।

(२) सन् १९३२ में रूस ने ब्रिटेन तथा फ्रांस से चेकोस्लोवाकिया के प्रश्न पर जर्मनी से लड़ जाने को कहा था और "सुलह" करने के लिये निमन्त्रण दिया था। रूस से मिलकर जर्मनी से लड़ने की बनिस्बत म्युनिख में ब्रिटेन के चेम्बरलेन, फ्रांस के दलादियर तथा इटली के मुसोलिनी ने हिटलरी जर्मनी के हाथ चेकोस्लोवाकिया को बेच दिया। इस सम्मेलन में रूस को बुलाया भी नहीं गया। इतना ही नहीं चेम्बरलेन और हिटलर में गुप्त वार्ता हुई जिसमें चेम्बरलेन ने हिटलर को रूस पर आक्रमण करने को कहा तथा सहायता देने का वचन दिया।

(३) सन् १९३९ में जुलाई अगस्त में ३ सप्ताह तक ब्रिटेन का विशेष प्रतिनिधिमण्डल सोवियत रूस में "सुलह की बातचीत" करता रहा, परतु किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा। दूसरी ओर ब्रिटेन इस बात की चेष्टा करता रहा कि जर्मनी रूस पर हमला कर दे। यह देखकर "सुरक्षा" की खातिर रूस ने जर्मनी से दोस्ती कर ली।

(४) सन् १९४३ में सयुक्तराज्य अमेरिका के श्री डुलास (जिन्होंने भारत के जवाहरलाल तथा हिन्दुओं को फासिस्ट कहा था) तथा तत्कालीन जलसेना-सचिव श्री फारेस्टल (जो इस समय रक्षा मन्त्री हैं) ने जर्मनी से अलग से सुलह करने की बातचीत चलायी थी। इसी कारण यूरोप में दूसरा मोर्चा खोलने में इतनी देर लगायी गयी।

सयुक्तराज्य ने गुप्त पत्रों का प्रकाशित करने से पहले ब्रिटेन अथवा फ्रांस से पूछा भी नहीं। रूसी पत्रों के प्रकाशन से ब्रिटेन को ही नीचा देखना पड़ा है, इस लिए वह अमेरिका से रुष्ट भी है।

"म्युनिख" से १० वर्ष बाद अब फिर चेकोस्लोवाकिया पर राजनीतिक सकट आया है। उस समय वह विदेशी फासिस्टों के अधिकार में चला गया था, अब देशी कम्युनिस्टों के हाथ में। चेकोस्लोवाकिया के बाद अगली बारी फिनलैंड की है। बाल्कन में सर्वत्र स्वाधीन कम्युनिस्ट क्रान्ति से पहले कुछ विशेष चिन्ह दिखायी देने लगते हैं। गृहमन्त्री कम्युनिस्ट दल के होते हैं और वे पुलिस तथा सेना पर अधिकार कर लेते हैं, राज्य अथवा राष्ट्रपति को नयी कम्युनिस्ट सरकार स्वीकार करने पर विवश किया जाता है, तथा ऐसे समय रूस का कोई न कोई अधिकारी अवश्य देश में मौजूद रहता है। चेकोस्लोवाकिया में भी यही

(शेष पृष्ठ २२ पर)

मनुष्य के चमड़े के व्यापारी

[श्री धर्मवीर तरनेजा बी० ए०]

जब सब लोग चाय पीकर अपने अपने घर वापिस गये तो मेरी एरिक नाइट के समीप जा बैठी और कहने लगी — 'मिस्टर नाइट ! आप यहां अकेलापन महसूस करेंगे इसलिये आज से हम इकट्ठे बाहर टहलने जाया करेंगे ।' एरिक नाइट के लिये मेरी का मतलब जानना कठिन न था ।

एरिक को कोठी भी मिल गई और वह सुसज्जित भी हो गई । अब एक और समस्या खड़ी हुई । ठाकुरसिंह ने नाम तो बदल लिया । पर चिट्ठियां तो नये नाम पर न आ सकती थीं । आखिर कार एक उपाय सूझा ।

उन्होंने 'इंडियन क्लब' के मंत्री का घर ढूंढ निकाला । मंत्री श्री कालिदास थे बड़े जातिभक्त और समझदार । सत्याग्रह के सिलसिले में कई बार जेल जा चुके थे । श्री ठाकुरसिंह ने सारा किस्सा आदि से अन्त तक श्री कालिदास को समझा दिया । कहा — 'मुझे अपनी सभा का मेम्बर बना लो । पैसे की मदद जितनी चाहिए लो । हां, ऐसा कदम मैंने क्यों उठाया इसका जवाब मैं कुछ दिनों बाद दूंगा ।' साथ यह भी कहा कि 'भाई साहब ! मेरी डाक आपके पते पर आयेगी । मैं स्वय ही आपके घर से उसे ले जाऊंगा ।'

'आपने अपना नाम यहां क्या रक्खा है ? ओहो यह तो पूछना मैं भूल ही गया ?'

ठाकुरसिंह ने कहा — 'एरिक नाइट ।'

दोनों ही कह-कहा मारकर हंस पड़े।

श्री कालिदास ने जरा चिढ़ाने के लिये कहा — 'अच्छा तो साहिब बहादुर ! आपको तो सब नागरिक अधिकार मिल गये हैं । उस पर भी तुर्रा यह कि ये सब कैसे उल्लू बनते हैं ।'

एरिक नाइट भला जार्ज टाउन के निवासियों के प्रेम पात्र भी क्यों न बनते । सौन्दर्य के अतिरिक्त उनमें दूसरे अनेक आकर्षक गुण थे । यह प्रकट करने के लिये कि वे उनमें से ही एक हैं, एमर्सन साहब से उन्होंने एक दिन कहा कि इस इतवार को हम गिरजा घर जरूर जावेंगे । एमर्सन ने पूछा — 'वहां जाकर क्या करोगे ?' एरिक ने बात काटते हुए 'कहा —— क्या आप हर इतवार को गिरजा घर नहीं जाते ?'

'नहीं । कभी कभी मैं अवश्य जाता हूं । पर तुम तो नवयुवक हो । नये जमाने के लोग गिरजाघर कम ही जाते हैं । उलटा इसके मैं सोचता था कि तुम पिकनिक को ज्यादा पसन्द करोगे ।'

'नहीं जी' — एरिक ने गम्भीर मुद्रा धारण करते हुये कहा — 'नये जमाने का होता हुआ भी मैं अपने धर्म कर्म को नहीं भुलाना चाहता ।'

इसपर एमर्सन खिलखिलाकर हंस पडे और कहने लगे — 'तुम सचमुच अद्‌भुत मनुष्य हो । मेरी के सामने गिरजा घर का नाम लो तो लड़ने को तैयार हो जाती है और साथ ही कहती है वहां तो चोर जाते हैं ।'

अब एरिक भी हंस पड़े और कहने लगे — 'तो वह भी इस चोर जेन्टलमेन के साथ गिरजा घर जायगी ।'

गिरजाघर में बूढ़े या पुराने विचारों के लोग ही जाते थे । पर एरिक के कारण मेरी और एमर्सन भी साथ गये । इस तरह एरिक बूढ़े और पुराने विचारों के लोगों में भी लोकप्रिय हो गया । एरिक ने सिर्फ वहां जाना ही शुरू नहीं किया अपितु उसकी नई बिल्डिङ्ग बनवाने के लिये फंड खोल दिया और स्वय भी अच्छी खासी रकम उसमें दान दी ।

इस छोटे से गांव में और भी कई तरह से मेल जोल होता रहता । ३१ दिसम्बर का नाच लोगों को न भूलेगा । उस गांव का वह सबसे सफल नाच था । पर इस नाच के समाप्त होने से १५ मिनिट पहले एक दुर्घटना हुई । यदि एरिक नाइट उसे ऐन वक्त पर न संभालते तो इस दुर्घटना से लोगों में बड़ी अप्रसन्नता फैल जाती ।

नाच जारी था । लोगों में बड़ी उत्सुकता और चाव था । वर्ष के लिये लोगों ने नये नये मनसूबे बांध रक्खे थे । सब प्रसन्न थे । एरिक का दिल तो हर्ष के मारे बांसों उछल रहा था कि इतने में किसी स्त्री के चीखने की आवाज आई । सब एकदम स्तब्ध हो गये । पर एरिक एकदम उधर भागे जिधर से चीख आई थी । देखा एक औरत खून में लथपथ पड़ी है । वह जब सड़क पार करना चाहती थी, तभी पीछे से आती एक मोटर उसे बीच रास्ते में गिरा कर चली गई । एरिक ने उसे अपनी मोटर में उठाकर लिटाया और तेजी से मोटर दौड़ा कर हस्पताल की ओर भागे ।

सब लोग इकट्ठे होकर एरिक की निर्भयता और चतुरता की मुक्त कंठ से सराहना कर रहे थे । लोगों की बातों से यह भी मालूम हुआ कि इस तरुणी का विवाह इसी क्रिसमस के दिन हुआ था । उसका पति भी उसके पास पहुंच गया था । उसकी बेचैनी का कोई ठिकाना न था । बारबार डाक्टरों से वह कह रहा था — भगवान के नाम पर इसे बचा दो । लोगों के दिल भी मुंह को आ रहे थे, यह सोचकर कि यदि यह लड़की चल बसी तो बड़ा अनर्थ होगा । अपशकुन अलग ।

हस्पताल में उस लड़की के कमरे के सामने लोगों का जमघट लग गया । इतने में डाक्टर ने बाहर आकर पूछा कि इस स्त्री के लिये कोई अपने शरीर से रुधिर देगा ? क्योंकि अब बेचारी के बचने का सिर्फ यही एक उपाय है । दूसरे लोग तो अभी एक दूसरे का मुंह ताक रहे थे कि एरिक आगे बढ़े और कहने लगे — मैं रुधिर देने के लिये प्रस्तुत हूं । परीक्षा करने पर निश्चय हुआ कि एरिक का रुधिर अनुकूल रहेगा । सुबह जब डाक्टर ने लोगों को तसल्ली देते हुए कहा कि वह स्त्री खतरे से बाहर है तो लोगों के चेहरे पर कुछ खुशी हुई । भीड़ के लोग एक दूसरे से बढ़ कर मिस्टर एरिक नाइट को धन्यवाद देने लगे । एरिक गम्भीर मुद्रा से सब को मुस्करा कर धन्यवाद दे रहे थे ।

इधर मेरी ने भी सम्बन्ध पक्का करने में कोई कसर न छोड़ी । जीवन में एक नारी को अपनी कल्पना और आशा के अनुकूल पुरुष विरले ही मिलते हैं । जब एक मनभाया युवक हाथ में आ सकता हो तो भला क्यों गवाया जाय । एरिक नाइट और मेरी में समीपता बढ़ती गई । मेरी कोई ३१,३२ बरस की थी । अपने मां बाप की लाडली इकलौती बेटी थी । एरिक नाईट अक्सर क्लब जाते । यदि वह न जाते तो क्लब सूना-सा लगता, वहां उनका जैसा हंसमुख और कोई न था । नाच और गाने का रङ्ग ही न जमता, जब ये न होते और कई सुन्दरियां भी एरिक के साथ नाचने का अवसर पाने को लालायित रहती थीं ।

एक दिन एक भारतीय उस क्लब के निकट नाच देखने को खड़ा हो गया । उसे किसी ने देख लिया । जब गोरों को पता लगा तो सब उसे पीटने को बाहिर निकले ।

नाईट ने कहा — 'भाई, इस बेचारे को मत मारो । उसे यहां आने को मना कर दो ।' नाईट की प्रेरणा से वह पिटने से बच गया । पर एमर्सन गुस्से से भरा बैठा था । कहता था — 'इस मुल्क में गोरे ही रह सकेंगे । यदि काले हिन्दुस्तानी यहां रहना चाहते हैं तो जो स्थिति उन्हें दी गई है उसी में उन्हें सन्तुष्ट रहना चाहिये । इस देश की उन्नति हमने अपना पसीना और खून बहाकर की है । देश हम जीतें और एशिया वाले लोग यहां अपने पैर फैलावें । खूब कही । यह नहीं होने का ।'

एरिक नाईट एक कोने में चुपचाप बैठा था और मन में हंस रहा था । इतने में मिस मेरी दौड़ती २ आई और कहने लगी — 'आप चुप क्यों बैठे हैं ? आज क्या मेरे साथ नहीं नाचेंगे ?'

एरिक ने कहा — 'जरूर ।'

बैंड बजाने लगा और नाच शुरू हुआ ।

मेरी ने पूछा — 'आप यहां दक्षिण अफ्रीका में किस प्रयोजन से आए हैं ?

'तुम जानती तो हो ।'

'मैं तो समझती हूं मेरे लिए आए हैं ।'

मेरी देख रही थी कि नाइट पर मेरे कहने का क्या असर होता है और वह क्या जवाब देता है ।

एरिक ने कहा — 'तुम ठीक कहती हो ।'

एमर्सन का गुस्सा मेरी और एरिक को इकट्ठा नाचते देख ठंडा हो गया । दिल ही दिल में सोचने लगे—यह जोड़ी बड़ी भली लगती है ।

मेरी की खुशी का कोई ठिकाना न था । वह भागी भागी अपने पिता के पास गई और कहने लगी — 'मैंने उसे पा लिया । मैंने उसे पा लिया । पिता भी प्रसन्न दीखते थे । दोनों यथा समय घर पहुंचे ।

एमर्सन इस सम्बन्ध के विषय में पूरा निश्चय करना चाहते थे । एरिक किसी बड़े घर का लड़का है, इस रिश्ते को शायद न माने । एक बात और भी थी । एमर्सन अपने आपको भी बड़ा गिनवाना चाहते थे । दूसरे लोग भी एरिक पर मुग्ध हैं । जब मेरी के रिश्ते की बात सुनेंगे तो सब चकित होंगे । इसी प्रयोजन से उन्होंने एक पार्टी का आयोजन किया और मित्रों को लिखा कि यह पार्टी मेरी की सगाई की खुशी में है ।

सारे योरुपियन लोगों में सनसनी फैल गई । सब प्रसन्न थे और कहते थे कि एमर्सन बड़ा भाग्यशाली है । सगाई का दिन आ गया । सब लोग तीनों को जी भर बधाइयां देने लगे ।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

हिन्दी व पंजाबी का नया संघर्ष

पूर्वी पंजाब का भी विभाजन हो

[श्री दीनदयालु शास्त्री]

हमारे देश के विभाजन से सबसे अधिक हानि पहुंची है पंजाब को। पाकिस्तान में सिन्ध व सीमाप्रान्त पूर्ण रूप में शामिल हुए हैं, उनका कोई हिस्सा हमारे देश में अवशिष्ट नहीं रहा है अतः पाकिस्तान में वे सुविधानुसार विकास पा सकते हैं। बंगाल दो भागों में विभक्त हुआ है सही किन्तु इन दोनों भागों की भाषा व संस्कृति एक है अतः अलहदा रहते हुए भी बंगाल के इन दोनों भागों को कोई विशेष चोट नहीं पहुंचती। रह जाता है पंजाब, विभाजन से पूर्व भी यह पूर्ण इकाई न था, यह विभिन्न भाषाओं व संस्कृतियों की खिचड़ी था। विभाजन के बाद हमें चाहिये था कि हम इस प्रदेश का सांस्कृतिक निर्माण करें किन्तु जल्दी में नासमझी से हम ऐसा न कर सके। इस का ही यह परिणाम है कि वर्तमान पूर्वी पंजाब पहले पंजाब की तरह विभिन्न सम्प्रदायों, भाषाओं व संस्कृतियों का संघर्ष स्थल बना रह गया है। यह सत्य है कि हमारे देश के अन्य अनेक प्रान्त मद्रास, बम्बई व मध्य-प्रान्त भी इस संघर्ष के केन्द्र हैं किन्तु निकट भविष्य में ही उनका यह संघर्ष खतम होने वाला है। इन प्रान्तों के विभिन्न भाषा भाषी प्रदेशों को अपनी यथार्थ स्थिति का पता है और पिछले आन्दोलनों के फल स्वरूप उन के इस प्रकार के विभाजन का भी निश्चय हो गया है कि जिससे वे प्रान्त विभक्त होकर एक भाषा व एक संस्कृति के केन्द्र रह सकें। हमारी सदा इच्छा रही है कि पंजाब का भी भाषा व संस्कृति की दृष्टि से पुनर्निर्माण होना चाहिये। यदि ऐसा न हुआ तो उस प्रदेश के पचास साठ लाख हिन्दी भाषा भाषी लोग अपना अस्तित्व खो बैठेंगे।

दो भाषायें

वर्तमान पूर्वी पंजाब में कुल समा तेरह जिले हैं। इन में से अम्बाला, शिमला, करनाल, रोहतक, गुड़गांवा व हिसार नाम के ६ जिले मुख्यतः हिन्दी भाषा भाषी हैं। केवल हिसार के कुछ हिस्से एवं अम्बाला की खरड़ व रोपड़ तहसीलों में पंजाबी भाषा बोली जाती है। हिमालय में अवस्थित कांगड़ा जिला भी पंजाबी नहीं बोलता, वहां के निवासी जो पहाड़ी भाषा बोलते हैं उसका सम्बंध पंजाबी की अपेक्षा हिन्दी के अधिक निकट का है, अतः वह जिला भी पंजाबी भाषी नहीं है यह स्पष्ट है। शेष ६ जिले फिरोजपुर, लुधियाना, जालन्धर, हुशियारपुर, गुरुदासपुर व अमृतसर पूर्णतः पंजाबी भाषा के उपासक हैं। हां, फिरोजपुर के पर्याप्त प्रदेश में हिन्दी भाषा की प्रबाधगति है और वह वहां आज भी राजस्थानी के सम्पर्क से खूब प्रचलित है। इस प्रकार [illegible]

पंजाबी व हिन्दी भाषाओं में समानतः विभक्त है, यह मानी हुई बात है। संख्या की दृष्टि से तब भी शायद हमें इन दोनों भाषाओं में अधिक भेद न लगे यद्यपि इस में पंजाबी भाषा का प्रबलता है। इस भेद का कारण यह है कि हिन्दी भाषा भाषी जिलों की अपेक्षा पंजाबी भाषा भाषी जिले अधिक उन्नत हैं और अधिक घने आबाद हैं। भला हिसार का उजड़ा व रेगिस्तान जिला अमृतसर व गुरुदासपुर के से हरे भरे और नहरों से सिंचित जिलों से कोई मुकाबला कर सकता है? आबादी की दृष्टि से अम्बाला कमिश्नरी के लोग पचास लाख हैं और जालन्धर कमिश्नरी के पचहत्तर लाख। इन में से कांगड़ा जिले के नौ लाख जन निकाल दिये जायें तो पंजाबी भाषा भाषी ६६ लाख रह जाते हैं और हिन्दी भाषा भाषी ५६ लाख हो जाते हैं। रोपड़ खरड़ व सरसा तहसीलों के परिवर्तन से यह संख्या यथार्थ में सत्तर व पचपन होनी चाहिये। इस प्रकार वर्तमान पूर्वी पंजाब में पंजाबी भाषा भाषी जनता ७० लाख व हिन्दी भाषा भाषी जनता केवल ५५ लाख है यह हमें जान पड़ता है। जनसंख्या में कम होते हुए भी हिन्दी को इस प्रान्त में एक लाभ यह है कि पंजाबी जिलों के हिन्दू पंजाबी की अपेक्षा हिन्दी को अधिक महत्व देते हैं अतः ये दोनों भाषायें इस प्रान्त में समान दशा में आजाती हैं। यह होते हुए भी हमारी यह धारणा है कि वर्तमान पूर्वी पंजाब का पुन विभाजन होना चाहिये और उस के हिन्दी भाषा भाषी जिले उस से पृथक् कर दिये जाने चाहियें। यह हम जानते हैं कि योरप में एवं दुनिया के अनेक अन्य भागों में भी ऐसे देश हैं जिनकी भाषा एक नहीं अनेक हैं और वे फिर भी संयुक्त बने हुए हैं। इस दृष्टि से पूर्वी पंजाब भी एक बना रहे ऐसी हमारी इच्छा होनी चाहिये किन्तु यह होते हुए भी हम हिन्दू व हिन्दी हित की दृष्टि से इस का विभाजन चाहते हैं। इस चाह में मुख्य कारण है वहां का वातावरण। देश के विभाजन से मुस्लिम सम्प्रदाय की संकीर्णता यहां से हट गयी है इससे सब को प्रसन्नता है किन्तु वर्तमान देश के पश्चिमी छोर में एक अन्य संकीर्णता विद्यमान है जिसका हल हमें सोचना होगा। यह संकीर्णता है सिक्खों की, वे प्राणपण से अपनी संस्कृति व भाषा की रक्षा को तुले हुए हैं। उनका ख्याल है कि वर्तमान पूर्वी पंजाब की अदालती भाषा दो न होकर केवल एक होनी चाहिये और वह भी केवल पंजाबी। इस ख्याल में वे सिख यथार्थता को भी भूल जाते हैं और अम्बाला, शिमला, करनाल व हिसार जिलों को भी पंजाबी भाषा के जिले करार देते हैं। इस विचार के सिख पूर्वी पंजाब के केवल दो जिलों रोहतक व गुड़गांवा में हिन्दी का अस्तित्व स्वीकार करते हैं और चाहते हैं कि इन दो जिलों को पृथक् करके शेष पंजाब में पंजाबी भाषा का अविच्छिन्न राज्य कायम किया जाये। हमारा वैयक्तिक अनुभव है कि संकीर्ण विचार के मुसलमान को मनाया जा सकता है। देश विभाजन से हिन्दू व मुसलमानों को राज्य मिल गया है, अब पूर्वी पंजाब में सिखों को राज्य मिलना चाहिये यह सोचने वाले सिखों से हिन्दी भाषा की रक्षा का एक ही इलाज है और वह है प्रान्त के पुनः विभाजन का।

प्रान्त का विभाजन

पूर्वी पंजाब पहले ही छोटा है, दुबारा बट कर यह और छोटा हो जायेगा यह सोचने वाले यथार्थता से अलग रहना चाहते हैं। आज का आसाम केवल सत्तर लाख आबादी का प्रान्त है। रियासतों के विभाजन से पूर्व उड़ीसा भी अस्सी लाख आबादी का प्रान्त था। यहीं क्यों? भाषाओं के आधार पर बनने वाले कर्नाटक व केरल की आबादी भी पचास साठ लाख से अधिक नहीं पहुंचेगी। फिर यदि सत्तर लाख आबादी का पंजाब पृथक् प्रान्त बन जाये तो हमें हानि ही क्या है? इससे पंजाबी भाषा भाषी प्रदेश अपना स्वतन्त्र विकास कर सकेगा, सिख व हिन्दू बराबर२ रहेंगे तो सिखों को भी अल्पसंख्यक होने की चिन्ता न रहेगी और हिन्दी भाषा प्रदेश एक विचित्र मायाजाल से निकल कर अपनी स्वतन्त्र सत्ता बना सकेगा। हमारा विश्वास है कि पिछले नये साल के गठबन्धन ने पंजाब में हिन्दी भाषा को यथेष्ट हानि पहुंचायी है। यदि अम्बाला कमिश्नरी व उसके पड़ोस का प्रदेश पंजाब से न मिलाया [illegible] उसके अनेक भागों में अब जो पंजाबी भाषा पहुंच गयी है वह न पहुंचती। हमारा ख्याल तो यह भी है कि यदि यह प्रदेश अब भी पंजाब से मिला रहा तो रहे सहे हिन्दी प्रदेश में भी काट छांट हो जायेगी और उसमें हिन्दी के स्थान पर पंजाबी भाषा का बोलबाला हो जायेगा। पंजाबी भाषा भाषी प्रदेश अभी अधिक बढ़ेगा इसका एक कारण यह भी है कि देश की विभिन्न रियासतों की भांति पंजाब की रियासतों की भी स्वतन्त्र सत्ता समाप्त होनी है। इसमें अधिकांश की भाषा पंजाबी है और शासक हैं सिख। स्पष्ट है कि इन रियासतों का मिलान पंजाब में होगा। और तब एक करोड़ से अधिक आबादी का पूर्वी पंजाब एक पृथक् इकाई के रूप में अपना पूर्ण विकास कर सकेगा। भाषा व संस्कृति की रक्षा के साथ२ पूर्वी पंजाब के विभाजन का लाभ यह भी होगा कि हमारे देश की पश्चिमी सीमा के निकट में एक योद्धा व वीर सिख सम्प्रदाय अपना स्वतन्त्र विकास कर सकेगा और हमारा साथी बन कर हमारे देश का अग्ररक्षक बन सकेगा। वर्तमान पूर्वी पंजाब में हिन्दू सिखों किंवा पंजाबी व हिन्दी का संघर्ष अनिवार्य है। विभिन्न भाषाओं व संस्कृतियों में संघर्ष

[शेष पृष्ठ १७ पर

आपके स्वाध्याय के लिए उपयोगी पुस्तकें

आहार—हिन्दी में आहार-विज्ञान पर लिखी हुई अपूर्व पुस्तक। मूल्य ५)

वैदिक ब्रह्मचर्य गीत—आध्यात्मिक ज्ञान के पिपासुओं के लिए तपस्वी अभयदेव जी लिखित वेद के ब्रह्मचर्य सूक्त का सुन्दर स्पष्टीकरण। मूल्य २)

बृहत्तर भारत—विदेशों में भारतीय संस्कृति के संस्थापकों की विस्तृत गौरव गाथा। मूल्य ७)

विज्ञान प्रवेशिका—मिडिल स्कूलों के लिए हिन्दी में लिखी गई विज्ञान शिक्षा की अति सरल पाठ्य पुस्तक। दोनों भागों का मूल्य २॥)

वैदिक-विनय (तीन भाग)	५)
भारत का इतिहास (तीन खंड)	७)
ब्राह्मण की गौ	॥)
सन्ध्यासुमन	१।)
वरुण की नौका (दो भाग)	६)
वेद गीताञ्जलि	२)
तुलसी	२)
लहसुन प्याज	२॥)
आत्म मीमांसा	२)
अथर्व वेदीय मन्त्र विद्या	१॥)
देहाती इलाज	१)
सोम सरोवर	१॥)
वैदिक उपदेश माला	।—)

पता—प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

राष्ट्र का यह सजग सेनानी ! — पटेल

[श्री सत्यकाम]

राष्ट्रपिता और विश्व के पूज्य महामानव महात्मा गांधी के प्रयाण पर राष्ट्र को जो धक्का पहुंचा है, तब बात राष्ट्र की गति उससे लड़खड़ा कर भी सम्भल चुकी है — ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है। देश के अपार संकट और गहरे धक्कों के बावजूद आज का भारत सबल है, सशक्त है और वह आगे बढ़ रहा है। 'पुरवा झंझा का प्रबल वेग' और बढ़ रहे 'प्रशान्त का तूफान' उसे न झुका सकेंगे, न डुबा सकेंगे, क्योंकि उसके कदमों में गति है, प्राणों में स्थिरता है और गति में धीरता है। इसका श्रेय यों तो देश के प्राय सभी अन्य नेताओं को है, किन्तु सर्वाधिक श्रेय है सरदार पटेल को।

खादी की मोटी धोती, सफेद गलफर घुटनों तक की कमीज और गले में तह किया हुआ लटकता दुपट्टा ये सब एक मझोले कद और औसत गठन वाले गेहुए बदन पर चमकते हुए भले प्रतीत होते हैं। पैर की गुजराती चप्पल उनके तलवों को सहलाता अच्छी लगती है। उनका उमर के साथ साथ बढ़ते अनुभव को बताने वाले सिर के सफेद बाल उनकी मुस्कान को सजाते से प्रतीत होते हैं। सभा में सदा सतेज और साथी उनकी नजर जब किसी में प्रतिरोध का सामर्थ्य नहीं पाती, तब अकेले में और अजाने में उनकी मन्द मन्द गति के समय अनायास झुक जाती है, मानो प्रत्येक कदम को रखने से पहले उसकी विवेचना पटेल के जीवन का क्रम बन चुका हो। और सच, शब्दों में कंजूस, सौदे में सगेरिया और काम का धनी पटेल जब आज गृह मन्त्री की गद्दी पर है, तब लगता है 'चाणक्य' एक कहानी का पात्र ही केवल नहीं रहा होगा। विश्वास होता है कि नपोलियन ने यह अवश्य कहा होगा — "असम्भव' शब्द शब्दकोशों से निकाल देना चाहिए।' और लगता है कि लेनिन का उत्तराधिकारी स्टालिन वस्तुत रूसी जनता का देवता है। उसके लिए — 'जिन्दाबाद' — वह अमर रहें।

गुजरात की देन

गुजरात 'सौराष्ट्र' के रूप में आज जन्मा है, किन्तु उसकी सत्ता बोलचाल में बहुत पहले से है। पिछले युग की तो नहीं, पर हां वर्तमान युग की बात है कि राष्ट्र के संकटकालीन अवसरों पर पिछली सदी में उसने इस राष्ट्र को समय समय पर तीन अमरसी दिये। एक था किन्तु शाखाएं फिर अलग अलग भारत, भारती व भारतीयता के प्रथम उद्घोषक आजन्म ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द की जन्मस्थली यही "सौराष्ट्र' है, जिसकी सुरभि ने पददलित भारत को छिपी महक से अकस्मात् ही एक बार विश्व को विचलित कर दिया। चरखा खादी और अहिंसा के प्रचारक के रूप में बुद्ध भगवान् ने जब पुण्यस्थली सौराष्ट्र से पुन जन्म लिया तो सत्य और शान्ति के उस पुजारी को विश्व ने न जाने क्यों गीता का दूसरा मोहन मान लिया। वह तो विश्व का वन्द्य बापू था, जन जन के प्राणों की साध और चाह बन चुका था। और उसी के पुनीत रथ के एक कोने में वह जो चाणक्य सा दृढ़ चाणाक्ष, किन्तु मोहन के प्रभाव से विनोदी और स्पष्टवक्ता बैठा धीर गम्भीर सा कुछ सोच रहा था, उसे आज बापू के वियोग में और उनके रहते भी जन मन की अभिलाषाओं का रूप और काल की भांति कठोर भारत का स्टालिन या लौहपुरुष कहा जाता है। और सच, वह फौलादी है, लौह-पुरुष है देह से नहीं, कर्म से, मन से और वचन से।

बारदोली : एक कहानी

बारदोली—सूरत जिले का एक छोटा सा ताल्लुका, किसानों की आबादी, कड़ी मेहनत और सूखी रोटी, साम्राज्यवादी शोषण का अभिशाप, किन्तु युग युग की दासता का विद्रोही — जब तक अस्तित्व में है तब तक अतीत की अनेक स्मृतियां व पूंजी उसके साथ हैं। धूप, वर्षा और सर्दी की परवाह न कर दिन रात कड़ी मेहनत करने वाले किसान —जिनके झोंपड़ों में झंझा का वेग सहने की ताकत नहीं, जिनके शरीर में अधिक खिंचने की सामर्थ्य नहीं, जिनके मन में और बुद्धि में प्रतिरोधी विकास की सम्भावना नहीं, जिनकी रोटी भगवान् के दिए मिट्टी और पानी पर निर्भर है और जिनकी श्वासें हांफते बैलों के नथुनों

१५ अगस्त के बाद

भारत में ५६३ रियासतें थीं। इसके अतिरिक्त सैंकड़ों अन्य अर्धशासित जागीरों व भागों का एक पृथक और स्वतन्त्र अस्तित्व था। ३७२ रियासतें व जागीरें विविध प्रान्तों में लय होगई है, या उनका शासन केन्द्र के आधीन होगया है। इन का कुल क्षेत्रफल १,०३ ९६९ वर्गमील, आबादी १२९ ६३ लाख और आय ६२४-४६ लाख रुपया है। ४६७ रियासतों और जागीरों ने परस्पर मिल कर चार समूह बना लिए हैं — सौराष्ट्र, मत्स्य, राजस्थान और विन्ध्य प्रदेश। इन चारों संघों का कुल क्षेत्रफल ८२,९४० वर्गमील, आबादी १०९ ५० लाख और आय १४१७ ७५ लाख रुपया है।

यह सब रियासती सचिवालय की देन है, जिसके प्रधान सरदार पटेल हैं।

की राह निकलती है — उनकी गरम २ उसांसें कभी ऐसा भी रूप धारण कर सकेंगी कि अत्याचारों की प्रतिमूर्ति इस विदेशी सरकार को दग्ध कर सकें, उनके कृश तन और मन मिल कर कभी इतनी भी सामर्थ्य धारण कर सकेंगे कि प्रहार करने वाली सर्वसाधन सम्पन्न सरकार स्वय आहत हो जाय और वे स्वयं अत्याचारों के प्रश्न पर रोजी के एक मात्र साधन — जमीन — तक के छिन जाने की परवाह न करेंगे — इन सब स्वप्नमय विचारों को जिसने विश्वकर्मा की भांति वस्तुओं से मूर्त रूप दिया, सन् १९२८

धारावाहिक उपन्यास —

* आत्म-बलिदान *

श्री 'देव'

[गतांक से आगे]

(७)
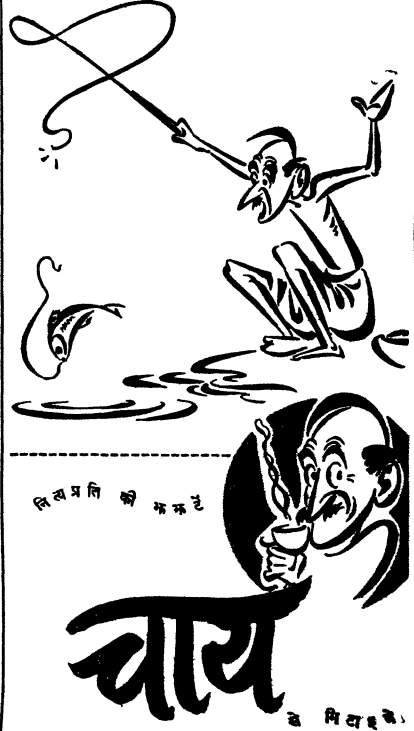
जब तक सरला चारपाई पर पड़ी रही, तब तक तो कोई विशेष चर्चा नहीं चली। जब सरला चलने फिरने और कुछ काम-काज करने लगी, तो एक दिन चर्चा चल गयी। उस दिन रामनाथ कांग्रेस की सभा में शामिल होने के लिये पटना गया हुआ था और रमा रिश्तेदारी की शादी से निवृत्त होकर वेलूर आयी हुई थी। दोपहर के समय घर के काम-काज से निवृत्त होकर तीनों जनी चौक में पीढ़ियों पर बैठी चर्खा कात रहीं थीं। रमा ने श्रीगणेश किया। उसने चम्पा से कहा —

'जीजी, अब तो सरला चंगी हो गयी, वह बात शुरू करो न।'

'कौन-सी बात?' चम्पा ने आश्चर्य से पूछा।

रमा ने उत्तर दिया — 'उस दिन जब हम लोग किशोरी की शादी में जा रहे थे और मैंने तुम से पूछा था कि सरला की शादी कब तक करोगी तो तुमने उत्तर दिया था कि अभी तो सरला चारपाई पर पड़ी है, जब राजी हो जायेगी, तब उससे पूछेंगे। अब तो तुम्हारी लड़की ईश्वर की कृपा से अच्छी हो गयी, अब पूछो न!

चम्पा ने सरला की ओर देखकर कहा — 'सुन रही है बिटिया, तेरी चाची पूछ रही है। बता, अब भी विवाह पर हामी भरेगी या मेरी किश्ती को मंझधार में ही पड़ा रहने देगी।'

सरला विवाह की बातचीत आरम्भ होने पर प्रायः उद्विग्न हो जाती थी। परन्तु आज प्रतीत होता है कि वह पहले से ही ऐसी चर्चा की आशङ्का कर रही थी, इस कारण इतनी नहीं घबरायी, जितनी अकस्मात् किसी अप्रिय प्रसङ्ग के आरम्भ हो जाने पर घबरा जाती। बीमारी के दिनों में वह दो चीजों को देखती और अनुभव करती रही। पहली चीज थी — रामनाथ द्वारा खूब लग कर परिचर्या और दूसरी थी, रामनाथ के लिये चम्पा की स्नेह भावना। सरला इन दोनों वस्तुओं को देखकर मन ही मन में यह अनुमान लगा रही थी कि एक न एक दिन भावनाओं की यह क्रिया-प्रतिक्रिया विवाह-प्रस्ताव के रूप में सामने आयेगी। जब वह आ गयी तब सरला पहले की भांति अधिक उद्विग्न नहीं हुई।

भाभी, क्या तुम समझती हो कि मेरा विवाह करना आवश्यक है? क्या मैं इसी तरह जन्म भर तुम्हारी सेवा नहीं कर सकती?

चम्पा ने उत्तर दिया — 'नहीं सरला, यह नहीं हो सकता लड़कियां पराया धन हैं। पराये धन को ४ अवधि बीत जाने पर घर में रखने से पाप लगता है। रही मेरी सेवा की बात। मैं ऐसी स्वार्थी नहीं बनना चाहती। मैं अपने सुख की खातिर तेरे जीवन को बरबाद करूं और यह भी तो जरूरी नहीं कि विवाह के पीछे तुम लोग मेरी देख भाल न कर सको। यदि मेरे भाग्यों में सुख होगा तो तेरी शादी से मुझे एक ऐसा बेटा मिल जायेगा, जो मुझे इस जमींदारी के प्रबन्ध में मेरा हाथ बटा सके। मैं इस माया जाल में कब तक फंसी रहूंगी। मुन्ना अभी बहुत छोटा है, उसके बड़ा होने तक इस बोझ को उठाने वाला भी तो कोई चाहिये और . । क्या है? सारी बिरादरी में खाक सी उड़ रही है कि लड़की सयानी हो गयी, तो भी उसकी शादी नहीं होती। इस में कोई न कोई बुराई की बात ही कारण है। कोई बम्बई की बातें सुनाता है तो कोई कैलाश की चर्चा करता है। तुझे घर में बैठे पता नहीं कि दुनिया क्या क्या कहता है।'

सरला के धैर्य का बांध तो पहिले ही टूट रहा था, रमा के तीखे वाक्यों के गोलों ने तो उसे बिल्कुल ही चकनाचूर कर दिया। चर्खा हाथ से छूट गया और जल प्रवाह आखों के रास्ते से बहने लगा। वह निराश्रय-सी होकर अपील के तौर पर कहने लगी—

क्यों भाभी! क्या तुम भी वैसा ही समझती हो जैसा चाची ने कहा है?

यों तो चम्पा का नर्म दिल लड़की के आसू देख कर पिघल रहा था, परन्तु

> बेलूर में जमींदार गोपालकृष्ण अपनी दो पत्नियों — चम्पा व रमा और अपनी युवती पुत्री सरला के साथ रहते थे। सरला की इच्छा अविवाहित रहने की थी। लम्बी बीमारी के बाद गोपालकृष्ण का देहांत हो गया और चम्पा ने जमींदारी का काम संभाल लिया।
>
> चम्पा के जमींदारी संभालने और माधवकृष्ण के उसमें सहयोग देने से उसके बड़े भाई राधाकृष्ण की स्त्री देवकी बहुत जलने लगी थी। उसने अपने भोले पति को जायदाद के बंटवारे पर सहमत कर लिया। बंटवारे से ही सन्तुष्ट न होकर देवकी ने चम्पा और सरला को उड़ाने का षड़यन्त्र किया और इसके लिए वैदेहीशरण और कैलाश को नियुक्त किया। बिहार भूकम्प के बाद सेवा के लिए आया हुआ रामनाथ चम्पा के परिवार से बहुत हिल मिल गया था। उसकी अनुपस्थिति में ही इस षड़यन्त्र के अनुसार कार्य करने का निश्चय किया गया। बिसरामपुर की दुर्घटना के पश्चात् —

सरला ने बात काटते हुए कहा— 'भाभी तुम ऐसा क्यों कहती हो, चाचा जी तो सब कुछ सम्भाल ही रहे हैं।

रमा बोली — 'नहीं सरले, वह उनके बस का काम नहीं, उन्होंने अपनी सेहत, अपने बड़े भाई की सेवा में खो दी। कोई तनखादार नौकर भी वैसी सेवा नहीं कर सकता जैसी तेरे चाचा ने अपने बड़े भाई की है। न दिन देखा और न रात। नतीजा यह निकला कि अपना कुछ न बनाया, सेहत बिल्कुल खराब कर ली। अब तो उनका शरीर रोगों का घर बन गया है। (यह कहते कहते रमा का गला रुंध गया और आखों से आसू निकल आये। थोड़ी देर रुक कर फिर कहने लगी) इतनी खिदमत करा कर इन लोगों ने यह इनाम दिया कि मक्खन में से बाल की तरह निकाल कर बाहिर फेंक दिया। उनकी सेहत तो अब अपना काम देखने लायक भी नहीं रही। मैं तो रात दिन इस चिन्ता में घुली जाती हूं और देख सरलो, इस तरह टालने से काम नहीं चलेगा। तेरी मा को सभी ने दुःख दिया है, अब तू भी उसे दुख दे रही है।

मैं, भाभी को दुःख दे रही हूं, यह तुमने कैसे कहा चाची, सरला बोली।

रमा ने तीखे स्वर दिया—'मैंने बिल्कुल ठीक कहा है, तू बार बार विवाह से इन्कार करके अपनी मा को दुखी कर रही है। क्या तुम लोगों की किताबों में यही लिखा होता है कि मा बाप का कहा मत मानो, शादी मत करो और जन्म-भर कुंवारे रह कर घरभर की मुसीबत और बदनामी का कारण बनो।'

रमा के तीखे स्वर से सरला का प्रयत्न पूर्वक बांधा हुआ धैर्य का बांध टूटने लगा वह आखों में आसू भर कर बोली—'मैंने कुल की बदनामी का क्या काम किया है चाची?'

रमा —'बदनामी नहीं तो और अब उसके मन में भी यह निश्चय सा हो रहा था कि अब सरला की शादी होनी ही चाहिये। उसने अपने स्वर को यत्नपूर्वक दृढ़ करते हुए कहा—'देख सरला! तू अब बहुत सयानी हो गयी। तुझे कुंवारी देख कर मैं बहुत दुःखी रहती हूं और लोग भी तरह-तरह की बातें कहते हैं। मैं जानती हूं कि वह जो बातें कहते हैं, सब झूठ है, परन्तु किसी की जुबान तो नहीं पकड़ी जा सकती। तेरी शादी हो जाय तो उन सब के मुंह पर खाक पड़ जाय और मेरे शरीर का भी क्या पता, न जाने पिंजरे में से पखेरू कब उड़ जाय। मुझे यह चिन्ता खाये जा रही है कि मेरे पीछे तेरा क्या होगा।' यह कहते-कहते चम्पा का गला भर गया।

सरला पूरी तरह परास्त हो गई। बरसों से पकाया हुआ विवाह न करने का संकल्प रमा के दिये हुए झकझोरे और चम्पा के दुःख भरे शब्दों के सामने खड़ा न रह सका। वह रोता हुई बोली— मैं बड़ी ही पापिन हूं भाभी कि तुम्हें रात-दिन कष्ट दिया करती हूं। मैं सच कहती हूं, मैं तुम्हें जरा-सा भी क्लेश नहीं देना चाहती। अब मैं इस विषय में कुछ न कहूंगी जिसमें तुम्हें प्रसन्नता हो, वैसा करो।

चम्पा प्रसन्न होकर बोली — तो तू शादी करने के लिए राजी है न?"

"मैं तो कह चुकी कि मैं अब इस विषय में कुछ न कहूंगी जो चाची और तुम ठीक समझो और जिसमें तुम्हें प्रसन्नता हो, वही करो। मुझ से कुछ मत पूछो।' — सरला ने उत्तर दिया।

चम्पा ने कहा — "तू बड़ी अच्छी है सरला, फिर भी ………. ……

रमा ने बात काटते हुए कहा—"जीजी तुम्हारी यह 'फिर भी' 'तो भी' ही तो खराब है। जब सरला ने एक बार कह दिया कि जैसा तुम लोग ठीक समझो, करो। तो फिर आगे खोद खोद कर पूछने और नहीं कहलवाने में तुम्हें क्या मजा आता है। बिटिया बेचारी ने तो अब तक निश्चय तुम पर छोड़ दिया है। अब तुम्हें चाहिये कि शादी की तैयारी करो।

(क्रमशः)

सनद हासिल करो

डाक्टरी वैद्यक और हिकमत की सनद घर बैठे मगवा कर प्रैकटिस करें। नियमावली मुफ्त।

डाक्टर शिवचरणदास
फतेहाबाद (हिसार)

देहली प्रान्त के सोल एजेन्ट—रमेश एण्ड को०, चान्दनीचौक, देहली।
अजमेर—नवज्योति जनरल स्टोर बड़े डाकखाने के सामने।
मध्यभारत के सोल एजेन्ट—वृहद औषध भण्डार, १६ जेल रोड, इन्दौर।
मुजफ्फरनगर—चैतन्य औषधालय, नई मण्डी।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार)।

५००) मुफ्त इनाम

अमले मुहब्बत शौकीन हमारा असली जादू की तावीज मंगाये, इसको अपने पास रखकर अपने दिल में जिस किसी का नाम लेंगे वह कितना ही पत्थर दिल मगरूर और सख्त दिमाग क्यों न हो, चाहे कहीं भी होगा। आपको मिलने के लिये तड़पने लगेगा। और जब भी आप उसके सामने जायेंगे। वह आप से मुहब्बत प्रगट करेगा, खोये हुए का पता लगाना, किसी के दिल का भेद मालूम करना, मुरदा रूहों से बात करना, गर्ज यह है कि आपका हर सवाल का जवाब मिल जायगा। और आपके दिल में जो इच्छा है जो बार बार कोशिश करने पर भी पूरी नहीं हुई, वह भी हमारे असली जादू तावीज के पास रखने से गिनती के दिनों में पूरी हो जायगी। कीमत प्रति तावीज २) तीन तावीज की कीमत ५) डाक खर्च माफ। हमारे तावीज से अच्छा कोई तावीज नहीं, गलत साबित करने वाले को ५००) नकद इनाम दिया जायगा।

मिलने का पता :— **मोहिनी भंडार** रजिस्टर्ड (A B D) देहली।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट.—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिल्कुल माफ, और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवेल्टी स्टोर्स (V. A D.) पो० ब० नं० ४५ दिल्ली।
General Novelty Stores (V. A. D.) P. B. 45, Delhi

मिर्गी

का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता — एच० एम० आर० रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तुहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता उनको लम्बे, घूंघर वाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायत कीमत ६॥) रु० इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फन्सी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्डन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है। तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ म्यूट घड़िया व ४ अंगूठिया (लन्डन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं।

बाल उमर भर नहीं उगते!

हमारी प्रसिद्ध दवाई 'जोहरे हुसन रजिस्टर्ड' के इस्तेमाल से हर जगह के बाल बगैर किसी तकलीफ के हमेशा के लिये दूर हो जाते हैं और फिर जीवन भर दोबारा उस जगह बाल कभी पैदा नहीं होते जगह रेशम की तरह मुलायम नरम और खूबसूरत हो जाती है। कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स ६॥) रु० इस दवाई को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्ट वाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्डन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती हैं। तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और ४ घड़िया व ४ अंगूठिया बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं।

नोट— माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है। शीघ्र मंगा लें क्योंकि ऐसा समय बार बार हाथ नहीं आयेगा।

लंडन कमरशियल कम्पनी (AWD) बागरामानन्द, अमृतसर।

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम ३) डाक खर्च पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

इसको रखने के लिए लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं हर घर में होना चाहिए
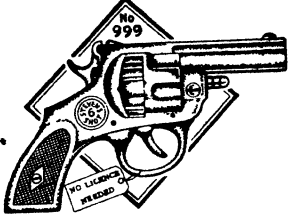
सब से अच्छा निराला और आखिरी माडल • पचास व ६ फायर वाले

अमरीकन पिस्तौल

जान व माल की रक्षा के लिये इससे अच्छी कोई चीज नहीं। यह माल असली की मानिन्द अब पहली बार आया है।

मूल्य ६ फायर वाले शाट के साथ माडल डी० नं० १, ४॥।=), माडल डी० नं० २, ५॥।=), स्पेशल माडल डी० नं० २, ७॥।=) नम्बर २० फायर वाले शाट के साथ नया माडल डी० नं० १, ८॥।=), स्पेशल माडल डी० नं० २, १०॥।=). फालतू शाट १) दर्जन, पिस्तौल का तेल ॥।), चमड़े की पेटी २) डाक खर्च अलग।
तीन एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ

INTERNATIO 'AL IMPOR ERS, P B 45, (V.A.D.) Delhi
इण्टर नेशनल इम्पोर्टर्स, पो० बाक्स ४५, (V.A.D.) दिल्ली।

वैदेशिक प्रचार के पुनर्गठन की आवश्यकता

[श्री विजयकुमार मिश्र]

संसार के प्रत्येक उन्नत राष्ट्र में वैदेशिक प्रचार का विशेष ध्यान दिया जाता है। यह प्रचार विश्व के राष्ट्रों में अपने सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास का प्रदर्शन करके उन राष्ट्रों की सद्भावना प्राप्त करने, उनसे मैत्री सम्पर्क बढ़ाने तथा उनसे विस्तृत वाणिज्य सम्बन्ध स्थापित करने के उद्देश्य से किया जाता है। इसलिये प्रत्येक आधुनिक शासन अपने सूचना अथवा प्रचार विभाग की वैदेशिक शाखा को अत्यधिक महत्त्व देता है, स्वदेश में किये जाने वाले प्रचार से भी अधिक।

दुर्भाग्यवश भारत ने इस दिशा में कोई प्रगति नहीं की है। इसका एक कारण तो यह था कि अभी तक यहां एक विदेशी शक्ति का शासन था, जिसने जनता की राष्ट्रीय मनोभिलाषाओं के दमन में ही रुचि रखी और इसी कारण राष्ट्र विरोधी प्रचार की ही ओर उसका ध्यान अधिक रहा। विदेशी शासन के कारण राष्ट्र के राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन में अभावों का जो जमघट था, उसने भी वैदेशिक प्रचार में बाधा डाली।

किन्तु यह अभाव कृत्रिम था, इसी लिये अस्तित्व स्थायी न हुआ और यद्यपि विदेशी शासक भारतीय गौरव की गाथाओं को विदेशों तक जाने से रोकने का प्रयत्न करते रहे, किन्तु वे सफल नहीं हुये। इसका सर्वप्रमुख कारण यह था कि भारत अनादि काल से संसार के सुसभ्यतम और संस्कृतिपूर्ण राष्ट्रों में अग्रगण्य रहा है और इस का प्रचार विदेशों में भारतीयों ने नहीं स्वयं विदेशियों ने ही किया, जो यहां आये और यहां के जीवन, यहां की संस्कृति, यहां के धर्म तथा यहां के निवासियों के नैतिक आचरण से प्रभावित हुये। ह्युयेनत्सांग, फाहियान, निकोलो कोन्ताई, मार्को पोलो तथा टेवर्नियर आदि पर्यटकों ने भारत की महिमा पर अत्यन्त प्रशंसापूर्ण विवरण लिखे हैं। मैक्समूलर, रोमां रोलां, मैडम ब्लैवेट्स्की और डा० एनी बेसेन्ट प्रभृति विदेशी मनीषियों और लेखकों ने भारतीय संस्कृति की महत्ता पश्चिम को समझाई। हाल ही में एक समाचार यह छपा था कि सोवियत् रूस की सरकार ने महाभारत का रूसी भाषा में अनुवाद किये जाने की सरकारी व्यवस्था की है। इस प्रकार अपने देश के इतिहास में अपने विदेशी प्रशंसकों की एक लम्बी शृंखला पाते हैं, जो हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता और हमारे साहित्य के अमृत को पीकर छकते छकते भी नहीं अघाये।

केवल मात्र विदेशियों ने ही नहीं, हमारे अपने बन्धुओं ने भी स्वदेश के गौरव को विदेशों में बढ़ाया। इनमें राजा राममनोहर राय सर्वप्रथम थे। उनके पश्चात् स्वामी विवेकानन्द ने यूरोप और अमेरिका में अपने आध्यात्मिक भाषणों से स्वदेश के गौरव को आदर के शिखर पर पहुंचा दिया। डा० राधाकृष्णन जैसे विचारकों और डा० चन्द्रशेखर वेंकटरमण आदि वैज्ञानिकों ने भी विदेशों में स्वदेश का नाम किया। स्व० कवि रवीन्द्रनाथ ने भी विदेशों में भारत का गौरव बढ़ाया और महात्मा गांधी ने तो अपनी मातृभूमि को विश्व का नेतृत्व करने की ही स्थिति में ला दिया। परन्तु यह कोई सुगठित प्रचार योजना के कारण नहीं, बल्कि इन महामान्यों की व्यक्तिगत ख्याति के कारण हुआ।

स्वदेश के सम्बन्ध में विदेशों में समुचित प्रचार की आवश्यकता का अनुभव सर्वप्रथम स्व० श्री विट्ठलभाई झवेरभाई पटेल ने किया, जिन्होंने श्री सुभाषचन्द्र बोस के साथ मिल कर इस सम्बन्ध में एक विस्तृत योजना बनाई और इसके लिये एक कोष संग्रहीत किया। उन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति इसके लिये दान कर दी और श्री सुभाषचन्द्र बोस को उसका ट्रस्टी बनाया। किन्तु सरदार वल्लभभाई पटेल ने इस सम्पत्ति को देने से इनकार कर दिया। ट्रस्ट की ओर से श्री सुभाष बोस ने सरदार के विरुद्ध दावा किया। सरदार ने सिद्ध कर दिया कि सम्पत्ति उनके संयुक्त परिवार की थी और स्व० श्री विट्ठलभाई पटेल को उसे दान करने का अधिकार न था। अतएव यह सम्पत्ति ट्रस्ट को न मिल सकी और वह अपनी शैशवावस्था में ही समाप्त हो गया।

भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष काल में उसका विवरण विदेशों में बहुत कम प्रचारित हुआ। केवल कभी कभी कुछ नेताओं ने बाहर जाकर स्वदेश की स्वतन्त्रता की लड़ाई के सम्बन्ध में कुछ प्रचार किया। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, डा० हरदयाल, नाग आदि के नाम इस दिशा में उल्लेखनीय हैं, किन्तु इनके प्रयत्न भी बहुत सीमित ही रहे। कांग्रेस ने भी देश की प्रतिनिधि संस्था बन चुकने के बाद भी वैदेशिक प्रचार का कोई विशेष प्रबन्ध नहीं किया। पं० जवाहरलाल नेहरू जब कांग्रेस के अध्यक्ष हुये, तो प्रथम बार उन्होंने कांग्रेस के केन्द्रीय कार्यालय में एक वैदेशिक सम्पर्क-शाखा स्थापित करने की व्यवस्था की। किन्तु १९३५ तक यह शाखा कुछ अधिक सुसंगठित रूप में न आ सकी। परन्तु इसके बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में विदेशी सम्पर्क की शाखा को प्रशंसनीय ढंग से संघटित किया गया, यद्यपि इतने वृहत् कार्य के अनुरूप उसका संगठन न हो सका। परन्तु जापान पीड़ित चीन और फ्रैंको से प्रताड़ित स्पेन में प्रजापक्ष की ओर से भ्रमण करके पं० नेहरू ने विश्व के प्रजातन्त्रवादियों के हृदयों में भारत के लिए सम्मानजनक स्थान अर्जित किया, और जब उन्होंने इन देशों के प्रजातन्त्र दलों की सहायतार्थ भारतीय कांग्रेस की ओर से डाक्टरी दल भेजे, तो यह सम्मान कृतज्ञता में बदल गया।

भारत के सम्बन्ध में विदेशों में सबसे अधिक प्रचार हुआ विगत महायुद्ध के समय। उस समय हमारे राष्ट्रीय मंच से प्रकट किये जाने वाले दृष्टिकोण को विश्व के समक्ष तोड़-मरोड़ कर तथा गलत तरीके पर रखने का ब्रिटिश सरकार ने भरसक प्रयत्न किया। उन्होंने हिन्दुओं की सामाजिक विषमता और साम्प्रदायिक द्वेष के अतिरंजित विवरण विदेशों में प्रचारित किये। इसके लिए वैतनिक प्रचारक रखे गये और उनकी पुस्तकें पेम्फलेट आदि लाखों की संख्या में छपवा कर वितरित किये गये। मजा यह कि इस सब का व्यय देना पड़ा भारतीय खजाने को।

यह प्रचार महाअसत्य, निराधार और कोरा काल्पनिक था। सामाजिक विषमताय न्यूनाधिक प्रत्येक राष्ट्र में हैं, किन्तु भारत की स्थिति पर तो कल्पना को भी मात करके विवरण लिखे गये। बीस बाईस वर्ष पूर्व इसी प्रकार के क्षुद्र प्रयास के लिए अंग्रेजों को मिस कैथरीन मेयो मिल गई थी, इस बार बेवर्ली निकोलस नामक एक भ्रष्ट पत्रकार मिल गया, जिसने मेयो की मदर 'इंडिया' से भी हीन एक पुस्तक 'वर्डिक्ट आन इंडिया' लिखी। यह पुस्तक लाखों की संख्या में ब्रिटिश तथा अमेरिकन जनता में वितरित की गई और इसमें भारतीयों, विशेषकर हिन्दुओं के विरुद्ध अत्यन्त घृणापूर्ण असत्य आरोप थे। किन्तु चांदी के टुकड़ों पर ईमान बेचने वाले पत्रकार गोरे ही नहीं कालों में भी हैं। टी० ए० रमन नामक एक भारतीय पत्रकार ने 'ह्वाट डज गांधी वान्ट' अर्थात् 'गांधी क्या चाहता है' नामक पुस्तक में स्वदेश की राजनीतिक आकांक्षाओं की खिल्ली उड़ाते हुये यह सिद्ध करने की चेष्टा की कि हम भारतीय अभी अत्यन्त क्षुद्र हैं और स्वतन्त्रता के योग्य नहीं तथा कुछ काल तक हमें ब्रिटिश शासन की आवश्यकता बनी रहेगी। रमन लंदन में 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का सम्वाददाता था और इस पत्र के सम्पादक संयोगवश महात्मा जी के पुत्र श्री देवदास गांधी हैं। अत-एव इससे ब्रिटिश और अमेरिकन जनता में भारत के सम्बन्ध में बड़ा भ्रम फैला। इससे कुछ दिन पूर्व ही यह व्यक्ति 'हिन्दुस्तान टाइम्स' से निकाल दिया गया था, किन्तु पुस्तक में छपने की तिथि कुछ पूर्व की डाल कर उसको 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का प्रतिनिधि बता कर विदेशी जनता को भ्रमित किया गया।

लार्ड लिनलिथगो के शासन-काल में गृहसदस्य मैक्सवेल सूचना-सचिव बोमैन तथा सूचना-संचालक हेनेसी ने अमेरिकन जनता में भारत विरोधी प्रचार की वृहद् योजना बनाई और इसके लिए जान हेनेसी को विशेष अधिकारी बना कर अमेरिका भेजा गया, जहां तत्कालीन भारतीय एजेण्ट जेनरल सर गिरिजाशंकर बाजपेयी की सहायता से उसने भारत के विरुद्ध अत्यन्त कलुषतापूर्ण प्रचार किया। यह भी भाग्य का चमत्कार ही है कि जिस सर गिरिजाशंकर बाजपेयी ने स्वदेश के प्रति इस प्रकार का हीन घात किया था, वही आज हमारे वैदेशिक मन्त्रिमण्डल का सेक्रेटरी जेनरल है।

चांदी के टुकड़ों पर स्वाभिमान और ईमान बेचने वाले इन वैधानिक प्रचार के कुप्रयत्नों का निराकरण किया विदेशी लुई फिशर, फ्लंबक तथा अन्य अमेरिकन पत्रकारों ने। मित्रराष्ट्रीय संघ के संगठन के लिये सैनफ्रांसिस्को में मित्रराष्ट्रों का जो महासम्मेलन हुआ था, उस अवसर पर भारत सरकार द्वारा भेजे गये सर फिरोजखां नून ने भी स्वदेश के धवल मुख पर कालिमा पोतने का दुष्प्रयत्न किया था, किन्तु सौभाग्यवश श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित उन दिनों वहीं थीं और उन्होंने अपने व्याख्यानों से उस कालिमा को पोंछ दिया। मित्रराष्ट्रीय संघ की एक पिछली बैठक में भी श्रीमती पंडित ने दक्षिण अफ्रीका के प्रश्न पर भारत का मस्तक विश्व राष्ट्रों के सम्मुख ऊंचा किया। इसके बाद इण्डोनेशिया का प्रश्न उक्त संघ में उठाकर भारत ने एशिया का नेतृत्व कर सकने की अपनी क्षमता भी स्पष्ट

प्रदर्शित कर दी। इण्डोनेशिया के तत्कालीन प्रजातन्त्रवादी प्रधानमन्त्री डा० शहरयार को भारतीय वैमानिक पटवर्धन द्वारा डच संगीनों की नोंक तोड़ कर उड़ा लाने के दुस्साहस ने भी विश्व में भारत के प्रति उनकी कुछ सम्मान का स्थान अर्जित किया। दिल्ली में एशिया महासम्मेलन ने भी विदेशों में भारत का गौरव बढ़ाया।

इस प्रकार भारत ने विश्व में गौरवशाली स्थान पाने के योग्य पृष्ठभूमि तो तैयार कर ली है, किन्तु जनस्मृति अत्यन्त क्षीण होती है। यदि उसको विश्व की जनता पर अपना प्रभाव स्थायी रूप से जमाना है, तो उसको अपने वैदेशिक प्रचार की शाखा को पुनर्गठित करना होगा। हमारे देश में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, चीन, फ्रांस आदि ने अपने अपने प्रचार कार्यालय खोल रखे हैं, जो अपने अपने देशों के प्रचार का अत्यन्त सुव्यवस्थित उद्योग इस देश में कर रहे हैं, किन्तु हमारे प्रचार कार्यालय कहां हैं? लंदन में हमारा एक जनसम्पर्क अफसर है, किन्तु उसके पास न तो सुयोग्य कर्मचारी हैं और न अधिक रुपया ही, वाशिंगटन तथा मास्को स्थित हमारे राजदूतावासों में भी एक एक प्रचार अफसर हैं, किन्तु एक अफसर अथवा उसके साथ दो तीन कर्मचारी इस महत्वपूर्ण काम को नहीं कर सकते। अमेरिका ब्रिटेन आदि देशों के विषय में तो अन्य तरीकों से भी इस देश में बहुत कुछ ज्ञात है, फिर भी वे यहां अपने प्रचार के बड़े बड़े कार्यालय रखे हुये हैं। भारत तो अभी विश्वप्रकाश में आया है और ख्याति के किस आलोक ने उसको चमकाना प्रारम्भ किया है, उसकी प्रतिकिरणें उसे विदेशों पर भी फेंकनी पड़ेंगी। सोवियत् रूस ने क्रान्ति के बाद अपने विदेशी प्रचार को बन्द कर दिया, जिसके फलस्वरूप वह एक अति रहस्यमय राष्ट्र बन कर विश्वराष्ट्रों के बीच अपना सम्मान खो बैठा और अन्ततः उसे अपना प्रचार विभाग संघटित करना पड़ा, जिसका एक कार्यालय नई दिल्ली में भी है।

विदेशी प्रचार का कार्य प० नेहरू के वैदेशिक मन्त्रिमण्डल तथा सरदार पटेल के सूचना मन्त्रिमण्डल को मिल कर करना होगा। इस के लिये गम्भीरतापूर्वक विचार करने की नियमित योजना बनानी होगी। वैदेशिक प्रचार के लिये कम से कम तीन कार्यों की तो अनिवार्य आवश्यकता है। उन में से प्रथम है ज्ञानवर्द्धक फिल्मों का निर्माण। सदियों से पराधीन इस देश की औद्योगिक, बौद्धिक तथा सामाजिक उन्नति के लिये राष्ट्रीय सरकार के प्रयत्नों, जनता की आर्थिक स्थिति उन्नतर करने की उसकी योजनाओं, देश के वैज्ञानिक उत्कर्ष की चेष्टाओं, देश के दर्शनीय स्थलों, वाणिज्य आदि के सम्बन्ध में छोटे छोटे एक एक रील के ज्ञानवर्द्धक फिल्म बना कर विदेशी थियेटरों में दिखाये जा सकते हैं। इस से हमको व्यापारिक लाभ भी हो सकता है। बनारस के रेशमी जरी के काम, काश्मीर के ऊनी काम, मिर्जापुर के कालीन व्यवसाय, मदुरा वस्त्र व्यवसाय तथा अन्य भागों के विभिन्न शिल्पों के सम्बन्ध में रंगीन फिल्म इन वस्तुओं के लिये विदेशों से अच्छे आर्डर ला सकते हैं, जिनके आयकर अथवा लाभ कर से इन फिल्मों का व्यय निकल जायगा।

इस के पश्चात् रेडियो का क्रम आता है। सौभाग्यवश दिल्ली का रेडियो स्टेशन विश्व के तीन सब से अधिक शक्तिशाली स्टेशनों में से है और इसका कारण यही है कि युद्धकाल में मध्यपूर्व तथा सुदूरपूर्व में ब्रिटिश प्रचार करने के लिये तत्कालीन विदेशी सरकार ने दिल्ली में दो बड़े शक्तिशाली ट्रांसमीटर लगाये थे। रेडियो विभाग में विश्व की प्रत्येक प्रमुख भाषा में प्रचार किये जाने की व्यवस्था की जानी चाहिये। किसी सीमा तक यह है। आलइंडिया रेडियो अंग्रेजी, चीनी, बर्मी, इण्डोनेशियन, फारसी और पश्तो में विदेशियों के लिये ब्राडकास्ट करता है, किन्तु दक्षिण अमरिका की लैटिन भाषाओं तथा यूरोपियन एवं रूसी भाषाओं में भी उसका प्रचारकार्य होना चाहिये। रेडियो के प्रचार से भारतीय कला संस्कृति और सभ्यता का प्रभावोत्पादक प्रचार किया जा सकता है।

इस के अतिरिक्त समय समय पर भारत सरकार द्वारा विदेशों को सद्भावना मिशन भी भेजने चाहियें। ये दौत्य मण्डल व्याख्यानों, सम्पर्क, विज्ञप्ति आदि से विदेशों में स्वदेश का मैत्री सम्बन्ध बढ़ाने का यत्न करेंगे। स्वदेश की कला के प्रदर्शन के लिये कलाविद् नर्तकों और गायकों तथा वादकों की मण्डलियां भी विदेशों में भेजी जा सकती हैं। विदेशी राजदूतावासों की देख रेख में कलाप्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जा सकता है, जिनमें स्वदेश की चित्रकला तथा रोचक शिल्प के नमूने प्रदर्शित किये जा सकते हैं। भारत सरकार को स्वदेश के व्यय से अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों को भी भारत में आमन्त्रित करना चाहिये। इस से भी विदेशों में भारत का सम्मान बढ़ेगा। प्रातःस्मरणीय गांधी जी ने दिल्ली में विश्व शान्ति सम्मेलन किये जाने की इच्छा प्रकट की थी। भारत सरकार को इसकी अविलम्ब व्यवस्था करनी चाहिये। अणुबम से आतंकित विश्व को युगावतार गांधी के शान्ति सिद्धान्त से यदि त्राण मिल सका, तो भारत एशिया ही नहीं विश्व नेतृत्व का अधिकारी हो जायगा।

सन्तान प्यारा पुत्र चाहिये

यदि आप सन्तान से वंचित हैं तो मुझे मिलें आपके घर का दीपक शीघ्र रोशन हो सकेगा, यदि आ न सकें तो हमारी औषध अकसीर औलाद मंगवा लें, जिससे सैकड़ों बेऔलाद बहनों की गोदी हरी भरी हुई है। मूल्य २२) और दवाई औलाद नरीना जिसके सेवन से पुत्र ही पैदा होगा चाहे पहले लड़कियां ही लड़कियां क्यों न पैदा होती रही हों मूल्य १२)।

सन्तान और नहीं चाहिये

दो साल के लिये सन्तान उत्पत्ति बन्द करने वाली दवाई की कीमत १२) २ वर्ष के लिये २०) और सदा के लिये २२)—इन दवाइयों से माहवारी हर महीने ठीक जारी रहती है। मासिक धर्म जारी करने वाली दवाई मैन्सोल स्पेशल का मूल्य १२) और इससे तेज दवाई मैन्सोल स्ट्रांग जो बन्द अच्छी प्रकार साफ कर देती है मूल्य २२)।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती

चान्दनी चौक देहली [इम्पीरियल बैंक और फव्वारा के दरम्यान]
कोठी —२७ बाबरलेन न्यू देहली (निकट बंगालीमार्केट)

२०००) रु० इनाम।

अवश्य पढ़ें मामूली विज्ञापन समझ कर न छोड़ें

अजायबात आलम की आठवीं अद्भूत।

हम अपने धर्म व परम पिता परमात्मा की सौगन्ध खाकर सच कहते हैं कि साइन्स की नई आविष्कार (१) मैजिक अटीमना (Magic Antimony) जादू का सुरमा इसव हिदायत आप अपनी आंखों में डाल कर जिस किसी स्त्री या पुरुष चाहे वह कैसा ही पत्थर दिल मगरूर व सख्त कलाम क्यों न हो आप उसके सामने चले जावें वह उसी समय आपको देखते ही आप पर फरेफ्ता हो कर आपके प्रेम में व्याकुल हो जायेगी। आपके बिना पलभर चैन नहीं पड़ेगा आपकी मनोकामना पूरी हो जायेगी। कीमत ५) रु० डाक खर्च पैकिंग ॥–) आने।

(२) डिलैक्सो (Delexo) इस दवाई का एक भाग पूरे सात वर्ष में तैयार होता है। जिसकी परीक्षा स्वीटजरलैण्ड में सूखे हरे दरख्तों व पौदों पर अद्भुत तरीका से की गई जो थोड़े दिनों में ही सरसब्ज हो गये पर लगाते ही मुरदा रगों व पट्ठों में बिजली की सी ताकत व फौलाद की सख्ती पैदा करके ७ दिन में पूरा मर्द बना देती है। ढीलापन, टेढ़ापन छोटापन के लिये खाने वाली दवाइयों से यह लगाने वाली दवा हजार दर्जा बहतर साबित हुई है। कीमत फी शीशी ५) रुपया डाक खर्च पैकिंग ॥।–) आने। बड़े बड़े साइन्सदान व डाक्टर इन अद्भुत आविष्कारों को देखकर दंग हो गये हैं। अगर गलत साबित हों तो इनाम हासिल करें। दोनों एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ।

इम्पीरियल चेम्बर, आफ साइन्स (×) हलका नं० २१ अमृतसर।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले और व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरों में है, जो थोड़े ही मूल्य का है।

यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमायें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० २०१ कीमत ३॥।≈) क्वालिटी नं० २४२ कीमत ६।।।) की बक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० २२० कीमत ७॥), पैकिंग व डाकव्यय १≈)

नोट—एक समय में ६ कमरों के ग्राहक को कैमरा नं० २२० मुफ्त। स्टाक सीमित है जल्दी आर्डर दें अन्यथा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस

वेस्ट एण्ड ट्रेडर्स (V A. D) पोस्ट बाक्स १९९, दिल्ली।

West End Traders, (V A. D) P B 199, Delhi

राष्ट्र का यह सजग सेनानी

(पृष्ठ १२ का शेष)

पटेल ही तो था। वहां से उन्हें 'सरदार' नाम मिला।

योद्धा—सेनानी

तब से सालों पर साल गुजरे, अकाइयां आईं और गईं, तलवारें चमचमा कर झुक गईं, और साम्राज्यवाद की फौलादी बेड़ियां कड़कड़ा कर टूट पड़ीं कि न टूटा, न झुका यह फौलादी सरदार। और कल का योद्धा ही आज हमारा गृहरक्षक है, सतर्क प्रहरी है और सेनानी है। भारत के स्वातन्त्र्य समर की लम्बी कहानी में 'योद्धा' के रूप में न जाने 'सरदार पटेल' का नाम कितनी बार गिनाया जा सकता है किन्तु योद्धा से महत्वपूर्ण पद उनका रहा है सेनानी का। उन्होंने युद्धों की शंखध्वनि तो न की किन्तु उसका संगठन व नियन्त्रण अवश्य किया और जब मोर्चों से हटकर कुर्सियां सम्भालनी पड़ीं तब भी संगठन व नियन्त्रण "पार्लमेंटरी बोर्ड" के अध्यक्ष रूप में उन्हीं का रहा। और उनके नेतृत्व की विशेषता है कि चाहे कोई उनसे बड़ा हो या छोटा, वे महादेव की भांति सबके अभियोगों का गरलपान स्वयं करने को सदा तैयार रहते हैं और त्रिपुरी कांग्रेस में सुभाष के विरोध की सारी जिम्मेवारी अपने सिर लेकर उन्होंने इस बात का प्रमाण दिया।

सरदार ने प्रारम्भ में मुख्तारी पास की थी और उसी की प्रैक्टिस गोधरा में करने भी लगे, किन्तु मन बैरिस्टरी को फिसल गया और लगे जाने की तैयारियों में। अनथक दौड़धूप और चिट्ठी पत्री के बाद एक जहाजी कम्पनी से स्वीकृति की अन्तिम चिट्ठी आई। पते पर 'वी० जे० पटेल' लिखा था, जिस का अर्थ होता है, वल्लभभाई झवेरभाई पटेल। किन्तु उनके बड़े भाई विट्ठलभाई झवेरभाई पटेल का संक्षेप भी यही बनता था। अतः गल्ती से उनके हाथ में यह पत्र पड़ गया। पत्र पढ़ते ही उन्होंने भाई से कहा कि पहले वे स्वयं बैरिस्टरी पास कर आयें, तभी वल्लभ का जाना ठीक होगा। और वल्लभ को तीन साल की कठोर और निर्दय प्रतीक्षा करनी पड़ी। अन्त में समय आया और पटेल बैरिस्टरी पास कर शान और मान के साथ मातृभूमि लौटे।

किन्तु इतनी उम्मीदों, इतनी इन्तजारी और इतनी मेहनत का वह चौथाई भी तो फल न पा सके। थोड़ा ही अरसा गुजरा था प्रैक्टिस करते कि आजादी की पुकार का बिगुल बज उठा। वकीलों की 'कोठियों' में आजादी की हवा डराने

कूद पड़ा और देश ने आश्चर्य देखा कि इस योद्धा को जितना गांधी जी पहिचान पाये थे, इस में कुछ उस से भी अधिक है। और शीघ्र ही गुजरात उसके कदमों पर था।

रियासती और गृहमन्त्री

आज अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि शायद शासन में 'विदेश विभाग' सर्वाधिक दुरूह होता है और यह पर्याप्त अंशों में सही भी है। पर आज की विषम स्थिति में विश्व में एक भी राष्ट्र ऐसा नहीं, जिसकी आन्तरिक स्थिति मजबूत हो। यही कारण है समस्त विश्व 'रूस' और 'अमरीका' के दो गुटों में बट चुका है। और इन सबसे अधिक परेशानी की बात हमारे लिए यह थी कि नवजात राष्ट्र क्या अभिवृद्धि के बिना इस अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उतर सकता है? आज अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वास्तविकता की अपेक्षा हमारा बहुत हेय स्थान है। हमारे 'नव जात राष्ट्र' के कदम उठने लगते इससे पहले ही उसे लहू-लुहान होना पड़ा। अभी वह सम्भलता, इससे पूर्व ही उसकी सीमाओं पर आक्रमण होने लगे और उसके शरीर के अन्दर भी रियासतें रोग ग्रन्थियों की भांति अड़ गईं। सवाल था, यदि इतना बड़ा देश अपना उचित स्थान भी सं० रा० संघ में प्राप्त कर ले, तो उसे इन समस्याओं से क्या नहीं निपटना पड़ेगा? समय ने बता दिया कि आकाश के तारे तोड़ना सरल नहीं। फलतः राष्ट्र ने अपने याचनापूर्ण सदय नेत्र सरदार की ओर डाले। और आज हम देख रहे हैं कि कि चन्द मास भी नहीं हुये पड़ोसियों और विदेशियों का जो धमकीभरा स्वर था, वह आज दोस्ती के रुख में बदल चुका है। सुरक्षा परिषद् की दीवारें व पंजाब का सुरक्षित सीमान्त इसकी साक्षी दे रहा है। पन्द्रहवीं शताब्दी में बसने वाली रियासतें आज दूध में पानी की भांति घुलती जाती सी नजर आती हैं। राष्ट्र सबल है, वह किसके बल पर? राष्ट्र की आत्मा, राष्ट्र के प्राण, सतर्क प्रहरी, जागरूक सेनानी 'स्टालिन' पटेल के ही बल पर तो!

और आज समाजवादी उस पर साम्प्रदायिकता का, प्रतिगामिता का आक्षेप करते हैं यह कृतघ्नता का चरम उदाहरण है। इस पर अधिक कहना व्यर्थ है।

[पृष्ठ ११ का शेष]

अनिवार्य होता है इस नाते हम इसे बुरा नहीं मानते। इस संघर्ष को हम प्रांतों के पुनर्विभाजन द्वारा दूर कर सकते हैं और पूर्वी पंजाब के विभाजन की मांग पेश करके हम इसे ही स्पष्ट कर रहे हैं।

हिन्दी जिले

पंजाबी भाषा का प्रान्त पृथक् बन जाने पर अम्बाला कमिश्नरी के ६ जिलों का क्या होगा? यह विचारणीय हो जाता जाता है। हमारी राय में ये जिले वर्तमान संयुक्त प्रांत में शामिल किये जाने चाहिये, सन् १८५७ के विद्रोह से पूर्व ये जिले इसी प्रांत का अंग थे। अब पुनः ये जिले इस प्रांत में मिलकर हिन्दी भाषा भाषी जनपद का अंग बनें हम यही अभीष्ट है। हां! आज का युक्तप्रांत बहुत बड़ा प्रांत है, वह और अधिक बढ़ जायेगा यह खतरा भी हमारे सामने है किन्तु केवल इस खतरे से बचने के लिये हम पूर्वी पंजाब में हिन्दी की हत्या कर डालें यह भी उचित नहीं है। युक्त प्रान्त को दो भागों में बांट कर उसकी अनावश्यक विशालता को भी कम किया जा सकता है। यह कैसे हो सकता है इसे हम पुनः किसी लेख में स्पष्ट करेंगे।

---

५००) नकद इनाम

जवांमर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३॥) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम। श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

फिल्म ऐक्टर

यदि आप फिल्म ऐक्टर बन कर १००) रु० से १५००) रु० तक मासिक कमाना चाहते हैं तो आज ही लिखें। थोड़ा पढ़ा लिखा होना जरूरी है।

मैनेजर इम्पीरियल चैम्बर
फिल्म डीपार्टमैंट
हलका न० २१ अमृतसर

स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा

ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

मैनेजर—
विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

१००० रुपया नकद इनाम **मासिक धर्म** एक दिन में जारी

मैक्सो अकसीर हैज एक दिन के अन्दर २ रुका हुआ मासिक धर्म जारी कर देती है। कितने समय के उपरान्त और किसी कारण से क्यों न हो। मूल्य ३॥)

मैक्सो अकसीर हैज स्पैशल जो कि तुरन्त खून जारी करके बड़ी सुगमता से अन्दर साफ कर देती है। मूल्य १२) रुपया याद रखो गर्भवती इसका प्रयोग न करें क्योंकि यह हानिकारक होगी।

बर्थ आफ पांच वर्ष के लिये सन्तान न होने वाली औषधि मूल्य ५) सदैव के लिये १०) एक हजार रु० इनाम उसको दिया जायगा जो मैक्सो अकसीर हैज और बर्थ आफ को हानिकारक प्रमाणित करे।

अफीम

की आदत छूट जायगी। काली डाक्टर अफीम से छुटकारा पाने के लिये "काया कल्प काली" सेवन कीजिये, न केवल अफीम छूट जायगी बल्कि इतनी शक्ति पैदा होगी कि मुर्दा रगों में भी नई जवानी आ जायगी। दाम पूरा कोर्स पाँच रुपया डाक खर्च पृथक।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरिद्वार।

शारीरिक उष्णता के वजह से

अगर आप निम्न-लिखित उष्णताकी शिकायतों से दुःखी हो रहे हों—

(१) सारे शरीर के ऊपर और अन्दर खूब गरमी और जलन होना, आँखों की जलन, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन, जननेन्द्रिय के रंगके (पीले) पेशाब की जलन;

[२] खाना बेस्वाद लगना, कायमी बदहजमी और अरुचि, खाने के बाद जलन होना और खट्टी डकारें आना, पित्ताशय की मन्द पाचनशक्ति, कायमी कब्ज;

[३] शरीर और दिमागकी थकान, निर्बलता, गरमी के कारण उत्पन्न अशक्ति;

तो 'पर्ल काढ़ा' की नियमित सेवन शुरू कीजिये। २५ से भी ज्यादा सालों तक पर्ल काढ़ाने इस दवाई के सेवन करनेवाले हजारों लोगों को अच्छा कर दिया है।

पर्लकाढ़ा जवान और बूढ़े सभी, पुरुष और बच्चे-स्त्रियों को समान रूपसे फायदा करता है। यहांतक कि प्रसूता स्त्रियों को भी फायदा करता है।

शारीरिक उष्णता के लिये मशहूर अनुभूत इलाज।

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

एकबार परीक्षा कर स्वयं आजमाइये!

पर्ल कंपनी, आर्योषधी कारखाना, राणीबाग, बम्बई २७

१६॥) में ज्वेल वाली रिस्ट वाच

स्वीस मेड ठीक समय देने वाली ३ वर्ष की गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥) सुपीरियर २०॥) फ्लाट शेप क्रोमियम केस २५) फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारंटी ४४), फ्लाट शेप १२ ज्वेल क्रोम केस—३८), फ्लाट शेप १२ज्वेल रोल्ड गोल्ड—७२)

रेक्टेंगुलर कर्म या टोनो शप

क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ६०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८,२२) बीग बाइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभीड० एण्ड क० [V. A.]
पो० बक्स न० ११४२७ कलकत्ता

पेट भर भोजन करिये

गेसहर— (गोलिया) गैस चढ़ना या पैदा होना, पेट में पवन का घूमना, भूख की कमी, पाचन न होना, खाने के बाद पेट का भारीपन, बेचैनी, हृदय की निबलता, दिमाग अशान्त रहना, नींद का न आना, दस्त की रुकावट वगैरह, शिकायत करती है। आव, लीवर तिल्ली और पेट के हर एक रोग में अद्वितीय दवा है। कीमत रुपया १) तीन का ३॥) डाक खर्च अलावा।

पता—सुधासुपान फार्मेसी ४ जामनगर
दिल्ली—एजेंट जमनादास क० चादनी चौक

मुफ्त

नवयुवकों की अवस्था तथा धन के नाश को देखकर भारत के सुविख्यात वैद्य कविराज ज्ञानचन्द्रजी बी०ए० (स्वर्ण-पदक प्राप्त) गुप्त रोग विशेषज्ञ घोषणा करते हैं कि स्त्री पुरुषों सम्बन्धी गुप्त रोगों की अचूक औषधियां परीक्षा के लिए मुफ्त दी जाती हैं ताकि निराश रोगियों की तसल्ली हो जावे और धोके की सम्भावना न रहे। रोगी कविराज जी को विजय फार्मेसी, हौज काजी दिल्ली में स्वयं मिल कर या छः आने के टिकट भेज कर औषधियां प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए छः आने भेज कर ११६ पृष्ठ की अंग्रेजी की पुस्तक Sexual Guide प्राप्त करें।

साबुनों का मुकुटमणि

साबुन नम्बर १००

हर तरह के कपड़ों ऊनी, सूती, रेशमी की बहतरीन सफाई के लिये। सुन्दर और रंगीन रैपर में लिपटा हुआ। हर अच्छे स्टोर और साबुन के दुकानदार से मिलेगा। एक बार खरीद कर अवश्य परीक्षा करें।

एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है।

होलसेल डिस्ट्रीब्यूटर्स—
कैलाशचन्द्र प्रकाशचन्द्र
कूचा सराय हाफिज बन्ना
सदर बाजार देहली।

फिल्म-स्टार

बनने की इच्छा वाले शीघ्र पत्र लिखें। थोड़ा पढ़ा लिखा होना आवश्यक है रजीत फिल्म-आर्ट कालेज बिरला रोड (V D) हरद्वार यू० पी०।

T B टी बी "तपेदिक" चाहे फेफड़ों का हो या अंतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अन्तिम स्टेज
मामूली ज्वर, खांसी	ज्वर, खांसीकी अधिकता	शरीर घुलना, ज्वर-खांसी की भयंकरता	सब ही बातोंकी अधिकता शरीरपर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगीकी मौत और भयंकर कर्मोंका इधर उधर फैलना

जबरी————(JABRI)————(जबरी)————(JABRI)

T B टी बी "तपेदिक" और पुराने ज्वर के हताश रोगियों! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नडुगावा, पो० डाल्टनगञ्ज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनों से ज्वर खांसी से बीमार था। बलगम आदि की परीक्षा पर "तपेदिक" (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। इसी बीच परमात्माकी कृपासे आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरत आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवाको विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अद्भुतरूपी गुणोंने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। थोड़े ही दिनों में शरीरका रंग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आप की औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० ठाकुर सिंह नेपाली मु० कटैया पो० हरलखी जिला दरभंगा से लिखते हैं। आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई, कृपया लौटती डाक से पूरा कोर्स भेज दें।

इसी प्रकार के पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं, भारत के कोने कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है "जबरी" के नाममें ही भारतके पूज्य ऋषियोंके आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिनसे ही इस दुष्ट रोगके कीटाणु नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि—आप इस तरफसे हताश हो चुके हों तो भी परमात्माका नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिनका नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गयी खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (JABRI-JAGADARI) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का स्कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु० जबरी नं० २ जिसमें केवल मध्यवान जड़ी बूटियां हैं, पूरा कोर्स ३०) रु० नमूना १० दिन ८) रु०, महसूल अलग है।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी के दाग का पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें —)॥ का टिकट भेजकर शर्ते लिखा लें। मूल्य २॥)

श्री इन्दिरा आयुर्वेद भवन, (१२)
पो० बेगूसराय (मुंगेर)।

१५०) नकद इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र— इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। उनमें आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके वश हो जायगा। इससे भाग्योदय, नौकरी धन की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य ताम्बा का २॥), चांदी का ३), सोने का ११) झूठा साबित करने पर १५०) इनाम

मनुष्य के चमड़े के व्यापारी

(पृष्ठ १० का शेष)

पार्टी का कार्यक्रम यों शुरू हुआ। बीच में एक बड़ी गोल मेज थी। उसके चारों ओर कोई बीस बने बैठे थे। एक सिरे पर मेरी दूसरे सिरे पर नाइट। एमर्सन मेरी साथ बैठे थे।

एमर्सन ने प्रस्ताव किया कि मेरी का विवाह एरिकनाईट के साथ हो— 'आशा है आप सब इससे सहमत हैं। अब इन्हें बधाई और आशीर्वाद दीजिये।

बधाई ! बधाई !! के स्वर से सारा कमरा गूंज उठा। एक ने कहा— "एरिक पुरुषों में रत्न है। मेरी ऐसा वर पाकर धन्य हो गई।"

दूसरे ने कहा — 'एरिकनाइट ऊंचे घर से सम्बन्ध रखता है। इसमें विनय और शिष्टता कूट-कूट कर भरी है।'

तीसरे ने कहा — 'एरिक में बल बुद्धि ही नहीं है, इसमें व्यावहारिक कुशलता भी खूब है।'

चौथे ने कहा — 'ऐसी जोड़ियां जगत् में विरली ही मिलती हैं।'

अन्त में एक ने यह भी कहा — 'जिस देश ने ऐसे रत्न को जन्म दिया वह देश भी धन्य है।'

प्यालों में शराब ढाली गई। एमर्सन मेरी और नाइट को बधाई दी गई। एरिक खड़े हुए और कहने लगे —

'जन्टलमन, इससे पहले कि मैं कुछ कहूं, मैं सर राबर्ट एमर्सन साहिब का विनयपूर्वक धन्यवाद देता हूं जिन्होंने यह रिश्ता करके मेरा मान बढ़ाया मैं उनके महमानों का भी स्वागत करता हूं और यहा आकर बधाई देने के लिये धन्यवाद देता हूं।

'आपके देश में आकर मुझको बड़ी प्रसन्नता हुई। अब मैं आपका हुआ और आप मेरे हुए। इसलिए अब हम दिल खोल कर एक दूसरे से बातचीत कर सकते हैं।

'मैंने सब मित्रों के विचारों को बड़े ध्यान से सुना है। आपने मेरी योग्यता और बुद्धिमत्ता को खुले दिल सराहा है। मुझे विश्वास है कि ये शब्द आपके अन्तस्तल से निकले हैं। (सबने कहा —हां हां ठीक है, ठीक!)

'सज्जनो! जरा थोड़ी देर के लिए कल्पना कीजिये कि मुझ में बुद्धिमत्ता और योग्यता न होती और मुझ में केवल बल, रूप, यौवन और आकर्षण ही होता तो क्या आप मुझे इतना मान देते? मैं मिस मेरी से ही पूछता हूं कि उनका क्या उत्तर है?' बेचारी मेरी एक दम ऐसा बेढब प्रश्न सुन कर अप्रतिभ सी हो गई। जरा देर के बाद अपने को संभाल कर बोली — 'मैं आपसे सहमत हूं!',

एरिक ने कहा — 'तो सचमुच आप मनुष्य के बाह्य गुणों की अपेक्षा उसके आन्तरिक गुणों को अधिक सराहते हैं।

'खास कर मुझे उस बुजुर्ग के शब्द बार बार याद आते हैं जिन्होंने उस देश को धन्य कहा जिसने मुझे जन्म दिया। सचमुच मनुष्य के गुणों से उसकी कीमत होती है। देश भी बड़े इस लिये बनते हैं क्यों कि वे उत्तम पुरुषों के जनक होते हैं। इस समाज में बैठ कर हम उस देश के लिये प्रार्थना करें। उस पर अपने को न्योछावर करने को तैयार हों जिसका मैं वासी हूं।'

शराब के प्याले ऊपर उठे। सर राबर्ट एमर्सन ने आवाज बुलंद की— 'इंग्लैण्ड चिरजीवी हो।'

एरिक ने कहा—'नहीं, भारत जुग-जुग जिए।'

महफिल में सन्नाटा छा गया।

'भाई! मैं भारत का वासी हूं। काश्मीर में पैदा हुआ, इंग्लैण्ड में मेरी शिक्षा हुई। नाम मेरा ठाकुर सिंह है।'

महफिल में गड़बड़ मच गई। लोगों ने प्यालों को मेज पर पटक दिया। झूठ, धोखा, मक्कारी, फरेब, शरारत—इन शब्दों से हाल गूंज उठा। सर राबर्ट को कुछ न सूझता था। एरिक की बांह पकड़ कर कहने लगे—'भाई मजाक छोड़ो। हम जानते हैं तुम योरुपियन हो, भारतीय नहीं हो।'

सर राबर्ट लोगों को बैठाने लगे।

ठाकुर सिंह ने भाषण जारी रखा— 'सज्जनो, आपको धोखा हुआ। मैं काश्मीर का वासी हूं। काश्मीर के लोगों का रूप

अदल-बदल के व्यापार की बजाय सांकेतिक द्रव्य अर्थात् बकरी आदि देकर माल-खरीदने का व्यवहार वस्तुओं के अदल-बदल करने के विषय में मनुष्य की उन्नति की ओर एक बड़ा महत्व पूर्ण पग था। परन्तु बकरी रूपी द्रव्य सर्व प्रिय न था। सब बकरियां एक जैसी नहीं होती थीं। दुर्बल और रोगी बकरियों के बदले में माल खरीदना शीघ्र ही एक समस्या बन गई। रोग, व्याधि इस सम्पत्ति को प्रायः नष्ट कर देते थे। व्यापार के नवीन विस्तार ने मनुष्य को, जो स्वभाव से ही काल्पनिक है, कोई श्रेष्ठतर द्रव्य खोज निकालने पर विवश कर दिया। उस की दृष्टि धातुओं पर पड़ी। धातु नष्ट न होने वाली और निश्चय से एक समान रहने वाली द्रव्य थी। अब से सब व्यापारिक व्यवहार लोहे, तांबे या सीसा आदि की सलाखों या उनके ढले हुये ढलों द्वारा होने लगा।

अपनी दैनिक खरीदारी के लिये मनुष्य को किसी न किसी धातु की भारी सलाख या ढले को लिये लिये फिरना पड़ता था। इसी कारण भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा से लोग धातुओं का संग्रह करने लगे। वास्तव में धनाढ्य अपने धन के भार से दबे हुये थे। कच्ची धातुओं की खानों में खोज की तीव्रता के साथ साथ रुपये का मूल्य गिर जाता था, और नफ़ाखोर शुद्ध धातुओं को दूषित कर देते थे।

आज कल माल के खरीदने में या बचत करने में विशेष असुविधा नहीं होती। बुद्धिमान खर्च करने की बजाय भविष्य के लिये बचाना अच्छा समझता है और वह अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सुरक्षित मद में लगाता है। नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर इस का मूल्य ५०% बढ़ जाता है—अर्थात् १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप अब ५) से १५,०००) तक की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं। जिन की बचत थोड़ी हो, वे ।), ।।) और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

AC 232

रङ्ग मेरे देश होता है।'

लोगों का गुस्सा अभी ठंडा नहीं हुआ था। पेस्टरी के टुकड़े, अण्डे के छिलके और फलों के छिलके ठाकुर सिंह पर फेंकने लगे। मारो, पकड़ो, पुलिस के हवाले करदो।' सर राबर्ट भी आपे से बाहर हो गये। 'मैं इस पापी को गोली से उड़ा दूंगा। यदि इसने फिर कहा कि मैं भारतीय हूं।'

ठाकुर सिंह ने कहा—'ज़रा सुनिये।'

लोगों ने कहा—'हम तुम्हें यहां से उठा कर बाहर फेंक देंगे।'

इतने में मेरी खड़ी हो गई, कहने लगी—'मिस्टर एरिक नाइट को बोलने का पूरा हक है।'

एरिक ने कहा—'अगर यह धोखा है, तो आप भी धोखा देते हैं। अभी अभी आप कह रहे थे कि मनुष्य की कद्र उसके आन्तरिक गुणों से होती है। गुणों के कारण ही आप मेरा मान कर रहे थे। यह सब आप पल भर में भूल गये। आप के और मेरे बीच में मेरे देश का नाम और रङ्ग आ गया। जिस गोरे चमड़े को आप प्यार करते हैं उसी ने आप को धोखा दिया है। क्या जो गोरा है वह योरुपियन हो जाता है। मैं शनैः २ बूढ़ा हो जाऊंगा, जवानी खत्म होगी, धूप में घूम घूम कर रंग बदल जायगा। समय पाकर मनुष्य का रूप रंग बदल ही जाता है। यदि कोई चीज़ स्थिर रहती है तो आत्मा के गुण—आत्मा की उच्चता। मुझे गर्व है कि मैं उस देश में उत्पन्न हुआ जिसमें राम, कृष्ण, बुद्ध और गांधी जैसी उच्च आत्माएं उत्पन्न हुईं। मैं उस देश में उत्पन्न हुआ हूं जहां के लोग आत्मा की उच्चता के पुजारी हैं।

ज्यों ही एरिक ने यह कहा तो एक युवक अपनी सीट पर खड़ा हो कर ललकार कर कहने लगा—'मेरे साथ द्वन्द्व युद्ध कर लो। अभी मैं तुम्हारी आत्मा को ठीक किए देता हूं।'

यह सब देख कर मेरी को जोश आ गया। वह उठ खड़ी हुई, कहने लगी—'जब तक मैं जीवित हूं, यह द्वन्द्व युद्ध न होगा।' मेरी ने उस नवयुवक को बैठा दिया।

'मिस्टर नाइट, आप कुछ कहना चाहते हैं?' नाइट ने कहा — 'नहीं जी, मुझे मिस्टर ठाकुर सिंह कहिये।' वह लोगों से हसते २ कह रहे थे — "यह कैसा अनोखा रिश्ता रचा जा रहा है। एक तरफ़ जानवरों के चमड़े के व्यापारी हैं और दूसरी ओर मनुष्य के चमड़े के।"

इतना कह कर ठाकुर सिंह बैठ गया। मेरी उनके समीप खड़ी रही।

लोगों ने शोर करना शुरू कर दिया—'यह रिश्ता नहीं होगा, हर्गिज़ न होगा। युरोपियन लड़की मेरी की शादी एक भारतीय से नहीं हो सकती। इसे पुलिस के हवाले कर दो।'

मेरी ने कहा — 'ज़रा ठहरिये। आप मेरे विचारों को सुनने को उत्सुक होंगे। मेरा कर्तव्य है कि मैं श्री ठाकुरसिंह से इस बुरे सलूक के लिये क्षमा मांगूं। आप ने जो दृश्य दिखाया है उससे जिस का सिर नीचा नहीं होगा। अब तक तो मैं मि० ठाकुर सिंह को शरीर अर्पित कर रही थी। अब मैंने अपनी आत्मा भी उनके अर्पित कर दी है। जिस ज्ञान पथ पर उन्होंने मुझे लगाया है, मैं तो आज से उसी पर चलूंगी। मैं अच्छे बुरे में भेद कर सकती हूं। मुझे आशा है मेरे पिता भी मेरे मार्ग में कोई रुकावट ना डालेंगे।" यह कह कर मेरी ने ठाकुरसिंह की भुजा पकड़ी और चली गई।

दोनों मि० कालीदास के घर पहुंचे। वे इस जोड़ी का देख कर फूले न समाते थे। अगले दिन भारतीय समाज में सनसनी फैल गई। मन्दिर में हज़ारों भारतीय इकट्ठे हुए। महात्मा गांधी की जय के नारे लगने लगे।

आज मेरी का नया नाम करण संस्कार हुआ। उसका नया नाम रखा गया—सावित्री। लोगों ने मि० ठाकुर सिंह से कहा — 'आप का नाम भी आज से सत्यवान हो गया। क्यों जी मन्ज़ूर है ना?' मि० ठाकुर सिंह सिर्फ़ मुस्करा दिए।

सर राबर्ट एमर्सन भी अपनी प्रसिद्ध रोल्स रायस कार में बैठ कर ऐसे आ गये जैसे स्वयं पका फल ज़मीन पर आ टपकता है।

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता उद्बोधन का मार्ग है
इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोह-निद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है; भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

सरगोधा के सुप्रसिद्ध

दांतों के डाक्टर बाली

फतहपुरी, देहली।

दांतों के सब रोगों का इलाज किया जाता है और वह बिना दर्द निकाले जाते हैं। सब प्रकार की एनकें व मस्नूई आंखें मिल सकती हैं।

तिल्ली और पीलिया के लिए मुफ्त बूटी
गरीब लोग ।॥) डाकखर्च भेज कर मुफ्त मंगावें और अमीर अच्छा होने पर श्रद्धानुसार भेंट दे दें।
पता—महात्मा हरीराम, प्रेमाश्रम लोहवन आफिट लाइन, मथुरा।

केवल विवाहित व्यक्तियों के लिए
नवीन पुस्तकें

१—सचित्र कोकशास्त्र—इसे पढ़ कर आपका विवाहित जीवन सुखमय होजायेगा। मूल्य १॥) २—८४ आसन—८४ चित्रों सहित आसनों का मनोहर वर्णन किया गया है। मूल्य १॥) ३—गुप्त चित्रावली—संसार की सुन्दरियों के ३४ आकर्षक चित्रों का मनोहर संग्रह। मूल्य ३।) पूरा सेट लेने पर सिर्फ ४॥), [पोस्टेज ॥) अलग।
पता—प्रतियोगिता आफिस, आगरा (२१)

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ़. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से तथा होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त।
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

१००) इनाम
(गवर्नमेण्ट रजिस्टर्ड)
सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आयेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकद्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १२)।
श्री कामरूप कमख्या आश्रम ५५
पो० कतरीसराय (गया)

आरोग्य-वर्धक
५० साल से दुनिया भर में मशहूर

मदनमंजरी

कब्जियत दूर करके पाचनशक्ति बढ़ाती है दिल, दिमाग को ताकत देती है और नया खून व शुद्ध वीर्य पैदा करके बल, बुद्धि आयु बढ़ाती है। डि० रु० १)
मदनमंजरी फार्मेसी, जामनगर।
देहली एजेंट-जमनादास कं० चांदनीचौक

पीकॉक दन्तमंजन

दांतों को मोती सा चमका कर मसूढ़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। शीशी ॥)
पन्ना ट्रेडिंग कं०, चांदनी चौक, दे०
एजेण्टों की ज़रूरत है—
जमनादास एण्ड कं०, के० डी० जगदीश एण्ड कं० चांदनी चौक, दिल्ली।

मोम बत्तियां बनाओ। घर बैठे १५०) रुपये माहवार कमायें स्कूल के चाक बनाओ।

मोमबत्तियों के काम में एक छोटे सांचे की मदद से पांच छः रुपये रोज़ाना मज़दूरी कमाये जा सकते हैं। यह केवल १५०) रु० की पूंजी से अच्छी तरह चालू हो सकता है। तरीका सांचे के साथ बताया जाता है। १२ मोमबत्तियों के सांचे की कीमत ४०) रु० १७ की कीमत ६०) ३४ की कीमत ११०) रु० डाकखर्च अलग। २४ स्कूल चाक के सांचे की कीमत ६०)। मोमबत्तियां बनाने का सामान भी हमारे हां मिल सकता है। आर्डर के साथ आधी कीमत पेशगी आनी चाहिये।

ए० दीवानचन्द एण्ड कम्पनी (W.D.) पोस्ट बैग नं० ११ A- देहली। दिल्ली सेल्स आफिस—कश्मीरी गेट, बड़ा डाकखाना के सामने।

विविध चित्रावलि

(१) इंग्लैण्ड की लड़कियां रेडार नामक यंत्र के युद्ध में प्रयोग की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

(२) (दायीं ओर) भारत के हाई कमिश्नर श्री मेनन गांधी जी की स्मृति सभा में भाषण दे रहे हैं।

अमेरिका की अणु शक्ति कमीशन के अध्यक्ष श्री लिलिए थल ने बताया है कि अमेरिका २० करोड़ डालर प्रति वर्ष पर माणु की शोध के लिए व्यय कर रहा है।

(३) मलाया के विभिन्न राज्यों के शासक संघ में सम्मिलित होने की एक संधि पर हस्ताक्षर कर रहे हैं।

(५) इंगलैण्ड की एक प्रदर्शनी में यह बैल ७१०० गिनी (९९४०० रु०) पर बेचा गया। इससे पहले एक बैल ७५०० गिनी में भी बिक चुका है।

(६) रूस के मशि-एरल के अध्यक्ष, लेबार कागनोविश मॉर्शन के साले हैं। इनके दो और भाई भी उच्चपदों पर हैं।

ट्रूमैन की नीति का यह फल है !

(पृष्ठ ९ का शेष)

हुआ। प्रधानमन्त्री कम्युनिस्ट थे, राष्ट्रपति बेनेस के द्वारा ही कम्युनिस्ट शासन स्थापित किया गया और क्रान्ति से पूर्व एक सप्ताह से रूस के सहायक पर राष्ट्रमन्त्री श्री जोरिन राजधानी प्राग में उपस्थित थे। सेना और पुलिस ने कम्युनिस्टों का साथ दिया। इन क्रान्तियों से पूर्व एक बात और चिरपरिचित है। अमेरिका तथा ब्रिटेन द्वारा देश की सरकार के विरुद्ध कोई षड़यन्त्र पकड़ा जाता है और अमेरिकन राजदूतावास की वहां खिलाफ गिरफ्तार की जाती हैं। पोलैंड रूमानिया, युगोस्लाविया, अलबानिया सर्वत्र यही हुआ। चेकोस्लोवाकिया में भी २२ फरवरी को अमेरिकन दूतावास की डोरोथी ब्राउन को गिरफ्तार किया गया, जिसने एक 'षड़यन्त्र' का भण्डाफोड़ किया है।

फिनलैण्ड में भी ये सब चिन्ह एकत्र हो रहे हैं। गृह-मन्त्री कम्युनिस्ट है। रूसी अधिकारी के वहां पहुंचने की खबर है। अमेरिकनों के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे हैं।

कोई भी स्वातन्त्र्यप्रिय व्यक्ति रूसी परराष्ट्र नीति का समर्थन नहीं कर सकता परन्तु रूस द्वारा दी जाने वाली "सुरक्षा" की दलील से इन्कार भी नहीं किया जा सकता। जर्मनी को पुनः अमेरिकन पूंजी द्वारा शक्तिशाली बनाया जा रहा है। यूनान में बजाय इसके कि राजतन्त्र का खात्मा कर, पुराने फासिस्टों को नष्ट कर धरती को किसानों में बांटा जाय, कम्युनिस्टों के नाम से "ट्रूमन नीति" के अन्तर्गत ब्रिटिश जनता की हत्या की जा रही है। हाल का समाचार है कि हंगरी के फासिस्ट नेता तथा हिटलर के गहरे दोस्त एडमिरल होर्थी जर्मनी के बवेरिया प्रान्त (अमेरिकन क्षेत्र) के अमेरिकन गवर्नर के यहां एक शादी की दावत में निमन्त्रण पाकर आये थे। दावत में सब अमेरिकन सैनिक अफसर तथा मिचिगन राज्य के भूतपूर्व गवर्नर वान वागोनर भी थे। टर्की, ईरान, कोरिया, जापान, सर्वत्र यही नीति बरती जा रही है। मजा तो यह है कि ये सब समाचार अमेरिकन सम्वाददाताओं द्वारा ही यहां आते हैं— जनता को यह विश्वास दिलाने के लिए कि रूसी भालू के विरुद्ध उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध किया जा रहा है।

... यह चक्र चलाया किसने ! इससे कोई भी इन्कार न करेगा कि इस "चक्र" के जन्मदाता श्री विन्स्टन चर्चिल हैं जिन्होंने दिसम्बर १९४४ में यूनान में उन्हीं देश भक्तों पर गोली चलवाई थी, जो जबकि राज्य तथा सरकार देश से भाग गयी थी, जर्मनों से युद्ध करते रहे थे।

अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र की घड़ी की सुई रह-रह कर एक ही स्थान पर पहुंच जाती है और वह है यूनान। १२ मार्च १९४७ को राष्ट्रपति ट्रूमन ने यूनान तथा टर्की की सहायता के लिये कांग्रेस से ४० करोड़ डालर की पूंजी मांग कर अमेरिकन परराष्ट्र नीति में एक नयी धारा का प्रतिपादन किया था। वह धारा यही थी कि संसार में जहां भी कम्युनिज्म अथवा रूस का प्रभाव बढ़ता नजर आए, वहीं धन तथा सेना द्वारा संयुक्त राज्य हस्तक्षेप करेगा। अप्रैल १९४७ को "लाइफ" पत्र में एक लेख में श्री विन्स्टन चर्चिल ने लिखा था—"दिसम्बर १९४४ को मैंने स्वयं यूनान स्थित ब्रिटिश कमाण्डर जेनरल स्कार्बी को तार भेजा था कि यूनान के आंतरिक मामलों में तटस्थ रहने की जरूरत नहीं। प्रधान मन्त्री पापान्ड्रियू के विरुद्ध जो भी प्रदर्शन करे उन पर गोली चलाई जाय। इसके तुरत ही बाद दो या तीन ब्रिटिश डिवीजन सेना यूनान की राजधानी एथेन्स में घुस गयी। चालीस दिन तक एथेन्सनिवासी अपने प्राण गवांते रहे, परन्तु ब्रिटिश सेना दृढ़ रही। यही वह "नींव" थी जिस पर आज संयुक्तराज्य अपनी परराष्ट्र नीति बनाने में सफल हुआ है।"

"ट्रूमन" नीति की घोषणा के बाद के इतिहास से हम सब परिचित हैं। पिछले सप्ताह राष्ट्रपति ट्रूमन ने पुनः कांग्रेस को बतलाया कि वे शीघ्र ही यूनान के लिए और अधिक सहायता मांगने वाले हैं। एक वर्ष की "ट्रूमन नीति" के परिणाम स्पष्ट हैं। बीस हजार गुरिल्ला सैनिकों के साथ दसगुनी सरकारी सेना लड़ रही है। प्रत्येक यूनानी बटालियन के साथ अमेरिकन सलाहकार हैं। ३० करोड़ डालर में से प्रायः २० करोड़ केवल सेना पर व्यय किया गया है। बाकी का ४२०,००० शरणार्थियों का पेट पालने में। अमेरिकन कमाण्डर वानफ्लीट तथा ब्रिटिश कमाण्डर जनरल डाउन्स यूनान सरकार की "रक्षा-समिति" के वास्तविक सदस्य हैं।

परन्तु पिछले वर्ष से इस वर्ष गुरिल्ला सैनिकों के पास चौगुनी भूमि है। दस हजार फुट से ऊंची सारी धरती पर उनका अधिकार है। बीस हजार की संख्या ज्यों की त्यों है— हालांकि हजारों मर गये। एथेन्स में चोर बाजार, मुद्रा असन्तुलन, नाच रंग का बाजार गर्म है। सन् ४७ में अमेरिका ने प्रायः ८७०० गुरिल्ला ... प्रत्येक गुरिल्ला ... में खर्च किया पर उनकी संख्या वही है।

"ट्रूमन नीति" के ३० करोड़ डालर के अतिरिक्त ४ करोड़ ८ ... राज्य विदेश सहायता निधि की ओर से, ८ करोड़ युद्ध से बचे सामान के रूप में, ४० ५० करोड़ के जहाज, १० करोड़ डालर संयुक्त राष्ट्र संघ के जरिये अमेरिका से, तथा २४ करोड़ दूसरे देशों द्वारा "अनरा" के अन्तर्गत।

इसका परिणाम है कि यूनान की २० प्रतिशत धरती पर कम्युनिस्ट अधिकार है।

---

१००) इनाम
सफेद बाल काला

अनोखे तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर ६० वर्ष तक काला स्थायी रहेगा। सिर के दर्द व चक्कर आना दूर कर आंखों की ज्योति को बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) एकत्र ३ का ६॥) आधा पका हो तो ३॥) एकत्र ३ का ९) और कुल पका हो तो ५) एकत्र ३ का १२) बेफायदा साबित करने पर १००) इनाम, जिन्हें विश्वास न हो -)॥ का टिकट भेज कर शर्त लिखा लें।

मासिक धर्म

बन्द मासिक धर्म नारी सञ्जीवनी दवाई के उपयोग से बिना तकलीफ शुरू हो नियमित आता है, ऋतु की फर्याद दूर हो जाती है। यह दवा गर्भवती को उपयोग न करावें। तुरन्त फायदे के लिये तेज दवाई कीमत रु० ५)।

श्वेतकुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय सज्जनो ! औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते यदि इसके ३ दिन के लेप से सफेदी के दाग को पूरा आराम कर दे न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेज कर शर्त लिखा लें। मूल्य ३)।

वैद्यराज वृजकिशोर राम नं० १४० पो० रानीगंज (बर्दमान)

१००) रुपये इनाम

आश्चर्यजनक शक्तिशाली सिद्ध यन्त्र गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

सिद्ध वशीकरण यन्त्र। इसके धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके पास चली आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा २॥), चांदी का ३) सोने का १२)। झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

दुःख हरण आश्रम नं०- (वन) पो० कतरी सराय (गया)

१००) इनाम

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र — से जिसे आप चाहते हैं चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो, इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आप से मिलने चली आवेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकदमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रहों की शान्ति, नौकरी की तरक्की सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥), चांदी ३), सोना १४।

सिद्ध इमरान नं० १०७
पो० कतरी सराय [गया]

'सिद्ध चित्रकूट बूटी।

यह बूटी मरने माघ में ... आये सिद्ध महात्मा ने ... पर्वत समझ करने की बताई है। ... पुरानी पुरानी या नई दमा स्वास, खांसी ... किसी पूरनमा से एक महीने तक ... करने से जड़ से आरोग्य हो जाता है। मात्रा-६० मात्रा २॥) परहेज कुछ नहीं।

गर्भदाता योग

इस औषध के व्यवहार से निश्चय गर्भधारण हो जाता है। मूल्य ५) पूर्ण विवरण के साथ पत्र लिखें।

मासिक धर्म की औषधि

बन्द मासिक धर्म को बिना कष्ट जारी करता है इस औषधि को व्यवहार करने से कमर, पेडू, पेट का दर्द सिर में चक्कर आना आदि को दूर कर मासिक धर्म नियमित रूप से लाता है। इस औषधि को व्यवहार करने से शीघ्र गर्भ धारण हो जाता है। गर्भवती स्त्रियां इसे व्यवहार न करें, क्योंकि गर्भावस्था में इसे व्यवहार करने से गर्भपात हो जाता है। मूल्य २)।

श्री कृष्णचन्द्र (वि० हि०)
पो० सरिया (हजारीबाग)

निराश होकर न बैठें!

स्त्री या पुरुष का कोई कैसा ही पुराना, असाध्य और भयङ्कर रोग हो किसी इलाज से भी नष्ट न हुआ हो रोग का पूरा खुलासा हाल लिखकर या हमारे पास आकर हमसे अनुभवपूर्ण इलाज उचित खर्च में करालें। हमने अपने अनुभव से हजारों निराशों को आश्वासन किया है।

संतान चाहने वाले प्रश्नपत्र मंगावें

वैद्यराज शीतलप्रसाद जैन, ...

गृह उद्योगों का विकास

[पं० जवाहरलाल नेहरू]

सरकार के पास इस समय जो साधन या शक्ति है उन्हें पहले । जमे हुए उद्योगों को अपने अधिकार । लेने के बजाय उसे अपनी अनेक योजनाओं को कार्यान्वित करने में लगाना चाहिए। यदि भारत अमरीका से मशीनें प्राप्त न कर सका तो वह अन्य देशों से उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा और यदि इसमें भी वह सफल न हुआ तो भी उसे अपने ही साधनों से अपना काम चला लेना चाहिये किन्तु सुस्त नहीं बैठना चाहिए। वर्त्तमान उत्पादन संकट को दूर करने का वर्त्तमान परिस्थितियों में महत्वपूर्ण उपाय यह भी है कि गृह-उद्योगों को अविलम्ब बड़े पैमाने पर उन्नत किया जाय।

मैं अधिकाधिक इस परिणाम पर पहुंच रहा हू कि देश को आज अनिवार्य भरती की जरूरत है किन्तु सैनिक अर्थों में नहीं, बल्कि सामाजिक कार्य के लिए।

भारत व पाकिस्तान में जल्दी ही वह समय आयगा जब कि कस्टम की कोई बाधा नहीं रहेगी। रियासतों समेत समस्त भारत संघ में माल के स्वतन्त्रता पूर्वक आने-जाने की सुविधा होनी चाहिये। दक्षिणी व दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में भी आर्थिक, रक्षा तथा अन्य मामलों में परस्पर सहयोग होना चाहिए।

अपने भविष्य के लिये उन्नति-योजनायें बनाते हुए यद्यपि अतीत और वर्तमान संसार की उपेक्षा नहीं कर सकता तथापि उसे भावी संसार की तसवीर की ओर भी जरूर देखना पड़ेगा क्योंकि इसके बिना वह सही दिशा में उन्नति नहीं कर सकता। हमें चाहिये कि हम उस मार्ग की ओर दृष्टि रखें जिस पर कि हम चलना चाहते हैं और साथ ही उस मार्ग को भी ध्यान में रखें जिस पर चलने के लिये संसार की घटनाए हमें मजबूर कर रही हैं और कोशिश करके दोनों के बीच के फासिले को कम किया जा सके। वास्तविक खतरा गये कल की चकाचौंध से चमत्कृत होकर आज और आने वाले कल की ओर न देख सकने में ही है।

संसार आज एक क्रांति युग में से गुजर रहा है, अच्छी और बुरी सभी तरह की घटनाए संसार में घट रही हैं। क्षितिज पर युद्ध की घटाए उमड़ घुमड़ रही हैं और लोगों के मन भय और आतंक से दहल रहे हैं। गो, मुझे विश्वास है कि निकट भविष्य में युद्ध नहीं छिड़ेगा, तथापि हम इस सचाई की उपेक्षा नहीं कर सकते कि संसार आज ऐसे खतरनाक रास्ते पर चल रहा है जो कि गम्भीर उथल पुथल की ओर ले जा सकता है। यदि संसार में युद्ध छिड़ गया तो भारत की सब उन्नति-योजनाओं पर तुषारपात हो जायगा और यदि वास्तविक युद्ध न छिड़ा तब भी मौजूदा युद्ध का आतंक देश के व्यापार, व्यवसाय और उद्योग का भारी अहित करेगा।

इसलिये संसार की वर्तमान परिस्थितियों में हमें यह सीखना चाहिए कि हम अपने ही साधनों और शक्ति पर कैसे निर्भर कर सकते हैं।

देश का उत्पादन बढ़ाने के लिये विदेशों से मशीनों के आने की बाट जोहना निरर्थक है क्योंकि मशीनें आ जाने पर भी उनको लगाने और काम में आने योग्य बनाने में बड़ा समय लग जायगा। इसलिए जरूरत इस बात की है कि बड़े पैमाने पर गृह-उद्योगों की उन्नति की जाय।

शरणार्थियों की रिहायश के लिये लोहे और सीमेंट की प्राप्ति की प्रतीक्षा करने के बजाय मिट्टी के मकान बना लेना कहीं श्रेयस्कर है। इन मकानों में न केवल शरणार्थी बल्कि उच्च सरकारी अफसर भी रह सकते हैं।

'हाय! शुभदर्शनों से वंचित हो गया'

मेरे हृदय में दीर्घकाल से यह उत्कण्ठा जागृत थी कि घर घर व्यापी पूज्य बापू जी का दर्शन प्राप्त कर अपना जन्म सफल करूं किन्तु पराधीनता इसकी बाधक रही अब पंच भूतात्मक शरीर पूज्य बापू जी का छीना गया, हाय! शुभ दर्शनों से वंचित हो गया।

दर्शनाभिलाषी — टीकाराम मिश्रा
पट्टी लोहवा गढ़वाल।

१००) इनाम

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र

प्राचीन ऋषियों की अद्भुत देन

इसके धारण मात्र से हर कार्य में सिद्धि मिलती है। कठोर से कठोर हृदय वाली स्त्री या पुरुष भी आपके वश में आ जायेगा। इससे भाग्योदय, नौकरी, सन्तान तथा धन की प्राप्ति, मुकदमे और लाटरी में जीत, परीक्षा में पास एव नवग्रहों की शांति होती है। अधिक प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। बेफायदा साबित करने पर १००) इनाम। मूल्य तांबा २॥) चांदी ३), सोने का स्पेशल ११) रु०।

पता:— सुधाशक्ति कार्यालय पो० कतरी सराय (गया)

★ पुत्रदा ★

(शर्तिया पुत्र उत्पन्न करने की दवा)

साधारण स्त्रियों को 'पुत्रदा' से पुत्र होवेगा ही। परन्तु जो बांझ हैं अथवा जिन्हें अरसे से रजस्वला होना बन्द हो गया हो, उनको भी शर्तिया पुत्र उत्पन्न होगा। हजारों ने 'पुत्रदा' सेवन कर पुत्र पाया है और आज तक किसी को भी हताश नहीं होना पड़ा। यदि आपको पुत्र की इच्छा हो तो एकबार परीक्षा अवश्य कर कर देखिये पुत्र न पाने पर दाम वापस। चाहें प्रतिज्ञापत्र लिखा लीजिये मूल्य ५) रुपये।

पता — श्रीमती रामप्यारी देवी न० १ पो कतरी सराय (गया)।

भूल सुधार

प्रिय पाठक! ता० २६ मार्च के साप्ताहिक वीर अर्जुन में जो मनोरंजन पहेली न० ४६ प्रकाशित हुई है उसके वर्ग में '५।' होना थी लेकिन छपते समय मशीन से '।' मात्रा निकल गई है कृपया पाठक उस स्थान पर '५।' पढ़ें।

— मैनेजर

धनाढ्य बनने के लिए

और उद्योग व्यवसाय सम्बन्धी जानकारी तथा थोड़ी पूंजी से अमीर बनने के लिए मासिक 'व्यवसाय' पढ़िए। वार्षिक मूल्य ३), नमूना ।~)।

'व्यवसाय' अलीगढ

लाखों रोगियों पर अनुभूति

काला मरहम (रजि०)

दाद, खुजली, फोड़ा, फुन्सी, बवासीर, कोढ़ आदि चर्म रोगों पर शत प्रतिशत सफल।

भारत सेवक औषधालय, नई सड़क, देहली।

रेडियो व १००) से १०००) मासिक

घर बैठे मुफ्त

गलत सिद्ध करने पर १०,०००) इनाम। विश्वास रखिये यह असम्भव नहीं। लिटरेचर व नियम भी मुफ्त मंगाइये।

दि हिन्द स्टोर्ज, चावड़ी बाजार, दिल्ली।

कुछ अद्भुत शक्तिशाली औषधियां

किसी औषधि को बेफायदा साबित करने पर १०० रुपया इनाम। जिन्हें विश्वास न हो, डेढ़ आना का टिकट भेज कर शर्त लिखा लें।

सफेद बाल काला

इस तेल से बाल का पकना रुक कर पका बाल जड़ से काला पैदा होता है। यदि स्थायी काला न रहे तो दूना मूल्य वापस की शर्त। सैकड़ों प्रशंसापत्रों से इसकी सत्यता प्रमाणित है। यह तैल सर के दर्द व सर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी को बढ़ाता है। चौथाई बाल पका के लिए २॥), उस से ज्यादा के लिए ३॥), व कुल पका बाल के लिए ५) का तैल मंगा लें।

बहरापन नाशक

यह कर्ण रोग की अद्भुत दवा बहरापन नया व पुराना, कान की कम आवाज, पीब बहना सदा के लिए आरोग्य करता है। बहरा आदमी साफ साफ सुनने लगता है। मूल्य २)

श्वेत कुष्ट की वनौषधि

महात्माप्रदत्त इस सफेदी की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगाकर आरोग्य होवें। मूल्य २॥)

सन्तति-निग्रह

सन्तान निग्रह की अचूक दवा है। दवा का व्यवहार बन्द कर दें, गर्भ धारण हो जायगा। प्रतिमास दवा तीन दिन व्यवहार करना पड़ता है। वर्ष भर की दवा का मूल्य २॥) दूसरी दवा जो जीवन भर के लिए वन्ध्या बनाती है,—मूल्य २॥) दोनों दवा के व्यवहार से स्वास्थ्य में किसी तरह की हानि नहीं होती।

वैद्यराज अखिल किशोर राम न० १७ पो० औ० सुरिया, जिला—हजारीबाग।

व्हाइट हाउस की व्यवस्था

रूटर के संवाददाता विलियम हार्डे केल्स ने पिछले दिनों बताया है कि सारे राष्ट्र के कार्य को और ह्वाइट हाउस को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए अमेरिकन राष्ट्रपति प्रेसीडेंट ट्रूमैन को ५०३ आदमियों की आवश्यकता होती है।

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के प्रेसीडेण्ट उन लोगों में से है जिनका घर ही दफ्तर बना हुआ है और दफ्तर ही घर है। यही कारण है कि वाशिंगटन के बीचों बीच श्वेत प्रासाद में जो छोटी सेना रहती है उसमें रसोई बनाने वालों से लेकर प्राइवेट सेक्रेटरी तक सभी दर्जे के लोग हैं।

स्टाफ के बड़े हिस्से में से ३५ आदमी गुप्त सेवा का कार्य करते हैं जो ट्रूमैन और उनके परिवार की — वे जहा कहीं भी जायें — रक्षा करते हैं और १०० पुलिसमैन सब प्रवेश द्वारों पर पहरा देते हैं और प्रत्येक दर्शक के 'पास' की जाच करते हैं। परन्तु मि० ट्रूमैन का वैयक्तिक स्टाफ वस्तुतः बहुत थोड़ा है। उनके गोल कमरे में जिसमें वे प्रेस कान्फ्रेंसें बुलाते हैं या सरकारी दर्शकों से भेंट करते हैं, दो लड़कियां बतौर सेक्रेटरी के स्टेनोग्राफर का काम करती हैं।

इनके दफ्तर के आगे असिस्टेंट प्रेसीडेंट का दफ्तर है। मि० जान स्टीलमेन के स्टाफ में १४ आदमी हैं— जिनमें एक वकील और एक अर्थशास्त्रवेत्ता भी सम्मिलित हैं।

उसके बाद प्रेसीडेण्ट के विशेष काउंसल – सुन्दराकृति वाले मि० क्लार्क क्लिफर्ड हैं जो प्रेसीडेण्ट की लगभग सभी स्पीचों को लिखते हैं और उच्च राजनैतिक निर्णयों में जिनका महत्वपूर्ण प्रभाव है। मि० क्लार्क एक पुरुष सहायक और तीन स्त्री सहायिकाओं द्वारा प्रबन्ध करते हैं। उनमें से एक प्रेसीडेण्ट के दर्शकों से जिनसे भेंट की नियुक्ति पहले हो चुकी है भेंट करती है और दूसरी २७ क्लर्कों और टाइपिस्टों की सहायता से सारी डाक सभालती है। तीसरा व्यक्ति जिसे लोग सबसे अधिक जानते हैं वह है मि० चार्ल्स रौस, यह पहले एक अखबारनवीस थे और प्रेसिडेण्ट के जनता के साथ सम्पर्क सम्बन्धी सब कार्यों को यही सभालते हैं।

इस सारी मशीनरी को यथाविधि चलाने के लिये अन्य कई महकमे हैं — डाक, फाइल, सन्देश, टेलिग्राफ कोड रूम और हिसाब-किताब का दफ्तर।

सात लड़कियां स्विचबोर्ड के आपरेटर का काम करती हैं। जिस पर संसार के अनेक भागों से प्रेसिडेण्ट के नाम 'कोल' आती रहती हैं।

दूसरे विभाग में आर्मी सिगनल कोर पर्सनल का स्टाफ है जिसके पास रेडियो और तार का ऐसा प्रबन्ध है कि समस्त संसार के अमेरिकन दूतावास और अमेरिकन शिष्टमण्डल की जानकारी से वे प्रेसिडेंट ट्रूमैन को, फिर पृथ्वी, समुद्र या आकाश में वे चाहे कहीं भी हों, ह्वाइट हाउस के साथ सम्पर्क में रखते हैं

सब सशस्त्र सर्विसों के प्रधान सेनापति के रूप में एडमिरल विलियम लीहाइ, प्रेजिडेंट के अपने निजू चीफ आफ स्टाफ हैं। उनके तीन सहायक हैं — जिनमें से प्रत्येक एक एक सर्विस के लिये है।

उनके अपने दो डाक्टर हैं। एक-शरीर चिकित्सक (फिजिकोथिरेपिस्ट) है जो ह्वाइट हाउस के तैरने के जलाशय (स्विमिंग पूल) में उनके साथ साथ रहता है। ये सब उनको शारीरिक दृष्टि से बिल्कुल ठीक रखते हैं।

ह्वाइट हाउस की विशाल इमारत की शाखाओं में यह सब काम चलता रहता है।

(पृष्ठ १० का शेष)

मुझे निश्चय है कि मेरी सहृदय सखी, नई स्वास्थ्य-मत्री राजकुमारी अमृतकौर इस समय की पुकार के अनुसार कार्य करेंगी, क्योंकि उनके पास पर्याप्त शक्ति है, पर्याप्त अनुभव है और पर्याप्त सूझ है। आशा है योग्य कार्यकर्ताओं का सहयोग उन्हें प्राप्त होगा!'

अभी पिछले दिनों दिल्ली यूनिवर्सिटी ने राजकुमारी अमृतकौर को डाक्टरेट की आनरेरी डिग्री देकर अपने को गौरवान्वित किया है।

फिल्म स्टार बनने के इच्छुक
कला प्रेमी व्यक्ति हम से सम्पर्क स्थापित करें और धोखा धड़ी से बचें।
इन्टरनेशनल इण्ट्रो डक्शन ब्यूरो, अलीगढ़।

अफ्यून— बन्द होगी। ओपियम कट विलायती टिकिया के प्रयोग से घर बैठे आराम के साथ अफ्यून खानी बन्द हो जायगी। अब तक ५० हजार आदमी अफ्यून छोड़ चुके हैं। नक्कालों से बचो।
मगाने का पता—
डाक्टर अमीराम शर्मा मण्डी कोटफत्ता खास रियासत पटियाला।

निराश होकर न बैठें !

हमने अपने २५ वर्षों के अनुभव में हजारों निराशों को आशावान बनाया है और ऐसे २ निराश रोगियों के इलाज करके सफलता प्राप्त की है कि जिनको किसी प्रकार भी आशा नहीं रही थी। कोई भी रोग हो, किसी इलाज से भी नष्ट न हुआ हो, इलाज करते २ थक गये हों और निराश हो गये हों, हम से इलाज कराइये। हम अनुभवपूर्ण इलाज उचित खर्च में करके आशावान कर देते हैं। रोगी स्त्री हो या पुरुष, कोई कैसा ही पुराना, बिगड़ा और असाध्य रोग हो, पूरा खुलासा हाल लिखना चाहिए। हमारे इलाज से ऐसे सैकड़ों के सन्तानें हुई हैं कि जिनको किसी प्रकार की आशा न थी, क्योंकि किसी की स्त्री सन्तानोत्पति के अयोग्य थी तो किसी का पुरुष, किसी २ इलाज में दोनों सर्वथा अयोग्य होते हुए भी सफल हुए हैं। जिनके सन्तान न होती हो, या गर्भपात हो जाता हो, समस्त इलाज करके थक गये हों और निराश हो गये हों, वे हम से इलाज करावें। प्रश्न पत्र मगा कर देखें।

वैद्यराज शीतलप्रसाद जैन, सब्जी मण्डी, मुजफ्फरनगर यू० पी०।

यह प्रसिद्ध है अपने आदर्श व सरलता के लिए

श्री कृष्ण कम्पीटीशन

३०००) रुपये का नकद इनाम प्रतिमाह जीतिए

कम्पटीशन नं० १४ — इनामें — कम्पीटीशन नं० १४

१२००) रु० का सही आने पर, ५००) रु० का एक गलती पर, ३५०) रु० का दो गलती पर, २५०) रु० का तीन गलती पर और २००) रु० चार गलती पर। स्पेशल—सर्व प्रथम सही उत्तर वाली एक महिला, विद्यार्थी, स्वतन्त्र व नौकरी पेशे वाले प्रत्येक को २५) रु०। १५०) रु० का एक साथ अधिक से अधिक उत्तर भेजने वाले ६ व्यक्तियों को क्रमशः ५०) रु० ३०) रु० २५) रु० २०) रु० १५) रु० १०) रु०। २१०) रु० के रिजर्व में से अपने द्वारा उत्तर भिजवाने वालों को भी बाटा जायगा।

कूपन

न० शु०	अधूरे नाम	सही नाम
१	.. नायक	
२	..धक	
३	.. .	
४	. रगी	
५	..त्र	
६	..	
७	. योजक	
८	सुरे .	

मुझे मैनेजर का निर्णय सर्वथा माननीय है
पूरा नाम ....
पूरा पता ....
हस्ताक्षर

पहिचान

१. हिन्दू शास्त्रों के अनुसार संसार की खुशहाली ' ' की कृपा पर निर्भर है। २ स्वय परमात्मा को भी यह चैन से नहीं बैठने देता। ३ द, स, र, से बना बोलचाल की भाषा का एक सार्थक शब्द। ४. रसिकों को इसका बड़ा चाव होता है। ५ यह भी एक अद्वितीय सम्पति है जो समय पर बड़ा साथ देती है। ६ एक सख्या जो ऐसे शब्द के अपभ्रंश से बनी है जिसका अर्थ दुख है। ७. दुलहन के लिए पीहर का प्रथम प्रस्थान कितना ' ' होता है। ८. एक सुशिक्षित व आकर्षक अभिनायक जिसका प्रेम प्रायः फलता फूलता नहीं दिखाया गया है। उत्तर भेजने की अन्तिम तारीख २ मई सन् १६४८ है और व नतीजा तारीख ३० मई १६४८ को प्रकाशित होगा। नं० ३ व ६ के अलावा सही नाम इन शब्दों के बाहर नहीं हैं—गायक, नायक, सुर नायक, साधक, बाधक, नारंगी, सारगी, चित्र, मित्र, पुत्र, संयोजक, वियोजक, सुरेन्द्र, सुरेश।

नियम—एक नाम से एक से अधिक भी उत्तर भेजे जा सकते हैं। एक उत्तर की फीस एक रुपया व तीस उत्तरों तक प्रति तीन उत्तर की एक नाम से २॥) रु० और तीन के बाद ॥) [आठ आने] प्रति उत्तर है। मनिआर्डर से भेजने वालों को अपने उत्तर के साथ डाकखाने की मनिआर्डर की रसीद अपना पूरा नाम व पता और कम्पीटीशन न० आदि भेजना अनिवार्य है। उत्तर सादा कागज पर भी भेजा जा सकता है किन्तु बिना किसी काट छाट के स्याही से लिखा हुआ होना चाहिए अन्यथा व्यर्थ समझा जायगा। स्पेशल इनाम के अलावा एक व्यक्ति एक ही इनाम का हकदार होगा। उत्तर सही वह ही माना जावेगा जो हमारे सीलबन्द उत्तर से अक्षरशः मिलेगा। जमा की हुई फीस वापिस नहीं होगी। मैनेजर का निर्णय अन्तिम व सर्वथा माननीय है। अपने द्वारा उत्तर भिजवाने वालों का एक कम्पीटीशन में कम से कम एक उत्तर खुद के नाम से भेजना आवश्यक है। पुरस्कार सूची के लिये -)॥ का टिकट भेजिये।

उत्तर भेजने का पता:—

मैनेजर, श्रीकृष्ण कम्पीटीशन नं १४ चांदपोल बाजार, जयपुर।

मद्रास मुस्लिमलीग की कान्फ्रेंस ने मुस्लिमलीग को न तोड़ने का फैसला कर दिया। —एक समाचार

मुस्लिमलीग की क़लम यू० पी० से उखाड़ कर मद्रास के गड्ढे में दो घड़े पानी और दो तसले मिट्टी डालकर जमाने के लिये मुसलमानों के नये मसीहा इस्माइल को यार लोगों की बधाई, क्योंकि जिन्ना की लाज रखली, लियाकत की बात रखली और मुसलमानों की धाक रखली।

× × ×

पाकिस्तान में महिला नेशनलगार्ड की स्थापना कर दी गई।

—एक समाचार

यह नया उद्योग रिजवी की माँग के लिये हुआ है या कश्मीर में पिटते हुए अफरीदियों के टूटे हुए दिलों को जोड़ने के लिये ?

× × ×

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान एक होकर किसी भी शत्रु को पछाड़ सकते हैं।

—जिन्ना

मिया जब यह ख्याल है, तो इतना झमेला ही क्यों किया था ? खैर लौट आओ दिल्ली, सेठ डालमियां से तुम्हारी बिकी कोठी वापस करा देंगे और लियाकत अली खां का प्रबन्ध फिलहाल शरणार्थी कैम्प में कर देंगे।

× × ×

रूस के सभावित आक्रमण होने पर टर्की को फ्रांस और ब्रिटेन ने अभय दान दे दिया। —एक समाचार

मरवाओ गरीब को! अभयदान के पत्र में क्या लिखा ~ होगे, ? —

'तुम शौक से मर जाना, हम आके जिला लेंगे।'

× × ×

जिन्ना का वेतन बढ़ाकर १०॥ हजार रु० मासिक कर दिया गया।

—पाकिस्तान सरकार

मिया, तरक्की की खुशी में अगर खजूरें बांटो तो यार लोगों को भी याद रखना। अब तो — 'आधे में रब और आधे में सब' वाला हिसाब हो गया।

× × ×

ब्रिटेन कान्फ्रेंस शांति के लिये खतरा है। —रूसी पत्र

अब तो काफी दिन शांति रहली, काफी सुस्ता चुके, अब भी शांति से पेट न भरा। उतर आओ न नीचे को।

× × ×

इटली का चुनाव बन्दूकों की गोलियों के साथ शुरू हुआ।

—एक समाचार

ज्योतिष के हिसाब से आसार अच्छे हैं। आगे भगवान ने चाहा तो इटली का अखाड़ा स्पेन के पुराने अखाड़े को मात दे देगा। यार लोगों को चाहिये कि जल्दी ही अपने-अपने जोड़ मुसोलिनी की कब्र पर जाकर लिखकर रख आयें।

× × ×

अमेरिका फिलस्तीन-विभाजन में भाग लेने को तैयार नहीं।

—एक अमेरिकन मन्त्री

भाग लेने की जरूरत ही क्या है। आपका काम पूरा हुआ। अब बस मजे से दोनों को हथियार भेजो और दोनों का सिर एक साथ छेजो — 'घर मे आग लगाय जमालो दूर खड़ी।'

× × ×

निजाम से सुलटने के लिये हमारे पास काफी शक्ति है —नेहरू जी

श्रीमान् जी, निजाम से तो सुलट लोगे, लेकिन निजाम के फरजन्द रिजवी की पर्देदार दुख्तरों से कौन सुलटेगा ? आप या अपने राम।

× × ×

फिलस्तीन के मुफ्ती ने जिन्ना से आदमियों और रुपये की मदद मांगी है।

—एक समाचार

अच्छे से मदद मागी! 'आप मिया मंगते, बाहर खड़े दरवेश'। खैर तुम्हारी लाज तो रखनी ही पड़ेगी। गुड़गावा के मेव जो पाकिस्तान में हैं, यहूदियों से लड़ने को ले जाओ। और पाकिस्तान का पुराना सिक्का उनकी तनख्वाह के लिये ले लो।

× × ×

रियासती कार्यकर्त्ताओं में श्री पट्टाभि सीतारमैय्या।

२०००) रुपया इनाम अवश्य जीतिये [प्रतियोगिता नं० २

नं० १ का हल

५१	६७	२
१	५०	६६
६८	३	४६

१२००) हमारे सील बन्द उत्तर से मिलने वालों को जो स्थानीय भारत बैंक में जमा है ७००) न्यूनतम अशुद्धियों पर, १००) सब से अधिक भेजने वाले को दिये जायेंगे। पूर्तियां भेजने की अन्तिम ता० २५—४—४८, खुलने की तारीख ३० ४ ४८, उत्तर के लिए =) के टिकट भेजें, फीस १ पूर्ति का १), चार पूर्ति का ३), अधिक के लिए ॥) प्रति पूर्ति अधिक मनिआर्डर के कूपनों के नीचे व पूर्तियों के नीचे नाम व पता पूरा लिखा आना चाहिये

जोड़ १८०

	६०	

पता —"प्रभात" ट्रेडिंग कम्पनी [प० वि० ८] सेवका बाजार, आगरा।

ठगों से ठगे हुए

कमजोरी, सुस्ती, शीघ्र पतन व स्वप्नदोष रोगों के रोगी हमारे यहां आकर इलाज करावें और लाभ के बाद हस्व हैसियत दाम दें और जो न आ सकें वे अपना हाल बन्द लिफाफे में भेजने कर मुफ्त सलाह लें। हम उनको अप उत्तर के साथ उनके लाभ के लिए अपनी १ पुस्तक 'विचित्र गुप्त शास्त्र जिसमें बिना दवा खाये ऊपर लिखे रोगों को दूर करने की आसान विधियां लिखी हैं और जो सन् २६ में गवर्नमेण्ट से जब्त होकर अदालत से छूटी है मुफ्त भेज देंगे, परन्तु पत्र के साथ तीन आने के टिकट भेजें।

डा० बी० एल० कश्यप अध्यक्ष रसायन घर १०७ शाहजहांपुर यू० पी०

समय चूक पुनि का पछताने

चित्रकूट की

(स्वांस) दमा की प्राणेश्वरी बूटी

जिसकी एक ही मात्रा पूर्णिमा रात्रि ता० २३ ४-४८ को सेवन करने नया व पुराना दमा सदैव के लिये। मे नष्ट हो जाता है। घर बैठे मगा सेवन करें। नोट — चन्द्रग्रहण होने इस बूटी का अद्भुत चमत्कार देखिये

मिलने का पता — श्री महात्मा ये बाबा आयुर्वेदिक बूटी भण्डार पो चित्रकूट यू० पी०।

प्रेम दूती

श्री विराज जी रचित प्रेम का सुरुचिपूर्ण शृंगार की सुन्दर कवित मू० ।||) डाक व्यय पृथक।

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

Rs.8/14 Wonderful Reduced Price Rs.8/14

Just arrived a huge consignment from U S A real Parker style FOUNTAIN PEN very popular shape with 14 ct gold plated ever guarantee nib, self-filling and with

pocket clip at controlled fixed rate. We can supply only one piece, merchants are not allowed to order, one ink bottle and one extra nib and postage, etc free get V P P. to your door

ORIENT TRADERS A W Baldeo Buildings JHANSI. U. P

Oh! wl
Nice W
WAT
"SECO

BEST AND YET CHEAPEST
a life time Watch at prewar price for
Rs 30/-Postage, etc free N Silver, or Rolled Gold in any shape all in same price to second Time keeper on account of short suppl factory, we do not book order for more than one

Swiss Watch Agency. A. W. B

(पृष्ठ ४ का शेष)

शरणार्थियों का सम्पत्ति पर अधिकार

लाहौर में हुए अन्तः डोमीनियन सम्मेलन में शरणार्थियों द्वारा छोड़ी हुई सम्पत्ति की समस्या को सुलझाने के लिए एक योजना बनाली गई है। तीन मुख्य प्रश्नों पर निश्चय किया गया है— १ चल सम्पत्ति का हस्तान्तरण, २. जो शरणार्थी अपने घर वापिस जाना चाहें उनकी सम्पत्ति की पुनः अदायगी, ३. जो नहीं जाना चाहते उनकी सम्पत्ति की क्षतिपूर्ति या परिवर्तन। शरणार्थियों का अपनी सम्पत्ति पर अधिकार स्वीकार कर लिया गया है।

कलकत्ते में हड़ताल आरम्भ

केन्द्रीय सरकार कर्मचारी संघ की संघर्ष समिति ने २ अप्रैल से हड़ताल (जिस में काम की हड़ताल के साथ भूख हड़ताल भी शामिल है) करने का निश्चय किया है। यद्यपि एक दिन पहले प्रधान मन्त्री पं० नेहरू रेडियो से भाषण ब्राडकास्ट करके इस हड़ताल को अवैध घोषित किया था और हड़ताल करने वालों को नौकरी से अलग करने की धमकी भी दी थी। परन्तु फिर भी संघर्ष समिति अपने निश्चय से विरत नहीं हुई। फिर भी भारत सरकार की ओर से कोई अनुकूल प्रस्ताव सामने रखे जाने पर उचित विचार करने का उन्होंने वचन दिया है।

काश्मीर की अभियान की प्रगति

काश्मीर के प्रधान मन्त्री शेख अब्दुल्ला के साथ विचार-विमर्श करने के पश्चात् भारत सरकार ने पूरे जोर से कबायलियों तथा पाकिस्तान के काश्मीर स्थित सैनिकों के विरुद्ध व्यापक युद्ध शुरू कर दिया है। भारतीय सेना ने चतुर्मुखी प्रगति के लिये पूरी तय्यारी कर ली है।

'आजाद काश्मीर' के स्वयम्भू लीडर सरदार इब्राहीम ने इस आक्रमण से घबरा कर भारत पर 'युद्ध बन्द करो-समझौता' को भंग करने का आरोप लगाया है और पं० नेहरू के विरुद्ध विष-वमन किया है।

बबरियावाड़ व सरदारगढ़ सौराष्ट्र में शामिल

बाबरियावाड़ और सरदारगढ़ का शासन प्रबन्ध सौराष्ट्र सरकार ने अपने हाथ में ले लिया है।

पाकिस्तान पुलिस की धांधली

भारतीय संघ के प्रदेश से आसाम को भेजे गये डाक के ४०६ थैले, जिनमें पार्सल और पैकिट आदि भी थे, पाकिस्तानी प्रदेश से गुजरने पर पाकिस्तानी पुलिस व नेशनल गार्डों द्वारा रोक लिये गये। यह कार्यवाई अन्तर्राष्ट्रीय डाक नियमों के विरुद्ध है।

सुगमवर्ग पहेली सं० ३३

ये वर्ग अपने हल की नकल रखने के लिये हैं, भरकर भेजने के लिये नहीं।

फिलस्तीन का युद्ध

यद्यपि अब मिश्रराष्ट्रीय संघ फिलस्तीन के विभाजन की योजना को तिलांजलि दे चुका है, परन्तु गत नवम्बर से अब तक इस विभाजन योजना के परिणाम-स्वरूप फिलस्तीन में २२०० व्यक्ति मारे जा चुके हैं और ४००० व्यक्ति घायल हो चुके हैं। इन मृतकों में ११० अंग्रेज सिपाही हैं।

चीन को ४६ करोड़ डालर

लम्बी बहस के बाद अमेरिकन सीनेट ने चीन को आर्थिक सहायता देने के लिये ४६ करोड़ ३० लाख डालर की राशि स्वीकार की है। सुदूर पूर्व में कम्युनिज्म के बढ़ते हुए खतरे को टालने के लिये चीन को यह सहायता देना आवश्यक समझा गया है।

पहेली सं० ३३ की संकेतमाला

दायें से बायें

१. विष्णु।
३. हनुमान।
७. झरोखा।
८. दूसरों को जीतना—के लिए सरल है।
९. बहुत — हानिकारक होता है।
१०. वज्रपात।
११. एक अत्युत्तम गुण।
१२. जय हो।
१४. अपने लाभ के लिये कुछ न कुछ— उचित है।
१५. पारस्परिक सम्बन्धों पर —— का बड़ा प्रभाव पड़ता है।
१६ काहे का — काहे का बाना।
१७. सुख और शान्ति देता है।
१८. जब तक मनुष्य— में है, शान्ति नहीं।
२०. दिया।
२२ सुन्दर हो तो और अधिक अच्छी लगती है।
२३. कमल से नयनों वाला।
२५ जिसकी आशा हो।
२७. जिसे — मिल जाय, तर जाता है।
३०. पास होने से प्रतिष्ठा होती है।
३१ —की प्रवृत्ति नीचे की ओर होती है।
३२. स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।
३३. स्त्री का — गौरव भी समझा जाता था।

ऊपर से नीचे

१. सांपों का स्वामी।
२. कुबेर।
३. — सीताराम।
४. अति विशालता इसका गुण है।
५. गगा।
६. क्रोध से लाल हो जाना।
८. जो समय पर — जानता है वही सफल होता है।
१३. कीर्ति।
१७. वृक्ष विशेष का जंगल।
१९. एक आकाशवर्ती पिण्ड की चमक।
२१. इसके आगे बड़े बड़े असफल रह जाते हैं।
२३. इसका आकर्षण किसे अज्ञात है।
२४. बाटना।
२५. एक — अभी देश से उठ गया है।
२६. — में मग्न व्यक्ति सफल कम होता है।
२८. एक पक्षी।
२९. — क आश्रय में सुख मालूम होता है।

१००) इनाम

गुप्त वशीकरण मन्त्र के धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होता है। आप जिसे चाहते हैं चाहे वह पत्थर-दिल क्यों न हो, पास चली आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी धन, की प्राप्ति मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा २) चांदी ३) सोना १५)। झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

महाऋषी आश्रम (S) पो० अलीगंज (मुंगेर)।

मुफ्त नवीन केलेण्डर हर प्रकार की Free

सुन्दर, सस्ती और टिकाऊ रबर की मुहरें तथा भारत विख्यात इण्डस्ट्रीज की अचूक गुणकारी और पेटेन्ट औषधियों के वर्णन पत्र और गुप्त रोगों से छुटकारा पाने की साधन नियमावली आज ही पत्र-लिखकर बिना मूल्य प्राप्त कीजिये। पता:- आरोग्य कुटीर इण्डस्ट्रीज, शिवपुरी C. I.

सम्राट विक्रमादित्य

(नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १।।), डाक व्यय ।=)।

मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

५००) [सुगमवर्ग पहेली सं० ३३] पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार ३००) न्यूनतम अशुद्धियों पर २००)

इस लाइन पर काटिये

साथ के दोनों वर्गों की फीस जमा कराने वाले के लिये मुफ्त।
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार होगा।
नाम ...
पता ...
ठिकाना ... उत्तर नं० ...

सुगमवर्ग पहेली नं० ३३ फीस १)
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है
नाम ...
पता ...
ठिकाना ... उत्तर नं० ...

सुगमवर्ग पहेली नं० ३३ फीस १)
इस पहेली के सम्बन्ध में मुझे प्रबन्धक का निर्णय स्वीकार है
नाम ...
पता ...
ठिकाना ... उत्तर नं० ...

इन तीनों वर्गों को पृथक पृथक करके इकट्ठा ही भेजना चाहिये। भेजने वाले की इच्छा है कि वह पूर्ति चाहे एक की, दो की या तीनों की करे। तीनों वर्ग एक ही या पृथक नामों से भरे जा सकते हैं। यदि फीस केवल एक वर्ग की भेजें तो शेष दो पर आड़ी लकीर खींच दें।

इस लाइन पर काटिये

पहेली में भाग लेने के नियम

१. पहेली साप्ताहिक वीर अर्जुन में मुद्रित कूपनों पर ही आनी चाहिये।

२. उत्तर साफ व स्याही से लिखा हो। अस्पष्ट अथवा सदिग्ध रूप में लिखे हुए, कटे हुए और अपूर्ण हल प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे और ना ही उनका प्रवेश शुल्क लौटाया जायेगा।

३—भरे हुए अक्षरों में मात्रा वाले या संयुक्त अक्षर न होने चाहिये। जहां मात्रा की अथवा आधे अक्षर की आवश्यकता है, वहां वह पहेली में दिये हुए हैं। उत्तर के साथ नाम पता हिन्दी में ही आना चाहिये।

४. निश्चित तिथि से बाद में आने वाली पहेलियां जांच में सम्मिलित नहीं की जायेंगी और ना ही उनका शुल्क लौटाया जायेगा।

५. प्रत्येक उत्तर के साथ १) भेजना आवश्यक है जो कि मनीआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा आने चाहियें। डाक टिकट स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की रसीद पहेली के साथ आनी चाहिये।

६. एक ही लिफाफे में कई आदमियों के उत्तर व एक मनीआर्डर द्वारा कई आदमियों का शुल्क भेजा जा सकता है। परन्तु मनीआर्डर के कूपन पर नाम व पता हिन्दी में विवरण सहित लिखना चाहिये। पहेलियों के डाक में गुम हो जाने की जिम्मेवारी हम पर न होगी।

७. ठीक उत्तर पर ३००) तथा न्यूनतम अशुद्धियों पर २००) के पुरस्कार दिये जायेंगे। ठीक उत्तर अधिक संख्या में आने पर पुरस्कार बराबर बांट दिये जायेंगे। पहेली की आमदनी के अनुसार पुरस्कार की राशि घटाई बढ़ाई जा सकती है। पुरस्कार भेजने का डाक व्यय पुरस्कार पाने वाले के जिम्मे होगा।

८ पहेली का ठीक उत्तर २६ अप्रैल के अङ्क में प्रकाशित किया जायेगा। उसी अङ्क में पुरस्कारों की लिस्ट के प्रकाशन की तिथि भी दी जायेगी, सही हल २३ अप्रैल १९४८ को दिन के २ बजे खोला जायगा, तब जो व्यक्ति भी चाहे उपस्थित रह सकता है।

९. पुरस्कारों के प्रकाशन के बाद यदि किसी को जांच करानी हो तो तीन सप्ताह के अन्दर ही १) भेज कर जांच करा सकते हैं। चार सप्ताह बाद किसी को आपत्ति उठाने का अधिकार न होगा। शिकायत ठीक होने पर १) वापिस कर दिया जायेगा पुरस्कार उक्त चार सप्ताह पश्चात् ही भेजे जायेंगे।

१० पहेली सम्बन्धी सब पत्र प्रबन्धक सुगम वर्ग पहेली सं० ३३, वीर अर्जुन कार्यालय दिल्ली के पते पर भेजने चाहियें।

११. एक ही नाम से कई पहेलियां आने पर पुरस्कार केवल एक पर जिसमें सब से कम अशुद्धियां होंगी दिया जायेगा।

१२. वीर अर्जुन कार्यालय में कार्य करने वाला कोई व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकेगा।

पहेली पहुंचने की अन्तिम तिथि १७ अप्रैल १९४८ ई०

संकेतमाला के लिये पृष्ठ २६ देखिये

अपने हल की नकल पृष्ठ २६ पर वर्गों में रख सकते हैं।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ हैं पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है।

मूल्य १) डाक व्यय ।-)

जीवन चरित्र माला

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना आजाद हिन्द फौज का सञ्चालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

[श्री रमेशचन्द्र जी आर्य]

मौलाना साहब की राष्ट्रीयता, अपने विचारों पर दृढ़ता, उनकी जीवन का सुन्दर संकलन। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

महर्षि दयानन्द

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्र भारत की रूप रे[खा]

इस पुस्तक में लेखक ने भारत और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान आधार भारतीय संस्कृति पर इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया

मूल्य १॥) रुपया।

विविध

बृहत्तर भारत

[स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार]

भारतीय संस्कृति का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई, यह सब इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ७) डाक व्यय ॥=)

बहन के पत्र

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

गृहस्थ-जीवन की दैनिक समस्याओं और कठिनाईयों का सुन्दर व्यावहारिक समाधान। बहनों व सखियों को विवाह के अवसर पर देने के लिये अद्वितीय पुस्तक। मूल्य ३)

प्रेमदूती

श्री विराज जी रचित प्रेमकाव्य, मुर्छनापूर्ण शृङ्गार की सुन्दर कविताएं। मूल्य ॥)

वैदिक वीर गर्जना

[श्री रामनाथ वेदालङ्कार]

इसमें वेदों से चुन चुन कर वीर भावों को जागृत करने वाले एक सौ से अधिक वेद-मन्त्रों का अर्थसहित संग्रह किया गया है। मूल्य ॥=)

भारतीय उपनिवेश-फिजी

[श्री ज्ञानीदास]

ब्रिटेन द्वारा शासित फिजी में यद्यपि भारतीयों का बहुमत है फिर भी वे वहां गुलामों का जीवन बिताते हैं। उनकी स्थिति का सुन्दर सङ्कलन। मूल्य २)

हिन्दू संगठन होआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इस लिये

हिन्दू—संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)

उपयोगी विज्ञान

साबुन-विज्ञान

साबुन के सम्बन्ध में प्रत्येक प्र[कार] की शिक्षा प्राप्त करने के लिये अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाक व्यय ।-

तेल विज्ञान

तिलहन से लेकर तेल के व्या[पार] उद्योगों की विवेचना सविस्तार ढंग से की गई है। मूल्य २) डाक व्यय

तुलसी

तुलसीगण के पौधों का वृ[हद्] विवेचन और उनसे लाभ उठाने के [उपाय] बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय

अंजीर

अंजीर के फल और वृक्ष से [अनेक] रोगों को दूर करने के उपाय। मूल्य डाक व्यय पृथक्।

देहाती इलाज

अनेक प्रकार के रोगों में अ[पना] इलाज घर बाजार और जंगल में [सर]लता से मिलने वाली इन कौड़ी की की दवाओं के द्वारा कर सकते हैं। [मूल्य] १) डाक व्यय पृथक्।

सोडा कास्टिक

अपने घर में सोडा कास्टिक तै[यार] करने के लिये सुन्दर पुस्तक। मूल्य डाक व्यय पृथक्।

स्याही विज्ञान

घर में बैठ कर स्याही बनाइये [और] धन प्राप्त कीजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

कथा-साहित्य

मैं भूल न सकूं

[सम्पादक—श्री जयन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

नया आलोक : नई छाया

[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

सम्राट् विक्रमादित्य (नाटक)

लेखक—श्री विराज

उन दिनों की रोमाञ्चकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का भयंकर आतंक राज्य छाया हुआ था, देश के नगर नगर में द्रुही विश्वासघात तक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरञ्जक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें। मूल्य १॥), डाक व्यय ।=।

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन मूल्य ॥)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के च[क्र]व्यूह से कैसे निकला मूल्य

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य

प्राप्ति स्थान

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

श्री पं० [illegible] शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।